# ऋग्वेदसंहिता

पदानुक्रम से हिन्दीभाषानुवाद शोभानाम्नी संक्षिप्त अध्यात्मव्याख्या

एवम्

प्राचीन आचार्यों के भाष्यों तथा आधुनिक अनुवादकों और व्याख्याकारों की कृतियों से समाहृत टिप्पणियों सहित

अनुवादक, व्याख्याकार एवम् सम्पादक

डा॰ जियालाल कम्बोज

वेदव्याख्या के क्षेत्र में यह ग्रन्थ अपने प्रकार का प्रथम प्रयास है। सर्वप्रथम मन्त्र और उसका पदपाठ दिया गया है। पदपाठ के पश्चात् हिन्दी-अनुवाद और फिर संक्षिप्त व्याख्या दी गई है। जिस क्रम में मन्त्रों के पद हैं, उसी क्रम में उनका अनुवाद किया गया है। इससे पाठकों को शब्दों के अर्थों को समझने में सुविधा होगी। पदक्रम से किये गए अनुवाद ने छन्दोमुक्त कविता जैसा रूप ग्रहण कर लिया है, जिससे पाठकों को ऋग्वेद के हिन्दी काव्यपाठ का आनन्द भी प्राप्त होगा। संक्षिप्त व्याख्या के पश्चात् टिप्पणियों में प्राचीन एवं अर्वाचीन भाष्यकारों, व्याख्याकारों और अनुवादकों के मत दिये गए हैं।

व्याख्या में लेखक की दृष्टि अध्यात्मपरक अथवा उपासनापरक अर्थ को स्पष्ट करने की रही है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये नामों और शब्दों की यौगिक व्याख्या की गई है। भाषा और आलङ्कारिक प्रयोगों के रहस्य को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। देवतानामों और शब्दों की प्रतीकात्मक व्याख्या की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। प्राचीन और अर्वाचीन भाषाविदों के सिद्धान्तों से व्याख्या में सहायता ली गई है। लुप्तकल (elliptical) मन्त्रों में लुप्त पदों और वाक्यांशों को खोजकर मन्त्रार्थ की प्राप्ति का प्रयास किया गया है। असङ्गत अर्थ वाले वाक्यों में काकु से अर्थ की सङ्गति लगाई गई है।

मन्त्रों और टिप्पणियों में सन्धि को अक्षुण्ण रखते हुए पदों को अलग-अलग करके रखा गया है। इससे ऋग्वेद के अध्येताओं और जिज्ञासुओं को जहाँ मन्त्रों के उच्चारण में सुविधा होगी, वहाँ अर्थ को समझने में भी सहायता मिलेगी।

यह ग्रन्थ आठ खण्डों में पूर्ण होगा।

# ऋग्वेदसंहिता

पदानुक्रम से हिन्दीभाषानुवाद 'शोभानाम्नी' संक्षिप्त अध्यात्मव्याख्या

एवम्

प्राचीन आचार्यों के भाष्यों तथा आधुनिक अनुवादकों और व्याख्याकारों की कृतियों से समाहृत टिप्पणियों के साथ

## चतुर्थ खण्ड

चतुर्थ और पञ्चम मण्डल


अनुवादक, व्याख्याकार एवं सम्पादक

**डा. जियालाल कम्बोज**

पूर्व प्रवाचक, संस्कृत-विभाग,
हिन्दु-कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली


**विद्यानिधि प्रकाशन**

दिल्ली

प्रकाशक :

**विद्यानिधि प्रकाशन**

डी-१०/१०६१ (समीप श्रीमहागौरी मन्दिर)
खजूरी खास, दिल्ली-११००९४
दूरभाष : २२९६७६३८





प्रथम संस्करण : २००६

आई. एस. बी. एन. : ८१-८६७००-६७-६ (खण्ड ४)
आई. एस. बी. एन. : ८१-८६७००-४३-९ (सेट)

मूल्य : १२७५.००

मुद्रक :
**रूचिका प्रिंटर्स**
दिल्ली

# ṚGVEDASAṀHITĀ

With Hindi Translation in Word-order, Esoteric Exposition 'Śobhā', Brief Notes from the Exegeses & Translations of Ancient & Modern Interpreters

**VOLUME FOUR**

**FOURTH AND FIFTH MAṆḌALAS**

*Translator, Expositor and Editor*
**DR. JIYA LAL KAMBOJ**
Ex-Reader, Deptt. of Sanskrit,
Hindu College, University of Delhi, Delhi

VIDYANIDHI PRAKASHAN
DELHI

*Published by :*
**Vidyanidhi Prakashan**
D-10/1061 (Near Shri Mahagauri Mandir)
Khajuri Khas, Delhi-110094
Phone : 22967638



First Edition : 2006

ISBN : 81-86700-67-6 (Vol. IV)
ISBN : 81-86700-43-9 (Set)

Price : 1275.00

*Printed at :*
**Ruchika Printers**
Delhi

सखा॑यस् ते॒ विषु॑णा अग्न एते शि॒वास॒ः सन्तो॒ अशि॑वा अभूवन्।
अधू॑र्षत स्व॒यम् ए॒ते वचो॑भिर् ऋजूय॒ते वृ॑जि॒नानि॑ ब्रु॒वन्त॑ः।। ५।।

ऋ. ५.१२.५।।

मित्रगण तेरे विमुख (होकर तुझसे), हे अग्ने!, ये,
भद्र होते हुए भी, अभद्र हो जाते हैं।
हिंसित हो जाते हैं स्वयं ये, वचनों से (अपने),
ऋजुगामी के लिये, कुटिल वचनों को बोलते हुए।। ५।।

# संक्षेप-सूची

| | |
|---|---|
| अथर्व. | अथर्ववेद |
| अमर. | अमरसिंहकृत नामलिङ्गानुशासन |
| ईश. | ईशोपनिषद् |
| उणा. | पाणिनिकृत उणादिसूत्र |
| ऋ. | ऋग्वेद |
| ऋग्वेदानु. | वेङ्कटमाधवकृत ऋग्वेदानुक्रमणी |
| ऐ.आ. | ऐतरेयारण्यक |
| ऐ.उप. | ऐतरेयोपनिषद् |
| ऐ.ब्रा. | ऐतरेयब्राह्मण |
| कठ., कठ.उप. | कठोपनिषद् |
| कपा. | ऋग्वेद पर टी. वी. कपालीशास्त्रीकृत सिद्धाञ्जनभाष्य |
| केन. | केनोपनिषद् |
| गो.ब्रा. | गोपथब्राह्मण |
| छा.उप. | छान्दोग्योपनिषद् |
| जग. | श्रीअरविन्दप्रणीत Hymns to the Mystic Fire का पं. जगन्नाथ वेदालङ्कार द्वारा अग्निमन्त्रमाला नाम से किया गया संस्कृतानुवाद |
| जय. | पं. जयदेवशर्मकृत ऋग्वेदसंहिताभाषाभाष्य |
| तै.आ. | तैत्तिरीयारण्यक |
| तै.उप. | तैत्तिरीयोपनिषद् |
| तै.ब्रा. | तैत्तिरीयब्राह्मण |
| तै.सं. | तैत्तिरीयसंहिता |
| दया. | स्वामी दयानन्दसरस्वतीकृत ऋग्वेदभाष्य |
| दुर्ग. | निरुक्त पर दुर्गाचार्यकृत ऋज्वर्था नामक व्याख्या |
| धा.पा. | पाणिनिकृत धातुपाठ |
| नि. | यास्काचार्यकृत निरुक्त |
| नि.स. | वररुचिकृत निरुक्तसमुच्चय |
| निघ. | यास्काचार्यकृत निघण्टु |
| पा. | पाणिनिकृत अष्टाध्यायी |
| प्र.उप. | प्रश्नोपनिषद् |
| बृ.उप. | बृहदारण्यकोपनिषद् |
| बृह. | बृहद्देवता |
| म.भा. | वेदव्यासकृत महाभारत |
| महा. | पतञ्जलिकृत व्याकरणमहाभाष्य |
| मही | महीधरकृत वाजसनेयिसंहिता भाष्य |
| मा.उप. | माण्डूक्योपनिषद् |
| माश. | माध्यन्दिन शतपथब्राह्मण |
| मुण्ड.उप. | मुण्डकोपनिषद् |
| यजु. | यजुर्वेद |
| यु.मी. | युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा स्वामी दयानन्दकृत भाष्य पर पादटिप्पणी |
| या. | यास्काचार्य |
| रा. | वाल्मीकिकृत रामायण |
| राम. | पं. रामनाथकृत सामवेद हिन्दीव्याख्या |
| वर. | वररुचिकृत निरुक्तसमुच्चय |
| वे. | वेङ्कटमाधवकृत ऋगर्थदीपिका |

| | |
|---|---|
| शत., श.ब्रा. | शतपथब्राह्मण |
| शा.आ. | कात्यायनकृत शाङ्खायनारण्यक |
| सर्वानु. | कात्यायनकृत सर्वानुक्रमणी |
| सा. | सायणाचार्यकृत ऋग्वेदभाष्य |
| सात. | दामोदर सातवलेकरकृत ऋग्वेद का सुबोध भाष्य |
| साम. | सामवेद |
| स्क. | स्कन्दस्वामिकृत ऋग्वेदभाष्य |
| स्कन्दम., स्कम. | स्कन्दमहेश्वरकृत निरुक्त-व्याख्या |
| Ar. | Hymns to the Mystic Fire by Sri Aurobindo |
| Fr., Fra. | Hymns from the Golden Age by David Frawley |
| G. | Hymns of the Ṛgveda by Ralph T. H.Griffith |

| | |
|---|---|
| Max. | F. Max Müller, Sacred Books of te East Series |
| MW. | Sanskrit-English Dictionary by Sir Monier Williams |
| Satya. | Ṛgveda - English Translation by Satya Prakash and Satyakama Vidyalankara |
| Sid. | The Etymologies of Yāska by Siddheshwar Varma |
| SV. | Sparks from the Vedic Fire by V.S. Agrawala |
| W. | Translation of the Ṛgveda by H. H.Wilson |

अथ

# ऋग्वेदसंहिता

## चतुर्थ मण्डलम्

### सूक्त १

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः, २-५ वरुणो वा। छन्दः - १ अष्टिः, २ अतिजगती, ३ धृतिः, ४-२० त्रिष्टुप्। विंशत्यृचं सूक्तम्।

**त्वां ह्यग्ने सदम् इत् समन्यवो देवासो**
**देवम् अरतिं न्येरिर इति क्रत्वा न्येरिरे।**
**अमर्त्यं यजत मर्त्येष्वा देवम् आदेवम् जनत**
**प्रचेतसं विश्वम् आदेवं जनत प्रचेतसम्।। १।।**

त्वाम्। हि। अग्ने। सदम्। इत्। सऽमन्यवः। देवासः।
देवम्। अरतिम्। निऽएरिरे। इति। क्रत्वा। निऽएरिरे।
अमर्त्यम्। यजत। मर्त्येषु। आ। देवम्। आऽदेवम्। जनत।
प्रऽचेतसम्। विश्वम्। आऽदेवम्। जनत। प्रऽचेतसम्।। १।।

*तुझको चूँकि, हे अग्ने!, सदा ही, समान विचारों वाले देवगण,*
*प्रकाशमान को, गतिशील को, प्रेरित करते हैं, अतः कर्म से प्रेरित करते हैं।*
*अमरणधर्मा को, पूजनीय!, मनुष्यों में सर्वतः देव को, प्रकाशमान को, प्रकट करते हैं,*
*प्रज्ञावान् को, सम्पूर्ण जगत् को सर्वतः प्रकाशक को, प्रकट करते हैं, प्रज्ञावान् को।। १।।*

हे सब को सन्मार्ग दिखाने वाले अग्रणी परमेश्वर! तू प्रकाशमान है। तू सर्वत्र गतिशील अर्थात् सर्वव्यापक है। चूँकि समान विचारों वाले विद्वज्जन तुझे सदा ही रिझाना चाहते हैं, इसलिये वे अपने श्रेष्ठ कर्मों और उत्तम स्तुतियों के द्वारा तुझे प्रसन्न करते हैं। हे पूजा के योग्य! मनुष्य आदि सब शेष प्राणी तो मरणधर्मा हैं, केवल तू ही अजर और अमर है। वे तुझ सर्वज्ञ की, अमरणधर्मा की, प्रकाश और ज्ञान के स्वामी तथा देवों के देव महादेव की महिमा को अपनी स्तुतियों से प्रकट करते हैं। वे सम्पूर्ण जगत् के प्रकाशक और सर्वज्ञ तुझ परमेश्वर की महिमा को अपनी स्तुतियों से प्रकाशित करते हैं।

टि. *समान विचारों वाले* - समन्यवः। सकामाः - वे.। मन्युः स्पर्धा। तया सह वर्तमानाः। स्वसमानैः स्पर्धमाना इत्यर्थः। सा.। मन्युना क्रोधेन सह वर्तमानाः - दया.। emulous - W. ever of

one accord - G. ever with one passion - Ar.

*गतिशील को* - **अरतिम्।** गमनशीलम् - वे.। शीघ्रं गन्तारम् - सा.। प्रापणीयम् - दया.। swift of motion - W. messenger - G. Traveller - Ar.

*प्रेरित करते हैं* - **न्येरिरे इति।** मनुष्यलोकं प्रतीत्यर्थः - वे.। स्पर्धानिमित्ते युद्धे प्रेरयन्ति खलु। इतिशब्दो हेत्वर्थः। ईर गतौ। लिटि मन्त्रत्वाद् आम् न भवति। सहेति योगविभागात् समासः। हियोगाद् अनिघातः। सा.। प्रेरयन्ति - दया.। ever excite thee - W. sent hither down - G. have sent inward - Ar.

*पूजनीय* - **यजत।** यजनीय हे अग्ने - सा.। पूजयत - दया.। adorable - W. O thou Holy One - G. O master of sacrifice - Ar.

*प्रकाशमान को* - **आदेवम्।** आदीप्तं - वे.। तत्तद्यज्ञेष्वागन्तारम् - सा.। आदेवम् समन्तात् प्रकाशकम् - दया.। God-devoted - G.

*प्रकट करते हैं* - **जनत।** दीप्यमानारण्ययोर् जनयत - वे.। हविःश्रपणार्थम् अजनयन् - सा.। प्रसिद्ध्या प्रकाशयत - दया.। have generated thee - W. have they brought forth - G. Ar.

*प्रज्ञावान् को* - **प्रचेतसम्।** प्रकृष्टज्ञानम् - वे.। दया.। प्रकृष्टं कर्मविषयं चेतो ज्ञानं यस्य तादृशं त्वाम् - सा.। all-wise - W. omnipresent - G. the conscious thinker - Ar.

**स भ्रातरं वरुणम् अग्न आ ववृत्स्व**
**देवाँ अच्छा सुमती यज्ञवनसं ज्येष्ठं यज्ञवनसम्।**
**ऋतावानम् आदित्यं चर्षणीधृतं राजानं चर्षणीधृतम्।। २।।**

सः। भ्रातरम्। वरुणम्। अग्ने। आ। ववृत्स्व।
देवान्। अच्छ। सुऽमती। यज्ञऽवनसम्। ज्येष्ठम्। यज्ञऽवनसम्।
ऋतऽवानम्। आदित्यम्। चर्षणिऽधृतम्। राजानम्। चर्षणिऽधृतम्।। २।।

*वह (तू) भ्राता को, वरुण को, हे अग्ने!, इधर ले आ,*
*देवों की ओर, शोभन बुद्धि से, यज्ञों के द्वारा सेवनीय को,*
*अत्यन्त प्रशंसनीय को, यज्ञों का सेवन करने वाले को।*
*ऋत का पालन करने वाले को, अदितिपुत्र को, प्रजाधारक को,*
*राजमान को (दीप्तियों से), मनुष्यों को धारण करने वाले को।। २।।*

हे सब का मार्गदर्शन करने वाले अग्रणी परमेश्वर! तू अपनी उस वरणीय दिव्य शक्ति को, जो तुझसे निकट से सम्बद्ध है, जो सब को आवृत करके उनकी रक्षा करती है, जो सब के भले-बुरे कर्मों को देखती है और यथावत् दण्ड देती है, जो शोभन बुद्धि से परोपकार आदि शुभ कर्मों से सेवन के योग्य है, जो उपासकों के नैवेद्यों और समर्पणों को स्वीकार करती है, जो अत्यन्त प्रशंसनीय है, जो सत्यनियम का पालन करने वाली है, जो तुझ अनादि-अनन्त, अखण्डनीय देवमाता की सन्ततिभूत है, जो प्रजाओं को धारण करने वाली है और जो तेजों से तेजस्विनी है, तू उसे इधर उपासकों की ओर ले आ। हम उपासक जन उसका साक्षात् करना चाहते हैं।

टि. *भ्राता को* - **भ्रातरम्।** भ्रातृस्थानीयम् - वे.। एकस्थानवासेन भ्रातरम् - सा.। प्रियम् बन्धुम् इव - दया.।

*वरुण को* - **वरुणम्।** वृणोत्युदकम् इति वरुणः तं देवम् - सा.। श्रेष्ठं जनम् - दया.।

*इधर ले आ* - **आ ववृत्स्व।** आवर्तय। आङ्पूर्वो ऽन्तर्ण्यर्थः। वे.। वृतु वर्तने। लोटि बहुलं छन्दसीति विकरणस्य श्लुः। निघातः। सा.। bring - W.

*देवों की ओर* - **देवान् अच्छ।** देवान् प्रति - वे.। देवनशीलान् स्तोतॄन् अच्छाभि - सा.। धार्मिकान् विदुषः, सम्यक् - दया.। to the presence of the worshippers - W. to the gods - G.

*यज्ञों के द्वारा सेवनीय को* - **यज्ञवनसम्।** यज्ञस्य सम्भक्तारम् - वे.। यज्ञैर् वननीयैर् हविर्भिः संभजनीयम् (अपि च) यज्ञस्य सम्भक्तारम् - सा.। विद्याव्यवहारस्य विभाजकम् - दया.। participator of the sacrifice - W. who loveth sacrifice - G. who delights in the sacrifice- Ar.

*ऋत का पालन करने वाले को* - **ऋतावानम्।** सत्यवन्तम् - वे.। अपां स्वामितयोदकवन्तं सत्यवन्तं वा - सा.। सत्यस्य संभक्तारम् - दया.। the ruler of the water - W. True to the Law - G. who keeps the truth - Ar.

*प्रजाधारक को* - **चर्षणीधृतम्।** मनुष्याणां धारयितारम् - वे.। चर्षणीधृतं चर्षणिभिर् विद्वद्भिर् धृतम् - सा.। मनुष्याणां धर्त्तारं विद्वद्भिर् धृतं वा - दया.। who upholds the seeing-men - Ar.

*राजमान को (दीप्तियों से)* - **राजानम्।** राजन्तम् - सा.। प्रकाशमानं नरेशम् - दया.। the sovereign - W. the King - G. Ar.

**सखे सखायम् अभ्या ववृत्स्वाशुं न चक्रं रथ्येव रंह्यास्मभ्यं दस्म रंह्या।**
**अग्ने मृळीकं वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु।**
**तोकाय तुजे शुशुचान शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि।। ३।।**

सखे। सखायम्। अभि। आ। ववृत्स्व। आशुम्। न। चक्रम्।
रथ्याऽइव। रंह्या। अस्मभ्यम्। दस्म। रंह्या।
अग्ने। मृळीकम्। वरुणे। सचा। विदः। मरुत्ऽसु। विश्वऽभानुषु।
तोकाय। तुजे। शुशुचान। शम्। कृधि।
अस्मभ्यम्। दस्म। शम्। कृधि।। ३।।

*हे सखे!, सखा को, ओर (हमारी) ले आ तू,*
*तीव्रगति को जिस प्रकार चक्र को, रथ में जुतने वाले जैसे दो अश्व,*
*'हमारे लिये (ले आ तू), हे दुःखविनाशक!, (तीव्रगति चक्र को जैसे) दो अश्व।*
*हे अग्ने!, सुखकर (हमारे स्तोत्र) को, वरुण के साथ प्राप्त कर तू,*
*(प्राप्त कर तू) मरुतों के साथ (भी), नित्य प्रकाशमानों के।*
*पुत्र के लिये, पौत्र के लिये, हे पवित्रकारक!, सुख को उत्पन्न कर तू,*
*हमारे लिये (भी), हे दुःखविनाशक!, सुख को उत्पन्न कर तू।। ३।।*

हे सब के मित्रभूत और सनामा परमात्मन्! तू प्राणियों की मित्रभूत अपनी वरुणनामक शक्ति को

हमारे लिये इस ओर इस प्रकार ले आ, जिस प्रकार, हे दुःखविनाशक!, रथ में जुतने वाले दो अश्व तीव्र गति वाले रथचक्र को उसके गन्तव्य स्थान की ओर खींच ले जाते हैं। हे परमेश्वर! तू हमारे आनन्ददायक स्तोत्र को, सब को सब ओर से घेरकर रक्षा करने वाली अपनी वरुणनामक शक्ति के साथ और अपनी नित्य प्रकाशमान प्राणशक्तियों के साथ स्वीकार कर। हे सभी को पवित्र करने वाले और सर्वप्रकाशक अग्रणी परमेश्वर! तू हमारे लिये सुख उत्पन्न कर तथा हमारे पुत्र, पौत्र आदि सन्तानों के लिये सुख और शान्ति उत्पन्न कर।

टि. *तीव्रगति को जिस प्रकार चक्र को* - **आशुं न चक्रम्।** क्षिप्रगामिनम् इव रथस्य चक्रम् - वे.। यथाशुं शीघ्रगन्तृ चक्रं लक्ष्यदेशं प्रत्यभिमुखीकुरुतस् तद्वत् - सा.। swift as a wheel - G.

*रथ में जुतने वाले जैसे दो अश्व* - **रथ्येव रंह्या।** रथ्ययेव रंहणयोग्यया - वे.। रंह्या रंहणे गमने साधुभूतौ रथ्येव रथे योजिताव् अश्वौ। रथ्येव। रथस्येमाव् इत्यर्थे रथाद् यद् इति यत्। सुपां सुलुग् इति सुपो डादेशः। रंह्या। रंहशब्दात् तत्र साधुर् इति यत्प्रत्ययः। यतो ऽनाव इत्याद्युदात्तत्वम्। सा.। like two car-steeds in rapid course - G. as two rapid chariot-horses - Ar.

*हे दुःखविनाशक* - **दस्म।** हे दर्शनीय - वे.। सा.। दुःखोपनाशक - दया.। Wondrous - G. O strong worker - Ar.

*सुखकर (हमारे स्तोत्र) को प्राप्त कर तू* - **मृळीकम् विदः।** सुखकरं जानीहि - वे.। सुखकरं हविर् लब्धवान् असि - सा.। thou receivest the gratifying (oblation) - W. find thou grace for us - G. mayest thou find for us bliss - Ar.

*नित्य प्रकाशमानों के* - **विश्वभानुषु।** पूर्णतेजस्केषु - वे.। सर्वतोव्याप्ततेजस्केषु - सा.। all-illumining - W. G. who carry the universal light - Ar.

*पुत्र के लिये, पौत्र के लिये* - **तोकाय तुजे।** पुत्राय तत्पुत्राय - वे.। तुज्यते पीड्यते ऽनेन माता गर्भवासेनेति तोकं पुत्रः, तस्मै। तुजे। गच्छत्यनेनानृण्यं पितेति तुक् पौत्रः, तस्मै। सा.। अपत्याय विद्याबलम् इच्छुकाय - दया.। to our sons and grandsons - W. for seed and progeny - G. for the begetting of the Son - Ar.

*हे पवित्रकारक* - **शुशुचान।** हे दीपनशील - वे.। दीप्यमान हे अग्ने - सा.। पवित्रकारक - दया.। brilliant - W. thou Radiant One - G. O thou flaming into lustre - Ar.

**त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळो ऽव यासिसीष्ठाः।**
**यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।। ४।।**

त्वम्। नः। अग्ने। वरुणस्य। विद्वान्। देवस्य। हेळः। अव। यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठः। वह्निऽतमः। शोशुचानः। विश्वा। द्वेषांसि। प्र। मुमुग्धि। अस्मत्।। ४।।

*तू हमसे, हे अग्ने!, वरुण के, जानता हुआ,*
*प्रकाशमान के, क्रोधों को, परे करने का प्रयास कर।*
*अत्यन्त पूजनीय, वहन करने वालों में श्रेष्ठ, अतिशय प्रकाशमान,*
*सब को, द्वेषभावनाओं को, भली प्रकार छुड़ा दे हमसे।। ४।।*

हे सब को सन्मार्ग पर ले चलने वाले, सर्वज्ञ, अग्रणी परमेश्वर! सब मनुष्यों के भले-बुरे कर्मों को देखने वाली और तदनुसार कर्मों का फल देने वाली प्रकाशमान वरुणनामक अपनी शक्ति के क्रोध को तू प्रयासपूर्वक हमसे परे कर दे। हम कोई ऐसा कर्म न करें, जिससे हमें उसके कोप का भाजन बनना पड़े। तू अत्यन्त पूजनीय है। तू जगत् के कार्यों को वहन करने वालों में श्रेष्ठ है। तू अतिशय प्रकाशमान और सब को प्रकाश प्रदान करने वाला है। तू सब प्रकार की द्वेषभावनाओं और पापयुक्त विचारों को हमसे परे कर दे।

टि. *हमसे* - **नः**। अस्माकम् - वे.। अस्मत् - सा.। अस्मान् - दया.। from us - W. G.

*क्रोधों को* - **हेळः**। क्रोधम् - वे.। क्रोधान्। हेड़ अनादरे। क्विप्। शसि रूपम्। शसः सुप्त्वाद् अनुदात्तत्वे धातुस्वरः। सा.। हेळन्ते ऽनादृता भवन्ति यस्मिन् सः - दया.। the wrath - W. Ar. displeasure - G.

*परे करने का प्रयास कर* - **अव यासिसीष्ठाः**। अव यजस्व - वे.। अपनय। यसेर् ण्यन्ताद् आशीर्लिङ्। थासि सीयुडागमः। छन्दस्युभयथेति लिङः सार्वधातुकत्वाणिलोपाभावः। अवपूर्वो यासिर् विनाशे वर्तते। सा.। अव निवारणे, यासिसीष्ठाः प्रेरयेथाः - दया.। labour away - Ar.

*वहन करने वालों में श्रेष्ठ* - **वह्नितमः**। वोदृतमः - वे.। हविषाम् अतिशयेन वोढा - सा.।

*द्वेषभावनाओं को* - **द्वेषांसि**। द्वेष्टॄणि पापानि - वे.। पापानि द्वेष्टॄणि रजांसि वा - सा.। द्वेषयुक्तानि कर्माणि - दया.। from all animosities - W. all those who hate us - G.all hostile powers - Ar.

*छुड़ा दे* - **मुमुग्धि**। मुञ्च - वे.। मोचय। मुञ्चतेर् लोटि रूपम्। बहुलं छन्दसीति शपः श्लुः। सा.। मुञ्च पृथक् कुरु - दया.। liberate us - W. remove far away - G. Ar.

**स त्वं नो अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।**
**अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि।। ५।। १२।।**

सः। त्वम्। नः। अग्ने। अवमः। भव। ऊती। नेदिष्ठः। अस्याः। उषसः। विऽउष्टौ।
अव। यक्ष्व। नः। वरुणम्। रराणः। वीहि। मृळीकम्। सुऽहवः। नः। एधि।। ५।।

*वह तू हमारा, हे अग्ने!, रक्षक हो जा, समृद्धि के साथ,*
*निकटतम (हो जा), इसके, उषा के, उदयकाल में।*
*शान्त कर पूजा से, हमारे लिये वरुण को, रमण करता हुआ,*
*स्वीकार कर सुखद (हवि) को, सुख से आह्वानयोग्य, हमारे लिये हो जा।। ५।।*

हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! तू अपनी समृद्धियां हमें प्रदान करता हुआ हमारी सब ओर से रक्षा कर। प्रतिदिन आने वाली इस उषा के उदयकाल में जब हम तेरा स्मरण, चिन्तन और मनन करें तो तू हमारे अत्यन्त निकट आकर हमारे हृदयों में वास कर। तू हमारे हव्यों, समर्पणों तथा पूजाओं से प्रसन्न होकर शुभाशुभ कर्मों का फल देने वाली अपनी वरणीय शक्ति के क्रोध को हमारे लिये शान्त कर दे। तू हमारे द्वारा समर्पित हव्यों को स्वीकार कर और हमारे लिये सुख से आह्वान के योग्य हो जा।

टि. *रक्षक हो जा* - **अवमः भव**। आसन्नः भव - वे.। अर्वाचीनः प्रत्यासन्नो भव। यद्वा रक्षको

भव। सा.। रक्षको भव - दया.। be most nigh - W. be G. be most close - Ar.

*समृद्धि के साथ* - **ऊती**। रक्षणेन - वे.। ऊत्या रक्षणेन। यद्वा गमनेन। सा.। ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया - दया.। with thy protection - W. Ar. with succour - G.

*निकटतम* - **नेदिष्ठः**। अन्तिकतमः - वे.। दया.। अन्तिकशब्दाद् इष्ठनि अन्तिकबाढयोर् नेदसाधाव् इति नेद इत्यादेशः। नित्त्वाद् आद्युदात्तः। सा.। our closest Friend - G.

*शान्त कर पूजा से* - **अव यक्ष्व**। अव यज, शान्तहृदयं करु - वे.। अवयज विनाशयेत्यर्थः - सा.। संगच्छस्व - दया.। deprecate - W. reconcile to us - G. put away from us - Ar.

*रमण करता हुआ* - **रराणः**। रममाणः - वे.। अस्मद्दत्ते हविषि रममाणः। यद्वा। यजमानेभ्यो ऽत्यन्तम् ईप्सितफलप्रदस् त्वम्। रमतेः कानचि मकारलोपश् छान्दसः। यद्वा। रातेर् यङ्लुकि व्यत्ययेन कानच्। अभ्यस्तानाम् आदिः। सा.। ददत् - दया.। propitiated - W.

*स्वीकार कर* - **वीहि**। भक्षय - वे.। सा.। प्राप्नुहि - दया.। feed upon - W. enjoy - G.

**अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य संदृग् देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु।**
**शुचि घृतं न तप्तम् अघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः।। ६।।**

अस्य। श्रेष्ठा। सुऽभगस्य। सम्ऽदृक्। देवस्य। चित्रऽतमा। मर्त्येषु।
शुचि। घृतम्। न। तप्तम्। अघ्न्यायाः। स्पार्हा। देवस्य। मंहनाऽइव। धेनोः।। ६।।

*इसकी श्रेष्ठ, शोभन ऐश्वर्य वाले की, (कृपा-)दृष्टि,*
*दानादि गुणों वाले की, अत्यन्त पूजनीय (है), मनुष्यों पर।*
*पवित्र घृत जिस प्रकार तपा हुआ, अहिंसनीया का,*
*स्पृहणीय (है), (और) दानशील का दान जैसे धेनु का।। ६।।*

जिस प्रकार गौ, जो किसी भी स्थिति में हिंसा के योग्य नहीं है, का तपाकर शुद्ध किया हुआ घृत अत्यन्त सत्कार के योग्य होता है, जिस प्रकार किसी दानी पुरुष के द्वारा किया हुआ गौ का दान समादरणीय होता है, उसी प्रकार दान, दिव्यता आदि गुणों वाले और उत्तम ऐश्वर्यों वाले उस परमेश्वर की मनुष्यों पर अनवरत बरसने वाली श्रेष्ठ कृपादृष्टि सब मनुष्यों के द्वारा अत्यन्त पूजनीय होती है।

टि. *(कृपा-)दृष्टि* - **संदृक्**। सन्दृष्टिः अनुग्रहात्मिका - वे.। सन्दृष्टिः - सा.। या सम्यक् पश्यति - दया.। the glance - W. G. the vision - Ar.

*दानादि गुणों वाले की* - **देवस्य**। दिव्यगुणकर्मस्वभावस्य - दया.। of the auspicious deity - W. G. of this god-head - Ar.

*अत्यन्त पूजनीय* - **चित्रतमा**। पूज्यतमा - वे.। अतिशयेन चायनीया पूजनीया - सा.। most wonderful - W. most richly bright - Ar.

*घृत* - **घृतम्**। क्षरणयुक्तं क्षीरम् - सा.। आज्यम् - दया.।

*अहिंसनीया का* - **अघ्न्यायाः**। गोः - वे.। अहन्तव्याया गोः - सा.। दया.।

*स्पृहणीय* - **स्पार्हा**। स्पृहणीया - वे.। स्पृहणीयम् - सा.।

*दानशील का* - **देवस्य**। क्षीरं कामयमानस्य पुरुषस्य। (अपि च) यथा गां भिक्षमाणस्य मर्त्यस्य। सा.। परमात्मनः - दया.। to the deity - W.

*दान जैसे धेनु का* - **मंहनेव धेनोः**। तथा धेनोः पूजेव पयःप्रदानादिका स्पृहणीयेति - वे.। धेनोर् दोग्ध्र्या गोः। मंहनेव। मंहतिर् दानकर्मा। दानं यथा प्रियकरं भवति तद्वत्। सा.। as the gift of a milch-cow - W. the milch-cow's bounty - G. milch-cow's desirable gift - Ar.

**त्रिर् अस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः।**
**अनन्ते अन्तः परिवीत आगाच् छुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः।। ७।।**

त्रिः। अस्य। ता। परमा। सन्ति। सत्या। स्पार्हा। देवस्य। जनिमानि। अग्नेः।
अनन्ते। अन्तर् इति। परिऽवीतः। आ। अगात्। शुचिः। शुक्रः। अर्यः। रोरुचानः।। ७।।

*तीन इसके वे श्रेष्ठ हैं, सत्यभूत,*
*स्पृहा के योग्य, देव के जन्म अग्नि के।*
*अनन्त के अन्दर, सर्वतः आच्छादित, प्रकट हो रहा है,*
*पवित्र, तेजस्वी, स्वामी (सब का), अतिशय प्रकाशमान।। ७।।*

इस देवों के देव अग्रणी परमेश्वर के अत्यन्त प्रशंसा के योग्य, सत्यभूत, अत एव स्पृहणीय तीन जन्म हैं। अर्थात् यह जगत् में तीन रूपों में प्रकट हो रहा है - पृथिवी पर अग्नि के रूप में, अन्तरिक्ष में विद्युत् के रूप में और द्युलोक में सूर्य के रूप में। यह स्वयं पवित्र है और अन्यों को पवित्र करने वाला है। यह तेजों से युक्त है, अतिशय प्रकाशमान है और समस्त जगत् का स्वामी है। यह विश्वमय एवं विश्वातीत जगदीश्वर इस अनन्त ब्रह्माण्ड में सब ओर से आवृत होकर पदार्थों में उन्हीं के रूप वाला होकर सर्वत्र प्रकट हो रहा है।

टि. *तीन जन्म* - **त्रिः जनिमानि**। त्रीणि जन्मानि - वे.। अग्निवायुसूर्यात्मना त्रीणि जन्मानि - सा.। त्रिवारम् जन्मानि - दया.। His three supreme truths and births within the infinite are his triple nature in the Absolute as Being-Consciousnss-Bliss. Fr.

*श्रेष्ठ* - **परमा**। पुरातनानि - वे.। उत्तमानि - सा.। उत्कृष्टानि - दया.। the supreme - W. the most exalted - G.

*अनन्त के अन्दर* - **अनन्ते अन्तः**। अपर्यन्ते ऽन्तरिक्षे मध्ये - वे.। अपर्यन्ते नभस्यन्तर् मध्ये - सा.। परमात्मन्याकाशे वा मध्ये - दया.। in the unbounded (firmament) - W. in the boundless region - G. in the infinite - Ar.

*सर्वतः आच्छादित* - **परिवीतः**। ज्वालाभिः परिवीतः - वे.। स्वतेजसा परिवेष्टितः - सा.। परितः सर्वतो व्याप्तशुभगुणकर्मस्वभावः - दया.। invested (with radiance) - W.

*स्वामी* - **अर्यः**। सर्वस्यापि इनः - वे.। स्वामी। ऋ गतौ। अर्यः स्वामिवैश्ययोर् इति यत्प्रत्ययान्तो निपातितः। स्वामिन्यन्तोदात्तत्वं वक्तव्यम् इत्यन्तोदात्तत्वम्। सा.।

**स दूतो विश्वेद् अभि वष्टि सद्मा होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः।**
**रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा सदा रण्वः पितुमतीव संसत्।। ८।।**

सः। दूतः। विश्वा। इत्। अभि। वष्टि। सद्म। होता। हिरण्यऽरथः। रम्ऽसुजिह्वः।
रोहित्ऽअश्वः। वपुष्यः। विभाऽवा। सदा। रण्वः। पितुमतीऽइव। सम्ऽसत्।। ८।।

*वह दुष्टसन्तापक, सब को ही चाहता है, पूजागृहों को,*
*आह्वाता, सुनहरे रथों वाला, रमणीय सुन्दर वाणी वाला।*
*रक्तवर्ण अश्वों वाला, रूपों को धारण करने वाला, दीप्तिमान्,*
*सदा आनन्दित करने वाला, भोजन आदि से सम्पन्न जैसे गृह।। ८।।*

वह अग्रणी परमेश्वर दुष्टों को दण्डित करके उन्हें सन्तप्त करने वाला है। यज्ञगृह आदि वे सभी स्थल जहाँ निष्काम और परोपकार की भावना से कार्य होते हैं उसके पूजागृह हैं और उसे प्रिय हैं। वह सब मनुष्यों का सन्मार्ग में आह्वान करता है। वह सूर्य, चन्द्रमा आदि सुनहरे रथों वाला है। वह रमणीय सुन्दर वेदवाणी का स्वामी है। वह ज्योति, तारक आदि रक्तवर्ण अश्वों वाला है। वह सब पदार्थों में व्याप्त होकर उनके रूपों को धारण कर रहा है। वह तेजोमय और प्रकाशमान है। जिस प्रकार भोजन और भोग्य पदार्थों से सम्पन्न घर सब को सुख और आनन्द प्रदान करता है, उसी प्रकार वह जगदीश्वर सब को भोजन, धन-धान्य और सुखसाधनों से सन्तुष्ट करके सुखी और आनन्दित करता है।

टि. *दुष्टसन्तापक* - **दूतः**। यो दुनोति दुष्टान् परितापयति सः - दया.।

*पूजागृहों को* - **सद्म**। गृहान् - वे.। देवयजनस्थानानि - सा.। in all seats of worship - G.

*रमणीय शोभन वाणी वाला* - **रंसुजिह्वः**। रमणीयशोभनज्वालाजिजिह्वः - वे.। रमतेर् अन्येभ्यो ऽपि दृश्यन्त इति विच्। बहुव्रीहौ पूर्वपदस्वरः। सा.। रमणीयवाक् - दया.। sweet-tongued - G.

*रूपों को धारण करने वाला* - **वपुष्यः**। वपुषे हितः - वे.। वपुषि रूपे साधुः। तत्र साधुर् इति यत्। तित् स्वरितः। सा.। वपुष्षु रूपेषु भवः - दया.। embodied - W. lovely to look on - G.

*आनन्दित करने वाला भोजन आदि से सम्पन्न जैसे गृह* - **रण्वः पितुमतीव संसत्**। सदा रमणीयः अन्नवद् इव गृहम् - वे.। रण्वः रमणीयः, यथान्नादिवत् समृद्धं गृहं रमणीयं तद्वत् - सा.।

**स चैतयन् मनुषो यज्ञबन्धुः प्र तं मह्या रशनया नयन्ति।**
**स क्षेत्यस्य दुर्यासु साधन् देवो मर्तस्य सधनित्वम् आप।। ९।।**

सः। चेतयत्। मनुषः। यज्ञऽबन्धुः। प्र। तम्। मह्या। रशनया। नयन्ति।
सः। क्षेति। अस्य। दुर्यासु। साधन्। देवः। मर्तस्य। सधनिऽत्वम्। आप।। ९।।

*वह ज्ञान देता है मनुष्यों को, यज्ञ में बन्धु (उनका),*
*प्रकर्ष से उसको, महान् रज्जु से (बाँधकर) ले जाते हैं।*
*वह निवास करता है इसके घरों में, साधता हुआ (कामनाओं को),*
*द्योतमान (वह), मनुष्य के धन में भागीदार हो जाता है।। ९।।*

सन्मार्ग पर ले चलने वाला वह परमेश्वर सब मनुष्यों को अपनी वेदवाणी के द्वारा ज्ञान प्रदान करता है। यज्ञ के माध्यम से वह याजकों का बन्धु है। उसका सम्बन्ध याजकों से है और याजकों का सम्बन्ध उससे है। उपासक जन अपनी पूजाओं और स्तुतियों के बन्धन में बाँधकर उसे अपने वश

में कर लेते हैं। वह उनकी अभिलाषाओं को पूर्ण करता हुआ उनके हृदयरूपी घरों में निवास करता है। दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त वह प्रभु अपने उपासकों की आहुतियों और समर्पणों को स्वीकार करने से उनके पवित्र धनों में भागीदार हो जाता है।

टि. *ज्ञान देता है मनुष्यों को* - **चेतयत् मनुषः**। चेतयति मनुष्यान् - वे.। सो ऽग्निः कर्मणि प्रवृत्तान् मनुष्यान् जानाति - सा.। knowing these men - W. let him give man knowledge - G.

*यज्ञ में बन्धु (उनका)* - **यज्ञबन्धुः**। यज्ञबन्धनः - वे.। यज्ञे ऽग्निहोत्रादौ बन्धनं विनियोजनं यस्य स तथोक्तः - सा.। associated with sacrifice - W. allied by worship - G. is the friend of their sacrifice - Ar.

*महान् रज्जु से (बाँधकर) ले जाते हैं* - **मह्या रशनया नयन्ति**। नयन्ति वाचा मन्त्रात्मिकया रशनया। रशिर् नियमनकर्मा। वे.। महत्या स्तुतिरूपया रज्ज्वा युक्तं तं तादृशम् अग्निम् उत्तरवेद्यादिषु अध्वर्य्वादयः प्रक्षिपन्ति - सा.।

*घरों में* - **दुर्यासु**। गृहेषु - वे.। सा.।

*साधता हुआ* - **साधन्**। कर्माणि साधयन् - वे.। अभीष्टानि साधयन् - सा.।

*धन में भागीदार हो जाता है* - **सधनित्वम् आप**। मर्त्यस्यार्थाय सधनित्वं प्राप्नोति सधनो भवति, प्रयच्छतीत्यर्थः - वे.। यस्य गृहे निवसति तेन धनिना साहित्यं प्राप्नोति - सा.। obtains fellowship in his wealth - W. wins a share in his possessions - G.

**स तू नो अग्निर् नयतु प्रजानन्-**
**न्नच्छा रत्नं देवभक्तं यद् अस्य।**
**धिया यद् विश्वे अमृता अकृण्वन्**
**द्यौष् पिता जनिता सत्यम् उक्षन्॥ १०॥ १३॥**

सः। तु। नः। अग्निः। नयतु। प्रऽजानन्।
अच्छ। रत्नम्। देवऽभक्तम्। यत्। अस्य।
धिया। यत्। विश्वे। अमृताः। अकृण्वन्।
द्यौः। पिता। जनिता। सत्यम्। उक्षन्॥ १०॥

*वह पुनः हमको अग्नि, ले चले सर्वज्ञ,*
*ओर रमणीय धन की, देवों से सेवित है जो इसका।*
*ध्यान से जिसका सब अमरणधर्मा साक्षात् करते हैं,*
*द्योतमान, पालक, जनक, (जिस) सत्य को सब सींचते हैं॥ १०॥*

सब अमरणधर्मा अमृतपुत्र जिसका अपने ध्यान के द्वारा साक्षात्कार करते हैं, जो ज्योतिर्मय है, जो सब का उत्पादक और पालक है, और जिस सत्यस्वरूप को सब उपासक अपनी आहुतियों से सींचते हैं, सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला वह सर्वज्ञ परमेश्वर हमें अपने उस रमणीय दिव्य आनन्दरूपी धन की ओर अग्रसर करे, जो देवों के द्वारा भी सदा सेवन किया जाता है।

टि. पुनः - **तु**। क्षिप्रम् - वे.। सा.। पुनः - दया.।

*सर्वज्ञ* – **प्र जानन्।** प्रकर्षेण जानन् – वे.। सर्वं जानानः – सा.।

*रमणीय धन को* – **रत्नम्।** धनम् – वे.। God-sent riches - G. ecstasy - Ar.

*देवों से सेवित* – **देवभक्तम्।** देवैर् अपि सम्भक्तम् – वे.। देवनशीलैः स्तोतृभिः संभजनीयम् – सा.। which is desired by the devout - W. enjoyed by the gods - Ar.

*ध्यान से* – **धिया।** कर्मणा – वे.। हविर्वहनलक्षणेन कर्मणा – सा.। with wisdom - G. by thought - Ar.

*साक्षात् करते हैं* – **अकृण्वन्।** उत्पादितवन्तः – वे.। हविषां प्रापयितारम् अकुर्वन् – सा.।

*द्योतमान* – **द्यौ।** द्युप्रभृतयः – वे.। the most resplendent - W.

*सींचते हैं* – **उक्षन्।** तद् ब्रह्म स्वरसेनासिञ्चन् – वे.। घृताद्याहुतिभिर् अध्वर्य्वादयः सिञ्चन्ति। उक्ष सेचने। लङि रूपम्। बहुलं छन्दसीत्यडभावः। सा.। raining down (true) blessings - G.

**स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ।**
**अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायोयुवानो वृषभस्य नीळे॥ ११॥**

सः। जायत। प्रथमः। पस्त्यासु। महः। बुध्ने। रजसः। अस्य। योनौ।
अपात्। अशीर्षा। गुहमानः। अन्ता। आऽयोयुवानः। वृषभस्य। नीळे॥ ११॥

*वह प्रकट होता है मुख्य, जलों में,*
*महान् के मूल में नभ के, अपनी योनि में।*
*पादरहित, विना सिर वाला, छुपाता हुआ छोरों को,*
*मिश्रित करता हुआ (उनको), वृषभ के नीड में॥ ११॥*

वह परमेश्वर इस जगत् में सर्वप्रथम है, मुख्य है। वह अपने योनिभूत महान् नभ के मूल में अप्रकेत जलों के अन्दर जगत्सृष्टि के निमित्त हिरण्यगर्भ के रूप में प्रकट होता है। वह हाथ–पाँव, सिर, कान, नाक आदि शरीरावयवों से रहित है। वह अपने दोनों छोरों को इस प्रकार छुपाए हुए है कि उसके आदि और अन्त का किसी को कुछ भी पता नहीं चलता। जगत् का उत्पादक होने से वह वृषभ है। वह परम पुरुष है। उस विष्णु ने अपने नीड उस परम पद में अपने छोरों को इस प्रकार मिश्रित कर दिया है, कि वह अनादि और अनन्त हो गया है।

इस मन्त्र की व्याख्या जीवात्मा, विद्युत् और यज्ञाग्नि के पक्ष में भी की जा सकती है।

टि. *प्रकट होता है* – **जायत।** प्रादुर् अभूत् – वे.। आहुत्यधिकरणतया सम्पद्यते – सा.। जायते। अत्रडाभावः। दया.। engendered - W. sprang into existence - G.

*जलों में* – **पस्त्यासु।** पस्त्या इति नदीनामधेयम्। नदीषु। वे.। यजमानानां गृहेषु – सा.। दया.। in the habitations - W. in houses - G. in the Rivers, or, in our habitations - Ar.

*मूल में नभ के* – **बुध्ने रजसः।** अन्तरिक्षस्य मूले – वे.। रजसो ऽन्तरिक्षस्य बुध्ने मूले पृथिव्याम् – सा.। अन्तरिक्षे लोकसमूहस्य – दया.।

*छुपाता हुआ छोरों को* – **गुहमानः अन्ता।** छादयन् तेजसा तानि – वे.। अन्ता आद्यन्ते पादशिरसी

गुहमानो गूहमानः। अविज्ञेयपादशिरा इत्यर्थः - सा.। संवृतः सन् - दया.।

*मिश्रित करता हुआ* - **आयोयुवानः**। पुनःपुनर् आत्मना मिश्रयन् - वे.। धूमाकारेणात्मानं आयोजयन् वर्तते। यु मिश्रणे। यङ्लुकि शानचि रूपम्। अभ्यस्तस्वरेणाद्युदात्तः। सा.। समन्ताद् भृशं मिश्रयिता विभाजको वा - दया.। drawing himself together - G. joins them - Ar.

*वृषभ के नीड में* - **वृषभस्य नीळे**। पर्जन्यस्य मेघस्य वा नीळे अन्तरिक्षे - वे.। वर्षणसमर्थस्य मेघस्य नीळे नभसि - सा.। वर्षकस्य सूर्यस्य - दया.। in the the Bull's lair - G.

**प्र शर्ध आर्त प्रथमं विपन्याँ ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे।**
**स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासो ऽजनयन्त वृष्णे।। १२।।**

प्र। शर्धः। आर्त। प्रथमम्। विपन्या। ऋतस्य। योना। वृषभस्य। नीळे।
स्पार्हः। युवा। वपुष्यः। विभाऽवा। सप्त। प्रियासः। अजनयन्त। वृष्णे।। १२।।

*प्रकर्ष से तेज को प्राप्त करता है (प्रभु), मुख्य को, स्तुति के द्वारा,*
*सत्यनियम के मूलस्थान में, सुखवर्षक के (अपने) नीड में।*
*स्पृहणीय, नित्य तरुण, रूपों को धारण करने वाला, दीप्तिमान्,*
*सात मधुर (छन्द) उत्पन्न करते हैं (स्तुति को), सुखवर्षक के लिये।। १२।।*

सुखवर्षक वह अग्रणी परमेश्वर अपने उपासकों की स्तुतियों के द्वारा सत्यनियम के मूलस्थान में अर्थात् अपने परम पद में प्रकर्ष से उत्तम तेज को प्राप्त करता है। वह सब का कमनीय है। वह नित्य युवावस्था में रहने वाला है, अर्थात् अजर-अमर है। वह सभी पदार्थों में व्याप्त होकर उनके रूपों को धारण कर लेता है। वह स्वयं प्रकाशमान है और दूसरों को प्रकाशित करने वाला है। सात मधुर छन्द उस सुखवर्षक के लिये स्तुतियों को उत्पन्न करते हैं। उसकी स्तुतियां सात छन्दों वाले वेदमन्त्रों से होती हैं।

टि. *तेज को प्राप्त करता है* - **शर्धः आर्त**। वेगं गच्छति - वे.। तेजो गच्छति। आर्त। ऋ गतौ। लङि व्यत्ययेनात्मनेपदम्। निघातः। सा.। बलं प्राप्नुयाः - दया.। radiance has proceeded - W. rose aloft - G.

*स्तुति के द्वारा* - **विपन्या**। स्तोतॄणां स्तुत्या - वे.। पन चेत्यस्येन् प्रत्ययः। कृदिकाराद् अक्तिन इति ङीष्। प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः। उदात्तयणो हल्पूर्वाद् इति विभक्तेर् उदात्तत्वम्। विपन्यँ ऋतस्येत्यत्र संहितायाम् इको ऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश् च (पा. ६.१.१२७) इत्यनिको ऽपि ह्रस्वो ऽनुनासिकश् च। सा.। by praise - W. with a vibrancy of light - Ar.

*सात मधुर छन्द* - **सप्त प्रियासः**। सप्त सिन्धवः प्रियाः अभवन्, अपि वा सप्त सिन्धवः वृषाणम् अग्निम् अजनयन्। छन्दोऽनुविधानार्थो विभक्तिव्यत्ययः। वे.। प्रियाः सप्त होत्रकाः - सा.। पञ्च प्राणा मनो बुद्धिश् च, कमनीयाः सेवनीयाः - दया.। seven attached priests - W. seven dear friends - G. the seven Beloved - Ar. seven Sisters are the seven powers of creation - Fra.

**अस्माकम् अत्र पितरो मनुष्या अभि प्र सेदुर् ऋतम् आशुषाणाः।**
**अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तर् उद् उस्रा आजन्नुषसो हुवानाः।। १३।।**

अस्माकम्। अत्र। पितरः। मनुष्याः। अभि। प्र। सेदुः। ऋतम्। आशुषाणाः।
अश्मऽव्रजाः। सुऽदुघाः। वव्रे। अन्तः। उत्। उस्राः। आजन्। उषसः। हुवानाः।। १३।।

*हमारे इस जगत् में पिता-पतामहों ने, मननशीलों ने,*
*सर्वतः प्रसन्न किया (अग्रणी को), सत्यनियम को पाना चाहने वालों ने।*
*पत्थर के बाड़े वालियों को, सुन्दर दोहन वालियों को, (तम के) अन्दर (स्थितों को),*
*ऊपर गौओं को हाँक दिया, उषाओं का आह्वान करने वालों ने।। १३।।*

हमारे पूर्वज अत्यन्त मननशील थे। वे सत्यनियम के रहस्य को जानना चाहते थे। इसलिये उन्होंने इस जगत् में सर्वप्रथम सब का मार्गदर्शन करने वाले उस परमेश्वर को अपनी स्तुतियों और समर्पणों से भली प्रकार प्रसन्न किया। दुष्ट आसुरी शक्तियों ने जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों को कठोरतापूर्वक अपने अधिकार में किया हुआ था। इस लिये उन्होंने अज्ञानान्धकार की विनाशक प्रथम ज्ञानरश्मियों का आह्वान किया और सामर्थ्य प्राप्त करके जल को अवर्षक मेघों से, प्रकाश को कठोर अन्धकार से और ज्ञान को घोर अज्ञान के आवरण से मुक्त कराकर सब प्राणियों में वितरित कर दिया।

टि. *सर्वतः प्रसन्न किया* - **अभि प्र सेदुः**। अभि प्र अगच्छन् - वे.। अग्निम् अभिलक्ष्य प्रजग्मुः - सा.। प्रसीदन्ति - दया.। departed - W. did take their places - G. went forward on their way - Ar.

*सत्यनियम को पाना चाहने वालों ने* - **ऋतम् आशुषाणाः**। ऋतं सत्यभूतं गोधनम् अश्नुवानाः - वे.। यज्ञम् अश्नुवानाः सन्तः - सा.। after instituting the sacred rite - W. fain to fulfil the sacred Law of worship - G. towards the Truth desiring to possess it - Ar.

*(तम के) अन्दर* - **वव्रे अन्तः**। वृणोत्याच्छादयतीति वव्रं पर्वतबिलान्तर्वर्ति तमः। तस्मिन् अन्तर् मध्ये स्थिताः। वव्रे। वृणोतेर् औणादिकः कः। कृञादीनां द्वे भवत इति द्विर्वचनम्। सा.।

*ऊपर गौओं को हाँक दिया* - **उत् उस्राः आजन्**। पणिभिर् अपहृता गाः तस्माद् बिलान् निरगमयन् - सा.। उस्राः किरणाः - दया.। they extracted the milk-yielding kine - W. G.

**ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिं तद् एषाम् अन्ये अभितो वि वोचन्।**
**पश्वयन्त्रासो अभि कारम् अर्चन् विदन्त ज्योतिश् चकृपन्त धीभिः।। १४।।**

ते। मर्मृजत। ददृऽवांसः। अद्रिम्। तत्। एषाम्। अन्ये। अभितः। वि। वोचन्।
पश्वऽयन्त्रासः। अभि। कारम्। अर्चन्। विदन्त। ज्योतिः। चकृपन्त। धीभिः।। १४।।

*उन्होंने पवित्र किया (स्वयं को), विदीर्ण करते हुए अद्रि को,*
*उस (कार्य) की इनके, अन्यों ने सर्वतः विशेषेण प्रशंसा की।*
*इन्द्रियों को वश में करने वालों ने, सर्वतः कर्ता की अर्चना की,*
*प्राप्त किया ज्योति को, किया (युक्त स्वयं को) विचारों से।। १४।।*

उन हमारे पूर्वजों ने मेघ, तम, अज्ञान आदि आवरक शक्तियों को ध्वस्त करते हुए, इस पवित्र कार्य को करके स्वयं को भी पवित्र किया और पुण्य का भागी बनाया। उनके इस उत्तम कार्य को

अन्य ऋषियों, मुनियों और मनीषियों ने खूब सराहा। इन्द्रियों को वश में करने वालों, अथवा जलों, रश्मियों आदि को अपने नियन्त्रण में करके उनका समान वितरण करने वाले हमारे पूर्वजों ने उस जगत् के रचयिता परमेश्वर की हृदय से पूजा की। इस प्रकार उन्होंने ज्ञानज्योति को प्राप्त किया और स्वयं को उत्तम विचारों से सम्पन्न कर लिया।

टि. *पवित्र किया* – **मर्मृजत**। पणीन् परिमृष्टयन्तः – वे.। अग्निं पर्यचरन्। मृजूष् शुद्धौ। यङ्लुकि लुङि व्यत्ययेनात्मनेपदम्। निघातः। सा.। worshipped (Agni) - W. splended were they - G. they made themselves bright and pure - Ar.

*विदीर्ण करते हुए अद्रि को* – **ददृवांसः अद्रिम्**। ते अङ्गिरसः गवाम् आवरणं शिलोच्चयं दारितवन्तः – वे.। सा.। विदारका मेघम् – दया.।

*इन्द्रियों को वश में करने वालों ने* – **पश्वयन्त्रासः**। पशुहितयमनाः – वे.। पशुनिर्गमनार्थानि यन्त्राण्युपाया येषां ते ऽङ्गिरसः – सा.। पश्वानि दृष्टानि यन्त्राणि यैस् ते – दया.। with the means of (extricating) the cattle - W. prepared to free the cattle - G. drivers of the herd - Ar.

*सर्वतः कर्ता की अर्चना की* – **अभि कारम् अर्चन्**। अर्चतिर् उच्चारणकर्मा। शङ्खम् आर्चन् जयार्थं ध्मापितवन्तः। अग्निप्रसादाद् अन्धकारं विनाशितवन्तः। वे.। अभिमतस्य प्रयोजनस्य कर्तारम् अग्निम् अभ्यर्चन् अस्तुवन् – सा.। glorified the author of success - W.

*किया (युक्त स्वयं को) विचारों से* – **चकृपन्त धीभिः**। अथ कर्मभिः चकृपन्त कल्पन्ते स्म। सिद्धकर्माण आसन्नित्यर्थः। वे.। बुद्धिभिश् यज्ञान् अकल्पयन् अकुर्वन्। कृपू सामर्थ्ये। ण्यन्तस्य लुङि चङि सन्वद्भावाभावश् छान्दसः। सा.। कृपालवो भवन्ति – दया.। with holy hymns they worshipped - G. they shone with the thoughts - G.

**ते ग॑व्यु॒ता मन॑सा दृ॒ध्रम् उ॒ब्धं गा ये॑मा॒नं परि॒ षन्त॒म् अद्रि॑म्।**
**दृ॒ळ्हं नरो॒ वच॑सा॒ दैव्ये॑न व्र॒जं गोम॑न्तम् उ॒शिजो॒ वि व॑व्रुः।। १५।। १४।।**

ते। ग॒व्य॒ता। मन॑सा। दृ॒ध्रम्। उ॒ब्धम्। गाः। ये॒मा॒नम्। परि॑। सन्त॑म्। अद्रि॑म्।
दृ॒ळ्हम्। नरः॑। वच॑सा। दैव्ये॑न। व्र॒जम्। गोऽम॑न्तम्। उ॒शिजः॑। वि। व॒व्रु॒र् इति॑ वव्रुः।। १५।।

*उन्होंने, गौआं की इच्छा वाले मन से, निरोधक को, संहत को,*
*गौओं के नियन्त्रक को, सर्वतः वर्तमान को, पर्वत को।*
*दृढ़ को, यज्ञ के नेताओं ने, वचन से दिव्यतायुक्त से,*
*गोष्ठरूप को, गौओं वाले को, कामना वालों ने, खोल दिया।। १५।।*

यज्ञकर्म के मार्गदर्शक, अग्रणी परमेश्वर से प्यार करने वाले, उन हमारे पूर्वजों ने जलों, प्रकाशों, ज्ञानरश्मियों, वाणियों आदि सुखसाधनों की कामना वाले मन से इन साधनों को अपने नियन्त्रण में कर लेने वाले, इनको सब ओर से घेर लेने वाले, इनसे परिपूर्ण, इनको रोक लेने वाले, संहत, सुदृढ़ उस पर्वतरूपी गोष्ठ को वेद की दैवी वाणी से सपाट खोल दिया। अर्थात् वैदिक ज्ञान के द्वारा अज्ञान, अन्धकार आदि को ध्वस्त करके इन सुख के साधनों को सब के लिये खोज निकाला।

टि. *गौओं की इच्छा वाले मन से* – **गव्यता मनसा**। पशून् इच्छता मनसा – वे.। गा इच्छता

मनसा - सा.। by a mind seeking the rays - Ar. with a light-seeking mind - Fr.

*निरोधक को* - **दृध्रम्।** दृंहितम् - वे.। गवां निर्गमनद्वारनिरोधकम् - सा.।

*संहत को* - **उब्धम्।** पूर्णम् - वे.। संहतम्। यद्वा। उभिः पूरणार्थः। गोभिः पूर्णम्। उभ्नातिर् हन्तिना समानार्थः। यद्वा। उभ उम्भ पूरणे। कर्मणि क्तः। सा.।

*पर्वत को* - **अद्रिम्।** शिलोच्चयम् - वे.। सा.। the obstinate ignorance of the material world - Fr.

*वचन से दिव्यतायुक्त से* - **वचसा दैव्येन।** देवसम्बन्धिन्या स्तुत्या - वे.। अग्निविषयेण वेदात्मकेन स्तोत्रेण - सा.। by the power of divine prayer - W. with their celestial speech - G. by the divne word - Ar.

*खोल दिया* - **वि वव्रुः।** विवृतद्वारं कृतवन्तः - वे.। गोनिर्गमनार्थम् उद्घाटितवन्तः - सा.।

**ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस् त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन्।**
**तज् जानतीर् अभ्यनूषत व्रा आविर् भुवद् अरुणीर् यशसा गोः।। १६।।**

ते। मन्वत। प्रथमम्। नाम। धेनोः। त्रिः। सप्त। मातुः। परमाणि। विन्दन्।
तत्। जानतीः। अभि। अनूषत। व्राः। आविः। भुवत्। अरुणीः। यशसा। गोः।। १६।।

*उन्होंने जान लिया सर्वप्रथम, नाम को प्रीणयित्री (वाणी) के,*
*(फिर) तीन गुणा सात, माता के मुख्य (नामों) को जान लिया।*
*उसको जानने वालियों की, स्तुति की उन्होंने उषाओं की,*
*प्रकट हुई (फिर) अरुणवर्णा (उषा), तेज के साथ सूर्य के।। १६।।*

यज्ञ का प्रचार-प्रसार करने वाले उन हमारे पूर्वजों ने सर्वप्रथम सब को प्रसन्न करने वाली वेदवाणी को जाना। तत्पश्चात् उन्होंने वेदवाणी रूपी माता के तीन गुणा सात मुख्य नामों अर्थात् गायत्री से लेकर जगती तक सात, अतिजगती से लेकर अतिधृति तक सात और कृति से लेकर उत्कृति- पर्यन्त ये सात, सब मिलाकर इन इक्कीस छन्दों का ज्ञान प्राप्त किया। उसके पश्चात् उन पूर्वजों ने ऋचाओं के साथ निकट से सम्बन्ध रखने वाली, अज्ञानान्धकार का उच्छेदन करने वाली प्रथमज्ञानरश्मि रूपी उषाओं की स्तुति की और उनका सेवन किया। स्तुति और सेवन किये जाने पर वे प्रथमज्ञानरश्मिरूपी उषाएं पूर्णज्ञानरूपी सूर्य के तेज के साथ, उसके आगे-आगे, प्रादुर्भूत हुईं, अर्थात् उन हमारे पूर्वजों को पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो गई।

टि. *उन्होंने जान लिया* - **ते मन्वत।** ते अजानत - सा.। मन्यन्ते - दया.। meditated - Ar.

*प्रीणयित्री (वाणी) के* - **धेनोः।** वाचः - सा.। दया.। the cosmic milch-cow, the Divine Mother - Fr.

*तीन गुणा सात को जान लिया* - **त्रिः सप्त विन्दन्।** त्रिः सप्तसंख्यानि (परमाणि) रत्नानि अविन्दन्। तत्र सप्त ग्राम्याः पशवः चतुर्दश ग्राम्यारण्याः अन्नानि एवम् एकविंशतिर् भवति। वे.। त्रिः सप्त एकविंशतिसंख्याकानि स्तुतिसाधनानि छन्दांसि। तानि च गायत्र्यादीनि जगत्यन्तानि सप्त। अति-जगत्यादीन्यतिधृत्यन्तानि सप्त। कृतिप्रभतीन्युत्कृतिपर्यन्तानि सप्तेति। विन्दन् अलभन्त। सा.। विन्दन्

जानन्ति - दया.। knowing the thrice seven - W. Her three times seven supreme planes are the triple Absolute of Being-Consciousness-Bliss with each plane in its sevenfold nature encompassing all the seven planes of existence - Fr.

*स्तुति की उषाओं की* - **अनूषत व्राः**। व्रा इत्युषोनाम। उषसो ऽस्तुवन्। अनूषत। णु स्तुतौ। लुङि रूपम्। कुटादित्वाद् अगुणः। सा.। glorified the conscious dawns - W.

*तेज के साथ सूर्य के* - **यशसा गोः**। सूर्यस्य तेजसा सह - वे.। सा.।

**नेशत् तमो दुधितं रोचत द्यौर् उद् देव्या उषसो भानुर् अर्त।**
**आ सूर्यो बृहतस् तिष्ठद् अज्राँ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्।। १७।।**

नेशत्। तमः। दुधितम्। रोचत। द्यौः। उत्। देव्याः। उषसः। भानुः। अर्त।
आ। सूर्यः। बृहतः। तिष्ठत्। अज्रान्। ऋजु। मर्तेषु। वृजिना। च। पश्यन्।। १७।।

*नष्ट हुआ अन्धकार भगाया हुआ, चमक उठा आकाश,*
*उदित, प्रकाशमाना की, उषा की प्रभा हो गई है।*
*आरूढ़ सूर्य महानों पर, हो गया है रश्मियों पर,*
*सत्कर्मों को मनुष्यों में, कुटिलों को भी देखता हुआ।। १७।।*

जब हमारे पूर्वजों ने वेदवाणी को गहनता से जाना, तो अज्ञान का अन्धकार इस प्रकार नष्ट हो गया, जिस प्रकार उषा से विवासित रात्रि का अन्धकार नष्ट हो जाता है। सर्वत्र ज्ञान का प्रसार इस प्रकार हो गया, जिस प्रकार धरती और आकाश सब स्थानों पर प्रकाश का साम्राज्य हो जाता है। वह सर्वप्रेरक और सर्वपालक परमेश्वर भी मनुष्यों के भले और बुरे कर्मों का निरीक्षण करता हुआ और तदनुसार फल देता हुआ अपने ज्ञानप्रकाश में इस प्रकार स्थित हो गया, जिस प्रकार सूर्य अपनी रश्मियों के प्रकाश में स्थित हो जाता है।

टि. *नष्ट हुआ* - **नेशत्**। नष्टम् आसीत् - वे.। अनश्यत्। णश अदर्शने। लङि णशिमन्योर् अलिट्येत्वम्। शपः पित्त्वाद् अनुदात्तत्वे धातुस्वरः। सा.।

*भगाया हुआ* - **दुधितम्**। दुर्निधानम् - वे.। दुधिः प्रेरणकर्मा। उषसा प्रेरितं सत्। सा.। पूर्णम् - दया.। scattered - W. turbid - G. was wounded - Ar.

*आरूढ़ हो गया रश्मियों पर* - **आ तिष्ठत् अज्रान्**। रश्मीन् आ तिष्ठत् - वे.। अज्रान् पर्वतान् गमनशीलान् रश्मीन् वा अध्यतिष्ठत् - सा.। अज्रान् जगति प्रक्षिप्तान् - दया.। stood above the undecaying mountains - W. ascended to the wide expanses - G. entered into the fields of the Vast - Ar.

*सत्कर्मों को* - **ऋजु**। ऋजूनि साधूनि कर्माणि -वे.। ऋजु सत्कर्म - सा.। सरलम् - दया.। right - W. deeds good - G. straight - Ar.

*कुटिलों को* - **वृजिना**। वृजिनानि पापानि - वे.। अनृजूनि असत्कर्माणि - सा.। wrong - W. evil - G. crooked things - Ar.

**आद् इत् पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्नाद् इद् रत्नं धारयन्त द्युभक्तम्।**

**विश्वे॒ विश्वा॑सु दुर्या॑सु दे॒वा मित्र॑ धि॒ये वरु॑ण स॒त्यम् अ॑स्तु।। १८।।**

आत्। इत्। प॒श्चा। बु॒बु॒धा॒नाः। वि। अ॒ख्य॒न्। आत्। इत्। रत्न॑म्। धा॒रय॑न्त॒। द्युऽभ॑क्तम्।
विश्वे॑। विश्वा॑सु। दुर्या॑सु। दे॒वाः। मित्र॑। धि॒ये। व॒रु॒ण॒। स॒त्यम्। अ॒स्तु।। १८।।

*तदनन्तर, पीछे सब ओर, बोधयुक्तों ने पूर्ण रूप से देखा,*
*तदनन्तर रमणीय धन को, धारण किया देवसेवित को।*
*सब के सब, सभी तोरणयुक्त घरों में, देवगण (पधारे),*
*हे मित्र!, प्रज्ञावान् के लिये, हे संकटनिवारक!, सत्य होवे।। १८।।*

जब महान् ज्ञानरूपी सूर्य का उदय हुआ, तो बोध से सम्पन्न उन हमारे पूर्वजों ने अपने आगे-पीछे सब ओर इस जगत् को निहारा और उस ज्ञान का प्रयोग प्रगति, उन्नति और विकास के कार्यों में किया। इससे उनको बाह्य और आभ्यन्तर सब प्रकार के उन रमणीय धनों की प्राप्ति हुई, जिनका सेवन केवल देवताओं को ही प्राप्त था। उन्होंने अपने तोरणयुक्त विशाल भवनों में विद्वानों, साधु-संन्यासियों और अतिथियों का उनके आगमन पर स्वागत और सम्मान किया। हे सब के मित्रभूत और सब कष्टों का निवारण करने वाले अग्रणी परमेश्वर! ये तेरी आशीः और उपदाएं ज्ञानी जनों को सदा प्राप्त होती रहें।

टि. *पीछे की ओर* - **पश्चा**। पृष्ठ्यदेशेषु - सा.। पश्चात् - दया.। afterwards - G.

*पूर्ण रूप से देखा* - **वि अख्यन्**। विविधम् अपश्यन् - वे.। अशेषेण ता गा अपश्यन् - सा.। उपदिशन्तु - दया.। they looked around - G. they saw all behind and wide around - Ar.

*देवसेवित को* - **द्युभक्तम्**। अह्नां सम्भक्तम् - वे.। दीप्तियुक्तं देवैः संभक्तं वा - सा.।

*तोरणयुक्त घरों में* - **दुर्यासु**। यजमानगृहेषु - वे.। गृहेषु - सा.। दया.। in gated houses - Ar. the gated houses that are bodies of creatures. They saw all beings in the Self and the Self in all beings - Fr.

*प्रज्ञावान् के लिये* - **धिये**। मनुष्याणां कर्मकरणाय - वे.। कर्मणां कर्त्रे स्तोत्रे वा यजमानाय - सा.। प्रज्ञायै कर्मणे वा - दया.। to him who worships thee - W. for the thought - Ar.

*हे संकटनिवारक* - **वरुण**। हे उपद्रवाणां वारक - सा.। दुष्टानां बन्धक - दया.।

**अच्छा॑ वोचेय शुशुचा॒नम् अ॒ग्निं होता॑रं वि॒श्वभ॑रस॒ं यजि॑ष्ठम्।**
**शुच्यूधो॑ अतृ॒ण॒न् न गवा॒म् अन्धो॒ न पू॒तं परि॑षिक्तम् अ॒ंशोः।। १९।।**

अच्छ॑। वो॒चे॒य॒। शु॒शु॒चा॒नम्। अ॒ग्निम्। होता॑रम्। वि॒श्वऽभ॑रसम्। यजि॑ष्ठम्।
शुचि॑। ऊध॑ः। अ॒तृ॒ण॒त्। न। गवा॑म्। अन्ध॑ः। न। पूतम्। परि॑ऽसिक्तम्। अ॒ंशोः।। १९।।

*सम्यक् स्तुति करता हूँ मैं, अत्यन्त दीप्तिमान् की, अग्नि की,*
*आह्वाता की, सब का भरण-पोषण करने वाले की, पूज्यतम की।*
*पवित्र ओढी को दुहा नहीं, (इस उपासक ने) गौओं की,*
*सोमान्न नहीं छाना हुआ (छानने से), परोसा गया है, सोमलता का।। १९।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तू अत्यन्त प्रकाशमान है, सब का सत्य नियमों के

पालन के लिये आह्वान करता है, सब जीवों का भरण-पोषण करता है, इसलिये सब का पूज्यतम है। मैं तेरा उपासक अकिञ्चन हूँ। मेरे पास तेरी स्तुति के सिवाय और कुछ नहीं। मैंने तुझे आहुति देने के लिये न तो गौओं के थनों से पवित्र दूध को दुहा है और न ही सोमलताओं को कूटकर और छानने में से छानकर सोमरस तैयार किया है। मैं तो अपनी इस स्तुति के साथ ही तेरी शरण में आ गया हूँ। इन्हीं भावों को अभिव्यक्त करने वाली, सुभद्राकुमारी चौहान की ये पंक्तियां देखिये :

नहीं दान नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चली आई।
पूजा की विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आई।।
पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो।
दान दक्षिणा और न्योछावर, इसी भिखारिन को समझो।।

टि. *सम्यक् स्तुति करता हूँ मैं* - **अच्छ वोचेय।** अभिप्रब्रवाणि - वे.। अभिलक्ष्य स्तवानि। वोचेय। ब्रूञ आशीर्लिङि ब्रुवो वचिः। लिङ्याशिष्यङ्। छन्दस्युभयथेति सार्वधातुकत्वात् सीयुटः सलोपः। सा.। सम्यक् उपदिशेय - दया.।

*दुहा नहीं* - **अतृणत् न।** यथा गवाम् ऊधः कश्चित् शुचि पयः तृणत्ति - वे.। तवाहुत्यर्थं यजमानो न दोग्धि। उतृदिर् हिंसानादरयोः। दोहनम् एवोधोहिंसनम्। सा.। as if one drank - Ar.

*परोसा गया है* - **परिषिक्तम्।** पात्रेषु परितः सिक्तम् - वे.। गृहेषु न प्रक्षिप्तम्। सिञ्चतेः कर्मणि क्तः। उपसर्गात् सुनोतीति संहितायां षत्वम्। गतिर् अनन्तर इति गतेः स्वरः। सा.।

**विश्वेषाम् अदितिर् यज्ञियानां विश्वेषाम् अतिथिर् मानुषाणाम्।**
**अग्निर् देवानाम् अव आवृणानः सुमृळीको भवतु जातवेदाः।। २०।। १५।।**

विश्वेषाम्। अदितिः। यज्ञियानाम्। विश्वेषाम्। अतिथिः। मानुषाणाम्।
अग्निः। देवानाम्। अवः। आऽवृणानः। सुऽमृळीकः। भवतु। जातऽवेदाः।। २०।।

*सब का (है) अखण्डनीय उत्पत्तिकर्त्ता, पूजनीयों का,*
*सब का अतिथि (की तरह पूज्य है), मनुष्यों का।*
*अग्नि उपासकों की (समृद्धि की), सर्वतः रक्षा करता हुआ,*
*सुन्दर सुखदाता हो जाए, उत्पन्न हुओं को जानने वाला।। २०।।*

सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाला वह परमेश्वर देवों, विद्वानों, उपासकों आदि सभी पूज्य मनुष्यों और पदार्थों का अखण्डनीय स्वतन्त्र उत्पत्तिकर्त्ता है। वह मनुष्यों के आवासों और हृदयों में विद्वान् अतिथि की तरह पूज्य है। संसार के सभी पदार्थों का ज्ञाता वह परमात्मा उपासकों की समृद्धियों की सब ओर से रक्षा करता हुआ उनको सदा उत्तम सुख प्रदान करता रहे।

टि. *अखण्डनीय उत्पत्तिकर्त्ता* - **अदितिः।** अक्षीणः - वे.। अदितिर् देवमाता। तद्वद् देवानां पोषक इत्यर्थः। यद्वा। विश्वेषां देवानाम् अदितिर् भूस्थानीयः आधारभूत इति यावत्। सा.। the freest God - G. the indivisibility (of all the gods) - Ar.

*पूजनीयों का* - **यज्ञियानाम्।** यज्ञार्हाणाम् - वे.। यज्ञार्हाणां देवानाम् - सा.।

उपासकों की - **देवानाम्**। देवनशीलानां स्तोतृणाम् - सा.।

*समृद्धियों की रक्षा करता हुआ* - **अवः आवृणानः**। रक्षणं यज्ञकरणात् आ वृणानः - वे.। अवो ऽन्नं हविर् आवृणानः संभजन् - सा.। who hath secured the God's high favour - G.

*सुन्दर सुखदाता* - **सुमृळीकः**। सुष्ठु सुखयिता - वे.। सा.। gracious - G.

## सूक्त २

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। विंशत्यृचं सूक्तम्।

**यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर् निधायि।**
**होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै हव्यैर् अग्निर् मनुष ईरयध्यै॥ १॥**

यः। मर्त्येषु। अमृतः। ऋतऽवा। देवः। देवेषु। अरतिः। निऽधायि।
होता। यजिष्ठः। मह्ना। शुचध्यै। हव्यैः। अग्निः। मनुषः। ईरयध्यै॥ १॥

*जो मरणधर्माओं में अमरणधर्मा, (जो) सत्यस्वरूप (है),*
*प्रकाशमान प्रकाशमानों में, सर्वत्रगन्ता होकर स्थित है।*
*आह्वाता, अतिशय पूजनीय, महान् तेज से पवित्र करने के लिये,*
*हव्यों के द्वारा अग्नि मनुष्यों को, (लक्ष्य के प्रति) प्रेरित करने के लिये॥ १॥*

इस संसार में सभी पदार्थ मृत्यु के धर्म वाले हैं, नश्वर हैं, परन्तु वह एकमात्र परमात्मा ही अमरणधर्मा है, अविनश्वर, अजर और अमर है। वह सत्यस्वरूप है। वह सब देवों का देव महादेव है। केवल वही प्रकाशमान है। शेष सभी पदार्थ उसी के प्रकाश से प्रकाशमान हैं। वह सर्वत्र गमन करने वाला सभी स्थानों में स्थित हो गया है, व्याप्त हो गया है। वह सब का सन्मार्ग में आह्वान करता है। वह सब से अधिक पूजनीय है। वह अपने उपासकों को अपने महान् तेज से पवित्र करने के लिये सदा उद्यत रहता है। वह अग्रणी परमेश्वर आहुतिदान आदि शुभ कर्मों के द्वारा सभी मनुष्यों को जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की ओर प्रेरित करने के लिये सदा तत्पर रहता है।

टि. *सत्यस्वरूप* - **ऋतावा**। सत्यवान् - वे.। सा.। सत्यस्वरूपः - दया.। the observer of truth - W. the Faithful One - G.

*सर्वत्रगन्ता होकर स्थित है* - **अरतिः निधायि**। हविर् आदाय गच्छन् निहितः - वे.। अरतिर् अभिगन्ता शत्रूणाम्, निधायि निहितः। यद्वा। देवलोके गन्ता निहितः। सा.। has been placed triumphant - W. appointed envoy - G. the traveller has been set within - Ar.

*महान् तेज से पवित्र करने के लिये* - **मह्ना शुचध्यै**। अत्यन्तं ज्वलितुम् - वे.। स्वकीयेन महता तेजसा शुचध्यै दीपितुम् उत्तरवेद्यां निहितः - सा.। महत्त्वेन शोचितुं पवित्रीकर्तुम् - दया.। must shine forth in glory - G. most strong for sacrifice - Ar.

*प्रेरित करने के लिये* - **ईरयध्यै**। देवान् प्रति गन्तुम् - वे.। यजमानस्य स्वर्गं प्रति प्रेरणाय निहितः - सा.। प्रेरितुम् - दया.। for the elevation of the worshipper - W. will be raised high - G. to give speed on the way - Ar.

**इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो जाताँ उभयाँ अन्तर् अग्ने।**
**दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान् वृषणः शुक्रांश् च।। २।।**

इह। त्वम्। सूनो इति। सहसः। नः। अद्य। जातः। जातान्। उभयान्। अन्तः। अग्ने।
दूतः। ईयसे। युयुजानः। ऋष्व। ऋजुऽमुष्कान्। वृषणः। शुक्रान्। च।। २।।

*यहाँ तू, हे उत्पादक बल के!, हमारे (कर्म में) आज,*
*प्रकट होकर, उत्पन्न हुओं के दोनों के बीच में, हे अग्ने।*
*दुष्टसन्तापक, गमन कर तू, जोतकर अश्वों को, हे दर्शनीय,*
*पुष्ट पुट्ठों वालों को, रेतःसेचकों को, और कान्ति वालों को।। २।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तू सब प्रकार के बलों को उत्पन्न करने वाला है। तू दुष्टों को उनके पापकर्मों का दण्ड देकर उन्हें सन्तप्त करता है। हे सब के द्वारा साक्षात्कार के योग्य प्रभो! तू हमारे द्वारा किये जाने वाले शुभ कर्मों में विद्यमान होकर जगत् में उत्पन्न अपनी दोनों प्रकार की सन्तानों देवों और असुरों के मध्य अपने उत्तम बलों के साथ आ और सज्जनों का उद्धार तथा दुष्टों का संहार कर।

टि. *हे उत्पादक बल के* – **सूनो सहसः**। षू प्रेरणे। सुवः कित् (उणा. ३.३५) इति नुप्रत्ययः। कित्त्वाद् गुणाभावः। ऋ. १.३७.१० मन्त्रे सायणभाष्यं द्रष्टव्यम्।। सहसः पुत्र – वे.। सा.।

*दोनों के बीच में* – **उभयान् अन्तः**। उभयान् अपि जातान् मध्येन – वे.। उभयान् देवमनुष्यान् अन्तः तेषाम् उभयेषां मध्ये – सा.। intermediate between both (gods and men) - W.

*पुष्ट पुट्ठों वालों को* – **ऋजुमुष्कान्**। मुष्कशब्देन मांसलो ऽभिधीयते। ऋजवः प्रसाधकाः। ऋजवश् च ते मुष्काश् चेत्यृजुमुष्काः। सा.। robust - W.

*रेतःसेचकों को* – **वृषणः**। यूनः यजमानान् – वे.। रेतःसेचनसमर्थान्। यद्वा। हविःसेचनसमर्थान् यजमानान्। सा.। vigorous - W.

*कान्ति वालों को* – **शुक्रान्**। दीप्तान् देवान् – वे.। दीप्यमानान् अश्वान्। यद्वा। दीप्तान् देवान्। सा.। resplendent - W.

**अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू ऋतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा।**
**अन्तर् ईयसे अरुषा युजानो युष्मांश् च देवान् विश आ च मर्तान्।। ३।।**

अत्या। वृधस्नू इति वृधऽस्नू। रोहिता। घृतस्नू इति घृतऽस्नू। ऋतस्य। मन्ये। मनसा। जविष्ठा।
अन्तः। ईयसे। अरुषा। युजानः। युष्मान्। च। देवान्। विशः। आ। च। मर्तान्।। ३।।

*दो अश्वों को, वृद्धिवर्षकों को, रक्तवर्णों को, प्रकाशवर्षकों को,*
*(तुझ) सत्यस्वरूप के, सराहता हूँ मैं, मन से अधिक वेग वालों को।*
*बीच में गमन करता है तू, आरोचमानों को जोत कर (अश्वों को),*
*अपनों के भी देवों के, प्रजाओं के भी सब ओर से मनुष्यों की।। ३।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! तू सत्यस्वरूप है। जीवन और मृत्यु ये रञ्जन करने वाले तेरे दो अश्व हैं। ये एक-दूसरे के पूरक हैं और परस्पर सहयोग करते हुए इस संसार में वृद्धि और प्रकाश को लाने

वाले हैं। ये मन से भी अधिक वेगवान् हैं। मैं इन दोनों का आदर और सम्मान करता हूँ। तू इन आरोचमान अश्वों को इस जगत् के कार्यों में जोतकर इसे नियन्त्रित करता हुआ अपनी दैवी और मानवी प्रजाओं के मध्य उनके शुभाशुभ कर्मों का फल देता हुआ सर्वत्र गमन कर रहा है।

टि. दो *अश्वों को* - **अत्या।** अतनशीलौ - वे.। अश्वौ - सा.।

*वृद्धिवर्षकों को* - **वृधस्नू।** वर्धमानान् प्रति गन्तारौ - वे.। वर्धयतीति वर्धम् अन्नम्। तत् क्षरन्तौ। सा.। दया.। food-bestowing - W. who pour down blessing - G. raining increase - Ar.

*प्रकाशवर्षकों को* - **घृतस्नू।** घृतं प्रति गन्तारौ - वे.। घृतम् उदकं तत् स्रवन्तौ - सा.। water-shedding - W. dropping oil - G. raining light - Ar.

*सराहता हूँ मैं* - **मन्ये।** जानामि - वे.। स्तौमि। मन्यतिर् अर्चतिकर्मा। सा.। I laud - G. I hold in thought - Ar.

*मन से* - **मनसा।** मनसः। सुपां सुलुग् इति पञ्चम्या आकारः। सा.। with my mind - Ar.

**अर्यमणं वरुणं मित्रम् एषाम् इन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत।**
**स्वश्वो अग्ने सुरथः सुराधा एद् उ वह सुहविषे जनाय।। ४।।**

अर्यमणम्। वरुणम्। मित्रम्। एषाम्। इन्द्राविष्णू इति। मरुतः। अश्विना। उत।
सुऽअश्वः। अग्ने। सुऽरथः। सुऽराधाः। आ। इत्। ऊँ इति। वह। सुऽहविषे। जनाय।। ४।।

*अर्यमा को, वरुण को, मित्र को, इन (मनुष्यों) के (मध्य),*
*इन्द्र और विष्णु को, मरुतों को, अश्वियों को भी।*
*शोभन अश्वों वाला, हे अग्ने!, शोभन रथ वाला, शोभन ऐश्वर्यों वाला,*
*इस ओर वहन कर तू, शोभन हवियों वाले के लिये, मनुष्य के लिये।। ४।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले जाने वाले परमेश्वर! तू उत्तम बलों वाला है, तू उत्तम गमनसाधनों वाला है और तू उत्तम ऐश्वर्यों वाला है। तू विभिन्न शक्तियों का स्वामी है। इन मनुष्यों में से जो मनुष्य देवताओं को उत्तम हवियां प्रदान करता है, जिसका सब कुछ तुझे ही समर्पित है, उस अपने अनन्य उपासक को तू बाह्य और आभ्यन्तर शत्रुओं को वश में करने वाली, सब ओर से घेरकर रक्षा करने वाली, मृत्यु से त्राण करने वाली, ऐश्वर्यों को देने वाली, सर्वत्र व्याप्त होने वाली, प्राणों को सशक्त करने वाली तथा मन और बुद्धि को बलवान् बनाने वाली अपनी शक्तियां प्रदान कर।

टि. *इन (मनुष्यों) के (मध्य)* - **एषाम्।** एषां मनुष्याणां मध्ये - वे.। सा.।

*शोभन ऐश्वर्यों वाला* - **सुराधाः।** शोभनधनः - वे.। शोभनधनोपेतः - सा.। most bountiful - G. in the joy of achievement - Ar.

*शोभन हवियों वाले के लिये* - **सुहविषे।** शोभनहविष्काय - वे.। सा.।

**गोमाँ अग्ने ऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदम् इद् अप्रमृष्यः।**
**इळावाँ एषो असुर प्रजावान् दीर्घो रयिः पृथुबुध्नः सभावान्।। ५।। १६।।**

गोऽमान्। अग्ने। अविऽमान्। अश्वी। यज्ञः। नृवत्ऽसखा। सदम्। इत्। अप्रऽमृष्यः।
इळाऽवान्। एषः। असुर। प्रजाऽवान्। दीर्घः। रयिः। पृथुऽबुध्नः। सभाऽवान्।। ५।।
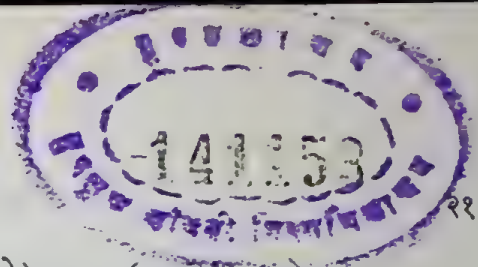
*गौओं वाला, हे अग्ने!, भेड़ों वाला, अश्वों वाला, (होवे) यज्ञ (हमारा),*
*नेतृत्व करने वाले सखाओं वाला, सदा ही नष्ट न किया जा सकने वाला।*
*हविष्यान्नवान् (हो) यह, हे बलवान्!, प्रजावान्,*
*दीर्घ, धनयुक्त, पृथ्वाधार, सभावान्।। ५।।*

हे दुष्ट आसुरी शक्तियों को उखाड़ फैंकने वाले अग्रणी परमेश्वर! हमारा यह यज्ञ गौओं, घोड़ों, भेड़ों आदि पशुओं को देने वाला, मार्गदर्शन करने वाले मित्रों वाला, सदा ही विघ्न-बाधाओं से रहित, सुन्दर हव्य पदार्थों वाला, सन्तति और धन प्रदान करने वाला, दीर्घ काल तक चलने वाला, विस्तृत आधार वाला और विद्वज्जनों की ज्ञानचर्चाओं के लिये विशाल सभाभवन वाला होवे।

इसी प्रकार हमारा यह जीवनयज्ञ ज्ञान, बल और सौहार्द से युक्त, मार्गदर्शक मित्रों वाला, सदा विघ्नबाधाओं से रहित, देवों के प्रति समर्पण वाला, दीर्घ काल तक चलने वाला, ऐश्वर्यों से युक्त, विशाल आधार वाला तथा ज्ञानचर्चाओं, चिन्तन, मनन आदि के उत्तम अवसरों वाला होवे।

टि. *नेतृत्व करने वाले सखाओं वाला* - **नृवत्सखा**। नेतृपुरुषा यस्य सखायः सः - वे.। नरः कर्मणां नेतारो ऽध्वर्य्वादयस् तद्वन्तः सखायो ऽनुष्ठातारो यजमाना यस्य स तथोक्तः - सा.। नृवत्सु नायकयुक्तेषु सुहृत् - दया.। celebrated by thy worshipper aided by the priests - W. with brave friends - G. like a human friend - Ar.

*नष्ट न किया जा सकने वाला* - **अप्रमृष्यः**। अनभिभवनीयः - वे.। अप्रधृष्यः - सा.। परैर् न प्रमर्षणीयः - दया.। uninterrupted - W. inviolable - Ar.

*हे बलवान्* - **असुर**। हे प्राज्ञ - वे.। हे बलवन् - सा.। दुष्टानां प्रक्षेप्तः - दया.। mighty Agni - W. O mighty Lord - Ar.

*धनयुक्त* - **रयिः**। धनहेतुः - वे.। धनवान्। लुप्तमत्वर्थीयः। सा.।

*सभावान्* - **सभावान्**। परिषद्युक्तः - वे.। उपद्रष्टृरूपसभायुक्तः - सा.।

**यस् ते इ॒ध्मं ज॒भर॑त् सिष्विदा॒नो मू॒र्धानं॑ वा त॒तप॑ते त्वा॒या।**
**भुव॒स् तस्य॒ स्वत॑वाँः पा॒युर् अ॑ग्ने॒ विश्व॑स्मात् सीम् अघाय॒त उ॑रुष्य।। ६।।**

यः। ते॒। इ॒ध्मम्। ज॒भर॑त्। सि॒स्वि॒दा॒नः। मू॒र्धान॑म्। वा॒। त॒तप॑ते। त्वा॒ऽया।
भुव॑ः। तस्य॑। स्वऽत॑वान्। पा॒युः। अ॒ग्ने॒। विश्व॑स्मात्। सी॒म्। अ॒घ॒ऽय॒तः। उ॒रु॒ष्य॒।। ६।।

*जो तेरे लिये समिधाओं को लाता है, पसीना-पसीना होता हुआ,*
*सिर को भी तपाता है (समिद्भार से), तेरी कामना के कारण।*
*हो जा उसका, स्वकीय बल से बलवान् (तू), रक्षक, हे अग्ने!,*
*प्रत्येक से उसकी, पाप की कामना वाले से, रक्षा कर तू।। ६।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले अग्रणी परमेश्वर! जो याजक तेरे असीम प्यार के कारण यज्ञ के लिये परिश्रम करके, पसीना बहाकर और सिर को कष्ट देकर वन से समिधाओं के गट्ठड़ को लाता है तथा यज्ञ के अन्य सम्भारों का सम्भरण करता है, और इसी प्रकार अन्तर्यज्ञ में पवित्र विचारों और उदात्त भावनाओं रूपी समिधाओं और श्रद्धारूपी आज्य के साथ अपने भक्तिरसरूपी सोम को

तुझे समर्पित करता है, तू सर्वशक्तिमान् उसका सब ओर से रक्षक हो जा और पापकर्म की इच्छा वाले प्रत्येक दुष्ट जन से उसकी रक्षा कर।

टि. *लाता है* - **जभरत्**। भरति - वे.। आहरति। हरतेर् लुङि चङि रूपम्। सा.।

*पसीना-पसीना होता हुआ* - **सिष्विदानः**। स्विद्यन्। सिस्विदानः स्विद्यमानः सन्। ञिष्विदा गात्रक्षरणे। कानचि रूपम्। संहितायाम् आदेशप्रत्ययोर् इति धातुसकारस्य षत्वम्। सा.।

*तपाता है* - **ततपते**। तापयति - वे.। काष्ठभारेण तापयति - सा.।

*तेरी कामना के कारण* - **त्वाया**। त्वत्कामनया - वे.। त्वाम् आत्मन इच्छतीत्यर्थे क्यच्। दकारस्य छान्दसम् आत्वम्। सुपां सुलुग् इति तृतीयाया आकारः। सा.। thy faithful servant - G.

*हो जा* - **भुवः**। भव - वे.। भवतेर् लेट्यडागमे रूपम्। भूसुवोस् तिङीति गुणप्रतिषेधः। सा.।

*स्वकीय बल से बलवान्* - **स्वतवान्**। स्वायत्तबलः - वे.। स्वतवान् धनवान् इति तवलकार उक्तम्। धनवान् भवसि। स्वतवाँः पायुर् इत्यत्र संहितायां स्वतवान् पायौ (पा. ८.३.११) इति नकारस्य रुत्वम्। अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वेत्याकारो ऽनुनासिकः। रेफस्य विसर्जनीयः। सा.। स्वेन प्रवृद्धः - दया.। self-strong - G.

*पाप की कामना वाले से* - **अघायतः**। पापम् इच्छतः - वे.। अघं पापम् इच्छतः पुरुषात् - सा.। who seek to do him mischief - G.

*रक्षा कर तू* - **उरुष्य**। रक्ष - वे.। उरुशब्दः कण्ड्वादिः। लोटि रूपम्। निघातः। सा.।

**यस् ते॒ भ॒राद् अन्नि॑यते चि॒द् अन्न॑ नि॒शिष॑न् म॒न्द्रम् अति॑थिम् उ॒दीर॑त्।**
**आ दे॑व॒युर् इ॒नध॑ते दु॒रो॒णे तस्मि॑न् र॒यिर् ध्रु॒वो अ॑स्तु॒ दास्वा॑न्॥ ७॥**

यः। ते॒। भरा॑त्। अन्नि॑ऽयते। चि॒त्। अन्न॑म्। नि॒ऽशिष॑त्। म॒न्द्रम्। अति॑थिम्। उ॒त्ऽईर॑त्।
आ। दे॒व॒ऽयुः। इ॒नध॑ते। दु॒रो॒णे। तस्मि॑न्। र॒यिः। ध्रु॒वः। अ॒स्तु॒। दास्वा॑न्॥ ७॥

*जो तेरे लिये लाता है, अन्न के इच्छुक के लिये ही, अन्न को,*
*नितरां अनुशासित करता है हर्षद सोम को, (तुझ) अतिथि का बखान करता है।*
*सब ओर से तुझ देव की कामना वाला, समिद्ध करता है (तुझको) घर में (अपने),*
*उसके निमित्त धन शाश्वत होवे (तेरा), (अन्यों को) दान में दिया जाने वाला॥ ७॥*

हे अग्रणी परमेश्वर! जो उपासक तुझ आहुति और समर्पण की कामना वाले के लिये अपनी आहुतियों और नैवेद्यों को समर्पित करता है, जो अनुशासन के साथ आनन्दप्रद सोमरस को और अपने भक्तिभाव को तुझे भेंट करता है, और जो तुझ पूज्य अतिथि का बखान और गुणगान करता है, देवों के देव तुझ परमदेव से प्रीत करने वाले और अपने घर तथा हृदय में तुझे प्रकाशित करने वाले उस अपने उपासक को तू नित्य, अनश्वर और दानयोग्य धन से भरपूर कर दे।

टि. *अन्न के इच्छुक के लिये* - **अन्नियते**। अन्नम् इच्छते - वे.। अन्नम् आत्मन इच्छते। क्यच्। क्यचि चेतीत्वम्। ह्रस्वश् छान्दसः। सा.। though thou hast food in plenty - G.

*नितरां अनुशासित करता है* - **निशिषत्**। नियमेन शास्ति - वे.। नितरां प्रयच्छति। शासु अनुशिष्टौ। लुङि सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश् चेति च्लेर् अङादेशः। शास इदंहलोर् इतीत्वम्। सा.। who whets

thy flame - Ar.

*बखान करता है* - **उदीरत्।** उदीरयति अरण्योर् उत्पादयति - वे.। उत्तरवेद्यां प्रणयति - सा.।

*समिद्ध करता है* - **इनधते।** समिद्धं करोति - वे.। समिन्धते। ञिइन्धी दीप्तौ। लटि व्यत्ययेन शप्। रुधादित्वात् श्नम्। श्नान् नलोप इति धातुनकारलोपः। सा.।

*धन* - **रयिः।** पुत्रः - सा.। धनम् - दया.। a son - W. wealth - G.

*दान में दिया जाने वाला* - **दास्वान्।** दानवान् अर्थिभ्यो दीयमानः - वे.। औदार्योपेतः। दासृ दाने। सम्पदादिलक्षणो भावे क्विप्। तदस्यास्तीति मतुप्। सा.। दाता - दया.। liberal (in offerings) - W. freely giving - G.

**यस् त्वां दोषा य उषसि प्रशंसात् प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान्।**
**अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान् तम् अंहसः पीपरो दाश्वांसम्।। ८।।**

यः। त्वा। दोषा। यः। उषसि। प्रऽशंसात्। प्रियम्। वा। त्वा। कृणवते। हविष्मान्।
अश्वः। न। स्वे। दमे। आ। हेम्याऽवान्। तम्। अंहसः। पीपरः। दाश्वांसम्।। ८।।

*जो तेरी सायंकाल में, जो उषाकाल में, स्तुति करता है,*
*और प्रिय तुझको बना लेता है, हवियां देने वाला।*
*अश्व की तरह, अपने घर में सर्वतः, सुनहरी कक्ष्या वाले की,*
*उसको पाप से पार कर दे तू, आहुतियां देने वाले को।। ८।।*

हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमात्मन्! जो उपासक सायंकाल में और उषाकाल में तेरा स्तुतिगान करता है तथा हवियों और नैवेद्यों को समर्पित करके तुझको अपना प्यारा बना लेता है, उस यज्ञ, पूजा, अर्चना आदि करने वाले अपने उपासक को तू पाप और विपत्ति से इस प्रकार पार कर दे, जिस प्रकार सुनहरी कक्ष्या वाला कोई सुन्दर बलवान् अश्व अपने स्वामी को युद्ध अथवा कठोर यात्रा को पार करा देता है।

टि. *सायंकाल* - **दोषा।** रात्रौ - वे.। दोषायाम्। सप्तम्या आकारः। सा.।

*स्तुति करता है* - **प्रशंसात्।** स्तौति - वे.। संस्तुयात्। शन्सु स्तुतौ। लेट्याडागमे रूपम्। सा.।

*बना लेता है* - **कृणवते।** करोति - वे.। कुर्यात्। कृवि हिंसाकरणयोर् इत्यस्य लेटि धिन्वि-कृण्व्योर् अ चेत्युप्रत्ययः। अडागमः। अनिघातः। प्रत्ययस्वरः। सा.।

*सर्वतः* - **आ।** आकारः सप्तम्यर्थं स्फुटीकरोति - वे.। अथ - सा.।

*सुनहरी कक्ष्या वाले की* - **हेम्यावान्।** वेगवान् - वे.। सुवर्णनिर्मितकक्ष्यावान्। हेमार्हति। छन्दसि चेति यः। सा.। हेम्न्युदके भवा रात्रिर् विद्यते यस्य - दया.। as a gold-girt courser - G.

*पार कर दे* - **पीपरः।** पारय - वे.। पृ पालनपूरणयोर् इत्यस्य ण्यन्तस्य लुङि चङि रूपम्। निघातः। सा.। पालय - दया.।

**यस् तुभ्यम् अग्ने अमृताय दाशद् दुवस् त्वे कृणवते यतस्रुक्।**
**न स राया शशमानो वि योषन् नैनम् अंहः परि वरद् अघायोः।। ९।।**

यः। तुभ्यम्। अग्ने। अमृताय। दाशत्। दुवः। त्वे इति। कृणवते। यतऽस्रुक्।

न। सः। राया। शशमानः। वि। योषत्। न। एनम्। अंहः। परि। वरत्। अघऽयोः।। ९।।

*जो तुझको, हे अग्ने!, अमरणधर्मा को, आहुति देता है,*
*परिचर्या को तेरे लिये करता है, (यज्ञार्थ) उद्यत स्रुवा वाला।*
*न वह धन से, स्तुति (तेरी) करता हुआ, वियुक्त होवे (कभी),*
*न उसको पापकर्म घेरे (कहीं से), पापकर्म की इच्छा वाले का।। ९।।*

हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! यज्ञ आदि शुभ कर्म और परोपकार के लिये दृढ़संकल्प जो मनुष्य तुझ अमरणधर्मा को अपनी आहुतियां और नैवेद्य समर्पित करता है तथा असहायों की सेवा आदि से तेरी परिचर्या करता है, तेरी स्तुति करने वाला वह मनुष्य कभी निर्धन और दरिद्र नहीं हो सकता। उसपर सदा धन की वर्षा होती रहती है। पापकर्म की इच्छा वाले किसी दुर्जन का दुष्कर्म भी उसे कभी घेर नहीं सकता, उसे हानि नहीं पहुँचा सकता।

टि. *आहुति देता है* – **दाशत्**। हविः प्रयच्छति – वे.। दाशृ दाने। लेट्यडागमे रूपम्। सा.।

*परिचर्या को* – **दुवः**। परिचर्याम् – वे.। सा.।

*उद्यत स्रुवा वाला* – **यतस्रुक्**। यज्ञार्थं यतस्रुक् – वे.। संयतस्रुक्। सा.। उद्यतक्रियासाधनः – दया.। with uplifted ladle - G.

*स्तुति करता हुआ* – **शशमानः**। त्वां भजमानः – वे.। स्तोत्रं कुर्वाणः – सा.। शशमानः प्लवमानः – दया.। sorely toiling - G. in his labour - Ar.

*न वियुक्त होवे* – **न वि योषत्**। न वियुक्तो भवतु – वे.। न पृथग् भवेत्। सदा धनयुक्तो भवेद् इत्यर्थः। सा.। let him not lose his riches - G. may he not be divorced - Ar.

*घेरे* – **परि वरत्**। परि वृणोतु – वे.। परिवृणुयात्। वृञ् वरणे। लेटि रूपम्। सा.। let not circumvent - W. let not enclose - G.

**यस्य त्वम् अग्ने अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः।**
**प्रीतेद् असद् धोत्रा सा यविष्ठासाम यस्य विधतो वृधासः।। १०।। १७।।**

यस्य। त्वम्। अग्ने। अध्वरम्। जुजोषः। देवः। मर्तस्य। सुऽधितम्। रराणः।
प्रीता। इत्। असत्। होत्रा। सा। यविष्ठ। असाम। यस्य। विधतः। वृधासः।। १०।।

*जिसके तू, हे अग्ने!, यज्ञ का सेवन करता है,*
*द्योतनशील, मनुष्य के, सुसम्पादित का, आनन्दित होता हुआ।*
*(सब को) प्रसन्नता देने वाला ही होवे यज्ञ वह, हे युवतम!,*
*होवें हम जिसके (यज्ञकर्मों की), पूजक के, वृद्धि करने वाले।। १०।।*

हे स्वयं प्रकाशमान और सब को प्रकाश देने वाले अग्रणी परमेश्वर! जिस मनुष्य के हिंसारहित पवित्र और सुसम्पादित यज्ञ का तू आनन्द प्राप्त करता हुआ सेवन करता है, जिसे तू प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता है, हे युवतम!, वह यज्ञ सब प्राणियों को प्रसन्नता देने वाला होता है। हे जगदीश्वर! तू हमें ऐसा सामर्थ्य प्रदान कर, कि हम सदा ऐसे प्रभुपूजक मनुष्य के यज्ञ आदि शुभ कर्मों की वृद्धि करने वाले होवें। हम जनहित में किये जाने वाले कर्मों के सदा सहयोगी होवें, विरोधी न होवें।

टि. *सेवन करता है* - **जुजोषः**। सेवसे - वे.। सेवेथाः। जुषी प्रीतिसेवनयोर् इत्यस्य बहुलं छन्दसीति श्लुः। अडागमः। अभ्यस्तस्वरः। सा.।

*सुसम्पादित का* - **सुधितम्**। त्वदर्थं सुष्ठु निहितम् - सा.। well-conducted - W.

*आनन्दित होता हुआ* - **रराणः**। रममाणः - वे.। सा.। thou liberal Giver - G.

*प्रसन्नता देने वाला ही होवे यज्ञ वह* - **प्रीता इत् असत् होत्रा सा**। प्रियः एव भवति यज्ञः सः - वे.। स होता यजमानः प्रीत एव भवेत् - सा.। may that prayer be agreeable - W. G. May the Power of the Call be pleased with him - Ar.

**चित्तिम् अचित्तिं चिनवद् वि विद्वान् पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्त्तान्।**
**राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिम् उरुष्य।। ११।।**

चित्तिम्। अचित्तिम्। चिनवत्। वि। विद्वान्। पृष्ठाऽइव। वीता। वृजिना। च। मर्त्तान्।
राये। च। नः। सुऽअपत्याय। देव। दितिम्। च। रास्व। अदितिम्। उरुष्य।। ११।।

*ज्ञान को, अज्ञान को, अलग-अलग कर देवे सर्वज्ञ (अग्नि),*
*अश्वपृष्ठों की तरह सीधियों और टेढ़ियों की, (अलग-अलग कर देवे) मनुष्यों को।*
*धन के लिये भी हमको, शोभन सन्तानों के लिये (भी), कर दे, हे दीप्यमान!,*
*दानशीलता को भी दे (हमको), अदानशीलता को परे रख (हमसे)।। ११।।*

अग्रणी परमेश्वर सर्वज्ञ है। वह हमारे लिये ज्ञान और अज्ञान को अलग-अलग कर देवे, अर्थात् हमें ज्ञानी और अज्ञानी मनुष्यों में विवेक करने का सामर्थ्य प्रदान करे। घोड़ों का व्यापारी जिस प्रकार घोड़ों की सीधी और टेढ़ी पीठों को देखकर अच्छे और बुरे घोड़ों में विवेक कर लेता है, उसी प्रकार मनुष्यों की सरलता और कुटिलता को देखकर अच्छे और बुरे मनुष्यों में विवेक करने का सामर्थ्य वह हमें प्रदान करे। हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! तू हमें उत्तम धन और श्रेष्ठ सन्तानें प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान कर। तू हमें दानशीलता प्रदान कर और अदानशीलता को हम से परे कर दे।

टि. *ज्ञान को, अज्ञान को* - **चित्तिम् अचित्तिम्**। ज्ञातव्यम् अज्ञातव्यम् - वे.। ज्ञातव्यं पुण्यम् अनुपादेयत्वेनाचेतनीयं पापम्। यद्वा। ज्ञानम् अज्ञानम्। चिती संज्ञाने। स्त्रियां क्तिन्। virtue and vice - W. sense and folly - G. knowledge and ignorance - Ar.

*अलग-अलग कर देवे* - **चिनवत् वि**। पृथक् करोतु - वे.। विचिनोतु। पृथक् करोतु। चिनोतेर् लेट्यडागमः। सा.। may distinguish - G.

*अश्वपृष्ठों की तरह* - **पृष्ठा इव**। पृष्ठं स्पृशतेः, पर्शव उच्यन्ते। पर्शून् इव विविक्तान् करोतु। वे.। पृष्ठानि - सा.। like backs of horses - G.

*सीधियों और टेढ़ियों की* - **वीता वृजिना च**। कान्तस्वभावान् पापकृतः च - वे.। कान्तानि दुर्वहाणि च - सा.। straight and crooked G.

*दानशीलता को दे* - **दितिम् रास्व**। देयकारणं प्रयच्छ - वे.। दातारं देहि। दाण् दाने। कर्तरि क्तिन्। सा.। Give us this life on earth - Max. (ग्रिफिथ द्वारा उद्धृत)। Grant us plenty - G. lavish on us finite - Ar.

*अदानशीलता को परे रख (हमसे)* – **अदितिम् उरुष्य।** अदेयं चास्मत्तः पृथक् कुरु – वे.। पञ्चम्यर्थे द्वितीया। अदातुः सकाशाद् रक्ष। सा.। shun him who gives not - W. keep off the life to come - Max. (ग्रिफिथ द्वारा उद्धृत). Keep penury afar - G. guard the infinite - Ar.

Diti and Aditi, the divided and the undivided consciousnes, the Mother of division and the Indivisible Mother. Ar. protect us from the finite - Fr.

**कविं शंशासुः कवयो ऽदब्धा निधारयन्तो दुर्यास्वायोः।**
**अतस् त्वं दृश्याँ अग्न एतान् पड्भिः पश्येर् अद्भुताँ अर्य एवैः।। १२।।**

कविम्। शशासुः। कवयः। अदब्धाः। निऽधारयन्तः। दुर्यासु। आयोः।
अतः। त्वम्। दृश्यान्। अग्ने। एतान्। पट्ऽभिः। पश्येः। अद्भुतान्। अर्यः। एवैः।। १२।।

*(तुझ) क्रान्तदर्शी की स्तुति की क्रान्तदर्शियों ने, अपराजितों ने,*
*नितरां स्थापित करते हुए (तुझको), घरों में मनुष्यों के।*
*इसलिये तू देखने योग्यों को, हे अग्ने!, इनको, आँखों से,*
*देख अद्भुतों को, स्वामी (जगत् का), दूर तक जाने वालियों से।। १२।।*

अपने लक्ष्यप्राप्ति के मार्ग में कभी हार न मानने वाले क्रान्तदर्शी ऋषि-मुनियों और साधु-सन्तों ने तेरी खोज करते हुए तुझ क्रान्तदर्शी को मनुष्यों के हृदयरूपी सुन्दर घर में ढूँढ निकाला है और उन्होंने वहीं ध्यान करते हुए तेरी विविध प्रकार से प्रशंसा और स्तुति की है। इसलिये हे मार्गदर्शक परमेश्वर! ये सब तेरे द्वारा कृपा की दृष्टि से देखने के योग्य हैं। जगत् का स्वामी तू इन अभूतपूर्व चमत्कारी जनों को अपने तेजों से अथवा दूर तक जाने वाली अपनी कृपादृष्टि से देख। तेरी कृपादृष्टि सदा सर्वत्र इन पर बनी रहे।

टि. *स्तुति की* – **शशासुः।** एतद् दातव्यम् एतत् कर्तव्यम् इति वदन्ति – वे.। होता भवेति शशंसुः – सा.। have glorified - W. commanded - G. proclaimed - Ar.

*अपराजितों ने* – **अदब्धाः।** अहिंसिताः – वे.। केनाप्यतिरस्कृताः – सा.।

*नितरां स्थापित करते हुए* – **निधारयन्तः।** नियमेन धारयन्तः – वे.। निवसन्तः – सा.। setting him down - G. established - Ar.

*देखने योग्यों को* – **दृश्यान्।** अनुग्राह्यान् – वे.। दर्शनीयान् – सा.। admirable - W. fair to look on - G. visible or to be seen - Ar.

*आँखों से दूर तक जाने वालियों से* – **पड्भिः एवैः।** पश्(दृश्)+क्विप्+भिस्।। गमनस्वभावैः ज्वालाख्यैः पादैः – वे.। एवैर् गमनशीलैः पड्भिः पादैः स्वतेजोभिः – सा.। विज्ञानादिभिः प्राप्तैः – दया.। with swift-moving feet - W. According to Pischel *paḍbhiḥ* here means ' with (thine) eyes' - G. with thy journeying feet - Ar.

**त्वम् अग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ।**
**रत्नं भर शशमानाय घृष्वे पृथु श्चन्द्रम् अवसे चर्षणिप्राः।। १३।।**

त्वम्। अग्ने। वाघते। सुऽप्रनीतिः। सुतऽसोमाय। विधते। यविष्ठ।

रत्नम्। भर। शशमानाय। घृष्वे। पृथु। चन्द्रम्। अवसे। चर्षणिऽप्राः।। १३।।

*तू, हे अग्ने!, यज्ञनिर्वाहक के लिये, शोभन मार्गदर्शन वाला,*
*सवन किये सोम वाले के लिये, पूजक के लिये, हे युवतम।*
*रमणीय धन को ला, प्रशंसक के लिये, हे दीप्तियुक्त!,*
*विस्तीर्ण को, आह्लादक को, समृद्धि के लिये, मनुष्यों का पूरयिता।। १३।।*

हे सदा युवावस्था में एकरस रहने वाले अग्रणी परमेश्वर! तू शोभन मार्गदर्शन वाला और मनुष्यों की कामनाओ को पूर्ण करने वाला है। हे स्वतःप्रकाशमान और दूसरों को प्रकाशित करने वाले जगदीश! तू बाह्य और आभ्यन्तर यज्ञ का वहन करने वाले, भक्तिरसरूपी सोम का सवन करने वाले, अर्चना-पूजा करने वाले और तेरी प्रशंसा-स्तुति करने वाले अपने उपासक की समृद्धि के लिये उसे बहुत अधिक मात्रा में रमणीय धन प्रदान कर।

टि. *यज्ञनिर्वाहक के लिये* - **वाघते**। यज्ञस्य वोढ्रे - वे.। यज्ञनिर्वाहकाय - सा.।

*शोभन मार्गदर्शन वाला* - **सुप्रणीतिः**। सुप्रणयनः - वे.। सुष्ठूत्तरवेद्यां प्रणयनीयः - सा.। good guidance - G.

*हे दीप्तियुक्त* - **घृष्वे**। हे घर्षणशील - वे.। दीप्तियुक्त। यद्वा। परेषां घर्षणशील। सा.।

*विस्तीर्ण को आह्लादक को* - **पृथु श्चन्द्रम्**। अत्र संहितायां ह्रस्वाच् चन्द्रोत्तरपदे मन्त्र इति सुडागमः। श्चुत्वेन शकारः। सा.।

*मनुष्यों का पूरयिता* - **चर्षणिप्राः**। मनुष्याणां पूरयिता - वे.। अपेक्षितप्रदानेन मनुष्याणां कामपूरकः - सा.। Ruler of men - G.

**अधा ह यद् वयम् अग्ने त्वाया पड्भिर् हस्तेभिश् चकृमा तनूभिः।**
**रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर् ऋतं येमुः सुध्य आशुषाणाः।। १४।।**

अध। ह। यत्। वयम्। अग्ने। त्वाऽया। पड्ऽभिः। हस्तेभिः। चकृम। तनूभिः।
रथम्। न। क्रन्तः। अपसा। भुरिजोः। ऋतम्। येमुः। सुऽध्यः। आशुषाणाः।। १४।।

*और निश्चय से जब हम, हे अग्ने!, तुझे पाने की अभिलाषा से,*
*पाँवों से हाथों से (कर्म) करते हैं, शरीर के अंगों से भी अन्यों से।*
*रथ को जिस प्रकार रथकार (निर्मित करते हैं), (कर्मों में) व्याप्त,*
*सत्यस्वरूप (तुझ) को (उसी प्रकार) वश में करते हैं, सुप्रज्ञ कर्म करते हुए।। १४।।*

हे सब का नेतृत्व करने वाले जगदीश्वर! जिस प्रकार रथकार अपनी भुजाओं के कर्म के द्वारा रथ का निर्माण करते हैं, उसी प्रकार सुधी जन यज्ञ, पूजा-अर्चना, स्तुति-प्रशंसा आदि कर्मों को करते हुए धरती और आकाश में व्याप्त तुझ सत्यस्वरूप को अपने वश में कर लेते हैं। और इसीलिये हम तेरे उपासक भी तुझे पाने की अभिलाषा से अपने हाथों, पाँवों और शरीर के अन्य अंगों से अपने कर्तव्य कर्मों को कर रहे हैं।

टि. *रथकार* - **क्रन्तः**। कुर्वन्तः - वे.। कारवः शिल्पिनः क्रामन्तो ऽध्वगा वा। करोतेः शतरि बहुलं छन्दसीति विकरणस्य लुक्। प्रत्ययस्वरः। सा.। wheelwrights - W.

*भुजाओं के* - **भुरिजोः**। बाह्वोः - वे.। बिभृतः कर्मकरणसामर्थ्यं पदार्थान् वेति भुरिजौ बाहू, तयोः। यद्वा। देवान् मनुष्यांश् च बिभृत इति भुरिजौ द्यावापृथिव्यौ, तयोर् मध्ये। सा.।

*सत्यस्वरूप को वश में करते हैं* - **ऋतम् येमुः**। यज्ञम् आत्मनि यच्छन्ति - वे.। सत्यभूतं त्वाम् उद्यच्छन्ति - सा.।

*सुप्रज्ञ* - **सुध्यः**। शोभनाध्याना देवाः - वे.। सुकर्माणः - सा.। शोभना धीर् येषां ते - दया.।

*कर्म करते हुए* - **आशुषाणाः**। व्यापनशीलाः - वे.। कर्माणि व्याप्नुवन्तः - सा.।

**अधा मातुर् उषसः सप्त विप्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नॄन्।**
**दिवस् पुत्रा अङ्गिरसो भवेमाद्रिं रुजेम धनिनं शुचन्तः।। १५।। १८।।**

अध। मातुः। उषसः। सप्त। विप्राः। जायेमहि। प्रथमाः। वेधसः। नॄन्।
दिवः। पुत्राः। अङ्गिरसः। भवेम। अद्रिम्। रुजेम। धनिनम्। शुचन्तः।। १५।।

*और माता से, उषा से, सर्पणशील, ज्ञानी जन (हम),*
*उत्पन्न करें मुख्य स्रष्टा (बनकर), मनुष्यों को (दिव्यों को)।*
*सूर्य के पुत्र अङ्गिरा हो जाएं हम, (शुभ कर्मों से अपने),*
*पर्वत का भेदन करें हम, धन वाले का, चमचमाते हुए।। १५।।*

उस परमेश्वर के अमृतपुत्र हम गतिशील बनें और ज्ञान का संचय करें। हम माता उषा से तम का उच्छेदन करने वाले सामर्थ्य को प्राप्त करके अज्ञानान्धकार का विनाश करें और उत्तम सन्तानोत्पादक बनकर श्रेष्ठ दिव्यगुणसम्पन्न मनुष्यों को संसार में जन्म दें। हम अपने शुभ कर्मों से सूर्य के पुत्र अङ्गिरा बन जाएं। हम यज्ञाग्नि को सब दिशाओं में ले जाएं और धधकते हुए अङ्गारों की तरह पाप को भस्म कर डालें। हम ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होकर प्रकाश और ज्ञान रूपी धन को अपने अन्दर छुपाकर बैठ जाने वाली अज्ञान रूपी पर्वत की गुफा का भेदन कर डालें, ताकि प्रकाश और ज्ञान बन्धनमुक्त होकर सब दिशाओं में सब के पास पहुँच जाए।

टि. *माता से उषा से* - **मातुः उषसः**। मातुर् उषसः सकाशात् - सा.। from Dawn, the Mother - G. of the Dawn, the Mother - Ar.

*सर्पणशील* - **सप्त**। सृप्ता संख्या - या. (नि. ४.२६)। सप्तसंख्याकाः - सा.।

*उत्पन्न करें* - **जायेमहि**। जनयामः - वे.। सा.। may we be born - Ar.

*स्रष्टा (बनकर)* - **वेधसः**। स्रष्टारः - वे.। विधातॄन् रश्मीन् वा - सा.। of the creator (Agni) - W. ordainers - G. creators - Ar.

*भेदन करें* - **रुजेम**। भिन्द्याम - सा.। may we divide - W.

*धन वाले को* - **धनिनम्**। पणिभिर् अपहृतैर् गोभिस् तद्वन्तम् - वे.। सा.।

**अधा यथा नः पितरः परासः**
**प्रत्नासो अग्न ऋतम् आशुषाणाः।**
**शुचीद् अयन् दीधितिम् उक्थशासः**
**क्षामा भिन्दन्तो अरुणीर् अप व्रन्।। १६।।**

अध। यथा। नः। पितरः। परासः।
प्रत्नासः। अग्ने। ऋतम्। आशुषाणाः।
शुचि। इत्। अयन्। दीधितिम्। उक्थऽशसः।
क्षाम। भिन्दन्तः। अरुणीः। अप। व्रन्।। १६।।

*और जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने, श्रेष्ठों ने,*
*पुरातनों ने, हे अग्ने!, सत्य को प्राप्त करते हुए।*
*पवित्र को ही प्राप्त किया तेज को, स्तोत्रगायकों ने,*
*तम का भेदन करते हुए, रश्मियों को अनावृत किया।। १६।।*

और हे गन्तव्य की ओर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! जिस प्रकार हमारे प्राचीन श्रेष्ठ पूर्वजों ने अपनी तपश्चर्या से सत्य को प्राप्त किया, अपने स्तोत्रगान आदि के द्वारा पवित्र ज्योति को प्राप्त किया और अज्ञानरूपी तम का भेदन करके ज्ञानरूपी सूर्यरश्मियों को पा लिया, उनका अनुसरण करते हुए हम भी उसी प्रकार तेरी कृपा से ज्ञान, सत्य और परम ज्योति को प्राप्त करें।

टि. *श्रेष्ठों ने* – **परासः**। पूर्वे – वे.। श्रेष्ठाः – सा.। supreme - Ar.

*पवित्र को प्राप्त किया तेज को* – **शुचि अयन् दीधितिम्**। शुचि तेजः प्राप्नुवन् – वे.। शुचि दीप्तं स्थानम् अयन् अगच्छन् तथा दीधितिं तेजश् चागच्छन्। अयन्। इण् गतौ। लङीणो यण् इति यण्। व्यत्ययेनाडागमः। सा.। reached the very purity, reached the splendour of Light - Ar.

*स्तोत्रगायकों ने* – **उक्थशासः**। उक्थानां शंसितारः – वे.। उक्थानां शस्त्राणां शंसितारः – सा.।

*तम का भेदन करते हुए* – **क्षाम भिन्दन्तः**। क्षयकरं शिलोच्चयम् अभिन्दन् – वे.। क्षयकारणं तमः पापं वा भिन्दन्तः विनाशयन्तः – सा.। क्षाम पृथिवीम् – दया.। dispersing gloom - W. they cleft the ground - G. as they broke through the earth - Ar.

*रश्मियों को अनावृत किया* – **अरुणीः अप व्रन्**। गाः च पणिभिः अपहृताः अपावृण्वन्निति – वे.। अरुणीर् अरुणवर्णाः पणिभिर् अपहृता गा उषसो वा अप व्रन् अपावृण्वन् प्रकाशितवन्त इत्यर्थः। व्रन्। वृणोतेर् लुङि मन्त्रे घसेत्यादिना च्लेर् लुक्। निघातः। सा.। they made manifest the purple (kine) - W. made red Dawns apparent - G. uncovered the ruddy herds - Ar.

**सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो ऽयो न देवा जनिमा धमन्तः।**
**शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रम् ऊर्वं गव्यं परिषदन्तो अग्मन्।। १७।।**

सुऽकर्माणः। सुऽरुचः। देवऽयन्तः। अयः। न। देवाः। जनिम। धमन्तः।
शुचन्तः। अग्निम्। ववृधन्तः। इन्द्रम्। ऊर्वम्। गव्यम्। परिऽसदन्तः। अग्मन्।। १७।।

*शोभन कर्मों वाले, शोभन रुचियों वाले, प्रभु को चाहने वाले,*
*सुवर्ण की तरह, ज्ञानी जन जन्मों को, अग्नि को धौंककर शोधते हुए।*
*प्रज्वलित करते हुए अग्नि को, वृद्धि को प्राप्त कराते हुए इन्द्र को,*
*विस्तीर्ण ज्ञानरश्मिसमूह को, ज्ञानसभाओं में बैठते हुए, प्राप्त करते हैं।। १७।।*

शुभ कर्मों में रुचि रखने वाले, शुभ कर्मों को करने वाले और परमेश्वर से प्यार करने वाले विद्वज्जन अपने जन्मों को इस प्रकार पवित्र कर लेते हैं, जिस प्रकार सुनार सोने को अथवा लोहार

लोहे को अग्नि में डालकर और धौंकनी से धौंककर शुद्ध कर लेता है। वे सन्मार्ग पर ले चलने वाले और परम ऐश्वर्यों वाले उस जगदीश को यज्ञों से प्रसन्न करते हुए और स्तुति-प्रशंसा आदि के द्वारा उसके साम्राज्य की वृद्धि करते हुए विद्वत्परिषदों के अन्दर ज्ञानचर्चा आदि में भाग लेते हुए विस्तृत ज्ञानराशि को प्राप्त कर लेते हैं।

टि. *शोभन रुचियों वाले* - **सुरुचः**। शोभनदीप्तिकाः - वे.। सा.। सुष्ठु रुचः प्रीतयो येषां ते - दया.। brilliant - W. resplendent - G.

*सुवर्ण को* - **अयः**। सुवर्णम् - दया.। iron - W. ore - G.

*जन्मों को* - **जनिम**। असुरजातम् - वे.। स्वकीयं मानुषं जन्म - सा.। जन्म। अत्र संहितायाम् इति दीर्घः। दया.। birth - W. human generations - G. births - Ar.

*अग्नि को धौंककर शोधते हुए* - **धमन्तः**। अग्निना धमन्तः - वे.। यागदानादिलक्षणेन कर्मणा निर्मलीकुर्वन्तः। ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः। शतरि पाघ्रादिना धमादेशः। सा.। smelting - G.

*प्रज्वलित करते हुए* - **शुचन्तः**। दीपयन्तः - वे.। हविर्भिर् दीपयन्तः - सा.। exciting - W. enkindling - G. flaming with light - Ar.

*ज्ञानरश्मिसमूह को* - **गव्यम्**। गोसङ्घम् - वे.। गवां समूह इत्यर्थे खलगोरथाद् इति यः। सा.। the stall of cattle - G. mass of the ray-cows - Ar.

*ज्ञानसभाओं में बैठते हुए* - **परिषदन्तः**। परितः सीदन्तः - वे.। सा.। परिषदम् आचरन्तः - दया.। wandering about (in search) - W. encompassing - G. surrounding Indra - Ar.

*प्राप्त करते हैं* - **अग्मन्**। लब्धवन्तः - वे.। गमेर् लुङि च्लेर् लुकि रूपम् - सा.।

**आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद् देवानां यज् जनिमान्त्युग्र।**
**मर्तानां चिद् उर्वशीर् अकृप्रन् वृधे चिद् अर्य उपरस्यायोः।। १८।।**

आ। यूथाऽइव। क्षुऽमति। पश्वः। अख्यत्। देवानाम्। यत्। जनिम। अन्ति। उग्र।
मर्तानाम्। चित्। उर्वशीः। अकृप्रन्। वृधे। चित्। अर्यः। उपरस्य। आयोः।। १८।।

*सब ओर, संघों की जैसे भोजन वाले स्थान में पशुओं के, प्रशंसा होती है,*
*(प्रशंसा होती है) देवों के यदि जीवनों की निकट से, हे तेजस्वी (अग्ने)।*
*मनुष्यों की भी प्रजाएं समर्थ होती हैं (वृद्धि के लिये),*
*वृद्धि के लिये भी (समर्थ होता है) स्वामी, उत्तम जीवन की।। १८।।*

उत्तम चारा उपलब्ध होने वाले स्थान पर जिस प्रकार हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर पशुओं की प्रशंसा होती है, उसी प्रकार दान, ज्ञान आदि उत्तम गुणों से युक्त साधु जनों के जीवन जीने की शैली की यदि भूरि-भूरि प्रशंसा की जाए, तो प्रशंसकों को इससे उत्तम शक्ति प्राप्त होती है। मानव प्रजाएं भी इस प्रकार की प्रशंसाओं से अपने जीवन को उन्नत करने में समर्थ होती है। धनी और सम्पन्न गृहस्वामी भी इससे अपने जीवन को समृद्ध और उत्तम बनाने में समर्थ होता है।

टि. *भोजन वाले स्थान में* - **क्षुमति**। क्षुधायुक्ते जने - वे.। अन्नवत्याढ्यगृहे - सा.। in a well-stored stall - W. in a foodful pasture - G.

*हे तेजस्वी (अग्ने)* - उग्र। तेजस्विन् हे अग्ने - सा.। fierce - W. Strong One - G.

*प्रजाएं* - **उर्वशीः**। ऊरुभ्याम् अश्नुवानाः प्रजाः - वे.। ऊरुभ्याम् अश्नुवानाः। उर्वभ्यश्नुत ऊरुभ्याम् अश्नुत इति यास्कः (नि. ५.१३)। बहुव्यापिकाः - दया.।

*समर्थ होती हैं* - **अकृप्रन्**। पशुलाभात् क्लृप्ता आसन् - वे.। ताभिर् आनीताभिर् गोभिः क्लृप्ताः समर्था अभवन् - सा.। कल्पन्ते - दया.।

*उत्तम जीवन की* - **उपरस्य आयोः**। पर्वतस्य, मनुष्यस्य उप्तस्य बालजनस्य - वे.। उपरस्य उप्तस्य निषिक्तस्यापत्यस्य। आयोर् मनुष्यस्य भृत्यादेः। सा.। उपरस्य मेघस्य। आयोः जीवनस्य प्रापकस्य - दया.। of the higher being - Ar.

**अर्कर्म ते स्वपसो अभूम ऋतम् अवस्रन्नुषसो विभातीः।**
**अनूनम् अग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मृजतश् चारु चक्षुः।। १९।।**

अर्कर्म। ते। सुऽअपसः। अभूम। ऋतम्। अवस्रन्। उषसः। विभातीः।
अनूनम्। अग्निम्। पुरुधा। सुऽचन्द्रम्। देवस्य। मर्मृजतः। चारु। चक्षुः।। १९।।

*कर्म किया हमने तेरे लिये, शोभनकर्मा हो गए हम,*
*सत्य को प्रकाशित किया, उषाओं ने, प्रकाशमानों ने।*
*पूर्ण को, अग्नि को, अनेक प्रकार से शोभन आह्लादक को,*
*(उस) देव के, शोधक के, चारु चक्षु को (भी पूजें हम)।। १९।।*

हे गन्तव्य की ओर ले चलने वाले परमेश्वर! हम उपासकों ने आहुतियों और स्तुतियों के द्वारा तेरे निमित्त सेवाकर्म किया है। इसी से हम उत्तम कर्म करने वाले हो गए हैं। अज्ञान-अन्धकार का उच्छेदन करने वाली तेरी प्रथम ज्ञानरश्मियों ने हमें सत्य का दर्शन कराया है। हे प्रभो! इस जगत् में केवल तू ही पूर्ण है। तू ही हमें अनेक प्रकार से उत्तम सुख और आनन्द की प्राप्ति कराता है। हम तेरे उपासक तेरी भी पूजा करते हैं और सब को पवित्र करने वाले तुझ परम देव के अनुग्रह से पूर्ण तेरे सुन्दर चक्षु का भी आदर-सत्कार करते हैं।

टि. *सत्य को प्रकाशित किया* - **ऋतम् अवस्रन्**। तेजः सत्यभूतम् आच्छादयन्ति - वे.। तेज आच्छादयन्ति धारयन्तीत्यर्थः - सा.। illumined the Truth - Ar.

*पूर्ण को* - **अनूनम्**। परिपूर्णम् - वे.। संपूर्णम् - सा.। पुष्कलम् - दया.।

*शोभन आह्लादक को* - **सुश्चन्द्रम्**। शोभनकान्तिम् - वे.। सुष्ठ्वाह्लादकारिणम् यद्वा सुहिरण्यम् अग्निम् - सा.।

*शोधक के* - **मर्मृजतः**। परिचरन्तो वयम्। मृजूष् शुद्धौ। यङ्लुकि रुग्रिकौ च लुकीत्यभ्यासस्य रुगागमः। शतरि नाभ्यस्ताच् छतुर् इति नुमभावः। अभ्यस्तस्वरः। सा.। भृशं शोधयतः - दया.।

**एता ते अग्न उचथानि वेधो ऽवोचाम कवये ता जुषस्व।**
**उच् छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि।। २०।। १९।।**

एता। ते। अग्ने। उचथानि। वेधः। अवोचाम। कवये। ता। जुषस्व।
उत्। शोचस्व। कृणुहि। वस्यसः। नः। महः। रायः। पुरुऽवार। प्र। यन्धि।। २०।।

*इनको तेरे लिये, हे अग्ने!, स्तुतिवचनों को, हे विधाता!,*
*उच्चारण करते हैं हम, क्रान्तदर्शी के लिये, इनका सेवन कर तू।*
*खूब प्रदीप्त हो तू, कर दे बहुत धनों वाले हमको,*
*महान् धनों को, हे बहुतों से वरणीय!, प्रदान कर तू।। २०।।*

हे प्रकाशमान अग्रणी परमेश्वर! हे जगत् के सर्जनहार! तू क्रान्तदर्शी है, तीनों लोकों और तीनों कालों के आर-पार देखने में समर्थ है। हम तेरे लिये इन अपने स्तुतिवचनों का गान कर रहे हैं। तू इनको स्वीकार कर और इनका सेवन कर। तू इन स्तुतियों से प्रसन्न होकर हमें और अधिक प्रकाश और ज्ञान प्रदान कर। तू हमें बहुत धनों का स्वामी बना दे। हे सब के द्वारा वरण करने योग्य जगदीश्वर! तू हमें महान् अलौकिक धन प्रदान कर।

टि. *स्तुतिवचनों को* - **उचथानि**। स्तोत्राणि - वे.। उक्थानि शस्त्राणि - सा.।

*हे विधाता* - **वेधः**। हे सर्वस्य विधातः - वे.। Creator - W. Ar. Disposer - G.

*बहुत धनों वाले* - **वस्यसः**। वसीयसः।। श्रेयसः - वे.। अतिशयेन धनयुक्तान् - सा.।

*हे बहुतों से वरणीय* - **पुरुवार**। हे बहुभिर् वरणीय - वे.। सा.। who art worshipped by many - W. whose boons are many - G. O thou of many boons - Ar.

*प्रदान कर तू* - **प्र यन्धि**। प्रयच्छ - वे.। यमेर् लोटि बहुलं छन्दसीति विकरणस्य लुक्। वा छन्दसीति हेर् विकल्पेन पित्त्वाद् अङितश् चेति धिर् आदेशः। सा.।

## सूक्त ३

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १ रुद्रः, २-१६ अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। षोडशर्चं सूक्तम्।

**आ वो राजानम् अध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।**
**अग्निं पुरा तनयित्लोर् अचित्ताद् धिरण्यरूपम् अवसे कृणुध्वम्।। १।।**

आ। वः। राजानम्। अध्वरस्य। रुद्रम्। होतारम्। सत्यऽयजम्। रोदस्योः।
अग्निम्। पुरा। तनयित्लोः। अचित्तात्। हिरण्यऽरूपम्। अवसे। कृणुध्वम्।। १।।

*सर्वतः, अपने लिये, स्वामी को यज्ञ के, रुलाने वाले को दुष्टों के,*
*आह्वाता को, सत्य का यजन करने वाले को, द्युलोक-भूलोक में।*
*अग्नि को, पूर्व विद्युत्पात (के समान, मृत्यु) के, अनजाने के,*
*तेजोमय रूप वाले को, रक्षा के लिये (सहायक) बनाओ तुम।। १।।*

हे मनुष्यो! जीवन की यात्रा में लक्ष्य की ओर आगे ले चलने वाला वह परमेश्वर इस जीवनयज्ञ का स्वामी है। वह दुष्ट पापी जनों को रुलाने वाला है। वह सब का सन्मार्ग में आह्वान करने वाला है। वह द्युलोक और भूलोक में सत्य का यजन करने वाला है। ऐसे उस ज्योतिःस्वरूप प्रभु को तुम विद्युत्पात की तरह अनजाने में ही उपस्थित हो जाने वाली मृत्यु के आने से पूर्व ही अपनी रक्षा के लिये अपना साथी बना लो। बार-बार मृत्यु की बिभीषिका से बचने और मोक्ष पद को प्राप्त करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है।

टि. *रुलाने वाले को दुष्टों के* – **रुद्रम्।** देवानां स्तोतारम् – वे.। रोरूयमाणं द्रवन्तं शत्रून् रोदयन्तं वा। यद्वा। एषा वा अग्नेस् तनूर् यद् रुद्र इति। रुद्रात्मकम्। सा.। दुष्टानां रोदयितारम् – दया.। the afflicter (of foes) - W. the Terrible - Ar.

*सत्य का यजन करने वाले को द्युलोक-भूलोक में* – **सत्ययजम् रोदस्योः।** सत्येन द्यावापृथिव्योः पूजयितारम् – वे.। रोदस्योर् द्यावापृथिव्योः सत्ययजं सत्यस्यान्नस्य दातारम्। यद्वा। सत्ययजं सत्येन हविषा देवान् यजन्तम्। यद्वा। रोदस्योर् व्याप्य वर्तमानम्। सा.। priest of both worlds, effectual Sacrificer - G. who wins by sacrifice the Truth in earth and heaven - Ar.

*पूर्व विद्युत्पात (के समान, मृत्यु) के, अनजाने के* – **पुरा तनयित्नोः अचित्तात्।** प्राग् एव अचिन्तितागमनात् तनयित्नोः। अन्यम् अर्थम् आह। तनयित्नुर् इति मेघशब्दवद् भयङ्कर इति। वे.। तनयित्नुर् अशनिः स ह्याकस्मिकः। तत्सदृशाद् अचित्तात्। न विद्यते चित्तं यस्मिन् तद् अचित्तम्। चित्तोपलक्षितसर्वेन्द्रियोपसंहारो मरणम् इति यावत्। तस्मान् मरणात् पुरा प्राग् एव। तनयित्नोः। तनिः शब्दार्थः। इत्नुच् प्रत्ययः। सा.। तनयित्नोः विद्युतः – दया.। before (surprised by) sudden death - W. before the thunder strike and lay you senseless - G. before the outspreading of the Ignorance - Ar.

**अयं योनिंश् चकृमा यं वयं तें जायेव पत्यं उशती सुवासाः।**
**अर्वाचीनः परिंवीतो नि षींदेमा उं ते स्वपाक प्रतीचीः।। २।।**

अयम्। योनिंः। चकृम। यम्। वयम्। ते। जायाऽइंव। पत्यैं। उशती। सुऽवासाः।
अर्वाचीनः। परिंऽवीतः। नि। सीद। इमाः। ऊँ इतिं। ते। सुऽअपाक। प्रतीचीः।। २।।

*यह स्थान (है), बनाया है जिसको हमने, तेरे लिये,*
*पत्नी जैसे (बनाती है) पति के लिये, कामिनी, सुवसना।*
*हमारे अभिमुख, सब ओर से आच्छादित (तेजों से), बैठ जा तू,*
*ये (स्तुतियां) निश्चय से तेरी, हे परिपक्व प्रज्ञा वाले!, ओर जा रही हैं।। २।।*

हे गन्तव्य की ओर ले चलने वाले परमेश्वर! जिस प्रकार अभिलाषा से युक्त कोई स्त्री अपने पति के लिये अपने पास सुन्दर स्थान बनाती है, उसी प्रकार हमने तुझ प्रीतम के लिये अपने हृदय में यह सुन्दर स्थान बनाया है। हे परिपक्व बुद्धि वाले! अपनी ज्योतियों से आच्छादित तू हमारी ओर आ और हमारे हृदय की पवित्र वेदि पर आसीन हो। हे प्रियतम! हम अपनी ये सब स्तुतियां तुझे ही समर्पित कर रहे हैं।

टि. *स्थान* – **योनिः।** वेदिर् इत्यर्थः – वे.। स्थानम् – सा.। गृहम् – दया.। shrine - G.

*बनाया है हमने* – **चकृम वयम्।** वयं कृतवन्तः – वे.। करोतेर् लिटि रूपम्। वाक्यभेदान् निघाताभावः। सा.।

*कामिनी* – **उशती।** कामयमाना – वे.। सा.।

*सुवसना* – **सुवासाः।** शोभनवस्त्रा – वे.। सा.।

*आच्छादित (तेजों से)* – **परिवीतः।** ज्वालाभिः परिगतः – वे.। परिवीतो यष्टव्यदेवैस् तेजोभिर्

वा। व्येञ् संवरणे। कर्मणि निष्ठा। यजादित्वात् संप्रसारणम्। गतिर् अनन्तर इति गतेः स्वरः। सा.। सर्वतोव्याप्तशुभगुणः - दया.।

*हे परिपक्व प्रज्ञा वाले* - **स्वपाक**। सुष्ठ्वपक्तव्यप्रज्ञः - वे.। स्वपस्क सुकर्मन् - सा.। सुष्ठ्वपरिपक्वज्ञान - दया.। maturer of good works - W. performer of good work - G. perfect in wisdom - Ar.

**आशृण्वते अदृपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृळीकाय वेधः।**
**देवाय शस्तिम् अमृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद् यम् ईळे।। ३।।**

आऽशृण्वते। अदृपिताय। मन्म। नृऽचक्षसे। सुऽमृळीकाय। वेधः।
देवाय। शस्तिम्। अमृताय। शंस। ग्रावाऽइव। सोता। मधुऽसुत्। यम्। ईळे।। ३।।

*सर्वतः सुनने वाले के लिये, दर्परहित के लिये, स्तुति का,*
*मनुष्यों के द्रष्टा के लिये, शोभन सुखदाता के लिये, हे उपासक।*
*देव के लिये, प्रशंसा का, अमरणधर्मा के लिये, कथन कर तू,*
*ग्रावा की तरह सोम निचोड़ने वाले की, सोमसुत् जिसकी स्तुति करता है।। ३।।*

हे उपासक! तू भक्तों की टेर को सब ओर से सुनने वाले, दर्प अभिमान आदि से रहित, मनुष्यों के भले बुरे कर्मों पर दृष्टि रखने वाले, उत्तम सुखों को देने वाले, कभी मृत्यु को प्राप्त न होने वाले, देवों के देव उस परम देव के लिये स्तुति और प्रशंसा का गान कर, जिसकी भक्तिरस रूपी सोम का सवन करने वाला भक्त सोमलता को कूटकर उससे सोम को निचोड़ने वाले पत्थर की तरह परिश्रमपूर्वक उच्च स्वर से स्तुति करता है।

टि. *सर्वतः सुनने वाले के लिये* - **आशृण्वते**। स्तोतृणाम् अभिलषितम् आभिमुख्येन शृण्वते - वे.। स्तोत्राकर्णनपराय - सा.।

*दर्परहित के लिये* - **अदृपिताय**। दर्परहिताय - वे.। अदृप्तायाप्रमत्ताय - सा.।

*हे उपासक* - **वेधः**। स्तोत्राणां कर्तर् हे स्तोतः - सा.। O priest - W. G.

*सोमसुत्* - **मधुषुत्**। मधुरसस्य सोता - वे.। मदकरस्य सोमस्य सोता - सा.।

*स्तुति करता है* - **ईळे**। स्तौमि - वे.। दया.। स्तौति। ईड स्तुतौ। लटि लोपस् त आत्मनेपदेष्विति तलोपः। यद्वा। लिटि तशब्दस्यैशादेशे कृते रूपम्। सा.। adores aloud - W. worships - G.

**त्वं चिन् नः शम्या अग्ने अस्या ऋतस्य बोध्यृतचित् स्वाधीः।**
**कदा त उक्था सधमाद्यानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते।। ४।।**

त्वम्। चित्। नः। शम्यै। अग्ने। अस्याः। ऋतस्य। बोधि। ऋतऽचित्। सुऽआधीः।
कदा। ते। उक्था। सधऽमाद्यानि। कदा। भवन्ति। सख्या। गृहे। ते।। ४।।

*तू ही हमारे कर्म का, हे अग्ने!, इसका (अनुष्ठाता हो जा),*
*सत्यनियम का हो जा तू, हे सत्यनियम के ज्ञाता!, उत्तम अनुष्ठाता।*
*कब तेरी स्तुतियां, साथ-साथ सब को हर्षित करने वाली (होंगी)?*
*कब होंगी मित्रताएं, घर में (हमारे), तेरी, (हमें हर्षित करने वाली)।। ४।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! हम अल्पज्ञ हैं, तू सर्वज्ञ है। हमें कर्मों के विधि-विधान का कुछ पता नहीं। तू ही हमारे कर्मों को सम्पन्न करने वाला हो जा। हे सत्यनियम को जानने वाले! तू हमसे सत्य नियमों का सम्यक् पालन कराने वाला हो जा। हे मेरे नाथ! वह शुभ घड़ी कब आएगी, जब हम सब मिलकर तेरी स्तुतियों का आनन्द प्राप्त करेंगे? हे सच्चे सखा! वह क्षण कब आएगा, जब तू हमारे इस हृदयरूपी मन्दिर में मित्र बनकर पधारेगा और अपनी प्रसन्नताएं हमें बाँटेगा?

टि. *कर्म का इसका (अनुष्ठाता हो जा)* - **शम्यै अस्याः**। अस्याः स्तुतेः कर्मणे समर्थान् कुरु - वे.। शमीशब्दः कर्मनाम। अस्याः शम्यै नो ऽस्मत्सम्बन्धिनो ऽस्य कर्मणः देवता भवसि। सा.। कर्मणे अस्याः प्रजायाः - दया.।

*उत्तम अनुष्ठाता* - **स्वाधीः**। शोभनाध्यानः - वे.। सुकर्मा सुध्यानो वा - सा.। यः सुष्ठु समन्ताच् चिन्तयति - दया.। author of good works - W. be thou attentive - G.

*स्तुतियां* - **उक्था**। उक्थानि मदीयानि - वे.। शस्त्राणि - सा.। prayers - W. songs - G.

*साथ-साथ सब को हर्षित करने वाली* - **सधमाद्यानि**। देवैः सह मदननिमित्तानि - वे.। सहमदनिमित्तानि - सा.। exhilarating - W. of festival - G.

**कुथा ह तद् वरुणाय त्वम् अग्ने कुथा दिवे गर्हसे कन् न आगः।**
**कुथा मित्राय मीळ्हुषे पृथिव्यै ब्रवः कद् अर्यम्णे कद् भगाय।। ५।। २०।।**

कुथा। ह। तत्। वरुणाय। त्वम्। अग्ने। कुथा। दिवे। गर्हसे। कत्। नः। आगः।
कुथा। मित्राय। मीळ्हुषे। पृथिव्यै। ब्रवः। कत्। अर्यम्णे। कत्। भगाय।। ५।।

*क्यों निश्चय से, इसकी (हमारे कर्म की) वरुण से तू, हे अग्ने!,*
*क्यों सूर्य से, निन्दा करता है तू, क्या (है) हमारा अपराध।*
*क्यों मित्र से, सुखवर्षक से, (क्यों) पृथिवी से (निन्दा करता है),*
*बताता है तू क्यों (इसको) अर्यमा को, क्यों भग को (बताता है)।। ५।।*

हे जीवनयात्रा के पथ पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! हम अल्पज्ञ हैं। हमसे गलती हो जाना स्वाभाविक ही है। आप हमारे इस कर्म की निन्दा मनुष्यों के द्वारा वरण के योग्य श्रेष्ठ पुरुषों के सम्मुख, ज्ञान प्रकाश आदि से युक्त विद्वज्जनों के सम्मुख मत कीजिये। आखिर हमसे क्या अपराध हो गया है? हमपर सुखों की वर्षा करने वाले मित्रों तथा पृथिवी पर निवास करने वाले अन्य जनों के सम्मुख भी इस की निन्दा मत कीजिये। आप इसे स्वामित्व को प्राप्त जनों को और ऐश्वर्यशाली मनुष्यों को भी क्यों बताते हैं?

टि. *क्यों* - **कुथा**। कथम् - वे.। केन हेतुना। किंशब्दात् था हेतौ च छन्दसीति थाप्रत्ययः। किमः कः। सा.। केन प्रकारेण - दया.।

*निन्दा करता है तू* - **गर्हसे**। पापं कृतम् इति गर्हा - वे.। गर्हापूर्वम् आवेदयेः - सा.। (why) this complaint - G. (How) dost thou blame - Ar.

*क्या* - **कत्**। किम् - वे.। सा.।

*अपराध* - **आगः**। एनः - वे.। पापम् - सा.। अपराधम् - दया.। offence - W.

*सुखवर्षक से* – **मीळ्हुषे**। सेक्त्रे – वे.। अभिमतफलसेक्त्रे – सा.।

*बताता है तू* – **ब्रवः**। ब्रूयाः – वे.। सा.।

**कद् धिष्ण्यासु वृधसानो अग्ने कद् वाताय प्रतवसे शुभंये।**
**परिज्मने नासत्याय क्षे ब्रवः कद् अग्ने रुद्राय नृघ्ने।। ६।।**

कत्। धिष्ण्यासु। वृधसानः। अग्ने। कत्। वाताय। प्रऽतवसे। शुभम्ऽये।
परिऽज्मने। नासत्याय। क्षे। ब्रवः। कत्। अग्ने। रुद्राय। नृऽघ्ने।। ६।।

*क्यों स्तुतियों से बढ़ने वाला (तू), हे अग्ने!,*
*क्यों वायु को, महान् बलवान् को, शुभेच्छु को (कहेगा)?*
*सर्वत्र गन्ता को, असत्य न होने वाले को, धरती के वासी को (कहेगा)?*
*कहेगा क्यों, हे अग्ने!, रुद्र को, शत्रुनायकों के विनाशक को।। ६।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! तू हमारी स्तुतियों से वृद्धि को प्राप्त होने वाला है। हम तेरे प्रिय उपासक हैं। भला तू हमारी इस निन्दा का कथन महान् बल वाले और सब का हित चाहने वाले वायु से क्यों करेगा? सत्याचरण वाले, सर्वत्र गमन करने वाले पृथिवी के किसी वासी से क्यों करेगा? शत्रुनायकों की हिंसा करने वाले, दुष्टों को रुलाने वाले किसी निर्बलरक्षक को यह बात क्यों बताएगा? इसके विपरीत तू तो हमारे इस अपराधयुक्त कर्म को हमें ही बताकर हमें स्वयं को सुधारने का सुअवसर प्रदान करके सन्मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये ही प्रेरित करेगा।

टि. *स्तुतियों से बढ़ने वाला* – **धिष्ण्यासु वृधसानः**। आयतनेषु वर्धमानः – वे.। आग्नीध्रीयादि-धिष्ण्येषु घृताद्याहुतिभिर् वर्धमानस् त्वम् – सा.। exalted in holy ceremonies - W. when thou blazest on the lesser altars - G. growing in thy abodes - Ar.

*महान् बल वाले को* – **प्रतवसे**। प्रकृष्टबलाय – वे.। सा.।

*शुभेच्छु को* – **शुभंये**। कल्याणं गच्छते –वे.। शुभस्य प्रापयित्रे – सा.। to the seeker of the Good - Ar.

*असत्य न होने वाले को* – **नासत्याय**। सत्यस्य नेत्रे। यद्वा। न विद्यते ऽसत्यं यस्य तस्मै वायवे। यद्वा। नासत्यायेति वचनव्यत्ययः। नासत्याभ्याम् अश्विभ्याम्। सा.। नासत्याय अविद्यमानासत्या- चाराय – दया.। truthful - W. to the lord of the journey - Ar.

*धरती के वासी को* – **क्षे**। क्षा पृथिवी तस्यै –वे.। क्षेति पृथिवीम् आह। क्षियन्ति निवसन्त्यस्यां प्राणिन इति। तस्यै पृथिव्यै। क्षि निवासगत्योः। अन्येभ्यो ऽपि दृश्यत इत्यधिकरणे डः। ततष् टाप्। चतुर्थ्येकवचन आतो धातोर् इत्यत्रात इति योगविभागाद् आकारलोपः। सा.।

*शत्रुनायकों के हन्ता को* – **नृघ्ने**। पापकृतां निहन्त्रे – वे.। सा.।

**कथा महे पुष्टिंभराय पूष्णे कद् रुद्राय सुमखाय हविर्दे।**
**कद् विष्णव उरुगायाय रेतो ब्रवः कद् अग्ने शर्वे बृहत्यै।। ७।।**

कथा। महे। पुष्टिम्ऽभराय। पूष्णे। कत्। रुद्राय। सुऽमखाय। हविःऽदे।
कत्। विष्णवे। उरुऽगायाय। रेतः। ब्रवः। कत्। अग्ने। शर्वे। बृहत्यै।। ७।।

*क्यों महान् को, पुष्टि लाने वाले पूषा को (कहोगे)?*
*क्यों अग्नि को, शोभन यज्ञ वाले को, हविदाता को (कहोगे)?*
*क्यों सूर्य को, दूर तक गमन करने वाले को, पाप को (हमारे कहोगे)?*
*कहोगे क्यों, हे अग्ने!, निर्ऋति को महान् को, (पाप को हमारे)।। ७।।*

हे अग्रणी जगदीश्वर! तुम हमारे द्वारा किये हुए दुष्कर्म को अपनी महान् पुष्टिकारक पोषक शक्ति को क्यों बताओगे? तुम इसे शोभन यज्ञों को सम्पन्न करने वाले और सब तक हवियों को पहुँचाने वाले अग्नि को क्यों बताओगे? तुम इस हमारे पापकर्म को दूर तक गमन करने वाले सूर्य को क्यों बताओगे? तुम हमारे इस पापकर्म को महान् मृत्यु को अथवा संवत्सर को क्यों बताओगे? आप हमारे इस पाप को हमसे दूर कर दीजिये। आप हमारा सुधार और उद्धार कर दीजिये।

टि. *पुष्टि लाने वाले को* - **पुष्टिंभराय।** पुष्टेः पोषकाय - वे.। पुष्टिधारकाय - सा.।

*अग्नि को शोभन यज्ञ वाले को* - **रुद्राय सुमखाय।** रुद्राय अग्नये स्विष्टकृते यज्ञस्य शोभनस्य कर्त्रे - वे.। सुपूजनीयाय सुयज्ञाय वा रुद्राय - सा.। to the bringer of increase - Ar.

*दूर तक गमन करने वाले को* - **उरुगायाय।** उरुक्रमणे - वे.। उरुभिर् बहुभिर् गायमानाय। यद्वा। प्रभूतकीर्त्तये। सा.। बहुप्रशंसाय - दया.। far-striding - G. wide -striding - Ar.

*पाप को* - **रेतः।** रेचयतीति, पापम् उच्यते - वे.। क्षयहेतु पापम् - सा.। उदकम् इव शान्तो मृदुर् भूत्वा - दया.। sin - G. seed of things - Ar.

*निर्ऋति को महान् को* - **शरवे महत्यै।** हिंसिकायै निर्ऋतये महत्यै - वे.। शरवे। शृणाति पक्वा ओषधीर् इति शरुः शरत् संवत्सरः। यद्वा। हिंसिका निर्ऋतिः। महत्यै शरदे निर्ऋत्यै वा। सा.। शरवे दुष्टानां हिंसकाय, बृहत्यै महत्यै सेनायै - दया.। to the extensive year - W. the lofty arrow - G. to vast doom - Ar.

**कथा शर्धाय मरुतामृताय कथा सूरे बृहते पृच्छ्यमानः।**
**प्रति ब्रवोऽदितये तुराय साधा दिवो जातवेदश् चिकित्वान्।। ८।।**

कथा। शर्धाय। मरुताम्। ऋताय। कथा। सूरे। बृहते। पृच्छ्यमानः।
प्रति। ब्रवः। अदितये। तुराय। साध। दिवः। जातऽवेदः। चिकित्वान्।। ८।।

*क्यों संघ को मरुतों के, सत्यभूत को,*
*क्यों सूर्य को, महान् को, पूछा जाता हुआ।*
*उत्तर देता है अदिति को, तीव्रगति वायु को?*
*प्रदान कर दिव्यताओं को, हे जातप्रज्ञ!, हे सर्वज्ञ।। ८।।*

हे जगत् में उत्पन्न हुए सभी पदार्थों को जानने वाले परमेश्वर! तू सर्वज्ञ है। तू पूछे जाने पर भी हमारे अपराधों को सत्यभूत मरुतों के संघ को क्यों बताता है? तू महान् सूर्य को भी यह बात क्यों कहता है? अदीना अखण्डनीया देवमाता और तीव्र गति वाले वायु को भी क्यों बताता है? तू हमें अपनी दिव्यताएं प्रदान कर। हम तेरी दिव्यताओं को पाकर पापों, अपराधों और बुराइयों का परित्याग करने में समर्थ हो सकें। यही हम तुझसे वर मांगते हैं।

ऊपर पाँचवें से लेकर आठवें तक इन चार मन्त्रों में परमेश्वर से यही प्रार्थना की गई है, कि वह सर्वज्ञ होने से हमारे पापों, अपराधों और दोषों को जानता है। इसलिये इन्हें वह दूसरों के सामने प्रचारित न करे। इसके विपरीत वह हमें अपना दिव्य सामर्थ्य प्रदान करे, ताकि हम अपनी बुराइयों को छोड़कर अच्छाइयों को ग्रहण कर सकें।

टि. *सूर्य को* - **सूरे**। सूर्याय - वे.। सर्वविधीनां छन्दसि विकल्पितत्वात् ङेर् यत्वाभावः। अतो गुण इति पररूपत्वम्। सा.।

*उत्तर देता है अदिति को, तीव्रगति वायु को* - **प्रति ब्रवः अदितये तुराय**। प्रति ब्रूयाः अदीनाय वायवे - वे.। अदितये देव्यै तुराय त्वरितगमनाय वायवे। अदितये ऽदीनाय तुराय वा। प्रति ब्रवः। मदीयम् आगः कथं प्रतिब्रूयाः। सा.। how answer (the great Sun), before the Free, before the swift - G.

*प्रदान कर दिव्यताओं को* - **साध दिवः**। दीप्तान् देवान् प्रति गच्छ - वे.। दीप्तान् देवान् साधय गच्छ। यद्वा। दिवो द्युलोकस्य यज्ञवहनलक्षणं कार्यं साध कुरु। सा.। दिवः प्रकाशान् - दया.। fulfil (the worship) of heaven - W. fulfil heaven's work - G.

**ऋतेन॑ ऋतं निय॑तम् ईळ आ गोर् आमा सचा मधु॑मत् पक्वम् अ॑ग्ने।**
**कृष्णा सती रुश॑ता धासिनैषा जाम॑र्येण पय॑सा पीपाय।। ९।।**

ऋतेन॑। ऋतम्। निऽय॑तम्। ईळे। आ। गोः। आमा। सचा॑। मधु॑ऽमत्। पक्वम्। अग्ने।
कृष्णा। सती। रुश॑ता। धासिना॑। एषा। जाम॑र्येण। पय॑सा। पीपाय।। ९।।

*ऋत से सत्यभूत नियमित (जीवन) को, मांगता हूँ मैं, (और) गौ को,*
*कच्ची होती हुई साथ में (धारण करती है), मीठे पके दूध को, हे अग्ने।*
*कृष्णवर्णा होती हुई, श्वेत वर्ण वाले धारक अन्न से यह,*
*प्रजाओं को जीवन प्रदान करने वाले से, दूध से, भरी हुई है।। ९।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! मैं तुझसे सत्यनियम का पालन करने से सत्यभूत नियमित जीवन की याचना करता हूँ और इस नियमित जीवन में सुख और आनन्द का संचार करने वाली गौ की याचना करता हूँ। यह गौ शरीर से कच्ची होती हुई भी अपने साथ में माधुर्य से युक्त पके हुए दूध को धारण करती है। यह कृष्ण वर्ण वाली होते हुए भी आरोचमान श्वेतवर्ण जीवनधारक और प्रजाओं को अमरत्व प्रदान करने वाले अमृततुल्य दुग्ध से भरी रहती है। यह दुग्ध हमारे लिये केवल अन्न का काम ही नहीं करता, अपितु आहुति के रूप में यज्ञ के अन्दर देवताओं को अर्पित किया जाकर देवताओं का जीवनदाता और धरती पर पवित्र जलवर्षा कराने से प्रजाओं का जीवनदाता है।

अध्यात्म में गौ ज्ञान का प्रतीक है और गोदुग्ध उत्तम विचारों और उदात्त भावनाओं का।

टि. *ऋत से सत्यभूत नियमित (जीवन) को* - **ऋतेन ऋतम् नियतम्**। सत्येन उदकं नित्यसम्बन्धम् - वे.। सत्यभूतेन यज्ञेन नियतम् अनुस्यूतम् ऋतम् उदकम् - सा.। सत्येन सत्यं निश्चितम् - दया.। essential for the sacrifice - W. true gift arranged in Order - G. (I ask for) the truth governed by the Truth - Ar.

*मांगता हूँ मैं गौ को* - **आ ईळे गोः**। धेनोः पय आ याचे - सा.। स्तौमि पृथिव्या वाण्या वा - दया.। I solicit the milk of the cow - W.

*धारक अन्न से* - **धासिना**। 'धासिः' (निघ. २.७) इत्यन्ननाम। धारकेण पालकेन वा। वे.। प्राणिनां धारकेण - सा.। अन्नेन - दया.। with (milk) nutritious - G.

*प्रजाओं को जीवन प्रदान करने वाले से* - **जामर्येण**। जनितमनुष्येण वर्धितमनुष्येण - वे.। जायन्त इति जाः प्रजाः। ता जा अमर्येणामरणनिमित्तेन (पयसा)। सा.। all-sustaining - G.

*भरी हुई है* - **पीपाय**। आप्यायते - वे.। पीपाय प्याययति - सा.। लिटि लिङ्यङोश् चेति पीभावः। सा.। with milk she teemeth - G.

**ऋतेन हि ष्मा वृषभश् चिद् अक्तः पुमाँ अग्निः पयसा पृष्ठ्येन।**
**अस्पन्दमानो अचरद् वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निर् ऊधः॥ १०॥ २१॥**

ऋतेन। हि। स्म। वृषभः। चित्। अक्तः। पुमान्। अग्निः। पयसा। पृष्ठ्येन।
अस्पन्दमानः। अचरत्। वयःऽधा। वृषा। शुक्रम्। दुदुहे। पृश्निः। ऊधः॥ १०॥

*सत्यनियम से, निश्चय से, बलवान्, सींचा जाता है,*
*पौरुषयुक्त अग्नि, दुग्ध से, धारण करने वाले से।*
*स्पन्दन न करता हुआ, विचरण करता है, जीवनदाता,*
*सुखवर्षक, तेज का दोहन करता है, ज्यातिर्मय ओढी से॥ १०॥*

सब का मार्गदर्शन करने वाला वह परमेश्वर बलशाली है और पौरुष से युक्त है। इस संसार के संचालन के लिये उसने ऋत अर्थात् सत्यनियम का निर्माण किया है। जगत् के सब कार्य उसी सत्यनियम के अधीन हो रहे हैं। उसी के अधीन वह परमेश्वर उपासकों के द्वारा समर्पण रूपी धारकभूत आहुतियों से सींचा जाता है। सब को जीवन प्रदान करने वाला वह परमात्मा सत्यनियम से अडिग रहता हुआ जगत् में सर्वत्र गतिशील रहता है। सुखों की वर्षा करने वाला ज्योतिर्मय वह जगदीश्वर इस ब्रह्माण्डरूपी स्तन से अपने उपासकों के लिये तेजों और पवित्र अमृतरसों का दोहन करता रहता है।

टि. *सत्यनियम से* - **ऋतेन**। सत्येन - वे.। सत्यभूतेन - सा.। सत्येन व्यवहारेण - दया.। by Law eternal - G. with the Truth - Ar.

*आधारभूत से* - **पृष्ठ्येन**। जघनार्धभवेन - वे.। धारकेण - सा.। upon his back - G.

*जीवनदाता* - **वयोधा**। देवेभ्यो ऽन्नस्य दाता - वे.। अन्नदः - सा.। यः कमनीयानि वयांसि जीवनधनादीनि दधाति सः - दया.। He who gives vital power - G.

*ज्योतिर्मय* - **पृश्निः**। पृश्निवर्णः - वे.। सूर्यः - सा.। the dappled Bull - Ar.

**ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः सम् अङ्गिरसो नवन्त गोभिः।**
**शुनं नरः परि षदन्नुषासम् आविः स्वर् अभवज् जाते अग्नौ॥ ११॥**

ऋतेन। अद्रिम्। वि। असन्। भिदन्तः। सम्। अङ्गिरसः। नवन्त। गोभिः।
शुनम्। नरः। परि। सदन्। उषसम्। आविः। स्वः। अभवत्। जाते। अग्नौ॥ ११॥

*सत्यनियम से पुञ्जीभूत तम को, दूर फैंक दिया भेदन करते हुओं ने,*

*सम्यक् अङ्गिरसों ने स्तुति की, ज्ञानरश्मियों से (युक्त होकर)।*
*सुखपूर्वक यज्ञ के अग्रणी, सब ओर बैठ गए, उषाकाल में,*
*प्रकट सूर्य हो गया, उत्पन्न होने पर अग्नि के।। ११।।*

यज्ञाग्नि को दूर-दूर तक ले जाने वाले उपासकों ने सत्यभूत ईश्वरीय नियमों के पालन से पुञ्जीभूत तम का भेदन करते हुए उसे दूर फैंक दिया। उन्होंने ज्ञानरश्मियों को प्राप्त करके उनके साथ अग्रणी परमेश्वर की स्तुति की। यज्ञ का प्रणयन करने वाले उषाकाल में आरम्भिक ज्ञानरश्मियों का स्वागत करने के लिये अपने आसनों पर विराजमान हो गए। शनैः-शनैः ज्ञानपुञ्ज परमेश्वर के उनके ध्यान में प्रादुर्भूत हो जाने पर पूर्णज्ञान रूपी सूर्य का उदय हो गया।

टि. *पुञ्जीभूत तम को* - **अद्रिम्**। शिलोच्चयम् - वे.। गवां निरोधकं पर्वतम् - सा.।

*दूर फैंक दिया* - **वि असन्**। वि अक्षिपन् - वे.। अस्यतेर् लुङि च्लेर् अस्यतिवक्तीत्यादिना अङादेशः। सा.। have thrown it open - W.

*सम्यक् स्तुति की* - **सम् नवन्त**। सङ्गताः आसन् - वे.। सा.। sang their hymns together - G. they moved together (with the Ray-cows) - Ar.

*सुखपूर्वक* - **शुनम्**। सुखस्य कर्त्रीम् - वे.। सुखेन - सा.। दया.। bringing great bliss - G.

*सूर्य* - **स्वः**। द्युलोकः - वे.। सूर्यः - सा.। दया.।

**ऋतेन॑ दे॒वीर् अ॒मृता॒ अमृ॑क्ता॒ अर्णो॑भि॒र् आपो॒ मधु॑मद्भिर् अग्ने।**
**वा॒जी न सर्गे॑षु प्रस्तुभा॒नः प्र सद॒म् इत् स्रवि॑तवे दधन्युः।। १२।।**

ऋ॒तेन॑। दे॒वीः। अ॒मृताः॑। अमृ॑क्ताः। अर्णः॑ऽभिः। आपः॑। मधु॑मत्ऽभिः। अ॒ग्ने॒।
वा॒जी। न। सर्गे॑षु। प्र॒ऽस्तु॒भा॒नः। प्र। सद॑म्। इत्। स्रवि॑तवे। द॒ध॒न्युः॒।। १२।।

*सत्यनियम से प्रकाशमान, अमरता देने वाले, अहिंसित,*
*लहरों के साथ, जल, मनोहरों के साथ, हे अग्ने।*
*अश्व की तरह, दौड़ों में प्रशंसा किये जाते हुए की,*
*प्रकर्ष से सदा ही, बहने के लिये, उद्योग करते रहते हैं।। १२।।*

हे उपासकों को अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर करने वाले जगदीश्वर! तूने अपने नियमों के द्वारा ही इस जगत् को सुव्यवस्थित किया है। उसी के अधीन ये आरोचमान शुद्ध स्वच्छ और पवित्र, अमरता प्रदान करने वाले, दुष्ट आसुरी शक्तियों के द्वारा हिंसित न किये जा सकने वाले प्रकाश, ज्ञान, सुखसाधन रूपी जल अपनी मनोहारी सुखद लहरों के साथ, दौड़ों में प्रशंसा को प्राप्त करने वाले तीव्रगति अश्व की तरह सदा आगे ही आगे तीव्र गति से बढ़ने के लिये उद्यमशील रहते हैं।

टि. *प्रकाशमान* - **देवीः**। दिव्यः - वे.। दिव्यो नद्यः - सा.। the divine rivers - W.

*अमरता देने वाले* - **अमृताः**। अमरणहेतवः - सा.।

*अहिंसित* - **अमृक्ताः**। अनाधृष्टा रक्षोभिः - वे.। रक्षःप्रभृतिभिर् अबाधिताः - सा.।

*लहरों के साथ* - **अर्णोभिः**। अर्णःशब्दो वीचीवचनः - वे.। उदकैर् युक्ताः - सा.।

*जल* - **आपः**। आप्तव्याः सत्यः - सा.। rivers - W. the Waters - G. Ar.

दौड़ों में - **सर्गेषु**। विसर्गेषु - वे.। प्रेरणेषु - सा.। in its gallopings - Ar.

*प्रशंसा किये जाते हुए की (तरह)* - **प्रस्तुभानः**। हेषाशब्दं कुर्वन् - वे.। प्रोत्साह्यमानः। स्तोभतिर् अर्चतिकर्मा। सा.। lauded - G.

*बहने के लिये उद्योग करते रहते हैं* - **स्रवितवे दधन्युः**। स्रवणाय दध्वन्युः। ध्वनेः शब्दकर्मण एतद् रूपम्। धनिर् उद्योगकर्मेत्यपर इति। वे.। स्रवणाय प्रगच्छन्ति - सा.।

**मा कस्यं यक्षं सदम् इद् धुरो गा मा वेशस्यं प्रमिनतो मापेः।**
**मा भ्रातुर् अग्ने अनृजोर् ऋणं वेर् मा सख्युर् दक्षं रिपोर् भुंजेम।। १३।।**

मा। कस्यं। यक्षम्। सदम्। इत्। हुरः। गाः। मा। वेशस्यं। प्रऽमिनतः। मा। आपेः।
मा। भ्रातुः। अग्ने। अनृजोः। ऋणम्। वेः। मा। सख्युः। दक्षम्। रिपोः। भुजेम।। १३।।

*मत किसी की पूजा को, सदा ही, कुटिल की, प्राप्त कर तू,*
*मत पड़ौसी की (पूजा को), हिंसा करने वाले की, मत आप्त की।*
*मत भाई के, हे अग्ने!, छली के, हव्य की कामना कर तू,*
*मत सखा के बल का, शत्रु के (बल का भी), भोग करें हम।। १३।।*

हे सन्मार्ग पर अग्रसर करने वाले परमेश्वर! तू किसी भी कुटिल आचरण वाले मनुष्य की पूजा को स्वीकार मत कर। तू किसी भी हिंसा की वृत्ति वाले मनुष्य की, चाहे वह हमारा पड़ौसी अथवा बन्धु भी क्यों न हो, पूजा को स्वीकार मत कर। जो जन छल-कपट का व्यवहार करता है, चाहे वह हमारा भाई भी क्यों न हो, तू उसके नैवेद्य की कामना मत कर। हे परमात्मन्! तू हमें ऐसा सामर्थ्य प्रदान कर, कि हम अपने मित्र अथवा अपने शत्रु के बल का भोग न करें। उसकी शक्ति का सहारा लेकर अथवा उसके अधीन होकर न जियें। इसी प्रकार हम किसी कुटिल और हिंसक मनुष्य के द्वारा दिये गए आदर-सत्कार को स्वीकार न करें, और उसके अन्न-धन की कामना भी न करें, चाहे वह मनुष्य हमारा पड़ौसी, रिश्तेदार अथवा हमारा भाई ही क्यों न हो।

टि. *पूजा को* - **यक्षम्**। पूजाम् - वे.। यज्ञम् - सा.। to the feast - G.

*कुटिल की* - **हुरः**। धनम् अपहरतः - वे.। अस्माकं हिंसकस्य - सा.। कुटिलस्य - दया.।

*पड़ौसी की* - **वेशस्य**। मनुष्यस्य - वे.। प्रातिवेश्यस्य - सा.।

*हिंसा करने वाले की* - **प्रमिनतः**। हिंसतः - वे.। हिंसकस्य - सा.।

*मत हव्य की कामना कर तू* - **मा ऋणं वेः**। ऋणं हविः मा वेः। वेतिः कान्तिकर्मा। वे.। ऋणवद्देयं हविर् मा कामयेथाः - सा.। accept not the due (oblation) - W. punish us not for (a false brother's) trespass - G.

**रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः।**
**प्रति ष्फुर वि रुज वीड्वंहो जहि रक्षो महि चिद् वावृधानम्।। १४।।**

रक्ष। नः। अग्ने। तव। रक्षणेभिः। ररक्षाणः। सुऽमख। प्रीणानः।
प्रति। स्फुर। वि। रुज। वीळु। अंहः। जहि। रक्षः। महि। चित्। ववृधानम्।। १४।।

*रक्षा कर हमारी, हे अग्ने!, अपने रक्षा के साधनों से,*

*खूब पालन करता हुआ, हे शोभनयज्ञ!, प्रसन्न होता हुआ।*
*प्रकाशित कर दे (ज्ञान से), विनष्ट कर दे घोर पाप को,*
*मार डाल राक्षस को, महान् को भी, बढ़ते हुए को।। १४।।*

हे उपासकों को अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर करने वाले, हे उत्तम याजक, परमेश्वर! तू हमारी स्तुतियों और समर्पणों से खूब प्रसन्न होता हुआ और हमारा पालन करता हुआ अपने रक्षा के साधनों से हमारी रक्षा कर। तू हमें ज्ञान से प्रकाशित कर दे। तू हमारे घोर से घोर पाप को भी नष्ट कर दे। जो दुष्ट असुरवृत्ति मनुष्य सब कुछ अपने पास ही रख लेना चाहते हैं, दूसरों को कुछ भी देना नहीं चाहते, जो अपनी ही उन्नति में विश्वास रखते हैं, ऐसे समाजद्रोही जनों को तू मार भगा।

टि. *शोभनयज्ञ* - **सुमख**। हे शोभनयज्ञ - वे.। सुयज्ञ सुधनेति वा - सा.। worthily worshipped - W. honoured God - G. strong in sacrifice - Ar.

*प्रसन्न होता हुआ* - **प्रीणानः**। प्रीयमाणः - वे.। हविर्भिः प्रीतस् त्वम् - सा.।

*प्रकाशित कर दे* - **प्रति स्फुर**। प्रति गच्छ - वे.। अस्मान् प्रतिदीप्यस्व - सा.। पुरुषार्थय - दया.। enlighten us - W. beat thou away - G. burst out in flame - Ar.

*विनष्ट कर दे घोर पाप को* - **वि जहि वीळु अंहः**। भग्नं च कुरु दृढं हन्तृभूतम् - वे.। दृढं पापं विशेषेण नाशय। जहि। हन हिंसागत्योः। लोटि हन्तेर् ज इति जादेशः। हेर् अलुक्। सा.।

**ए॒भिर् भ॑व सु॒मना॑ अग्ने अ॒र्कैर् इ॒मान् स्पृ॑श॒ मन्म॑भिः शू॒र वाजा॑न्।**
**उ॒त ब्रह्मा॑ण्यङ्गिरो जुषस्व॒ सं ते॑ श॒स्तिर् दे॒ववा॑ता जरेत।। १५।।**

ए॒भिः। भ॒व। सु॒ऽमना॑ः। अ॒ग्ने॒। अ॒र्कैः। इ॒मान्। स्पृ॒श॒ मन्म॑ऽभिः। शू॒र। वाजा॑न्।
उ॒त। ब्रह्मा॑णि। अ॒ङ्गि॒रः। जु॒ष॒स्व॒। सम्। ते॒। श॒स्तिः। दे॒वऽवा॑ता। ज॒रे॒त॒।। १५।।

*इनसे हो जा तू प्रसन्न चित्त वाला, हे अग्ने, स्तुतिगानों से,*
*इनको ग्रहण कर तू, मन्त्रों के साथ, हे शूर!, अन्नों को।*
*और इन स्तुतिरूप ऋचाओं का, हे यज्ञप्रवर्तक!, आनन्द ले तू,*
*सम्यक् तेरे लिये प्रशस्ति, देवों से प्रार्थित, गान की जाए।। १५।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! हम तेरे लिये जो स्तुतिगान कर रहे हैं, उनसे तू प्रसन्नचित्त हो जा। हे दुष्टों के विनाशक! तू हमारे द्वारा मन्त्रों के साथ समर्पित किये जाने वाले हव्यों और नैवेद्यों को भी स्वीकार कर। हे यज्ञ के प्रवर्तक! जो ऋचाएं हम तेरी स्तुति में गा रहे हैं, उनका भी तू आनन्द प्राप्त कर। हे प्रभो! तेरा जो स्तोत्र देवों को भी बहुत प्रिय है, वही हम तेरे लिये गाने जा रहे हैं। इन सब से प्रसन्न होकर तू हमें जीवन के उच्चतम लक्ष्य की ओर आगे बढ़ा।

टि. *प्रसन्न चित्त वाला* - **सुमनाः**। सुमतिः - वे.। शोभनमनस्कः - सा.। propitiated - W. be gracious - G. great of mind - Ar.

*ग्रहण कर* - **स्पृश**। प्रतिगृहाण - सा.। दया.। accept - W. touch - G. Ar.

*मन्त्रों के साथ* - **मन्मभिः**। मननकुशलैः प्रज्ञापकैः तेजोभिः - वे.। स्तोत्रैः सह - सा.। with praises - W. by our prayers - G. by our thinkings - Ar.

*हे यज्ञप्रवर्तक* - **अङ्गिरः**। हे अग्ने - वे.। अङ्गति हवींषि प्राप्नोतीत्यङ्गिरा अग्निः। यद्वा। ये ऽङ्गारा आसंस् ते ऽङ्गिरसो ऽभवन्। (ऐ.ब्रा. ३.३४)। इति ब्राह्मणम्। सा.।

*देवों से प्रार्थित* - **देववाता**। देवैर् भवद्गुणश्रवणपरैः प्रार्थिता - वे.। देवार्थं गता देवान् स्तोतुं प्राप्तेत्यर्थः। सा.। देवैर् विद्वद्भिः कृता - दया.। addressed to the gods - W. which gods deserve - G. enjoyed by the gods - Ar.

*गान की जाए* - **जरेत**। भवद्गुणं स्तुयात् - वे.। संवर्धयतु - सा.। प्रशंसिता भवेत् - दया.। may exalt thee - W. let address thee - G. let come close to thee - Ar.

**एता विश्वा विदुषे तुभ्यं वेधो नीथान्यग्ने निण्या वचांसि।**
**निवचना कवये काव्यान्यशंसिषं मतिभिर् विप्र उक्थैः।। १६।। २२।।**

एता। विश्वा। विदुषे। तुभ्यम्। वेधः। नीथानि। अग्ने। निण्या। वचांसि।
निऽवचना। कवये। काव्यानि। अशंसिषम्। मतिऽभिः। विप्रः। उक्थैः।। १६।।

*ये सब, ज्ञाता के लिये, तेरे लिये, हे विधाता!,*
*आगे ले चलने वाले, हे अग्ने!, रहस्यमय वचन।*
*अन्तर्भाव के प्रकाशक, क्रान्तदर्शी के लिये, ऋषिज्ञान से युक्त,*
*कहे हैं मैंने, चिन्तनों के साथ, ज्ञानी उपासक ने, स्तुतियों के साथ।। १६।।*

हे जगत् को उत्पन्न करने वाले अग्रणी परमेश्वर! वेद के ये वचन रहस्यमय और गूढ़ हैं। साधारण मनुष्य के लिये ये अपने भाव को प्रकट नहीं करते। कोई तत्त्वज्ञानी ऋषि ही इनके वास्तविक अर्थ को जान सकता है। मुझ उपासक पर तेरी विशेष कृपा है, जो मैं तेरी इस रहस्यमयी वाणी को कुछ समझ पाया हूँ। इसी लिये मैंने तुझ सर्वज्ञ, साधकों के मार्गदर्शक, ऋषिज्ञान से युक्त, ऋषि के लिये ही अपने गूढ़ रहस्य को प्रकट करने वाले, चिन्तनों और स्तुतियों के साथ ये रहस्यमय वचन कहे हैं।

टि. *आगे ले चलने वाले* - **नीथानि**। प्रशस्यानि - वे.। फलप्रापकाणि - सा.। सन्मार्ग पर ले जाने वाले - जय.। wise - G. (words of) guidance - Ar.

*रहस्यमय वचन* - **निण्या वचांसि**। अन्तर्हितभवद्गुणानि वचांसि - वे.। नेयार्थानि गूढानि वाक्यानि - सा.। निर्णीतानि वचनानि - दया.। मिश्रित तत्त्वार्थ बताने वाले वचन - जय.। secret speeches - G. secret words - Ar.

*अन्तर्भाव के प्रकाशक* - **निवचना**। आभिमुख्येन वचनीयानि - वे.। निवचना नितरां वक्तव्यानि - सा.। नितराम् उच्यन्ते ऽर्था यैस् तानि - दया.। charming - G. that speak out their sense to the seer - Ar.

*ऋषिज्ञान से युक्त* - **काव्यानि**। कवेर् भवतः कर्माणि - वे.। कविभिर् मेधाविभिः कृतानि - सा.। कविभिर् निर्मितानि - दया.। words of wisdom - G. seer-wisdoms - Ar.

*चिन्तनों के साथ, स्तुतियों के साथ* - **मतिभिः उक्थैः**। पूजनीयैः सूक्तैः - वे.। मननीयैः स्तोत्रैः शस्त्रैश् च - सा.। विद्वद्भिः सह प्रशंसितुम् अर्हैः - दया.। with my thoughts and praises - G. by my thoughts and utterances - Ar.

## सूक्त ४

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - रक्षोहाग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**कृ॒णु॒ष्व पाज॒ः प्रसि॑तिं॒ न पृ॒थ्वीं या॒हि राजे॒वाम॑वाँ॒ इभे॑न।**
**तृ॒ष्वीम् अनु॒ प्रसि॑तिं द्रूणा॒नो ऽस्ता॑सि॒ विध्य॑ र॒क्षस॒स् तपि॑ष्ठैः।। १।।**

कृ॒णु॒ष्व। पाज॑ः। प्रऽसि॑तिम्। न। पृ॒थ्वीम्। या॒हि। राजा॑ऽइव।। अम॑ऽवान्। इभे॑न।
तृ॒ष्वीम्। अनु॑। प्रऽसि॑तिम्। द्रू॒णा॒नः। अस्ता॑। अ॒सि॒। विध्य॑। र॒क्षस॑ः। तपि॑ष्ठैः।। १।।

*विस्तृत कर तेजों को, जाल की तरह विस्तृत की,*
*गमन कर राजा की तरह, बलवान् की, तेजःसमूह के साथ।*
*शीघ्रगामिनी के पीछे, शत्रुसेना के, दौड़ता हुआ,*
*बाणवर्षक है तू, बींध दे राक्षसों को, तप्ततम (बाणों) से।। १।।*

हे सन्मार्ग पर अग्रसर करने वाले परमेश्वर! जिस प्रकार बहेलिया पक्षियों को फँसाने के लिये अपने जाल को धरती पर फैलाता है, तू भी उसी प्रकार अन्धकार अज्ञान आदि दुष्ट आसुरी शक्तियों को अपने वश में करने के लिये अपने तेजों का सब ओर विस्तार कर। जिस प्रकार कोई शक्तिशाली राजा हाथी पर सवार होकर शत्रुओं पर आक्रमण के लिये प्रयाण करता है, उसी प्रकार सर्वशक्तिमान् तू भी अपने तेजःसमूह के साथ दुष्ट आसुरी शक्तियों पर आक्रमण के लिये प्रयाण कर। तू तीव्र गति वाली इन शत्रुसेनाओं का पीछा कर। तू महान् बाणवर्षक है, तू अपने रश्मिरूपी शरों को तम की सेनाओं पर फैंकने वाला है। तू अपने उष्णतम और तीक्ष्णतम रश्मिबाणों से अन्धकार और अज्ञान की हिंसक सेनाओं को बींध दे।

टि. *विस्तृत कर तेजों को* - **कृणुष्व पाजः**। विस्तारय ज्वालालक्षणं बलम्। तेज एव वा पाजः। वे.। तेजःसङ्घं विस्तारय - सा.। put forth thy vigour - G.

*जाल की तरह विस्तृत की* - **प्रसितिं न पृथ्वीम्**। प्रसितिः प्रबन्धनात्, तन्तिर् वा जालं वा मृगग्रहणाय - वे.। यथा मृगयुः पृथिवीं विस्तीर्णां प्रसितिम्। प्रकर्षेण सीयते बध्यत इति प्रसितिर् वागुरा। तादृशीं प्रसितिं वनगहनेषु प्रसारयति तद्वद् रक्षांसि हन्तुं महद् बलम् अग्रतस् तनुष्व। सा.।

*राजा की तरह बलवान् की* - **राजा इव अमवान्**। राजेव अमात्यवान् - वे.। यथामवान् राजा। सह वर्तत इत्यमो ऽमात्यः। तद्वान्। यद्वा। अमो ऽमनं रोगः। शत्रूणां कर्तव्यै रोगैस् तद्वान्। शत्रूणां रोगभूत इत्यर्थः। सा.।

*तेजःसमूह के साथ* - **इभेन**। हस्तिना - वे.। गतभयेन तेजःसङ्घेन युक्तः। यद्वा। इभेन गजेन युक्तः सन्। सा.। attended by his followers - W. with his attendants - G. Ar.

*शीघ्रगामिनी के पीछे शत्रुसेना के दौड़ता हुआ* - **तृष्वीम् अनु प्रसितिं द्रूणानः**। क्षिप्रकारिणीं प्रसितिं राक्षसेषु अनु - वे.। तृष्वीति क्षिप्रनाम। क्षिप्रगामिनीं प्रसितिं प्रकृष्टां सेनाम् अनु द्रूणानः अनुगच्छन्। यद्वा। तृष्वीम् इति तृतीयार्थे द्वितीया। तृष्व्या क्षिप्रया प्रसित्यानुबद्धया सन्ततया गत्या द्रूणानः परसेनां हिंसन्। सा.।

*तप्ततम बाणों से* - **तपिष्ठैः**। तप्तृतमैस् तेजोभिः - वे.। सा.। अतिशयेन सन्तापकैः शस्त्रादिभिः

- दया.। with thy fiercest flames - W. with darts that burn most fiercely - G. Ar.

**तवं भ्रमासं आशुया पंतन्त्यनुं स्पृश धृषता शोशुंचानः।**
**तपूंष्यग्ने जुह्वां पतङ्गान् असंदितो वि सृज विष्वंग् उल्काः।। २।।**

तवं। भ्रमासंः। आशुऽया। पतन्ति। अनुं। स्पृश। धृषता। शोशुंचानः।
तपूंषि। अग्ने। जुह्वां। पतङ्गान् असम्ऽदितः। वि। सृज। विष्वंक्। उल्काः।। २।।

*तेरी भ्रमणशील आशुगति रश्मियां गमन करती हैं (सब ओर),*
*पीछे से स्पर्श कर, धर्षणशीलों से अतिशय दीप्त होता हुआ।*
*तापक तेजों को, हे अग्ने!, जिह्वा से, रश्मियों को,*
*बन्धनरहित (तू), फैला दे सब ओर, उल्काओं को।। २।।*

हे मार्गदर्शक परमात्मन्! भ्रमणशील तेरे तीव्रगति तेज सब ओर गमन करते हैं। इन धर्षणशील तेजों से अत्यधिक प्रदीप्त होता हुआ तू दुष्ट आसुरी शक्तियों का पीछा करके उनको दग्ध कर दे। हे जगदीश्वर! तुझे कोई भी बन्धनों में नहीं बांध सकता। तू पूर्णतः स्वतन्त्र है। तू अपनी जिह्वा से, वचनमात्र से, आज्ञा से, अपने शत्रुतापक तेजों, रश्मियों और दीप्त उल्कापिण्डों को सब ओर छोड़ दे, ताकि अज्ञान और अन्धकार का नाश होकर सब ओर सुख और शान्ति के साम्राज्य की स्थापना हो जाए। ये उल्काएं दुष्टों और अत्याचारियों के विनाश के लिये और ये रश्मियां अज्ञान और अन्धकार के विनाश के लिये हो जाएं।

टि. *भ्रमणशील* - **भ्रमासः**। भ्रमणशीलाः - वे.। भ्राम्यन्तः - सा.। wanderings - Ar.

*आशुगति रश्मियां* - **आशुया**। आशवः - वे.। शीघ्रगतयो रश्मयः। आशुशब्दाज् जसः सुपां सुलुग् इति याजादेशः। चित्स्वरः। सा.।

*तापक तेजों को* - **तपूंषि**। तापयितृणि रक्षांसि - वे.। तापकानि तेजांसि - सा.।

*जिह्वा से* - **जुह्वा**। होमसाधनभूतेन - वे.। दया.। हूयन्ते ऽस्याम् आहुतय इति जुहूर् ज्वाला, तया। जुहोतेर् दीर्घश् चेति क्विप् द्विर्वचनं दीर्घत्वम्। सा.। with the ladle (of oblation) - W. with thy tongue - G. by thy tongue - Ar.

*रश्मियों को* - **पतङ्गान्**। पतनशीलांश् चासुरान् - वे.। पतनशीलान् विस्फुल्लिङ्गान् - सा.। the winged flames - G. thy winged sparks - Ar.

*बन्धनरहित* - **असंदितः**। दामभिर् असम्बद्धः - वे.। परैर् अनिरुद्धः। दो अवखण्डने। कर्मणि निष्ठा। द्यतिस्यतीतीत्वम्। नञा समासे तस्य स्वरः। सा.। अखण्डितः - दया.।

*छोड़ दे* - **वि सृज**। प्रसारय - सा.। scatter - W.

**प्रति स्पशो वि सृंज तूर्णितमो भवां पायुर् विशो अस्या अदंब्धः।**
**यो नों दूरे अघशंसो यो अन्त्यग्ने माकिंष् टे व्यथिर् आ दंधर्षीत्।। ३।।**

प्रतिं। स्पशंः। वि। सृज। तूर्णिऽतमः। भवं। पायुः। विशः। अस्याः। अदंब्धः।
यः। नः। दूरे। अघऽशंसः। यः। अन्तिं। अग्नें। माकिंः। ते। व्यथिंः। आ। दुधर्षीत्।। ३।।

*सब ओर रश्मियों को विसर्जित कर तू, अतिशय शीघ्रकारी,*

*हो जा पालक प्रजाओं का, इनका, धोखा न दिया जाने वाला।*
*जो हमसे दूर है, पापों का प्रशंसक, जो निकट है (हमारे),*
*हे अग्ने!, मत कोई (उपासकों को) तेरे, सन्तापक, धर्षित करे।। ३।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले प्रभो! तू अपने कार्यों को अत्यधिक शीघ्रता से करने वाला है। तू अपनी तमोविनाशक रश्मियों को सब ओर विसर्जित कर दे। जगत् में कोई भी शक्ति तुझे धोखा नहीं दे सकती, तुझे हिंसित नहीं कर सकती, तुझे दबा नहीं सकती। तू अपनी इन प्रजाओं का दुष्ट आसुरी शक्तियों से पालक और रक्षक हो जा। हे परमेश्वर! हम तेरे उपासक हैं। तेरे संरक्षण में रहने वालों को हमको, व्यथित करने वाला कोई भी बाह्य अथवा आभ्यन्तर शत्रु अपने अधीन न कर सके।

टि. *रश्मियों को* – **स्पशः**। स्पशतिर् ज्ञानकर्मा। ज्वालाः। वे.। परबाधकान् रश्मीन् चरान् वा – सा.। स्पर्शकान् – दया.। spies - G. scouts - Ar.

*अतिशय शीघ्रकारी* – **तूर्णितमः**। अतिशयेन शत्रून् तरन् – वे.। त्वरिततमः – सा.। दया.।

*पापों का प्रशंसक* – **अघशंसः**। अघायुः – वे.। अघं पापात्मकं शंसनम् अभिलाषः कीर्तनं वा यस्य सः – सा.। पापप्रशंसकस्तेनः – दया.। calumniator - W. who is bent on evil - G. he who would bring evil by speech against us - Ar.

*सन्तापक* – **व्यथिः**। व्यथयिता – वे.। बाधको राक्षसः – सा.। malevolent - W. trouble (sent from thee) - G. bringer of anguish - Ar.

**उद् अ॑ग्ने तिष्ठ॒ प्रत्या त॑नुष्व॒ न्य१॑मित्राँ॑ ओषतात् तिग्महेते।**
**यो नो॒ अरा॑तिं समिधान च॒क्रे नी॒चा तं ध॑क्ष्यत॒सं न शुष्क॑म्।। ४।।**

उत्। अ॒ग्ने॒। ति॒ष्ठ॒। प्रति॑। आ। त॒नु॒ष्व॒। नि। अ॒मित्रा॑न्। ओ॒ष॒ता॒त्। ति॒ग्म॒ऽहे॒ते॒।
यः। नः॒। अरा॑तिम्। स॒म्ऽइ॒धा॒न॒। च॒क्रे। नी॒चा। तम्। ध॒क्षि॒। अ॒त॒सम्। न शुष्क॑म्।। ४।।

*उठ खड़ा हो, हे अग्ने!, सब ओर विस्तार कर (तेज का अपने),*
*पूर्णतः अमित्रों को जला दे तू, हे तीक्ष्ण शस्त्रों वाले।*
*जो हम से शत्रुता, हे सम्यक् देदीप्यमान!, करता है,*
*नीचे उसको जलाकर डाल दे, काठ की तरह सूखे हुए की।। ४।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! तू अज्ञान अन्धकार आदि दुष्ट आसुरी शक्तियों के संहार के लिये उठ खड़ा हो। तू अपने तेज और ओज का विस्तार कर। हे तीक्ष्ण रश्मियों रूपी आयुधों वाले! जो इस जगत् में हिंसक शक्तियां हैं, तू उनको जलाकर भस्म कर दे। हे सम्यक् प्रकाशमान! जो हमारे साथ शत्रुता का व्यवहार करता है, जो अराति है, जो किसी को कुछ नहीं देता, सब कुछ अपने पास ही रख लेता है, समाज के ऐसे शत्रु को तू जलाकर इस प्रकार नीचे डाल दे, जिस प्रकार सूखे काष्ठ को जलाकर डाल दिया जाता है।

टि. *सब ओर विस्तार कर (तेज का अपने)* – **प्रति आ तनुष्व**। प्रति विस्तारयाऽऽत्मानम् – वे.। ज्वालासङ्घं विस्तारय – सा.। विस्तृणीहि – दया.। spread thee out before us - G. Ar.

*पूर्णतः जला दे तू* – **नि ओषतात्**। आभिमुख्येन दह – वे.। नितरां दह। उष दाहे। लोटि हेस्

तुह्योर् इति तातङ् आदेशः। सा.।

*हे तीक्ष्ण शस्त्रों वाले* - **तिग्महेते।** हे तिग्मदीप्त्यायुध - वे.। तिग्मास् तीक्ष्णा हेतयो ज्वाला यस्य स तथोक्तः। तादृश। सा.। sharp-weaponed - W. O sharp-missiled Flame - Ar.

*शत्रुता करता है* - **अरातिं चक्रे।** अरातित्वं करोति - वे.। भावप्रधाननिर्देशः। अरातित्वं शात्रवं कुरुते। सा.। who hath worked us mischief - G.

*काष्ठ की तरह* - **अतसं न।** अतसान् अनायासतो दहत्यग्निर् अन्येभ्यः काष्ठेभ्यः - वे.। काष्ठम् - सा.। कूपम् इव - दया.। like a piece of dry timber - W. like a stubble - G.

**ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मद् आविष् कृणुष्व दैव्यान्यग्ने।**
**अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिम् अजामिं प्र मृणीहि शत्रून्।। ५।। २३।।**

ऊर्ध्वः। भव। प्रति। विध्य। अधि। अस्मत्। आविः। कृणुष्व। दैव्यानि। अग्ने।
अव। स्थिरा। तनुहि। यातुऽजूनाम्। जामिम्। अजामिम्। प्र। मृणीहि। शत्रून्।। ५।।

*उठ, बींध दे (दुष्टों को), अधिक हैं जो (बल में) हमसे,*
*प्रकट कर दिव्यों को (तेजों को, अपने), हे अग्ने!*
*नीचे दृढ़ों को झुका दे (धनुषों को), कष्टदायक बल वालों के,*
*सम्बन्धियों को, असम्बन्धियों को, मार डाल तू हिंसकों को।। ५।।*

हे सन्मार्गद्रष्टा जगदीश्वर! तू उठ और अपने दिव्य तेजों को प्रकट कर। दुष्ट, पापी, अत्याचारी, आततायी जन जो भी हमारे बाह्य शत्रु हैं तथा अज्ञान काम क्रोध लोभ आदि जो हमारे आन्तरिक शत्रु हैं, और जो बल में हमसे बहुत बढ़े हुए हैं, तू अपने दिव्य तेज से उन सब को नष्ट कर दे। जिन के बल और हथियार केवल दूसरों के विनाश के लिये हैं, उनके मजबूत हथियारों को तू नीचे झुका दे। जो लोग दूसरों की हिंसा करते हैं, वे चाहे हमारे सगे-सम्बन्धी हैं अथवा पराए हैं, उन सब को तू मार डाल।

टि. *प्रकट कर दिव्यों को (तेजों को)* - **आविष् कृणुष्व दैव्यानि।** आविः कुरु च दैव्यानि तेजांसि - वे.। सा.। manifest thy divine energies - W. reveal in us the things divine - Ar.

*नीचे दृढ़ों को झुका दे (धनुषों को)* - **अव स्थिरा तनुहि।** पतितज्यानि कुरु धनूंषि - वे.। स्थिरा दृढानि धनूंष्यव तनुहि। अवगतज्यानि कुरु। सा.।

*कष्टदायक बल वालों के* - **यातुजानाम्।** हिंसार्थं जवं कुर्वतां राक्षसानाम् - वे.। यातयितुं प्राणिनः क्लेशयितुं ये जवं कुर्वन्ति तेषां यातुधानानाम् - सा.। प्राप्तवेगानाम् - दया.। of the demon-driven - G. of the demon forces or demon impulsions - Ar.

*सम्बन्धियों को, असम्बन्धियों को* - **जामिम् अजामिम्।** ज्ञातिम् अज्ञातिं वा - वे.। बन्धुम् अबन्धुम्। यद्वा। जामिं यः पूर्वं प्रहतस् तम्। अजामिं पूर्वं अप्रहतम्। सा.। whether kindred or unallied - W. whether kin or stranger - G.

*मार डाल तू* - **प्र मृणीहि।** विनाशय - वे.। प्रजहि। मृङ् प्राणत्यागे। अन्तर्भावितण्यर्थस्य लोटि बहुलं छन्दसीति विकरणस्य श्ना। निघातः। सा.।

**स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुम् ऐरत्।**
**विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत्।। ६।।**

सः। ते। जानाति। सुऽमतिम्। यविष्ठ। यः। ईवते। ब्रह्मणे। गातुम्। ऐरत्।
विश्वानि। अस्मै। सुऽदिनानि। रायः। द्युम्नानि। अर्यः। वि। दुरः। अभि। द्यौत्।। ६।।

*वह (यजमान) तेरी पा लेता है कृपा को, हे युवतम!,*
*जो (तुझ) गतिशील ब्रह्म के लिये, गान को गाता है।*
*सब (दिन) इसके लिये सुदिन, धन (हो जाते हैं इसके लिये),*
*यश (हैं इसके लिये), स्वामी विशेषेण घरों के सम्मुख शोभता है।। ६।।*

हे युवतम अग्रणी परमेश्वर! जो उपासक सर्वदा वृद्धि को ही प्राप्त होने वाले तुझ सर्वव्यापक परमात्मा की महिमा का गान करता है, वह तेरी कृपा को प्राप्त कर लेता है। सब दिन उसके लिये शुभ दिन हो जाते हैं। बाह्य और आभ्यन्तर सब धन उसके हो जाते हैं। सब यश और कीर्त्तियां उसे प्राप्त हो जाती हैं। उसका यश और कीर्त्ति सब दिशाओं में फैल जाती है। वह विशाल घरों का स्वामी बनकर उनके सम्मुख शोभायमान होता है।

टि. *पा लेता है कृपा को* – **जानाति सुमतिम्।** जानाति शोभनां मतिम् – वे.। सुमतिं कल्याणकरीं अनुग्रहात्मिकां बुद्धिं जानाति लभत इत्यर्थः। सा.। He experiences thy good favour - W. He knoweth well thy favour - G. He knows thy right-mindedness - Ar.

*गतिशील ब्रह्म के लिये* – **ईवते ब्रह्मणे।** गमनवते ब्रह्मणे तुभ्यम् – वे.। ईवते गमनवते कल्याणहेतुभूतागमनाय ब्रह्मणे परिवृढाय तुभ्यम्। ईवते। ई गतौ। क्विप्। तद् अस्यास्तीति मतुप्। छन्दसीर इति मतुपो वत्वम्। सा.। for the Word in its march - Ar.

*गान को गाता है* – **गातुम् ऐरत्।** स्तुतिं प्रेरयति। गातिः शब्दकर्मा। वे.। गीयत उच्चारयत इति गातुः स्तोत्रम्। तद् ऐरत् प्रेरयति। सा.। who hastens the journey - Ar.

*यश* – **द्युम्नानि।** अन्नानि (लक्षीकृत्य) – वे.। द्युतिमन्ति रत्नकनकादीनि – सा.। यशांसि – दया.। splendours of the light - Ar.

*स्वामी विशेषेण घरों के सम्मुख शोभता है* – **अर्यः वि दुरः अभि द्यौत्।** अयम् ईश्वरो भूत्वा (अन्नानि) तद्द्वाराणि च लक्षीकृत्य वि द्योतते – वे.। दुरो गृहान् अभि अभिलक्ष्यार्यो यज्ञानां स्वामी त्वं वि द्यौत् विशेषेण द्योतस्व। केचिद् अत्र वाक्यभेदम् अङ्गीकुर्वते। अर्यः कर्मणाम् अनुष्ठाता स यजमानो दुरो गृहान् अभि वि द्यौत् विशेषेण द्योतते। सा.।

**सेद् अग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर् यस् त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः।**
**पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेद् अस्मै सुदिना सासद् इष्टिः।। ७।।**

सः। इत्। अग्ने। अस्तु। सुऽभगः। सुऽदानुः। यः। त्वा। नित्येन। हविषा। यः। उक्थैः।
पिप्रीषति। स्वे। आयुषि। दुरोणे। विश्वा। इत्। अस्मै। सुऽदिना। सा। असत्। इष्टिः।। ७।।

*वह ही, हे अग्ने!, हो जाए, शोभन ऐश्वर्यवान्, शोभन दाता,*
*जो तुझको, नित्य दी जाने वाली हवि से, जो स्तुतियों से।*

*प्रसन्न करना चाहता है, अपने जीवन के निमित्त, घर के निमित्त,*
*सब (दिन) ही इसके लिये शुभ दिन हों, वह (सफल) होवे यज्ञ।। ७।।*

हे मार्गदर्शक परमेश्वर! जो मनुष्य अपने सुखी जीवन और सम्पन्न घर के निमित्त तुझे सङ्कल्प के साथ नियमपूर्वक दी जाने वाली अपनी हवियों और नैवेद्यों के समर्पण तथा स्तुतियों से प्रसन्न करना चाहता है, वह उत्तम ऐश्वर्यों का स्वामी और उत्तम दानी हो जाए। वह दो हाथों से कमाने वाला और सौ हाथों से देने वाला हो जाए। सभी दिन इसके लिये शुभ दिन हो जाएं। इसके द्वारा किये जाने वाले यज्ञ इसे उत्तम फलों की प्राप्ति कराने वाले हों।

टि. *नित्य दी जाने वाली हवि से* - **नित्येन हविषा।** नित्येन अग्निहोत्रादिना - वर.। अनवरतेन हविषा - वे.। यावज्जीवं सङ्कल्पितेनाग्निहोत्रादिसाधनभूतेन हविषा - सा.। with constant oblations - W. with regular oblation - G. with the eternal offering - Ar.

*प्रसन्न करना चाहता है* - **पिप्रीषति।** प्रीणयितुम् इच्छति तर्पयतीत्यर्थः - वर.। वे.। प्रीञ् तर्पणे। **धातोः कर्मण इति सन्।** सा.। seeks to satisfy thee - Ar.

*अपने जीवन के निमित्त, घर के निमित्त* - **स्वे आयुषि दुरोणे।** आत्मीये जीवनार्थं गृहे - वे.। दुरोणे दुरवने कृच्छ्रलभ्ये स्वे स्वकीय आयुषि शतवर्षाख्ये जीवने - सा.। for his life and dwelling - G. in his own lfe, in his gated house - Ar.

*वह (सफल) होवे यज्ञ* - **सा असत् इष्टिः।** इष्ट्युपसंहार इत्थं फलप्रदो भवत्विति - वे.। स यज्ञः फलसाधनसमर्थो भवतु। असत्। अस्तेर् लेट्यडागमः। सा.। इष्टिः यज्ञक्रिया - दया.। may this (his) sacrifice be (productive of reward) - W. be this his longing - G. may such be his sacrificing - Ar.

**अर्चा॑मि ते सुम॒तिं घोष्य॒र्वाक् सं ते॑ वा॒वाता॑ जरताम् इ॒यं गीः।**
**स्वश्वा॑स् त्वा सु॒रथा॑ मर्जयेमा॒स्मे क्ष॒त्राणि॑ धारये॒र् अनु॒ द्यून्।। ८।।**

अर्चा॑मि। ते॒। सुऽम॒तिम्। घोषि॑। अ॒र्वाक्। सम्। ते॒। वा॒वाता॑। ज॒र॒ता॒म्। इ॒यम्। गीः।
सु॒ऽअश्वाः॑। त्वा॒। सु॒ऽरथाः॑। म॒र्ज॒ये॒म॒। अ॒स्मे इति॑। क्ष॒त्राणि॑। धा॒र॒येः॑। अनु॑। द्यून्।। ८।।

*पूजता हूँ तेरी सुन्दर मति को, घोषयुक्त होकर, सम्मुख,*
*ठीक तेरे पास पहुँचती हुई, गुणगान करे (तेरा), यह वाणी (मेरी)।*
*सुन्दर अश्वों वाले, तुझको, सुन्दर रथों वाले, अलङ्कृत करें हम,*
*हममें बलों को धारण कर तू, सभी दिनों में।। ८।।*

हे जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर करने वाले जगदीश्वर! मुझपर जो तेरी सुन्दर कृपादृष्टि है, उसके लिये मैं तेरी पूजा करता हूँ, तेरा धन्यवाद करता हूँ। यह मेरी वाणी तेरे पास पहुँचकर तेरे सम्मुख उच्च स्वर से तेरा भली भांति गुणगान करती रहे। उत्तम अश्वों और शारीरिक बलों वाले, उत्तम रथों और प्रगति के साधनों वाले और इसी प्रकार उत्तम सन्ततियों वाले होकर हम अपनी स्तुतियों से तुझे सुशोभित करते रहें। तू सदा हमें दीनों की रक्षा करने वाला बल और असहायों को दिया जाने वाला धन प्रदान करता रह।

टि. *पूजता हूँ तेरी सुन्दर मति को* - **अर्चामि ते सुमतिम्।** उच्चारयामि तव सुमतिम् - वे.। अनुग्रहपरां शोभनां बुद्धिं पूजयामि - सा.। I reverence thy good favour - W. I praise thy gracious favour - G. I make to shine thy right thought in me - Ar.

*घोषयुक्त होकर* - **घोषि।** घोषयुक्तम् - वे.। घोषयुक्तं यथा भवति तथा - सा.।

*पास पहुँचती हुई* - **ववाता।** प्रियतमा - वे.। पुनः पुनस् त्वाम् अभिगच्छन्ती। वा गतिगन्धनयोर् इत्यस्य यङ्लुगन्तस्य निष्ठायां रूपम्। सा.। दोषहन्त्री विद्याजनयित्री - दया.। loved one - G.

*गुणगान करे* - **जरताम्।** स्तौतु - वे.।

*अलङ्कृत करें हम* - **मर्जयेम।** परिचरेम - वे.। अलङ्कुर्याम। परिचरेमेति यावत्। मृजू शौचालङ्कारयोः। ण्यन्तस्य लिङि रूपम्। वृद्ध्यभावश् छान्दसः। सा.। शोधयेम - दया.। may we adorn thee - G.

*बलों को धारण कर तू* - **क्षत्राणि धारयेः।** बलानि स्थापय - वे.। धनानि निधेहि - सा.। क्षत्राणि राज्योद्भवानि धनानि। क्षत्रम् इति धननाम। (निघ. २.१०)। राज्योद्भवानि धनानि धारयेः - दया.। vouchsafe thou us dominion - G. hold up thy mights in us - Ar.

**इह त्वा भूर्या चरेद् उप त्मन् दोषावस्तर् दीदिवांसम् अनु द्यून्।**
**क्रीळन्तस् त्वा सुमनसः सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्।। ९।।**

इह। त्वा। भूरि। आ। चरेत्। उप। त्मन्। दोषाऽवस्तः। दीदिऽवांसम्। अनु। द्यून्।
क्रीळन्तः। त्वा। सुऽमनसः। सपेम। अभि। द्युम्ना। तस्थिऽवांसः। जनानाम्।। ९।।

*यहाँ तेरी बहुत परिचर्या करे (मनुष्य), निकट से स्वयम्,*
*हे अन्धकार में प्रकाश करने वाले! अति दीप्यमान की, सभी दिनों में।*
*खेलते हुए (पुत्र-पौत्रों से), तुझे स्वच्छ मनों वाले पूजें हम,*
*सब ओर से यशों पर, स्थित होते हुए मनुष्यों के।। ९।।*

हे अन्धकार को दूर करके प्रकाश को और अज्ञान को परे हटाकर ज्ञान को लाने वाले अग्रणी परमेश्वर! मनुष्य को चाहिये, कि वह सदा तुझ स्वयंप्रकाशमान और दूसरों को प्रकाशित करने वाले की स्वयं निकट से खूब परिचर्या करे। हे दयालु! तू हमपर अपनी दयादृष्टि बनाए रख, जिससे कि हम सुखी और सम्पन्न घरों में पुत्रों और पौत्रों के साथ क्रीड़ाएं करते हुए, अन्य जनों के यशों को लांघते हुए, पवित्र मनों वाले, निश्छल और निष्कपट भावों वाले होकर, तेरी पूजा-अर्चना करते रहें।

टि. *स्वयम्* - **त्मन्।** आत्मनि भूयिष्ठं प्राज्ञः - वे.। आत्मना स्वयम् एव। आत्मन्शब्दस्य तृतीयायाः सुपां सुलुग् इति लुक्। मन्त्रेष्वाङ्यादेर् आत्मन इत्याकारलोपः। सा.। आत्मनि - दया.।

*हे अन्धकार में प्रकाश करने वाले* - **दोषावस्तः।** रात्राव् अह्नि च - वे.। यद्वा। दोषावस्तर् इति सम्बुद्धिः। दोषाया रात्रिकृतस्य तमसो वस्तर् आच्छादयितर् निवारयितः। द्वन्द्वपक्षे कार्तकौजपादयश् चेति पूर्वपदप्रकृतिस्वरः। सम्बुद्धिपक्ष आमन्त्रितस्य पादादित्वात् षाष्ठिकम् आद्युदात्तत्वम्। सा.। अहर्निशम् - दया.। morning and evening - W. G. Ar.

*पूजें हम* - **सपेम।** भजेम - वे.। परिचरेम - सा.। आक्रुश्येम निन्द्येम - दया.।

*यशों पर स्थित होते हुए मनुष्यों के* – द्युम्ना तस्थिवांसः जनानाम्। शत्रुजनानाम् अन्नानि अभि तिष्ठन्तः – वे.। शत्रूणां धनानि त्वत्प्रसादाद् आत्मसात् कुर्वन्तः – सा.। द्युम्ना यशसा धनेन वा – दया.। (enjoying) the wealth of (hostile) man - W. beyond the glories of the people - G. taking our stand on the luminous inspirations (or luminous energies) of men - Ar.

**यस् त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न**
**उपयाति वसुमता रथेन।**
**तस्य त्राता भवसि तस्य सखा**
**यस् त आतिथ्यम् आनुषग् जुजोषत्।। १०।। २४।।**

यः। त्वा। सुऽअश्वः। सुऽहिरण्यः। अग्ने।
उपऽयाति। वसुऽमता। रथेन।
तस्य। त्राता। भवसि। तस्य। सखा।
यः। ते। आतिथ्यम्। आनुषक्। जुजोषत्।। १०।।

*जो तेरे पास, सुन्दर अश्वों वाला, सुन्दर सुवर्ण वाला, हे अग्ने!,*
*निकट में पहुँचता है, वासक धन वाले रथ के साथ।*
*उसका त्राता हो जाता है तू, (हो जाता है तू) उसका सखा,*
*जो तेरे आतिथ्य का, अनुकूलता से लेता है आनन्द।। १०।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! जो सुनियन्त्रित इन्द्रियों वाला और शुद्ध सुवर्ण के समान पवित्र मन वाला उपासक स्वस्थ और तेजस्वी अङ्गों तथा उत्तम एवं उदात्त भावनाओं से युक्त शरीर के साथ तेरी शरण में आ जाता है और तेरे अनुकूल होकर तेरा अतिथि के समान सत्कार एवं पूजा करने में आनन्द प्राप्त करता है, तू उसका मित्र हो जाता है और सब संकटों तथा विपत्तियों से उसकी रक्षा करता है।

टि. *वासक धन वाले रथ के साथ* – वसुमता रथेन। वसुपूर्णेन रथेन – वे.। व्रीह्यादिधनयुक्तेन रथेन सहितः सन् – सा.। बहुधनयुक्तेन रमणीयेन यानेन – दया.।

*आतिथ्य का अनुकूलता से आनन्द लेता है* – आतिथ्यम् आनुषक् जुजोषत्। त्वदर्थम् आतिथ्यम् अनुषक्तं सेवते – वे.। अतिथियोग्यां पूजाम् अनुक्रमेण प्रापयति। जुजोषत्। जोषयतेर् लङि बहुलं छन्दसीति शपः श्लुः। अडागमः। छन्दस्युभयथेति तिप आर्धधातुकत्वाणिलोपः। अभ्यस्तानाम् आदिर् इत्याद्युदात्तः। सा.। he who takes joy in thy uninterrupted guesthood - Ar.

**महो रुजामि बन्धुता वचोभिस् तन् मा पितुर् गोतमाद् अन्वियाय।**
**त्वं नो अस्य वचसश् चिकिद्धि होतर् यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः।। ११।।**

महः। रुजामि। बन्धुता। वचःऽभिः। तत्। मा। पितुः। गोतमात्। अनु। इयाय।
त्वम्। नः। अस्य। वचसः। चिकिद्धि। होतः। यविष्ठ। सुक्रतो इति सुऽक्रतो। दमूनाः।। ११।।

*शक्तिशालियों को (भी) भग्न करता हूँ मैं, बन्धुता से, वचनों से,*
*वह बन्धुत्व मुझको पिता से, स्तोता से, अनुक्रम से प्राप्त हुआ है।*

*तू हमारे इस वचन को, भली प्रकार जान ले,*

*हे होता!, हे युवतम!, हे शोभन कर्मों वाले!, रिपुदमन (है तू)।। ११।।*

हे मनुष्यों का सन्मार्ग में आह्वान करने वाले, हे युवतम, हे उत्तम कर्मों को करने वाले परमात्मन्! तू दुष्ट हिंसक जनों का दमन करने वाला है। मुझे तेरी स्तुतियों और तेरी बन्धुता से जो बल एवं सामर्थ्य प्राप्त हुआ है, मैं उससे बलशाली आसुरी शक्तियों को भी परास्त कर देता हूँ। बन्धुता की यह धरोहर मुझे अपने स्तोता पिता, पितामह आदि से क्रमशः प्राप्त हुई है। तू मेरी इस बात को भली प्रकार जान ले, कि तेरा और मेरा रिश्ता अटूट है।

टि. *शक्तिशालियों को (भी) भग्न करता हूँ मैं* - **महः रुजामि**। महतो ऽपि शत्रून् अहं रुजामि - वे.। महतो राक्षसान् भनज्मि - सा.। I destroy the mighty - G.

*स्तोता से* - **गोतमात्**। गोतमाद् ऋषेः सकाशात् - सा.। अतिशयेन गौः सकलविद्यास्तोता, तस्मात्। गौर् इति स्तोतृनाम (निघ. ३.१६)। दया.।

*भली प्रकार जान ले* - **चिकिद्धि**। बुध्यस्व - वे.। जानीहि। कित ज्ञाने। जौहोत्यादिकः। लोटि रूपम्। सा.। ज्ञापय - दया.।

*हे होता* - **होतः**। देवानाम् आह्वातः। पाददित्वात् षाष्ठिकम् आद्युदात्तत्वम्। इतरयोस् तु नामन्त्रिते समानाधिकरण इति प्रथमस्याविद्यमानवद्भावनिषेधाद् अपाददित्वेन निघातः। सा.।

*रिपुदमन* - **दमूनाः**। रक्षसां दमनमनाः - वे.। दान्तमना दानमना वा शत्रूणाम् उपक्षपयिता वा - सा.। दमनशीलो जितेन्द्रियः - दया.। the humbler (of foes) - W. Friend of the House - G. O strong Will - Ar.

**अस्वप्नजस् तरणयः सुशेवा अतन्द्रासो ऽवृका अश्रमिष्ठाः।**

**ते पायवः सध्र्यञ्चो निषद्याग्ने तव नः पान्त्वमूर।। १२।।**

अस्वप्नऽजः। तरणयः। सुऽशेवाः। अतन्द्रासः। अवृकाः। अश्रमिष्ठाः।

ते। पायवः। सध्र्यञ्चः। निऽसद्य। अग्ने। तव। नः। पान्तु। अमूर।। १२।।

*निद्रा से रहित, सतत गमनशील, शोभन सुखदायक,*

*प्रमादरहित, हिंसा न करने वाली, कभी न थकने वाली।*

*वे पालन करने वाली, परस्पर संगत, आसीन होकर,*

*हे अग्ने!, तेरी (शक्तियां) हमारी रक्षा करें, हे अज्ञान से अस्पृष्ट।। १२।।*

हे अज्ञान से अछूते मार्गदर्शक परमेश्वर! तेरी शक्तियां सदा जागरणशील, सतत गमनशील, आपदाओं से पार उतारने वाली, उत्तम सुखों को देने वाली, प्रमाद से रहित, कभी किसी की हिंसा न करने वाली, कभी न थकने वाली, सदा पालन करने वाली और परस्पर संगत होकर कार्य करने वाली हैं। हे सर्वज्ञ प्रभो! तेरी ये शक्तियां इस ब्रह्माण्ड में विराजमान होकर हम सब की रक्षा करें।

टि. *निद्रा से रहित* - **अस्वप्नजः**। स्वापम् अकुर्वन्तः - वे.। अस्वपन्तः। जागरूका इति यावत्। स्वपितृषोर् नजिङ् प्रत्ययः। मध्ये ऽवग्रहश् छान्दसः। सा.।

*सतत गमनशील* - **तरणयः**। क्षिप्रगतयः - वे.। तरणयः सततगमनस्वभावा आपद्भ्यस् तारका वा

– सा.। alert - W. speedy - G. ever in movement - Ar.

*हिंसा न करने वाली* – **अवृकाः**। स्तेनरहिताः – वे.। दया.। अहिंसकाः – सा.। benignant - W. friendly - G. untorn - Ar.

हे *अज्ञान से अस्पृष्ट* – **अमूर**। अमूढ – वे.। अमूढ सर्वज्ञ। यद्वा। अप्रतिहतगते। मुह वैचित्ये। निष्ठायां ढकारस्य रेफश् छान्दसः। यद्वा। मूङ् बन्धने। औणादिको रक्। सा.। मूढतादिदोषरहित – दया.। All-wise - W. unerring - G. untouched by ignorance - Ar.

**ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरिताद् अरक्षन्।**
**ररक्ष तान् त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाह देभुः।। १३।।**

ये। पायवः। मामतेयम्। ते। अग्ने। पश्यन्तः। अन्धम्। दुःऽइतात्। अरक्षन्।
ररक्ष। तान्। सुऽकृतः। विश्वऽवेदाः। दिप्सन्तः। इत्। रिपवः। न। अह। देभुः।। १३।।

*जो रक्षक (शक्तियां), ममता के पुत्र की, तेरी, हे अग्ने!,*
*देखती हुईं, (अज्ञान से) अन्धे की, दुर्गति से रक्षा करती हैं।*
*रक्षा करते हैं आप उनकी, शोभन कर्म करने वालियों की, सर्वज्ञ,*
*हिंसा के इच्छुक भी शत्रु, नहीं कभी हिंसित कर सकते हैं (उनको)। १३।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! ज्ञान के नेत्रों वाली तेरी दिव्य शक्तियां अथवा परोपकार आदि उत्तम कर्म करने वाले ज्ञानचक्षुओं वाले धर्मात्मा जन जब 'यह मेरा है, यह मेरा है' इस प्रकार ममत्व और लोभ की भावना से अन्धे हुए किसी अज्ञानी मनुष्य को देखते हैं, तो आप दुर्गति में पड़ने वाले ऐसे मनुष्य की उसे सन्मार्ग दिखाकर काम, क्रोध आदि से उसकी रक्षा करते हैं। हे परमेश्वर! तू सर्वज्ञ है। हिंसा की इच्छा वाले दुष्ट हिंसक जन भी तेरी ऐसी दिव्य शक्तियों अथवा परोपकारी जनों की हिंसा नहीं कर सकते।

यह मन्त्र पहले भी आ चुका है। देखिये ऋ. १.१४७.३।

टि. *ममता के पुत्र की* – **मामतेयम्**। ममताया अपत्यं पुमान् मामतेयं तम्। ममेदं ममेदम् इत्यनेन भावेन भावितम् इत्यर्थः।। ममतायाः अपत्यं दीर्घतमसम् – वे.। सा.। मम भावो ममता तस्या इदम् – दया.। the son of Mamtā - W. Ar.

*दुर्गति से* – **दुरितात्**। दुःखात् – वे.। आन्ध्यलक्षणाच् छापात् – सा.। from evil - Ar.

*हिंसा के इच्छुक* – **दिप्सन्तः**। दम्भितुम् इच्छन्तः – वे.। दम्भितुं परिभवितुम् इच्छन्त एव – सा.। intending to desroy him - W.

*नहीं कभी हिंसित कर सकते हैं* – **न अह देभुः**। नैव परिभवन्ति खलु – सा.।

**त्वया वयं सधन्यस्त्वोतास् तव प्रणीत्यश्याम वाजान्।**
**उभा शंसा सूदय सत्यताते ऽनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण।। १४।।**

त्वया। वयम्। सऽधन्यः। त्वाऽऊताः। तव। प्रऽनीती। अश्याम। वाजान्।
उभा। शंसा। सूदय। सत्यऽताते। अनुष्ठुया। कृणुहि। अह्रयाण।। १४।।

*तेरे द्वारा (हो जाएं हम) समान धनों वाले, तुझसे संरक्षित,*

*तेरे मार्गदर्शन में, प्राप्त करें हम ऐश्वर्यों को (सब प्रकार के)।*
*उभयविध पापप्रशंसकों को, काट दे तू, हे सत्य के विस्तारक!,*
*अनुक्रम से कर दे (पूर्ण कामनाओं को), हे निस्संकोच गमन वाले।। १४।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! हम तेरे संरक्षण में समान धनों वाले हो जाएं। हममें से कोई भी निर्धन अथवा अभावग्रस्त न हो। तेरे मार्गदर्शन में हम सब प्रकार के ऐश्वर्यों का उपभोग करें। हे सत्य का प्रचार-प्रसार करने वाले! अथवा हे सत्य से ओत-प्रोत प्रभो! जो निकटवर्त्ती और दूरवर्त्ती दोनों प्रकार के पाप के प्रशंसक और दुराचारी हैं, तू उन सब को नष्ट कर दे। हे निस्सङ्कोच, निश्शङ्क और निर्भय होकर सर्वत्र गमन करने वाले सर्वव्यापक जगदीश्वर! तू धीरे-धीरे हमारी सब शुभ कामनाओं को पूर्ण कर दे।

टि. *समान धनों वाले* - **सधन्यः**। त्वत्प्रसादात् समानधनाः। धनम् एषाम् अस्तीति छन्दसीवनिपाव् इतीप्रत्ययः। एर् अनेकाच इति यण्। उदात्तस्वरितयोर् इति स्वरितत्वम्। सा.। समानं धनं विद्यते येषां ते। अत्र मत्वर्थीय ईप्। दया.। may we be wealthy - G.

*तेरे मार्गदर्शन में* - **तव प्रणीती**। तव प्रणयनेन - वे.। तव प्रेरणेनानुज्ञया - सा.। तव प्रकृष्टनीत्या - दया.। with thee to guide us onward - G. by thy leading - Ar.

*उभयविध पापप्रशंसकों को* - **उभा शंसा**। शत्रूणां प्रत्यक्षाभिशापं परोक्षाभिशापं च - वे.। पापानां शंसिताराव् उभाव् आसन्नविप्रकृष्टौ शत्रू - सा.। उभौ प्रशंसे - दया.। fulfil the words of both : the wishes of gods and men - G.

*हे सत्य के विस्तारक* - **सत्यताते**। हे सत्यस्य विस्तारयितः - वे.। सत्यं तनोतीति वा सत्यं तायते यस्मिन्निति वा सत्यतातिः। हे सत्यताते। सा.। सत्याचरक - दया.। O Ever Truthful - G. O builder of Truth - Ar.

*अनुक्रम से कर दे (पूर्ण कामनाओं को)* - **अनुष्ठुया**। साध्वेवास्माकं कुरु कामप्रदानाद् इति - वे.। अनुक्रमेण कृणुहि। अस्मिन् सूक्ते प्रतिपादितम् अर्थं कुरु। अपदुःसुषु स्थ इति विधीयमानः कुप्रत्ययो बहुलवचनाद् अनुपूर्वस्यापि भवति। सुपां सुलुग् इति तृतीयाया याजादेशः। सा.। आनुकूल्येन - दया.। in due course - W. straightaway - Ar.

*हे निस्सङ्कोच गमन वाले* - **अह्रयाण**। हे अह्रीतगमन - वे.। अलज्जितगमन। अह्रयाणो अह्रीतयान इति यास्कः। ह्री लज्जायाम्। बहुलं छन्दसीति शपः श्लुभावाभावः। अनित्यम् आगमनशासनम् इति मुगभावः। सा.। लज्जारहित - दया.। the God whom power emboldens - G.

**अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय।**
**दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्।। १५।। २५।।**

अया। ते। अग्ने। सम्ऽइधा। विधेम। प्रति। स्तोमम्। शस्यमानम्। गृभाय।
दह। अशसः। रक्षसः। पाहि। अस्मान्। द्रुहः। निदः। मित्रऽमहः। अवद्यात्।। १५।।

*इससे तेरी, हे अग्ने!, दीप्त स्तुति से, पूजा करें हम,*
*स्तोत्र को, गान किये जाते हुए को, स्वीकार कर तू।*

*जला दे भक्षकों को, राक्षसों को, रक्षा कर हमारी,*

*द्रोही से, निन्दक से, हे मित्रों से पूजित!, निन्दनीय से।। १५।।*

हे मार्गदर्शक परमात्मन्! हम तेरे उपासक अपनी इस सुन्दर स्तुति से तेरा गुणगान सदा करते रहें। तू हमारे द्वारा गाए जाते हुए इस अपने स्तुतिगान को स्वीकार कर। तू नरभक्षी, मनुष्यों का हनन करने वाले, अथवा तेरा स्तवन न करने वाले नास्तिकबुद्धि राक्षस जनों को जलाकर राख कर दे। तू अन्यों से द्रोह करने वाले, अनिन्दनीयों की निन्दा करने वाले और निन्दा के योग्य दुष्टवृत्ति वाले जनों से हमारी सब प्रकार से रक्षा कर।

टि. *इससे दीप्त स्तुति से* - **अया समिधा**। अनया समिधा - वे.। अया अनया समिधा दीप्त्या स्तुत्या - सा.। अनया प्राप्तया सम्यक् प्रदीप्तया नीत्या सह - दया.। by this fuel - W. G. Ar.

*भक्षकों को* - **अशसः**। अशंसितृन् आत्मनः - वर.। अशनपरान् - वे.। शंसन्ति स्तुवन्तीति शसः स्तोतारः। ते न भवन्तीत्यशसो नृशंसाः। तान् रक्षसः। सा.। अस्तावकान् - दया.। unadoring - W. the cursing - G. who speak not the word of blessing - Ar.

*निन्दक से, निन्दनीय से* - **निदः अवद्यात्**। निदः निन्दितुश् च सकाशात्, अवद्यात् गर्ह्याच् च पापात् - वर.। निन्दितश् च अवद्यात् - वे.। निदो निन्दकाद् अवद्यात् परिवादाच् च। णिदि कुत्सायाम्। क्विप्। आगमशासनस्यानित्यत्वान् नुमभावः। साव् एकाच इति विभक्तेर् उदात्तत्वम्। अवद्यात्। अवद्यपण्येति यत्। ययतोश् चातदर्थे (पा. ६.२.१५६) इति अन्तोदात्तत्वम्। सा.। निन्दकाद् अधर्माचरणात् - दया.। from the reproach of the (oppressor and the) reviler - W. from (guile and) and scorn and slander - G. from the censurer and his blame - Ar.

*हे मित्रों से पूजित* - **मित्रमहः**। हे मित्राणां पूजक - वे.। हे मित्रैः पूजनीय - सा.। ये मित्राणि महन्ति सत्कुर्वन्ति - दया.। to be honoured by (thy) friends - W. O rich in friends - G. O friendly Light - Ar.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां तृतीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त ५

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - वैश्वानरो ऽग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**वैश्वानराय मीळ्हुषे सजोषाः कथा दाशेमाग्नये बृहद् भाः।**
**अनूनेन बृहता वक्षथेनोप स्तभायद् उपमिन् न रोधः।। १।।**

वैश्वानराय। मीळ्हुषे। सऽजोषाः। कथा। दाशेम। अग्नये। बृहत्। भाः।
अनूनेन। बृहता। वक्षथेन। उप। स्तभायत्। उपऽमित्। न। रोधः।। १।।

*सब के नायक को, सुखवर्षक को, समान प्रीति वाले (होकर),*
*किस प्रकार प्रदान करें हम (हव्य) अग्नि को, महान् ज्योति (है जो)।*
*सम्पूर्ण से, महान् से, वहन करने के सामर्थ्य से (अपने),*
*निकट से थाम रहा है (जो त्रिभुवन को), स्तम्भ जैसे छत को।। १।।*

वह मार्गदर्शक परमेश्वर सब का नायक है। वह सब पर सुखों की वर्षा करने वाला है। वह महान् ज्योति है। हम उपासक जन समान प्रीति वाले होकर उस जगन्नायक को किस प्रकार अपनी हवि समर्पित करें। यह हमें कुछ समझ में नहीं आता। वह अपने महान् वहन काने के सामर्थ्य से इस त्रिलोकी को इस प्रकार ऊपर की ओर थामे हुए है, जिस प्रकार स्तम्भ समस्त छत को अपने ऊपर थामे रहता है।

टि. *सब के नायक को* - **वैश्वानराय**। विश्वानरसम्बन्धिन एतन्नामकाय - सा.। विश्वेषु नायकाय - दया.। ऋ. १.५९.१ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।

*महान् ज्योति (है जो)* - **बृहत् भाः**। यो ऽत्यन्तं भासते - वे.। बृहद् बृहते महते भा भासमानाय। अथवा बृहद् भा इत्युत्तरत्र योज्यम्। यो ऽग्निर् महान् भासमानश् च सन्। सा.। महद् यो भाति सः - दया.। bright with great lustre - W. Great light - G. vast in light - Ar.

*वहन करने के सामर्थ्य से* - **वक्षथेन**। वहनकुशलेन तेजसा - वे.। वोढव्येन स्वशरीरेण। यद्वा। वक्षथेनोक्थलक्षणेन फलादिवाहकेन स्तोत्रेण सह। सा.। रोषेण - दया.। with insupportale bulk - W. with full high growth - G.

*निकट से थाम रहा है* - **उप स्तभायत्**। उपस्तभ्नाति। सामर्थ्याद् द्याम् इति शेषः। द्युलोकं व्याप्नोतीत्यर्थः। स्तन्भुः सौत्रो धातुः। लङि छन्दसि शायज् अपीति व्यत्ययेनाहाव् अपि शायजादेशः। बहुलं छन्दसीत्यडागमाभावः। सा.। sustains the heaven - W.

*स्तम्भ जैसे भवन को* - **उपमित् न रोधः**। यथा उपमित् स्थूणवंशम् - वे.। उप समीपे मीयते क्षिप्यत इत्युपमित् स्थूणा। सा यथा तृणाच्छादनादिनिरोधकं वंशादिकम् उपस्तभ्नाति तद्वत्। उप समीपे मीयत इत्युपमिद् उदकम्। कूलम् इव। सा.। य उपमिनोति स इव रोधनम् - दया.। as a pillar bears a roof - G. he props up the firmament like a pillar - Ar.

**मा निन्दत य इमां मह्यं रातिं देवो ददौ मर्त्याय स्वधावान्।**
**पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यह्वो अग्निः।। २।।**

मा। निन्दत। यः। इमाम्। मह्यम्। रातिम्। देवः। ददौ। मर्त्याय स्वधाऽवान्।
पाकाय। गृत्सः। अमृतः। विऽचेताः। वैश्वानरः। नृऽतमः। यह्वः। अग्निः।। २।।

*मत निन्दा करो (उसकी), जो इसको मुझे उपदा को,*
*द्योतनशील, देता है, अमरणधर्मा को, आत्मधारणावान्।*
*अपरिपक्वबुद्धि को, बुद्धिमान्, अमरणधर्मा, विशेष ज्ञाता,*
*सब का नायक, नायकों में श्रेष्ठ, महान्, अग्नि।। २।।*

हे मनुष्यो! वह अग्रणी परमेश्वर स्वप्रकाशमान है और सब को प्रकाशित करने वाला है। वह आत्मनिर्भर है और हम सब का आधार है। वह महान् मेधा का स्वामी है, हम अपरिपक्वबुद्धि हैं। वह अजर-अमर है, हम मरणधर्मा हैं। वह विशेष ज्ञाता है, हम अल्पज्ञ हैं। वह सब का नेता है और सब नेताओं में श्रेष्ठ है। हे उपासको! वह चूँकि हमें रहस्यमय ज्ञान का उपहार प्रदान करता है, इसलिये उसकी कभी निन्दा मत करो। उसकी सदा स्तुति ही करो।

टि. *उपदा को* - **रातिम्।** धनम् - वे.। सा.। दानम् - दया.। bounty - G. gift - Ar.

*आत्मधारणावान्* - **स्वधावान्।** अन्नवान् - वे.। अस्मद्दत्तेन हविर्लक्षणेनान्नेन तद्वान् सन् - सा.। बह्वन्नाद्यैश्वर्यः - दया.। accepting the oblation - W. self-reliant - G. in his self-law - Ar.

*अपरिपक्वबुद्धि को* - **पाकाय।** अपक्वप्रज्ञाय - वे.। परिपक्वप्रज्ञाय - सा.। परिपक्वव्यवहाराय - दया.। ज्ञानी को - सात.। of mature (intellect) - W. the simple - G. to the ignorant - Ar.

*बुद्धिमान्* - **गृत्सः।** मेधावी - वे.। मेधाविनामैतत् - सा.। यो गृणाति स मेधावी - दया.।

**साम द्विबर्हा महि तिग्मभृष्टिः सहस्ररेता वृषभस् तुविष्मान्।**
**पदं न गोर् अपगूळ्हं विविद्वान् अग्निर् मह्यं प्रेदु वोचन् मनीषाम्।। ३।।**

साम। द्विऽबर्हाः। महि। तिग्मऽभृष्टिः। सहस्रऽरेताः। वृषभः। तुविष्मान्।
पदम्। न। गोः। अपऽगूळ्हम्। विविद्वान्। अग्निः। मह्यम्। प्र। इत्। ऊँ इति। वोचत्। मनीषाम्।। ३।।

*पापविनाशक का, दोनों लोकों में बढ़ा हुआ, महान् का, तीक्ष्ण तेज वाला,*
*बलिष्ठ वीर्यों वाला, सुखों का वर्षक, अमित बल वाला।*
*पदचिह्न का जैसे गौ के छुपे हुए का, विशेष रूप से जानने वाला,*
*अग्नि मेरे लिये भली प्रकार ही, प्रवचन करे अत्यन्त गूढ़ ज्ञान का।। ३।।*

वह अग्रणी परमेश्वर इहलोक और परलोक दोनों में बढ़ा हुआ है। वह तीक्ष्ण तेज वाला, बलिष्ठ वीर्यों वाला, सुखों का वर्षक और अप्रमेय बल वाला है। वह पापों का विनाश कर डालने वाले, महान् और अत्यन्त गूढ़ ज्ञान के रहस्य को मुझे इस प्रकार बता देवे, जिस प्रकार किसी चोर के द्वारा चुराकर छुपाई हुई गौ के पदचिह्नों का अनुसरण करके गौ के स्थान को सम्यक् जान लेने वाला कोई पैड़िया उसके प्राप्तिस्थान को बता देता है।

टि. *पापविनाशक का* - **साम।** षिञ् बन्धन इत्यस्माद् धातोर् मनिन्प्रत्ययान्तं रूपम् इदम्। पापकर्माणि बध्नाति विनाशयतीति तत्।। 'साम वै रक्षोहा' (तै. ६.६.३.१) इति ब्राह्मणम् - वे.। सिद्धान्तितं कर्म - दया.। (who comprehends) by (his) wisdom the mysterious sacred

hymn - W. who knows the (lofty) hymn - G.

*दोनों लोकों में बढ़ा हुआ* - **द्विबर्हाः**। द्वयोः परिवृळ्हः - वे.। द्वयोर् मध्यमोत्तमयोः स्थानयोः परिवृढः - सा.। in his twofold mass - Ar.

*तीक्ष्ण तेज वाला* - **तिग्मभृष्टिः**। ज्वालालक्षणतिग्मभृष्टिः, भृष्टिः भ्रंशयतीति - वे.। तीक्ष्णतेजाः - सा.। bright shining - W. sharp-pointed - G.

*बलिष्ठ वीर्यों वाला* - **सहस्ररेताः**। नानाविधानां पशूनां उत्पादनात् - वे.। बहुविधहिरण्यरेतस्कः। रेतःशब्दः सारवाची। प्रभूतसारो वा। सा.। अतुलवीर्यः - दया.। of manifold vigour - W. with his thousandfold seed - Ar.

*छुपे हुए का* - **अपगूळ्हम्**। निगूढम् - वे.। अत्यन्तरहस्यम् - सा.। गुप्तम् - दया.। kept secret - G. deeply hidden - Ar.

*अत्यन्त गूढ़ ज्ञान का* - **मनीषाम्**। मनीषाशब्दो ज्ञानवाची सन्नत्र ज्ञातव्ये वर्तते - सा.। प्रज्ञाम् - दया.। sense - W. hidden knowledge - G. Mind of wisdom - Ar.

**प्र ताँ अ॒ग्निर् ब॑भसत् ति॒ग्मज॑म्भस् तपि॑ष्ठेन शो॒चिषा॒ यः सु॒राधाः॑।**
**प्र ये मि॒नन्ति॒ वरु॑णस्य॒ धाम॑ प्रि॒या मि॒त्रस्य॒ चेत॑तो ध्रु॒वाणि॑।। ४।।**

प्र। तान्। अ॒ग्निः। ब॒भ॒स॒त्। ति॒ग्मऽज॑म्भः। तपि॑ष्ठेन। शो॒चिषा॑। यः। सु॒ऽराधाः॑।
प्र। ये। मि॒नन्ति॑। वरु॑णस्य। धाम॑। प्रि॒या। मि॒त्रस्य॑। चेत॑तः। ध्रु॒वाणि॑।। ४।।

*प्रकर्ष से उनको अग्नि खा जाए, तीक्ष्ण दाढ़ों वाला,*
*अतिशय तपाने वाले तेज से, जो (है) शोभन ऐश्वर्यों वाला।*
*प्रकर्ष से जो हिंसित करते हैं, वरुण की धारक शक्तियों को,*
*प्रियों को, मित्र के, जागरूक ज्ञानवान् के, निश्चलों को।। ४।।*

जो दुष्ट आसुरी वृत्ति वाले मनुष्य जागरूक ज्ञानी उस वरणीय और सखाभूत परमेश्वर की प्रिय और अटल धारक शक्तियों को, उसके नियमों को, हिंसित करते हैं, उनके विपरीत आचरण करते हैं, वह तीक्ष्ण तेजों वाला और उत्तम ऐश्वर्यों वाला परमेश्वर अपने अतिशय दाहक तेज से उनको भस्म कर डालता है। इसलिये हम मनुष्यों का परम कर्तव्य है, कि हम साधु आचरण वाले होकर उसके नियमों का कभी उल्लङ्घन न करें। सदा उनका पालन करते रहें।

टि. *खा जाए* - **बभसत्**। भक्षयतु - वे.। भर्त्सयतु, दहत्वित्यर्थः। भस भर्त्सनदीप्त्योः। लेटीतश् च लोप इतीकारलोपः। अडागमः। सा.। दीप्येद् भर्त्सयेत् - दया.। may consume - W. G. Ar.

*तीक्ष्ण दाढ़ों वाला* - **तिग्मजम्भः**। तीक्ष्णदंष्ट्रः - वे.। सा.।

*हिंसित करते हैं* - **मिनन्ति**। हिंसन्ति। मीञ् हिंसायाम्। मीनातेर् निगम इति ह्रस्वत्वम्। विकरण-स्वरः। सा.। दया.। regard not - G. impair - Ar.

*धारक शक्तियों को* - **धाम**। स्थानानि, व्रतानीत्यर्थः - वे.। धामानि तेजःस्थानानि कर्माणि वा - सा.। जन्मस्थाननामानि - दया.। glories - W. commandments - G. the domain - Ar.

*निश्चलों को* - **ध्रुवाणि**। स्थिराणि - वे.। सा.। steadfast laws - G.

**अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः।**
**पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदम् अजनता गभीरम्।। ५।। १।।**

अभ्रातरः। न। योषणः। व्यन्तः। पतिऽरिपः। न। जनयः। दुःऽएवाः।
पापासः। सन्तः। अनृताः। असत्याः। इदम्। पदम्। अजनत। गभीरम्।। ५।।

*बन्धुबान्धवरहित जैसे स्त्रियां, सन्मार्ग से परे जाते हुए,*
*पतिद्वेषिणी जिस प्रकार पत्नियां, कुमार्ग पर गमन करने वाली।*
*पापाचारी होते हुए, ऋत का पालन न करने वाले, सत्याचरण से रहित,*
*इस स्थान को बना देते हैं, (नरक के समान) गम्भीर।। ५।।*

भाई आदि बन्धुजनों से हीन अनियन्त्रित स्त्रियां जिस प्रकार स्वच्छन्द और स्वेच्छाचारिणी होकर कुपथगामिनी हो जाती हैं, और जिस प्रकार अपने पतियों से द्वेष करने वाली वे पत्नियां कुमार्ग का आश्रय ले लेती हैं, उसी प्रकार परिवार जनों की इच्छाओं का आदर न करने वाले और गुरुजनों से द्वेष करने वाले पापाचारी पुरुष कुल और समाज की मर्यादाओं का परित्याग करके, निरंकुश और स्वेच्छाचारी बनकर, झूठ एवं छल-कपट का आश्रय लेकर, असत्याचरण करते हुए इस पृथिवी लोक को ही अगाध नरक का स्थान बना देते हैं। ऐसे लोगों से समाज की रक्षा होनी चाहिये।

टि. *बन्धुबान्धवरहित* - **अभ्रातरः।** भ्रातृवर्जिताः - वे.। भ्रात्रादिबन्धुरहिताः। ता यथा भर्तृगृहात् पितृगृहं प्रत्यायन्ति तद्वत् - सा.। अबन्धुर् इव वर्तमानाः - दया.। who have no brethren - W. G.

*सन्मार्ग से परे जाते हुए* - **व्यन्तः।** व्यतिगच्छन्ति - वे.। गच्छन्तः - सा.। going (about from their own to their father's house) - W. straying - G.

*पतिद्वेषिणी* - **पतिरिपः।** पतिलिप्ताः पतिव्रताः - वे.। पतिद्वेषिण्यः - सा.। adverse to their lords - W. who hate their lords - G. who do hurt to their lord - Ar.

*कुमार्ग पर गमन करने वाले* - **दुरेवाः।** प्रतीच्यः कुटिलगमना भवन्ति - वे.। दुष्टगतयो दुराचाराः - सा.। दुर्व्यसनाः - दया.। going astray - W. of evil conduct - G.

*बना देते हैं* - **अजनत।** जानन्ति - वे.। अजनयन्त। उत्पादयन्ति। लङि जनेर् अन्तर्भावितण्यर्थाद् व्यत्ययेनैकवचनम्। सा.। जनयन्ति। अत्र संहितायाम् इति दीर्घः। दया.।

**इदं मे अग्ने कियते पावकामिनते गुरुं भारं न मन्म।**
**बृहद् दधाथ धृषता गभीरं यह्वं पृष्ठं प्रयसा सप्तधातु।। ६।।**

इदम्। मे। अग्ने। कियते। पावक। अमिनते। गुरुम्। भारम्। न। मन्म।
बृहत्। दधाथ। धृषता। गभीरम्। यह्वम्। पृष्ठम्। प्रयसा। सप्तऽधातु।। ६।।

*इसे, मुझको, हे अग्ने!, अकिंचन को, हे पवित्र करने वाले!,*
*अवज्ञा न करने वाले को, महान् भार की तरह, स्तोत्र को।*
*महान् को, दिया है तूने, धर्षक शक्ति वाले के साथ, गम्भीर को,*
*विशाल को, पृष्ठनामक को, प्रीतिकर अन्न के साथ, सप्ताधार को।। ६।।*

हे पतितों को पवित्र करने वाले अग्रणी परमेश्वर! मैं अकिञ्चन हूँ, निर्बल हूँ। पर मैं तेरी आज्ञाओं

का कभी उल्लंघन नहीं करता। तूने वहन न किये जा सकने योग्य एक भारी बोझ की तरह, एक महान् उत्तरदायित्व के रूप में, यह बृहत्, गम्भीर, महान् सात सामों पर आधारित पृष्ठ नामक साम-गान मुझे दे दिया है। इसके साथ ही जीवननिर्वाह के लिये तूने मुझे उत्तम अन्न भी प्रदान किया है। मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं, जो कुछ तूने दिया है उसीसे सन्तुष्ट होकर, इसका गान नियम के साथ तत्परता से करता रहूँ।

टि. *अकिंचन को* - **कियते**। स्वल्पभूताय साधवे - वे.। अत्यल्पाय - सा.। अल्पसामर्थ्याय - दया.। to me, weak - G. howso small - Ar.

*अवज्ञा न करने वाले को* - **अमिनते**। साधून् अहिंसते - वे.। अहिंसते ऽत्यजते - सा.। अहिंसकाय - दया.। on me, not neglecting thy worship - W. innocent - G. impair not - Ar.

*स्तोत्र को* - **मन्म**। मननीयं धनम् - सा.। विज्ञानम् - दया.। thought - Ar.

*दिया है तूने* - **दधाथ**। धारय - वे.। देहि - सा.। धेहि। अत्र वचनव्यत्ययेन बहुवचनम्। दया.।

*धर्षक शक्ति वाले के साथ* - **धृषता**। धृष्टेन - वे.। शत्रूणां धर्षकेण - सा.। प्रगल्भेन सह - दया.। with the violence - Ar.

*पृष्ठनामक को* - **पृष्ठम्**। स्प्रष्टुं योग्यम् - सा.। प्रच्छनीयम् - दया.। this Pṛṣṭha hymn - G. plane - Ar.

*प्रीतिकर अन्न के साथ* - **प्रयसा**। अन्नेन - वे.। together with invigorating food - W. (with the violence) of thy thought - Ar.

*सप्ताधार को* - **सप्तधातु**। सप्तधातु च शरीरवचनः। त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोऽस्थिमज्जानः सप्त धातव इति। वे.। ग्राम्यारण्यभेदेन सप्तप्रकारम् - सा.। सुवर्णादयस् सप्तधातवो यस्मिन् - दया.। consisting of seven elements - W. G. seven-fold - Ar.

**तम् इन्न्वे३व समना समानम् अभि क्रत्वा पुनती धीतिर् अश्याः।**
**ससस्य चर्मन्नधि चारु पृश्नेर् अग्रे रुप आरुपितं जबारु।। ७।।**

तम्। इत्। नु। एव। समना। समानम्। अभि। क्रत्वा। पुनती। धीतिः। अश्याः।
ससस्य। चर्मन्। अधि। चारु। पृश्नेः। अग्रे। रुपः। अरुपितम्। जबारु।। ७।।

*उसको ही निश्चय से, समान विचारों वाली, समदर्शी को,*
*सब ओर से, कर्म के साथ, पवित्रकारक स्तुति प्राप्त हो जाए।*
*(प्राप्त हो जाए) शयनशील के, चर्म के ऊपर, रुचिकर, द्युलोक के,*
*अग्र भाग पर, उगाने वाली का, उगाया हुआ (अन्न), वेगवान्।। ७।।*

वह सब मनुष्यों का नायक और सब में व्याप्त जगदीश्वर सब के लिये एकरूप और समदर्शी है। हम उपासकों को पवित्र करने वाली, उसके योग्य, समान विचारों वाली हमारी स्तुति हमारे शुभ कर्मों के साथ निश्चय से ही उसको प्राप्त हो जाए। अन्नों को उत्पन्न करने वाली पृथिवी के अन्दर उगे हुए रुचिकर और आहुति के रूप में वेग के साथ आरोहण करने वाले अन्न भी शयन के स्वभाव वाले, विविध वर्णों वाले द्युलोक के अग्रभाग पर यज्ञवेदि के आसन के ऊपर उसे प्राप्त हो जाएं।

हमारी स्तुतियां और हमारे समर्पण सब उसी के निमित्त हैं और उसी को समर्पित हैं।

टि. *समान विचारों वाली* - **समना**। सदृशी - वे.। दया.। सदृशी तद्योग्या - सा.।

*समदर्शी को* - **समानम्**। सदृशम् - वे.। सर्वेषाम् एकरूपम् - सा.। तुल्यं पतिम् - दया.। the Universal - G.

*स्तुति* - **धीतिः**। बुद्धिः - वे.। मतिर् अस्मदीया स्तुतिः - सा.। शुभगुणधारिका - दया.।

*शयनशील के* - **ससस्य**। ससतिः स्वप्नकर्मा - वे.। लुप्तोपमम् एतत्। स्वपत एव निश्चलस्य पृश्नेः। सा.। स्वपतः - दया.। (above) the immovable (heaven) - W. of the peace - Ar.

*चर्म के ऊपर* - **चर्मन् अधि**। अधि त्वचि - वे.। चर्मन् चर्मणे चरणाय। चरेर् औणादिको मनिन्। सुपां सुलुग् इति चतुर्थ्या लुक्। सा.। चर्मणि उपरि - दया.। in the movement - Ar.

*उगाने वाली का* - **रुपः**। येन वैश्वानरस्य प्रातर् एव रोपयति शरीराणीति वैश्वानरो रुब् उच्यत, तस्य - वे.। आरोपयति स्वात्मनि सस्यादीनि रुब् इति भूमिर् उच्यते। तस्याः सकाशात्। सा.। आरोपण-कर्तुः - दया.। of the Mother - Ar.

*वेगवान्* - **जबारु**। जबारुः जरमाणरोहीति वा जवमानरोहीति वा - या. (नि. ६.१७)। सा.। जवेन रोहणशलं जवहेतुर् वा सोमांशुर् इति - वे.। swift-ascending - W.

**प्र॒वाच्यं॑ वच॑स॒ः किं मे॑ अ॒स्य गुहा॑ हि॒तम् उप॑ नि॒णिग् व॑दन्ति।**
**यद् उ॒स्रिया॑णा॒म् अप॒ वारि॑व॒ व्रन् पाति॑ प्रि॒यं रु॒पो अग्रं॑ प॒दं वेः॥ ८॥**

प्र॒ऽवाच्य॑म्। वच॑सः। किम्। मे॒। अ॒स्य। गुहा॑। हि॒तम्। उप॑। नि॒णिक्। व॒द॒न्ति॒।
यत्। उ॒स्रिया॑णाम्। अप॑। वाःऽइ॑व। व्रन्। पाति॑। प्रि॒यम्। रु॒पः। अग्र॑म्। प॒दम्। वेर् इ॒ति॒ वेः॥ ८॥

*प्रकर्ष से कथन के योग्य, वचन में क्या है मेरे लिये इसमें,*
*गुहा में स्थित, निकट से पवित्रकारक, बताते हैं (ज्ञानी इसको)।*
*जिसे गौओं के, सपाट गवाड़ की तरह, खोल देते हैं वे,*
*पालन करता है (वही) प्रिय का, उत्पादक के श्रेष्ठ स्थान का, पक्षी के॥ ८॥*

ज्ञानी लोग बताते हैं, कि वेद की वाणी गुहा में स्थित है, रहस्यमयी है। जो विद्वान् इसका सेवन करते हैं, उन्हें यह पवित्र करने वाली है। इसके विषय में मुझे अधिक विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह तो स्वयमेव स्पष्ट है। ज्ञानी जन इस वाणी के रहस्य को इस प्रकार खोल देते हैं, जिस प्रकार मेघ अथवा अन्धकार से आवृत सूर्य की रश्मियां आवरण हट जाने पर स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती हैं। यह सब उसी सर्वनायक, सभी जनों में व्याप्त अग्रणी परमेश्वर की कृपा से होता है। वही सर्वनियन्ता परमेश्वर आकाश में पक्षी की तरह उड़ान भरने वाले सर्वोत्पादक सूर्य के प्रिय और श्रेष्ठ स्थान का पालन भी करता है।

टि. *प्रकर्ष से कथन के योग्य* - **प्रवाच्यम्**। प्रकर्षेण वक्तव्यम् - वे.। प्रकर्षेण वक्तुं योग्यम् - दया.। What objection (can be offered) - W.

*पवित्रकारक* - **निणिक्**। निणिक् इति रूपनाम, निर्णेजनादिहेतुपयोवचनः - वे.। नितरां नेनेक्ति शोधयतीति निणिक् क्षीरम् उच्यते। तादृक् क्षीरम्। सा.। नितरां शुन्धति - दया.। the milk - G. and

is mysterious - Ar.

*गवाड़ की तरह* - **वार् इव।** उदकम् इव - वे.। सा.। दया.। as 't were the cows' stalls - G. as if a covering defence - Ar.

*सपाट खोल देते हैं* - **अप व्रन्।** अप अवृण्वन्। दुग्धवन्त इत्यर्थः। वे.। अप वृण्वन्ति - सा.। they have thrown open - G. they have uncovered - Ar.

*उत्पादक के, पक्षी के* - **रुपः वेः।** वेर् व्याप्ताया रुपो भूम्याः - सा.। रुपः पृथिव्याः वेः पक्षिणः - दया.। The Bird (protects) earth's - G. the summit (plane) of the being - Ar.

**इदम् उ त्यन् महि महाम् अनीकं यद् उस्रिया सचत पूर्व्यं गौः।**
**ऋतस्य पदे अधि दीद्यानं गुहा रघुष्यद् रघुयद् विवेद।। ९।।**

इदम्। ऊङ् इति। त्यत्। महि। महाम्। अनीकम्। यत्। उस्रिया। सचत। पूर्व्यम्। गौः।
ऋतस्य। पदे। अधि। दीद्यानम्। गुहा। रघुऽस्यत्। रघुऽयत्। विवेद।। ९।।

*यह ही वह महान् (है), महानों का मुख,*
*जिसका, दुधारू सेवन करती है, पुरातन काल से स्थित का, गौ।*
*ऋत के स्थान के ऊपर, प्रकाशमान को,*
*गुहा में त्वरा से गतिमान् को, शीघ्रगन्ता को, जान लेती है।। ९।।*

यह सभी पदार्थों में व्याप्त वैश्वानर परमेश्वर संसार के सभी महान् पदार्थों का मुख है, मुखभूत है, मुखिया है। वेदवाणी रूपी गौ पुरातन काल से विद्यमान इस अनादि और अनन्त सर्वव्यापक परमात्मा का ही सेवन करती है। इसका ही स्तुतिगान करती है। यह परमेश्वर ऋत के स्थान में स्थित होकर प्रकाशमान हो रहा है। यह सत्यनियमों का विधान करके उनका स्वयं पालन करता है और सब से पालन कराता है। बुद्धिरूपी गुहा में स्थित, तीव्र गति वाले और शीघ्रगन्ता इस जगदीश्वर को वेद की वाणी ही जानती है और जिज्ञासुओं को इसका ज्ञान कराती है।

टि. *महान् (है) मुख* - **महि अनीकम्।** महत् अनीकम्। अनीकशब्दः अग्रवचनः। पणीन् प्रति गच्छतां देवानाम् अग्निर् वैश्वानरो मुखम् आसीद् इत्यर्थः। वे.। महि महत् पूज्यम् अनीकं समूहरूपं सूर्यमण्डलं वैश्वानर एवेति शेषः - सा.। महत् सैन्यम् इव - दया.। adorable assemblage - W. mighty apprition - G. that great front - Ar.

*महानों का* - **महाम्।** महतां देवानाम् - वे.। सा.। महताम्। अत्र छान्दसो वर्णलोपो वेति तलोपः। दया.। of the Great Ones - Ar.

*दुधारू गौ* - **उस्रिया गौः।** उत्सारणार्हा गौः - वे.। क्षीराद्युत्स्राविणी गौः - सा.। उस्रिया क्षीरादिप्रदा - दया.। the radiant Cow - G. the shining Cow - Ar.

*ऋत के स्थान के ऊपर* - **ऋतस्य पदे अधि।** यज्ञस्य स्थाने धिष्ण्ये - वे.। ऋतस्य उदकस्य पदे स्थाने ऽन्तरिक्षे ऽध्यधिकम्। यद्वा। अधीति सप्तम्यर्थानुवादः। सा.। सत्यस्य स्थाने अधि - दया.। above the region of water (the firmament) - W. in the place of Order - G. in the plane of Truth - Ar.

*गुहा में* - गुहा। पर्वतस्य गुहायाम् - वे.। गुहायाम् - सा.। बुद्धौ - दया.। in the secrecy - Ar.

**अध द्युतानः पित्रोः सचासा-**
**मनुत गुह्यं चारु पृश्नेः।**
**मातुष् पदे परमे अन्ति षद् गोर्**
**वृष्णः शोचिषः प्रयतस्य जिह्वा।। १०।। २।।**

अध। द्युतानः। पित्रोः। सचा। आसा। अमनुत। गुह्यम्। चारु। पृश्नेः।
मातुः। पदे। परमे। अन्ति। सत्। गोः। वृष्णः। शोचिषः। प्रऽयतस्य। जिह्वा।। १०।।

*और प्रकाशमान, द्युलोक-भूलोक के साथ मिलकर, मुख से,*
*जान लेता है गुहा में स्थित को, रमणीय (दुग्ध) को, पृथिवी के।*
*माता के स्थान में, उत्कृष्ट में, समीप में विद्यमान को, गौ के (दूध को),*
*(पीना चाहती है) वर्षक की, दीप्यमान की, प्रयत्नशील की जिह्वा।। १०।।*

प्रकाशमान सूर्य के रूप में वह वैश्वानर परमेश्वर जगत् की माता पृथिवी और पिता आकाश के मध्य में व्याप्त होकर अपने रश्मियों रूपी मुख से इस नानावर्णों वाली पृथिवी के नदी नद सरोवर समुद्र आदि गोपनीय स्थानों में स्थित जलों को जान लेता है और उन्हें प्राप्त करना चाहता है। धरती माता के उत्तम स्थान के निकट आकर सुखों के वर्षक, ऊष्मा और प्रकाश को देने वाले, संसारचक्र के प्रवर्त्तन में प्रयत्नशील इस सूर्य की रश्मियों रूपी जिह्वा धरती माता के समुद्र, नदी, नद, सरोवर आदि स्तनों से जलरूपी अमृत का पान करना चाहती है। इसी प्रकार वह वैश्वानर परमेश्वर धरती माता के इस उत्तम स्थान में निवास करने वाले मनुष्यों के हृदय रूपी गुह्यस्थान में स्थित प्रेम और भक्तिरस रूपी अमृत का पान करना चाहता है। उस सुखवर्षक, प्रकाश और ज्ञान के दाता परमेश्वर की अग्निरूपी जिह्वा मनुष्यों से हव्य रूपी समर्पणों की कामना करती है।

टि. *द्युलोक-भूलोक के साथ मिलकर, मुख से* - **पित्रोः सचा आसा।** द्यावापृथिव्योः सह आसनेन सहायभूतः वैश्वानरः - वे.। पित्रोः द्यावापृथिव्योः सचा सह मध्ये व्याप्तः सन् आसा स्वकीयेन आस्येन - सा.। in association with the parents - W. in union with the two parents - Ar.

*जान लेता है* - **अमनुत।** पयः अमनुत। ममैतत् पातव्यम् इत्यर्थः - वे.। पानायाबुध्यत - सा.। विजानीत - दया.। he is awakened (to drink) - W. remembered - G. perceived - Ar.

*स्थान में, उत्कृष्ट में* - **पदे परमे।** परमं पदम् उत्तरवेदिः तस्मिन् - वे.। उत्कृष्टे स्थान ऊधोलक्षणे - सा.। in the most lofty station - G. in the supreme plane - Ar.

*दीप्यमान की* - **शोचिषः।** दीप्यमानस्य - वे.। दया.। दीप्तस्य - सा.।

*प्रयत्नशील की* - **प्रयतस्य।** निर्मलस्य - वे.। आहवनीयादिरूपेण नियतस्य - सा.। प्रयत्नं कुर्वतः - दया.। (of tue Bull) intent on its action - Ar.

**ऋतं वोचे नमसा पृच्छ्यमानस्**
**तवाशसा जातवेदो यदीदम्।**

**त्वम् अस्य क्षयसि यद् ध विश्वं**
**दिवि यद् उ द्रविणं यत् पृथिव्याम्।। ११।।**

ऋतम्। वोचे। नमसा। पृच्छ्यमानः। तव। आऽशसा। जातऽवेदः। यदि। इदम्।
त्वम्। अस्य। क्षयसि। यत्। ह। विश्वम्। दिवि। यत्। ऊँ इति। द्रविणम्। यत्। पृथिव्याम्।। ११।।

*सच कहता हूँ मैं नम्रता के साथ, प्रश्न किया जाता हुआ,*
*तेरे आशीर्वाद से है, हे जातप्रज्ञ!, जो कुछ (भी) यह है।*
*तू इसमें निवास करता है, जो निश्चय से सब-कुछ है,*
*द्युलोक में जो भी धन (है), जो (भी धन है) पृथिवी में।। ११।।*

हे सब मनुष्यों का नेतृत्व करने वाले परमेश्वर! यदि मुझसे कोई पूछे, कि जगत् में यह सब-कुछ किसका है, तो मैं नम्रतापूर्वक उत्तर दूँगा, और सच-सच कहूँगा कि इस जगत् में जो कुछ भी है, वह सब तुझ जगन्नायक परमेश्वर के आशीर्वाद और आज्ञा से है और तेरा ही है। जो यह जगत् है और इसमें जो-कुछ भी है, तू ही इसमें निवास करता है (ईशा वास्यम् इदं सर्वम् - यजु. ४०.१)। द्युलोक में जो धन है और पृथिवीलोक में जो धन है, तू ही इस सब पर शासन करता है, तू ही इस सब का स्वामी है। इसलिये हम मनुष्यों का लालच करना और धन को अपना बताना व्यर्थ है। यह धन किसका है? किसी का भी नहीं है। यह तो केवल उस जगन्नायक परमेश्वर का ही है। (मा गृधः कस्य स्विद् धनम् - वहीं)।

टि. *सच कहता हूँ मैं* - **ऋतम् वोचे।** सत्यम् अहं ब्रवीमि - वे.। सा.। सत्यं वदेयम् उपदिशेयम् - दया.। I declare the truth - W. Ar. I declare the Law - G.

*नम्रता के साथ* - **नमसा।** नमस्कारेण - वे.। नमस्कारेण सह - सा.। सत्कारेण - दया.। with respect - W. with reverence - G. with obeisance - Ar.

*तेरे आशीर्वाद से* - **तव आशसा।** तव आशंसनाय भवति - वे.। तव स्तुत्या साधनेन - सा.। तव समन्तात् प्रशंसितेन - दया.। by the praise to thee - W. by thine order - G. by thy declaring of it, Or by thy wish - Ar.

*तू इसमें निवास करता है* - **त्वम् अस्य क्षयसि।** त्वम् अस्य ईश्वरो भवसि - वे.। सा.। क्षयसि निवससि - दया.। thou rulest over it - W. thou art the Sovran - G. thou possessest all this - Ar.

**किं नो अस्य द्रविणं कद् ध रत्नं वि नो वोचो जातवेदश् चिकित्वान्।**
**गुहाध्वनः परमं यन् नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म।। १२।।**

किम्। नः। अस्य। द्रविणम्। कत्। ह। रत्नम्। वि। नः। वोचः। जातऽवेदः। चिकित्वान्।
गुहा। अध्वनः। परमम्। यत्। नः। अस्य। रेकु। पदम्। न। निदानाः। अगन्म।। १२।।

*कौन सा हमारे लिये (उपयुक्त है) इस धन में से, कौनसा (है) निश्चय से रमणीय,*
*विशेष रूप से हमको बता तू, हे उत्पन्नों को जानने वाले!, ज्ञानवान्।*
*गुहा में (स्थित), मार्ग का परम (गन्तव्य है) जो, हमें उसको (बता तू),*

*रिक्त स्थान को, न बन्धन में पड़े हुए प्राप्त होवें हम।। १२।।*

हे सब का मार्गदर्शन करने वाले परमेश्वर! भूलोक और द्युलोक में तेरे धनों का कोई पारावार नहीं है। पर इन धनों में से हमारे लिये उपयुक्त धन कौन सा है? रमण कराने वाला, आनन्द की प्राप्ति कराने वाला धन कौन सा है? हे जगत् में सभी उत्पन्न पदार्थों को जानने वाले जगदीश्वर! तू सर्वज्ञ है। हमें तो तू केवल उन धनों को बता जो हमारे इहलोक और परलोक के लिये उपयुक्त हैं। इस जीवनयात्रा के मार्ग का रहस्यमय गन्तव्य स्थान कौनसा है, तू हमें उसका ज्ञान करा। हम बन्धनों में पड़कर किसी सूने स्थान में न जा गिरें। हम तो बन्धनमुक्त होकर तेरे परम धाम को ही प्राप्त करें।

टि. *कौन सा हमारे लिये (उपयुक्त है) इस धन में से* - **किम् नः अस्य द्रविणम्।** किम् नः अस्य स्तोत्रस्य धनम् - वे.। उक्तस्यास्य धनस्य किं द्रविणं किं साधनभूतं नो ऽस्मभ्यं दातव्यं धनम् अस्ति - सा.। किम् प्रश्ने, नः अस्माकम्, अस्य संसारस्य मध्ये, द्रविणम् यशः - दया.। What is the value of this (wealth) to us - W. What is our wealth therefrom - G. What is the treasure of this Truth - Ar.

*रमणीय* - **रत्नम्।** रमणीयं हितकरं धनम् - सा.। धनम् - दया.। advantage - W. treasure - G. delight - Ar.

*गुहा में (स्थित), मार्ग का परम (गन्तव्य है) जो* - **गुहा अध्वनः परमम् यत्।** अस्य अन्तरिक्षस्य गुहायां निहितं यत् उत्तमम् - वे.। अस्याध्वनो धनप्राप्तिमार्गस्य यद् गुहा गुहायां निहितं गूढं परमम् उत्कृष्टं प्राप्तव्यम् अस्ति - सा.। the best (course) for us on this secret path - W. G. that supreme plane in the secrecy which is the highest goal of our path - Ar.

*रिक्त स्थान को* - **रेकु पदम्।** रेचनं सुखरहितं स्थानम् - वे.। रिक्तं पदं गन्तव्यं स्थानं गृहादिकम् - सा.। शङ्कितम् प्रापणीयम् - दया.। direct road - W. a place far distant - G.

*बन्धन में पड़े हुए* - **निदानाः।** निन्दन्तः - वे.। अन्यैर् निन्द्यमानाः। कर्मणि कर्तृप्रत्ययः। सा.। निन्दां कुर्वाणाः - दया.। unreproached - W. G. free from bondage - Ar. See MW. also.

**का मर्यादा वयुना कद् ध वामम् अच्छा गमेम रघवो न वाजम्।**
**कदा नो देवीर् अमृतस्य पत्नीः सूरो वर्णेन ततनन्नुषासः।। १३।।**

का। मर्यादा। वयुना। कत्। ह। वामम्। अच्छ। गमेम। रघवः। न। वाजम्।
कदा। नः। देवीः। अमृतस्य। पत्नीः। सूरः। वर्णेन। ततनन्। उषसः।। १३।।

*क्या (है) मर्यादा, उद्देश्य (क्या है), क्या (है निश्चय से) कमनीय,*
*ओर इसकी गमन करें हम, तीव्रगति अश्व जिस प्रकार (ओर) युद्ध की।*
*कब हमको प्रकाशमाना, अमरणधर्मा की, पालन करने वाली,*
*सूर्य की, प्रकाश से (अपने), विस्तृत करेंगी उषाएं।। १३।।*

हे सब का नेतृत्व करने वाले अग्रणी परमेश्वर! आप हमें बताएं कि इस जीवन में हमारी कमनीय वस्तु क्या है? हमारी इस जीवनयात्रा का लक्ष्य क्या है? इस यात्रा की मर्यादाएं, नियम, कायदे और कानून क्या हैं? लक्ष्य का ज्ञान हो जाने पर हम तेरी कृपा से इस लक्ष्य की ओर इस प्रकार तेजी

से बढ़ें, जिस प्रकार फुर्तीले अश्व युद्ध की ओर बढ़ते हैं। हे प्रभो! अमरणधर्मा ज्ञानरूपी सूर्य की पालन करने वाली देदीप्यमान प्रारम्भिक ज्ञानरश्मि रूपी उषाएं हमें अपने प्रकाश से कब ओत-प्रोत करेंगी?

टि. *मर्यादा* - **मर्यादा।** काष्ठा - वे.। प्रीत्यादिव्यवस्था - सा.। limit - W. G. boundary - Ar.

*उद्देश्य* - **वयुना।** कान्ता - वे.। प्रज्ञानं पदार्थविषयम् - सा.। कर्माणि - दया.। objects - W. rules - G. manifestation of knowledge - Ar.

*कमनीय* - **वामम्।** वननीयम् - वे.। वननीयं पदार्थजातम् - सा.। प्रशस्तवस्तु - दया.। desirable (end) - W. the guerdon - G. joy - Ar.

*तीव्रगति अश्व जिस प्रकार (ओर) युद्ध की* - **रघवः न वाजम्।** वयं लघुशरीराः सङ्ग्रामम् इव - वे.। शीघ्रगामिनो अश्वादयः संग्रामम् इव - सा.। like gallopers towards the plenitude - Ar.

*पालन करने वाली* - **पत्नीः।** पत्न्यः - वे.। पत्न्यः पालयित्र्यः - सा.। स्त्रीवद्वर्तमानाः - दया.। brides - W. spouses - G. wives - Ar.

*सूर्य की* - **सूरः।** सूर्यस्य - वे.। प्रसवित्र्यः - सा.। सूर्यः - दया.। Sun-God's - G. Ar.

*प्रकाश से विस्तृत करेंगी* - **वर्णेन ततनन्।** तेजसा विस्तृता भवन्ति। व्युच्छन्तीत्यर्थः। वे.। प्रकाशेन विस्तारयेयुः - सा.। overspread (the world) with light - W. spread over us splendour - G. woven it into shape by the hue of light - Ar.

**अ॒नि॒रेण॒ वच॑सा फ॒ल्ग्वे॑न प्र॒तीत्ये॑न कृ॒धुना॑तृ॒पासः॑।**
**अधा॒ ते अ॑ग्ने॒ किम् इ॒हा व॑दन्त्यनायु॒धास॒ आस॑ता सचन्ताम्।। १४।।**

अ॒नि॒रेण॑। वच॑सा। फ॒ल्ग्वे॑न। प्र॒तीत्ये॑न। कृ॒धुना॑। अ॒तृ॒पासः॑।
अध॑। ते। अ॒ग्ने॒। किम्। इ॒ह। व॒द॒न्ति॒। अ॒ना॒यु॒धासः॑। अस॑ता। स॒च॒न्ता॒म्।। १४।।

*आहुति से हीन से, वचन से, निष्फल से,*
*विपरीत अर्थ वाले से, अत्यल्प से, असन्तुष्ट जन।*
*भला वे, हे अग्ने!, क्या यहाँ, स्तुति करेंगे (तेरी),*
*साधनों से रहित, असत् से युक्त हो जाएंगे वे।। १४।।*

हे सब का मार्गदर्शन करने वाले परमात्मन्! जिन मनुष्यों की स्तुति आहुति से रहित है अर्थात् समर्पणविहीन है, निस्सार है, विपरीत अर्थ वाली है, अति स्वल्प है, वे कभी तृप्ति को प्राप्त नहीं कर सकते। उन्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कभी सफलता नहीं मिल सकती। भला ऐसे जन तेरी स्तुति क्या करेंगे। धनुष, बाण आदि हथियारों के विना युद्ध में जाने वाले योद्धाओं की तरह साधनों से विहीन उन मनुष्यों को पराजय का मुख ही देखना पड़ेगा।

टि. *आहुति से हीन से* - **अनिरेण।** अनन्नेना अहविष्केण - वे.। इरान्नम्। तद्रहितेन। सा. अरमणीयेन - दया.। by unproductive - W. devoid of vigour - G.

*निष्फल से* - **फल्गवेन।** फल्गुना - वे.। फल्वेनोक्थेन - सा.। by frivolous - W. G.

*विपरीत अर्थ वाले से* - **प्रतीत्येन।** प्रतिगन्तव्येन, आगतः पुरुषो यच् छ्रुत्वा प्रतिगच्छति

शृणोति - वे.। प्रतिगन्तव्येन - सा.। प्रतीतौ भवेन - दया.। by inconclusive - W. G.

*अत्यल्प से* - **कृधुना।** कटुको नूनं कृधुस् तादृशेन - वे.। ह्रस्वेन। कृध्विति ह्रस्वनाम कृधुको वम्रक इति तन्नामसूक्तत्वात्। सा.। ह्रस्वेनाल्पेन - दया.। by scanty - W.

*असत् से युक्त हो जाएंगे* - **असता सचन्ताम्।** अनृतेन संयुज्यन्तां प्रतिभवन्तु - वे.। दुःखेन संगच्छन्ताम् - सा.। let them suffer from distress - W. let them remain united with the unreal - Ar.

**अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो वसोर् अनीकं दम आ रुरोच।**
**रुशद् वसानः सुदृशीकरूपः क्षितिर् न राया पुरुवारो अद्यौत्॥ १५॥ ३॥**

अस्य। श्रिये। सम्ऽइधानस्य। वृष्णः। वसोः। अनीकम्। दमे। आ। रुरोच।
रुशत्। वसानः। सुदृशीकऽरूपः। क्षितिः। न। राया। पुरुऽवारः। अद्यौत्॥ १५॥

*इसके अभ्युदय के लिये, देदीप्यमान का, सुखवर्षक का,*
*बसाने वाले का तेजःपुञ्ज, घर में सब ओर चमकता है।*
*तेज को धारण किये हुए, शोभन दर्शनीय रूप वाला,*
*पृथिवी जैसे धन से, बहुतों से वरणीय, शोभित हो रहा है॥ १५॥*

इस यजमान अथवा उपासक के कल्याण के लिये देदीप्यमान, सुखों की वर्षा करने वाले, इस जगत् में बसने और सब को बसाने वाले, सब का नेतृत्व करने वाले, उस जगदीश्वर का तेजसमूह सब के निवासस्थान इस जगत् में सब ओर प्रकाशित हो रहा है। प्रकाश की श्वेत चादर को ओढ़े हुए, इस जगत् रूपी शोभन दर्शनीय रूप वाला, बहुतों के द्वारा वरण के योग्य वह परमेश्वर इस प्रकार शोभायमान हो रहा है, जिस प्रकार वसुधा धारण किये हुए अपने धनों से सुशोभित हो रही है।

टि. *अभ्युदय के लिये* - **श्रिये।** अभ्युदयार्थम् - वे.। श्रेयसे यजमानानाम् - सा.।

*तेजःपुञ्ज* - **अनीकम्।** ज्वालाग्रम् - वे.। तेजःसंघः - सा.। the host (of the flames) - W.

*तेज को धारण किये हुए* - **रुशत् वसानः।** श्वेतं रूपं वसानः - वे.। रुशत् वर्णनामैतत्। दीप्तं तेजो वसानः। सा.। सुन्दरं रूपं प्राप्तः - दया.। clothed in radiance - W.

*पृथिवी जैसे धन से* - **क्षितिः न राया।** पृथिवीव धनेन - वे.। रायाश्वादिधनेन क्षितिर् न राजादिर् इव - सा.। like a man with opulence - W.

## सूक्त ६

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य होतर् अग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान्।**
**त्वं हि विश्वम् अभ्यसि मन्म प्र वेधसश् चित् तिरसि मनीषाम्॥ १॥**

ऊर्ध्वः। ऊँ इति। सु। नः। अध्वरस्य। होतः। अग्ने। तिष्ठ। देवऽताता। यजीयान्।
त्वम्। हि। विश्वम्। अभि। असि। मन्म। प्र। वेधसः। चित्। तिरसि। मनीषाम्॥ १॥

*ऊँचा निश्चय से भली प्रकार हमारे, हे यज्ञ के होता!,*

*हे अग्ने!, स्थित हो तू देवपूजा में, अत्यन्त पूजनीय।*
*तू ही प्रत्येक को नियन्त्रित करता है, विचार को,*
*अत्यधिक यजनकर्त्ता की भी बढ़ाता है तू, बुद्धि को।। १।।*

हे सृष्टियज्ञ के होता विश्वनायक अग्रणी परमेश्वर! सर्वोपरि अत्यन्त पूजनीय तू हमारे देवपूजा आदि शुभ कार्यों में हमारा संरक्षक बनकर रह। तू समस्त चिन्तन, मनन, ज्ञान-विज्ञान आदि को अपने नियन्त्रण में रखता है। तू ही यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करने वाले मनुष्य की बुद्धि को बढ़ाकर उसे सन्मार्ग पर अग्रसर करता है।

टि. *देवपूजा में* - **देवताता**। यस्मिन् काले देवास् तायन्त इज्यन्ते तत्र - वे.। देवतातौ। देवास् तायन्ते विस्तीर्यन्ते ऽत्रेति देवतातिर् यज्ञः। तस्मिन्। सा.। देवतातौ - दया.। in this offering to the gods - W. in the gods' service - G. in the forming of the gods - Ar.

*तू ही प्रत्येक को नियन्त्रित करता है विचार को* - **त्वं हि विश्वम् अभ्यसि मन्म**। त्वं हि विश्वं मननीयम् अवगन्तव्यं जगत् अभि भवसि - वे.। त्वं खलु सर्वं मन्म मननीयं शत्रूणां धनम् अभ्यसि अभिभवसि - सा.। for thou prevailest over all that is desirable - W. for over every thought thou art the Ruler - G. thou art the ruler over every thought - Ar.

*अत्यधिक यजनकर्त्ता की भी बढ़ाता है तू बुद्धि को* - **प्र वेधसः चित् तिरसि मनीषाम्**। विधातुर् यजमानस्य अपि मनीषां वर्धयसि - वे.। चित् पूजायाम्। स्तोतुर् यजमानादेर् मनीषां मतिं स्तुतिं प्र तिरसि प्रवर्धयसि। प्रपूर्वस् तिरतिर् वर्धनार्थः। सा.। thou inspirest the praise of the worshipper - W. thou furtherest e'en the wisdom of the pious - G. thou carriest forward the mind of thy worshipper - Ar.

**अमूरो होता न्यसादि विक्ष्वग्निर् मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः।**
**ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन् मेतेव धूमं स्तभायद् उप द्याम्।। २।।**

अमूरः। होता। नि। असादि। विक्षु। अग्निः। मन्द्रः। विदथेषु। प्रऽचेताः।
ऊर्ध्वम्। भानुम्। सविताऽइव। अश्रेत्। मेताऽइव। धूमम्। स्तभायत्। उप। द्याम्।। २।।

*मूढता से अछूता, आह्वाता, आसीन होता है प्रजाओं में,*
*अग्नि, आनन्ददायक ज्ञानगोष्ठियों में, उत्तम ज्ञान वाला।*
*ऊपर की ओर तेज को , सूर्य की तरह धारण करता है,*
*वास्तुकार जैसे धारक स्तम्भ को, थाम लेता है आकाश में।। २।।*

वह अग्रणी परमेश्वर अज्ञान आदि दोषों से अछूता है। वह सब का सन्मार्ग में आह्वान करने वाला है। वह यज्ञ आदि शुभ कर्मों में और यज्ञानुष्ठान करने वाले मनुष्यों में सदा विद्यमान रहता है। वह उत्तम ज्ञान से युक्त है और ज्ञानगोष्ठियों में होने वाली चर्चाओं में आनन्द की प्राप्ति कराने वाला है। जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश को ऊपर की ओर आकाश में धारण करता है और जिस प्रकार वास्तुकार भवन को धारण करने वाले स्तम्भ का ऊपर की ओर निर्माण करता है, उसी प्रकार सब को जीवनमार्ग पर बढ़ाने वाला वह जगदीश्वर अपने तेज को ऊपर की ओर सर्वत्र थामे हुए है।

टि. *मूढ़ता से अछूता* – **अमूरः**। अमूढः – वे.। प्रगल्भ इत्यर्थः – सा.। unperplexed - W. unerring - G. Free from ignorance - Ar.

*आसीन होता है प्रजाओं में* – **नि असादि विक्षु**। निषण्णः मनुष्येषु – वे.। न्यसादि नितरां स्थापितो विक्षु ऋत्विग्रूपासु प्रजासु मध्ये – सा.। has been placed among men - W. was set down in our holy synods - G. has taken his seat in creatures - Ar.

*वास्तुकार जैसे धारक स्तम्भ को* – **मेता इव धूमम्**। धूमं धारकं स्तम्भम्।। यथा माता पुरुषः मानदण्डम्, एवं आत्मीयं धूमम् – वे.। मेतेव स्थूणेव । सा यथा स्वाधिष्ठितं वंशादिकं स्तभ्नाति तद्वद् अयम् अग्निर् धूमं स्वोत्थितम् – सा.। (props) the smoke like a pillar - W. Ar. like a builder (has raised his) smoke - G.

*थाम लेता है आकाश में* – **अस्तभायत् उप द्याम्**। उपस्तभ्नाति दिवं प्रति – वे.। द्युलोकस्योपरि स्तभ्नाति – सा.। props like a pillar - W.

**यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद् देवतातिम् उराणः।**
**उद् उ स्वरुर् नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः।। ३।।**

यता। सुऽजूर्णिः। रातिनी। घृताची। प्रऽदक्षिणित्। देवऽतातिम्। उराणः।
उत्। ऊँ इति। स्वरुः। नवऽजाः। न। अक्रः। पश्वः। अनक्ति। सुऽधितः। सुऽमेकः।। ३।।

*ऊपर उठा ली गई है, बहुत पुरानी, हवि देने वाली, स्रुवा,*
*प्रदक्षिणा कर रहा है (जो याजक), यज्ञकर्म का वितान करता हुआ।*
*ऊपर को निश्चय से (उठता है वह), यूप की नवजात की तरह अचल,*
*गोसमूह को व्यक्त करता है (उस के लिये), सुप्रतिष्ठित, सुदीप्त (अग्नि)।। ३।।*

*अधिदेव* – जिस याजक के द्वारा आज्य से परिपूर्ण पुरानी अर्थात् परम्परागत स्रुवा आहुति चढ़ाने के लिये उठा ली गई है और जो यज्ञकर्म का वितान करता हुआ यज्ञाग्नि की प्रदक्षिणा कर रहा है, वह याजक नवनिर्मित अचल यूप की तरह अवश्यमेव ऊपर को ही उठता है, उन्नति ही करता रहता है। भली प्रकार आधान किया हुआ और सुप्रकाशमान वह यज्ञाग्नि उसे गौ, अश्व आदि पशु, अन्न और धन आदि हर समय प्रदान करता रहता है।

*अध्यात्म* – जो उपासक अपनी कुलपरम्परा के अनुसार परमेश्वर की भक्ति के निमित्त अपना सब कुछ त्याग की भावना से उसे समर्पित कर देता है, और जो अपने प्रभुप्रेम को विस्तृत करता हुआ स्वयं को उसे ही सौंप देता है, वह नवनिर्मित अचल यज्ञयूप की तरह निश्चय से निश्चलता को प्राप्त करके प्रभुमिलन के लिये ऊपर ही ऊपर उठता रहता है। सुप्रतिष्ठित, शोभन प्रकाशमान परमेश्वर उसके लिये अपनी ज्ञानरश्मियों को प्रकट कर देता है और उसे अपनी शरण में ले लेता है।

टि. *ऊपर उठा ली गई है* – **यता**। उद्यता।। अध्वर्युणा संयता – वे.। सा.।

*बहुत पुरानी* – **सुजूर्णिः**। सुष्ठ्वाहवनीयं प्रति जवनस्य कर्त्री – वे.। शोभनजवा सुष्ठु जीर्णा पुराणी वा – सा.। सुष्ठु शीघ्रकारिणी – दया.।

*हवि देने वाली* – **रातिनी**। हविर् दानवती जुहूः – वे.। रातिर् धनम्। हविर्लक्षणधनवती। सा.।

*स्रुवा* – **घृताची**। घृताची इति स्रुङ्नाम – वे.। घृतम् अञ्चतीति घृताची जुहूः – सा.।

*ऊपर को निश्चय से (उठता है वह)* – **उत् उ**। उपसर्गश्रुतेर् योग्यक्रियाध्याहारः। उन्नतो भवति। सा.। is set up - W. he rises - G. he stands up high - Ar.

*यूप की नवजात की तरह अचल* – **स्वरुः नवजाः न अक्रः**। यूपशकलवाची स्वरुर् अत्र यूपं लक्षयति। नकारः समुच्चये। अक्र आक्रमिता। सा.। अक्रः अक्रमिता – दया.।

*गोसमूह को व्यक्त करता है* – **पश्वः अनक्ति**। पशून् अनक्ति – सा.। पशून् कामयते – दया.। falls upon the victims - W. anoints the victims - G. shows the herds - Ar.

*सुप्रतिष्ठित* – **सुधितः**। स्वधितिर् इत्यर्थः – सा.। सुहितः – दया.। axe - W. firmlly set - G. (like an) arrow-shaft - Ar.

*सुदीप्त* – **सुमेकः**। सुदीप्तः – सा.। दया.। shining - W. fixed - G.

**स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्ना ऊर्ध्वो अध्वर्युर् जुजुषाणो अस्थात्।**
**पर्यग्निः पशुपा न होता त्रिविष्ट्येति प्रदिव उराणः।। ४।।**

स्तीर्णे। बर्हिषि। सम्ऽइधाने। अग्नौ। ऊर्ध्वः। अध्वर्युः। जुजुषाणः। अस्थात्।
परि। अग्निः। पशुऽपाः। न। होता। त्रिऽविष्टि। एति। प्रऽदिवः। उराणः।। ४।।

*बिछ जाने पर कुशाओं के, प्रदीप्त हो जाने पर अग्नि के,*
*उच्च, अहिंसनीय यज्ञ का कर्त्ता, प्रसन्न होता हुआ स्थित होता है।*
*चारों ओर अग्नि, पशुपालक की तरह, आह्वान करने वाला,*
*तीनों लोकों में जाता है, पहले की तरह, विस्तृत करता हुआ।। ४।।*

यज्ञ को सम्पन्न करने के लिये जब वेदि पर कुशाएं बिछा दी जाती हैं और अग्न्याधान करके उसे प्रज्वलित कर दिया जाता है, तब उस हिंसारहित यज्ञ का नेता अध्वर्यु प्रसन्नतापूर्वक अपने कार्य को करने के लिये उद्यत हो जाता है। सब देवों को हव्य पहुँचाने वाला अग्नि उसके अन्दर डाले हुए हव्य को विस्तृत करता हुआ, उसकी शक्ति और सामर्थ्य को बढ़ाता हुआ, प्राचीन काल से प्रवर्तमान विधान के अनुसार उसे तीनों लोकों में ले जाता है। अग्नि में डाली हुई छोटी सी आहुति का सामर्थ्य और प्रभाव अग्नि में डाली हुई छोटी सी मिर्च के सामर्थ्य और प्रभाव की तरह हजारों गुणा बढ़ जाता है। इससे जाने-अनजाने मित्र, शत्रु और उदासीन सभी का उपकार होता है। इसी प्रकार श्रद्धा और त्याग की भावना के साथ अपने आप को प्रभु को समर्पित कर देने वाले उपासक के सभी कार्यकलाप भी प्राणिमात्र के परोपकार के लिये हो जाते हैं।

टि. *प्रसन्न होता हुआ* – **जुजुषाणः**। देवान् प्रीणयन् – सा.। सेवमानः – दया.। rejoicing - G.

*चारों ओर अग्नि तीनों लोकों में जाता है* – **परि अग्निः त्रिविष्टि एति**। ईदृशो ऽग्निः पशून् त्रिविष्टि त्रिर् आवृत्य पर्येति। त्रिर् हि पर्यग्निः क्रियते। सा.। त्रिविष्टि आकाशे – दया.। Agni thrice circumambulates (the victim) - W. Ar. goes three times round - G.

*पहले की तरह* – **प्रदिवः**। पुराणनामैतत्। पुरातनः। सा.। सुप्रकाशान् – दया.।

*विस्तृत करता हुआ* – **उराणः**। उराणः स्वल्पम् अपि हविर् देवयोग्यत्वसम्पादनेनोरु कुर्वाणः।

उराण उरु कुर्वाण इति निरुक्तम्। यद् वै देवैर् जोष्यते हविस् तद् गिरिमात्रं वर्धत इति श्रुतेर् अग्नेर् उरुकरणम् उचितम्। सा.। बहुकुर्वन् - दया.। as he wills it - G. ever widening his circle - Ar.

**परि त्मना मितद्रुर् एति होताग्निर् मन्द्रो मधुवचा ऋतावा।**
**द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यद् अभ्राट्।। ५।। ४।।**

परि। त्मना। मितऽद्रुः। एति। होता। अग्निः। मन्द्रः। मधुऽवचाः। ऋतऽवा।
द्रवन्ति। अस्य। वाजिनः। न। शोकाः। भयन्ते। विश्वा। भुवना। यत्। अभ्राट्।। ५।।

*सब ओर स्वयं, परिमित गति वाला, गमन करता है, आह्वाता,*
*अग्नि, मुदित करने वाला, मधुर वाणी वाला, ऋत का पालक।*
*दौड़ती हैं इसकी, अश्वों की तरह, दीप्तियां (सब ओर),*
*डरते हैं सब लोक (इससे), जब प्रदीप्त होता है यह।। ५।।*

सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला यह परमेश्वर मपी-तुली गति वाला है, सब का सन्मार्ग में आह्वान करने वाला है, स्वयं मोदमान और दूसरों को मुदित करने वाला है और सत्यनियमों का पालन करने वाला है। यह स्वयं भी अपने नियमों के अधीन सब ओर गति करता है। इसके तेज शीघ्रगामी अश्वों की तरह सब ओर दौड़ते हैं। जब यह अपने तेजों का विस्तार करता है, तो सब लोक और भूतगण इसके डर से कांपने लगते हैं।

टि. *परिमित गति वाला* - **मितद्रुः**। मितगतिः - वे.। परिमितगतिः - सा.। यो मितं द्रवति गच्छति सः - दया.। moving measuredly - W. with measured motion - G.

*मुदित करने वाला* - **मन्द्रः**। मदयिता - वे.। मादनीयो मादयिता वा - सा.। आनन्दप्रद आनन्दितः - दया.। the exhilarator - W. cheerful - G.

*ऋत का पालक* - **ऋतावा**। यज्ञवान् - वे.। सा.। सत्यस्य विभाजकः - दया.। true to order - G. possessing the Truth - Ar.

*अश्वों की तरह दीप्तियां* - **वाजिनः न शोकाः**। अश्वाः इव शोचका रश्मयः - वे.। वाजिनो हविष्मतो ऽस्याग्नेः शोका न दीप्तयो ऽपि। नशब्दो ऽप्यर्थे। यद्वा। नकार उपमार्थीयः। वाजिनो न अश्वा इव द्रवन्तीति योज्यम्। सा.। अश्वा इव प्रकाशाः - दया.। the bright rays of him with sacrificial food - W. His fulgent flames run forth like vigorous horses - G.

*डरते हैं* - **भयन्ते**। बिभ्यति - वे.। सा.। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदं शपो लुक् न - दया.।

**भद्रा ते अग्ने स्वनीक संदृग् घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः।**
**न यत् ते शोचिस् तमसा वरन्त न ध्वस्मानस् तन्वी३ रेप आ धुः।। ६।।**

भद्रा। ते। अग्ने। सुऽअनीक। सम्ऽदृक्। घोरस्य। सतः। विषुणस्य। चारुः।
न। यत्। ते। शोचिः। तमसा। वरन्त। न। ध्वस्मानः। तन्वि। रेपः। आ। धुर् इति धुः।। ६।।

*कल्याणी तेरी, हे अग्ने!, हे शोभनतेजःस्वरूप!, संदृष्टि है,*
*भयङ्कर होते हुए की, सब ओर व्याप्त की, रमणीय।*
*नहीं चूँकि तेरे प्रकाश को, अन्धकार से ढक सकते हैं,*

*नहीं ध्वस्त करने वाले, शरीर पर (तेरे) लेप लगा सकते हैं।। ६।।*

हे सुन्दर तेजोमय स्वरूप वाले अग्रणी परमेश्वर! दुष्टों के लिये भयङ्कर होने वाले और सब ओर व्याप्त की भी तेरी पक्षपातरहित न्यायदृष्टि कल्याण करने वाली और मन को हरने वाली है, क्योंकि विध्वंसक दुष्ट शक्तियां न तो अन्धकार के द्वारा तेरे प्रकाश को ढक सकती हैं और न ही तेरे व्यक्तित्व को पापादि दोषों से लिप्त कर सकती हैं। तू तो तमोविनाशक, निर्लेप और निरञ्जन है।

टि. *कल्याणी* - **भद्रा**। भजनीया - वे.। स्तुत्या कल्याणी वा - सा.। कल्याणकारिणी - दया.। auspicious - W. G.

*हे शोभनतेजःस्वरूप* - **स्वनीक**। शोभनरश्म्यनीक - वे.। शोभनज्वाल - सा.। Bright-shining - W. O lovely - G. O Fire of the fair front - Ar.

*संदृष्टि* - **संदृक्**। सन्दृष्टिः - वे.। सम्यग् दृश्या भवतीत्यर्थः - सा.। समानदृष्टिः - दया.। semblance - W. aspect - G. vision - Ar.

*सब ओर व्याप्त की* - **विषुणस्य**। विष्वगञ्चनस्य - वे.। सर्वतः व्याप्तस्य - सा.। विषमस्य - दया.। of thee wide-spreading - W. when spreading - G. adverse -Ar.

*ध्वस्त करने वाले* - **ध्वस्मानः**। ध्वंसनशीला राक्षसाः - वे.। सा.। ध्वंसकाः शत्रवः - दया.। malignant (spirits) - W. detraction - G. destroyers - Ar.

*नहीं लेप लगा सकते हैं* - **न रेपः आ धुः**। न रेपः पापं च आ दधुः - वे.। रेपः पापं ध्वंसनादिरूपं न दधति न कुर्वन्ति - सा.। nor do inflict any injury - W. leaves no stain - G.

**न यस्य सातुर् जनितोर् अवारि न मातरापितरा नू चिद् इष्टौ।**
**अधा मित्रो न सुधितः पावकोऽ३ऽग्निर् दीदाय मानुषीषु विक्षु।। ७।।**

न। यस्य। सातुः। जनितोः। अवारि। न। मातरापितरा। नु। चित्। इष्टौ।
अध। मित्रः। न। सुऽधितः। पावकः। अग्निः। दीदाय। मानुषीषु। विक्षु।। ७।।

*नहीं जिसकी देन को उत्पादक की, रोका जा सकता है,*
*नहीं माता-पिता भी (उत्पन्न होने के लिये), इष्ट हैं (जिसको)।*
*और मित्र की तरह उत्तम हितकारी (होकर), पवित्र करने वाला,*
*अग्नि (वह) देदीप्यमान हो रहा है, मानुषी प्रजाओं के अन्दर।। ७।।*

वह परमेश्वर इस जगत् का उत्पादक है। वह जिसे जो कुछ और जितना कुछ देना चाहता है, उसे उससे कोई रोक नहीं सकता। वह स्वयम्भू है। इसलिये उसे इस जगत् में अपने प्रादुर्भाव के लिये माता-पिता की आवश्यकता नहीं है। वह एक सच्चे मित्र की तरह सदा हमारा हित चाहने वाला और हमें पापों से बचाकर पवित्र करने वाला है। सब का मार्गदर्शन करने वाला वह जगदीश मानवी प्रजाओं में दीप्त हो रहा है और उन्हें अपने प्रकाश और ज्ञान से प्रकाशित कर रहा है।

टि. *देन को* - **सातुः**। समुच्छ्रितो रश्मिः - वे.। सनिः पश्वादिलक्षणं दानं दीप्तिर् वा - सा.। सत्यासत्योर् विभाजकस्य - दया.। benevolence - W. Bounteous Giver - G. conquest - Ar.

*उत्पादक की* - **जनितोः**। ओषध्यादेः जनयितुर् दावरूपस्य - वे.। जनितुर् जनयितुर्

वृष्ट्युत्पादकस्य वैश्वानरस्य - सा.। (of) Bounteous Giver - G. begetter of things -Ar.

*नहीं माता-पिता भी इष्ट हैं* - **न मातरापितरा नु इष्टौ।** न चारण्ये जातेन माता पिता वा भरणार्थम् इष्यते - वे.। मातापितरौ द्यावापृथिव्यौ यस्येष्टौ प्रेषणे नू चित् क्षिप्रम् एव न प्रभवतः - सा.। न जनक-जनन्यौ सद्यः अपि पूजनीयौ - दया.। whose parents need not urge him to exertion - W. his Mother and his Sire were free to send him - G. not even the father and the mother can stay him any longer in his impulsion - Ar.

*उत्तम हितकारी (होकर)* - **सुधितः।** इह सुष्ठु निहितः - वे.। सुतृप्तः - सा.। सुष्ठु हितो हितकारी - दया.। well satisfied - W. benevolent - G. well-established - Ar.

*देदीप्यमान हो रहा है* - **दीदाय।** दीप्यते - वे.। दया.। दीप्यते। दीपी दीप्तौ। पकारलोपश् छान्दसः। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। लिट्यभ्यासस्य ह्रस्वे कृते तुजादित्वाद् दीर्घत्वम्। सा.।

**द्विर् यं पञ्च जीजनन् त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विक्षु।**
**उषर्बुधम् अथर्यो३ न दन्तं शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम्॥ ८॥**

द्विः। यम्। पञ्च। जीजनन्। सम्ऽवसानाः। स्वसारः। अग्निम्। मानुषीषु। विक्षु।
उषःऽबुधम्। अथर्यः। न। दन्तम्। शुक्रम्। सुऽआसम्। परशुम्। न। तिग्मम्॥ ८॥

*दो बार, जिसको, पांच प्रकट करती हैं, सम्यक् आच्छादित करती हुईं,*
*बहिनें, अग्नि को, मनुष्य सम्बन्धी प्रजाओं के निमित्त।*
*उषाकाल में जागने वाले को, स्त्रियों जैसी, जम्भभूत को,*
*तेजस्वी को, सुन्दर मुख वाले को, परशु के समान तीक्ष्ण को॥ ८॥*

दो गुणा पाँच अर्थात् दश दिशाएं जो समान जन्मस्थान वाली अर्थात् एक ही केन्द्रबिन्दु से उत्पन्न होने के कारण बहिनों के समान हैं, जो स्त्रियों के समान कोमल और दयालु स्वभाव वाली हैं और जो समस्त जगत् को सब ओर से आच्छादित किये हुए हैं, वे आगे ही आगे अनन्तता की ओर बढ़ती हुईं मानुषी प्रजाओं के लिये सृष्टि के उषाकाल में प्रादुर्भूत होने वाले, दुष्टों के दलन के लिये दाढ़ का काम करने वाले, स्वयं प्रकाशमान और समस्त ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाले, जगत् रूपी सुन्दर आकृति वाले और दुष्टों के लिये परशु की तरह तीक्ष्ण धार वाले उस अग्रणी परमेश्वर की असीमता को प्रकट करती हैं।

टि. *सम्यक् आच्छादित करती हुईं* - **संवसानाः।** सर्वम् आच्छादयन्त्यः - वे.। संवसानाः संगच्छमानाः - सा.। सम्यग् आच्छादकाः - दया.। dwelling - W.

*बहिनें* - **स्वसारः।** दिशः - वे.। अङ्गुलयः - सा.। दया.। sisters fingers - W. G. Ar.

*स्त्रियों जैसी* - **अथर्यः न।** अथर्यः स्त्रियः मैथुने ऽधरा भवन्तीति स्त्रियः इव - वे.। स्त्रिय इव - सा.। अहिंसिताः स्त्रियः - दया.। like females - W.

*हविभक्षक को* - **दन्तम्।** अङ्गाङ्गिभावात् दन्तो भक्षकवचनः॥ हविषां भक्षकम् - सा.। feeding on oblations - W. (spear's) tooth - G. like a tusk of flame - Ar.

*सुन्दर मुख वाले को* - **सुऽआस्यम्।** शोभनास्यम् - वे.। सा.।

**तव त्ये अग्ने हरितो घृतस्ना रोहितास ऋज्वञ्चः स्वञ्चः।**
**अरुषासो वृषण ऋजुमुष्का आ देवतातिम् अह्वन्त दस्माः।। ९।।**

तव। त्ये। अग्ने। हरितः। घृतऽस्नाः। रोहितासः। ऋजुऽअञ्चः। सुऽअञ्चः।
अरुषासः। वृषणः। ऋजुऽमुष्काः। आ। देवऽतातिम्। अह्वन्त। दस्माः।। ९।।

*तेरे वे, हे अग्ने!, अश्व, दीप्तियों को बरसाने वाले,*
*लाल वर्ण वाले, सरल गमन वाले, सुन्दर गति वाले।*
*आरोचमान, सुखवर्षक, सरल अवयवों वाले,*
*इधर देवयज्ञ में बुलाए जाते हैं (हमारे द्वारा), दर्शनीय।। ९।।*

अग्नि सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर का नाम है। उसकी तेजोमय ज्योतियां उसके अश्व हैं। ये ज्योतियां प्रकाशों का सब ओर विस्तार करने वाली, रक्तवर्ण वाली, सरल और सुन्दर गति वाली, सब ओर तेज के साथ चमकने वाली, सब पर सुखों की वर्षा करने वाली, सरल अवयवों वाली और दर्शनीय अथवा दुष्ट शक्तियों की विनाशक हैं। हम उपासकों के द्वारा इनका अपने अन्तर्यज्ञ में आह्वान किया जा रहा है। हे जगदीश्वर! हम तेरी इन ज्योतियों का अभिनन्दन करते हैं।

टि. *दीप्तियों को बरसाने वाले* - **घृतस्नाः**। घृतस्य सनितारः - वे.। घृतस्नुवो बलातिशयान् नासापुटादिस्थानेभ्य उदकं क्षरन्तः - सा.। breathing foam - W. dropping fatness - G. dripping light - Ar.

*आरोचमान* - **अरुषासः**। आरोचनशीलाः - वे.। आरोचमानाः - सा.।

*सुखवर्षक* - **वृषणः**। सेक्तारः - वे.। युवानो वर्षितारो वा - सा.। बलिष्ठाः - दया.। vigorous - W. G. males - Ar.

*सरल अवयवों वाले* - **ऋजुमुष्काः**। अकुटिलवृषणाः - वे.। साधनमुष्काः - सा.। well-membered - W. of mighty muscle - G. straight and massive - Ar.

*इधर बुलाए जाते हैं* - **आ अह्वन्त**। आह्वयन्ति। यज्ञो यज्ञ इति वदन्ति। वे.। ऋत्विग्भिर् आहूयन्ते। लुङि लिपिसिचिह्वश् चेत्यङादेशः। सा.। आह्वयन्ते - दया.।

**ये ह त्ये ते सहमाना अयासस् त्वेषासो अग्ने अर्चयश् चरन्ति।**
**श्येनासो न दुवसनासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः।। १०।।**

ये। ह। त्ये। ते। सहमानाः। अयासः। त्वेषासः। अग्ने। अर्चयः। चरन्ति।
श्येनासः। न। दुवसनासः। अर्थम्। तुविऽस्वनसः। मारुतम्। न। शर्धः।। १०।।

*जो निश्चय से वे तेरी, शत्रुविजेता, सर्पणशील,*
*प्रकाशयुक्त, हे अग्ने!, रश्मियां विचरण करती हैं।*
*श्येनों की तरह परिचर्या के योग्य, गन्तव्य पर (पहुँचती हैं),*
*बहुत स्तुतिगान वाली, मरुतों का जिस प्रकार संघ।। १०।।*

हे मनुष्यों को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! जो निश्चय से दुष्ट हिंसक शक्तियों को अभिभूत करने वाली, सब ओर विस्तार को प्राप्त होने वाली, प्रकाश से युक्त, तीव्र गति वाले

श्येनों की तरह सत्कार के योग्य, जीवनदायिनी शक्तियों के समूह की तरह तेरा अत्यधिक स्तुतिगान करने वाली तेरी ज्ञानरश्मियां हैं, वे तेरे अनुशासन में रहकर इस जगत् में सर्वत्र विचरण करती हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करती हैं।

टि. *शत्रुविजेता* - **सहमानाः**। शत्रूणाम् अभिभवनशीलाः - वे.। सा.। triumphant - W.

*सर्पणशील* - **अयासः**। गमनशीलाः - वे.। सा.। wide-spreading - W. restless - G.

*रश्मियां* - **अर्चयः**। रश्मयः - सा.। सत्क्रियाः - दया.। rays - W. Ar. flames - G.

*श्येनों की तरह परिचर्या के योग्य* - **श्येनासः न दुवसनासः**। श्येनाः इव परिचरन्तः - वे.। परिचरणीयास् त अश्वा इव - सा.। like hawk-faced horses - W. like falcons hasting eagerly - G. like hawks in their action - Ar.

*गन्तव्य पर (पहुँचती हैं)* - **अर्थम्**। अभिलषितम् - वे.। गन्तव्यम् - सा.। to the quarry - G. towards the goal - Ar.

*बहु स्तुतिगान वाली* - **तुविष्वणसः**। बहुशब्दाः - वे.। तुविस्वना अधिकध्वनयः - सा.।

**अकारि ब्रह्म समिधान तुभ्यं**
**शंसात्युक्थं यजते व्यू धाः।**
**होतारम् अग्निं मनुषो नि षेदुर्**
**नमस्यन्त उशिजः शंसम् आयोः।। ११।। ५।।**

अकारि। ब्रह्म। सम्ऽइधान। तुभ्यम्। शंसाति। उक्थम्। यजते। वि। ऊँ इति। धाः।
होतारम्। अग्निम्। मनुषः। नि। सेदुः। नमस्यन्तः। उशिजः। शंसम् आयोः।। ११।।

*(उच्चारण) किया गया है मन्त्र, हे प्रकाशित किये जाते हुए!, तेरे लिये,*
*गाता है (स्तोता) स्तुतिवचन को (तुझ) पूज्य के लिये, विशेषेण धारण कर तू (इसको)।*
*आह्वान करने वाले (तुझ) अग्नि के पास, मनुष्य नीचे आसीन होते हैं,*
*नमस्कार करते हुए, कामनाओं वाले, प्रशंसनीय के पास मनुष्यों के।। ११।।*

हे उपासकों के द्वारा महिमा का गुणगान किये जाने वाले जगदीश्वर! हमारे द्वारा तेरे लिये मन्त्रोच्चारण किया जा रहा है। तुझ पूजनीय के लिये स्तुतिवचनों का गान किया जा रहा है। तू इन्हें सहर्ष स्वीकार कर। मनुष्यों का सन्मार्ग में आह्वान करने वाले और उनके द्वारा प्रशंसा के योग्य तुझ परमेश्वर को नमस्कार करते हुए सभी जन तेरी शरण में आते हैं, क्योंकि तू ही अशरण-शरण है।

टि. *(उच्चारण) किया गया है मन्त्र* - **अकारि ब्रह्म**। कृतं स्तोत्रम् - वे.। सा.। the prayer has been composed - W. hath prayer been offered - G. the Word has been offered for thee - Ar.

*गाता है (स्तोता) स्तुतिवचन को* - **शंसाति उक्थम्**। शंसति उक्थम् - वे.। शस्त्ररूपं स्तोत्रं शंसाति शंसति। शन्सु स्तुतौ। लेटो ऽडाटाव् इत्याडागमः। सा.।

*विशेषेण धारण कर तू* - **वि उ धाः**। विशेषेण धारय - वे.। विधेहि। दधातेश् छान्दसे लुङि बहुलं छन्दसीत्यडभावः। सा.।

*प्रशंसनीय के पास मनुष्यों के* - **शंसम् आयोः**। शंसनीयम् उर्वशीपुत्रस्य आयोः - वे.। मनुष्यस्य

शंसनीयम् - सा.। प्रशंसां जीवनस्य - दया.। the glorifier of mankind - W. the glory of the living - G. self-expression of the human being - Ar.

## सूक्त ७

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः। छन्दः - १ जगती, २-६ अनुष्टुप्, ७-११ त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**अयम् इह प्रथमो धायि धातृभिर् होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः।**
**यम् अप्नवानो भृगवो विरुरुचुर् वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे।। १।।**

अयम्। इह। प्रथमः। धायि। धातृऽभिः। होता। यजिष्ठः। अध्वरेषु। ईड्यः।
यम्। अप्नवानः। भृगवः। विऽरुरुचुः। वनेषु। चित्रम्। विऽभ्वम्। विशेऽविशे।। १।।

*यह, इस यज्ञ में, आदिम, स्थापित किया जाता है, यज्ञविधायकों के द्वारा,*
*आह्वान करने वाला, पूजनीयों में श्रेष्ठ, यज्ञों में स्तुति के योग्य।*
*जिसको यज्ञकर्म करने वाले, पापों के दाहक, प्रकाशित करते हैं,*
*वनों में, पूजनीय को, विविधरूपधारक को, सब मनुष्यों के लिये ।। १।।*

यह परमेश्वर इस जगत् में प्रथम है, आदिम है। यह सब का सन्मार्ग में आह्वान करने वाला है और इसी लिये यह पूजनीयों में श्रेष्ठ है। यह यज्ञों में याजकों के द्वारा स्तुति के योग्य है। यज्ञकर्मों का अनुष्ठान करने वाले और अपनी तपश्चर्या के द्वारा पापों को भस्म कर डालने वाले ऋषि-मुनि सब पदार्थों में उन्हीं का रूप धारण कर लेने वाले, पूजा के योग्य, इस जगदीश्वर को वनों में तपश्चर्या से मनुष्यमात्र के हित के लिये अपने सम्मुख प्रकाशित करते हैं, इसका साक्षात्कार करते हैं।

टि. *स्थापित किया जाता है* - धायि। निधीयते - वे.। अधायि। निहितः। दधातेः कर्मणि लुङ्। बहुलं छन्दस्यमाङ्योग इत्यडभावः। तिङ्ङतिङ इति निघातः। सा.। धीयते - दया.।

*यज्ञकर्म करने वाले* - अप्नवानः। अप्नवानः - वे.। भृगुसम्बन्धी कश्चिद् ऋषिः - सा.। पुत्रपौत्रादियुक्ताः - दया.। the doer of works - Ar.

*पापों के दाहक* - भृगवः। भृगवः च ऋषयः - वे.। अन्ये भृगवश् च - सा.। परिपक्वविज्ञानाः - दया.। the flame-seers - Ar.

*विविध रूप धारक को* - विभ्वम्। अनेकशरीरम् - वे.। विभुम् ईश्वरम् - सा.।

*प्रत्येक निवास में* - विशेविशे। मनुष्याय मनुष्याय - वे.। वीप्सया सर्वजनव्याप्तिर् गृह्यते। सर्वस्या विशः। सा.। प्रजायै प्रजायै - दया.। for the sake of all men - W. spreading from home to home - G. for man and man - Ar.

**अग्ने कदा त आनुषग् भुवद् देवस्य चेतनम्।**
**अधा हि त्वा जगृभ्रिरे मर्तासो विक्ष्वीड्यम्।। २।।**

अग्ने। कदा। ते। आनुषक्। भुवत्। देवस्य। चेतनम्।
अध। हि। त्वा। जगृभ्रिरे। मर्तासः। विक्षु। ईड्यम्।। २।।

*हे अग्ने! कब तेरा अनुक्रमशः,*

*होगा (प्रकट), प्रकाशशील का प्रज्ञापक तेज।*
*इसलिये ही तुझको, ग्रहण कर रहे हैं,*
*मरणधर्मा हृदयमन्दिरों में, स्तुत्य को।। २।।*

हे सब को सन्मार्ग दिखाने वाले जगदीश्वर! तुझ प्रकाशमान का तेरा ज्ञान कराने वाला तेज धीरे-धीरे हमारे सम्मुख कब प्रकट होगा? तेरी ज्योति का साक्षात्कार हमें कब होगा? तेरा जो तेजोमय अत्यधिक कल्याणमय रूप है, उसे हम देखना चाहते हैं (तेजो यत् ते रूपं कल्याणतमं तत् ते पश्यामि - ईशोप. १६)। इसी लिये तुझ स्तुति के योग्य परमात्मा को हम मरणधर्मा उपासक जन अपने हृदयों में बसाए हुए हैं। आप हमें अपने वास्तविक रूप का दर्शन कराइये।

टि. *अनुक्रमशः* - **आनुषक्**। अनुषक्तम् - वे.। सा.। अनुकूलः - दया.। suddenly - G.

*(प्रकट) होगा* - **भुवत्**। भवेत्। लेट्यडागमः। बहुलं छन्दसीति विकरणस्य लुक्। भुसुवोस् तिङीति गुणप्रतिषेधः। सा.। shall be shown forth - G. is to be manifested - W.

*प्रज्ञापक तेज* - **चेतनम्**। प्रज्ञापनं तेजः - वे.। तेजः - सा.। अनन्तविज्ञानादियुक्तम् - दया.। the glory - G. the light - W. the conscious waking - Ar.

*ग्रहण कर रहे हैं* - **जगृभ्रिरे**। परिगृह्णन्ति - वे.। ग्रहेर् धातोर् लिटि हृग्रहोर् भ इति भत्वम्। बहुलं छन्दसीति रुडागमः। सा.। have accepted thee - W. have held fast - G.

*हृदयमन्दिरों में* - **विक्षु**। मनुष्येषु - वे.। विड्भिः प्रजाभिः - सा.। मनुष्यप्रजासु - दया.। amongst mankind - W. in all their homes - G. in human creatures - Ar.

**ऋतावा॑नं॒ विचे॑तसं॒ पश्य॑न्तो॒ द्यामि॑व॒ स्तृभि॑ः।**
**विश्वे॑षाम् अध्व॒राणां॑ हस्क॒र्तार॑ं॒ दमे॑दमे।। ३।।**

ऋ॒तऽवा॑नम्। विऽचे॑तसम्। पश्य॑न्तः। द्याम्ऽई॑व। स्तृऽभि॑ः।
विश्वे॑षाम्। अ॒ध्व॒राणा॑म्। ह॒स्क॒र्तार॑म्। दमे॑ऽदमे।। ३।।

*ऋत के पालक को, विशिष्ट ज्ञाता को,*
*जानते हुए, आकाश को जैसे तारों से (सुशोभित को)।*
*सभी को, हिंसारहित यज्ञों को,*
*मुस्कान से भरने वाले को, घर-घर में।।*

वह परमात्मा सत्यनियम का विधाता, उसका स्वयं पालन करने वाला और अन्यों से पालन कराने वाला है। वह विशिष्ट ज्ञानों का स्वामी है। अपने तेजों से शोभायमान और प्रत्येक यज्ञगृह में प्रवर्तमान सभी यज्ञों को मुस्कानों से भर देने वाले उस जगदीश्वर को उपासक जन तारों से सुशोभित आकाश अथवा रश्मियों से सुशोभित सूर्य की तरह जानते हुए अपने हृदयमन्दिरों में बसा लेते हैं।

टि. *ऋत के पालक को* - **ऋतावानम्**। सत्यम् - वे.। अमायिनम् - सा.। ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिंस् तम् - दया.। faithful to the Law - G. possessor of the Truth - Ar.

*विशिष्ट ज्ञाता को* - **विचेतसम्**। सुमतिम् - वे.। विशिष्टज्ञानम् - सा.। most sapient - G.

*जानते हुए* - **पश्यन्तः**। contemplating - W.

*आकाश को जैसे तारों से* - **द्यामिव स्तृभिः**। द्याम् इव नक्षत्रैस् तेजोभिः व्याप्तम् - वे.। नक्षत्रैः परिवृतं द्याम् इव विस्फुलिङ्गैः समेतम् - सा.। like waking heaven with its stars - Ar.

*मुस्कान से भरने वाले को* - **हस्कर्तारम्**। विकासस्य कर्तारम् - वे.। प्रभासकं वृद्धेः कर्तारं वा - सा.। प्रकाशकर्तारम् - दया.। the perfecter - W. illumining with cheerful ray - G.

**आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश् चर्षणीर् अभि।**
**आ जभ्रुः केतुम् आयवो भृगवाणं विशेविशे।। ४।।**

आशुम्। दूतम्। विवस्वतः। विश्वाः। यः। चर्षणीः। अभि।
आ। जभ्रुः। केतुम्। आयवः। भृगवाणम्। विशेऽविशे।। ४।।

*तीव्र गति वाले को, सन्तापक को प्रकाश के,*
*सब को जो प्रजाओं को, वश में रखता है।*
*आहरण करते हैं (उस) प्रज्ञापक का, मनुष्य,*
*पापों को भून डालने वाले का, घर-घर में।। ४।।*

वह सन्मार्गदर्शक परमेश्वर वायु और मन से भी अधिक तीव्र गति वाला है। उस प्रकाशपुञ्ज के सम्मुख सभी प्रकाश अपने को बावना और फीका अनुभव करते हैं। वह सभी प्रजाओं को अभिभूत करने वाला और उनको अपने वश में रखने वाला है। वह पापों को जलाकर भस्म कर डालने वाला है। सभी उपासक ज्ञान के दाता उस परमेश्वर को अपने-अपने हृदयों में धारण करते हैं।

टि. *सन्तापक को* - **दूतम्**। दुनोति सन्तापयति शत्रून् इति दूतः, तम्।।

*प्रकाश के* - **विवस्वतः**। यजमानस्य - वे.। मनुष्यस्य यजमानस्य। विवस्वत इति मनुष्यनामेदम्। सा.। सूर्यात् - दया.। of the worshipper - W. of the illumining Sun - Ar.

*वश में रखता है* - **अभि**। अभि भवति - वे.। सा.। (rules) over mankind - W. G. who comes to (all the seeing people) - Ar.

*आहरण करते हैं* - **आ जभ्रुः**। आहृतवन्तः - वे.। आजह्रुः - सा.।

*मनुष्य* - **आयवः**। मनुष्याः - वे.। सा.।

*पापों को भून डालने वाले का* - **भृगवाणम्**। पचन्तम्। भृगुः पाको भृजतेः, तत् कुर्वाणम् इत्याहुः। भृगूणां रक्षकम् इत्यपरम् इति। वे.। भृगुवद् आचरन्तम्। दीप्यमानम् इत्यर्थः। सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विप् वक्तव्य इति क्विप्। तदन्ताल् लटो व्यत्ययेन शानच्। सा.। परिपाककर्तारम् - दया.। the resplendent - W. moving like Bhṛgu - G. as the Bhṛgu-flame-seer - Ar.

**तम् ईं होतारम् आनुषक् चिकित्वांसं नि षेदिरे।**
**रण्वं पावकशोचिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः।। ५।। ६।।**

तम्। ईम्। होतारम्। आनुषक्। चिकित्वांसम्। नि। सेदिरे।
रण्वम्। पावकऽशोचिषम्। यजिष्ठम्। सप्त। धामऽभिः।। ५।।

*उसको ही आह्वाता को, अनुक्रम से,*
*अतिशय ज्ञाता को, स्थापित करते हैं।*

*रमणीय को, शोधक ज्योतियों वाले को,*
*पूज्यतम को, सात तेजों से (युक्त को)।। ५।।*

वह अग्रणी परमेश्वर, जो सब का सन्मार्ग में आह्वान करने वाला है, जो अतिशय ज्ञानवान् है, जो सब के मनों को आह्लादित करने वाला है, जिसकी ज्योतियां अपवित्रों को पवित्र करने वाली हैं, जो सबका पूज्यतम है अथवा जो याजकों में श्रेष्ठ याजक है, जो सप्तविध तेजों से युक्त है, उसे ही सभी उपासक जन शनैः-शनैः अपने हृदयमन्दिरों में स्थापित करते हैं।

टि. *अतिशय ज्ञाता को* - **चिकित्वांसम्।** प्राज्ञम् - वे.। जानन्तम्। कित ज्ञाने। लिटः क्वसुः। द्विर्भावहलादिशेषचुत्वदीर्घाः - सा.। विद्वांसम् - दया.। who wakes the knowledge - Ar.

*स्थापित करते हैं* - **नि सेदिरे।** निषादयन्ति स्म - सा.। निषीदन्ति - दया.। have seated him - W. have they placed - G. they set within - Ar.

*शोधक ज्योतियों वाले को* - **पावकशोचिषम्।** शोधकदीप्तिम् - वे.। सा.। पावकस्य शोचिर् इव शोचिर् दीप्तिर् यस्य तम् - दया.। the purifyingly radiant - W. with sanctifying flame - G. Ar.

*सात तेजों से (युक्त को)* - **सप्त धामभिः।** सप्तभिः छन्दोभिः - वे.। सप्त सप्तभिर् धामभिस् तेजोभिर् युक्तम् - सा.। सप्त सप्तभिः प्राणादिभिः धामभिः स्थानैः - दया.। (brilliant) with seven flames - W. with sevenfold might - G. by his seven seats - Ar.

**तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतम् अश्रितम्।**
**चित्रं सन्तं गुहा हितं सुवेदं कूचिदर्थिनम्।। ६।।**

तम्। शश्वतीषु। मातृषु। वनै। आ। वीतम्। अश्रितम्।
चित्रम्। सन्तम्। गुहा। हितम्। सुऽवेदम्। कूचित्ऽअर्थिनम्।। ६।।

*उसको शाश्वत माताओं में, वनों में,*
*सब ओर व्याप्त को, अनन्याश्रित को।*
*पूजनीय को, विद्यमान को, गुहा में स्थित को,*
*उत्तम ज्ञानी को, कहीं से भी हव्य के अभिलाषी को।। ६।।*

वह परमेश्वर जो शाश्वत माताओं अर्थात् अप्रकेत जलों में हिरण्यगर्भ के रूप में अथवा समुद्र के जलों में वडवानल के रूप में और वनों में दावानल के रूप में निवास करता है, जो सर्वत्र व्याप्त है, जो किसी अन्य के आश्रित नहीं अपितु अपने ही आश्रित है, जो विलक्षण अथवा पूजनीय है, जो सर्वत्र विद्यमान है, जो एक रहस्य के रूप में मानो हृदयगुहा में स्थित है, जो श्रेष्ठ ज्ञानवान् है और जो कहीं से भी अर्थात् सब ओर से अपने उपासकों से नैवेद्य, समर्पण आदि की अभिलाषा रखता है, उस जगन्नायक जगदीश्वर को सभी भक्त जन अनुक्रमशः अपने हृदयमन्दिर में स्थापित करते हैं।

टि. *शाश्वत माताओं में* - **शश्वतीषु मातृषु।** शश्वतीषु अग्नेः मातृषु ओषधीषु - वे.। शाश्वतीषु बह्वीषु मातृषु अप्सु। ताः सस्यादिनिर्मातृकत्वान् मातर इत्युच्यन्ते। सा.। शश्वतीषु अनादिभूतासु मातृषु आकाशादिषु - दया.। abiding in the maternal (waters) - W. in his Eternal Mothers - G. in many mothers linked together - Ar.

*सब ओर व्याप्त को* - **आ वीतम्।** गतम् - वे.। आकारश् चार्थे। वीतं कान्तम्। सा.। आ व्याप्तम् - दया.। loved - W. concealed - G. wide-spread - Ar.

*अनन्याश्रित को* - **अश्रितम्।** आत्मन्यधिष्ठितम् - वे.। प्राणिभिर् दाहभयाद् असेवितम्। दुरासदम् इत्यर्थः। सा.। असेवितम् - दया.। unapproached - W. G. Ar.

*कहीं से भी हव्य के अभिलाषी को* - **कूचिदर्थिनम्।** यः क्वाप्यर्थयते स कूचिदर्थी तम् निषेदिरे देवा इति - वे.। क्वापि हविष्यर्थिनं समिदाज्यपुरोडाशादि हविः स्वीकुर्वन्तम्। क्वेत्यत्र वकारस्य छान्दसे संप्रसारणे परपूर्वत्वे च हल इति दीर्घत्वम्। सा.। क्वचिद् बहवो ऽर्था विद्यन्ते यस्मिंस् तम् - दया.। seeking oblations from any quarter - W. seeking on all sides - G. moving to some unknown goal - Ar.

**स॒सस्य॒ यद् वियु॑ता॒ सस्मि॒न्नूध॑न्नृ॒तस्य॒ धाम॑न् र॒णय॑न्त दे॒वाः।**
**म॒हाँ अ॒ग्निर् नम॑सा रा॒तह॑व्यो॒ वेर् अ॑ध्व॒राय॒ सद॒म् इद् ऋ॒ताव॑।। ७।।**

स॒सस्य॑। यत्। विऽयु॑ता। सस्मि॑न्। ऊध॑न्। ऋ॒तस्य॑। धाम॑न्। र॒णय॑न्त। दे॒वाः।
म॒हान्। अ॒ग्निः। नम॑सा। रा॒तऽह॑व्यः। वेः। अ॒ध्व॒राय॑। सद॑म्। इत्। ऋ॒तऽवा॑।। ७।।

*(अज्ञान)निद्रा के जब अलग हो जाने पर, सम्पूर्ण ओढी में,*
*सत्य के लोक में रमण करते हैं, देवत्व को प्राप्त उपासक।*
*महान् अग्नि, नमस्कार के साथ प्रदान की हुई हवि वाला,*
*प्राप्त करता है यज्ञ को, सदा ही ऋत का पालन करने वाला।। ७।।*

यज्ञ आदि शुभ कर्मों और परमात्मा की उपासना से जब उपासक अज्ञाननिद्रा का परित्याग करके ज्ञानप्र के काश में जागृत होते हैं, तो उन्हें सत्यलोक में सम्पूर्ण अमृतकलश की प्राप्ति हो जाती है और वे देवत्व को प्राप्त करके सत्य के धाम में, परमानन्द में लीन हो जाते हैं। नमस्कार के साथ दी हुई हवियों और समर्पणों वाला सन्मार्गद्रष्टा, सदा ही सत्य का पालन करने वाला, वह महान् परमेश्वर अपने भक्तों की हवियों को अवश्य स्वीकार करता है और बदले में उत्तम फल देता है।

टि. *(अज्ञान)निद्रा के जब अलग हो जाने पर* - **ससस्य यत् वियुता।** स्वप्नशीलस्य यदा वियुते - वे.। यद् यम् अग्निं ससस्य स्वप्नस्य वियुता वियुते वियोगे। उषसीत्यर्थः। सा.। whom, when they desist from slumber - W. as food spreads forth - G.

*सत्य के लोक में* - **ऋतस्य धामन्।** यज्ञस्य आवासस्थाने - वे.। उदकस्य स्थाने - सा.। in the home of Order - G.

*सम्पूर्ण ओढी में* - **सस्मिन् ऊधन्।** सर्वस्मिन् ऊधनि - वे.। सर्वस्मिन् ऊधनि यज्ञे - सा.। in this earthly udder - G. in that udder of the Cow - Ar.

*प्राप्त करता है यज्ञ को* - **वेः अध्वराय।** यज्ञाय गच्छति - वे.। अध्वरायाध्वरं यजमानैः कृतं यज्ञम्। सुपां सुपो भवन्तीति वक्तव्यम् (म. ७.१.३९) इति वचनाद् अत्र द्वितीयार्थे चतुर्थी। वेः वेत्ति जानाति। यद्वा। कामयते। सा.। accepts the sacrifice - W.

*ऋत का पालन करने वाला* - **ऋतावा।** सत्यवान् - वे.। सा.। truthful - W.

**वेर् अध्वरस्य दूत्यानि विद्वान् उभे अन्ता रोदसी संचिकित्वान्।**
**दूत ईयसे प्रदिव उराणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि।। ८।।**

वेः। अध्वरस्य। दूत्यानि। विद्वान्। उभे इति। अन्तर् इति। रोदसी इति। सम्ऽचिकित्वान्।
दूतः। ईयसे। प्रऽदिवः। उराणः। विदुःऽतरः। दिवः। आऽरोधनानि।। ८।।

*जानता है तू यज्ञ के दुष्टसन्तापनकर्मों को, विद्वान्,*
*दोनों का, अन्तर्वर्ती का, द्युलोक-भूलोक का ज्ञाता।*
*दुष्टसन्तापक, जाता है तू प्राचीन काल से, विस्तारता हुआ,*
*विद्वानों में उत्तम, द्युलोक के आरोहणों को।। ८।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! तू हिंसारहित यज्ञों में विघ्नबाधाएं उपस्थित करने वाले दुष्ट राक्षस जनों को सन्तप्त और दण्डित करने के अपने कर्तव्यों को जानता है। तू द्युलोक और भूलोक, इन दोनों का और इनके मध्यवर्ती अन्तरिक्षलोक का भी उत्तम ज्ञाता है। दुष्ट हिंसक जनों को सन्तप्त करने के लिये रुद्ररूप को धारण करने वाला और स्वर्गलोक के आरोहणों का उत्तम ज्ञाता तू स्वर्ग के स्थान को विस्तृत करता हुआ, सुखों की परिधि को बढ़ाता हुआ, आदि काल से ही गमन कर रहा है।

टि. *जानता है तू* - **वेः**। कामयसे - वे.। वेत्सि कामयसे वा। यद्वा। वेर् इति यज्ञविशेषणम्। वेर् यजमानस्याभीष्टफलजनकस्य (अध्वरस्य)। सा.। व्याप्तस्य - दया.। bird (of each rite) - G.

*दुष्टसन्तापनकर्मों को* - **दूत्यानि**। दूतकर्माणि - सा.। दूतवत्कर्माणि - दया.।

*विद्वानों में उत्तम* - **विदुष्टरः**। विद्वत्तरः - वे.। सा.। अतिशयेन वेत्ता - दया.।

*द्युलोक के आरोहणों को* - **दिवः आरोधनानि**। द्युलोकस्य आरोधनानि रक्षांसि - वे.। स्वर्गस्य आरोहणानि - सा.। प्रकाशस्य समन्तान् निग्रहणानि - दया.। the ascents of heaven - W. heaven's innermost recesses - G. the mounting slopes of heaven - Ar.

**कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाश् चरिष्ण्वर्चिर् वपुषाम् इद् एकम्।**
**यद् अप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश् चिज् जातो भवसीद् उ दूतः।। ९।।**

कृष्णम्। ते। एम। रुशतः। पुरः। भाः। चरिष्णु। अर्चिः। वपुषाम्। इत्। एकम्।
यत्। अप्रऽवीता। दधते। ह। गर्भम्। सद्यः। चित्। जातः। भवसि।। इत्। ऊँ इति। दूतः।। ९।।

*काला (है) तेरा मार्ग प्रकाशमान का, आगे (है) तेरे दीप्ति,*
*विचरणशील तेज (तेरा), सब रूप वालों में एकमात्र ही है।*
*जब गर्भ को धारण न की हुई, धारण कर लेती है गर्भ को,*
*तुरन्त ही प्रादुर्भूत होकर, हो जाता है तू निश्चय से दुष्टसन्तापक।। ९।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तू प्रकाश से युक्त है। तेरा प्रकाश अन्धकार को दूर भगाने के लिये हमेशा आगे ही आगे रहता है। अपने प्रकाश को आगे करके मानो तू तम के विनाश के लिये अन्धकारयुक्त मार्ग पर गमन करता है। सुन्दर तेजस्वी रूप वालों में एकमात्र तेरा तेज ही सर्वत्र विचरण करने वाला है। गर्भ को धारण न की हुई प्रकृति जब उस तेज को वीर्य के रूप में अपने अन्दर धारण करती है, तो तू अविलम्ब जगत् के रूप में प्रादुर्भूत हो जाता है और दुष्ट

राक्षसवृत्ति वाले जनों का सन्तापक और संहारक हो जाता है।

टि. *मार्ग* - **एम**। गमनमार्गः - वे.। एमञ्शब्देन गमनमार्ग उच्यते। एम वर्त्म। सा.। path - W.

*प्रकाशमान का* - **रुशतः**। श्वेतवर्णस्य - वे.। रोचमानस्य - सा.। सुरूपस्य - दया.।

*सब रूप वालों में* - **वपुषाम्**। उप्तानां सर्वेषाम् - वे.। वपुषां वपुष्मतां रूपवताम्। तेजस्विनाम् इत्यर्थः। सा.। रूपवतां शरीराणाम् - दया.। of (all luminous) bodies - W. Ar. of wonders - G.

*गर्भ को धारण न की हुई* - **अप्रवीता**। (ऋ. ३.५५.५ मन्त्रो द्रष्टव्यः)। अनिषिक्तरेतांसि उप्तानि ओषध्यादीनि - वे.। अनुपगता यजमाना - सा.। अगच्छन्ती - दया.। present (worshippers) - W. unimpregnate - G. Ar.

**सद्यो जातस्य ददृशानम् ओजो**
**यद् अस्य वातो अनुवाति शोचिः।**
**वृणक्ति तिग्माम् अतसेषु जिह्वां**
**स्थिरा चिद् अन्ना दयते वि जम्भैः।। १०।।**

सद्यः। जातस्य। ददृशानम्। ओजः। यत्। अस्य। वातः। अनुऽवाति। शोचिः।
वृणक्ति। तिग्माम्। अतसेषु। जिह्वाम्। स्थिरा। चित्। अन्ना। दयते। वि। जम्भैः।। १०।।

*तुरन्त, प्रादुर्भूत का (इसका), दृश्यमान हो जाता है बल,*
*जब इसके, वायु अनुकूल बहता है, तेज के।*
*युक्त करता है तीक्ष्ण को, वृक्षसमूह में जिह्वा को,*
*स्थिरों का भी अन्नों का, भक्षण करता है दाढ़ों से।। १०।।*

जिस प्रकार अग्नि अरणियों में प्रकट होकर शीघ्र ही अपने बल को प्रदर्शित करने लगता है और वायु के लपटों के अनुकूल होने पर अपनी ज्वालारूपी जिह्वा को वृक्षसमूह रूपी अपने अन्न में गड़ाकर उनका भक्षण करता है, उसी प्रकार जगत् के रूप में प्रकट वह जगदीश्वर सदा और सर्वत्र अपने बल को प्रकट करता है। वह सदा अनुकूल रहने वाली अपनी शक्तियों के साथ मिलकर संसार में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न करने वाली प्रबल दुष्ट आसुरी शक्तियों को भी नष्ट कर डालता है।

टि. *दृश्यमान हो जाता है बल* - **दृश्यमानम् ओजः**। दृश्यमानं बलं भवति - वे.। तेज ऋत्विगादिभिर् दृश्यमानं भवतीति शेषः - सा.। the light is visible - W. the vigour is apparent - G. Ar.

*युक्त करता है* - **वृणक्ति**। वृजिश् छेदनकर्मा। छिनत्ति। वे.। संयोजयति - सा.। spreads - W. layeth - G. turns - Ar.

*वृक्षसमूह में* - **अतसेषु**। वृक्षसंघेषु - सा.। दया.। amongst the trees - W. on the brushwood - G. round the trunks - Ar.

*भक्षण करता है* - **दयते**। क्षपयति - वे.। विखण्डयति। भक्षयतीत्यर्थः। सा.। ददाति - दया.। consumes - W. G. tears - Ar.

**तृषु यद् अन्ना तृषुणा ववक्ष तृषुं दूतं कृणुते यह्वो अग्निः।**

**वार्तस्य मेळिं सचते निजूर्वन्नाशुं न वाजयते हिन्वे अर्वा।। ११।। ७।।**

तृषु। यत्। अन्ना। तृषुणा। ववक्ष। तृषुम्। दूतम्। कृणुते। यह्वः। अग्निः।
वार्तस्य। मेळिम्। सचते। निऽजूर्वन्। आशुम्। न। वाजयते। हिन्वे। अर्वा।। ११।।

*शीघ्र जब अन्नों को, तीव्र (तेज) के साथ वहन करता है,*
*शीघ्रकारी दूत बना लेता है (स्वयं को); महान् अग्नि।*
*वायु के मेल का सेवन करता है, भक्षण करता हुआ (अन्न को),*
*तेज अश्व की तरह, बलवान् बनाता है, प्रेरित करता है, गमनशील (स्वतेज को)।। ११।।*

दावानल जिस प्रकार अनावश्यक झाड़-झंखाड़ों को अपना अन्न बना लेता है और उन्हें अविलम्ब जलाकर भस्म कर देता है, उसी प्रकार वह अग्रणी परमेश्वर दुष्ट हिंसक जनों को अपने तेज से नष्ट कर डालता है। वह महान् अग्नि अपने आप को दुष्ट पापी जनों का सन्तापक और संहारक बना लेता है। दुष्ट आसुरी शक्तियों के विनाश के इस कार्य को वह वायु, अग्नि, जल आदि अपनी दिव्य शक्तियों से मेल करके उनकी सहायता से सम्पन्न करता है। गतिशील वह जगदीश्वर आशुगति अश्व की तरह अपने तेज को प्रेरित करता रहता है और बलवान् बनाता रहता है।

टि. *शीघ्र* - **तृषु।** शीघ्रम् - वे.। सा.। तृष्विति क्षिप्रनाम (निघ. २.१५) - दया.।

*तीव्र (तेज) के साथ* - **तृषुणा।** क्षिप्रेण तेजसा - वे.। क्षिप्रेण रश्मिसमूहेन - सा.। with rapid (radiance) - W. with swift flame - G.

*वहन करता है* - **ववक्ष।** वहति - वे.। दया.। वहति। दहतीत्यर्थः। सा.। carries his food - Ar.

*मेल का सेवन करता है* - **मेळिम् सचते।** सम्पर्कं सेवते - वे.। बलं सेवते - सा.। सङ्गमं समवैति - दया.। allies with the force of wind - W. follows the rustling of the wind - G.

*भक्षण करता हुआ* - **निजूर्वन्।** नितराम् अरण्यं हिंसन् - वे.। काष्ठानि निःशेषेण दहन् - सा.। नितरां सद्यो गच्छन् - दया.। consuming (the fuel) - W. G. Ar.

*प्रेरित करता है* - **हिन्वे।** गमनाय - वे.। प्रेरयति - सा.। urges - W. drives onward - G.

*गमनशील* - **अर्वा।** गमनस्वभावः - वे.। सा.।

## सूक्त ८

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः। छन्दः - गायत्री। अष्टर्चं सूक्तम्।

**दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहम् अमर्त्यम्। यजिष्ठम् ऋञ्जसे गिरा।। १।।**

दूतम्। वः। विश्वऽवेदसम्। हव्यऽवाहम्। अमर्त्यम्। यजिष्ठम्। ऋञ्जसे। गिरा।। १।।

*दुष्टसन्तापक को, तुम्हारे, सर्वज्ञ को;*
*हव्य के वाहक को, अमरणधर्मा को।*
*पूज्यतम को, रिझाता हूँ मैं स्तुति से।। १।।*

हे उपासको! यह सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला परमेश्वर, जो दुष्ट हिंसक जनों का सन्तापक और विनाशक है, जो सर्वज्ञ सर्वव्यापक और सब धनों का स्वामी है, जो तुम्हारे हव्यों नैवेद्यों

और समर्पणों को स्वीकार करने वाला है, जो मृत्यु जरा क्षय आदि धर्मों से रहित है और जो सृष्टियज्ञ का प्रवर्तक होने से श्रेष्ठ याजक तथा हम सब का पूज्यतम भी है, उसे मैं अपनी स्तुतियों से रिझाता हूँ बढ़ाता हूँ, और पाने का प्रयास करता हूँ।

टि. *सर्वज्ञ को* – **विश्ववेदसम्।** सर्ववेदसम् – वे.। विश्वं समस्तं वेदो धनं यस्यासौ विश्ववेदाः तं, सर्वविदं वा – सा.। विश्वस्मिन् विद्यमानम् – दया.। the omniscient - W. Ar. who possesses all - G.

*पूज्यतम को* – **यजिष्ठम्।** यष्टृतमम् – वे.। अतिशयेन यष्टारम् – सा.। अतिशयेन सङ्गमयितारम् – दया.। the chief sacrificer - W. best worshipper - G. most strong to sacrifice - Ar.

*रिझाता हूँ मैं* – **ऋञ्जसे।** प्रसाधयसि – वे.। यजमानो ऽहं प्रसाधयामि। वर्धयामीत्यर्थः। ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मेति यास्कः। सा.। प्रसाध्नोषि – दया.। I propitiate - W. I woo - G. Array - Ar.

**स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः। स देवाँ एह वक्षति।। २।।**

सः। हि। वेद। वसुऽधितिम्। महान्। आऽरोधनम्। दिवः। सः। देवान्। आ। इह। वक्षति।। २।।

*वह निश्चय से जानता है, वसुओं के दान को,*
*महान् (वह जानता है), आरोहण को द्युलोक के।*
*वह देवों को, सब ओर से, यहाँ वहन करे।। २।।*

वह अग्रणी परमेश्वर भली प्रकार जानता है, कि अपने उपासकों को धन किस प्रकार दिया जाता है, उन्हें जीवनयापन के विविध साधन देकर उनके जीवन को सुखी सम्पन्न और अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने वाला कैसे बनाया जा सकता है। वह जानता है कि अपने उपासकों को दिव्य लोक की प्राप्ति कैसे कराई जाती है। वह जगदीश्वर इस जगत्, इस जीवन और इस शरीर में हमारे लिये दिव्य भोगों, विद्या आदि दिव्य गुणों और सशक्त इन्द्रियों को प्रदान करे।

टि. *वसुओं के दान को* – **वसुधितिम्।** वसुनो निधानम् – वे.। यजमानाभीष्टफलरूपधनस्य दानम् – सा.। वसूनां द्रव्याणां धारकम् – दया.। how to bestow the (desired) wealth (upon the worshippers) - W. the gift of wealth - G. the place of the possession of riches - Ar.

*सब ओर से यहाँ वहन करे* – **आ इह वक्षति।** इह आ वहति – वे.। अस्मिन् यज्ञे वक्षति आवहतु। वहेर् धातोर् लिङर्थे लेड् इति लेट्। तस्य तिप्। सिब् बहुलं लेटीति सिप्। लेटो ऽडाटाव् इत्यडागमश् च। हो ढ इति ढत्वम्। ठत्वकत्वषत्वानि। तिङ्ङतिङ इति निघातः। सा.। वहति प्रापयति – दया.।

**स वेद देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे। दाति प्रियाणि चिद् वसु।। ३।।**

सः। वेद। देवः। आऽनमम्। देवान्। ऋतऽयते। दमे। दाति। प्रियाणि। चित्। वसु।। ३।।

*वह जानता है प्रकाशमान, नमस्कार कराना*
*देवों को, ऋत के पालक को (उसके) घर में।*
*प्रदान करता है, प्रियों को भी धनों को।। ३।।*

वह जगदीश्वर केवल मनुष्यों को ही नहीं, अपितु देवों को भी नमस्कार कराना जानता है। मनुष्य, देव, गन्धर्व आदि सभी उसके सामने नतमस्तक हैं। जो मनुष्य ऋत का पालन करता है,

उसके नियमों का उल्लङ्घन नहीं करता, उसके घर में वह सब प्रकार के प्रिय धन प्रदान करता है।

टि. *जानता है नमस्कार कराना* - **वेद आनमम्।** वेत्ति आनमयितुम् - वे.। यजमानादीन् आनमयितुं नमस्कारयितुं (देवान् इन्द्रादीन्) वेद क्रमेण वेत्ति - सा.। जानाति समन्तात् सत्कृतिं कर्तुम् - दया.। He knows how the gods are to be reverenced - W. He knows to guide gods - G. he knows his way of submission (to the gods) - Ar.

*ऋत के पालक को* - **ऋतायते।** यज्ञम् इच्छते - वे.। यज्ञम् इच्छते यजमानाय - सा.। to the sincere (worshipper) - W. to the righteous - G. for the seeker of the Truth - Ar.

*प्रदान करता है* - **दाति।** प्रयच्छति - वे.। ददाति - सा.। अत्राभ्यासलोपः - दया.।

*धनों को* - **वसु।** वचनव्यत्ययः। वसूनि।। धनानि - वे.। सा.। वसूनि द्रव्याणि - दया.।

**स होता॒ सेद् उ॑ दू॒त्यं॑ चिकि॒त्वाँ अ॒न्तर् ई॑यते। वि॒द्वाँ आ॒रोध॑नं दि॒वः।। ४।।**

सः। होता॑। सः। इत्। ऊँ॒ इति॑। दू॒त्य॑म्। चि॒कि॒त्वान्। अ॒न्तः। ई॒य॒ते। वि॒द्वान्। आ॒ऽरोध॑नम्। दि॒वः।। ४।।

*वह आह्वाता (है), वह ही निश्चय से दूतकर्म को*
*जानता हुआ, मध्य में गमन करता है (इस जगत् के)।*
*जानता हुआ आरोहण को द्युलोक के।। ४।।*

वह अग्रणी परमेश्वर सब का सन्मार्ग और शुभ कर्मों में आह्वान करने वाला है। वह दुष्ट हिंसक जनों को उनके दुष्कर्मों के लिये सन्तप्त और दण्डित करता है। वह प्रकाशलोक की प्राप्ति के उपायों को जानता है और उसके लिये अपने उपासकों को प्रेरित करता हुआ इस जगत् में सर्वत्र गमन करता है अर्थात् सर्वत्र व्याप्त है।

टि. *मध्य में गमन करता है (इस जगत् के)* - **अन्तः ईयते।** अन्तः गच्छति - वे.। अन्तर् द्यावा-पृथिव्योर् मध्य ईयते गच्छति। ईङ् गतौ। दिवादिभ्यः श्यन्। तिङ्ङतिङ इति निघातः। सा.। मध्ये गच्छति - दया.। He travels between earth and heaven - W. he doth his errand to and fro - G. who travels between - Ar.

**ते स्या॑म॒ ये अ॒ग्नये॑ ददा॒शुर् ह॒व्यदा॑तिभिः। य ईं॒ पुष्य॑न्त इन्ध॒ते।। ५।।**

ते। स्या॒म॒। ये। अ॒ग्नये॑। द॒दा॒शुः। ह॒व्यदा॑तिऽभिः। ये। ई॒म्। पुष्य॑न्तः। इ॒न्ध॒ते।। ५।।

*वे (यजमान) होवें हम, जो (तुझ) अग्नि को,*
*आहुतियां देते रहते हैं, हव्यदानों के द्वारा।*
*जो तुझ को पुष्ट करते हुए, प्रदीप्त करते हैं।। ५।।*

हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमात्मन्! हम तेरी पूजा करने वाले उन लोगों में से होवें, जो तुझ अग्रणी परमेश्वर को अपने हव्यों और नैवेद्यों को समर्पित करके प्रसन्न करते हैं और जो अपनी भक्ति और उपासना से तुझको पुष्ट करते हुए तेरी महिमा के प्रकाश को सब ओर फैलाते हैं।

टि. *जो आहुतियां देते रहते हैं हव्यदानों के द्वारा* - **ये ददाशुः हव्यदातिभिः।** ये दत्तवन्तः तुभ्यं हविषां दानैः - वे.। ये यजमानाः हव्यदातिभिर् हविर्दानैर् ददाशुः प्रीतिं कुर्वन्ति - सा.। द्रव्यादिकं ददति दातव्यदानैः - दया.। who propitiate with gifts of oblations - W. G. who have given

with the gift of their offerings - Ar.

**ते राया ते सुवीर्यैः ससवांसो वि शृण्विरे। ये अग्ना दधिरे दुवः।। ६।।**

ते। राया। ते। सुऽवीर्यैः। ससऽवांसः। वि। शृण्विरे। ये। अग्ना। दधिरे। दुवः।। ६।।

*वे धनों के द्वारा, वे सुन्दर बलों के द्वारा,*

*भोगते हुए (भोगों को), विश्रुत हो जाते हैं।*

*जो अग्नि के निमित्त, धारण करते हैं परिचर्या को।। ६।।*

जो उपासक सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर के निमित्त अपनी सेवाएं समर्पित करते है, उसके नियमों और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए उसकी पूजा-अर्चना करते हैं, वे धनों और उत्तम बलों को प्राप्त करके उनसे भोगों को भोगते हुए जगत् में प्रख्यात हो जाते हैं। उनका यश संसार में सर्वत्र फैल जाता है।

टि. *सुन्दर बलों के द्वारा* - **सुवीर्यैः**। शोभनवीर्योपेतैः पुत्रादिभिः - सा.। सुवीर्यैः सुष्ठुपराक्रम-बलैः - दया.। for progeny - W. and for hero deeds - G. by the hero-strenghts - Ar.

*भोगते हुए (भोगों को)* - **ससवांसः**। त्वां भजमानाः - वे.। सा.। शेरते - दया.। venerating - W. victorious - G. have conquered - Ar.

*विश्रुत हो जाते हैं* - **वि शृण्विरे**। विश्रुता भवन्ति - वे.। विश्रूयन्ते प्रख्यायन्ते - सा.। are renowned - W. illustrious are they - G. and have heard - Ar.

*अग्नि के निमित्त* - **अग्ना**। अग्निनिमित्तम् - वे.। अग्नौ। सुपां सुलुग् इत्याकारः। सा.।

**अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः। अस्मे वाजास ईरताम्।। ७।।**

अस्मे इति। रायः। दिवेऽदिवे। सम्। चरन्तु। पुरुऽस्पृहः। अस्मे इति। वाजासः। ईरताम्।। ७।।

*हमपर धन दिन-प्रतिदिन,*

*संचरण करें, बहुतों से अभिलषित।*

*हमको अन्न प्राप्त होवें (दिन-प्रतिदिन)।। ७।।*

हे मार्गदर्शक प्रभो! बाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के धन, जिनकी अभिलाषा अधिसंख्य जन करते हैं, हमें अविलम्ब प्राप्त होवें। अन्न, बल आदि ऐश्वर्य भी हमें सदा प्राप्त होते रहें।

टि. *बहुतों से अभिलषित* - **पुरुस्पृहः**। बहुभिः स्पृहणीयानि - वे.। दया.। ऋत्विगादिभिर् अभि-लष्यमाणाः - सा.। envied by many - W. craved by many - G. bringing the multitude of our desires Ar.

*अन्न प्राप्त होवें* - **वाजासः ईरताम्**। अन्नानि उद्युक्तानि भवन्तु - वे.। अन्नानि यज्ञार्थं प्रेरयन्तु - सा.। अन्नाद्यैश्वर्ययोगाः प्राप्नुवन्तु - दया.। food wait us - W. power and might spring up for us - G. may we receive the impulsion of the plenitudes - Ar.

**स विप्रश् चर्षणीनां शवसा मानुषाणाम्। अति क्षिप्रेव विध्यति।। ८।। ८।।**

सः। विप्रः। चर्षणीनाम्। शवसा। मानुषाणाम्। अति। क्षिप्राऽइव। विध्यति।। ८।।

*वह मेधावी (अग्नि), प्रजाओं के,*

*बल से (अपने), मननशीलों के, (कष्टों को)।*
*नितान्त विनाश्य (दुरितों को), बाणवर्षक की तरह, बींधता है।। ८।।*

मेधा का स्वामी वह अग्रणी परमेश्वर बुद्धि से काम लेने वाले अपने विचारशील प्रजाजनों के विनाश के योग्य कष्टों और दुःखों को अपने सामर्थ्य से इस प्रकार समूल नष्ट कर देता है, जिस प्रकार बाण चलाने वाला कोई धनुर्धारी अपने बाणों से शत्रुओं को बींध देता है।

टि. *मेधावी* – **विप्रः**। मेधावी – सा.। दया.। the wise - W. that holy Singer - G. an illumined seer - Ar.

*प्रजाओं के मननशीलों के* – **चर्षणीनाम् मानुषाणाम्**। मनुष्येषु पश्यत्सु – वे.। मानुषाणां मनुसम्बन्धिनां चर्षणीनां प्रजानाम् – सा.। of men the descendants of Manu - W. of the tribes of men - G. of seeing human beings - Ar.

*(विनाश्य दुरितों को) बाणवर्षक की तरह* – **क्षिप्राऽइव**। धानुष्क इव क्षेप्ता शरान् – वे.। क्षिप्रेव क्षेप्याण्येव विनाशयितुम् अर्हाणि दुरितानीति शेषः – सा.। क्षिप्राणि प्रेरितानीव – दया.। the removable (ills) of men - W. (shoots forth) his arrows swifter than the swift shafts - G. like a swift arrow - Ar.

## सूक्त ९

ऋषिः – वामदेवो गौतमः। देवता – अग्निः। छन्दः – गायत्री। अष्टर्चं सूक्तम्।

**अग्ने॑ मृ॒ळ म॒हाँ अ॑सि॒ य ई॒म् आ दे॑व॒युं जन॑म्। इ॒येथ॑ ब॒र्हिर् आ॒सद॑म्।। १।।**

अग्ने॑। मृ॒ळ। म॒हान्। अ॒सि॒। यः। ई॒म्। आ। दे॒व॒ऽयुम्। जन॑म्। इ॒येथ॑। ब॒र्हिः। आ॒ऽसद॑म्।। १।।

*हे अग्ने!, सुखी कर (मुझको), महान् है तू,*
*जो इसके पास, इस ओर, देवाभिलाषी जन के।*
*पहुँच जाता है तू, आसन पर बैठने के लिये।। १।।*

हे सब का नेतृत्व करने वाले प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! तू हमें सुखी कर। तू महान् है, जो तू दिव्यताओं को चाहने वाले, दैवी वृत्ति वाले जनों से प्यार करने वाले और तुझ इष्टदेव की अभिलाषा वाले अपने उपासक जन के पास उसके हृदय रूपी आसन पर आसीन होने के लिये सब ओर से पहुँच जाता है।

टि. *सुखी कर* – **मृळ**। सुखय – वे.। सा.। दया.। make us happy - W. show favour - G. be gracious - Ar.

*इसके पास देवाभिलाषी जन के* – **ईम् देवयुम् जनम्**। इमं देवानां कामयितारं जनं यजमानम् – सा.। to this devout man - W. to this pious man - G. to the seeker of the godheads - Ar.

*पहुँच जाता है तू* – **इयेथ**। रक्षितुम् आगच्छसि – वे.। आ इयेथ आगच्छसि – सा.।

*बैठने के लिये* – **आसदम्**। आसन्नम् – वे.। यज्ञे आसत्तुम् – सा.। to sit down - W. to seat thee - G. to sit on his seat of sacrifice - Ar.

**स मानुंषीषु दूळभो विक्षु प्रावीर् अमर्त्यः। दूतो विश्वेषां भुवत्।। २।।**

सः। मानुंषीषु। दुःऽदर्भः। विक्षु। प्रऽअवीः। अमर्त्यः। दूतः। विश्वेषाम्। भुवत्।। २।।

*वह मनुष्य सम्बन्धियों में, दम्भ के अयोग्य,*
*प्रजाओं में, खूब वृद्धि करने वाला, अमरणधर्मा।*
*दुष्टसन्तापक, सब का हो जाए (संरक्षक)।। २।।*

वह अग्रणी परमेश्वर अमरणधर्मा है। वह सब की वृद्धि और समृद्धि करने वाला है। मानवी प्रजाओं में कोई भी मनुष्य उससे छल-कपट नहीं कर सकता, उसे दबा नहीं सकता, उसकी हिंसा नहीं कर सकता। वह दुष्टों को सन्तप्त और दण्डित करने वाला जगदीश्वर हम सब का सदा सब स्थानों पर रक्षक हो जाए।

टि. *दम्भ के अयोग्य* - **दूळभः**। दुर्दभः - वे.। दुर्दभो राक्षसादिना दुर्हिंसः - सा.। दुःखेन लब्धुं योग्यः - दया.। difficult to overcome - W. hard to be deceived - G. invincible - Ar.

*खूब वृद्धि करने वाला* - **प्रावीः**। प्रकर्षेण रक्षकः - वे.। प्रकर्षेण गन्ता - सा.। प्रकृष्टविद्याव्यापी - दया.। pre-eminent - W. Helper - G. manifest - Ar.

**स सद्म परिं णीयते होता मन्द्रो दिविंष्टिषु। उत पोता नि षींदति।। ३।।**

सः। सद्मं। परिं। नीयते। होता। मन्द्रः। दिविंष्टिषु। उत। पोता। नि। सीदति।। ३।।

*वह सदन में सब ओर ले जाया जाता है,*
*आह्वाता, मुदित करने वाला, यागों में।*
*और पवित्रकर्त्ता (बनकर) आसीन होता है।। ३।।*

वह जगन्नायक परमेश्वर विद्वानों के द्वारा इस ब्रह्माण्ड में और इस पिण्ड में सर्वत्र समाया हुआ, सर्वव्यापक, स्वीकार किया गया है। वह जगदीश्वर यज्ञ, देवपूजा आदि शुभ कर्मों में सब का आह्वान करने वाला, सब को आनन्द प्रदान करने वाला और सब को पवित्र करने वाला बनकर विराजता है। वही हमारी उपासना के योग्य है।

टि. *सदन में सब ओर* - **सद्म परि**। यज्ञभवनं परितः - वे.। सा.। into the sacrificial hall - W. around the altar - G. round the house - Ar.

*मुदित करने वाला* - **मन्द्रः**। मोदमानः - वे.। मदनीयः स्तुत्यः - सा.। आनन्दप्रदः - दया.।

*यागों में* - **दिविष्टिषु**। दिवः अन्वेषणेषु - वे.। यागेषु - सा.। दिविष्टिषु पक्षेष्ट्यादिसद्व्यवहारेषु - दया.। at sacrifices - W. at solemn rites - G.in our heavenward urges - Ar.

*पवित्रकर्त्ता* - **पोता**। पवित्रकर्ता - दया.। Hotri and Potri - Two of the sixteen priests are here named : the Hotri is the offerer of the oblation; the function of the Potri is doubtful. - W. the Priest of the purification - Ar.

**उत ग्ना अग्निर् अध्वर उतो गृहपतिर् दमें। उत ब्रह्मा नि षींदति।। ४।।**

उत। ग्नाः। अग्निः। अध्वरे। उतो इतिं। गृहऽपतिः। दमें। उत। ब्रह्मा। नि। सीदति।। ४।।

*और देवपत्नियां अग्नि (होता है) यज्ञ में,*

*और गृहपति (होता है वह) (यज्ञ-)गृह में।*

*और ब्रह्मा (बनकर) आसीन होता है।। ४।।*

यह संसार एक यज्ञशाला है। सत्यनियमों के अधीन इसमें जो चक्र चल रहा है, वह एक यज्ञ है। जगन्नायक वह परमेश्वर इस यज्ञ में न केवल गृहपति अर्थात् यजमान के रूप में है अपितु वह सब कार्यों को साधने वाली दिव्य शक्तियों के रूप में भी विद्यमान रहता है। वह इस यज्ञ में ब्रह्मा अर्थात् वाणी के स्वामी के रूप में भी विराजमान होता है।

टि. *देवपत्नियां* - **ग्नाः**। ग्नाः च भवति। देवपत्न्यो ग्ना उच्यन्ते। वे.। देवपत्नीर् यजति। यष्टा भवतीत्यर्थः। यद्वा। ग्ना गच्छन्नध्वर्युर् भवति। सा.। सुशिक्षिता वाचः - दया.। the officiating priest - W. fire - G. the Goddess-powers - Ar.

*गृहपति* - **गृहपतिः**। यजमानः - वे.। सा.। the master of the house - W. Ar.

*(यज्ञ-)गृह में* - **दमे**। यज्ञगृहे - वे.। सा.। in the sacrificial chamber - W.

*ब्रह्मा* - **ब्रह्मा**। ब्राह्मणाच्छंसी सन् - सा.। the Priest of the word - Ar.

**वेषि ह्यध्वरीयताम् उपवक्ता जनानाम्। हव्या च मानुषाणाम्।। ५।।**

वेषि। हि। अध्वरिऽयताम्। उपऽवक्ता। जनानाम्। हव्या। च। मानुषाणाम्।। ५।।

*गमन करता है तू, यज्ञ की कामना वालों के,*

*(यज्ञ में), उपदेशक (बनकर), मनुष्यों के।*

*हव्यों को भी (स्वीकार करता है तू), मनुष्यों के।। ५।।*

हे जगन्नायक जगदीश्वर! तू यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करने वाले मनुष्यों के कार्यों में उन्हें सन्मार्ग दिखाने के लिये उनका उपदेष्टा बनकर अवश्य पहुँचता है। तू त्याग और समर्पण की भावना वाले ऐसे उपासकों के समर्पणों को अवश्य स्वीकार करता है।

टि. *गमन करता है* - **वेषि**। गच्छसि - वे.। कामयसे - सा.। व्याप्नोषि - दया.। acceptest - W. thou comest - G. Ar.

*यज्ञ की कामना वालों के* - **अध्वरीयताम्**। अध्वरम् इच्छताम् - वे.। सा.। दया.। of devoutly worshipping - W. of folk who celebrate a sacrifice - G.

*उपदेशक* - **उपवक्ता**। अध्वर्युप्रभृतीनां सर्वेषां कर्मणाम् अनुज्ञार्थं मां प्रणयेत्यादिरूपस्य वाक्यस्य वक्ता सन् ब्रह्मा चासि। सर्वेषां कर्मणाम् अवैकल्यार्थम् उपद्रष्टा वा सदस्यो ऽसि। सा.। उपदेशकानाम् उपदेशकः - दया.। director (of the ceremonial) - W. the guide - G. the speaker - Ar.

**वेषीद् वस्य दूत्यं१ यस्य जुजोषो अध्वरम्। हव्यं मर्तस्य वोळ्हवे।। ६।।**

वेषि। इत्। ऊँ इति। अस्य। दूत्यम्। यस्य। जुजोषः। अध्वरम्। हव्यम्। मर्तस्य। वोळ्हवे।। ६।।

*प्राप्त होता है निश्चय से, इसके दूतकर्म को,*

*जिसके सेवन करता है तू, अहिंसनीय यज्ञ का।*

*हव्य को मरणधर्मा के, वहन करने के लिये।। ६।।*

हे जीवनपथ पर आगे ले जाने वाले परमात्मन्! तू जिस मरणधर्मा उपासक के नैवेद्य, समर्पण

आदि को स्वीकार करने के लिये उसके बाह्य और आभ्यन्तर यज्ञ का प्रीतिपूर्वक सेवन करता है, उसकी जीवनयात्रा को निर्विघ्न और निष्कण्टक बनाने के लिये दुष्ट और हिंसक जनों को सन्तप्त और दण्डित करके विनष्ट कर देता है।

टि. *सेवन करता है तू* - **जुजोषः**। भजसे - वे.। जुषी प्रीतिसेवनयोः। लेट्। बहुलं छन्दसीति शपः श्लुर् द्विर्भावश् च। लेटो ऽडाटाव् इत्यडागमः। सा.। thou lovest well - G.

*वहन करने के लिये* - **वोळ्हवे**। वोढुम् - वे.। वहेर् धातोस् तुमर्थे सेसेनस इति तवेन् प्रत्ययः। ञ्नित्यादिर् नित्यम् इत्याद्युदात्तत्वम्। सा.। to bear ( to heaven) - G.

**अ॒स्माकं॑ जोष्यध्व॒रम् अ॒स्माकं॑ य॒ज्ञम् अ॑ङ्गिरः। अ॒स्माकं॑ शृणुधी॒ हवं॑म्॥ ७॥**

अ॒स्माकं॑म्। जो॒षि॒। अ॒ध्व॒रम्। अ॒स्माकं॑म्। य॒ज्ञम्। अ॒ङ्गि॒रः॒। अ॒स्माकं॑म्। शृ॒णु॒धि॒। हवं॑म्॥ ७॥

*हमारे सेवन कर तू अध्वर का,*
*हमारे यज्ञ का (भी), हे अङ्गिरा।*
*हमारे सुन तू आह्वान को॥ ७॥*

हे प्रत्येक अङ्ग में रसरूप में विद्यमान जगदीश्वर! तू हमारे याग का प्रीतिपूर्वक सेवन कर। तू हमारे नैवेद्यों और समर्पणों को प्रीतिपूर्वक स्वीकार कर। तू सदा हमारी पुकार को सुन।

टि. *सेवन कर तू* - **जोषि**। जुषस्व। सेवस्व। सेवसे - दया.।

*सुन तू* - **शृणुधि**। शृणु। शृणोतेर् लोण्मध्यमैकवचने सिप्। तस्य हिर् आदेशे श्रुवः शृ चेति धातोः श्नुप्रत्ययः शृभावश् च। श्रुशृणुपृकृवृभ्यश् छन्दसीति हेर् धिर् आदेशः। सा.।

**परिं ते दू॒ळभो॒ रथो॒ ऽस्माँ अ॑श्नोतु वि॒श्वतः॑। येन॒ रक्ष॑सि दा॒शुषः॑॥ ८॥ ९॥**

परिं। ते॒। दुः॒ऽदभः॑। रथः॑। अ॒स्मान्। अ॒श्नो॒तु॒। वि॒श्वतः॑। येन॑। रक्ष॑सि। दा॒शुषः॑॥ ८॥

*सब ओर तेरा, हिंसित न होने वाला रथ,*
*हमको प्राप्त हो जाए, सब ओर से।*
*जिससे रक्षा करता है तू, हविदाताओं की॥ ८॥*

ब्रह्माण्ड अर्थात् जगत् और पिण्ड अर्थात् शरीर इन दोनों को ही रथ कहा गया है। जगत् परमात्मा का रथ है और शरीर आत्मा का। यदि हमारे चारों ओर का संसार सुखी, शान्त और समृद्ध न हो, तो हमारा जीवन सुखी नहीं हो सकता। इसी प्रकार यदि हमारा शरीर स्वस्थ और बलिष्ठ न हो, तो भी हम जीवन का आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। इसी लिये इस मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे परमेश्वर! हमारे चारों ओर का संसार और हमारा शरीररूपी रथ हिंसा आदि क्लेशों से रहित हो। हिंसा से रहित और सुख-शान्ति से भरपूर इन्हीं के द्वारा तू उपासकों और भक्त जनों की रक्षा करता है।

टि. *प्राप्त हो जाए* - **अश्नोतु**। व्याप्नोतु - वे.। अश्नोतेर् व्यत्ययेन परस्मैपदम् - सा.। प्राप्नोतु - दया.। come near to us - G. let reach us - Ar.

## सूक्त १०

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-३ पदपङ्क्तिः, ४,६,७ उष्णिक् पदपङ्क्तिर् वा, ५

महापदपङ्क्तिः त्रिपदाविराट्पङ्क्तिर् वा, ८ उष्णिक्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**अग्ने तम् अद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम्।**
**ऋध्यामा त ओहैः।। १।।**

अग्ने। तम्। अद्य। अश्वम्। न। स्तोमैः। क्रतुम्। न। भद्रम्। हृदिऽस्पृशम्। ऋध्याम। ते। ओहैः।। १।।

*हे अग्ने!, उस (तुझ) को आज,*
*(वाहक) अश्व की तरह, स्तोत्रों से,*
*यज्ञ की तरह कल्याणकर को,*
*हृदय को स्पर्श करने वाले को।*
*समृद्ध करते हैं हम, तेरे वहन करने वालों से।। १।।*

हे प्रकाशस्वरूप जगन्नायक परमेश्वर! जिस प्रकार अश्व सवार को वहन करता है, उसी प्रकार तू इस जगत् के समस्त कार्यों को वहन कर रहा है। तू यज्ञ आदि शुभ कर्मों की तरह सब का कल्याण करने वाला है। तू अपनी कृपा और दयालुता के कारण हमारे हृदयों को छूने वाला है। ऐसे तुझ दीनदयालु जगदीश्वर को हम आज अपनी ओर आकृष्ट करने वाले स्तोत्रों के द्वारा समृद्ध करते हैं, पूजते हैं, प्रसन्न करते हैं।

टि. *अश्व जैसे को* - अश्वम् न। अश्वम् इव - वे.। वोढारम् अश्वम् इव तथा हविषो वाहकम् - सा.। like a horse - G. as if the horse - Ar.

*यज्ञ की तरह कल्याणकर को* - क्रतुम् न भद्रम्। क्रतुं न कर्तारम् इव। उपकर्तारम् इत्यर्थः। तथा भद्रं भजनीयम्। सा.। प्रज्ञाम् इव कल्याणकरम् - दया.। as if a happy will - Ar.

*हृदय को स्पर्श करने वाले को* - हृदिस्पृशम्। हृदयङ्गमम्। अतिशयेन प्रियम् इत्यर्थः। सा.। हृदयस्य प्रियम् - दया.। affectionate - W. touching the heart - Ar.

*समृद्ध करते हैं हम* - ऋध्याम। समर्धयेम। त्वदीयं कल्याणं कर्म स्तुम इति। वे.। ऋध्याम समर्धयामः - सा.। समृध्याम - दया.। we celebrate thee - W. let us make thee affluent - Ar.

*वहन करने वालों से* - ओहैः। निर्गच्छद्भिः - वे.। इन्द्रादिप्रापकैः - सा.। ओहैः अर्दकैः कर्मभिः - दया.। (with thy praises) conveying (our wishes to the gods) - W. (with our lauds) as thy vehicles to bear thee - Ar.

**अधा ह्यग्ने क्रतोर् भद्रस्य दक्षस्य साधोः।**
**रथीर् ऋतस्य बृहतो बभूथ।। २।।**

अध। हि। अग्ने। क्रतोः। भद्रस्य। दक्षस्य। साधोः। रथीः। ऋतस्य। बृहतः। बभूथ।। २।।

*इसी लिये, हे अग्ने!,*
*प्रज्ञा का, कल्याणकर का,*
*बल का, कार्यसाधक का।*
*प्राप्त कराने वाला, सत्यनियम का,*
*महान् का, हो गया है तू।। २।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! चूँकि हम तुझे आकर्षक स्तोत्रों से प्रसन्न करते हैं, इसी लिये तू हमारे लिये कल्याण करने वाली बुद्धि का, कार्यों को साधने वाले बल का और लक्ष्य की ओर अग्रसर करने वाले महान् सत्यनियम का प्राप्त कराने वाला हो गया है।

टि. *प्रज्ञा का कल्याणकर का* - **क्रतोः भद्रस्य।** कर्मणः भजनीयस्य - वे.। क्रतोर् अस्मदीयस्य यागस्य। भद्रस्य भजनीयस्य। सा.। क्रतोः प्रज्ञायाः भद्रस्य कल्याणकरस्य - दया.। of lofty sacrifice - G. of happy will - Ar.

*बल का, कार्यसाधक का* - **दक्षस्य साधोः।** प्रवृद्धस्य साधयितुः - वे.। दक्षस्य प्रवृद्धस्य। साधोर् अभीष्टफलानां साधकस्य। सा.। of noble Strength - G. of an all accomplishing Discernment - Ar.

*प्राप्त कराने वाला* - **रथीः।** रथ इव हविषां वोढा - वे.। नेता - सा.। रथीः बहवो रथा विद्यन्ते यस्य सः - दय.। the conveyer - W. the Car-driver - G. the charioteer - Ar.

*हो गया है तू* - **बभूथ।** भवसि - वे.। छन्दसि लुङ्लङ्लिट इति भवतेर् वर्तमाने ऽर्थे लिटि सिपस् थल्। आर्धधातुकस्येड् वलादेर् इतीडागमे प्राप्ते बभूथाततन्थेति निपातनाद् इडभावः। सा.।

**एभिर् नो अर्कैर् भवा नो अर्वाङ् स्व१र् ण ज्योतिः।**
**अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः।। ३।।**

एभिः। नः। अर्कैः। भव। नः। अर्वाङ्। स्वः। न। ज्योतिः।
अग्ने। विश्वेभिः। सुऽमनाः। अनीकैः।। ३।।

*इनके द्वारा हमारे वेदमन्त्रों के,*
*हो जा तू हमारे अभिमुख,*
*सूर्य की तरह ज्योति(स्वरूप तू)।*
*हे अग्ने! सब के साथ,*
*प्रसन्न चित्त वाला, (तेज)समूहों के।। ३।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! तू सूर्य के समान ज्योतिस्वरूप है। हम तेरे उपासक अर्चना के साधनभूत इन वेदमन्त्रों के द्वारा तेरी स्तुति और गुणगान कर रहे हैं। तू इनसे प्रसन्न चित्त वाला होकर अपने सब तेजों के समूहों के साथ हमारे अभिमुख हो जा, हमारे हृदय में प्रकट होकर अपने तेजसमूहों का हमें साक्षात् दर्शन करा।

टि. *वेदमन्त्रों के द्वारा* - **अर्कैः।** मन्त्रैः - वे.। अर्चनीयैः स्तोत्रैः - सा.। सत्कर्तव्यैः - दया.। by hymns - W. through our praises - G. by these hymns of illumination - Ar.

*सूर्य की तरह ज्योति(स्वरूप)* - **स्वः न ज्योतिः।** आदित्याख्यम् इव ज्योतिः - वे.। ज्योतिः ज्योतिष्मान् स्वर् ण सूर्य इव - सा.। who like the sun art light - W. bright as the sun-light - G. thy light like the sun-world - Ar.

*तेज(समूहों) के साथ* - **अनीकैः।** तेजोभिः - वे.। सा.। with hosts (of radiance) - W. with all thy flame-powers - Ar.

*प्रसन्न चित्त वाला* - **सुमनाः**। शोभनमनस्कः - वे.। सा.। propitiated - W. well-disposed - G. right-minded - Ar.

**आभिष् टे अद्य गीर्भिर् गृणन्तो ऽग्ने दाशेम।**
**प्र ते दिवो न स्तनयन्ति शुष्माः।। ४।।**

आभिः। ते। अद्य। गीःऽभिः। गृणन्तः। अग्ने। दाशेम। प्र। ते। दिवः। न। स्तनयन्ति। शुष्माः।। ४।।

*इनके द्वारा तेरी आज, स्तुतियों के,*
*गुणगान करते हुए, हे अग्ने! हवि प्रदान करें हम।*
*प्रकर्ष से तेरे, मेघों की तरह, गर्जना करते हैं बल।। ४।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! हम तेरे उपासक स्तुतियों के द्वारा तेरा गुणगान करते हैं और तुझे अपनी आहुतियां और भाव समर्पित करते हैं। हे प्रभो! तू सर्वशक्तिमान् है। जिस प्रकार मेघों की गर्जना मनुष्यों के दिलों को दहला देती है, उसी प्रकार शत्रुओं को सुखा डालने वाले तेरे बलों की गर्जना आसुरी वृत्ति वाले दुष्ट जनों को सुनाई देती है और उससे उनके दिल दहल जाते हैं।

टि. *हवि प्रदान करें हम* - **दाशेम**। हवींषि ददाम - वे.। सा.। दद्याम - दया.।

*मेघों की तरह* - **दिवः न**। दिवः दीप्तस्य - वे.। सूर्यस्य रश्मय इव। यद्वा। मेघा इव। सा.। विद्युत इव - दया.। (bright) as those of the sun - W. as the voice of heaven - G. Ar.

*गर्जना करते हैं बल* - **स्तनयन्ति शुष्माः**। ( न प्र) स्तनयन्ति तव शोषका रश्मयः - वे.। शुष्माः शोधका ज्वालाः स्तनयन्ति शब्दायन्ते - सा.। बलपराक्रमयुक्ताः ध्वनयन्ति - दया.। thy blasts are roaring - G. thy strengths thunder forth - Ar.

**तव स्वादिष्ठाग्ने संदृष्टिर् इदा चिद् अह्न इदा चिद् अक्तोः।**
**श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके।। ५।।**

तव। स्वादिष्ठा। अग्ने। सम्ऽदृष्टिः। इदा। चित्। अह्नः। इदा। चित्। अक्तोः।
श्रिये। रुक्मः। न। रोचते। उपाके।। ५।।

*तेरी सब से प्यारी, हे अग्ने!, कृपादृष्टि,*
*इस समय भी दिन में, इस समय भी रात्रि में।*
*आश्रय के लिये, प्रकाशमान आभूषण की तरह, शोभायमान होती है निकट में।। ५।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तेरी कृपादृष्टि बहुत ही प्यारी है। चाहे दिन हो और चाहे रात हो, यह हर समय तेरे भक्त जनों को आश्रय देने के लिये, उनको शरण में लेने के लिये, उनके सान्निध्य में विराजती रहती है।

टि. *सब से प्यारी* - **स्वादिष्ठा**। स्वादुतमा - वे.। स्वादुतमा प्रियतमा - सा.। lovely - W. sweetest - G. Ar.

*कृपादृष्टि* - **संदृष्टिः**। सन्दृष्टिः, यया ज्वालया सम्पश्यन्ति - वे.। दीप्तिः - सा.। सम्यग् दृष्टिः प्रेक्षणम् - दया.। radiance - W. look - G. vision - Ar.

*इस समय भी* - **इदा चित्**। इदाचिच्छब्दः कदाचिच्छब्दपर्यायः - वे.। इदानीं च - सा.।

whether - W. just at this time - G. now - Ar.

*आश्रय देने के लिये* - **श्रिये**। पदार्थम् आश्रयितुम् - सा.। लक्ष्मीप्राप्तये - दया.। to give them beauty - W. for glory - G. for its beauty and splendour - Ar.

*आभूषण की तरह* - **रुक्मः न**। मणिः इव - वे.। अलङ्कार इव - सा.। रुक्मः रोचमानः सूर्यः, न इव - दया.। like an ornament - W. as gold - G. Ar.

**घृतं न पूतं तनूर् अरेपाः शुचि हिरण्यम्।**
**तत् ते रुक्मो न रोचत स्वधावः।। ६।।**

घृतम्। न। पूतम्। तनूः। अरेपाः। शुचि। हिरण्यम्।
तत्। ते। रुक्मः। न। रोचत। स्वधाऽवः।। ६।।

*घृत के समान पवित्र,*
*विस्तार (तेरा है), निर्लेप,*
*प्रकाशमान, हितकर और रमणीय।*
*वह तेरा (तेज), सुवर्णाभूषण (की तरह),*
*प्रदीप्त हो रहा है, हे आत्मधारक शक्ति वाले।। ६।।*

हे जगन्नायक सर्वप्रकाशक परमेश्वर! तेरा स्वरूप घृत के समान पवित्र, सब प्रकार के दोषों और पापों से मुक्त, स्वयं प्रकाशमान और अन्यों को प्रकाशित करने वाला, सब का हित करने वाला और सब के मनों को लुभाने वाला है। हे स्वयं को अपने ही सामर्थ्य से धारण करने वाले जगदीश्वर! वह तेरा तेज सुवर्ण के आभूषण की तरह सब ओर जगमगा रहा है।

टि. *विस्तार* - **तनूः**। शरीरम् - वे.। दया.। त्वदीया मूर्तिः - सा.। favour - W. body - G. Ar.

*निर्लेप* - **अरेपाः**। निर्मलम् - वे.। पापरहिता - सा.। पापाचरणरहिताः - दया.। spotless - G. free from evil - Ar.

*हितकर और रमणीय* - **हिरण्यम्**। हिरण्यसदृशम् - वे.। हितरमणीयम् - सा.। ज्योतिर् इव सुवर्णम् - दया.। golden lustre - W. brilliant as gold - G. it is pure gold - Ar.

*हे आत्मधारक शक्ति वाले* - **स्वधावः**। हे हविष्मन् - वे.। स्वधाशब्दो ऽन्नवाची। अन्नवन् अग्ने। सा.। स्वधा बह्वन्नं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.। Giver of sustenance - W. O Self-dependent - G. such is thy self-law - Ar.

**कृतं चिद् धि ष्मा सनेमि द्वेषो ऽग्ने इनोषि मर्तात्।**
**इत्था यजमानाद् ऋतावः।। ७।।**

कृतम्। चित्। हि। स्म। सनेमि। द्वेषः। अग्ने। इनोषि। मर्तात्।
इत्था। यजमानात्। ऋतऽवः।। ७।।

*किये हुए को भी निश्चय से,*
*प्राचीन काल से प्राप्त द्वेषभाव को, हे अग्ने!,*
*चला देता है तू, मरणधर्मा से।*

*सचमुच यजन करने वाले से, हे ऋत के स्वामी।। ७।।*

हे सत्यनियम के स्वामी अग्रणी परमेश्वर! तू जन्म-जन्मान्तरों से पीछा कर रहे राग, द्वेष आदि दुर्भावों, कुसंस्कारों और कुवासनाओं को यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करने वाले और स्वयं को तेरे चरणों में समर्पित कर देने वाले मनुष्य से सचमुच ही अपनी कृपादृष्टि के द्वारा दूर कर देता है।

टि. *प्राचीन काल से प्राप्त* - **सनेमि।** पुराणम् - वे.। चिरन्तनम्। सनेमीति पुराणनाम सनेमि पूर्व्यम् इति पुराणनामसु पाठात्। सा.। सनातनम् - दया.। of old - W. the lasting - Ar.

*द्वेषभाव को* - **द्वेषः।** पापम् अपि शत्रून् इव द्वेष्टॄन् - वे.। पापम् - सा.। द्वेष्टुः - दया.। whatever sin has been committed - W. all hate and mischief - G. hostility - Ar.

*चला देता है तू* - **इनोषि।** प्रेरयसि - वे.। प्रेरयसि। नाशयसीत्यर्थः। सा.। व्याप्नोषि - दया.। thou removest - W. thou turnest - G. thou drivest away - Ar.

*सचमुच* - **इत्था।** सत्यम् एव - वे.। सत्यनामैतत् अद्धेत्थेति तन्नामसु पाठात् - सा.। अनेन प्रकारेण - दया.। perfectly - Ar.

*हे ऋत के स्वामी* - **ऋतावः।** हे अन्नवन् - वे.। हे सत्यवन् - सा.। ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिंस् तत्सम्बुद्धौ - दया.। truthful - W. Holy One - G. who possessest the Truth - Ar.

**शि॒वा नः॑ स॒ख्या सन्तु॑ भ्रा॒त्राग्ने॑ दे॒वेषु॑ यु॒ष्मे।**
**सा नो॒ नाभि॒ः सद॑ने॒ सस्मि॒न्नूध॑न्।। ८।। १०।। १।।**

शि॒वा। नः॒। स॒ख्या। सन्तु॑। भ्रा॒त्रा। अग्ने॑। दे॒वेषु॑। यु॒ष्मे इति॑।
सा। नः॒। नाभि॑ः। सद॑ने। सस्मि॑न्। ऊध॑न्।। ८।।

*कल्याणकारी हमारी मित्रताएं होवें,*
*बन्धुत्व (भी), हे अग्ने!, देवों में तुममें।*
*वह (मैत्री) हमारी, केन्द्र (बने) जगत् में, समस्त समृद्धि के निमित्त।। ८।।*

हे सब का मार्गदर्शन करने वाले परमेश्वर! तेरे साथ हमारी जो मित्रताएं हैं तथा तेरे साथ और अन्य देवों, दैवी गुणों वाले विद्वज्जनों के साथ हमारा जो बन्धुत्व है, भाईचारा है, वे सब हमारा कल्याण करने वाले होवें। वह मित्रता और भाईचारे का संयोग इस जगत् में हमारी समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली समृद्धियों के निमित्त हमें परस्पर बाँधने वाला केन्द्रस्थान बन जाए।

टि. *मित्रताएं* - **सख्या।** सख्यानि - वे.। सख्यानि सखित्वानि - सा.।

*बन्धुत्व भी* - **भ्रात्रा।** भ्रात्रा त्वया हेतुना - वे.। भ्रात्राणि भ्रातृसम्बन्धीनि कर्माणि - सा.।

*देवों में तुममें* - **देवेषु युष्मे।** युष्मासु देवेषु - वे.। द्योतमानेषु युष्मासु - सा.।

*केन्द्र (बने)* - **नाभिः।** नहनम् - वे.। बन्धनम् - सा.। security - W. bond - G. centre - Ar.

*जगत् में* - **सदने** - उत्पत्तिस्थाने - वे.। देवानां स्थाने - सा.। by this place - G.

*समस्त समृद्धि के निमित्त* - **सस्मिन् ऊधन्।** सर्वस्मिन् ऊधनि - वे.। सर्वस्मिन् यज्ञे - सा.। सस्मिन् सर्वस्मिन्। अत्र छान्दसो वर्णलोपो वेति र्वलोपः, ऊधन् आढ्ये धनाढ्ये - दया.। in every sacrifice - W. where is that udder of the Cow of Light - Ar.

## सूक्त ११

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। षड्‌चं सूक्तम्।

**भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकम् उपाक आ रोचते सूर्यस्य।**
**रुशद् दृशे ददृशे नक्तया चिद् अरूक्षितं दृश आ रूपे अन्नम्।। १।।**

भद्रम्। ते। अग्ने। सहसिन्। अनीकम्। उपाके। आ। रोचते। सूर्यस्य।
रुशत्। दृशे। ददृशे। नक्तऽया। चित्। अरूक्षितम्। दृशे। आ। रूपे। अन्नम्।। १।।

*कल्याणकर तेरा, हे अग्ने!, हे बलवान्!, स्वरूप,*
*सान्निध्य में सब ओर, सुशोभित हो रहा है सूर्य के।*
*प्रकाशमान दर्शनीय दिखाई देता है, रात्रि के समय भी,*
*स्निग्ध, देखने के योग्य, समा जाता है रूप में तेरे हव्य।। १।।*

हे सर्वशक्तिमान् अग्रणी परमेश्वर! तेरा कल्याणकारी स्वरूप दिन के समय प्रकाश के रूप में सूर्य के सब ओर प्रकाशित हो रहा है। अत्यन्त प्रकाशमान और दर्शनीय तेरा यह स्वरूप रात्रि के समय भी चन्द्रमा और तारागण के प्रकाश के रूप में सब को दिखाई देता है। वस्तुतः ये सब प्रकाशपिण्ड तेरे ही प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं। तेरे प्रकाश के विना तो सूर्य, चन्द्रमा, तारे, अग्नि, विद्युत् आदि कुछ भी प्रकाशित नहीं हो सकता। 'न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम्, नेमे विद्युतो भान्ति कुतो ऽयम् अग्निः। तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम्। तस्य भासा सर्वम् इदं विभाति।।' मुण्ड.उप. २.२.१०।। और ये जो सोम, आज्य आदि हव्य हम याजक लोग तुझे समर्पित करते हैं, ये सब सूक्ष्म होकर तेरे इस प्रकाशमान स्वरूप में ही समा जाते हैं।

टि. स्वरूप - **अनीकम्।** तेजः - सा.। सैन्यम् - दया.। radiance - W. majesty - G. flame-power - Ar.

*दर्शनीय* - **दृशे।** दर्शनाय - वे.। दर्शनीयम् - सा.। द्रष्टुम् - दया.। to vision - Ar.

*रात्रि के समय* - **नक्तया।** रात्र्या - वे.। दया.। रात्राव् अपि - सा.।

*स्निग्ध* - **अरूक्षितम्।** पक्वम् - वे.। स्निग्धम् - सा.। रूक्षतारहितम् - दया.। bland and pleasing - W. fair - G. unarid - Ar.

**वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां खं वेपसा तुविजात स्तवानः।**
**विश्वेभिर् यद् वावनः शुक्र देवैस् तन् नो रास्व सुमहो भूरि मन्म।। २।।**

वि। साहि। अग्ने। गृणते। मनीषाम्। खम्। वेपसा। तुविऽजात। स्तवानः।
विश्वेभिः। यत्। ववनः। शुक्र। देवैः। तत्। नः। रास्व। सुऽमहः। भूरि। मन्म।। २

*खोल दे, हे अग्ने!, गाने वाले के लिये स्तुति को, स्वर्गद्वार को,*
*कर्म के साथ, हे बहुत रूपों में प्रकट!, स्तुति किया जाता हुआ।*
*सब के द्वारा जो याचना किया जाता है, हे प्रकाशमान!, देवों के द्वारा,*
*उसको हमें प्रदान कर तू, हे शोभन महिमाओं वाले!, प्रभूत ज्ञान को।। २।।*

हे सब का मार्गदर्शन करने वाले और हे जगत् के विविध पदार्थों में अनेक रूपों में प्रकट होने

वाले परमेश्वर! तू यज्ञ आदि शुभ कर्मों के साथ स्तुति का गान करने वाले अपने उपासक के द्वारा स्तुति किया जाता हुआ उसके लिये सुख और शान्ति के द्वारों को खोल दे। हे प्रकाशमान!, हे उत्तम महिमाओं वाले जगदीश्वर! सब देव जिसकी याचना करते हैं, वही उत्तम विचार, उत्तम बुद्धि और ज्ञान तू हमें अत्यधिक मात्रा में प्रदान कर।

टि. *खोल दे* – **वि साहि।** वि षहस्व – वे.। विष्य। विमुञ्चेत्यर्थः। षो ऽन्तकर्मणीत्यस्माद् धातोर् लोण्मध्यमपुरुषैकवचनम्। सा.। विशेषेण कर्मसमाप्तिं कुरु – दया.। set open - W. disclose - G.

*स्वर्गद्वार को* – **खम्।** छिद्रम् – वे.। यजमानप्राप्यस्य पुण्यलोकस्य द्वारम् – सा.। खम् आकाशम् – दया.। heaven - W. Ar. the well - G.

*कर्म के साथ* – **वेपसा।** वेपकेन शत्रूणां बलेन – वे.। यज्ञादिकर्मणा। वेप इति कर्मनाम वेषो वेपो विष्ट्वीति कर्मनामसु पाठात् (निघ. २.१)। सा.। राज्यपालनादिकर्मणा – दया.। with fervour - G. with thy quivering lustre - Ar.

*हे बहुत रूपों में प्रकट* – **तुविजात।** हे बहुजनन – वे.। मथनेनारणिद्वारा यज्ञादिकर्मसु बहुजन्मन् – सा.। बहुषु प्रसिद्ध – दया.। engendered repeatedly - W. Ar. Strong God - G.

*याचना किया जाता है तू* – **ववनः।** त्वं भजसे – वे.। यजमानेभ्यः प्रयच्छेः। वनतेर् लेट्। सा.। सम्भज – दया.। hast given - W. thou lovest - G.

*हे शोभन महिमाओं वाले* – **सुमहः।** हे शोभनदान – वे.। शोभनतेजस्क – सा.। सुमहः अतिमहत् – दया.। O Mighty - G. O glorious Flame - Ar.

*ज्ञान को* – **मन्म।** मननीयं धनम् – सा.। विज्ञानम् – दया.। hymn - G. thought - Ar.

**त्वद् अग्ने काव्या त्वन् मनीषास् त्वद् उक्था जायन्ते राध्यानि।**
**त्वद् एति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय।। ३।।**

त्वत्। अग्ने। काव्या। त्वत्। मनीषाः। त्वत्। उक्था। जायन्ते। राध्यानि।
त्वत्। एति। द्रविणम्। वीरऽपेशाः। इत्थाऽधिये। दाशुषे। मर्त्याय।। ३।।

*तुझसे, हे अग्ने!, कविकृत ज्ञान, तुझसे सद्बुद्धियां,*
*तुझसे स्तुतिवचन, प्रादुर्भूत होते हैं, समृद्धिशाली।*
*तुझसे प्राप्त होता है धन, वीर सन्तति के रूप वाला,*
*सत्य कर्म वाले, आहुति देने वाले, मनुष्य के लिये।। ३।।*

हे सब को सन्मार्ग पर ले चलने वाले परमेश्वर! कवि जन जो ज्ञान की बातें कहते हैं, वे सब तुझसे ही प्रादुर्भूत हैं। सद्बुद्धियां और सद्विचार भी तुझसे ही उत्पन्न होते हैं। समृद्धियों को देने वाले अथवा आराधना के योग्य स्तुतिवचन भी तुझसे ही उत्पन्न होते हैं। सत्य कर्मों को करने वाला, नित्य देवों को हवि प्रदान करने वाला मनुष्य तुझसे ही वीर सन्तति के रूप में श्रेष्ठ धनों को प्राप्त करता है।

टि. *कविकृत ज्ञान* – **काव्या।** कविकर्माणि – वे.। काव्यानि हविर्वहनदेवतानयनादीनि अग्नि-सम्बन्धीनि कर्माण्याध्वर्यवाणि कर्माणि वा – सा.। poetic wisdom - G. seer-wisdoms - Ar.

*सद्बुद्धियां* – **मनीषाः।** स्तुतयः – वे.। स्तुतिरूपा वाचः – सा.। thoughts - G.

*समृद्धिशाली* - **राध्यानि**। सम्भावनीयानि - वे.। राद्धुं योग्यानि - सा.। संसाधनीयानि - दया.। that prosper - G. that achieve - Ar.

*वीर सन्तति के रूप वाला* - **वीरपेशाः**। वीररूपं वीरपरिवृतम् - वे.। पेश इति रूपनाम। इदं विक्रान्तं रूपम्। अत्र लिङ्गव्यत्ययेन वीरपेशा इति रूपम्। सा.। vigorous frame - W. with heroes to adorn it - G. that take the hero's form - Ar.

*सत्य कर्म वाले के लिये* - **इत्थाधिये**। सत्यकर्मणे - वे.। धीर् इति कर्मनाम। इत्थेति सत्यनामसु पाठात् सत्यकर्मणे। सा.। अनेन प्रकारेण धीर् यस्य तस्मै - दया.। to the true-hearted - G. who has the true thought - Ar.

**त्वद् वाजी वाजंभरो विहाया अभिष्टिकृज् जायते सत्यशुष्मः।**
**त्वद् रयिर् देवजूतो मयोभुस् त्वद् आशुर् जूजुवाँ अग्ने अर्वा।। ४।।**

त्वत्। वाजी। वाजम्ऽभरः। विऽहायाः। अभिष्टिऽकृत्। जायते। सत्यऽशुष्मः।
त्वत्। रयिः। देवऽजूतः। मयःऽभुः। त्वत्। आशुः। जूजुऽवान्। अग्ने। अर्वा।। ४।।

*तुझसे बलवान्, ऐश्वर्यों को लाने वाला, महान् (पुरुष),*
*यज्ञों का सम्पादक, उत्पन्न होता है, सत्य के बल वाला।*
*तुझसे धन, देवों से अनुमोदित, सुखों को उत्पन्न करने वाला,*
*तुझसे आशुगति, फुर्तीला, हे अग्ने!, (उत्पन्न होता है) अश्व।। ४।।*

हे सर्वनायक जगदीश्वर! इस जगत् में सब कुछ आप से ही उत्पन्न होता है। सज्जनों का त्राण करने वाला और दुष्टों के विनाश में समर्थ महान् बलशाली, सब प्रकार के ऐश्वर्यों, सुखों और समृद्धियों को लाने वाला, यज्ञ आदि शुभ कर्मों को सम्पन्न करने वाला, सत्य के बल वाला कोई भी महापुरुष तेरी प्रेरणा से ही जगत् में उत्पन्न होता है। सब प्रकार के सुखों को उत्पन्न करने वाला, देवों से अनुमोदित और प्रशंसित पवित्र धन भी तेरी कृपा से ही प्राप्त होता है। सब कर्मों को शीघ्रता के साथ सम्पन्न करने वाली आशुगति प्राणशक्तियां भी तुझसे ही प्राप्त होती हैं।

टि. *ऐश्वर्यों को लाने वाला* - **वाजंभरः**। अन्नस्याहर्ता - वे.। हविर्लक्षणस्यान्नस्य वाहकः। वाजंभरः अग्नेर वाजंभर इत्येषा वैदिकी संज्ञा। संज्ञायां भृवृजीति वाजशब्दे कर्मण्युपपदे खच्प्रत्ययः। अरुर्द्विषदजन्तस्येति मुमागमः। चित इत्यन्तोदात्तत्वम्। सा.। who wins the booty - G.

*महान् पुरुष* - **विहायाः**। महान् - वे.। सा.। the vast - W. Ar. mighty - G.

*यज्ञों का सम्पादक* - **अभिष्टिकृत्**। शत्रूणाम् अभ्येषणस्य कर्ता - वे.। यज्ञकृद् अभ्येषणकृद् वा - सा.। यो ऽभिष्टिं करोति सः - दया.। the granter of what is desired - W.

*सत्य के बल वाला* - **सत्यशुष्मः**। सत्यबलः - वे.। सत्यबलः पुत्रः - सा.।

*देवों से अनुमोदित* - **देवजूतः**। देवैः प्रेरितम् - वे.। सा.। approved of by the gods - W. sent by the gods - G. Ar.

*सुखों को उत्पन्न करने वाला* - **मयोभुः**। सुखस्य भावयितृ - वे.। सुखप्रदः - सा.।

*फुर्तीला* - **जूजुवान्**। गमनपरः - वे.। वेगेन गच्छन् - सा.। भृशं गमयिता - दया.। unarrested

- W. impetuous - G. speeding - Ar.

**त्वाम् अग्ने प्रथमं देवयन्तो देवं मर्ता अमृत मन्द्रजिह्वम्।**
**द्वेषोयुतम् आ विवासन्ति धीभिर् दमूनसं गृहपतिम् अमूरम्।। ५।।**

त्वाम्। अग्ने। प्रथमम्। देवऽयन्तः। देवम्। मर्ताः। अमृत। मन्द्रऽजिह्वम्।
द्वेषःऽयुतम्। आ। विवासन्ति। धीभिः। दमूनसम्। गृहऽपतिम्। अमूरम्।। ५।।

*तुझको, हे अग्ने!, सर्वप्रथम को, देवों के पूजक,*
*देव को, मनुष्य, हे अमृत!, आनन्दप्रद वाणी वाले को।*
*दुष्ट भावों से रहित को, सर्वथा पूजते हैं, स्तुतियों से,*
*दुष्टदमन के इच्छुक को, गृहस्वामी को, ज्ञानी को।। ५।।*

हे अमरणधर्मा सर्वनायक परमेश्वर! तू इस जगत् में सब से पूर्व विद्यमान है। तू स्वयं प्रकाश-स्वरूप और दूसरों को प्रकाशित करने वाला है। तू वेदरूपी आनन्दप्रद वाणी वाला है। तू स्वयं दुष्ट भावों से रहित है और द्वेषयुक्त भावनाओं वालों का विनाशक है। तू दुष्टों के दमन की इच्छा वाला है। तू इस जगत् रूपी आवास का स्वामी है और सर्वज्ञ है। देवपूजक मरणधर्मा आस्तिक जन अपनी स्तुतियों से तुझ परम उपास्य की सेवा और पूजा करते हैं।

टि. *सर्वप्रथम को* - **प्रथमम्।** प्रथमम् एव - वे.। देवानाम् आद्यम् - सा.। आदिमम् - दया.। the first deity - W. first in rank - G. first and chief of the godheads - Ar.

*आनन्दप्रद वाणी वाले को* - **मन्द्रजिह्वम्।** मोदनवाचम् -वे.। देवानां मादयित्री जिह्वा यस्य तम् - सा.। मन्द्रा आनन्दजनिका जिह्वा वाणी यस्य - दया.। whose tongue exhilarates - W.

*दुष्ट भावों से रहित को* - **द्वेषोयुतम्।** राक्षसानां पृथक्कर्तारम् - वे। द्वेषसां पापानां पृथक्कर्तारम् - सा.। द्वेषादिभी रहितम् - दया.। the dissipator of sin - W. who removest hatred - G.

*दुष्टदमन के इच्छुक को* - **दमूनसम्।** दममनसम् - वे.। रक्षसां दमनकरेण मनसोपेतम्। दमूनःशब्दस्य कथम् अयम् अर्थ इति दमूना दममना वा दानमना वा दान्तमना वा। अपि वा दम इति गृहनाम। तन्मनाः स्याद् इति यास्केनोक्तत्वाद् इति। दमु उपशमने। दमेर् ऊनसिर् इत्यौणादिक ऊनसि-प्रत्ययः। सा.। दमनशीलम् - दया.। the humiliator (of the demons) - W. Friend of the Home - G. the one domiciled within - Ar.

*ज्ञानी को* - **अमूरम्।** अमूढम् - वे.। प्रगल्भम् इत्यर्थः। सा.। अमूरम् मूढतादिदोषरहितं विद्वांसम् - दया.। unperplexed - W. unerring - G. untouched by ignorance - Ar.

**आरे अस्मद् अमतिम् आरे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन् निपासि।**
**दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति।। ६।। ११।।**

आरे। अस्मत्। अमतिम्। आरे। अंहः। आरे। विश्वाम्। दुःऽमतिम्। यत्। निऽपासि।
दोषा। शिवः। सहसः। सूनो इति। अग्ने। यम्। देवः। आ। चित्। सचसे। स्वस्ति।। ६।।

*दूर हमसे अज्ञान को (कर दे), दूर पाप को (कर दे हमसे),*
*दूर समस्त दुर्बुद्धि को (कर दे), चूँकि नियम से पालता है तू।*

*रात्रि में (अज्ञानान्धकार की), कल्याणकर, हे बल से उत्पन्न अग्ने!,*
*जिसे प्रकाशमान, सब ओर मिल जाता है तू, कल्याण (हो जाता है उसका)।। ६।।*

हे अपने ही बल और सामर्थ्य से प्रादुर्भूत होने वाले अग्रणी परमेश्वर! चूँकि तू अपने नियमों के अनुसार सब का पालन और रक्षण करता है, इसलिये अज्ञान को हमसे दूर कर दीजिये, पाप को हमसे दूर कर दीजिये और दुर्बुद्धि को हम से दूर कर दीजिये। इस अज्ञान अन्धकार की रात्रि में ज्ञानप्रकाश से युक्त मङ्गल करने वाला तू जिससे मिल जाता है, जिसे तू अपना लेता है, उसका कल्याण हो जाता है।

टि. *अज्ञान को* - **अमतिम्**। मतिविपर्यासम् - वे.। पापरूपाम् अशनेच्छाम्। अश्नाया वै पाप्मा मतिः। (ऐ.ब्रा. २.२)। सा.। iniquity - W. unconsciousness - Ar.

*दुर्बुद्धि को* - **दुर्मतिम्**। दुर्ज्ञानम् - वे.। दुर्मनस्त्वम् - सा.। दुष्टां प्रज्ञाम् - दया.। evil thoughts - W. ill-will - G. evil mind - Ar.

*चूँकि नियम से पालता है तू* - **यत् निपासि**। यस्मात् त्वं नियमेन रक्षसि - वे.। यस्मात् कारणाद् यजमानान् नितरां पालयसि - सा.। when thou protectest - G.

*हे बल से उत्पन्न* - **सहसः सूनो**। बलस्य पुत्र। मथ्यमानो ऽग्निर् मथनकारिणां हि बलेन जायत इत्यग्नेर् बलपुत्रत्वम्। सा.।

*मिल जाता है तू* - **सचसे**। सेवसे - वे.। सा.। सम्बध्नासि - दया.। attendest - G. to whom thou cleavest - Ar.

## सूक्त १२

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। षड्ऋचं सूक्तम्।

**यस् त्वाम् अग्न इनधते यतस्रुक् त्रिस् ते अन्नं कृणवत् सस्मिन्नहन्।**
**स सु द्युम्नैर् अभ्यस्तु प्रसक्षत् तव क्रत्वा जातवेदश् चिकित्वान्।। १।।**

यः। त्वाम्। अग्ने। इनधते। यतऽस्रुक्। त्रिः। ते। अन्नम्। कृणवत्। सस्मिन्। अहन्।
सः। सु। द्युम्नैः। अभि। अस्तु। प्रऽसक्षत्। तव। क्रत्वा। जातऽवेदः। चिकित्वान्।। १।।

*जो तुझको, हे अग्ने!, प्रदीप्त करता है, उद्यत स्रुक् वाला,*
*तीन बार तुझे हवि रूपी अन्न प्रदान करता है, समान दिन में।*
*वह सुष्ठु तेजों से अभिभूत कर लेता है (शत्रु को), विजित करता हुआ,*
*तेरे प्रज्ञान से, हे उत्पन्न पदार्थों के ज्ञाता!, ज्ञान को प्राप्त करता हुआ।। १।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले प्रभो! जो मनुष्य यज्ञ आदि पूजा के साधनों से सुसज्जित होकर तुझे अपने अन्दर प्रदीप्त कर लेता है, जो तेरी ज्योति को अपने अन्दर जगा लेता है और प्रतिदिन तीन बार स्वयं को आहुति बनाकर तुझे समर्पित कर देता है, हे सभी पदार्थ विद्याओं को जानने वाले जगदीश्वर! वह उपासक तेरे प्रज्ञान से ज्ञानी बनकर चोर, डाकू आदि बाह्य तथा काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को अपने तेजों के द्वारा विजित करके उन्हें भली प्रकार वश में कर

लेता है।

टि. *प्रदीप्त करता है* - **इनधते**। इन्धे - वे.। दीप्तियुक्तं कुर्यात् - सा.। इनधते ईश्वरेण सङ्गमयेत् - दया.। kindles thee - W. G. Ar.

*हवि रूपी अन्न प्रदान करता है* - **अन्नम् कृणवत्**। हविः कृणोति - वे.। हविर्लक्षणम् अन्नं कुर्यात् - सा.। offers thee food - G. creates food for thee - Ar.

*समान दिन में* - **सस्मिन् अहन्**। सर्वस्मिन् अहनि। र्वयोश् छान्दसो लोपः।। समाने अहनि - वे.। सर्वस्मिन् अहनि - सा.। every day - W. this day - G. in the day - Ar.

*तेजों से* - **द्युम्नैः**। अन्नैः - वे.। धनैर् यशोभिर् वा - सा.। दया.। through thy splendours - G. with thy illuminations - Ar.

*विजित करता हुआ* - **प्रसक्षत्**। प्रकर्षेण त्वां पूजयन् - वे.। प्रसहमानं त्वदीयं तेजः - सा.। triumphant - G.

**इ॒ध्मं यस् ते॑ ज॒भर॑च् छश्रमा॒णो म॒हो अ॑ग्ने॒ अनी॑क॒म् आ स॑प॒र्यन्।**
**स इ॑धा॒नः प्रति॑ दो॒षाम् उ॒षास॑ं पुष्य॑न् र॒यिं स॑चते॒ घ्नन्न॒मित्रा॑न्।। २।।**

इ॒ध्मम्। यः। ते॒। ज॒भर॑त्। श॒श्र॒मा॒णः। म॒हः। अ॒ग्ने॒। अनी॑कम्। आ। स॒प॒र्यन्।
सः। इ॒धा॒नः। प्रति॑। दो॒षाम्। उ॒षस॑म्। पुष्य॑न्। र॒यिम्। स॒च॒ते॒। घ्नन्। अ॒मित्रा॑न्।। २।।

*ईंधन को जो तेरे लिये लाता है, अतिशय परिश्रम करता हुआ,*
*(तुझ) महान् के, हे अग्ने!, तेज की सर्वतः परिचर्या करता हुआ।*
*वह प्रदीप्त करता हुआ (तुझे), प्रत्येक रात्रि में, प्रत्येक उषाकाल में,*
*पुष्ट होता हुआ, धन प्राप्त करता है, हिंसित करता हुआ शत्रुओं को।। २।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! जो साधक अत्यधिक परिश्रम करके तुझे अपने अन्दर प्रदीप्त करने के साधनों को जुटाता है, और सर्वत्र तुझ महान् के तेज का ही सेवन, चिन्तन और ध्यान करता है, वह प्रत्येक रात्रि और प्रत्येक दिन में तुझे अपने अन्दर प्रदीप्त करता हुआ और अपनी शक्तियों को पुष्ट करता हुआ चोर, डाकू आदि अपनी बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर अमित्र शक्तियों को नष्ट करता हुआ लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के धनों को प्राप्त करता है।

टि. *लाता है* - **जभरत्**। सम्भरति - वे.। आहरेत्। हृञ् हरणे। लिङर्थे लेट्। सा.। brings - G.

*अतिशय परिश्रम करता हुआ* - **शश्रमाणः**। श्राम्यन् - वे.। सा.। भृशं श्रमं कुर्वन् - दया.। labouring diligently - W. with toil and trouble - G.

*(तुझ) महान् के तेज की* - **महः अनीकम्**। महतस् तव रश्मीनाम् अनीकम् - वे.। महतस् तवानीकं तेजः - सा.। thy great glory - W. the majesty of mighty Agni - G. the flame-force of thy greatness - Ar.

*सर्वतः परिचर्या करता हुआ* - **आ सपर्यन्**। परिचरन् - वे.। आकारश् चार्थे। सपर्यन् परिचरन् - सा.। समन्तात् सेवमानः - दया.। serving - Ar.

**अ॒ग्निर् ईशे बृह॒तः क्ष॒त्रिय॑स्या॒ग्निर् वाज॑स्य प॒रम॑स्य रा॒यः।**

**दधा॑ति॒ रत्नं॑ विध॒ते यवि॑ष्ठो॒ व्या॑नु॒षङ् मर्त्या॑य स्व॒धावा॑न्॥ ३॥**

अ॒ग्निः। ईशे॑। बृ॒ह॒तः। क्ष॒त्रिय॑स्य। अ॒ग्निः। वाज॑स्य। प॒रमस्य॑। रा॒यः।

दधा॑ति। रत्न॑म्। वि॒ध॒ते। यवि॑ष्ठः। वि। आ॒नु॒षक्। मर्त्या॑य। स्व॒धाऽवा॑न्॥ ३॥

*अग्नि शासन करता है, महान् पर, हिंसा से त्राण करने वाले बल पर,*

*अग्नि ऐश्वर्यों पर (शासन करता है), (शासन करता है) परम धन पर।*

*प्रदान करता है रमणीय धन को, पूजक के लिये, युवतम,*

*श्रद्धानुसार, मरणधर्मा के लिये, स्वयं को स्वयं धारण करने वाला॥ ३॥*

सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला वह परमेश्वर दीनों और असहायों की हिंसा से रक्षा करने वाले बल पर शासन करता है, हिंसा आदि से रक्षा करने वाले बल का स्वामी है। वह सब ऐश्वर्यों का स्वामी है। वह परम आत्मिक धन का स्वामी है। वह स्वावलम्बी, सदा युवावस्था में एकरस रहने वाला जगदीश्वर, अपनी पूजा करने वाले मनुष्य को उसकी श्रद्धा और आस्था के अनुसार अनवरत रमणीय धन प्रदान करता है। वह सदा उसका अभ्युदय करता हुआ उसे निःश्रेयस की ओर अग्रसर करता है।

टि. *शासन करता है* - **ईशे।** ईश्वरो भवति - वे.। वर्तमानार्थे लिट् - सा.। ईष्टे ऐश्वर्यं करोति - दया.। is the possessor - W. is Master - G. Ar.

*हिंसा से त्राण करने वाले बल पर* - **क्षत्रियस्य।** क्षतात् त्राणसमर्थस्य बलस्य - वे.। बलस्य - सा.। क्षात्रधर्मयुक्तस्य - दया.। of great strength - W. Ar. of sublime dominion - G.

*पूजक के लिये* - **विधते।** परिचरते - वे.। विधतिः परिचरणकर्मेति यास्कः। सा.। विधानं कुर्वते - दया.। who adores him - G. for (the mortal) who worships him - Ar.

*श्रद्धानुसार* - **आनुषक्।** अनुषक्तम् - वे.। सा.। अनुकूलः - दया.। according to his devotion - W. straightway - G. uninterruptedly - Ar.

*स्वयं को स्वयं धारण करने वाला* - **स्वधावान्।** अन्नवान् - वे.। तेजस्वी वा - सा.। abounding in sustenance - W. the self-reliant - G. faithful to his self-law - Ar.

**यच् चि॒द् धि ते॑ पुरुष॒त्रा य॑वि॒ष्ठाचि॑त्तिभिश् चकृ॒मा कच् चि॒द् आगः॑।**
**कृ॒धी ष्व१॒॑स्माँ अदि॑ते॒र् अना॑गा॒न् व्येनां॑सि शिश्रथो॒ विष्व॑ग् अग्ने॥ ४॥**

यत्। चि॒त्। हि। ते॒। पु॒रु॒ष॒ऽत्रा। य॒वि॒ष्ठ॒। अचि॑त्तिऽभिः। च॒कृ॒म। कत्। चि॒त्। आगः॑।

कृ॒धि। सु। अ॒स्मान्। अदि॑तेः। अना॑गान्। वि। एनां॑सि। शि॒श्र॒थः। विष्व॑क्। अ॒ग्ने॒॥ ४॥

*जो भी निश्चय से तेरे पुरुषों में, हे युवतम!,*

*अज्ञानों के वश होकर, किया है हमने कभी अपराध।*

*बना दे तू सुष्ठु हमको, अदिति के (सम्मुख) निरपराध,*

*दूर पापों को शिथिल कर दे, सर्वथा, हे अग्ने॥ ४॥*

हे सन्मार्ग पर ले चलने वाले परमेश्वर! हे सदा यौवनावस्था में वर्तमान प्रभो! यदि हमने कभी अनजाने में भी तेरे प्रजा जनों के प्रति कोई अपराध किया हो, तो तू हमें अदिति, अपने अदीन अखण्डनीय शासन, अपनी अटल और शाश्वत न्याय-व्यवस्था की दृष्टि में भली प्रकार अपराधरहित

कर दीजिये। हे जगदीश्वर! तू हमारे पापों को ढीला करके हमसे दूर कर दीजिये।

टि. *पुरुषों में* - **पुरुषत्रा**। मनुष्यमध्ये - वे.। परिचारकेषु पुरुषेषु - सा.। पुरुषेषु - दया.। common to men - W. as human beings - G. in our hunanity - Ar.

*अज्ञानों के वश होकर* - **अचित्तिभिः**। अज्ञानैः - वे.। सा.। with the inconsiderateness - W. through folly - G. by our movements of ignorance - Ar.

*अदिति के (सम्मुख)* - **अदितेः**। पृथिव्याः - वे.। सा.। दया.। in sight of Aditi - G. before the mother indivisible - Ar.

*निरपराध* - **अनागान्**। अनागास्कान् - वे.। अनागसः - सा.। अनपराधान् - दया.।

*शिथिल कर दे* - **शिश्रथः**। श्लथय - वे.। शिथिलीकुरु - सा.। दया.। efface - W. remit - G. loosen from us - Ar.

**महश् चिद् अग्न एनसो अभीकं ऊर्वाद् देवानाम् उत मर्त्यानाम्।**
**मा ते सखायः सदम् इद् रिषाम यच्छा तोकाय तनयाय शं योः।। ५।।**

महः। चित्। अग्ने। एनसः। अभीके। ऊर्वात्। देवानाम्। उत। मर्त्यानाम्।
मा। ते। सखायः। सदम्। इत्। रिषाम। यच्छ। तोकाय। तनयाय। शम्। योः।। ५।।

*महान् से भी, हे अग्ने!, पाप से (दूर रहें), निकट में (रहें),*
*विस्तृत से (भी दूर रहें हम), देवों के और मनुष्यों के।*
*मत तेरे सखा कभी भी, हिंसित होवें हम,*
*प्रदान कर पुत्र को पौत्र को, सुख, नीरोगता।। ५।।*

हे मार्गदर्शक परमेश्वर! हम बड़े-बड़े, लम्बे-चौड़े और इसी प्रकार छोटे-मोटे सभी प्रकार के पाप-कर्मों से दूर रहें। हम सदा विद्वज्जनों और साधारण मनुष्यों के निकट रहें, क्योंकि पाप-कर्म प्रायः एकान्त में या छुप कर ही किये जाते हैं। हे प्रभो! हम तेरे सखा हैं। तू हमारी मित्रता का विचार करते हुए हमें पाप-कर्मों के पास जाने से बचा। इस प्रकार हम पाप-कर्मों से बचे रहेंगे और हमारी किसी प्रकार की भी हानि नहीं हो सकेगी। हे जगत्राता! तू हमारे पुत्रों, पौत्रों और आगे आने वाली सन्ततियों को भी पाप-कर्मों से बचाते हुए उन्हें सुख और नीरोगता प्रदान कर।

टि. *महान् से पाप से (दूर रहें)* - **महः एनसः**। पञ्चमीविभक्तिः पृथग्भावे।। महतः पापस्य - वे.। महतः पापात् - सा.। महतः अपराधस्य - दया.। (in the presence) of great sin - G.

*विस्तृत से (भी दूर रहें हम)* - **ऊर्वात्**। विस्तीर्णस्य - वे.। विस्तृतात् - सा.। दया.।

*निकट में (रहें) देवों के और मनुष्यों के* - **अभीके देवानाम् उत मर्त्यानाम्**। देवमनुष्यविषयस्य पापस्य समीपे वर्तमानाः - वे.। देवानाम् इन्द्रादीनाम् उत अपि च मर्त्यानां मनुष्याणाम् अभीके ऽन्तिके - सा.। समीपे विदुषाम् अविदुषाम् अपि - दया.। free us from prison of the gods or mortals - G. before gods and men - Ar.

*मत हिंसित होवें हम* - **मा रिषाम**। मा हिंसिता भूम - सा.।

*सुख नीरोगता* - **शम् योः**। शम् पापरूपोपद्रवाणां शान्तिं योः सुकृतोत्पादितं सुखम् - सा.। सुखं

सुकृताज् जनितम् - दया.। health and strength - G. the peace and well-doing - Ar.

**यथा ह त्यद् वसवो गौर्यं चित् पदि षिताम् अमुञ्चता यजत्राः।**
**एवो ष्व१स्मन् मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः।। ६।। १२।।**

यथा। ह। त्यत्। वसवः। गौर्यम्। चित्। पदि। सिताम्। अमुञ्चत। यजत्राः।
एवो इति। सु। अस्मत्। मुञ्चत। वि। अंहः। प्र। तारि। अग्ने। प्रऽतरम्। नः। आयुः।। ६।।

*जिस प्रकार से उसको, हे बसाने वालो!, गौ को भी,*
*पाँव से बँधी हुई को, मुक्त कराते हो तुम, हे पूजनीयो।*
*उसी प्रकार सुष्ठु हमसे, छुड़ाकर दूर कर दो पाप को,*
*खूब बढ़ा, हे अग्ने!, खूब बढ़ी हुई को, हमारी आयु को।। ६।।*

हे सब को सुख से बसने और जीने देने वाले, दान दिव्यता आदि गुणों से सम्पन्न, पूजा के योग्य विद्वज्जनो! जिस प्रकार तुम अपने आचरण से सन्मार्ग दिखाकर बन्धनों में बँधी हुई इस पृथिवी को, अनेक प्रकार के दुःखों और संकटों से ग्रस्त इस पृथिवी लोक में निवास करने वाले प्रजा जनों को, उनके दुःखों और कष्टों से मुक्त कराते हो, उसी प्रकार इन अपने उपासकों को भी विविध प्रकार के पापों से मुक्त करा दो। हे अग्रणी परमेश्वर! तू भी इन महापुरुषों की संगति में हमारे सुखी और दीर्घ जीवन को और अधिक सुखी, दीर्घ और समृद्ध बना।

टि. उसको गौ को - त्यत् गौर्यम्। एतद् गाम् - वे.। त्यां तां गौरीं गाम् - सा.। त्यत् तत् गौर्यं गौरीं वाचम् - दया.।

पाँव से बँधी हुई को - पदि सिताम्। असुरैर् अन्यैर् वा पदि बद्धाम् - वे.। पदि पादे सितां बद्धाम् - सा.। पदि प्राप्तव्ये विज्ञाने सितां शब्दार्थविज्ञानसम्बन्धिनीम् - दया.।

बढ़ा दे - प्र तारि। प्रवर्ध्यताम् - वे.। प्रवृद्धं क्रियताम् - सा.। be prolonged - W. G. mayest thou carry forward - Ar.

खूब बढ़ी हुई को - प्रतरम्। प्रवृद्धम् - सा.।

## सूक्त १३

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः (लिङ्गोक्तदेवता इत्येके)। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**प्रत्यग्निर् उषसाम् अग्रम् अख्यद् विभातीनां सुमना रत्नधेयम्।**
**यातम् अश्विना सुकृतो दुरोणम् उत् सूर्यो ज्योतिषा देव एति।। १।।**

प्रति। अग्निः। उषसाम्। अग्रम्। अख्यत्। विऽभातीनाम्। सुऽमनाः। रत्नऽधेयम्।
यातम्। अश्विना। सुऽकृतः। दुरोणम्। उत्। सूर्यः। ज्योतिषा। देवः। एति।। १।।

*अग्नि उषाओं के अग्रभाग को, प्रकाशित करता है,*
*विशेषेण प्रकाशमानों के, शोभन चित्त वाला, रमणीय धनदाता को।*
*गमन करो, हे अश्वियो!, शोभनकर्मा के तोरण वाले घर की ओर,*
*ऊपर को सूर्य तेज के साथ (अपने), प्रकाशमान, गमन कर रहा है।। १।।*

अग्नि सन्मार्गदर्शक परमेश्वर का नाम है। सूर्य समष्टि ज्ञान है। उषाएं साधक के भीतर प्रकाशित होने वाली प्रथम ज्ञानरश्मियां हैं। प्रसन्नचित्त कृपालु अग्रणी परमेश्वर साधक को सर्वप्रथम विशेष रूप से प्रकाशमान प्रथम ज्ञानरश्मियों के रमणीय धन को देने वाले अग्रभाग का दर्शन कराता है। समस्त जगत् को व्याप्त करने वाले द्युलोक और भूलोक अश्वी हैं। ये दोनों यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करने वाले उपासक के विशाल घर को सब प्रकार के धन-धान्य और ऐश्वर्यों से परिपूर्ण कर देते हैं। उसे संसार में किसी पदार्थ की कमी नहीं रहने देते। जब उपासक अपनी साधना के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ता जाता है, तो समष्टिज्ञान रूपी सूर्य अपने पूर्ण प्रकाश के साथ उसके अन्दर प्रकट हो जाता है।

टि. *अग्र भाग को* - **अग्रम्**। अग्रं प्रति पूर्वकालं लक्षीकृत्य - सा.। उपरिभावम् - दया.। procession - W. spring - G. the front - Ar.

*प्रकाशित करता है* - **प्रति अख्यत्**। प्रकाशयति - वे.। दया.। प्रबुद्धो भवति - सा.। hath looked - G.

*रमणीय धनदाता को* - **रत्नधेयम्**। रत्नाधारभूतम् - वे.। रत्नधानम्। धनप्रकाशकम् इत्यर्थः। सा.। wealth-bestowing - W. wealth-giving - G.

*हे अश्वियो* - **अश्विना**। अश्विनौ यद् अश्नुवाते सर्वम्। रसेनान्यः। ज्योतिषान्यः। या. (नि. १२. १)। वायुविद्युताव् इव - दया.। the two Riders of the horse - Ar.

*तोरण वाले घर की ओर* - **दुरोणम्**। गृहं प्रति - वे.। सा.। to the gated house - Ar.

**ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् द्रप्सं दविध्वद् गविषो न सत्वा।**
**अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रो यत् सूर्यं दिव्यारोहयन्ति।। २।।**

ऊर्ध्वम्। भानुम्। सविता। देवः। अश्रेत्। द्रप्सम्। दविध्वत्। गोऽइषः। न। सत्वा।
अनु। व्रतम्। वरुणः। यन्ति। मित्रः। यत्। सूर्यम्। दिवि। आऽरोहयन्ति।। २।।

*ऊपर की ओर तेज को, सविता प्रकाशमान धारण करता है,*
*ध्वज को (ऊपर की ओर) फहराता हुआ, गो-इच्छुक जैसे योद्धा।*
*पीछे (उसके) व्रत का वरुण पालन करता है, मित्र (भी),*
*जब सूर्य को द्युलोक में, आरूढ़ करती हैं (रश्मियां उसकी)।। २।।*

सर्वप्रेरक, प्रकाशमान परमेश्वर अपने तेज को ऊपर की ओर इस प्रकार धारण करता है, जिस प्रकार आसुरी शक्तियों के चंगुल से गौ आदि पशु, जल, प्रकाश, ज्ञान आदि को मुक्त कराने की इच्छुक दैवी शक्ति संघर्ष के लिये अपनी पताका को ऊपर की ओर आकाश में फहराती है, अथवा जिस प्रकार गोसंयोग के लिये इच्छुक कोई वृषभ अपने सींगों और पाँवों से धूलि को आकाश की ओर फैंकता है। जब सर्वप्रेरक परमेश्वर के तेज उसे प्रकाशलोक में स्थापित करते हैं, अर्थात् जब वह अपने तेजों के साथ प्रकाशलोक में व्याप्त होता है, तो जगत् को सब ओर से घेरकर रक्षा करने वाली उसकी शक्ति, मृत्यु से त्राण करने वाली शक्ति, तथा अन्य भी शक्तियां उसके नियमों का पालन करती हुईं उसके कार्यों को साधती हैं।

टि. *तेज को धारण करता है* - **भानुम् अश्रेत्**। तेजः श्रयति - वे.। भानुम् आश्रयति - सा.।

किरणम् आश्रयति – दया.। diffuses his light - W. hath spread his lustre - G. has reached his high shining - Ar.

*ध्वज को फहराता हुआ* – **द्रप्सम् दविध्वत्।** तेजसां लेशं भृशं धूनयन् – वे.। द्रप्सं पार्थिवं रजो दविध्वत् धुन्वन्। विकिरन्नित्यर्थः। सा.। पार्थिवं भूगोलं भृशं धुन्वन् – दया.। dispersing the dew - W. waving his flag: there can be no doubt that *drapśa,* the Zend *drafsha,* means a banner in this place - G. brandishing his flag - Ar.

*गो-इच्छुक जैसे योद्धा* – **गविषः न सत्वा।** यथा उदके वर्तमानं सत्त्वम् अपां द्रप्सं दविध्वत् उच्चरति तद्वद् इति – वे.। गविषो गा इच्छन् सत्वा न वृषभ इव तद्वत् – सा.। गाः प्राप्तुम् इच्छन् इव गन्ता – दया.। like a vigorous (bull) ardent for the cow - W. like a spoil-seeking hero - G. like a warrior seeker of the Light - Ar.

**यं सीम् अकृण्वन् तमसे विपृचे ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम्।**
**तं सूर्यं हरितः सप्त यह्वीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति।। ३।।**

यम्। सीम्। अकृण्वन्। तमसे। विऽपृचे। ध्रुवऽक्षेमाः। अनवऽस्यन्तः। अर्थम्।
तम्। सूर्यम्। हरितः। सप्त। यह्वीः। स्पशम्। विश्वस्य। जगतः। वहन्ति।। ३।।

*जिसको सर्वतः प्रेरित करते हैं, अन्धकार को दूर करने के लिये,*
*स्थिर निवासों वाले, अवसान न करते हुए प्रयोजन का (अपने)।*
*उस सूर्य को, दिशाएं सात महान्,*
*द्रष्टा को, समस्त जगत् के, वहन करती हैं।। ३।।*

भूलोक और द्युलोक में स्थिरता के साथ निवास करने वाले और अपने जीवनग्रहण के प्रयोजन को कभी विस्मृत न करने वाले मनुष्य और देवता इस संसार के अज्ञान-अन्धकार, दुःख-क्लेश आदि को दूर करने के लिये जिसकी सब प्रकार से पूजा-अर्चना आदि करते रहते हैं, समस्त जगत् के द्रष्टा, सब जीवों के शुभ और अशुभ कर्मों को देखने वाले और तदनुसार फल देने वाले उस सर्वप्रेरक परमेश्वर को आगे-पीछे, दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे और मध्य में वर्तमान ये सात दिशाएं सब ओर से वहन कर रही हैं। अर्थात् वह परमेश्वर सब दिशाओं में सर्वत्र व्याप्त है।

टि. *अन्धकार को दूर करने के लिये* – **तमसे विपृचे।** तमसः वियोजनाय – वे.। सा.। दया.।

*स्थिर निवासों वाले* – **ध्रुवक्षेमाः।** स्थिरक्षेमाः – वे.। स्थिरनिवासाः सृष्टिकर्तारो देवाः – सा.। ध्रुवं क्षेमं रक्षणं येषां ते – दया.। occupants of enduring mansions - W. Lords of sure mansions - G. firm in their foundation - Ar.

*अवसान न करते हुए प्रयोजन का (अपने)* – **अनवस्यन्तः अर्थम्।** जगद्रक्षणात्मकम् इदं स्वकार्यम् असमापयन्तः सर्वदानुतिष्ठन्तः – वे.। जगल्लक्षणं कार्यं अनवस्यन्तो ऽविमुञ्चन्तः कुर्वन्त एव – सा.। not heedless (of their offices) -W. constant to their object - G. never ceasing from their aim - Ar.

*दिशाएं* – **हरितः।** अश्वाः – वे.। सा.। दिश इव व्याप्ताः किरणाः – दया.।

द्रष्टा को - **स्पशम्**। कृताकृतस्य ज्ञातारम् - वे.। प्रेरकत्वेन ज्ञातारम् - सा.। बन्धकम् - दया.। the animator - W. him who beholds - G. as the scouts - Ar.

**वहिष्ठेभिर् विहरन् यासि तन्तुम् अवव्ययन्नसितं देव वस्म।**
**दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चर्मेवावाधुस् तमो अप्स्वन्तः॥ ४॥**

वहिष्ठेभिः। विऽहरन्। यासि। तन्तुम्। अवऽव्ययन्। असितम्। देव। वस्म।
दविध्वतः। रश्मयः। सूर्यस्य। चर्मऽइव। अव। अधुः। तमः। अप्ऽसु। अन्तर् इति॥ ४॥

*वहन करने में उत्तमों से, विचरता हुआ जाता है तू, (फैलाता हुआ) ताने को,*
*दूर हटाता हुआ कृष्ण को, हे प्रकाशमान!, वस्त्र को।*
*अतिशय कम्पनशील रश्मियां सूर्य की,*
*चर्म जैसे को परे फैंक देती हैं तम को, अन्तरिक्ष के मध्य (वर्तमान को)॥ ४॥*

हे सूर्यों के सूर्य, सर्वप्रेरक परमेश्वर!, तू वहन करने में श्रेष्ठ अपने रश्मिसमूहों, अपने तेजों, अपनी ज्योतिर्मयी शक्तियों से अपने ताने को फैलाता हुआ और अन्धकाररूपी काले वस्त्र को परे की ओर समेटता हुआ विचरण करता है। तुझ सर्वप्रेरक की कम्पनशील ज्योतियां आच्छादित कर लेने वाले चर्म की तरह अन्तरिक्षलोक अथवा अम्मयी प्रकृति से प्रादुर्भूत इस जगत् में व्याप्त अन्धकार को समूल उखाड़कर फैंक देती हैं।

टि. *विचरता हुआ* - **विहरन्**। विविधं हरन् - वे.। विस्तारयन् - सा.। विचरन् - दया.। thou proceedest - W.

*(फैलाता हुआ) ताने को* - **तन्तुम्**। आत्मीयं सूत्रसदृशं तेजः - वे.। रश्मिसमूहम् - सा.। कारणम् - दया.। thy web (of rays) - W. spreading thy web - G. the weft woven - Ar.

*दूर हटाता हुआ* - **अवव्ययन्**। अवाञ्चीनं यथा भवति तथा संवृण्वन्। तिरस्कुर्वन् इत्यर्थः। सा.। दूरीकुर्वन् - दया.। cutting down - W. rending apart - G. unweaving - Ar.

*वस्त्र को* - **वस्म**। तमोलक्षणं वासः - वे.। नक्तंचराणां निवासभूतां रात्रिम् - सा.। निवासस्थानम् - दया.। abode of night - W. mantle - G. garment - Ar.

*अन्तरिक्ष के मध्य (वर्तमान को)* - **अप्सु अन्तः**। अन्तरिक्षस्य मध्ये - वे.। अप्सु अन्तरिक्षे अन्तः मध्ये - दया.। over the firmament - W. in the waters - G. within the waters - Ar.

**अनायतो अनिबद्धः कथायं**
**न्यङ्ङुत्तानो ऽव पद्यते न।**
**कया याति स्वधया को ददर्श**
**दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम्॥ ५॥ १३॥**

अनायतः। अनिऽबद्धः। कथा। अयम्। न्यङ्। उत्तानः। अव। पद्यते। न।
कया। याति। स्वधया। कः। ददर्श। दिवः। स्कम्भः। सम्ऽऋतः। पाति। नाकम्॥ ५॥

*निरालम्ब, बन्धनरहित, किस प्रकार से यह,*
*अधोमुख, उपरिमुख, नीचे पड़ता नहीं है।*

*किससे गमन करता है, अपनी धारणा शक्ति से, किसने देखा,*
*द्युलोक का स्तम्भ, लगा हुआ, पालन करता है सुखलोक का।। ५।।*

वह सर्वप्रेरक परमेश्वर नीचे को ओर मुख वाला भी है और ऊपर को ओर मुख वाला भी। अर्थात् वह सब ओर सब को देखता है, सर्वद्रष्टा है। वह निरालम्ब है। उसका कोई आलम्बन, कोई आश्रय कोई सहारा नहीं है। वह तो स्वयं सब का सहारा है। वह बन्धनरहित है। उसे कोई अपने बन्धनों में बाँध नहीं सकता। फिर भी उसका कभी पतन नहीं होता। वह तो स्वयं ही पतितपावन है। उसके पास वह कौन सी आत्मधारक शक्ति है, जिससे वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में गतिशील है? इस बात को कौन जानता है? कोई नहीं जानता। वह स्वर्गलोक का स्तम्भ है। उससे लगा हुआ, उसका आधार बना हुआ, वह उस सुखलोक का पालन कर रहा है।

टि. *निरालम्ब* – **अनायतः**। आयतशब्दो दूरवाची। तद्विपरीतो ऽनायत आसीनः सन् – सा.। इतस् ततो ऽगच्छन् सन्निहितः – दया.। not far removed - W. not supported - G. unextended - Ar.

*बन्धनरहित* – **अनिबद्धः**। न केनचिद् बद्धः – वे.। केनापि बद्धो न क्रियते – सा.। न कस्यापि आकर्षणेन निबद्धः – दया.। unobstructed - W. unbound - G. Ar.

*अधोमुख* – **न्यङ्**। अधः – वे.। अवाङ्मुखः – सा.। यो न्यग् भूतः सन् – दया.। facing downwards - Ar.

*उपरिमुख* – **उत्तानः**। ऊर्ध्वमुखत्वेन तिष्ठन् – सा.। ऊंर्ध्वं स्थितः – दया.। facing upwards - Ar.

*नीचे पड़ता नहीं है* – **अव पद्यते न**। न अवपतति – वे.। न हिंस्यते – सा.। is harmed by no one - W. he falleth not - G. how does he not sink - Ar.

*किससे अपनी धारणाशक्ति से* – **कया स्वधया**। केन वा अन्नेन – वे.। केन बलेन। स्वधाशब्दो ऽन्नवाच्यत्र तत्कार्यं बलं लक्षयति। सा.। by what self-power - G. by what self-law - Ar.

*किसने देखा* – **कः ददर्श**। तत्त्वतः कः पश्यति। न को ऽपि जानातीत्यर्थः। सा.।

## सूक्त १४

ऋषिः – वामदेवो गौतमः। देवता – अग्निः। छन्दः – त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**प्रत्यग्निर् उषसों जातवेदा अख्यद् देवो रोचमाना महोभिः।**
**आ नासत्योरुगाया रथेनेमं यज्ञम् उप नो यातम् अच्छ।। १।।**

प्रति। अग्निः। उषसः। जातऽवेदाः। अख्यत्। देवः। रोचमानाः। महःऽभिः।
आ। नासत्या। उरुऽगाया। रथेन। इमम्। यज्ञम्। उप। नः। यातम्। अच्छ।। १।।

*अग्नि, उषाओं को, उत्पन्न हुओं को जानने वाला,*
*प्रकाशित करता है प्रकाशमान, दीप्यमानों को, तेजों से (अपने)।*
*इधर, असत्य न होने वालो!, विस्तीर्ण स्तुति वाले, रथ के द्वारा,*
*इस यज्ञ के पास हमारे गमन करो तुम दोनों, इस ओर।। १।।*

सब का मार्गदर्शन करने वाला, अपने प्रकाश से प्रकाशमान परमेश्वर अन्य प्रकाशपिण्डों की तरह

प्रभातकाल में दीप्त होने वाली इन उषाओं को अपने तेजों से चमकाता है। अथवा वह जगदीश्वर अपने ज्ञानों से अपने उपासकों के अन्तःकरणों में प्रथम ज्ञानरश्मि रूपी उषाओं का सञ्चार करता है। सर्वत्र गमन करने वाले, कभी असत्य न होने वाले हे आत्मा और परमात्मा! तुम दोनों प्रभात की इस पावन वेला में अपनी सर्वव्यापकता से गमन करते हुए हमारे इस अन्तर्यज्ञ में इस ओर गमन करो।

टि. *दीप्यमानों को तेजों से* - **रोचमानाः महोभिः**। तेजोभिः दीप्यमानाः - वे.। सा.। radiant with lustre - W. refulgent in their glories - G. with the greatness of their lustres - Ar.

*असत्य न होने वालो* - **नासत्या**। हे अश्विनौ - वे.। सा.। अविद्यमानासत्याचरणौ - दया.।

*विस्तीर्ण स्तुति वाले तुम* - **उरुगाया**। बहुभिः स्तोतव्यौ - वे.। प्रभूतगमनौ - सा.। बहुप्रशंसौ - दया.। far-going - W. ye, who travel widely - G. wide-moving - Ar.

**ऊ॒र्ध्वं के॒तुं स॑वि॒ता दे॒वो अ॑श्रे॒ज् ज्योति॒र् विश्व॑स्मै॒ भुव॑नाय कृ॒ण्वन्।**
**आप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षं॒ वि सूर्यो॑ र॒श्मिभि॒श् चेकि॑तानः।। २।।**

ऊ॒र्ध्वम्। के॒तुम्। स॒वि॒ता। दे॒वः। अ॒श्रे॒त्। ज्योतिः॑। विश्व॑स्मै। भुव॑नाय। कृ॒ण्वन्।
आ। अ॒प्राः। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। अ॒न्तरि॑क्षम्। वि। सूर्यः॑। र॒श्मिऽभिः॑। चेकि॑तानः।। २।।

*ऊपर की ओर आलोक को, सविता प्रकाशमान धारण कर रहा है,*
*ज्योति को (अपनी), समस्त जगत् के लिये उत्पन्न करता हुआ।*
*सब ओर से भर रहा है द्युलोक-भूलोक को, (और) अन्तरिक्ष को,*
*विशेष रूप से सूर्य, रश्मियों से (अपनी) जनाता हुआ (सब-कुछ)।। २।।*

सर्वोत्पादक, सर्वप्रेरक, स्वयं प्रकाशमान और सब को प्रकाशित करने वाला वह परमेश्वर अखिल विश्व के लिये अपने आलोक को उत्पन्न करता हुआ अपने प्रकाश के साथ सब से ऊपर विद्यमान है। अपनी ज्ञानरश्मियों से समस्त उत्पन्न पदार्थों का ज्ञान कराता हुआ वह जगदीश्वर इस पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक को अपने प्रकाश और ज्ञान से सब ओर से भर रहा है।

टि. *आलोक को धारण कर रहा है* - **केतुम् अश्रेत्**। तेजः श्रयति - वे.। प्रकाशकं भानुम् आश्रयति - सा.। केतुं प्रज्ञाम् - दया.। displays his banner - W. hath raised his banner - G. is lodged in his high Ray of intuition - Ar.

*सब ओर से भर रहा है* - **आ अप्राः**। आ पूरयति - वे.। समन्ताद् अपूरयत् - सा.। व्याप्नोति - दया.। has filled - W. G.

*जनाता हुआ (सब-कुछ)* - **चेकितानः**। सर्वं जानन् - वे.। सर्वं विशेषेण पश्यन् - सा.। प्रज्ञापयन् - दण.। contemplating - W. making his presence known - G. in his universal knowledge - Ar.

**आ॒वह॑न्त्यरु॒णीर् ज्योति॒षागा॑न् म॒ही चि॒त्रा र॒श्मिभि॒श् चेकि॑ताना।**
**प्र॒बो॒धय॑न्ती सुवि॒ताय॑ दे॒व्यु१॒॑षा ईयते सु॒युजा॒ रथे॑न।। ३।।**

आ॒ऽवह॑न्ती। अ॒रु॒णीः। ज्योति॑षा। आ। अ॒गा॒त्। म॒ही। चि॒त्रा। र॒श्मिऽभिः॑। चेकि॑ताना।
प्र॒ऽबो॒धय॑न्ती। सु॒वि॒ताय॑। दे॒वी। उ॒षाः। ई॒य॒ते॒। सु॒ऽयुजा॑। रथे॑न।। ३।।

*इधर लाती हुई अरुणवर्णा (दीप्तियों) को, ज्योति के साथ आ रही है,*
*पूजनीया, ज्ञान कराने वाली, रश्मियों से (अपनी) ज्ञान कराती हुई।*
*प्रकर्ष से बोध कराती हुई, सुख के लिये, दिव्य गुणों से युक्त,*
*उषा गमन कर रही है, भली प्रकार जुते हुए से, रथ से (अपने)।। ३।।*

अत्यन्त पूजा के योग्य, उपासकों को चेतना प्रदान करने वाली, अपनी प्रथम ज्ञानरश्मियों से उपासकों को ज्ञान देने वाली, अपनी ज्ञानज्योतियों को वहन करती हुई, अपनी ज्ञानरश्मियों से जिज्ञासु जनों को ज्ञान कराती हुई, सुखी और आनन्दमय जीवन में प्रवेश के लिये मनुष्यों को जागृत करती हुई दिव्य उषा अपने ज्ञानप्रकाश के साथ, ज्ञानरश्मियों से जुते हुए अपने उत्तम ज्ञानरूपी रथ पर सवार होकर ज्ञान के पिपासु जनों की ओर गमन कर रही है।

टि. *अरुणवर्णा (दीप्तियों) को* - **अरुणीः।** अरुणवर्णा अश्वाः - वे.। अरुणवर्णाः। प्रथमैकवचने द्वितीयाबहुवचनं छान्दसम्। सा.। किञ्चिद् आरक्ताभाः - दया.। with rays of purple tint - W.

*ज्ञान कराने वाली* - **चित्रा।** चेतयन्ती।। चित्ररूपा - वे.। दर्शनीया - सा.। चित्रा अद्भुतस्वरूपा - दया.। variegated - W. gay-hued - G.

*ज्ञान कराती हुई* - **चेकिताना।** ज्ञायमाना - वे.। जानती - सा.। प्राणिनः प्रज्ञापयन्ती - दया.। intelligent - W. knowing all - Ar.

*सुख के लिये* - **सुविताय।** अभ्युदयाय - वे.। सुखप्राप्तये - सा.। ऐश्वर्याय - दया.। (to distribute) felicity - W. to happiness - G. to happy path - Ar.

**आ वा॒ं वहि॑ष्ठा इ॒ह ते व॑हन्तु रथा॒ अश्वा॑स उ॒षसो॒ व्यु॑ष्टौ।**
**इ॒मे हि वां॑ मधु॒पेया॑य॒ सोमा॑ अ॒स्मिन् य॒ज्ञे वृ॑षणा मादयेथाम्।। ४।।**

आ। वा॒म्। वहि॑ष्ठाः। इ॒ह। ते। व॒ह॒न्तु। रथाः॑। अश्वा॑सः। उ॒षसः॑। विऽउ॑ष्टौ।
इ॒मे। हि। वा॒म्। म॒धु॒ऽपेया॑य। सोमाः॑। अ॒स्मिन्। य॒ज्ञे। वृ॒ष॒णा॒। मा॒द॒ये॒था॒म्।। ४।।

*इधर तुम दोनों के वहन करने में उत्तम, यहाँ वे वहन करें,*
*रथ (भी), अश्व (भी वहन करें), उषा के उदयकाल में।*
*ये निश्चय से (हैं) तुम दोनों के लिये, मधुपान के निमित्त सोम,*
*इस यज्ञ में, हे सुखवर्षको!, आनन्द प्राप्त करो तुम दोनों।। ४।।*

एक ही शरीररूपी रथ में सवार होने के कारण आत्मा और परमात्मा अश्वी कहा गया है। उनकी व्यापकता और गतिशीलता ही उनके अश्व और रथ हैं। साधक के अन्तःकरण में प्रथम ज्ञानरश्मियों का उदय ही उषा का उदय है। भक्तिरस ही हर्षदायक सोम है। यहाँ उपासक अपने आत्मा और परमात्मा से प्रार्थना कर रहा है, कि हे सुखों की वर्षा करने वाले मेरे आत्मा और परमात्मा! इन प्रथम ज्ञानरश्मियों के मेरे हृदय में उदित होने के इस शुभ अवसर पर तुम दोनों अपनी पूर्ण व्यापकता और गतिशीलता के साथ मेरे द्वारा निष्पादित भक्तिरस का पान करने के लिये मेरे अन्तर्यज्ञ में पधारो और मेरे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त करो।

टि. *वहन करने में उत्तम* - **वहिष्ठाः।** वोढृतमाः - वे.। सा.। अतिशयेन वोढारः - दया.। robust

- W. most powerful - G. strong to bear - Ar.

*रथ (भी) अश्व (भी)* - **रथाः अश्वासः।** अश्वाः रथाः च - वे.। रथा रंहणा गन्तारो ऽश्वासो ऽश्वाः - सा.। रथाः यानानि अश्वाः सद्यो गामिनः - दया.। active horses - W. steeds and chariots - G. horses and chariots - Ar.

*मधुपान के निमित्त* - **मधुपेयाय।** मदकरस्य सोमस्य पानाय - वे.। मधुपेयाय मधोः सोमस्य पानाय - सा.। मधुरैर् गुणैः पातुं योग्याय - दया.। for your drinking - W. for your draught of meath - G. for the drinking of sweetness - Ar.

**अनायतो अनिबद्धः कुथायं न्यङ्ङुत्तानो ऽव पद्यते न।**
**कया याति स्वधया को ददर्श**
**दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम्।। ५।। १४।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१३.५ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त १५

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-६ अग्निः, ७,८ सोमकः साहदेव्यः, ९,१० अश्विनौ। छन्दः - गायत्री। दशर्चं सूक्तम्।

**अग्निर् होता नो अध्वरे वाजी सन् परि णीयते। देवो देवेषु यज्ञियः।। १।।**

अग्निः। होता। नः। अध्वरे। वाजी। सन्। परि। नीयते। देवः। देवेषु। यज्ञियः।। १।।

*अग्नि, आह्वान करने वाला, हमारे यज्ञ में,*
*बलवान् होता हुआ, सब ओर ले जाया जाता है।*
*प्रकाशमान प्रकाशमानों में, पूजा के योग्य।। १।।*

सब का मार्गदर्शन करने वाला परेश्वर सन्मार्ग पर चलने के लिये सब का आह्वान करता है। वह सब प्रकाशमानों में केवल सर्वाधिक प्रकाशमान ही नहीं है, अपितु सब प्रकाशमानों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करने वाला भी है। इसलिये वह सब के द्वारा पूजा के योग्य है। वह बलवान् है और निर्बलों का रक्षक है। हम यज्ञ आदि अपने सभी शुभ कर्मों में उसी का सान्निध्य चाहते हैं और उसी से उनकी निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्नता की कामना करते हैं।

टि. *बलवान् होता हुआ* - **वाजी सन्।** अश्वः भूतः - वे.। वाजीत्येतल् लुप्तोपमाकम्। वाजी शीघ्रगामी वोढाश्व इव। सा.। बलवान् अश्व इव सन् - दया.। like a horse (that bears a burden) - W. like a horse - G. Ar.

*सब ओर ले जाया जाता है* - **परि नीयते।** परितः समन्तात् प्राप्यते। तथा ब्राह्मणं च भवति। वाजी सन् परि णीयत इति वाजिनम् इव ह्येनं सन्तं परिणयन्ति। (ऐ.ब्रा. २.५)। सा.। प्राप्यते - दया.। is led forth - G. is led around - Ar.

*पूजा के योग्य* - **यज्ञियः।** यज्ञार्हः - सा.। दया.। adorable - W. G.

**परि॑ त्रिवि॒ष्ट्य॑ध्व॒रं यात्य॒ग्नी र॒थीरि॑व। आ दे॒वेषु॒ प्रयो॒ दध॑त्।। २।।**

परि॑। त्रि॒ऽवि॒ष्टि। अ॒ध्व॒रम्। याति॑। अ॒ग्निः। र॒थीःऽइ॑व। आ। दे॒वेषु॑। प्रय॑ः। दध॑त्।। २।।

*सब ओर, तीन बार, हिंसारहित यज्ञ के,*

*गमन करता है अग्नि, रथ पर सवार (योद्धा) की तरह।*

*इस ओर देवों में, प्रिय अन्न को प्रदान करता हुआ।। २।।*

जिस प्रकार रथ पर चढ़कर युद्ध करने वाला कोई योद्धा तीव्र गति के साथ रणक्षेत्र में युद्ध करता हुआ विजय प्राप्त करता है, उसी प्रकार सब का मार्गदर्शक वह परमेश्वर दिव्यता आदि गुणों से युक्त अपने उपासक जनों को प्रीतिदायक अन्न प्रदान करता हुआ उनके यज्ञ आदि शुभ कर्मों में उनकी सहायता के लिये बार-बार गमन करता है और सफलता प्राप्त करता है।

टि. *तीन बार* - **त्रिविष्टि।** त्रिवेष्टनं त्रिर् इत्यर्थः - वे.। त्रिवारम्। सवनत्रये ऽपीत्यर्थः। सा.। विविधे सुखप्रवेशे - दया.।

*रथ पर सवार (योद्धा) की तरह* - **रथीः इव।** सारथिर् इव - वे.। रथवान् पुरुषो यथा शीघ्रं याति तद्वत् - सा.। प्रशस्तरथादियुक्तः सेनेश इव - दया.।

*प्रिय अन्न को प्रदान करता हुआ* - **प्रयः दधत्।** अन्नम् आ दधत् -वे.। प्रय इत्यन्ननामेदम्। प्रयो यजमानैर् दत्तं हवीरूपम् अन्नम् आ दधत् समन्ताद् धारयन्। सा.। कमनीयं धनं धरन् त्सन् - दया.। bearing the sacrificial food - W. bearing the viands - G. he founds our delight in the gods - Ar.

**परि॒ वाज॑पतिः क॒विर् अ॒ग्निर् ह॒व्यान्य॑क्रमीत्। दध॒द् रत्ना॑नि दा॒शुषे॑।। ३।।**

परि॑। वाज॑ऽपतिः। क॒विः। अ॒ग्निः। ह॒व्यानि॑। अ॒क्र॒मी॒त्। दध॑त्। रत्ना॑नि। दा॒शुषे॑।। ३।।

*सब ओर से, बलों का स्वामी, क्रान्तदर्शी,*

*अग्नि, हव्यों को व्याप्त करता है।*

*देता हुआ रमणीय धनों को, दाता के लिये।। ३।।*

क्रान्तदर्शी अग्रणी परमेश्वर आत्मिक सम्पदाओं का स्वामी है। वह समर्पित किये हुए हव्यों और नैवेद्यों को सब ओर से व्याप्त करता है, अर्थात् उन्हें स्वीकार करता है। जो उसे आत्मसमर्पण कर देते हैं, वह उन्हें रमणीय आत्मिक धन प्रदान करता है।

टि. *बलों का स्वामी* - **वाजपतिः।** अन्नपतिः - वे.। वाजानाम् अन्नानां पतिः पालकः - सा.। अन्नादीनां स्वामी - दया.। the lord of strength - G. a master of the plenitudes - Ar.

*सब ओर से हव्यों को व्याप्त करता है* - **परि हव्यानि अक्रमीत्।** हव्यानि हवींषि पर्यक्रमीत्, परितः क्रामति, व्याप्नोति - सा.। has encompassed the oblation - W. round the oblations hath he paced - G. moves round the offerings - Ar.

**अ॒यं यः सृञ्ज॑ये पु॒रो दै॑ववा॒ते स॑मि॒ध्यते॑। द्यु॒माँ अ॑मित्र॒दम्भ॑नः।। ४।।**

अ॒यम्। यः। सृञ्ज॑ये। पु॒रः। दै॒व॒ऽवा॒ते। स॒म्ऽइ॒ध्यते॑। द्यु॒ऽमान्। अ॒मि॒त्र॒ऽदम्भ॑नः।। ४।।

*यह (है वह), जो विजयोत्पादक के निमित्त, पूर्व काल में,*

*देवपूजक के वंशज के निमित्त, प्रज्वलित किया जाता रहा।*

*द्युतिमान्, शत्रुओं को विनष्ट कर डालने वाला (अग्नि)।। ४।।*

ज्योतिर्मय, हिंसा में विश्वास रखने वालों का विनाशक यह अग्रणी परमेश्वर वह सर्वमहान् देव है, जिसे देवों के पूजक और देवाधिदेव परमेश्वर में श्रद्धा और आस्था रखने वाले उपासकों के विजयों को उत्पन्न करने वाले वंशज पूर्व काल से ही प्रकाशित और प्रचारित करते चले आए हैं, मन वचन और कर्म से उसके साम्राज्य की वृद्धि करते रहे हैं।

टि. *विजयोत्पादक के निमित्त* - **सृञ्जये**। सृजत्युत्पादयति जयम् इति सृजज्जयः। सृजज्जय एव सृञ्जयः सृञ्जयः। तस्मिन् निमित्ते।। सृञ्जये राजनि - वे.। सृञ्जयो नाम कश्चित् सोमयाजी। तस्मिन् निमित्तभूते सति। तद्यागार्थम्। सा.। यः प्राप्तान् शत्रून् जयति तस्मिन् - दया.। in Sṛñjaya - Ar. for the victories - Satya.

*पूर्व काल में* - **पुरः**। पूर्वस्मिन् काले।। पूर्वम् - वे.। पुरः पूर्वस्यां दिशि स्थितायाम् उत्तरवेद्याम् - सा.। पुरस्तात् - दया.। (on the altar) of the east - W. eastward - G.

*देवपूजक के वंशज के निमित्त* - **दैववाते**। देवान् शरणान् वाति यात्यसौ देववातः। तस्य अपत्यं पुमान् दैववातः।। देववातस्य पुत्रे - सा.। देवानां प्राप्ते भवे - दया.। performed by the enlightened devotees - Ar.

*शत्रुओं को विनष्ट कर डालने वाला* - **अमित्रदम्भनः**। अमित्राणां हिंसकः - वे.। शत्रूणां हिंसकः - सा.। दया.। the subduer of foes - W. tamer of the foe - G. destroyer of the foes - Ar.

**अस्यं घा वी॒र ईव॑तो॒ ऽग्नेर् ईशीत॒ मर्त्यः।**
**ति॒ग्मजं॑म्भस्य मी॒ळ्हुषः॑।। ५।। १५।।**

अस्य॑। घ॒। वी॒रः। ईव॑तः। अ॒ग्नेः। ई॒शी॒त॒। मर्त्यः॑। ति॒ग्मऽज॑म्भस्य। मी॒ळ्हुषः॑।। ५।।

*इससे, निश्चय से, विक्रमशील, गमनशील से,*
*अग्नि से, ऐश्वर्यों को प्राप्त करे, मरणधर्मा।*
*तीक्ष्ण दाढ़ों वाले से, सुखवर्षक से।। ५।।*

वह मार्गदर्शक परमेश्वर सर्वत्र गमन करने वाला है, अर्थात् सर्वव्यापक है। वह दुष्टों के विनाश के लिये तीक्ष्ण दाढ़ों वाला और सज्जनों के लिये सुखों की वर्षा करने वाला है। उसकी परिचर्या, सेवा-सुश्रूषा और पूजा-अर्चना में वीरता का, दृढ़ निश्चय और सतत परिश्रम का परिचय देने वाला मनुष्य उससे सब प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त कर सकता है। अथवा सतत भक्ति करने वाला भक्त उसे अपने वश में कर सकता है, क्योंकि भक्ति में भगवान् को अपने वश में करने की शक्ति है।

टि. *विक्रमशील* - **वीरः**। स्तुतौ विक्रान्तः - सा.। strenuous in worship - W. hero - G.

*गमनशील से* - **ईवतः**। गमनवन्तम् - वे.। गमनवतः - सा.।

*ऐश्वर्यों को प्राप्त करे* - **ईशीत**। भर्तुम् ईश्वरो भवेद् इति प्रश्नः - वे.। ईश्वरो भवेत्। एतेन यजमान आत्माभीष्टफलं कारयितुं समर्थो भवेद् इत्यर्थः - सा.। समर्थो भवेत् - दया.। may acquire authority (over this Agni) - W. shall command - G. can have mastery (over the Fire) - Ar.

*तीक्ष्ण दाढ़ों वाले से* - **तिग्मजम्भस्य**। तिग्मदंष्ट्रम् - वे.। तीक्ष्णतेजसः - सा.। तिग्मं तीव्रं

तेजस्वि जम्भो मुखं यस्य तस्य - दया.। the sharp-rayed - W. with sharpened teeth - G. Ar.

*सुखवर्षक से* - **मीळ्हुषः**। सेक्तारम् - वे.। अभिलषितफलानां सेक्तुः - सा.।

**तम् अर्वन्तं न सानसिम् अरुषं न दिवः शिशुम्। मर्मृज्यन्ते दिवेदिवे।। ६।।**

तम्। अर्वन्तम्। न। सानसिम्। अरुषम्। न। दिवः। शिशुम्। मर्मृज्यन्ते। दिवेऽदिवे।। ६।।

*उसको, अश्व के समान सेवनीय को,*

*आरोचमान को जैसे, द्युलोक के पुत्र को।*

*अलंकृत करते हैं (पूजा से), दिन-प्रति-दिन।। ६।।*

युद्ध में काम आने वाले, खरखरे और मालिश आदि से साफ किये जाने वाले अश्व के समान और द्युलोक के पुत्रभूत आरोचमान सूर्य के समान समस्त जगत् को प्रकाशित करने वाले सूर्य उस सेवनीय सन्मार्गदर्शक परमेश्वर की उपासक जन प्रतिदिन सेवा-सुश्रूषा और पूजा-अर्चना करते हैं।

टि. *अश्व के समान सेवनीय को* - **अर्वन्तम् न सानसिम्।** अश्वम् इव संभजनीयम् - वे.। शीघ्रगामिनम् अश्वम् इव संभजनीयम् - सा.। like a horse (to convey oblations) - W. as they clean a horse who wins the prize - G. like a conquering war-horse - Ar.

*द्युलोक के पुत्र को* - **दिवः शिशुम्।** दिवः पुत्रम् आदित्यम् - वे.। द्युलोकस्य पुत्रभूतं सूर्यम् इव - सा.। who is (liberal and) resplendent as the son of heaven, the sun - W.

*अलंकृत करते हैं* - **मर्मृज्यन्ते।** परिचरन्ति - वे.। भृशं परिचरणं कुर्वन्ति - सा.। शोधयन्ति - दया.। they diligently worship him - W. they dress him - G. they make him bright - Ar.

**बोधद् यन् मा हरिभ्यां कुमारः साहदेव्यः। अच्छा न हूत उद् अरम्।। ७।।**

बोधत्। यत्। मा। हरिऽभ्याम्। कुमारः। साहऽदेव्यः। अच्छ। न। हूतः। उत्। अरम्।। ७।।

*जगाए वह जब मुझको, मन और वाणी रूपी अश्वों के द्वारा,*

*युवतम, देवों का संग करने वालों को चाहने वाला।*

*ओर सत्कर्मों की, नहीं, आह्वान किया हुआ, परे हटूँ मैं।। ७।।*

सदा युवावस्था में एकरस रहने वाला और सज्जनों का संग करने वाले धर्मात्मा जनों को प्यार करने वाला वह मार्गदर्शक परमेश्वर जब अपनी अन्तःप्रेरणा और वेदवाणी इन दोनों उपायों के द्वारा मुझे उद्बोधित करे, अज्ञाननिद्रा से जगाकर मुझे ज्ञानमार्ग पर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करे, तो मैं उसके आदेश को ध्यान से सुनूँ और उसका पालन करूँ। वह जब भी सत्कर्मों को करने के लिये मेरा आह्वान करे तो मैं उसकी आज्ञाओं का पालन करने से कभी न चूकूँ।

टि. *जगाए वह* - **बोधत्।** बोधयामास माम् उत्तिष्ठेति - वे.। बोधयामास इमौ तवाश्वाव् इति - सा.। बोधय - दया.। promised - W. thought of me - G. woke me - Ar.

*मन और वाणी रूपी अश्वों के द्वारा* - **हरिभ्याम्।** वाङ्मनोरूपाभ्याम् अश्वाभ्याम्।। अश्वाभ्याम् - वे.। अश्वाभ्याम्। अश्वौ दातुम्। सा.। अश्वाभ्याम् इव पठनाभ्यासाभ्याम् - दया.। along with fast moving twins (wind and light) - Satya.

*देवों का संग करने वालों को चाहने वाला* - **साहदेव्यः।** देवैः सह वर्तमाना इति सहदेवाः, तेषु

साधुर् इति साहदेव्य:।। सहदेवपुत्र: - वे.। सा.। ये देवैः सह वर्तन्ते तत्र भवेषु साधुः - दया.।

*नहीं परे हटूँ मैं* - न उत् अरम्। (आहूतः पुरुषः) इव शत्रून् प्रति उद्गतवान् अस्मि - वे.। ताव् अश्वाव् अलब्ध्वा न निर्गतवान् अस्मि - सा.। I withdrew not - W. G. I was not ready to rise - Ar. I do not decline - Satya.

**उत त्या यजता हरी कुमारात् साहदेव्यात्। प्रयता सद्य आ ददे।। ८।।**

उत। त्या। यजता। हरी इति। कुमारात्। साहऽदेव्यात् । प्रऽयता। सद्यः। आ। ददे।। ८।।

*और उन दोनों को, प्रशंसनीयों को, अश्वों को,*

*युवतम से, देवों का संग करने वालों को चाहने वाले से।*

*भली प्रकार नियन्त्रित किये हुओं को, अविलम्ब ग्रहण करूँ मैं।। ८।।*

मैं उपासक युवतम और सज्जनों का संग करने वालों से प्यार करने वाले उस अग्रणी परमेश्वर से प्रशंसा के योग्य, भली प्रकार नियन्त्रित मन और सुशिक्षित वाणी को अविलम्ब ग्रहण करूँ।

टि. *प्रशंसनीयों को* - यजता। पूजनीयौ - वे.। सा.। दाताराव् अध्यापकोपदेशकौ - दया.। excellent - W. sacred - Ar.

*भली प्रकार नियन्त्रित किये हुओं को* - प्रयता। शुद्धवर्णो - वे.। प्रयतौ - सा.। प्रयतौ प्रयतमानौ - दया.। well-trained - W.

**एष वां देवाव् अश्विना कुमारः साहदेव्यः। दीर्घायुर् अस्तु सोमकः।। ९।।**

एषः। वाम्। देवौ। अश्विना। कुमारः। साहऽदेव्यः। दीर्घऽआयुः। अस्तु। सोमकः।। ९।।

*यह तुम्हारा (उपास्य), हे प्रकाशमानो!, हे अश्वियो!,*

*युवतम, देवों का संग करने वालों को चाहने वाला।*

*दीर्घ आयु देने वाला होवे, आनन्दरस देने वाला।। ९।।*

हे द्युलोक और भूलोक! अर्थात् हे द्युलोक और भूलोक के निवासी देवो और मनुष्यो! यह सदा एकरस रहने वाला युवतम और सज्जनों का संग करने वालों से प्यार करने वाला जगदीश्वर तुम्हें दीर्घ आयु और आनन्दरस की प्राप्ति कराने वाला होवे।

टि. *आनन्दरस देने वाला* - सोमकः। सोमकाभिधान एष राजा - सा.। सोम इव शीतलस्वभावः - दया.। gladdening - Satya.

**तं युवं देवाव् अश्विना कुमारं साहदेव्यम्।**

**दीर्घायुषं कृणोतन।। १०।। १६।।**

तम्। युवम्। देवौ। अश्विना। कुमारम्। साहऽदेव्यम्। दीर्घऽआयुषम्। कृणोतन।। १०।।

*उसको तुम दोनों, हे देवो!, हे अश्वियो!,*

*युवतम को, देवों के संगियों को चाहने वाले को।*

*दीर्घ आयु वाला बना दो तुम।। १०।।*

हे द्युलोक और भूलोक के निवासियो! हे दिव्य गुणों को धारण करने वालो! तुम अपनी पूजा-अर्चना से, ईश्वरीय नियमों का पालन करने से, अपने व्यवहार और आचरण से, सदा युवावस्था

में वर्तमान और सज्जनों का संग करने वालों से प्यार करने वाले उस परमेश्वर के साम्राज्य को शाश्वत और विस्तीर्ण कर दो।

टि. *बना दो तुम* - **कृणोतन**। कुरुतम्। द्विवचने ऽपि तनबादेशो दृष्टः। वे.।

## सूक्त १६

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकविंशत्यृचं सूक्तम्।

**आ सत्यो यातु मघवाँ ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः।**
**तस्मा इद् अन्धः सुषुमा सुदक्षम् इहाभिपित्वं करते गृणानः।। १।।**

आ। सत्यः। यातु। मघऽवान्। ऋजीषी। द्रवन्तु। अस्य। हरयः। उप। नः।
तस्मै। इत्। अन्धः। सुसुम। सुऽदक्षम्। इह। अभिऽपित्वम्। करते। गृणानः।। १।।

*इस ओर सत्यकर्मा गमन करे, पूज्य धन वाला, ऋजु नीति वाला,*
*दौड़ें इस के अश्व (उसको लेकर), निकट में हमारे।*
*उसके लिये ही सोम का सवन करें हम, शोभन बल वाले का,*
*यहाँ अभिलषितों की प्राप्ति कराए वह, स्तुति किया जाता हुआ।। १।।*

वह जगदीश्वर सत्यस्वरूप, सच्चे नियमों वाला और सच्चे कर्मों वाला है। वह पवित्र, पूज्य बाह्य और आभ्यन्तर धनों का स्वामी है। वह स्वयं ऋजु मार्ग पर चलने वाला और अन्यों को उसपर चलाने वाला है। उसकी दिव्य बलवान् शक्तियां उसको लेकर हमारे निकटतम आएं और उसका हमारे हृदयमन्दिर में प्रवेश कराएं। उसके लिये हम उत्तम सामर्थ्य प्रदान करने वाले भक्तिरसरूपी सोम का सवन करते हैं और स्तुतियों का गान करते हैं। वह हमारी शुभ कामनाओं की सदा पूर्त्ति करता रहे।

टि. *ऋजु नीति वाला* - **ऋजीषी**। ऋजीषेण तद्वान् - वे.। ऋजीषशब्देन निष्पिष्टो विगतसारः सोमो ऽभिधीयते। तद्वान्। सा.। ऋजुनीतिः - दया.। the accepter of the spiritless Soma - W. impetuous - G. ever righteous - Satya.

*शोभन बल वाले का* - **सुदक्षम्**। सुबलम् - वे.। दया.। शोभनबलं सारोपेतम् इत्यर्थः - सा.।

*अभिलषितों की प्राप्ति कराए* - **अभिपित्वम् करते**। अभिप्राप्तिं करोति - वे.। अस्मदभिमतप्राप्तिं करोतु - सा.। may he grant the fulfilment of our desires - W. let him effect his visit - G.

**अव स्य शूराध्वनो नान्ते ऽस्मिन् नो अद्य सवने मन्दध्यै।**
**शंसात्युक्थम् उशनेव वेधाश् चिकितुषे असुर्याय मन्म।। २।।**

अव। स्य। शूर। अध्वनः। न। अन्ते। अस्मिन्। नः। अद्य। सवने। मन्दध्यै।
शंसाति। उक्थम्। उशनाऽइव। वेधाः। चिकितुषे। असुर्याय। मन्म।। २।।

*बन्धनमुक्त कर दे (हमको), हे शूर!, यात्रा के जैसे अन्त में (अश्वों को),*
*इसमें आज (हमारे) यज्ञ में, आनन्दित होने के लिये।*
*गा रहा है स्तोत्र को, उशना की तरह, स्तुति करने वाला,*
*सर्वज्ञ के लिये, प्राणदायिनी शक्तियों वाले के लिये, मननीय को।। २।।*

हे मार्गदर्शक मेरे प्रभो! हम तेरे उपासक जन्म-जन्मान्तरों में किये हुए कर्मों के बन्धनों में बँधे हुए क्लेशपूर्ण जीवन जी रहे हैं। हे दुष्टों का विनाश करने वाले परमेश्वर! जिस प्रकार कोई यात्री अपनी यात्रा की समाप्ति पर अपने अश्वों को जूए के बन्धनों से मुक्त करके उन्हें सुखी करता है, उसी प्रकार तू हमें हमारे कर्मबन्धनों से मुक्त करके सुखी बना दीजिये और हमारे अन्तस्तल में चलने वाले इस यज्ञ में हमारे द्वारा सवन किये हुए भक्तिरसरूपी सोम का आनन्द प्राप्त कीजिये। हम तेरे स्तोता तेरी कामना करने वाले किसी भी साधक की तरह तुझ सर्वज्ञ और जीवनदायिनी शक्तियों के स्वामी के लिये अति सम्मान के योग्य स्तुति का गान कर रहे हैं। आप इसे सहर्ष स्वीकार कीजिये।

टि.*बन्धनमुक्त कर दे* - **अव स्य**। आस्त। अवस्यतिर् अवसानार्थः। वे.। विमुञ्च - सा.। विरोधे अन्तं प्रापय - दया.। set us free -W. unyoke - G.

*आनन्दित होने के लिये* - **मन्दध्यै**। सोमेन मदितुम् - वे.। त्वां मादयितुम् - सा.। मन्दितुम् आनन्दितुम् - दया.। to gladden thee - G.

*गा रहा है* - **शंसाति**। शंसति - वे.। शंसनं करोति - सा.। shall utter - G.

*उशना की तरह* - **उशना इव**। वष्टि कामयते स उशनाः।। काव्य इव - सा.। like a brilliant pious sage - Satya.

*स्तुति करने वाला* - **वेधाः**। प्राज्ञः - वे.। शंसिता यजमानः - सा.। मेधावी - दया.। priest - G.

*प्राणदायिनी शक्तियों वाले के लिये* - **असुर्याय**। असुराणां हन्त्रे - वे.। सा.। असुरेष्वविद्वत्सु भवाय अविदुषे - दया.। to thee, the Lord Divine - G.

*मननीय को* - **मन्म**। मननीयम् - वे.। सा.। विज्ञानम् - दया.। a hymn - G.

**क॒विर् न नि॒ण्यं वि॒दथा॑नि॒ साध॒न् वृषा॒ यत् सेकं॑ विपिपा॒नो अर्चा॑त्।**
**दि॒व इ॒त्था जी॑जनत् स॒प्त का॒रून् अह्ना॑ चिच् च॒क्रुर् व॒युना॑ गृ॒णन्तः॑।। ३।।**

क॒विः। न। नि॒ण्यम्। वि॒दथा॑नि। साध॑न्। वृषा॑। यत्। सेक॑म्। वि॒ऽपि॒पा॒नः। अर्चा॑त्।
दि॒वः। इ॒त्था। जी॒ज॒न॒त्। स॒प्त। का॒रून्। अह्ना॑। चि॒त्। च॒क्रुः। व॒युना॑। गृ॒णन्तः॑।। ३।।

*क्रान्तदर्शी की तरह, गुह्य ज्ञानों को साधता हुआ,*
*सुखवर्षक जब, सोम को पीता हुआ सन्तुष्ट होता है।*
*द्युलोक से इस प्रकार, उत्पन्न करता है सात रश्मियों को,*
*दिन के समय तब करते हैं प्रज्ञानों को, स्तुति करते हुए (उपासक)।। ३।।*

जिस प्रकार कोई क्रान्तदर्शी ज्ञानी पुरुष जिज्ञासु जनों के लिये गूढ़ ज्ञानों को प्रकट करता है, उसी प्रकार वह परमैश्वर्यशाली जगदीश अपने ज्ञानों को सभी प्रजाजनों के लिये बिना किसी भेदभाव के प्रकट करता है। उपासक जन जब अपने भक्तिरसरूपी सोम को उस प्रभु को समर्पित करते हैं, तो वह उनके पान से सन्तुष्ट और श्रद्धायुक्त हो जाता है। वह इस प्रकार प्रसन्न होकर अपने ज्ञानलोक से सात ज्ञानरश्मियों को, सात छन्दों से युक्त वेदवाणी को प्रकट करता है। उपासक जन उस प्रभु की स्तुतियां करते हुए उन ज्ञानरश्मियों के प्रकाश में अपने प्रज्ञानयुक्त कार्यों को साधते हैं।

टि. *गुह्य ज्ञानों को साधता हुआ* - **निण्यम् विदथानि साधन्**। अन्तर्हितं स्तोमं करोति

(वामदेवः)। कर्माणि साधयन् इन्द्रः। वे.। निण्यं न। निण्यम् इत्यन्तर्हितनामैतत्। गूढम् अर्थम् इव विदथानि वेदनीयानि कार्यजातानि साधन् साधयन्। सा.।as a sage paying holy rites in secret - G.

*सोम को पीता हुआ* – **सेकं विपिपानः**। सोमस्य सेकं विविधं पिबन् – वे.। सेकं सेचनीयं सोमं विपिपानो ऽत्यर्थं पिबन् – सा.।

*सन्तुष्ट होता है* – **अर्चात्**। श्रद्धत्ते – वे.। विशेषेणार्चति। सोमपाने श्रद्धां करोतीत्यर्थः। सा.।

*द्युलोक से सात रश्मियों को* – **दिवः सप्त कारून्**। दीप्तान् सप्त वषट्कर्तॄन् ऋत्विजः – वे.। दिवो ऽमुष्माल् लोकात् सप्त सप्तसंख्याकान् कारून् रश्मीन् – सा.। प्रकाशान्, सप्त शिल्पिनः। दया.।the seven efficient (rays) from heaven - W. seven singers from heaven - G.

*दिन के समय* – **अह्ना**। झटिति – वे.। दिवसेन – सा.। दया.।

*कर्मों को* – **वयुना**। प्रज्ञानानि – वे.। दया.। वयुनानि मनुष्याणां ज्ञानानि – सा.।the objects of human perception - W. works - G. duties - Satya.

**स्व१॒र् यद् वेदि॑ सु॒दृशी॑कम् अ॒र्कैर् महि॒ ज्योती॑ रुरुचु॒र् यद् ध॒ वस्तोः॑।**
**अ॒न्धा तमां॑सि॒ दुधि॑ता वि॒चक्षे॒ नृभ्यं॑श् चकार॒ नृत॑मो अ॒भिष्टौ॑।। ४।।**

स्वः॑। यत्। वेदि॑। सु॒ऽदृशी॑कम्। अ॒र्कैः। महि॑। ज्योति॑ः। रु॒रु॒चुः। यत्। ह॒। वस्तोः॑।
अ॒न्धा। तमां॑सि। दुधि॑ता। वि॒ऽचक्षे॑। नृऽभ्यः॑। च॒का॒र। नृऽत॑मः। अ॒भिष्टौ॑।। ४।।

*प्रकाश जब प्राप्त करा दिया गया, अतिदर्शनीय, रश्मियों के द्वारा,*
*पवित्र ज्योति को चमका दिया जब, निश्चय से दिन में (उन्होंने)।*
*घुप अन्धेरों को बिखराव वाले, देखने के लिये,*
*मनुष्यों के लिये, बना दिया उत्तम नेता ने, सुरक्षा के निमित्त।। ८।।*

वह उत्तम नेता परमेश्वर सभी प्राणियों की सुरक्षा के लिये इस जगत् को प्रकाश से युक्त करना चाहता है। अतः उस जगदीश्वर की दीप्तियां अत्यन्त शोभनीय और दर्शनीय प्रकाश इस जगत् को प्रदान करती हैं। वे दिन के समय महान् तेजों को प्रकाशित करती हैं। इस प्रकार वह परमात्मा मनुष्यों के लिये देखने के निमित्त और उनकी सुरक्षा के निमित्त घुप अन्धेरों को बिखेरकर विध्वस्त कर डालता है। इसी प्रकार वह परमेश्वर अपने ज्ञानप्रकाश से अज्ञानान्धकार का उच्छेदन करके अपने उपासकों को ज्ञानचक्षु प्रदान करता हुआ उनको सुरक्षा प्रदान करता है।

टि. *प्रकाश जब प्राप्त करा दिया गया* – **स्वः यद् वेदि**। स्वर् इत्यादित्यनाम (निघ. १.४)। स्वः यदा ज्ञायते। वे.। यदा स्वर्लोको वेदि अवेदि ज्ञायते – सा.। सुखं यद् विज्ञायते – दया.।

*रश्मियों के द्वारा* – **अर्कैः**। अर्चनैः रश्मिभिः – वे.। सा.। मन्त्रैर् विचारैः – दया.।by the rays (of light) - W. by hymns - G.

*दिन में* – **वस्तोः**। अह्नि – वे.। निवासार्थम् – सा.। दिनम् – दया.।abode - W.

*बिखराव वाले* – **दुधिता**। दुर्निहितानि – वे.। दुधितानि नाशितानि – सा.। दुर्हितानि – दया.।has scattered - W. G.

*सुरक्षा के निमित्त* – **अभिष्टौ**। अभ्येषणे प्रार्थनायाम् – वे.। अभ्यागमने – सा.। अभितः सङ्गते

कर्मणि - दया.। in his approach - W. with his succour - G.

**ववक्ष इन्द्रो अमितम् ऋजीष्युभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा।**
**अतश् चिद् अस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव।। ५।। १७।।**

ववक्षे। इन्द्रः। अमितम्। ऋजीषी। उभे इति। आ। पप्रौ। रोदसी इति। महिऽत्वा।
अतः। चित्। अस्य। महिमा। वि। रेचि। अभि। यः। विश्वा। भुवना। बभूव।। ५।।

*वहन करता है इन्द्र अमित (महिमा) को, ऋजुगामी,*
*दोनों को सब ओर से पूर रहा है, द्युलोक-भूलोक को, महिमा से।*
*इससे भी (इन्द्र से), इसकी महिमा विशेष रूप से बढ़ी हुई है,*
*सब ओर से जो सब लोकों को घेर रहा है।। ५।।*

ऋजुगामी ऐश्वर्यमान् प्रभु की महिमा अपरम्पार है। उसका तो कोई अनुमान भी नहीं कर सकता। वह जगदीश अपनी महिमा से द्युलोक और भूलोक इन दोनों को भर रहा है। वह परमेश्वर इतना बड़ा है, कि इन सब लोकों को सब ओर से घेरकर स्थित है। पर उसकी महिमा तो उसका भी अतिक्रमण करके स्थित है। उसका तो कोई भी पारावार नहीं पा सकता। 'तस्माज् ज्यायान् च पूरुषः' (ऋग्.)।

टि. *वहन करता है* - **ववक्षे**। वहति - वे.। दया.। उवाह - सा.। hath waxd - G.

*अमित (महिमा) को* - **अमितम्**। स्थावरं जङ्गमं च - वे.। इयत्तारहितं महिमानम् - सा.। अपरिमितम् - दया.। infinite - W. immensely - G.

*महिमा से* - **महित्वा**। महत्त्वेन - वे.। सा.। by his magnitude - W. with his vastness - G.

*विशेष रूप से बढ़ी हुई है* - **वि रेचि**। विरिक्तो भवति बहिर् निश्चरति - वे.। अति रिरिचे। अधिको बभूवेत्यर्थः। सा.। विरिच्यते - सा.। exceeded - W.

*सब ओर से घेर रहा है* - **अभि बभूव**। तिरश् चकार - सा.। has surpassed - W.

**विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वान् अपो रिरेच सखिभिर् निकामैः।**
**अश्मानं चिद् ये बिभिदुर् वचोभिर् व्रजं गोमन्तम् उशिजो वि वव्रुः।। ६।।**

विश्वानि। शक्रः। नर्याणि। विद्वान्। अपः। रिरेच। सखिऽभिः। निऽकामैः।
अश्मानम्। चित्। ये। बिभिदुः। वचःऽभिः। व्रजम्। गोऽमन्तम्। उशिजः। वि। वव्रुर् इति वव्रुः।। ६।।

*सब को शक्तिशाली ने, जनहित कर्मों को जानने वाले ने,*
*जलों को आगे बढ़ा दिया, मित्रों के साथ कामना वालों के।*
*पर्वत को भी जिन्होंने भेद डाला, वचनों से (अपने),*
*गोष्ठ को गौवों वाले को, कामना वालों ने उघाड़ दिया।। ६।।*

वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर उन सब कार्यों को भली प्रकार जानता है, जिनसे मनुष्यों का हित हो सकता है। इसलिये शुभ कर्मों को करने की कामना वाली अपनी मित्रशक्तियों के साथ मिलकर उसने धरती पर जलों को बरसाया, जिससे अन्न और ओषधियों की उत्पत्ति से मनुष्य समृद्ध हुए। उपकार की कामना वाली उन मित्रशक्तियों ने अपनी स्तुतियों के द्वारा सामर्थ्य प्राप्त करके पुञ्जीभूत अज्ञान रूपी पर्वत का भेदन कर डाला, जिससे ज्ञानरश्मियों का बन्द पड़ा बाड़ा खुल गया और सब

ओर ज्ञान का प्रकाश फैल गया।

टि. *शक्तिशाली ने* - **शक्रः**। समर्थ इन्द्रः - सा.। शक्तिमान् - दया.।

*जनहित कर्मों को* - **नर्याणि**। नृहितानि - वे.। मनुष्याणां हितानि वृष्ट्यादीनि कार्याणि - सा.। नृषु साधूनि - दया.। all things profitable for men - W. all human actions - G. Satya.

*(साथ) कामना वालों के* - **निकामैः**। स्निग्धैः - वे.। कामयमानेभ्यः। व्यत्ययेन चतुर्थ्यर्थे तृतीया। सा.। with his eager (friends) - G.

*पर्वत को* - **अश्मानम्**। शिलोच्चयम् - वे.। पर्वतं मेघं वा - सा.। मेघम् - दया.।

*वचनों से* - **वचोभिः**। अस्य वचनैः प्रेषिताः - वे.। वागूपैर् ध्वनिभिः - सा.। वचनैः - दया.। with (loud) shouts - W. with their songs - G.

*उघाड़ दिया* - **वि वव्रुः**। विवृतवन्तः - वे.। आच्छादयामासुः - सा.। disclosed - G.

**अपो वृत्रं वव्रिवांसं पराहन् प्रावत् ते वज्रं पृथिवी सचेताः।**
**प्रार्णांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर् भवञ् छवसा शूर धृष्णो।। ७।।**

अपः। वृत्रम्। वव्रिऽवांसम्। परा। अहन्। प्र। आवत्। ते। वज्रम्। पृथिवी। सऽचेताः।
प्र। अर्णांसि। समुद्रियाणि। ऐनोः। पतिः। भवन्। शवसा। शूर। धृष्णो इति।। ७।।

*जलों के आवरक को, रोक लेने वाले को, परे मार भगाया,*
*खूब बढ़ाया तेरे वज्र को, पृथिवी ने समान चित्त वाली ने।*
*खूब जलों को, अन्तरिक्ष में स्थितों को, प्रेरित करता है तू,*
*पालक होता हुआ (जगत् का), बल से, हे शूर!, हे धर्षक।। ७।।*

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! जल आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली और दूसरों को उनसे वञ्चित कर देने वाली आसुरी शक्तियों को तू परे मार भगाता है। तेरे विचारों से सहमति रखने वाले पृथिवी के निवासी मनुष्य भी तेरे दुष्टविनाशक साधनों की सहायता करते हैं। वे यज्ञ आदि शुभ कर्मों के द्वारा तेरी शक्तियों को पुष्ट करते रहते हैं। हे दुष्टों को अभिभूत करने वाले और उनका विनाश कर डालने वाले जगदीश्वर! तू चूँकि अपने बल से प्रजाओं का पालक है, इसलिये तू अन्तरिक्ष में विद्यमान जलों को मनुष्यों की समृद्धि के लिये धरती पर बरसाता रहता है।

टि. *परे मार भगाया* - **परा अहन्**। परा हतवान् असि - वे.। प्रकर्षेण प्रेरयति स्म - सा.। has slain - W. smote away - G.

*खूब बढ़ाया* - **प्र आवत्**। प्रकर्षेण रक्षितवती - वे.। राक्षसादिभ्यः प्रकर्षेण लोकान् पालयितृ त्वदीयं वज्रम् - सा.। रक्षति - दया.। protecting - W. lent her aid - G.

*समान चित्त वाली ने* - **सचेताः**। समनस्का - वे.। चेतनावती - सा.। चेतसा सहिता - दया.। conscious - W. G.

*खूब प्रेरित करता है तू* - **प्र ऐनोः**। प्र गमयसि - वे.। प्रेरको ऽभूः - सा.। sent down - W.

**अपो यद् अद्रिं पुरुहूत दर्दर् आविर् भुवत् सरमा पूर्व्यं ते।**
**स नो नेता वाजम् आ दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर् गृणानः।। ८।।**

अपः। यत्। अद्रिम्। पुरुऽहूत। दर्दः। आविः। भुवत्। सरमा। पूर्व्यम्। ते।
सः। नः। नेता। वाजम्। आ। दर्षि। भूरिम्। गोत्रा। रुजन्। अङ्गिरःऽभिः। गृणानः।। ८।।

*जलों को जब मेघ से, हे बहुतों से आहूत!, चीर निकालता है तू,*
*प्रकट हो जाती है अन्तर्दृष्टि (स्वयं), सम्मुख (उपासकों के) तेरे।*
*वह (तू), हमारे लिये, नेता, ऐश्वर्य को फाड़ निकालता है, प्रभूत को,*
*गोष्ठों का भेदन करता हुआ, अङ्गिराओं के द्वारा स्तुति किया जाता हुआ।। ८।।*

हे परमैश्वर्यवान् जगत्पिता! अग्नि में आहुतियां चढ़ाने वाले तेरे उपासक जब तेरा गुणगान करते हैं, तो सब का मार्गदर्शन करने वाला तू परमेश्वर उन गुप्त स्थानों को ध्वस्त कर डालता है, जिनमें आसुरी शक्तियां जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों को छुपाकर रख छोड़ती हैं। तू उन सुखसाधनों को हम सब के लिये मुक्त कर देता है। हे बहुतों के द्वारा पुकारे जाने वाले जगदीश! जब तू जलों को छुपा लेने वाले मेघ, सूर्यरश्मियों को ढक लेने वाले तमस् और ज्ञानरश्मियों को आवृत कर लेने वाले अज्ञान को ध्वस्त करके जलों आदि को मुक्त कर देता है, तो एक ऐसी अन्तर्दृष्टि उत्पन्न हो जाती है जो इन्द्रियों और मन पर आधिपत्य करने वाली, अध्यात्म की शत्रुभूत तमःशक्तियों के द्वारा अज्ञात स्थान में छुपाए हुए ज्ञानप्रकाश को ढूँढकर साधकों के लिये ले आती है। इस प्रकार उपासकों का बहुत उपकार होता है।

टि. *जलों को मेघ से चीर निकालता है तू* - **अपः अद्रिम् दर्दः।** मेघम् उदकानि दारितवान् असि - वे.। अपः प्रति वृष्टिलक्षणान्युदकानि लक्षीकृत्याद्रिं मेघं दर्दः विदारितवान् असि - सा.। hadst divided the cloud for (the escape of) the waters - W. the water's rock thou cleftest - G.

*प्रकट हो जाती है अन्तर्दृष्टि* - **आविः भुवत् सरमा।** सरमा नाम शुनी पणिषु त्वया प्रेषिता पुनर् आगत्य त्वत्समीपे वर्तमाना दर्शयामास - वे.। सरमा देवशुनी पणिभिर् अपहृतं गोधनं प्रकाशयामास - सा.। सरमा या सरति सा सरला नीतिः - दया.।

*सम्मुख (उपासकों के) तेरे* - **पूर्व्यम् ते।** तव पुरातनं गोधनम् - वे.। पुरा तुभ्यम् - सा.। before thee - W. G.

*ऐश्वर्य को फाड़ निकालता है* - **वाजम् आ दर्षि।** बहु अन्नम् अस्मदर्थम् आ दारितवान् असि - वे.। वाजम् अन्नम्। आ दर्ष्यादरं कृतवान् असि। सा.। वाजं वेगम्। आ दर्षि विदीर्णं करोषि। दया.। much strength thou foundest - G.

**अच्छा कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मघवन् नाधमानम्।**
**ऊतिभिस् तम् इषणो द्युम्नहूतौ नि मायावान् अब्रह्मा दस्युर् अर्त।। ९।।**

अच्छ। कविम्। नृऽमनः। गाः। अभिष्टौ। स्वःऽसाता। मघऽवन्। नाधमानम्।
ऊतिऽभिः। तम्। इषणः। द्युम्नऽहूतौ। नि। मायाऽवान्। अब्रह्मा। दस्युः। अर्त।। ९।।

*ओर क्रान्तदर्शी की, हे मनुष्यों में मन वाले!, जाता है तू, सहायता के निमित्त,*
*ज्ञानप्रकाश की प्राप्ति के निमित्त, हे पवित्र धन वाले!, याचना करते हुए के।*
*समृद्धियों से उसको प्रेरित करता है तू, दीप्तियों के लिये पुकारे जाने पर,*

*नीचे मायावी, वेद में श्रद्धा न रखने वाला, देवों से द्वेष करने वाला, चला जाए।। ९।।*

हे मन से मनुष्यों को चाहने वाले परमेश्वर! हे पवित्र धनों के स्वामी! जब कोई क्रान्तदर्शी मेधावी पुरुष ज्ञानप्रकाश की प्राप्ति के लिये तुझसे याचना करता है, तो तू उसकी सहायता और सुरक्षा के लिये अवश्य उसके पास जाता है। जब तुझमें श्रद्धा रखने वाला, आस्तिकता के भाव वाला वह मनुष्य तेरे नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करता हुआ ज्ञान, प्रकाश आदि की कामना से तुझे पुकारता है, तो तू उसे समृद्धियां प्रदान करके उसके उत्साह को बढ़ाता है। इसके विपरीत छल-कपट के व्यवहार वाला, वेद में श्रद्धा न रखने वाला, देवद्रोही मनुष्य अवनति को प्राप्त हो जाता है।

टि. *हे मनुष्यों में मन वाले* - **नृमणः**। हे नृमणः!, नृषु मनो यस्य स तथोक्तः - वे.। नृभिर् मनुष्यैः मन्यत इति नृमणः। सा.। नृषु मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.। honoured by men - W. Friend of man - G. Satya.

*सहायता के निमित्त* - **अभिष्टौ**। संग्रामे - वे.। कवेर् अभिगमे सति - सा.। अभिष्टौ अभीष्टसिद्धौ - दया.। in battle - G.

*ज्ञानप्रकाश की प्राप्ति के निमित्त* - **स्वर्षाता**। सर्वैः संभजनीये - वे.। स्वर् धनम्। तस्य सातौ दाने निमित्ते। सा.। सुखस्य अन्तं प्राप्तः - दया.। for the sunlight - G.

*प्रेरित करता है तू* - **इषणः**। तं कुत्सम् ऐच्छः - वे.। इषणः प्रेरितवान् असि - सा.। प्रेरयेः - दया.।

*दीप्तियों के लिये पुकारे जाने पर* - **द्युम्नहूतौ**। अन्नार्थे तस्याह्वाने सति - वे.। द्युम्नं धनं हूतिर् आह्वानं यस्यां युधि तस्याम् - सा.। धनयशसोर् हूतिः प्राप्तिर् यस्यां तस्याम् - दया.।

*वेद में श्रद्धा न रखने वाला* - **अब्रह्मा**। मन्त्रवर्जितः - वे.। ऋत्विग्भिः क्रियमाणं सर्वं कर्मजातम् अनुज्ञारूपेण जानन् ऋत्विग्विशेषो ब्रह्मशब्देनोच्यते। स न विद्यते यस्य सो ऽब्रह्मा। वेदोक्तकर्मसु आस्तिक्यरहित इत्यर्थः। सा.। अवेदवित् - दया.। impious - W. prayerless - G.

**आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं**
**भुवत् ते कुत्सः सख्ये निकामः।**
**स्वे योनौ नि षदतं सरूपा**
**वि वां चिकित्सद् ऋतचिद् ध नारी।। १०।। १८।।**

आ। दस्युऽघ्ना। मनसा। याहि। अस्तम्। भुवत्। ते। कुत्सः। सख्ये। निऽकामः।
स्वे। योनौ। नि। सदतम्। सऽरूपा। वि। वाम्। चिकित्सत्। ऋतऽचित्। ह। नारी।। १०।।

*इधर दुष्टों को हिंसित करने वाले मन से आ जा तू, (इस) घर में,*
*हो जाए तेरी कुत्स मित्रता में, अत्यधिक चाहने वाला (तुझको)।*
*अपने घर में भली प्रकार बैठो तुम दोनों, समान रूपों वाले,*
*विशेष रूप से तुम दोनों को जानना चाहती है, ऋत की ज्ञाता नारी।। १०।।*

प्रभु का स्तुतिगान करने वाला स्तोता कुत्स जीवात्मा है। दुष्ट हिंसक शक्तियों के विनाश की इच्छा वाला परमपिता परमेश्वर है, जो अपनी न्यायव्यवस्था के अधीन सज्जनों का परित्राण और दुष्टों

का विनाश करता रहता है। इन दोनों का घर अथवा निवासस्थान यह शरीर अथवा हृदयगुहा है। इस जीवात्मा में उस परमात्मा के साथ मित्रता में रहने की बड़ी उत्कट अभिलाषा है। इसी लिये प्रार्थना की गई है, कि हे मेरे प्रभु! तू मेरे पास आकर इस हृदय रूपी गुहा में मेरे साथ निवास कर। एक ही स्थान पर निवास करने वाले ये आत्मा और परमात्मा समान रूप वाले हैं। एक अन्य स्थान पर भी कहा गया है – द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते (ऋ. १.१६४.२०)। दोनों में समानता इतनी अधिक है, कि सत्यनियमों की ज्ञाता मार्गदर्शिका बुद्धि (नारी) भी उन दोनों को अलग-अलग करके नहीं पहचान सकी। वह भी इन दोनों को जानने के प्रयास में लगी हुई है।

टि. *दुष्टों को हिंसित करने वाले मन से* – **दस्युघ्ना मनसा**। शत्रून् हन्तुम् इच्छता मनसा – वे.। सा.। with a mind resolved on killing the Dasyu - W. G.

*कुत्स* – **कुत्सः**। स्तोता। ऋषिः कुत्सो भवति, कर्ता स्तोमानाम् इत्यौपमन्यवः (नि. ३.११)।। रुरुनामकस्य राजर्षेः पुत्रः कुत्साख्यो राजर्षिः – सा.।

*विशेष रूप से जानना चाहती है* – **वि चिकित्सत्**। व्यचिकित्सत् – वे.। संशयं चकार – सा.। has been perplexed - W. was in doubt - G. finds it difficult to have her choice - Satya.

*ऋत की ज्ञाता नारी* – **ऋतचित् ह नारी**। ऋतचित् नाम इन्द्रस्य भार्या – वे.। ऋतचित् सत्यदर्शनी नारीन्द्रस्य भार्या शची – सा.। या ऋतं सत्यं चिनोति सा किल नरस्य स्त्री – दया.। the truthful woman - W. the faithful lady - G. the lady (the intellect) - Satya.

**यासि कुत्सेन सरथम् अवस्युस् तोदो वातस्य हर्योर् ईशानः।**
**ऋज्रा वाजं न गध्यं युयूषन् कविर् यद् अहन् पार्याय भूषात्।। ११।।**

यासि। कुत्सेन। सऽरथम्। अवस्युः। तोदः। वातस्य। हर्योः। ईशानः।
ऋज्रा। वाजम्। न। गध्यम्। युयूषन्। कविः। यत्। अहन्। पार्याय। भूषात्।। ११।।

*जाता है तू कुत्स के साथ, समान रथ पर, उसकी रक्षा चाहता हुआ,*
*दुष्टों को हिंसित करने वाला, वायु के अश्वों पर शासन करता हुआ।*
*ऋजुगामियों पर, बल को मानो ग्रहण करने योग्य को, ग्रहण करता हुआ,*
*क्रान्तदर्शी (कुत्स) जिस दिन, पार करने के लिये हो जाए (उद्यत)।। ११।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तेरा स्तोता यह जीवात्मा जिस दिन क्रान्तदर्शी होकर इस भवसागर को पार करने के लिये उद्यत हो जाता है, जब आत्मविश्वास के साथ अपना उद्धार आप करने के लिये तैयार हो जाता है (उद्धरेद् आत्मनात्मानं नात्मानम् अवसादयेत् – गीता.), तो दुष्टों को दण्डित करने वाला तू उस अपने स्तोता की रक्षा की कामना वाला होकर और ग्रहण करने योग्य बल को ग्रहण करके वायु के समान तीव्र गति वाले ऋजुगामी अश्वों की गति से उसके साथ उसकी नैया पर सवार हो जाता है और उसका खिवैया बनकर उसे पार लगा देता है।

टि. *दुष्टों को हिंसित करने वाला* – **तोदः**। प्रेरकः (वातस्य) – वे.। तोदस् तोदकः शत्रूणां हिंसकः – सा.। the tormentor (of foes) - W. a goad - G.

*ऋजुगामियों पर* – **ऋज्रा**। ऋजुना मार्गेण – वे.। ऋजुगामिनौ अश्वौ – सा.। the straight-going

steeds - W. the brown steeds - G.

*बल को मानो ग्रहण करने योग्य को ग्रहण करता हुआ* - **वाजं न गध्यं युयूषन्।** अन्नम् इव मिश्रीभावार्हम्। 'गधिर् मिश्रीभावकर्मा' इति यास्कः (५.१५)। भोजनार्हम् इत्यर्थः। यौतिश् च मिश्रीभावकर्मा। सम्भक्तुम् इच्छन्। वे.। गध्यं ग्राह्यं। गध्यं गृह्णातेः। वाजं न अन्नम् इव युयूषन् स्वकीये रथे योजयन्। सा.। गध्यम् ग्रहीतव्यम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन वर्णलोपो ह्रस्य धः। दया.। as if to receive food - W. holding like spoil of capture - G.

*पार करने के लिये हो जाए (उद्यत)* - **पार्याय भूषात्।** पारणाय आपन्निस्तारणाय भूषात् प्रभवते - सा.। to cross over (the sea) of calamity - W. may be present - G.

**कुत्साय शुष्णम् अशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अह्नः कुयवं सहस्रा।**
**सद्यो दस्यून् प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरश् चक्रं वृहताद् अभीके।। १२।।**

कुत्साय। शुष्णम्। अशुषम्। नि। बर्हीः। प्रऽपित्वे। अह्नः। कुयवम्। सहस्रा।
सद्यः। दस्यून्। प्र। मृण। कुत्स्येन। प्र। सूरः। चक्रम्। वृहतात्। अभीके।। १२।।

*स्तोता के लिये शोषक को, दुःखदाता को, नष्ट कर दे तू,*
*प्रारम्भ में दिन के, कुमिश्रक को, सहस्र (सन्तानों) के साथ।*
*अविलम्ब दुष्टों को मसल दे तू (हे इन्द्र!), वज्र के साथ,*
*सूर्य के चक्र (की तरह) नष्ट कर दे तू, निकट में (हमारे)।। १२।।*

हे परम ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! जो उपासक अपने स्तोत्रों से तेरा स्तुतिगान करता है, तू उसकी रक्षा के लिये दूसरों को दुःख देने वाले बलवान् शोषक को, अर्थात् दूसरों का शोषण करके धन का संग्रह करने वाले किसी भी पूँजीपति को, नष्ट कर दे। इसी प्रकार घटिया पदार्थों का उत्तम पदार्थों में मिश्रण करके दूसरों के जीवन से खिलवाड़ करने वाले किसी भी कुमिश्रक को तू उसके हजारों पुत्र-पौत्रों के साथ उसके अभ्युदय, उसकी उन्नति, के आरम्भिक काल में ही नष्ट कर डाल। तू अपनी न्याय-व्यवस्था के द्वारा आसुरी वृत्ति वाले दुष्ट जनों को अविलम्ब इस प्रकार मसल डाल, जिस प्रकार सूर्य का बिम्ब-चक्र अपने तेजों से हमारे निकट में वर्तमान विषैले जीवाणुओं और कीट-पतङ्गों को नष्ट कर डालता है।

टि. *शोषक को, दुःखदाता को* - **शुष्णम् अशुषम्।** शत्रुभिर् अशोष्यम् शुष्णम् नामासुरम् - वे.। शूषम् इति सुखनाम तद्रहितम्। अत्र दीर्घाभावः। शुष्णं शुष्णनामानम् असुरम्। सा.। greedy Śuṣṇa - G.powerful devil of pettiness - Satya.

*प्रारम्भ में दिन के* - **प्रपित्वे अह्नः।** प्राप्तौ प्रातःकाले - वे.। दिवसस्य प्रक्रमे पूर्वाह्ने - सा.।

*कुमिश्रक को* - **कुयवम्।** कुयवं च असुरम् - वे.। सा.। कुत्सिता यवा यस्य तम् - दया.। foe of harvest - G.

*सहस्र (सन्तानों) के साथ* - **सहस्रा।** असुराणां सहस्रेण सह - वे.। सहस्रा बहुभिः परिजनैः सह - सा.। attended by thousands - W. with thy thousand - G.

*वज्र के साथ* - **कुत्स्येन।** कुत्स इति वज्रनामैतत्। कुत्स्य एव कुत्स्यं वज्रम्। सा.। with the

thunderbolt - W. with Kutsa's friend - G.

*सूर्य के चक्र की तरह* - **सूरः चक्रम्।** सूर्यस्य चक्रम् - वे.। प्रेरकस्य सूर्यस्य चक्रम् आयुधम् - सा.। सूर्यः चक्रम् इव वर्तमानं ब्रह्माण्डम् - दया.। with the wheel (of the chariot of) the sun - W. (roll) the chariot-wheel of Sūrya - G.

*निकट में* - **अभीके।** युद्धे - वे.। समीपे संग्रामे वा - सा.। समीपे - दया.। in the battle - W.

**त्वं पिप्रुं मृगयं शूशुवांसम् ऋजिश्वने वैदथिनाय रन्धीः।**
**पञ्चाशत् कृष्णा नि वपः सहस्रात्कं न पुरो जरिमा वि दर्दः।। १३।।**

त्वम्। पिप्रुम्। मृगयम्। शूशुऽवांसम्। ऋजिश्वने। वैदथिनाय। रन्धीः।
पञ्चाशत्। कृष्णा। नि। वपः। सहस्रा। अत्कम्। न। पुरः। जरिमा। वि। दर्दर् इति दर्दः।। १३।।

*तू उदरपूर्त्ति करने वाले को, पशुहिंसक को, बढ़े हुए को बल में,*
*ऋजुगामी के लिये, ज्ञानी की सन्तान के लिये, वश में करता है।*
*पचास को, काली करतूतों को नीचे बिखेर देता है, हजारों को,*
*रूप को जिस प्रकार, गढ़ों को, बुढ़ापा, विदीर्ण कर देता है तू।। १३।।*

हे ऐश्वर्यशाली प्रभो! तू सरल जीवन जीने वाले तथा ज्ञानियों के कुल में उत्पन्न होकर ज्ञानमार्ग का ही अनुसरण करने वाले सज्जन की रक्षा के निमित्त अपनी ही उदरपूर्त्ति करने वाले अर्थात् अपने कमाए हुए धन को स्वयं ही भोगने वाले और दूसरों को कुछ भी न देने वाले तथा जंगली जानवरों का पीछा करके उनकी हिंसा करने वाले हट्टे-कट्टे मनुष्य को नष्ट कर डालता है। तू पचास हजार अर्थात् हजारों, लाखों और करोड़ों काली करतूतों अर्थात् दुष्कर्मों को और उनको करने वाले दुष्ट जनों को नष्ट करके धरती पर बिखेर देता है। बुढ़ापा जिस प्रकार शरीर के अंगों के सौन्दर्य को क्षीण कर देता है, तू उसी प्रकार पापी जनों के गढ़ों को ध्वस्त कर डालता है।

टि. *उदरपूर्त्ति करने वाले को* - **पिप्रुम्।** पिप्रुनामानम् असुरम् - सा.। व्यापकम् - दया.।

*पशुहिंसक को* - **मृगयम्।** मृगयनामानम् असुरम् - सा.। मृगम् आचक्षाणम् - दया.।

*बढ़े हुए को बल में* - **शूशुवांसम्।** वर्धमानम् - वे.। प्रवृद्धम् - सा.। बलेन वृद्धम् - दया.।

*ज्ञानी की सन्तान के लिये* - **वैदथिनाय।** विदथिनः पुत्राय - वे.। सा.। विज्ञानवतो ऽपत्याय - दया.। to the son of Vidathin - G.

*ऋजुगामी के लिये* - **ऋजिश्वने।** ऋजिश्वनाम्ने राज्ञे - सा.। ऋजुगुणैर् वृद्धाय - दया.।

*काली करतूतों को* - **कृष्णा।** कृष्णासुरसम्बद्धानि - वे.। कृष्णवर्णानि रक्षांसि - सा.।

*रूप को जिस प्रकार बुढ़ापा* - **अत्कं न जरिमा।** अत्क इति रूपनाम। यथा जरिमा अङ्गानां श्रियम् - वे.। जरिमा जरा अत्कं न वयोविशेषं रूपम् इव - सा.। as old age (destroys) life - W. as age consumes the garment - G.

**सूरं उपाके तन्वं१ दधानो वि यत् ते चेत्यमृतस्य वर्पः।**
**मृगो न हस्ती तविषीम् उषाणः सिंहो न भीम आयुधानि बिभ्रत्।। १४।।**

सूरः। उपाके। तन्वम्। दधानः। वि। यत्। ते। चेति। अमृतस्य। वर्पः।

मृगः। न। हस्ती। तविषीम्। उषाणः। सिंहः। न। भीमः। आयुधानि। बिभ्रत्।। १४।।

*सूर्य के समीप में विस्तार को अपने जब धारण करता है तू,*
*विशेष रूप से (तब) तेरा जाना जाता है, अमरणधर्मा का रूप।*
*वन्य जन्तु की तरह हाथ वाले की, (शत्रु)बल को जला डालता है तू,*
*सिंह की तरह भयङ्कर (होकर), आयुधों को धारण करता है तू।। १४।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! हम तेरे विस्तार को, तेरे रूप को नहीं जानते। सूर्य के समीप में स्थित तू जब उसे अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है, तब हमें तुझ अमरणधर्मा के वास्तविक विस्तार का, रूप का, बल का विशेष रूप से पता चलता है। जिस प्रकार जंगली हाथी क्रोध में आकर अपनी सूँड से वृक्षों को ध्वस्त कर देता है उसी प्रकार तू अपनी क्रियाशक्ति से दुष्ट पापी जनों के बलों को ध्वस्त कर डालता है। तू सिंह की तरह भयङ्कर रूप धारण करके अपने अस्त्रों का, अपनी शक्तियों का प्रयोग दुष्टों के विनाश के लिये करता है।

टि. *सूर्य के* - **सूरः**। सूर्यः - वे.। प्रेरकस्य सूर्यस्य - सा.। सूर्य इव - दया.।

*विस्तार को* - **तन्वम्**। तनु विस्तार इत्यस्माद् धातो रूपसिद्धिः।। शरीरम् - वे.। सा.।

*विशेष रूप से जाना जाता है रूप* - **वि चेति वर्पः**। विज्ञायते उज्ज्वलं रूपं तेजस्वि - वे.। वर्पो रूपम्, वि चेति व्यचेति अज्ञायत - सा.। thy form is seen expanding - G.

*वन्य जन्तु की तरह हाथ वाले की* - **मृगः न हस्ती**। मार्गणशीलो मत्तः हस्ती इव - वे.। गज-विशेषो मृग इव - सा.। like the cervine elephant - W. thou a wild elephant - G.

*(शत्रु)बल को जला डालता है तू* - **तविषीम् उषाणः**। शत्रुबलं दहन् - वे.। परेषां बलं दहन् - सा.। consuming the strength (of the strong) - W.

**इन्द्रं कामा वसूयन्तो अग्मन्**
**त्स्वर्मीळ्हे न सवने चकानाः।**
**श्रवस्यवः शशमानास उक्थैर्**
**ओको न रण्वा सुदृशीव पुष्टिः।। १५।। १९।।**

इन्द्रम्। कामाः। वसुऽयन्तः। अग्मन्। स्वःऽमीळ्हे। न। सवने। चकानाः।
श्रवस्यवः। शशमानासः। उक्थैः। ओकः। न। रण्वा। सुदृशीऽइव। पुष्टिः।। १५।।

*इन्द्र के पास कामनाओं वाले, धनों को चाहते हुए जाते हैं,*
*सुखों को बरसाने वाले में जैसे यज्ञ में, कामना करते हुए।*
*यशों की कामनाओं वाले, यशोगान करते हुए स्तोत्रों से,*
*घर के समान रमणीय (है जो), सुदर्शनीया के समान पुष्टि के।। १५।।*

वह ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर सुखद आवास के समान और शरीरधारिणी अतीव दर्शनीया पुष्टि के समान रमणीय है। विविध प्रकार की कामनाओं वाले सांसारिक जन धनों को चाहते हुए और यशों की कामना करते हुए अपनी स्तुतियों से गुणगान करते हुए उस इन्द्र की शरण में इस प्रकार पहुँचते हैं, जिस प्रकार सुखों को चाहने वाले अथवा स्वर्ग की कामना वाले मनुष्य सुखों की वर्षा करने वाले

यज्ञ में पहुँच जाते हैं।

टि. *कामनाओं वाले* - **कामाः**। कामयमानाः - वे.। सा.। ये कामयन्ते - दया.। wishes - G.

*सुखों को बरसाने वाले में जैसे* - **स्वर्मीळ्हे न**। युद्धे इव - वे.। सा.। स्वः सुखेन युक्ते संग्रामे। मीळ्ह इति संग्रामनाम (निघ. २.१७)। दया.। as if in the battle - W. in war for light - G.

*कामना करते हुए* - **चकानाः**। लब्धैर् धनैः दीप्यमानाः - वे.। दया.। याचमानाः - सा.।

*यशों की कामनाओं वाले* - **श्रवस्यवः**। अन्नम् इच्छन्तः - वे.। सा.। eager for glory -G.

*घर के समान* - **ओकः न**। गृहम् इव - वे.। स्तोतृणाम् आवास इव भवति - सा.। for he is the refuge of his worshippers - W. he is like home - G.

*रमणीय* - **रण्वा**। रमयिता (गृहम् इव) - वे.। रमणीया (पुष्टिर् इव) - सा.। दया.। grateful - W. (like) sweet (nutrition) - G.

**तम् इद् व इन्द्रं सुहवं हुवेम यस् ता चकार नर्या पुरूणि।**
**यो मावते जरित्रे गध्यं चिन् मक्षू वाजं भरति स्पार्हराधाः।। १६।।**

तम्। इत्। वः। इन्द्रम्। सुऽहवम्। हुवेम। यः। ता। चकार। नर्या। पुरूणि।
यः। माऽवते। जरित्रे। गध्यम्। चित्। मक्षु। वाजम्। भरति। स्पार्हऽराधाः।। १६।।

*उसको ही तुम्हारे लिये इन्द्र को, सु-आहवनीय को बुलाते हैं हम,*
*जो उनको करता है, नरहित कर्मों को, बहुतों को।*
*जो मेरे जैसे स्तुतिगायक के लिये, ग्रहण के योग्य को भी,*
*शीघ्र ऐश्वर्य को लाता है, स्पृहा के योग्य धनों वाला।। १६।।*

हे अमृतपुत्रो! हे सह-उपासको! हम तुम्हारे लिये, तुम्हारी सुरक्षा और समृद्धि के लिये, सुख से पुकारे जाने योग्य उस ऐश्वर्यवान् परमात्मा को ही पुकारते हैं, उसके अतिरिक्त और किसी को नहीं पुकारते, जो इस जगत् में इन इतने नरहितकारी कार्यों को निरन्तर सम्पादित कर रहा है। स्पृहणीय ऐश्वर्यों का स्वामी जो प्रभु हम जैसे स्तुति गायकों के लिये अविलम्ब ग्रहण करने योग्य ऐश्वर्य प्रदान करता है, हम उसी की स्तुति करते हैं।

टि. *सु-आहवनीय को* - **सुहवम्**। स्वाह्वानम् - वे.। शोभनम् आह्वानं यथा भवति तथा - सा.। सुष्ठु प्रशंसितम् - दया.। gracious - W. prompt to listen - G.

*नरहित कर्मों को* - **नर्या**। नृभ्यो हितानि - वे.। दया.। नर्याणि मनुष्यहितानि - सा.।

*स्पृहा के योग्य धनों वाला* - **स्पार्हराधाः**। स्पृहणीयधनः - वे.। सा.। स्पार्हं स्पृहणीयं राधो धनं यस्य सः - दया.। bestowing enviable opulence - W.

**तिग्मा यद् अन्तर् अशनिः पताति कस्मिञ् चिच् छूर मुहुके जनानाम्।**
**घोरा यद् अर्य समृतिर् भवात्यध स्मा नस् तन्वो बोधि गोपाः।। १७।।**

तिग्मा। यत्। अन्तः। अशनिः। पताति। कस्मिन्। चित्। शूर। मुहुके। जनानाम्।
घोरा। यत्। अर्य। सम्ऽऋतिः। भवाति। अध। स्म। नः। तन्वः। बोधि। गोपाः।। १७।।

*तीक्ष्ण जब बीच में, वज्र गिर पड़े,*

*किसी में भी, हे शूर!, क्षण में, मनुष्यों के।*
*घोर जब, हे स्वामिन्!, संग्राम हो जाए,*
*तब हमारे शरीर का, हो जा तू रक्षक।। १७।।*

हे हिंसक शक्तियों के विनाशक परमेश्वर! जब मनुष्यों के बीच में किसी भी क्षण, अप्रत्याशित रूप से, कोई तीक्ष्ण वज्र गिर पड़े, आकाश से उल्कापात हो जाए, कोई भयंकर महामारी आ जाए, आतंक फैलाने वालों के द्वारा बम डाल दिया जाए, अथवा हे स्वामिन्! जिस समय मनुष्यों में घोर युद्ध छिड़ जाए, शत्रु के द्वारा आक्रमण कर दिया जाए, तो तू हमारे शरीरों का रक्षक हो जाना। हे अशरणशरण! तेरे सिवाय भला हमारा और कौन रक्षक हो सकता है?

टि. *वज्र गिर पड़े* - **अशनिः पताति।** अशनिः पतति - वे.। सा.। विद्युत् पतेत् - दया.।

*क्षण में* - **मुहुके।** मोहके संग्रामे - वे.। सा.। मोहप्रापके मुहुर्मुहुः करणीये सङ्ग्रामे - दया.। in conflict - W. G.

*संग्राम हो जाए* - **समृतिः भवाति।** संग्रामः भवति - वे.। सा.। दया.।

*हो जा* - **बोधि।** भवतेर् सत्तार्थस्य लोटि मध्यमैकवचने रूपम् इदम्। सेर् हिर् हेर् धिः। महाप्राणे धकारे परे सति महाप्राणस्य भकारस्याल्पप्राणत्वम्।। गोपायिता भवामीति बुध्यस्वेति - वे.। रक्षकत्वेन बुद्धवान् असि - सा.।

**भुवोऽविता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ।**
**त्वाम् अनु प्रमतिम् आ जगन्मोरुशंसो जरित्रे विश्वध स्याः।। १८।।**

भुवः। अविता। वामऽदेवस्य। धीनाम्। भुवः। सखा। अवृकः। वाजऽसातौ।
त्वाम्। अनु। प्रऽमतिम्। आ। जगन्म। उरुऽशंसः। जरित्रे। विश्वध। स्याः।। १८।।

*हो जा तू रक्षक, देवपूजक के उत्तम विचारों का,*
*हो जा तू सखा, अहिंसक, ऐश्वर्यों की प्राप्ति में।*
*तेरे पीछे उत्तम बुद्धि वाले के, आ गए हैं हम,*
*विस्तीर्ण स्तुतियों वाला, स्तोता के लिये, सदा हो तू।। १८।।*

हे परमेश्वर! मैं तेरा पुजारी और विद्वज्जनों का आदर-सत्कार करने वाला हूँ। जो भी मेरे उत्तम विचार और सत्कर्म हैं, तू सदा उनकी रक्षा कर। तू ऐश्वर्यों की प्राप्ति में सब प्रकार की हिंसाओं से दूर रहता हुआ मेरा प्रिय मित्र हो जा। हम तुझ उत्तम बुद्धि वाले के अनुयायी हो गए हैं, तेरी शरण में आ गए हैं। तू हमें सामर्थ्य प्रदान कर कि हम विस्तीर्ण और महान् स्तुतियों वाले तुझ उपास्य की सदा पूजा-अर्चना करते रहें और तेरी कृपादृष्टि को पाकर आनन्द में रहें।

टि. *देवपूजक के* - **वामदेवस्य।** वामा वननीयाः कमनीया देवा यस्य तस्य।। वामदेवाख्यस्य मन्त्रद्रुष्टुर् मम - सा.। सुरूपयुक्तस्य विदुषः - दया.। of charming intellectuals - Satya.

*उत्तम विचारों का* - **धीनाम्।** कर्मणाम् - वे.। सा.। प्रज्ञानाम् - दया.। the pious acts - W. the holy thoughts - G.

*अहिंसक* - **अवृकः।** रक्षोवर्जितः - वे.। हिंसारहितः - सा.। अस्तेनः - दया.। unfailing - W.

guileless - G.

*ऐश्वर्यों की प्राप्ति में* - **वाजसातौ**। सङ्ग्रामे - वे.। सा.। दया.। in fight for booty - G.

*तेरे पीछे उत्तम बुद्धि वाले के* - **त्वाम् अनु प्रमतिम्**। त्वां प्रमतिम् अनुगच्छामः - वे.। प्रकृष्टज्ञानं त्वां लक्षीकृत्य - सा.।

*सदा* - **विश्वध**। सर्वदा - वे.। सा.। यो विश्वं दधाति तत्सम्बुद्धौ - दया.।

**एभिर् नृभिर् इन्द्र त्वायुभिष् ट्वा मघवद्भिर् मघवन् विश्व आजौ।**
**द्यावो न द्युम्नैर् अभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश् च पूर्वीः।। १९।।**

एभिः। नृऽभिः। इन्द्र। त्वायुऽभिः। त्वा। मघवत्ऽभिः। मघऽवन्। विश्वे। आजौ।
द्यावः। न। द्युम्नैः। अभि। सन्तः। अर्यः। क्षपः। मदेम। शरदः। च। पूर्वीः।। १९।।

*इनके साथ मनुष्यों के, हे इन्द्र!, तुझे चाहने वालों के,*
*तुझको, धनदाताओं के साथ, हे धनदाता!, प्रत्येक दौड़ में।*
*दिन जिस प्रकार प्रकाशों से, अभिभूत करते हुए, अरियों को,*
*रात्रियों को, हर्षित करें हम, शरत्कालों तक भी बहुतों तक।। १९।।*

हे ऐश्वर्य प्रदान करने वाले परमेश्वर!, हम तुझसे प्यार करने वाले, अपने पवित्र धनों को दूसरों को देने वाले, मार्गदर्शन करने वाले जनों के साथ, जीवन की प्रत्येक दौड़ में, प्रत्येक संघर्ष में, जिस प्रकार दिन प्रकाशों के द्वारा रात्रियों को अभिभूत करते हैं, उसी प्रकार अदाता हिंसक जनों को अभिभूत करते हुए, वशीभूत करते हुए, असंख्य वर्षों तक अपनी स्तुतियों से तुझे प्रसन्न करते रहें।

टि. *तुझे चाहने वालों के द्वारा* - **त्वायुभिः**। त्वत्कामैः - वे.। त्वां कामयमानैः - सा.। दया.। with these men who love thee - G.

*प्रत्येक दौड़ में* - **विश्वे आजौ**। आजेः आजयनस्याजवनस्येति वा (या.)। शरपथस्य संग्रामस्य (दुर्ग.)। (नि. ९.२३)। सर्वे ऽपि वयं संग्रामे - वे.। विश्वस्मिन् आजौ संग्रामे - सा.। समग्रे सङ्ग्रामे - दया.। in every battle - G. in every conflict of life - Satya.

*दिन जिस प्रकार प्रकाशों से रात्रियों को* - **द्यावः न द्युम्नैः क्षपः**। दिवसाः इव तेजोभिः अन्धकारम् - वे.। द्युम्नैर् धनैर् द्यावो न द्योतमानाः प्रकाशमाना धनिनो यथा, क्षपः सर्वा रात्रीः - सा.। किरणा इव यशोधनयुक्तैः रात्रीः - दया.। as days subdue the nights with splendour - G.

*अभिभूत करते हुए अरियों को* - **अभि सन्तः अर्यः**। अरीन् अभि भवन्तः - वे.। अरीन् शत्रून् अभि सन्तो ऽभिभवन्तः - सा.। quelling our foes - G.

**एवेद् इन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम्।**
**नू चिद् यथा नः सख्या वियोषद् असन् न उग्रो ऽविता तनूपाः।। २०।।**

एव। इत्। इन्द्राय। वृषभाय। वृष्णे। ब्रह्म। अकर्म। भृगवः। न। रथम्।
नु। चित्। यथा। नः। सख्या। विऽयोषत्। असत्। नः। उग्रः। अविता। तनूऽपाः।। २०।।

*इस प्रकार ही इन्द्र के लिये, सुखवर्षक के लिये, नित्य तरुण के लिये,*
*मन्त्रोच्चारण करते हैं हम, तपःपूत साधक (उच्चारते हैं) जैसे स्तोत्र को।*

*नहीं कभी जिस प्रकार, हमारी मित्रताओं को वियुक्त करे,*
*हो जाए हमारा उग्र (वह सदा) वर्धक, शरीरों का पालक।। २०।।*

उस ऐश्वर्यवान् प्रभु के लिये, जो नित्य तरुण है और जो सुखों की वर्षा करने वाला है, हम उसी प्रकार वेदमन्त्रों का उच्चारण करते हैं जिस प्रकार तपःपूत साधक उसके लिये तीव्र गति वाले स्तोत्रों का उच्चारण करते हैं। वह हमारा सच्चा सखा हमें कभी भी अपनी मित्रताओं से वियुक्त न करे। दुष्टों के लिये उग्र रूप धारण करने वाला वह परमेश्वर हमारी सदा वृद्धि करने वाला और हमारे शरीरों की रक्षा करने वाला होवे।

टि. *मन्त्रोच्चारण करते हैं हम* - **ब्रह्म अकर्म**। स्तोत्रं कृतवन्तः - वे.। स्तोत्रम् अकुर्म - सा.। we offer holy adoration - W. we our prayer have fashioned - G.

*तपःपूत साधक जैसे स्तोत्र को* - **भृगवः न रथम्**। भृगवः इव स्तोतारः रथम्। अथवा भृगव इव रंहणं स्तोत्रम् - वे.। दीप्तास् तक्षाणो रथम् इव - सा.। देदीप्यमानाः शिल्पिनो रथम् इव - दया.।

*नहीं कभी* - **नु चित्**। क्षिप्रम् एव - वे.। दया.। न - सा.। never - W. G.

*वियुक्त करे* - **वियोषत्**। विमिश्रयति - वे.। पृथक् कुर्यात् - सा.। सन्दधीत - दया.। may withdraw - W. G.

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। २१।। २०।।**

नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेर् इति पीपेः।
अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः।। २१।।

*(पहले भी) स्तुति किया गया है, हे इन्द्र!, अब भी स्तुति किया जा रहा है,*
*अन्न को स्तुतिगायक के लिये, नदियों की तरह पूर दे तू।*
*किया गया है तेरे लिये, हे अश्वों के स्वामी!, मन्त्रोच्चारण प्रशंसनीय,*
*बुद्धि से युक्त होवें हम, रथों वाले, सदा धनों के लाभों वाले।। २१।।*

हे परमेश्वर! पूर्व काल में भी विभिन्न स्तोताओं के द्वारा तेरी स्तुति की जाती रही है और अब वर्तमान काल में हम स्तोताओं के द्वारा भी तेरी स्तुति की जा रही है। जिस प्रकार नदियां खेतों को जलों से भर देती हैं, उसी प्रकार तू भी अपने स्तोताओं को अन्न आदि ऐश्वर्यों से परिपूर्ण दे। हे बलों के स्वामी! हमने तेरे लिये अत्यन्त प्रशंसनीय मन्त्रोच्चारण किया है। हम सदा गमन के उत्तम साधनों वाले और उत्तम धनों के लाभों वाले होवें।

टि. पूर दे तू - **पीपेः**। पूरय - वे.। प्यायय। प्रवृद्धं कुरु। सा.। satisfy - W. let power swell high - G.

*प्रशंसनीय* - **नव्यम्**। नूतनम् - वे.। नवतरम् - सा.।

*बुद्धि से युक्त* - **धिया**। कर्मणा - वे.। प्रज्ञारूपया स्तुत्या - सा.। प्रज्ञया कर्मणा वा - दया.। in (thy) praise - W.

*सदा धनों के लाभों वाले* - **सदासाः**। सदा सम्भक्तारः - वे.। सदा सम्भजमानाः - सा.। दासैः

सेवकैः सह वर्तमानाः – दया.। may we be delighted - W. be victors - G.

## सूक्त १७

ऋषिः – वामदेवो गौतमः। देवता – इन्द्रः। छन्दः – १-१४,१६-२१ त्रिष्टुप्, १५ एकपदा विराट्। एकविंशत्यृचं सूक्तम्।

**त्वं म॒हाँ इ॑न्द्र॒ तुभ्यं॑ ह॒ क्षा अनु॑ क्ष॒त्रं मं॒हना॑ मन्यत॒ द्यौः।**
**त्वं वृ॒त्रं शव॑सा जघ॒न्वान् त्सृ॒जः सिन्धूँ॑र् अहि॑ना जग्रसा॒नान्।। १।।**

त्वम्। म॒हान्। इ॒न्द्र॒। तुभ्य॑म्। ह॒। क्षाः। अनु॑। क्ष॒त्रम्। मं॒हना॑। म॒न्य॒त॒। द्यौः।
त्वम्। वृ॒त्रम्। शव॑सा। ज॒घ॒न्वान्। सृ॒जः। सिन्धू॑न्। अहि॑ना। ज॒ग्र॒सा॒नान्।। १।।

*तू महान् (है), हे इन्द्र!, तेरे ही पृथिवी,*
*अनुकूलता से बल को, विशाल, स्वीकार करती है, आकाश (भी)।*
*तू आवरक को वेग से (अपने) मार डालता है, बहा देता है,*
*जलप्रवाहों को, आहन्ता के द्वारा ग्रस्त किये जाते हुओं को।। १।।*

हे ऐश्वर्यवान् परमात्मन्! तू महान् है। विशाल पृथिवी और आकाश ये दोनों तेरे बल को अनुकूलता के साथ स्वीकार करते हैं। तू अपने बल से जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुख के साधनों को ढककर बैठ जाने वाली आवरक शक्तियों को नष्ट कर डालता है। तू जलप्रवाहों को ग्रस लेने वाली अर्थात् उनपर एकाधिकार जमाकर बैठ जाने वाली दुष्ट आसुरी शक्ति को ध्वस्त करके उन्हें सब के लिये बहने के लिये मुक्त कर देता है।

टि. *विशाल* – **मंहना**। महती – वे.। दया.। महत्त्वेन युक्ता सती – सा.। vast - W. with gladness - G. superiority - Satya.

*स्वीकार करती है* – **अनु मन्यत**। अनु अमन्यत – वे.। अनुमतीचकार – सा.। confesses to thee - W. G. accept - Satya.

*बहा देता है* – **सृजः**। अवासृजः – वे.। असृजः। सृष्टवान् असि। सा.।

*जलप्रवाहों को* – **सिन्धून्**। अपः – सा.। नदीः – दया.। floods - G. streams of noble thoughts - Satya.

*आहन्ता के द्वारा ग्रस्त किये जाते हुओं को* – **अहिना जग्रसानान्**। अहिना ग्रस्यमानान् – वे.। वृत्रेण जग्रहाणान् ग्रस्तान्। ग्रस्तेर् लिटः कानज् आदेशः। सा.।

**तव॑ त्वि॒षो जनि॑मन् रेजत॒ द्यौ रेज॒द् भूमि॑र् भि॒यसा॒ स्वस्य॑ म॒न्योः।**
**ऋ॒घा॒यन्त॑ सु॒भ्व१॒ः पर्व॑तास॒ आर्द॒न् धन्वा॑नि स॒रय॑न्त॒ आप॑ः।। २।।**

तव॑। त्वि॒षः। जनि॑मन्। रे॒ज॒त॒। द्यौः। रेज॑त्। भूमिः॑। भि॒यसा॑। स्वस्य॑। म॒न्योः।
ऋ॒घा॒यन्त॑। सु॒ऽभ्वः॑। पर्व॑तासः। आर्द॑न्। धन्वा॑नि। स॒रय॑न्ते। आप॑ः।। २।।

*तेरे तेज के प्रादुर्भाव पर, काँपने लगता है आकाश,*
*काँपने लगती है भूमि, भय से तेरे क्रोध के।*

*बाधित हो जाते हैं भली प्रकार प्रतिष्ठित पर्वत (भी),*
*गीला करते हुए मरुस्थलों को, बहने लगते हैं जल।। २।।*

हे परमेश्वर! तेरे प्रताप का प्रादुर्भाव होते ही पापी मन रूपी आकाश काँपने लगता है, तेरे क्रोध के भय से परोपकाररहित आलसी शरीर रूपी भूमि काँपने लगती है, अज्ञान के सुदृढ़ पर्वत हिल जाते हैं और उदात्त विचार रूपी जल ऊसर बुद्धि रूपी मरुभूमियों को सींचते हुए बहने लगते है।

टि. तेज के - **त्विषः**। तेजसः - वे.। दीप्यमानस्य तव - सा.। प्रतापात् - दया.।

*प्रादुर्भाव पर* - **जनिमन्**। जन्मनि - वे.। सा.। at the birth of thee - W. G. at the birth (of thine effulgence) - G. on your awakening - Satya.

*तेरे क्रोध के* - **स्वस्य मन्योः**। त्वदीयस्य क्रोधस्य - वे.।

*बाधित हो जाते हैं* - **ऋघायन्त**। ऋघायतिर् तिष्ठत्यर्थः - वे.। अबाध्यन्त - सा.। दया.। were confined - W. shook in agitation - G. get shaky - Satya.

*भली प्रकार प्रतिष्ठित* - **सुभ्वः**। शोभनभवनाः - वे.। महान्तः - सा.। steadfast - G.

*गीला करते हुए* - **आर्दन्**। (धनूंषि) हिंसन्ति - वे.। आर्दन् प्राणिनां पिपासारूपां पीडाम् अहिंसन् - सा.। हिंसन्ति - दया.। गीला करते हुए - सात.। destroyed - W. were flooded - G.

**भिनद् गिरिं शवसा वज्रम् इष्णन्नाविष्कृण्वानः सहसान ओजः।**
**वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जवसा हतवृष्णीः।। ३।।**

भिनत्। गिरिम्। शवसा। वज्रम्। इष्णन्। आविःऽकृण्वानः। सहसानः। ओजः।
वधीत्। वृत्रम्। वज्रेण। मन्दसानः। सरन्। आपः। जवसा। हतऽवृष्णीः।। ३।।

*भेद डालता है पर्वत को बल से, वज्र को प्रेरित करता हुआ,*
*प्रकाशित करता हुआ, अभिभूत करने वाला, पराक्रम को (अपने)।*
*मार डालता है आवरक को वज्र से अपने, हर्षित होता हुआ,*
*बह निकलते हैं जल वेग से, हत हो जाने पर वर्षक मेघ वाले।। ३।।*

ऐश्वर्यों का स्वामी, हिंसक जनों को अभिभूत करने वाला परमात्मा अपने ज्ञान रूपी वज्र से प्रहार करके पराक्रम को प्रकट करता हुआ अपने बल से अज्ञान रूपी पर्वत को भेद डालता है। वह हर्षित होता हुआ अपनी व्यवस्था के द्वारा आवरक शक्तियों को नष्ट कर डालता है और जब आवरक शक्ति रूपी मेघ छिन्न-भिन्न हो जाते हैं तो जलरूपी सुखसाधन वेग से सर्वत्र प्रवाहित होने लगते हैं।

टि. *भेद डालता है* - **भिनत्**। अभिनत्। बिभेद। सा.। भिनत्ति विदृणाति - दया.।

*अभिभूत करने वाला* - **सहसानः**। परेषाम् ओजः अभिभवन् - वे.। शत्रूणाम् अभिभवन् तेजः - सा.। सहमानः। अत्र वर्णव्यत्ययेन मस्य सः। दया.। the subduer of foes - W.

*मार डालता है* - **वधीत्**। अवधीत् - वे.। जघान - सा.।

*बह निकलते हैं* - **सरन्**। असरन् - वे.। अगच्छन् - सा.।

*हत हो जाने पर वर्षक मेघ के* - **हतवृष्णीः**। वृत्रे हते ततो निर्जग्मुर् इत्यर्थः - वे.। हतो वृषा वृत्रो यासां ता हतवृष्ण्यः - सा.। हतो वृषा मेघो यासां ताः - दया.।

**सुवीरस् ते जनिता मन्यत द्यौर् इन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत्।**
**य ईं जजान स्वर्यं सुवज्रं अनपच्युतं सदसो न भूम।। ४।।**

सुऽवीरः। ते। जनिता। मन्यत। द्यौः। इन्द्रस्य। कर्ता। स्वपःऽतमः। भूत्।
यः। ईम्। जजान। स्वर्यम्। सुऽवज्रम्। अनपऽच्युतम्। सदसः। न। भूम।। ४।।

*शोभन पुत्र वाला तेरा जनक माना जाता है, द्योतमान (प्रजापति),*
*इन्द्र का कर्ता, शोभन कर्म करने वालों में श्रेष्ठ हो गया है।*
*जो इसको उत्पन्न करता है, सर्वहितकर को, शोभन वज्र को,*
*न डिगने वाली को स्थान से (अपने), जैसे पृथिवी को।। ४।।*

प्रजाओं का पालक ज्यातिर्मय परमेश्वर स्वयं ही अपना पिता है और स्वयं ही अपना पुत्र है। वह स्वयं को उत्पन्न करने वाला स्वयंभू शोभन कर्म करने वालों में श्रेष्ठ माना जाता है। जिस प्रकार परमेश्वर ने अपने स्थान से चलायमान न होने वाली पृथिवी को उत्पन्न किया है, उसी प्रकार उसने चलायमान न होने वाली, सदा स्थिर रहने वाली, सब का हित करने वाली, संसारचक्र को चलाने वाली व्यवस्था का निर्माण भी किया है।

टि. *द्योतमान (प्रजापति)*- **द्यौः**। द्योतमानः स प्रजापतिः - सा.।

*शोभन कर्म करने वालों में श्रेष्ठ* - **स्वपस्तमः**। अतिशयेन शोभनकर्मा - वे.। सा.। दया.।

*सर्वहितकर को* - **स्वर्यम्**। सर्वहितम् - वे.। ऋत्विगादिभिः स्तुत्यम् - सा.। स्वर्हितम् - दया.। who roareth - G.

*न डिगने वाली को स्थान से (अपने)* - **अनपच्युतं सदसः**। अनपभ्रष्टं परिषदः - वे.। सदसः स्वकीयात् स्वर्गाख्यात् स्थानाद् अनपच्युतम् विनाशरहितम् - सा.। irremovable from his station - W. G.

*जैसे पृथिवी* - **न भूम**। इव भूमानम् - वे.। नेति समुच्चयार्थे। भूम भूम्ना महत्त्वेन युक्तम् एनम् - सा.। and endowed with greatness - W. like earth - G.

**य एक इच् च्यावयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः।**
**सत्यम् एनम् अनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः।। ५।। २१।।**

यः। एकः। इत्। च्यवयति। प्र। भूम। राजा। कृष्टीनाम्। पुरुऽहूतः। इन्द्रः।
सत्यम्। एनम्। अनु। विश्वे। मदन्ति। रातिम्। देवस्य। गृणतः। मघोनः।। ५।।

*जो अकेला ही च्युत कर देता है, प्रकर्ष से महानों को,*
*राजा प्रजाओं का, बहुतों के द्वारा आह्वान किया हुआ, इन्द्र।*
*सच-मुच इसके पीछे ही सब, आनन्दित होते हैं,*
*दान की (प्रशंसा करते हुए), प्रकाशमान के, स्तूयमान के, ऐश्वर्यवान् के।। ५।।*

वह परमेश्वर सब से महान् है। वह बड़े-बड़े बलवानों को अपने बल से धराशायी कर देता है। असंख्य प्रजाओं के द्वारा अपनी रक्षा के लिये पुकारा जाने वाला वह जगदीश समस्त प्रजाओं का शासक है। सचमुच सब ही लोग दिव्यता आदि गुणों से युक्त, सब के द्वारा स्तुति किये जाने वाले

और ऐश्वर्यों के स्वामी उस परमात्मा के दान की प्रशंसा करते हुए उसकी प्रसन्नता में ही प्रसन्न होते हैं। उसे अप्रसन्न करके कोई भी मनुष्य प्रसन्न नहीं हो सकता।

टि. *महानों को* - **भूम**। शत्रूणां भूमानम् - वे.। भूतं निष्पन्नं शत्रुभ्यो भयम् - सा.। many - W. the world of creatures - G. many evils - Satya.

*सचमुच* - **सत्यम्**। अच्छलेनैव - वे.। सत्यम् एव - सा.। सत्सु साधुम् - दया.।

*आनन्दित होते हैं* - **मदन्ति**। स्तुवन्ति - सा.। glorify him - W. rejoice in him - G.

*दान की (प्रशंसा करते हुए)* - **रातिम्**। दातारं मनुष्यम् - वे.। बन्धुम् एनम् इन्द्रं लक्षीकृत्य - सा.। दातारम् - दया.। (praising) the munificence - W. (extolling) the boons - G.

*स्तूयमान के* - **गृणतः**। स्तूयमानस्य - वे.। स्तुवतः - सा.।

**स॒त्रा सोमा॑ अभवन्नस्य॒ विश्वे॑ स॒त्रा मदा॑सो बृह॒तो मदि॑ष्ठाः।**
**स॒त्राभ॑वो॒ वसु॑पति॒र् वसू॑नां॒ दत्रे॒ विश्वा॑ अधिथा इन्द्र कृ॒ष्टीः॥ ६॥**

स॒त्रा। सोमाः॑। अ॒भ॒व॒न्। अ॒स्य॒। विश्वे॑। स॒त्रा। मदा॑सः। बृ॒ह॒तः। मदि॑ष्ठाः।
स॒त्रा। अ॒भ॒वः॒। वसु॑ऽपतिः। वसू॑नाम्। दत्रे॑। विश्वाः॑। अ॒धि॒थाः॒। इ॒न्द्र॒। कृ॒ष्टीः॥ ६॥

*सचमुच सोम हैं इसके, सब के सब,*
*सचमुच आनन्द (इसी) महान् के (हैं), अतिशय हर्षप्रद।*
*सचमुच है तू (हे इन्द्र!) वसुपति वसुओं का,*
*दान में (अपने) सब को धारण कर रहा है तू, हे इन्द्र!, प्रजाओं को॥ ६॥*

सचमुच सभी भक्तिरस रूपी सोम भक्तों के द्वारा इसी परमेश्वर को समर्पित किये जाते हैं। अत्यन्त प्रसन्नता प्रदान करने वाले सभी आनन्द सचमुच इस महान् प्रभु के ही हैं, क्योंकि यही आनन्दस्वरूप है। हे परमेश्वर! सचमुच तू ही सकल धनों का स्वामी है। हे जगदीश! तू समस्त प्रजाओं को अपने धनों के दान से ही धारण कर रहा है।

टि. *सचमुच* - **सत्रा**। सत्यम् एव - वे.। सा.।

*आनन्द* - **मदासः**। सोमाः - वे.। मदकराः सोमाः - सा.। आनन्दाः - दया.।

*वसुपति वसुओं का* - **वसुपतिः वसूनाम्**। वसूनां पतिः - वे.। वसुपतिः धनपतिः। न केवलं धनपतिः किन्तु वसूनां सर्वेषां पश्वादीनां धनानां पतिः। सा.। धनस्य स्वामी धनाढ्यानाम् - दया.। the lord of wealth, of (all sorts of) treasures - W. Treasure-Lord of treasures - G. For 'Extention of Meaning through Pleonasm' see author's Semantic Change in Sanskrit, pp.79-80.

*दान में* - **दत्रे**। हविषः प्रदातरि मयि - वे.। धने निमित्तभूते सति - सा.। दातव्ये हिरण्यादिधने सति - दया.। by the gift of riches - W.

*धारण कर रहा है तू* - **अधिथाः**। अधिधेहि - वे.। धारयसि - सा.। धारयेथाः - दया.। supporteth - W. thou lettest share - G.

**त्वम् अध॑ प्रथ॒मं जाय॑मा॒नो ऽमे॒ विश्वा॑ अधिथा इन्द्र कृ॒ष्टीः।**

**त्वं प्रति प्रवत आशयानम् अहिं वज्रेण मघवन् वि वृश्चः॥ ७॥**

त्वम्। अर्ध। प्रथमम्। जायमानः। अमे। विश्वाः। अधिथाः। इन्द्र। कृष्टीः।
त्वम्। प्रति। प्रऽवतः। आऽशयानम्। अहिम्। वज्रेण। मघऽवन्। वि। वृश्चः॥ ७॥

*तू, अपि च, सब से पूर्व प्रादुर्भूत होने वाला, (जगत् में),*
*भय में सब को धारण करता है, हे इन्द्र!, प्रजाओं को।*
*तू, लक्ष्य बनाकर निम्न स्थानों को, सब ओर लेटे हुए को,*
*आहन्ता को, वज्र से, हे ऐयश्वर्यवान्!, छिन्न-भिन्न कर डालता है॥ ७॥*

हे ऐश्वर्यवान् परमात्मन्! सब से पूर्व प्रादुर्भूत होने वाला तू, इस जगत् में आसुरी शक्तियों के भय में जीवन बिताने वाली सभी प्रजाओं की, उनको भय से मुक्त करके, रक्षा करता है। हे ऐश्वर्यों के स्वामी! निम्न स्थानों को अपना लक्ष्य बनाकर, अर्थात् आलस्य आदि दुर्बलताओं के माध्यम से मनुष्य के अन्दर प्रवेश करके घात लगाकर लेटी हुई हिंसक आसुरी शक्तियों को तू अपनी न्यायव्यवस्था के द्वारा छिन्न-भिन्न कर डालता है। तू दुर्जनों का हिंसक और सज्जनों का रक्षक है।

टि. *भय में* - **अमे**। भये - वे.। वृत्रनिमित्ते भये सति - सा.। गृहे - दया.।(thou struckest) terror (into all the people) - G.

*लक्ष्य बनाकर निम्न स्थानों को* - **प्रति प्रवतः**। निम्नान् प्रदेशान् लक्षीकृत्य - वे.। प्रवणान् उदक- वतो देशान् लक्षीकृत्य - सा.। दया.। against the water-floods of heaven - G.

*छिन्न-भिन्न कर डालता है* - **वि वृश्चः**। छिन्नवान् असि - सा.। छिन्धि - दया.।

**सत्राहणं दाधृषिं तुम्रम् इन्द्रं महाम् अपारं वृषभं सुवज्रम्।**
**हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः॥ ८॥**

सत्राऽहनम्। दधृषिम्। तुम्रम्। इन्द्रम्। महाम्। अपारम्। वृषभम्। सुऽवज्रम्।
हन्ता। यः। वृत्रम्। सनिता। उत। वाजम्। दाता। मघानि। मघऽवा। सुऽराधाः॥ ८॥

*एक साथ मार डालने वाले की, अत्यन्त धर्षक की, शत्रुप्रेरक की, इन्द्र की,*
*महान् की, अपार की, सुखवर्षक की, शोभन वज्रधारक की, (स्तुति करते हैं हम)।*
*हन्ता है जो आवरक का, और विभाजक अन्न का,*
*दाता ऐश्वर्यों का, उत्तम धनदाता, शोभन धनों का स्वामी॥ ८॥*

हम उस परम ऐश्वर्यवान् परमात्मा की स्तुति करते हैं, जो दुष्ट हिंसक जनों को एक मुश्त ही मार डालता है, जो दुष्ट आचरण वालों का अत्यन्त धर्षक है, जो शत्रुओं को खदेड़ डालने वाला है, जो सब से महान् है, जिसका कोई भी पारावार नहीं पा सकता, जो उपासकों पर सुखों की वर्षा करने वाला है, जो उत्तम न्यायव्यवस्था को धारण करने वाला है, जो सब सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्तियों का हनन करने वाला है, जो अन्न आदि भोग्य पदार्थों को बाँटने वाला है, जो ऐश्वर्यों को देने वाला है और जो शोभन धनों का स्वामी और उत्तम धनदाता है।

टि. *एक साथ मार डालने वाले की* - **सत्राहणम्**। सत्यम् एव शत्रूणां हन्तारम् - वे.। बहूनां शत्रूणां हन्तारम् - सा.। यः सत्येनासत्यं हन्ति - दया.। the ever slaying - G.

*शत्रुप्रेरक की* - **तुम्रम्**। तुम्रिः प्रेरणकर्मा, शत्रूणां प्रेरयितारम् - वे.। सा.। दया.। furious - G.

*विभाजक* - **सनिता**। दाता - वे.। (हन्ता सनितेति) अत्र सर्वत्र तृनन्तत्वान् न लोकाव्ययेति षष्ठीप्रतिषेधे सति द्वितीयैव भवति। सा.। विभाजकः - दया.।

*शोभन धनों का स्वामी* - **सुराधाः**। शोभनधनः - वे.। सा.। धर्म्येण सञ्चितधनः - दया.।

**अयं वृतश् चातयते समीचीर् य आजिषु मघवा शृण्व एकः।**
**अयं वाजं भरति यं सनोत्यस्य प्रियासः सख्ये स्याम।। ९।।**

अयम्। वृतः। चातयते। सम्ऽईचीः। यः। आजिषु। मघऽवा। शृण्वे। एकः।
अयम्। वाजम्। भरति। यम्। सनोति। अस्य। प्रियासः। सख्ये। स्याम।। ९।।

*यह घिरकर आई शत्रुसेनाओं को भगा देता है, संगठितों को,*
*जो संघर्षों में, धन देने वाला, सुना जाता है अकेला।*
*यह (उसके लिये) ऐश्वर्य को लाता है, जिसे देना चाहता है,*
*इस के प्रिय (बनकर), मित्रता में रहें हम (सदा ही इसकी) ।। ९।।*

यह ऐश्वर्य प्रदान करने वाला परमेश्वर जीवन के सभी संघर्षों में अकेला ही विजय प्राप्त कराकर उत्तम धन प्राप्त कराने के लिये प्रसिद्ध है। यह हिंसक आसुरी शक्तियों की संगठित सेनाओं को भी अकेला ही परास्त कर डालता है। यह जिसे भी ऐश्वर्यों की प्राप्ति कराना चाहता है, उसे कराकर ही छोड़ता है। ऐसे इस जगदीश्वर की मित्रता में हम इसके प्रिय बनकर रहें। इसके मित्र बनकर रहने में ही भलाई और बुद्धिमत्ता है।

टि. *घिरकर आई शत्रुसेनाओं को* - **वृतः**। परिवृण्वतीः परसेनाः - वे.। वृण्वन्त्याच्छादयन्ति लोकान् इति वृतः शत्रुसेनास् ताः - सा.। hosts - W.

*भगा देता है* - **चातयते**। विनाशयति - वे.। सा.। विज्ञापयति - दया.। destroys - W. frightened away - G.

*संगठितों को* - **समीचीः**। सम्भूयागच्छन्तीः - वे.। सङ्गताः - सा.। assembled - W.

*संघर्षों में* - **आजिषु**। सङ्ग्रामेषु - वेङ्कटादयः।

*सुना जाता है* - **शृण्वे**। श्रूयते - वे.। सा.। is renowned - W. G.

**अयं शृण्वे अध जयन्नुत घ्नन्नयम्**
**उत प्र कृणुते युधा गाः।**
**यदा सत्यं कृणुते मन्युम् इन्द्रो**
**विश्वं दृळ्हं भयत एजद् अस्मात्।। १०।। २२।।**

अयम्। शृण्वे। अध। जयन्। उत। घ्नन्। अयम्। उत। प्र। कृणुते। युधा। गाः।
यदा। सत्यम्। कृणुते। मन्युम्। इन्द्रः। विश्वम्। दृळ्हम्। भयते। एजत्। अस्मात्।। १०।।

*यह सुना जाता है अपि च, विजित करता हुआ और हिंसित करता हुआ,*
*और यह कर लेता है वश में, युद्ध में जीतकर गौओं को।*

*जब सचमुच ही, प्रकट करता है क्रोध को इन्द्र,*
*प्रत्येक स्थावर डरने लगता है, (और) जङ्गम इससे।। १०।।*

यह बात विश्वविख्यात है, कि परमेश्वर दुष्ट आसुरी शक्तियों को पराभूत करके उनका हनन कर डालता है। यह देवों और असुरों के मध्य चलने वाले संघर्ष में असुरों के द्वारा बलात् अपने अधिकार में किये हुए जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों को उन्हें जीतकर अपने वश में कर लेता है। यह ऐश्वर्यों का स्वामी प्रभु जब सचमुच अपने क्रोध को प्रकट करता है, तो स्थावर और जङ्गम प्रत्येक पदार्थ भय से ग्रस्त हो जाता है। कठोपनिषद् में कहा गया है - इसके भय से अग्नि तपती है, सूर्य इसी के भय से तपता है, विद्युत् वायु और काल भी इसी के भय से दौड़-दौड़ कर अपने कार्यों को कर रहे हैं 'भयाद् अस्याग्निस् तपति भयात् तपति सूर्यः। भयाद् इन्द्रश् च वायुश् च मृत्युर् धावति पञ्चमः।।' कठ.उप. ६.३।

टि. *कर लेता है वश में* - **प्र कृणुते**। अत्र प्रपूर्वः करोतिः परिग्रहे वर्तते। विजित्य वशे कुरुते इत्यर्थः।। प्रकाशयति - वे.। शत्रुसकाशाद् आहरति - सा.। recovers - W. winneth - G.

*युद्ध में जीतकर गौओं को* - **युधा गाः**। युद्धेन आत्मीयाः गाः - वे.। युद्धेन पशून् - सा.।

*स्थावर (और) जङ्गम* - **दृळ्हम् एजत्**। स्थावरं जङ्गमं च - वे.। दृढं स्थिरं स्थावररूपम् एजत् कम्पमानं जङ्गमरूपम् - सा.। all that is fixed and all that moveth - G.

**सम् इन्द्रो गा अजयत् सं हिरण्या सम् अश्विया मघवा यो ह पूर्वीः।**
**एभिर् नृभिर् नृतमो अस्य शाकै रायो विभक्ता सम्भरश् च वस्वः।। ११।।**

सम्। इन्द्रः। गाः। अजयत्। सम्। हिरण्या। सम्। अश्विया। मघऽवा। यः। ह। पूर्वीः।
एभिः। नृऽभिः। नृऽतमः। अस्य। शाकैः। रायः। विऽभक्ता। सम्ऽभरः। च। वस्वः।। ११।।

*सम्यक् इन्द्र गौओं को जीतता है, सम्यक् सुवर्णों को,*
*सम्यक् अश्वसमूहों को, ऐश्वर्यवान्, जो (जीतता है) बहुत सेनाओं को।*
*इन नेताओं के साथ उत्तम नेता, अपनी शक्तियों से,*
*धन का विभाजक (भी है), संभर्ता भी (है) धन का।। ११।।*

जो ऐश्वर्यवान्, धनों का स्वामी प्रभु दुष्ट हिंसक आसुरी शक्तियों की बहुसंख्य सेनाओं को अनायास ही विजित कर लेता है, धनों को सब में बाँटने वाला और धनों के संभारों का संग्रह करने वाला, उत्तम नेता वह जगदीश अपने इन उपासक जनों की स्तुतियों से प्रोत्साहित होकर अपनी सहज शक्तियों के द्वारा उन आसुरी शक्तियों से सब सुखसाधनों को जीत लेता है, वह उनसे प्रकाश और ज्ञान की रश्मियों को जीत लेता है, वह उनसे बलसमूहों को जीत लेता है।

टि. *अश्वसमूहों को* - **अश्विया**। अश्वसमूहान् - वे.। सा.। horses - W. G.

*बहुत सेनाओं को* - **पूर्वीः**। पूर्वीः सेनाः - वे.। बह्वीः शत्रुसेनाः - सा.। पूर्वीः प्राचीनाः प्रजाः - दया.। many (enemies) - W. breaketh forts in pieces - G.

*अपनी शक्तियों से* - **अस्य शाकैः**। अस्य इन्द्रस्य सहायैः - वे.। शाकैः सामर्थ्यैः - सा.। सैन्यस्य शक्तिभिः - दया.। by his energies - W. with (these men) who help him - G.

*संभर्ता* - **संभरः।** सम्भरणशीलः - वे.। संभर्ता धारकः - सा.। यः सम्भरति सः - दया.। bestower - W. gathering - G.

**कियत् स्विद् इन्द्रो अध्येति मातुः कियत् पितुर् जनितुर् यो जजान।**
**यो अस्य शुष्मं मुहुकैर् इयर्ति वातो न जूतः स्तनयद्भिर् अभ्रैः।। १२।।**

कियत्। स्वित्। इन्द्रः। अधि। एति। मातुः। कियत्। पितुः। जनितुः। यः। जजान।
यः। अस्य। शुष्मम्। मुहुकैः। इयर्ति। वातः। न। जूतः। स्तनयत्ऽभिः। अभ्रैः।। १२।।

*कितना (बल) इन्द्र प्राप्त करता है माता से,*
*कितना पिता से, जनक से, जो (इन्द्र) उत्पन्न करता है (जगत् को)।*
*जो (पिता) इसके बल को , बार-बार प्रेरित करता है,*
*वायु जैसे प्रेरित किया जाता है, गर्जना करने वाले मेघों से।। १२।।*

पृथिवी को जगत् की माता और द्यौ को जगत् का पिता कहा जाता है। प्रश्न यह है, कि स्वयं पृथिवी और आकाश को उत्पन्न करने वाला और अनेकशः उनके बल को बढ़ाने वाला परमेश्वर माता पृथिवी से और पिता द्यौ से कितना बल प्राप्त करता है, अपने कार्यों के सम्पादन में कितना सहयोग प्राप्त कर सकता है। इसका उत्तर यह है, कि कोई विशेष नहीं। जिस प्रकार गर्जना करने वाले मेघ अपनी गर्जनाओं से वायु को प्रेरित करके उसकी गति को और अधिक बढ़ा देते हैं, उसी प्रकार पृथिवी और द्यौ अर्थात् पृथिवी पर निवास करने वाले मनुष्य और द्युलोक में निवास करने वाले देवता अपनी स्तुतियों से परमेश्वर को प्रेरित करके उसे और अधिक प्रोत्साहित कर देते हैं। वह सर्वशक्तिमान् तो अपने सब कार्यों को करने में स्वयं समर्थ है, मनुष्यों और देवों से तो उसे केवल नैतिक समर्थन ही अपेक्षित है।

टि. *कितना* - **कियत् स्वित्।** कियद् यावत् बलम् - सा.। some portion (of his strength) - W. What is the care (of Indra) - G.

*प्राप्त करता है* - **अधि एति।** अधि गच्छति। स्वतेजसा कियन्तं देशं प्रकाशयन् गच्छति इत्यर्थः। वे.। अधिगच्छति - सा.। स्मरति - दया.। derives - W.

*इसके बल को* - **अस्य शुष्मम्।** इन्द्रस्य बलम् - वे.। अस्य जगतो बलम् - सा.।

*बार-बार प्रेरित करता है* - **मुहुकैः इयर्ति।** मुहुर्मुहुः प्रेरयति - वे.। सा.।

*मेघों से* - **अभ्रैः।** मेघैः - वे.। सा.। घनैः सह - दया.।

**क्षियन्तं त्वम् अक्षियन्तं कृणोतीयर्ति रेणुं मघवा समोहम्।**
**विभञ्जनुर् अशनिमाँ इव द्यौर् उत स्तोतारं मघवा वसौ धात्।। १३।।**

क्षियन्तम्। त्वम्। अक्षियन्तम्। कृणोति। इयर्ति। रेणुम्। मघऽवा। सम्ऽओहम्।
विऽभञ्जनुः। अशनिमान्ऽइव। द्यौः। उत। स्तोतारम्। मघऽवा। वसौ। धात्।। १३।।

*निवास वाला एक को, निवासहीन (दूसरे को) बना देता है वह,*
*उड़ा देता है वह (पाप)रज को, ऐश्वर्यों का स्वामी, घनीभूत को।*
*विशेष भञ्जक (दुष्टों का), विद्युत् से युक्त जैसे अन्तरिक्ष,*

*और स्तोता को, ऐश्वर्यों का स्वामी, धन में स्थापित कर देता है।। १३।।*

कर्मों के फलों को देने वाला वह परमेश्वर शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार किसी उजड़े हुए को बसा देता है और किसी बसे हुए को उजाड़ देता है। ऐश्वर्यों का स्वामी वह परमात्मा धर्मपरायण जनों के घनीभूत पापों को धूली के समान फूंक मारकर उड़ा देता है। जिस प्रकार अन्तरिक्ष विद्युत् के प्रहार से मेघों को छिन्न-भिन्न कर देता है, उसी प्रकार वह परमेश्वर दुष्ट आसुरी शक्तियों को अपनी दण्ड-व्यवस्था के द्वारा नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है। इसके विपरीत वह धर्मभीरु स्तोताओं को उत्तम धनों में स्थापित कर देता है।

टि. *निवास वाला एक को निवासहीन (दूसरे को) बना देता है वह* - **क्षियन्तम् त्वम् अक्षियन्तम् कृणोति।** निवसन्तम् अपि अनिवसन्तम् एकं करोति - वे.। क्षियन्तं धनराहित्येन क्षीयमाणं त्वम् एकं जनम् अक्षियन्तं धनेनाक्षीयमाणं करोति - सा.। निवसन्तं त्वं अक्षियन्तं न निवसन्तं कृणोति - दया.। makes one man destitute, another prosperous - W. makes the settled man unsettled - G.

*(पाप)रज को घनीभूत को* - **रेणुम् समोहम्।** संग्रामोत्थं रेणुं समूह्य - वे.। समोहं समूढं रेणुं पापम् - सा.। अपराधं सम्यग् गूढम् - दया.। accumulated dust (of sin) - W. dust that he hath swept together - G.

*विद्युत् से युक्त जैसे अन्तरिक्ष* - **अशनिमान् इव द्यौः।** अशनिना युक्तम् अन्तरिक्षम् इव - सा.। like the heaven with the thunderfbolt - W. like Heaven armed with lightning - G.

**अ॒यं च॒क्रम् इ॑षण॒त् सूर्य॑स्य॒ न्येत॑शं रीरमत् ससृमा॒णम्।**
**आ कृ॒ष्ण ईं॑ जुहुरा॒णो जि॑घर्ति त्व॒चो बु॒ध्ने रज॑सो अ॒स्य योनौ॑।। १४।।**

अ॒यम्। च॒क्रम्। इ॒ष॒ण॒त्। सूर्य॑स्य। नि। एत॑शम्। री॒र॒म॒त्। स॒सृ॒मा॒णम्।
आ। कृ॒ष्णः। ईम्। जु॒हु॒रा॒णः। जि॒घ॒र्ति॒। त्व॒चः। बु॒ध्ने। रज॑सः। अ॒स्य। योनौ॑।। १४।।

*यह (इन्द्र) चक्र को प्रेरित करता है (प्रतिदिन) सूर्य के,*
*नितरां सूर्य के अश्व को रोकना चाहता है (शत्रु), गमन करते हुए को।*
*सब ओर से काले वर्ण वाला इसको, टेढ़ी गति वाला, स्पर्श करना चाहता है,*
*आवरक के मूलाधार पर (वार करता है इन्द्र), अन्तरिक्षलोक वाले इसके स्थान में।। १४।।*

वह परमेश्वर इस सूर्य के चक्र को प्रतिदिन प्रेरित करता रहता है। उसकी प्रेरणा से ही यह सूर्य नित्य अपनी यात्रा पर आगे बढ़ता रहता है। कुटिल गति वाला कृष्ण ग्रह, अर्थात् ग्रह की काली छाया इसे स्पर्श करना चाहती है, इसे ग्रस लेना चाहती है। वह सूर्य के इस गतिमान् अश्व को बिल्कुल रोक देना चाहती है, अर्थात् सूर्य की यात्रा में बाधा डालना चाहती है। तब वह परमेश्वर उसकी सहायता के लिये आता है। वह इस अन्तरिक्षलोक के स्थान में सूर्य को अपने काले आवरण से ढक लेना चाहने वाली इस आसुरी शक्ति के मूलाधार पर आक्रमण करके इसे छिन्न-भिन्न करके पीछे रोक देता है, और सूर्य पूर्ववत् अपनी यात्रा पर अबाध गति से आगे बढ़ जाता है।

टि. This difficult stanza appears to refer to an eclipse of the Sun - G.

*प्रेरित करता है* - **इषणत्**। इषिः प्रेरणकर्मा। प्रावृहत्। वे.। प्रैरयत् - सा.। has hurled - W.

*सूर्य के अश्व को* - **एतशम्**। अश्वम् - दया.।

*रोकना चाहता है* - **रीरमत्**। रमयामास - वे.। न्यरीरमत्। निवारितवान्। सा.। रमयति - दया.। has stopped - W. he rested - G.

*काले वर्ण वाला* - **कृष्णः**। कृष्णवर्णो मेघः - सा.। कर्षकः - दया.। the dark cloud - W.

*टेढ़ी गति वाला* - **जुहुराणः**। कुटिलं यथा भवति तथा संचरन् - सा.। undulating - W. G.

*स्पर्श करना चाहता है* - **जिघर्ति**। आसिञ्चति। शत्रूणां प्रेरिताच् चक्रादेस् त्रस्तं ररक्षेत्यर्थः। सा.। bedews him - W. G.

*आवरक के* - **त्वचः**। त्वचिः संवरणकर्मा। तेज उच्यते। वे.। तेजसः - सा.। radiance - W. of darkness - G.

*अन्तरिक्ष के* - **रजसः**। उदकस्य - वे.। सा.। लोकसमूहस्य - दया.। mid-air's - G.

**असि॑क्न्या॒ं यज॑मानो॒ न होता॑।। १५।। २३।।**

असि॑क्न्याम्। यज॑मानः। न। होता॑।। १५।।

*रात्रि में यजन करने वाला जिस प्रकार याजक।। १५।।*

वह परमेश्वर सूर्य पर आक्रमण करने वाले कृष्ण वर्ण वाले ग्रह के अन्धकार को छिन्न-भिन्न करके उसे इस प्रकार परे फैंक देता है, जिस प्रकार रात्रि में यजन करने वाला यजमान रात्रि के अन्धकार को यज्ञाग्नि के प्रकाश से छिन्न-भिन्न करके परे हटा देता है। अथवा अज्ञान रूपी रात्रि में ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान के अन्धकार को परे हटा देता है।

टि. *रात्रि में* - **असिक्न्याम्**। रात्रौ - सा.। असिक्नीति रात्रिनाम (निघ. १.७) - दया.।

*याजक* - **होता**। होतारम् आह्वातारम् अग्निम्। द्वितीयार्थे प्रथमा। सा.। सुखस्य दाता - दया.।

**ग॒व्यन्त॒ इन्द्रं॑ स॒ख्याय॒ विप्रा॑ अश्वा॒यन्तो॒ वृष॑णं वा॒जय॑न्तः।**
**ज॒नी॒यन्तो॑ जनि॒दाम् अक्षि॑तोति॒मा च्या॑वयामो ऽव॒ते न कोश॑म्।। १६।।**

ग॒व्यन्तः॑। इन्द्र॑म्। स॒ख्याय॑। विप्राः॑। अ॒श्व॒ऽयन्तः॑। वृष॑णम्। वा॒जय॑न्तः।

ज॒नि॒ऽयन्तः॑। ज॒नि॒ऽदाम्। अक्षि॑तऽऊतिम्। आ। च्य॒व॒या॒मः॒। अ॒व॒ते। न। कोश॑म्।। १६।।

*गौओं की कामना वाले, इन्द्र को, मित्रता के लिये, बुद्धिमान् उपासक,*

*अश्वों की कामना वाले, सुखवर्षक को, ऐश्वर्यों की कामना वाले।*

*जननियों की कामना वाले, जननियां देने वाले को, अक्षीण समृद्धि वाले को,*

*इस ओर लाते हैं हम, कूएँ में जिस प्रकार (डालते हैं) जलपात्र को।। १६।।*

जल की इच्छा वाले प्यासे मनुष्य जिस प्रकार डोल को कूएँ में डालकर उसमें जल भर जाने पर उसे अपनी ओर खींचते हैं, उसी प्रकार गौओं अथवा ज्ञान की कामना वाले, अश्वों अथवा बलों की कामना वाले, लौकिक और अलौकिक ऐश्वर्यों की कामना वाले, उत्तम सन्तानों को जन्म देने वाली स्त्रियों की कामना वाले हम बुद्धिमान् उपासक जन मित्रता के निमित्त, सुखों की वर्षा करने वाले, जननियों को, सन्तानोत्पत्ति में समर्थ पत्नियों को प्रदान करने वाले और अक्षीण समृद्धियों वाले,

ऐश्वर्यों के स्वामी उस परमात्मा को अपनी ओर बुलाते हैं।

टि. *जननियों की कामना वाले* - **जनीयन्तः**। भार्याम् इच्छन्तः - वे.। जायाम् इच्छन्तः - सा.।

*जननियां देने वाले को* - **जनिदाम्**। जनीनां दातारम् - वे.। जायाप्रदम् - सा.। या जनिं जन्म ददाति - दया.। the giver of wives - W. G.

*अक्षीण समृद्धि वाले को* - **अक्षितोतिम्**। अक्षीणपरिरक्षणम् - वे.। अक्षीणरक्षम्। सर्वदा रक्षाकरम् इत्यर्थः। सा.। दया.। whose succour fails not - G.

*इस ओर लाते हैं हम* - **आ च्यावयामः**। आगमयामः - सा.। प्रापयामः - दया.। may we induce to come down - W. we stir - G.

*कूएँ में* - **अवते**। कूपे - वे.। अवत इति कूपनाम अवतो ऽवटः क्रिविर् इति कूपनामसु पाठात् - सा.। अवत इति कूपनाम (निघ. ३.२३) - दया.। into a well - W. to the fountain - G.

*जलपात्र को* - **कोशम्**। दृतिम्। सरस्वतीतीरे कोशैर् उदकम् उद्धरन्ति न घटैः। वे.। जलोद्धरणपात्रम् - सा.। मेघम् - दया.। a bucket - W. a pitcher - G.

**त्राता नो बोधि ददृशान आपिर् अभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम्।**
**सखा पिता पितृतमः पितृणां कर्तेम् उ लोकम् उशते वयोधाः॥ १७॥**

त्राता। नः। बोधि। ददृशानः। आपिः। अभिऽख्याता। मर्डिता। सोम्यानाम्।
सखा। पिता। पितृऽतमः। पितृणाम्। कर्ता। ईम्। ऊँ इति। लोकम्। उशते। वयःऽधाः॥ १७॥

*त्राण करने वाला हमारा हो जा तू, देखभाल करने वाला बन्धु,*
*कृपा की दृष्टि से देखने वाला, सुखी करने वाला, सोमार्हों का।*
*सखा, पिता, अतिशय पालन करने वाला पालन करने वालों में,*
*बनाने वाला इस जगत् का, कामना करने वाले का जीवनदाता॥ १७॥*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तू चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं से हमारी रक्षा करने वाला हमारा बन्धु हो जा। तू परिश्रम से अपने शरीर को तपाने वाले त्यागी तपस्वी सोम के अधिकारी जनों पर अपनी कृपा की दृष्टि रखने वाला और उनको सुखी करने वाला हो जा। तू हम सब का सखा, पिता और पालन करने वालों में उत्तम पालक है। तू निश्चय से इस जगत् की रचना करने वाला है। जो मनुष्य तेरी कामना करता है, तुझसे प्यार करता है, तू उसे सुखी और समृद्ध जीवन प्रदान करता है।

टि. *हो जा तू* - **बोधि**। रक्षकः अस्माकं भवामीति बुध्यस्व - वे.। बुध्यस्व - दया.। be - W. G.

*देखभाल करने वाला* - **ददृशानः**। दृश्यमानः - वे.। सर्वं पालकत्वेन पश्यन् - सा.। बोधि भव - सा.। सम्प्रेक्षकः - दया.। watching - G.

*कृपा की दृष्टि से देखने वाला* - **अभिख्याता**। अभिख्यानं कुर्वन् - वे.। अभिद्रष्टा - सा.। आभिमुख्येन अन्तर्यामितया उपदेष्टा - दया.। a supervisor (of all things) - W. blessing - G.

*अतिशय पालन करने वाला पालन करने वालों में* - **पितृतमः पितृणाम्**। अतिशयेन पाता पितेत्यर्थः - वे.। पालकानां मध्ये अतिशयेन पालकः - सा.। दया.। most fatherly of fathers - G.

*जीवनदाता* - **वयोधा।** अन्नस्य दाता - वे.। सा.। यो वयो जीवनं कमनीयं वस्तु दधाति सः - दया.। the giver to us of food - W. giving vital strength and freedom - G.

**सखीयताम् अविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः।**
**वयं ह्या ते चकृमा सबाध आभिः शमीभिर् महयन्त इन्द्र।। १८।।**

सखिऽयताम्। अविता। बोधि। सखा। गृणानः। इन्द्र। स्तुवते। वयः। धाः।
वयम्। हि। आ। ते। चकृम। सऽबाधः। आभिः। शमीभिः। महयन्तः। इन्द्र।। १८।।

*मित्रता चाहने वालों की रक्षा करने वाला हो जा तू, सखा (बनकर),*
*स्तुति किया जाता हुआ, हे इन्द्र!, स्तोता के लिये जीवन प्रदान कर तू।*
*हम चूँकि इस ओर तुझे बुला रहे हैं, बाधाओं से युक्त (होते हुए),*
*इन (यज्ञादि) कर्मों के साथ पूजा करते हुए (तेरी), हे इन्द्र।। १८।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश! हम चूँकि अनेक विघ्न-बाधाओं और कष्टों से घिरे हुए यज्ञ आदि इन शुभ कर्मों के साथ तेरी पूजा करते हुए तुझे अपनी ओर बुला रहे हैं, इस लिये तेरे साथ मित्रता चाहने वालों का सखा बनकर तू हमारा रक्षक हो जा। हे परमेश्वर! तू हमारे द्वारा स्तुति किया जाता हुआ हम स्तोताओं को सुखी जीवन प्रदान कर।

टि. *जीवन प्रदान कर तू* - **वयः धाः।** धेहि अन्नम् - वे.। वयो ऽन्नं धाः। अधाः। धेहि। सा.। कमनीयं धनं धेहि - दया.। grant food - W. give life - G.

*इस ओर तुझे बुला रहे हैं* - **आ ते चकृम।** त्वाम् आह्वयामः - सा.। we have paid thee - G.

*बाधाओं से युक्त (होते हुए)* - **सबाधः।** बाधसहिताः - वे.। बाधासहिताः - सा.। दया.। suffering difficulties - W.

*कर्मों के साथ* - **शमीभिः।** कर्मभिः - वे.। स्तुतिरूपैः कर्मभिः - सा.। क्रियाभिः - दया.। with these holy rites - W. with sacrifices - G.

*पूजा करते हुए* - **महयन्तः।** पूजां कुर्वन्तः - वे.। सा.। महान् इवाचरन्तः - दया.।

**स्तुत इन्द्रो मघवा यद् ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति।**
**अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्मन् नकिर् देवा वारयन्ते न मर्ताः।। १९।।**

स्तुतः। इन्द्रः। मघऽवा। यत्। ह। वृत्रा। भूरीणि। एकः। अप्रतीनि। हन्ति।
अस्य। प्रियः। जरिता। यस्य। शर्मन्। नकिः। देवाः। वारयन्ते। न। मर्ताः।। १९।।

*स्तुति किया जाता है इन्द्र, ऐश्वर्यों का स्वामी, जब, आवरकों को,*
*बहुतों को अकेला ही, पीछे न हटने वालों को, मार डालता है।*
*इसका प्रिय (हो जाता है) स्तोता, जिसकी शरण में (चला जाता है वह),*
*नहीं देव रोक सकते हैं (उसको), न ही (रोक सकते हैं) मरणधर्मा मनुष्य।। १९।।*

जब ऐश्वर्यों का स्वामी वह परमात्मा उपासकों के द्वारा स्तुति किया जाता है, तो वह स्तुतियों से महान् बल को प्राप्त करके कभी पीछे न हटने वाली, सुखसाधनों को आवृत करके बैठ जाने वाली असंख्य हिंसक आसुरी शक्तियों को बिना किसी की सहायता के अकेला ही नष्ट कर डालता

है। जो भी स्तोता इसकी शरण में आ जाता है, वह इसको प्रिय हो जाता है। उस ऐसे उपासक को अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने से न तो देव ही रोक सकते हैं और न ही मरणधर्मा मनुष्य।

टि. *पीछे न हटने वालों को* - **अप्रतीनि**। अप्रतिगतान् - वे.। अप्रतिगमनानि। अभिगमन-युक्तानीत्यर्थः। सा.। अप्रतीतानि - दया.। unyielding - W. ne'er resisted - G.

*शरण में* - **शर्मन्**। प्रिये स्तोत्रे क्रियमाणे - वे.। आश्रये - सा.। गृहे - दया.। (who relies) on his protection - W. in whose keeping - G.

*नहीं रोक सकते हैं* - न वारयन्ते। निवारणं न कुर्वन्ति - सा.। न निषेधयन्ति - दया.।

**एवा नु इन्द्रो मघवा विरप्शी करत् सत्या चर्षणीधृद् अनर्वा।**
**त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे अधि श्रवो माहिनं यज् जरित्रे।। २०।।**

एव। नः। इन्द्रः। मघऽवा। विऽरप्शी। करत्। सत्या। चर्षणिऽधृत्। अनर्वा।
त्वम्। राजा। जनुषाम्। धेहि। अस्मे इति। अधि। श्रवः। माहिनम्। यत्। जरित्रे।। २०।।

*इस प्रकार हमारी, इन्द्र, ऐश्वर्यों का स्वामी, विशिष्टज्ञानोपदेशक,*
*कर देवे सत्य (कामनाओं को), मनुष्यधारक, अभिभूत न होने वाला।*
*तू राजा (है) जन्म ग्रहण करने वालों का, दे तू हमको,*
*अधिकता से, ज्ञान को पूज्य को, जिसे (देता है तू) स्तोता को।। २०।।*

इस प्रकार ऐश्वर्यों का स्वामी, विशेष रूप से वेद के ज्ञान का उपदेश करने वाला, अन्न और धन देकर प्रजाओं के जीवनों को धारण करने वाला, कभी किसी से आक्रान्त न किया जा सकने वाला वह परमेश्वर हमारी सभी कामनाओं और मनोरथों को सत्य कर देवे, पूर्ण कर देवे। हे जगदीश्वर! तू इस संसार में जन्म ग्रहण करने वाले सभी प्राणियों का शासक है। जो भी पूजनीय, सत्कार के योग्य ज्ञान, यश, अन्न आदि तू अपने प्रिय स्तोता को प्रदान करता है, वह हम उपासकों को भी अधिकता से प्रदान कर।

टि. *विशिष्टज्ञानोपदेशक* - **विरप्शी**। महान् - वे.। बहुविधशब्दवान् - सा.। महान् - दया.। the many-voiced - W. the loud-voiced - G.

*कर देवे सत्य* - **करत् सत्या**। (अस्मान्) करोतु सत्यान् - वे.। सत्यरूपाण्यभिमतानि फलानि करोतु - सा.। अविनश्वराणि कुर्यात् - दया.। bestow upon us assured (rewards) - W. give us true blessings - G.

*मनुष्यधारक* - **चर्षणीधृत्**। मनुष्याणां धर्ता - वे.। सर्वासां प्रजानां धारयिता - सा.।

*अभिभूत न होने वाला* - **अनर्वा**। शत्रुभिर् अप्रत्यृतः - वे.। केनापि प्रतिकूलेन न प्राप्त इत्यर्थः। सा.। the irresistible - W. foeless - G.

*ज्ञान को पूज्य को* - **श्रवः माहिनम्**। अन्नं धनं च - वे.। महिम्नोपेतं यशः - सा.। श्रवणम् अन्नं वा महत् - दया.। great fame - W. (give us) glory amply - G.

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। २१।। २४।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१६.२१ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त १८

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रो लिङ्गोक्ता देवता वा। छन्दः - त्रिष्टुप्। त्रयोदशर्चं सूक्तम्।

**अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे।**

**अतश् चिद् आ जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरम् अमुया पत्तवे कः।। १।।**

अयम्। पन्थाः। अनुऽवित्तः। पुराणः। यतः। देवाः। उत्ऽअजायन्त। विश्वे।

अतः। चित्। आ। जनिषीष्ट। प्रऽवृद्धः। मा। मातरम्। अमुया। पत्तवे। कर् इति कः।। १।।

*यह मार्ग अपनाया गया है परम्परागत,*

*जिससे देव उत्पन्न होते हैं सब-के-सब।*

*इससे ही जन्म ग्रहण करे (जीव) बढ़ा हुआ,*

*मत माता को इसको (प्रकृति को), विनष्ट कर देवे।। १।।*

उत्पन्न होने वाले सभी जीव माता के गर्भ से योनिमार्ग से ही संसार में आते हैं। जन्म ग्रहण करने के लिये यही परम्परागत मार्ग सब के द्वारा अपनाया जाता है। अर्थात् सब देव और मनुष्य इसी मार्ग से संसार में आते हैं। इस लिये जीव को यही उचित है, कि वह इसी मार्ग से अपनी माता प्रकृति से संसार में जन्म ग्रहण करे। यदि वह इससे भिन्न कोई अन्य मार्ग अपनाता है, तो उससे माता को हानि हो सकती है और उसका जीवन खतरे में पड़ सकता है।

टि. *अपनाया गया है* - **अनुवित्तः**। अनुक्रमेण लब्धः - वे.। अनु आनुपूर्व्येण वित्तः। सर्वैर् जायमानैर् लब्धः। सा.। अनुलब्धः - दया.।

इसको - **अमुया**। अमूम्। द्वितीयायाः यादेशः। वे.। सा.। तया - दया.।

*मत विनष्ट कर देवे* - **मा पत्तवे कः**। मा पतितुं कार्षीद् इति - वे.। पत्तवे पतनाय मरणायेत्यर्थः। मा कः मा करोतु। सा.। मा पत्तुं प्राप्तुं कुर्याः - दया.। let him not cause the loss - W. let him not destroy - G.

**नाहम् अतो निर् अया दुर्गहैतत् तिरश्चता पार्श्वान् निर्गमाणि।**

**बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै।। २।।**

न। अहम्। अतः। निः। अय। दुःऽगहा। एतत्। तिरश्चता। पार्श्वात्। निः। गमानि।

बहूनि। मे। अकृता। कर्त्वानि। युध्यै। त्वेन। सम्। त्वेन। पृच्छै।। २।।

*नहीं मैं इस मार्ग से निकलता हूँ, कठिनता से अवगाह्य है यह,*

*टेढ़े से पासे के मार्ग से, (इसलिये) निकलूंगा मैं।*

*बहुत से मेरे द्वारा, न किये हुए (अन्यों से), किये जाने हैं (कर्म),*

*युद्ध करूंगा एक से, भली प्रकार दूसरे से प्रश्न करूंगा मैं।। २।।*

*जीव का कथन :* मैं इस परम्परागत मार्ग से बाहर नहीं आऊँगा। यह मार्ग बहुत संकरा है, इस लिये मेरे द्वारा अवगाहन के योग्य नहीं है। मैं तो टेढ़े मार्ग को अपनाकर पासे से बाहर निकलूँगा।

मैं यह एक ऐसा काम करूँगा, जो किसी अन्य के द्वारा पहले कभी नहीं किया गया। मैं किसी नए मार्ग की तलाश करूँगा। मेरे द्वारा और भी बहुत से ऐसे कर्म किये जाने हैं, जो आज तक किसी अन्य के द्वारा नहीं किये गए। मैं किसी दुष्ट, पापी, अन्यायी से युद्ध करूँगा, तो किसी धर्मात्मा, ज्ञानी गुरु के चरणों में बैठकर जगत्सृष्टि, आत्मा, परमात्मा और मोक्ष के विषय में प्रश्न पूछूँगा।

टि. *नहीं निकलता हूँ* - **न निः अय।** न निर्गच्छामि - वे.। न निरयाणि निर्गच्छानि। सा.।

*कठिनता से अवगाह्य* - **दुर्गहा।** दुःखेन गहितव्यम् - वे.। दुर्ग्रहं दुःखेन ग्राह्यम्। न प्राप्यं भवतीत्यर्थः। सा.। hard is the passage - G. is hard to break - Satya.

*टेढ़े से* - **तिरश्चता।** तिरश्चीनात्। तिर्यक्शब्दात् 'अपादाने चाहीयरुहोः' (पा. ५.४.४५)इति तसिः, ततो विभक्तेः डादेशः। वे.। obliquely - W. G.

*किये जाने हैं* - **कर्त्वानि।** अस्मिन् जन्मनि कर्तव्यानि - वे.। are to be accomplished - W.

*युद्ध करूँगा एक से* - **युध्यै त्वेन।** केनचिद् राक्षसवर्गेण युद्धं करवाणि - वे.। एकेन सपत्नेन विवदमानेन सह युद्धं करवाणि - सा.। युद्धं कुर्याम् एकेन - दया.। let me contend (in war) with one (enemy) - W. one must I combat - G.

*भली प्रकार दूसरे से प्रश्न करूँगा मैं* - **सम् त्वेन पृच्छै।** सम् पृच्छै च केनचिद् ब्रह्मज्ञानम् इति - वे.। एकेन बुभुत्सुना सम्यक् पृच्छामि - सा.। अन्येन संपृच्छेयम् - दया.। (let me contend) in controversy with one opponent - W. and the other (must I) question - G.

**परायतीं मातरम् अन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गमानि।**
**त्वष्टुर् गृहे अपिबत् सोमम् इन्द्रः शतधन्यं चम्वोः सुतस्य।। ३।।**

पराऽयतीम्। मातरम्। अनु। अचष्ट। न। न। अनु। गानि। अनु। नु। गमानि।
त्वष्टुः। गृहे। अपिबत्। सोमम्। इन्द्रः। शतऽधन्यम्। चम्वोः। सुतस्य।। ३।।

*प्राणों का परित्याग करती हुई माता को देखकर पुत्र ने कहा,*
*अवश्य ही (परम्परा का) अनुसरण करूँगा, अधोमार्ग से अब गमन करूँगा।*
*सृष्टिकर्त्ता की शरण में, पान करता है सोम का इन्द्र,*
*असंख्य धनों से प्राप्त किये हुए का, सोमपात्रों में सवन किये हुए का।। ३।।*

जब जीव अपनी जिद्द पर अड़ा रहा और परम्परागत मार्ग के विपरीत पासे से बाहर आने का प्रयास करने लगा, तो माता इस संसार से चलने लगी। यह देखकर पुत्र का निश्चय बदल गया और कहने लगा - मैं परम्परागत मार्ग का अनुसरण ही करूँगा, अब मैं अधोमार्ग से ही बाहर गमन करूँगा। उसने परम्परागत मार्ग से जन्म लेकर इस जगत् में अपने पिता परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किये हुए नियमों का पालन करते हुए अपने जीवन को उत्तम बनाया। इस प्रकार उसने जगत् के रचयिता परम पिता परमात्मा की शरण में जाकर प्राण और अपान रूपी पात्रों में सवन किये हुए अध्यात्मरस रूपी बहुमूल्य सोम का पान किया और अपने जीवन को सफल बनाया।

टि. *प्राणों का परित्याग करती हुई माता को* - **परायतीम् मातरम्।** मातरं परागच्छन्तीं म्रियमाणाम् - वे.। मातरं परायतीं परेतां म्रियमाणाम् - सा.। दया.।

देखकर पुत्र ने कहा - **अनु अचष्ट।** इन्द्रः अनुब्रवीति - वे.। अन्वब्रवीत् - सा.। he has asserted - W. he bent his eye - G.

*अवश्य ही अनुगमन करूँगा* - न न अनु गानि। न न अनु गच्छामि - वे.। नानुगच्छामीति न - सा.। My word I now withdraw - G.

*सृष्टिकर्त्ता की शरण में* - **त्वष्टुः गृहे।** त्वष्टुः सम्बन्धिनि गृहे - सा.। त्वष्टुः प्रकाशस्य गृहे - दया.। in Tvaṣṭar's dwelling - G.

*असंख्य धनों से प्राप्त किये हुए का* - **शतधन्यम्।** अनेकधनक्रीतम् - वे.। सा.। costly - W.

*सोमपात्रों में* - **चम्वोः।** अधिषवणफलकयोः - वे.। सा.। from the vessels of the offerers - W. pressed from the mortar - G.

**किं स ऋधक् कृणवद् यं सहस्रं मासो जभार शरदश् च पूर्वीः।**
**नही न्वस्य प्रतिमानम् अस्त्यन्तर् जातेषूत ये जनित्वाः।। ४।।**

किम्। सः। ऋधक्। कृणवत्। यम्। सहस्रम्। मासः। जभार। शरदः। च। पूर्वीः।
नहि। नु। अस्य। प्रतिऽमानम्। अस्ति। अन्तः। जातेषु। उत। ये। जनिऽत्वाः।। ४।।

*किसको वह नियमविरुद्ध करेगा (कर्म को),*
*जिसे सहस्र मासों तक धारण किया, और शरत्कालों तक बहुतों तक।*
*नहीं निश्चय से, इसका प्रतिमान है (कोई जगत् में),*
*अन्दर उत्पन्न हुओं के, और जो उत्पन्न होने वाले हैं (आगे)।। ४।।*

*माता अदिति का वचन :* मैंने उसे हजारों मासों और असंख्य संवत्सरों तक अपने गर्भ में धारण किया है और बड़ी तपस्या के पश्चात् उसको जन्म दिया है। वह मेरा पुत्र है। भला वह किसी नियमविरुद्ध कर्म को क्यों करेगा, अर्थात् नहीं करेगा। इस जगत् में जो उत्पन्न हो चुके हैं उनमें और जो आगे उत्पन्न होंगे उन सब में भी उस के मुकाबले का कोई नहीं है।

टि. *नियमविरुद्ध* - **ऋधक्।** ऋद्धं कर्म - वे.। विरुद्धं कर्म - सा.। सत्यम् - दया.। irregular act - W. strange act - G.

*करेगा* - **कृणवत्।** कृतवान् - वे.। अकरोत् - सा.। कुर्यात् - दया.।

*धारण किया* - **जभार।** बभार - वे.। बिभर्तेर् इदं रूपम् - सा.। bore - G.

*और शरत्कालों तक बहुतों तक* - **शरदः च पूर्वीः।** बह्वीः च शरदः - वे.। बहून् संवत्सरान् - सा.। शरदाद्यृतून् च सनातनीः - दया.।

*प्रतिमान* - **प्रतिमानम्।** सदृशम् - वे.। परिमाणसाधनम् - दया.। analogy - W. peer - G.

*जो उत्पन्न होंगे* - **ये जनित्वाः।** ये जनिष्यमाणाः - वे.। ये देवादयो जनयितव्या जनिष्यमाणास् तेषु - सा.। who will be born - W. G.

**अवद्यमिव मन्यमाना गुहाकर्**
**इन्द्रं माता वीर्येणा न्यृष्टम्।**
**अथोदस्थात् स्वयम् अत्कं वसान**

**आ रोदसी अपृणाज् जायमानः।। ५।। २५।।**

अवद्यम्ऽइव। मन्यमाना। गुहा। अकः। इन्द्रम्। माता। वीर्येण। निऽऋष्टम्।
अथ। उत्। अस्थात्। स्वयम्। अत्कम्। वसानः। आ। रोदसी इति। अपृणात्। जायमानः।। ५।।

*बताने के योग्य नहीं है मानो, यह जानते हुए गुहा में छुपा लिया,*
*इन्द्र को माता ने, बलवीर्य से नितरां परिपूर्ण को।*
*तत्पश्चात् उठ खड़ा हुआ वह स्वयं, तेज को धारण करता हुआ,*
*सब ओर से द्युलोक-भूलोक को भर दिया (तेज से), उत्पन्न हुए ने।। ५।।*

माता अदिति ने यह जानकर कि इस होनहार पुत्र के जन्म का वृत्तान्त सुरक्षा की दृष्टि से दूसरों को बताने के योग्य नहीं है, उसे सुरक्षित स्थान पर स्थापित कर दिया। परन्तु तेजस्वियों के तेज को कभी छुपाया नहीं जा सकता। वह अपने तेज को धारण करके स्वयं उठ खड़ा हुआ और उसने इस भूलोक को और स्वर्गलोक को अपने तेज और वीरकर्मों से सब ओर से भर दिया।

टि. *बताने के योग्य नहीं है मानो* – **अवद्यम् इव**। गर्ह्यम् इव – वे.। गर्हम् इव सा.। निन्दनीयम् इव – दया.। disreputable - W. (deeming him) a reproach - G. a strange act - Satya.

*गुहा में छुपा लिया* – **गुहा अकः**। गुहायां कृतवती – वे.। गुहायां गह्वररूपे सूतिकागृहे ऽकरोत् – सा.। बुद्धौ करोति – दया.। (that he should be brought forth) in secret - W. hid him - G.

*परिपूर्ण को* – **न्यृष्टम्**। यथा ह्रद ऊर्मिभिर् न्यृष्टो भवत्येवम् इन्द्रो वीर्येण न्यृष्टः – वे.। नितरां प्राप्तम् – सा.। दया.। endowed - W. endowed with - G.

*तेज को धारण करता हुआ* – **अत्कम् वसानः**। तेजोरूपम् आच्छादयन् – वे.। सा.। कूपम् आच्छादयन् – दया.। invested with splendour - W. assumed his vesture - G.

**एता अर्षन्त्यललाभवन्तीर् ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः।**
**एता वि पृच्छ किम् इदं भनन्ति कम् आपो अद्रिं परिधिं रुजन्ति।। ६।।**

एताः। अर्षन्ति। अललाऽभवन्तीः। ऋतवरीःऽइव। सम्ऽक्रोशमानाः।
एताः। वि। पृच्छ। किम्। इदम्। भनन्ति। कम्। आपः। अद्रिम्। परिऽधिम्। रुजन्ति।। ६।।

*ये बह रहे हैं, अलल-अलल शब्द करते हुए,*
*ऋत का पालन करने वाली उषाओं की तरह, शोर करते हुए।*
*इन्हें सम्यक् पूछ तू, क्या यह कह रहे हैं (ये),*
*किसको जल मेघ को, सर्वतः धारक को, तोड़ते हैं।। ६।।*

*माता अदिति का वचन :* हे जीव! ये जो जल, ऋत का पालन करने वाली, पक्षियों की अव्यक्त ध्वनि के माध्यम से शोर मचाती हुई उषाओं की तरह, अव्यक्त ध्वनि करते हुए बहते चले जा रहे हैं, इनसे तू पूछ तो सही, कि ये यह क्या कह रहे हैं। पूछने पर यही उत्तर मिलेगा, कि हम तो उस परम ऐश्वर्यवान् प्रभु का ही गुणगान कर रहे हैं। इन जलों से यह भी पूछ, कि ये सब ओर से घेरकर स्थित किस मेघ को तोड़कर बह रहे हैं। उत्तर यही मिलेगा, कि हम मेघों को तोड़ने वाले कौन होते हैं। उस इन्द्र ने ही मेघों को तोड़कर हमें बहाया है।

टि. बह रहे हैं - **अर्षन्ति।** समुद्रं प्रति गच्छन्ति - वे.। गच्छन्ति - सा.। दया.।

*अलल-अलल शब्द करते हुए* - **अललाभवन्तीः।** अललाशब्दं कुर्वत्यः - वे.। अललेत्येवंरूपं शब्दं कुर्वत्यः - सा.। अलला इव शब्दयन्तीः - दया.। murmuring - W.

*ऋत का पालन करने वाली उषाओं की तरह* - **ऋतवरीः इव।** धेनव इव - वे.। उदकवत्य एवैता नद्यः - सा.। the Holy Ones - G.

*कह रहे हैं* - **भनन्ति।** शब्दायन्ते। भनिः शब्दकर्मा। भयाद् इन्द्रस्य शब्दायन्त इत्यर्थः। वे.। श्रोत्रग्राह्यं शब्दायमानं किं वदन्ति - सा.। say - W. G.

*मेघ को* - **अद्रिम्।** मेघम् - वे.। सा.। cloud - W. rock - G.

*सर्वतः धारक को* - **परिधिम्।** अपां निवारकम् - वे.। आवरकम् - सा.। encompassing - W. girdling - G. encircling - G.

**किम् उं ष्विद् अस्मै निविदो भनन्तेन्द्रस्यावद्यं दिधिषन्त आपः।**
**ममैतान् पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वाँ असृजद् वि सिन्धून्।। ७।।**

किम्। ऊँ इति। स्वित्। अस्मै। निऽविदः। भनन्त। इन्द्रस्य। अवद्यम्। दिधिषन्ते। आपः।
मम। एतान्। पुत्रः। महता। वधेन। वृत्रम्। जघन्वान्। असृजत्। वि। सिन्धून्।। ७।।

*क्या इस (इन्द्र) के विषय में वाणियां (वेद की) कहती हैं,*
*इन्द्र के, कथन में अशक्य (सामर्थ्य) को, धारण करते हैं जल।*
*मेरा, इनको, पुत्र, महान् आयुध के द्वारा,*
*वृत्र को मारकर, बहा देता है विविधता से, जलप्रवाहों को।। ७।।*

*माता अदिति का वचन* - यदि यह पूछा जाए कि मेरे पुत्र इस इन्द्र के विषय में वेद की वाणियां क्या कहती हैं, तो इस प्रश्न का उत्तर यही होगा, कि वेद के वचनों के अनुसार तो दुष्ट आसुरी शक्तियों के चंगुल से मुक्त कराकर सब प्रजाओं में वितरित किये हुए जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधन उस परमेश्वर के अवर्णनीय सामर्थ्य को धारण कर रहे हैं, उसकी सर्वशक्तिमत्ता का ही परिचय दे रहे हैं, क्योंकि इस मेरे पुत्र ने ही अपने न्यायव्यवस्था रूपी महान् आयुध के द्वारा दुष्ट आवरक शक्तियों का हनन करके इन जलप्रवाह आदि सुखसाधनों को सब प्रजाओं के लिये प्रवाहित किया है।

टि. *वाणियां* - **निविदः।** 'निवित्' (निघ. १.११) इति वाङ्नाम। लौकिकानां वाचः। वे.। मरुत्वतीयशस्त्रे प्रयुज्यमानानि मरुत्स्तोत्रो मरुद्गण इत्यादीनीन्द्रस्तुतिप्रतिपादकानि कानिचित् पदानि निविच्छब्देनोच्यन्ते। ता निविदः। सा.। नितरां विदन्ति याभिस् ता वाचः - दया.। sacred expiatory strains - W. words of welcome - G.

*कथन में अशक्य (सामर्थ्य) को* - **अवद्यम्।** अवद्यं वृत्रवधादि - वे.। ब्रह्महत्यादिरूपं पापम् - सा.। गर्ह्यम् - दया.। reproach of Indra - W. the shame of Indra - G.

*धारण करते हैं* - **दिधिषन्ते।** धारयन्ति - वे.। सा.। शब्दयन्ति - दया.। take on them - G.

*मार कर* - **जघन्वान्।** हत्वा - वे.। हतवान् - सा.। hath slaughtered - G.

**ममच् चन त्वा युवतिः परास**
**ममच् चन त्वा कुषवा जगार।**
**ममच् चिद् आपः शिशवे ममृड्युर्**
**ममच् चिद् इन्द्रः सहसोद् अतिष्ठत्।। ८।।**

ममत्। चन। त्वा। युवतिः। पराऽआस। ममत्। चन। त्वा। कुषवा। जगार।
ममत्। चित्। आपः। शिशवे। ममृड्युः। ममत्। चित्। इन्द्रः। सहसा। उत्। अतिष्ठत्।। ८।।

*मेरे ही अपने को तुझको, (मुझ) युवा माता ने उत्पन्न किया,*
*मेरे ही अपने को तुझको, कुत्सित प्रेरणा वाली ने निगल लिया।*
*मेरे ही अपने के, जलों ने, शिशु के लिये, सुखों को उत्पन्न किया,*
*मेरा ही अपना (पुत्र) इन्द्र, बल के साथ उठ खड़ा हुआ (वृत्रहन हेतु)।। ८।।*

*माता अदिति का वचन :* सदा युवावस्था में स्थित मुझ माता ने ही तेरा इस जगत् में प्रादुर्भाव किया है। तुझ मेरे पुत्र को ही कुत्सित प्रेरणाओं वाली दुष्ट आसुरी शक्ति ने निगल जाने का प्रयास किया है, परन्तु वह अपने इस जघन्य प्रयोजन में सफल न हो सकी। तुझ मेरे पुत्र को ही तेरे शैशवकाल में अप्रकेत जलों ने निवास प्रदान करके सुखी बनाया। तू मेरा पुत्र ही जब बड़ा हुआ तो अपने बल के साथ उठ खड़ा हुआ और तूने सब दुष्ट आसुरी शक्तियों का संहार कर डाला।

टि. *मेरे ही अपने को* - **ममत् चन।** ममद् इति ममेत्यस्य पर्याय इति प्रतीयते। चिच्चनौ निपातौ प्रायेण सर्वनामपदैः सह प्रयुज्यमाना दृश्यन्ते न त्वाख्यातपदैः सह यथा सायणादिभिर् अत्र गृह्यते।। माद्यन्ती एव - वे.। प्रमत्तैवेत्यर्थः - सा.। प्रमादयन्ती - दया.। एक बार - सात. exulting - W. mine . I have preferred Professor Ludwig's interpretation, originally due to Benfey, and taken the word as another form of *mama.* G.

*उत्पन्न किया* - **परास।** स्वोदरात् परास्तवती - वे.। परास पराचिक्षेप - सा.। पराङ्मुखम् अस्यति - दया.। brought thee forth - W. I cast thee from me - G.

*कुत्सित प्रेरणा वाली ने* - **कुषवा।** कुषतिर् निष्कर्षकर्मा। निष्कृष्टोदरी। वे.। कुषवानाम्नी काचिद् राक्षसी - सा.। कुत्सितः सवः प्रेरणा यस्याः सा - दया.। the unfavourable environments - Satya.

*निगल लिया* - **जगार।** गिरति स्म - सा.। निगिलति - दया.। swallowed - W.

*सुखों को उत्पन्न किया* - **ममृड्युः।** सुखम् उत्पादयाञ्चक्रुः - वे.। सुखयाञ्चक्रुः - सा.। were gracious - G.

*बल के साथ* - **सहसा।** बलेन - वे.। दया.। स्वेन वीर्येण - सा.। by his strength - W.

**ममच् चन ते मघवन् व्यंसो निविविध्वाँ अप हनू जघान।**
**अधा निविद्ध उत्तरो बभूवाञ् छिरो दासस्य सं पिणग् वधेन।। ९।।**

ममत्। चन। ते। मघऽवन्। विऽअंसः। निऽविविध्वान्। अप। हनू इति। जघान।
अध। निऽविद्धः। उत्ऽतरः। बभूवान्। शिरः। दासस्य। सम्। पिणक्। वधेन।। ९।।

*मेरे ही तुझ (पुत्र) के, हे ऐश्वर्यों वाले!, विशिष्ट भुजबल वाले ने,*

*प्रकर्ष से बींधते हुए ने, बुरी तरह से जबड़ों को हत कर डाला।*
*तत्पश्चात् नितरां बिंधे हुए ने तूने, बढ़ते हुए ने बल में,*
*सिर को हिंसक के सम्यक् पीस डाला, आयुध से (अपने)।। ९।।*

*माता अदिति का वचन :* हे ऐश्वर्यों के स्वामी मेरे पुत्र!, जब तू छोटा था, तो विशिष्ट भुजबल वाली दुष्ट आवरक शक्ति ने प्रकर्ष से बींधते हुए तेरे जबड़ों को बुरी तरह से तोड़ डालने का दुःसाहस किया। परन्तु तब वह अपनी योजना में सफल न हो सकी। जब तू बड़ा हुआ, तो तूने अपने बल को खूब बढ़ाया और उस दुष्ट हिंसक शक्ति के सिर को अपने न्यायव्यवस्थारूपी अस्त्र से चूर-चूर कर डाला।

टि. *विशिष्ट भुजबल वाले ने* - **व्यंसः**। व्यंसासुरः - वे.। सा.। विप्रकृष्टा अंसा बलादयो यस्य सः - दया.।

*प्रकर्ष से बींधते हुए ने* - **निविविध्वान्**। नितरां विध्यन् - वे.। सा.।

*बुरी तरह से हत कर डाला* - **अप जघान**। अपहतवान् - सा.।

*बढ़ते हुए ने बल में* - **उत्तरः बभूवान्**। स्वबलेन व्यंसस्य उत्तरः भवन् - वे.। व्यंसाद् अधिकबलो भूतः सन् - सा.। thou provedst the stronger - W.

*हिंसक के* - **दासस्य**। तस्यासुरस्य - वे.। क्षीणस्य व्यंसस्य - सा.। दातुं योग्यस्य - दया.। of the slave - W.

*सम्यक् पीस डाला* - **सम् पिणक्**। चूर्णीकृतवान् - वे.। पिष्टवान् असि - सा.। पिनष्टि - दया.। didst crush - W. G.

**गृष्टिः ससूव स्थविरं तवागाम् अनाधृष्यं वृषभं तुम्रम् इन्द्रम्।**
**अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्वं इच्छमानम्।। १०।।**

गृष्टिः। ससूव। स्थविरम्। तवागाम्। अनाधृष्यम्। वृषभम्। तुम्रम्। इन्द्रम्।
अरीळ्हम्। वत्सम्। चरथाय। माता। स्वयम्। गातुम्। तन्वे। इच्छमानम्।। १०।।

*सकृत् प्रसूता गौ ने जन्म दिया, प्रौढ़ को, बढ़े हुए बल वाले को,*
*अभिभूत न होने वाले को, सेचनसमर्थ को, प्रेरक को, इन्द्र को।*
*जीभ से अस्पृष्ट को, बछड़े को, विचरण के लिये माता ने,*
*स्वयं मार्ग को अपने लिये चाहने वाले को।। १०।।*

एक बार प्रसूता होने वाली गौ माता अदिति है। उसका बछड़ा जीवात्मा रूपी इन्द्र है। माता ने पुत्र को अशक्त और असहाय शिशु के रूप में नहीं, अपितु प्रौढ़, बलवान् और आत्मनिर्भर वीर पुरुष के रूप में जन्म दिया। उसने उसे बिना जीभ से चाटे ही अर्थात् जन्म के साथ ही अविलम्ब इस संसार में निर्भय होकर स्वयं विचरण करने के लिये छोड़ दिया। इसलिये वह जन्म के साथ ही प्रौढावस्था वाला है, वह बढ़े हुए बल वाला है। वह किसी शत्रु के द्वारा अभिभूत नहीं किया जा सकता। वह सन्तानोत्पत्ति में समर्थ है। वह दुष्ट आसुरी शक्तियों को खदेड़ने में शक्त है। वह अपने आप ही इस संसार में अपने लिये मार्ग बनाने की इच्छा वाला है।

टि. *सकृत् प्रसूता गौ ने* – **गृष्टिः**। सकृत्प्रसूता गौर् गृष्टिर् इत्युच्यते, सा – वे.। दया.। काचिद् गौः – सा.। a heifer - W. G.

*जन्म दिया* – **ससूव**। सूतवती – वे.। सुषुवे – सा.।

*बढ़े हुए बल वाले को* – **तवागाम्**। वृद्धानाम् अभिगन्तारम् – वे.। प्रवृद्धबलम् – सा.। प्राप्तबलम् – दया.।

*प्रेरक को* – **तुम्रम्**। शत्रूणां प्रेरकम् – वे.। प्रेरकम् – सा.। सत्कर्मसु प्रेरकम् – दया.।

*जीभ से अस्पृष्ट को* – **अरीळ्हम्**। जिह्वयालीढम् – वे.। शत्रुभिर् अनभिभूतम् – सा.। शत्रूणां हन्तारम् – दया.। invincible - W. unlicked - G.

*मार्ग को अपने लिये चाहने वाले को* – **गातुम् तन्वे इच्छमानम्**। स्वयम् एव परानपेक्षम् आत्मनः शरीराय गमनम् इच्छमानम् – वे.। सा.। स्वयं वाणीं विस्तृणुयाम् इति इच्छमानम् – दया.। (destined) to follow his own course, heedful of his person - W. seeking, himself, the path that he would follow - G.

**उत माता महिषम् अन्ववेनद् अमी त्वा जहति पुत्र देवाः।**
**अथाब्रवीद् वृत्रम् इन्द्रो हनिष्यन् त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व।। ११।।**

उत। माता। महिषम्। अनु। अवेनत्। अमी इति। त्वा। जहति। पुत्र। देवाः।
अथ। अब्रवीत्। वृत्रम्। इन्द्रः। हनिष्यन्। सखे। विष्णो इति। विऽतरम्। वि। क्रमस्व।। ११।।

*और माता ने महान् (इन्द्र) से याचना की,*
*ये तुझको छोड़ रहे हैं, हे पुत्र!, देव।*
*तब बोला, वृत्र को इन्द्र मारना चाहता हुआ,*
*हे सखे विष्णो! अत्यधिक विक्रम को दिखा।। ११।।*

माता अदिति (प्रकृति) ने बलवान् इन्द्र अर्थात् जीवात्मा से प्रार्थना की, कि हे पुत्र! बलशाली होते हुए भी तू अपने कर्तव्य से विमुख हो गया है। ये दुष्ट भावनाएं, दुर्गुण और दुःसङ्कल्प तेरे शरीर में प्रवेश कर रहे हैं। इसलिये ये देव अर्थात् इन्द्रियां शरीर को छोड़ रहे हैं। माता प्रकृति के इस वचन को सुनकर जीवात्मा सचेत हो गया। उसने दुष्ट आसुरी शक्तियों के हनन का निश्चय किया और अपने पिता सर्वव्यापक परमात्मा से प्रार्थना की, कि हे सर्वव्यापक परमेश्वर! तू दुष्ट संकल्पों, कुवासनाओं, दुर्भावनाओं आदि के विनाश में अपना विक्रम दिखाकर मेरी सहायता कर।

टि. *याचना की* – **अनु अवेनत्**। अभिलषितम् अनु अकामयत – वे.। अयाचत – सा.। याचते – दया.। inquired of - W. to her Child the Mother turned her - G.

*ये तुझको छोड़ रहे हैं देव* – **अमी त्वा जहति देवाः**। अमी देवा वृत्रेण पीड्यमानाः त्वां परित्यजन्ति पतिम् इच्छन्तः – वे.। अमी ब्रह्मादयो देवास् त्वां त्यजन्ति – सा.।

*अत्यधिक विक्रम को दिखा* – **वितरं वि क्रमस्व**। अत्यन्तं वि क्रमस्व – वे.। अतिपराक्रमी भव – सा.। exert thy greatest prowess - W. stride full boldly forward - G.

**कस् ते मातरं विधवाम् अचक्रच् छयुं कस् त्वाम् अजिघांसच् चरन्तम्।**

**कस् ते देवो अधि मार्डीक आसीद् यत् प्राक्षिणाः पितरं पादगृह्यं।। १२।।**

कः। ते। मातरम्। विधवाम्। अचक्रत्। शयुम्। कः। त्वाम्। अजिघांसत्। चरन्तम्।
कः। ते। देवः। अधि। मार्डीके। आसीत्। यत्। प्र। अक्षिणाः। पितरम्। पादऽगृह्य।। १२।।

*कौन तेरी माता को विधवा बनाता है,*
*सोते हुए को कौन तुझको मारना चाहता है, विचरते हुए को (अथवा)।*
*कौन तेरे लिये देव, अधिक सुख उत्पन्न करने वालों में है,*
*जब नष्ट कर डालता है तू पिता को, पाँवों से पकड़कर।। १२।।*

प्रकृति माता है और परमात्मा पिता है। जब जीवात्मा रूपी पुत्र अपने पिता परमात्मा का अनादर करके उसे अपनी आँखों से ओझल कर देता है, उसे भुला देता है, तो यही पिता की बुरी तरह की गई हत्या है। इसी से माता प्रकृति का विधवा होना है। यह पुत्र ही अपने पिता की मृत्यु और अपनी माता के विधवापन का दोषी है। यह चाहे जागरणावस्था में हो और चाहे स्वप्नावस्था में, इसे अन्य कोई भी क्षति नहीं पहुँचा सकता। जब यह प्रमादी बनकर ईश्वरीय नियमों का पालन न करता हुआ अपनी मनमानी करने लगता है, तो यह स्वयं अपना हत्यारा बन जाता है। इसे अन्य कोई देव सुखी नहीं कर सकता। यह अपने शुभ कर्मों के द्वारा ही अपने को सब से अधिक सुखी कर सकता है।

टि. *बनाता है* - **अचक्रत्**। करोति - वे.। दया.। अकरोत् - सा.।

*मारना चाहता है* - **अजिघांसत्**। हन्तुम् इच्छति - वे.। दया.। who sought to slay - W. G.

*सुख उत्पन्न करने वालों में* - **मार्डीके**। सुखयितृवर्गे - वे.। प्रजानां सुखकरणे - सा.। सुखकरे - दया.।

*नष्ट कर डालता है* - **प्राक्षिणाः**। देशान्तरे प्राहिणोत् - वे.। प्रकर्षेणावधीः - सा.। क्षयति हन्ति - दया.। hast slain - W. slewest - G.

*पाँवों से पकड़कर* - **पादगृह्य**। पादेषु गृहीत्वा - वे.। सा.। पादान् ग्रहीतुं योग्यः . दया.।

**अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम्।**
**अपश्यं जायाम् अमहीयमानाम् अधा मे श्येनो मध्वा जभार।। १३।। २६।।**

अवर्त्या। शुनः। आन्त्राणि। पेचे। न। देवेषु। विविदे। मर्डितारम्।
अपश्यम्। जायाम्। अमहीयमानाम्। अध। मे। श्येनः। मधु। आ। जभार।। १३।।

*वृत्ति के अभाव में, कुत्ते की आँतों को पकाया मैंने,*
*नहीं देवों में पाया मैंने, सुखी करने वाले को (किसी को)।*
*देखा मैंने पत्नी को, अपमानित की जाती हुई को,*
*अन्त में मेरे लिये, श्येन मधु को ले आया।। १३।।*

*इन्द्र का वचन :* जब जीव प्रमादी बनकर परमेश्वर के द्वारा निर्धारित नियमों का परित्याग करके मनमानी करने लगता है, तो वह पतित हो जाता है। दुर्दशा को प्राप्त होकर उसे भोजन तक के भी लाले पड़ जाते हैं। कभी कुत्ते के मांस जैसे अभक्ष्य भोजन से पेट भरने तक की नौबत भी आ सकती है। देव भी उससे सहानुभूति रखना छोड़ देते हैं। अथवा दुर्बल इन्द्रियां भी उसे सुख देना छोड़ देती

हैं। उसे अपनी पत्नी को भी दूसरों से अपमानित होते देखना पड़ता है। तब उसकी आँखें खुलती हैं। वह परम पिता परमात्मा की शरण में आ जाता है। श्येन के समान तीव्र गति वाला वह सर्वव्यापक परमेश्वर उसे मधुर ज्ञान की प्राप्ति कराता है और उसके जीवन को माधुर्य से भर देता है।

टि. *वृत्ति के अभाव में* - **अवर्त्या**। अवृत्त्या। वृत्त्या अभावे।। वृत्त्यभावात् - वे.। जीवनोपाय-राहित्येन - सा.। अवर्त्तनीयानि - दया.। in extreme destitution - W. in deep distress - G.

*पकाया मैंने* - **पेचे**। पेचे भक्षणार्थम् - वे.। अपचम् - सा.। I cooked - G.

*अपमानित की जाती हुई को* - **अमहीयमानाम्**। अन्नाभावाद् अपूज्यमानाम् - वे.। अश्लाघ-नीयाम् - सा.। असत्कृताम् - दया.। disrespected - W.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां तृतीये ऽष्टके पञ्चमो ऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त १९

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**एवा त्वाम् इन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः।**
**महाम् उभे रोदसी वृद्धम् ऋष्वं निर् एकम् इद् वृणते वृत्रहत्ये।। १।।**

एव। त्वाम्। इन्द्र। वज्रिन्। अत्र। विश्वे। देवासः। सुऽहवासः। ऊमाः।
महाम्। उभे इति। रोदसी इति। वृद्धम्। ऋष्वम्। निः। एकम्। इत्। वृणते। वृत्रऽहत्ये।। १।।

*इस प्रकार तुझको, हे इन्द्र!, हे वज्रधारी!, इस जगत् में,*
*सब के सब देव, सुखी आह्वानों वाले, रक्षा करने वाले।*
*महान् को, दोनों द्युलोक और भूलोक, बढ़े हुए को, दर्शनीय को,*
*पूर्णतः अकेले को ही वरते हैं, आवरकहनन के संघर्ष में।। १।।*

हे ऐश्वर्यवान्, हे न्यायव्यवस्था रूपी दण्ड को धारण करने वाले परमात्मन्!, इस प्रकार इस जगत् में सुखपूर्वक आह्वान की जा सकने वाली और पुकारे जाने पर रक्षा करने वाली सब दिव्य शक्तियां तथा दोनों द्युलोक और भूलोक अर्थात् द्युलोक और भूलोक में निवास करने वाले देवता और मनुष्य सब के सब आवरक शक्तियों के विनाश के लिये प्रारम्भ किये गए संघर्ष में एकमात्र तुझ महिमा से युक्त, बल और बुद्धि में बढ़े हुए और सब के दर्शनीय का ही वरण करते हैं।

टि. *सुखी आह्वानों वाले* - **सुहवासः।** शोभनाह्वानाः - वे.। सुहवाः शोभनाह्वानाः - सा.। ये सुष्ठु आह्वयन्ति ते - दया.। who are reverently invoked - W. swift to listen - G.

*रक्षा करने वाले* - **ऊमाः।** अवितारः - वे.। सा.। रक्षणादिकर्तारः - दया.। helpers - G.

*दर्शनीय को* - **ऋष्वम्।** दर्शनीयम् - वे.। सा.। श्रेष्ठम् - दया.। pleasing of aspect - W.

*वरण करते हैं* - **वृणते।** प्रार्थयन्ते - वे.। संभजते - सा.। स्वीकुर्वन्ति - दया.। glorify thee - W. (both the worlds) elected - G.

*आवरकहनन के संघर्ष में* - **वृत्रहत्ये।** वृत्रहनने - वे.। वृत्रहननार्थम् - सा.। for the destruction of Vṛtra - W.

**अवासृजन्त जिव्रयो न देवा भुवः सम्राळ् इन्द्र सत्ययोनिः।**
**अहन्नहिं परिशयानम् अर्णः प्र वर्तनीर् अरदो विश्वधेनाः।। २।।**

अव। असृजन्त। जिव्रयः। न। देवाः। भुवः। सम्ऽराट्। इन्द्र। सत्यऽयोनिः।
अहन्। अहिम्। परिऽशयानम्। अर्णः। प्र। वर्तनीः। अरदः। विश्वऽधेनाः।। २।।

*नियुक्त कर दिया, बूढ़े जिस प्रकार (युवाओं को), देवों ने (तुझको),*
*बन गया तू सम्राट्, हे इन्द्र!, सत्य के निवास वाला।*
*मार डाला आहन्ता को, सब ओर लेटे हुए को जल में,*
*खूब (जल)मार्गों को खोद डाला, सबको तृप्त करने वालों को।। २।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश! जिस प्रकार वयोवृद्ध लोग दुष्कर कार्यों में अपने को अशक्त मानकर युवा पुत्रों को उनमें नियुक्त कर देते हैं, उसी प्रकार देवों ने स्वयं को अशक्त समझकर दुष्ट आसुरी शक्तियों के विनाश का कार्य तुझ सर्वशक्तिमान् को सौंप दिया। सत्य के निवास वाला तू उनका सम्राट् बन गया। तूने जल, प्रकाश आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके लेटी हुई आसुरी शक्ति को नष्ट कर डाला और तृप्तिकारक उन सुखसाधनों को सब तक पहुँचने के लिये अनुकूल मार्गों का निर्माण कर दिया है। इस प्रकार दैवी साम्यवाद की स्थापना तूने इस जगत् में सर्वत्र कर दी है।

टि. *नियुक्त कर दिया* - **अव असृजन्त**। अवसृष्टवन्तः - वे.। असुरवधार्थं प्रैरयन् - सा.। relaxed their efforts - G.

*बूढ़े जिस प्रकार (युवाओं को)* - **जव्रयः न**। यथा जीर्णाः पुत्रान् - वे.। जीर्णा प्रवृद्धाः पितरो यूनः पुत्रान् इव - सा.। दृढजीवना इव - दया.। as worn with eld - G.

*हो गया* - **भुवः**। अभवः - वे.। सा.।

*सत्य के निवास वाला* - **सत्ययोनिः**। कल्याणवासस्थानः - वे.। सत्यनिवासस् त्वम् - सा.। सत्यम् अविनाशि योनिः कारणं गृहं वा यस्य - दया.। the abode of truth - W.

*प्रकर्ष से (जल)मार्गों को खोद डाला* - **प्र वर्तनीः अरदः**। सर्वत्र प्रवर्तिका नदीः प्रकर्षेण विलेखनं कृतवान् - सा.। hast marked out the rivers - W. duggest out channels - G.

*सबको तृप्त करने वालों को* - **विश्वधेनाः**। विश्वस्य प्रीणयितॄन् - वे.। विश्वस्य प्रीणयितॄः - सा.। विश्वाः सर्वा धेना वाचो येषां ते - दया.। all delighting - W. all-supporting - G.

**अतृ॑ष्णुवन्तं॒ विय॑तम् अबु॒ध्यम् अबु॑ध्यमानं सुषुपा॒णम् इ॑न्द्र।**
**स॒प्त प्रति॑ प्र॒वत॑ आ॒शया॑न॒म् अहिं॒ वज्रे॑ण॒ वि रि॑णा अप॒र्वन्।। ३।।**

अतृ॑ष्णुवन्तम्। विऽय॑तम्। अ॒बु॒ध्यम्। अबु॑ध्यमानम्। सु॒सु॒पा॒नम्। इ॒न्द्र॒।
स॒प्त। प्रति॑। प्र॒ऽवत॑ः। आ॒ऽशया॑नम्। अहि॑म्। वज्रे॑ण। वि। रि॒णा॒ः। अ॒प॒र्वन्।। ३।।

*तृप्त न होने वाले को, अनियन्त्रित को, अज्ञानी को,*
*(जगाने पर भी) न जागने वाले को, खूब सोने वाले को, हे इन्द्र।*
*सर्पणशीलों के सम्मुख, नीचे को जाने वालियों के, लेटे हुए को,*
*आहन्ता को वज्र से मार डालता है तू, न पोरों पर (प्रहार करते हुए)।। ३।।*

हे ऐश्वर्यवान् प्रभु! भोगों से कभी तृप्त न होने वाले, इन्द्रियों को अपने वश में न रखने वाले, अज्ञानी, समझाने पर भी न समझने वाले, अत्यधिक सोने वाले, सर्पणशील, अधोमुख, सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाले, अथवा नीचे की ओर गति करने वाली इन्द्रियों के वश में हो जाने वाले, किसी भी असुरवृत्ति अर्थात् दुष्ट हिंसक जन को तू अपनी न्यायव्यवस्था के द्वारा जोड़ों पर प्रहार किये बिना ही नष्ट कर डालता है।

टि. *अनियन्त्रित को* - **वियतम्**। विबद्धम् - वे.। वियतम् शिथिलाङ्गम् - सा.। अजितेन्द्रियम् - दया.। unnerved - W. extended - G.

*अज्ञानी को* - **अबुध्यम्।** गतबुद्धिम् - वे.। दुर्विज्ञानम् - सा.। बुद्धिरहितम् - दया.।

*खूब सोने वाले को* - **सुषुपाणम्।** स्वपन्तम् - वे.। सुप्तम् - सा.। शोभनं पानं यस्य तम् - दया.। slumbering - W.

*सर्पणशीलों के सम्मुख* - **सप्त प्रति।** सप्त नदीः आवृत्य - वे.। सप्त सर्पणस्वभावा अपः प्रति - सा.। against the seven - G.

*मार डालता है तू* - **वि रिणाः।** विशेषेण हतवान् असि - सा.। हिंस्याः - दया.। thou hast slain - W. thou rentest - G.

*पोरों पर प्रहार न करते हुए* - **अपर्वन्।** अकाण्डे निद्रामध्ये - वे.। अपर्वणि पौर्णमास्याम्। पौर्णमास्यां वृत्रवधस् त्वष्टा हतपुत्र इत्यनुवाके घ्नन्ति वा एनं पौर्णमास आमावास्यायां प्याययन्तीति तैत्तिरीये ऽप्युक्तः। सा.। अपर्वणि पर्वरहिते समये - दया.। on the day of full moon - W. where no joint was - G.

**अक्षोदयच् छवसा क्षाम बुध्नं वार् ण वातस् तविषीभिर् इन्द्रः।**
**दृळ्हान्यौभ्नाद् उशमान ओजो ऽवाभिनत् ककुभः पर्वतानाम्।। ४।।**

अक्षोदयत्। शवसा। क्षाम। बुध्नम्। वाः। न। वातः। तविषीभिः। इन्द्रः।
दृळ्हानि। औभ्नात्। उशमानः। ओजः। अव। अभिनत्। ककुभः। पर्वतानाम्।। ४।।

*हिला देता है बल से (अपने), पृथिवीसम्बन्धी आधार को,*
*जल को जिस प्रकार वायु, (हिला देता है) बलों से, इन्द्र।*
*दृढ़ों को भी मसल डालता है, कामना करता हुआ बल की,*
*भेदन करके डाल देता है वह, शिखरों को पर्वतों के।। ४।।*

ऐश्वर्यों का स्वामी वह परमात्मा महान् बलशाली है। वह अपने बल से पृथिवी के आधार में इस प्रकार कम्पन उत्पन्न कर देता है, अथवा शरीर के आधारभूत बुद्धि, मन, प्राण आदि को इस प्रकार झझकोर डालता है, जिस प्रकार वायु अपने बलों से जलों को अवलोडित कर देता है। बल की कामना वाला वह जगदीश्वर काम, क्रोध आदि शत्रुओं के दृढ़ गढ़ों को पूर्णतया मलियामेट कर डालता है। वह अज्ञान के पर्वतों के शिखरों का भेदन करके उनको धराशायी कर डालता है।

*टि. हिला देता है* - **अक्षोदयत्।** संपिपेष - सा.। सञ्चूर्णयति - दया.। has agitated - W.

*पृथिवी सम्बन्धी आधार को* - **क्षाम बुध्नम्।** उदकमूलं (अक्षोदयत्) यथा क्षीणोदको भवति - वे.। बुध्नम् अन्तरिक्षं क्षाम क्षीणोदकम् - सा.। क्षान्तम् अन्तरिक्षम् - दया.। the exhausted firmament - W. earth and her foundation - G.

*दृढ़ों को भी मसल डालता है* - **दृळ्हानि औभ्नात्।** दृढानि स्थानानि हिंसितवान् - वे.। दृढानि स्थिराणि अभ्राणि अभाङ्क्षीत् - सा.। पुष्टानि मृद्नाति - दया.। he burst the firm asunder - G.

*शिखरों को पर्वतों के* - **ककुभः पर्वतानाम्।** मेघानाम् उदकनिस्सरणदिशः - वे.। गिरीणां पक्षान् - सा.। दिशाः मेघानाम् - दया.। the peaks of mountains - W. G.

**अभि प्र दद्रुर् जनयो न गर्भं रथाइव प्र ययुः साकम् अद्रयः।**
**अतर्पयो विसृत उब्ज ऊर्मीन् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्।। ५।। १।।**

अभि। प्र। दुद्रुः। जनयः। न। गर्भम्। रथाःऽइव। प्र। ययुः। साकम्। अद्रयः।
अतर्पयः। विऽसृतः। उब्जः। ऊर्मीन्। त्वम्। वृतान्। अरिणाः। इन्द्र। सिन्धून्।। ५।।

*ओर (तेरी) वेग से दौड़ते हैं वे, जननियां जिस प्रकार ओर शिशु की,*
*रथों की तरह प्रकर्ष से गमन करते हैं (तेरी ओर), साथ मिलकर आयुध।*
*तृप्त करता है तू जलप्रवाहों को, नियन्त्रित करता है ऊर्मियों को,*
*अवरुद्धों को काटकर बहा देता है, हे इन्द्र!, नदियों को।। ५।।*

हे परमेश्वर! जिस प्रकार जननियां अपने प्रिय शिशु को गले से लगाने के लिये उसकी ओर तेजी से दौड़ती हैं, उसी प्रकार तेरे सभी उपासक तुझे गले से मिलने के लिये, तेरा प्यार पाने के लिये तेरी ओर दौड़ते हैं। तेरे आयुध, तेरी व्यवस्थाएं, तेरी दिव्य शक्तियां भी वेगवान् रथों की तरह एक साथ मिलकर तेरी सहायता के लिये तेरी ओर दौड़ती हैं। तू जलप्रवाहों की तरह बहने वाले अपने उपासकों के विचारप्रवाहों को पवित्र करके सन्तुष्ट करता है। तू चंचल लहरों की तरह चलायमान उनकी विचारतरंगों को सुनियन्त्रित करता है। तू दुष्ट आसुरी शक्तियों के द्वारा रोककर रखे हुए सुखरूपी जलप्रवाहों को उनसे मुक्त कराकर बहा देता है।

टि. *ओर (तेरी) वेग से दौड़ते हैं* – **अभि प्र दद्रुः।** अभि प्र दारितवन्तः प्रकाशितवन्तः – वे.। have hastened to thee - W. they ran to thee - G.

*आयुध* – **अद्रयः।** मेघाः – वे.। दया.। मरुतः – सा.। Maruts - W. clouds - G.

*जलप्रवाहों को* – **विसृतः।** विविधं गच्छतो मनुष्यादीन् – वे.। विसरणशीला नदीः – सा.। ये विशेषेण सरन्ति तान् – दया.। flowing streams - W.

*नियन्त्रित करता है ऊर्मियों को* – **उब्जः ऊर्मीन्।** हतवान् असि उदकोर्मीन् – वे.। ऊर्मीन् मेघान् अवधीः – सा.। हन्याः सतरङ्गान् – दया.। thou hast shattered the clouds - W. thou didst force the billows - G.

*अवरुद्धों को काटकर बहा देता है तू* – **वृतान् अरिणाः।** त्वं परिवृतान् सप्त सिन्धून् अगमयः – वे.। वृत्रेणावृतान् अपः प्रैरयः – सा.। स्वीकृतान् हिनस्ति – दया.। thou hast set free the obstructed rivers - W. G.

**त्वं महीम् अवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम्।**
**अरमयो नमसैजद् अर्णः सुतरणाँ अकृणोर् इन्द्र सिन्धून्।। ६।।**

त्वम्। महीम्। अवनिम्। विश्वऽधेनाम्। तुर्वीतये। वय्याय। क्षरन्तीम्।
अरमयः। नमसा। एजत्। अर्णः। सुऽतरणान्। अकृणोः। इन्द्र। सिन्धून्।। ६।।

*तू महान् को, नदी को, सबको तृप्त करने वाली को,*
*तीक्ष्ण बुद्धि वाले के लिये, प्रगतिशील के लिये, बहती हुई को।*
*शान्त कर देता है, नमस्कार के साथ (याचना करने पर), बहते जल को,*

*सुख से तरने योग्य बना देता है तू, हे इन्द्र!, जलप्रवाहों को।। ६।।*

मानव का जीवन निरन्तर बहने वाली एक महत्त्वपूर्ण नदी है। शेष सब योनियां तो भोग योनियां हैं, परन्तु मनुष्ययोनि में जीव को कर्म करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। इसलिये यह योनि सब कर्म करने वालों को तृप्त करने वाली है। हे परमेश्वर!, तीक्ष्ण बुद्धि वाला प्रगतिशील मनुष्य जब नमस्कार के साथ तुझसे जीवन में सुख और शान्ति की याचना करता है, तो तू उसके जीवन को सुख और शान्ति से परिपूर्ण कर देता है। उसकी अशान्त चित्तवृत्तियों को भी शान्त कर देता है। तू अपने भक्तों को भवसागर से सुखपूर्वक पार करा देता है।

टि. *नदी को* - **अवनिम्**। पृथिवीम् - वे.। सा.। रक्षिकाम् - दया.। earth - W. stream - G.

*तीक्ष्ण बुद्धि वाले के लिये* - **तुर्वीतये**। तुर्वणिस् तूर्णवनिः (नि. ६.१४)।। तुर्वीतिनाम्ने राज्ञे - सा.। शत्रूणां हिंसकाय - दया.।

*प्रगतिशील के लिये* - **वय्याय**। वेतेर् गत्यर्थाद् धातोर् यत्प्रत्ययान्तो निपातितः। वेगवान् गतिशीलो वा।। वय्यनाम्ने च - सा.। प्राप्तव्याय सुखाय - दया.।

*शान्त कर देता है* - **अरमयः**। रमयसि - सा.। delighted - W. didst stay - G.

*नमस्कार के साथ* - **नमसा**। हविषा दत्तेन - वे.। अन्नेन - सा.। with (abundant food) - W. at their prayer - G.

*बहते जल को* - **एजत् अर्णः**। एजत् एजता चलता अर्णो ऽर्णसोदकेन - सा.। the rushing river - G.

**प्राग्रुवो नभन्वो३ न वक्वा ध्वस्रा अपिन्वद् युवतीर् ऋतज्ञाः।**
**धन्वान्यज्राँ अपृणक् तृषाणाँ अधोग् इन्द्रः स्तर्यो३ दंसुपत्नीः।। ७।।**

प्र। अग्रुवः। नभन्वः। न। वक्वाः। ध्वस्राः। अपिन्वत्। युवतीः। ऋतऽज्ञाः।
धन्वानि। अज्रान्। अपृणक्। तृषाणान्। अधोक्। इन्द्रः। स्तर्यः। दम्ऽसुपत्नीः।। ७।।

*प्रकर्ष से अग्रगामिनी नदियों को, हिंसक सेनाओं की तरह शोर करने वालियों को,*
*ध्वंस करने वालियों को, भर देता है मिश्रणयुक्तों को, ऋत को जानने वालियों को।*
*मरुस्थलों को (भर देता है), गमन करने वालों को (उनमें), प्यासों को, (जलों से),*
*दोहन कर डालता है इन्द्र सूखी गौओं का, दमनकारक असुरों से सुष्ठु पालितों का।। ७।।*

वह ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर आगे ही आगे बढ़ने वाली, शत्रुहिंसक सेनाओं की तरह शोर करने वाली, तटों को ध्वस्त कर डालने वाली, अनेक प्रकार के जलों के मिश्रण वाली, शाश्वत नियमों को जानने और उनका पालन करने वाली नदियों को जलों से परिपूर्ण कर डालने की तरह अनेक प्रकार के संघर्षों वाली, सुख और दुःख के मिश्रण वाली, मार्ग में आने वाली विघ्नबाधओं को नष्ट कर डालने वाली, ईश्वरीय नियमों का पालन करने वाली, अपने उपासकों की जीवनयात्रा को सुखों से भर देता है। वह मरुस्थलों और उनमें यात्रा करने वाले प्यासे जनों की प्यासों को जलों की वर्षा से बुझाने की तरह उपासकजनों की मनःकामनाओं को पूर्ण करके शान्त कर देता है। वह असुरों के द्वारा अपने अधीन की हुई दूध न देने वाली गौओं को उनसे मुक्त करके पुनः दुधारू बना देने की तरह

उपासकों की निराशाओं को आशाओं में बदल देता है।

टि. *अग्रगामिनी नदियों को* - **अग्रुवः**। नदीः - वे.। अग्रुव इति नदीनामैतत्। अग्रगामिनीर् नदीः। सा.। या अग्रं गच्छन्ति ता नद्यः। अग्रुव इति नदीनाम (निघ. १.१३)। दया.। unmarried; poetical N. of the ten fingers, and also of the seven rivers - MW. rivers - W. unwedded - G.

*हिंसक सेनाओं की तरह शोर करने वालियों को* - **नभन्वः न वक्वाः**। नभतिर् हिंसाकर्मा, सेनाः इव शब्दकारिणीः - वे.। शत्रूणां हिंसकाः सेना इव - सा.। नभन्वः अरीणां हिंसका वीरा इव वक्राः - दया.। like armies destructive (of their foes) - W. like fountains bubbling - G.

*मिश्रणयुक्तों को* - **युवतीः**। अद्भिर् मिश्रिताः - सा.। प्राप्तयौवनाः स्त्रियः - दया.। youthful - W. young Maids - G.

*ऋत को जानने वालियों को* - **ऋतज्ञाः**। सत्यज्ञाः - वे.। ऋतस्यान्नस्य जनयित्रीः - सा.। या ऋतं जानन्ति ताः - दया.। the parents of plenty - W. skilled in law - G.

*गमन करने वालों को* - **अज्रान्**। ये प्राप्नुवन्ति तान् - वे.। मार्गस्य गन्तॄन् - सा.। ये ऽजन्ति नित्यं गच्छन्ति तान् - दया.। travellers - W. plains - G.

*दोहन कर डालता है सूखी गौओं का* - **अधोक् स्तर्यः**। मेघान् दुग्धवान् गमनशीलाः अपः - वे.। स्तर्यः स्तरीर् निवृत्तप्रसवा गाः। अधोक् अधुक्षत्। इन्द्रो राक्षसकृतनिरोधदुःखान् निरुद्धप्रसवा अपि गा विमुच्य सप्रसवाश् चकारेत्यर्थः। सा.। has milked the barren cows - W. G.

*दमनकारक असुरों से सुष्ठु पालितों का* - **दंसुपत्नीः**। दमनपरा असुरा यासां शोभनाः पतयः - वे.। दंसुपत्नीः दमनपरा असुराः सुष्ठु पतयो यासां ताः। सा.। दंसूनां कर्मकर्तॄणां पत्न्यः - दया.। whom the Asuras had become the lords of - W. of the mighty master - G.

**पूर्वीर् उषसः शरदश् च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद् वि सिन्धून्।**
**परिष्ठिता अतृणद् बद्बधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या॥ ८॥**

पूर्वीः। उषसः। शरदः। च। गूर्ताः। वृत्रम्। जघन्वान्। असृजत्। वि। सिन्धून्।
परिऽस्थिताः। अतृणत्। बद्बधानाः। सीराः। इन्द्रः। स्रवितवे। पृथिव्या॥ ८॥

*बहुत सी उषाएं, शरद् ऋतु भी, निगल लिये जाते हैं (वृत्र के द्वारा),*
*वृत्र को (उसको) मार डालता है (इन्द्र), बहा देता है विविधतया जलप्रवाहों को।*
*सब ओर से घिरी हुई को (मेघों से), चीरकर बहा देता है रुकी हुई को,*
*नदियों को इन्द्र बहने के लिये, पृथिवी के मार्ग से॥ ८॥*

दुष्ट आवरक आसुरी शक्ति प्रारम्भिक प्रकाश और ज्ञानरूपी उषाओं को तथा उदात्त भावनाओं और श्रेष्ठ विचार रूपी (स्वच्छ जलों और निर्मल आकाश से युक्त) शरत्कालों को निगल जाती है। सर्वरक्षक परमेश्वर उस आसुरी शक्ति को नष्ट करके प्रकाश और ज्ञान की रश्मियों तथा उदात्त भावनाओं और उत्तम विचारों को उससे मुक्त कराकर जलों की तरह सबके लिये सब ओर बहा देता है। वह जगदीश्वर जिस प्रकार मेघों के द्वारा घेरे हुए और रोके हुए जलों को मेघों को चीरकर पृथिवी पर बहने के लिये छोड़ देता है, उसी प्रकार वह सब प्रकार के सुखसाधनों को आसुरी शक्तियों से

मुक्त कराकर सबको प्राप्त करा देता है।

टि. *निगल लिये जाते हैं* - **गूर्ताः**। भक्षिताः - वे.। तमिस्रया गीर्णाः - सा.। swallowed - W.

*सब ओर से घिरी हुई को* - **परिष्ठिताः**। परितः स्थिताः, सर्वं देशं व्याप्य वर्तमानाः - वे.। मेघेषु परितः स्थिताः - सा.। परितः सर्वतः स्थिताः - दया.। encompassed - W. G.

*रुकी हुई को* - **बद्बधानाः**। मनुष्यान् बाधमानाः - वे.। वृत्रेण परितो बाध्यमानाः - सा.। वधं कुर्वाणाः - दया.। imprisoned - W. pressed together - G.

*नदियों को* - **सीराः**। नदीः - वे.। सा.। सीरा इति नदीनाम (निघ. १.१३) - दया.।

**वम्रीभिः पुत्रम् अग्रुवो अदानं**
**निवेशनाद् धरिव आ जभर्थ।**
**व्य१न्धो अख्यद् अहिम् आददानो**
**निर् भूद् उखच्छित् सम् अरन्त पर्व।। ९।।**

वम्रीभिः। पुत्रम्। अग्रुवः। अदानम्। निऽवेशनात्। हरिऽवः। आ। जभर्थ।
वि। अन्धः। अख्यत्। अहिम्। आऽददानः। निः। भूत्। उखऽछित्। सम्। अरन्त। पर्व।। ९।।

*दीमकों के द्वारा, पुत्र को अग्रगामी के, खाए जाते हुए को,*
*निवास के स्थान से, हे प्राणशक्तियों के स्वामी, निकाला तूने।*
*स्पष्ट रूप से, अन्धे ने देखा सर्प को, निकाले जाते हुए ने,*
*निकल गया घटभञ्जक (वह), जुड़ गए जोड़ (उसके)।। ९।।*

यह जीव अग्रगामी परमेश्वर का पुत्र है। यह अज्ञान की बाम्बी में पड़ा हुआ है। दीमक इसे सब ओर से खा रही है। इसका शरीर छलनी हो गया है और जोड़ अलग-अलग हो गए हैं। हे प्राणशक्तियों के स्वामी परमेश्वर! जब तेरी दयादृष्टि होती है, तो तू इसे उस दीमक के घुरें से बाहर निकालता है। पहले यह अज्ञान से अन्धा था। परन्तु अब बाहर निकाले जाने पर इसे ज्ञान के चक्षु मिल जाते हैं और यह अज्ञानरूपी सर्प को भली प्रकार पहचानने लगता है। जब यह अज्ञान के घुरे को तोड़कर बाहर आ जाता है, तो तुझ परमेश्वर की कृपा से इसके कर्मशक्ति रूपी अङ्ग और चिन्तनशक्ति रूपी जोड़ पुनः जुड़ जाते हैं और यह स्वस्थ होकर अपने जीवन के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है।

टि. *दीमकों के द्वारा* - **वम्रीभिः**। उपदीकाभिः - वे.। उपजिह्विकाभिः - सा.। उद्गीर्णाभिः - दया.। by the ants - W. G.

*अग्रगामी के* - **अग्रुवः**। अग्रुनाम्नः कस्यचित् - वे.। अग्रू नाम काचित् तस्याः - सा.। नद्यः - दया.। unwedded damsel's - G.

*खाए जाते हुए को* - **अदानम्**। अद्यमानम् - वे.। सा.। दानस्याकर्तारम् - दया.।

*घटभञ्जक* - **उखच्छित्**। वल्मीकोखायाश् छेत्ता वे.। वल्मीकाख्याया उखायाश् छेदकानि - सा.। य उखं गमनं छिन्नत्ति - दया.। brake the jar - G.

*जुड़ गए जोड़* - **सम् अरन्त पर्व**। शरीरपर्वाणि सङ्गतान्यासन् - वे.। पर्व पर्वाण्यस्य सर्वाणि

अङ्गानां शिथिलानि पर्वाणि समरन्त समगच्छन्त - सा.। the joints were restrung - W. G.

**प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्राविद्वाँ आह विदुषे करांसि।**
**यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्तापांसि राजन् नर्याविवेषीः।। १०।।**

प्र। ते। पूर्वाणि। करणानि। विप्र। आऽविद्वान्। आह। विदुषे। करांसि।
यथाऽयथा। वृष्ण्यानि। स्वऽगूर्ता। अपांसि। राजन्। नर्या। अविवेषीः।। १०।।

*खूब तेरे पूर्व किये हुओं को कर्मों को, हे मेधावी!,*
*भली प्रकार ज़ानता हुआ, बखान करता हूँ मैं, विद्वज्जनों के लिये, कर्मों का तेरे।*
*जिन-जिन को, पराक्रमयुक्तों को, स्वयं प्रकट हुओं को,*
*कर्मों को, हे राजन्!, नरहितकारियों को, व्याप्त करता है तू।। १०।।*

हे उत्तम मेधा के स्वामी परमेश्वर! मैं तेरा उपासक तेरे द्वारा पूर्व काल में किये हुए जगत्सृष्टि आदि महान् कार्यों को भली प्रकार जानता हूँ। इसलिये, हे समस्त जगत् पर शासन करने वाले जगदीश!, जिन-जिन पराक्रमयुक्त, स्वयं अपना परिचय देने वाले, सब मनुष्यों का हित करने वाले कर्मों को तू व्याप्त करता है, सम्पन्न करता है, तेरे उन-उन सब कर्मों का मैं विद्वज्जनों में भली प्रकार बखान करता हूँ।

टि. *बखान करता हूँ मैं* - **आह**। अयम् ऋषिः प्र ब्रवीति - वे.। ब्रवीति - सा.।

*विद्वज्जनों के लिये* -**विदुषे**। विदुषे जनाय - वे.। विदुषः सर्वं जानतस् ते - सा.। of thee who art all wise - W. to the wise man - G.

*कर्मों का* - **करांसि**। कर्माणि - वे.। सा.।

*पराक्रमयुक्तों को* - **वृष्ण्यानि**। वर्षणनिमित्तानि - वे.। वर्षणयोग्यानि - सा.। बलकराणि - दया.। generative of rain - W. great acts - G.

*स्वयं प्रकट हुओं को* - **स्वगूर्ता**। स्वभूतोद्यमनानि - वे.। स्वगूर्तानि स्वयम् उद्गूर्णानि - सा.। self-evolved - W. spontaneous - G.

*व्याप्त करता है तू* - **अविवेषीः**। व्याप्नोः। अकार्षीर् इति यावत्। सा.। प्राप्नुयाः - दया.। hast performed - W. as thou has wrought them - G.

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। ११।। २।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१६.२१ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त २०

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**आ न इन्द्रो दूराद् आ न आसाद् अभिष्टिकृद् अवसे यासद् उग्रः।**
**ओजिष्ठेभिर् नृपतिर् वज्रबाहुः सङ्गे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून्।। १।।**

आ। नः। इन्द्रः। दूरात्। आ। नः। आसात्। अभिष्टिऽकृत्। अवसे। यासत्। उग्रः।

ओजिष्ठेभिः। नृऽपतिः। वज्रऽबाहुः। सम्ऽगे। समत्ऽसु। तुर्वणिः। पृतन्यून्।। १।।

*इस ओर हमारे पास इन्द्र दूर से, इस ओर हमारे पास निकट से,*
*अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला, समृद्धि के लिये गमन करे तेजस्वी।*
*तेजस्वियों के साथ, मनुष्यों का पालक, वज्र को भुजाओं में धारण करने वाला,*
*युद्ध में, संघर्षों में, नष्ट कर डालने वाला, आक्रमण करने वालों को।। १।।*

वह ऐश्वर्यों का स्वामी परमात्मा दूर और निकट सर्वत्र विद्यमान है। वह सब की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला है। वह महान् तेजों को धारण करने वाला, मनुष्यों का पालक और न्यायव्यवस्था को अपने अधीन रखने वाला है। वह जीवन के महान् संघर्ष में और छोटे-छोटे संघर्षों में अपनी सहायक शक्तियों के साथ चोर, डाकू आदि बाहर से आक्रमण करने वालों और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर आक्रमणकारियों को नष्ट कर डालने वाला हमारी रक्षा, समृद्धि आदि के लिये निकट अथवा दूर से आकर हमारे हृदयमन्दिरों में निवास करे।

टि. *निकट से* - **आसात्**। अन्तिकश् चेत् ततः - वे.। आसन्नाद् अन्तिकात् - सा.। दया.।

*इस ओर गमन करे* - **आ यासत्**। आगच्छतु - वे.। आयातु आगच्छतु - सा.। समन्तात् प्राप्नुयात् - दया.। come to us - W. G.

*तेजस्वियों के साथ* - **ओजिष्ठेभिः**। बलवत्तमैर् अश्वैः - वे.। अतिशयेन तेजस्विभिर् मरुद्भिः - सा.। अतिशयेन बलादिगुणयुक्तैर् नरोत्तमसैन्यैः - दया.। with the strongest - G.

*युद्ध में* - **सङ्गे**। शत्रुभिः सङ्गे सति - वे.। शत्रुभिः संयोगे सति - सा.। in conflict - W.

*नष्ट कर डालने वाला* - **तुर्वणिः**। तरणशीलः - वे.। हिंसन् - सा.। शीघ्रकारी - दया.। overcoming - W. slaying - G.

*आक्रमणकारियों को* - **पृतन्यून्**। अस्मान् पृतनाम् इच्छतः - वे.। शत्रून् - सा.। आत्मनः पृतनाम् सेनाम् इच्छून् - दया.। the foes - W. G.

**आ नु इन्द्रो हरिभिर् यात्वच्छार्वाचीनो ऽवसे राधसे च।**
**तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शीमं यज्ञम् अनु नो वाजसातौ।। २।।**

आ। नः। इन्द्रः। हरिऽभिः। यातु। अच्छ। अर्वाचीनः। अवसे। राधसे। च।
तिष्ठाति। वज्री। मघऽवा। विऽरप्शी। इमम्। यज्ञम्। अनु। नः। वाजऽसातौ।। २।।

*सब ओर से हमारी, इन्द्र बलों के साथ गमन करे, ओर*
*इस ओर गमन करने वाला, संरक्षण के लिये, धनैश्वर्य के लिये भी।*
*स्थित होवे वज्र को धारण करने वाला, ऐश्वर्यों का स्वामी, महान्,*
*इस यज्ञ में, (और) तत्पश्चात्, हमारे ऐश्वर्यों की प्राप्ति में।। २।।*

न्यायव्यवस्था को धारण करने वाला, धनैश्वर्यों का स्वामी महान् परमेश्वर सदा हमारे पास आकर हमारी रक्षा करता है। वह हमारे संरक्षण के लिये और हमें बाह्य तथा आभ्यन्तर सम्पदाओं की प्राप्ति कराने के लिये अपनी दिव्य शक्तियों के साथ सदा हमारी ओर गमन करे। वह यज्ञ आदि शुभ कर्मों में और तत्पश्चात् दिव्य ऐश्वर्यों की प्राप्ति में हमारी सहायता करे।

टि. *इस ओर गमन करने वाला* - **अर्वाचीनः**। इतोमुखः - वे.। अस्मदभिमुखः - सा.। to our presence - W. inclined to us - G.

*धनैश्वर्य के लिये* - **राधसे**। धनाय - वे.। सा.।

*स्थित होवे* - **तिष्ठाति**। तिष्ठतु - वे.। सा.। may stand by us - G.

*महान्* - **विरप्शी**। महान् - वे.। महान्। विरप्शीति महन्नामसु पाठात्। सा.। loud-voiced - G.

*ऐश्वर्यों की प्राप्ति में* - **वाजसातौ**। संग्रामे - वे.। युद्धे प्राप्ते सति - सा.। in combat - G.

**इमं यज्ञं त्वम् अस्माकम् इन्द्र पुरो दधत् सनिष्यसि क्रतुं नः।**
**श्वघ्नीव वज्रिन् त्सनये धनानां त्वया वयम् अर्य आजिं जयेम॥ ३॥**

इमम्। यज्ञम्। त्वम्। अस्माकम्। इन्द्र। पुरः। दधत्। सनिष्यसि। क्रतुम्। नः।
श्वघ्नीऽइव। वज्रिन्। सनयै। धनानाम्। त्वया। वयम्। अर्यः। आजिम्। जयेम॥ ३॥

*इसको यज्ञ को तू हमारे, हे इन्द्र!,*
*मुख्यता प्रदान करता हुआ, स्वीकार कर (इस) कर्म को हमारे।*
*बहेलिये की तरह, हे वज्रधारी!, प्राप्ति में धनों की,*
*तेरे साथ हम शत्रु से स्पर्धा को विजित करें॥ ३॥*

हे ऐश्वर्यशाली जगदीश्वर! हम जो भी यह यज्ञ आदि शुभ कर्म कर रहे हैं, यह तुझे समर्पित है। तू इसका आदर करता हुआ इसे स्वीकार कर। हे न्यायव्यवस्था के स्वामी परमेश्वर! जिस प्रकार बहेलिया वन में परिश्रम करके अपने शिकार को प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार हम भी लौकिक और अलौकिक धनों की प्राप्ति के लिये, अभ्युदय और निःश्रेयस् को पाने के लिये, तेरी सहायता से चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं से स्पर्धा को जीत लेवें।

टि. *मुख्यता प्रदान करता हुआ* - **पुरः दधत्**। पुरस्ताद् धारयन् - वे.। अस्मान् पुरस्कृतान् कुर्वन् - सा.। placing us before thee - W. honouring - G.

*कर्म को* - **क्रतुम्**। युद्धम् - वे.। क्रियमाणम् - सा.। प्रज्ञाम् - दया.। our holy offering - W. and fill us full of courage - G.

*स्वीकार कर* - **सनिष्यसि**। संभजसि - वे.। संभजिष्यसि - सा.। दया.। shalt give us strength - G.

*बहेलिये की तरह* - **श्वघ्नीऽइव**। यथा लुब्धकस्त्री - वे.। मृगयुर् मृगान् इव - सा.। वृकीव - दया.। as the huntsman - W. G.

*शत्रु से* - **अर्यः**। अरेः - वे.। अरयः स्तोतारो वयम् - सा.। स्वामी - दया. thy worshippers - W. our foemen - G.

**उशन्नु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुषुतस्य स्वधावः।**
**पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः सम् अन्धसा ममदः पृष्ठ्येन॥ ४॥**

उशन्। ऊँ इति। सु। नः। सुऽमनाः। उपाके। सोमस्य। नु। सुऽसुतस्य। स्वधाऽवः।
पाः। इन्द्र। प्रतिऽभृतस्य। मध्वः। सम्। अन्धसा। ममदः। पृष्ठ्येन॥ ४॥

*प्यार करता हुआ (हमको), सुष्ठु हमारे, शोभन मन वाला, निकट में,*
*सोम का निश्चय से, सुष्ठु सवन किये हुए का, हे स्वयं को धारण करने वाले।*
*पान कर तू, हे इन्द्र!, समर्पित किये हुए का, माधुर्ययुक्त का,*
*सम्यक् अन्न से हर्षित हो तू, (पर्वत की) पीठ पर उत्पन्न होने वाले से ।। ४।।*

हे स्वयं को स्वयं ही धारण करने वाले स्वतन्त्र एवं सर्वतन्त्र परमेश्वर! हमारे प्रति शोभन मन वाला तू हमारे निकट में आकर हमारे द्वारा परिश्रमपूर्वक तैयार किये हुए और समर्पित किये जाते हुए माधुर्य से युक्त हमारे भक्तिरस का तू पान कर। शारीरिक परिश्रम और तप के द्वारा सवन किये हुए अपने इस भोजन को पाकर तू हर्ष को प्राप्त कर।

टि. *प्यार करता हुआ* - **उ॒शन्।** कामयमानः - वे.। सा.। दया.। loving us well - G.

*शोभन मन वाला* - **सुमनाः।** शोभनमनस्कः - सा.। प्रसन्नचित्तः - दया.। favourably disposed - W. benevolent - G.

*हे स्वयं को धारण करने वाले* - **स्वधावः।** हे अन्नवन् - वे.। सा.।

*पान कर तू* - **पाः।** अपाः। लुङि मध्यमपुरुषैकवचनम्।। पिब - वे.। सा.। रक्ष - दया.।

*समर्पित किये हुए का* - **प्रतिभृतस्य।** आहवनीयं प्रति हृतम् - वे.। संभृतम् - सा.। धृतं धृतं प्रति वर्तमानस्य - दया.। prepared - W. we offer - G.

*(पर्वत की) पीठ पर उत्पन्न होने वाले से* - **पृष्ठ्येन।** पृष्ठस्य बलकरेण - वे.। पृष्ठ्येन। पृष्ठ्यशब्देन माध्यन्दिनसवन उद्गातृभिर् उन्नीयमानं स्तोत्रम् उच्यते। तत्सम्बन्धिना। सा.। पृष्ठ्येन पश्चाद्भवेन सुखेन - दया.। with the noon-day hymn - W. that cometh from this mountain ridges - G.

**वि यो र॑र॒प्श ऋषि॑भि॒र् नवे॑भिर् वृ॒क्षो न प॒क्वः सृण्यो॒ न जेता॑।**
**मर्यो॒ न योषा॑म् अ॒भि मन्य॑मा॒नो ऽच्छा॑ विवक्मि पुरुहू॒तम् इन्द्र॑म्।। ५।। ३।।**

वि। यः। र॒रप्शे। ऋषि॑ऽभिः। नवे॑भिः। वृ॒क्षः। न। प॒क्वः। सृण्यः॑। न। जेता॑।
मर्यः॑। न। योषा॑म्। अ॒भि। मन्य॑मानः। अच्छ॑। वि॒व॒क्मि॒। पु॒रु॒ऽहू॒तम्। इन्द्र॑म्।। ५।।

*विशेष रूप से जो स्तुति किया जाता है, ऋषियों के द्वारा स्तुतिकर्ताओं के,*
*वृक्ष की तरह पके फलों वाले की, अंकुश से सिधाए हाथी की तरह विजेता की।*
*पति जैसे पत्नी से (बातें करता है), सम्मान (उसका) करता हुआ,*
*बातें करता हूँ मैं (उसी प्रकार), बहुतों से पुकारे जाने वाले इन्द्र से।। ५।।*

वह परमेश्वर, जो उत्तम फलदाता होने से पके हुए फलों वाले वृक्ष की तरह प्रशंसा किया जाता है, और जो अपने नियमों से मर्यादित होने से सर्वविजेता होने के कारण अंकुश से सिधाए हुए विजेता हाथी की तरह प्रशंसित होता है, बहुतों से पुकारे जाने वाले उस परमेश्वर से मैं इस प्रकार बातें करना चाहता हूँ, जिस प्रकार पति अपनी पत्नी का सम्मान करता हुआ उससे प्रेमपूर्वक बातें करता है।

टि. *स्तुति किया जाता है* - **ररप्शे।** स्तूयते - वे.। सा.। दया.। is sung aloud - G.

*स्तुतिकर्ताओं के (द्वारा)* - **नवेभिः।** नवैः - वे.। नूतनैः - सा.। by recent (sages) - G.

*अंकुश से सिधाए हाथी की तरह* – **सृण्यः न।** सृण्यः कुञ्जरः अङ्कुशेन साध्यते स इव – वे.। सृणिशब्दो ऽङ्कुशवाची। तेनायुधमात्रं लक्ष्यते। सृण्य आयुधकुशल इव। सा.। प्राप्तबलाः सुशिक्षिताः सेना इव – दया.। शस्त्र चलाने में कुशल जिस प्रकार – सात.। like a (warrior) skilful in arms - W. like a scythe- armed (victor) - G.

*बातें करता हूँ मैं* – **अच्छ विवक्मि।** विविधं वदामि – वे.। अभि लक्षीकृत्य विशेषेण वच्मि स्तौमि – सा.। विशेषेण उपदिशामि – दया.। I glorify - W. I call hither - G.

**गिरिर् न यः स्वतवाँ ऋष्व इन्द्रः सनाद् एव सहसे जात उग्रः।**
**आदर्ता वज्रं स्थविरं न भीम उद्नेव कोशं वसुना न्यृष्टम्।। ६।।**

गिरिः। न। यः। स्वऽतवान्। ऋष्वः। इन्द्रः। सनात्। एव। सहसे। जातः। उग्रः।
आऽदर्ता। वज्रम्। स्थविरम्। न। भीमः। उद्नाऽइव। कोशम्। वसुना। निऽऋष्टम्।। ६।।

*पर्वत की तरह जो अपने ही बल से बलवान्, महान्, इन्द्र,*
*सनातन काल से ही, विजय के लिये उत्पन्न हुआ है, तेजस्वी।*
*फाड़ डालने वाला वज्र की तरह दृढ़ की, भय का उत्पादक,*
*जल से कोश की तरह, बसाने वाले धन से भरा हुआ।। ६।।*

वह ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर जो पर्वत की तरह अपने ही बल से बलशाली और महान् है, जो तेजस्वी आदिकाल से ही दुष्ट हिंसक जनों को विजित करने के लिये उत्पन्न हुआ है, शत्रुओं के मन में भय उत्पन्न करने वाला जो जगदीश कठोर वज्र की तरह आसुरी शक्तियों के गढ़ों को सब ओर से दीर्ण कर डालता है और जो जल से भरे हुए जलपात्र की तरह बसाने वाले धनों से भरपूर है, मैं उस प्रियतम से प्रियतमा की तरह बातें करना चाहता हूँ।

टि. *अपने ही बल से बलवान्* – **स्वतवान्।** स्वायत्तबलः – वे.। स्वयं प्रवृद्धः – सा.। स्वैर् गुणैर् वृद्धः – दया.। self-sustained - W. in native strength - G.

*महान्* – **ऋष्वः।** महान् – वे.। सा.। vast - W. lofty - G.

*विजय के लिये* – **सहसे।** बलकरणाय – वे.। शत्रोर् अभिभवाय – सा.। बलाय – दया.। for the destruction (of the foes of the gods) - W. for conquest - G.

*फाड़ डालने वाला* – आदर्ता। आदृतवान् – सा.। समन्ताच् छत्रूणां विदारकः – दया.। the wielder - W. G.

*भय का उत्पादक* –**भीमः।** भयङ्करो बलवान् मृगः – वे.। शत्रूणां भयङ्करः – सा.।

*भरा हुआ* – **न्यृष्टम्।** परिवृतम् – वे.। निगतम् – सा.। नितरां प्राप्तम् – दया.। charged with - W. filled full - G.

**न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य।**
**उद्वावृषाणस् तविषीव उग्रास्मभ्यं दद्धि पुरुहूत रायः।। ७।।**

न। यस्य। वर्ता। जनुषा। नु। अस्ति। न। राधसः। आऽमरीता। मघस्य।
उत्ऽववृषाणः। तविषीऽवः। उग्र। अस्मभ्यम्। दद्धि। पुरुऽहूत। रायः।। ७।।

*नहीं जिसका रोकने वाला, जन्म से ही निश्चय से है,*
*नहीं कार्यसिद्धि करने वाले का, नाश करने वाला है, पवित्र धन का।*
*उत्तम सुखों की वर्षा करने वाला तू, हे शक्तिमान्!, हे तेजस्वी!,*
*हमें प्रदान कर तू, हे बहुतों से स्तुति किये जाने वाले!, धनों को।। ७।।*

निश्चय से अनादिकाल से ही जिसको रोकने वाला, जिसका विरोध करने वाला कोई नहीं है। कार्यों को साधने वाले जिसके पवित्र धनों का नाश करने वाला कोई नहीं है। हे उत्तम सुखवर्षक! हे सर्वशक्तिमान्! हे तेजों को धारण करने वाले! हे बहुत जनों के द्वारा स्तुति किये जाने वाले जगदीश्वर! तू अपने उन पवित्र धनों को हमें प्रदान कर।

टि. *रोकने वाला* - **वर्ता**। अभिगन्ता - वे.। वारयिता - सा.। दया.। opposer - W.

*जन्म से ही* - **जनुषा**। जन्मना - वे.। जन्मना स्वत एव - सा.। by reason of the birth - W.

*कार्यसिद्धि करने वाले का* - **राधसः**। धनस्य - वे.। यज्ञादिकर्मणां साधकस्य - सा.।

*नाश करने वाला* - **आमरीता**। नाशयिता - वे.। सा.। समन्ताद् विनाशकः - दया.।

*उत्तम सुखों की वर्षा करने वाला* - **उद्वावृषाणः**। स्तोतृभ्यो धनान्युत्सिञ्चन् - वे.। अभीष्टान् कामान् वर्षकस्य - सा.। उत्कृष्टतया भृशं बलकरस्य - दया.। the showerer of benefits - W.

*हे शक्तिमान्* - **तविषीवः**। हे बलवन् - वे.। सा.।

**ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीनाम् उत व्रजम् अपवर्तासि गोनाम्।**
**शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान् वस्वो राशिम् अभिनेतासि भूरिम्।। ८।।**

ईक्षे। रायः। क्षयस्य। चर्षणीनाम्। उत। व्रजम्। अपऽवर्ता। असि। गोनाम्।
शिक्षाऽनरः। सम्ऽइथेषु। प्रहाऽवान्। वस्वः। राशिम्। अभिऽनेता। असि। भूरिम्।। ८।।

*देखता रहता है तू, धनों को, घरों को, मनुष्यों के,*
*और बाड़े को उद्घाटित करने वाला है तू, गौओं के।*
*उपदेष्टा मनुष्यों का, युद्धों में प्रहार करने वाला (शत्रु पर),*
*धनों की राशि को, प्राप्त कराने वाला है तू, प्रभूत को।। ८।।*

हे परमेश्वर! तू देखता रहता है, कि मनुष्य धन कैसे कमाते हैं, ईमानदारी से या बेईमानी से। तू देखता रहता है, कि मनुष्य घरों में कैसे रहते हैं, प्यार-मुहब्बत से अथवा लड़ते-झगड़ते हुए। तू अपनी व्यवस्था के अधीन उन्हें सुख और दुःख प्रदान करता रहता है। जो दुष्ट असुरवृत्ति जन ज्ञान आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाते हैं, तू उन ज्ञान आदि सुखसाधनों को उनसे मुक्त कराकर सब के अन्दर बाँट देता है। तू अपनी वेदवाणी के द्वारा मनुष्यों को शिक्षित करके उन्हें शुभ और अशुभ का विवेक कराता है। तू जीवन के संघर्षों में बाह्य और आभ्यन्तर शत्रुओं पर प्रहार करके अपने उपासकों की रक्षा करता है। तू अत्यधिक मात्रा में लौकिक और अलौकिक धनों को अपने भक्तों को प्राप्त कराता है।

टि. *देखता रहता है तू* - **ईक्षे**। ईशिषे - वे.। ईक्षसे - सा.। पश्यामि - दया.। thou rulest over - W. thou art the ruler - G.

*बाड़े को उद्‌घाटित करने वाला* - **व्रजम् अपवर्ता।** अपावृणोषि व्रजम् - वे.। गवां समूहम् अपवारकः। निरोधकेभ्यो ऽसुरेभ्यो गवां मोचयिता भवसीत्यर्थः। सा.। शस्त्रास्त्रम् अपवारयिता। अत्र तृन् प्रत्ययः। दया.। the rescuer of the herd - W. the opener of the stable - G.

*उपदेष्टा मनुष्यों का* - **शिक्षानरः।** शिक्षाया नेता - वे.। प्रज्ञानां शासकः - सा.। विद्योपादानेन नेता - दया.। the giver of instruction - W. helper of men - G.

*प्रहार करने वाला* - **प्रहावान्।** उत्क्षेपणवान् - वे.। प्रहरणवान् - सा.। the smiter - W.

*प्राप्त कराने वाला* - **अभिनेता।** आभिमुख्येन प्रापयिता - वे.। प्रापयिता भवसि - सा.। the distributer - W. thou leadest to - G.

**कया तच् छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिद् ऋष्वः।**
**पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहो ऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे।। ९।।**

कया। तत्। शृण्वे। शच्या। शचिष्ठः। यया। कृणोति। मुहु। का। चित्। ऋष्वः।
पुरु। दाशुषे। विऽचयिष्ठः। अंहः। अथ। दधाति। द्रविणम्। जरित्रे।। ९।।

*किससे वह सुना जाता है शक्ति से, शक्तिमानों में श्रेष्ठ,*
*जिससे करता है वह, बार-बार किन्हीं (कार्यों) को, महान्।*
*बहुत का, हविदाता के लिये अत्यधिक नाशक (हो जाता है), पाप का,*
*तत्पश्चात् प्रदान करता है वह धन, स्तुतिगान करने वाले को।। ९।।*

हे मनुष्यो! उस परमेश्वर की वह कौन सी शक्ति है, जिससे वह शक्तिमानों में सबसे अधिक शक्तिमान् माना जाता है, और जिसके द्वारा वह महान् परमेश्वर जगत्सृष्टि, संरक्षण, संहार आदि कई कार्यों को बार-बार करता रहता है। वस्तुतः वह उसकी विशेष शक्ति है, जिसके कारण वह सर्वशक्तिमान् माना जाता है। इसी शक्ति के द्वारा वह आत्मसमर्पण करने वाले साधक के पापों, अपराधों और संकटों को अत्यधिक दूर करने वाला हो जाता है। इसी के द्वारा वह स्तुतिगान करने वाले अपने उपासक को अभ्युदय और निःश्रेयस रूपी दोनों प्रकार के धनों को प्रदान करता है।

टि. *वह सुना जाता है* - **तत् शृण्वे।** तत् निवेद्यमानं कार्यजातं शृणोति - वे.। तद् इति लिङ्ग-व्यत्ययः। तत् स इन्द्रः। शृण्वे श्रूयते। सा.। तानि शृणुयाम् - दया.।

*शक्ति से* - **शच्या।** प्रज्ञया - वे.। दया.। शचीति प्रज्ञानामैतत्। सा.। by what wisdom - W. by great might - G.

*शक्तिमानों में श्रेष्ठ* - **शचिष्ठः।** अतिशयेन प्राज्ञः - वे.। सा.। दया.। most wise - W. strongest - G.

*किन्हीं (कार्यों) को* - **का चित्।** कानि चित् - वे.। कानि चित् कर्माणि - सा.।

*अत्यधिक नाशक* - **विचयिष्ठः।** अतिशयेन अपनेता - वे.। अतिशयेन नाशकः - सा.। अति-शयेन वियोजकः - दया.। especial effacer - W. best soother - G.

**मा नो मर्धीर् आ भरा दद्धि तन् नः प्र दाशुषे दातवे भूरि यत् ते।**
**नव्ये देष्णे शस्ते अस्मिन् त उक्थे प्र ब्रवाम वयम् इन्द्र स्तुवन्तः।। १०।।**

मा। नः। मर्धीः। आ। भर। दद्धि। तत्। नः। प्र। दाशुषे। दातवे। भूरि। यत्। ते।।
नव्ये। देष्णे। शस्ते। अस्मिन्। ते। उक्थे। प्र। ब्रवाम। वयम्। इन्द्र। स्तुवन्तः।। १०।।
*मत हमको मार तू, सर्वतः पोषण कर (हमारा), दे तू उसको हमें,*
*प्रकर्ष से हविदाता को देने के लिये, प्रभूत मात्रा में है जो पास तेरे।*
*स्तुतियोग्य में, उपदाओं वाले में, प्रशंसनीय में, इसमें तेरे संकीर्तन में,*
*प्रकर्ष से बोलें हम, हे इन्द्र!, स्तुतियां (तेरी) करते हुए।। १०।।*

हे परमेश्वर! तू कभी हमारी हिंसा मत करना। तू सदा हमारा पालन-पोषण ही करते रहना। बाह्य और आन्तरिक यज्ञ में आहुति देने वाले तेरे उपासक को भरपूर देने के लिये तेरे पास जो भी पदार्थ हैं, तू उन्हें हमें प्रदान कर। हे परम कृपालु! जहां स्तुतियों, दानों और प्रशंसाओं से युक्त तेरा संकीर्तन, तेरी चर्चा हो रही हो, वहाँ हम तेरी स्तुतियां करते हुए केवल तेरी ही बात करें। तुझे छोड़कर हम और कोई भी बात न करें।

टि. *मत हमको मार तू* - **मा नः मर्धीः।** मा अस्मान् हिंसीः - वे.। सा.। harm us not - W.

*सर्वतः पोषण कर* - **आ भर।** आहर अस्मदर्थं धनम् - वे.। पोषको भव - सा.। cherish us - W. bring - G.

*स्तुतियोग्य में* - **नव्ये।** नु स्तुतौ। नव्यः स्तुतियोग्यः तस्मिन्।। नवतरे - वे.। सा.। दया.।

*उपदाओं वाले में* - **देष्णे।** दानकुशले - वे.। दातव्ये हविषि निमित्तभूते सति - सा.। दातुं योग्ये - दया.। at this (new) gift - G.

*संकीर्तन में* - **उक्थे।** निष्केवल्याख्यशस्त्रे - सा.। at this sacred rite - W.

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। ११।। ४।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१६.२१ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त २१

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमाद् अस्तु शूरः।**
**वावृधानस् तविषीर् यस्य पूर्वीर् द्यौर् न क्षत्रम् अभिभूति पुष्यात्।। १।।**

आ। यातु। इन्द्रः। अवसे। उप। नः। इह। स्तुतः। सधऽमात्। अस्तु। शूरः।
ववृधानः। तविषीः। यस्य। पूर्वीः। द्यौः। न। क्षत्रम्। अभिऽभूति। पुष्यात्।। १।।
*आ जाए इन्द्र संरक्षण के लिये पास हमारे,*
*यहाँ स्तुति किया हुआ, हमारे साथ आनन्दित होने वाला होवे, शत्रुहिंसक।*
*वृद्धि को प्राप्त होता हुआ, शक्तियां (हैं) जिसकी बहुत सारी,*
*सूर्य की तरह बल को अभिभूत करने वाला, पुष्ट करे (बल को सब के)।। १।।*

वह ऐश्वर्यों का स्वामी परमात्मा हमारे संरक्षण, अभिवृद्धि, प्रसन्नता आदि के लिये हमारे हृदयों

में आकर निवास करे। वह दुष्ट हिंसक जनों की हिंसा करता हुआ, नित्य वृद्धि को प्राप्त होता हुआ, हमारे द्वारा स्तुति किया हुआ हमारे साथ हमारे भक्तिरस का आनन्द लेने वाला होवे। वह सर्वशक्तिमान्, जिसकी शक्तियां अनन्त हैं, सूर्य की तरह दीनों और असहायों की रक्षा करने वाले अपने और हमारे बल को सदा पुष्ट करता रहे।

टि. *हमारे साथ आनन्दित होने वाला* - **सधमात्**। अस्माभिः सह माद्यन् भवतु - वे.। सा.। समानस्थानाद् यः सह माद्यति - दया.। be exhilarated along with us - W. our feast-companion - G.

*सूर्य की तरह* - **द्यौः न**। द्युलोक इव - वे.। द्योतमानः सूर्य इव - सा.। सूर्य इव - दया.। like the radiant sun - W. like Dyaus - G.

*अभिभूत करने वाला* - **अभिभूति**। अभिभावुकम् - वे.। सा.। overpowering - W.

**तस्येद् इ॒ह स्त॑वथ॒ वृष्ण्या॑नि तुविद्यु॒म्नस्य॑ तुवि॒राध॑सो॒ नॄन्।**
**यस्य॒ क्रतु॑र् वि॒दथ्यो॒३॑ न स॒म्राट् सा॒ह्वाँ तरु॑त्रो अ॒भ्यस्ति॑ कृ॒ष्टीः॥ २॥**

तस्य॑। इत्। इ॒ह। स्त॒व॒थ॒। वृष्ण्या॑नि। तु॒वि॒ऽद्यु॒म्नस्य॑। तु॒वि॒ऽराध॑सः। नॄन्।
यस्य॑। क्रतु॑ः। वि॒दथ्य॑ः। न। स॒म्ऽराट्। स॒ह्वान्। तरु॑त्रः। अ॒भि। अस्ति॑। कृ॒ष्टीः॥ २॥

*उसके ही यहाँ स्तवन करो तुम, पराक्रमयुक्त कर्मों का,*
*सशक्त कीर्त्ति वाले के, प्रभूत धनों वाले के, मनुष्यों का (भी)।*
*जिसकी प्रज्ञा ज्ञानगोष्ठी के ज्ञान की तरह, सम्यक् प्रकाशमान है,*
*विजेता, पार करने वाला, अभिभूत करता है प्रजाओं को (शत्रु की)॥ २॥*

हे मनुष्यो! तुम अपने इस जीवन में शक्तिशाली कीर्त्ति वाले, लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के प्रभूत धनों वाले उस परमेश्वर के पराक्रमयुक्त कर्मों की और उसके अनुशासन का पालन करने वाले मनुष्यों की सदा प्रशंसा किया करो, जिसकी प्रज्ञा ज्ञानगोष्ठी के ज्ञान की तरह सब ओर ज्ञान का प्रकाश करने वाली है, जो दुष्ट हिंसक जनों का विजेता है, जो दुःखों, संकटों और भवसागर से पार उतारने वाला है और आसुरी शक्तियों की पक्षधर प्रजाओं को अभिभूत करने वाला है।

टि. *पराक्रमयुक्त कर्मों का* - **वृष्ण्यानि**। कर्माणि वर्षणनिमित्तानि - वे.। बलभूतान् - सा.। बलेषु साधूनि - दया.। heroic exploits - G.

*सशक्त तेज वाले के* - **तुविद्युम्नस्य**। बह्वन्नस्य - वे.। बहुकीर्त्तेः - सा.। दया.।

*प्रभूत धनों वाले के मनुष्यों का* - **तुविराधसः नॄन्**। बहुहविष्कान् मनुष्यान् - वे.। बहुधनस्य नेतॄन् मरुतः - सा.। बह्वैश्वर्यस्य नायकान् - दया.। the powerful leaders - W.

*ज्ञानगोष्ठी के ज्ञान की तरह सम्यक् प्रकाशमान* - **विदथ्यः न सम्राट्**। नगरस्थितः राजा इव - वे.। विदथार्हो न यज्ञार्हः सम्राट् सकललोकानाम् अधिपतिर् इव तद्वत् - सा.। विज्ञातुं योग्य इव सार्वभौमो राजमानः - दया.। whose will is like a Sovran in assembly - G.

*अभिभूत करता है* - **अभि अस्ति**। अभि भवति - वे.। सा.।

**आ या॒त्विन्द्रो॑ दि॒व आ पृ॑थि॒व्या म॒क्षू स॑मु॒द्राद् उ॒त वा॒ पुरी॑षात्।**

**स्वर्णराद् अवसे नो मरुत्वान् परावतो वा सदनाद् ऋतस्य।। ३।।**

आ। यातु। इन्द्रः। दिवः। आ। पृथिव्याः। मक्षु। समुद्रात्। उत। वा। पुरीषात्।
स्वः॒ऽनरात्। अवसे। नः। मरुत्वान्। पराऽवतः। वा। सदनात्। ऋतस्य।। ३।।

*आ जाए इन्द्र द्युलोक से, आ जाए पृथिवी से,*
*अविलम्ब (आ जाए) अन्तरिक्ष से, अथवा जल से।*
*सुखलोक से, संरक्षण के लिये हमारे, मरुतों का स्वामी,*
*बहुत दूर से अथवा सदन से, सत्यनियम के।। ३।।*

वह परमेश्वर सब स्थानों पर विद्यमान है। उसकी असंख्य शक्तियां हैं, जो उसके सभी कार्यों को सम्पन्न करती रहती हैं। हम उससे अपने संरक्षण, अभिवृद्धि, प्रीति आदि की सदा याचना करते हैं। सर्वव्यापक वह जगदीश्वर द्युलोक से, पृथिवीलोक से, अन्तरिक्षलोक से, जलों के स्थान से और बहुत दूरी पर स्थित अपने उस लोक से, जहाँ से वह इस जगत् को सत्य नियमों के अधीन चला रहा है, हमारी रक्षा आदि के लिये सदा अविलम्ब हमारे पास आए, क्योंकि हमारा केवल वही अनन्य आश्रय और सहारा है।

टि. *अन्तरिक्षलोक से* – **समुद्रात्।** अन्तरिक्षात् – वे.। दया.। अन्तरिक्षलोकाच् च। समुद्र इत्यन्तरिक्षनाम सगरः समुद्रो ऽध्वरम् इति तन्नामसु पाठात्। सा.।

*जल से* – **पुरीषात्।** उदकात् – वे.। पुरीषम् इत्युदकनाम मधु पुरीषम् पिप्पलम् इति तन्नामसु पाठात् – सा.। दया.।

*सुखलोक से* – **स्वर्णरात्।** सर्वमनुष्यात् – वे.। स्वर् आदित्यो नरो नेता यस्य तस्माल् लोकात् – सा.। स्वर् आदित्य इव नरान् नायकात् – दया.। from the sphere of the sun - W. from the realm of light - G.

*सदन से सत्यनियम के* – **सदनात् ऋतस्य।** सत्यस्य स्थानात् – वे.। उदकस्य सदनात् स्थानान् मेघलोकात् – सा.। स्थानात् सत्यस्य कारणस्य – दया.। from the abode of the rains - W. from the seat of Order - G.

**स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तम् उ ष्टवाम विदथेष्विन्द्रम्।**
**यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ।। ४।।**

स्थूरस्य। रायः। बृहतः। यः। ईशे। तम्। ऊँ इति। स्तवाम। विदथेषु। इन्द्रम्।
यः। वायुना। जयति। गोऽमतीषु। प्र। धृष्णुऽया। नयति। वस्यः। अच्छ।। ४।।

*विस्तृत पर, धन पर, महान् पर, जो शासन करता है,*
*उसकी ही स्तुति करें हम, ज्ञानयज्ञों में इन्द्र की।*
*जो वायु के साथ विजय प्राप्त कराता है, गौओं वालियों में (गोष्ठियों में),*
*प्रकर्ष से धर्षक बल के साथ, (जो) ले जाता है उत्तम धनों की ओर।। ४।।*

हम ज्ञानसत्रों में केवल उस ऐश्वर्यवान् परमेश्वर की ही स्तुति करें, उसका ही गुणानुवाद करें, जो विस्तृत और महान् धनों पर शासन करता है, उनका स्वामी है, जो वाणी पर चर्चा की जाने वाली

गोष्ठिों में अपनी प्राणशक्तियों के साथ अपने उपासकों को विजय प्राप्त कराता है और जो अपने धर्षक बल के द्वारा अपने स्तोताओं को उत्तम धनों की ओर अग्रसर करता है।

टि. *विस्तृत पर* - **स्थूरस्य।** विस्तृतस्य - वे.। स्थूलस्य - सा.। दया.। (rules over) substantial - W. of lasting - G.

*वायु के साथ* - **वायुना।** वायुना सह गत्वा - वे.। प्राणरूपेण बलेन - सा.। वायुना पवनेन - दया.। by his prowess - W. with Vāyu - G.

*गौओं वालियों में (गोष्ठियों में)* - **गोमतीषु।** गोमतीषु शत्रुसेनासु - वे.। सा.। over (hostile) hosts - W. where the herds are gathered - G.

*धर्षक बल के साथ* - **धृष्णुया।** धृष्णुः - वे.। धृष्णुः प्रल्भः - सा.। धृष्णूनि प्रगल्भानि याति यैस् तानि - दया.। by his munificence - W. with boldness - G.

**उप यो नमो नमसि स्तभायन्नियर्ति वाचं जनयन् यजध्यै।**
**ऋञ्जसानः पुरुवार उक्थैर् एन्द्रं कृण्वीत सदनेषु होता।। ५।। ५।।**

उप। यः। नमः। नमसि। स्तभायन्। इयर्ति। वाचम्। जनयन्। यजध्यै।
ऋञ्जसानः। पुरुऽवारः। उक्थैः। आ। इन्द्रम्। कृण्वीत। सदनेषु। होता।। ५।।

*निकट से जो नमस्कार को नमस्कार पर आधृत करता हुआ,*
*प्रेरित करता है, वाणी को उत्पन्न करता हुआ, पूजा के लिये।*
*साधता हुआ (लक्ष्य को), बहुतों से वरणीय, स्तोत्रों से, इस ओर,*
*इन्द्र को प्रवेश कराता है सदनों में, आह्वान करने वाला।। ५।।*

जो साधक एक नमस्कार को दूसरे नमस्कार पर आधृत करता हुआ, नमस्कारों का ढेर लगाता हुआ, और इस प्रकार निरन्तर नमस्कारों और स्तुतियों की महान् राशि को प्रभु के चरणों में समर्पित करता हुआ वाणी को उत्पन्न करके उसे परमेश्वर की पूजा के लिये समर्पित करता है, बहुतों का प्रिय, प्रियतम को पुकारने वाला वह उपासक, अपने स्तोत्रों से उसके प्रकाश को और उसे अपने शरीर के द्वारों, चक्रों और हृदय आदि विभिन्न स्थानों में प्रवेश करा देता है।

टि. *नमस्कार को नमस्कार पर आधृत करता हुआ* - **नमः नमसि स्तभायन्।** अन्नं नवं पुराणेऽन्ने ऽनुस्यूतं स्तम्भयन् - वे.। स्तभायन् लोकान् उपस्तम्भयन्। नम इत्यन्ननामैतत्। यजमानैर् दत्ते हविषि नमो यजमानेभ्यो यज्ञादिसाधनम् अन्नम्। सा.। अन्नम् अन्ने सत्कारे वा स्तम्भयन् - दया.। returns food for (sacrificial) food - W. fixing reverence on reverence - G.

*साधता हुआ (लक्ष्य को)* - **ऋञ्जसानः।** देवान् प्रसाधयन् - वे.। प्रसाध्यमानः। ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मेति यास्कः। सा.। प्रसाध्नुवन् - दया.। striving - G.

*इस ओर प्रवेश कराता है सदनों में* - **आ कृण्वीत सदनेषु।** अस्मद्गृहेषु आ कृणोतु - वे.। यज्ञगृहेषु तम् इन्द्रम् अभिमुखीकरोतु - सा.। let bring to our dwellings - W.

*आह्वान करने वाला* - **होता।** अग्निः होता - वे.। the invoking priest - W. priest - G.

**धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान् त्सदन्तो अद्रिम् औशिजस्य गोहे।**

**आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान् त्संवरणेषु वह्निः।। ६।।**

धिषा। यदि। धिषण्यन्तः सरण्यान्। सदन्तः। अद्रिम्। औशिजस्य। गोहे।
आ। दुरोषाः। पास्त्यस्य। होता। यः। नः। महान्। सम्ऽवरणेषु। वह्निः।। ६।।

*बुद्धि से जब चिन्तन करते हुए, उचित मार्गों में,*
*बैठते हैं बट्टे को चलाते हुए, यज्ञ की कामना वाले के घर में।*
*आ जाता है इस ओर, तीव्र क्रोध वाला, गृहस्वामी का आह्वाता,*
*जो (है) हमारा, महान्, गुप्त स्थानों में, वहन करने वाला।। ६।।*

जब अन्तर्यज्ञ की कामना वाले यजमान विधि-विधानपूर्वक उचित मार्गों से बुद्धि के द्वारा चिन्तन, मनन, निदिध्यासन आदि क्रियाओं को करते हुए और शारीरिक परिश्रम, तप, यौगिक क्रिया आदि के द्वारा भक्तिरसरूपी सोम का सवन करते हुए अपने इस शरीर रूपी यज्ञगृह में आसीन होते हैं, तब हमें लक्ष्य की ओर आगे बढ़ाने वाला, इस शरीर रूपी यज्ञशाला के स्वामी जीवात्मा का सन्मार्ग पर आह्वान करने वाला, दुष्टों पर कठोर क्रोधी परन्तु सज्जनों पर दयालु वह महान् परमेश्वर शरीर के अन्धकारमय गुप्त स्थानों में ज्ञान के प्रकाश को भरता हुआ इधर हमारे हृदय में आ जाता है।

टि. *बुद्धि से जब चिन्तन करते हुए* - **धिषा यदि धिषण्यन्तः**। स्तुतिवाचा यदि स्तुतिवाचम् इच्छन्तः - वे.। स्तुत्या यदा धिषणाम् इन्द्रविषयां स्तुतिम् इच्छन्तः - सा.। स्तुत्या यदि स्तुवन्तः - दया.। pondering in deep devotion - G.

*उचित मार्गों में* - **सरण्यान्**। सरणयोग्यान्।। सरणं पर्वतमार्गम् इच्छन्ति - वे.। सरण्यान् उपगच्छेयुः - सा.। सरणं प्राप्तान् - दया.। approach Indra - W.

*बट्टे को* - **अद्रिम्**। शिलोच्चयम् - वे.। आदृणाति शत्रून् इत्यद्रिर् इन्द्रः, तम् इन्द्रम् - सा.। मेघम् इव - दया.। the press-stone - G.

*यज्ञ की कामना वाले के घर में* - **औशिजस्य गोहे**। कक्षीवतः पर्वतमध्ये राक्षसैः संवरणे सति - वे.। उशिजः कामयमाना ऋत्विजः। तेषां सम्बन्ध्यौशिजो यजमानः। तस्य गोहे गृहे। सा.। कामयमानापत्यस्य संवरणीये गृहे - दया.। abiding in the dwelling of the worshipper - W.

*तीव्र क्रोध वाला* - **दुरोषाः**। राक्षसानां दुःखावहदहनः - वे.। दुस्तरक्रोधः - सा.।

*गृहस्वामी का* - **पास्त्यस्य**। गृहस्थस्य यजमानस्य - वे.। पस्त्ये गृहे वसता यजमानेन - सा.। गृहे भवस्य - दया.। of the master of the house - W. G.

*गुप्त स्थानों में* - **संवरणेषु**। राक्षसानां संवरणेषु सत्सु - वे.। संवरणेषु शत्रुसम्बन्धिषु निरोधेषु - सा.। in conflicts - W. within our chambers - G.

*वहन करने वाला* - **वह्निः**। वोढा - वे.। सा.। sustainer - W. bearer - G.

**सत्रा यद् ईं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय।**
**गुहा यद् ईम् औशिजस्य गोहे प्र यद् धिये प्रायसे मदाय।। ७।।**

सत्रा। यत्। ईम्। भार्वरस्य। वृष्णः। सिसक्ति। शुष्मः। स्तुवते। भराय।
गुहा। यत्। ईम्। औशिजस्य। गोहे। प्र। यत्। धिये। प्र। अयसे। मदाय।। ७।।

*सचमुच जब यह जगत् का भरण-पोषण करने वाले का, सुखवर्षक का,*
*सहायता करता है बल, स्तुति करने वाले की, भरण-पोषण के लिये।*
*गुप्त स्थान में चूँकि इस प्यार करने वाले के, (शरीररूपी) घर में,*
*शासन करता है, प्रज्ञा के लिये, प्रगति के लिये, आनन्द के लिये।। ७।।*

जगत् का भरण-पोषण करने वाले और सुखों की वर्षा करने वाले परमेश्वर का बल सचमुच भरण-पोषण करने के लिये स्तोता की सदा सहायता करता है, क्योंकि परमेश्वर की कामना करने वाले, उससे प्रेम करने वाले उपासक के शरीररूपी घर के अन्दर वह जगदीश्वर उत्तम विचारों के विकास के लिये, सर्वतोमुखी प्रगति के लिये और आनन्द की प्राप्ति के लिये हृदयरूपी गुहा पर शासन करता है। हृदय में शास्ता के रूप में स्थित होकर उसकी सब प्रकार से सहायता करता है।

टि. *भरण-पोषण करने वाले का* - **भार्वरस्य।** शत्रूणां वारकस्य इन्द्रस्य - वे.। भर्वरो जगद्धर्ता प्रजापतिः। तस्य पुत्रो भार्वरः, तस्य। सा.। प्रजाभर्तृ राज्ञः - दया.। of the Bhārvara - G.

*सहायता करता है* - **सिषक्ति।** सेवते - वे.। सा.। सिञ्चति - दया.। helpeth - G.

*गुप्त स्थान में* - **गुहा।** पर्वतस्य गुहायाम् - वे.। गुहा गुहायाम्। गुहारूपे हृदये। सा.। बुद्धौ - दया.। in the secret thoughts - W.

*शासन करता है* - **प्र।** प्र भवति - सा.। prevails - W.

*प्रज्ञा के लिये* - **धिये।** कर्मणे - वे.। सा.। प्रज्ञायै - दया.। for the (accomplishment of his) pious acts - W. for devotion - G.

*प्रगति के लिये* - **अयसे।** गच्छसि - वे.। गमनाय कामानां प्राप्तये - सा.। अयसे गमनाय - दया.। for the attainment of his desires - W. to come forth - G.

**वि यद् वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर् जिन्वे अपां जवांसि।**
**विदद् गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्यो३ वहन्ति।। ८।।**

वि। यत्। वरांसि। पर्वतस्य। वृण्वे। पयःऽभिः। जिन्वे। अपाम्। जवांसि।
विदत्। गौरस्य। गवयस्य। गोहे। यदि। वाजाय। सुऽध्यः। वहन्ति।। ८।।

*अलग-अलग जब अवरोधों को पर्वत के खोल देता है,*
*जलों के द्वारा पूर देता है वह, (जब) जलों के प्रवाहों को।*
*पा लेता है (वृत्र को) गौरमृग के, गवय के छुपने के स्थान में,*
*जब बल के लिये सुधी जन वहन करते हैं (उस इन्द्र को)।। ८।।*

वह ऐश्वर्यवान् परमेश्वर जब अज्ञानरूपी पर्वत के अवरोधों को खोल देता है तो उत्तम विचार और उदात्त भावना रूपी जल बड़ी तीव्र गति से प्रवाहित होने लगते हैं। जब ज्ञानी, ध्यानी, उपासक जन अध्यात्म बल के लिये उस प्रभु का ध्यान करते हैं तो अज्ञान रूपी वृत्र किसी अन्धकारयुक्त गुप्त स्थान में इस प्रकार छुप जाना चाहता है, जिस प्रकार गौर, गवय आदि जंगली जानवर आखेटक के भय से डरकर बीहड़ के अन्दर अपने घुरें में छुप जाते हैं। परन्तु जिस प्रकार आखेटक अपने शिकार को ढूँढ निकालता है, उसी प्रकार वह परमेश्वर भी अज्ञानरूपी वृत्र को साधक के हृदय के अन्दर

चेतन और अवचेतन मन में ढूँढ लेता है और उसे छिन्न-भिन्न कर देता है।

टि. *अवरोधों को* - **वरांसि।** प्रवेशनिरोधनानि द्वाराणि - वे.। द्वाराणि - सा.।

*अलग-अलग खोल देता है* - **वि वृण्वे।** विवृणोत्विति मन्यसे - वे.। विवृतानि कृतवान् इति यत् - सा.।

*पूर देता है* - **जिन्वे।** पूरयति - वे.। प्यायति - सा.।

*पा लेता है (वृत्र को) गौरमृग के गवय के छुपने के स्थान में* - **विदत् गौरस्य गवयस्य गोहे।** यदि च लभतां गौरगवयौ पशू पर्वतमध्ये - वे.। गौरस्य गौरमृगस्य गवयस्य गवयमृगस्य च विदत् तौ द्वौ पशू लभत इति यत् - सा.। he finds it in the haunt of the *gaura* and *gavaya* - W. He finds in lair the buffalo and wild-ox - G.

*सुधी जन* - **सुध्यः।** सुकर्माणः - वे.। शोभनकर्माणः - सा.। शोभना धीर् येषां ते - दया.। the pious - W. the wise - G.

नोट : पाश्चात्य विद्वान् हमेशा इस पर्वाग्रह से ग्रसित रहे हैं, कि वैदिक ऋषि मांसभक्षक थे और यज्ञ में मांस की आहुतियां देते थे। इसी लिये विल्सन ने सायण के शब्दों के साथ खींच-तान करते हुए लिखा है - "The purport of the expression, according to the Scholiast, is, that Indra obtains these two animals तौ द्वौ पशू लभते, either for himself as sacrificial flesh, or for his worshippers, some of whom, at least, even now, would not object to eat the flesh of the wild oxen." - Wilson. ग्रिफिथ भी विल्सन से सहमत है।

**भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारा स्तुवते राध इन्द्र।**
**का ते निषत्तिः किम् उ नो ममत्सि किं नोदुद् उ हर्षसे दातवा उ।। ९।।**

भद्रा। ते। हस्ता। सुऽकृता। उत। पाणी इति। प्रऽयन्तारा। स्तुवते। राधः। इन्द्र।
का। ते। निऽसत्तिः। किम्। ऊँ इति। नो इति। ममत्सि। किम्। न। उत्ऽउत्। ऊँ इति। हर्षसे। दातवै। ऊँ इति।।।

*कल्याणकर (हैं) तेरे हाथ, और शोभनकर्मा पाणि,*
*प्रकर्ष से देने वाले, स्तोता को धन, हे इन्द्र।*
*(फिर) क्यों है तेरा बैठे रहना, क्यों प्रसन्न नहीं होता है तू,*
*क्यों नहीं उठ-उठ कर हर्षित होता है, देने के लिये।। ९।।*

हे परमेश्वर! तेरी भुजाएं असहायों की रक्षा करने के कारण उनका कल्याण करने वाली हैं और शुभ कर्मों को करने वाले तेरे हाथ स्तोता को लौकिक और अलौकिक धन प्रदान करने वाले हैं। हे परम दाता! जब तू इतना महान् दानी है, तो बैठा किस लिये है? यह उदासीनता और बेरुखी क्यों है? तू अपने दान से हमें प्रसन्न क्यों नहीं करता? तू उठ-उठ कर अपने धनों को हमें देने के लिये हर्षित क्यों नहीं होता?

टि. *कल्याणकर (हैं) तेरे हाथ और शोभनकर्मा पाणि* - **भद्रा ते हस्ता सुकृता उत पाणी।** भजनीयौ तव हस्तौ। बाहोर् अधस्ताद् हस्तो मणिबन्धनाद् ऊर्ध्वं पाणिः। अपि च सुकर्माणौ पाणी। वे.। त्वदीया भद्रौ कल्याणौ हस्तौ सुकृतौ शोभनकर्माणौ भवतः। उत अपि च पाणी त्वदीयौ

हस्तौ। सा.। कल्याणकर्मकरौ तव हस्तौ, सुकृता शोभनं धर्म्यं कर्म क्रियते याभ्यां तौ पाणी बाहू - दया.। Auspicious are thy hands, thy arms well-fashioned - G.

*प्रकर्ष से देने वाले* - **प्रयन्तारा**। प्रयच्छन्तौ - वे.। प्रयन्तारौ प्रदातारौ - सा.। extenders - W.

*क्यों है तेरा बैठे रहना* - **का ते निषत्तिः**। का ते इयं निषत्तिः निषदनम् अनागमनेनावस्थनम् - वे.। त्वदीया निषत्तिर् निषदनं स्थितिः का - सा.। निषीदन्ति यया सा स्थितिर् नीतिर् वा - दया.। What is this delay - W. What sloth is this - G.

*क्यों नहीं उठ-उठ कर हर्षित होता है* - **किम् न उद्उद् उ हर्षसे**। किं वास्मभ्यं धनं दातुं न उत् हर्षसे - वे.। किम् उद्उद् उ किम् अर्थम् एव हृष्टो न भवसि - सा.। why art thou not delighted - W. G.

**एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्राड् ढन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः।**
**पुरुष्टुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय ते ऽवसो दैव्यस्य।। १०।।**

एव। वस्वः। इन्द्रः। सत्यः। सम्ऽराट्। हन्ता। वृत्रम्। वरिवः। पूरवे। कर् इति कः।
पुरुऽस्तुत। क्रत्वा। नः। शग्धि। रायः। भक्षीय। ते। अवसः। दैव्यस्य।। १०।।

*इस प्रकार (स्तुति किया हुआ), धन का (है) इन्द्र सच्चा सम्राट्,*
*हन्ता (होकर) वृत्र का, विस्तृत स्थान मनुष्य के लिये बना देता है।*
*हे बहुतों से स्तुति किये हुए!, शक्ति से (अपनी) हमको दे तू धन,*
*सेवन करूँ मैं तेरी प्रीति का, देवों के द्वारा सेवित का।। १०।।*

ऐश्वर्यवान् वह परमेश्वर धनों का सच्चा स्वामी है। इस प्रकार सच्चे मन से स्तुति किये जाने पर वह प्रभु दुष्ट आसुरी शक्तियों का विनाश करके मनुष्यों के लिये इस जगत् में विस्तृत स्थान बना देता है। उनके सर्वत्र गमनागमन और साम्राज्यविस्तार को निर्भय और जोखिमरहित कर देता है। हे सब के द्वारा स्तुति किये जाने वाले जगदीश्वर! तू अपनी शक्ति से हमें उत्तम धन प्रदान कर। हम तेरी उस प्रीति का सेवन करें, जिसका उपभोग देवता करते हैं।

टि. *विस्तृत स्थान मनुष्य के लिये बना देता है* - **वरिवः पूरवे कः**। धनं च मनुष्याय करोति - वे.। मनुष्याय यजमानाय धनं करोति। ददातीत्यर्थः। सा.। वरिवः सेवनम्। पूरवे धार्मिकाय मनुष्याय। पूरव इति मनुष्यनाम (निघ. २.३)। दया.। bestows riches on man - W. Freedom he gave to man - G.

*शक्ति से* - **क्रत्वा**। प्रज्ञया - वे.। कर्मणा स्तुतिहेतुना - सा.। श्रेष्ठया प्रज्ञयोत्तमेन कर्मणा वा - दया.। for our pious acts - W. with thy power - G.

*हमको दे* - **नः शग्धि**। अस्मभ्यं धेहि - वे.। सा.। दया.।

*प्रीति का देवों के द्वारा सेवित का* - **अवसः दैव्यस्य**। तव कल्याणं रक्षणं च - वे.। देवसम्बन्धिनो ऽन्नस्य - सा.। रक्षणस्य दिव्यसुखप्रापकस्य - दया.। of thy God-like favour - G.

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। ११।। ६।। २।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१६.२१ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त २२

ऋषिः – वामदेवो गौतमः। देवता – इन्द्रः। छन्दः – त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**यन् न इन्द्रो जुजुषे यच् च वष्टि तन् नो महान् करति शुष्म्या चित्।**
**ब्रह्म स्तोमं मघवा सोमम् उक्था यो अश्मानं शवसा बिभ्रद् एति।। १।।**

यत्। नः। इन्द्रः। जुजुषे। यत्। च। वष्टि। तत्। नः। महान्। करति। शुष्मी। आ। चित्।
ब्रह्म। स्तोमम्। मघऽवा। सोमम्। उक्था। यः। अश्मानम्। शवसा। बिभ्रत्। एति।। १।।

*जिस वस्तु से हमारी इन्द्र प्यार करता है, और जिसकी कामना करता है,*
*उस वस्तु को हमारी, महान् वह स्वीकार करे, बलों वाला।*
*हवि को, स्तोत्र को, ऐश्वर्यवान् (स्वीकार करे), सोम को, जपों को,*
*जो वज्र को बल से अपने, धारण करता हुआ गमन करता है।। १।।*

ऐश्वर्यों का स्वामी परमात्मा जो अपनी शक्तिमत्ता के द्वारा दण्डव्यवस्था को अपने अधीन करके समस्त जगत् में व्याप्त हो रहा है, सर्वमहान् और सर्वशक्तिमान् वह परमेश्वर हमारी जिस भी वस्तु की कामना करता है और जिस भी वस्तु से प्यार करता है, वह हमारे द्वारा समर्पित उस वस्तु को स्वीकार करे। पवित्र धनों का स्वामी वह सर्वेश्वर हमारे द्वारा समर्पित की हुई आहुति को, स्तुतिगान को, हमारे भक्तिरस रूपी सोम को और हमारे जपों और ध्यानों को स्वीकार करे।

टि. *प्यार करता है* – **जुजुषे**। जुषि प्रीतिसेवनयोः।। सेवते – वे.। सा.। दया.। loves - G.

*स्वीकार करे* – **आ करति**। कर्तव्यं करोति – वे.। आ करोतु स्वीकरोतु – सा.। may he accept - W. he makes for us - G

*बलों वाला* – **शुष्मी**। बलयुक्तः – वे.। सा.। mighty - W. Strong One - G.

*हवि को, स्तोत्र को, सोम को, जपों को* – **ब्रह्म स्तोमम् सोमम् उक्था**। यज्ञं स्तोत्रशस्त्राणि सोमं च – वे.। ब्रह्म हविर्लक्षणपुरोडाशादिकम् अन्नं च स्तोमं स्तोत्रसमूहं च सोमम् अभिषुतं सोमं च उक्थोक्थानि शस्त्राणि च – सा.। ब्रह्म महद् धनम् अन्नं वा, स्तोमं प्रशंसनीयम्, सोमम् ओषध्यादिगणैश्वर्यम्, उक्था प्रशंसनीयानि वस्तूनि – दया.। the (sacrificial) food, the hymn, the *Soma* libation, and the prayers - W. prayer, praise, and laud, and Soma - G.

**वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिम् अस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान्।**
**श्रिये परुष्णीम् उषमाण ऊर्णां यस्याः पर्वाणि सख्याय विव्ये।। २।।**

वृषा। वृषन्धिम्। चतुःऽअश्रिम्। अस्यन्। उग्रः। बाहुऽभ्याम्। नृऽतमः। शचीऽवान्।
श्रिये। परुष्णीम्। उषमाणः। ऊर्णाम्। यस्याः। पर्वाणि। सख्याय। विव्ये।। २।।

*सुखवर्षक, वर्षा करने वाले को, चार धाराओं वाले को, फैंकता हुआ,*
*तेजस्वी, भुजाओं के द्वारा, नायकों में श्रेष्ठ, बलों का स्वामी।*
*श्री के लिये, पर्वों वाली को, ओढ़ाता हुआ, ओढ़नी को,*

*जिसके जोड़ों को, मित्रता के लिये ढक देता है वह।। २।।*

वह परमेश्वर सुखों की वर्षा करने वाला, तेजस्वी, नायकों में श्रेष्ठ और शक्तिमान् है। वह सुखों की वर्षा करने वाली, चार धाराओं वाली न्यायव्यवस्था को अपने हाथों में धारण करते हुए उससे दुष्टों को नियन्त्रण में रखता है। वह हमारे जीवन को आच्छादित करने वाली, बाल्यावस्था, यौवन, प्रौढ़ता और वृद्धावस्था इन चार पोरों वाली नदी के प्रवाह के समान प्रवाह वाली हमारी जीवनयात्रा रूपी चादर को हमारी शोभा के लिये हमें ओढ़ाता हुआ हमें अपना मित्र बनाने के लिये उसे गांठों से रहित अर्थात् विघ्नबाधाओं से विहीन बना देता है।

टि. *वर्षा करने वाले को* – **वृषन्धिम्।** वर्षितृणां धारकम् – वे.। मेघभेदनद्वारेण वर्षं कुर्वन्तम् – सा.। बलिष्ठानां धारकम् – दया.। that causes rain - W. rain-producer - G.

*चार धाराओं वाले को* – **चतुरश्रिम्।** चतुष्कोटिम् – वे.। चतसृभिर् अश्रिभिर् धाराभिर् उपेतम् – सा.। चतुरङ्गिणीं सेनां प्राप्तम् – दया.। quadrangular - W. of the four-edged - G.

*श्री के लिये* – **श्रिये।** श्रयणार्थम् – वे.। आश्रयणार्थम् – सा.। लक्ष्म्यै – दया.। desirous of the prosperity - W. for adornment - G.

*पर्वों वाली को* – **परुष्णीम्।** परुष्णीं नदीम् – वे.। पर्ववतीम् – सा.। विभागवतीम् – दया.।

*ओढ़ाता हुआ* – **उषमाणः।** शोषयन् – वे.। सेवमानः – सा.। दहन् – दया.। wearing - G.

*ओढ़नी को* – **ऊर्णाम्।** उदकेन जगत् छादयन्तीम् – वे.। आच्छादिकाम् – सा.। दया.। investing - W. as wool - G.

*ढक देता है* – **विव्ये।** पिहितान्यकरोत् – वे.। संवृतवान् – सा.। कामयते – दया.। he hath covered - G.

**यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर् महद्भिश् च शुष्मैः।**
**दधानो वज्रं बाह्वोर् उशन्तं द्याम् अमेन रेजयत् प्र भूम।। ३।।**

यः। देवः। देवऽतमः। जायमानः। महः। वाजेभिः। महत्ऽभिः। च। शुष्मैः।
दधानः। वज्रम्। बाह्वोः। उशन्तम्। द्याम्। अमेन। रेजयत्। प्र। भूम।। ३।।

*जो देव, देवों में श्रेष्ठ, प्रादुर्भूत होकर,*
*महान् बलों से और महान् तेजों से (अपने)।*
*धारण करता हुआ वज्र को, भुजाओं में, कामना वाले को,*
*द्युलोक को, बल से कँपा देता है प्रकर्ष से, भूमि को (भी)।। ३।।*

दान, प्रकाशवत्ता आदि गुणों से युक्त वह जो परमेश्वर सब देवों का देव महादेव है अथवा दान, प्रकाशवत्ता आदि गुणों में सर्वोपरि है, इस जगत् में प्रादुर्भूत होकर अपने महान् बलों और महान् तेजों से दुष्टों को दण्डित करने वाली और सज्जनों की रक्षा की कामना वाली न्यायव्यवस्था को अपने हाथों में लेकर, अपने अधिकार में करके, इस द्युलोक और भूलोक को अपने बल और भय से खूब कँपा रहा है। उसके भय से ही अग्नि, वायु, सूर्य आदि सब अपने-अपने कार्यों में लगे हुए हैं और यह संसारचक्र व्यवस्थित रूप से चल रहा है।

टि. *देवों में श्रेष्ठ* - **देवतमः**। दातृतमः - सा.। विद्वत्तमः - दया.। most divine - W. G.

*महान् बलों से* - **महः वाजेभिः**। महान् बलैः - वे.। महद्भिर् अन्नैः - सा.। with abundant viands - W. with ample strength - G.

*कामना वाले को* - **उशन्तम्**। शत्रून् कामयमानम् - वे.। कामयमानम् - सा.। दया.। willing - W. yearning - G.

*बल से* - **अमेन**। बलेन - वे.। सा.। by his strength - W. with violent rush - G.

*कँपा देता है प्रकर्ष से* - **रेजयत् प्र**। प्र कम्पयति - वे.। प्रकम्पयति स्म - सा.।

*भूमि को* - **भूम**। भूमिं च - वे.। भूलोकं च - सा.। अत्र पृषोदरादिना रूपसिद्धिः - दया.।

**विश्वा रोधांसि प्रवतश् च पूर्वीर् द्यौर् ऋष्वाज् जनिमन् रेजत क्षाः।**
**आ मातरा भरति शुष्म्या गोर् नृवत् परिज्मन् नोनुवन्त वाताः॥ ४॥**

विश्वा। रोधांसि। प्रऽवतः। च। पूर्वीः। द्यौः। ऋष्वात्। जनिमन्। रेजत। क्षाः।
आ। मातरा। भरति। शुष्मी। आ। गोः। नृऽवत्। परिऽज्मन्। नोनुवन्त। वाताः॥ ४॥

*सब-के-सब ऊँचे स्थान, नीचे स्थान भी सब-के-सब,*
*आकाश, बल से (इन्द्र के), प्रादुर्भाव पर काँपता है, पृथिवी (भी)।*
*सर्वतः माता-पिता का भरण-पोषण करता है बलवान्, सर्वतः सूर्य का,*
*मनुष्य की तरह अन्तरिक्ष में, स्तुतिगान करते हैं वायु (उसका)॥ ४॥*

जगत् में परमेश्वर की सत्ता का आभास होने पर पठार, पर्वत आदि सब के सब ऊँचे स्थान और नदी, नद, समुद्र आदि सब के सब निम्न स्थान काँपने लगते हैं। आकाश भी उसके बल से काँपने लगता है। पृथिवी भी काँपने लगती है। वह सर्वशक्तिमान् प्रभु माता पृथिवी और पिता आकाश तथा सूर्य को धारण करके उनका भरण-पोषण कर रहा है। उसकी महिमा को जानकर मनुष्य की तरह वायु भी अन्तरिक्ष में उसका स्तुतिगान कर रहे हैं।

टि. *ऊँचे स्थान* - **रोधांसि**। स्थलानि - वे.। रोधःशब्देनोन्नतप्रदेशा उच्यन्ते। उन्नतप्रदेशाः पर्वताश् च। सा.। रोधनानि - दया.। high places - W. precipices - G.

*नीचे स्थान* - **प्रवतः**। प्रवणानि च - वे.। प्रवणानि समुद्राश् चेत्यर्थः - सा.। अधस्ताद् वर्तमानान् - दया.। low places - W. floods - G.

*सर्वतः माता-पिता का* - **आ मातरा**। द्यावापृथिवी आ (बिभर्त्ति) - वे.। मातापितृभूतौ द्यावापृथिव्यौ च। आ इति चार्थे। सा.। मातापितृरूपौ राजप्रजाजनौ - दया.। two parents - G.

*सूर्य का* - **गोः**। उदकस्य - वे.। गन्तुः सूर्यस्य - सा.। पृथिव्याः - दया.। of the moving (sun) - W. Bull's - G.

*अन्तरिक्ष में* - **परिज्मन्**। परितो गन्तरि तस्मिन् - वे.। अन्तरिक्षे - सा.। सर्वतो व्याप्ते ऽन्तरिक्षे विस्तृतायां भूमौ वा। ज्येति पृथिवीनाम (निघ. १.१)। दया.। in their peregrination - W.

*स्तुतिगान करते हैं* - **नोनुवन्त**। अत्यन्तं शब्दं कुर्वन्ति - वे.। शब्दायन्ते - सा.। भृशं शब्दायन्ते - दया.। make a noise - W. loud sing - G.

**ता तू तं इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित् सवनेषु प्रवाच्यां।**
**यच् छूर धृष्णो धृषता दधृष्वान् अहिं वज्रेण शवसाविवेषीः।। ५।। ७।।**

ता। तु। ते। इन्द्र। महतः। महानि। विश्वेषु। इत्। सवनेषु। प्रऽवाच्या।
यत्। शूर। धृष्णो इति। धृषता। दधृष्वान्। अहिम्। वज्रेण। शवसा। अविवेषीः।। ५।।

*वे तो तेरे, हे इन्द्र!, महान् के महान् (कर्म हैं),*
*सब के सब ही, सोमसवनों में कथन के योग्य।*
*जब, हे शूर!, हे शत्रुधर्षक!, धर्षक से, जगद्धर्ता (तू),*
*आहन्ता को, वज्र से, बल से (भी), व्याप्त करता है।। ५।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तू स्वयं महान् है और तुझ महान् के कर्म भी महान् हैं। ये तेरे सब कर्म परिश्रम तथा वीरता के साथ साधे जाने वाले सोमसवन आदि कर्मों के अवसर पर विशेष रूप से वर्णन और बखान के योग्य हैं। हे शूर, हे हिंसकों के हिंसक, जगत् को अपनी रक्षा के द्वारा धारण करने वाला तू जब अपने बल से और दण्डित करने वाली अपनी न्यायव्यवस्था से सब ओर हिंसा को फैलाने वाली दुष्ट आसुरी शक्ति को व्याप्त कर लेता है, उसके अन्दर प्रवेश करके उसे मार डालता है, तो सर्वत्र सुख और समृद्धि के साम्राज्य की स्थापना हो जाती है।

टि. *तो* - तु। क्षिप्रम् - वे.। सा.। अत्र ऋचि तुनुघेति दीर्घः - दया.।

*कथन के योग्य* - **प्रवाच्या।** प्रवाच्यानि - वे.। स्तोतृभिः प्रकर्षेण वक्तुं योग्यानि स्तुत्यानि - सा.। दया.। to be proclaimed - W. to be told aloud - G.

*जगद्धर्ता* - **दधृष्वान्।** अभिभवन् - वे.। दधृष्वान् पालकत्वेन लोकान् धारयन् - सा.। धारयन् - दया.। sustaining (the world) - W. boldly daring - G.

*व्याप्त करता है* - **अविवेषीः।** व्याप्तवान् असि - वे.। अवधीः। अत्राविवेषीर् इति वधकर्मा। सा.। व्याप्नुयाः - दया.। hast slain - W. didst destroy - G.

**ता तू तें सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊध्नः।**
**अधा ह त्वद् वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जवसा चक्रमन्त।। ६।।**

ता। तु। ते। सत्या। तुविऽनृम्ण। विश्वा। प्र। धेनवः। सिस्रते। वृष्णः। ऊध्नः।
अध। ह। त्वत्। वृषऽमनः। भियानाः। प्र। सिन्धवः। जवसा। चक्रमन्त।। ६।।

*वे तो तेरे सत्य (हैं), हे बहुत बल वाले!, सब के सब (कर्म),*
*प्रकर्ष से गौएं दूध चुवाती हैं, (तुझ) सेचक के (भय से) ओढी से।*
*और निश्चय ही तुझसे, हे सुखों की वर्षा की इच्छा वाले!, डरती हुई,*
*प्रकर्ष से नदियां, वेग के साथ, गमन करती हैं।। ६।।*

हे महान् बल वाले परमेश्वर! वे तेरे सब के सब वीरतापूर्ण कर्म सत्य हैं। तुझ कामनाओं की वर्षा करने वाले के डर से ही गौवें अपने थनों से दूधों को चुवाती हैं, अथवा जलप्रवाह मेघों से निकलकर बहते है, अथवा वाणियां वेदराशि से अर्थों को दुहती हैं। अपि च, सुखों की वर्षा की इच्छा वाले तुझसे ही भयभीत होकर नदियां वेग के साथ बहती हैं, अथवा जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखों

के साधन सब ओर फैलकर सब को प्राप्त होते हैं।

टि. *हे बहुत बल वाले* – **तुविनृम्ण**। बहुधन – वे.। दया.। अधिकबल – सा.। most powerful - W. O Most Heroic - G.

*सेचक के (भय से)* – **वृष्णः**। वर्षितुः तव – वे.। कामानां वर्षितुस् त्वत्तो भयात् – सा.।

*हे सुखों की वर्षा की इच्छा वाले* – **वृषमणः**। हे वर्षितमनस्क – वे.। कामानां वर्षणपरमनस्क – सा.। वृषस्य बलयुक्तस्य मन इव मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ – दया.। benevolent-minded - W. O thou of manly spirit - G.

*डरती हुई* – **भियानाः**। बिभ्यतः – वे.। बिभ्यत्यः सत्यः – सा.। भयं प्राप्ताः – दया.।

*गमन करती हैं* – **चक्रमन्त**। क्रमन्ते – वे.। गच्छन्ति – सा.। flow with rapidity - W. set themselves in motion - G.

**अत्राह ते हरिवस् ता उ देवीर् अवोभिर् इन्द्र स्तवन्त स्वसारः।**
**यत् सीम् अनु प्र मुचो बद्बधाना दीर्घाम् अनु प्रसितिं स्यन्दयध्यै।। ७।।**

अत्र। अह। ते। हरिऽवः। ताः। ऊँ इति। देवीः। अवःऽभिः। इन्द्र। स्तवन्त। स्वसारः।
यत्। सीम्। अनु। प्र। मुचः। बद्बधानाः। दीर्घाम्। अनु। प्रऽसितिम्। स्यन्दयध्यै।। ७।।

*यहाँ ही तेरी, हे कमनीय बल वाले!, वे ही द्योतमान,*
*प्रीतियों के साथ, हे इन्द्र!, स्तुतियां कराती हैं बहनें।*
*जब इनको उद्देश्य बनाकर, मुक्त कर देता है तू बँधी हुई को,*
*लम्बे के पश्चात् बन्धन के, प्रवाहित होने के लिये।। ७।।*

जब लम्बे समय तक बन्धन में पड़े रहने के पश्चात् सुखसाधनरूपी इन जलधाराओं की मुक्ति को अपना उद्देश्य बनाकर तू उनको बहने के लिये आसुरी शक्तियों के बन्धन से मुक्त कर देता है, तो उसी समय, हे कमनीय बलों वाले परमेश्वर!, वे द्योतमान सुखधारा रूपी बहनें मनुष्यों से प्रसन्नताओं के साथ तेरी स्तुतियां कराती हैं। अर्थात् प्रजाएं जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखों के साधनों को पाकर प्रसन्नता से तेरी स्तुतियां करने लगती हैं।

टि. *प्रीतियों के साथ* – **अवोभिः**। रक्षणैर् हेतुभिः – वे.। सा.। दया.। with joy - G.

*स्तुतियां कराती हैं* – **स्तवन्त**। स्तोतृभिः स्तुता आसन् – वे.। स्तवन्त स्तावयन्ति – सा.। स्तुवन्ति – दया.। extolled thee - G.

*बहनें* – **स्वसारः**। स्वयं सरणशीला नद्यः – वे.। नद्यः। स्वसृशब्दो नदीवाची। सा.।

*इनको उद्देश्य बनाकर* – **सीम् अनु**। सर्वतः परिगृह्य अनुक्रमेण – वे.। एना नदीर् उद्दिश्य – सा.। after - W.

*मुक्त कर देता है तू* – **प्र मुचः**। प्र मुक्तवान् असि – वे.। प्रकर्षेणामोचयः – सा.।

*बँधी हुई को* – **बद्बधानाः**। बाधमानाः – वे.। वृत्रेण बध्यमानाः – सा.। having been impeded - W. the prisoned ones - G.

*लम्बे के पश्चात् बन्धन के* – **दीर्घाम् अनु प्रसितिम्**। दीर्घमार्गं प्रति – वे.। दीर्घाम् अत्यधिकां

प्रसितिं बन्धनम् अनु - सा.। through a long confinement - W.

**पिपीळे अंशुर् मद्यो न सिन्धुर् आ त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः।**
**अस्मद्र्यक् शुशुचानस्य यम्या आशुर् न रश्मिं तुव्योजसं गोः।। ८।।**

पिपीळे। अंशुः। मद्यः। न। सिन्धुः। आ। त्वा। शमी। शशमानस्य। शक्तिः।
अस्मद्र्यक्। शुशुचानस्य। यम्याः। आशुः। न। रश्मिम्। तुविऽओजसम्। गोः।। ८।।

*पील लिया गया है सोमांशु, हर्षकर जैसे जलप्रवाह,*
*आजाए तेरे पास, उत्तम कर्म स्तोता का, (और) सामर्थ्य।*
*हमारी ओर तुझ प्रकाशमान की, (रश्मियों को) नियन्त्रित कर तू,*
*शीघ्रगन्ता जिस प्रकार रास को, दृढ़ को, (थामता है) बैल की।। ८।।*

जिस प्रकार कोमल सोमलताओं को कूटकर सोम निकाल लिया जाता है, उसी प्रकार तेरे उपासकों ने परिश्रम, त्याग, तपस्या, योगसाधना आदि के द्वारा, हे परमेश्वर!, तेरे लिये भक्तिरस तैयार कर लिया है। जिस प्रकार नदियों के जलप्रवाह मनुष्यों को आनन्ददायक होते हैं, उसी प्रकार ये भक्तिरस भी तुझे उतने ही आनन्दप्रद हैं। तू इन्हें स्वीकार कर। स्तोता जन अपने उत्तम कर्मों और अपनी शक्तियों को भी तुझे समर्पित कर रहे हैं, तू उन्हें भी स्वीकार कर। हे प्रभो! तुझ प्रकाशमान की ज्ञानरश्मियां हमें नियन्त्रण में रखकर हमारा मार्गदर्शन करने के लिये हमारे पास आ जाएं। तू इन ज्ञानरश्मियों को अपने हाथों में इस प्रकार थामे रख, जिस प्रकार रथ से शीघ्र जाने की इच्छा वाला कोई योद्धा बैलों की मजबूत रासों को अपने हाथों में थामे रखता है।

टि. *पील लिया गया है* - **पिपीळे**। पीडितः - वे.। अपीड्यत। अभ्यसूयतेत्यर्थः। सा.। पीडयति - दया.। has been expressed - W. G.

*उत्तम कर्म स्तोता का* - **शमी शशमानस्य**। स्तुतिकर्म शमनशीलं स्तुवतः - वे.। शमी शमनम् शशमानस्य स्तुवतः सम्बन्धि - सा.। उत्तमं कर्म अधर्मम् उल्लङ्घयतः - दया.। expiatory (power) of the (illustrious) utterer - W. the rite, the toiler's (power) - G.

*हमारी ओर* - **अस्मद्र्यक्**। अस्मदभिमुखम् - वे.। सा.। यो ऽस्मान् अञ्चति - दया.।

*नियन्त्रित कर तू* - **आ यम्याः**। आ यच्छतु - वे.। सा.।

*दृढ़ को* - **तुव्योजसम्**। प्रवृद्धबलम् - वे.। बहुबलं दृढम् इत्यर्थः - सा.। firmly - W. exceedingly strong - G.

*बैल की* - **गोः**। गन्तुर् अश्वस्य - वे.। सा.। of the steed - W. G.

**अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि।**
**अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वधर् वनुषो मर्त्यस्य।। ९।।**

अस्मे इति। वर्षिष्ठा। कृणुहि। ज्येष्ठा। नृम्णानि। सत्रा। सहुरे। सहांसि।
अस्मभ्यम्। वृत्रा। सुऽहनानि। रन्धि। जहि। वधः। वनुषः। मर्त्यस्य।। ९।।

*हमारे लिये बढ़े हुओं को, कर दे तू प्रशंसनीयों को,*
*पौरुषों को सदा ही, हे विजेता!, बलों को (भी)।*

*हमारे लिये आवरकों को, सुख से हनन के योग्य कर दे,*
*नष्ट दे तू वधसाधन को, हिंसा करने वाले मनुष्य के।। ९।।*

हे दुष्ट आसुरी शक्तियों को पराभूत करने वाले परमेश्वर! तू हमें सदा बड़े-बड़े, प्रशंसा के योग्य, मर्दानगी के कर्मों को करने का अवसर प्राप्त करा। तू हमें विजय दिलाने वाले बल प्रदान कर। सुखसाधनों को आवृत करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्तियों को तू हमारे लिये सुख से विनाश के योग्य बना दे। तू दुष्ट हिंसक मनुष्य के हिंसा के साधनों को नष्ट कर दे।

टि. *सदा* - **सत्रा।** सत्यम् - वे.। सर्वदा - सा.। सत्यानि - दया.। ever - G.

*हे विजेता* - **सहुरे।** हे सहनशील - वे.। सा.। दया.। Enduring Indra - W.

*सुख से हनन के योग्य कर दे* - **सुहनानि रन्धि।** सुहनानि वशं नय - वे.। शोभनवधानि वशं नय - सा.। सुष्ठु हन्तुं योग्यानि नाशय - दया.। make easy to be conquered - G.

*मार दे तू वधसाधनों का सेवन करने वाले मनुष्य को* - **जहि वधः वनुषः मर्त्यस्य।** जहि च आयुधम् अस्मान् घ्नतः मनुष्यस्य - वे.। वनुषो हिंसकस्य मर्त्यस्य मरणधर्मणः शत्रोः सम्बन्धि वधो हननसाधनम् आयुधं जहि नाशय - सा.। दूरे प्रक्षिप वधसाधनं सेवमानस्य मर्त्यस्य - दया.। demolish the weapon of the malevolent man - W. G.

**अस्माकम् इत् सु शृणुहि त्वम् इन्द्रास्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान्।**
**अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधीर् अस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः।। १०।।**

अस्माकम्। इत्। सु। शृणुहि। त्वम्। इन्द्र। अस्मभ्यम्। चित्रान्। उप। माहि। वाजान्।
अस्मभ्यम्। विश्वाः। इषणः। पुरम्ऽधीः। अस्माकम्। सु। मघऽवन्। बोधि। गोऽदाः।। १०।।

*हमारी ही भली प्रकार, सुन तू (स्तुतियों को),*
*हे इन्द्र! हमें, विविध प्रकार के प्रदान कर बलों को।*
*हमारे लिये सबको, प्रेरित कर तू मेधाओं को,*
*हमारा भली प्रकार, हे ऐश्वर्यों वाले!, हो जा तू गोदाता।। १०।।*

हे ऐश्वर्यवान् परमात्मन्! तू हमारी स्तुतियों और प्रार्थनाओं को सुन। तू हमें विविध प्रकार के कमनीय अन्न बल और ऐश्वर्य प्रदान कर। तू हमें सब प्रकार की उत्तम बुद्धियां प्रदान कर और हमारी उन बुद्धियों को सन्मार्ग पर चला (धियो यो नः प्रचोदयात्)। हे पवित्र धनों वाले! तू भली प्रकार हमें गौओं, ज्ञानरश्मियों, वाणियों और भूमियों को देने वाला हो जा।

टि. *विविध प्रकार के बलों को* - **चित्रान् वाजान्।** नानारूपाणि अन्नानि - वे.। चायनीयान्यन्नानि - सा.। many kinds of food - W. strength of varied sort - G.

*प्रदान कर* - **उप माहि।** आ कुरु - वे.। देहि - सा.। bestow on us - G.

*प्रेरित कर तू मेधाओं को* - **इषणः पुरन्धीः।** प्रेरय प्रज्ञाः - वे.। बुद्धीः प्रेरय - सा.। इषणः प्रेरय, पुरंधीः याः पुरूणि विज्ञानानि दधति ताः प्रज्ञाः - दया.। fulfil desires - W. send to us all intelligence and wisdom - G.

*हो जा तू गोदाता* - **बोधि गोदाः।** गवां दाता भवामीति बुध्यस्व - वे.। गोदाः गवां दाता बोधि

भव - सा.। बुध्यस्व, यो गां ददाति सः - दया.। know thyself to be to us the donor of cattle - W. Be he who gives us cattle - G.

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। ११।। ८।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१६.२१ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त २३

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-७,११ इन्द्रः, ८-१० इन्द्र ऋतं वा। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**कथा महाम् अवृधत् कस्य होतुर् यज्ञं जुषाणो अभि सोमम् ऊधः।**
**पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय।। १।।**

कथा। महाम्। अवृधत्। कस्य। होतुः। यज्ञम्। जुषाणः। अभि। सोमम्। ऊधः।
पिबन्। उशानः। जुषमाणः। अन्धः। ववक्षे। ऋष्वः। शुचते। धनाय।। १।।

*किस प्रकार पूजा करने वाले को बढ़ाता है (इन्द्र), किस होता के,*
*यज्ञ का सेवन करता हुआ, जाता है ओर सोम की, ओढी की।*
*पीता हुआ, कामना करता हुआ, सेवन करता हुआ अन्न का,*
*वहन करता है महान् (इन्द्र उपासक को), पवित्रकारक धन के लिये।। १।।*

प्रश्न है, कि परमेश्वर अपने पूजक को किस प्रकार बढ़ाता है और वह किस यजमान के यज्ञ को स्वीकार करता हुआ उसके भक्तिरस को और भक्तिरस के स्रोत को अपनाता है, उसके हृदयमन्दिर में निवास करता है। इस प्रश्न का उत्तर यही हो सकता है, कि जो पूजक स्वयं को और अपने सर्वस्व को प्रभु के चरणों में श्रद्धा के साथ समर्पित कर देता है, वह परमेश्वर उसी के यज्ञ और भक्तिभाव को स्वीकार करता है और उसी को जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की ओर बढ़ाता है। वह जगदीश्वर उसी पूजक को प्यार करता है, उसी के नैवेद्य को स्वीकार करता है, उसी के भक्तिरस का पान करता है, और उस उपासक को वह प्रभु अपना बनाकर पवित्र कर डालने वाले आत्मिक धन में स्थापित कर देता है।

टि. *किस प्रकार पूजा करने वाले को बढ़ाता है* - **कथा महाम् अवृधत्।** कथम् इन्द्रः पूजयितारं वर्धयति - वे.। महान्तं गुणैः प्रवृद्धम् इन्द्रं केन प्रकारेण वर्धयेत्। अस्मत्प्रेरिता स्तुतिर् इति शेषः। सा.।

*जाता है ओर सोम की, ओढी की* - **अभि सोमम् ऊधः।** सोमम् अभि गच्छति ऊधसि हविर्धाने स्थितम् - वे.। अभि। गच्छेद् इति शेषः। उपसर्गश्रुतेर् उचितक्रियाध्याहारः। किंच ऊध उद्धतम् अतिवृद्धं सोमं सोमलक्षणम् अन्नम्। सा.। दुग्धादिरसम् उत्कृष्टम् अभि - दया.। rejoicing in the Soma and its foundation - G.

*वहन करता है* - **ववक्षे।** दातुम् - वे.। वहति। पीतम् एवान्नं जठरे धारयति। सा.। वहति - दया.। the mighty Indra is borne (to the rite) - W. hath waxed - G.

*पवित्रकारक धन के लिये* - **शुचते धनाय।** दीप्यमानं धनम् - वे.। प्रदीप्ताय धनाय

हविरादिलक्षणाय – सा.। for the purpose of bestowing brilliant wealth - W. for splended riches - G.

**को अस्य वीरः सधमादम् आप सम् आनंश सुमतिभिः को अस्य।**
**कद् अस्य चित्रं चिकिते कद् ऊती वृधे भुवच् छशमानस्य यज्योः।। २।।**

कः। अस्य। वीरः। सधऽमादम्। आप। सम्। आनंश। सुमतिऽभिः। कः। अस्य।
कत्। अस्य। चित्रम्। चिकिते। कत्। ऊती। वृधे। भुवत्। शशमानस्य। यज्योः।। २।।

*कौन, इसके, वीर संगति के आनन्द को पाता है,*
*सङ्गत होता है, उत्तम मतियों से कौन इसकी।*
*कब इसकी अद्भुत (महिमा) को, जाना जाता है, कब रक्षा से,*
*वृद्धि के लिये हो जाता है, स्तुति करने वाले की पूजक की।। २।।*

प्रश्न है, कि कौन ऐसा वीर है जो इस परमेश्वर के साथ आनन्दित होता है। इसका उत्तर यही है कि काम, क्रोध आदि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला कोई विरला वीर ही इसके साथ इसके आनन्द में आनन्द मनाता है। दूसरा प्रश्न है, कि इस परमेश्वर के उत्तम विचारों की संगति कौन करता है। इसका उत्तर यह है, कि कोई चिन्तनशील मनीषी ही इसके उत्तम विचारों और प्रेरणाओं को अपने जीवन में उतार सकता है। फिर प्रश्न है, कि इसकी उत्तम महिमा को कैसे जाना जाता है। उत्तर है, कि इसकी कृपा से ही इसकी महिमा को जाना जा सकता है। आगे प्रश्न है, कि यह प्रभु स्तुति करने वाले पूजक की अपनी रक्षा के साथ कब वृद्धि करने वाला होता है। इसका उत्तर है, कि जब पूजक स्वयं को उसके चरणों में समर्पित कर देता है, तो वह परमेश्वर उसे अपनी रक्षा में लेकर उसको सब प्रकार से बढ़ाता है।

टि. *संगति के आनन्द को पाता है* – **सधमादम् आप**। इन्द्रेण सह माद्यतीत्यर्थः – वे.। सह माद्यन्तीति सधमादः संग्रामः तम्। सह सोमपानं वा। आप प्राप्नोति। सा.। सहानन्दम् आप्नुयात् – दया.। has enjoyed his fellowship - W. hath been made his feast-companion - G.

*सङ्गत होता है* – **सम् आनंश**। सङ्गत आसीत् – वे.। सङ्गच्छते – सा.। प्राप्नोति – दया.। has been a sharer - W. hath been partner - G.

*उत्तम मतियों से* – **सुमतिभिः**। शोभनाभिर् अनुग्रहबुद्धिभिः – सा.। in his benevolent thoughts - W. in loving kindness - G.

*अद्भुत (महिमा) को* – **चित्रम्**। चित्रं कर्म – वे.। चायनीयं धनम् – सा.। अद्भुतं विज्ञानम् – दया.। wonderful bounty - W. wondrous acts - G.

*जाना जाता है* – **चिकिते**। प्रज्ञायते – सा.। जानाति – दया.। does one appreciate - W.

*स्तुति करने वाले की पूजक की* – **शशमानस्य यज्योः**। यजमानस्य यज्योः – वे.। स्तुवतो यजमानस्य – सा.।

**कथा शृणोति हूयमानम् इन्द्रः कथा शृण्वन्नवसाम् अस्य वेद।**
**का अस्य पूर्वीर् उपमातयो ह कथैनम् आहुः पपुरिं जरित्रे।। ३।।**

कथा। शृणोति। हूयमानम्। इन्द्रः। कथा। शृण्वन्। अवसाम्। अस्य। वेद।
काः। अस्य। पूर्वीः। उपऽमातयः। ह। कथा। एनम्। आहुः। पपुरिम्। जरित्रे।। ३।।

*किस प्रकार सुनता है, आह्वाता को इन्द्र,*
*किस प्रकार सुनता हुआ, कामना को इसकी जान लेता है।*
*कौन सी (हैं) इसकी, पूर्वकालीन उपदाएं निश्चय से,*
*क्यों इसको पुकारते हैं कामपूरक, स्तुतिगायक के लिये।। ३।।*

वह परमैश्वर्ययुक्त परमात्मा आह्वान करने वाले स्तोता की पुकार को कैसे सुनता है, पुकार को सुनने के पश्चात् उसकी कामनाओं को कैसे जान लेता है, पूर्व काल में इस परमेश्वर ने हमें क्या-क्या नियामतें बख्शी हैं, इसको स्तुतिगान करने वाले उपासक की कामनाओं को पूर्ण करने वाला क्यों कहा जाता है, ये सब विचारणीय, जानने योग्य और जीवन में अपनाने योग्य बातें हैं।

टि. *आह्वाता को* - **हूयमानम्।** हूयमानम् हविः - वे.। आह्वयन्तं स्तोतारम् - सा.। स्पर्द्धमानम् - दया.। offered invocation - G.

*कामना को इसकी जान लेता है* - **अवसाम् अस्य वेद।** कथम् अस्य स्तोतुः जानाति रक्षणानि - वे.। सा.। दया.। how does he know his necessities - W. how marketh he the invoker's wishes - G.

*पूर्वकालीन उपदाएं* - **पूर्वीः उपमातयः।** पुरातन्यः स्तुतयः - वे.। पुरातनानि दानानि - सा.। प्राचीना उपमाः - दया.। gifts of old - W. ancient acts of bounty - G.

*कामपूरक* - **पपुरिम्।** कामानां पूरयितारम् - वे.। सा.। पालकम् - दया.। the fulfiller - W.

**कथा सबाधः शशमानो अस्य नशद् अभि द्रविणं दीध्यानः।**
**देवो भुवन् नवेदा म ऋतानां नमो जगृभ्वाँ अभि यज् जुजोषत्।। ४।।**

कथा। सऽबाधः। शशमानः। अस्य। नशत्। अभि। द्रविणम्। दीध्यानः।
देवः। भुवत्। नवेदाः। मे। ऋतानाम्। नमः। जगृभ्वान्। अभि। यत्। जुजोषत्।। ४।।

*किस प्रकार बाधाओं से युक्त, स्तुति करता हुआ, इसके,*
*प्राप्त करता है सब ओर से धन को, प्रकाशयुक्त होता हुआ।*
*देव हो जाए भली प्रकार जानने वाला, मेरे सत्य वचनों को,*
*नमस्कार को ग्रहण करता हुआ, सर्वतः जब (उसे) सेवन करे वह।। ४।।*

विघ्न-बाधाओं और विपत्तियों से घिरा हुआ मनुष्य इस परमेश्वर की स्तुति करता हुआ और इसके ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होता हुआ इसके उत्तम धन को कैसे प्राप्त करता है, यह जानने की बात है। दान, प्रकाशवत्ता आदि गुणों से युक्त वह परमेश्वर मेरे नमस्कार को स्वीकार करके उससे भली प्रकार प्रसन्न होता हुआ मेरे सत्य वचनों को, मेरी सच्ची स्तुतियों को, भली प्रकार जानने वाला हो जाए। यही मेरे जीवन की अभिलाषा है।

टि. *प्राप्त करता है* - **नशत्।** व्याप्नोति - वे.। प्राप्नोति - सा.। नश्यति - दया.।

*प्रकाशयुक्त होता हुआ* - **दीध्यानः।** दीप्यमानः - वे.। कर्मभिर् दीप्यमानः - सा.। प्रकाशयन् -

दया.। diligent to worship - W. ever longing - G.

*भली प्रकार जानने वाला* - **नवेदाः**। ज्ञाता - वे.। अतिशयेन ज्ञाता। अत्र निपातस्थो नकारो ऽतिशयवाची। सा.। यो न वेत्ति सः - दया.। appreciator - W. may mark well - G.

*सत्य वचनों को* - **ऋतानाम्**। सत्यानां वचसाम् - वे.। स्तोत्राणाम् - सा.। ऋतानाम् सत्यानाम् - दया.। of praises - W. truthful praises - G.

*नमस्कार को* - **नमः**। हविः - वे.। हविर्लक्षणम् अन्नम् - सा.। अन्नम् - दया.। the sacrificial food - W. homage - G.

**कुथा कद् अस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष।।**
**कुथा कद् अस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन् कामं सुयुजं ततस्रे।। ५।। ९।।**

कुथा। कत्। अस्याः। उषसः। विऽउष्टौ। देवः। मर्तस्य। सख्यम्। जुजोष।
कुथा। कत्। अस्य। सख्यम्। सखिऽभ्यः। ये। अस्मिन्। कामम्। सुऽयुजम्। ततस्रे।। ५।।

*किस प्रकार, कब, इस उषा के उदयकाल में,*
*देव (वह), मनुष्य की मित्रता को, स्वीकार करता है।*
*किस प्रकार, कब, इसकी मित्रता मित्रों को, (प्राप्त होती है),*
*जो इसमें अभिलाषा को (अपनी), सुनियोजित को, विस्तारते हैं।। ५।।*

जब उषा का उदय होता है, जब ज्ञानरश्मियां साधक के हृदय-आकाश में उदित होने लगती हैं, तब किस प्रकार और कितने समय के अन्दर वह दा प्रकाशवत्ता आदि गुणों वाला परमेश्वर मरणधर्मा उपासक की मित्रता को स्वीकार कर लेता है, और किस प्रकार और कितने समय में इस प्रभु की मित्रता उन उपासक मित्रों को प्राप्त हो जाती है, जो पूर्ण रूप से अपनी अभिलाषा और प्रेम को इसके साथ जोड़ देते हैं और उसका निरन्तर विस्तार करते रहते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर किसी के पास नहीं है।

टि. *उषा के उदयकाल में* - **उषसः व्युष्टौ**। उषसः व्युच्छने - वे.। प्रभाते - सा.।

*स्वीकार करता है* - **जुजोष**। सेवते - वे.। दया.। सेवेत - सा.। has accepted - W.

*अभिलाषा को सुनियोजित को विस्तारते हैं* - **कामं सुयुजं ततस्रे**। अभिलषितम् आत्मनः सुयुक्तम् अकुर्वन् - वे.। सुयुजं सुष्ठु प्रयुज्यमानं कामं कामनीयं हविः स्तोत्रं च ततस्रे वितेनिरे - सा.। इच्छां सुष्ठु योक्तुम् अर्हं तन्वन्ति - दया.। who have spread out the desirable and suitable (offering) before him - W. who have entwined in him their firm affection - G.

**किम् आद् अमत्रं सख्यं सखिभ्यः कुदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम।**
**श्रिये सुदृशो वपुर् अस्य सर्गाः स्वर् ण चित्रतमम् इष आ गोः।। ६।।**

किम्। आत्। अमत्रम्। सख्यम्। सखिऽभ्यः। कुदा। नु। ते। भ्रात्रम्। प्र। ब्रवाम।
श्रिये। सुऽदृशः। वपुः। अस्य। सर्गाः। स्वः। न। चित्रऽतमम्। इषे। आ। गोः।। ६।।

*किस प्रकार बलवती मित्रता का (तेरी), मित्रों के लिये,*
*किस समय, अब तेरे भाईचारे का प्रकर्ष से बखान करें हम।*

*कल्याण के लिये है सुदर्शन का स्वरूप इसका, (और) उद्योग (इसके),*
*सूर्य की तरह अद्भुत (तेज), चाहा जाता है सब ओर से गन्ता का।। ६।।*

हे परमेश्वर! तेरे उपासक मित्रों के लिये शत्रुओं को अभिभूत करने वाली जो तेरी बलवती मित्रता है, और जो तेरा भाईचारा है, अब हम उसका कब और कैसे बखान करें। हम इस कार्य के लिये स्वयं को सक्षम नहीं पाते। हे प्रभो! इस ब्रह्माण्ड के रूप में दिखाई देने वाला तेरा सुन्दर स्वरूप और जगत् का सर्जन, पालन, संहार आदि तेरे महान् कर्म प्राणिमात्र के कल्याण के लिये हैं। हे जगदीश! तुझ दूर तक जाने वाले अर्थात् सर्वव्यापक के, सूर्य के समान अद्भुत तेज की हम सभी कामना करते हैं (भर्गो देवस्य धीमहि)।

टि. *बलवती (का)* - **अमत्रम्।** आगमनशीलम् - वे.। शत्रून् अभिभावुकम् - सा.। सुपात्रम् -दया.। most mighty - G.

*भाईचारे का* - **भ्रात्रम्।** भ्रातृत्वम् - वे.। भ्रातृकर्म - सा.।

*कल्याण के लिये* - **श्रिये।** श्रियै - वे.। सर्वेषां स्तोतृणां श्रेयसे, भवन्तीति शेषः - सा.। for the happiness - W.

*उद्योग* - **सर्गाः।** सर्गाः (शोभनदर्शनाः) - वे.। उद्योगाः - सा.। सृष्टयः - दया.। efforts - W. the streams - G.

*सूर्य की तरह अद्भुत* - **स्वः न चित्रतमम्।** स्वर्लोक इव विचित्रतमम् - वे.। सूर्यो यथा दर्शनीयतमस् तथा - सा.। wonderful like the sun - W.

*चाहा जाता है* - **इषे।** इष्यते - वे.। सा.। is ever wished for - W.

*गन्ता का* - **गोः।** गन्तुः - वे.। of the moving - W. of milk - G.

**द्रुहं जिघांसन् ध्वरसम् अनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका।**
**ऋणा चिद् यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे।। ७।।**

द्रुहम्। जिघांसन्। ध्वरसम्। अनिन्द्राम्। तेतिक्ते। तिग्मा। तुजसे। अनीका।
ऋणा। चित्। यत्र। ऋणऽयाः। नः। उग्रः। दूरे। अज्ञाताः। उषसः। बबाधे।। ७।।

*द्रोह करने वाली को, मारना चाहता हुआ, हिंसिका को इन्द्रविरोधिनी को,*
*और तीक्ष्ण करता है तीक्ष्णों को, मारने के लिये (उसको), आयुधों को।*
*पापों को भी, जिनमें पापों को दूर करने वाला, हमारे, तेजस्वी,*
*दूर स्थान पर, अज्ञातों को उषाओं को, हटा देता है।। ७।।*

दुष्ट आसुरी शक्ति अथवा मृत्यु द्रोह करने वाली और हिंसा करने वाली है। उसकी परमेश्वर में आस्था नहीं है। इसलिये परमेश्वर उसका हनन करना चाहता है। उसको मारने के लिये वह पहले से ही अपने तीक्ष्ण हननसाधनों को और अधिक तीक्ष्ण करता है। वह प्रभु पापों को दूर करने वाला है। वह हमारे पापों को दूर करे और आगे आने वाली अज्ञात उषाओं को अर्थात् दिनों को दूर हटाता चले, आगे बढ़ाता चले, ताकि हम पापों से रहित होकर दीर्घ आयु को प्राप्त कर सकें।

टि. *हिंसिका को* - **ध्वरसम्।** हिंसित्रीम् - वे.। हिंसिकाम् - सा.।

*इन्द्रविरोधिनी को* - **अनिन्द्राम्।** इन्द्ररहितां सेनाम् - वे.। इन्द्रम् अजानतीं राक्षसीम् - सा.। अनीश्वरीम् - दया.। not acknowledging Indra - W. Indra-less - G.

*और तीक्ष्ण करता है* - **तेतिक्ते।** तीक्ष्णीकरोति - वे.। अत्यर्थं तीक्ष्णीकरोति - सा.। दया.।

*मारने के लिये* - **तुजसे।** शत्रूणां हिंसायै - वे.। तद्वधाय - सा.। for destruction - W.

*आयुधों को* - **अनीका।** तिग्माः सेनाः - वे.। आयुधानि - सा.। weapons - W. G.

*पापों को* - **ऋणा।** ऋणम् अतिक्रमधम्।। ऋणानि - वे.। प्राप्तानि - दया.। debts - G.

*पापों को दूर करने वाला* - **ऋणयाः।** ऋणानां यावयिता - वे.। ऋणस्य हन्तेन्द्रः। यातिर् वधकर्मा। सा.। the canceller of debts - W. our debts' exactor - G.

**ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर् ऋतस्य धीतिर् वृजिनानि हन्ति।**
**ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः।। ८।।**

ऋतस्य। हि। शुरुधः। सन्ति। पूर्वीः। ऋतस्य। धीतिः। वृजिनानि। हन्ति।
ऋतस्य। श्लोकः। बधिरा। ततर्द। कर्णा। बुधानः। शुचमानः। आयोः।। ८।।

*ऋत की निश्चय से, शक्तियां हैं असंख्य,*
*ऋत का ज्ञान पापों को नष्ट कर देता है।*
*ऋत का श्रवण बहरों के (भी) खोल देता है,*
*कानों को, बोध कराता हुआ, पवित्र करता हुआ, मनुष्य के।। ८।।*

परमेश्वर के द्वारा विधान किये हुए ऋत अर्थात् इस संसारचक्र को चलाने वाले शाश्वत नियम की शक्तियां अनन्त हैं। ऋत को जानने और उसका पालन करने से मनुष्य के पापों का नाश हो जाता है। सत्य का बोध कराने वाले और आत्मा को पवित्र करने वाले ऋत का श्रवण तथा चिन्तन-मनन मनुष्य के बहरे कानों को भी खोल देता है। परमेश्वर की चर्चा को सुनना न चाहने वाला नास्तिक मनुष्य भी सत्यनियम के पालन से आस्तिक बनकर उसे सुनने लगता है।

टि. *ऋत की* - **ऋतस्य।** सत्यस्य - वे.। दया.। अत्र ऋतशब्देनेन्द्रो वादित्यो वा ऋतं वा यज्ञो वोच्यते। ऋतस्य ऋतदेवस्य। सा.। of Eternal Law - G.

*शक्तियां* - **शुरुधः।** अस्य शोकस्य रोधिन्यः - वे.। आपः - सा.। याः शु सद्यो रुन्धन्ति ताः स्वसेनाः - दया.। waters - W. food - G.

*ज्ञान* - **धीतिः।** प्रज्ञा - वे.। प्रज्ञा तद्विषया स्तुतिर् वा - सा.। धारणावती प्रज्ञा - दया.। adoration - W. thought - G.

*पापों को* - **वृजिनानि।** वर्जनीयानि - वे.। वर्जनीयानि पापानि - सा.। iniquities - W.

*श्रवण* - **श्लोकः।** शब्दः - वे.। स्तुतिरूपा वाग् - सा.। वाक् - दया.। praise - W. the praise- hymn - G.

*बहरों के खोल देता है कानों को* - **बधिरा ततर्द कर्णा।** बधिरौ कर्णौ तृणत्ति - वे.। प्रतिबद्धौ कर्णौ तृणत्ति - सा.। बधिराणि हिनस्ति कर्णाणि - दया.। has opened the deaf ears - W. G.

*बोध कराता हुआ* - **बुधानः।** बोधयन् - वे.। दया.। बुध्यमानः - सा.। intelligent - W.

*पवित्र करता हुआ* - **शुचमानः**। दीप्यमानः - वे.। सा.। पवित्रैः पवित्रयन् - दया.। brilliant - W. glowing - G.

**ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि सन्ति पुरूणि चन्द्रा वपुषे वपूंषि।**
**ऋतेन दीर्घम् इषणन्त पृक्ष ऋतेन गाव ऋतम् आ विवेशुः।। ९।।**

ऋतस्य। दृळ्हा। धरुणानि। सन्ति। पुरूणि। चन्द्रा। वपुषे। वपूंषि।
ऋतेन। दीर्घम्। इषणन्त। पृक्षः। ऋतेन। गावः। ऋतम्। आ। विवेशुः।। ९।।

*ऋत के दृढ़ आधार होते हैं,*
*बहुत से आह्लादक (होते हैं), स्वरूप में सौन्दर्य।*
*ऋत से (उपासक) दीर्घकालीन को चाहते हैं अन्न को,*
*ऋत से गौएं ऋत में सब ओर से प्रवेश करती हैं।। ९।।*

परमेश्वर के द्वारा विहित सत्यनियम दृढ़ आधारों पर स्थित है। इसके स्वरूप में असंख्य आह्लादक सौन्दर्य हैं। ऋत का पालन करने से उपासक जन दीर्घकालीन जीवन अर्थात् अमरत्व की कामना करते हैं। ऋत के पालन से वाणियां, ज्ञानरश्मियां और इन्द्रियां ऋत में ही प्रवेश कर जाती हैं, उसके अनुसार ही कार्य करने लग जाती हैं, अथवा ऋत के उद्गम स्थान ब्रह्म में ही प्रवेश कर जाती हैं।

टि. *आधार* - **धरुणानि**। उदकानि धारकाणि - वे.। धारकाणि - सा.। उदकानीव शान्तानि आचरणानि - दया.। sustaining - W. foundations - G.

*(होते हैं) स्वरूप में सौन्दर्य* - **वपुषे वपूंषि**। निवपनाय वपूंषि उदकानि - वे.। वपुषे वपुष्मतः। षष्ठ्यर्थे चतुर्थी। ऋतस्य ऋतदेवस्य। वपूंषि रूपाणि सन्ति। सा.। वपुषे सुरूपाय शरीराय वपूंषि रूपाणि - दया.। forms of the embodied Rita - W. in its fair form are beauties - G.

*दीर्घकालीन को चाहते हैं अन्न को* - **दीर्घम् इषणन्त पृक्षः**। ऋतेन अनुस्यूतम् अन्नं गच्छन्ति - वे.। दीर्घम् अत्यधिकं पृक्षो ऽन्नम् इषणन्त स्तोतार इच्छन्ति - सा.। चिरञ्जीविनं प्राप्नुवन्ति संस्पृष्टव्यम् अन्नादिकम् - दया.। long lasting food they bring us - G.

*गौएं ऋत में सब ओर से प्रवेश करती हैं* - **गावः ऋतम् आ विवेशुः**। रश्मयः उदकम् आ वेशयन्ति - वे.। धेनवः ऋतं यज्ञं दक्षिणात्वेन प्रविशन्ति। यद्वा। रश्मय उदकम् आ विवेशुः। सा.। धेनवो वत्सस्थानीयाः सुशिक्षिता वाचः सत्यं ब्रह्म आविशन्ति - दया.। have cows come to our worship - G.

**ऋतं येमान ऋतम् इद् वनोत्यृतस्य शुष्मस् तुरया उ गव्युः।**
**ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते।। १०।।**

ऋतम्। येमानः। ऋतम्। इत्। वनोति। ऋतस्य। शुष्मः। तुरऽयाः। ऊँ इति। गव्युः।
ऋताय। पृथ्वी इति। बहुले इति। गभीरे इति। ऋताय। धेनू इति। परमे इति। दुहाते इति।। १०।।

*ऋत का नियमन करता हुआ, ऋत का ही सेवन करता है,*
*ऋत का बल त्वरित गति वाला है, गौओं की इच्छा वाला।*

*ऋत के लिये हैं द्युलोक और भूलोक, विस्तृत (और) गम्भीर,*
*ऋत के लिये, प्रसन्न करने वाले, महान्, (सुख को) दुहते हैं।। १०।।*

ऋत को अपने नियन्त्रण में रखने वाला वह परमेश्वर स्वयं ऋत का ही पालन करता है और सबसे भी ऋत का पालन कराता है। सबको सुखसाधनों की प्राप्ति कराने की इच्छा वाला ऋत का बल त्वरित गति से चलता है। वह विपरीत चलने वाले को धराशायी कर देता है। विस्तृत और गम्भीर द्युलोक और भूलोक ऋत का पालन करने के लिये हैं। परस्पर के आदान-प्रदान से प्रजाओं को प्रसन्न करने वाले ये महान् आकाश और पृथिवी प्रजाओं के लिये सुखों का दोहन करते हैं।

टि. *नियमन करता हुआ* - **येमानः**। नियच्छन् - वे.। नियच्छन् स्तुतिभिर् वशीकुर्वन् - सा.। subjecting (to his will) - W. fixing - G

*सेवन करता है* - **वनोति**। प्रयच्छति - वे.। संभजते - सा.। याचते - दया.। enjoys - W. upholds it - G.

*त्वरित गति वाला है* - **तुरयाः**। तूर्णगतिः - वे.। तूर्णम् - सा.।

*द्युलोक और भूलोक* - **पृथ्वी**। द्यावापृथिव्यौ - वे.। सा.।

*प्रसन्न करने वाले* - **धेनू**। द्यावापृथिव्यौ - वे.। प्रीणयित्र्यौ - सा.। धेनू गावाव् इव वर्तमाने - दया.।

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। ११।। १०।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१६.२१ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त २४

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - १-९, ११ त्रिष्टुप्, १० अनुष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**का सुष्टुतिः शवसः सूनुम् इन्द्रम् अर्वाचीनं राधस आ ववर्तत्।**
**ददिर् हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर् निष्षिधां नो जनासः।। १।।**

का। सुऽस्तुतिः। शवसः। सूनुम्। इन्द्रम्। अर्वाचीनम्। राधसे। आ। ववर्तत्।
ददिः। हि। वीरः। गृणते। वसूनि। सः। गोऽपतिः। निःऽसिधाम्। नः। जनासः।। १।।

*कौन सी सुन्दर स्तुति, बल के पुत्र को, इन्द्र को,*
*इस ओर धनैश्वर्य के लिये आवर्तित करेगी।*
*देने वाला ही (है) वीर, स्तुतिगायक के लिये धनों को,*
*वह गौओं का स्वामी, रोकने वालों के हमें, हे मनुष्यो।। १।।*

वह परमैश्वर्यवान् परमात्मा अत्यधिक बल वाला है। हम विचार करें, कि वह कौन सी उत्तम स्तुति है, जिसके करने से वह हमारी ओर प्रवृत्त होगा और हमें उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करेगा। हे मनुष्यो! दुष्टों का संहार करने वाला, गौओं, ज्ञानरश्मियों, वाणियों आदि सुखसाधनों का स्वामी वह जगदीश्वर धनों को रोक लेने वाले आसुरी वृत्ति वाले जनों से धनों को छीनकर हमें देने वाला है।

टि. *बल के पुत्र को* - **शवसः सूनुम्।** बलस्य पुत्रम् - वे.। अतिबलिनम् इत्यर्थः - सा.।

*आवर्तित करेगी* - **आ ववर्तत्।** आवर्तयति - वे.। आवर्तयेत् - सा.। दया.।

*गौओं का स्वामी* - **गोपतिः।** गवां पतिः - वे.। पश्वादिधनस्य पालकः - सा.। गोः पृथिव्याः स्वामी - दया.। the Lord who sends us gifts - G. the Lord of wisdom - Satya.

*रोक लेने वालों के* - **निष्षिधाम्।** सन्निरुन्धानानाम् - वे.। निष्षेद्धॄणां शत्रूणाम् - सा.। of his adversaries - W.

**स वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्यः स सुष्टुत इन्द्रः सत्यराधाः।**
**स यामन्ना मघवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात्।। २।।**

सः। वृत्रऽहत्ये। हव्यः। सः। ईड्यः। सः। सुऽस्तुतः। इन्द्रः। सत्यऽराधाः।
सः। यामन्। आ। मघऽवा। मर्त्याय। ब्रह्मण्यते। सुस्वये। वरिवः। धात्।। २।।

*वह आवरकों के हनन में आह्वान के योग्य है, वह पूजनीय है,*
*वह भली प्रकार स्तुति किया हुआ इन्द्र, सच्चे धनों को देने वाला (है)।*
*वह जीवनमार्ग में सब ओर से, ऐश्वर्यों का स्वामी, मरणधर्मा को,*
*स्तुति करने वाले को, सवन करने वाले को, विस्तार प्रदान करता है।। २।।*

सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली दुष्ट आवरक शक्तियों के विनाश के लिये चलने वाले संघर्ष में वह परमेश्वर सहायता के लिये आह्वान के योग्य है। वह पूजा के योग्य है। भली प्रकार स्तुति किये जाने पर वह ऐश्वर्यों से युक्त परमेश्वर सच्चे धनों को देने वाला हो जाता है। पवित्र धनों वाला वह जगदीश्वर स्तुति करने वाले, भक्तिरस को समर्पित करने वाले मनुष्य को सब ओर से सब प्रकार के लौकिक और अलौकिक धनों को प्रदान करता है।

टि. *आवरकों के हनन में* - **वृत्रहत्ये।** शत्रुहनने - वे.। वृत्राणां शत्रूणां हत्ये हनने निमित्तभूते सति - सा.। महासंग्रामे - दया.। for the destruction of Vṛtra - W. in fight with Vṛtra - G.

*आह्वान के योग्य* - **हव्यः।** ह्वातव्यः - वे.। आह्वातव्यः - सा.।

*जीवनमार्ग में* - **यामन्।** आगमने - वे.। युद्धे - सा.। यामनि मार्गे - दया.। in battle - W.

*स्तुति करने वाले को* - **ब्रह्मण्यते।** स्तुतिम् इच्छते - वे.। स्तोत्रम् इच्छते - सा.।

*सवन करने वाले को* - **सुष्वये।** सुन्वते - वे.। सोमं सुन्वते - सा.।

**तम् इन् नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिक्वांसस् तन्वः कृण्वत त्राम्।**
**मिथो यत् त्यागम् उभयासो अग्मन् नरस् तोकस्य तनयस्य सातौ।। ३।।**

तम्। इत्। नरः। वि। ह्वयन्ते। सम्ऽईके। रिरिक्वांसः। तन्वः। कृण्वत। त्राम्।
मिथः। यत्। त्यागम्। उभयासः। अग्मन्। नरः। तोकस्य। तनयस्य। सातौ।। ३।।

*उसको ही मनुष्य, विशेष रूप से बुलाते हैं संग्राम में,*
*रिक्त करते हुए शरीरों को (पापों से), बनाते हैं त्राता।*
*परस्पर जब त्याग को उभयविध प्राप्त होते हैं,*
*मनुष्य पुत्र की (और) पौत्र की प्राप्ति में।। ३।।*

सज्जनों और दुर्जनों, देवों और दानवों, अच्छाई और बुराई, सत्य और असत्य के संघर्ष में सत्य का पक्ष लेने वाले दैवी वृत्ति वाले लोग उस परमेश्वर को ही सहायता के लिये पुकारते हैं। धार्मिक जन सत्कर्मों और तपस्या के द्वारा अपने शरीरों को पापों से रिक्त करते हुए उस प्रभु को ही अपना रक्षक स्वीकार करते हैं। साधारण और विशेष दोनों प्रकार के मनुष्य उत्तम पुत्रों और पौत्रों की प्राप्ति के लिये जब दान, दक्षिणा आदि के द्वारा त्याग का आश्रय लेते हैं तो वह परमेश्वर उनकी कामनाओं को पूर्ण करता है।

टि. *संग्राम में* - **समीके**। युद्धे - वे.। सा.। सम्यक् प्राप्ते संग्रामे - दया.।

*रिक्त करते हुए शरीरों को* - **रिरिक्वांसः तन्वः**। अतिरिक्तबलाः सन्तः शरीरस्य (त्रातारम्) - वे.। स्वकीयानि शरीराणि तपसा रेचयन्तो यजमानाः - सा.। रेचनं कारयन्तः शरीरस्य - दया.। inflicters of austerity upon their persons - W. risking their lives - G.

*त्राता* - **त्राम्**। त्रातारम् - वे.। सा.। preserver - W. protector - G.

*त्याग को* - **त्यागम्**। त्यागकर्तारं दातारम् इन्द्रम् - सा.। the bountiful - W. give up their bodies - G.

*उभयविध* - **उभयासः**। उभये ऽपि - वे.। उभये यजमानाः स्तोतारश् च - सा.। उभयत्र वर्तमानाः - दया.। both (the worshipper and the priest) - W.

**क्रतूयन्ति क्षितयो योग उग्राशुषाणासो मिथो अर्णसातौ।**
**सं यद् विशो ऽववृत्रन्त युध्मा आद् इन् नेम इन्द्रयन्ते अभीके।। ४।।**

क्रतुऽयन्ति। क्षितयः। योगे। उग्र। आशुषाणासः। मिथः। अर्णऽसातौ।
सम्। यत्। विशः। अववृत्रन्त। युध्माः। आत्। इत्। नेमे। इन्द्रयन्ते। अभीके।। ४।।

*कर्मों का अनुष्ठान करते हैं, निवास करने वाले, योग के निमित्त, हे उग्र,*
*सब ओर से सुखाते हुए (शरीरों को तप से), परस्पर शान्ति की प्राप्ति में।*
*सम्यक् जब प्रवेश करने वाले, घिर जाते हैं, संघर्ष करने वाले,*
*तब ही कुछ (साधक), (तुझ) इन्द्र को चाहते हैं निकट में।। ४।।*

हे तेजस्वी परमेश्वर! तुझमें ही निवास करने वाले साधक जन परस्पर परम शान्ति के निमित्त तुझसे संयोग की कामना करते हुए, तपश्चर्या से अपने शरीरों को सुखाते हुए विविध प्रकार की योगक्रियाओं का अनुष्ठान करते हैं। तुझमें प्रवेश करने वाले वे साधक जब काम, क्रोध आदि शत्रुओं से सब ओर से घिर जाते हैं, तो कुछ दूरदर्शी साधक जन अपने को असहाय पाकर उस संघर्ष में तुझ रक्षक को ही अपनी सहायता के लिये निकट में चाहते हैं।

टि. *कर्मों का अनुष्ठान करते हैं* - **क्रतूयन्ति**। क्रतुं कर्म कर्तुम् इच्छन्ति - वे.। क्रतूनि कर्माणीच्छन्ति - सा.। प्रज्ञां कर्माणि चेच्छन्ति - दया.। put forth their vigour - G.

*सब ओर से सुखाते हुए* - **आशुषाणासः**। व्याप्नुवानाः - वे.। सा.। शीघ्रकारिणः - दया.। variously dispersed - W. striving together - G.

*शान्ति की प्राप्ति में* - **अर्णसातौ**। युद्धे - वे.। सस्यादिफलसिद्ध्यर्थम् उदकलाभे निमित्ते सति

- सा.। for the sake of obtaining rain - W. in the whirl of battle - G.

*सम्यक् घिर जाते हैं* - **सम् अववृत्रन्त।** सङ्गच्छन्ते - वे.। संवर्तन्ते परस्परं सङ्गच्छन्ते - सा.। विरोधेन धनं प्राप्नुवन्तु - दया.। assemble - W. encounter one another - G.

*कुछ* - **नेमे।** केचित् - वे.। सा.। नियन्तारः - दया। some of them - W. G.

*इन्द्र को चाहते हैं* - **इन्द्रयन्ते।** इन्द्रम् इच्छन्ति - वे.। सा.। इन्द्रं स्वामिनं कुर्वते - दया.।

**आद् इद् ध नेम इन्द्रियं यजन्त**
**आद् इत् पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात्।**
**आद् इत् सोमो वि पपृच्याद् असुष्वीन्**
**आद् इज् जुजोष वृषभं यजध्यै।। ५।। ११।**

आत्। इत्। ह। नेमे। इन्द्रियम्। यजन्ते। आत्। इत्। पक्तिः। पुरोळाशम्। रिरिच्यात्।
आत्। इत्। सोमः। वि। पपृच्यात्। असुस्वीन्। आत्। इत्। जुजोष। वृषभम्। यजध्यै।। ५।।

*तब ही निश्चय से कुछ, इन्द्र की शक्ति को पूजते हैं,*
*तब ही पकाने वाला, पुरोडाश को समर्पित करता है।*
*तब ही सवनकर्त्ता अलग कर देता है, सवन न करने वालों को,*
*तब ही (पूजक) प्रसन्न होता है, सुखवर्षक को पूजने के लिये।। ५।।*

जब साधक जन काम, क्रोध आदि आसुरी शक्तियों को पराजित करने के लिये जीवन के संघर्ष में सहायता के लिये परमेश्वर को पुकारते हैं, तब ही कुछ साधक उसकी शक्ति की पूजा करते हैं, उसकी शक्ति को अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करते हैं। तब ही नैवेद्य तैयार करने वाला उपासक उसे नैवेद्य समर्पित करता है। तब ही भक्तिरस को समर्पित करने वाला भक्त प्रभु के भक्तिरस का सवन न करने वाले नास्तिक जनों को अपने से परे कर देता है। वह उनका संग नहीं करता। तब ही प्रभु का पूजक कृपाओं की वर्षा करने वाले उस कृपालु की पूजा में प्रसन्नतापूर्वक लीन हो जाता है।

टि. *इन्द्र की शक्ति को पूजते हैं* - **इन्द्रियं यजन्ते।** इन्द्रस्य इन्द्रियं यजन्ते - वे.। बलवन्तम् इन्द्रं पूजयन्ति - सा.। धनं संगच्छन्ते - दया.। worships the might of Indra - G.

*पकाने वाला पुरोडाश को समर्पित करता है* - **पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात्।** पक्तिः पचन् पक्तव्यान् चरुपुरोडाशादीन् इन्द्रियाय प्रयच्छति - वे.। पुरोळाशं पिष्टरूपं हविः पक्तिः पचन् रिरिच्यात् इन्द्राय दद्यात् - सा.। let the brew succeed the meal-oblation - G.

*सवनकर्त्ता* - **सोमः।** सोता यजमानः - वे.। अभिषुतसोमो यजमानः - सा.।

*अलग कर देता है* - **वि पपृच्यात्।** व्यर्धयति - वे.। धनैः पृथक् कुर्यात् - सा.। distinguishes from him - W. let (the Soma) banish - G.

**कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोमम् उशते सुनोति।**
**सध्रीचीनेन मनसाविवेनं तम् इत् सखायं कृणुते समत्सु।। ६।।**

कृणोति। अस्मै। वरिवः। यः। इत्था। इन्द्राय। सोमम्। उशते। सुनोति।

सध्रीचीनेन। मनसा। अविऽवेनम्। तम्। इत्। सखायम्। कृणुते। समत्ऽसु।। ६।।

*(समर्पित) करता है इसके लिये, सर्वस्व को जो सचमुच,*
*इन्द्र के लिये, सोम को, कामना वाले के लिये, सवन करता है।*
*(इन्द्र के) साथ गए मन के साथ, निष्काम को,*
*उसको ही, मित्र बना लेता है (इन्द्र), युद्धों में।। ६।।*

जो उपासक अपने सर्वस्व को सचमुच उस परमेश्वर को समर्पित कर देता है, भक्तिरस के पान की इच्छा वाले उस प्रभु के लिये जो भक्त अपने हृदय में भक्तिरस का सवन करता है, परमात्मा के साथ लीन हुए मन वाले उस निष्काम भावना वाले उपासक को ही वह संघर्षों में अपना सखा बनाता है। लक्ष्य की ओर चलने वाली यात्रा में आने वाली विघ्न-बाधाओं में वह परमेश्वर उस साधक की ही सहायता करता है।

टि. *(समर्पित) करता है* - **कृणोति।** करोति - वें.। सा.। bestows - W. gives - G.

*सर्वस्व को* - **वरिवः।** परिचर्याम् - वे.। धनम् - सा.। wealth - W. comfort - G.

*साथ गए मन के साथ* - **सध्रीचीनेन मनसा।** इन्द्रेण सहाञ्चता मनसा - वे.। संगतेन मनसा प्रवणेन चित्तेन - सा.। with an humble mind - W. with devoted spirit - G.

*निष्काम को* - **अविवेनम्।** वेनतिः कान्तिकर्मा। विवेनो विशेषकामः। अविवेनो निष्कामः तम्।। अविरूपम् सुष्ठु कामयमानम् - वे.। विवेनो विगतेच्छः। तदन्यो ऽविवेनः। सा.। विगतकामः तम् - दया.। who is devoted to him - W. not disaffected - G.

**य इन्द्राय सुनवत् सोमम् अद्य पचात् पक्तीर् उत भृज्जाति धानाः।**
**प्रति मनायोर् उचथानि हर्यन् तस्मिन् दधद् वृषणं शुष्मम् इन्द्रः।। ७।।**

यः। इन्द्राय। सुनवत्। सोमम्। अद्य। पचात्। पक्तीः। उत। भृज्जाति। धानाः।
प्रति। मनायोः। उचथानि। हर्यन्। तस्मिन्। दधत्। वृषणम्। शुष्मम्। इन्द्रः।। ७।।

*जो इन्द्र के लिये सवन करेगा सोम का आज,*
*पकाएगा पकवानों को और भूनेगा धानों को।*
*पूजा की कामना वाले की, स्तुतियों की कामना करता हुआ,*
*उसमें स्थापित करेगा, सुख बरसाने वाले को, बल को इन्द्र।। ७।।*

जो उपासक परमेश्वर के लिये आज और इसी प्रकार आगे भी सदा भक्तिरसरूपी सोम का सवन करता रहेगा, अपनी आहुतियां और अपना सर्वस्व उसे समर्पित करता रहेगा, पूजा की कामना वाले उस उपासक की स्तुतियों को प्रेम से स्वीकार करता हुआ वह परमैश्वर्ययुक्त परमात्मा सुख और समृद्धियों की वर्षा करने वाले बल को सदा उसे प्रदान करता रहेगा।

टि. *आज* - **अद्य।** एकस्मिन्नेव दिवसे - वे.। अस्मिन् दिवसे - सा.।

*पकाएगा पकवानों को* - **पचात् पक्तीः।** पचति पक्तव्यानि पुरोडाशादीनि - वे.। पक्तव्यान् पुरोडाशादीन् पचेत पचनं कुर्यात् - सा.। पचेत् पाकान् - दया.।

*भूनेगा धानों को* - **भृज्जाति धानाः।** धानाः भृज्जति - वे.। भर्जनयोग्यान् यवान् भृज्जेत। अत्र

भृष्टयववाची धानाशब्दस् तद्योग्यं यवमात्रं लक्षयति। सा.।

*पूजा की कामना वाले की* - **मनायोः**। इन्द्रम् एव मनसेच्छतः - वे.। मनायोः स्तुतिम् इच्छतः - सा.। प्रशंसां कामयमानस्य - दया.। of that devoted servant - G.

*स्तुतियों की कामना करता हुआ* - **उचथानि हर्यन्**। स्तोत्राणि प्रेप्सन् - वे.। स्तोत्राणि प्रति-कामयमानः - सा.। रुचिकराणि कामयमानस्य - दया.। loving the hymns - G.

**यदा समर्यं व्यचेद् ऋघावा दीर्घं यद् आजिम् अभ्यख्यद् अर्यः।**
**अचिक्रदद् वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्भिः।। ८।।**

यदा। सऽमर्यम्। वि। अचेत्। ऋघावा। दीर्घम्। यत्। आजिम्। अभि। अख्यत्। अर्यः।
अचिक्रदत्। वृषणम्। पत्नी। अच्छ। दुरोणे। आ। निऽशितम्। सोमसुत्ऽभिः।। ८।।

*जब मरणधर्मा शत्रु को जान लेता है शत्रुहिंसक,*
*लम्बे को जब युद्ध को देख लेता है स्वामी।*
*पुकारती है सुखवर्षक को पत्नी, इस ओर,*
*घर में, सर्वतः तीव्र किये हुए को, सोताओं के द्वारा।। ८।।*

यह मानव शरीर द्रोण अर्थात् एक घर है। इस घर का स्वामी (अर्यः) जीवात्मा है। काम, क्रोध, लोभ आदि वे शत्रु हैं, जिनके साथ जीवात्मा युद्ध करके उनका नाश कर देना चाहता है। बुद्धि जीवात्मा का मार्गदर्शन करके इसकी रक्षा और पालन करने के कारण पत्नी कही गई है। जब शत्रुहिंसक जीवात्मा कामादि हिंसनीय शत्रुओं को भली प्रकार जान लेता है और यह भली प्रकार समझ लेता है, कि यह मानव जीवन एक महान् और विस्तृत युद्धक्षेत्र है, तो उसकी संरक्षिका बुद्धि उपासकों के द्वारा परम्परा से पुकारे जाने वाले और स्तुतियों से प्रोत्साहित किये हुए, शत्रुओं का विनाश करके सज्जनों पर सुखों की वर्षा करने वाले उस परमेश्वर को इस ओर पुकारती है।

टि. *शत्रु को जान लेता है* - **समर्यं व्यचेत्**। संग्रामं वि चिनोति - वे.। सह मर्तव्यं शत्रुम् व्यज्ञासीत् विशेषेण जानीयात् - सा.। संग्रामं वि चेतयति - दया.। distinguishes a mortal foe - W. hath sought the conflict - G.

*शत्रुहिंसक* - **ऋघावा**। हिंसावान् - वे.। शत्रूणां हिंसकः - सा.। दया.। destroyer (of enemies) - W. impetuous (chief) - G.

*पुकारती है* - **अचिक्रदत्**। क्रन्दति - वे.। आक्रन्दति आह्वयते - सा.। भृशम् आक्रन्दति - दया.। summons - W. calls - G.

*पत्नी* - **पत्नी**। सेना - वे.। इन्द्रस्य पत्नी - सा.। bride (of lord) - W. the matron - G.

*तीव्र किये हुए को* - **निशितम्**। तीक्ष्णीकृतम् - वे.। सोमपानेनोत्साहवन्तम् इत्यर्थः - सा.।

**भूयसा वस्नम् अचरत् कनीयो ऽविक्रीतो अकानिषं पुनर् यन्।**
**स भूयसा कनीयो नारिरेचीद् दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम्।। ९।।**

भूयसा। वस्नम्। अचरत्। कनीयः। अविऽक्रीतः। अकानिषम्। पुनः। यन्।
सः। भूयसा। कनीयः। न। अरिरेचीत्। दीनाः। दक्षाः। वि। दुहन्ति। प्र। वाणम्।। ९।।

*अधिक मूल्य से वस्तु को खरीदता है घटिया को,*
*न बिकने पर वह वापस करना चाहता है, पुनः जाकर।*
*वह अधिक मूल्य से खरीदी हुई घटिया को, वापस नहीं लेता है,*
*मन्दबुद्धि (और) चतुर विविध प्रकार से खूब दुहते हैं शरीर को।। ९।।*

कोई मन्दबुद्धि मनुष्य अधिक मूल्य देकर कोई घटिया वस्तु खरीदता है। जब बेचने पर उसके अधिक या पूरे दाम नहीं मिलते तो वह दुकानदार के पास जाकर उसे वापस करना चाहता है। पर वह दुकानदार अधिक मूल्य से खरीदे हुए घटिया माल को वापस नहीं लेता। मन्दबुद्धि और चतुर मनुष्य अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार इस शरीर से लाभ लेते हैं।

इस मन्त्र में दिये गए इस प्रतीकात्मक वर्णन का भाव यह है, कि मन्दबुद्धि मनुष्य आत्मा जैसी बहुमूल्य वस्तु को देकर सांसारिक सुख रूपी घटिया वस्तु को लेना चाहते हैं। परन्तु जब उन्हें वास्तविकता का पता चलता है, तो वे उन सुखों को छोड़कर आत्मधन को प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु समय निकल जाने पर वह आत्मिक धन उन्हें वापस नहीं मिलता। इसलिये यह कथन सच है, कि मूर्ख और चतुर मनुष्य अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार इस बांस जैसे खोखले शरीर अथवा इस निस्सार जीवन से हानि और लाभ उठाते रहते हैं।

टि. *वस्तु को खरीदता है घटिया को* - **वस्नम् अचरत् कनीयः।** न्यूनमूल्यं व्यवहरति - वे.। कनीयो ऽल्पतरं वस्नं वसु मूल्यं धनम् अचरत् प्राप्नोति - सा.। हट्टस्रस्तरम् अचरत् अतिशयेन कनिष्ठम् - दया.।

*वापस करना चाहता है* - **अकानिषम्।** कामये ऽहम् - वे.। मूल्यपूर्तिं कामयते। व्यत्ययेन उत्तमपुरुषः। सा.। प्रदीपयेयम् - दया.। I am content - G.

*वापस नहीं लेता है* - **न अरिरेचीत्।** पुनः न आदत्ते - वे.। क्रेतुः सकाशान् न रिक्तीकरोति। न लभत इत्यर्थः। सा.।

*शरीर को* - **वाणम्।** वचनम् - सा.। वाणीम्। वाण इति वाङ्नाम (निघ. १.११)। दया.। udder - G.

**क इ॒मं द॒शभि॒र् ममेन्द्रं॑ क्रीणाति धे॒नुभिः॑।**
**य॒दा वृ॒त्राणि॒ जङ्घ॑न॒द् अथै॑नं मे॒ पुन॑र् ददत्।। १०।।**

कः। इ॒मम्। द॒शऽभिः॑। मम॑। इन्द्र॑म्। क्री॒णा॒ति॒। धे॒नुऽभिः॑।
य॒दा। वृ॒त्राणि॑। जङ्घ॑नत्। अथ॑। ए॒न॒म्। मे॒। पुन॑ः। द॒द॒त्।। १०।।

*कौन इसको दश से मेरे*
*इन्द्र को खरीदता है, गौओं से।*
*जब वृत्रों को हिंसित कर देवे (यह),*
*तत्पश्चात् इसको मुझे वापस दे देवे।। १०।।*

प्रसन्न करने वाली दस दीर्घ दिशाओं के द्वारा अर्थात् मनमोहक इस जगत् के बदले में, लुभावने सांसारिक सुखों से, इस परमैश्वर्ययुक्त प्रभु को कौन प्राप्त कर सकता है? इसका उत्तर यही है, कि

कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता। वह ब्रह्म तो इस ब्रह्माण्ड से बहुत बड़ा है (ततो ज्यायांश् च पूरुषः - ऋ. १०.९०.३)। वह इस जगत् को उत्पन्न करके प्रजाओं के सुख और समृद्धि के लिये दुष्ट आसुरी शक्तियों का विनाश करता है। तत्पश्चात् ब्रह्मरात्रि आने पर जब यह समस्त ब्रह्माण्ड उसमें लीन हो जाता है, तो वही शेष बच रहता है ।

*अथवा* इन्द्र आत्मा है। दस धेनुएं प्रसन्नता प्रदान करने वाली दस इन्द्रियां हैं। इन इन्द्रियों के द्वारा उस ऐश्वर्यशाली आत्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इन्द्रियां बहिर्मुखी हैं। जब वे अन्तर्मुखी होकर आत्मा का सेवन करती हैं, तभी उसे प्राप्त करती हैं। तब वह आत्मा काम, क्रोध आदि शत्रुओं और सब क्लेशों का नाश कर डालता है। शरीर का विनाश हो जाने पर आत्मा ही शेष बच रहता है।

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**
**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। ११।। १२।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.१६.२१ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त २५

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**को अद्य नर्यो देवकाम उशन्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष।**
**को वा महे ऽवसे पार्याय समिद्धे अग्नौ सुतसोम ईट्टे।। १।।**

कः। अद्य। नर्यः। देवऽकामः। उशन्। इन्द्रस्य। सख्यम्। जुजोष।
कः। वा। महे। अवसे। पार्याय। सम्ऽइद्धे। अग्नौ। सुतऽसोमः। ईट्टे।। १।।

*कौन आज नरहितकारी, देवों को चाहने वाला,*
*कामना करता हुआ, इन्द्र की मित्रता का सेवन करता है।*
*कौन और महान् संरक्षण के लिये, पार करने वाले के लिये,*
*प्रज्वलित अग्नि में, सवन किये सोम वाला, आहुति चढ़ाता है।। १।।*

प्रश्न है, कि परमैश्वर्यवान् प्रभु की मित्रता को कौन प्राप्त कर सकता है? इसका उत्तर है, कि जो मनुष्य मनुष्यों का हित करने वाला, देवों को चाहने वाला और परमेश्वर से प्यार करने वाला है, वही परमेश्वर की मित्रता को प्राप्त कर सकता है। दूसरा प्रश्न है, कि कौन मनुष्य सोम का सवन करके और अग्नि को प्रज्वलित करके उसमें सोम की आहुति डालता है? इसका उत्तर यह है, कि जो मनुष्य दुःखों से पार करने वाले परमेश्वर के महान् संरक्षण को चाहता है, वही अग्नि को प्रज्वलित करके उसमें सोम की आहुति डालता है, अथवा अपने हृदय में अन्तर्यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित करके उसमें भक्तिरस रूपी सोम की आहुति देता है।

टि. *नरहितकारी* - **नर्यः**। नरहितः - वे.। सा.। नृषु साधुः - दया.।

*महान् संरक्षण के लिये, पार करने वाले के लिये* - **महे अवसे पार्याय**। महते रक्षणाय पारयितुं समर्थाय - वे.। महते प्रवृद्धाय पार्याय पारम् अर्हते ऽवसे तर्पणाय - सा.। महते रक्षणद्याय दुःखपारं गमयते - दया.। for his great and unbounded protection - W.

*आहुति चढ़ाता है* - ईट्टे। स्तौति - वे.। सा.। ऐश्वर्यं लभते - दया.। praises - W. G.

**को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर् वा भवति वस्त उस्राः।**
**क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती।। २।।**

कः। ननाम। वचसा। सोम्याय। मनायुः। वा। भवति। वस्ते। उस्राः।
कः। इन्द्रस्य। युज्यम्। कः। सखिऽत्वम्। कः। भ्रात्रम्। वष्टि। कवये। कः। ऊती।। २।।

*कौन नमस्कार करता है स्तुति के साथ, सोम के अधिकारी को,*
*ज्ञान चाहने वाला (कौन) अथवा होता है, धारण करता है ज्ञानरश्मियों को।*
*कौन इन्द्र की सहायता को (चाहता है), (चाहता है) कौन मित्रता को,*
*कौन भ्रातृत्व को चाहता है क्रान्तदर्शी के, कौन (चाहता है) प्रीति को।। २।।*

भक्तिरसरूपी सोमपान के अधिकारी उस परम ऐश्वर्यशाली जगदीश्वर को स्तुतियों के साथ कौन नमस्कार करता है? अथवा ज्ञान की प्राप्ति चाहने वाला कौन उपासक उसकी ज्ञानरश्मियों को धारण करता है? उस क्रान्तदर्शी परमेश्वर की सहायता को, उसकी मित्रता को, उसके बन्धुत्व को और उसकी प्रीति को कौन चाहता है? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है, कि उस प्रभु को प्राप्त करने की इच्छा वाला साधक ही इन सब क्रियाओं को करता है।

टि. *नमस्कार करता है* - नानाम। नमनं करोति - वे.। नमति प्रह्वीभवति - सा.। नम्रो भवति। अत्र तुजादीनां दीर्घो ऽभ्यासस्येति दीर्घः। दया.।

*ज्ञान चाहने वाला* - मनायुः। स्तुतिकामः - सा.। मनो विज्ञानं कामयमानः - दया.। devoted - W. pious man - G.

*धारण करता है ज्ञानरश्मियों को* - वस्ते उस्राः। स पशून् अपि वस्ते दीप्तीर् वा आच्छादयति - वे.। उस्रा इन्द्रेण दत्ता गा वस्ते आच्छादयति। धारयतीत्यर्थः। सा.। वस्ते कामयते उस्राः रश्मय इव। उस्रा इति रश्मिनाम (निघ. १.५)। दया.। supports the cattle - W. endues the beams of morning - G.

*सहायता को* - युज्यम्। साहाय्यम् - सा.। bond - G.

*क्रान्तदर्शी के* - कवये। कवेर् इन्द्रस्य - वे.। क्रान्तदर्शिने - सा.। प्राज्ञाय - दया.।

*प्रीति को* - ऊती। अवनम् - वे.। ऊतये तर्पणाय। को भवतीति शेषः। सा.। ऊत्या रक्षणादि-क्रियया। दया.। for protection - W. for succour - G.

**को देवानाम् अवो अद्या वृणीते क आदित्याँ अदितिं ज्योतिर् ईट्टे।**
**कस्याश्विनाव् इन्द्रो अग्निः सुतस्यांशोः पिबन्ति मनसाविवेनम्।। ३।।**

कः। देवानाम्। अवः। अद्य। वृणीते। कः। आदित्यान्। अदितिम्। ज्योतिः। ईट्टे।
कस्य। अश्विनौ। इन्द्रः। अग्निः। सुतस्य। अंशोः। पिबन्ति। मनसा। अविऽवेनम्।। ३।।

*कौन देवों की प्रीति का आज वरण करता है,*
*कौन आदित्यों से, अदिति से, ज्योति की याचना करता है।*
*किसके अश्वी, इन्द्र (और) अग्नि, सवन किये हुए का,*
*अंशु का पान करते हैं, मन से, निष्काम भाव से।। ३।।*

आज दान दिव्यता आदि गुणों से युक्त सज्जनों और विद्वज्जनों की प्रीति का पात्र कौन बनना चाहता है? इसका उत्तर है – सन्मार्ग को जानने का इच्छुक साधक। अदीना अखण्डनीया देवमाता अदिति और उससे उत्पन्न होने वाली दिव्य शक्तियों से ज्योति की याचना कौन करता है? इसका उत्तर है – प्रभुदर्शन का इच्छुक उपासक। पृथिवी और आकाश, सूर्य और अग्नि आदि महान् शक्तियां किस महान् सत्ता के द्वारा सवन किये हुए आनन्दरस का पान मनोयोग से निष्काम भाव के साथ कर रही हैं? इसका उत्तर है – परमपिता परमात्मा के द्वारा सवन किये हुए आनन्दरस का।

टि. *प्रीति का* – **अवः**। रक्षणम् – वे.। सा.। रक्षणादि – दया.।

*वरण करता है* – **वृणीते**। प्रार्थयते – वे.। सा.। स्वीकुरुते – दया.। claims - G.

*ज्योति की* – **ज्योतिः**। परम् ज्योतिः – वे.। उदकम् – सा.। प्रकाशम् – दया.।

*याचना करता है* – **ईट्टे**। स्तौति – वे.। याचते – सा.। अधीच्छति – दया.। glorifies - W. asks for (light) - G.

*सवन किये हुए का अंशु से* – **सुतस्य अंशोः**। सुतस्य अभिषुतस्य अंशोः सोमस्य। सोमम् इत्यर्थः। सा.। of pressed stalk of Soma - G.

*निष्काम भाव से* – **अविवेनम्**। अविगतकामं यथा तथा – वे.। अविगतकामं यथाकामम् इत्यर्थः – सा.। दुष्टकामनारहितम् – दया.। at will - W. well inclined - G.

**तस्मा॑ अ॒ग्निर् भार॑त॒ः शर्म॑ यंस॒ज् ज्योक् प॑श्या॒त् सूर्य॑म् उ॒च्चर॑न्तम्।**
**य इन्द्रा॑य सु॒नवा॒मेत्याह॒ नरे॒ नर्या॑य॒ नृत॑माय नृ॒णाम्।। ४।।**

तस्मै॑। अ॒ग्निः। भार॑तः। शर्म॑। य॒ंस॒त्। ज्योक्। प॒श्या॒त्। सूर्य॑म्। उ॒त्ऽचर॑न्तम्।
यः। इन्द्रा॑य। सु॒नवा॑म। इति॑। आह॑। नरे॑। नर्या॑य। नृऽत॑माय। नृ॒णाम्।। ४।।

*उसे अग्नि, आहुति लाने वालों का, सुख प्रदान करे,*
*चिरकाल तक देखे वह सूर्य को, उदित होते हुए को।*
*जो 'इन्द्र के लिये सोम का सवन करें हम' यह कहता है,*
*'नेता के लिये, नरहितकारी के लिये, उत्तम नेता के लिये नेताओं में'।। ४।।*

जो मनुष्य यह कहता है, 'आओ हम उस परमैश्वर्यवान् परमात्मा को अपने भक्तिरस के आनन्द से आनन्दित करें, जो सबका मार्गदर्शक है, नरहितकारी है और नेताओं में श्रेष्ठ नेता है', उस ऐसे मनुष्य को आहुतियां समर्पित करने वाले याजकों का यजनीय सन्मार्गदर्शक परमेश्वर सुख प्रदान करे और वह चिर काल तक उदित होते हुए सूर्य को देखता रहे। अर्थात् स्वस्थ सुखी दीर्घ जीवन को प्राप्त करे।

टि. *अग्नि, आहुति लाने वालों का* – **अग्निः भारतः**। आहुतिं भरन्त्यग्निं प्रतीति भरतास् तेषाम् अयं भारतो ऽग्निः।। अग्निः हविषो वोढा – वे.। हविषो भर्ताग्निः। प्राणो भूत्वा प्रजा धारयन् भारत इति वाजसनेयकम्। सा.। Agni, the bearer of oblations - W. Agni Bhārata - G.

*सुख प्रदान करे* – **शर्म यंसत्**। सुखं प्रयच्छति – वे.। सा.। shall give shelter - G.

*चिर काल तक* – **ज्योक्**। दीर्घम् – वे.। चिरकालम् – सा.। निरन्तरम् – दया.। long - W.

*नेता के लिये* - **नरे**। नेत्रे - वे.। सा.। नायकाय - दया.।

*उत्तम नेता के लिये नेताओं में* - **नृतमाय नृणाम्**। नृणाम् अतिशयेन नेत्रे - वे.। सा.।

**न तं जिनन्ति बहवो न दभ्रा**
**उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत्।**
**प्रियः सुकृत् प्रिय इन्द्रे मनायुः**
**प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी॥ ५॥ १३॥**

न। तम्। जिनन्ति। बहवः। न। दभ्राः। उरु। अस्मै। अदितिः। शर्म। यंसत्।
प्रियः। सुऽकृत्। प्रियः। इन्द्रे। मनायुः। प्रियः। सुप्रऽअवीः। प्रियः। अस्य। सोमी॥ ५॥

*न उसको हिंसित कर सकते हैं (मिलकर) बहुत, न थोड़े,*
*विस्तृत इसके लिये, अदिति सुख प्रदान करती है।*
*प्रिय (है इसे) पुण्य कर्मों वाला, प्रिय इन्द्र से ज्ञान का इच्छुक,*
*प्रिय है सुष्ठु शरण में आने वाला, प्रिय है इसे सोम का स्वामी॥ ५॥*

न तो बहुत लोग मिलकर इस ऐश्वर्यशाली परमेश्वर को हिंसित कर सकते हैं, और न अकेले दुकेले। अदीना अखण्डनीया प्रकृति सब प्रकार की सहायता प्रदान करके इस परमात्मा को प्रसन्न करती है। इस प्रभु को वह मनुष्य प्रिय होता है जो निष्काम भाव से यज्ञ और परोपकार के अन्य पुण्य कर्मों को करता है। इसे वह मनुष्य प्रिय होता है जो इससे उत्तम ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है। इसे वह मनुष्य प्रिय होता है जो सुखपूर्वक इसकी शरण में आ जाता है, और इसे वह मनुष्य प्रिय होता है जो इसे अपने भक्तिरस से तृप्त करता है।

टि. *हिंसित कर सकते हैं* - **जिनन्ति**। हिंसन्ति - वे.। हिंसन्तु - सा.। जयन्ति - दया.। can molest - W. overcome - G.

*न थोड़े* - **न दभ्राः**। अल्पाः - वे.। सा.। हिंसकाः - दया.। nor few - W. G.

*पुण्य कर्मों वाला* - **सुकृत्**। सुष्ठु कर्मणां कर्ता - वे.। सुकृत् शोभनयागादीनां कर्ता यजमानः - सा.। सुष्ठु सत्यं कर्म करोति सः - दया.। the performer of pious acts - W. pious - G.

*ज्ञान का इच्छुक* - **मनायुः**। इन्द्रविषयस्तुतिकामः - सा.। मन इवाचरति - दया.। whose mind is intent upon him - W. devout - G.

*सुष्ठु शरण में आने वाला* - **सुप्रावीः**। सुष्ठु प्रकर्षेण रक्ष्यमाणः - वे.। सुष्ठु प्रयच्छन् उपगच्छन् वा यजमानः - सा.। सुष्ठु शुभगुणप्राप्तः - दया.। who approaches him with homage - W. zealous - G.

**सुप्राव्यः प्राशुषाळ् एष वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः।**
**नासुष्वेर् आपिर् न सखा न जामिर् दुष्प्राव्यो ऽवहन्तेद् अवाचः॥ ६॥**

सुप्रऽअव्यः। प्राशुषाट्। एषः। वीरः। सुस्वेः। पक्तिम्। कृणुते। केवला। इन्द्रः।
न। असुस्वेः। आपिः। न। सखा। न। जामिः। दुःप्रऽअव्यः। अवऽहन्ता। इत्। अवाचः॥ ६॥

*भली प्रकार शरण में आने वाले के, प्रकर्ष से शीघ्र विजेता यह वीर,*

*सवन करने वाले के अन्न को स्वीकार करता है, केवल को, इन्द्र।*
*नहीं सवन न करने वाले का आप्तव्य (है वह), न सखा (है), न बन्धु (है),*
*शरण में न जाने वाले को मार गिराने वाला है (वह), स्तुति न करने वाले को।। ६।।*

हिंसकों की हिंसा करने वाला और अति शीघ्र शत्रुओं को पूर्ण रूप से अभिभूत करने वाला यह परमेश्वर भली प्रकार शरण में आने वाले और केवल समर्पण की भावना से नैवेद्य चढ़ाने वाले उपासक के नैवेद्य को ही स्वीकार करता है। जो इसे अपना सर्वस्व समर्पित नहीं करता यह उसे नहीं अपनाता। न यह उसका मित्र होता है और न बन्धु। जो इसकी शरण में नहीं आता और इसकी स्तुति नहीं करता, उस गूँगे को यह मार ही गिराता है।

टि. *प्रकर्ष से शीघ्र विजेता* - **प्राशुषाट्**। प्राशूनां योद्धृणाम् अभिभविता - वे.। शत्रूणां प्रकर्षेण शीघ्रम् अभिभविता - सा.। यः प्राशून् वेगवतः शत्रून् सहते - दया.। prompt discomfiter - W.

*सवन करने वाले के* - **सुष्वेः**। सोमं सुतवतः - वे.। सुन्वतो यजमानस्य - सा.।

*स्वीकार करता है* - **कृणुते**। स्वीकुरुते - वे.। आत्मनः कुरुते - सा.।

*केवल को* - **केवला**। केवलम् - वे.। केवलाम् असाधारणाम् - सा.। केवलाम् - दया.।

*आप्तव्य* - **आपिः**। व्याप्तः - सा.। यः सर्वान् आप्नोति - दया.।

*शरण में न जाने वाले को* - **दुष्प्राव्यः**। दुःखेन प्रतर्पणीयः - वे.। दुरुपगमनस्य - सा.। दुःखेन प्रावितुं योग्यः - दया.। he is difficult of access - W.

*स्तुति न करने वाले को* - **अवाचः**। अवाचीनस्य पराङ्मुखस्य - वे.। स्तुतिरहितस्य - सा.। दुष्टवचनस्य - दया.। who repeats not (his) praise - W. of the dumb : who has no voice to praise him - G.

**न रे॒वता॑ प॒णिना॑ स॒ख्यम् इन्द्रो ऽसु॑न्वता सुत॒पाः सं गृ॑णीते।**
**आस्य॒ वेदः॑ खि॒दति॒ हन्ति॑ न॒ग्नं वि सुष्व॑ये प॒क्तये॒ केव॑लो भूत्।। ७।।**

न। रे॒वता॑। प॒णिना॑। स॒ख्यम्। इन्द्रः॑। असु॑न्वता। सु॒त॒ऽपाः। सम्। गृ॒णी॒ते॒।
आ। अ॒स्य॒। वेदः॑। खि॒दति॑। हन्ति॑। न॒ग्नम्। वि। सुस्व॑ये। प॒क्तयै॑। केव॑लः। भूत्।। ७।।

*नहीं धनवान् से (भी) वणिक् से, मित्रता को इन्द्र,*
*सवन न करने वाले से, सोम को पीने वाला जोड़ता है।*
*सर्वतः इसके धन को खदेड़ देता है, नष्ट कर देता है, नग्न (करके),*
*विशेषतया सवनकर्ता के लिये, पकाने वाले के लिये, केवल हो जाता है।। ७।।*

वह कृपण व्यापारी जिसके पास बहुत धन है, पर वह सोम का सवन नहीं करता, परमेश्वर को अपनी भक्ति का रस समर्पित नहीं करता, भक्तिरस का पान करने वाला परमेश्वर उसके साथ मित्रता का सम्बन्ध नहीं जोड़ता। उसका मित्र नहीं बनता। वह इस कंजूस के धन को सबके देखते हुए ही भगा देता है, नष्ट कर डालता है। वह तो केवल भक्तिरस को समर्पित करने वाले और अन्न की आहुति चढ़ाने वाले उपासक का ही बनकर रहता है।

टि. *धनवान् वणिक् से* - **रेवता पणिना**। धनवतापि पणिना - वे.। धनवता वणिजा लुब्धेन -

सा.। प्रशस्तधनवता व्यवहर्त्रा वणिग्जनादिना - दया.। with the wealthy trader - W. with the wealthy churl - G.

*सोम को पीने वाला* - **सुतपाः**। अभिषुतं सोमं पिबन् - सा.।

*नहीं जोड़ता है* - **न सम् गृणीते**। न सम्यक् संगच्छते - वे.। न संस्तौति। नानुमन्यते। सा.। न उपदिशति - दया.। contracts no (friendship) - W. not doth Indra bind alliance - G.

*खदेड़ देता है* - **खिदति**। अखिदत् - वे.। उद्धरति - सा.। दैन्यं प्राप्नोति - दया.। takes away - W. draws away - G.

*नंगा (करके)* - **नग्नम्**। अधनम् - वे.। निरर्थकम् - सा.। निर्लज्जम् - दया.। destitute - W.

**इन्द्रं परे ऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तो ऽवसितास इन्द्रम्।**
**इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते।। ८।। १४।।**

इन्द्रम्। परे। अवरे। मध्यमासः। इन्द्रम्। यान्तः। अवऽसितासः। इन्द्रम्।
इन्द्रम्। क्षियन्तः। उत। युध्यमानाः। इन्द्रम्। नरः। वाजऽयन्तः। हवन्ते।। ८।।

*इन्द्र को (बुलाते हैं) उत्तम, अधम (और) मध्यम,*
*इन्द्र को जाते हुए (बुलाते हैं), ठहरे हुए (बुलाते हैं) इन्द्र को।*
*इन्द्र को घरों में रहते हुए (बुलाते हैं), युद्ध करते हुए (बुलाते हैं) इन्द्र को,*
*इन्द्र को नेतागण, ऐश्वर्य को चाहते हुए बुलाते हैं (प्रतिदिन)।। ८।।*

उस ऐश्वर्यशाली परमेश्वर को उत्तम, मध्यम और अधम सभी कोटियों के मनुष्य अपनी रक्षा और सहायता के लिये बुलाते हैं। गमन करते हुए और ठहरे हुऐ मनुष्य भी परमेश्वर को ही सहायता के लिये बुलाते हैं। घरों में निवास करते हुए और युद्धभूमि में लड़ते हुए योद्धा भी उस प्रभु को ही सहायता के लिये पुकारते हैं। अन्न, बल और ऐश्वर्य को चाहने वाले मनुष्य भी उस परम पिता परमात्मा को ही पुकारते हैं। वही सबका रक्षक और सहायक है।

टि. *उत्तम, अधम और मध्यम* - **परे अवरे मध्यमासः**। उत्कृष्टा निकृष्टा मध्यमाः - सा.। प्रकृष्टाः निकृष्टाः पक्षपातरहिताः - दया.। the most exalted, the most humble, the middle (classes) - W. highest and lowest, men who stand between them - G.

*ठहरे हुए* - **अवसितासः**। युद्धभूमौ अवसिताः - वे.। निविष्टाः - सा.। अवसिताः कृतनिश्चयाः - दया.। stopping - W.

*घरों में रहते हुए* - **क्षियन्तः**। तत्र निवसन्तः - वे.। गृहे निवसन्तः - सा.। दया.।

*ऐश्वर्य को चाहते हुए* - **वाजयन्तः**। वाजं कुर्वाणाः - वे.। वाजम् अन्नम् इच्छन्तः - सा.। needing food - W.

## सूक्त २६

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-३ इन्द्र आत्मा वा, ४-७ श्येनः। छन्दः - त्रिष्टुप्। सप्तर्चं सूक्तम्।

**अहं मनुर् अभवं सूर्यश् चाहं कक्षीवाँ ऋषिर् अस्मि विप्रः।**
**अहं कुत्सम् आर्जुनेयं न्यृञ्जे ऽहं कविर् उशना पश्यता मा।। १।।**

अहम्। मनुः। अभवम्। सूर्यः। च। अहम्। कक्षीवान्। ऋषिः। अस्मि। विप्रः।
अहम्। कुत्सम्। आर्जुनेयम्। नि। ऋञ्जे। अहम्। कविः। उशना। पश्यत। मा।। १।।

*मैं सर्वज्ञ हूँ, सर्वप्रेरक भी हूँ,*
*मैं कक्षों का स्वामी मन्त्रद्रष्टा हूँ, मेधावी।*
*मैं स्तोत्रकर्ता को, दीप्तिपुत्र को समर्थ करता हूँ,*
*मैं क्रान्तदर्शी हूँ सबको चाहने वाला, प्रत्यक्ष करो तुम मुझको।। १।।*

मैं सर्वज्ञ परमेश्वर हूँ। सब को स्व-स्व कर्मों में प्रेरित करने वाला मैं ही हूँ। मेधाओं से युक्त, सब लोक-लोकान्तरों का स्वामी, मन्त्रद्रष्टा जगदीश्वर मैं ही हूँ। प्रकाश से उत्पन्न होने वाले स्तोत्रकर्ता ऋषियों को मैं ही उनके कार्य में समर्थ करता हूँ। तीनो लोकों और तीनों कालों के आर-पार देखने वाला, सबसे प्यार करने वाला मैं ही हूँ। हे मनुष्यो! तुम मेरा साक्षात्कार करो।

टि. *सर्वज्ञ* - **मनुः**। सर्वस्य मन्ता प्रजापतिः - सा.। मननशीलो विद्वान् इव सर्वविद्याविज्ञापकः - दया.। Prime source of contemplation - Satya.

*सर्वप्रेरक* - **सूर्यः**। सर्वस्य प्रेरकः सविता - सा.। सूर्य इव सर्वप्रकाशकः - दया.।

*कक्षों का स्वामी मन्त्रद्रष्टा* - **कक्षीवान् ऋषिः**। कक्षीवान् दीर्घतमसः पुत्र एतत्संज्ञक ऋषिः - सा.। सर्वसृष्टिकक्षा विद्यन्ते यस्मिन् त्सः मन्त्रार्थवेत्तेव - दया.।

*स्तोत्रकर्ता को दीप्तिपुत्र को* - **कुत्सम् आर्जुनेयम्**। अर्जुन्याः पुत्रं कुत्सम् एतन्नामकम् ऋषिम् - सा.। कुत्सम् वज्रम् आर्जुनेयम् अर्जुनेनर्जुना विदुषा निष्पादितम् इव - दया.।

*समर्थ करता हूँ* - **नि ऋञ्जे**। स्वकार्यसमर्थं करोमि - वे.। नितरां प्रसाधयामि - सा.। नितरां साध्नोमि - दया.। I have befriended - W. I master - G.

*क्रान्तदर्शी सब को चाहने वाला* - **कविः उशना**। कविः क्रान्तदर्श्युशनैतदाख्य ऋषिः - सा.। कविः सर्वशास्त्रविद् विद्वान् उशना सर्वहितं कामयमानः - दया.।

**अहं भूमिम् अददाम् आर्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय।**
**अहम् अपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतम् आयन्।। २।।**

अहम्। भूमिम्। अददाम्। आर्याय। अहम्। वृष्टिम्। दाशुषे। मर्त्याय।
अहम्। अपः। अनयम्। वावशानाः। मम। देवासः। अनु। केतम्। आयन्।। २।।

*मैं भूमि को प्रदान करता हूँ श्रेष्ठों को,*
*मैं वृष्टि को (प्रदान करता हूँ), हविदाता मनुष्यों को।*
*मैं जलों को प्रवाहित करता हूँ, शब्द करने वालों को,*
*मेरे, देव, अनुसार संकल्प के, गमन करते हैं।। २।।*

जगत् में जो श्रेष्ठ, गुणवान्, धर्मपरायण, न्यायप्रिय मनुष्य हैं, मैं उन्हीं को भूमि प्रदान करता हूँ। वे ही पृथ्वी पर शासन करने के अधिकारी हैं। जो मनुष्य देवों को हवि प्रदान करते हैं, मैं उन्हें

पवित्र वृष्टिजल प्रदान करता हूँ। उनसे पवित्र अन्न और ओषधियां उत्पन्न होकर पुनः देवताओं को हवि पहुँचती है। मैं ही कल-कल ध्वनि करते जलों को नदियों, नदों और समुद्रों में प्रवाहित करता हूँ। दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त सज्जन और विद्वान् मेरे संकल्प के अनुसार बरतते हैं।

टि. *भूमि को* - **भूमिम्**। पृथ्वीम् - सा.। पृथिवीराज्यम् - दया.।

*श्रेष्ठों को* - **आर्याय**। पण्डिताय - वे.। मनवे - सा.। धर्म्यगुणकर्मस्वभावाय - दया.। to the venerable (Manu) - W. upon the Arya - G. for noble people - Fr.

*शब्द करने वालों को* - **वावशानाः**। कामयमानाः - वे.। दया.। शब्दायमानाः - सा.।

*अनुसार संकल्प के गमन करते हैं* - **अनु केतम् आयन्**। आज्ञाम् अनु गच्छन्ति - वे.। सङ्कल्पम् अनुयन्ति - सा.। प्रज्ञां प्रज्ञापनं वा प्राप्नुवन्ति - दया.। obey my will - W. moved according to my pleasure - G.

**अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नव साकं नवतीः शम्बरस्य।**
**शततमं वेश्यं सर्वताता दिवोदासम् अतिथिग्वं यद् आवम्।। ३।।**

अहम्। पुरः। मन्दसानः। वि। ऐरम्। नव। साकम्। नवतीः। शम्बरस्य।
शतऽतमम्। वेश्यम्। सर्वऽताता। दिवःऽदासम्। अतिथिऽग्वम्। यत्। आवम्।। ३।।

*मैं गढ़ों को, आनन्दविभोर होकर, ध्वस्त कर डालता हूँ,*
*नौ को, एक साथ, नव्वे को, सुखों के आवरक के।*
*सौवें को प्रवेश के योग्य को (बना देता हूँ), सर्वत्र व्याप्त यज्ञ में,*
*दिव्यज्ञानदाता की, अतिथिसत्कारकर्त्ता की, जब रक्षा करता हूँ मैं।। ३।।*

अपने उपासकों के भक्तिभाव के रस से आनन्दविभोर होकर मैं परमेश्वर सुखों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली दुष्ट आसुरी शक्ति के निन्यानवे अर्थात् बहुसंख्य गढ़ों को ध्वस्त कर डालता हूँ। मैं इस जगत् में सर्वत्र प्रवर्तमान इस यज्ञ में दिव्य ज्ञान का उपदेश, प्रचार और प्रसार करने वाले तथा अतिथियों और विद्वज्जनों का आदर सत्कार करने वाले जन की रक्षा करता हूँ और उसे ध्वस्त किये हुए पुरों के अतिरिक्त एक और सुन्दर निवास के योग्य घर प्रदान करता हूँ।

टि. *आनन्दविभोर होकर* - **मन्दसानः**। मोदमानः - वे.। सोमेन माद्यन् - सा.।

*ध्वस्त कर डालता हूँ* - **वि ऐरम्**। विविधम् इतस्ततः प्रेरितवान् - वे.। अध्वंसयम् - सा.।

*सुखों के आवरक के* - **शम्बरस्य**। शं सुखं तद् आवृणोतीति शंवरः। शंवर एव शम्बरः।। एतन्नामकस्यासुरस्य - सा.। मेघस्य - दया.।

*प्रवेश के योग्य को* - **वेश्यम्**। प्रवेश्यम् - वे.। प्रवेशार्हम् - सा.। to be occupied - W.

*सर्वत्र व्याप्त यज्ञ में* - **सर्वताता**। सर्वैर् आश्चर्यैस् ततम् - वे.। सर्वतातौ यज्ञे - सा.। सर्वस्मिन् एव संगन्तव्ये जगति - दया.। utterly - G.

*दिव्यज्ञानदाता की* - **दिवोदासम्**। दिवोदासनामानम् ऋषिम् - वे.। विज्ञानमयस्य प्रकाशस्य दातारम् - दया.। the servant of Heaven - Fr.

*अतिथिसत्कारकर्ता की* - **अतिथिग्वम्**। अतिथीन् प्रति गन्तारम् - वे.। अतिथीनाम् अभिगन्तारम्

– सा.। यो ऽतिथीन् गच्छति गमयति वा तम् – दया.। of the timeless ray - Fr.

**प्र सु ष विभ्यो॑ मरुतो॒ विर् अ॑स्तु प्र श्ये॒नः श्ये॒नेभ्य॑ आ॒शुप॑त्वा।**
**अ॒च॒क्रया॒ यत् स्व॒धया॑ सु॒प॒र्णो ह॒व्यं भर॑न् मन॑वे दे॒वजु॑ष्टम्।। ४।।**

प्र। सु। सः। विऽभ्यः॑। म॒रु॒तः॒। विः। अ॒स्तु। प्र। श्ये॒नः। श्ये॒नेभ्यः॑। आ॒शु॒ऽप॑त्वा।
अ॒च॒क्रया॑। यत्। स्व॒धया॑। सु॒ऽप॒र्णः। ह॒व्यम्। भर॑त्। मन॑वे। दे॒वऽजु॑ष्टम्।। ४।।

*प्रकृष्ट सुष्ठु वह पक्षियों से, हे मनुष्यो!, पक्षी होवे,*
*प्रकृष्ट श्येन, श्येनों से अधिक तीव्र गति वाला।*
*बिना चक्र वाली से, चूँकि, अपनी स्वधारक शक्ति से, शोभन पर्णों वाला,*
*हव्य को, लाता है मनुष्य के लिये, देवों से सेवित को।। ४।।*

हे परमेश्वर के पक्ष को पुष्ट करने वाले प्राणियो! यह परब्रह्म परमेश्वर उड़ान भरने वाले सभी पक्षियों में सबसे अधिक तेज उड़ान भरने वाला है। यह पक्षियों में श्येन पक्षी के समान सभी प्राणियों में सबसे अधिक बलशाली और तीव्रतम गति वाला है। रथ में पहिये लगे होते हैं, परन्तु इस परमेश्वर की वह स्वधारक शक्ति जिससे यह सर्वत्र गति करता है, बिना पहियों वाली है। यह सुन्दर शक्तियों वाला जगदीश इसी अपनी शक्ति से मनुष्यों को भी वह परमानन्द प्राप्त करा देता है, जिसका सेवन केवल देव ही कर सकते हैं।

टि. *हे मनुष्यो* – **मरुतः**। मनुष्याः – दया.।

*श्येनों से* – **श्येनेभ्यः**। शंसनीयगमनेभ्यः स्वसमानजातिभ्यः पक्षिभ्यः – सा.।

*अधिक तीव्र गति वाला* – **आशुपत्वा**। आशुपतनः – वे.। शीघ्रगामी – सा.।

*बिना चक्र वाली से अपनी स्वधारक शक्ति से* – **अचक्रया स्वधया** । चक्ररहितेन अन्नप्रभवेन बलेन – वे.। अचक्रया चक्रवर्जितया स्वधया रथेन – सा.। अविद्यमानचक्राकारया स्वधया अन्नादिना – दया.। with a wheelless car - W. with no car to bear him - G. by his unmoving Self-nature - Fr.

*शोभन पर्णों वाला* – **सुपर्णः**। शोभनपतनः – सा.। दया.। swift-winged - W.

**भर॒द् यदि॒ विरतो॒ वेवि॑जानः प॒थोरुणा॒ मनो॑जवा असर्जि।**
**तूर्यं॑ ययौ॒ मधु॑ना सो॒म्येनो॒त श्रवो॑ विविदे श्ये॒नो अत्र॑।। ५।।**

भर॑त्। यदि॑। विः। अतः॑। वेवि॑जानः। प॒था। उ॒रुणा॑। मनः॑ऽजवाः। अ॒सु॒र्जि।
तूर्य॑म्। य॒यौ॒। मधु॑ना। सो॒म्येन॑। उ॒त। श्रवः॑। वि॒वि॒दे॒। श्ये॒नः। अत्र॑।। ५।।

*लाया जब पक्षी उस लोक से, उद्विग्न करता हुआ,*
*मार्ग से विस्तृत से, मन के समान वेग वाला, चलाया गया।*
*शीघ्र पहुँच गया मधु के साथ (यहाँ), सोम वाले के,*
*(और) यश को प्राप्त किया (उस) श्येन ने यहाँ।। ५।।*

जब यह मन के समान तीव्र गति वाला परम हंस परमेश्वर देवलोक से आनन्द को लेकर विस्तीर्ण मार्ग से पृथिवी की ओर गति करता है, अर्थात् दूरवर्ती स्वर्गलोक से पृथिवी पर मनुष्यों के

लिये आनन्द की वर्षा करता है, तो इसकी महिमा को देखकर सभी लोक काँपने लगते हैं। यह इस आनन्द की प्राप्ति इस भूलोक पर अति शीघ्र करा देता है। इस आनन्द को प्राप्त करके मर्त्यलोक के वासी मनुष्य प्रसन्न हो जाते हैं और इस परमेश्वर का यश सब ओर फैल जाता है। भाव यह है, कि जो आनन्द परमेश्वर ने देवताओं को दिया है, उसने मनुष्यों को भी उसका अधिकारी बनाया है। परन्तु उसे वही मनुष्य प्राप्त कर सकेगा, जो स्वयं को उसका पात्र बनाएगा।

टि. *उस लोक से उद्विग्न करता हुआ* - **अतः वेविजानः**। स्वर्गात् चलन् - वे.। अमुष्माद् द्युलोकात् सोमपालकान् भीषयन् - सा.। अस्मात् स्थानात् कम्पमानः - दया.।

*मन के समान वेग वाला* - **मनोजवाः**। मनोवेगः - वे.। मनोवद् वेगयुक्तः सन् - सा.।

*चलाया गया* - **असर्जि**। सृष्टो ऽभवत् - वे.। सा.। सृजति - दया.। sent - G. he was released - Fr.

*यश को प्राप्त किया* - **श्रवः विविदे**। अन्नं लेभे - वे.। सोमाहरणनिमित्तं यशो लेभे - सा.। अन्नादिकं विन्दति - दया.। acquired celebrity - W. hath acquired his glory - G.

**ऋजीपी श्येनो ददमानो अंशुं परावतः शकुनो मन्द्रं मदम्।**
**सोमं भरद् दादृहाणो देवावान् दिवो अमुष्माद् उत्तराद् आदाय।। ६।।**

ऋजीपी। श्येनः। ददमानः। अंशुम्। पराऽवतः। शकुनः। मन्द्रम्। मदम्।
सोमम्। भरत्। दादृहाणः। देवऽवान्। दिवः। अमुष्मात्। उत्ऽतरात्। आऽदाय।। ६।।

*ऋजु गति वाला श्येन, धारण करता हुआ सोमलता को,*
*दूर देश से शक्तिशाली, प्रशंसनीय को, हर्षप्रद को।*
*सोम को लाता है दृढ़ संकल्प वाला, देवों का स्वामी,*
*द्युलोक से, उससे, ऊँचे से, ग्रहण करके।। ६।।*

जिस प्रकार पक्षियों में श्येन पक्षी सबसे अधिक तीव्र गति वाला होता है, उसी प्रकार संसार में सबसे अधिक तीव्र गति वाला यह परमेश्वर ऋजुगामी है, सीधे मार्ग से चलने वाला है, नियमों का पालन करने वाला है। यह शक्तिशाली है। यह दृढ़ निश्चय वाला है और देवों का स्वामी है। यह आनन्द के स्रोत दूरवर्ती उस उच्च द्युलोक से आनन्द को प्राप्त करके प्रशंसनीय, सुख प्रदान करने वाले आनन्द को ग्रहण करके उसे मनुष्यों के लिये धरती पर लाता है।

टि. *ऋजु गति वाला* - **ऋजीपी**। ऋजुगामी - वे.। सा.। सरलगामी - दया.। the straight-flying - W. speeding onward - G. the imperious - Fr.

*श्येन* - **श्येनः**। शंसनीयगमनः - सा.। प्रवृद्धवेगः - दया.। hawk - W.

*धारण करता हुआ* - **ददमानः**। धारयन् - वे.। सा.। conveying - W. bearing - G.

*शक्तिशाली* - **शकुनः**। शकुनशीलः - वे.। पक्षी - सा.। दया.।

*प्रशंसनीय को* - **मन्द्रम्**। मदकरम् - वे.। मदनीयं स्तुत्यम् - सा.। प्रशंसनीयम् - दया.।

*दृढ़ संकल्प वाला* - **दादृहाणः**। सोमपालान् पीडयन् - वे.। दृढीभवन् - सा.। दादृहाणः वर्धमानः - दया.। resolute of purpose - W. grasping fast - G.

**आदाय श्येनो अभरत् सोमं सहस्रं सवाँ अयुतं च साकम्।**
**अत्रा पुरन्धिर् अजहाद् अरातीर् मदे सोमस्य मूरा अमूरः।। ७।। १५।**

आऽदाय। श्येनः। अभरत्।। सोमम्। सहस्रम्। सवान्। अयुतम्। च। साकम्।
अत्र। पुरम्ऽधिः। अजहात्। अरातीः। मदे। सोमस्य। मूराः। अमूरः।। ७।।

*ग्रहण करके श्येन ले आता है सोम को,*
*हजार यज्ञों में, दस हजार में, साथ (अपने)।*
*यहाँ अतिप्रज्ञावान्, छोड़ देता है (पीछे) अदाताओं को,*
*हर्ष में सोम के, अज्ञानियों को, अज्ञान से रहित।। ७।।*

श्येन पक्षी के समान तीव्र गति से सभी स्थानों पर पहुँचने वाला वह सर्वव्यापक परमेश्वर स्वर्गलोक से आनन्दरूपी सोम को ग्रहण करके अपने साथ पृथिवी पर लाता है और हजारों, लाखों यज्ञों में उसकी स्थापना कर देता है। अर्थात् यज्ञों को उसकी प्राप्ति का माध्यम बना देता है। इस प्रकार यज्ञों के माध्यम से दूसरों को देने का और निष्काम भाव से कर्म करने का क्रम आरम्भ होता है। जो दूसरों को नहीं देते, सब-कुछ अपने पास ही रख लेते हैं, जो केवल अपने लिये ही जीते हैं, ऐसे अज्ञानी जनों को वह अज्ञान से रहित सर्वज्ञ परमेश्वर पीछे छोड़ देता है। उन्हें उस आनन्द का भागीदार नहीं बनाता। जो देगा सो लेगा।

टि. *यज्ञों में* - **सवान्**। सोमयागान् - वे.। सवानां यज्ञानाम् - सा.। सवान् निष्पन्नान् पदार्थान् - दया.। sacrifices - W. libations - G.

*दस हजार में* - **अयुतम्**। अयुतसंख्याकम्। अपरिमितसंख्याकम् इत्यर्थः। सा.। दया.। ten thousand - W. G.

*छोड़ देता है* - **अजहात्**। अत्यजत् - वे.। जघानेत्यर्थः - सा.। जहाति त्यजति - दया.। destroyed - W. left behind - G.

*अदाताओं को* - **अरातीः**। अदातॄन्।। शत्रून् - वे.। अत्रारातिशब्दः स्त्रीलिङ्गः - सा.।

*अति प्रज्ञावान्* - **पुरन्धिः**। बहुप्रज्ञः - वे.। पुरन्धीर् बहुकर्मा - सा.। यः पुरं दधाति - दया.। the performer of many (great) deeds - W. the Bold One - G. the Goddess of bountiful intelligence - Fr.

*अज्ञानियों को* - **मूराः**। अत्र विभक्तिव्यत्ययो वा स्त्रीलिङ्गे प्रयोगो वा।। मूढान् - वे.। bewildered - W. malignitics - G.

## सूक्त २७

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - १-४ त्रिष्टुप्, ५ शक्वरी षट्पञ्चाशदक्षरा। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**गर्भे नु सन्नन्वेषाम् अवेदम् अहं देवानां जनिमानि विश्वा।**
**शतं मा पुर आयसीर् अरक्षन्नध श्येनो जवसा निर् अदीयम्।। १।।**

गर्भे। नु। सन्। अनु। एषाम्। अवेदम्। अहम्। देवानाम्। जनिमानि। विश्वा।

शतम्। मा। पुरः। आयसीः। अरक्षन्। अध। श्येनः। जवसा। निः। अदीयम्।। १।।

*गर्भ में ही होते हुए, अनुक्रम से इनके जान लिया,*
*मैंने देवों के जन्मों को सबको।*
*सैंकड़ों ने मुझको पुरों ने, लोहनिर्मितों ने घेरा,*
*तत्पश्चात् श्येन (बनकर), वेग से निकल उड़ गया मैं।। १।।*

यह जीवात्मा का कथन है। वह कहता है, कि मैंने असंख्य बार गर्भ में आकर शरीर धारण किये और इन सैंकड़ों दृढ़ शरीरों ने मुझे बन्दी बनाकर रखा। मैंने अनुक्रम से ज्ञान का प्रकाश देने वाली आँख, नाक, कान, वाग् आदि इन सब इन्द्रियों के प्रादुर्भाव और व्यापार को समझा। इनसे ही मैंने सांसारिक और आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त किया। आत्मज्ञान हो जाने पर अब मैं श्येन पक्षी की तरह इन शरीरों में से निकलकर तीव्र गति से भाग खड़ा हुआ हूँ।

टि. *अनुक्रम से जान लिया* – अनु अवेदम्। अनुक्रमेण ज्ञातवान् अस्मि – वे.। आनुपूर्व्येण अज्ञासिषम् – सा.। considered in order - G.

*पुरों ने लोहनिर्मितों ने घेरा* – पुरः आयसीः अरक्षन्। पुरः अयसा निर्मिताः अरक्षन् – वे.। आयसीर् अयोमयान्यभेद्यानि पुरः शरीराणि माम् अपालयन् – सा.। नगर्यः सुवर्णमयीर् लोहमयीर् वा रक्षन्ति – दया.। bodies of iron confined me - W. iron fortresses confined me - G.

*निकल उड़ गया मैं* – निः अदीयम्। निर्गतो ऽस्मि – वे.। शरीरान् निरगमम्। अनावरणम् आत्मानं जानन् निर्गतो ऽस्मीत्यर्थः। सा.। निःसरेयम् – दया.। forth I flew - G.

**न घा स माम् अप जोषं जभाराभीम् आस त्वक्षसा वीर्येण।**
**ईर्मा पुरंन्धिर् अजहाद् अरातीर् उत वाताँ अतरच् छूशुवानः।। २।।**

न। घ। सः। माम्। अप। जोषम्। जभार। अभि। ईम्। आस। त्वक्षसा। वीर्येण।
ईर्मा। पुरम्ऽधिः। अजहात्। अरातीः। उत। वातान्। अतरत्। शूशुवानः।। २।।

*नहीं निश्चय से वह मुझको, इच्छानुसार अपहृत कर सका,*
*अभिभूत उसको कर लिया मैंने, तीक्ष्ण बल से।*
*प्रेरणायुक्त ने, पुरों के धारक ने, छोड़ दिया न देने वालों को,*
*और झंझावातों को पार कर गया, वृद्धि को प्राप्त होकर।। २।।*

वह गर्भ अर्थात् गर्भ से मिलने वाले शरीर इच्छानुसार मेरा अपहरण न कर सके, मुझे बहुत काल तक घेर न सके। मैंने उस गर्भ को अर्थात् गर्भ से प्राप्त होने वाले शरीरों को आत्मज्ञान से प्राप्त होने वाले तीक्ष्ण बल के द्वारा अभिभूत कर लिया। अनेक शरीरों को धारण करने वाले मैंने आत्मज्ञान से प्रेरित होकर सुख न देने वाले काम, क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं का परित्याग कर दिया, संग छोड़ दिया और अपने मार्ग पर आगे बढ़ते हुए सभी विघ्नबाधाओं को पार करके, अर्थात् बार-बार शरीरों के धारण करने के बन्धन से मुक्त होकर, परमानन्द को प्राप्त कर लिया।

टि. *इच्छानुसार* – जोषम्। सेवमानम् – वे.। पर्याप्तम् – सा.। विपरीतसेवनम् – दया.। into satisfaction - W. at his own free pleasure - G.

*नहीं अपहत कर सका* - **न अप जभार।** न अपहृतवान् - वे.। न अपजहार। गर्भे ऽपि वसतो मे मोहो नाभूद् इत्यर्थः। सा.। did not beguile me - W. not did he bear me - G.

*अभिभूत कर लिया* - **अभि आस।** अभ्यभवम् - वे.। सा.।

*प्रेरणायुक्त ने* - **ईर्मा।** ईरणकुशलः - वे.। सर्वस्य प्रेरकः - सा.। दया.। straightway - G.

*पुरों के धारक ने* - **पुरन्धिः।** बहुप्रज्ञः - वे.। पुरां धारकः परमात्मा - सा.। पुरन्धिः बहुधरः - दया.। the sustainer of many - W. the Bold One - G.

*झंझावातों को पार कर गया* - **वातान् अतरत्।** पुरुषव्यत्ययः।। आगतान् सोमपालान् अतरत् - वे.। गर्भक्लेशकरान् वायून् अतारीत् - सा.। वायुवद् वेगयुक्तान् तरेत् - दया.। passed beyond the winds (of worldly troubles) - W.

*वृद्धि को प्राप्त होकर* - **शूशुवानः।** दीप्यमानः - वे.। वर्धमानः परिपूर्णः - सा.। वर्धमानः - दया.। expanding - W. as he grew more mighty - G.

**अव यच् छ्येनो अस्वनीद् अध द्योर् वि यद् यदि वात ऊहुः पुरन्धिम्।**
**सृजद् यद् अस्मा अव ह क्षिपज् ज्यां कृशानुर् अस्ता मनसा भुरण्यन्।। ३।।**

अव। यत्। श्येनः। अस्वनीत्। अध। द्योः। वि। यत्। यदि। वा। अतः। ऊहुः। पुरम्ऽधिम्।
सृजत्। यत्। अस्मै। अव। ह। क्षिपत्। ज्याम्। कृशानुः। अस्ता। मनसा। भुरण्यन्।। ३।।

*नीचे की ओर जब श्येन ने ध्वनि की, तत्पश्चात् द्युलोक से,*
*विशेषेण जिसको, और जब इससे वहन करना चाहा पुरधारक को।*
*छोड़ दिया (बाण) जब, इसके लिये नीचे को, खींचते हुए डोरी को,*
*धनुर्धर बाणवर्षक ने, मन के वेग से गति करते हुए।। ३।।*

इस दिव्य आनन्द को प्राप्त करने के लिये साधक को महान् संघर्ष करना पड़ता है। उसी संघर्ष का आलङ्कारिक वर्णन इस मन्त्र में किया गया है। अनेक शरीरों को धारण करने वाला यह जीवात्मा रूपी श्येन जब इस दिव्य आनन्द की प्राप्ति में सफलता के निकट होता है, तो वह हर्षध्वनि करता है, जिससे उस आनन्द की रखवाली करने वाली दिव्य शक्तियां सावधान हो जाती हैं और उसके उत्साह और संकल्प की परीक्षा के लिये उसपर अनेक विपत्तियों और विघ्नबाधाओं रूपी वाणों की वर्षा की जाती है। वह इन सब विपत्तियों और विघ्नबाधाओं को सहन करता हुआ परीक्षाओं में से निकलकर आनन्दप्राप्ति के अपने लक्ष्य में सफल हो जाता है।

ऐतरेयब्राह्मण (३.२६) में सोमप्राप्ति की इस क्रिया को और अधिक आलङ्कारिक बनाकर इसे एक उपाख्यान का रूप दे दिया गया है, जो इस प्रकार है - देवों ने गायत्री से द्युलोक से सोम लाने के लिये प्रार्थना की। वह श्येन का रूप धारण करके स्वर्ग में गई। वह जब सोमपालों को डराकर और अपने मुँह और पंजों से सोम को और अन्य दो छन्दों के गिरे हुए अक्षरों को पकड़कर नीचे की ओर मुड़ी तो कृशानु नामक सोमपाल ने उसके बाएं पंजे के नाखून और अन्य अंगों को बाण से काट डाला जिनसे अनेक प्रकार के जीव-जन्तुओं का जन्म हो गया।

टि. *नीचे की ओर ध्वनि की* - **अव अस्वनीत्।** अवाङ्मुखं शब्दम् अकरोत् - सा.। शब्दयेद्

उपदिशेत् – दया.। screamed - W.

*छोड़ दिया नीचे को* – **सृजत् अव।** इषुम् अव असृजत् – वे.। अवासृजत् त्यक्तवान् – सा.।

*खींचते हुए डोरी को* – **क्षिपत् ज्याम्।** ज्यां विक्षिपन्। नुमभावश् छान्दसः। वे.। ज्यां धनुषः कोटौ मौर्वीं क्षिपत् चिक्षेप – सा.। stringing his bow - W. loosed the string - G.

*धनुर्धर बाणवर्षक ने* – **कृशानुः अस्ता।** कृशानुः वेद्धा – वे.। अस्ता शराणां क्षेप्ता कृशानुर् एतन्नामकः सोमपालः – सा.। शत्रूणां कर्षकः प्रक्षेप्ता – दया.। archer Krśānu - W. G.

*गति करते हुए* – **भुरण्यन्।** तुल्यवेगं गच्छन् भरमाणो वेषुम् – वे.। गन्तुम् इच्छन् – सा.। धरन् पुष्यन् वा – दया.। pursuing with the speed (of thought) - W. wildly raging - G.

**ऋजिप्य ईम् इन्द्रावतो न भुज्युं श्येनो जभार बृहतो अधि ष्णोः।**
**अन्तः पतत् पतत्र्यस्य पर्णम् अध यामनि प्रसितस्य तद् वेः।। ४।।**

ऋजिप्यः। ईम्। इन्द्रऽवतः। न। भुज्युम्। श्येनः। जभार। बृहतः। अधि। स्नोः।
अन्तर् इति। पतत्। पतत्रि। अस्य। पर्णम्। अध। यामनि। प्रऽसितस्य। तत्। वेर् इति वेः।। ४।।

*ऋजुगामी इसको, इन्द्रपूजक के मानो पालक को,*
*श्येन ले आया, महान् के ऊपर से शिखर के।*
*अन्दर गिर पड़ा, गमनशील इसका पंख,*
*तब गमन में संलग्न का, वह पक्षी का।। ४।।*

सरल मार्ग का अनुसरण करने वाला यह जीवात्मा परमेश्वर के उपासकों की रक्षा और पालन करने वाले इस दिव्य आनन्द को दुर्गम स्थान से प्राप्त होने वाली किसी वस्तु के समान बड़े परिश्रम से प्राप्त कर लेता है। पर इसके लिये उसे परिश्रम करना पड़ता है और मूल्य भी चुकाना पड़ता है। यहाँ पक्षी का गमन में संलग्न होना घोर परिश्रम का और पंख का गिरना मूल्य चुकाने का द्योतक है। इनके बिना आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती।

टि. *ऋजुगामी* – **ऋजिप्यः।** ऋजुगामी – वे.। सा.। य ऋजुगामिषु साधुः – दया.। straight-flying - W. swift car - G.

*इन्द्रपूजक के* – **इन्द्रवतः।** यजमानस्य – वे.। इन्द्रः समर्थः तद्वतो देशात् – सा.। ऐश्वर्ययुक्तान् – दया.। from the region of Indra - W. of Indra's friend - G.

*मानो पालक को* – **न भुज्युम्।** भोजनम् – वे.। भुज्युनामकं राजानं यथाश्विनौ – सा.। भोक्तारम् इव – दया.। Bhujyu - W. G.

*ऊपर से शिखर के* – **अधि स्नोः।** सानोः अधि – वे.। अधि उपरि स्नोः स्थिताद् द्युलोकात् – सा.। from above the vast heaven - W. from heaven's lofty summit - G.

*गमनशील* – **पतत्रि।** पतनशीलम् – वे.। सा.। दया.। falling - W. flying - G.

*गमन में संलग्न का* – **यामनि प्रसितस्य।** गमने प्रसक्तस्य – वे.। यामनि युद्धे प्रसितस्य कृशानोर् अस्त्रैर् बद्धस्य – सा.। मार्गे बद्धस्य – दया.। wounded in the conflict - W. hasting forward in his journey - G.

**अध॑ श्वे॒तं क॒लशं॒ गोभि॑र् अ॒क्तम् आ॑पिप्या॒नं म॒घवा॑ शु॒क्रम् अन्ध॑ः।**
**अ॒ध्व॒र्युभि॒ः प्रय॑तं॒ मध्वो॒ अग्र॒म् इन्द्रो॒ मदा॑य॒ प्रति॑ ध॒त् पिब॑ध्यै**
**शूरो॒ मदा॑य॒ प्रति॑ ध॒त् पिब॑ध्यै॥ ५॥ १६॥**

अध॑। श्वे॒तम्। क॒लश॑म्। गोभि॑ः। अ॒क्तम्। आ॒ऽपि॒प्या॒नम्। म॒घऽवा॑। शु॒क्रम्। अन्ध॑ः।
अ॒ध्व॒र्युऽभि॑ः। प्रऽय॑तम्। मध्व॑ः। अग्र॑म्। इन्द्र॑ः। मदा॑य। प्रति॑। ध॒त्। पिब॑ध्यै।
शूर॑ः। मदा॑य। प्रति॑। ध॒त्। पिब॑ध्यै॥ ५॥

*अब शुभ को, कलश में स्थित को, दूधों से मिश्रित को,*
*तृप्ति करने वाले को, धनों का दाता, पवित्र को भोजन को।*
*याजकों के द्वारा प्रदान किये हुए को, मधुरों में उत्तम को,*
*इन्द्र हर्ष के लिये स्वीकार करे, पान के लिये,*
*शूर हर्ष के लिये स्वीकार करे, पान के लिये॥ ५॥*

आत्मा के द्वारा आनन्दरस की प्राप्ति कर लिये जाने पर अब ऐश्वर्यों का दाता, दुष्टों का विनाशक वह परमेश्वर हृदयरूपी कलश में स्थित, उदात्त भावनाओं से मिश्रित, सब प्रकार से तृप्ति प्रदान करने वाले, माधुर्य से युक्त पदार्थों में श्रेष्ठ, भक्तिरस रूपी इस पवित्र सोम को हम उपासकों के द्वारा समर्पित किये जाने पर अपने हर्ष के निमित्त पान के लिये स्वीकार करे।

टि. *शुभ को* - **श्वेतम्।** श्वेताक्तम् - वे.। शुभम् - सा.। white - G.

*कलश में स्थित को* - **कलशम्।** कलशे पात्रे स्थितम् - सा.। कुम्भम् - दया.। in the (white) pitcher - W. beaker - G.

*तृप्ति करने वाले को* - **आपिप्यानम्।** उपर्युपरि वर्धमानम् - वे.। आप्याययन्तम् - सा.। सर्वतो वर्धमानम् - दया.। filled with - G.

*पवित्र को* - **शुक्रम्।** निर्मलम् - वे.। सारोपेतम् - सा.। उदकम् - दया.।

*प्रदान किये हुए को* - **प्रयतम्।** दत्तम् - सा.। प्रयत्नसाध्यम् - दया.। offered - W.

*मधुरों में उत्तम को* - **मध्वः अग्रम्।** मधुरस्य अग्रभूतम् - वे.। मध्वः मधुरस्य सोमरसस्य अग्रे - सा.। the upper part of the sweet (beverage) - W. the best of sweet - G.

*स्वीकार करे* - **प्रति धत्।** प्रति अदधात् - वे.। प्रतिदधातु - सा.। प्रतिदधाति - दया.। may accept - W. G.

## सूक्त २८

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**त्वा यु॒जा तव॒ तत् सो॑म स॒ख्य इन्द्रो॑ अ॒पो मन॑वे स॒स्रुत॑स् कः।**
**अह॒न्नहि॒म् अरि॑णात् स॒प्त सिन्धू॑न् अपा॑वृणो॒द् अपि॑हितेव॒ खानि॑॥ १॥**

त्वा। यु॒जा। तव॑। तत्। सो॒म॒। स॒ख्ये। इन्द्र॑ः। अ॒पः। मन॑वे। स॒ऽस्रुत॑ः। क॒र् इति॑ कः।
अह॑न्। अहि॑म्। अरि॑णात्। स॒प्त। सिन्धू॑न्। अप॑। अ॒वृ॒णो॒त्। अपि॑हिताऽइव। खानि॑॥ १॥

*तुझ सहायक के साथ, तेरी उसमें, हे सोम!, मित्रता में,*
*इन्द्र जलों को, मनुष्य के लिये बहने वाले बनाता है।*
*मार गिराता है आहन्ता को, बहा देता है सात सिन्धुओं को,*
*उद्घाटित कर देता है, बन्द किये हुओं को मानो द्वारों को।। १।।*

हे परमेश्वर को समर्पित किये जाने वाले भक्तिरस रूपी सोम! तेरी मित्रता में तेरी सहायता से शक्तिसम्पन्न होकर ही वह जगद्रक्षक पिता मनुष्यों के लिये जलों को और जलों की तरह शीतल शान्ति और सुखों को इस धरा पर प्रवाहित करता है। वह सुखसाधनों पर एकाधिकार करके साँप की तरह कुण्डली मारकर बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति का हनन करता है और गतिशील जलप्रवाहों की तरह सुखसाधनों को सब तक पहुँचा देता है। वह ज्ञान, प्रकाश, सुख आदि के बन्द पड़े स्रोतों को बहने के लिये मुक्त कर देता है।

टि. *तुझ सहायक के साथ* - **त्वा युजा**। त्वया सहायेन - वे.। सा.।

*उसमें* - **तत्**। तदानीम् - वे.। तस्मिन् - सा.। in this - G.

*बहने वाले बनाता है* - **ससृतः कः**। (अपः) स्यन्दमानाः अकरोत् - वे.। सप्त सरणशीलाः कः अकरोत् - सा.। made (waters) flow - G.

*मनुष्य के लिये* - **मनवे**। मनुष्याय - वे.। दया.। मनुष्येभ्यः - सा.। for man - W. G.

*सात सिन्धुओं को* - **सप्त सिन्धून्**। सप्त नदीः - वे.। सर्पणशीला अपः - सा.। the seven rivers - W. G.

*बन्द किये हुओं को मानो द्वारों को* - **अपिहिताऽइव खानि**। अपिहितानीव द्वाराणि नदीनां निस्सरणमार्गान् - वे.। अपिहिता अपिहितानि वृत्रेण तिरोहितानि च। अत्रेवशब्दश् चार्थे। खानि स्रोतसां द्वाराणि। सा.। आच्छादितानीव इन्द्रियाणि - दया.। (has opened) the shut-up sources (of the streams) - W. as it were obstructed fountains - G.

**त्वा युजा नि खिदत् सूर्यस्येन्द्रश् चक्रं सहसा सद्य इन्दो।**
**अधि ष्णुना बृहता वर्तमानं महो द्रुहो अप विश्वायु धायि।। २।।**

त्वा। युजा। नि। खिदत्। सूर्यस्य। इन्द्रः। चक्रम्। सहसा। सद्यः। इन्दो इति।
अधि। स्नुना। बृहता। वर्तमानम्। महः। द्रुहः। अप। विश्वऽआयु। धायि।। २।।

*तुझ सहायक के साथ, नितरां खिन्न करता है सूर्य के,*
*इन्द्र चक्र को बल के द्वारा (अपने), अविलम्ब, हे इन्दु।*
*ऊपर अन्तरिक्ष में महान् में, चक्कर लगाते हुए को,*
*महान् शत्रु से, परे सबके जीवनदाता को, ले जाता है।। २।।*

इस जगत् में सब-कुछ उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के द्वारा अपनी शक्ति से प्रवर्तमान व्यवस्था के अधीन ही घटित हो रहा है। और यह शक्ति उस सर्वशक्तिमान् को अपने उपासकों के द्वारा समर्पित भक्तिरस रूपी सोम के पान से ही प्राप्त होती है। उस बल से युक्त होकर ही वह ऐश्वर्यवान् परमात्मा सूर्य के चक्रसदृश बिम्ब को अपनी माया से अविलम्ब ग्रस्त करके खिन्न करता है। वह

परमात्मा ही अपने तेज से सबको जीवन प्रदान करने वाले, ऊपर महान् अन्तरिक्ष में चक्र की तरह घूमते हुए को उस सूर्य के बिम्ब को महान् शत्रु से परे ले जाता है, उसे ग्रहण से मुक्त करता है।

टि. *नितरां खिन्न करता है* - **नि खिदत्।** प्रावृहत् - वे.। आच्छिनत् - सा.। दैन्यं प्राप्नोति - दया.। taken off - W. pressed down (the wheel of Sūrya) : probably an eclipse of the sun is intended - G.

हे इन्दु - **इन्दो।** हे सोम - वे.। सा.। ऐश्वर्यवन् - दया.।

*ऊपर अन्तरिक्ष में महान् में* - **अधि स्नुना बृहता।** महता समुच्छ्रितेन पर्वतेन - वे.। उपरि स्थितेन महतान्तरिक्षेण - सा.। with the vast and stationary (firmament) - W. on heaven's high summit - G.

*चक्कर लगाते हुए को* - **वर्तमानम्।** गच्छत् - वे.। abiding - W. what rolled - G.

*महान् शत्रु के* - **महः द्रुहः।** महतः द्रोग्धुः - वे.। प्रभूतस्य द्रोग्धुः - सा.। of the great oppressor - W. from the great oppressor - G.

*सब के जीवनदाता को* - **विश्वायु।** सर्वगम् - वे.। सर्वतो गन्तृ - सा.। विश्वायुः सर्वम् आयुः - दया.। everywhere-going - W. all life's support - G.

*परे ले जा रहा है* - **अप धायि।** अप अधायि - वे.। इन्द्रेणापाहारि - सा.। has been taken away - W. was separated - G.

**अहन्निन्द्रो अदहद् अग्निर् इन्दो पुरा दस्यून् मध्यन्दिनाद् अभीके।**
**दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न यातां पुरू सहस्रा शर्वा नि बर्हीत्।। ३।।**

अहन्। इन्द्रः। अदहत्। अग्निः। इन्दो इति। पुरा। दस्यून्। मध्यन्दिनात्। अभीके।
दुःऽगे। दुरोणे। क्रत्वा। न। याताम्। पुरु। सहस्रा। शर्वा। नि। बर्हीत्।। ३।।

*मार डालता है इन्द्र, जला डालता है अग्नि, हे इन्दु!,*
*पूर्व ही हिंसकों को मध्याह्न से, संघर्ष में।*
*दुर्गम स्थान में कर्म के लिये मानो, आक्रमणकारियों के,*
*कई हजार को बाण से, तहस-नहस कर डालता है।। ३।।*

हे उपासकों के द्वारा हृदयों में सवन किये जाने वाले भक्तिरसरूपी सोम! तेरे पान से बल को प्राप्त करके ही वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर दुष्ट हिंसक जनों को देवों और असुरों के संघर्ष में यौवनप्राप्ति से पूर्व ही मार डालता है और अग्नि बनकर उनको भस्म कर डालता है। वह उन्हें उनके दुष्ट कर्मों का फल देने के लिये उन आक्रमणकारियों में से हजारों-हजारों को दुर्गम स्थानों में छुपने का प्रयास करने पर भी अपने न्यायव्यवस्थारूपी बाण से नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है।

टि. *पूर्व ही मध्याह्न से* - **पुरा मध्यन्दिनात्।** मध्यन्दिनात् प्राग् एव - वे.। सा.।

*संघर्ष में* - **अभीके।** संग्रामे - वे.। सा.। समीपे - दया.। in the conflict - G.

*दुर्गम स्थान में* - **दुर्गे दुरोणे।** दुर्गे देशे पर्वतादौ - वे.। दुरोणे दुरवने रक्षितुम् अशक्ये दुर्गे दुरवगाहे देशे - सा.। in a difficult and dangerous (place) - W.

*कर्म के लिये मानो* - **क्रत्वा न।** कार्यार्थम् इव - वे.। क्रत्वा न कर्मणा स्वकीयं कार्यम् उद्दिश्य - सा.। प्रज्ञया कर्मणा वा इव - दया.।

*आक्रमणकारियों के* - **याताम्।** गच्छतां पथिकानाम् - वे.। गच्छताम् असुराणाम् - सा.।

*बाण से* - **शर्वा।** सार्थवत् सङ्गतानि - वे.। शर्वा सर्वाणि निरवशेषाणि - सा.। सर्वाणि हिंसनानि - दया.। the whole of - W. with his arrow - G.

*तहस-नहस कर डालता है* - **नि बर्हीत्।** न्यबर्हीद् इन्द्रो ऽवधीत् - सा.।

**विश्वस्मात् सीम् अधमाँ इन्द्र दस्यून् विशो दासीर् अकृणोर् अप्रशस्ताः।**
**अबाधेथाम् अमृणतं नि शत्रून् अविन्देथाम् अपचितिं वधत्रैः।। ४।।**

विश्वस्मात्। सीम्। अधमान्। इन्द्र। दस्यून्। विशः। दासीः। अकृणोः। अप्रऽशस्ताः।
अबाधेथाम्। अमृणतम्। नि। शत्रून्। अविन्देथाम्। अपऽचितिम्। वधत्रैः।। ४।।

*प्रत्येक (गुण) से इनको हीन (बनाता है तू), हे इन्द्र!, हिंसकों को,*
*प्रजाओं को, कर्मविनाशकों को, बना देता है तू निन्दित।*
*बाधित करते हो तुम दोनों, मार डालते हो पूर्णतया शत्रुओं को,*
*प्राप्त करते हो सत्कार को, वध करने वाले शस्त्रों से (अपने)।। ४।।*

हे ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर! जो दूसरों का क्षय करने वाले हिंसक जन हैं, उन्हें तू सब गुणों से हीन करके निकृष्ट बना देता है। जो लोग स्वयं काम नहीं करते और दूसरों के कार्यों को बिगाड़ते हैं, उन्हें तू निन्दनीय बना देता है। हे परमेश्वर! भक्तिरस रूपी सोम का आनन्द और तू, तुम दोनों मिलकर दूसरों की हिंसा करने वाले दुष्टों को बाधित करके मार डालते हो। इस प्रकार तुम अपने साधन रूपी अस्त्र-शस्त्रों से दुष्टों का धरा से विनाश करके सज्जनों से सत्कार प्राप्त करते हो।

टि. *प्रत्येक (गुण) से* - **विश्वस्मात्।** सर्वस्मात् लोकात् - वे.। सर्वस्माद् गुणात् - सा.। (devoid) of all (good qualities) - W. (lower) than all besides - G.

*कर्मविनाशकों को* - **दासीः।** उपक्षयित्रीः - वे.। कर्महीनाः - सा.। दानशीलाः - दया.।

*निन्दित* - **अप्रशस्ताः।** अधनाः - वे.। गर्हिताः - सा.। प्रशस्तसुखरहिताः - दया.। abject - W.

*मार डालते हो* - **अमृणतम्।** मारितवन्तौ - वे.। हिंसितवन्तौ - सा.। सुखयतम् - दया.।

*सत्कार को* - **अपचितिम्।** पूजाम् - वे.। सा.। सत्कारम् - दया.। homage - W. took great vengeance - G.

*शस्त्रों से* - **वधत्रैः।** शत्रूणां वधैः - वे.। तेषां शत्रूणां प्रहारैः - सा.। वधैः - दया.। for their destruction - W. with your murdering weapons - G.

**एवा सत्यं मघवाना युवं तद् इन्द्रश् च सोमोर्वम् अश्व्यं गोः।**
**आदर्दृतम् अपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश् चित् ततृदाना।। ५।। १७।।**

एव। सत्यम्। मघऽवाना। युवम्। तत्। इन्द्रः। च। सोम। ऊर्वम्। अश्व्यम्। गोः।
आ। अदर्दृतम्। अपिऽहितानि। अश्ना। रिरिचथुः। क्षाः। चित्। ततृदाना।। ५।।

*इस प्रकार सचमुच, हे ऐश्वर्यशालियो!, तुम दोनों उसको,*

*(तू) और इन्द्र, हे सोम!, विस्तृत स्थान को अश्वों के, गौओं के।*
*खोल देते हो तुम दोनों, ढके हुओं को पर्वत से,*
*खाली करा देते हो निवासों को भी, उखाड़ते हुए (उस पर्वत को)।। ५।।*

इस प्रकार हे आनन्दरूपी सोम! और हे उत्तम धनों के स्वामी परमेश्वर!, हे ऐश्वर्यशालियो! यह नितान्त सत्य है, कि तुम दोनों विशाल अश्वसमूह अर्थात् निर्बलों की रक्षा करने वाले शारीरिक बलों और गोसमूह अर्थात् सन्मार्गदर्शक ज्ञानरश्मियों को आसुरी शक्तियों के चंगुल से मुक्त करा देते हो। तुम दोनों दुष्ट हिंसक आसुरी शक्तियों का विनाश करके मेघों के द्वारा रोके हुए जलों, अन्धकार के द्वारा रोकी हुई सूर्यरश्मियों और अज्ञान के द्वारा अभिभूत की हुई ज्ञानरश्मियों को उनसे मुक्त करा देते हो। और इसी प्रकार तुम अपने उपासकों के हृदयमन्दिरों को काम क्रोध आदि शत्रुओं से रिक्त करा देते हो और उनमें उदात्त भावनाओं और सुख-शान्ति का वास करा देते हो।

टि. *विस्तृत स्थान को अश्वों के* - **ऊर्वम् अश्व्यम्।** अश्वसङ्घम् गन्तारम् - वे.। महान्तम् अश्वसमूहम् - सा.। great number of horses - W. the stable of horses - G.

*खोल देते हो तुम दोनों* - **आ अदर्दृतम्।** आदरयतम् - सा.। अदर्दृतम् भृशं विदारयतम् - दया.। you have distributed - W. ye burst - G.

*पर्वत से* - **अश्ना।** मेघान् - वे.। अशनपरेण बलेन - सा.। भोक्तव्यानि - दया.। by your strength - W. the bar of stone - G

*उखाड़ते हुए* - **ततृदाना।** विध्यन्तौ - वे.। शत्रूणां हिंसकौ - सा.। ततृदाना दुःखस्य हिंसकौ - दया.। destroyers of foes - W. piercing through - G.

## सूक्त २९

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**आ नः स्तुत उप वाजेभिर् ऊती इन्द्र याहि हरिभिर् मन्दसानः।**
**तिरश् चिद् अर्यः सवना पुरूण्याङ्गूषेभिर् गृणानः सत्यराधाः।। १।।**

आ। नः। स्तुतः। उप। वाजेभिः। ऊती। इन्द्र। याहि। हरिऽभिः। मन्दसानः।
तिरः। चित्। अर्यः। सवना। पुरूणि। आङ्गूषेभिः। गृणानः। सत्यऽराधाः।। १।।

*इधर हमारे, स्तुति किया हुआ, पास ऐश्वर्यों के साथ, समृद्धि के साथ,*
*हे इन्द्र! गमन कर तू, अश्वों के साथ, आनन्दित होता हुआ।*
*कालानुसार प्राप्त हुओं में, स्वामी (तू), यज्ञों में बहुतों में (हमारे),*
*स्तोत्रों से स्तुतिगान किया जाता हुआ, सत्यरूपी धन वाला।। १।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्। तू हम उपासकों के द्वारा स्तुति किया हुआ और इसलिये आनन्दित होता हुआ अपने ऐश्वर्यों और समृद्धियों के साथ अपने शक्तिसम्पन्न गमनसाधनों से हमारे पास आ। हे जगदीश्वर! तू सबका स्वामी है और सत्यरूपी धनों वाला है। तू हमारे द्वारा स्तोत्रों से स्तुतिगान किया जाता हुआ हमारे द्वारा कालानुसार यज्ञ आदि अनेक शुभ और परहित कार्यों में हमारी

सहायता के लिये अवश्य आ।

टि. *समृद्धि के साथ* - ऊती। अवतिर् भौवादिको धातुर् वृद्धाव् अपि।। रक्षणार्थम् - वे.। ऊत्यै - सा.। दया.। for our protection - W. with succours - G.

*कालानुसार प्राप्त हुओं में* - **तिरः चित् सवना**। तिरः इति प्राप्तकालनाम। प्राप्तकालानि सवनानि सर्वाणि। वे.। तिरः चित् प्राप्तानि। तिरः सत इति प्राप्तस्य (नि. ३.२०)। सवना सवनानि। सा.। तिर्यक् अपि - दया.। Past even the (manifold) libations - G.

*स्वामी* - **अर्यः**। स्वामी - वे.। सा.। स्वामीश्वरः - दया.। foeman's - G.

*स्तोत्रों से* - **आङ्गूषेभिः**। स्तोमैः - वे.। स्तोत्रैः - सा.। स्तावकैः - दया.।

*सत्यरूपी धन वाला* - **सत्यराधाः**। सत्यधनः - वे.। सा.। सत्येन राधो धनं यस्य - दया.। whose wealth is truth - W. true Wealth-bestower - G.

**आ हि ष्मा याति नर्यश् चिकित्वान् हूयमानः सोतृभिर् उप यज्ञम्।**
**स्वश्वो यो अभीरुर् मन्यमानः सुष्वाणेभिर् मदति सं ह वीरैः।। २।।**

आ। हि। स्म। याति। नर्यः। चिकित्वान्। हूयमानः। सोतृऽभिः। उप। यज्ञम्।
सुऽअश्वः। यः। अभीरुः। मन्यमानः। सुस्वानेभिः। मदति। सम्। ह। वीरैः।। २।।

*आ अवश्य जाता है मनुष्यों का हितकारी, ज्ञानवान्,*
*पुकारा जाता हुआ सवनकर्ताओं से, पास में यज्ञ के।*
*सुन्दर अश्वों वाला जो निर्भय, पूजा जाता हुआ,*
*सवन करने वालों के, हर्षित होता है, साथ वीरों के।। २।।*

मनुष्यों का हित करने वाला, सबका ज्ञाता वह ऐश्वर्यों का स्वामी परमेश्वर भक्तिरसरूपी सोम का सवन करके उसे समर्पित करने वाले उपासकों के द्वारा आह्वान किये जाने पर उनके यज्ञस्थल अर्थात् हृदयमन्दिर में अवश्य आता है। सुन्दर बलशाली शक्तियों वाला, किसी से भी न डरने वाला, भक्तिरस का सवन करने वालों के द्वारा पूजा जाता हुआ वह जगदीश अपनी सहायक वीर शक्तियों के साथ आनन्दित होता है।

टि. *मनुष्यों का हितकारी* - **नर्यः**। नृहितः - वे.। नृभ्यो हितः - सा.। नृषु साधुः - दया.।

*सवनकर्ताओं से* - **सोतृभिः**। सोमम् अभिषुण्वद्भिः - सा.। अभिषवकर्तृभिः - दया.। by the offerers of libations - W. by Soma-pressers - G.

*पूजा जाता हुआ* - **मन्यमानः**। स्तूयमानः - सा.। सत्याभिमानी - दया.। honoured - W. conscious - G.

*सवन करने वालों के (साथ)* - **सुष्वाणेभिः**। सोमसुद्भिः - वे.। सुष्वाणेभिः सुन्वद्भिर् यजमानैः - सा.। सुष्ठु शब्दायमानैः - दया.। by the effusers of libations - W. with the Soma-pouring (heroes) - G.

*हर्षित होता है* - **मदति**। सह माद्यति - सा.। आनन्दति - दया.। rejoices - W. G.

**श्रावयेद् अस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टाम् अनु प्र दिशं मन्दयध्यै।**

**उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान् करन् न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च।। ३।।**

श्रवय। इत्। अस्य। कर्णा। वाजयध्यै। जुष्टाम्। अनु। प्र। दिशम्। मन्दयध्यै।
उत्ऽववृषाणः। राधसे। तुविष्मान्। करत्। नः। इन्द्रः। सुऽतीर्था। अभयम्। च।। ३।।

*सुना तू अवश्य (स्तोत्र) इसके कानों को, बलवान् बनाने के लिये (इसे),*
*सेवन की हुई को अनुकूलता से, प्रकर्ष से सुना दिशा को, आनन्द के लिये।*
*उत्कर्ष से सोम से सींचा हुआ, ऐश्वर्य के लिये, बलवान् (वह),*
*कर देवे हमारे लिये इन्द्र, शोभन तरणसाधनों को, अभय को भी।। ३।।*

हे उपासक! तू उस परमेश्वर के बल की अभिवृद्धि के लिये अपनी स्तुतियों को उसके कानों तक अवश्य पहुँचा। तू उसे प्रसन्न करने के लिये उसके द्वारा सेवित प्रत्येक दिशा में अपनी स्तुतियों को ऊँचे स्वर से गुँजा। भक्तिरस रूपी सोम से सींचा हुआ वह शक्तिमान् परमेश्वर हमें अपने ऐश्वर्यों का सुपात्र बना देवे। वह भवसागर तरने के लिये हमें सन्मार्ग, सद्ज्ञान, सत्यभाषण, सद्गुरु, आचार्य आदि उत्तम तरणसाधन तथा निर्भयता प्रदान करे।

टि. *सुना तू अवश्य* - **श्रावय इत्**। श्रावय एव - वे.। दया.। स्तोत्राणि श्रावय। इद् इति पूरणः। सा.। make his ears hear - G.

*बलवान् बनाने के लिये* - **वाजयध्यै**। बलिनं कर्तुम् - वे.। सा.। विज्ञापयितुम् - दया.।

*आनन्द के लिये* - **मन्दयध्यै**। मादयितुम् - वे.। सा.। आनन्दयितुम् - दया.।

*उत्कर्ष से सोम से सींचा हुआ* - **उद्वावृषाणः**। उदावृषाणः - वे.। सोमेनोत्सिच्यमान इन्द्रः - सा.। उत्कृष्टतया बलिष्ठः सन् - दया.। being well moistened with the Soma juice - W. pouring forth in bounty - G.

*शोभन तरणसाधनों को* - **सुतीर्था**। शोभनस्थानान् - वे.। शोभनानि तीर्थानि - सा.। शोभनानि तीर्थानि दुःखतारकाणि आचार्यब्रह्मचर्यसत्यभाषणादीनि येषां तान् - दया.। the holy places - W. good roads - G.

**अच्छा यो गन्ता नाधमानम् ऊती इत्था विप्रं हवमानं गृणन्तम्।**
**उप त्मनि दधानो धुर्याशून् त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः।। ४।।**

अच्छ। यः। गन्ता। नाधमानम्। ऊती। इत्था। विप्रम्। हवमानम्। गृणन्तम्।
उप। त्मनि। दधानः। धुरि। आशून्। सहस्राणि। शतानि। वज्रऽबाहुः।। ४।।

*ओर जो गमन करने वाला, याचना करने वाले की, रक्षण के लिये,*
*सचमुच, मेधावी की, आह्वान करने वाले की, स्तुतिगायक की।*
*निकट में स्वयं, जोतता हुआ जूए पर तीव्रगति अश्वों को,*
*बलवान् सैंकड़ों को (ऐश्वर्यों के), वज्र है हाथ में जिसके।। ४।।*

वह ऐश्वर्यों का स्वामी जगदीश्वर जो सचमुच रक्षा की याचना करने वाले, उसका आह्वान करने वाले, उसका स्तुतिगान करने वाले ज्ञानी उपासक के पास उसकी रक्षा के लिये पहुँच जाता है, जो स्वयं अपनी आशुगति कर्मशक्तियों को जगत् के कार्यों में जोते रखता है, जगत् की दण्डव्यवस्था को

अपने अधीन रखने वाला वह परमेश्वर हजारों ऐश्वर्यों को धारण कर रहा है। वह हमें भवसागर को पार करने के साधन तथा निर्भयता प्रदान करे।

टि. *याचना करने वाले की* - **नाधमानम्**। याचमानम् - वे.। सा.।

*मेधावी की* - **विप्रम्**। मेधाविनम् - वे.। सा.।

*स्वयम्* - **त्मनि**। आत्मनि - वे.। आत्मनि स्थितान् आत्मवश्यान् - सा.। of his own accord - W. himself - G.

*आशुगति अश्वों को* - **आशून्**। अश्वान् - वे.। शीघ्रगामिनो ऽश्वान् - सा.। दया.।

*बलवान् सैंकड़ों को* - **सहस्राणि शतानि**। सह इति बलनाम। सहस्राणि शतानि बलवन्ति शतानि। सहस्रणीत्यर्थः।। सहस्राणि शतानि च - वे.। सहस्रसंख्याकान् शतसंख्याकान् - सा.। बहून् (अश्वान्) - दया.। hundreds thousands : apparently, of treasures, and not horses as Sāyaṇa explains - G.

**त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः।**
**भेजानासो बृहद्दिवस्य राय आकाय्यस्य दावने पुरुक्षोः।। ५।। १८।।**

त्वाऽऊतासः। मघऽवन्। इन्द्र। विप्राः। वयम्। ते। स्याम। सूरयः। गृणन्तः।
भेजानासः। बृहत्ऽदिवस्य। रायः। आऽकाय्यस्य। दावने। पुरुऽक्षोः।। ५।।

*तुझसे समृद्ध किये हुए, हे ऐश्वर्यवान् इन्द्र!, ज्ञानी उपासक,*
*हम तेरे होवें, विद्वज्जन, स्तुतियों का गान करने वाले।*
*विभाग करने वाले, महान् दीप्ति वाले धन का,*
*सब ओर से गाए जाने वाले का, देने के लिये, बहुत अन्नों वाले का।। ५।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर! तेरे द्वारा समृद्धि को प्राप्त हुए विद्वान्, तेरी स्तुतियों का गान करने वाले हम तेरे ज्ञानी उपासक सब ओर से प्रशंसा किये जाने वाले, बहुत अन्नों वाले, तेरे तेजस्वी अर्थात् परिश्रम और ईमानदारी से कमाए हुए धन को निर्धनों और असहायों को देने के लिये उसका समान रूप से विभाजन करने वाले होवें।

टि. *तुझसे समृद्ध किये हुए* - **त्वोतासः**। त्वया रक्षिताः - वे.। सा.। त्वया रक्षिता वर्धिताः - दया.। who are protected by thee - W. G.

*विभाग करने वाले* - **भेजानासः**। भजमानाः - वे.। दया.। त्वां भजमानाः - सा.। be participant with thee - W. sharing - G.

*महान् दीप्ति वाले धन का* - **बृहद्दिवस्य**। महादीप्तिम् - वे.। महद्दीप्तेः - सा.। प्रकाशमानस्य - दया.। brilliant - W. sent from lofty heaven - G.

*सब ओर से गाए जाने वाले का* - **आकाय्यस्य**। सर्वतः शब्दनीयम् - वे.। समन्तात् स्तुत्यस्य - सा.। समन्तात् काये भवस्य - दया.। entitled by commendation - W.

*देने के लिये* - **दाव्ने**। दानाय - वे.। दाने निमित्ते सति - सा.। दात्रे - दया.। for the sake of distributing - W.

*बहुत अन्नों वाले का* - **पुरुक्षोः**। बहुभिः शब्दितम् - वे। बह्वन्नस्य बहुकीर्तेर् वा - सा.। बह्वन्नादि- युक्तस्य - दया.। abundant food - W. G.

## सूक्त ३०

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-८,१२-२४ इन्द्रः, ९-११ इन्द्रोषसौ। छन्दः - १-७,९-२३ गायत्री, ८,२४ त्रिष्टुप्। चतुर्विंशत्यृचं सूक्तम्।

**नकिर् इन्द्र त्वद् उत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन्।**
**नकिर् एवा यथा त्वम्।। १।।**

नकिः। इन्द्र। त्वत्। उत्ऽतरः। न। ज्यायान्। अस्ति। वृत्रऽहन्। नकिः। एव। यथा। त्वम्।। १।।

*न कोई, हे इन्द्र!, तुझसे बढ़कर है,*
*न अधिक प्रशंसनीय है, हे आवरकहन्ता।*
*न कोई (ऐसा) ही (है), जैसा (है) तू।। १।।*

हे जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों को आवृत करके बैठ जाने वाली दुष्ट आवरक शक्तियों का विनाश करने वाले जगदीश्वर! तुझसे बढ़कर इस जगत् में कोई भी नहीं है। तुझसे अधिक प्रशंसनीय और स्तुति के योग्य भी इस जगत् में कोई नहीं है। इस संसार में तेरे जैसा कोई भी नहीं है। तेरे जैसा न कोई है, न पहिले उत्पन्न हुआ है और न आगे उत्पन्न होगा। तू सब गुणों में सबसे आगे बढ़ा हुआ है। (न त्वावाँ इन्द्र कश् चन न जातो न जनिष्यते ऽति विश्वं ववक्षिथ - ऋ. १.८१.५।)

टि. *न कोई* - **नकिः**। नकिर् इति निर् इत्येतस्य स्थाने प्रतिषेधवचनस्याकच्प्रत्ययान्तस्य एतद् रूपम्, नास्तीत्यर्थः। वर. (७६)। न कश्चित् - वे.। न - सा.। नकिः निषेधे - दया.। no one - W. none - G.

*बढ़कर* - **उत्तरः**। उत्तरकालीनः - वे.। उत्कृष्टतरः - सा.। पश्चात् - दया.। superior - W. better - G.

*अधिक प्रशंसनीय* - **ज्यायान्**। पूर्वकालीनः - वे.। प्रशस्यतरः - सा.। ज्येष्ठः - दया.। more excellent - W. mightier - G.

**सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः। सत्रा महाँ असि श्रुतः।। २।।**

सत्रा। ते। अनु। कृष्टयः। विश्वा। चक्राऽइव। ववृतुः। सत्रा। महान्। असि। श्रुतः।। २।।

*मिलकर, तेरे अनुकूल होकर, प्रजाएं,*
*सब, रथचक्रों की तरह घूम रही हैं।*
*सचमुच महान् है तू, विश्वविख्यात।। २।।*

जिस प्रकार रथ के पहिये रथ के साथ-साथ घूमते हैं, उसी प्रकार, हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! ये सभी प्रजाएं तेरी इच्छा के अनुसार घूम रही हैं। तू ही इस समस्त संसारचक्र को घुमा रहा है। हे जगदीश्वर! सचमुच तू महान् है। तू विश्वविख्यात है।

टि. *मिलकर* - **सत्रा**। सत्यम् एव - वे.। सा.। सत्याचारस्य - दया.। verily, in truth - W. all together, ever - G.

*अनुकूल होकर घूम रही हैं* - **अनु ववृतुः**। अनुवर्तनं कुर्वन्ति - वे.। लक्षीकृत्य वर्तन्ते - सा.। are attached to thee - W. follow after thee - G.

*रथचक्रों की तरह* - **चक्राऽइव**। चक्राणीव रथम् - वे.। यथा चक्राणि शकटम् अनुवर्तन्ते तद्वत् - सा.। as are all the wheels (to the body of the wagon) - W. like chariot-wheels - G.

*विश्वविख्यात* - **श्रुतः**। विश्रुतः - वे.। गुणैः विख्यातो भवसि - सा.। कीर्तिमान् - दया.। renowned - W. G.

**विश्वे॑ च॒नेद् अ॒ना त्वा॑ दे॒वास॑ इन्द्र युयुधुः।**
**यद् अहा॒ नक्त॒म् आ ति॑रः॥ ३॥**

विश्वे॑। च॒न। इत्। अ॒ना। त्वा॒। दे॒वास॑ः। इ॒न्द्र॒। यु॒यु॒धुः॒। यत्। अहा॑। नक्त॑म्। आ। अति॑रः॥ ३॥

*सब के सब ही प्राणबल के निमित्त तुझको (पाकर),*
*देवगण, हे इन्द्र!, युद्ध करते हैं (असुरों से)।*
*जिस कारण से दिनों में रातों में सर्वतः हिंसित करता है तू (हिंसकों को)॥ ३॥*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! चाहे देव हों या मनुष्य, सब के सब तेरी शरण में आकर और तुझसे प्राणबल पाकर ही दुष्ट आसुरी शक्तियों अर्थात् चोर, डाकू आदि बाह्य दुर्जनों और काम, क्रोध आदि आन्तरिक दुर्गुणों से संघर्ष करते हैं। इसी लिये तू अपने उपासकों की रक्षा के लिये दिन-रात दुष्ट आसुरी शक्तियों का विनाश करता है।

टि. *प्राणबल के निमित्त* - **अना**। प्राणनेन बलेन - वे.। प्राणरूपेण बलेन - सा.। पणात्मकानि - दया.। (for) their strength - W. gathered (gods) - G.

*तुझको पाकर* - **त्वा**। त्वां (योधयाञ्चक्रुः) - वे.। त्वां सहायं लब्ध्वा - सा.। त्वां युध्यन्ते - दया.। with thee - W. (not conquered) thee - G.

*सर्वतः हिंसित करता है तू* - **आ अतिरः**। विनाशितवान् असि - वे.। समन्तात् शत्रून् अवधीः - सा.। हन्याः - दया.। thou hast destroyed - W. thou didst lengthen - G.

**यत्रो॒त बा॑धि॒तेभ्य॑श् च॒क्रं कुत्सा॑य॒ युध्य॑ते। मु॒षा॒य इ॑न्द्र॒ सूर्य॑म्॥ ४॥**

यत्र॑। उ॒त। बा॒धि॒तेभ्य॑ः। च॒क्रम्। कुत्सा॑य। युध्य॑ते। मु॒षा॒यः। इ॒न्द्र॒। सूर्य॑म्॥ ४॥

*और जिसमें बाधित किये हुओं के लिये,*
*चक्र को स्तोमकर्ता के लिये, संघर्षरत के लिये।*
*छीन लेता है इन्द्र सूर्य से॥ ४॥*

इस लोक में जहाँ मन्त्रार्थद्रष्टा कोई ऋषि हिंसक दुष्टों और काम, क्रोध आदि दुर्गुणों को दूर करने के लिये और धर्म की रक्षा के लिये संघर्षरत रहता है, वह दुष्टसंहारक परमेश्वर सूर्य से उसके बिम्ब को अर्थात् उसके तेज को लेकर उसे दे देता है, और जिन उपासकों को दुष्टों, दुराचारियों के अत्याचार सहने पड़ते हैं, उन्हें भी वह परमेश्वर उनका मुकाबला करने के लिये सूर्य का तेज प्रदान कर देता है।

टि. *बाधित किये हुओं के लिये* - **बाधितेभ्यः**। बाधितेभ्यः कुत्ससैनिकेभ्यः - वे.। कुत्स-सहायेभ्यः - सा.। पीडितेभ्यः - दया.। for the sake of those oppressed - G.

*स्तोमकर्ता के लिये* - **कुत्साय**। ऋषिः कुत्सो भवति कर्ता स्तोमानाम् इति औपमन्यवः - या. (नि. ३.११)। शस्त्रास्त्रयुक्ताय - दया.।

*संघर्षरत के लिये* - **युध्यते**। युद्धं कुर्वते - सा.। दया.।

*चक्र को छीन लेता है सूर्य से* - **चक्रम् मुषाय सूर्यम्**। अकथितं च (पा. १.४.५१)। मुष्णातिर् द्विकर्मको धातुः।। सूर्यं चक्रम् अमुष्णाः - वे.। सूर्यसम्बन्धि चक्रम् अमुष्णाः - सा.। thou hast stolen the (wheel of the car) of the sun - W. G.

**यत्र॑ दे॒वाँ ऋ॑घाय॒तो विश्वाँ॒ अयु॑ध्य॒ एक॒ इत्।**
**त्वम् इ॑न्द्र व॒नूँर् अह॑न्।। ५।। १९।।**

यत्र॑। दे॒वान्। ऋ॒घा॒य॒तः। विश्वा॑न्। अयु॑ध्यः। एक॑ः। इत्। त्वम्। इ॒न्द्र॒। व॒नून्। अह॑न्।। ५।।

*जहाँ देवों को बाधित करने वालों के साथ,*
*सब (राक्षसों) के साथ, युद्ध करता है अकेला ही।*
*(और) तू, हे इन्द्र!, अधर्मसेवियों को मार डालता है।। ५।।*

इस लोक में जब दुष्ट आसुरी शक्तियां सज्जनों, विद्वानों और धार्मिक पुरुषों पर अत्याचार करती हैं, तो तू अकेला ही उनके साथ संघर्ष में उन सब का संहार कर डालता है। हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर! तू अधर्म का आचरण करने वाले दुष्ट जनों का भी विनाश कर डालता है।

टि. *बाधित करने वालों के साथ* - **ऋघायतः**। बाधमानान् - वे.। दया.। बाधमानान् सर्वान् राक्षसादीन् - सा.। with all those opposing (the gods) - W. the furious (gods) - G.

*युद्ध करता है तू* - **अयुध्यः**। युद्धम् अकरोः - सा.। योद्धुम् अनर्हः - दया.।

*अधर्मसेवियों को* - **वनून्**। हिंसितॄन् - वे.। हिंसकान् - सा.। अधर्मसेविनः - दया.। the malignant - W. who strove with thee - G.

**यत्रो॒त मर्त्या॑य॒ कम् अरि॑णा इन्द्र॒ सूर्य॑म्। प्राव॒ः शची॑भि॒र् एत॑शम्।। ६।।**

यत्र॑। उ॒त। मर्त्या॑य। कम्। अरि॑णाः। इ॒न्द्र॒। सूर्य॑म्। प्र। आ॒व॒ः। शची॑भिः। एत॑शम्।। ६।।

*और जिसमें मरणधर्मा के लिये, सुख को,*
*गतिमान् करता है तू, हे इन्द्र!, सूर्य को।*
*खूब रक्षा करता है तू, शक्तियों से प्रगतिशील की।। ६।।*

हे परमेश्वर! तू ही इस जगत् में मरणधर्मा मनुष्यों और अन्य प्राणियों के सुख के लिये सूर्य को गतिमान् करता है। यह सूर्य ही अपने प्रकाश और ताप के द्वारा हमारे जीवनों को सुखी बनाता है। वस्तुतः यह सूर्य ही सब प्राणियों के जीवन का आधार है। यदि सूर्य न हो, तो इस जगत् में जीवन सम्भव नहीं है। हे प्रभो! तू ही अपनी शक्तियों के द्वारा आगे बढ़ने की कामना वाले प्रगतिशील मनुष्य की रक्षा, वृद्धि, उन्नति आदि करता है।

टि. *सुख को* - **कम्**। कम् इति पूरणः - सा.। सुखम् - दया.।

*गतिमान् करता है* - **अरिणाः**। री गतिरेषणयोः।। बाधितवान् असि - वे.। अहिंसीः - सा.। प्रदद्याः - दया.। discomfited - W. speddest forth - G.

*शक्तियों से* - **शचीभिः**। कर्मभिः - वे.। युद्धकर्मभिः - सा.। प्रज्ञाभिः कर्मभिर् वा - दया.। by thine exploits - W. with might - G.

*प्रगतिशील को* - **एतशम्**। इण् गताव् इत्यस्माद् धातोः तशस् प्रत्ययः (इणस् तशस्तशसुनौ - उणा. ३.१४३)।। एतशम् ऋषिम् - वे.। सा.। प्राप्तविद्यम् अश्ववद् बलिष्ठम् -दया.।

**किम् आद् उतासि वृत्रहन् मघवन् मन्युमत्तमः।**
**अत्राह दानुम् आतिरः।। ७।।**

किम्। आत्। उत। असि। वृत्रऽहन्। मघऽवन्। मन्युमत्ऽतमः। अत्र। अह। दानुम्। आ। अतिरः।। ७।।

*और किसके पश्चात्, हो जाता है तू, हे आवरकहन्ता!,*
*हे ऐश्वर्यों के स्वामी!, उत्साह वालों में सबसे बढ़ा हुआ।*
*इस जगत् में निश्चय से (जब), असुरों को नष्ट कर डालता है तू।। ७।।*

हे सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली दुष्ट आसुरी शक्तियों का हनन करने वाले, हे सब ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर! और वह कौन सा कर्म है, जिसके पश्चात् तू उत्साह वालों में सबसे अधिक बढ़े हुए उत्साह वाला हो जाता है और इस जगत् में सचमुच सब दुष्ट आसुरी शक्तियों का विनाश कर डालता है। निश्चय से उपासकों के द्वारा समर्पित भक्तिरस रूपी सोम के पान के पश्चात् ही तू इतना उत्साहित हो जाता है, कि दूसरों का अहित करने वाले दुष्टों और दुराचारियों को समूल नष्ट कर डालता है।

टि. *उत्साह वालों में सबसे बढ़ा हुआ* - **मन्युमत्तमः**। यदि त्वं मन्युमान् भवसि क्रुध्यसि - वे.। अत्यन्तं क्रोधवान् - सा.। प्रशंसितो मन्युः क्रोधो यस्य सो ऽतिशयितः - दया.। most incensed - W. fiercest in thy wrath - G.

*असुरों को नष्ट कर डालता है तू* - **दानुम् आ अतिरः**। असुरं विनाशयसीति समुदायार्थः - वे.। दानुं दनोः पुत्रं वृत्रम् आ समन्ताद् अतिरो ऽहिंसीः - सा.। दातारम् आ हंसीः - दया.। hast slain the son of Danu - W. thou hast quelled the demon - G.

**एतद् घेद् उत वीर्य१म् इन्द्र चकर्थ पौंस्यम्।**
**स्त्रियं यद् दुर्हणायुवं वधीर् दुहितरं दिवः।। ८।।**

एतत्। घ। इत्। उत। वीर्यम्। इन्द्र। चकर्थ। पौंस्यम्।
स्त्रियम्। यत्। दुःऽहनायुवम्। वधीः। दुहितरम्। दिवः।। ८।।

*और इसको निश्चय से ही, वीरकर्म को,*
*हे इन्द्र!, करता है तू, पौरुष से युक्त को।*
*स्त्री को जब, दुष्टहनन की कामना वाली को,*
*मार डालता है तू, पुत्री को द्युलोक की।। ८।।*

और हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! तू सचमुच ही पौरुष से युक्त इस वीरकर्म को करता है, जो तू

अन्धकार, अज्ञान आदि दुष्ट शक्तियों का विनाश करने की कामना वाली द्युलोक की पुत्री उषा को भी अपने सूर्यरूपी प्रकाश से अभिभूत कर डालता है। (तु. वज्रेणान उषसः संपिपेष - ऋ. २.१५.६)। तेरे प्रकाश के सामने सभी प्रकाश फीके हैं। तेरे बल के आगे सभी बल नगण्य हैं।

टि. *वीरकर्म को* - **वीर्यम्।** सामर्थ्योपेतम् - सा.। पराक्रमम् - दया.। powers - W.

*पौरुष से युक्त को* - **पौंस्यम्।** पुंस्त्वावहम् - वे.। बलम् - सा.। पुंभ्यो हितम् - दया.। manly - W. heroic deed - G.

*दुष्टहनन की कामना वाली को* - **दुर्हणायुवम्।** दुर्हणं प्रजापतिम् इच्छन्तीम् उषसम् - वे.। दुष्टं हननम् इच्छन्तीम् - सा.। दुःखेन हन्तुं योग्यं कामयते ताम् - दया.। mediating mischief - G. such forces,who conceive ill - Satya.

**दिवश् चिद् घा दुहितरं महान् महीयमानाम्।**
**उषासम् इन्द्र सं पिणक्।। ९।।**

दिवः। चित्। घ। दुहितरम्। महान्। महीयमानाम्। उषसम्। इन्द्र। सम्। पिणक्।। ९।।

*और द्युलोक की, निश्चय से पुत्री को,*
*महान्, पूजी जाती हुई को (मनुष्यों के द्वारा)।*
*उषा को, हे इन्द्र! सम्यक् पीस डालता है तू।। ९।।*

हे परमेश्वर! तू सबसे महान् है। तू सबसे अधिक शक्तिशाली है। तू अपनी शक्ति से सूर्य को उदित करके द्युलोक की पुत्री उस उषा के भी मान को भङ्ग कर देता है, जिसे सब मनुष्य सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और जिसकी सब पूजा करते हैं। तू ही सबसे अधिक शक्तिशाली और सबसे अधिक पूजा के योग्य है।

टि. *पूजी जाती हुई को* - **महीयमानाम्।** महीयमानां जनैः - वे.। पूज्यमानाम् - सा.। विस्तीर्णाम् - दया.। glorious - W. when lifting up herself in pride - G.

*सम्यक् पीस डालता है तू* - **सम् पिणक्।** चूर्णितवान् असि - वे.। सम् पिणक् संपिष्टवान् असि - सा.। सं पिनष्टि - दया.। hast enriched - W. didst crush - G.

**अपोषा अनसः सरत् संपिष्टाद् अह बिभ्युषी।**
**नि यत् सीं शिश्नथद् वृषा।। १०।। २०।।**

अप। उषाः। अनसः। सरत्। सम्ऽपिष्टात्। अह। बिभ्युषी।
नि। यत्। सीम्। शिश्नथत्। वृषा।। १०।।

*दूर उषा, शकट से जा गिरती है,*
*चूर्णित किये हुए से, अहो! डरी हुई।*
*पूर्णतः जब उसको, तोड़ देता है सुखवर्षक।। १०।।*

जब सुख और आनन्द की वर्षा करने वाला वह परमेश्वर शुभ कर्मों के फलस्वरूप ज्ञान केप्रकाश से युक्त आत्मा रूपी उषा के इस शरीर रूपी शकट को चूर-चूर कर देता है, तो वह इस शरीर के बन्धन से मुक्त हो जाता है। वह इस डर से कि मैं कहीं दोबारा इस शरीर के बन्धन में

न पड़ जाऊँ, उसे छोड़कर बहुत दूर चला जाता है और परमानन्द को प्राप्त हो जाता है।

*अथवा* जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के द्वारा उषा के रथ के तहस-नहस कर दिये जाने पर उषा डर के मारे भाग निकलती है, उसी प्रकार दुष्ट आसुरी शक्तियां प्रभु के प्रहार से भयभीत होकर अपने गमनसाधनों को छोड़कर भाग खड़ी होती हैं। अग्नि, वायु आदि देव भी उसी के भय से अपने-अपने कार्यों में लगे हुए हैं।

टि. *दूर जा गिरती है* - **अप सरत्।** अप असरत् - वे.। अपासरत् अपजगाम - सा.। descended - W. fled - G.

*शकट से* - **अनसः।** अनो वायुर् अनितेः। अपि वोपमार्थे स्यात्। अनस इव शकटाद् इव। अनः शकटम्। आनद्धम् अस्मिंश् चीवरम्। अनितेर् वा स्यात्। जीवनकर्मणः। उपजीवन्त्येनत्। मेघो ऽप्यन एतस्माद् एव। या. (नि ११.४७)। शकटात् - वे.। सा.।

*डरी हुई* - **बिभ्युषी।** इन्द्रसकाशाद् भीता सती - सा.। terrified - W. affrighted - G.

*पूर्णतः तोड़ देता है* - **नि शिश्नथत्।** न्यवधीत् - सा.। शिथिलीकरोति - दया.। had smashed - W. had shattered - G.

*सुखवर्षक* - **वृषा।** इन्द्रः - वे.। कामानां वर्षितेन्द्रः - सा.। बलिष्ठो राजा - दया.। showerer of benefits - W. strong God - G.

**एतद् अस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या। ससार सीं परावतः।। ११।।**

एतत्। अस्याः। अनः। शये। सुऽसंपिष्टम्। विऽपाशि। आ। ससार। सीम्। पराऽवतः।। ११।।

*यह इसका शकट पड़ा है,*
*बुरी तरह चूर-चूर हुआ, बन्धनमुक्त (होने पर), सब ओर।*
*चली गई (उषा) वह स्वयं बहुत दूर।। ११।।*

जब यह आत्मा (उषा) अपने शुभ कर्मों के फलस्वरूप बन्धनमुक्त हो जाता है, अर्थात् मोक्ष को प्राप्त हो जाता है, तो इसका यह शरीररूपी शकट चूर-चूर हो जाता है। आकाश, वायु अग्नि आदि पांचों तत्त्व अपने-अपने स्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं। यह आत्मा इस शरीर को छोड़कर बहुत दूर चला जाता है, अर्थात् ब्रह्मलोक को प्राप्त हो जाता है।

टि. *पड़ा है* - **शये।** लोपस् त आत्मनेपदेषु (पा. ७.१.४१)।। शेते - वे.। अशेत - सा.। reposed - W. lay - G.

*बन्धनमुक्त* - **विपाशि।** पाशिभिर् बन्धकैर् विरहितम् - वे.। विपाशि विपाडाख्या नदी। तस्यां तत्तीरे। सा.। विगतपाशे बन्धनरहिते मार्गे - दया.। on the bank of Vipāś - W. in Vipāś; or on the bank of that river - G.

*चली गई वह स्वयं बहुत दूर* - **ससार सीम् परावतः।** तद् इदं दूराद् देशात् प्रवणं प्रति आ ससार - वे.। सीम् इयम् उषोदेवता परावतो दूरदेशात् ससार - सा.। समन्ताद् गच्छति आदित्यः दूरदेशात् - दया.। she departed from afar - W. she herself fled far away - G.

**उत सिन्धुं विबाल्यं वितस्थानां अधि क्षमि। परि ष्ठा इन्द्र मायया।। १२।।**

उत। सिन्धुम्। विऽबाल्यम्। विऽतस्थानाम्। अधि। क्षमि। परि। स्थाः। इन्द्र। मायया॥ १२॥

*और जलप्रवाह को, विगतबाल्यावस्था को,*
*विविध प्रकार से स्थित को, धरती पर।*
*सर्वतः ठहराता है तू, निर्माणशक्ति से (अपनी)॥ १२॥*

और हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! पूरे यौवन को प्राप्त और धरती पर विविध स्थितियों में बहने वाले इन जलप्रवाहों को तू ही अपनी संरचनाशक्ति से सब ओर से थामे हुए है, अपने वश में किये हुए है। तेरी बुद्धि और बल से ही ये जल नदियों, नालों, झीलों, समुद्रों आदि में तेरे नियन्त्रण में रहते हुए स्थित हैं। अन्यथा ये धरती पर प्रलय की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं।

टि. *जलप्रवाह को* - **सिन्धुम्।** सिन्धुम् - वे.। नदीम् - सा.। नदम् - दया.। the Sindhu - W. stream - G.

*विगतबाल्यावस्था को* - **विबाल्यम्।** विबाल्यम् परुष्णीम् - वे.। विगतबाल्यावस्थां संपूर्णजलाम् - सा.। विगतं बाल्यं यस्य तम् - दया.। swollen - W. overflowing - G.

*विविध प्रकार से स्थित को* - **विऽतस्थानाम्।** वितिष्ठमानाम् - वे.। सा.। विशेषेण स्थिताम् - दया.। when arrested (on its course) - W. spread - G.

*सर्वतः ठहराता है तू* - **परि स्थाः।** पारितवान् असि - वे.। परि अस्थाः। सर्वतः स्थापनं कृतवान् असि। सा.। सर्वतः तिष्ठति - दया.। thou hast spread abroad - W. thou didst resist - G.

*निर्माणशक्ति से* - **मायया।** कर्मणा - वे.। प्रज्ञया - सा.। दया.। by thy contrivance - W. with magic power - G.

**उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम्।**
**पुरो यद् अस्य संपिणक्॥ १३॥**

उत। शुष्णस्य। धृष्णुऽया। प्र। मृक्षः। अभि। वेदनम्। पुरः। यत्। अस्य। सम्ऽपिणक्॥ १३॥

*और शोषक के बलपूर्वक,*
*विनष्ट कर देता है तू, सब ओर से वित्त को।*
*गढ़ों को जब इसके, पीस डालता है तू॥*

और हे ऐश्वर्यशाली परमेश्वर! तू दूसरों का शोषण करने वाले दुष्ट जन के संगृहीत धन को अपने बल से बिल्कुल मलियामेट कर देता है, और तू उसके गढ़ों को भी अपनी न्यायव्यवस्था से चूर-चूर कर डालता है।

टि. *शोषक के* - **शुष्णस्य।** शुष्णनाम्नो ऽसुरस्य - सा.। बलस्य - दया.।

*बलपूर्वक* - **धृष्णुया।** धर्षणशीलम् - वे.। धृष्णुः धर्षकः - सा.। प्रगल्भत्वेन - दया.। by valour - W. valiantly - G.

*विनष्ट कर देता है तू* - **प्र मृक्षः।** प्रकर्षेण अभिभूतवान् असि - वे.। प्रकर्षेण अबाधथाः - सा.। सिञ्चय - दया.। carried off - W. didst thou seize - G.

*वित्त को* - **वेदनम्।** ज्ञानम् - वे.। वित्तम् - सा.। विज्ञानम् - दया.। wealth - W. store - G.

**उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि। अवाहन्निन्द्र शम्बरम्।। १४।।**

उत। दासम्। कौलिऽतरम्। बृहतः। पर्वतात्। अधि। अव। अहन्। इन्द्र। शम्बरम्।। १४।।

*और विनाशकारी को, बहुत ऊँचे कुल वाले को,*
*बड़े भारी पर्वत के ऊपर से (जिस प्रकार)।*
*नीचे गिराकर मार डालता है तू, हे इन्द्र!, सुखविलोपक को।। १४।।*

हे परमेश्वर! जो मनुष्य सब ओर विनाशलीला करने वाला है, जो सुखों को आवृत कर लेता है, सभी सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाता है, वह चाहे कितने ही ऊँचे कुल में उत्पन्न हुआ क्यों न हो, तू उसको इस प्रकार मार डालता है, जिस प्रकार सिंह आदि किसी बलवान् जन्तु को बहुत ऊँचे पर्वत से नीचे गिराकर मार दिया जाता है।

टि. *विनाशकारी को* - **दासम्**। उपक्षपयितारम् - सा.। सेवकम् - दया.। the slave - W.

*बहुत ऊँचे कुल वाले को* - **कौलितरम्**। अत्यन्तकुलीनम् - वे.। कौलितरं कुलितरनाम्नोऽपत्यम् - सा.। अतिशयेन कुलीनम् - दया.। thc son of Kulitara - W. G.

*सुखविलोपक को* - **शम्बरम्**। शं सुखं वृणोतीति शंवरः। शंवर एव शम्बरः।। शम्बरम् असुरम् - सा.। शं सुखं वृणोति यस्मात् तं मेघम् - दया.।

**उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः।**
**अधि पञ्च प्रधीँरिव।। १५।। २१।।**

उत। दासस्य। वर्चिनः। सहस्राणि। शता। अवधीः। अधि। पञ्च। प्रधीन्ऽइव।। १५।।

*और विनाशकारी (शत्रु) के, वर्चस्वी के,*
*बलवान् सैंकड़ों को (अनुचरों के), मार डालता है तू।*
*अधिग्रहण करके, पाँच परिधियों (वालों) को जैसे।। १६।।*

और हे जगदीश्वर! जो विनाशकारी शत्रु है, जो बिना कारण ही दूसरों की हिंसा करता है, वह चाहे कितना ही वर्चस्वी और तेजस्वी क्यों न हो, तू उसके हजारों अनुचरों को और उसको इस प्रकार मार गिराता है, जिस प्रकार युद्ध में पाँच घेरों वाला व्यूह बनाकर बैठे हुए शत्रुओं को चुन-चुन कर मार डाला जाता है और अन्ततः उनके स्वामी को भी मार दिया जाता है।

टि. *विनाशकारी (शत्रु) के* - **दासस्य**। असुरस्य - वे.। लोकानाम् उपक्षपयितुः - सा.। सेवकस्य - दया.।

*वर्चस्वी के* - **वर्चिनः**। वर्चिनाम्नः - वे.। सा.। बह्वधीतस्य - दया.।

*बलवान् सैंकड़ों को* - **सहस्राणि शता**। बलवन्ति शतानि सहस्राणीत्यर्थः।। पञ्च शता पञ्चशतानि पञ्चशतसंख्याकान् सहस्राणि सहस्रसंख्याकान् - सा.। असंख्यानि शतानि - दया.। five hundreds and thousands (of the followers) - W. the hundred thousand and the five - G.

*अधिग्रहण करके* - **अधि**। अधिगृह्येत्यर्थः।। परिगतान् - वे.। अधिकम् - सा.।

*पाँच परिधियों (वालों) को जैसे* - **पञ्च प्रधीन्ऽइव**। पञ्च परिधीन् इव - वे.। परिधीन् इव चक्रस्य परितः स्थितान् शङ्कून् इव - सा.। प्रधीन् इव चक्रस्थानि तीक्ष्णानि कीलकानीव वर्तमानान्

जगत्कण्टकान् दुष्टान् - दया.। like the fellies ( round the spokes of the wheel) - W. like the fellies of a car - G.

**उत त्यं पुत्रम् अग्रुवः परावृक्तं शतक्रतुः। उक्थेष्विन्द्र आभजत्।। १६।।**

उत। त्यम्। पुत्रम्। अग्रुवः। पराऽवृक्तम्। शतऽक्रतुः। उक्थेषु। इन्द्रः। आ। अभजत्।। १६।।

*और उसको, पुत्र को अग्रगामी के,*

*पथभ्रष्ट को, सैंकड़ों कर्मों वाला।*

*स्तुतियों में, इन्द्र भाग लेने वाला बनाता है।। १६।।*

कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि शुभ कर्मों में आगे-आगे चलने वाले धार्मिक मनुष्य का पुत्र भी अपने पिता और कुल की परम्पराओं से दूर होकर पथभ्रष्ट हो जाता है। ऐसे पथभ्रष्ट उस पुत्र पर असंख्य प्रज्ञाओं का स्वामी और असंख्य कर्मों को करने वाला परमेश्वर अपनी कृपा करता है और उसे अपनी अन्तःप्रेरणा से अपनी स्तुतियों के गान में भाग लेने वाला बना देता है और इस प्रकार वह पुनः सन्मार्ग पर आ जाता है। वह परमेश्वर सचमुच ही पतितपावन है।

टि. *अग्रगामी के* - **अग्रुवः**। एतन्नाम्याः - सा.। अग्रसराः - दया.। unwedded damsel's (son) - G.

*पथभ्रष्ट को* - **परावृक्तम्**। परावृक्तं नाम। परावृग् एव परावृक्तः। वे.। एतन्नामकम् - सा.। अच्छिन्नवीर्यम् - दया.। the castaway - G.

*स्तुतियों में* - **उक्थेषु**। स्तोत्रेषु - सा.। प्रशंसनीयेषु शास्त्रेषु - दया.। in sacred hymns - W. the lauds - G.

*भाग लेने वाला बनाता है* - **आ अभजत्**। भागिनं कृतवान् - सा.। समन्तात् सेवते - दया.। has made participant - W. caused to share - G.

**उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः। इन्द्रो विद्वाँ अपारयत्।। १७।।**

उत। त्या। तुर्वशायदू इति। अस्नातारा। शचीऽपतिः। इन्द्रः। विद्वान्। अपारयत्।। १७।।

*और उन दोनों को, गति के इच्छुक और यत्नशील को,*

*(विद्या व्रत से) स्नात न हुओं को, शक्तियों का स्वामी।*

*इन्द्र, सर्वज्ञ, पार करा देता है (विद्या और व्रत को)।। १७।।*

कोई ऐसा मनुष्य है, जो विद्यास्नात होना चाहता है और अन्य कोई ऐसा मनुष्य है, जो व्रतस्नात होना चाहता है। वे दोनों अपने लक्ष्य की ओर गतिशील और प्रयत्नशील हैं। वह शक्तियों का स्वामी परमेश्वर, जो सर्वज्ञ है, उन ऐसे गतिशील और प्रयत्नशील जनों को विद्या और व्रत में पारङ्गत करा देता है। सचमुच परमात्मा अपने लक्ष्य की ओर प्रयत्नपूर्वक बढ़ने वाले मनुष्यों को लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य करा देता है।

टि. *गति के इच्छुक और यत्नशील को* - **तुर्वशायदू**। तुर्वशं यदुं च - वे.। तुर्वशनामानं यदुनामानं च राजानौ - सा.। शीघ्रं वशंकरो यत्नवांश् च तौ मनुष्यौ - दया.।

*स्नात न हुओं को* - **अस्नातारा**। अनभिषिक्तौ पितृशापात् - वे.। अस्नातारौ ययातिशापाद्

अनभिषिक्तौ - सा.। स्नानादिकर्मरहितौ - दया.। तैरना न जानने वाले - सात.। when denied inauguration - W. who feared the flood - G.

*शक्तियों का स्वामी* - **शचीपतिः**। कर्मणां पालकः - सा.। प्रजापतिर् वाक्पतिर् वा - दया.। the lord of acts - W. Lord of Might - G.

*पार करा देता है* - **अपारयत्**। कृतवान् राज्यार्हाव् इति - वे.। अपारयत् अभिषेकार्हाव् अकरोत् - सा.। दुःखात् पारयेत् - दया.। has borne across (their difficulties) - W.

**उत त्या सद्य आर्या सरयोर् इन्द्र पारतः। अर्णाचित्ररथावधीः।। १८।।**

उत। त्या। सद्यः। आर्या। सरयोः। इन्द्र। पारतः। अर्णाचित्ररथा। अवधीः।। १८।।

*और उन दोनों को अविलम्ब, सदाचरण वालों को,*

*संसारसागर के, हे इन्द्र!, उस पार।*

*प्रवाहवान् और उत्तमगति को, प्राप्त करा देता है तू।। १८।।*

दो प्रकार के मनुष्य हैं, एक वे जो समुद्र की लहर के समान अपने जीवन में प्रवाह को लिये हुए हैं और दूसरे वे जो उत्तम गति वाले हैं। ये दोनों ही आर्य हैं, भद्र हैं, सदाचरण वाले हैं। इन दोनों प्रकार के मनुष्यों को तू, हे परमेश्वर!, इस संसारसागर से अविलम्ब पार करा देता है।

टि. *सदाचरण वालों को* - **आर्या**। राजानौ - वे.। आर्याव् आर्यत्वाभिमानिनौ सन्ताव् अपि इन्द्रविषयभक्तिश्रद्धारहिताव् इत्यर्थः - सा.। उत्तमगुणकर्मस्वभावौ - दया.। both Āryas - G.

*संसारसागर के* - **सरयोः**। सरयोः नद्याः - वे.। सा.। on yonder side of Sarayū - G.

*प्रवाहवान् और उत्तमगति को* - **अर्णाचित्ररथा**। अर्णं चित्ररथं च - वे.। अर्णनामकं चित्ररथ-नामकं च - सा.। Arṇa and Citraratha - G. money hoarders or power-blinds - Satya.

*प्राप्त करा देता है तू* - **अवधीः**। हन्तिर् गताव् अपि (हन हिंसागत्योः - धा.पा. १०१२)।। हतवान् असि - वे.। अहिंसीः - सा.। thou hast slain - W. G.

**अनु द्वा जहिता नयो ऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन्।**
**न तत् ते सुम्नम् अष्टवे।। १९।।**

अनु। द्वा। जहिता। नयः। अन्धम्। श्रोणम्। च। वृत्रऽहन्। न। तत्। ते। सुम्नम्। अष्टवे।। १९।।

*अनुकूल दो को, छोड़े हुओं को, चलाता है तू,*

*अन्धे को, बहरे को भी, हे आवरकहन्ता!,*

*नहीं वह तेरा सुख, प्राप्ति के लिये है (अन्य के द्वारा)।।*

एक अन्धा है, जिसकी आँखों पर अज्ञान का आवरण पड़ा हुआ है। दूसरा वह विकलाङ्ग है, जिसके कान सदुपदेश के लिये बहरे हैं। ये ऐसे मनुष्य सभ्य समाज के द्वारा भी परित्यक्त और बहिष्कृत कर दिये जाते हैं। हे आवरक शक्तियों का विनाश करने वाले परमेश्वर! जब तेरी कृपा होती है, तो तू ऐसे जनों को अनुकूल मार्ग पर चला देता है, जिससे उनका कल्याण हो जाता है। इसके विपरीत जिनपर तेरी कृपा नहीं होती, वे तेरे इस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते।

टि. *छोड़े हुओं को* - **जहिता**। द्वौ वृद्धौ - वे.। सर्वैर् बन्धुभिस् त्यक्तौ - सा.। abandoned (by

their kin) - W. two forlorn - G.

*अनुकूल चलाता है तू* - **अनु नयः**। अनु अनयः - वे.। अन्धपङ्गुत्वपरिहारेणानुनीतवान् असि - सा.। thou hast restored - W. didst conduct - G.

*अन्धे को* - **अन्धम्**। अन्धम् ऋज्राश्वम् - वे.। चक्षुर्हीनम् एकम् - सा.।

*बहरे को* - **श्रोणम्**। तु. श्रोणं श्रवयन् (ऋ. २.१३.१२)।। परावृजं च - वे.। पङ्गुम् अपरम् - सा.। खञ्जम् - दया.। lame - W. G.

*प्राप्ति के लिये* - **अष्टवे**। आप्तुं शक्यम् - वे.। व्याप्तुम् - सा.। दया.। to exceed - W.

**शतम् अश्मन्मयीनां पुराम् इन्द्रो व्यास्यत्।**
**दिवोदासाय दाशुषे।। २०।। २२।।**

शतम्। अश्मन्ऽमयीनाम्। पुराम्। इन्द्रः। वि। आस्यत्।। दिवःऽदासाय। दाशुषे।। २०।।

*सौ को, पत्थर से बने हुओं को,*
*गढ़ों को, इन्द्र ध्वस्त कर देता है।*
*उत्तम ज्ञानदाता के लिये, हविदाता के लिये।। २०।।*

आसुरी स्वभाव वाले दुष्ट जन पत्थर या लोहे से बने असंख्य मजबूत गढ़ों का निर्माण करके परमात्मा के द्वारा सबके लिये दिये हुए सुखसाधनों को उनमें संगृहीत करके बैठ जातें हैं। इससे परमेश्वर की न्यायव्यवस्था का उल्लङ्घन होता है। परमेश्वर उन गढ़ों को ध्वस्त कर डालता है। और जो मनुष्य यज्ञ आदि परोपकार के कर्मों को करने वाले, प्रभु की भक्ति में समय बिताने वाले, दूसरों को उत्तम ज्ञान देने वाले और सन्मार्ग दिखाने वाले होते हैं, उन सुखसाधनों को वह जगदीश्वर उन दुष्ट असुरवृत्ति जनों से छीनकर उन उत्तम ज्ञानदाता और हविदाता मनुष्यों को दे देता है।

टि. *पत्थरों से बने हुओं को* - **अश्मन्मयीनाम्**। शिलामयीनाम् - वे.। पाषाणैर् निर्मितानाम् - सा.। fortresses of stone - G.

*ध्वस्त कर देता है* - **वि आस्यत्**। व्यस्तवान् - वे.। व्यक्षिपत् - सा.। has overturned - W. overthrew - G.

*उत्तम ज्ञानदाता के लिये* - **दिवोदासाय**। एतन्नामकाय - सा.। प्रकाशस्य सेवकाय - दया.।

**अस्वापयद् दभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः। दासानाम् इन्द्रो मायया।। २१।।**

अस्वापयत्। दभीतये। सहस्रा। त्रिंशतम्। हथैः। दासानाम्। इन्द्रः। मायया।। २१।।

*धराशायी कर देता है शत्रुदमन के लिये*
*हजार को तीस को, हननसाधनों से।*
*विनाशकारियों के, इन्द्र शक्ति से (अपनी)।।*

वह ऐश्वर्यों का स्वामी जगदीश्वर चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं का दमन करने वाले वीर पुरुष की प्रसन्नता के लिये अपनी शक्ति के द्वारा निर्दोष लोगों का विनाश करने वाले असंख्य अत्याचारियों को अपने विनाश के साधनों से नष्ट करके धरती पर सुला देता है।

टि. *धराशायी कर देता है* - **अस्वापयत्।** भूमाव् अशाययत् - वे.। अवधीत् - सा.। He put to sleep - W. sent to slumber - G.

*शत्रुदमन के लिये* - **दभीतये।** दभीतिर् दभ्नोतेः। शत्रूणां दमयित्रे।। दभीतिप्रीतये - वे.। दभीतिनामकस्यार्थाय - सा.। हिंसनाय - दया.। for Dabhiti's sake - G.

*हजार को तीस को* - **सहस्रा त्रिंशत्।** त्रिंशतं सहस्राणि शतानि।। त्रिंशतं सहस्राणि - वे.। त्रिंशत् संख्याकानि सहस्राणि - सा.।

*हननसाधनों से* - **हथैः।** हननैः - वे.। दया.। हननसाधनैर् आयुधैः - सा.।

*विनाशकारियों के* - **दासानाम्।** असुराणाम् - वे.। दासानां लोकानाम् उपक्षपयितृणां राक्षसादीनाम् - सा.। सेवकानाम् - दया.। of the servile (races) - W.

*शक्ति से (अपनी)* - **मायया।** कर्मणा - वे.। स्वकीयया शक्त्या - सा.। प्रज्ञया - दया.। by delusion - W. with magic power - G.

**स घेद् उतासि वृत्रहन् त्समान इन्द्र गोपतिः।**
**यस् ता विश्वानि चिच्युषे।। २२।।**

सः। घ। इत्। उत। असि। वृत्रऽहन्। समानः। इन्द्र। गोऽपतिः। यः। ता। विश्वानि। चिच्युषे।। २२।।

*और वह निश्चय से ही है तू, हे आवरकहन्ता!,*
*(सबका) सांझा, हे इन्द्र!, स्वामी।*
*जो उन सबको ध्वस्त कर देता है (गढ़ों को)।। २२।।*

हे सब सुखसाधनों को आवृत करके बैठ जाने वाली दुष्ट आसुरी शक्तियों का हनन करने वाले ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! तू समान रूप से सब प्राणियों का स्वामी और पालक है, क्योंकि सबके लिये सुखसाधनों को मुक्त करने के लिये तू ही दुष्ट आसुरी शक्तियों के गढ़ों को विध्वस्त कर डालता है और सब तक उन सुखसाधनों को पहुँचा देता है।

टि. *साँझा* - **समानः।** सर्वेषां साधारणः - वे.। सर्वेषां यजमानानां समः - सा.। the same (to all thy worshippers) - W. general for all - G.

*स्वामी* - **गोपतिः।** Here *gopatiḥ* is used in the sense of *patiḥ* 'lord'. See Authour's *Semantic Change in Sanskirt,* p. 218. गोपतिः - वे.। गवां पालकः - सा.। पृथिव्याः स्वामी - दया.। the lord of cattle - W. Lord of kine - G.

*सबको (गढ़ों को)* - **विश्वानि।** विश्वानि असुरपुराणि - वे.। समस्तान् शत्रून् - सा.। of all things that be - G.

*ध्वस्त कर देता है* - **चिच्युषे।** च्यावयसि - वे.। दया.। प्राच्यावयः - सा.।

**उत नूनं यद् इन्द्रियं करिष्या इन्द्र पौंस्यम्।**
**अद्या नकिष् टद् आ मिनत्।। २३।।**

उत। नूनम्। यत्। इन्द्रियम्। करिष्याः। इन्द्र। पौंस्यम्। अद्य। नकिः। तत्। आ। मिनत्।। २३।।

*और निश्चय से, जिस इन्द्रोचित कर्म को,*

*करता है तू, हे इन्द्र!, पौरुष से युक्त को।*
*आज नहीं कोई उसको, हिंसित कर सकता है।। २३।।*

और हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर! पौरुष से युक्त जिस भी अपने द्वारा करणीय कर्म को तू करता है, आज और आगे भी उस तेरे द्वारा किये हुए कर्म को कोई भी नष्ट नहीं कर सकेगा। अपने बल से जिस भी अपने द्वारा करणीय कर्म को तू करता है, उसे तीनों कालों और तीनों स्थानों में कोई अन्यथा नहीं कर सकता।

टि. *इन्द्रोचित कर्म को* - **इन्द्रियम्।** इन्द्रेण जुष्टम्। इन्द्रेण सेवनीयं सेवनार्हम्। इन्द्रियम् इन्द्रलिङ्गम् इन्द्रदृष्टम् इन्द्रसृष्टम् इन्द्रजुष्टम् इन्द्रदत्तम् इति वा (पा. ५.२.९३)।। वीर्यम् - वे.। vigorous - W. deed of might - G

*करता है तू* - **करिष्याः।** पुरा कृतवान् असि - वे.। सा.। thou excitest - W. thou hast to execute - G.

*पौरुष से युक्त को* - **पौंस्यम्।** पुंस्त्वावहम् - वे.। त्वदीयं बलम् - सा.। इन्द्रियं सामर्थ्योपेतम् - सा.। पुंसु साधु - दया.। manhood - W.

*नहीं कोई हिंसित कर सकता है* - **नकिः आ मिनत्।** न कश्चित् आ हिनस्ति। इन्द्रसृष्टानि व्रतानि तथानुवर्तन्ते। वे.। कश्चित् न हिंस्यात् - सा.। दया.। no one may resist it - W.None be there to hinder it - G.

**वा॒मंवा॑मं त आदुरे दे॒वो द॑दात्वर्य॒मा।**
**वा॒मं पू॒षा वा॒मं भगो॑ वा॒मं दे॒वः करू॑ळती।। २४।। २३।।**

वा॒मम्ऽवा॑मम्। ते॒। आ॒ऽदु॒रे। दे॒वः। द॒दा॒तु॒। अ॒र्य॒मा।
वा॒मम्। पू॒षा। वा॒मम्। भगः॑। वा॒मम्। दे॒वः। करू॑ळती।। २४।।

*प्रत्येक कमनीय (धन) को तेरे, हे शत्रुविदारक!,*
*देव प्रदान करे (हमें), अर्यमा।*
*कमनीय को पूषा, कमनीय को भग,*
*कमनीय को देव प्रदान करे, कर्मकर्त्ताओं को देने वाला।। २४।।*

हे दुष्ट हिंसक जनों को तहस-नहस कर डालने वाले जगदीश्वर! आप देवों को आहुति न देने वाले दुष्ट नास्तिक जनों को नियन्त्रण में रखने वाले अर्यमा हैं। आप अपने प्रत्येक कमनीय धन को हमें प्रदान कीजिये। आप सब का पालन-पोषण करने वाले पूषा हैं। आप हमें अपना प्रशंसनीय धन प्रदान कीजिये। आप भक्त जनों के द्वारा भजनीय भगवान् है। आप हमें अपना भजनीय धन प्रदान कीजिये। आप कर्म करने वालों को उनके कर्मानुसार फल देने वाले करूळती देव हैं। आप हमें अपने सेवनीय धन प्रदान कीजिये।

टि. *प्रत्येक कमनीय (धन) को* - **वामम्ऽवामम्।** वननीयं धनम् - वे.। यद् यद् वननीयं संभजनीयं धनम् - सा.। प्रशस्यंप्रशस्यम्। वाम इति प्रशस्यनाम (निघ. ३.८)। दया.।

*हे शत्रुविदारक* - **आदुरे।** आदरणे सति - वे.। हे शत्रूणाम् आदरयितः - सा.। शत्रूणां विदारक

- दया.। Destroyer of foes - W. O Watchful One - G.

*अर्यमा* - **अर्यमा**। अर्यमा अरीणां नियमयितैतन्नामको देवः - सा.। न्यायेशः - दया.।

*कर्मकर्त्ताओं को देने वाला* - **करूळती**। करूळती कृत्तदन्तः पूषा करूळती। पुनर्वचनं विशेषण-समर्पणाय इति। वे.। कृत्तदन्तः पूषा। ननु करूळतीत्येतत् संनिहितत्वाद् भग इत्यनेन सम्बन्धनीयम्। अथवार्यमादीनां त्रयाणाम् अपि विशेषणत्वेन भाव्यम्। कथं पूष्णो विशेषणं स्याद् इति साकाङ्क्षाक्षत्वात् न। सांनिध्याकाङ्क्षयोः सद्भावे ऽपि योग्यताम् अन्तरेणान्वयायोगात्। तस्मात् पूषा प्रपिष्टभागो ऽदन्तको हि। (तै.सं. २.६.८.५) इत्यादिश्रुतिषु पूष्ण एवादन्तकत्वेन प्रसिद्धेर् व्यवहितस्यापि तस्यैव विशेषणं युक्तम्। सा.। सः करून् ऊढा कामयते स करूळतः सो ऽस्यास्तीति - दया.। the toothless deity - W. the God Krūlatī - G.

## सूक्त ३१

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - १,२,४-१५ गायत्री, ३ पादनिचृत्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**कया॑ नश् चि॒त्र आ भु॑वद् ऊ॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑।**
**कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता।। १।।**

कया॑। नः॒। चि॒त्रः। आ। भु॒व॒त्। ऊ॒ती। स॒दाऽवृ॑धः। सखा॑। कया॑। शचि॑ष्ठया। वृ॒ता।। १।।

*किसके द्वारा हमारे, पूजनीय (वह), पास आएगा,*
*प्रीति के द्वारा, सदा बढ़ने वाला, मित्र (हमारा)।*
*किस उत्तम शक्तिशाली व्यवहार के द्वारा।। १।।*

वह परमेश्वर अद्भुत गुण, कर्म और स्वभाव वाला होने से पूजा के योग्य है। वह हमारा परम सखा है। वह सदा स्वयं बढ़ने वाला और उसके नियमों का पालन करने वालों को सदा बढ़ाने वाला है। वह कौन सी प्रीति, प्रार्थना और याचना है और उसके प्रति वह कौन सा प्रभावशाली बर्ताव और व्यवहार है, जिससे प्रसन्न होकर वह शीघ्र ही हमारे निकट आएगा। हमें इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये।

टि. *पूजनीय* - **चित्रः**। पूजनीयः - वे.। चायनीयः पूजनीयः - सा.। अद्भुतगुणकर्मस्वभावः - दया.। who is wonderful - W. G.

*पास आएगा* - **आ भुवत्**। आभिमुख्येन प्राप्नुयात् - वे.। आभिमुख्येन भवेत् - सा.। may be present with us - W. will he come to us - G

*प्रीति के द्वारा* - **ऊती**। रक्षणेन - वे.। तर्पणेन - सा.। रक्षणादिक्रियया सह - दया.। with (what) help - G.

*सदा बढ़ने वाला* - **सदावृधः**। सदा वर्धयिता - वे.। सदा वर्धमानः - सा.। दया.। who is ever augmenting - W. ever waxing - G.

*शक्तिशाली व्यवहार के द्वारा* - **शचिष्ठया वृता**। अतिशयेन कर्मवता भजनेन - वे.। प्रज्ञावत्तमया प्रज्ञासहितम् अनुष्ठीयमानेन केन वर्तनेन कर्मणा च - सा.। अतिशयेन श्रेष्ठया वाचा प्रज्ञया कर्मणा वा

संयुक्तया - दया.। by most effective rite - W. with most mighty company - G.

**कस् त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सद् अन्धसः।**
**दृळ्हा चिद् आरुजे वसु।। २।।**

कः। त्वा। सत्यः। मदानाम्। मंहिष्ठः। मत्सत्। अन्धसः। दृळ्हा। चित्। आऽरुजे। वसु।। २।।

*कौन तुझको सत्यभूत, आनन्दित करने वालों में,*
*अतिशय पूजनीय, आनन्दित करेगा आनन्दरस से।*
*दृढ़ों को भी, ध्वस्त करने के लिये, (शत्रु)निवासों को।। २।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश्वर! आनन्दों में सत्यभूत और अत्यन्त आदरणीय वह कौन सा आनन्दरस है, जिसके पान से तू आनन्दविभोर हो जाता है और मस्ती में आकर दुष्ट, हिंसक आसुरी शक्तियों के मजबूत गढ़ों को भी ध्वस्त कर डालता है। सचमुच वह उपासक जनों के भक्तिरस का आनन्द ही है, जिसका पान करके आनन्दातिरेक में तू इस श्रेष्ठ कर्म को सम्पन्न करता है और सुखसाधनों को उन आसुरी शक्तियों से छीनकर सब प्रजाओं में वितरित कर देता है।

टि. *आनन्दित करने वालों में* - **मदानाम्**। मदहेतुभूतानां मध्ये - वे.। मदानां मादयितृणां मध्ये - सा.। आनन्दानाम् - दया.। of the exhilarating juices - W.

*अत्यधिक पूजनीय* - **मंहिष्ठः**। अतिशयेन महान् - वे.। दया.। पूजनीयः - सा.। most esteemed - W. most liberal - G.

*आनन्दित करेगा आनन्दरस से* - **मत्सत् अन्धसः**। मादयेत् अन्नस्य। वे.। मादयेत् सोमस्य रसः - सा.। आनन्दयेत् अन्नस्य - दया.।

*ध्वस्त करने के लिये* - **आऽरुजे**। रुजो भङ्गे।। आरोक्तुं भङ्क्तुम् - वे.। समन्ताद् भङ्क्तुम् - सा.। समन्ताद् रोगाय - दया.। to demolish - W. to burst open - G.

*(शत्रु)निवासों को* - **वसु**। वसु वसूनि वासस्थानानि।। वस निवास इत्यस्य धातो रूपम् इदम्।। धनानि - वे.। दया.। शत्रूणां धनानि - सा.। treasures (of the foe) - W. wealth - G.

**अभी षु णः सखीनाम् अविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः।। ३।।**

अभि। सु। नः। सखीनाम्। अविता। जरितॄणाम्। शतम्। भवासि। ऊतिऽभिः।। ३।।

*मुख्य रूप से, सुष्ठु, हम मित्रों की,*
*वृद्धि करने वाला, स्तुतिगायकों की।*
*सौ के साथ, हो जा तू, वृद्धियों के।। ३।।*

हे परमेश्वर! हम तेरे मित्र हैं और तेरी स्तुतियों का गान करने वाले हैं। तू असंख्य समृद्धियों, रक्षणों और प्रीति आदिकों के साथ भली प्रकार हमारी वृद्धि, रक्षण आदि करने वाला हो जा।

टि. *मुख्य रूप से हो जा तू* - **अभि भवासि**। अभि भवसि - वे.। अभिमुखो भव - सा.। be present - W. approach us - G.

*वृद्धि करने वाला* - **अविता**। अव रक्षणकान्तिगतिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचन-क्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु (प.पा. ६००)।। रक्षकः - वे.। सा.। protector - G.

*सौ के साथ* - **शतम्।** शत्रूणां शतम् - वे.। शतेन बह्वीभिः सह - सा.।

**अ॒भी न॒ आ व॑वृत्स्व च॒क्रं न वृ॒त्तम् अर्व॑तः।**
**नि॒युद्भि॑श् चर्षणी॒नाम्।। ४।।**

अ॒भि। न॒ः। आ। व॒वृ॒त्स्व॒। च॒क्रम्। न। वृ॒त्तम्। अर्व॑तः। नि॒युत्ऽभि॑ः। च॒र्ष॒णी॒नाम्।। ४।।

*ओर हमारी घूमता आ,*
*पहिये की तरह गोल की, रथ के।,*
*स्तुतियों के द्वारा, मनुष्यों की।। ४।।*

हे परमेश्वर! तू हम मनुष्यों की स्तुतियों के द्वारा प्रसन्न होकर तीव्रगति रथ के गोल पहिये की तरह घूमता हुआ हमारी ओर आ। हे अशरणशरण! जब हम तुझे पुकारें, तो तू अविलम्ब हमारे पास आकर हमारी सुध ले।

टि. *घूमता आ* - **आ ववृत्स्व।** अभ्यावर्तस्व - सा.। return - W. turn thee hitherward - G.

*पहिये की तरह गोल की* - **चक्रं न वृत्तम्।** चक्रम् इव परिवृत्तम् - वे.। वृत्तं वर्तमानं चक्रम् इव - सा.। like a revolving wheel - W. like as a circling wheel - G.

*रथ के* - **अर्वतः।** अश्वान् - वे.। दया.। उपगन्तॄन् अस्मान् - सा.। गाड़ी का - सात.। dependent (upon thy favour) - W. courser's - G.

*स्तुतियों के द्वारा मनुष्यों की* - **नियुद्भिः चर्षणीनाम्।** मनुष्यान् प्रत्यागमनसमर्थैर् अश्वैः - वे.। अस्मदीयानां मनुष्याणां स्तुतिभिः - सा.। वायुगतिभिर् इव वेगैः मनुष्याणाम् - दया.। (induced) by the praises of men - W. attracted by the hymns of men - G.

**प्र॒वता॒ हि क्रतू॒ना॒म् आ हा॑ प॒देव॒ गच्छ॑सि।**
**अभ॑क्षि॒ सूर्ये॒ सचा॑।। ५।। २४।।**

प्र॒ऽवता॑। हि। क्रतू॒नाम्। आ। ह॒। प॒दाऽइ॑व। गच्छ॑सि। अभ॑क्षि। सूर्ये॑। सचा॑।। ५।।

*अनुकूलों की चूँकि यज्ञों के,*
*इधर सचमुच, स्थानों की ओर जैसे, गमन करता है तू।*
*भजता हूँ मैं (तुझको), (इसलिये) सूर्योदय पर (सबके) साथ।। ५।।*

हे परमेश्वर! जिस प्रकार तू यज्ञ आदि शुभ कर्मों के अनुकूल स्थानों की ओर आनन्द की प्राप्ति के लिये और उनकी रक्षा के लिये आता है, उसी प्रकार तू पुकारे जाने पर हम उपासकों की ओर भी आता है। इसलिये सूर्य के उदित होने पर अथवा प्रकाश ज्ञान आदि की प्राप्ति के निमित्त मैं तेरा भजन करता हूँ।

टि. *अनुकूलों की (ओर)* - **प्रवता।** प्रवतानि।। आरम्भेण - वे.। प्रवतः देशान् - सा.। निम्नेन मार्गेण - दया.। in a downward (direction) - W. with swift descent - G.

*स्थानों की ओर जैसे* - **पदाऽइव।** मार्गेणेव - वे.। स्वकीयानि स्थानानीव - सा.। पद्भ्याम् इव - दया.। as if to thine own station - W. G.

*भजता हूँ मैं* - **अभक्षि।** सेव्यते - वे.। भजे - सा.। सेवे - दया.। I glorify thee -W. I share

thee - G.

*सूर्योदय पर (सबके) साथ* - **सूर्ये सचा।** सूर्ये उदिते सह प्रातः - वे.। सूर्येण सह - सा.। सवितरि सत्येन - दया.। together with the sun - W. even with the sun - G.

**सं यत् त इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे। अध त्वे अध सूर्ये।। ६।।**

सम्। यत्। ते। इन्द्र। मन्यवः। सम्। चक्राणि। दधन्विरे। अध। त्वे इति। अध। सूर्ये।। ६।।

*सम्यक् जब तेरे लिये, हे इन्द्र!, स्तुतियां,*

*सम्यक् क्रियमाण कर्म, समर्पित किये जाते हैं।*

*या तो वे तुझे, या सूर्य को प्राप्त होते हैं।। ६।।*

हे जगदीश्वर! जब स्तुतियां और किये जाने वाले कर्म उपासकों के द्वारा तुझे विधि-विधान पूर्वक समर्पित किये जाते हैं, तो वे सब के सब तुझे अथवा तेरे तेज को ही प्राप्त होते हैं।

टि. *स्तुतियां* - **मन्यवः।** क्रोधाः तेजः - वे.। स्तुतयः - सा.। क्रोधादयो व्यवहाराः - दया.। praises - W. (thy) courage - G.

*क्रियमाण कर्म* - **चक्राणि।** बलानि - वे.। चंक्रमणानि कर्माणि - सा.। चक्रवद् वर्तमानानि कर्माणि - दया.। sacred rites - W. (his) wheels - G.

*सम्यक् समर्पित किये जाते हैं* - **सम् दधन्विरे।** सन्दधिरे - वे.। अनुमन्यन्ते - सा.। are addressed - W. together run their course - G.

**उत स्मा हि त्वाम् आहुर् इन् मघवानं शचीपते।**

**दातारम् अविदीधयुम्।। ७।।**

उत। स्म। हि। त्वाम्। आहुः। इत्। मघऽवानम्। शचीऽपते।। दातारम्। अविऽदीधयुम्।। ७।।

*और निश्चय से, तुझको कहते ही हैं,*

*पवित्र ऐश्वर्यों वाला, हे शक्ति के स्वामी।*

*देने वाला, विचारपूर्वक कर्म करने वाला।। ७।।*

हे शक्तिशाली परमेश्वर! विद्वान् लोग तुझे पवित्र ऐश्वर्यों और धनों का स्वामी बताते हैं। वे तुझे दयालु दाता कहकर पुकारते हैं। और वे तुझे सृष्टि के सभी नियमों और कार्य-कलापों को सोच-समझ कर विचारपूर्वक बनाने वाला कहते हैं।

टि. *पवित्र ऐश्वर्यों वाला* - **मघवानम्।** धनिनम् - वे.। सा.। परमपूजितबहुधनम् - दया.।

*हे शक्ति के स्वामी* - **शचीपते।** कर्मपालकेन्द्र - सा.। वाचः प्रज्ञायाः पालक - दया.। Lord of holy acts - W. Lord of Power and Might - G.

*विचारपूर्वक कर्म करने वाला* - **अविदीधयुम्।** ध्यै चिन्तायाम्। दीधयुश् चिन्तकः। विदीधयुः विगतचिन्तनः। अविदीधयुश् चिन्तनशीलस् तम्।। दीप्यमानम् - वे.। विदीधयुर् अदीप्यमानः। न विदीधयुर् अविदीधयुः। तं दीप्यमानम्। सा.। द्यूतादिदुष्टकर्मरहितम् - दया.। the resplendent - W. who pauses not to think - G.

**उत स्मा सद्य इत् परि शशमानाय सुन्वते।**

**पुरू चिन् मंहसे वसु।। ८।।**

उत। स्म। सद्यः। इत्। परि। शशमानाय। सुन्वते। पुरु। चित्। मंहसे। वसु।। ८।।

*और निश्चय से अविलम्ब ही, सब ओर से,*

*स्तोता के लिये, (और) सोता के लिये।*

*बहुतों को भी, बढ़ाता है तू धनों को।। ८।।*

और भी, हे परमेश्वर!, तू निश्चय से स्तुति करने वाले और भक्तिरस रूपी सोम का सवन करने वाले अपने उपासक के लिये शीघ्र ही असंख्य बसाने वाले धनों की सब ओर से वृद्धि करता है।

टि. *स्तोता के लिये* - **शशमानाय।** शंसमानायेत्यर्थः।। भजमानाय - वे.। स्तुतिं कुर्वते। शशमानः शंसमानः (नि. ६.८) इति यास्केनोक्तत्वात्। सा.। प्रशंसिताय - दया.। to him who praises thee - W. to him who toils - G.

*सोता के लिये* - **सुन्वते।** सोमाभिषवं कुर्वते - सा.। who offers thee libations - W.

*बढ़ाता है* - **मंहसे।** महि वृद्धौ।। प्रयच्छसि - वे.। सा.। वर्धयसि - दया.। givest - W. G.

**नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः। न च्यौत्नानि करिष्यतः।। ९।।**

नहि। स्म। ते। शतम्। चन। राधः। वरन्ते। आऽमुरः। न। च्यौत्नानि। करिष्यतः।। ९।।

*नहीं, निश्चय से, तेरे बहुतों को भी,*

*धनों को रोक सकते हैं, मार-काट करने वाले।*

*न बलों को, (हिंसकों की हिंसा) करने वाले के।। ९।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्। जब तू अपने उपासकों को देने पर आता है, तो हिंसा करने वाले दुराचारी दुष्ट जन भी तुझे धन देने से नहीं रोक सकते। वे हिंसकों की हिंसा करने वाले तेरे बलों का भी विरोध नहीं कर सकते, तेरे बलों का सामना नहीं कर सकते।

टि. *नहीं रोक सकते हैं* - **नहि वरन्त।** न वारयन्ति - वे.। सा.। न स्वीकुर्वन्ति - दया.। diminish not - W. not can check - G.

*मार-काट करने वाले* - **आमुरः।** मृ हिंसायाम् इत्यस्मात् क्रैयादिकाद् धातो रूपसिद्धिः।। मूढाः - वे.। बाधका राक्षसादयः - सा.। समन्ताद् रोगकारिणः - दया.। hinderers - G.

*बलों को* - **च्योत्नानि।** बलानि - वे.। सा.। दया.। energies - W. great deeds -G.

**अस्माँ अवन्तु ते शतम् अस्मान् त्सहस्रम् ऊतयः।**
**अस्मान् विश्वा अभिष्टयः।। १०।। २५।।**

अस्मान्। अवन्तु। ते। शतम्। अस्मान्। सहस्रम्। ऊतयः।
अस्मान्। विश्वाः। अभिष्टयः।। १०।।

*हमको बढ़ाएं तेरी सैंकड़ों,*

*हमको हजारों वृद्धियां (तेरी)।*

*हमको (बढ़ाएं) सब प्रेरणाएं।। १०।।*

हे परमेश्वर! इस जगत् में जो तेरी सैंकड़ों और हजारों की संख्या में वृद्धियां, प्रीतियां, संरक्षण

आदि हैं, वे सब ओर से हमारी अभिवृद्धि और हमारा संरक्षण करें। हे प्रभो! जो तेरी असंख्य प्रेरणाएं और शुभ कामनाएं हैं, वे भी हमें सब ओर से बढ़ाएं। हे जगदीश्वर! तू ही हमारा संरक्षक और अभिभावक है। तेरे दर को छोड़कर हम और किसकी शरण में जाएं।

टि. *वृद्धियां* – **ऊतयः**। रक्षणानि – वे.। रक्षाः – सा.। protections - W. assistance - G.

*प्रेरणाएं* – **अभिष्टयः**। अभ्येषणानि – वे.। अभिगमनानि – सा.। इष्टयः इच्छाः – दया.। desires (be for our defence) - W. aids - G.

**अ॒स्माँ इ॒हा वृ॑णीष्व स॒ख्याय॑ स्व॒स्तये॑।**
**म॒हो रा॒ये दि॒वित्म॑ते।। ११।।**

अ॒स्मान्। इ॒ह। वृ॒णी॒ष्व॒। स॒ख्याय॑। स्व॒स्तये॑। म॒हः। रा॒ये। दि॒वित्म॑ते।। ११।।

*हमको यहाँ, अपना बना ले तू,*
*मित्रता के लिये, कल्याण के लिये।*
*पवित्र धन के लिये, दीप्तिमान् के लिये।। ११।।*

हे परमेश्वर! तू इस जीवन में हमारा वरण कर ले, हमें अपना बना ले। तू सच्चा मित्र है। तू हमारा मित्र बन जा और हमें अपना मित्र बना ले। तू हमारे कल्याण के लिये हमें अपना ले। तू पवित्र और ज्ञान आदि प्रकाश से युक्त बाह्य और आभ्यन्तर धन देने के लिये हमें अपना ले।

टि. *यहाँ* – **इह**। अस्मिन् यज्ञे – सा.। संसारे राज्ये वा – दया.। on this occasion - W. in this place - G.

*अपना बना ले* – **वृणीष्व**। आवृणीष्व – वे.। संभजस्व – सा.। स्वीकुर्याः – दया.। select us - W. do thou elect - G.

*कल्याण के लिये* – **स्वस्तये**। अविनाशाय – वे.। सा.। सुखाय – सा.। for our welfare - W. for prosperity - G.

*पवित्र धन के लिये* – **महः राये**। महान् धनाय – वे.। महते धनाय – सा.। दया.। for vast riches - W. for great opulence - G.

*दीप्तिमान् के लिये* – **दिवित्मते**। दीप्तिमते – वे.। सा.। विद्याधर्मन्यायप्रकाशिताय – दया.। for splended (riches) - W. for celestial (opulence) - G.

**अ॒स्माँ अ॑विड्ढि वि॒श्वहेन्द्र॑ रा॒या परी॑णसा।**
**अ॒स्मान् विश्वा॑भिर् ऊ॒तिभिः॑।। १२।।**

अ॒स्मान्। अ॒वि॒ड्ढि॒। वि॒श्वहा॑। इन्द्र॑। रा॒या। परी॑णसा। अ॒स्मान्। विश्वा॑भिः। ऊ॒तिऽभिः॑।। १२।।

*हमको बढ़ा तू, सभी दिनों में,*
*हे इन्द्र! धन से, सर्वत्र व्याप्त से।*
*हमको (बढ़ा तू) सभी समृद्धियों से।। १२।।*

हे सभी ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तू हमें सदा सर्वत्र गति करने वाले दान में दिये जाने योग्य पवित्र धनों से बढ़ा। तू हमें सब प्रकार की सर्वतोमुखी समृद्धियों से बढ़ा। तू हमें निःश्रेयस प्रदान करने

वाले आत्मिक धनों से बढ़ा।

टि. *बढ़ा तू* - **अविड्ढि**। रक्ष - वे.। सा.। प्रवेशय - दया.। favour us - W. G.

*सभी दिनों में* - **विश्वहा**। सर्वदा - वे.। सर्वेष्वहस्सु - सा.। सर्वाणि दिनानि - दया.।

*सर्वत्र व्याप्त से* - **परीणसा**। परितो नद्धेन - वे.। महता - सा.। बहुविधेन - दया.। with infinite (riches) - W. with overflowing store (of wealth) - G.

*समृद्धियों से* - **ऊतिभिः**। रक्षणैः - वे.। रक्षाभिः - सा.। रक्षादिभिः क्रियाभिः - दया.। with all protections - W. with all thy succours - G.

**अ॒स्मभ्यं॒ ताँ अपा॑ वृधि व्र॒जाँ अस्ते॑व॒ गोम॑तः।**
**नवा॑भिर् इन्द्रो॒तिभिः॑।। १३।।**

अ॒स्मभ्य॑म्। तान्। अप॑। वृ॒धि॒। व्र॒जान्। अस्ता॑ऽइव। गोऽम॑तः। नवा॑भिः। इ॒न्द्र॒। ऊ॒तिऽभिः॑।। १३।।

*हमारे लिये उनको, उद्घाटित कर दे तू,*
*गोष्ठों को, शरास्ता की तरह, गौओं वालों को।*
*नवीनों के साथ, हे इन्द्र!, समृद्धियों के साथ।। १३।।*

हे ऐश्वर्यशाली परमेश्वर! तू हमारे लिये बन्द पड़ी ज्ञान की कोठड़ियों को अपनी नवीन समृद्धियों के साथ इस प्रकार खोल दे, जिस प्रकार कोई धनुर्धर योद्धा अपने वाणों से प्रहार करके शत्रु के पशुओं के बाड़ों को खोलकर उन्हें प्राप्त कर लेता है। हम अपने जीवन के कल्याण के लिये तेरे ज्ञान को प्राप्त करना चाहते हैं।

टि. *उद्घाटित कर दे तू* - **अप वृधि**। उद्घाटय - सा.। open - W. G.

*गोष्ठों को* - **व्रजान्**। गोनिवासान् - सा.। व्रजन्ति गावो येषु तान् - दया.। pastures - W. the stables - G.

*शरास्ता की तरह* - **अस्ताऽइव**। शरान् इव अस्ता - वे.। क्षेप्ता शूर इव - सा.। like a warrior - W. like an archer - G.

*गौओं वालों को* - **गोमतः**। गोभिः सहितन् - वे.। गोभिर् युक्तान् - सा.। filled with cattle - W. filled with kine - G.

*समृद्धियों के साथ* - **ऊतिभिः**। मरुद्भिः सह - वे.। रक्षाभिः - सा.।

**अ॒स्माकं॑ धृष्णु॒या रथो॑ द्यु॒माँ इ॒न्द्रान॑पच्युतः।**
**ग॒व्युर् अ॑श्व॒युर् ई॑यते।। १४।।**

अ॒स्माक॑म्। धृ॒ष्णु॒ऽया। रथः॑। द्यु॒ऽमान्। इ॒न्द्र॒। अन॑पऽच्युतः। ग॒व्युः। अ॒श्व॒ऽयुः। ई॒य॒ते॒।। १४।।

*हमारा शत्रुधर्षक (विजय)रथ,*
*दीप्तिमान्, हे इन्द्र!, सुदृढ़।*
*गोविजेता, अश्वविजेता, गमन करे (सर्वत्र)।। १४।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी प्रभो! हमारा यह शरीररूपी विजयरथ चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को अभिभूत करने वाला, तेजस्वी और सुदृढ़ हो। यह उत्तम ज्ञानों और

बलों का संचय करता हुआ और विजय प्राप्त कराता हुआ सर्वत्र गमन करे।

टि. *शत्रुधर्षक* - **धृष्णुया**। धृष्णुः - वे.। शत्रूणां धर्षकः - सा.। दृढत्वेन युक्तः - दया.। foe-repelling - W. boldly - G.

*दीप्तिमान्* - **द्युमान्**। दीप्तिमान् - वे.। सा.। endued with splendour - G.

*सुदृढ़* - **अनपच्युतः**। शत्रुभिः अनपच्युतः - वे.। विनाशरहितः - सा.। अनपच्युतः अपचय-रहितः - दया.। unfailing - W. never repulsed - G.

*गोविजेता* - **गव्युः**। गाः इच्छन् - वे.। गोमान् - सा.। गव्युः बहवो गावो विद्यन्ते यस्मिन् सः - दया.। winning for us kine - G.

*अश्वविजेता* - **अश्वयुः**। अश्वान् इच्छन् - वे.। अश्ववान् - सा.। बह्वश्वबलयुक्तः - दया.।

*गमन करे* - **ईयते**। गच्छति - वे.। दया.। सर्वत्र गच्छतु - सा.।

**अस्माकम् उत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य।**
**वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि।। १५।। २६।।**

अस्माकम्। उत्ऽतमम्। कृधि। श्रवः। देवेषु। सूर्य। वर्षिष्ठम्। द्याम्ऽइव। उपरि।। १५।।

*हमारे उच्चतम कर दे तू,*
*यश को देवों में, हे प्रेरक।*
*अतिशय वर्षक द्यौ की तरह, ऊपर।। १५।।*

हे सर्वप्रेरक परमेश्वर! तू दान देने वालों और ज्ञान आदि से प्रकाशमान जनों में हमारे यश को इस प्रकार सबसे ऊँचा कर दे, जिस प्रकार तूने सुखों और जलों की प्रभूत वर्षा करने वाले द्युलोक को सबसे ऊपर स्थापित किया हुआ है। हम दान, दिव्यता आदि गुणों वाले देव बनें और दूसरों के काम आकर उच्चतम स्थान प्राप्त करें।

टि. *उच्चतम* - **उत्तमम्**। उत्कृष्टम् - सा.। अति श्रेष्ठम् - दया.। exalted - W. the most excellent - G.

*यश को* - **श्रवः**। अन्नम् - वे.। यशः - सा.। अन्नादिकं श्रवणं वा - दया.। fame - W. G.

*देवों में* - **देवेषु**। द्योतमानेषु वह्न्यादिषु मध्ये - सा.। विद्वत्सु - दया.।

*हे प्रेरक* - **सूर्य**। हे सुवीर्य - वे.। हे सर्वस्य प्रेरकेन्द्र हे आदित्य वा - सा.। Sūrya - W.

*अतिशय वर्षक* - **वर्षिष्ठम्**। वृद्धतमम् - वे.। अतिशयेन प्रवृद्धं सेचनसमर्थं वा - सा.। अतिशयेन वृद्धम् - दया.। the shedder of most copious rain - W. most lofty - G.

## सूक्त ३२

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-२२ इन्द्रः, २३,२४ इन्द्राश्वौ। छन्दः - गायत्री। चतुर्विंशत्यृचं सूक्तम्।

**आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकम् अर्धम् आ गहि।**
**महान् महीभिर् ऊतिभिः।। १।।**

आ। तु। नः। इन्द्र। वृत्रऽहन्। अस्माकम्। अर्धम्। आ। गहि। महान्। महीभिः। ऊतिऽभिः।। १।।

*इधर शीघ्र हमारे, हे इन्द्र!, हे वृत्रहन्ता!,*

*हमारे पास आ जा।*

*महान् (तू), महान् समृद्धियों के साथ।। १।।*

हे ज्ञान, प्रकाश आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आवरक शक्तियों का विनाश करने वाले परमेश्वर! तू महान् है। तू शीघ्र अपनी महान् समृद्धियों के साथ आकर हमारे हृदयों में निवास कर।

टि. *शीघ्र* - तु। क्षिप्रम् - वे.। सा.। quickly - W.

*पास* - **अर्धम्।** समीपम् - सा.। निवासदेशं देवयजनदेशं वा - मही. (यजु. ३३.६५)। वर्धनम् - दया.। to our side - G.

*महान् समृद्धियों के साथ* - **महीभिर् ऊतिभिः।** महतीभी रक्षाभिः - सा.। महतीभिः रक्षादिभिः - दया.। Mighty One with thy mighty aids - G.

**भृमिंश् चिद् घासि तूतुंजिर् आ चिंत्र चित्रिणीष्वा। चित्रं कृंणोष्यूतयें।। २।।**

भृमिंः। चित्। घ। असि। तूतुंजिः। आ। चित्र। चित्रिणीषु। आ। चित्रम्। कृणोषि। ऊतयें।। २।।

*शीघ्रगामी भी निश्चय से है तू, शीघ्रकारी भी,*

*सब ओर से, हे विलक्षण!, विलक्षण प्रजाओं में, सब ओर।*

*विलक्षण (कर्म को) करता है तू, वृद्धि के लिये।। २।।*

हे पूज्य परमेश्वर! तू स्वयं विलक्षण है। तेरे कर्म विलक्षण हैं। तेरा यह जगत् विलक्षण है। तेरी प्रजाएं भी विलक्षण हैं। तू शीघ्रगामी भी है और शीघ्रकारी भी है। तू वायु और मन से भी तीव्र गति वाला है। इन्द्रियां तुझे पकड़ नहीं सकतीं। वस्तुतः तू सर्वत्र पूर्व से ही विद्यमान है (मनसो जवीयः, नैनद् देवा आप्नुवन् पूर्वम् अर्षत् - ईश. ४)। तू अपनी विचित्र प्रजाओं में उनकी सब ओर से समृद्धि और रक्षा के लिये विचित्र कार्यों का सम्पादन करता है। तेरी महिमा का कोई पारावार नहीं पा सकता।

टि. *शीघ्रगामी* - **भृमिः।** भ्रमणशीलः - वे.। सा.। दया.। wanderer - W. swift - G.

*शीघ्रकारी* - **तूतुजिः।** हिंसकः - वे.। अभीष्टप्रदाता - सा.। शीघ्रकारी - दया.। granter of desires - W. impetuous - G.

*हे विलक्षण* - **चित्र।** चायनीय पूजनीयेन्द्र - सा.। आश्चर्यगुणकर्मस्वभाव - दया.।

*विलक्षण प्रजाओं में* - **चित्रिणीषु।** चित्रिणीषु प्रजासु - वे.। चित्रकर्मयुक्तास्वस्मद्रूपासु प्रजासु - सा.। amid the well-dressed folk - G.

*विलक्षण (कर्म को)* - **चित्रम्।** चित्रं धनम् - वे.। चायनीयं धनम् - सा.। what is marvellous - W. marvels - G.

**दभ्रेभिंश् चिच् छशींयांसं हंसि व्राधंन्तम् ओजंसा।**
**सखिंभिर्-ये त्वे सचां।। ३।।**

दभ्रेभिंः। चित्। शशींयांसम्। हंसि। व्राधंन्तम्। ओजंसा। सखिंऽभिः। ये। त्वे इतिं। सचां।। ३।।

*निर्बलों के द्वारा भी, उल्लङ्घन करने वाले को,*
*मरवा डालता है तू, हिंसक को, बल से अपने।*
*मित्रों के द्वारा (अपने), जो (रहते हैं) तेरे साथ।। ३।।*

हे जगदीश्वर! जो मनुष्य तेरे नियमों का उल्लङ्घन करता है और जो निर्बलों और निर्दोषों की हिंसा करता है, उसे तू अपने ओज से अपने आश्रित निर्बल मित्रों के द्वारा ही मरवा डालता है। करने वाला तो तू है, शेष सब तो निमित्तमात्र हैं। मयैवैते निहताः पूर्वम् एव। निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् गीता. ११.३३।।

टि. *निर्बलों के द्वारा* - **दभ्रेभिः**। क्षुद्रैः - वे.। अल्पैः - सा.। अल्पैर् ह्रस्वैर् वा -दया.। with the humble - W. with the weak - G.

*उल्लङ्घन करने वाले को* - **शशीयांसम्**। अभिभवन्तम् - वे.। शश प्लुतगतौ। उत्प्लवमानम् - सा.। धर्मम् उत्प्लवमानम् - दया.। fierce - W.

*हिंसक को* - **व्राधन्तम्**। वर्धमानम् - वे.। महान्तम् अपि शत्रुम् - सा.। व्याधम् इव प्रजाहिंसकम् - दया.। assailing foe - W.

*जो (रहते हैं) तेरे साथ* - **ये त्वे सचा**। ये त्वयि सह वसन्ति - वे.। सा.।

**वयम् इन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः।**
**अस्माँअस्माँ इद् उद् अव।। ४।।**

वयम्। इन्द्र। त्वे इति। सचा। वयम्। त्वा। अभि। नोनुमः। अस्मान्ऽअस्मान्। इत्। उत्। अव।। ४।।

*हम, हे इन्द्र!, तेरे साथ हैं,*
*हम तेरी सर्वथा स्तुति करते हैं।*
*हम सबको ही, उन्नत कर दे तू।। ४।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! हम तेरे साथ हैं। हम तेरी न्यायव्यवस्था के पक्षधर हैं। हम तेरे नियमों का पालन करने वाले और तेरी आज्ञाओं को मानने वाले हैं। हम सदा ही तेरी स्तुतियां करने वाले और तुझे नमस्कार करने वाले हैं। तू हम सबको उन्नत कर, हमारी अभिवृद्धि कर, हमारी रक्षा कर और हमें प्रसन्न कर।

टि. *तेरी सर्वथा स्तुति करते हैं* - **त्वा अभि नोनुमः**। त्वाम् अभि स्तुमः - वे.। अतिशयेनाभिष्टुमः - सा.। भृशं नताः स्मः - दया.। we zealously glorify thee - W. to thee we sing aloud our songs - G.

*हम सबको ही उन्नत कर दे तू* - **अस्मान्ऽअस्मान् इत् उत् अव**। अस्मान् एव त्वं सर्वदा रक्ष - वे.। सर्वान् अस्मान् एव उत्कर्षेण रक्ष - सा.। do verily protect us all - W. help and defend us, even us - G.

**स नश् चित्राभिर् अद्रिवो ऽनवद्याभिर् ऊतिभिः।**
**अनाधृष्टाभिर् आ गहि।। ५।। २७।।**

सः। नः। चित्राभिः। अद्रिऽवः। अनवद्याभिः। ऊतिऽभिः।

अनाधृष्टाभिः। आ। गहि॥ ५॥

*वह (तू) हमारे पास विलक्षणों के साथ, हे वज्रवान्!,*
*प्रशंसनीयों के साथ, समृद्धियों के साथ।*
*धर्षित न होने वालियों के साथ, आ जा॥ ५॥*

हे दण्डव्यवस्थारूपी वज्र को अपने अधीन रखने वाले परमेश्वर! तू दुष्ट हिंसक जनों के द्वारा अभिभूत न की जा सकने वाली, प्रशंसा के योग्य, अनोखी समृद्धियों, रक्षाओं, प्रीतियों, कामनाओं आदि के साथ हमारे पास आ।

टि. *विलक्षणों के साथ* - **चित्राभिः।** चित्रैः मरुद्भिः - वे.। चायनीयाभिः - सा.। अद्भुताभिः - दया.। with wondrous - W. G.

*हे वज्रवान्!* - **अद्रिवः।** हे वज्रिन् - वे.। सा.। अद्रयो मेघा विद्यन्ते सम्बन्धे यस्य सूर्यस्य तद्वद् वर्तमान - दया.। Wielder of the thunderbolt - W. O Caster of the Stone - G. O wielder of the punitive justice - Satya.

*प्रशंसनीयों के साथ* - **अनवद्याभिः।** अवद्यरहितैः - वे.। अनिन्दिताभिः - सा.। प्रशंसनीयैः - दया.। with irreproachable - W. blameless - G.

*धर्षित न होने वालियों के साथ* - **अनाधृष्टाभिः।** शत्रुभिर् अनाधृष्टैः - वे.। शत्रुभिर् अप्रधर्षितैः - सा.। शत्रुभिर् धर्षितुम् अयोग्याभिः - दया.। with irresistible - W. G.

**भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमतः।**
**युजो वाजाय घृष्वये॥ ६॥**

भूयामो इति। सु। त्वाऽवतः। सखायः। इन्द्र। गोऽमतः। युजः। वाजाय। घृष्वये॥ ६॥

*हो जाएं हम सुष्ठु, तेरे जैसे के,*
*मित्र, हे इन्द्र!, गौओं वाले के।*
*सहयोगी, बल के लिये, संघर्षशील के लिये॥ ६॥*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश्वर! हम गौ आदि उत्तम पशुओं, पृथिवी, वाणी, ज्ञानरश्मियों आदि के तुझ जैसे स्वामी के मित्र हो जाएं। हम बाह्य और आभ्यन्तर शत्रुओं के साथ संघर्ष करने वाले बल को तुझसे प्राप्त करने के लिये तेरे सहयोगी बन जाएं।

टि. *हो जाएं हम* - **भूयामो।** भूयाम - वे.। भवामैव - सा.। भवेम। अत्र वा च्छन्दसीत्यस्योत्वम् - दया.। may we be - W. G.

*गौओं वाले के* - **गोमतः।** गोभिर् युक्तस्य - सा.। possessed of cattle -W. G. of the possessor of wisdom - Satya.

*सहयोगी* - **युजः।** सङ्गताः - वे.। संयुक्ताः - सा.। allied - W. comrades - G.

*बल के लिये* - **वाजाय।** अन्नाय - वे.। सा.। विज्ञानायान्नाय वा - दया.। food - W. for lively - G.

*संघर्षशील के लिये* - **घृष्वये।** शत्रूणां घर्षणशीलाय - वे.। महते - सा.। abundant -W. for

energy - G.

**त्वं ह्येकु ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमतः।**
**स नो यन्धि महीम् इषम्।। ७।।**

त्वम्। हि। एकः। ईशिषे। इन्द्र। वाजस्य। गोऽमतः। सः। नः। यन्धि। महीम्। इषम्।। ७।।

*तू चूँकि अकेला, शासन करता है,*
*हे इन्द्र!, ऐश्वर्य पर, गौओं वाले पर।*
*वह हमें प्रदान कर तू, महान् प्रेरणा को।। ७।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तू चूँकि अकेला ही गौ आदि पशु, भूमि, वाणी, ज्ञानरश्मियों आदि से सम्बन्धित सभी ऐश्वर्यों पर शासन करता है, इन सबका स्वामी है, इसलिये तू हमें अपनी महान् प्रेरणाएं प्रदान कर, ताकि हम उत्साह के साथ इन सब पदार्थों को प्राप्त कर सकें।

टि. *तू शासन करता है* - **त्वम् ईशिषे।** त्वं प्रभवसि - सा.। thou art lord over - W. G.

*ऐश्वर्य पर गौओं वाले पर* - **वाजस्य गोमतः।** गोभिर् युक्तस्यान्नस्य - सा.। विज्ञानादियुक्तस्य बहुविधपृथिव्यादिसहितस्य - दया.। food combined with cattle - W. of strength that comes from kine - G.

*प्रदान कर तू* - **यन्धि।** यम उपरमे।। प्रयच्छ - सा.। thou grant us - W. G.

*महान् प्रेरणा को* - **महीम् इषम्।** महीं महतीम् इषम् अन्नम् - सा.। ample food - W. G.

**न त्वा वरन्ते अन्यथा यद् दित्ससि स्तुतो मघम्।**
**स्तोतृभ्यं इन्द्र गिर्वणः।। ८।।**

न। त्वा। वरन्ते। अन्यथा। यत्। दित्ससि। स्तुतः। मघम्। स्तोतृऽभ्यः। इन्द्र। गिर्वणः।। ८।।

*नहीं तुझको रोकते हैं, अन्यथा (करने के लिये),*
*जब देना चाहता है तू, स्तुति किया हुआ, धन को।*
*स्तोताओं के लिये, हे इन्द्र!, हे स्तुतियों से प्यार करने वाले।। ८।।*

हे स्तुतियों से प्यार करने वाले ऐश्वर्यशाली प्रभो! जब स्तुतियां करने वाले उपासक तेरी स्तुतियां करते हैं और तू उन स्तुतियों से प्रसन्न होकर उन्हें पवित्र धन देना चाहता है, तो मनुष्य ऐसा करने से तुझे रोक नहीं सकते। वे तुझे तेरी इच्छा के विरुद्ध नहीं चला सकते। जब तू प्रसन्न होकर देना चाहता है, तो अवश्य देता है। तुझे कोई रोक नहीं सकता।

टि. *नहीं रोकते हैं अन्यथा (करने के लिये)* - **न वरन्ते अन्यथा।** कर्तुम् इति शेषः।। न वारयन्ति अन्यथा कर्तुम् - वे.। न निवारयन्ति प्रकारान्तरेण - सा.। न वरन्ते स्वीकुर्वन्ति अन्यथा - दया.। none change thy purpose - W. They turn thee not another way - G.

*धन को* - **मघम्।** धनम् - वे.। सा.। wealth - G.

*हे स्तुतियों से प्यार करने वाले* - **गिर्वणः।** हे गिरां संभक्तः - सा.। गिर्वणः गीर्भिः सत्कृत - दया.। object of laudation - W. Lover of th Song - G.

**अभि त्वा गोतमा गिरानूषत प्र दावने।**

**इन्द्र वाजाय घृष्वये।। ९।।**

अभि। त्वा। गोतमाः। गिरा। अनूषत। प्र। दावने। इन्द्र। वाजाय। घृष्वये।। ९।।

*सर्वथा तेरी, उत्तम वाणियों वाले, वाणी से,*

*स्तुति करते हैं, प्रकर्ष से देने के लिये।*

*हे इन्द्र!, बल के लिये, संघर्षशील के लिये।। ९।।*

हे ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर! उत्तम वाणियों वाले ज्ञानी जन अपनी वाणियों से तेरी प्रभूत स्तुतियां करते हैं, ताकि तू अपने लौकिक और अलौकिक धन उनको प्रदान करता रहे। वे अपने जीवन में आने वाले संघर्षों से जूझने के लिये बल की प्राप्ति के हेतु सदा तेरी स्तुतियां करते हैं।

टि. *उत्तम वाणियों वाले* - **गोतमाः**। एतन्नामका ऋषयः - सा.। प्रशस्ता गौर् वाग् विद्यते येषां ते। गौर् इति वाङ्नाम (निघ. १.११)। दया.।

*स्तुति करते हैं* - **अनूषत**। अस्तुवन् - वे.। स्तुवन्ति - सा.। glorify thee - W.

*प्रकर्ष से देने के लिये* - **प्र दावने**। प्रकर्षेण दानाय - वे.। प्रकर्षेण धनदानार्थम् - सा.। that thou mayest grant wealth - W. that thou mayest give - G.

**प्र ते वोचाम वीर्या३ या मन्दसान आरुजः।**

**पुरो दासीर् अभीत्य।। १०।। २८।।**

प्र। ते। वोचाम। वीर्या। याः। मन्दसानः। आ। अरुजः। पुरः। दासीः। अभिऽइत्य।। १०।।

*प्रकर्ष से तेरे, बखान करते हैं हम वीरकर्मों का,*

*जिनको, प्रसन्न होता हुआ, सर्वतः भग्न कर डालता है तू।*

*गढ़ों को असुरों के, आक्रमण करके।। १०।।*

हे परमेश्वर! हम तेरे जिन वीरकर्मों का प्रायः बखान करते रहते हैं, उनमें से एक यह है, कि तू भक्तिरस रूपी सोम के आनन्द में दुष्ट आसुरी शक्तियों के गढ़ों पर आक्रमण करके उन्हें ध्वस्त कर डालता है। दुष्ट आवरक शक्तियां जब अन्न, जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों को अपने गुप्त स्थानों में छुपाकर बैठ जाती हैं, तो तू अपने आक्रमण से उन गुप्त स्थानों को ध्वस्त करके उन सुखसाधनों को वहाँ से लेकर सब में वितरित कर देता है।

टि. *वीरकर्मों का* - **वीर्या**। वीर्याणि - वे.। सा.। बलपराक्रमयुक्तानि कर्माणि - दया.। prowess - W. hero deeds - G.

*सर्वतः भग्न कर डालता है तू* - **आ अरुजः**। सर्वतो भग्नवान् असि - वे.। समन्ताद् अभाङ्क्षीः - सा.। thou hast demolished - W. thou brakest down - G.

*गढ़ों को असुरों के* - **पुरः दासीः**। पुरः दाससम्बन्धिनीः - वे.। दासीः क्षेप्तुर् असुरस्य स्वभूता याः पुरो यानि नगराणि - सा.। the servile cities - W. Dāsa forts - G.

*आक्रमण करके* - **अभिऽइत्य**। अभिगम्य - वे.। सा.। अभितः प्राप्य - दया.। having gone against them - W. attacking them - G.

**ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौंस्या। सुतेष्विन्द्र गिर्वणः।। ११।।**

ता। ते। गृणन्ति। वेधसः। यानि। चकर्थ। पौंस्या। सुतेषु। इन्द्र। गिर्वणः।। ११।।

*उनको वे बखानते हैं ज्ञानी जन,*
*जिनको करता है तू, पौरुषों को।*
*सोम के आनन्दों में, हे इन्द्र! स्तुतिप्रिय।। ११।।*

हे स्तुतियों से प्यार करने वाले ऐश्वर्यों के स्वामी प्रभो! भक्तिरसरूपी सोम से आनन्दविभोर होकर जो भी मर्दानगी के कार्य तू करता है, ज्ञानी जन उन सब का बखान करते हैं, उन सबकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। तेरे सभी कार्य उचित और प्रशंसा के योग्य हैं। तू जो कुछ भी करता है वह सब सत्यनियमों के अनुसार करता है और हमारी भलाई के लिये करता है।

टि. *बखानते हैं* - **गृणन्ति।** कीर्तयन्ति - सा.। celebrate - W. sing - G.

*ज्ञानी जन* - **वेधसः।** स्तोतारः - वे.। प्राज्ञाः - सा.। मेधाविनः - दया.। the pious - W. the sages - G.

*पौरुषों को* - **पौंस्या।** वीर्याणि - वे.। बलानि - सा.। पुंभ्यो हितानि बलानि - दया.। manly exploits - W. manly deeds - G.

*सोम के आनन्दों में* - **सुतेषु।** यज्ञेषु - वे.। अभिषुतेषु सोमेषु - सा.। निष्पन्नेषु पदार्थेषु - दया.। when the juices (of the Soma) are effused - W. when the Soma flowed - G.

*स्तुतिप्रिय* - **गिर्वणः।** गिरां स्तुतिरूपाणां वाचां संभक्ता - सा.। गीर्भिः स्तुत - दया.। object of laudation - W. Lover of the Song - G.

**अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः। ऐषु धा वीरवद् यशः।। १२।।**

अवीवृधन्त। गोतमाः। इन्द्र। त्वे इति। स्तोमऽवाहसः। आ। एषु। धाः। वीरऽवत्। यशः।। १२।।

*बढ़ाते हैं उत्तम वाणियों वाले (तुझको),*
*हे इन्द्र!, तेरे लिये स्तोत्रों को लाने वाले।*
*सर्वतः इनमें स्थापित कर तू, वीरों से युक्त यश को।। १२।।*

हे ऐश्वर्यशाली प्रभो! स्तुतियां समर्पित करने वाले, पवित्र वाणियों वाले ज्ञानी जन तुझे अपनी स्तुतियों से बढ़ाते हैं, प्रजाओं में तेरी महिमा की स्थापना करते हैं। तू इनमें वीर सन्ततियों से युक्त यश को स्थापित कर। इनकी सन्तानें वीर बनें और अंपने शुभ कर्मों एवं परोपकार के द्वारा इनके यश को सर्वत्र फैलाएं।

टि. *बढ़ाते हैं* - **अवीवृधन्त।** वर्धयन्तु - वे.। दया.। स्तोत्रैर् वर्धयन्ति - सा.। exalt thee - W. have grown strong - G.

*उत्तम वाणियों वाले* - **गोतमाः।** गोतमा ऋषयः - सा.। विद्वांसः - दया.। the most enlightened sages - Satya.

*तेरे लिये स्तोत्रों को लाने वाले* - **त्वे स्तोमवाहसः।** त्वयि स्तोमानां वोढारः - वे.। सा.। त्वयि प्रशंसाप्रापकाः - दया.। offerers of praise - W. who bring thec praises - G.

**यच् चिद् धि शश्वताम् असीन्द्र साधारणस् त्वम्।**

**तं त्वा वयं हवामहे।। १३।।**

यत्। चित्। हि। शश्वताम्। असि। इन्द्र। साधारणः। त्वम्। तम्। त्वा। वयम्। हवामहे।। १३।।

*यद्यपि निश्चय से सबका है,*

*हे इन्द्र!, सांझा तू।*

*उस तुझको हम बुलाते हैं।। १३।।*

यद्यपि हे परमेश्वर! तू सबका सांझा पिता है, सबको ही उत्पन्न करने वाला और सबका ही पालन-पोषण एवं संरक्षण करने वाला है, तथापि हम तुझे इस प्रकार पुकारते हैं जैसे मानो तू केवल हमारा ही हो।

टि. *सबका* - **शश्वताम्**। बहूनाम् - वे.। बहूनाम्, सर्वेषां यजमानानाम् - सा.। अनादिभूतानां मध्ये - दया.। of (all) worshippers - W. even of all - G.

*सांझा* - **साधारणः**। सामान्यः - सा.। सामान्येन व्याप्तः - दया.। the common property - W. the general treasure - G.

*हम बुलाते हैं* - **वयम् हवामहे**। वयम् आह्वयामः - सा.। स्तूमह आश्रयेम - दया.। we invoke thee (such) as thou art (for ourselves) - W. therefore, do we invocate - G.

**अर्वाचीनो वसो भवास्मे सु मत्स्वान्धसः। सोमानाम् इन्द्र सोमपाः।। १४।।**

अर्वाचीनः। वसो इति। भव। अस्मे इति। सु। मत्स्व। अन्धसः। सोमानाम्। इन्द्र। सोमऽपाः।। १४।।

*इधर अभिमुख, हे बसाने वाले!, हो जा तू,*

*हमारे, सुष्ठु आनन्द ले तू अन्न का।*

*सोमों के, हे इन्द्र!, हे सोमपा।। १४।।*

हे सबको बसाने वाले जगदीश्वर! तू हमारी ओर आ। हे भक्तिरस रूपी सोम का पान करने वाले परमेश्वर! तू हमारे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त कर।

टि. *इधर अभिमुख हो जा तू हमारे* - **अर्वाचीनः भव अस्मे**। इतोमुखः भव अस्मासु - वे.। अस्मासु अभिमुखो भव - सा.। अर्वाचीनः इदानीन्तनः - दया.। be present with us - W. turn to us - G.

*हे बसाने वाले* - **वसो**। हे वासयितः - वे.। हे यज्ञनिवासक - सा.। वासकर्तः - दया.। Giver of dwellings - W. Excellent - G.

*आनन्द ले तू अन्न का* - **मत्स्व अन्धसः**। तृप्यस्व सोमेन - वे.। अन्नेन माद्य - सा.। आनन्द अन्नादेः - दया.। be exhilarated by the beverage - W. glad thee with the juice - G

*सोमों के हे सोमपा* - **सोमानां सोमपाः**। हे सोमस्य पातः - वे.। सा.। drinker of the Soma - W. Soma-drinker - G.

**अस्माकं त्वा मतीनाम् आ स्तोम इन्द्र यच्छतु।**

**अर्वाग् आ वर्तया हरी।। १५।।**

अस्माकम्। त्वा। मतीनाम्। आ। स्तोमः। इन्द्र। यच्छतु। अर्वाग्। आ। वर्तय। हरी इति।। १५।।

*हमारा, तुझको, स्तुति करने वालों का,*
*सर्वतः स्तोत्र, हे इन्द्र!, वश में कर लेवे।*
*इस ओर मोड़ ला तू, अश्वों को (अपने)।। १५।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! हम स्तुति करने वालों का स्तोत्र हमारे द्वारा इतने सुन्दर ढंग से गाया जाए, कि आप उससे मुग्ध होकर सब ओर से हमारे वश में हो जाएं। आप अपने बलों को, अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों को, हमारे हित के लिये हमारी ओर प्रेरित करें।

टि. *स्तुति करने वालों का* - **मतीनाम्**। स्तुतीनाम् - वे.। मतीनां स्तोतृणाम्। मन्यतेः कर्तरि क्तिच्। सा.। मननशीलानां मनुष्याणाम् - दया.।(of us) who are devoted to thee - W. who think on thee - G.

*सर्वतः वश में कर लेवे* - **आ यच्छतु**। अस्मासु नियच्छतु - सा.। निगृह्णातु - दया.।may give (thee) to us - W. may bring thee near to us - G.

*इस ओर मोड़ ला तू* - **अर्वाग् आ वर्तय**। इतोमुखम् आ वर्तय - वे.। अस्मदभिमुखं यथा भवति तथा परिवर्तनं कुरु - सा.।guide thy (horses) towards us - W. turn hitherward - G.

**पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश् च नः।**
**वधूयुरिव योषणाम्।। १६।। २९।।**

पुरोळाशम्। च। नः। घसः। जोषयासे। गिरः। च। नः। वधूयुःऽइव। योषणाम्।। १६।।

*पुरोडाश का भी हमारे, भक्षण कर तू,*
*सेवन कर तू, स्तुतियों का भी हमारी।*
*वधू का इच्छुक वर जैसे, (सेवन करता है) पत्नी का।। १६।।*

हे परमेश्वर! हम उपासक जन जो नैवेद्य, समर्पण आदि आप को समर्पित करते हैं और हम आप की जिन स्तुतियों का गान करते हैं, उन्हें आप स्वीकार कीजिये और उनका उसी प्रकार भरपूर आनन्द लीजिये, जिस प्रकार कोई वर कन्या को पत्नीरूप में प्राप्त करके उससे अपने जीवन में भरपूर आनन्द, सुख और शान्ति को प्राप्त करता है।

टि. *भक्षण कर तू* - **घसः**। अद्धि - सा.।eat - W.

*सेवन कर तू* - **जोषयासे**। सेवस्व - सा.।be pleased - W. rejoice - G.

*वधू का इच्छुक वर जैसे पत्नी का* - **वधूयुर् इव योषणाम्**। स्त्रीकामो यथा स्त्रीणां गिरः सेवते तद्वत् - सा.।as a libertine (by the caresses) of a woman - W. as a lover in his bride - G.

विस्तृताभ्यः टिप्पणीभ्य ऋ. ३.५२.३ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

**सहस्रं व्यतीनां युक्तानाम् इन्द्रम् ईमहे।**
**शतं सोमस्य खार्यः।। १७।।**

सहस्रम्। व्यतीनाम्। युक्तानाम्। इन्द्रम्। ईमहे। शतम्। सोमस्य। खार्यः।। १७।।

*हजार को, द्रुतगति अश्वों के,*
*सुशिक्षितों के, इन्द्र से मांगते हैं हम।*

*सौ को, सोम के द्रोणकलशों को।। १७।।*

हम उपासक जन उस ऐश्वर्यशाली परमेश्वर से द्रुत गति वाले प्रशिक्षित हजारों अश्वों से उपलक्षित वेग और ओज-तेज से युक्त गम्भीर शारीरिक बलों की याचना करते हैं। हम उससे सोम से भरे सौ द्रोणकलशों से उपलक्षित अनन्त भक्तिरस के आनन्द की याचना करते हैं, जिसे हम सदा भक्तिभाव के साथ उसे समर्पित करते रहें।

टि. *हजार को द्रुतगति अश्वों के* - **सहस्रं व्यतीनाम्**। व्यतीनां गमनवताम् अश्वानां सहस्र-संख्याकम् - सा.। a thousand swift-going horses - W. G.

*सुशिक्षितों के* - **युक्तानाम्**। शिक्षितानाम् - सा.। well-trained - W. G.

*सोम के द्रोणकलशों को* - **सोमस्य खार्यः**। सोमस्य खारीः। अत्र मानविशेषवाचिना खारीशब्देन द्रोणकलश उपलक्ष्यते। अपरिमितद्रोणकलशान् बहून् यज्ञान्। सा.।

**सहस्रा ते शता वयं गवाम् आ च्यावयामसि।**

**अस्मत्रा राध एतु ते।। १८।।**

सहस्रा। ते। शता। वयं। गवाम्। आ। च्यवयामसि। अस्मऽत्रा। राधः। एतु। ते।। १८।।

*बलवानों को तेरे सैंकड़ों को हम,*

*गौओं के, इस ओर चुआते हैं हम।*

*हमारे पास ऐश्वर्य आ जाए तेरा।। १८।।*

हे परमेश्वर! हम तेरी हजारों गौओं का दोहन कर रहे हैं। गौ आदि दुधारू पशुओं से हम दूध, घृत आदि प्राप्त करते है, जिनसे हम पुष्ट होते हैं और यज्ञ आदि का सम्पादन करते हैं। पृथिवी भी गौ है, इससे हमें अन्न, ओषधियां और खनिज पदार्थ प्राप्त होते हैं। जल भी गौ हैं, जिनसे अन्न और ओषधियां प्राप्त होती हैं। सूर्य की रश्मियां भी गौ हैं, जिनसे हमें जीवन प्राप्त होता है। ज्ञानरश्मियां भी गौ हैं, जिनसे हमें विवेक और सन्मार्ग की प्राप्ति होती है। हे जगदीश्वर! तेरे ये सब ऐश्वर्य सदा इसी प्रकार हमें प्राप्त होते रहें।

टि. *बलवानों को तेरे सैंकड़ों को* - **सहस्रा ते शता**। बलवन्ति ते शतानि, सहस्राणीत्यर्थः।। सहस्राणि शतानि - वे.। दया.। त्वदीयानि सहस्रसंख्यानि शतसंख्यानि च - सा.। thousands and hundreds - W. a hundred, yea, and a thousand - G.

*इस ओर चुआते हैं हम* - **आ च्यावयामसि**। आ च्यावयामः - वे.। आच्यावयामः। अस्मदभिमुखं कुर्मः। सा.। प्रापयामः - दया.। we seek to bring down - W. we make hasten nigh - G.

*हमारे पास* - **अस्मत्रा**। अस्मासु - वे.। सा.। दया.। to us - W. G.

**दश ते कलशानां हिरण्यानाम् अधीमहि।**

**भूरिदा असि वृत्रहन्।। १९।।**

दश। ते। कलशानाम्। हिरण्यानाम्। अधीमहि। भूरिऽदाः। असि। वृत्रऽहन्।। १९।।

*दस को तेरे कलशों को,*

*सुवर्णपूरितों को, प्राप्त करते हैं हम।*

*बहुत देने वाला है तू, हे आवरकहन्ता।। १९।।*

हे दुष्ट आवरक शक्तियों का हनन करने वाले परमेश्वर! तू महान् दाता है। तुझ सा दाता और कोई नहीं। हम तुझसे सोने से भरे दस कलशों के समान बाह्य और आभ्यन्तर उत्तम धनों से भरी हुई दस इन्द्रियों को प्राप्त करते हैं। हम तुझसे दोनों हाथों की परिश्रम से कमाकर अमूल्य धनों को प्राप्त कराने वाली इन दस अंगुलियों को पाते हैं। तू हमें सुवर्णसदृश प्राकृतिक सौन्दर्य से भरी हुईं ये दस दिशाएं प्रदान करता है। भला तुझसे बढ़कर दाता और कौन हो सकता है।

टि. *कलशों को सुवर्णपूरितों को* - **कलशानां हिरण्यानाम्।** हिरण्यपूर्णान् कलशान् - वे.। कलशानां कुम्भानाम्। कुम्भपरिमितानाम् इति यावत्। हिरण्यानां हितरमणीयानां धनानाम्। सा.। water-ewers wrought of gold - G.

*प्राप्त करते हैं हम* - **अधीमहि।** धारयेम - वे.। धारयामः - सा.। प्राप्नुयाम - दया.।

*बहुत देने वाला* - **भूरिदाः।** बहुप्रदः - सा.। बहूनां दाता - दया.।

**भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर। भूरि घेद् इन्द्र दित्ससि।। २०।।**

भूरिऽदाः। भूरि। देहि। नः। मा। दभ्रम्। भूरि। आ। भर। भूरि। घ। इत्। इन्द्र। दित्ससि।। २०।।

*बहुत देने वाला, बहुत दे तू हमको,*
*मत थोड़ा (दे), बहुत को इधर ला।*
*बहुत को ही, हे इन्द्र!, देना चाहता है तू।। २०।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश्वर! तू बहुत देने वाला है। तेरे देने की कोई सीमाएं नहीं हैं। तू असीम ऐश्वर्य, ज्ञान, मान-सम्मान आदि को हमें प्राप्त करा। आप हमें कभी स्वल्प मत दीजिये। आप हमें हमेशा सब-कुछ विपुल और असीमित मात्रा में ही प्राप्त कराइये। आप भूमा है और सदा बहुत ही देना चाहते हैं।

टि. *थोड़ा* - **दभ्रम्।** अल्पम् - सा.। दया.। little - W. a trifling - G.

**भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन्। आ नो भजस्व राधसि।। २१।।**

भूरिऽदाः। हि। असि। श्रुतः। पुरुऽत्रा। शूर। वृत्रऽहन्। आ। नः। भजस्व। राधसि।। २१।।

*बहुत देने वाला, चूँकि है तू विख्यात,*
*सर्वत्र, हे शूर!, हे आवरकों के हन्ता।*
*सब ओर से हमको, भागी बना धन में।। २१।।*

हे दुष्टों के विनाशक! हे सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्तियों का हनन करने वाले जगदीश्वर! तू चूँकि सभी स्थानों पर प्रभूत मात्रा में देने वाले के रूप में प्रसिद्ध है, इसलिये तू हमें सब ओर से धनों और ऐश्वर्यों का भागी बना।

टि. *सर्वत्र* - **पुरुत्रा।** पुरुषु देशेषु - वे.। पुरुषु बहुषु यजमानेषु - सा.। amongst many - W. in many a place - G.

*सब ओर से भागी बना धन में* - **आ भजस्व राधसि।** आ भज धने - वे.। समन्ताद् भागिनः कुरु - सा.। make (us) sharers in wealth - W. thy bounty let (us) share - G.

**प्र ते॑ ब॒भ्रू वि॑चक्षण॒ शंसा॑मि गोषणो नपात्।**
**माभ्यां॒ गा अनु॑ शिश्रथः।। २२।।**

प्र। ते॒। ब॒भ्रू इति॑। वि॒ऽच॒क्ष॒ण॒। शंसा॑मि। गो॒ऽस॒नः॒। न॒पा॒त्। मा। आ॒भ्या॒म्। गाः। अनु॑। शि॒श्र॒थः।। २२।।

*प्रकर्ष से तेरे वहन करने वाले अश्वों की, हे दूरद्रष्टा,*
*प्रशंसा करता हूँ मैं, हे गोदाता!, हे पतित न होने वाले!*
*मत इनके द्वारा गौओं को (हमारी), बिदका देना तू।। २२।।*

हे मनुष्यों को बुद्धिरूपी गौएं प्रदान करने वाले परमेश्वर!, हे कभी अपने पद और महिमा से च्युत न होने वाले अच्युत!, तूने हमें इस शरीररूपी रथ को खींचने के लिये प्राण और अपान रूपी ये दो बलवान् अश्व दिये हैं। मैं इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ, क्योंकि इनके बिना यह शरीररूपी रथ चल नहीं सकता। तू हमेशा हमें इनको अपने नियन्त्रण और अनुशासन में रखने का सामर्थ्य प्रदान करना, क्योंकि बिना नियन्त्रण और अनुशासन वाला बल आसुरी बल होता है, जो मनुष्यों की बुद्धियों को डराकर भगा देता है। तू हमारी बुद्धियों को अनियन्त्रित और अनुशासनहीन आसुरी बलों से बचाकर इनकी रक्षा करते रहना।

टि. *वहन करने वाले अश्वों की* - **बभ्रू।** बभ्रुवर्णाश्वौ - वे.। सा.। बभ्रू सकलविद्याधारकाव् अध्यापकोपदेशकौ - दया.। brown horses - W. pair of Tawny Steeds - G.

*हे दूरद्रष्टा* - **विचक्षण।** हे प्राज्ञ - वे.। सा.। दया.।

*हे गोदाता, हे पतित न होने वाले* - **गोषणः नपात्।** दिव उदकस्य दातुः पुत्र - वे.। हे गवां सनितर् न पातयितः स्तोतॄन् अविनाशयितः। किन्तु पालयितर् इत्यर्थः। सा.। गोषणः यो गाः सनुते याचते तत्सम्बुद्धौ, नपात् यो न पतति - दया.। bestower of kine, (who art) not regardless (of thy worshippers) - W. wise Son of him who giveth kine - G.

*मत बिदका देना तू* - **मा अनु शिश्रथः।** श्रथतिर् भेदनकर्मा - वे.। लक्षीकृत्य विनष्टा मा कार्षीः। गावो ऽश्वदर्शनाद् विश्लिष्यन्ते। तन् मा भूद् इत्यर्थः। सा.। terrify not (our cattle) - W. G.

**क॒नी॒न॒केव॑ विद्र॒धे नवे॑ द्रु॒प॒दे अ॑र्भ॒के।**
**ब॒भ्रू यामे॑षु शोभेते।। २३।।**

क॒नी॒न॒काऽइ॑व। वि॒द्र॒धे। नवे॑। द्रु॒ऽप॒दे। अ॒र्भ॒के। ब॒भ्रू इति॑। यामे॑षु। शो॒भे॒ते॒ इति॑।। २३।।

*दो कठपुतलियों की तरह, मजबूतों (की),*
*नए काष्ठफलक पर, छोटे पर।*
*वाहक अश्व, मार्गों में शोभित होते हैं।। २३।।*

हे परमेश्वर! तेरे द्वारा हमारे शरीरों में प्रदत्त ये प्राण और अपान रूपी दो बलवान् अश्व नियन्त्रण और अनुशासन में रखे हुए हमारी जीवनयात्रा के मार्गों पर इस प्रकार सुशोभित होते हैं, जिस प्रकार सूत्रधार के द्वारा सूत्रों से नियन्त्रित दो मजबूत कठपुतलियां काष्ठ से निर्मित पादुका नामक नए छोटे से फलक पर शोभायमान होती हैं।

टि. *दो कठपुतलियों की तरह* - **कनीनकाऽइव।** कनीनके कन्यके। कन्या कमनीया भवति। क्वेयं

नेतव्येति वा। कमनेनानीयत इति वा। कनतेर् वा स्यात् कान्तिकर्मणः। या. (नि. ४.१५)। **कन्यके इव** - वे.। कमनीये शालभञ्जिके इव - सा.। कमनीयेव - दया.। like two puppets - W. like two slight images of girls - G.

*मजबूतों (की)* - **विद्रधे**। विद्धे विकुषिताधोभागे - दुर्ग. (नि. ४.१५)। सिद्धे - वे.। विदृढे व्यूढे - सा.। विशेषेण दृढे - दया.। unrobed - G.

*काष्ठफलक पर* - **द्रुपदे**। द्रुममये पदे पादुकाख्ये - दुर्ग. (तत्रैव)। पादुके - वे.। द्रुमाख्यस्थाने स्थिते - सा.। on a stage - W. upon a post - G.

*मार्गों में* - **यामेषु**। यज्ञेषु - दुर्ग. (वहीं)। गमनेषु - वे.। यज्ञेषु - सा.। प्रहरेषु - दया.। in their course - G.

**अरं म उस्रयाम्णे ऽरम् अनुस्रयाम्णे।**
**बभ्रू यामेष्वस्रिधा।। २४।। ३०।। ३।।**

अरम्। मे। उस्रऽयाम्ने। अरम्। अनुस्रऽयाम्ने। बभ्रू इति। यामेषु। अस्रिधा।। २४।।

*समर्थ (हों) मेरे लिये, प्रकाश की ओर यात्रा वाले के लिये,*
*समर्थ (हों मेरे लिये), प्रकाश की ओर न जाने वाले के लिये।*
*वहन करने वाले अश्व, मार्गों में, हिंसा न करने वाले।। २४।।*

हे परमेश्वर! मेरे जीवनरूपी रथ को वहन करने वाले, कभी हिंसा न करने वाले अपितु सदा रक्षा ही करने वाले, प्राण और अपान रूपी ये तेरे दो अश्व मुझे मेरी यात्राओं में अपने लक्ष्य की ओर ले जाने में समर्थ हों। जब तक मेरी यात्रा तुझ परम ज्योति की ओर प्रारम्भ न हो, तब तक सामान्य जीवन जीते हुए भी ये मेरे जीवन को चलाने में समर्थ हों और जब मेरी यात्रा तुझ परम ज्योति की ओर प्ररम्भ हो जाए, तब भी ये मुझे तुझ तक पहुँचाने में समर्थ हों।

टि. *समर्थ (हों)* - **अरम्**। अलं पर्याप्तकारिणौ भवताम् - सा.। अलम् - दया.। are sufficient at sacrifices for me - W. are ready - G.

*प्रकाश की ओर यात्रा वाले के लिये* - **उस्रयाम्ने**। उस्राभ्याम् अनडुद्भ्यां युक्तेन रथेन यातीत्युस्रयामा तस्मै मह्यम् - सा.। उस्रैः किरणैर् इव यानेन याति तस्मै - दया.। whether going (to them) in (a wagon drawn by) oxen - W. when I start with the dawn - G.

*प्रकाश की ओर न जाने वाले के लिये* - **अनुस्रयाम्ने**। पद्भ्याम् एव गच्छते मह्यम् - सा.। यो ऽनुस्रं शीतं देशं याति तस्मै - दया.। or going without such a conveyance - W. or start not with the dawn - G.

*हिंसा न करने वाले* - **अस्रिधा**। अक्षीणौ - वे.। अहिंसकौ - सा.। दया.। innocuous - W. innocous in the ways they take - G.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां तृतीये ऽष्टके षष्ठो ऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त ३३

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - ऋभवः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**प्र ऋभुभ्यो दूतमिव वाचम् इष्य उपस्तिरे श्वैतरीं धेनुम् ईळे।**
**ये वातजूतास् तरणिभिर् एवैः परि द्यां सद्यो अपसो बभूवुः।। १।।**

प्र। ऋभुऽभ्यः। दूतम्ऽइव। वाचम्। इष्ये। उपऽस्तिरे। श्वैतरीम्। धेनुम्। ईळे।
ये। वातऽजूताः। तरणिऽभिः। एवैः। परि। द्याम्। सद्यः। अपसः। बभूवुः।। १।।

*ऋभुओं के लिये दूत की तरह, वाणी को प्रेषित करता हूँ मैं,*
*आच्छादन के लिये, अत्यन्त श्वेतवर्णा गौ को, मांगता हूँ मैं।*
*जो वायु के समान गतियों वाले (होकर), तराने वालों से मार्गों से,*
*सर्वतः आदित्य को अविलम्ब, कर्म करने वाले, व्याप्त कर लेते हैं।। १।।*

सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियां ऋभु हैं। अत्यन्त भासमान होने से अथवा ऋत से भासमान होने के कारण ये ऋभु कहलाती हैं। (ऋभव उरु भासन्तीति वा। ऋतेन भासन्तीति वा। ऋतेन भवन्तीति वा। नि. ११.१५। आदित्यरश्मयो ऽप्यृभव उच्यन्ते। नि. ११.१६।) शोभन अन्तरिक्ष में निवास करने के कारण इन्हें सौधन्वन भी कहा जाता है। ऐसी सत्यज्योतिरूपी आदित्य की इन रश्मियों के लिये मैं अपनी स्तुतियों को श्रद्धा के साथ इस प्रकार भेजता हूँ, जिस प्रकार कोई राजा अपने दूत को मित्रता करने के लिये दूसरे राजा के पास भेजता है। मैं उनसे अपने परिपालन और संरक्षण के लिये शुद्ध-पवित्र ज्ञान की याचना करता हूँ। ये वायु के समान तीव्र गति वाली और उत्तम कर्म करने वाली हैं। ये शरीर के अन्दर अपने कल्याणकारी उपायों से सत्यज्योति रूपी आदित्य अर्थात् आत्मा को सब ओर से व्याप्त कर लेती हैं।

टि. *ऋभुओं के लिये* - **ऋभुभ्यः**। उरुभासमानेभ्य एतन्नामकेभ्यो देवेभ्यः - सा.। मेधाविभ्यः। ऋभुर् इति मेधाविनाम (निघ. ३.१५)। दया.।

*वाणी को* - **वाचम्**। स्तुतिम् - वे.। वाचं स्तुतिरूपाम् - सा.। prayer - W. voice - G.

*प्रेषित करता हूँ मैं* - **प्र इष्ये**। प्र ईरयामि - वे.। प्रेरयामि - सा.। प्राप्नोमि - दया.।

*आच्छादन के लिये* - **उप स्तिरे**। ऋभूणाम् उपस्तरणाय - वे.। सोमोपस्तरणाय - सा.। स्रस्तराय - दया.। for the dilution - W. for the overspreading - G.

*अत्यन्त श्वेतवर्णा गौ को* - **श्वैतरीं धेनुम्**। श्वेतवर्णयुक्तां निर्मलां स्तुतिवाचम् - वे.। पयोयुक्तां श्वेततरां वा धेनुम् - सा.। अतिशयेन शुद्धां धारणाम् - दया.। the white cow - G.

*वायु के समान गतियों वाले* - **वातजूताः**। वातप्रेरिताः - वे.। वातसमानगतयः - सा.। वायुप्रेरितास् त्रस्रेण्वादिपदार्थाः - दया.। as swift as the wind - W. wind-sped - G.

*तराने वालों से मार्गों से* - **तरणिभिः एवैः**। तारकैः गमनैः - वे.। तारकैर् गमनशीलर् अश्वैः - सा.। सन्तरणैः प्राप्तैर् वेगादिगुणैः - दया.। by rapid steeds - W. in rapid motion - G.

*कर्म करने वाले* - **अपसः**। वेगवन्तः - वे.। जगदुपकारिकर्माणः - सा.। कर्माणि - दया.। the

doers of good works - W. the Skilled Ones - G.

**यदारम् अक्रन्नृभवः पितृभ्यां परिविष्टी वेषणा दंसनाभिः।**
**आद् इद् देवानाम् उप सख्यम् आयन् धीरासः पुष्टिम् अवहन् मनायै।। २।।**

यदा। अरम्। अक्रन। ऋभवः। पितृऽभ्याम्। परिऽविष्टी। वेषणा। दंसनाभिः।
आत्। इत्। देवानाम्। उप। सख्यम्। आयन्। धीरासः। पुष्टिम्। अवहन्। मनायै।। २।।

*जब समर्थ बनाते हैं (स्वयं को) ऋभु, माता-पिता के लिये,*
*परिचर्या से, सेवा से, कर्मों से (अन्यों से)।*
*पश्चात् ही देवों के सान्निध्य में, समान नाम को पाते हैं,*
*बुद्धिमान् पुष्टि को प्राप्त करते हैं, श्रद्धा के लिये (अपनी)।। २।।*

हृदय रूपी अन्तरिक्ष में निवास करने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियां जब अन्नमय-कोश नामक जड़जगत् में प्रज्ञाविशेष के स्थानरूप पृथिवी माता और शुद्ध सत्त्व से युक्त मन की प्रधानता वाले प्रज्ञाविशेष के स्थानरूप द्यौ पिता की परिचर्या, सेवा-शुश्रूषा एवं अन्य प्रकार के कर्मों के द्वारा स्वयं को समर्थ बनाती हैं, तो उसके पश्चात् ही वे देवों के सान्निध्य को प्राप्त करके उनकी समाननामा हो जाती हैं, अर्थात् देव नाम से ही पुकारी जाने लगती हैं। माता और पिता के प्रति दिखाई गई इस अगाध श्रद्धा के लिये ही बुद्धिमती वे सर्वविध पुष्टि को प्राप्त कर लेती हैं।

टि. *समर्थ बनाते हैं* - **अरम् अक्रन्।** अलञ्चक्रुः - वे.। अत्यर्थम् अक्रन् - सा.। अलं कुर्वन्ति - दया.। had achieved enough - W. had done - G.

*परिचर्या से* - **परिविष्टी।** भोजनेन - वे.। परिवेषणेन परिचर्यया - सा.। सर्वतो विद्या व्याप्नोति यया तया क्रियया - दया.। by honouring - W. had done proper service to - G.

*सेवा से* - **वेषणा।** व्याप्त्या - वे.। वेषणेन व्याप्त्या। यद्वा। वेषेण जरद्रूपयोर् युवत्वकरणेन। सा.। व्याप्तेन पदार्थेन - दया.। with renovatd (youth) - W. with care - G.

*कर्मों से (अन्यों से)* - **दंसनाभिः।** कर्मभिः - वे.। अन्यैश् चमसनिर्माणादिकर्मभिः - सा.। उत्तमैः कर्मभिः - दया.। with marvels - G.

*समान नाम को पाते हैं* - **सख्यम् आयन्।** सखित्वं समानख्यानत्वम् देवतात्वम् - सा.। they proceeded to the society of the gods - W. won the friendship - G.

*श्रद्धा के लिये (अपनी)* - **मनायै।** स्तुत्यर्थं स्तोतुः - वे.। मतिकृते यजमानाय। यद्वा। मनसे प्रकृष्टमनस्कत्वाय। सा.। मन्तव्यायै विद्यायै - दया.। to the devout (worshipper) - W. of their devotion - G.

**पुनर् ये चक्रुः पितरा युवाना सना यूपेव जरणा शयाना।**
**ते वाजो विभ्वाँ ऋभुर् इन्द्रवन्तो मधुप्सरसो नो ऽवन्तु यज्ञम्।। ३।।**

पुनः। ये। चक्रुः। पितरा। युवाना। सना। यूपाऽइव। जरणा। शयाना।
ते। वाजः। विऽभ्वा। ऋभुः। इन्द्रऽवन्तः। मधुऽप्सरसः। नः। अवन्तु। यज्ञम्।। ३।।

*पुनः जो करते हैं माता-पिता को युवा,*

*सदा, यूपवत् जीर्णों को, लेटे हुओं को (धरा पर)।*
*वे वाज, विभ्वा (और) ऋभु, इन्द्र के सङ्ग रहने वाले,*
*मधु का भक्षण करने वाले, हमारे बढ़ाएं यज्ञ को।। ३।।*

सत्यज्योतिरूपी आदित्य अर्थात् परमात्मा अथवा आत्मा की तीन विभूतियां हैं - बल, व्यापकता और प्रकाशमत्ता। ये सदा उस सत्यज्योतिरूपी आदित्य अर्थात् परमेश्वर अथवा आत्मा के संग निवास करती हैं। उस परमेश्वर की इन विभूतियों के बिना यह पृथिवी माता और द्यौ पिता धरती पर गिरे हुए एक सूखे और जीर्ण ठूँठ की तरह हैं। परमेश्वर की ये विभूतियां ही इन्हें प्राणशक्ति और यौवन प्रदान करती हैं। इसी प्रकार शरीररूपी अन्नमयकोश में स्थित ये आत्मा की विभूतियां ही शरीरस्थ प्रज्ञाविशेष के स्थानरूप जीर्ण स्थाणुवत् पृथिवी माता और शुद्ध सत्त्व से युक्त मन की प्रधानता वाले प्रज्ञाविशेष के स्थानरूप जीर्ण द्यौ पिता को सदा के लिये पुनः प्राणवत्ता और युवत्व प्रदान करती हैं। परमसत्यज्योति रूपी परमात्मा अथवा आत्मा की, माधुर्य का सेवन करने वाली ये रश्मियां हमारे बाह्य और आन्तरिक यज्ञ की सदा अभिवृद्धि और रक्षा करती रहें।

टि. *सदा* - **सना**। सनातनौ - वे.। सदा - सा.। संसेविनौ - दया.। perpetually - W.

*यूपवत् जीर्णों को* - **यूपाऽइव जर्णा**। यूपाविव जीर्णौ - वे.। छिन्नस्थाणू इव जीर्णौ - सा.। स्तम्भ इव दृढौ जरां प्राप्तौ - दया.। like posts that moulder - G.

*लेटे हुओं को (धरा पर)* - **शयाना**। शयानौ - वे.। सा.। यौ शयाते तौ - दया.। lying - G.

*वाज* - **वाजः**। ज्ञानवान् - दया.।

*विभ्वा* - **विऽभ्वा**। विभुना ज्ञानेन जगदीश्वरेण - दया.।

*ऋभु* - **ऋभुः**। उरु भासत इत्यृभुः।। विद्वान् - दया.।

*मधु का भक्षण करने वाले* - **मधुप्सरसः**। सोमं प्रति सरन्तः - वे.। मधुरस्य सोमरसस्य भक्षितारौ मनोहररूपौ वा - सा.। मधुप्सरस् स्वरूपं सुन्दरं येषां ते - दया.। drinkers of the Soma - W. the Soma-lovers - G.

*बढ़ाएं* - **अवन्तु**। आगच्छन्तु - वे.। रक्षन्तु गच्छन्तु वा - सा.।

**यत् सं॒वत्स॑म् ऋ॒भवो॒ गाम् अर॑क्ष॒न् यत् सं॒वत्स॑म् ऋ॒भवो॒ मा अपिं॑शन्।**
**यत् सं॒वत्स॒म् अभ॑र॒न् भासो॑ अस्या॒स् ताभि॒ः शमी॑भिर् अमृत॒त्वम् आ॑शुः।। ४।।**

यत्। स॒म्ऽवत्स॑म्। ऋ॒भव॑ः। गाम्। अर॑क्षन्। यत्। स॒म्ऽवत्स॑म्। ऋ॒भव॑ः। मा॒ः। अपिं॑शन्।
यत्। स॒म्ऽवत्स॑म्। अभ॑रन्। भास॑ः। अ॒स्या॒ः। ताभि॑ः। शमी॑भिः। अ॒मृ॒त॒ऽत्वम्। आ॒शु॒ः।। ४।।

*जो साथ रहते हुए ऋभु, गौ की रक्षा करते हैं,*
*जो साथ रहते हुए ऋभु, शरीर का निर्माण करते हैं।*
*जो साथ रहते हुए, भरते हैं दीप्तियों को इसमें,*
*उनके द्वारा कर्मों के, देवत्व को प्राप्त करते हैं वे।। ४।।*

ईश्वरीय नियमों का पालन करने वाले ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित विद्वज्जन देवत्व को कैसे प्राप्त करते हैं, यह बात इस मन्त्र में बताई गई है। ये ज्ञानी जन परस्पर मिलकर गोष्ठियों में ज्ञानचर्चाएं

करते हुए साथ-साथ रहते हैं। ये मिलकर वाणीरूपी गौ की रक्षा करते है। ये साथ मिलकर उस वाणी के शरीर अर्थात् शुद्ध उच्चरित रूप का निर्माण करते हैं। ये परस्पर मिलकर इसको दीप्तियों से युक्त करते हैं, अर्थात् इसके अर्थों को स्पष्ट करते हैं। इन उत्तम कार्यों से ये विद्वान् ज्ञानी जन अमृतत्व अर्थात् देवत्व को प्राप्त कर लेते हैं।

टि. *साथ रहते हुए* - **संवत्सम्**। सहवासयुक्तम् - वे.। संवसन्ति भूतान्यस्मिन्निति संवत्सः संवत्सरः। संवत्सरपर्यन्तम्। सा.। सङ्गतं वत्सम् इव - दया.। for a year - W. G.

*गौ की रक्षा करते हैं* - **गाम् अरक्षन्**। गां मृताम् अपालयन् - सा.। preserved the (dead) cow - W. kept the Milch-cow - G.

*शरीर का निर्माण करते हैं* - **माः अपिंशन्**। मांसम् अपिंशन् - वे.। गोर् मा मांसम् अपिंशन् अवयवान् अकुर्वन् - सा.। मातॄः सावयवान् कुर्वन्ति - दया.। invested it with flesh - W. fashioned and formed her body - G.

*भरते हैं दीप्तियों को* - **अभरन् भासः**। भासः बहिर्गृहम् अभरन् - वे.। दीप्तीर् अवयवशोभा अकुर्वन् - सा.। they continued its beauty - W. sustained her brightness - G.

*उनके द्वारा कर्मों के* - **ताभिः शमीभिः**। तैः कर्मभिः - वे.। मृताया गोर् नवीकरणविषयैः कर्मभिः - सा.। मातृपित्राचार्यसेवया विद्याप्राप्तिभिः श्रेष्ठैः कर्मभिः - दया.। by their acts - W. through these their labours - G.

*प्राप्त करते हैं* - **आशुः**। प्रापन् - वे.। प्राप्ताः - सा.। प्राप्नुवन्ति - दया.। obtained - W.

**ज्येष्ठ आह चमसा द्वा करेति**
**कनीयान् त्रीन् कृणवामेत्याह।**
**कनिष्ठ आह चतुरस् करेति**
**त्वष्ट ऋभवस् तत् पनयद् वचो वः।। ५।। १।।**

ज्येष्ठः। आह। चमसा। द्वा। कर। इति। कनीयान्। त्रीन्। कृणवाम। इति। आह।
कनिष्ठः। आह। चतुरः। कर। इति। त्वष्टा। ऋभवः। तत्। पनयत्। वचः। वः।। ५।।

*ज्येष्ठ ने कहा '(एक को) चमस दो बनाएं हम',*
*मध्यम ने '(एक को) तीन बनाएं हम' यह कहा।*
*सब से छोटे ने कहा '(एक को) चार बनाएं हम',*
*त्वष्टा, हे ऋभुओ!, उसको सराहता है वचन को तुम्हारे।। ५।।*

ऋभु सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियां हैं। अत्यन्त भासमान होने से अथवा ऋत से भासमान होने से वे ऋभु कहलाती हैं। त्वष्टा सब रूपों का निर्माण करने वाला परमेश्वर है। ऋ. १.१६१.२ के अनुसार पवित्रकारक प्रेरक अग्नि शरीरस्थ सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियों को प्रेरित करके कहता है, कि तुम एक पात्र के चार पात्र बना दो। अर्थात् जीवात्मा को अन्नमयकोश रूपी इस शरीर से आनन्दमयकोश तक चार कोशों की यात्रा सम्पन्न कराओ। उसी प्रसंग में ज्येष्ठ रश्मि का कथन है, कि हमें जीवात्मा को अन्नमयकोश से प्राणमयकोश और मनोमयकोश इन दो कोशों की यात्रा

करानी चाहिये। मध्यम रश्मि का कथन है, कि हमें प्राणमय, मनोमय और ज्ञानमय इन तीन कोशों की यात्रा पूर्ण करानी चाहिये। परन्तु सब से छोटी रश्मि का कथन है, कि हमें प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय और आनन्दमय इन चारों ही कोशों की यात्रा सम्पन्न करानी चाहिये। तब रूपों का निर्माता परमेश्वर इनके इन सभी कथनों की सराहना करता है। उसकी भी यही इच्छा है, कि जीवात्मा अन्नमयकोश से आनन्दमयकोश की ओर निरन्तर यात्रा करती रहे।

पं. जयदेव शर्मा ने इस मन्त्र की व्याख्या कुछ इस प्रकार की है - सब से श्रेष्ठ पुरुष का कथन है कि हम अर्थ और काम इन दो पुरुषार्थों का सम्पादन करें, उससे अधिक दीप्तिमान् पुरुष कहता है कि हम लोग धर्म, अर्थ और काम इन तीनों पुरुषार्थों का सम्पादन करें। सब से अधिक दीप्तिमान् तेजस्वी पुरुष कहता है कि धर्म; अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का सम्पादन करें। भाष्यकार ने मनु. २.२२४ और उसपर कुल्लूकभट्ट के ये शब्द भी उद्धृत किये हैं - बुभुक्षून् प्रत्युपदेशो न मुमुक्षून्। मुमुक्षूणां तु मोक्ष एव श्रेयान् इति षष्ठे वक्ष्यते।

टि. *ज्येष्ठ* - **ज्येष्ठः**। ऋभुः - वे.। सा.। पूर्वजः - दया.। the eldest - W. G.

*चमस दो बनाएं हम* - **चमसा द्वा कर**। एकं चमसं द्वौ करोमि - वे.। एकम् एव सन्तं द्वौ कृणवामेति - सा.। चमसौ द्वौ कुर्याः - दया.। let us make two ladles - W. G.

*मध्यम ने* - **कनीयान्**। मध्यमः - वे.। विभ्वा - सा.। younger - G.

*त्वष्टा* - **त्वष्टा**। युष्मद्गुरुः - सा.। शिक्षकः - दया.।

*सराहता है* - **पनयत्**। अपूजयत् - वे.। अस्तौत्। अङ्गीचकारेत्यर्थः। सा.। प्रशंसेत् - दया.। has applauded - W. approved - G.

*सब से छोटे ने* - **कनिष्ठः**। तृतीयः - वे.। वाजः - सा.। youngest - G.

**सत्यम् ऊचुर् नर एवा हि चक्रुर् अनु स्वधाम् ऋभवो जग्मुर् एताम्।**
**विभ्राजमानांश् चमसाँ अहेवावेनत् त्वष्टा चतुरो ददृश्वान्।। ६।।**

सत्यम्। ऊचुः। नरः। एव। हि। चक्रुः। अनु। स्वधाम्। ऋभवः। जग्मुः। एताम्।
विऽभ्राजमानान्। चमसान्। अहाऽइव। अवेनत्। त्वष्टा। चतुरः। ददृश्वान्।। ६।।

*सत्य का कथन करते हैं नेता, उसी प्रकार ही कर दिखाते हैं,*
*तत्पश्चात् संकल्प को ऋत के पालक ज्ञानी, प्राप्त कर लेते हैं इसको।*
*विशेष रूप से प्रकाशमानों को, चमसों को, दिनों की तरह,*
*स्वीकार कर लेता है त्वष्टा, चारों को, देखते हुए।। ६।।*

ऋत का पालन करने से प्रकाशमान ज्ञानी जन सदा सत्यभाषण ही करते हैं। इसलिये वे जो कुछ कहते हैं, वही करके दिखा भी देते हैं। वे एक चमस से चार चमसों का निर्माण करके दिखा देते हैं। अर्थात् जीवात्मा को अन्नमयकोश रूपी इस शरीर से चार कोशों में से होते हुए आनन्दमय कोश की यात्रा का मार्ग दिखलाने जैसे प्रशंसनीय कार्य को सम्पन्न कर देते हैं। दिन के प्रकाश की तरह नितान्त स्पष्ट इस प्रक्रिया को देखकर पदार्थों का निर्माण करने वाला जगत्कर्ता परमेश्वर ऐसे ज्ञानी जनों से बहुत प्रसन्न होता है। वह इनके इस कार्य का अनुमोदन करता है। इस कार्य को सम्पन्न करने

के फलस्वरूप ज्ञानी जन मनुष्य होते हुए भी देवत्व को प्राप्त कर लेते हैं।

टि. *नेता* - **नरः**। नेतारः - वे.। मनुष्यरूपा ऋभवः - सा.। मनुष्याः - दया.। the men (the Ṛbhus) - W. the men - G.

*संकल्प को प्राप्त कर लेते हैं* - **स्वधाम् जग्मुः**। स्वधाम् सोमम् अनु अगच्छन् - वे.। सोमाख्यम् अमृतं जग्मुः - सा.। अन्नं प्राप्नुवन्ति - दया.। partook of that libation - W. this Godlike way of theirs the Ṛbhus followed - G.

*विशेष रूप से प्रकाशमानों को दिनों की तरह* - **विभ्राजमानान् अहाऽइव**। दीप्यमानान् चतुरः चमसान् दिवसान् इव - वे.। सा.। दया.। brilliant as day - W. G.

*स्वीकार कर लेता है* - **अवेनत्**। अकामयत - वे.। सा.। कामयते - दया.। was content - W. was moved with envy - G.

**द्वादश द्यून् यद् अगोह्यस्यातिथ्ये रणन्नृभवः ससन्तः।**
**सुक्षेत्राकृण्वन्ननयन्त सिन्धून् धन्वातिष्ठन्नोषधीर् निम्नम् आपः।। ७।।**

द्वादश। द्यून्। यत्। अगोह्यस्य। आतिथ्ये। रणन्। ऋभवः। ससन्तः।
सुऽक्षेत्रा। अकृण्वन्। अनयन्त। सिन्धून्। धन्व। आ। अतिष्ठन्। ओषधीः। निम्नम्। आपः।। ७।।

*बारह मासों तक जब अगोपनीय (आदित्य) के,*
*आतिथ्य में रमण करते हैं ऋभु, सोते हुए।*
*सुन्दर निवासों को बनाते हैं, बहाते हैं जलप्रवाहों को,*
*मरु में उग आती हैं ओषधियां, निचान को (पूर देते हैं) जल।। ७।।*

आदित्य अगोपनीय है। उसे कोई किसी भी आवरण में छुपा नहीं सकता। जब रश्मियां बारह मासों के दिनों तक, अर्थात् संवत्सर भर तक, उसकी अतिथि बनकर उसमें विश्राम करती हुई रमण करती हैं, तो धरती पर मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों के लिये सुन्दर निवासों का निर्माण कर देती हैं। वे मेघों को उत्पन्न करके पृथिवी पर जलधाराओं को बहा देती हैं, जिससे मरुस्थलों में भी अन्न, ओषधियां और वनस्पतियां उग आती हैं, और नदी, झील, तालाब, समुद्र आदि निम्न स्थानों में जल भर जाते हैं। (इसी भाव के लिये ऋ. १.१६१.११ मन्त्र भी देखिये।)

ब्रह्माण्ड में आदित्य के अन्दर निवास करने वाली रश्मियां जो कर्म सम्पन्न करती हैं, उसी प्रकार के परोपकारयुक्त कर्मों को पिण्ड अर्थात् मानवशरीर के अन्दर सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियां भी सम्पन्न करती हैं।

टि. *बारह मासों तक* - **द्वादश द्यून्**। द्वादश दिवसान् - वे.। दया.। द्वादश दिवसान्। आर्द्रादि-द्वादशवृष्टिनक्षत्राणीत्यर्थः। सा.। for twelve days - W. G.

*अगोपनीय (आदित्य) के* - **अगोह्यस्य**। गूहितुम् अशक्यस्य सवितुः - वे.। अगोप्यस्यादित्यस्य गृहे - सा.। असंवृतस्य - दया.। of the unconcealable (sun) - W. G.

*आतिथ्य में* - **आतिथ्ये**। अकस्माद् आगतो ऽतिथिः। तदुचितं सत्काररूपं कर्मातिथ्यम्। तदर्थम्। सा.। अतिथीनां सत्कारे - दया.। in the hospitality - W.

*सुन्दर निवासों को बनाते हैं* - **सुक्षेत्रा अकृण्वन्।** सवित्रे शोभनानि क्षेत्राणि अकृण्वन् - वे.। दया.। अकृष्टानि शून्यानि क्षेत्राणि वृष्ट्या सस्यादिसमृद्धान्यकुर्वन् - सा.। rendered the fields fertile - W. made fair fertile fields - G.

*मरु में उग आती हैं ओषधियां* - **धन्व आ अतिष्ठन् ओषधीः।** स्थलम् ओषध्यः आ अतिष्ठन् - वे.। ओषधयो निरुदकस्थानम् आश्रित्यातिष्ठन् - सा.। धन्व अन्तरिक्षम् - दया.। plants sprung upon the waste - W. plants spread o'er deserts - G.

**रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ये धेनुं विश्वजुवं विश्वरूपाम्।**
**त आ तक्षन्त्वृभवो रयिं नः स्ववसः स्वपसः सुहस्ताः।। ८।।**

रथम्। ये। चक्रुः। सुऽवृतम्। नरेऽस्थाम्। ये। धेनुम्। विश्वऽजुवम्। विश्वऽरूपाम्।
ते। आ। तक्षन्तु। ऋभवः। रयिम्। नः। सुऽअवसः। सुऽअपसः। सुऽहस्ताः।। ८।।

*रथ को जो बनाते हैं, सुख से चलने वाले को, ऊपर स्थित नरों वाले को,*
*जो (बनाते हैं) गौ को, सब को प्रेरित करने वाली को, अनेक रूपों वाली को।*
*वे सब ओर से निष्पादित करें मेधावी, ऐश्वर्य को हमारे लिये,*
*शोभन समृद्धियों वाले, शोभन कर्मों वाले, शोभन हाथों वाले।। ८।।*

मेधा से युक्त जिन ज्ञानी जनों ने सुन्दर गति से घूमने वाले उस ज्ञानरूपी रथ को बनाया, जिसपर वे नेता जन स्थित होते हैं, जिन्होंने अनेक रूपों वाली और सबको सुकर्मों में प्रेरित करने वाली वाणी का परिष्कार किया है, उत्तम समृद्धियों, रक्षणों और प्रीतियों वाले, उत्तम कर्मों वाले तथा दक्ष हाथों वाले वे मेधावी पुरुष हमारे लिये विविध ऐश्वर्यों को निष्पादित करें।

टि. *सुख से चलने वाले को* - **सुवृतम्।** सुवर्तनम् - वे.। सुचक्रं सुष्ठु वर्तमानं वा - सा.। सुष्ठु रचितं साङ्गोपाङ्गसहितम् - दया.। wheel-conducting - W. swift - G.

*ऊपर स्थित नरों वाले को* - **नरेष्ठाम्।** नेतरीन्द्रे स्थितम् - वे.। नरेष्ठां नेतरि चक्रे वर्तमानम् - सा.। नरास् तिष्ठन्ति यस्मिंस् तम् - दया.। firm-abiding - W. bearing Heroes - G.

*सब को प्रेरित करने वाली को* - **विश्वजुवम्।** विश्ववेगाम् - वे.। विश्वजुवम् विश्वस्य प्रेरयित्रीम् - सा.। समग्रवेगाम् - दया.। all-impelling - W. G.

*अनेक रूपों वाली को* - **विश्वरूपम्।** नानारूपाम् - वे.। बहुरूपाम् - सा.। समग्रशास्त्ररूपविदम् - दया.। multi-form - W. omniform - G.

*सब ओर से निष्पादित करें* - **आ तक्षन्तु।** आकुर्वन्तु - वे.। सर्वतो निष्पादयन्तु - सा.। आ रचयन्तु - दया.। may fabricate - W. may they form - G.

*शोभन समृद्धियों वाले* - **स्ववसः।** सुरक्षणाः - वे.। शोभनान्नोपेताः - सा.। the bestowers of food - W. gracious - G.

**अपो ह्येषाम् अजुषन्त देवा अभि क्रत्वा मनसा दीध्यानाः।**
**वाजो देवानाम् अभवत् सुकर्मेन्द्रस्य ऋभुक्षा वरुणस्य विभ्वा।। ९।।**

अपः। हि। एषाम्। अजुषन्त। देवाः। अभि। क्रत्वा। मनसा। दीध्यानाः।

वार्जः। देवानाम्। अभवत्। सुऽकर्मा। इन्द्रस्य। ऋभुक्षाः। वरुणस्य। विऽभ्वा।। ९।।

*कर्म को ही, इनके सेवन करते हैं देवगण,*
*सर्वतः बुद्धि से, मन से, चिन्तन करते हुए।*
*वाज देवों का हो जाता है (प्रिय), शोभनकर्मा,*
*इन्द्र का (प्रिय) ऋभु, वरुण का विभ्वा।। ९।।*

इस पिण्ड के अन्दर निवास करने वाले सब देव अर्थात् दिव्य शक्तियां सर्वथा अपनी चिन्तनशक्ति और मननशक्ति के द्वारा विचार करते हुए इन सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियों के कर्मों का प्रीतिपूर्वक सेवन करती हैं। इनमें से जो उत्तम कर्मों को करने वाली अन्न, बल और ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मि है, वह अपने कर्म से इन्द्रियों को प्रिय हो जाती है, जो सर्वाधिक प्रकाश और ज्ञान वाली दिव्यज्योति की रश्मि है, वह आत्मा को प्रिय हो जाती है। और जो व्यापकता के गुण से युक्त तीसरी रश्मि है, वह प्राणों को प्रिय हो जाती है। इस प्रकार दिव्य शक्तियों की सेवा करने से ये स्वयं भी दिव्यता को प्राप्त कर लेती हैं।

टि. *कर्म को* - अपः। कर्म - वे.। अश्वरथनिर्माणादिरूपं कर्म - सा.।

*बुद्धि से* - **क्रत्वा**। प्रज्ञया - वे.। दया.। वरप्रदानरूपेण कर्मणा - सा.। in act - W. with thought - G.

*मन से* - **मनसा**। शोभनेन चित्तेन - सा.। विज्ञानेन - दया.। in thought - W. with mental insight - G.

*चिन्तन करते हुए* - **दीध्यानाः**। दीप्यमानाः - वे.। सा.। देदीप्यमानाः - दया.। illustrious - W. pondering - G.

*ऋभु* - **ऋभुक्षाः**। ज्येष्ठः - वे.। ऋभुज्येष्ठः - सा.। महान् - दया.।

*विभ्वा* - **विभ्वा**। मध्यमः - वे.। सा.। व्याप्त्या - दया.।

**ये हरी मेधयोक्था मदन्त इन्द्राय चक्रुः सुयुजा ये अश्वा।**
**ते रायस्पोषं द्रविणान्यस्मे धत्त ऋभवः क्षेमयन्तो न मित्रम्।। १०।।**

ये। हरी इति। मेधया। उक्था। मदन्तः। इन्द्राय। चक्रुः। सुऽयुजा। ये। अश्वा।
ते। रायः। पोषम्। द्रविणानि। अस्मे इति। धत्त। ऋभवः। क्षेमऽयन्तः। न। मित्रम्।। १०।।

*जो दो अश्वों को प्रज्ञा से, स्तुतियों से प्रसन्न होते हुए,*
*इन्द्र के लिये बनाते हैं, सुष्टु युक्त करते हैं जो दो अश्वों को।*
*वे ऐश्वर्यों को, पुष्टि को, धनों को, हमें प्रदान करें (सदा),*
*ऋभुगण, क्षेम की कामना करते हुए, मित्र की तरह।। १०।।*

सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियां स्तुतियों से प्रसन्न होकर अपनी प्रज्ञा से आत्मा रूपी इन्द्र के लिये प्राण और अपान रूपी अश्वों का निर्माण करती हैं और उन्हें उसके लिये शरीररूपी रथ में भली प्रकार जोतती हैं। हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम एक सच्चे मित्र की तरह हमारे क्षेम की कामना करते हुए हमें सदा उत्तम ऐश्वर्य, शरीर की पुष्टि और विविध प्रकार के

धन प्रदान करती रहो।

टि. *स्तुतियों से प्रसन्न होते हुए* - **उक्था मदन्तः**। उक्थैः मदन्तः - वे.। उक्थैः स्तुतिभिर् मदन्तो हर्षयन्तः चक्रुः - सा.। प्रशंसनैः आनन्दन्तः - दया.। who gratified the horses by pious praise - W. made glad with sacrifice and praises - G.

*सुष्ठु युक्त करते हैं* - **सुयुजा (चक्रुः)**। ताव् अश्वौ रथे संयुक्तौ चक्रुः - वे.। सुयुजौ सुयोजनाव् अश्वौ - सा.। यौ सुष्ठु युङ्क्तस् तौ - दया.। who constructed for Indra his two docile horses - W. wrought his two docile Steeds - G.

*ऐश्वर्यों को, पुष्टि को* - **रायः पोषम्**। धनपुष्टिम् - सा.। धनादेः पुष्टिम् - दया.। satiety of riches - W. gear and growth of riches - G.

*क्षेम की कामना करते हुए* - **क्षेमयन्तः**। क्षेमं कुर्वन्तः - वे.। क्षेमम् इच्छन्तः - सा.। क्षेमं रक्षणं कुर्वन्तः - दया.। who devise prosperity - W. who wish a friend to prosper - G.

**इदाह्नः पीतिम् उत वो मदं धुर् न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।**
**ते नूनम् अस्मे ऋभवो वसूनि तृतीये अस्मिन् त्सवने दधात।। ११।। २।।**

इदा। अह्नः। पीतिम्। उत। वः। मदम्। धुः। न। ऋते। श्रान्तस्य। सख्याय। देवाः।
ते। नूनम्। अस्मे इति। ऋभवः। वसूनि। तृतीये। अस्मिन्। सवने। दधात।। ११।।

*इस समय में दिन के पान को, तुम्हें आनन्द को प्रदान किया है,*
*नहीं बिना परिश्रम के, मित्रता के लिये (होते हैं) देव।*
*वे निश्चय से हमारे लिये, हे ऋभुओ!, धनों को,*
*तीसरे में इस सवन में, प्रदान करो तुम।। ११।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम जीवात्मा को अन्नमयकोश से आनन्दमयकोश तक की यात्रा सम्पन्न कराने के लिये बहुत अधिक तप और परिश्रम करती हो, इसी लिये दिव्य शक्तियां तुम्हें सोम के पान का अधिकारी बनाती हैं और तुम्हें आनन्द की प्राप्ति कराती हैं। यह सत्य है, कि बिना परिश्रम किये देव किसी से मित्रता नहीं करते। लक्ष्मी उसे ही मिलती है, जो परिश्रम करता है। नानाश्रान्ताय श्रीर् अस्ति ... इन्द्र इच् चरतः सखा (ऐ.ब्रा. ३३.३.१)। हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम निश्चय से अब इस तृतीय सवन के अवसर पर हमें वास कराने वाले लौकिक और दिव्य धन प्रदान करो।

टि. *आज* - **इदा अह्नः**। अस्मिन् काले दिनस्य।। इदानीम् अह्नः तृतीये सवने - वे.। इदा इदानीम् अह्नः सुत्यासम्बन्धिनः - सा.। इदानीं दिनस्य मध्ये - दया.। this day - G.

*पान को और आनन्द को* - **पीतिम् उत मदम्**। सोमपीतिं मदं च - वे.। सोमपानम् उतापि च मदं तज्जनितम् - सा.। the beverage and its exhilaration - W.

*नहीं बिना परिश्रम किये* - **न ऋते श्रान्तस्य**। न हि तपसः सख्याय ऋते भवन्ति - वे.। श्रान्तस्य श्रान्तात् तपोयुक्ताद् ऋते - सा.। न विना तपसा हतकिल्बिषस्य - दया.। not through regard, but (as the gift of one) wearied out (by penance) - W. not without toil - G.

*निश्चय से* - **नूनम्**। सम्प्रति - वे.। निश्चयम् - सा.। दया.।

## सूक्त ३४

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - ऋभवः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**ऋभुर् विभ्वा वाज इन्द्रो नो अच्छेमं यज्ञं रत्नधेयोप यात।**
**इदा हि वो धिषणा देव्यह्नाम् अधात् पीतिं सं मदा अग्मता वः।। १।।**

ऋभुः। विऽभ्वा। वाजः। इन्द्रः। नः। अच्छ। इमम्। यज्ञम्। रत्नऽधेया। उप। यात।
इदा। हि। वः। धिषणा। देवी। अह्नाम्। अधात्। पीतिम्। सम्। मदाः। अग्मत। वः।। १।।

*ऋभु, विभ्वा, वाज (और) इन्द्र, हमारे, ओर*
*इस यज्ञ की, रमणीय पदार्थ देने के लिये, निकट गमन करो तुम।*
*इस समय में, चूँकि तुम्हें वाग् प्रकाशमाना, दिनों के,*
*प्रदान करती है पान को, सम्यग् आनन्द प्राप्त होते हैं तुम को।। १।।*

वाज अन्न और बल से सम्बन्धित होने के कारण अन्नमयकोश और प्राणमयकोश पर शासन करने वाली दिव्य शक्ति है। विभ्वा व्यापकत्व के गुण से सम्बन्धित होने के कारण मनोमयकोश पर शासन करने वाली दिव्य शक्ति है। ऋभु प्रकाशकत्व के गुण से युक्त होने के कारण ज्ञानमयकोश पर शासन करने वाली दिव्य शक्ति है। इन्द्र आत्मा का उपलक्षण है और आनन्दमयकोश पर शासन करता है। हे वाज आदि दिव्य शक्तियो! तुम अन्नमयकोश से आनन्दमयकोश की ओर चलने वाली हमारे इस यात्रा रूपी यज्ञ में हमें उत्तम परिणाम प्रदान करने के लिये पधारो। दिनों के इस निश्चित समय पर ज्ञान के प्रकाश से युक्त हमारी स्तुति रूपी वाणी भक्तिरस के आनन्द का वितरण कर रही है। हे दिव्य शक्तियो! इस प्रकार यह दिव्यानन्द तुम्हें स्वतः ही प्राप्त हो रहा है। तुम इस आनन्द से तृप्त होकर आनन्दमयकोश की ओर चलने वाली हमारी इस यात्रा को सम्पन्न करो।

टि. *रमणीय पदार्थ देने के लिये* - **रत्नधेया**। रत्नदानाय - वे.। अस्मभ्यं रत्नधानाय - सा.। रत्नानि धनानि धीयन्ते यया तस्यै - दया.। to distribute precious things - W. with the gifts of riches - G.

*वाग् प्रकाशमाना* - **धिषणा देवी**। देवी स्तुतिवाक् - वे.। धिषणा वाक् देवी प्रजापतेः सम्बन्धिनी - सा.। प्रज्ञा दिव्यगुणा - दया.। the divine word - W. Dhiṣṇā the Goddess - G.

*प्रदान करती है पान को* - **अधात् पीतिम्**। विदधाति सोमपानम् - वे.। पीतिं सोमपानम् अधात् - सा.। दधाति पानम् - दया.। has desired the drinking (of the Soma) - W. hath set drink for you - G.

*आनन्द प्राप्त होते हैं तुमको* - **मदाः अग्मत वः**। देवैः सम् अग्मत वः मदाः - वे.। मदाः युष्मान् संगताः। यद्वा। वो मदा देवैः संगताः। सा.। the exhilarating draughts are colleced for you - W. the gladdening draughts have reached you - G.

**विदानासो जन्मनो वाजरत्ना उत ऋतुभिर् ऋभवो मादयध्वम्।**

**सं वो मदा अग्मत सं पुरंधिः सुवीराम् अस्मे रयिम् एरयध्वम्।। २।।**

विदानासः। जन्मनः। वाजऽरत्नाः। उत। ऋतुऽभिः। ऋभवः। मादयध्वम्।
सम्। वः। मदाः। अगमत। सम्। पुरम्ऽधिः। सुऽवीराम्। अस्मे इति। रयिम्। आ। ईरयध्वम्।। २।।

*जानने वाले जन्मों को, ऐश्वर्यों से रमण कराने वाले भी (सबको),*
*ऋतुओं के साथ, हे ऋत से प्रकाशमानो!, आनन्दित होवो तुम।*
*सम्यक् तुम्हें आनन्द प्राप्त होवें, सम्यक् (प्राप्त होवे) प्रज्ञा,*
*शोभन वीरों वाले को, हमारे लिये ऐश्वर्य को, इधर प्रेरित करो तुम।। २।।*

हे ऋत से और ज्ञान से प्रकाशमान दिव्य शक्तियो! तुम सबके जन्मों को और देवत्व की प्राप्ति के रहस्य को जानने वाली हो। तुम अपने ऐश्वर्यों को प्रदान करके सबको आनन्दित करने वाली हो। तुम सभी ऋतुओं के अनुसार आनन्द को प्राप्त करो। तुम्हें ये आनन्द हमेशा प्राप्त होते रहें और उत्तम विचारों वाली बुद्धि भी सदा प्राप्त होती रहे। तुम शोभन वीरों से युक्त ऐश्वर्यों को हमें सदा प्रदान करती रहो।

टि. *जानने वाले जन्मों को* - **विदानासः जन्मनः**। जानन्तः प्रादुर्भावकालम् - वे.। जननस्य देवत्वलक्षणस्य देवत्वप्राप्तिं जानन्तः। यद्वा। सोमप्राप्तिं जानन्तो जन्मनः पूर्वं मनुष्यजन्मवन्तश् च सन्तः। सा.। prescient of your (celestial) birth - W. knowing your birth - G.

*ऐश्वर्यों से रमण कराने वाले* - **वाजरत्नाः**। हे रमणीयान्नाः - वे.। हे सोमलक्षणेनान्नेन राजमानाः - सा.। विज्ञानादीनि रत्नादीनि येषां ते - दया.। resplendent with (sacrificial) food - W. rich in gathered treasure - G.

*ऋतुओं के साथ* - **ऋतुभिः**। ऋतुभिः सह - वे.। देवैः सह - सा.। मेधाविभिः - दया.। with the Ṛtus - W. G.

*प्रज्ञा* - **पुरंधिः**। प्रज्ञा - वे.। स्तुतिर् अपि - सा.। pious praise - W. wisdom - G.

*शोभन वीरों वाले को ऐश्वर्य को* - **सुवीराम् रयिम्**। सुपुत्रं धनम् - वे.। शोभनैर् वीरैः पुत्रैर् उपेतां रयिम् - सा.। riches with excellent posterity - W. G.

**अयं वो यज्ञ ऋभवो ऽकारि यमा मनुष्वत् प्रदिवो दधिध्वे।**
**प्र वो ऽच्छा जुजुषाणासो अस्थुर् अभूत विश्वे अग्रियोत वाजाः।। ३।।**

अयम्। वः। यज्ञः। ऋभवः। अकारि। यम्। आ। मनुष्वत्। प्रऽदिवः। दधिध्वे।
प्र। वः। अच्छ। जुजुषाणासः। अस्थुः। अभूत। विश्वे। अग्रिया। उत। वाजाः।। ३।।

*यह तुम्हारे लिये यज्ञ, हे ऋभुओ!, सम्पादित किया जा रहा है,*
*जिसको सर्वतः मननशील की तरह, तेजस्वी धारण करते हो तुम।*
*प्रकर्ष से तुम्हारे सम्मुख सेवन किये जाने वाले (सोम), स्थित हो गए हैं,*
*हो सब-के-सब अग्र भाग का सेवन करने वाले भी, हे ऐश्वर्य वालो।। ३।।*

हे ऋत का सेवन करने से विस्तृत ज्ञान से युक्त, आनन्दमयकोश की ओर यात्रा कराने वाली दिव्य शक्तियो! हम तुम्हारे लिये इस यज्ञ का सम्पादन कर रहे हैं, जिसे तेजस्वी तुम मननशील जन

की तरह स्वीकार कर रहे हो। हे ऐश्वर्यशालियो! अतिशय सेवन किये जाने वाले ये भक्तिरसरूपी सोम हमारे द्वारा तुम्हारे सम्मुख परोसे गए हैं, क्योंकि तुम सब अग्रभाग के भी अधिकारी हो।

टि. *मननशील की तरह* - **मनुष्वत्।** मनाव् इव मनुष्येषु इव वा - वे.। मनुष्यवत् - सा.। मननशीलविद्वद्वत् - दया.। after the manner of men - W. like men - G.

*तेजस्वी* - **प्रदिवः।** पुराणम् - वे.। प्रकर्षेण द्योतमानाः सन्तः - सा.। प्रकर्षेण विद्यादिसद्गुणान् कामयमानान् - दया.। who are eminently resplendent - W. aforetime - G.

*सर्वतः धारण करते हो तुम* - **आ दधिध्वे।** धारयत जठरे - सा.। you have accepted - W.

*सेवन किये जाने वाले* - **जुजुषाणासः।** युष्मान् सेवमाना ऋत्विजः - वे.। सेवमानाः सोमाः - सा.। भृशं सेवमानाः - दया.। the propitiatory (libations) - W. who find in you their pleasure - G.

*प्रकर्ष से स्थित हो गए हैं* - **प्र अस्थुः।** अभि प्र तस्थुः - वे.। प्रतिष्ठन्ते - सा.।

*अग्र भाग का सेवन करने वाले* - **अग्रिया।** प्रथमपायिनः - वे.। अग्रार्हा अग्रत्वसम्पादिनो वा - सा.। अग्रे भवाः - दया.। entitled to precedence - W.

**अभूँद् उ वो विधते रत्नधेयम् इदा नरो दाशुषे मर्त्याय।**
**पिबत वाजा ऋभवो ददे वो महि तृतीयं सवनं मदाय।। ४।।**

अभूत्। ऊँ इति। वः। विधते। रत्नऽधेयम्। इदा। नरः। दाशुषे। मर्त्याय।
पिबत। वाजाः। ऋभवः। ददे। वः। महि। तृतीयम्। सवनम्। मदाय।। ४।।

*होवे निश्चय से तुम्हारा, सेवा करने वाले के लिये दातव्य धन,*
*अब (और फिर), हे नायको!, हवि देने वाले मरणधर्मा के लिये।*
*पियो तुम, हे ऐश्वर्यशालियो!, हे मेधावियो!, देता हूँ मैं तुमको,*
*(सोम के) महान् तृतीय सवन को, आनन्द के लिये।। ४।।*

हे मनुष्यों का नेतृत्व करने वाली दिव्य शक्तियो! दिया जाने योग्य तुम्हारा रमणीय ऐश्वर्य इस समय और आगे भी तुम्हारी परिचर्या करने वाले और तुम्हें अपने नैवेद्य समर्पित करने वाले मनुष्य के लिये ही होने चाहियें। मैं भक्तिरससरूपी सोम के इस महान् और मुख्य सवन में तुम्हारी प्रसन्नता के लिये तुम्हें अपने भक्तिरस का आनन्द समर्पित कर रहा हूँ। हे अन्न, बल आदि ऐश्वर्य वालियो!, हे ऋत का पालन करने के कारण विस्तृत ज्ञान और प्रकाश वालियो! तुम इसका अपनी तृप्ति के लिये जी भरकर पान करो।

टि. *परिचर्या करने वाले के लिये* - **विधते।** परिचरते - वे.। विधतिः परिचरणकर्मा। स्तुत्या परिचरते। सा.। to the performing ( the sacred rite) - W. for the worshipper - G.

*दातव्य धन* - **रत्नधेयम्।** रत्नधानम् - वे.। दातव्यं रत्नम् - सा.। रत्नानि धीयन्ते यस्मिंस् तत् - दया.। the treasure that ought to be presented - W. the gift of riches - G.

*देता हूँ मैं तुमको* - **ददे वः।** दीयते युष्मभ्यम् - वे.। दद्याम् युष्मभ्यम् - दया.।

*महान् तृतीय सवन को* - **महि तृतीयं सवनम्।** महत् तृतीयं सवनम् - वे.। प्रभूतं तृतीयं सवनम्।

तत्सम्बन्धिनं सोमम् इत्यर्थः। सा.। the third solemn (diurnal) ceremony - W. the third and great libation - G.

**आ वाजा यातोप न ऋभुक्षा महो नरो द्रविणसो गृणानाः।**
**आ वः पीतयोऽभिपित्वे अह्नाम् इमा अस्तं नवस्वइव ग्मन्।। ५।। ३।।**

आ। वाजाः। यात। उप। नः। ऋभुक्षाः। महः। नरः। द्रविणसः। गृणानाः।
आ। वः। पीतयः। अभिऽपित्वे। अह्नाम्। इमाः। अस्तम्। नवस्वःऽइव। ग्मन्।। ५।।

*इधर, हे वाजो!, गमन करो तुम, पास हमारे, हे ऋभुक्षुओ!*
*महान् के लिये, हे नायको!, धन के लिये स्तुति किये जाते हुए।*
*आ (जाते हैं) तुम्हारे पास पान (सोम के), समाप्ति पर दिनों की,*
*ये, घर में नवप्रसूता गौएं जिस प्रकार, (आ) जाती हैं।। ५।।*

हे अन्न और बल से ऐश्वर्यशालियो! हे ऋत का पालन करने से ज्ञान और प्रकाश से युक्त शक्तियो! हे आनन्दधाम की ओर जाने वाली यात्रा का नेतृत्व करने वालियो! तुम ऐश्वर्यों की प्राप्ति कराने के कारण सदा स्तुति की जाती हो। तुम हमारी स्तुति को स्वीकार करने के लिये हमारे पास आ जाओ। हम हमेशा तुम्हें भक्तिरस रूपी सोम समर्पित करते हैं। तुम इस आनन्द का पान करने के लिये प्रत्येक दिन की समाप्ति पर अर्थात् तृतीय सवन के अवसर पर हमारे पास इस प्रकार आ जाओ, जिस प्रकार नवप्रसूता गौएं दिन ढल जाने पर अपने बछड़ों के पास दौड़कर आ जाती हैं।

टि. *हे ऋभुक्षुओ* - **ऋभुक्षाः**। हे ऋभवः - वे.। सद्गुणैर् महान्तः - सा.।

*महान् धन के लिये स्तुति किये जाते हुए* - **महः द्रविणसः गृणानाः**। महत् धनं वाचा गृणानाः - वे.। महो महतो द्रविणसो धनस्य। कर्मणि षष्ठ्यौ। महद् द्रविणं गृणानाः स्तुवन्तः। सा.। eulogizing exceeding wealth - W. glorified for the sake of mighty treasure - G.

*पान (सोम के)* - **पीतयः**। सोमाः - वे.। पानानि - सा.। दया.। draughts (of Soma) - W.

*समाप्ति पर दिनों की* - **अभिपित्वे अह्नाम्**। अपराह्णे - वे.। अह्नाम् अभिपतने समाप्तौ। तृतीये सवन इत्यर्थः। सा.। at the decline of the day - W. as the day is closing - G.

*घर में नवप्रसूता गौएं जिस प्रकार* - **अस्तम् नवस्वःऽइव**। गृहम् इव नवप्रसूता गावः - वे.। अस्तं गृहनामैतत्। गृहं नवस्वो नवप्रसवा गाव इव। सा.। गृहं यथा नवीनसुखः - दया.। like newly-delivered cows to their stalls - W. G.

**आ नपातः शवसो यातनोपेमं यज्ञं नमसा हूयमानाः।**
**सजोषसः सूरयो यस्य च स्थ मध्वः पात रत्नधा इन्द्रवन्तः।। ६।।**

आ। नपातः। शवसः। यातन। उप। इमम्। यज्ञम्। नमसा। हूयमानाः।
सऽजोषसः। सूरयः। यस्य। च। स्थ। मध्वः। पात। रत्नऽधाः। इन्द्रऽवन्तः।। ६।।

*इस ओर, हे न गिरने देने वालो बल के!, गमन करो निकट में,*
*इस यज्ञ के, नमस्कार के साथ आह्वान किये जाते हुए।*
*समान प्रीति वाले, मेधावी, जिसके निश्चय से हो तुम,*

*मधु का पान करो तुम, रत्नों को देने वाले, इन्द्र से युक्त।। ६।।*

हे अपने बल को च्युत न होने देने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! हम सत्कार के साथ तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं। तुम हमारे द्वारा पुकारे जाने पर हमारे इस यज्ञ के निकट में पधारो। समान प्रीति से युक्त, प्रज्ञावान्, रमणीय धनों को प्रदान करने वाली तुम, जिस आत्मा की अपनी ही हो, उसके साथ मिलकर तुम हमारे भक्तिरसरूपी सोम का तृप्तिपर्यन्त पान करो।

टि. *हे न गिरने देने वालो बल के* - **नपातः शवसः**। हे शवसः पुत्राः - वे.। बलस्य न पातयितारस् तस्य पुत्रा वा। बलवन्त इत्यर्थः। सा.। नपातः न विद्यते पात् पतनं येषां ते। शवसः बलवन्तः। दया.। sons of strength - W. ye Children of Strength - G.

*नमस्कार के साथ आह्वान किये जाते हुए* - **नमसा हूयमानाः**। हविषा हूयमानाः - वे.। स्तोत्रेण आकारिताः - सा.। सत्कारेण स्पर्द्धमानाः - दया.। invoked with veneration - W. invoked with humble adoration - G.

*जिसके निश्चय से हो तुम* - **यस्य च स्थ**। यस्य च भवथ सोमस्य - वे.। चेति प्रसिद्धौ। यस्येन्द्रस्य सम्बन्धिनो यूयं भवथ। सा.। with whom ye are in full accord - G.

*इन्द्र से युक्त* - **इन्द्रवन्तः**। इन्द्रेण सहिताः - वे.। प्रीतेनेन्द्रेण तद्वन्तः - सा.। इन्द्रवन्तः ऐश्वर्यवन्तः - दया.। associated with Indra - W. joined with Indra - G.

**सजोषा इन्द्र वरुणेन सोमं सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः।**
**अग्रेपाभिर् ऋतुपाभिः सजोषा ग्नास्पत्नीभी रत्नधाभिः सजोषाः।। ७।।**

सऽजोषाः। इन्द्र। वरुणेन। सोमम्। सऽजोषाः। पाहि। गिर्वणः। मरुत्ऽभिः।
अग्रेऽपाभिः। ऋतुऽपाभिः। सऽजोषाः। ग्नाःपत्नीभिः। रत्नऽधाभिः। सऽजोषाः।। ७।।

*संगत (होकर), हे इन्द्र!, वरुण के साथ सोम को (पी तू),*
*संगत (होकर) पी तू, हे स्तुतियों से सेवनीय!, मरुतों के साथ।*
*सर्वप्रथम पीने वालों के साथ, ऋतु-अनुसार पीने वालों के साथ, संगत (होकर),*
*स्त्रीपालिकाओं के साथ, रत्न देने वालियों के साथ, संगत (होकर)।। ७।।*

हे स्तुतियों के द्वारा सेवन करने योग्य परमेश्वर! तू अनेक प्रकार की शक्तियों का स्वामी है। तू अपनी इन सब शक्तियों के साथ मिलकर हमारे भक्तिरस रूपी सोम का पान कर। तू जगत् को सब ओर से घेरकर रक्षा करने वाली अपनी शक्ति के साथ हमारे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त कर। तू अपनी प्राणदायिनी शक्तियों के साथ हमारे भक्तिरस का आनन्द ले। तू सबसे पूर्व पान करने वाली और ऋतुओं के अनुसार पान करने वाली अपनी शक्तियों के साथ मिलकर हमारे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त कर। तू रमणीय धनों को देने वाली और दिव्यताओं की रक्षा करने वाली अपनी शक्तियों के साथ मिलकर हमारे भक्तिरस रूपी सोम का पान कर।

टि. *संगत होकर* - **सजोषाः**। संगतः - वे.। समानप्रीतिः सन्, संगतः सन् - सा.। समानप्रीतिसेवी - दया.। sympathizing in satisfaction - W. close-knit - G.

*हे स्तुतियों से सेवनीय* - **गिर्वणः**। गीर्भिर् वननीय - वे.। संभजनीय - सा.। गीर्भिः स्तुत -

दया.। thou who art entitled to praise - W. Hymn-lover - G.

*सर्वप्रथम पीने वालों के साथ* - **अग्रेपाभिः**। प्रथमपातृभिः - सा.। ये अग्रे पान्ति रक्षन्ति तैः - दया.। with the first drinkers - W. G.

*ऋत्वनुसार पीने वालों के साथ* - **ऋतुपाभिः**। स्वकाले पिबद्भिः - वे.। ऋतुयाजदेवैः - सा.। ये ऋतुषु पान्ति तैः - दया.। with the drinkers (at the sacrifices) of the Ṛtus - W. with those who drink in season - G.

*स्त्रीपालिकाओं के साथ* - **ग्नास्पत्नीभिः**। ग्नासंज्ञिताभिर् देवपत्नीभिः - वे.। स्त्रीणां पालयित्र्यो देव्यो ग्नाःपत्न्यः। ताभिः। मेना ग्ना इति स्त्रीणाम् इति निरुक्तम् (३.२१)। सा.। या ग्नाः पतीनां स्त्रियस् ताभिः - दया.। with the protectresses of the wives (of the gods) - W. with heavenly Dames - G.

**सजोषस आदित्यैर् मादयध्वं सजोषस ऋभवः पर्वतेभिः।**
**सजोषसो दैव्येना सवित्रा सजोषसः सिन्धुभी रत्नधेभिः।। ८।।**

सऽजोषसः। आदित्यैः। मादयध्वम्। सऽजोषसः। ऋभवः। पर्वतेभिः।
सऽजोषसः। दैव्येन। सवित्रा। सऽजोषसः। सिन्धुऽभिः। रत्नऽधेभिः।। ८।।

*समान प्रीति वाले (होकर), आदित्यों के साथ आनन्दित होवो तुम,*
*समान प्रीति वाले (होकर), हे ऋभुओ!, पर्वों में पूजितों के साथ।*
*समान प्रीति वाले (होकर), देवों का हित करने वाले सविता के साथ,*
*समान प्रीति वाले (होकर), सिन्धुओं के साथ, रत्नदाताओं के साथ।। ८।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम आदित्यों के साथ, वर्ष के बारह मासों के साथ अथवा आदित्य के समान तेजस्वी विद्वान् पुरुषों के साथ समान प्रीति वाली होकर हमारे भक्तिरस रूपी सोम का आनन्द प्राप्त करो। तुम पर्वतों और मेघों के साथ अथवा अमावस्या पूर्णिमा आदि पर्वों के अवसरों पर सत्कृत किये जाने वाले देवों के साथ समान प्रीति वाली होकर हमारे भक्तिरस रूपी सोम का आनन्द प्राप्त करो। तुम सब दैवी शक्तियों का हित करने वाले, सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर के साथ समान प्रीति वाली होकर हमारे भक्तिरस रूपी सोम का आनन्द प्राप्त करो। तुम रमणीय धनों को प्रदान करने वाली स्यन्दमान जलधाराओं, नदी-नदों तथा समुद्रों के साथ समान प्रीति वाले होकर हमारे भक्तिरस रूपी सोम का आनन्द प्राप्त करो।

टि. *आदित्यों के साथ* - **आदित्यैः**। कृताष्टाचत्वारिंशद्ब्रह्मचर्यविद्यैः - दया.।

*पर्वों में पूजितों के साथ* - **पर्वतेभिः**। पर्ववद्भिः पर्वण्यर्च्यमानैर् देवविशेषैः - सा.। मेघैः सह - दया.। with the Parvatas - W. G.

*देवों का हित करने वाले सविता के साथ* - **दैव्येन सवित्रा**। देवेभ्यो हितेन सवित्रा - सा.। दिव्यस्वरूपेण विद्युद्रूपेण - दया.। with Savitar, Divine One - G.

*सिन्धुओं के साथ* - **सिन्धुभिः**। स्यन्दनस्वभावैर् नद्यभिमानिदेवैश् च - सा.। नदीभिः समुद्रैर् वा - दया.। with the (deities of the) rivers - W. with floods - G.

**ये अश्विना ये पितरा य ऊती धेनुं ततक्षुर् ऋभवो ये अश्वा।**
**ये अंसत्रा य ऋधग् रोदसी ये विभ्वो नरः स्वपत्यानि चक्रुः।। ९।।**

ये। अश्विना। ये। पितरा। ये। ऊती। धेनुम्। ततक्षुः। ऋभवः। ये। अश्वा।
ये। अंसत्रा। ये। ऋधक्। रोदसी इति। ये। विऽभ्वः। नरः। सुऽअपत्यानि। चक्रुः।। ९।।

*जो अश्वियों को, जो माता-पिता को, जो रक्षा से,*
*गौ को बनाते हैं, मेधावी, जो (बनाते हैं) अश्वों को।*
*जो अंसत्राणों को, जो पृथक् करते हैं द्युलोक-भूलोक को,*
*जो व्याप्त, नायक, उत्तम सन्ततियों को बनाते हैं।। ९।।*

हे हृदय रूपी आकाश में निवास करने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम जो अपने संरक्षण, प्रीति, समृद्धि आदि के द्वारा बल को धारण करने वाले प्राण और अपान को सुरक्षा, प्रीति, समृद्धि आदि प्रदान करती हो, तुम जो अन्नमयकोश नामक जड़ जगत् में प्रज्ञाविशेष के स्थान रूप पृथिवी माता को और शुद्ध सत्त्व से युक्त मन की प्रधानता वाले प्रज्ञाविशेष के स्थान रूप द्यौ पिता को जीर्णता आदि से मुक्त करके तारुण्य अर्थात् नित्य रहने वाली एकरसता से युक्त करती हो, तुम जो ज्ञान रूपी गौ को अज्ञान रूपी चर्म के आवरण से मुक्त करके उसे शुद्ध रूप में प्रस्तुत करती हो, तुम जो शारीरिक और मानसिक बलों का निर्माण करने वाली हो, तुम जो आत्मा के लिये शरीर रूपी कवच का निर्माण करती हो, तुम जो चेतन और जड़ के भेद को स्पष्ट रूप से दिखाती हो, तुम जो उत्तम विचारों और उदात्त भवनाओं का सर्वत्र विस्तार करती हो, शरीर में सर्वत्र व्याप्त और सबका नेतृत्व करने वाली तुम हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करो।

टि. *रक्षा से* - ऊती। रक्षणार्थम् - वे.। ऊत्या क्रियया रथनिर्माणरूपया - सा.। रक्षणाद्येन - दया.। by your assistance - W. helped - G.

*बनाते हैं* - ततक्षुः। तक्षणेन समपादयन् - सा.। सूक्ष्मां विस्तृतां च कुर्वन्ति - दया.। fabricated - W. formed - G.

*अंसत्राणों को* - अंसत्रा। देवानाम् इन्द्रस्य अंसत्रौ अकुर्वन् - वे.। अंसत्राणि कवचानि देवेभ्यश् चक्रुः - सा.। armour - W. G.

*जो पृथक् करते हैं द्युलोक-भूलोक को* - ये ऋधक् रोदसी। ये च द्यावापृथिव्यौ ऋद्धं कुर्वन्ति - वे.। ये च द्यावापृथिव्यौ पृथक् चक्रुः - सा.। ये यथार्थतया द्यावापृथिव्यौ - दया.। who separated earth and heaven - W. who set the heaven and earth asunder - G.

*उत्तम सन्ततियों को बनाते हैं* - स्वपत्यानि चक्रुः। ये शोभनानि कर्माणि रथकरणादीनि चक्रुः - वे.। स्वपतनसाधनानि तत्प्राप्तिसाधनानि वा कर्माणि चक्रुः - सा.। सुष्ठु शिक्षयोत्तमानि चापत्यानि च तानि कुर्युः - दया.। accomplished (acts productive of) good results - W. they have made good offspring - G.

**ये गोमन्तं वाजवन्तं सुवीरं रयिं धत्थ वसुमन्तं पुरुक्षुम्।**
**ते अग्रेपा ऋभवो मन्दसाना अस्मे धत्त ये च रातिं गृणन्ति।। १०।।**

ये। गोऽमन्तम्। वाजऽवन्तम्। सुऽवीरम्। रयिम्। धत्थ। वसुऽमन्तम्। पुरुऽक्षुम्।
ते। अग्रेऽपाः। ऋभवः। मन्दसानाः। अस्मे इति। धत्त। ये। च। रातिम्। गृणन्ति।। १०।।

*जो गोमान् को, वाजवान् को, शोभन वीरों वाले को,*
*धन को, धारण करते हो तुम, वास वाले को, बहुत अन्न वाले को।*
*वे सर्वप्रथम पान करने वाले (तुम), हे ऋभुओ!, आनन्दित होते हुए,*
*हमें दो (उनको), और जो दान की (तुम्हारे) स्तुति करते हैं।। १०।।*

हे सर्वप्रथम आनन्दरस का पान करने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! जो तुम ज्ञान वाले, बल वाले, उत्तम वीर सन्तति वाले, आवास प्रदान करने वाले, प्रभूत भोजन को देने वाले धन को इस अन्नमयकोश रूपी शरीर में धारण करती हो, उसे प्रसन्नता के साथ हमें प्रदान करो और जो उपासक जन तुम्हारे द्वारा दिये जाने वाले दान की प्रशंसा करते हैं, उन्हें भी प्रदान करो।

टि. *गोमान् को* - **गोमन्तम्।** गोसहितम् - सा.। बह्व्यो गावो विद्यन्ते यस्मिन् - दया.।

*वाजवान् को* - **वाजवन्तम्।** अन्नवन्तम् - सा.। बह्वन्नविज्ञानसाधकम् - दया.।

*धारण करते हो तुम* - **धत्थ।** प्रयच्छथ - वे.। धारयथ मह्यं दातुम् - सा.।

*वास वाले को* - **वसुमन्तम्।** वासयितृपुरुषयुक्तम् - वे.। निवासयोग्यगृहादिधनोपेतम् - सा.। बहुविधद्रव्यसहितम् - दया.। comprising dwellings - W.

*बहुत अन्न वाले को* - **पुरुक्षुम्।** बहुशब्दम् - वे.। बह्वन्नम् - सा.। पुरुक्षुम् बहुधनधान्यसहितम् - दया.। comprising abundant sustenance - W. in rich sustenance - G.

*और जो दान की (तुम्हारे) स्तुति करते हैं* - **ये च रातिम् गृणन्ति।** ये च अन्ये देवाः धनम् उच्चारयन्ति - वे.। ये च यूयं रातिं दानं दत्तं सोमं वा गृणन्ति स्तुवन्ति। यद्वा। ये च रातिं गृणन्ति यजमानास् (तेभ्यो ऽपि धत्त)। सा.। ये च दानं स्तुवन्ति - दया.। (and upon those) who laud your liberality - W. and those who loud our present - G.

**नापाभूत न वो ऽतीतृषामानिःशस्ता ऋभवो यज्ञे अस्मिन्।**
**सम् इन्द्रेण मदथ सं मरुद्भिः सं राजभी रत्नधेयाय देवाः।। ११।। ४।।**

न। अप। अभूत। न। वः। अतीतृषाम। अनिःऽशस्ताः। ऋभवः। यज्ञे। अस्मिन्।
सम्। इन्द्रेण। मदथ। सम्। मरुत्ऽभिः। सम्। राजऽभिः। रत्नऽधेयाय। देवाः।। ११।।

*मत दूर होवो (हमसे), मत तुमको नितान्त तरसाएं हम,*
*निन्दारहित होते हुए, हे ऋभुओ!, यज्ञ में इसमें।*
*साथ इन्द्र के आनन्दित होवो तुम, साथ मरुतों के,*
*साथ प्रकाशमानों के, रत्नों को देने के लिये, हे देवो।। ११।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम कभी हम से दूर मत होवो। हम तुम्हें आनन्द के पान से बिल्कुल भी कभी वंचित न करें। हम निन्दारहित होकर सदा इस जीवनयज्ञ में तुम्हें अपने भक्तिरस के आनन्द का पान कराते रहें। यदि हम ऐसा न करेंगे, तो इससे हमारी ही निन्दा होगी। हे प्रकाशमानो! तुम हमें रमणीय अन्तर्धन प्रदान करने के लिये आत्मा के साथ, प्राणों के साथ और

इन्द्रिय आदि अन्य प्रकाशमान शक्तियों के साथ आनन्दित होती रहो।

टि. *मत तुमको बिल्कुल तरसाएं हम* - **न वः अतीतृषाम**। न वयं युष्मान् तृषितान् कुर्मः - वे.। अत्यन्तं तृषितान् मा करवाम - सा.। अतितृष्णायुक्तान् न कुर्याम - दया.।

*निन्दारहित होते हुए* - **अनिःशस्ताः**। न निःशस्ताः, अपि त्वन्तर्भूता एव - वे.। अनिन्दिताः सन्तः - सा.। निर्गतं शस्तं प्रशंसनं येभ्यस् तद्विरुद्धाः - दया.। unreproached - W.

*साथ प्रकाशमानों के* - **सम् राजभिः**। सम् मदथ आदित्यैश् च - वे.। राजमानैर् अन्यैर् देवैः सं मदथ - सा.। with (other) brilliant (divinities) - W. with the Kings - G.

*रत्नों को देने के लिये* - **रत्नधेयाय**। रत्नानि दातुम् - वे.। रमणीयाय धनदेयाय - सा.।

## सूक्त ३५

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - ऋभवः। छन्दः - त्रिष्टुप्। नवर्चं सूक्तम्।

**इहोप यात शवसो नपातः सौधन्वना ऋभवो माप भूत।**
**अस्मिन् हि वः सवने रत्नधेयं गमन्त्विन्द्रम् अनु वो मदासः॥ १॥**

इह। उप। यात। शवसः। नपातः। सौधन्वनाः। ऋभवः। मा। अप। भूत।
अस्मिन्। हि। वः। सवने। रत्नऽधेयम्। गमन्तु। इन्द्रम्। अनु। वः। मदासः॥ १॥

*यहाँ निकट में गमन करो तुम, हे बल का पतन न होने देने वालो!,*
*हे शोभन अन्तरिक्ष के निवासियो, मेधावियो!, मत परे होवो तुम।*
*इसमें ही तुम्हारे सवन में, रत्नों को देने वाले के,*
*गमन करें पश्चात् इन्द्र के, तुम्हारे आनन्द॥ १॥*

हे कभी बल का पतन न होने देने वाली, हृदयरूपी सुन्दर अन्तरिक्ष में निवास करने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम यहां हमारे निकट आओ, हमसे दूर मत रहो। तुम्हारे लिये सम्पादित इस हमारे अन्तर्यज्ञ में रमणीय अन्तर्धनों को देने वाले आत्मारूपी सत्यज्योति के द्वारा आनन्दप्राप्ति के पश्चात् आप ही आनन्दप्राप्ति की अधिकारिणी हैं।

टि. *हे बल का पतन न होने देने वालो* - **शवसः नपातः**। हे शवसः पुत्राः - वे.। बलस्य पुत्राः तस्य न पातयितारो वा - सा.। प्रशस्तबलाः अविद्यमानह्रासाः - दया.। sons of strength - W. G.

*हे सुन्दर अन्तरिक्ष के निवासियो* - **सौधन्वनाः**। हे सुधन्वनः पुत्राः - वे.। सा.। शोभनानि धन्वान्यन्तरिक्षस्थानि येषां तेषाम् इमे - दया.। sons of Sudhanvan - W. G.

*रत्नों को देने वाले के पश्चात्* - **रत्नधेयम् अनु**। रत्नदानम्, (इन्द्रम्) अनु - वे.। रमणीय-धनस्य दातारम् इन्द्रम् अनुसृत्य - सा.। after the munificent Indra - W. is your gift of treasure, after Indra's - G.

**आगन्नृभूणाम् इह रत्नधेयम् अभूत् सोमस्य सुषुतस्य पीतिः।**
**सुकृत्यया यत् स्वपस्यया चँ एकं विचक्र चमसं चतुर्धा॥ २॥**

आ। अगन्। ऋभूणाम्। इह। रत्नऽधेयम्। अभूत्। सोमस्य। सुऽसुतस्य। पीतिः।
सुऽकृत्यया। यत्। सुऽअपस्यया। च। एकम्। विऽचक्र। चमसम्। चतुःऽधा।। २।।

*आ जाए ऋभुओं का यहाँ, रमणीय धनों का दान,*
*होता रहे सोम का, सम्यक् सवन किये हुए का, पान।*
*शोभन कर्मकौशल से, जब शोभन कर्म की इच्छा से भी,*
*एक को विशेष रूप से बना देते हो, चमस को चार प्रकार का।। २।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम्हारे रमणीय धनों के दान की प्रक्रिया इस शरीर में सदा चलती रहे। भली प्रकार सम्पादितं किये हुए भक्तिरस के आनन्द का पान यहां हमेशा होता रहे। सुन्दर कर्मकौशल के कारण और उत्तम कर्म करने की इच्छा के कारण तुम एक ही चमस को चार भागों वाला बना देती हो, अर्थात् जीवात्मा को अन्नमयकोश रूपी पात्र से क्रमशः प्राणमयकोश, मनोमयकोश, ज्ञानमयकोश और आनन्दमयकोश रूपी पात्रों की यात्रा कराती हो।

टि. *आ जाए* - आ अगन्। आ गच्छतु - वे.। आगच्छतु मह्यम्। यद्वा। युष्माकम् एव सोमाख्यं रत्नम् आगन्। सा.। come to me - W. (hither) is come - G.

*रमणीय धनों का दान* - रत्नधेयम्। रत्नदानम् - वे.। सा.। the munificence - W. the gift of riches - G.

*शोभन कर्मकौशल से* - **सुकृत्यया।** सुकर्मणा - वे.। शोभनहस्तव्यापारेण - सा.। शोभनक्रियया - दया.। by dexterity - G.

*शोभन कर्म की इच्छा से* - **स्वपस्यया।** शोभनकरणेच्छया - वे.। शोभनरथनिर्माणादिकर्मेच्छया - सा.। सुष्ठ्वपांसि कर्माणि तान्यात्मन इच्छया - दया.। by skill as craftsman - G.

*एक को विशेष रूप से बना देते हो चमस को चार प्रकार का* - **एकम् विचक्र चमसम् चतुर्धा।** एकं सन्तं चमसं विकृतवन्तः स्थ चतुर्धा - वे.। एकं सन्तं चमसं चतुर्धा कृतवन्तः - सा.। मेघम् इव गर्जनावन्तं रथं अधऊर्ध्वतिर्यक्समगतियुक्तम् कुर्वन्ति - दया.। ye made the single chalice to be fourfold - G.

**व्यकृणोत चमसं चतुर्धा सखे वि शिक्षेत्यब्रवीत।**
**अथैत वाजा अमृतस्य पन्थां गणं देवानाम् ऋभवः सुहस्ताः।। ३।।**

वि। अकृणोत। चमसम्। चतुःऽधा। सखे। वि। शिक्ष। इति। अब्रवीत।
अथ। ऐत। वाजाः। अमृतस्य। पन्थाम्। गणम्। देवानाम्। ऋभवः। सुऽहस्ताः।। ३।।

*अलग-अलग कर देते हो तुम चमस को चार प्रकार से,*
*हे मित्र! दे दे (इसे देवों को), ऐसा कहते हो तुम।*
*तत्पश्चात् प्राप्त कर लेते हो तुम, हे बलशालियो!, अमृत के मार्ग को,*
*गण को देवों के (प्राप्त कर लेते हो), हे ऋभुओ!, हे शोभन हाथों वालो।। ३।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! जब तुम एक चमस को चार भागों में विभक्त कर देती हो, अर्थात् जीवात्मा के लिये अन्नमयकोश से आनन्दमयकोश की यात्रा का मार्ग प्रशस्त कर देती

हो, तो तुम तुम्हें प्रेरित करने वाले अग्नितत्त्व को कहती हो कि इन्हें देवों को दे दो। देव उन्हें पाकर प्रसन्न होते हैं और हे कुशलतापूर्वक कर्म करने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तब तुम्हें अमरता का मार्ग प्राप्त हो जाता है और तुम्हारी गणना देवों में होने लग जाती है।

टि. *अलग-अलग कर देते हो तुम* - **वि अकृणोत**। व्यकुरुत - सा.।

*हे मित्र* - **सखे**। हे सखिभूताग्ने - सा.।

*दे दो (इसे देवों को)* - **वि शिक्ष**। देवेभ्यः चमसम् इमं वि देहि - वे.। अनुगृहाण सोमपानम् - सा.। assent (to the division) - W. assist us - G.

*प्राप्त कर लेते हो तुम अमृत के मार्ग को* - **ऐत अतृतस्य पन्थाम्**। प्राप्तवन्तः स्थ अमृतत्व-प्राप्तेः पन्थानम् - वे.। अमृतस्यामरणधर्मकस्य स्वर्गस्य पन्थां पन्थानम् ऐत गच्छत - सा.। प्राप्नुत नाशरहितस्य मोक्षस्य पन्थाम् - दया.। have you gone the path of immortals - W. G.

*गण को देवों के* - **गणम् देवानाम्**। देवगणम् - वे.। देवानाम् इन्द्रादीनां गणं संघातम् - सा.। समूहं विदुषाम् - दया.। (you have joined) the company of the gods - W. G.

**किंमयः स्विच् चमस एष आस यं काव्येन चतुरो विचक्र।**
**अथा सुनुध्वं सवनं मदाय पात ऋभवो मधुनः सोम्यस्य।। ४।।**

किम्ऽमयः। स्वित्। चमसः। एषः। आस। यम्। काव्येन। चतुरः। विऽचक्र।
अथ। सुनुध्वम्। सवनम्। मदाय। पात। ऋभवः। मधुनः। सोम्यस्य।। ४।।

*किस वस्तु से बना हुआ चमस यह है,*
*जिसको काव्यकौशल से, चार बनाते हो तुम।*
*अब सवन करो तुम सोम का, आनन्द के लिये,*
*पियो तुम, हे ऋभुओ!, मधु को सोम वाले को।। ४।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! यह तो बताओ, कि यह चमस जिस एक को तुम अपने काव्यकौशल से चार भागों में विभक्त करती हो, किस वस्तु से बना हुआ है? तुमने अपनी बुद्धि और कार्यकुशलता से अपना काम कर दिया। अब तुम हर्ष की प्राप्ति के लिये आनन्द का सम्पादन करो और आनन्दयुक्त इस मधु का पान करो।

टि. *किस वस्तु से बना हुआ* - **किंमयः**। किंनिमित्तः- वे.। किमात्मकः - सा.। यः किं मिनोति सः - दया.। what sort of - W. of what substance - G.

*काव्यकौशल से* - **काव्येन**। कविकर्मणा - वे.। कविनां मेधाविनां सम्बन्धिना कर्मणा कौशलेन - सा.। कविना निर्मितेन विधिना - दया.। by skill - W. by your art and wisdom - G.

*अब* - **अथ**। सम्प्रति - वे.। अधुना - सा.। अत्र निपातस्य चेति दीर्घः - दया.। now - W.

*सवन करो तुम सोम का* - **सुनुध्वम् सवनम्**। सुनुध्वं तृतीयं सवनम् - वे.। सूयत इति सवनः सोमः, तं सुनुध्वम् - सा.। निष्पादयत कार्यसिद्ध्यर्थं कर्म - दया.। pour foth the Soma - W. press out the liquor - G.

*पियो तुम मधु को सोम वाले को* - **पात मधुनः सोम्यस्य**। पिबत सोममयं मधु - वे.। सोम-

सम्बन्धिनं मधुनो मधुरं रसं पिबत – सा.। drink of the sweet Soma libation - W. drink of the meath of Soma - G.

**शच्याकर्त पितरा युवाना शच्याकर्त चमसं देवपानम्।**
**शच्या हरी धनुतराव् अतष्टेन्द्रवाहाव् ऋभवो वाजरत्नाः।। ५।। ५।।**

शच्या। अकर्त। पितरा। युवाना। शच्या। अकर्त। चमसम्। देवऽपानम्।
शच्या। हरी इति। धनुऽतरौ। अतष्ट। इन्द्रऽवाहौ। ऋभवः। वाजऽरत्नाः।। ५।।

*कर्मशक्ति से (अपनी) बना देते हो तुम माता-पिता को युवा,*
*कर्मशक्ति से (अपनी) बना देते हो तुम, चमस को देवपात्र को।*
*कर्मशक्ति से (अपनी) अश्वों को, बाण से शीघ्रतरों को बना देते हो,*
*इन्द्र को वहन करने वालों को, हे ऋभुओ!, रमणीय ऐश्वर्य वालो।। ५।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम अपनी कार्यकुशलता से अन्नमयकोश नामक इस जड़ शरीर में प्रज्ञाविशेष की स्थान रूपी पृथिवी माता को और शुद्ध सत्त्व से युक्त मन की प्रधानता वाले प्रज्ञाविशेष के स्थान रूप द्यौ पिता को जीर्णता आदि से बचाकर तारुण्य अर्थात् नित्य रहने वाली एकरसता प्रदान करती हो। तुम अपने कर्मकौशल से देवों को आनन्द का पान कराने के लिये उन्हें अन्नमयकोश से आनन्दमयकोश की यात्रा कराती हो। हे रमणीय ऐश्वर्यों से युक्त सत्यज्योति की रश्मियो! तुम अपने कर्मकौशल से आत्मा रूपी इन्द्र को वहन करने के लिये वाण से भी अधिक तीव्र गति वाले प्राण और अपान रूपी अश्वों का निर्माण करती हो।

टि. *कर्मशक्ति से* – **शच्या**। प्रज्ञया – वे.। कर्मणा – सा.। प्रज्ञया कर्मणा वाण्या – दया.। by your (marvellous) deeds - W. with your cunning: power and skill as craftsman - G.

*चमस को देवपात्र को* – **चमसम् देवपानम्**। देवानां सोमपानसाधनम् – वे.। चमसं देवपानार्हम् – सा.। पानसाधनं देवाः पिबन्ति येन तत् – दया.। the cup, for gods to drink - G.

*बाण से शीघ्रतरों को* – **धनुतरौ**। गन्तृतरौ – वे.। शीघ्रं गमयितारौ – दया.। swifter than (an arrow from) a bow - W. swift - G.

*बना देते हो* – **अतष्ट**। कृतवन्तः – वे.। अतष्ट तक्षणेन सम्पादितवन्तः – सा.। निष्पादयत – दया.। you have made - W. fashioned - G.

*रमणीय ऐश्वर्यों वालो* – **वाजरत्नाः**। रमणीयाननाः – वे.। रमणीयसोमान्नाः – सा.। वाजा अन्नादयो रत्नानि सुवर्णादीनि च येषां ते – दया.। rich in (sacrificial) food - W. rich in treasures - G.

**यो वः सुनोत्यभिपित्वे अह्नां तीव्रं वाजासः सवनं मदाय।**
**तस्मै रयिम् ऋभवः सर्ववीरम् आ तक्षत वृषणो मन्दसानाः।। ६।।**

यः। वः। सुनोति। अभिऽपित्वे। अह्नाम्। तीव्रम्। वाजासः। सवनम्। मदाय।
तस्मै। रयिम्। ऋभवः। सर्वऽवीरम्। आ। तक्षत। वृषणः। मन्दसानाः।। ६।।

*जो तुम्हारे लिये सवन करता है, अवसान पर दिनों के,*

*अधिक रसीले को, हे बलशालियो!, सोम को, आनन्द के लिये।*
*उसके लिये ऐश्वर्य को, हे ऋभुओ!, बहुत वीरों वाले को,*
*सर्वतः निर्मित करो तुम, हे सुखवर्षको!, आनन्दित होते हुए।। ६।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की बलशाली रश्मियो! जो मनुष्य दिनों की समाप्ति पर अर्थात् सायंकालीन सवन के अवसर पर तुम्हारे हर्ष के लिये अत्यधिक रसीले आनन्द का निष्पादन करता है, उसके उस कार्य से आनन्दित होती हुई तुम, हे सुख की वर्षा करने वालियो!, सब ओर से बहुत वीर सन्तानों से युक्त ऐश्वर्य का निर्माण करो।

टि. हे *बलशालियो* - **वाजासः**। हे वाजाः - वे.। अन्नवन्तः - सा.। Distributers of food - W. Vājas - G.

*अधिक रसीले को सोम को* - **तीव्रम् सवनम्**। तीव्ररसं सोमम् - वे.। तीव्रं रसवत्तरम्, सूयत इति सवनः सोमः तम् - सा.। तेजोमयम् ऐश्वर्यम् - दया.। the acrid libation - W. the sharp libation - G.

*ऐश्वर्य को बहुत वीरों वाले को* - **रयिम् सर्ववीरम्**। धनं बहुपुत्रोपेतम् - सा.। रयिम् श्रियम्, सर्ववीरम् सर्वे वीरा यस्मात् तम् - दया.। comprising all posterity - W. wealth with plenteous store of heroes - G.

हे *सुखवर्षको* - **वृषणः**। हे फलवर्षितारः - सा.। बलिष्ठाः - दया.। showerers (of benefits) - W. mighty - G.

**प्रातः सुतम् अपिबो हर्यश्व माध्यंन्दिनं सवनं केवलं ते।**
**सम् ऋभुभिः पिबस्व रत्नधेभिः सखीँर् याँ इन्द्र चकृषे सुकृत्या।। ७।।**

प्रातर् इति। सुतम्। अपिबः। हरिऽअश्व। माध्यन्दिनम्। सवनम्। केवलम्। ते।
सम्। ऋभुऽभिः। पिबस्व। रत्नऽधेभिः। सखीन्। यान्। इन्द्र। चकृषे। सुऽकृत्या।। ७।।

*प्रातः सवन किये हुए को पीता है तू, हे कमनीय अश्वों वाले,*
*दिन के मध्य में होने वाला सवन है केवल तेरे लिये।*
*साथ ऋभुओं के, पान कर तू, रमणीय धनों को देने वालों के,*
*मित्र जिनको, हे इन्द्र!, बनाता है तू, शोभन कर्मकौशल के कारण।। ७।।*

हे कमनीय अश्वशक्तियों से युक्त प्राण और अपान के स्वामी आत्मा अथवा परमात्मा! प्रातः मध्याह्न और सायं इन तीनों कालों में समर्पित की जाने वाली पूजा में तू ही मुख्य भागीदार है। प्रातः काल में समर्पित किये जाने वाले भक्तिरस रूपी सोम का तू पान करता है। मध्यकाल में भक्तिरस का आनन्द तो केवल तुझे ही समर्पित किया जाता है। सायंकाल में समर्पित किये जाने वाले भक्तिरस का आनन्द तू रमणीय धनों को देने वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की उन रश्मियों के साथ प्राप्त करता है, जिन्हें तूने उनकी कर्मकुशलता के कारण मित्र बना रखा है।

टि. हे *कमनीय अश्वों वाले* - **हर्यश्व**। हरितवर्णाश्वोपेतेन्द्र - सा.। हर्याः कमनीया गमनीया अश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.। Lord of horses - W. Lord of Bay Steeds - G.

*पीता है तू* - **अपिबः**। पिबस्व - सा.। पिब - दया.।

*साथ रमणीय धनों को देने वालों के* - **सम् रत्नधेभिः**। रमणीयदानैः सम् - सा.। ये रत्नानि दधति तैः सह - दया.। with the munificent - W. with the wealth-bestowing - G.

*बनाता है तू* - **चकृषे**। कृतवान् असि - वे.। अकरोः - सा.। करोषि - दया.।

*शोभन कर्मकौशल के कारण* - **सुकृत्या**। सुकृत्या शोभनकर्मणा - सा.। शोभनेन धर्म्येण कर्मणा - दया.। by good deeds - W. for their skill - G.

**ये दे॒वासो॒ अभ॑वता सुकृ॒त्या श्ये॒ना इ॒वेद् अधि॑ दि॒वि नि॑षे॒द।**
**ते रत्नं॑ धात शवसो नपात॒ः सौध॑न्वना॒ अभ॑वता॒म् ऋता॑सः॥ ८॥**

ये। दे॒वासः॑। अभ॑वत। सु॒ऽकृ॒त्या। श्ये॒नाःऽइ॑व। इत्। अधि॑। दि॒वि। नि॒ऽसे॒द।
ते। रत्न॑म्। धा॒त॒। श॒व॒सः॒। न॒पा॒तः॒। सौध॑न्वनाः। अभ॑वत। अ॒मृता॑सः॥ ८॥

*जो देव हो गए हो तुम, शोभन कर्म से (अपने),*
*श्येनों की तरह ही, ऊपर द्युलोक में विराजते हो।*
*वे, रमणीय धन, प्रदान करो तुम, बल का पतन न करने वालो!*
*हे सुन्दर अन्तरिक्ष के निवासियो! हो गए हो तुम अमरणधर्मा॥ ८॥*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! जो तुमने अपने उत्तम कर्मों के द्वारा देवत्व को प्राप्त कर लिया है और ऊँचे आकाश में विचरने वाले श्येन पक्षियों की तरह जो तुम हृदयरूपी द्युलोक में विराजमान हो गई हो, हे अपने बल से च्युत न होने वालियो! तुम हमें परमेश्वर में रमण कराने वाले सब प्रकार के दिव्य धनों को प्रदान करो। हे हृदयरूपी शोभन अन्तरिक्ष में निवास करने वालियो! तुमने अब अमरत्व को प्राप्त कर लिया है।

टि. *श्येनों की तरह* - **श्येनाःऽइव**। श्येनाः इव शीघ्रगतयः सन्तः - वे.। शंसनीयगतयो गृध्रविशेषा इव - सा.। श्येनवत् पुरुषार्थिनः - दया.। like falcons - W. G.

*ऊपर द्युलोक में विराजते हो* - **अधि दिवि निषेद**। स्वर्गस्य उपरि निषण्णाः स्थ - वे.। द्युलोके अधिनिषण्णाः - सा.। उपरि अन्तरिक्षे निषीदन्ति। अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम्। दया.। soaring aloft in the sky - W. have sat you down above in heaven - G.

*रमणीय धन प्रदान करो तुम* - **रत्नम् धात**। धनं प्रयच्छत - सा.। रमणीयं धनं धरन्ति - दया.। bestow upn us riches - W. G.

*हे बल का पतन न करने वालो* - **शवसः नपातः**। बलवन्तः - सा.। बलवन्तः सन्तः धर्मान् न पतन्ति - दया.। sons of strength - W. G.

*हे सुन्दर अन्तरिक्ष के निवासियो* - **सौधन्वनाः**। सौधन्वना ऋभवः सूरख्याना वा सूरप्रज्ञा वा - या. (नि. ११.१६)। धन्वान्तरिक्षम्। शोभनं च धन्व सुधन्व। तस्मिन् धन्वनि भवास् ते ऋभवो वैद्युता ज्योतिर्विशेषाः। स्कन्दम.। शोभनं धन्वान्तरिक्षं येषां ते, तेषां पुत्राः - दया.।

**यत् तृ॒तीयं॒ सव॑नं रत्न॒धेय॒म् अकृ॑णुध्वं स्वप॒स्या सु॑हस्ताः।**
**तद् ऋ॑भव॒ः परि॑षिक्तं व ए॒तत् सं मदे॑भिर् इन्द्रि॒येभि॑ः पिबध्वम्॥ ९॥ ६॥**

यत्। तृतीयम्। सवनम्। रत्नऽधेयम्। अकृणुध्वम्। सुऽअपस्या। सुऽहस्ताः।
तत्। ऋभवः। परिऽसिक्तम्। वः। एतत्। सम्। मदेभिः। इन्द्रियेभिः। पिबध्वम्।। ९।।

*जिस तीसरे सवन को, रमणीय धन देने वाले को,*
*प्राप्त करते हो तुम, कर्मकौशल से (अपने), हे दक्ष हाथों वालो।*
*वह, हे ऋभुओ!, सब ओर से सींचा गया है, तुम्हारे लिये यह,*
*सम्यक् हर्षों के साथ, इन्द्र वालों के, पियो तुम (इसको)।। ९।।*

हे कार्यों को साधने में कुशल सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! रमणीय ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला सायंकालीन समर्पण जिसके पान का अधिकार तुम्हें अपने कर्मकौशल के आधार पर प्राप्त हुआ है, वह यह हमारे द्वारा तुम्हें समर्पित किया जा रहा है। इसका तुम उतने ही हर्ष के साथ आनन्द प्राप्त करो, जितने हर्ष के साथ आत्मा इसका आनन्द प्राप्त करता है।

टि. *प्राप्त करते हो तुम* – **अकृणुध्वम्।** प्रसाधितवन्तः – सा.। you have instituted - W.

*कर्मकौशल से* – **स्वपस्या।** शोभनेन कर्मणा – वे.। शोभनकर्मेच्छया – सा.। सुष्ठुधर्म्यकर्मेच्छया – दया.। through desire of good works - W. by skill - G.

*सब ओर से सींचा गया है तुम्हारे लिये* – **परिषिक्तम् वः।** युष्माकं मदाय परितः सिक्तम् – वे.। परिषिक्तं परिषेचनवत्, वः युष्माकम् – सा.। परितः सर्वतः श्रेष्ठपदार्थैः संयोजितं युष्मभ्यम् – दया.। this drink has been effused for you - G.

*हर्षों के साथ इन्द्र वालों के* – **मदेभिः इन्द्रियेभिः।** इन्द्रजुष्टैः सोमैः सह – वे.। माद्यद्भिर् इन्द्रियैः – सा.। with exhilarated senses - W. with high delight, with joy like Indra's - G.

## सूक्त ३६

ऋषिः – वामदेवा गौतमः। देवता – ऋभवः। छन्दः – १-८ जगती, ९ त्रिष्टुप्। नवर्चं सूक्तम्।

**अनश्वो जातो अनभीशुर् उक्थ्यो३ रथस् त्रिचक्रः परि वर्तते रजः।**
**महत् तद् वो देव्यस्य प्रवाचनं द्याम् ऋभवः पृथिवीं यच् च पुष्यथ।। १।।**

अनश्वः। जातः। अनभीशुः। उक्थ्यः। रथः। त्रिऽचक्रः। परि। वर्तते। रजः।
महत्। तत्। वः। देव्यस्य। प्रऽवाचनम्। द्याम्। ऋभवः। पृथिवीम्। यत्। च। पुष्यथ।। १।।

*बिना अश्व वाला बना है, बिना लगाम वाला, प्रशंसनीय,*
*रथ, तीन पहियों वाला, सब ओर घूम रहा है अन्तरिक्ष में।*
*अत्यधिक (है) वह तुम्हारे देवत्व को, प्रकर्ष से कहने वाला,*
*द्युलोक को, हे ऋभुओ!, पृथिवीलोक को भी, चूँकि पुष्ट करते हो तुम।। १।।*

इस अन्नमयकोश जड़ शरीर के अन्दर परमसत्यज्योति रूपी आदित्य का रथ इस प्रकार से बना है, कि बिना अश्वों के और बिना किसी नियन्त्रण (brake) के काम कर रहा है। यह प्रातः, मध्याह्न और सायं चलने वाले अन्तर्यज्ञ रूपी तीन पहियों वाला है और हृदयरूपी आकाश में सब ओर घूम रहा है। ऐसा होने के कारण यह प्रशंसा के योग्य है। हे परमसत्यज्योति रूपी आदित्य की

रश्मियो! चूँकि तुम इसके द्वारा शरीर में विद्यमान पार्थिव और दिव्य तत्त्वों को, जड़ और चेतन तत्त्वों को, पुष्ट करती हो, इसलिये यह रथ तुम्हारे देवत्व का महान् सूचक है।

टि. *बिना अश्व वाला, बिना लगाम वाला* – **अनश्वः अनभीशुः।** अश्वप्रग्रहाभ्यां वर्जितः रथः – वे.। वाहनाश्वनिरपेक्षः तथा प्रग्रहरहितः – सा.। that was not made for horses or reins - G.

*सब ओर घूम रहा है अन्तरिक्ष में* – **परि वर्तते रजः।** परि वर्तते लोकम् – वे.। अन्तरिक्षं परिभ्रमति – सा.। traverses the firmament - W. rolls round the firmament - G.

*अत्यधिक तुम्हारे देवत्व को प्रकर्ष से कहने वाला* – **महत् वः देव्यस्य प्रवाचनम्।** महत् वः देवत्वस्य प्रवचनीयं कर्म – वे.। प्रभूतं तद्रथनिर्माणाख्यं कर्म युष्माकं देवत्वस्य प्रवक्तृ प्रख्यापकम् – सा.। great was that proclamation of your divine (power) - W. is the great announcement of your deity - G.

**रथं ये चक्रुः सुवृतं सुचेतसो ऽविह्वरन्तं मनसस् परि ध्यया।**
**ताँ ऊ न्वस्य सवनस्य पीतय आ वो वाजा ऋभवो वेदयामसि।। २।।**

रथम्। ये। चक्रुः। सुऽवृतम्। सुऽचेतसः। अविऽह्वरन्तम्। मनसः। परि। ध्यया।
तान्। ऊँ इति। नु। अस्य। सवनस्य। पीतये। आ। वः। वाजाः। ऋभवः। वेदयामसि।। २।।

*रथ को जो बनाते हैं सुष्ठु गति वाले को, शोभन ज्ञानों वाले,*
*कुटिल गति न करने वाले को, मन के सर्वविध चिन्तन के द्वारा।*
*उनको निश्चय से अब, इस सवन के पान के लिये,*
*तुमको, हे बलशालियो!, हे मेधावियो!, निवेदन करते हैं हम।। २।।*

हे शोभन ज्ञानों वाली सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम अपने मन के सोचविचार के द्वारा उत्तम रीति से गति करने वाले और कभी इधर-उधर भ्रमित न होने वाले, जीवन रूपी यात्रा को सम्पन्न करने वाले, इस ज्ञान रूपी रथ का निर्माण करती हो। हे बलशाली और ऐश्वर्यशाली तथा मेधा से युक्त आदित्यरश्मियो! हम उपासक जन तुम जैसियों को ही अपने भक्तिरस रूपी सोम के पान के लिये आमन्त्रित करते हैं।

टि. *सुष्ठु गति वाले को* – **सुवृतम्।** सुवर्तनम् – वे.। सुवर्तनचक्रम् – सा.। well-constructed - W. lightly rolling - G.

*शोभन ज्ञानों वाले* – **सुचेतसः।** सुज्ञानाः – वे.। शोभनचित्ताः – सा.। सुष्ठुविज्ञानाः – दया.। the wise sages - W. Ye Sapient Ones - G.

*कुटिल गति न करने वाले को* – **अविह्वरन्तम्।** भारसहत्त्वे ऽप्यकुटिलीभवन्तम् – वे.। अकुटिलम् – सा.। अकुटिलगतिम् – दया.। undeviating - W. that never errs - G.

*मन के सर्वविध चिन्तन के द्वारा* – **मनसः परि ध्यया।** मनसः ध्यानेन – वे.। मनसः ध्यानेन अप्रयत्नेन – सा.। विज्ञानात् ध्यानेन – दया.। by mental meditation - W. out of your mind, by thought - G.

*ही* – **उ।** उशब्दः एवार्थे – सा.।

*हे बल शालियो, हे मेधावियो* – **वाजाः ऋभवः**। हे वाजेन ऋभुणा च संयुक्ताः – वे.। वाजाः प्राप्तहस्तक्रियाः, ऋभवः मेधाविनः – दया.।

*निवेदन करते हैं हम* – **आ वेदयामसि**। आ वेदयामः – वे.। सा.। प्रापयामः – दया.। we invoke you respectfully - W. we invoke - G.

**तद् वो वाजा ऋभवः सुप्रवाचनं देवेषु विभ्वो अभवन् महित्वनम्।**
**जिव्री यत् सन्ता पितरा सनाजुरा पुनर् युवाना चरथाय तक्षथ।। ३।।**

तत्। वः। वाजाः। ऋभवः। सुऽप्रवाचनम्। देवेषु। विऽभ्वः। अभवत्। महिऽत्वनम्।
जिव्री इति। यत्। सन्ता। पितरा। सनाऽजुरा। पुनः। युवाना। चरथाय। तक्षथ।। ३।।

*वह तुम्हारा, हे बलशालियो!, हे मेधावियो!, सुष्ठु प्रशंसा के योग्य,*
*देवों में, हे सर्वव्यापको!, हो गया है माहात्म्य।*
*जीर्णों को जो होते हुओं को, माता और पिता को, वयोदुर्बलों को,*
*फिर से तरुण, चलने-फिरने के लिये, बना देते हो तुम।। ३।।*

हे बल, प्रज्ञा और सर्वव्यापकता आदि गुणों से युक्त परम सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! जो तुम अवस्था के कारण दुर्बल और जीर्ण, अन्नमयकोश नामक जडजगत् में प्रज्ञाविशेष रूपी पृथिवी माता को और शुद्ध सत्त्व से युक्त मन की प्रधानता वाले प्रज्ञाविशेष रूपी द्यौ पिता को फिर से नित्य तरुण बना देते हो, उसी से तुम्हारा माहात्म्य देवों में प्रशंसा के योग्य हो गया है।

टि. *सुष्ठु प्रशंसा के योग्य* – **सुप्रवाचनम्**। सुष्ठु प्रवचनीयम् – वे.। प्रवाच्यम् – सा.। gloriously declared - G.

*हे सर्वव्यापको* – **विभ्वः**। हे विभ्वः – वे.। हे विभ्वः विभवः – सा.। सकलविद्यासु व्याप्ताः – दया.। reaching far - G.

*माहात्म्य* – **महित्वनम्**। महत्त्वम् – वे.। दया.। महत्त्वं माहात्म्यम् – सा.। greatness - W. exaltation - G.

*जीर्णों को* – **जिव्री**। जीर्णौ – वे.। वृद्धौ – सा.। जीवन्तौ – दया.। aged - W. G.

*वयोदुर्बलों को* – **सनाजुरा**। दीर्घकालजीर्णौ – वे.। सदाजीर्णौ सन्तौ – सा.। सदा जरावस्थास्थौ – दया.। infirm - W. worn with length of days - G.

*चलने-फिरने के लिये* – **चरथाय**। चरणार्थम् – वे.। यथेच्छं संचरणाय – सा.। to go - W.

**एकं वि चक्र चमसं चतुर्वयं निश् चर्मणो गाम् अरिणीत धीतिभिः।**
**अथा देवेष्वमृतत्वम् आनश श्रुष्टी वाजा ऋभवस् तद् व उक्थ्यम्।। ४।।**

एकम्। वि। चक्र। चमसम्। चतुःऽवयम्। निः। चर्मणः। गाम्। अरिणीत। धीतिऽभिः।
अथ। देवेषु। अमृतऽत्वम्। आनश। श्रुष्टी। वाजाः। ऋभवः। तत्। वः। उक्थ्यम्।। ४।।

*एक को विशेषेण बना देते हो सोमपात्र को चार अवयवों वाला,*
*निकालकर चर्म से गौ को संस्कृत कर देते हो, चिन्तनों से (अपने)।*
*तत्पश्चात् देवों में, अमरत्व को प्राप्त करते हो तुम,*

*अतिशीघ्र, बलशालियो!, मेधावियो!, वह (है कर्म) तुम्हारा प्रशंसनीय।। ४।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम एक पानपात्र को चार भागों वाला बना देते हो। अर्थात् आनन्दप्राप्ति की यात्रा को अन्नमयकोश से प्राणमयकोश, मनोमयकोश और ज्ञानमयकोश से होते हुए आनन्दमयकोश की ओर प्रवर्तित करती हो। तुम वाणी रूपी गौ को अज्ञान रूपी चर्म के आवरण से मुक्त करके अपने चिन्तनों और विचारों से उसका संस्कार तथा परिष्कार करके उसे सत्य से युक्त करती हो और उसे मनरूपी बछड़े से संयुक्त करती हो। उसके पश्चात् ही तुम्हें अतिशीघ्र देवत्व की प्राप्ति हो जाती है। हे बलशालियो! हे सर्वव्यापकता के गुणों वालियो! हे प्रज्ञा वालियो! तुम्हारा वह कर्म, तुम्हारी वह उपलब्धि अत्यन्त प्रशंसनीय है।

टि. चार *अवयवों वाला* - **चतुर्वयम्।** चतुर्व्यूहम् - वे.। वयाः शाखाः। चतुश्शाखं चतुरवयवम्। सा.। fourfold - W. G.

*निकालकर संस्कृत कर देते हो* - **निः अरिणीत।** निष्कृतवन्तः - वे.। समस्कुरुत। निर् इत्येष सम् इत्येतस्य स्थाने। सा.। नितरां प्राप्नुत - दया.। you have clothed - W. brought forth - G.

*चिन्तनों से* - **धीतिभिः।** कर्मभिः - वे.। सा.। by your wisdom - G.

*प्राप्त करते हो तुम* - **आनश।** आनशिध्वे - वे.। प्राप्नुत - सा.। gained - G.

*अतिशीघ्र* - **श्रुष्टी।** क्षिप्रम् - वे.। श्रुष्टीति क्षिप्रनामैतत्। क्षिप्रम्। सा.। दया.। eagerly - W. so quickly - G.

**ऋ॒भुतो॑ र॒यिः प्र॑थ॒मश्र॑वस्तमो॒ वाज॑श्रुतासो॒ यम् अजी॑जन॒न् नरः॑।**
**वि॒भ्व॒त॒ष्टो वि॒दथे॑षु प्र॒वाच्यो॒ यं दे॑वा॒सो ऽव॑था॒ स विच॑र्षणिः।। ५।। ७।।**

ऋ॒भुतः॑। र॒यिः। प्र॒थ॒मश्र॑वःऽतमः। वाज॑ऽश्रुतासः। यम्। अजी॑जनन्। नरः॑।
वि॒भ्व॒ऽत॒ष्टः। वि॒दथे॑षु। प्र॒ऽवाच्यः॑। यम्। दे॒वा॒सः॒। अव॑थ। सः। विऽच॑र्षणिः।। ५।।

*ऋभुओं से प्राप्त धन, उत्तमख्याति वालों में (है) श्रेष्ठ,*
*बलों में प्रसिद्ध, जिसको उत्पन्न करते हैं नेतृगण।*
*मेधावियों के द्वारा निर्मित, ज्ञानगोष्ठियों में प्रशंसनीय होता है,*
*जिसकी देव रक्षा करते हो तुम, वह दूरद्रष्टा हो जाता है ।। ५।।*

परमसत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियों से प्राप्त होने वाला अन्तर्धन उत्तम ख्याति वाले सब धनों में श्रेष्ठ है। इस अन्तर्धन को अपने बलों और ऐश्वर्यों के लिये विख्यात सबका नेतृत्व करने वाली ये अन्तर्ज्योति रूपी रश्मियां ही उत्पन्न करती हैं। इन मेधावियों के द्वारा निर्मित यह अन्तर्धन ज्ञानी जनों के द्वारा ज्ञानगोष्ठियों में प्रशंसित होता है। देवत्व को प्राप्त ये ज्ञानरश्मियां जिस मनुष्य की रक्षा करती हैं, बढ़ाती हैं और जिससे ये प्यार करती हैं, वह दूरद्रष्टा हो जाता है।

टि. *उत्तम ख्याति वालों में श्रेष्ठ* - **प्रथमश्रवस्तमः।** जने ऽतिशयेन प्रथमं श्रूयते - वे.। प्रथमं मुख्यम् अतिशयितम् अन्नं यशो वा यस्य - सा.। अतिशयेन प्रथमं श्रवः श्रवणम् अन्नं वा यस्मात् सः - दया.। the best and most productive of food - W. most glorious in renown - G.

*बलों में प्रसिद्ध* - **वाजश्रुतासः।** वाजेन श्रूयमाणाः - वे.। वाजैः सह विख्याताः - सा.। वाजं

विज्ञानं श्रुतं यैस् ते – दया.। renowned together with the Vājas - W. famed for vigour - G.

*नेतृगण* – **नरः।** ऋभवः नेतारः – वे.। सा.। नायकाः – दया.। leaders - W. Heroes G.

*मेधावियों के द्वारा निर्मित* – **विभ्वतष्टः।** विभ्वयुक्तैः कृतः – वे.। विभ्वभिर् ऋभुभिस् तष्टस् तक्षणसम्पन्नः – सा.। यो विभुषु पदार्थेष्वतष्टो ऽविचक्षणः सः – दया.। which has been fabricated by Vibhvan - W. G.

*दूरद्रष्टा* – **विचर्षणिः।** विद्रष्टा – वे.। विविधं द्रष्टा भवति – सा.। सर्वद्रष्टव्यद्रष्टा मनुष्यः – दया.। that is to be beheld - W. famed among mankind - G.

**स वाज्यर्वा स ऋषिर् वचस्यया स शूरो अस्ता पृतनासु दुष्टरः।**
**स रायस् पोषं स सुवीर्यं दधे यं वाजो विभ्वाँ ऋभवो यम् आविषुः।। ६।।**

सः। वाजी। अर्वा। सः। ऋषिः। वचस्यया। सः। शूरः। अस्ता। पृतनासु। दुस्तरः।
सः। रायः। पोषम्। सः। सुऽवीर्यम्। दधे। यम्। वाजः। विऽभ्वा। ऋभवः। यम्। आविषुः।। ६।।

*वह (हो जाता है) बलवान्, गतिशील, वह वेदार्थद्रष्टा, स्तुति से (युक्त),*
*वह शूर, (शत्रु को) परास्त करने वाला, संग्रामों में दुर्जेय (हो जाता है)।*
*वह धन की पुष्टि को, वह शोभन सन्तान को, धारण करता है,*
*जिसको बलवान्, सर्वव्यापक, ऋत से प्रकाशमान रश्मियां जिसको बढ़ाती हैं।। ६।।*

वह मनुष्य बल और ऐश्वर्य से युक्त हो जाता है, वह प्रशंसाओं से युक्त वेदार्थवेत्ता हो जाता है, वह मनुष्य शूरवीर, शत्रुओं को परास्त करने वाला और युद्धों में दुर्जेय हो जाता है, वह पुष्कल धनों और उत्तम सन्तानों को धारण करने वाला हो जाता है, जिसे बलवान्, सर्वत्र व्यापक और ऋत से प्रकाशमान सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियां बढ़ाती हैं, रक्षा करती हैं, प्रेम करती हैं।

टि. *बलवान्* – **वाजी।** अश्वः – वे.। वेजनवान् बलवान् सन् – सा.। विज्ञानवान् – दया.। vigorous - W. strong - G.

*गतिशील* – **अर्वा।** गन्ता – वे.। अरणकुशलः – सा.। शुभगुणप्रापकः – दया.। skilled - W. steed - G

*वेदार्थद्रष्टा* – **ऋषिः।** अतीन्द्रियज्ञानी – सा.। वेदार्थवेत्ता – दया.। a sage - G.

*स्तुति से (युक्त)* – **वचस्यया।** स्तोत्रेण – वे.। स्तुत्या युक्तः – सा.। अतिशयितया प्रशंसया – दया.। worthy of homage - W. in eloquence - G.

*(शत्रु को) परास्त करने वाला* – **अस्ता।** इषूणाम् अस्ता – वे.। क्षेप्ता शत्रूणाम् – सा.। दया.। the discomfiter of foes - W. the bowman - G.

*शोभन सन्तान को* – **सुवीर्यम्।** सुवीरत्वम् – सा.। सुष्ठु बलं पराक्रमम् – दया.। excellent posterity - W. manly power - G.

*बलवान्, सर्वव्यापक, ऋत से भासमान रश्मियां जिसको बढ़ाती हैं* – **वाजः विभ्वा ऋभवः यम् आविषुः।** यं वाजः विभ्वा च रक्षतः, यं च सर्वे ऋभवः – वे.। यं मनुष्यं वाजो विभ्वा ऋभवश् चाविषुः। अरक्षन्। अन्त्यस्य बहुवचननिर्देशस् त्रयाणाम् ऋभुव्यवहारप्राचुर्याभिप्रायः। सा.।

**श्रेष्ठं वः पेशो अधि धायि दर्शतं स्तोमो वाजा ऋभवस् तं जुजुष्टन।**
**धीरासो हि ष्ठा कवयो विपश्चितस् तान् व एना ब्रह्मणा वेदयामसि।। ७।।**

श्रेष्ठम्। वः। पेशः। अधि। धायि। दर्शतम्। स्तोमः। वाजाः। ऋभवः। तम्। जुजुष्टन।
धीरासः। हि। स्थ। कवयः। विपःऽचितः। तान्। वः। एना। ब्रह्मणा। आ। वेदयामसि।। ७।।

*अत्यन्त प्रशंसनीय तुम्हारा रूप, सर्वोपरि स्थित है दर्शनीय,*
*स्तोत्र (तुम्हारे लिये है यह), बलवानो!, ऋभुओ!, इसे सेवन करो तुम।*
*प्रज्ञावान् निश्चय से हो तुम, क्रान्तदर्शी, विद्वान्,*
*उन तुमको, इस मन्त्र के द्वारा, बुला रहे हैं हम।। ७।।*

हे बलवान् और मेधावी सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम्हारा यह दर्शनीय रूप सबसे ऊपर स्थित है और इसलिये अत्यन्त प्रशंसनीय है। हमारा यह स्तोत्र तुम्हारे लिये है। तुम इसे स्वीकार करो। तुम निश्चय से प्रज्ञावान् हो, क्रान्तदर्शी हो और सर्वज्ञ हो। इन गुणों से युक्त तुमको हम इस मन्त्र के द्वारा बुला रहे हैं, अपने अन्दर धारण कर रहे हैं।

टि. *अत्यन्त प्रशंसनीय* - **श्रेष्ठम्।** प्रशस्यतमम् - वे.। दया.। अत्युत्कृष्टम् - सा.। excellent - W fairest - G..

*रूप* - **पेशः।** रूपम् - वे.। सा.। सुन्दरं रूपं हिरण्यं च - दया.। form - W. ornament - G.

*सर्वोपरि स्थित है* - **अधि धायि।** शरीरेषु अधि अधायि - वे.। अधिनिहितम् - सा.। उपरि ध्रियते - दया.। has been assumed by you - W. you hath been assigned - G.

*प्रज्ञावान्* - **धीरासः।** धृष्ठाः हि भवथ यूयम् - वे.। धीमन्तः - सा.। योगिनो विचारवन्तः - दया.। wise - W.

*विद्वान्* - **विपश्चितः।** विपश्चितः - वे.। ज्ञानवन्तः - सा.। सदसदविवेका विद्वांसः - दया.। intelligent - W.

*इस मन्त्र के द्वारा* - **एना ब्रह्मणा।** अनेन स्तोत्रेण - वे.। एनेन मन्त्रेण शस्त्रात्मकेन - सा.। एनेन वेदेन - दया.। by this (our) prayer - W. G.

**यूयम् अस्मभ्यं धिषणाभ्यस् परि विद्वांसो विश्वा नर्याणि भोजना।**
**द्युमन्तं वाजं वृषशुष्मम् उत्तमम् आ नो रयिम् ऋभवस् तक्षता वयः।। ८।।**

यूयम्। अस्मभ्यम् धिषणाभ्यः। परि। विद्वांसः। विश्वा। नर्याणि। भोजना।
द्युऽमन्तम्। वाजम्। वृषऽशुष्मम्। उत्ऽतमम्। आ। नः। रयिम्। ऋभवः। तक्षत। आ। वयः।। ८।।

*तुम हमको, (हमारी) सोचों से भी अधिक,*
*सर्वज्ञ, सब को, नरहितकारियों को, भोगों को।*
*दीप्तिमान् को, ऐश्वर्य को, वृष के से बल को, उत्तम को,*
*सर्वतः हमारे लिये धन को, हे ऋभुओ!, निर्मित करो, जीवन को।। ८।।*

हे परमसत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो!, तुम सर्वज्ञ हो। तुम हमें हमारी सोच से भी अधिक, मनुष्यों के लिये हितकर, सब प्रकार के भोगों को प्रदान करो। तुम हमें तेजों से युक्त ऐश्वर्यों

को, वृष के से उत्तम बल को, अन्तर्धन को और दीर्घ जीवन को सब ओर से प्रदान करो।

टि. *सोचों से भी अधिक* – **धिषणाभ्यः परि।** स्तोत्रेभ्यः अनन्तरम् – वे.। स्तुतिभ्यो निमित्तभूताभ्यः। परीति पञ्चम्यर्थानुवादी। सा.। यद्वा। अस्मन्मतिभ्यो ऽधिकानि। सा.। प्रज्ञाभ्यः, सर्वतः – दया.। in requital of our praises - W. according to the wishes of our hearts - G.

*भोगों को* – **भोजना।** भोजनानि – वे.। भोग्यानि – सा.। पालनान्यन्नानि वा – दया.। enjoyments - W. delights - G.

*दीप्तिमान् को* – **द्युमन्तम्।** दीप्तिमत् – वे.। दीप्तिमन्तं हिरण्यादिरूपम् – सा.। प्रकाशवन्तम् – दया.। resplendent - W. splended - G.

*वृष के से बल को* – **वृषशुष्मम्।** वृष्यमाणबलम् – वे.। सेक्तॄणां बलवतां शोषकम् – सा.। वृषाणां बलिनां बलम् – दया.। rich in high courage - G.

*निर्मित करो* – **तक्षत।** विस्तृणुत – दया.। fabricate - W. fashion - G.

*जीवन को* – **वयः।** आयुः – वे.। अन्नम् – सा.। सात.। जीवनम् – दया.। food - W. vital strength - G.

**इह प्रजाम् इह रयिं रराणा इह श्रवो वीरवत् तक्षता नः।**
**येन वयं चितयेमात्यन्यान् तं वाजं चित्रम् ऋभवो ददा नः।। ९।। ८।।**

इह। प्रऽजाम्। इह। रयिम्। रराणाः। इह। श्रवः। वीरऽवत्। तक्षत। नः।
येन। वयम्। चितयेम। अति। अन्यान्। तम्। वाजम्। चित्रम्। ऋभवः। दद। नः।। ९।।

*इस जीवन में प्रजा को, इसमें धन को, प्रसन्न होते हुए (तुम),*
*इसमें ख्याति को, वीर पुत्रों वाली को, सम्पादित करो हमारे लिये।*
*जिससे हम जाने जाएं, अतिक्रमण करने वाले औरों का,*
*उस बल को पूजनीय को, हे ऋभुओ! दो तुम हमको।। ८।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! तुम प्रसन्नता के साथ हमें इस जीवन को जीने के लिये उत्तम सन्तति और धन प्रदान करो। तुम हमारे लिये वीर पुत्रों से उत्पन्न होने वाली ख्याति का सम्पादन करो। जिससे हम औरों से आगे बढ़े हुए जाने जाएं, वह विलक्षण बल, वह अनुपम सामर्थ्य, तुम हमें प्रदान करो।

टि. *इस जीवन में* – **इह।** अस्मिन् यज्ञे – वे.। सा.। अस्मिन् संसारे – दया.। on this occasion - W. here - G.

*प्रसन्न होते हुए* – **रराणाः।** रममाणाः – वे.। सा.। ददमानाः – दया.।

*ख्याति को वीर पुत्रों वाली को* – **श्रवः वीरवत्।** वीरवत् अन्नम् – वे.। यशो वीरैर् भृत्यादिभिर् उपेतम् – सा.। अन्नं श्रवणं वा प्रशस्तवीरकारकम् – दया.। reputation, with numerous adherents - W. fame befitting heroes - G.

*जाने जाएं अतिक्रमण करने वाले औरों का* – **चितयेम अति अन्यान्।** अन्यान् अति ज्ञायेमहि – वे.। अन्यान् अस्मत्समान् अतिक्रम्य ज्ञायेमहि – सा.। we may greatly excel others - W. that

we may make us more renowned than others - G.

बल को - वाजम्। अन्नम् - सा.। विज्ञानम् - दया.। sustenance - W. wealth - G.

तुम दो हमको - दद नः। दत्त नः - वे.। अस्मभ्यं दत्त - सा.।

## सूक्त ३७

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - ऋभवः। छन्दः - १-४ त्रिष्टुप्, ५-८ अनुष्टुप्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**उप॑ नो वाजा अध्व॒रम् ऋ॑भुक्षा॒ देवा॑ या॒त प॒थिभि॑र् दे॒व॒यानैः।**

**यथा॑ य॒ज्ञं मनु॑षो वि॒क्ष्वा॒३॒॑सु द॑धि॒ध्वे र॑ण्वाः सु॒दिने॒ष्वह्ना॑म्।। १।।**

उप॑। नः॒। वा॒जाः॒। अ॒ध्व॒रम्। ऋ॒भु॒क्षाः॒। देवाः॑। या॒त। प॒थिऽभिः॑। दे॒व॒ऽयानैः।

यथा॑। य॒ज्ञम्। मनु॑षः। वि॒क्षु। आ॒सु। द॒धि॒ध्वे। र॒ण्वाः॒। सु॒ऽदिने॑षु। अह्ना॑म्।। १।।

*पास हमारे, हे बलशालियो!, यज्ञ के, हे महानो!,*

*हे देवो! गमन करो, मार्गों से, देवों के द्वारा चले जाने वालों से।*

*जिस प्रकार से यज्ञ को, मनुष्यों के निवासों में, इनमें,*

*स्वीकार कर सको तुम, हे रमण कराने वालो!, सुदिनत्व में दिनों के।। १।।*

हे बलशालियो! हे महानो! हे प्रकाशमानो! हे सत्यज्योतिरूपी आदित्य की रश्मियो! तुम देवों के द्वारा जाने के लिये अपनाए जाने वाले श्रेष्ठ मार्गों से हमारे हिंसारहित यज्ञ में पधारो। ताकि, हे हमारे मनों को प्रसन्नता प्रदान करने वालियो!, तुम शोभन दिनों में हम मनुष्यों के हृदयरूपी निवासों में प्रवर्तमान अन्तर्यज्ञ में दी जाने वाली आहुति को स्वीकार कर सको।

टि. *हे महानो* - **ऋभुक्षाः**। ऋभवः - वे.। सा.। महान्तः - दया.। Ṛbhus - W.

*देवों के द्वारा चले जाने वालों से* - **देवयानैः**। देवैर् गन्तव्यैः - सा.। देवा विद्वांसो यान्ति येषु तैः - दया.। which gods are wont to travel - G.

*मनुष्यों के निवासों में* - **मनुषः विक्षु**। मनोः प्रजापतेः स्वभूतासु प्रजासु - वे.। मनोः सम्बन्धिनीषु आसु प्रजासु - सा.। मनुषः मननशीलाः, विक्षु प्रजासु - दया.। amongst the people (the progeny) of Manu - W.

*स्वीकार कर सको तुम* - **दधिध्वे**। धारयथ - वे.। सा.। धरध्वम् - दया.। have maintained - W. accept - G.

*हे रमण कराने वालो* - **रण्वाः**। हे रमणीयाः - वेङ्कटादयः। gracious (Ṛbhus) - W. gay - G.

*सुदिनत्व में दिनों के* - **सुदिनेषु अह्नाम्**। अह्नां सुदिनत्वे सति- वे.। सुदिनत्वनिमित्तेषु - सा.। सुखेन वर्तमानेष्वहस्सु दिनानां मध्ये - दया.। for (the sake of) securing the prosperous course of days - W. in splended weather - G.

**ते वो॑ हृ॒दे मन॑से सन्तु य॒ज्ञा जुष्टा॑सो अ॒द्य घृ॒तनि॑र्णिजो गुः।**

**प्र वः॑ सु॒तासो॑ हरयन्त पू॒र्णाः क्रत्वे॒ दक्षा॑य हर्षयन्त पी॒ताः।। २।।**

ते। व॒ः। हृ॒दे। मन॑से। स॒न्तु॒। य॒ज्ञाः। जुष्टा॑सः। अ॒द्य। घृ॒तऽनि॑र्निजः। गु॒ः।

प्र। वः। सुतासः। हरयन्त। पूर्णाः। क्रत्वे। दक्षाय। हर्षयन्त। पीताः।। २।।

*वे तुम्हारे हृदय के लिये, मन के लिये, (हर्षदायक) होवें यज्ञ,*

*सेवन किये जाने वाले, आज, घृत से पवित्र किये हुए प्राप्त होवें (तुमको)।*

*खूब तुम्हारी, सवन किये हुए, कामना करते हैं, पूर्ण,*

*प्रज्ञा के लिये, चातुर्य के लिये, हर्षित करें पान किये हुए।। २।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! जो नैवेद्य हम तुम्हें समर्पित करते हैं, वे तुम्हारे हृदय के लिये और मन के लिये आनन्द देने वाले होवें। आज और आगे भी प्रकाशवत्ता से युक्त, प्रीतिपूर्वक सेवन किये जाने वाले ये समर्पण तुम्हें सदा प्राप्त होते रहें। हमारे द्वारा निष्पादित किये हुए ये भक्तिरसरूपी सोम भी पूरे के पूरे तुम्हारी खूब कामना करते हैं। ये पान किये जाकर प्रज्ञा और दक्षता प्रदान करके तुम्हें आनन्दित करने वाले होवें।

टि. *यज्ञ* - **यज्ञाः**। यज्ञाः - वे.। यागसाधनाः सोमाः - सा.। सत्यव्यवहाराः - दया.। sacrifices - W. rites - G.

*सेवन किये जाने वाले* - **जुष्टासः**। पर्याप्ताः - वे.। सा.। विद्वद्भिः सेविताः - दया.। sufficient - W. abundant - G.

*घृत से पवित्र किये हुए* - **घृतनिर्णिजः**। क्षरद्रूपाः - वे.। मिश्रणद्रव्येण दीप्तरूपाः - सा.। घृतेनाज्येनोदकेन शुद्धीकृताः - दया.। mixed with butter - W. clothed in oil - G.

*कामना करते हैं* - **हरयन्त**। प्र ह्रियन्ते - वे.। यद्वा। हर्यतेः कान्तिकर्मण इदं रूपम्। प्रकर्षेण युष्मान् कामयन्ते। सा.। कामयन्ताम् - दया.। are prepared - W.

*हर्षित करें* - **हर्षयन्त**। हर्षयन्ताम् - वे.। may animate - W. may delight you - G.

**त्र्युदायं देवहितं यथा वः स्तोमो वाजा ऋभुक्षणो ददे वः।**

**जुह्वे मनुष्वद् उपरासु विक्षु युष्मे सचा बृहद्दिवेषु सोमम्।। ३।।**

त्रिऽउदायम्। देवऽहितम्। यथा। वः। स्तोमः। वाजाः। ऋभुक्षणः। ददे। वः।

जुह्वे। मनुष्वत्। उपरासु। विक्षु। युष्मे इति। सचा। बृहत्ऽदिवेषु। सोमम्।। ३।।

*तीन बार समीप जाना, देवों के द्वारा विहित है चूँकि तुम्हारे लिये,*

*स्तोम (इसलिये यह), हे बलवानो!, हे महानो!, दिया जा रहा है तुम्हें।*

*समर्पित कर रहा हूँ मैं मननशील की तरह, उत्तम निवासों में,*

*तुम्हारे लिये साथ-साथ, महान् दीप्ति वालों में, सोम को।। ३।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! चूँकि प्रातः, मध्याह्न और सायं इन तीनों कालों में दी जाने वाली पूजा को स्वीकार करना तुम्हारे लिये देवों के द्वारा विधान किया गया है, इसलिये, हे बलशालियो!, हे महान् दीप्ति वालियो!, मैं उपासक तुम्हारे लिये इस स्तोत्र का गान कर रहा हूँ। मैं एक मननशील उपासक की तरह हृदयरूपी आकाश के अन्दर महान् दीप्ति वाले तुम्हारे उत्तम निवासों में तुम्हें एक साथ भक्तिरसरूपी आनन्द को समर्पित कर रहा हूँ।

टि. *तीन बार समीप जाना* - **त्र्युदायम्**। तृतीयसवने उद्गतम् अन्नम् - वे.। त्र्युदयं सवनत्रय-

गमनोपेतम् - सा.। यं मनोदेहवचनैर् उदायन्ति तम् - दया.। at the third (daily) sacrifice - W. threefold going near - G.

*देवों के द्वारा विहित* - **देवहितम्**। देवैर् निहितम् - वे.। सोमाख्यम् अन्नं देवेभ्यो हितं देवैर् वा विहितम्। तृतीयसवनस्थम् इत्यर्थः। सा.। देवेभ्यो हितकरम् - दया.। suited to the gods - W. god-appointed - G.

*दिया जा रहा है तुम्हें* - **ददे वः**। दत्तः - वे.। युष्मान् धारयति - सा.। ददे ददामि युष्मान् - दया.। supports you - W. is given you - G.

*समर्पित कर रहा हूँ* - **जुह्वे**। जुहोमि सोमम् - सा.। स्पर्द्धे - दया.। I offer - W. G.

*मननशील की तरह* - **मनुष्वत्**। यथा मनुः - वे.। सा.। विद्वद्वत् - दया.। like Manu - W.

*उत्तम निवासों में* - **उपरासु विक्षु**। उप्तासु प्रजासु - वे.। देवयजनसमीपे रमन्त इत्युपराः। तासु विक्षु प्रजासु। सा.। श्रेष्ठासु मनुष्यादिप्रजासु - दया.। श्रेष्ठ मनुष्यों में - सा.। among the people - W. mid younger folk - G.

*महान् दीप्ति वालों में* - **बृहद्दिवेषु**। बृहद्दीप्तिषु - वे.। प्रभूतदीप्तिषु देवेषु मध्ये - सा.। दिव्येषु पदार्थेषु - दया.। (along with) the very radiant (deities) - W. to you who are aloft in heaven - G.

**पीवोअश्वाः शुचद्रथा हि भूतायःशिप्रा वाजिनः सुनिष्काः।**
**इन्द्रस्य सूनो शवसो नपातो ऽनु वश् चेत्यग्रियं मदाय।। ४।।**

पीवःऽअश्वाः। शुचत्ऽरथाः। हि। भूत। अयःऽशिप्राः। वाजिनः। सुऽनिष्काः।
इन्द्रस्य। सूनो इति। शवसः। नपातः। अनु। वः। चेति। अग्रियम्। मदाय।। ४।।

*पुष्ट अश्वों वाले, दीप्त रथों वाले निश्चय से हो तुम,*
*लोहमय शिरस्त्राणों वाले, बलों वाले, सुन्दर आभूषणों वाले।*
*हे इन्द्र के पुत्रो!, हे बल का पात न करने वालो!,*
*अनुक्रम से तुम्हारे, जाना जाता है उच्च (समर्पण), आनन्द के लिये।। ४।।*

हे सत्यज्योति रूपी आनन्द की रश्मियो! तुम निश्चय से पुष्ट अश्वशक्तियों वाली, प्रकाशमान गमनसाधनों वाली, लोहनिर्मित शिरस्त्राणों के समान दृढ़ संरक्षण वाली, बलों से युक्त और सुन्दर अलङ्कारों वाली हो। हे कभी बल का विनाश न होने देने वाली परमेश्वर की सन्ततियो! अनुक्रम से किया हुआ उच्च समर्पण तुम्हें भरपूर आनन्द देने वाला माना जाता है।

टि. *पुष्ट अश्वों वाले* - **पीवोअश्वाः**। मांसलाश्वाः - वे.। पीवानो ऽश्वा येषां ते - सा.। पीवसः स्थूला अश्वा येषां ते - दया.। borne by stout horses - W.

*लोहमय शिरस्त्राणों वाले* - **अयःशिप्राः**। हिरण्मयशिरस्त्राणाः - वे.। शिप्रे हनू नासिके वा। अयोवत्सारभूतशिप्राः। सा.। अय इव शिप्रे हनूनासिके येषाम् अश्वानां तद्वन्तः - दया.। you have jaws of iron - W. with jaws of iron - G.

*सुन्दर आभूषणों वाले* - **सुनिष्काः**। शोभननिष्काः - वे.। शोभनधनाः - सा.। शोभनानि निष्कानि

सुवर्णमयान्याभूषणानि येषां ते - दया.।

हे इन्द्र के पुत्रो - **इन्द्रस्य सूनो।** सूनो सूनवः पुत्रवद् रक्षणीयाः - सा.।

*अनुक्रम से जाना जाता है* - **अनु चेति।** अनु अज्ञायि - वे.। सा.। अनु विज्ञायते - दया.।

*उच्च (समर्पण)* - **अग्रियम्।** मुख्यं हविः - वे.। अग्रे भवं तृतीयं सवनम् - सा.। अग्रे भवं सुखम् - दया.। this last sacrifice - W. the best - G.

**ऋभुम् ऋभुक्षणो रयिं वाजे वाजिन्तमं युजम्।**
**इन्द्रस्वन्तं हवामहे सदासातममश्विनम्।। ५।। ९।।**

ऋभुम्। ऋभुक्षणः। रयिम्। वाजे। वाजिन्ऽतमम्। युजम्।
इन्द्रस्वन्तम्। हवामहे। सदाऽसातमम्। अश्विनम्।। ५।।

*विस्तीर्ण प्रकाश वाले को, हे ऋभुओ!, धनवान् को,*
*संग्राम में अतिशय बल वाले को, साथ देने वाले को।*
*इन्द्र को पूजने वाले को, बुलाते हैं हम,*
*सदा उत्तम दाता को, अश्वों वाले को।। ५।।*

हे सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो! हम तुम्हारे उस गण का आह्वान करते हैं, जो विस्तीर्ण प्रकाश और ज्ञान वाला है, जो देने योग्य धन से धनवान् है, जो जीवन के संघर्षों में महान् बलों वाला है, जो सुख और दुःख में साथ देने वाला है, जो परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और आस्था रखने वाला है, जो सदा ही देने वालों में उत्तम दाता है और जो अश्व की सी शक्तियों से युक्त है।

टि. *विस्तीर्ण प्रकाश वाले को* - **ऋभुम्।** दीप्तम् - वे.। उरुभासमानम् - सा.। मेधाविनम् - दया.। splended - W. handy - G.

*हे ऋभुओ* - **ऋभुक्षणः।** ऋभवः - वे.। सा.। महान्तो विद्वांसः - दया.।

*धनवान् को* - **रयिम्।** रयिमन्तम् इत्यर्थः। अत्र मतुपो लुक्। अथाप्यस्यां ताद्धितेन कृत्स्नवन् निगमा भवन्ति - या. (नि. २.४)। धनम् - वे.। दया.। धनरूपम् - सा.। wealth - G.

*संग्राम में* - **वाजे।** वाजे सौधन्वने - वे.। संग्रामे - सा.। दया.।

*अतिशय बल वाले को* - **वाजिन्तमम्।** अतिशयेन अन्नवन्तम् - वे.। वाजिन्वन्तम् अत्यन्त-बलवन्तम् - सा.। प्रशंसिता बहवो ऽतिशयिता वाजिनो विद्यन्ते यस्मिंस् तम् - दया.।

*इन्द्र को पूजने वाले को* - **इन्द्रस्वन्तम्।** इन्द्रेण सहितम् - वे.। इन्द्रस्वन्तम् इन्द्रवन्तम् इन्द्रिय-वन्तम् - सा.। परमैश्वर्ययुक्तस्वामिसहितम् - दया.। affecting the senses - W. him Indra's equal - G.

*सदा उत्तम दाता को* - **सदासातमम्।** सर्वदातिशयेन दीयमानम् - वे.। सदासातमं सर्वदा दातृ-तमम् - सा.। सदातिशयेन विभजनीयम् - दया.। ever munificent - W. bounteous ever - G.

**सेद् ऋभवो यम् अवथ यूयम् इन्द्रश् च मर्त्यम्।**
**स धीभिर् अस्तु सनिता मेधसाता सो अर्वता।। ६।।**

सः। इत्। ऋभवः। यम्। अवथ। यूयम्। इन्द्रः। च। मर्त्यम्।

सः। धीभिः। अस्तु। सनिता। मेधऽसाता। सः। अर्वता।। ६।।

*वह ही, हे ऋभुओ!, जिसको बढाते हो,*
*तुम, इन्द्र भी, मरने के धर्म वाले को।*
*वह चिन्तनों से (अपने), हो जाए पाने वाला,*
*हवियों के प्रदान में (पाने वाला), वह अश्वों से (युक्त)।। ६।।*

हे सत्यज्योतिरूपी आदित्य की रश्मियो! वह परमेश्वर और तुम जिस मरणधर्मा मनुष्य को बढ़ाते हो, जिसकी रक्षा करते हो और जिससे प्रीति करते हो, वह अपने चिन्तनों, अपनी बुद्धियों और अपने कर्मों से सब प्रकार के उत्तम पदार्थों को पाने वाला हो जाता है। वह अपने द्वारा किये हुए यज्ञ आदि शुभ कर्मों के फलों को पाने वाला हो जाता है। वह अश्व आदि से युक्त होकर युद्धों को जीतने वाला अथवा अपनी इन्द्रियों का स्वामी होने से जीवन के संघर्षों में विजय प्राप्त करने वाला और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला हो जाता है।

टि. *चिन्तनों से* – **धीभिः**। कर्मभिः – वे.। सा.। प्रज्ञाभिः – दया.। by his acts - W. by his thoughts - G.

*पाने वाला* – **सनिता**। सम्भक्ता शत्रूणाम् – वे.। सम्भक्ता – सा.। सत्यासत्ययोः संविभाजकः – दया.। liberal - W. successful - G.

*हवियों के प्रदान में* – **मेधसाता**। हविषो दाता – वे.। मेधसातौ यज्ञे – सा.। शुद्धसंग्रामविभक्ते – दया.। at the sacrifice - W. G.

*अश्वों से (युक्त)* – **अर्वता**। अश्वेन च – वे.। अरणवताश्वेन युक्तः – सा.। अश्वादिना – दया.। possessed of a horse - W. with the steed - G.

**वि नो वाजा ऋभुक्षणः पथश् चितन यष्टवे।**
**अस्मभ्यं सूरयः स्तुता विश्वा आशास् तरीषणि।। ७।।**

वि। नः। वाजाः। ऋभुक्षणः। पथः। चितन। यष्टवे।
अस्मभ्यम्। सूरयः। स्तुताः। विश्वाः। आशाः। तरीषणि।। ७।।

*हमारे लिये हे बलशालियो! हे भास्वरो!,*
*मार्गों को निश्चित करो तुम, यजन के लिये।*
*हमको, हे मेधावियो!, स्तुति किये हुए (तुम),*
*सब दिशाओं को तरने के निमित्त (प्रदान करो सामर्थ्य को)।। ७।।*

हे बलशाली और विशेष रूप से प्रकाशमान सत्यज्योतिरूपी आदित्य की रश्मियो! तुम हमें बाह्य यज्ञ और अन्तर्यज्ञ के सम्पादन के लिये सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान करो। हे मेधावियो! हम तुम्हारी स्तुति करते हैं। तुम हमें सब दिशाओं को तर जाने के निमित्त, उन्नति के सब क्षेत्रों में आगे ही आगे बढ़ते जाने के निमित्त सामर्थ्य प्रदान करो।

टि. *निश्चित करो तुम* – **वि चितन**। वि चिनुत – वे.। विचेतयत। प्रज्ञापयतेत्यर्थः। सा.। ज्ञापयत – दया.। direct us in the way - W. free for us - G.

*तरने के निमित्त (प्रदान करो सामर्थ्य को)* - **तरीषणि**। तरणनिमित्तं कुर्वन्तु - वे.। तरीतुं सामर्थ्यं वितरतेति शेषः - सा.। दुःखं तरितुं सामर्थ्यम् - दया.। are able to traverse - W. we may press forward - G.

**तं नो॑ वाजा ऋभुक्षण॒ इन्द्र॒ नास॑त्या र॒यिम्।**
**सम् अश्वं॑ चर्ष॒णिभ्य॒ आ पु॒रु श॑स्त म॒घत्त॑ये।। ८।। १०।।**

तम्। न॒ः। वा॒जा॒ः। ऋ॒भु॒क्ष॒ण॒ः। इन्द्र॑। नास॑त्या। र॒यिम्।
सम्। अश्व॑म्। च॒र्ष॒णिऽभ्यः॑। आ। पु॒रु। श॒स्त॒। म॒घत्त॑ये।। ८।।

*उसको हमें, हे बलशालियो!, हे महानो!,*
*हे इन्द्र!, हे अश्वियो!, दानयोग्य धन को।*
*सम्यक्, गतिशील को, मनुष्यों को, सर्वतः,*
*प्रभूत आशीर्वाद दो, धन के दान के लिये।। ८।।*

हे महान्, बलशाली, सत्यज्योति रूपी आदित्य की रश्मियो!, हे आत्मा!, हे कभी असत्य न होने वाले प्राण और अपान! तुम सब हमें सम्यक् रूप से गतिशील दान के योग्य धन प्रदान करो और परिश्रम से अर्जित किये हुए उस पवित्र धन को सब मनुष्यों में वितरित करने के लिये हमें प्रभूत आशीर्वाद प्रदान करो।

टि. *गतिशील को* - **अश्वम्**। महान्तम् - दया.। with horses - W. the steed - G.

*मनुष्यों को* - **चर्षणिभ्यः**। प्रजाभ्यः - वे.। मनुष्येभ्यः - सा.। दया.।

*आशीर्वाद दो* - **शस्त**। शंसत - वे.। समाशस्त। सम्यग् आशंसनं कुरुत। सा.। शस्त प्रशंसत - दया.। command - W.

*धन के दान के लिये* - **मघत्तये**। धनदानाय - वे.। सा.। पूजितधनप्राप्तये - दया.। for their enrichment - W.

## सूक्त ३८

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १ द्यावापृथिवी, २-१० दधिक्राः। छन्दः - त्रिष्टुप्। दशर्चं सूक्तम्।

**उ॒तो हि वां॑ दा॒त्रा सन्ति॒ पूर्वा॒ या पू॒रुभ्य॑स् त्र॒सद॑स्युर् नितो॒शे।**
**क्षे॒त्रा॒सां द॑दथुर् उर्वरा॒सां घ॒नं दस्युं॑भ्यो अ॒भिभू॑तिम् उ॒ग्रम्।। १।।**

उ॒तो इति॑। हि। वा॒म्। दा॒त्रा। सन्ति॑। पूर्वा॑। या। पू॒रुऽभ्यः॑। त्र॒सद॑स्युः। नि॒ऽतो॒शे।
क्षे॒त्र॒ऽसाम्। द॒द॒थुः॒। उ॒र्व॒रा॒ऽसाम्। घ॒नम्। दस्यु॑ऽभ्यः। अ॒भिऽभू॑तिम्। उ॒ग्रम्।। १।।

*और तुम दोनों के दान, हैं पूर्व काल से प्रवर्तमान,*
*जिन्हें मनुष्यों को, हिंसकों को डराने वाला, प्रदान करता है।*
*निवास के दान को, देते हो तुम, उर्वरा भूमि के दान को,*
*आयुध को (देते हो तुम), दस्युओं के अभिभावुक को, उग्र को।। १।।*

हे सबका पालन करने वाले द्यौ पिता और सबको धारण करने वाली धरित्री माता! तुम्हारे द्वारा

दिये जाने वाले दान प्राचीन काल से ही चले आ रहे हैं। दुष्ट हिंसक जनों को अपने क्षात्र बल से डराकर दीनों और असहायों की रक्षा करने वाला वीर पुरुष तुम्हारे द्वारा प्रदान किये हुए इन दानों को ही प्रजाओं में वितरित करता है। हे द्यौ पिता और धरती माता! तुम ही निवासों का दान देते हो, तुम ही उपजाऊ भूमि का दान देते हो। दुष्ट हिंसक जनों को परास्त करने वाले उग्र हथियार भी तुम ही प्रदान करते हो। अथवा तुम काम, क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट करने का सामर्थ्य प्रदान करते हो।

टि. *दान* - **दात्रा**। दानानि - वे.। दानकर्त्रा पौरुकुत्सेन त्रसदस्युना - सा.। दातारौ - दया.। by the liberal (prince) - W. gifts - G.

*प्राचीन काल से प्रवर्तमान* - **पूर्वा**। पूर्वाणि - वे.। पूर्वाणि पुरातनानि पूरकाणि वा - सा.। ancient (gifts) - W. in days aforetime - G.

*मनुष्यों को* - **पूरुभ्यः**। (दुर्भिक्ष) मनुष्येभ्यः - वे.। पूरुभ्यो ऽर्थिभ्यो मनुष्येभ्यः - सा.। बहुभ्यः - दया.। to the Pūrus - G.

*हिंसकों को डराने वाला* - **त्रसदस्युः**। त्रसदस्यू राजा - सा.। त्रसदस्युः त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात् सः - दया.।

*प्रदान करता है* - **नितोशे**। लेभे - वे.। नितोशे न्यतोषत दत्तवान् - सा.। नितरां वधे। नितोशत इति वधकर्मा (निघ. २.१९)। दया.। *nituś* "to drip down (trans. and intrans.), sprinkle, grant, distribute' - MW. has bestowed - W. (Trasadasyu) granted (to the Pūrus), the verb *nitośe* standing for the dual *nitośathe* - G.

*निवास के दान को* - **क्षेत्रसाम्**। क्षेत्रदानम् - वे.। क्षेत्राणि सर्वा भूमीः सनोतीति क्षेत्रसा अश्वस् तम् - सा.। यः क्षेत्राणि सनति विभजति तम् - दया.। a horse - W. winner of our fields - G.

*उर्वरा भूमि के दान को* - **उर्वरासाम्**। उर्वरादानम् - वे.। उर्वरा सर्वसस्याढ्या भूः। तां सनोतीति उर्वरासाः पुत्रस् तम्। सा.। बहुश्रेष्ठाः पदार्थाः सन्ति यस्यां तां भूमिं सनति तम् - दया.। a son - W. the winner of our plough lands - G.

*दस्युओं के* - **दस्युभ्यः**। शत्रुभ्यः - वे.। दस्यूनां वधार्थम् - सा.। साहसिकेभ्यश् चौरेभ्यः - दया.। दुष्टों का - सात.।

*अभिभावुक को* - **अभिभूतिम्**। अभिभावुकम् - वे.। अभिभवितारम् - सा.। अभिभूतिम् पराजयम् - दया.। foe-subduing - W. smiter - G.

**उ॒त वा॒जिनं॑ पुरुनि॒ष्षिध्वा॑नं दधि॒क्राम् उं॑ ददथुर् वि॒श्वकृं॑ष्टिम्।**
**ऋ॒जि॒प्यं श्ये॒नं प्रु॑षि॒तप्सु॑म् आ॒शुं च॒र्कृत्य॑म् अ॒र्यो नृ॒पतिं॒ न शूर॑म्।। २।।**

उ॒त। वा॒जिन॑म्। पु॒रु॒निः॒ऽसिध्वा॑नम्। द॒धि॒ऽक्राम्। ऊँ॒ इति॑। द॒द॒थुः॒। वि॒श्वऽकृ॑ष्टिम्।
ऋ॒जि॒प्यम्। श्ये॒नम्। प्रु॒षि॒तऽप्सु॑म्। आ॒शुम्। च॒र्कृत्य॑म्। अ॒र्यः। नृ॒ऽपति॑म्। न। शूर॑म्।। २।।

*और वेगवान् को, असंख्य शत्रुओं को तिरस्कृत कर देने वाले को,*
*दधिक्रा को, निश्चय से धारण करते हो तुम दोनों, सर्वजनहितकर को।*
*ऋजुगामी को, प्रशंसनीय गमन वाले को, दीप्त रूप वाले को, व्याप्त को,*

*काट डालने वाले को शत्रु के, नरों के पालक की तरह शूर को।। २।।*

इस मन्त्र में दधिक्रा की स्तुति की गई है। दधिक्रा उसे कहा जाता है, जो किसी को धारण करके गमन करता है (दधत् क्रामतीति दधिक्राः)। अतः दधिक्रा यज्ञ में डाले हुए घृत आदि के सार और सुगन्ध को लेकर सर्वत्र गमन करने वाले यज्ञाग्नि अथवा परमेश्वर का नाम है। द्युलोक और भूलोक ये दोनों इस अग्निरूपी दधिक्रा को धारण कर रहे हैं, जो वेगवान् है, जो असंख्य शत्रुओं को नष्ट कर डालने वाला है, जो सब जनों का हितैषी है, जो ऋजुगामी है, जो प्रशंसनीय गति वाला है, जो सर्वत्र व्याप्त है, जो हिंसकों को काट डालने वाला है और जो मनुष्यों का पालन करने वाले राजा के समान शूरवीर है।

टि. *असंख्य शत्रुओं को तिरस्कृत कर देने वाले को* – **पुरुनिष्षिध्वानम्**। पुरूणां बहूनां शत्रूणां निषेद्धारम् – सा.। बहवः शत्रवो निष्षिध्यन्ते येन तम् – दया.। the repeller of many foes - W. the giver of many gifts - G.

*धारण करते हो तुम दोनों* – **ददथुः**। धारयतः – सा.। दद्याताम् – दया.।

*दधिक्रा को* – **दधिक्राम्**। दधत् क्रामतीति वा । दधत् क्रन्दतीति वा। दधद् आकारी भवतीति वा। या. (नि. २.२७)। दधिक्रावा चेन्द्र एव। वायुर् वा। मध्यस्थानत्वात्। दुर्ग. (तत्रैव)। दधिक्रां दधद् अन्यं धारयन् क्रामतीति दधिक्राः। तम् एतन्नामकं देवम्। सा.। यो दधिना धारकेणाधिकेन सह तम् – दया.।

*सर्वजनहितकर को* – **विश्वकृष्टिम्**! विश्वाः कृष्टयो रक्षणीयाः सेवका वा मनुष्या यस्य तम् – सा.। विश्वे सर्वे कृष्टयो मनुष्या विजयिनो यस्मात् तम् – दया.। the defender of all men - W. who visiteth all people - G.

*ऋजुगामी को* – **ऋजिप्यम्**। ऋज्वाप्नोति गच्छतीत्यृजिप्यः तम् – सा.। ऋजिपेषु सरलानां पालकेषु साधुम् – दया.। the straight-going - W. impetuous - G.

*प्रशंसनीय गमन वाले को* – **श्येनम्**। शंसनीयगमनम् – सा.। श्येनम् इव सद्योगामिनम् – दया.। the graceful moving - W. hawk - G.

*दीप्त रूप वाले को* – **प्रुषितप्सुम्**। दीप्तरूपम् – सा.। यः प्रुषितान् स्निग्धान् पदार्थान् प्साति भक्षयति तम् – दया.। the resplendent - W. of varied colour - G.

*व्याप्त को* – **आशुम्**। व्याप्तं शीघ्रगमनं वा – सा.। पूर्णम् अध्वानं प्राप्नुवन्तम् – दया.। the rapid - W. swift - G.

*काट डालने वाले को शत्रु के* – **चर्कृत्यम् अर्यः**। अरेः कर्तनशीलम् – सा.। भृशं कर्तुं योग्यं स्वामी – दया.। the destroyer of enemies - W. whom each true man must honour - G.

**यं सी॒म् अनु॑ प्र॒वते॑व॒ द्रव॑न्तं॒ विश्वः॑ पू॒रुर् मद॑ति॒ हर्ष॑माणः।**
**प॒ड्भिर् गृध्य॑न्तं मेध॒युं न शूरं॑ रथ॒तुरं॒ वात॑मिव॒ ध्रज॑न्तम्।। ३।।**

यम्। सी॒म्। अनु॑। प्र॒वता॑ऽइव। द्रव॑न्तम्। विश्वः॑। पू॒रुः। मद॑ति। हर्ष॑माणः।
प॒ट्ऽभिः। गृध्य॑न्तम्। मे॒ध॒ऽयुम्। न। शूर॑म्। र॒थ॒ऽतुर॑म्। वात॑म्ऽइव। ध्रज॑न्तम्।। ३।।

*जिसे सर्वतः अनुक्रम से, निम्न मार्ग से (जल की) तरह, दौड़ते हुए को,*
*प्रत्येक मनुष्य आनन्दित करता है (स्तुति से अपनी), हर्षित होता हुआ।*
*पाँवों से (आगे बढ़ने की) लालसा वाले को, युद्धेच्छु की तरह शूर की,*
*रथ को गति देने वाले को, वायु की तरह (सर्वत्र) गति करने वाले को।। ३।।*

धारण करके गमन करने वाला, सब पदार्थों में व्यापक, वह अग्नि निम्न मार्ग से बहने वाले जल की तरह सब पदार्थों में अनुक्रम से संक्रमण कर रहा है। युद्ध की कामना वाले शूरवीर योद्धा की तरह वह हिंसक शक्तियों के विनाश की कामना से अपने गतिसाधनों से आगे बढ़ने की कामना करता है। वह इस शरीर अथवा जगत् रूपी रथ का संचालक है। वह वायु की तरह सर्वत्र गतिमान् है। प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न होता हुआ अपनी स्तुतियों से, उसकी महिमा के गान से, सब ओर गति करने वाले को उसको प्रसन्न करता है। ऐसे श्रेष्ठ गुणों वाला वह दधिक्रा भला उस परमेश्वर के सिवाय और कौन हो सकता है।

टि. *निम्न मार्ग से (जल की तरह)* - **प्रवताऽइव**। प्रवणेनोदकम् इव - वे.। प्रवणवता निम्नेन मार्गेणोदकम् इव - सा.। निम्नस्थलेनेव - दया.। as if down a precipice - W. G.

*प्रत्येक मनुष्य* - **विश्वः पूरुः**। सर्वः मनुष्यः - वे.। सा.। all men - W. each Pūru - G.

*आनन्दित करता है* - **मदति**। स्तौति - सा.। आनन्दति - दया.। ( all men) praise - W. praises - G.

*पाँवों से (आगे बढ़ने की) लालसा वाले को* - **पड्भिः गृध्यन्तम्**। पादैः शत्रून् अभिकाङ्क्षन्तम् - वे.। पादैर् अभिकाङ्क्षन्तं दिशो लङ्घितुम् - सा.। पादैर् अभिकाङ्क्षमाणम् - दया.। springing with his feet - W. springing forth - G.

*युद्धेच्छु की तरह शूर की* - **मेधयुं न शूरम्**। संग्रामेच्छुम् इव शूरम् - वे.। सा.। हिंसां कामयमानम् इव शूरम् - दया.। like a hero eager for war - W. G.

*रथ को गति देने वाले को* - **रथतुरम्**। रथं त्वरयन्तम् - वे.। रथेन गच्छन्तम् - सा.। दया.। drawing a car - W. whirling the car - G.

*गति करने वाले को* - **ध्रजन्तम्**। गच्छन्तम् - वे.। शीघ्रगम् - सा.। दया.। flying - G.

**यः स्मा॑रुन्धा॒नो गध्या॑ स॒मत्सु॒ सनु॑तर॒श् चर॑ति॒ गोषु॒ गच्छ॑न्।**
**आ॒विर्ऋ॑जीको वि॒दथा॑ नि॒चिक्य॑त् ति॒रो अ॑र॒तिं पर्याप॑ आ॒योः।। ४।।**

यः। स्म॒। आ॒ऽरु॒न्धा॒नः। गध्या॑। स॒मत्ऽसु॑। सनु॑ऽतरः। चर॑ति। गोषु॑। गच्छ॑न्।
आ॒विःऽऋ॑जीकः। वि॒दथा॑। नि॒ऽचिक्य॑त्। ति॒रः। अ॒रतिम्। परि॑। आप॑ः। आ॒योः।। ४।।

*जो हमेशा ग्रहण करने वाला, ग्रहण करने योग्यों को, संघर्षों में,*
*श्रेष्ठ विभक्ता, विचरण करता है लोकों में, गति करता हुआ।*
*प्रकट करने वाला रहस्यों को, ज्ञेय ज्ञानों को सम्यक् जानने वाला,*
*तिरस्कृत कर देता है दुःख को, सब ओर से आप्त मनुष्य के।। ४।।*

वह जो सबको धारण करके गमन करने वाला परमेश्वर दैवी और आसुरी शक्तियों के बीच

में चलने वाले संघर्षों में जल, प्रकाश, ज्ञान आदि ग्रहण करने योग्य पदार्थों को ग्रहण करके दैवी प्रजाओं को दे देता है, जो कृपाओं को बाँटने वालों में श्रेष्ठ है, जो सब लोकों में व्याप्त होकर विचरण कर रहा है, जो अपने साधकों पर अपने रहस्यों को प्रकट करने वाला है और जो सब जानने योग्य ज्ञानों को जानता है, वह अपने उपासक जनों के सब प्रकार के दुःखों और कष्टों को दूर कर देता है।

टि. *ग्रहण करने वाला ग्रहण करने योग्यों को* - **आरुन्धानः गध्या।** सर्वतो निरुन्धन् अभिकाङ्क्ष्याणि - वे.। गध्या गध्यानि। गध्यतिर् मिश्रीभावकर्मेति निरुक्तम् (५.१५)। मिश्रयितव्यानि फलानि। आरुन्धानः सर्वतो निरोधयन्। सा.। आरुन्धानः समन्ताच् छत्रून् निरुन्धानः, गध्या मिश्रीभूतान् - दया.। opposing the mingled multitude - W. who gaineth precious booty - G.

*श्रेष्ठ विभक्ता* - **सनुतरः।** सम्भक्तृतरः - वे.। सा.। सनातनविद्यः - दया.। eager - W.

*लोकों में* - **गोषु।** गोनिमित्तम् - वे.। सर्वासु दिक्षु गोषु वा निमित्तभूतेषु - सा.। गोषु पृथिवीषु - दया.। through regions - W. among the cattle - G.

*प्रकट करने वाला रहस्यों को* - **आविर्ऋजीकः।** आविर्भूताकुटिलगतिः - वे.। आविर्भूतसाधन आविर्भूतमुष्को वा - सा.। प्रसिद्धसरलस्वभावः - दया.। whose vigour is manifest - W. shown in bright colour - G. ṛjīka 'hid, concealed' - MW.

*ज्ञेय ज्ञानों को सम्यक् जानने वाला* - **विदथा निचिक्यत्।** ज्ञातव्यानि नियमेन जानन् - वे.। विदथानि ज्ञातव्यानि। निचिक्यत्। पश्यतिकर्मैतत्। जानन्। सा.। विज्ञानानि पश्यन् - दया.। understanding what is to be known - W. looking on the assemblies - G.

*तिरस्कृत कर देता है दुःख को* - **तिरः अरतिम्।** अरतिं तिरः करोति - वे.। अरतिम् अरमणं दुःखम् अभिगन्तारम् अरिं वा। तिरश् चरति तिरस्करोति। सा.। तिरः तिरस्करणे, अरतिम् दुःखम् - दया.। puts to shame the adversary - W. beyond the churl - G.

*आप्त मनुष्य के* - **आपः आयोः।** आपो व्याप्तस्य स्तोतुर् आयोर् मनुष्यस्य यजमानस्य - सा.। of the (pious) man - W. to worship of the living - G.

**उ॒त स्मै॑नं वस्त्र॒मथिं॒ न ता॒युम् अनु॑ क्रोशन्ति क्षि॒तयो॒ भरे॑षु।**
**नी॒चाय॑मान॒ं जसु॑रिं॒ न श्ये॒नं श्रव॒श् चाच्छा॑ पशु॒मच् च॑ यू॒थम्।। ५।। ११।।**

उ॒त। स्म॒। ए॒न॒म्। व॒स्त्र॒ऽमथि॑म्। न। ता॒युम्। अनु॑। क्रो॒श॒न्ति॒। क्षि॒तय॑ः। भरे॑षु।
नी॒चा। अय॑मानम्। जसु॑रिम्। न। श्ये॒नम्। श्रव॑ः। च॒। अच्छ॑। प॒शु॒ऽमत्। च॒। यू॒थम्।। ५।।

*और निश्चय से इसको (देखकर), वस्त्रहर की तरह चोर की,*
*एक-दूसरे के पीछे चिल्लाती हैं (शत्रु)प्रजाएं, संग्राम में।*
*नीचे की ओर झपटने वाले को, भूखे को (देखकर) जिस प्रकार श्येन को,*
*कीर्त्ति और पशुओं वाले समूह को लक्ष्य बनाकर (जाते हुए को देखकर)।। ५।।*

और जिस प्रकार वस्त्र आदि वाससाधनों को चुराने वाले चोर को देखकर उसको पकड़ने और अपने वश में करने में अशक्त जन डर के मारे चिल्लाते हैं, और जिस प्रकार आकाश से नीचे की

ओर झपटने वाले भूखे श्येन पक्षी को देखकर छोटे पक्षी डर के मारे शोर करते हैं, उसी प्रकार दुष्ट हिंसक आसुरी शक्तियां दैवी शक्तियों के साथ चलने वाले संघर्षों में यश और गौ, जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों को उनसे छीनकर दैवी प्रजाओं में वितरित करने वाले, सबको धारण करके गमन करने वाले उस परमेश्वर को देखकर उसके डर के मारे एक-दूसरे के पीछे चिल्लाती और शोर मचाती हैं।

टि. *वस्त्रहर की तरह* चोर की - **वस्त्रमथिम् न तायुम्।** वस्त्रमाथिनम् इव स्तेनम् - वे.। वस्त्र-माथिनं तस्करम् इव - सा.। यो वस्त्राणि मथ्नाति तं तस्करम् - दया.। as after a thief carrying off a garment - W. as 't were a thief who steals away a garment - G.

*नीचे की ओर झपटने वाले को* - **नीचा अयमानम्।** नीचैः अयमानम् - वे.। नीचैर् गच्छन्तम् - सा.। नीचानि कर्माणि प्राप्नुवन्तम् - दया.। pouncing ( upon his prey) - W. swooping down - G.

*भूखे को (देखकर)* - **जसुरिम्।** क्षुधा हिंसितम् - वे.। जसुरिं क्षुधितम् - सा.। प्रयतमानम् - दया.। hungry - W. G.

*कीर्त्ति और पशुओं वाले समूह को लक्ष्य बनाकर* - **श्रवः च अच्छ पशुमत् च यूथम्।** धनं पशुमत् यूथं च प्रति - वे.। श्रवो ऽन्नं कीर्त्तिं वा पशुमद् यूथं चाच्छाभिलक्ष्य गच्छन्तम् - सा.। hastening to obtain food, or a herd of cattle - W. speeding to glory, or a herd of cattle - G.

**उत स्मांसु प्रथमः सरिष्यन् नि वेवेति श्रेणिभी रथानाम्।**
**स्रजं कृण्वानो जन्यो न शुभ्वा रेणुं रेरिहत् किरणं ददश्वान्।। ६।।**

उत। स्म। आसु। प्रथमः। सरिष्यन्। नि। वेवेति। श्रेणिऽभिः। रथानाम्।
स्रजम्। कृण्वानः। जन्यः। न। शुभ्वा। रेणुम्। रेरिहत्। किरणम्। ददश्वान्।। ६।।

*और इन (सेनाओं) में मुखिया बनकर गमन की इच्छा करता हुआ,*
*भली प्रकार गमन करता है, श्रेणियों के साथ रथों की।*
*माला को धारण करता हुआ, वधूकामी की तरह शोभायमान,*
*धूलि को उड़ाता हुआ (आकाश में), रश्मि को चबाता हुआ।। ६।।*

जिस प्रकार कोई सेनापति अपनी सेनाओं का मुखिया बनकर शत्रुसेनाओं के अन्दर घुसकर उनका विनाश करने की इच्छा से रथसमूहों के साथ उनमें प्रवेश करता है, उसी प्रकार वह परमेश्वर दैवी शक्तियों और अपने गमन साधनों के साथ दुष्ट आसुरी शक्तियों के अन्दर घुसकर उनका विनाश कर डालता है। माला को धारण करके शोभायमान वधू की कामना वाले दूल्हे की तरह सुशोभित, लगाम को चबाते हुए और आकाश में धूलि को उड़ाते हुए अश्व की तरह वह जगदीश दुष्ट आसुरी शक्तियों की सेनाओं को धराशायी कर देता है।

टि. *मुखिया बनकर* - **प्रथमः।** अग्रतः - वे.। प्रतम उत्कृष्टतमो मुख्यः सन् - सा.। आदिमः - दया.। first - W. G.

*गमन की इच्छा करता हुआ* - **सरिष्यन्।** सर्तुम् इच्छन् - सा.। गमिष्यन् - दया.।

*भली प्रकार गमन करता है* – **नि वेवेति**। न्यङ् गच्छति – वे.। नितरां गच्छति। इतस्ततो धावति। सा.। (fain to come forth) this way and that - G.

*माला को धारण करता हुआ* – **स्रजं कृण्वानः**। मनुष्याणां श्रेणिं कुर्वन् – वे.। सृज्यत उत्पाद्यते रूपम् अनयेति स्रग् अलङ्कृतिः। तां कृण्वानः। सा.। मालाम् इव सेनां कुर्वन् – दया.।

*वधूकामी की तरह* – **जन्यः न**। जनिं वधूं कामयमान इव।। राजा इव – वे.। जनेभ्यो हितो ऽश्व इव – सा.। जन्यः यो जायते, न इव – दया.। friendly to man - W. like a bridesman - G.

*शोभायमान* – **शुभ्वा**। शोभनः – वे.। सुष्ठु भवतीति सुभ्वा शोभमानः – सा.। सुशोभमानः – दया.। gay - G.

*धूलि को उड़ाता हुआ* – **रेणुम् रेरिहत्**। सङ्ग्रामोत्थम् रेणुम् लिहन् – वे.। रेणुं स्वपादघात-जनितं रेरिहद् भृशं लेढि – सा.। raising the dust - W. tossing the dust - G.

*रश्मि को चबाता हुआ* – **किरणम् ददश्वान्**। दीप्तिं प्रयच्छन् – वे.। किरणम् आस्यगतं खलीनं ददश्वान् दशन् – सा.। ज्योतिर् दत्तवान् वायुर् इव – दया.। champing his bit - W. champing the rein that holds him - G.

**उ॒त स्य वा॒जी सहु॑रिर् ऋ॒तावा॑ शुश्रू॑षमाणस् त॒न्वा॑ सम॒र्ये।**
**तुरं॑ य॒तीषु॑ तु॒रय॑न्नृजि॒प्यो ऽधि॑ भ्रु॒वोः कि॑रते रे॒णुम् ऋ॒ञ्जन्।। ७।।**

उ॒त। स्यः। वा॒जी। सहु॑रिः। ऋ॒तऽवा॑। शुश्रू॑षमाणः। त॒न्वा॑। स॒ऽम॒र्ये।
तुर॑म्। य॒तीषु॑। तु॒रय॑न्। ऋ॒जि॒प्यः। अधि॑। भ्रु॒वोः। कि॒र॒ते॒। रे॒णुम्। ऋ॒ञ्जन्।। ७।।

*और वह बलवान्, अभिभविता, ऋत का पालक,*
*सेवा करता हुआ, शरीर से अपने, संग्राम में।*
*शीघ्रता से जाने वाली सेनाओं में, शीघ्रता कराता हुआ, ऋजुगामी,*
*ऊपर भ्रूओं के बिखेरता है, धूलि को प्रसाधित करता हुआ।। ७।।*

समस्त जगत् को धारण करके गति करने वाला वह जगदीश्वर बलशाली है। वह हिंसक आसुरी शक्तियों को परास्त करने वाला, सत्य के मार्ग पर चलने वाला और आसुरी शक्तियों के साथ होने वाले संघर्षों में अपनी सहायता स्वयं करने वाला है। जब दैवी शक्तियां शीघ्रता के साथ आसुरी शक्तियों के विरुद्ध प्रयाण करती हैं, तो वह शीघ्रता से आगे होकर उनका संचालन करता है। अपने अगले खुरों से मिट्टी को उखाड़कर अपने मस्तक पर धूलि बिखेरने वाले बलवान् अश्व की तरह वह देवासुर संग्रामों में अपनी शक्तिमत्ता का प्रदर्शन करता है।

टि. *अभिभविता* – **सहुरिः**। सहनवान् – वे.। सहनशीलः शत्रूणाम् – सा.। दया.। enduring - W. victorious - G.

*ऋत का पालक* – **ऋतावा**। सत्यकर्मा – वे.। अन्नवान् – सा.। सत्याचरणः – दया.। bestowing food - W. faithful - G.

*सेवा करता हुआ* – **शुश्रूषमाणः**। स्वतनुं शुश्रूषमाणः – सा.। सेवमानः – दया.। doing service - W. obedient - G.

*शरीर से अपने* – **तन्वा**। चरेण – वे.। स्वावयवेन खुरादिना – सा.। शरीरेण – दया.। with his limbs - W. with his body - G.

*शीघ्रता से जाने वाली सेनाओं में शीघ्रता कराता हुआ* – **तुरं यतीषु तुरयन्**। तूर्णं गच्छन्तीषु सेनासु त्वरयन् – वे.। त्वरगामिनीष्वसुरसेनासु त्वरयन् – सा.। शीघ्रकारिणं नियतासु सेनासु सद्यो गमयन् – दया.। speeding straight on amid the swiftly pressing - G.

*प्रसाधित करता हुआ* – **ऋञ्जन्**। शत्रून् प्रसाधयन् – वे.। (धूलिं) प्रसाधयन् – सा.। प्रसाध्नुवन् – दया.। tossing up - W. G.

**उत स्मास्य तन्यतोरिव द्योर् ऋघायतो अभियुजो भयन्ते।**
**यदा सहस्रम् अभि षीम् अयोधीद् दुर्वर्तुः स्मा भवति भीम ऋञ्जन्।। ८।।**

उत। स्म। अस्य। तन्यतोःऽइव। द्योः। ऋघायतः। अभिऽयुजः। भयन्ते।
यदा। सहस्रम्। अभि। सीम्। अयोधीत्। दुःऽवर्तुः। स्म। भवति। भीमः। ऋञ्जन्।। ८।।

*और इससे, कड़कने वाली से जिस प्रकार चमचमाती (बिजली) से,*
*दुष्टों की हिंसा करने वाले से, आक्रमण करने वाले भय खाते हैं।*
*जब हजारों के साथ सब ओर (स्थितों के), युद्ध करता है (यह),*
*दुर्वारण निश्चय से हो जाता है, भयङ्कर, साधता हुआ (विजय को)।। ८।।*

ईश्वरीय नियमों का पालन करने वाली प्रजाओं पर आक्रमण करने वाली दुष्ट आसुरी शक्तियां दुष्टों की हिंसा करने वाले इस परमेश्वर से इस प्रकार भय खाती हैं, जिस प्रकार साधारण जन कड़कती हुई और चमचमाती हुई बिजली से भय खाते हैं। जब यह जगदीश्वर अपने चारों ओर हजारों की संख्या में स्थित दुष्ट आसुरी शक्तियों से युद्ध करता है, तो निश्चय से अपनी विजय को साधता हुआ दुर्वारण और भयङ्कर हो जाता है।

टि. *कड़कने वाली से जिस प्रकार चमचमाती (बिजली) से* – **तन्यतोः इव द्योः**। अशनेः इव दीप्तस्य – वे.। द्योर् दीप्यमानात् तन्यतोः शब्दयितुर् अशनेर् इव – सा.। विद्युत इव प्रकाशमानायाः – दया.। like (those) of the brilliant thunderbolt - W. at his thunder, like the roar of heaven - G.

*दुष्टों की हिंसा करने वाले से* – **ऋघायतः**। हिंसतः – वेङ्कटादयः। of foe-destroying - W.

*आक्रमण करने वाले* – **अभियुजः**। अभियोक्तुः – वे.। अभियोक्तारो ऽसुराः – सा.। यो ऽभियुङ्क्ते तस्य – दया.। adversaries - W. those who attack - G.

*दुर्वारण* – **दुर्वर्तुः**। दुर्वारः – वे.। सा.। यो दुःखेन वर्तते तस्य – दया.। irresistible - W.

**उत स्मास्य पनयन्ति जना जूतिं कृष्टिप्रो अभिभूतिम् आशोः।**
**उतैनम् आहुः समिथे वियन्तः परा दधिक्रा असरत् सहस्रैः।। ९।।**

उत। स्म। अस्य। पनयन्ति। जनाः। जूतिम्। कृष्टिऽप्रः। अभिऽभूतिम्। आशोः।
उत। एनम्। आहुः। सम्ऽइथे। विऽयन्तः। परा। दधिऽक्राः। असरत्। सहस्रैः।। ९।।

*और निश्चय से इसके, स्तुति करते हैं मनुष्य,*

*वेग की, प्रजाओं को पूरने वाले के, अभिभविता की, वेगवान् के।*
*और इसके विषय में कहते हैं, संग्राम में विविध प्रकार से गमन करने वाले,*
*दूर-दूर तक दधिक्रा गमन करता है, सहस्रों (योद्धाओं) के साथ।। ९।।*

और निश्चय से मनुष्य प्रजाओं की कामनाओं को पूर्ण करने वाले तथा तीव्र गति वाले और सर्वत्र व्यापक इस परमेश्वर के सबको परास्त कर डालने वाले वेग की प्रशंसा करते हैं। और जीवनसंग्राम में विविध मार्गों से जाने वाले अथवा विविध प्रकार से व्यवहार करने वाले मनुष्य इसके विषय में बताते हैं, कि सबको धारण करके गमन करने वाला यह जगदीश अपनी असंख्य सहायक शक्तियों के साथ दुष्ट आसुरी शक्तियों का विनाश करने के लिये दूर-दूर तक सर्वत्र गमन करता है।

टि. *वेग की* - **जूतिम्।** वेगम् - वे.। rapidity - W. swiftness - G.

*प्रजाओं को पूरने वाले के* - **कृष्टिप्रः।** मनुष्याणां पूरयितुः - वे.। कृष्टिप्रः कृष्टयो मनुष्याः, तेषां पूरकस्य - सा.। of the accomplisher (of the desires) of mankind - W. who giveth men abundance - G.

*अभिभविता की* - **अभिभूतिम्।** अभिभावुकम् - वे.। अभिभवित्रीम् - सा.। अभिभवं तिरस्कारम् - दया.। overpowering - W. G.

*वेगवान् के* - **आशोः।** अश्नुवानस्य - वे.। व्याप्तस्य वेगवतो वा - सा.। सकलविद्याव्यापकस्य - दया.। of the fleet - W. G.

*विविध प्रकार से गमन करने वाले* - **वियन्तः।** गच्छन्तः - वे.। विविधं गच्छन्तो जनाः। यद्वा। वियन्तः शत्रवः पराभवन्तीति शेषः। सा.। विशेषेण प्राप्नुवन्तः - दया.। following him - W. drawing back - G.

*सहस्रों (योद्धाओं) के साथ* - **सहस्रैः।** जनसहस्रैः - वे.। सहस्रैर् अनुचरैः परिवृतः - सा.। असंख्यैः - दया.। with (his) thousands - W. G.

**आ द॒धि॒क्राः शव॑सा॒ पञ्च॑ कृ॒ष्टीः सूर्य॑ इव॒ ज्योति॑षा॒पस् त॑तान।**
**स॒ह॒स्र॒साः श॑त॒सा वा॒ज्यर्वा॑ पृ॒णक्तु॒ मध्वा॒ सम् इ॒मा वचां॑सि।। १०।। १२।।**

आ। द॒धि॒ऽक्राः। शव॑सा। पञ्च॑। कृ॒ष्टीः। सूर्यः॑ऽइव। ज्योति॑षा। अ॒पः। त॒ता॒न।
स॒ह॒स्र॒ऽसाः। श॒त॒ऽसाः। वा॒जी। अर्वा॑। पृ॒णक्तु॑। मध्वा॑। सम्। इ॒मा। वचां॑सि।। १०।।

*सर्वतः दधिक्रा बल से (अपने), पांच प्रजाओं को,*
*सूर्य जैसे तेज से (अपने), जलों को विस्तृत करता है।*
*हजारों देने वाला, सैंकड़ों देने वाला, बलशाली, गमनशील,*
*युक्त कर देवे मधु से सम्यक्, इन स्तुतिवचनों को (हमारे)।। १०।।*

जिस प्रकार सूर्य अपने तेज से जलों को बाष्प के रूप में परिणत करके आकाश में फैला देता है, अथवा अपने प्रकाश से अन्तरिक्ष को व्याप्त कर लेता है, उसी प्रकार सबको धारण करके वर्तमान वह परमेश्वर ब्राह्मण आदि चार वर्णों और पाँचवें निषाद आदि वनवासी जनों को अपने सामर्थ्य से सब दिशाओं में फैला देता है। सैंकड़ों और हजारों प्रकार के धनों को देने वाला बलशाली

और सर्वव्यापक वह जगदीश्वर हमारे स्तुतिवचनों को मधुर फलों से युक्त कर देवे।

टि. *पांच प्रजाओं को* - **पञ्च कृष्टीः**। पञ्च जनान् - वे.। दया.। पञ्च जनान् देवमनुष्यासुर-रक्षःपितृसंज्ञकान् निषादञ्चमान् चतुरो वर्णान् वा - सा.। Five-fold People - G.

*सूर्य जैसे तेज से जलों को* - **सूर्य इव ज्योतिषा अपः**। सूर्य इव तेजसा अपः - वे.। सूर्यस् तेजसा यथा जगद् आवृणोति तद्वद् अप उदकानि - सा.। सवितेव प्रकाशेन जलानि - दया.। the sun (diffuses) the waters by his radiance - W. as the Sun lightens the waters - G.

*विस्तृत करता है* - **ततान**। तनोति - वे.। आतनोति - सा.। विस्तृणोति - दया.।

*युक्त कर देवे मधु से सम्यक्* - **पृणक्तु मध्वा सम्**। मधुना सम् पर्चयतु - वे.। मधुरेण फलेन संयोजयतु - सा.। सं बध्नातु क्षौद्रेण - दया.। may associate with agreeable (rewards) - W.

## सूक्त ३९

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - दधिक्राः। छन्दः - १-५ त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप्। षड्ऋचं सूक्तम्।

**आशुं दधिक्रां तम् उ नु ष्टवाम दिवस् पृथिव्या उत चर्किराम।**
**उच्छन्तीर् माम् उषसः सूदयन्त्वति विश्वानि दुरितानि पर्षन्।। १।।**

आशुम्। दधिऽक्राम्। तम्। ऊँ इति। नु। स्तवाम। दिवः। पृथिव्याः। उत। चर्किराम।
उच्छन्तीः। माम्। उषसः। सूदयन्तु। अति। विश्वानि। दुःऽइतानि। पर्षन्।। १।।

*वेगवान् को, दधिक्रा को, उसको ही अब सराहें हम,*
*द्युलोक का, भूलोक का भी, संकीर्तन करें हम।*
*तम को भगाती हुईं, मुझको उषाएं मधुर बना देवें,*
*दूर करके सब दुरितों को, पार कर देवें (मुझको)।। १।।*

हम जगत् को धारण करके इसे चलाने वाले सर्वव्यापक परमेश्वर की स्तुति सदा करते रहें। हम उसके द्वारा धारण किये जाने वाले द्युलोक और भूलोक का भी संकीर्तन और स्मरण करते रहें। अज्ञानान्धकार को दूर भगा देने वाली प्रथम ज्ञानरश्मिरूपी उषाएं मुझे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिये तैयार करें, मेरा मार्गदर्शन करें, मेरी वाणी को, मेरे जीवन को मधुर बना देवें। सब बुराइयों और कठिनाइयों को दूर करके वे मुझे इस भवसागर से पार कर देवें।

टि. *संकीर्तन करें हम* - **चर्किराम**। पुनः पुनः कुर्मः - वे.। दिवः पृथिव्याश् च सकाशाद् अस्य घासं विक्षिपामि - सा.। भृशं विक्षेपयाम - दया.। scatter (provender before him) - W. we mention in our laud - G.

*तम को भगाती हुईं* - **उच्छन्तीः**। उच्छन्त्यः - वे.। तमो विवासयन्तीः - सा.। सेधयन्तीः - दया.। gloom-dispelling - W. flushing - G.

*मधुर बना देवें* - **सूदयन्तु**। कर्मणि प्रेरयन्तु - वे.। रक्षन्तु फलानि - सा.। क्षरयन्तु दूरीकुर्वन्तु - दया.। may preserve for me (all good things) -W. may move me to exertion - G.

*दूर करके पार कर देवें* - **अति पर्षन्**। अतिनयन्तु - वे.। अतिपारयन्तु - सा.। अति सिञ्चन्तु

-- दया.। may bear me beyond - W. bear me safely over (every trouble) - G.

**महश् चर्कर्म्यर्वतः क्रतुप्रा दधिक्राव्णः पुरुवारस्य वृष्णः।**
**यं पूरुभ्यो दीदिवांसं नाग्निं ददथुर् मित्रावरुणा ततुरिम्।। २।।**

महः। चर्कर्मि। अर्वतः। क्रतुऽप्राः। दधिऽक्राव्णः। पुरुऽवारस्य। वृष्णः।
यम्। पूरुऽभ्यः। दीदिऽवांसम्। न। अग्निम्। ददथुः। मित्रावरुणा। ततुरिम्।। २।।

*महान् की पुनः-पुनः करता हूँ मैं (स्तुति), गतिशील की, कर्मपूरक,*
*दधिक्रावा की, असंख्यों के द्वारा वरणीय की, सुखवर्षक की।*
*जिसको मनुष्यों के लिये, प्रकाशमान को जैसे अग्नि को,*
*धारण करते हो तुम, हे मित्र और वरुण!, तराने वाले को।। २।।*

हे अन्नदान के द्वारा मृत्यु से त्राण करने वाली धरती माता और समस्त जगत् को आवृत करके स्थित आकाश पिता! तुम दोनों अग्नि की तरह प्रकाशमान और सब को भवसागर से पार कर देने वाले जिस सर्वव्यापक और सर्वनियन्ता परमेश्वर को मनुष्यों के हित के लिये अपने अन्दर धारण कर रहे हो, मैं अपने कर्तव्यों का पालन करने वाला उपासक उस महान्, गतिशील, असंख्य जनों के द्वारा वरणीय, सुखों की वर्षा करने वाले, सब को धारण करके गमन करने वाले उस जगदीश्वर की बार-बार स्तुति करता हूँ।

टि. *पुनः-पुनः करता हूँ मैं (स्तुति)* - **चर्कर्मि**। पुनः पुनः करोमि स्तुतिम्, विकिरामि च घासम् - वे.। स्तुतिम् अत्यर्थं करोमि - सा.। भृशं करोमि - दया.। बार-बार स्तुति करता हूँ - सात.। I reiterate the praise - W. I praise - G.

*कर्मपूरक* - **क्रतुप्राः**। कर्मणां पूरयिता - वे.। सा.। ये प्रज्ञां पूरयन्ति ते - दया.। fulfiller of religious rites - W. who fills my spirit - G.

*दधिक्रावा की* - **दधिक्राव्णः**। यो विद्याधरान् कामयते तस्य - दया.। a lengthened interchangeable form of Dadhikras - G.

*प्रकाशमान को जैसे अग्नि को* - **दीदिवांसम् न अग्निम्**। दीप्तम् इव अग्निम् - वे.। सा.।

*तराने वाले को* - **ततुरिम्**। तारकम् - वे.। सा.। त्वरमाणम् - दया.। the transporter (beyond calamity) - W. whom swift of foot - G.

**यो अश्वस्य दधिक्राव्णो अकारीत् समिद्धे अग्ना उषसो व्युष्टौ।**
**अनागसं तम् अदितिः कृणोतु स मित्रेण वरुणेना सजोषाः।। ३।।**

यः। अश्वस्य। दधिऽक्राव्णः। अकारीत्। सम्ऽइद्धे। अग्नौ। उषसः। विऽउष्टौ।
अनागसम्। तम्। अदितिः। कृणोतु। सः। मित्रेण। वरुणेन। सऽजोषाः।। ३।।

*जो व्याप्त की दधिक्रावा की स्तुति करता है,*
*प्रज्वलित होने पर अग्नि के, उषा के उदय में।*
*निष्पाप उसको, अदिति कर देवे,*
*वह मित्र के, वरुण के, साथ समान प्रीति वाला।। ३।।*

जो उपासक उषा के उदित होने पर अर्थात् प्रातःकाल में अथवा हृदय के अन्दर आरम्भिक ज्ञानरश्मियों का उदय हो जाने पर और यज्ञाग्नि के प्रज्वलित हो जाने पर अथवा हृदय में अन्तर्यज्ञ का प्रवर्तन हो जाने पर उस सर्वव्यापक परमेश्वर की स्तुति और उपासना करता है, तो वह अखण्डनीय अविनाशी जगदीश्वर मृत्यु से त्राण करने वाली और समस्त जगत् को आच्छादित करने वाली अपनी शक्तियों के साथ समान प्रीति वाला होकर उसे पापों से रहित कर देता है।

टि. *व्याप्त की* - **अश्वस्य**। अश्वरूपस्य व्याप्तस्य वा - सा.। महतो व्याप्तविद्यस्य - दया.।

*स्तुति करता है* - **अकारीत्**। कर्म करोति - वे.। स्तुतिम् अकार्षीत् - सा.। करोति - दया.।has performed the worship - W. who hath honoured - G.

*निष्पाप* - **अनागसम्**। अपापम् - वे.। अनपराधम् - दया.।free from sin - W. free from all transgression - G.

*अदिति* - **अदितिः**। पृथिवी - वे.। अखण्डनीयो दधिक्राः - सा.। माता पिता वा - दया.।

**द॒धि॒क्राव्णं॑ इ॒ष ऊ॒र्जो म॒हो यद् अम॑न्महि म॒रुतां॒ नाम॑ भ॒द्रम्।**
**स्व॒स्तये॒ वरु॑णं मि॒त्रम् अ॒ग्निं हवा॑मह॒ इन्द्रं॒ वज्र॑बाहुम्।। ४।।**

द॒धि॒ऽक्राव्णः॑। इ॒षः। ऊ॒र्जः। म॒हः। यत्। अम॑न्महि। म॒रुता॑म्। नाम॑। भ॒द्रम्।
स्व॒स्तये॑। वरु॑णम्। मि॒त्रम्। अ॒ग्निम्। हवा॑महे। इन्द्र॑म्। वज्र॑ऽबाहुम्।। ४।।

*दधिक्रावा का, इष्यमाण का, ऊर्जस्वान् का, महान् का,*
*(है) जो, जानें (उसको), (और) मरुतों के नाम को, भद्र को।*
*कल्याण के लिये (अपने), वरुण को, मित्र को, अग्नि को,*
*बुलाते हैं हम, इन्द्र को, वज्र को भुजाओं में धारण करने वाले को।। ४।।*

सब के द्वारा कमनीय, बल को धारण करने वाले और देने वाले, सबसे महान्, जगत् को धारण करके उसी में व्याप्त परमेश्वर के स्वरूप का हम चिन्तन करें, उसे हम जानें और समझें। हम उसकी प्राणदायिनी शक्तियों के कल्याणकारी स्वरूप को भी जानें। हम अपने कल्याण के लिये वरण के योग्य, मृत्यु से त्राण करने वाले, मार्गदर्शन करने वाले और न्यायव्यवस्था को अपने अधीन रखने वाले परमैश्वर्यवान् उस परमात्मा का आह्वान करते हैं।

टि. *इष्यमाण का* - **इषः**। इष्यमाणस्य - वे.। अन्नसाधकस्य - सा.। अन्नादेः - दया.।the means of sustenance - W. for food - G.

*ऊर्जस्वान् का* - **ऊर्जः**। सर्वान् ऊर्जयतः - वे.। बलसाधकस्य - सा.। पराक्रमस्य - दया.।(the means) of strength - W. for strength - G.

*जानें* - **अमन्महि**। स्तुमः - वे.। सा.। विजानीयाम - दया.। हम मनन करते हैं - सा.।we glorify - W. we remember - G.

*मरुतों के* - **मरुताम्**। स्तोतॄणाम् - सा.। मनुष्याणाम् - दया.।of those who praise - W.

*नाम को* - **नाम**। नामरूपम् - सा.। संज्ञाम् - दया.।name - W. G.

*भद्र को* - **भद्रम्**। भजनीयम् - वे.। कल्याणम् - सा.। कल्याणकरम् - दया.।prosperity -

W. the blest - G.

**इन्द्रमिवेद् उभये वि ह्वयन्त उदीराणा यज्ञम् उपप्रयन्तः।**
**दधिक्राम् उ सूदनं मर्त्याय ददथुर् मित्रावरुणा नो अश्वम्।। ५।।**

इन्द्रम्ऽइव। इत्। उभये। वि। ह्वयन्ते। उत्ऽईराणाः। यज्ञम्। उपऽप्रयन्तः।
दधिऽक्राम्। ऊँ इति। सूदनम्। मर्त्याय। ददथुः। मित्रावरुणा। नः। अश्वम्।। ५।।

*इन्द्र की तरह ही, उभयविध जन पुकारते हैं (दधिक्रा को),*
*उच्चारते हुए (स्तुतियों को), यज्ञ के पास पहुँचते हुए।*
*दधिक्रा को निश्चय से, माधुर्य देने वाले को मनुष्यों को,*
*धारण करते हो तुम, हे मित्र और वरुण!, हमारे लिये सर्वव्यापक को।। ५।।*

दो प्रकार के मनुष्य हैं। एक वे जो श्रेय अर्थात् आत्मा का कल्याण चाहते हैं और दूसरे वे जो प्रेय अर्थात् सांसारिक सुख-भोगों की कामना करते हैं। दोनों ही प्रकार के मनुष्य जैसे इन्द्र अर्थात् सूर्य का गुणगान करते हैं, उसी प्रकार सबको धारण करके गमन करने वाले परमेश्वर की स्तुतियों का उच्चारण भी करते हैं और यज्ञ आदि शुभ कर्मों का सम्पादन करते हैं। वह परमेश्वर निश्चय से मनुष्यों के जीवन को मधुर बनाने वाला है। हे अन्न प्रदान करके मृत्यु से त्राण करने वाली धरती माता और सब को आच्छादित करने वाले तथा सबके द्वारा वरण के योग्य आकाश पिता! तुम इस सर्वव्यापक परमेश्वर को हमारे कल्याण के लिये अपने अन्दर धारण कर रहे हो।

टि. *उभयविध जन* - उभये। उभये सैनिकाः देवमनुष्या वा - वे.। उभय इत्यत्र स्तोतृशंसितृ-भेदेन वोभयविधत्वम् अवगन्तव्यम् - सा.। राजप्रजाजनाः - दया.। both - W. both sides - G.

*उच्चारते हुए (स्तुतियों को)* - उदीराणाः। उदीर्णाः युद्धार्थम् - वे.। उदीराणा युद्धायोद्योगं कुर्वन्तः - सा.। उत्कृष्टतां प्राप्ताः - दया.। who are preparing for battle - W. stir forth - G.

*यज्ञ के पास पहुँचते हुए* - यज्ञम् उपप्रयन्तः। देवानां यज्ञं च जयार्थम् उपप्रगच्छन्तः - वे.। यज्ञम् उपक्रम्य प्रवर्तमानाः - सा.। न्यायव्यवहारं प्राप्नुवन्तः - सा.। who are proceeding to sacrifice - W. turn to sacrificing - G.

*माधुर्य देने वाले को मनुष्यों को* - सूदनं मर्त्याय। शत्रोः सूदनम् - वे.। मर्त्यस्य सूदनं प्रेरकम् - सा.। सूदनं क्षरणम् - दया.। an encourager to man - W. a guide for mortals - G.

**दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोर् अश्वस्य वाजिनः।**
**सुरभि नो मुखा करत् प्र ण आयूंषि तारिषत्।। ६।। १३।।**

दधिऽक्राव्णः। अकारिषम्। जिष्णोः। अश्वस्य। वाजिनः।
सुरभि। नः। मुखा। करत्। प्र। नः। आयूंषि। तारिषत्।। ६।।

*दधिक्राव की करता हूँ मैं स्तुति को,*
*विजयशील की, व्यापक की, वेगवान् की।*
*सुगन्धित हमारे मुखों को कर देवे वह,*
*खूब हमारी आयुओं को बढ़ा देवे।। ६।।*

मैं दुष्ट आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने वाले, सर्वत्र व्यापक, बलशाली, समस्त जगत् को धारण करके उसका पालन-पोषण करने वाले उस परमेश्वर का गुणगान करता हूँ। वह हमारे मुखों को सुगन्धित कर देवे। अर्थात् वह जगदीश्वर हमें सच्ची और मीठी वाणी बोलने वाला बना देवे, जिससे हमारी सुगन्ध, हमारा यश, सब ओर फैल जाए। वह हमारी आयुओं को बढ़ाए। हम कर्म करते हुए सौ वर्ष और इससे भी अधिक जीने वाले बनें।

टि. *करता हूँ मैं स्तुति को* - **अकारिषम्।** करोमि घासकण्डूयनादि - वे.। अकारिषं स्तुतिं करवाणि - सा.। I have celebrated the praise - W. so have I glorified - G.

*व्यापक की* - **अश्वस्य।** व्यापकस्य - सा.। सकलशुभगुणव्याप्तस्य - दया.। the steed - W.

*सुगन्धित हमारे मुखों को कर देवे वह* - **सुरभि नः मुखा करत्।** सुरभीणि अस्माकं मुखानि करोतु - वे.। अस्माकं मुखानि चक्षुरादीन्द्रियाणि सुरभीणि करोतु - सा.। सुगन्धादिगुणयुक्तं द्रव्यम् अस्माकं मुखेन सहचरितानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि प्रति कुर्यात् - दया.।

*खूब हमारी आयुओं को बढ़ा देवे* - **प्र नः आयूंषि तारिषत्।** प्रतरतु च अस्मान् आयूंषि - वे.। अस्माकम् आयूंषि प्रवर्धयतु। प्रपूर्वस् तिरतिर् वर्धनार्थः। सा.। दया.।

## सूक्त ४०

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-४ दधिक्राः, ५ सूर्यः। छन्दः - १ त्रिष्टुप्, २-५ जगती। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**दधिक्राव्ण इद् उ नु चर्किराम विश्वा इन् माम् उषसः सूदयन्तु।**
**अपाम् अग्नेर् उषसः सूर्यस्य बृहस्पतेर् आङ्गिरसस्य जिष्णोः॥ १॥**

दधिऽक्राव्णः। इत्। ऊँ इति। नु। चर्किराम। विश्वाः। इत्। माम्। उषसः। सूदयन्तु।
अपाम्। अग्नेः। उषसः। सूर्यस्य। बृहस्पतेः। आङ्गिरसस्य जिष्णोः॥ १॥

*दधिक्राव की ही निश्चय से अब, (स्तुति) करें हम,*
*सभी मुझको उषाएं, मधुर बना देवें।*
*जलों की, अग्नि की, उषा की, सूर्य की,*
*बृहस्पति की, आङ्गिरस की, विजयशील की (स्तुति करें हम)॥ १॥*

हम सदा समस्त जगत् को धारण करके सर्वत्र व्याप्त रहने वाले उस परमेश्वर की ही स्तुति करें। अज्ञान अन्धकार को परे भगाने वाली आरम्भिक ज्ञानरश्मियां मेरे जीवन और मेरी वाणी को माधुर्य से परिपूर्ण कर देवें, जिससे मैं जलों की तरह सर्वव्यापक, अग्नि की तरह प्रकाशमान, उषाओं की तरह अज्ञानान्धकार को परे भगाने वाले, सूर्य के समान जगदाधार, महान् ब्रह्माण्ड के पालक, अत्यधिक तेजस्वी, सबके विजेता उस परमेश्वर की स्तुति सदा करता रहूँ।

टि. *स्तुति करें हम* - **चर्किराम।** पुनः पुनः घासं विकिराम - वे.। चर्किराम स्तुतिं भृशं करवाम - सा.। भृशं विक्षिपेम - दया.। may we repeatedly recite the praise - W. G. we must do the work - Ar.

*मधुर बना देवें* - **सूदयन्तु।** तत्र प्रेरयन्तु - वे.। कर्मसु प्रेरयन्तु - सा.। सूदयन्तु वर्षयन्तु वर्धयन्तु

- दया.। प्रेरणा प्रदान करें - सात.। may excite me - W. may move to exertion - G. may speed on the path - Ar.

*बृहस्पति की* - **बृहस्पतेः**। बृहतां पालकस्य - दया.।

*आङ्गिरस की* - **आङ्गिरसस्य**। अङ्गिरस्सु प्राणेषु भवस्य - दया.। (of Jiṣṇu) the son of Aṅgiras - W. the son of Aṅgiras - G.

*विजयशील की* - **जिष्णोः**। जयशीलस्य - दया.। of Jiṣṇu - W. of Sūrya - G.

**सत्वा भरिषो गविषो दुवन्यसच्छ्रवस्याद् इष उषसस् तुरण्यसत्।**
**सत्यो द्रवो द्रवरः पतङ्गरो दधिक्रावेषम् ऊर्जं स्वर् जनत्॥ २॥**

सत्वा। भरिषः। गोऽइषः। दुवन्यऽसत्। श्रवस्यात्। इषः। उषसः। तुरण्यऽसत्।
सत्यः। द्रवः। द्रवरः। पतङ्गरः। दधिऽक्रावा। इषम्। ऊर्जम्। स्वः। जनत्॥ २॥

*शक्तिशाली, भरणशील, वाणियों का प्रेरक, पूजकों में निवास करने वाला,*
*यश की कामना करे, हवियों की ओर उषाकाल की तुरन्त जाता हुआ।*
*सत्यस्वरूप, गतिशील, गति प्रदान करने वाला, पक्षी के समान उड़ने वाला,*
*दधिक्रावा अन्न को, बल को, सुख को, उत्पन्न करे (हमारे लिये)॥ २॥*

वह समस्त जगत् को धारण करके उसमें सर्वत्र गति करने वाला परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है, सब का भरण-पोषण करने वाला है, हमारी वाणियों को स्तुतियों के लिये प्रेरित करने वाला है और अपने उपासकों में निवास करने वाला है। वह उषाकाल में हमारे यज्ञों में अविलम्ब पधारकर हमारी हवियों को, हमारे समर्पणों को स्वीकार करे और अपने यश तथा कीर्ति का सब ओर प्रसार करे। वह सत्यस्वरूप है, सब स्थानों पर पहुँचा हुआ है, पक्षियों के समान उड़ान भरने वाला है और सबको गति प्रदान करने वाला है। वह हमारे लिये अन्न, बल और सुख प्रदान करता रहे।

टि. *शक्तिशाली* - **सत्वा**। गमनशीलः - वे.। गन्ता - सा.। प्रापकः - दया.। strong, powerful - MW. active - W. brave - G.

*भरणशील* - **भरिषः**। भरणशीलः - वे.। भरणकुशलः - सा.। धारणपोषणचतुरः - दया.।

*वाणियों का प्रेरक* - **गविषः**। गवाम् एष्टा - वे.। गवां प्रेरक एष्टा वा - सा.। गाः इच्छन् - दया.। the giver of cattle - W.

*पूजकों में निवास करने वाला* - **दुवन्यसत्**। परिचरणकुशले सीदन् - वे.। दुवः परिचरणम् इच्छन्तो दुवन्याः, तेषु सीदतीति दुवन्यसत् - सा.। परिचरणम् इच्छन् - दया.। who abides with the devout - W. dwelling with the good - G.

*हवियों की ओर उषाकाल की* - **इषः उषसः**। अन्नस्येष्टा उषसः - वे.। इष इष्यमाणाया उषसः सम्बन्धिनि काल इत्यर्थः। यद्वा। इष एष्टा एषणीयो वा। सा.। इच्छाः, प्रभातान् - दया.। the food of dawn - G.

*गतिशील* - **द्रवः**। द्रवणशीलः - वे.। गन्ता - सा.। स्निग्धः - दया.। moving - W.

*गति प्रदान करने वाला* - **द्रवरः**। द्रवतां वरः - वे.। प्रकृष्टवेगवान् - सा.। यो द्रवे रमते द्रवान्

ददाति वा – दया.। rapid - W. the lover of the course - G.

*पक्षी के समान उड़ने वाला* – **पतङ्गरः**। पतन् गमनवान् क्षिप्रगामी – वे.। पतनेनोत्प्लवनेन पतनं पतङ्गः। तद्वान् पतङ्गरः। सा.। यः पतङ्गे ऽग्नौ रमते पतङ्गं ददाति वा – दया.। leaping like a grass-hopper - W. the bird-like - G.

**उ॒त स्मा॑स्य॒ द्रव॑तस् तुरण्य॒तः प॒र्णं न वेर् अनु॑ वाति प्रग॒र्धिनः॑।**
**श्ये॒नस्ये॑व॒ ध्रज॑तो अङ्क॒सं परि॑ दधि॒क्राव्णः॑ स॒होर्जा तरि॑त्रतः॥ ३॥**

उ॒त। स्म॒। अ॒स्य॒। द्रव॑तः। तु॒रण्य॒तः। प॒र्णम्। न। वेः। अनु॑। वा॒ति॒। प्र॒ऽग॒र्धिनः॑।
श्ये॒नस्य॑ऽइव। ध्रज॑तः। अ॒ङ्क॒सम्। परि॑। द॒धि॒ऽक्राव्णः॑। स॒ह। ऊ॒र्जा। तरि॑त्रतः॥ ३॥

*और निश्चय से इसके दौड़ते हुए के, भागते हुए के,*
*पंख की तरह पक्षी के, पीछे गमन करते हैं, तीव्र कामनाओं वाले।*
*श्येन की तरह गति करने वाले के, वक्षःस्थल की सब ओर, (परों की तरह),*
*(जन साथ हो जाते हैं) दधिक्रावा के, साथ बल के, तराने वाले के॥ ३॥*

समस्त जगत् को धारण करके सर्वत्र गति करने वाला वह परमेश्वर तीव्र गति वाला है। वह वायु और मन से भी तीव्रतर गति वाला है। अभ्युदय और निःश्रेयस की उत्कट कामनाओं वाले मनुष्य तीव्र गति वाले उस जगदीश्वर के पीछे उसे पाने के लिये इस प्रकार दौड़ते हैं, जिस प्रकार तीव्र गति से उड़ते हुए पक्षी के पंख उसके पीछे-पीछे दौड़ते हैं। जिस प्रकार तेज गति से दौड़ते हुए श्येन पक्षी के पंख उसकी छाती के दोनों ओर सट जाते हैं, उसी प्रकार उसे पाने की इच्छा वाले उपासक अपनी पूर्ण शक्ति के साथ पार उतारने वाले उस प्रभु के साथ जुड़ जाते हैं।

टि. *पीछे गमन करते हैं* – **अनु वाति**। वचनव्यत्ययः॥ अनु गच्छति – वे.। गमनं पत्रं वानुसृत्य यथा वान्त्यन्ये पक्षिणस् तद्वत् – सा.। अनु गच्छति – दया.। (men) follow (as other birds pursue) - W. fans him - G.

*तीव्र कामनाओं वाले* – **प्रगर्धिनः**। अत्यन्तम् अभिकाङ्क्षमाणस्य – वे.। प्रकर्षेण अभिकाङ्क्षतः – सा.। प्रलुब्धस्य – दया.। eager (to arrive at his goal) - W.

*वक्षःस्थल की सब ओर* – **अङ्कसम् परि**। अङ्कसम् उभयपार्श्वस्थं कक्ष्यादिकम् – वे.। अङ्कसं पादाधारम् उरःप्रदेशं वा परि परितः – सा.। लक्षणं सर्वतः – दया.। to keep up by the side of - W. strikes Dadhikrāvan's side - G.

*साथ बल के* – **सह ऊर्जा**। सह बलेन – वे.। ऊर्जा बलेन निमित्तेन अन्नार्थं वा सहैकीभूय – सा.। सह पराक्रमेण – दया.। striving together - W. with might - G.

*तराने वाले के* – **तरित्रतः**। तरतः – वे.। तारयतो ऽन्यान्। अन्तर्भावितण्यर्थो ऽयम्। सा.। तरित्रतः अध्वनस् तरिता – दया.। the transporter (of others) - W.

**उ॒त स्य वा॒जी क्षि॒प॒णिं तु॒रण्यति ग्री॒वायां॑ ब॒द्धो अ॑पिक॒क्ष आ॒सनि॑।**
**क्रतु॑ं दधि॒क्रा अनु॑ सं॒तवी॑त्वत् प॒थाम् अङ्का॒ंस्यन्वा॒पनी॑फणत्॥ ४॥**

उ॒त। स्यः। वा॒जी। क्षि॒प॒णिम्। तु॒रण्य॒ति॒। ग्री॒वाया॑म्। ब॒द्धः। अ॒पि॒ऽक॒क्षे। आ॒सनि॑।

क्रतुम्। दुधिऽक्राः। अनु। सम्ऽतवीत्वत्। पथाम्। अङ्कांसि। अनु। आऽपनीफणत्।। ४।।

*और वह बलशाली, चाबुक को (देखकर), तेजी से चलता है,*
*गर्दन में बँधा हुआ, कांखों में, मुँह में (बँधा हुआ)।*
*कर्म के, दधिक्रा, अनुसार, बल को बढ़ाता हुआ (अपने),*
*मार्गों के मोड़ों का अनुसरण करता हुआ, गमन करता है।। ४।।*

सारे जगत् को धारण करके इसका संचालन करने वाला वह परमेश्वर अपनी न्यायव्यवस्था को दृष्टि में रखते हुए अपने कर्तव्यों का शीघ्रता से पालन कर रहा है। जिस प्रकार कोई अश्व गर्दन, कांखों और मुँह में लगाम आदि से बँधा होता है, उसी प्रकार वह परमेश्वर स्वयं अपने नियमों के बन्धनों में बँधा हुआ है। वह अपने कर्म और प्रज्ञा के अनुसार अपने बल को बढ़ाता हुआ अपने मार्गों के मोड़ों अर्थात् कठिनाइयों को पार करता हुआ गमन करता है।

टि. *चाबुक को (देखकर) तेजी से चलता है* – **क्षिपणिम् तुरण्यति**। क्षेपणम् अनु तूर्णम् अश्नुते अध्वानम् – वे.। क्षेपणम् अनु त्वरयति गन्तुम् – सा.। शीघ्रकारिणं सद्यो गमयति – दया.। accelerates his paces - W. carries his impeller beyond - Ar.

*कांखों में* – **अपिकक्षे**। अंसयोः – वे.। कक्षप्रदेशे – सा.। पार्श्वे – दया.। by his flanks - W.

*बल को बढ़ाता हुआ* – **संतवीत्वत्**। सन्तन्वन् – वे.। प्रवृद्धबलवान् सन् – सा.। बहुबलः सन् – दया.। increasing in vigour - W. as his strength allows - G.

*मोड़ों का अनुसरण करता हुआ* – **अङ्कांसि अनु**। कुटिलानि अनु – वे.। अङ्कांसि कुटिलानि अनुसृत्य – सा.। लक्षणानि चिह्नानि अनु – दया.। following the windings - W. G.

*गमन करता है* – **आपनीफणत्**। गच्छति। गतिकर्मसु पठितः फणिः। वे.। सर्वतो भृशं गच्छति – सा.। अत्यन्तं गच्छति – दया.। goes still more rapidly - W. springs - G.

**हंसः शुचिषद् वसुर् अन्तरिक्षसद् धोता वेदिषद् अतिथिर् दुरोणसत्।**
**नृषद् वरसद् ऋतसद् व्योमसद् अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्।। ५।। १४।।**

हंसः। शुचिऽसत्। वसुः। अन्तरिक्षऽसत्। होता। वेदिऽसत्। अतिथिः। दुरोणऽसत्।
नृऽसत्। वरऽसत्। ऋतऽसत्। व्योमऽसत्। अप्ऽजाः। गोऽजाः। ऋतऽजाः। अद्रिऽजाः। ऋतम्।। ५।।

*गमनशील, प्रकाशलोक का वासी, बसाने वाला, अन्तरिक्षलोक का वासी,*
*होता, पृथिवी का वासी, अतिथि, घरों में निवास करने वाला।*
*नरों में बसने वाला, वरणीयों में बसने वाला, ऋत का वासी, आकाश का वासी,*
*जलों से प्रादुर्भूत, रश्मियों में प्रकट, ऋत से उत्पन्न, पर्वतों में प्रकट, ऋतभूत।। ५।।*

वह परमेश्वर अथवा परब्रह्म सर्वत्र गति करने वाला अर्थात् सर्वव्यापक है। वह प्रकाशलोक अर्थात् द्युलोक में आदित्य अथवा प्रकाश के रूप में निवास करता है। वह सबको बसाने वाले वायु के रूप में अन्तरिक्षलोक में निवास करता है। वह होता अग्नि के रूप में इस पृथिवी रूपी वेदि में निवास करता है। वह सदुपदेश के निमित्त भ्रमण करने वाले अतिथि के रूप में गृहस्थों के घरों में वास करता है। वह मनुष्यों में चैतन्यरूप से निवास करता है। वह वरण के योग्य देवों और विद्वानों

में निवास करता है। वह सत्यनियम में वास करता है, अर्थात् सत्यनियम का पालन करने वाला है। वह व्योम में वास करने वाला है। वह हिरण्यगर्भ और वडवानल के रूप में जलों से प्रादुर्भूत होता है। उसके दर्शन हमें सूर्य की रश्मियों में होते हैं। उसके दर्शन हमें जगत् का संचालन करने वाले शाश्वत नियमों में होते हैं। रमणीय पर्वतशिखरों और रिमझिम बरसते मेघों में हमें उसके दर्शन होते हैं। वह स्वयं ऋत को उत्पन्न करने वाला और ऋतस्वरूप है। वही उपासना के योग्य है।

टि. *गमनशील* - **हंसः**। सूर्यः - वे.। हन्तिर् गत्यर्थः। सर्वत्र सर्वदा गन्ता यो ऽहं सो ऽसाव् इत्यादिश्रुत्युक्तप्रकारेणैकीकृत्योपास्यः परमात्ममन्त्रप्रतिपाद्य आदित्यः। सा.। यो हन्ति पापानि सः - दया.। Hansa (the sun) - W.

*प्रकाशलोक का वासी* - **शुचिषत्**। शुचौ दीप्ते द्युलोके सीदतीति शुचिसत् - सा.। यः शुचिषु पवित्रेषु सीदति - दया.। dwelling in light - W. homed in light - G. dwells in purity - Ar.

*बसाने वाला* - **वसुः**। वायुः - वे.। सर्वस्य वासयिता वायुः - सा.। यः शरीरादिषु वसति - दया.। वसुः वासयति सर्वान् इति - शङ्कर. (कठ. ५.२)। the lord of substance - Ar.

*पृथिवी का वासी* - **वेदिषत्**। वेद्यां गार्हपत्यादिरूपेण स्थितः - सा.। वेद्यां पृथिव्यां सीदतीति वेदिषत् - शङ्कर. (तत्रैव)।

*अतिथि, घरों में निवास करने वाला* - **अतिथिः दुरोणसत्**। अतिथिर् अतिथिवत् सर्वदा पूज्यो ऽग्निः। दुरोणसत्। दुरोणं गृहनाम। तत्र पाकादिसाधनत्वेन स्थितः। सा.। अतिथिः सोमः सन् दुरोणे कलशे सीदतीति दुरोणसत्। ब्राह्मणो ऽतिथिरूपेण वा दुरोणेषु गृहेषु सीदतीति। शङ्कर. (तत्रैव)।

*वरणीयों में बसने वाला* - **वरसत्**। वरे वरणीये मण्डले सीदतीति वरसद् आदित्यः। वरं वा एतत् सद्मनां यस्मिन्नेष आसन्नस् तपतीति हि श्रूयते। सा.। वरेषु देवेषु सीदतीति - शङ्कर. (तत्रैव)।

*जलों में प्रादुर्भूत* - **अब्जाः**। उदकेषु जातः। यद्वा। उदकेषु वैद्युतरूपेण वा वाडवरूपेण वा जातः। सा.। अप्सु शङ्खशुक्तिमकरादिरूपेण जायत इति - शङ्कर. (तत्रैव)।

*रश्मियों में प्रकट* - **गोजाः**। गोषु रश्मिषु जातः - सा.। गवि पृथिव्यां व्रीहियवादिरूपेण जायत इति - शङ्कर. (तत्रैव)

*पर्वतों में प्रकट* - **अद्रिजाः**। अद्राव् उदयाचले जातः - सा.। पर्वतेभ्यो नद्यादिरूपेण जायत इति - शङ्कर. (तत्रैव)।

*ऋतभूत* - **ऋतम्**। सत्यम् - सा.। He is holy Law - G. He is the law of the truth - Ar.

## सूक्त ४१

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रावरुणौ। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**इन्द्रा को वां वरुणा सुम्नम् आप स्तोमो हविष्माँ अमृतो न होता।**
**यो वां हृदि क्रतुमाँ अस्मद् उक्तः पस्पर्शद् इन्द्रावरुणा नमस्वान्॥ १॥**

इन्द्रा। कः। वाम्। वरुणा। सुम्नम्। आप। स्तोमः। हविष्मान्। अमृतः। न। होता।
यः। वाम्। हृदि। क्रतुऽमान्। अस्मत्। उक्तः। पस्पर्शत्। इन्द्रावरुणा। नमस्वान्॥ १॥

*हे इन्द्र! कौन सा, तुम्हारे, और वरुण!, सौमनस्य को, प्राप्त करता है,*
*स्तोत्र, हवियों वाले की, अमरणधर्मा की तरह, होता की।*
*जो तुम्हारे हृदय को, प्रज्ञा से युक्त, हमारे पास से कहा हुआ,*
*स्पर्श करता है, हे इन्द्र और वरुण!, नमस्कार से युक्त।। १।।*

इन्द्र परमेश्वर की वह शक्ति है, जो इस जगत् को उत्पन्न करती है (इन्द्र इदंकरणात्)। वरुण परमेश्वर की वह शक्ति है, जो इस जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करती है (वरुणो वृणोतीति सतः)। इस मन्त्र में प्रश्न किया जा रहा है, कि हे जगत् को उत्पन्न करने वाली और रक्षा करने वाली इन्द्र और वरुण नामों से पुकारी जाने वाली परमेश्वर की शक्तियो! हमारे द्वारा उच्चारण किया जाने वाला, तुम्हारे कर्म और प्रज्ञा की प्रशंसा करने वाला, नमस्कार से युक्त तुम्हारा वह कौन सा स्तुतिगान है, जो तुम्हारे हृदय को छू लेता है और इस प्रकार हमारे लिये तुम्हारी प्रसन्नता, कृपा और दया को उसी प्रकार अर्जित कर लेता है, जिस प्रकार तुम्हें हवियां प्रदान करने वाला, अमरणधर्मा अग्नि तुम्हारी प्रसन्नता, दया एवं कृपा को प्राप्त कर लेता है।

टि. हे इन्द्र *और वरुण* – **इन्द्रा वरुणा।** हे इन्द्रावरुणौ – वे.। परस्परापेक्षया द्विवचनम् – सा.। Indra (and Varuṇa), Varuṇa (and Indra) - W. O Indra-Varuṇa - G.

*सौमनस्य को* – **सुम्नम्।** सुखम् – वे.। सा.। दया.। felicity -W. favour - G.

*हवियों वाले की* – **हविष्मान्।** हविषा युक्तः – वे.। हविर्भिर् उपेतः सोमाज्यादिप्रदेयद्रव्योपेतं (स्तोत्रम्)। यद्वा। हविष्मान् इत्येतद् उत्तरत्र योज्यम्। हविष्मान् हविर्युक्तः (अग्निः)। सा.।

*अमरणधर्मा की तरह होता की* – **अमृतः न होता।** अमृतः दैव्यः इव होता अग्निः – वे.। अमरलक्षणो अग्निर् इव – सा.।

*प्रज्ञा से युक्त* – **क्रतुमान्।** कर्मवान् – वे.। प्रज्ञोपेतः – सा.। बहुशुभप्रज्ञः – दया.। sanctified by acts - W. effectual - G.

*हृदय को स्पर्श करता है* – **हृदि पस्पर्शत्।** हृदयं स्पृशति – वे.। हृदये स्पृशेत्। हृदयंगमो भवेत्। सा.। may touch your heart - W. hath touched you in spirit - G.

**इन्द्रा॑ ह॒ यो वरु॑णा च॒क्र आ॒पी दे॒वौ मर्तः॑ स॒ख्याय॒ प्रय॑स्वान्।**
**स ह॑न्ति वृ॒त्रा स॑मि॒थेषु॒ शत्रू॒न् अवो॑भिर् वा म॒हद्भिः॒ स प्र शृ॑ण्वे।। २।।**

इन्द्रा॑। ह॒। यः। वरु॑णा। च॒क्रे। आ॒पी इति॑। दे॒वौ। मर्तः॑। स॒ख्याय॑। प्रय॑स्वान्।
सः। ह॒न्ति॒। वृ॒त्रा। स॒म्ऽइ॒थेषु॑। शत्रू॑न्। अवः॑ऽभिः। वा॒। म॒हत्ऽभिः॑। सः। प्र। शृ॒ण्वे॒।। २।।

इन्द्र को निश्चय से, जो, वरुण को, बना लेता है बन्धु,
देवों को, मरणधर्मा, मित्रता के लिये, हवि के अन्न वाला।
वह मार भगाता है आवरक पापों को, संग्रामों में, शत्रुओं को,
समृद्धियों से भी महानों से, वह प्रकर्ष से सुना जाता है।। २।।

देवों को अपनी हवियों से तृप्त और प्रसन्न करने वाला जो मनुष्य परमेश्वर की जगदुत्पादक और संरक्षक दिव्य शक्तियों को मित्रता के लिये अपना बन्धु बना लेता है, वह अपने पापों को और जीवन

के संघर्षों में चोर, डाकू आदि बाह्य तथा काम, क्रोध, लोभ आदि आन्तरिक शत्रुओं को नष्ट कर डालता है। और वह महान् समृद्धियों, संरक्षण आदिकों को प्राप्त करके उत्कृष्ट प्रसिद्धि और यश को पा लेता है।

टि. बन्धु - **आपी**। बन्धू - वे.। सा.। सकलविद्यां प्राप्तौ - दया.। kinsmen - W. allies - G.

*हवि के अन्न वाला* - **प्रयस्वान्**। प्रय इति प्रीङ् प्रीताव् इत्यस्माद् धातोर् असुन्प्रत्ययान्तं रूपम्।। अन्नवान् - वे.। हविर्लक्षणान्नवान् सन् - सा.। प्रयत्नवान् - दया.। diligent in offering sacrificial food - W. with dainty food - G.

*आवरक पापों को* - **वृत्रा**। उपद्रवाणि - वे.। आवरकाणि पापानि - सा.। वृत्राणि शत्रुसैन्यानि - दया.। sins - W. Vṛtras - G.

*समृद्धियों से* - **अवोभिः**। अन्नैः - वे.। रक्षणैः - सा.। रक्षणादिभिः - दया.। by your favours - W. through your favours - G.

*और* - **वा**। च - वे.। वाशब्दश् चार्थे - सा.। and - W. G.

*प्रकर्ष से सुना जाता है* - **प्र शृण्वे**। प्र श्रूयते - वे.। विख्यातो भवति - सा.। becoms renowned - W. is made famous - G.

**इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्ठेत्था नृभ्यः शशमानेभ्यस् ता।**
**यदी सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसा मादयैते।। ३।।**

इन्द्रा। ह। रत्नम्। वरुणा। धेष्ठा। इत्था। नृऽभ्यः। शशमानेभ्यः। ता।
यदि। सखाया। सख्याय। सोमैः। सुतेभिः। सुऽप्रयसा। मादयैते इति।। ३।।

*इन्द्र, निश्चय से रमणीय धन के, और वरुण, अतिशय दाता हैं,*
*सचमुच, मनुष्यों के लिये, प्रशंसा करने वालों के लिये, वे दोनों।*
*जब दोनों मित्र, मित्रता के लिये, सोमों से,*
*सवन किये हुओं से, प्रीतिदायक अन्नों वाले, प्रसन्न होते हैं।। ३।।*

जगत् को उत्पन्न करने वाली और उसकी रक्षा करने वाली इन्द्र और वरुण नामक ये दोनों ईश्वरीय शक्तियां, यदि उत्तम प्रीतिदायक अन्न देने वाली होकर और मित्र बनकर मित्रता के नाते तैयार किये हुए भक्तिरस रूपी सोमों के समर्पण से प्रसन्न हो जाएं, तो परमेश्वर की स्तुति करने वाले मनुष्यों को रमणीय ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो जाती हैं।

टि. *अतिशय दाता हैं* - **धेष्ठा**। अतिशयेन दातारौ - वे.। दातृतमौ भवत इति शेषः। सा.। धातारौ - दया.। most liberal givers - W. G.

*रमणीय धन के* - **रत्नम्**। रमणीयं धनम् - सा.। दया.। of treasure - G.

*प्रशंसा करने वालों के लिये* - **शशमानेभ्यः**। भजमानेभ्यः - वे.। शंसमानेभ्यः स्तोतृभ्यो ऽस्मभ्यम् - सा.। दया.। to men praising you - W. who toil to serve them - G.

*प्रीतिदायक अन्नों वाले* - **सुप्रयसा**। शोभनसोमान्नवन्तौ - सा.। सुष्ठु प्रयत्नेन - दया.। well-plied with (sacrificial) food - W. honoured with dainty food - G.

*यदि प्रसन्न हो जाएं* - **यदि मादयैते।** यदि माद्येताम् - सा.। यदीत्यत्र निपातस्य चेति दीर्घः, मादयैते सुखयेताम् - दया.।

**इन्द्रा॑ यु॒वं व॑रुणा दि॒द्युम् अ॑स्मि॒न्नोजि॑ष्ठम् उग्रा॒ नि व॑धिष्टं॒ वज्र॑म्।**
**यो नो॑ दु॒रेवो॑ वृ॒कति॑र् द॒भीति॒स् तस्मि॑न् मिमाथाम् अ॒भिभू॒त्योज॑ः।। ४।।**

इन्द्रा॑। यु॒वम्। व॒रु॒णा॒। दि॒द्युम्। अ॒स्मि॒न्। ओजि॑ष्ठम्। उ॒ग्रा॒। नि। व॒धि॒ष्ट॒म्। वज्र॑म्।
यः। न॒ः। दु॒ःऽएव॑ः। वृ॒कति॑ः। द॒भीति॑ः। तस्मि॑न्। मि॒मा॒था॒म्। अ॒भिऽभू॑ति। ओज॑ः।। ४।।

*हे इन्द्र!, तुम दोनों, हे वरुण!, दीप्तिमान् का, इसपर,*
*ओज वाले का, हे तेजस्वियो!, नितरां प्रहार करो वज्र का।*
*जो हमारे लिये दुर्जेय है, चीर-फाड़ डालने वाला, हिंसक,*
*उसपर मापो तुम दोनों, अभिभावुक बल को (अपने)।। ४।।*

हे जगत् को उत्पन्न करने वाली और उसकी रक्षा करने वाली, दुष्टों के लिये उग्र रूप धारण करने वाली, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो!, जो मनुष्य चीर-फाड़ करने वाले भेड़िये के स्वभाव वाला, दूसरों को दबाकर उनकी हिंसा करने वाला और हम सज्जनों के द्वारा कठिनता से वश में किया जा सकने वाला है, उसपर तुम अपनी पारदर्शी और कठोर दण्डव्यवस्था का प्रहार करो। उसको अभिभूत करने वाले अपने ओज से माप डालो अर्थात् उसे अपने बल से नष्ट कर डालो।

टि. *हे इन्द्र, हे वरुण* - **इन्द्रा वरुणा।** अत्र सर्वत्र परस्परापेक्षया द्विवचनम्। यद्वा। छान्दसत्वाद् व्यवहितस्याप्यानङ्। सा.।

*दीप्तिमान् का* - **दिद्युम्।** द्योतमानम् - वे.। दीप्तम् - सा.। विद्यान्यायप्रकाशम् - दया.। who is difficult to be resisted - W. flashing - G.

*नितरां प्रहार करो* - **नि वधिष्टम्।** नि पातयतम् - वे.। वधार्थं प्रेरयतम् - सा.। नि हन्यातम् - दया.। you hurled - W. G.

*दुर्जेय* - **दुरेवः।** दुष्टागमनः - वे.। दुष्प्रापः - सा.। दया.। who treats us ill - G.

*चीर-फाड़ डालने वाला* - **वृकतिः।** स्तेनः - वे.। अतिशयेनादाता - सा.। वृकवच्छत्रुहिंसकः - दया.। rapacious - W. robber - G.

*उसपर मापो तुम दोनों* - **तस्मिन् मिमाथाम्।** तस्मिन् कुरुतम् - वे.। सा.। तस्मिन् रचयेतम् - दया.। grant us (strength) - W. measure on him - G.

**इन्द्रा॑ यु॒वं व॑रुणा भू॒तम् अ॒स्या धि॒यः प्रे॒तारा॑ वृष॒भेव॑ धे॒नोः।**
**सा नो॑ दुहीय॒द् यव॑सेव ग॒त्वी स॒हस्र॑धारा॒ पय॑सा म॒ही गौः।। ५।। १५।।**

इन्द्रा॑। यु॒वम्। व॒रु॒णा॒। भू॒तम्। अ॒स्याः। धि॒यः। प्रे॒तारा॑। वृ॒ष॒भाऽइ॑व। धे॒नोः।
सा। न॒ः। दु॒ही॒य॒त्। यव॑साऽइव। ग॒त्वी। स॒हस्र॑ऽधारा। पय॑सा। म॒ही। गौः।। ५।।

*हे इन्द्र!, तुम दोनों, हे वरुण!, हो जाओ इससे,*
*स्तुति से, प्रेम करने वाले, दो वृषभ जिस प्रकार धेनु से।*
*वह हमारे लिये दुहे, घासों को जैसे प्राप्त करके,*

*सहस्र धाराओं वाली, दूध से, महान् गौ।। ५।।*

हे जगत् को उत्पन्न करने वाली और इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जिस प्रकार वृषभ गौ को प्यार करते हैं, उसी प्रकार तुम दोनों हमारी इस स्तुति से प्यार करने वाले हो जाओ। यह स्तुति हमारे लिये कामनाओं का इस प्रकार दोहन करे, जिस प्रकार चारे से तृप्त होकर प्रभूत दूध देने वाली महान् गौ स्वामी को दूध से परिपूर्ण कर देती है। अथवा असंख्य नदों और नदियों वाली महान् पृथिवी जलों से तृप्त होकर प्रजाओं को जलों से परिपूर्ण कर देती है।

टि. *हो जाओ* - **भूतम्**। भवतम् - वे.। सा.। अतीतम् - दया.।

*स्तुति से प्रेम करने वाले* - **धियः प्रेतारा**। कर्मणः प्रीणयितारौ - वे.। स्तुत्याः प्रेतारा प्रीणयितारौ - सा.। प्रज्ञायाः प्राप्तारौ - दया.। exciters of our praise - W. be ye the lovers of song - G.

*दुहे* - **दुहीयत्**। दुग्धाम् - वे.। दुह्येत् - सा.। प्रपूरयेत् - दया.। milk may it yield - G.

*घासों को जैसे प्राप्त करके* - **यवसेव गत्वी**। यथा यवसानि गत्वा - वे.। तृणादिघासेन निमित्तेन गत्वा - सा.। बुसादिनेव गत्वा प्राप्य - दया.। that has gone forth to pasture - W. G.

*सहस्र धाराओं वाली* - **सहस्रधारा**। whose thousand chanels - W.

**तो॒के हि॒ते तन॑य उ॒र्वरा॑सु॒ सूरो॒ दृशी॑के॒ वृष॑णश् च॒ पौंस्ये॑।**
**इन्द्रा॑ नो॒ अत्र॒ वरु॑णा स्याता॒म् अवो॑भिर् द॒स्मा परि॑तक्म्यायाम्।। ६।।**

तो॒के। हि॒ते। तन॑ये। उ॒र्वरा॑सु। सूरः॑। दृशी॑के। वृष॑णः। च॒। पौंस्ये॑।
इन्द्रा॑। नः॒। अत्र॑। वरु॑णा। स्या॒ता॒म्। अवः॑ऽभिः। द॒स्मा। परि॑ऽतक्म्यायाम्।। ६।।

*पुत्र के निमित्त, मित्र के निमित्त, पौत्र के निमित्त, उर्वरा भूमियों के निमित्त,*
*सूर्य के दर्शन के निमित्त (चिर तक), वीर्यसेचक युवा के भी पौरुष के निमित्त।*
*इन्द्र, हमारे लिये यहां, और वरुण हो जाएं,*
*समृद्धियों के साथ, शत्रुओं के विनाशक, रात्रि में (इसमें)।। ६।।*

जगत् को उत्पन्न करने वाली और उसकी रक्षा करने वाली, शत्रुओं का विनाश करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियां सूर्य के दर्शन के लिये अर्थात् हमारे दीर्घ काल तक जीने के लिये जीवन की इस अन्धेरी रात में हमें अपने पुत्रों, पौत्रों, मित्रों, उपजाऊ भूमियों और वीर्यसेचक वीर सन्तानों के निमित्त समृद्धियों, संरक्षणों आदि को सदा प्रदान करने वाली होवें।

टि. *मित्र के निमित्त* - **हिते**। सुहृदि - वे.। हितसाधके - दया.। (that we may have) good (sons) - W. for worthy (sons and grandsons) - G.

*उर्वरा भूमियों के निमित्त* - **उर्वरासु**। क्षेत्रेषु - वे.। सस्याढ्यासु भूमिषु निमित्तभूतासु - सा.। भूमिषु - दया.। fertile lands - W. G.

*सूर्य के दर्शन के निमित्त* - **सूरः दृशीके**। सूर्यस्य दर्शने - वे.। सूर्यस्य दृशीके चिरकालदर्शनाय। चिरजीवनायेत्यर्थः। सा.। सूर्यः द्रष्टव्ये - दया.। long life - W. for the sun's beauty - G.

*शत्रुओं के विनाशक* - **दस्मा**। दर्शनीयौ - वे.। शत्रूणां हिंसकौ सन्तौ - सा.। दुःखोपक्षयितारौ - दया.। the overthrowers (of foes) - W.

*रात्रि में* – **परितक्म्यायाम्**। परितक्म्या रात्रिः। परित एनां तक्म। तक्मेत्युष्णनाम। तकत इति सतः। या. (नि. ११.२५)। रात्राव् अन्धकारे च – वे.। परितकने निमित्तभूते सति। यद्वा। रात्रिनामैतत्। रात्रौ हिंसकानां वधाय। सा.। परितस् तक्मान् अश्वो यस्यां तस्याम् – दया.। around us - W. in the stress of battle - G.

**युवाम् इद् ध्यवसे पूर्व्याय परि प्रभूती गविषः स्वापी।**
**वृणीमहे सख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरेव शंभू।। ७।।**

युवाम्। इत्। हि। अवसे। पूर्व्याय। परि। प्रभूती इति प्रऽभूती। गोऽइषः। स्वापी इति सुऽआपी।
वृणीमहे। सख्याय। प्रियाय। शूरा। मंहिष्ठा। पितराऽइव। शंभू इति शम्ऽभू।। ७।।

*तुम दोनों का ही, निश्चय से वृद्धि के लिये, पुरातन के लिये,*
*सर्वतः, शक्तिशालियों का, गौओं की कामना वाले, उत्तम बन्धुओं का।*
*वरण करते हैं हम, मैत्री के लिये प्यारी के लिये,*
*शूरों का, अतिशय पूज्यों का, माता-पिता की तरह सुखकारियों की।। ७।।*

टि. *वृद्धि के लिये* – **अवसे**। रक्षणाय – वे.। सा.। दया.। for kindness - G.

*शक्तिशालियों का* – **प्रभूती**। प्रकृष्टभूतिकौ – वे.। प्रभवन्तौ – सा.। समर्थौ – दया.। who are powerful - W.

*गौओं की कामना वाले* – **गविषः**। गाः इच्छन्तः – वे.। सा.। गवाम् इच्छोः – दया.। desirous of (possessing) cattle - W. of the man who seeks for booty - G.

*उत्तम बन्धुओं का* – **स्वापी**। शोभनबन्धू – वे.। शोभनबन्धुभूतौ – सा.। शयानौ – दया.। kind as (kinsmen) - W. comrades - G.

*अतिशय पूज्यों का* – **मंहिष्ठा**। दातृतमौ – वे.। अतिशयेन पूज्यौ – सा.। दया.। adorable - W. most liberal - G.

*सुखकारियों की (तरह)* – **शंभू**। सुखस्य भावयितारौ – वे.। सा.। दया.। bringing bliss - G.

**ता वां धियो ऽवसे वाजयन्तीर् आजिं न जग्मुर् युवयूः सुदानू।**
**श्रिये न गाव उप सोमम् अस्थुर् इन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः।। ८।।**

ताः। वाम्। धियः। अवसे। वाजऽयन्तीः। आजिम्। न। जग्मुः। युवऽयूः। सुदानू इति सुऽदानू।
श्रिये। न। गावः। उप। सोमम्। अस्थुः। इन्द्रम्। गिरः। वरुणम्। मे। मनीषाः।। ८।।

*वे तुम्हें (प्राप्त होती हैं) स्तुतियां, वृद्धि के लिये, ऐश्वर्यों को चाहने वाली,*
*संग्राम में जिस प्रकार जाते हैं, तुम्हें चाहने वाले, हे शोभन दाताओ।*
*मिश्रण के लिये जिस प्रकार गोविकार, पास सोम के पहुँचते हैं,*
*इन्द्र के पास स्तुतियां वरुण के पास मेरी, मनःकामनाएं, (पहुँचती हैं उसी प्रकार)।। ८।।*

हे शोभन दान वाली जगदुत्पादक और जगद्रक्षक ईश्वरीय शक्तियो! ऐश्वर्यों की कामना वाली वे हमारी स्तुतियां तुम्हारी वृद्धि के लिये उसी प्रकार तुम्हारे पास पहुँचती हैं, जिस प्रकार तुम्हें चाहने वाले उपासक जन दैवी और आसुरी शक्तियों के संघर्षों में अपने कर्तव्य के पालन के लिये पहुँचते

हैं। सोम की शोभा को बढ़ाने, उसको स्वादुतर बनाने के लिये दूध, दही आदि गोविकार जिस प्रकार सोम के पास पहुँचते हैं, उसमें मिलाए जाते हैं, उसी प्रकार मुझ उपासक की स्तुतियां और मनःकामनाएं परमेश्वर की उक्त शक्तियों के पास उनकी महिमा को बढ़ाने के लिये जाती हैं।

टि. *स्तुतियां* - **धियः**। कर्माणि - वे.। स्तुतयः - सा.। प्रज्ञाः कर्माणि वा - दया.। (our) praises - W. thoughts - G.

*ऐश्वर्यों को चाहने वाली* - **वाजयन्तीः**। अन्नम् इच्छन्ति - वे.। रत्नम् इच्छन्त्यः - सा.। soliciting (abundant) food - W. showing their strength - G.

*तुम्हें चाहने वाले* - **युवयूः**। युष्मत्कामानि - वे.। युवां कामयमानाः पदातयः - सा.। युवां कामयमानाः - दया.। longing for you - W. devoted - G.

*मिश्रण के लिये* - **श्रिये**। दध्यादिश्रयणाय - सा.। धनाय - दया.। for (its) advantage - W. for glory - G.

*गोविकार* - **गावः**। गोविकाराः। विकारे प्रकृतिशब्दः।। पृथिव्यो धेनवो वा - दया.। cattle - W. milk - G.

*मनःकामनाएं* - **मनीषाः**। मनस ईश्वरा गिरः स्तुतयः - सा.। प्रज्ञाः - दया.। heartfelt hymns - W. thoughts - G.

**इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अग्मन्नुप द्रविणम् इच्छमानाः।**
**उपेम् अस्थुर् जोष्टार इव वस्वो रघ्वीर् इव श्रवसो भिक्षमाणाः।। ९।।**

इमाः। इन्द्रम्। वरुणम्। मे। मनीषाः। अग्मन्। उप। द्रविणम्। इच्छमानाः।
उप। ईम्। अस्थुः। जोष्टारःऽइव। वस्वः। रघ्वीःऽईव। श्रवसः। भिक्षमाणाः।। ९।।

*ये इन्द्र के पास, वरुण के पास, मेरी मनःकामनाएं,*
*गमन करती हैं निकट में, धन की इच्छा करती हुई।*
*निकट में इन दोनों के स्थित होती हैं, धनप्रेमी जैसे धनों के,*
*तीव्रगामिनी (सेनाएं) जिस प्रकार, यश की कामना करती हुई।।*

मेरी मनःकामनाएं लौकिक और अलौकिक धनों, अर्थात् अभ्युदय और निःश्रेयस की कामना करती हुई जगदुत्पादक और जगद्रक्षक शक्तियों के स्वामी परमेश्वर के पास इस प्रकार पहुँचती हैं, जिस प्रकार धनप्रेमी धन की कामना से धनों के पास जाते हैं और जिस प्रकार तीव्र गति वाली सेनाएं यश की कामना से युद्धक्षेत्रों में पहुँचती हैं।

टि. *निकट में इन दोनों के* - उप ईम्। उप (अस्थुः) एनौ - वे.। nigh to you - G.

*धनप्रेमी जैसे धनों के* - **जोष्टारः इव वस्वः**। धनस्य जोष्टार इव - वे.। जोष्टारः सेवका वस्वो धनस्य लाभाय धनिकं स्वामिनम् इव - सा.। सेवमाना इव धनस्य - दया.। as dependants attend (upon an opulent man) for the sake of riches - W. desirous of gaining wealth - G.

*तीव्रगामी (सेनाएं) जिस प्रकार यश की कामना करती हुई* - **रघ्वीर् इव श्रवसः भिक्षमाणाः**। आढ्यं गन्त्यः इव च प्रजाः अन्नम् भिक्षमाणाः - वे.। लघ्व्य इव शीघ्रगामिन्य इव श्रवसो ऽन्नस्य अन्नं

भिक्षमाणाः - सा.। लघ्व्यो ब्रह्मचारिण्य इव अन्नस्य याचमानाः - दया.। like humble (females) begging for food - W. like mares, fleet-footed, eager for the glory - G.

**अश्व्य॑स्य त्मना॒ रथ्य॑स्य पु॒ष्टेर् नित्य॑स्य रा॒यः पत॑यः स्याम।**
**ता च॑क्रा॒णा ऊ॒तिभि॒र् नव्य॑सीभिर् अस्म॒त्रा रायो॑ नि॒युत॑ः सचन्ताम्।। १०।।**

अश्व्य॑स्य। त्मना॑। रथ्य॑स्य। पु॒ष्टेः। नित्य॑स्य। रा॒यः। पत॑यः। स्या॒म॒।
ता। च॒क्रा॒णौ। ऊ॒तिऽभि॑ः। नव्य॑सीभिः। अ॒स्म॒ऽत्रा। राय॑ः। नि॒ऽयुत॑ः। स॒च॒न्ता॒म्।। १०।।

*अश्वसम्बन्धी के, स्वयमेव, रथसम्बन्धी के, पोषक के,*
*सदा रहने वाले के, धन के, स्वामी बनें हम (सदा)।*
*वे दोनों गमन करते हुए, समृद्धियों के साथ नवीनों के,*
*हमपर धनों को, अश्वों को, संयुक्त कर देवें (सत्वर)।। १०।।*

परमेश्वर की वे जगदुत्पादक और जगद्रक्षक शक्तियां हमें ऐसा सामर्थ्य प्रदान करें, जिससे हम स्वयमेव, अपने परिश्रम से, बिना किसी की सहायता के, अश्व अथवा बलसम्बन्धी, रथ अथवा यान आदि रमणीक साधनों से सम्बन्ध रखने वाले, हमारा पोषण करने वाले और नित्य अर्थात् अविनाशी ऐश्वर्यों के सदा स्वामी बनें। वे अपनी नई-नई समृद्धियों के साथ हमारी ओर गमन करती हुई हमें अपने उत्तम धनों और बलों से अविलम्ब संयुक्त कर देवें।

टि. *अश्वसम्बन्धी के* - **अश्व्यस्य**। अश्वसङ्घस्य - वे.। अश्वसमूहस्य - सा.। अश्वेषु आशुगामिषु भवस्य - दया.। for horses - G.

*स्वयमेव* - **त्मना**। आत्मनैव - वे.। स्वयमेवाप्रयत्नेन - सा.। अपने सामर्थ्य से ही - सात.। of our own (right) - W. ourselves - G.

*रथसम्बन्धी के* - **रथ्यस्य**। रथसङ्घस्य - वे.। रथरूपस्य रथार्हस्य वा - सा.। रथेषु रमणीयेषु साधोः - दया.। for car - G.

*सदा रहने वाले के* - **नित्यस्य**। अविचलितस्य - सा.।

*गमन करते हुए* - **चक्राणा**। कुर्वाणौ - वे.। चंक्रममाणौ गन्तारौ। भवतम् इति शेषः। सा.। कुर्वन्तौ - दया.। traversing (the regions) - W. who work - G.

*हमपर संयुक्त कर देवें* - **अस्मत्रा सचन्ताम्**। अस्मान् सचन्ताम् - वे.। अस्मासु सचन्तां सेवन्ताम् - सा.। अस्मासु वर्तमानस्य सम्बन्धन्तु - दया.। हमें (घोड़े आदि पशुओं और ऐश्वर्य से) संयुक्त करें - सात.। may direct towards us - W. hitherward to us - G.

*अश्वों को* - **नियुतः**। अश्वाः - सा.। निश्चययुक्ताः - दया.। Niyut steeds - W. yoked teams - G.

**आ नो॑ बृहन्ता बृह॒तीभि॑र् ऊ॒ती इन्द्र॑ या॒तं व॑रुण॒ वाज॑सातौ।**
**यद् दि॒द्यव॒ः पृत॑नासु प्र॒क्रीळा॒न् तस्य॑ वां स्याम सनि॒तार॑ आ॒जेः।। ११।। १६।।**

आ। न॒ः। बृ॒ह॒न्ता। बृ॒ह॒तीभि॑ः। ऊ॒ती। इन्द्र॑। या॒त॒म्। व॒रु॒ण॒। वाज॑ऽसातौ।
यत्। दि॒द्यव॑ः। पृत॑नासु। प्र॒ऽक्री॒ळा॑न्। तस्य॑। वा॒म्। स्या॒म॒। स॒नि॒तार॑ः। आ॒जेः।। ११।।

*इधर हमारे पास, हे महानो!, महान् वृद्धियों के साथ,*
*हे इन्द्र!, गमन करो, हे वरुण!, ऐश्वर्यप्रदान के निमित्त।*
*जब दीप्तिमान् (बाण), सेनाओं में क्रीड़ा करें (निरन्तर),*
*उसके, तुम दोनों के, हम होवें सम्भक्ता संग्राम के।। ११।।*

हे परमेश्वर की जगदुत्पादक और जगद्रक्षक महान् शक्तियो! तुम हमें उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करने के लिये अपनी महान् रक्षाओं, समृद्धियों, प्रीतियों आदि के साथ हमारे पास पधारो। जब दैवी और आसुरी शक्तियों की सेनाओं के मध्य महान् संघर्ष चल रहा हो और दोनों ओर से प्रहार-प्रतिप्रहार हो रहे हों तो हम तुम्हारे उपासक तुम्हारे द्वारा चलाए जाने वाले उस संग्राम में भाग लेने वाले हों। हम दैवी शक्तियों के पक्षधर बनकर देवों की विजय को सुनिश्चित करने वाले बनें।

टि. *महान् वृद्धियों के साथ* - **बृहतीभिः ऊती।** महद्भिः रक्षणैः - वे.। सा.। ऊती इत्यत्र सुपां सुलुग् इति भिसो लुक् - दया.। with your mighty succours - G.

*ऐश्वर्यप्रदान के निमित्त* - **वाजसातौ।** सङ्ग्रामे - वे.। दया.। अन्नलाभनिमित्तभूते वा - सा.।

*दीप्तिमान् (बाण)* - **दिद्यवः।** द्योतमाना योद्धारः - वे.। आयुधनामैतत्। आयुधानि शत्रुसम्बन्धीनि - सा.। विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानास् तेजस्विनः - दया.। bright (weapons) - W. flashing arrows - G.

*क्रीड़ा करें* - **प्रक्रीळान्।** प्रक्रीडन्ति - वे.। प्रक्रीडन्ते - सा.। प्रकृष्टान् - दया.। play - W.

*सम्भक्ता संग्राम के* - **सनितारः आजेः।** सङ्ग्रामस्य सम्भक्तारः - वे.। सा.। विभक्तारः संग्रामस्य - दया.। may we be triumphant in that conflict - W. G.

## सूक्त ४२

ऋषिः - त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः। देवता - १-६ त्रसदस्युः, ७-१० इन्द्रावरुणौ। छन्दः - त्रिष्टुप्। दशर्चं सूक्तम्।

**मम॑ द्वि॒ता रा॒ष्ट्रं क्ष॒त्रिय॑स्य वि॒श्वायो॑र् विश्वे॑ अ॒मृता॒ यथा॑ नः।**
**क्रतुं॑ सचन्ते॒ वरु॑णस्य दे॒वा राजा॑मि कृ॒ष्टेर् उ॑प॒मस्य॑ व॒व्रेः।। १।।**

मम॑। द्वि॒ता। रा॒ष्ट्रम्। क्ष॒त्रिय॑स्य। वि॒श्वऽआ॑योः। विश्वे॑। अ॒मृता॑ः। यथा॑। न॒ः।
क्रतु॑म्। स॒च॒न्ते॒। वरु॑णस्य। दे॒वाः। राजा॑मि। कृ॒ष्टेः। उ॒प॒मस्य॑। व॒व्रेः।। १।।

*मेरा दोहरा राष्ट्र है, दुष्टों को काट डालने वाले का,*
*समस्त आयुओं वाले का, सब अमरणधर्मा चूँकि हमारे हैं।*
*सङ्कल्प का सेवन करते हैं, (मुझ) वरुण के देव (सब),*
*राज करता हूँ मैं भूलोक पर, उत्तम द्युलोक पर।। १।।*

मैं दुष्ट पापी जनों का विनाशक हूँ। पृथिवी पर और द्युलोक में दोनों जगह मेरा ही राज्य है। चूँकि सभी अमरणधर्मा देव और मरणधर्मा मनुष्य मुझसे ही जीवन पाते हैं, इसलिये मैं जीवनों का स्वामी हूँ, सबका जीवनदाता हूँ। सब देव और मनुष्य जगत् को घेरकर रक्षा करने वाले मुझ परमेश्वर के संकल्पों और आज्ञाओं के अनुसार ही आचरण करते हैं। जोती जाने वाली और खेतियों से

लहलहाती धरती और जगत् को आवृत करके स्थित द्युलोक पर मैं ही शासन करता हूँ।

टि. *मेरा दोहरा राष्ट्र है* – **मम द्विता राष्ट्रम्।** मम द्विधा भवति राष्ट्रं पृथिव्यां दिवि च – वे.। द्विता द्वयोर् भावः। twofold is my empire - W.

*दुष्टों को काट डालने वाले का* – **क्षत्रियस्य।** क्षत्रियजात्युत्पन्नस्य – सा.।

*समस्त आयुओं वाले का* – **विश्वायोः।** सर्वस्य देशस्य गन्तुः – वे.। कृत्स्नमनुष्याधीशस्य मम – सा.। विश्वं पूर्णम् आयुर् यस्य तस्य – दया.।

*सङ्कल्प का सेवन करते हैं* – **क्रतुम् सचन्ते।** कर्म सेवन्ते – वे.। सा.। क्रतुं प्रज्ञां सम्बध्नन्ति – दया.। the gods associate me - W. (Varuṇa's) will (the gods) obey - G.

*वरुण के* – **वरुणस्य।** वरुणभूतस्य मम – वे.। वारकस्य वरुणात्मनो वा – सा.। श्रेष्ठस्य – दया.। (with the acts) of Varuṇa - W.

*राज करता हूँ भूलोक पर* – **राजामि कृष्टेः।** ईश्वरश् च भवामि कृष्टेः – वे.। कृष्टेर् मनुष्यस्य तद्वतो वा। राजतिर् ऐश्वर्यकर्मा। सर्वेश्वरो भवामि। सा.। I rule over (form) of man - W. I am the king of men's (most lofty cover) - G.

*उत्तम द्युलोक पर* – **उपमस्य वव्रेः।** अन्तिभूतस्य पृथिव्यां वर्तमानस्य मद्भयाद् अमृत्युग्रस्तस्य तत एव जीर्णस्येति – वे.। उपमस्य। अन्तिकनामैतत्। सर्वेषाम् अन्तिकतमस्य। वव्रेः। रूपनामैतत्। रूपवतो मम। यद्वा। उपमस्य वव्रेः कृष्टे राजामीति योज्यम्। सा.। उपमा विद्यते यस्य तस्य स्वीकर्तुः – दया.। of the proximate form - W. of (men's) most lofty cover - G.

**अ॒हं राजा॒ वरु॑णो॒ मह्यं॒ तान्य॑सु॒र्या॑णि प्रथ॒मा धा॑रयन्त।**
**क्रतुं॑ सचन्ते॒ वरु॑णस्य दे॒वा राजा॑मि कृ॒ष्टेर् उ॑प॒मस्य॑ व॒व्रेः॥ २॥**

अ॒हम्। राजा॑। वरु॑णः। मह्य॑म्। तानि॑। अ॒सु॒र्या॑णि। प्र॒थ॒मा। धा॒र॒य॒न्त॒।
क्रतु॑म्। स॒च॒न्ते॒। वरु॑णस्य। दे॒वाः। राजा॑मि। कृ॒ष्टेः। उ॒प॒मस्य॑। व॒व्रेः॥ २॥

*मैं राजा वरुण (हूँ), मेरे लिये (ही) उनको,*
*सामर्थ्यों को मुख्यों को, धारण करते हैं (देव)।*
*सङ्कल्प का सेवन करते हैं, (मुझ) वरुण के देव (सब),*
*राज करता हूँ मैं भूलोक पर, उत्तम द्युलोक पर॥ २॥*

मैं इस जगत् को सब ओर से आवृत करके इसकी रक्षा करने वाला परमेश्वर हूँ। सब दिव्य शक्तियां मेरे लिये ही, मेरे कार्यों को साधने के लिये ही उन-उन सब मुख्य सामर्थ्यों को धारण करती हैं। सब देव मुझ जगद्रक्षक परमात्मा के सङ्कल्पों और आदेशों के अनुसार ही आचरण करते हैं। जोती जाने वाली और खेतियों से लहलहाती भूमि और सारे जगत् को आवृत करके स्थित द्युलोक पर भी मैं ही शासन करता हूँ।

टि. *मेरे लिये उनको सामर्थ्यों को मुख्यों को धारण करते हैं (देव)* – **मह्यम् तानि असुर्याणि प्रथमा धारयन्त।** पुरातनानि असुरवधनिमित्तानि कर्माणि सर्वे देवा अधारयन्त – वे.। मदर्थम् एव मुख्यानि तानि प्रसिद्धानि सुरविघातकानि बलान्यधारयन् – सा.। मह्यं तानि असुराणां मेघादीनाम् इमानि

चिह्नानि आदिमानि धरन्ति - दया.। देवगण मेरे लिये ही उन श्रेष्ठ बलों को धारण करते हैं - सात.। on me (the gods) bestow those principal energies (that are) destructive of the Asuras - W. to me were given these first existing high celestial powers - G.

**अहम् इन्द्रो वरुणस् ते महित्वोर्वी गभीरे रजसी सुमेके।**
**त्वष्टेव विश्वा भुवनानि विद्वान् त्सम् ऐरयम् रोदसी धारयं च।। ३।।**

अहम्। इन्द्रः। वरुणः। ते इति। महिऽत्वा। उर्वी इति। गभीरे इति। रजसी इति। सुमेके इति सुऽमेके।
त्वष्टाऽइव। विश्वा। भुवनानि। विद्वान्। सम्। ऐरयम्। रोदसी इति। धारयम्। च।। ३।।

*मैं इन्द्र (हूँ), वरुण (हूँ), वे (भी मैं ही हूँ) महिमा से (अपनी),*
*विशाल, गम्भीर, द्युलोक और भूलोक, शोभन रूपों वाले।*
*जगन्निर्माता के रूप में, सब लोकों का ज्ञाता (हूँ मैं),*
*संचालन करता हूँ द्युलोक-भूलोक का, धारण भी करता हूँ (उनको)।। ३।।*

मैं परमेश्वर ही जगदुत्पादक होने के कारण इन्द्र कहलाता हूँ। जगद्रक्षक होने से मुझे ही वरुण कहकर पुकारा जाता है। अपनी महिमा के कारण विशाल, गम्भीर और शोभन रूपों वाले ये द्युलोक और भूलोक भी मैं ही हूँ। चूँकि मैंने इस जगत् का निर्माण किया है, इसलिये मैं इन सभी लोकों को भली प्रकार जानता हूँ। मैं ही इन द्युलोक और भूलोक का संचालन करता हूँ और इन्हें धारण भी कर रहा हूँ।

टि. *महिमा के कारण* - महित्वा। माहात्म्येन - वे.। महित्वेन - सा.। in greatness - W.

*शोभन रूपों वाले* - सुमेके। शोभमाने - वे.। सुरूपे - सा.। fairly fashioned - G.

*जगन्निर्माता के रूप में* - त्वष्टाऽइव। यथा त्वष्टा - वे.। प्रजापतिर् इव - सा.। उत्तमः शिल्पीव - दया.। as Tvaṣṭar - G.

*संचालन करता हूँ* - सम् ऐरयम्। सङ्गमयामि - वे.। संप्रैरयम् - सा.। प्रैरयेयम् - दया.। I give animation - W. joined - G.

**अहम् अपो अपिन्वम् उक्षमाणा धारयं दिवं सदन ऋतस्य।**
**ऋतेन पुत्रो अदितेर् ऋतावोत त्रिधातु प्रथयद् वि भूम।। ४।।**

अहम्। अपः। अपिन्वम्। उक्षमाणाः। धारयम्। दिवम्। सदने। ऋतस्य।
ऋतेन। पुत्रः। अदितेः। ऋतऽवा। उत। त्रिऽधातु। प्रथयत्। वि। भूम।। ४।।

*मैं जलों को बरसाता हूँ, सींचने वालों को,*
*धारण करता हूँ सूर्य को, सदन में सत्यनियम के।*
*सत्यनियम के द्वारा पुरुत्राता अदिति का, सत्यनियम का पालक,*
*और तीन प्रकार से विस्तृत करता हूँ, विविधतापूर्वक, ब्रह्माण्ड को।। ४।।*

मैं परमेश्वर ही सींचने वाले जलों को धरती पर बरसाता हूँ। सत्य नियमों के आधार वाले इस जगत् के अन्दर मैं ही इस प्रकाशमान सूर्य को धारण कर रहा हूँ। सत्यनियम के द्वारा अखण्डनीया जगज्जननी प्रकृति का अनेक प्रकार से त्राण करने वाला, सत्यनियम का स्वयं पालन करने और दूसरों

से पालन कराने वाला मैं सर्वेश्वर ही इस ब्रह्माण्ड को द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवी इन तीन भागों में विभक्त करके विविधतापूर्वक विस्तारता हूँ।

टि. *जलों को बरसाता हूँ* – **अपः अपिन्वम्।** अपो ऽसेचयम् – सा.। जलानि अन्तरिक्षं वा सेवे – दया.।

*सूर्य को* – **दिवम्।** अन्तरिक्षलोकम् – वे.। आदित्यम् – सा.। विद्युतम् – दया.। the sky - W. the heaven - G.

*सदन में सत्यनियम के* – **सदने ऋतस्य।** उदकस्यावासे – वे.। ऋतस्योदकस्यादित्यस्य वा सदने स्थाने निमित्ते सति। यद्वा। उदकाधारे। सा.। सर्वस्थित्यर्थे जगति सत्यस्य प्रकृत्याख्यस्य – दया.। as the abode of the water - W. in the seat of Order - G.

*पुरुत्राता अदिति का* – **पुत्रः अदितेः।** तनय इव अखण्डितस्यान्तरिक्षस्य – दया.।

*सत्यनियम का पालक* – **ऋतावा।** ऋतवान् यज्ञेन उदकेन वा – वे.। ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिन् सः – दया.। the preserver of the water - W. Law Observer - G.

*विस्तृत करता हूँ ब्रह्माण्ड को* – **प्रथयत् भूम।** पुरुषव्यत्ययः।। भूम अप्रथयत – वे.। व्याप्तम् आकाशं मदर्थम् एव क्षित्यादिलोकत्रयम् अकार्षीत् परमेश्वरः – सा.। illustrating elemenary space - W. hath spread abroad the world - G.

**मां नरः स्वश्वा वाजयन्तो मां वृताः समरणे हवन्ते।**
**कृणोम्याजिं मघवाहम् इन्द्र इयर्मि रेणुम् अभिभूत्योजाः।। ५।। १७।।**

माम्। नरः। सुऽअश्वाः। वाजयन्तः। माम्। वृताः। सम्ऽअरणे। हवन्ते।
कृणोमि। आजिम्। मघऽवा। अहम्। इन्द्रः। इयर्मि। रेणुम्। अभिभूतिऽओजाः।। ५।।

*मुझको नायक शोभन अश्वों वाले, ऐश्वर्यों के इच्छुक,*
*मुझको (योद्धा) घिरे हुए (शत्रु से), संग्राम में बुलाते हैं।*
*आयोजित करता हूँ संग्राम को, धनदाता मैं इन्द्र,*
*उड़ाता हूँ मैं धूलि को, विजयी बलों वाला।। ५।।*

मैं जगत् को उत्पन्न करने वाला, सब ऐश्वर्यों का स्वामी, इन्द्र नाम से पुकारा जाने वाला परमेश्वर हूँ। ऐश्वर्यों को चाहने वाले, उत्तम अश्वों पर चढ़कर युद्ध करने वाले सेनानायक विजय की कामना से मुझे ही पुकारते हैं। जब उपासक जन जीवनसंग्राम में बाह्य और आभ्यन्तर शत्रुओं से घिर जाते हैं, तो वे सहायता के लिये मेरा ही आह्वान करते हैं। ऐश्वर्यों का स्वामी मैं इन्द्र ही आसुरी शक्तियों के विरुद्ध अपनी व्यवस्था के अनुसार संघर्षों का आयोजन करता हूँ। विजेता बलों वाला मैं परमेश्वर ही उन दुष्ट शक्तियों के साथ घोर युद्ध करता हूँ।

टि. *नायक* – **नरः।** नेतारो भटा अनुगच्छन्तीति शेषः – सा.। नायकाः – दया.। warriors - W. heroes - G.

*ऐश्वर्यों के इच्छुक* – **वाजयन्तः।** बलिनं कुर्वन्तः – वे.। संग्रामम् इच्छन्तः – सा.। जानन्तो ज्ञापयन्तो वा – दया.। ardent for contest - W. fain for battle - G.

*घिरे हुए* - **वृताः**। वृताः सन्तः - सा.। कृतस्वीकाराः - दया.। selected (combatants) - W. selected warriors - G.

*संग्राम में* - **समरणे**। संग्रामे - वे.। सा.। दया.।

*आयोजित करता हूँ संग्राम को* - **कृणोमि आजिम्**। करोमि युद्धम् - वे.। दया.। I instigate the conflict - W. I excite the conflict - G.

*विजयी बलों वाला* - **अभिभूत्योजाः**। अभिभावुकबलः - वे.। परेषाम् अभिभाविबलः - सा.। दया.। endowed with victorious prowess - W. Lord of surprising vigour - G.

**अहं ता विश्वा चकरं नकिर् मा दैव्यं सहो वरते अप्रतीतम्।**
**यन् मा सोमासो ममदन् यद् उक्थोभे भयेते रजसी अपारे।। ६।।**

अहम्। ता। विश्वा। चकरम्। नकिः। मा। दैव्यम्। सहः। वरते। अप्रतिऽइतम्।
यत्। मा। सोमासः। ममदन्। यत्। उक्था। उभे इति। भयेते इति। रजसी इति। अपारे इति।। ६।।

*मैं उन सब (वीरकर्मों) को करता हूँ, नहीं कोई मुझको,*
*देवों का बल रोक सकता है, अप्रतिगत बल वाले को।*
*जब मुझको सोम आनन्दित करते हैं, जब स्तुतियां,*
*दोनों भयभीत हो जाते हैं द्युलोक-भूलोक, अपरिमित।। ६।।*

इस जगत् में समस्त वीरतापूर्ण कर्मों का सम्पादन मैं ही करता हूँ। मेरे बल का मुकाबला कोई नहीं कर सकता। मैं देवों का स्वामी अर्थात् देवाधिदेव हूँ। इसलिये देवों के बल भी मुझे नहीं रोक सकते। जब भक्तजनों के भक्तिरस मुझे आनन्दित करते हैं और जब उपासकों की स्तुतियां मुझे हर्षित करती हैं, तो मेरा बल इतना बढ़ जाता है, कि धरती और आकाश भी डर के मारे कांपने लगते हैं।

टि. *(वीरकर्मों को) करता हूँ* - **चकरम्**। वृत्रवधादीनि कर्माणि कृतवान् अस्मि - वे.। अहं त्रस्दस्युर् अकार्षम् - सा.। भृशं करोमि - दया.।

*देवों का बल रोक सकता है* - **दैव्यं सहः वरते**। देवसम्बन्धि बलं वारयति - वे.। सा.। देवेषु विद्वत्सु प्रियं बलं स्वीकरोति - दया.। (no one) resists my divine vigour - W. the gods' own (conquering) power (never) impedeth me - G.

*अप्रतिगत बल वाले को* - **अप्रतीतम्**। शत्रुभिर् अप्रतिगतम् - वे.। सा.। अप्रज्ञातम् - दया.। unsurpassed - W. whom none opposeth - G.

*आनन्दित करते हैं* - **ममदन्**। अमदन् - वे.। अमदयन् - सा.। हर्षन्ति - दया.। exhilarate me - W. have made me joyful - G.

**विदुष् टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः।**
**त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्।। ७।।**

विदुः। ते। विश्वा। भुवनानि। तस्य। ता। प्र। ब्रवीषि। वरुणाय। वेधः।
त्वम्। वृत्राणि। शृण्विषे। जघन्वान्। त्वम्। वृतान्। अरिणाः। इन्द्र। सिन्धून्।। ७।।

*मानते हैं तुझको सब प्राणी, उस (प्रसिद्ध) को,*

*उन (स्तोत्रों) का खूब गान कर तू, वरणीय के लिये, हे स्तोता।*
*तू आवरकों का सुना जाता है, हनन करने वाला,*
*तू आवृतों को बहा देता है, हे इन्द्र!, जलप्रवाहों को।। ७।।*

हे ऐश्वर्यवान् परमेश्वर! तुझ प्रसिद्ध को सभी प्राणी मानते और स्वीकार करते हैं। हे उपासक! तू ऐसे वरणीय जगद्रक्षक परमेश्वर के लिये अपनी उन उत्तम स्तुतियों का गान कर। हे जगदीश! तू सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली दुष्ट आसुरी शक्तियों का हनन करने वाले के रूप में प्रसिद्ध है। हे परमेश्वर! तू इस प्रकार रोककर रखे हुए जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों को आसुरी शक्तियों के पंजे से मुक्त करके सब प्रजाओं को प्रदान कर देता है।

टि. *मानते हैं तुझको सब प्राणी* - **विदुः ते विश्वा भुवनानि।** तव हे इन्द्र! विश्वानि कर्माणि जानन्ति भूतानि - वे.। हे वरुण! तस्य ते। कर्मणि षष्ठी। तं त्वां सर्वाणि भुवनानि भूतजातानि विदुः जानन्ति। सा.। all beings recognise thee - W. all beings know these deeds of thine - G.

*उन (स्तोत्रों) का खूब गान कर तू* - **ता प्र ब्रवीषि।** तानि प्रब्रवीषि - वे.। ब्रवीषि स्तौषि - सा.। तानि उपदिशति - दया.। and thou addressest these (encomiums to Varuṇa) - W. G.

*वरणीय के लिये* - **वरुणाय।** वरुणाय सख्ये - वे.। वरुणं - सा.। श्रेष्ठाय जनाय - दया.।

*हे स्तोता* - **वेधः।** हे विधातः - वे.। स्तोतृनामैतत्। हे स्तोतः। सा.। अनन्तविद्य - दया.। worshipper - W. great Disposer - G.

*तू सुना जाता है* - **त्वम् शृण्विषे।** श्रूयसे - वे.। सा.। thou art renowned - W.

*तू आवृतों को बहा देता है जलप्रवाहों को* - **त्वम् वृतान् अरिणाः सिन्धून्।** तत्वं वृत्रेण वृतान् निरगमयः सिन्धून् - वे.। त्वं वृतान् आच्छन्नान् सिन्धून् स्यन्दनस्वभावान् अप्संघान् अरिणा अगमयः - सा.। thou hast set the obstructed rivers free to flow - W. G.

**अ॒स्माक॑म् अत्र॑ पि॒तर॒स् त आ॑सन् त्स॒प्त ऋष॑यो दौर्ग॒हे ब॒ध्यमा॑ने।**
**त आय॑जन्त त्र॒सद॑स्युम् अ॒स्या इन्द्रं॒ न वृ॑त्र॒तुर॑म् अर्धदे॒वम्।। ८।।**

अ॒स्माक॑म्। अत्र॑। पि॒तर॑ः। ते। आ॒स॒न्। स॒प्त। ऋष॑यः। दौः॒ऽग॒हे। ब॒ध्यमा॑ने।
ते। आ। अ॒य॒ज॒न्त॒। त्र॒सद॑स्युम्। अ॒स्याः॒। इन्द्र॑म्। न। वृ॒त्र॒ऽतुर॑म्। अ॒र्ध॒ऽदे॒वम्।। ८।।

*हमारे इस (देह) में, पालन करने वाले वे हो गए,*
*सात ऋषि, कठोर पकड़ वाले में बन्ध जाने पर।*
*उन्होंने पुष्ट किया यज्ञ से, दस्युओं को डराने वाले को, इसके लिये,*
*इन्द्र के समान वृत्रहन्ता को, देवों के समीप विराजमान को।। ८।।*

दौर्गह कठोर पकड़ वाला यह शरीररूपी संकरा स्थान है। जब जीवात्मा अपने कर्मों के अनुसार इस शरीररूपी कारागार में बन्धन को प्राप्त हो जाता है, तो शीर्षस्थ सात प्राण ही हमारे शरीरों में स्थित इस जीवात्मा की रक्षा करते हैं। ये सात प्राण ही इन्द्र की तरह काम, क्रोध आदि पापों का नाश करने वाले, देवों के निकट स्थान पाने वाले अर्थात् उनकी बराबरी प्राप्त करने वाले, आवरक शक्तियों को भयभीत करने वाले इस जीवात्मा को इस यात्रा के लिये यज्ञ के द्वारा पुष्ट करते हैं,

इसे शक्तिसम्पन्न बनाते हैं। भाव यह है, कि जीवात्मा के उत्थान में प्राणशक्तियां बहुत सहयोग प्रदान करती हैं।

टि. *पालन करने वाले* – **पितरः**। पालयितार उत्पादकाः – सा.। पालकाः – दया.। protectors - W. fathers - G.

*कठोर पकड़ वाले में बन्ध जाने पर* – **दौर्गहे बध्यमाने**। दुर्गहकुलजाते मयि शत्रुभिः बध्यमाने – वे.। दुर्गहस्य पुत्रे पुरुकुत्से बध्यमाने दृढं पाशैः – सा.। दुर्गहने ताड्यमाने – दया.।

*उन्होंने पुष्ट किया यज्ञ से* – **आ अयजन्त**। प्रादुः – सा.। समन्तात् संगच्छन्ते – दया.। performing worship they obtained - W. gained by sacrifice - G.

*दस्युओं को डराने वाले को* – **त्रसदस्युम्**। त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात् तम् – दया.।

*इसके लिये* – **अस्याः**। अस्याः पृथिव्याः – वे.। अस्या अस्यै पुरुकुत्सान्यै – सा.। अस्याः सृष्टेर् मध्ये – दया.।

*वृत्रहन्ता को* – **वृत्रतुरम्**। वृत्राणां हन्तारम् – वे.। वृत्रस्य शत्रोर् हन्तारम् – सा.। यो वृत्रं मेघं घनं वा त्वरयति – दया.। the slayer of foes - W. conquering foemen - G.

*देवों के समीप विराजमान को* – **अर्धदेवम्**। देवानाम् अर्धे समीपे वर्तमानम्। यद्वा। देवानाम् अर्धभूतम्। सा.। देवस्यार्द्धम् अर्द्धस्य जगतो देवं वा – दया.। dwelling near the gods - W. a demi-god - G.

**पु॒रु॒कुत्सा॑नी॒ हि वा॒म् अदा॑शद् ध॒व्येभि॒र् इन्द्रावरुणा॒ नमो॑भिः।**
**अथा॒ राजा॑नं त्र॒सद॑स्युम् अस्या वृ॒त्र॒हणं॑ ददथुर् अर्धदे॒वम्।। ९।।**

पु॒रु॒ऽकु॒त्सा॑नी। हि। वा॒म्। अदा॑शत्। ह॒व्येभिः॑। इ॒न्द्रा॒व॒रु॒णा॒। नमः॑ऽभिः।
अथ॑। राजा॑नम्। त्र॒सद॑स्युम्। अ॒स्याः। वृ॒त्र॒ऽहन॑म्। द॒द॒थुः। अ॒र्ध॒ऽदे॒वम्।। ९।।

*बहुस्तोत्री चूँकि तुम दोनों को आहुति प्रदान करती है,*
*हव्यों के द्वारा, हे इन्द्र और वरुण!, नमस्कारों के साथ।*
*इसलिये प्रकाशमान को, दस्युओं के डराने वाले को, इसे,*
*आवरकों के हन्ता को प्रदान करते हो तुम, अर्धदेव को।। ९।।*

हे जगदुत्पादक और जगद्रक्षक परमेश्वर की शक्तियो! अनेक स्तोत्रों से स्तुति करने वाली जो स्त्री अपने हव्यों और नमस्कारों के साथ तुम्हें पूजा समर्पित करती है, उसे तुम बाह्य और आभ्यन्तर शत्रुओं का विनाश करने वाले, देवों के समीप स्थान पाने वाले, प्रकाशमान अथवा दूसरों पर शासन करने वाले और दुष्ट हिंसक जनों को भयभीत करने वाले पुत्र को प्रदान करती हो।

टि. *बहुस्तोत्री* – **पुरुकुत्सानी**। त्रसदस्योर् माता पुरुकुत्सस्य स्त्री – वे.। सा.। पुरूणि कुत्सानि यस्यां सा – दया.।

*आहुति प्रदान करती है* – **अदाशत्**। दानं कृतवती – वे.। अप्रीणयत् – सा.। अदाशत् ददाति – दया.। propitiated you - W. gave oblatins to you - G.

*प्रकाशमान को* – **राजानम्**। the king - W. G.

*आवरकों के हन्ता को* – **वृत्रहणम्**। वृत्राणां हन्तारम् – वे.। यो वृत्रं मेघं हन्ति तम् – दया.।

**राया वयं ससवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः।**
**तां धेनुम् इन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तम् अनपस्फुरन्तीम्।। १०।। १८।।**

राया। वयम्। ससऽवांसः। मदेम। हव्येन। देवाः। यवसेन। गावः।
ताम्। धेनुम्। इन्द्रावरुणा। युवम्। नः। विश्वाहा। धत्तम्। अनपऽस्फुरन्तीम्।। १०।।

*धन से हम, स्तुति करते हुए, आनन्दित होवें,*
*हव्य से देवगण (आनन्दित होवें), चारे से गौएं।*
*उस गौ को, हे इन्द्र और वरुण!, तुम दोनों हमें,*
*सदा प्रदान करो, (दोहते समय) न फड़कने वाली को।। १०।।*

हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हम उपासक जन सदा तुम्हारी स्तुति करते रहें। हम उस स्तुति से प्राप्त होने वाले बाह्य और आभ्यन्तर ऐश्वर्यों से सदा आनन्द को प्राप्त करते रहें। हमारी गौवें घास, चारे आदि से आनन्द को प्राप्त होकर हमें सदा दूध से आप्लावित करती रहें। हे परमेश्वर की जगदुत्पादक और जगद्रक्षक शक्तियो! तुम हमें ज्ञान अथवा वाणी रूपी ऐसी दुधारू गौ प्रदान करो, जो फड़के नहीं, डरकर हमें लात न मारे और दूध देने से इन्कार न करे।

टि. *स्तुति करते हुए* – **ससवांसः**। भजमानाः – वे.। ससवांसः संभक्तारः – सा.। सुशयाना इव – दया.। glorifying you - W. possessing much - G.

*आनन्दित होवें* – **मदेम**। may we be delighted - W. G.

चारे से – **यवसेन**। बुसादिनेव – दया.। by pasture - W. G.

*सदा* – **विश्वाहा**। सर्वदा – वे.। विश्वस्य हन्तारौ। यद्वा। विश्वाहेत्यव्ययम्। सर्वदेत्यर्थः। सा.। सर्वाणि दिनानि – दया.। daily - W. G.

*न फड़कने वाली को* – **अनपस्फुरन्तीम्**। गुणवतीम् – वे.। अहिंसिताम् – सा.। दृढां निश्चलां प्रज्ञां सम्पादयन्तीम् – दया.। free from any imperfection - W. who shrinks not from the milking - G.

## सूक्त ४३

ऋषिः – पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ। देवता – अश्विनौ। छन्दः – त्रिष्टुप्। सप्तर्चं सूक्तम्।

**क उ श्रवत् कतमो यज्ञियानां वन्दारु देवः कतमो जुषाते।**
**कस्येमां देवीम् अमृतेषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम सुष्टुतिं सुहव्याम्।। १।।**

कः। ऊँ इति। श्रवत्। कतमः। यज्ञियानाम्। वन्दारु। देवः। कतमः। जुषाते।
कस्य। इमाम्। देवीम्। अमृतेषु। प्रेष्ठाम्। हृदि। श्रेषाम्। सुऽस्तुतिम्। सुऽहव्याम्।। १।।

*कौन निश्चय से सुनेगा, कौन पूजनीयों के (मध्य में),*
*वन्दनशील स्तोत्र को, देव कौनसा सेवन करेगा।*
*किसके, इसको प्रकाशमाना को, देवों में से, प्रियतमा को,*

*हृदय में, श्लिष्ट करें हम, शोभन स्तुति को, सुसमर्पण वाली को।। १।।*

पूज्य देवों में से निश्चय से वह कौन सा देव है, जो हमारी वन्दनशील स्तुति को सुनेगा? जो हमारी इस स्तुति को स्वीकार करेगा? अमरणधर्मा देवों में से किस देव के हृदय में हम इस देदीप्यमान, अतिशय प्रिय, उत्तम समर्पणभावनाओं से युक्त शोभन स्तुति को समर्पित करें। देवों के देव, परम देव परमेश्वर के सिवाय भला और कौन सा देव हमारी स्तुति का अधिकारी हो सकता है।

टि. *सुनेगा* - **श्रवत्।** शृणोति - वे.। दया.। शृणुयात् - सा.। will listen - W. G.

*वन्दनशील स्तोत्र को* - **वन्दारु।** स्तोत्रम् - वे.। वन्दनशीलं स्तोत्रम् - सा.। वन्दनशीलं स्वभावम् - दया.। praise - W. homage - G.

*सेवन करेगा* - **जुषाते।** सेवते - वे.। सा.। दया.। will be propitiated (by it) - W. will take pleasure - G.

*हृदय में श्लिष्ट करें हम* - **हृदि श्रेषाम।** हृदये श्लेषयेम - वे.। हृदि श्रेषाम श्लेषयेम श्राययेम - सा.। श्रेषाम सेवेम - दया.। upon the heart (of whom) may we impress - W.

*सुसमर्पण वाली को* - **सुहव्याम्।** हविर्युक्ताम् - वे.। सा.।

**को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानाम् उ कतमः शंभविष्ठः।**
**रथं कम् आहुर् द्रवदश्वम् आशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत।। २।।**

कः। मृळाति। कतमः। आऽगमिष्ठः। देवानाम्। ऊँ इति। कतमः। शम्ऽभविष्ठः।
रथम्। कम्। आहुः। द्रवत्ऽअश्वम्। आशुम्। यम्। सूर्यस्य। दुहिता। अवृणीत।। २।।

*कौन सुखी करता है, कौन सा (है) सबसे अधिक आने वाला,*
*देवों में से, निश्चय से, कौन सा है सबसे अधिक कल्याणकारक।*
*रथ को कौनसे को बताते हैं, दौड़ते अश्वों वाला, आशु गति वाला,*
*जिसका सूर्य की दुहिता वरण करती है।। २।।*

पहला प्रश्न यह है कि देवों में से वह कौन सा देव है, जो हमें सुखी करता है? वह कौन सा देव है, जो पुकारे जाने पर सबसे अधिक तेजी के साथ हमारी सहायता के लिये आता है? वह कौन सा देव है, जो हमारा सबसे अधिक कल्याण करने वाला है? इसका उत्तर यह है, कि परमात्मा अथवा आत्मा ही वह देव है, जो हमें सुख और कल्याण की प्राप्ति कराता है और तीव्र गति से हमारी सहायता के लिये आता है। दूसरा प्रश्न यह है कि वह कौन सा रथ है, जिसे लोग दौड़ते हुए अश्वों वाला और आशु गति वाला बताते हैं और जिसका वरण सूर्य की दुहिता उषा करती है? सूर्य का गुण प्रकाशवत्ता और ज्ञानवत्ता ही सूर्य की दुहिता है। प्राणिशरीर अथवा ब्रह्माण्ड ही वह रथ है, जिसपर प्रकाशवत्ता अथवा गुणवत्ता आरोहण करती है।

टि. *सुखी करता है* - **मृळाति।** मृडाति सुखयेत् - सा.। will be gracious - G.

*सब से अधिक आने वाला* - **आगमिष्ठः।** अत्यन्तम् आगच्छति - वे.। आगन्तृतमो ऽस्मद्यज्ञं प्रति - सा.। अतिशयेनागन्ता - दया.।

*सब से अधिक कल्याणकारक* - **शंभवष्ठिः।** अत्यन्तं सुखम् उत्पादयति - वे.। सुखस्य

भावयितृतमः – सा.। अतिशयेन कल्याणकारकः – दया.। most willing to grant us felicity - W. will bring bliss most largely - G.

*दौड़ते अश्वों वाला* – **द्रवदश्वम्।** क्षिप्राश्वम् – वे.।

*सूर्य की दुहिता* – **सूर्यस्य दुहिता।** सूर्यस्य पत्नी – सा.। सूर्यस्य दुहितेव कान्तिः – दया.। daughter of Sūrya - W. G.

**मक्षू हि ष्मा गच्छंथ ईवंतो द्यून् इन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम्।**
**दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचींनां भवथः शचिंष्ठा।। ३।।**

मक्षु। हि। स्म। गच्छंथः। ईवंतः। द्यून्। इन्द्रः। न। शक्तिम्। परिऽतक्म्यायाम्।
दिवः। आऽजाता। दिव्या। सुऽपर्णा। कया। शचीनाम्। भवथः। शचिष्ठा।। ३।।

*शीघ्र ही गमन करते हो तुम दोनों, इतने दिनों तक,*
*सूर्य जिस प्रकार शक्ति को (प्राप्त करता है), रात्रि बीत जाने पर।*
*प्रकाशलोक से प्रादुर्भूत, प्रकाशमान, शोभन पालनों वाले,*
*किसके द्वारा शक्तियों में से, होते हो तुम अतिशय शक्तिमान्।। ३।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम्हारा प्रादुर्भाव प्रकाशलोक अर्थात् प्रकाश से होता है। अर्थात् तुम प्रकाशमय और प्रकाशस्वरूप हो। तुम सदा प्रकाश और ज्ञान से युक्त हो। तुम उत्तम पालनकर्त्ता हो। जिस प्रकार सूर्य रात्रि बीत जाने पर अपनी शक्ति को प्राप्त करता है अर्थात् उसका प्रदर्शन करता है, उसी प्रकार तुम सभी दिनों में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए गमन करते हो। तुम हमें यह तो बताओ, कि तुम्हारी इतनी शक्तियों में से वह कौन सी शक्ति है, जिसके कारण तुम सबसे अधिक शक्तिमान् हो गए हो।

टि. *इतने दिनों तक* – **ईवतः द्यून्।** गमनवतः प्रादुर्भूतान् दिवसान् – वे.। ईवतो गमनवत आगामिनो द्यून् दिवसान् सुत्यासम्बन्धिनः – सा.। बहुगतिमतः प्रकाशान् – दया.। by day - W. so many days - G.

*सूर्य* – **इन्द्रः।** विद्युत् – दया.। सूर्यः – जय.।

*रात्रि बीत जाने पर* – **परितक्म्यायाम्।** रात्र्यां गतायाम् – वे.। सा.। परितः सर्वतः तकन्ति हसन्ति यस्यां सृष्टौ तस्याम् – दया.। at the end of night - W. in stress of battle - G.

*शोभन पालनों वाले* – **सुपर्णा।** सुपतनौ – वे.। शोभनगमनौ – सा.। सुष्ठौ पर्णानि पालनानि ययोस् तौ – दया.। of graceful motion - W. strong-pinioned - G.

*अतिशय शक्तिमान्* – **शचिष्ठा।** कर्मवत्तमौ – वे.। शक्तिमत्तरौ शोभनकर्मवन्तौ वा – सा.। अतिशयेन प्राज्ञौ – दया.। most mighty - G.

**का वां भूद् उपमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना।**
**को वां महश् चित् त्यजसो अभीकं उरुष्यतं माध्वी दस्रा न ऊती।। ४।।**

का। वाम्। भूत्। उपऽमातिः। कया। नः। आ। अश्विना। गमथः। हूयमाना।
कः। वाम्। महः। चित्। त्यजसः। अभीके। उरुष्यतम्। माध्वी इति। दस्रा। नः। ऊती।। ४।।

*क्या तुम्हारी है उपमा, किस (स्तुति) के द्वारा हमारी,*
*इस ओर, हे अश्वियो!, गमन करते हो तुम, पुकारे जाते हुए।*
*कौन तुम्हारे महान् त्याग के (पहुँच सकता है), निकट में,*
*रक्षा करो तुम, हे आनन्ददायको!, हे शत्रुविनाशको! हमारी, रक्षणों से।। ४।।*

हे आत्मा और परमात्मा! भला इस जगत् में तुम्हारा उपमान क्या हो सकता है? तुम्हारी उपमा किससे दी जा सकती है? यह तो बताओ, वह कौन सी स्तुति है, जिसके द्वारा पुकारे जाने पर तुम हमारे पास आ सकते हो? धनों के महान् त्याग में भला तुम्हारे निकट कौन पहुँच सकता है, महान् दान में तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है? हे उपासकों पर आनन्द की वर्षा करने वालो! और दुष्ट पापियों का विनाश करने वालो! तुम अपने रक्षणसाधनों से सदा हमारी रक्षा करते रहो।

टि. *उपमा* - **उपमातिः**। उपमानं स्तोत्रम् - वे.। उप समीपे मातिर् मानं गुणानां परिछित्तिर् यस्यां सा स्तुतिः - सा.। उपमानम् - दया.। the fit measure (of your merits) - W. prayer - G.

*किस (स्तुति) के द्वारा* - **कया**। कया उपमित्या - वे.। कया स्तुत्या - सा.।

*गमन करते हो तुम* - **गमथः**। गच्छथः - वे.। सा.।

*त्याग के* - **त्यजसः**। धनत्यागस्य - वे.। त्यज्यते परित्यज्यते सर्वैर् इति त्यजः क्रोधः, तस्य सोढा - सा.। त्यक्तुं योग्यो व्यवहारः - दया.। betrayal - G.

*रक्षा करो तुम* - **उरुष्यतम्**। रक्षतम् - वे.। रक्षाकर्मैतत्। रक्षतम्। सा.।

*हे आनन्ददायको* - **माध्वी**। मधुमता गमनेन - वे.। हे मधुरसस्योदकस्य स्रष्टारौ - सा.। माधुर्यादिगुणो- पेतौ - दया.। lovers of sweetness - G.

*हे शत्रुविनाशको* - **दस्रा**। हे दर्शनीयौ - वे.। शत्रूणाम् उपक्षपयितारौ - सा.। दया.।

*रक्षणों से* - **ऊती**। गमनेन - वे.। रक्षया - सा.। रक्षणादिक्रियया - दया.।

**उरु वां रथः परि नक्षति द्याम् आ यत् समुद्राद् अभि वर्तते वाम्।**
**मध्वा माध्वी मधु वां प्रुषायन् यत् सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः।। ५।।**

उरु। वाम्। रथः। परि। नक्षति। द्याम्। आ। यत्। समुद्रात्। अभि। वर्तते। वाम्।
मध्वा। माध्वी इति। मधु। वाम्। प्रुषायन्। यत्। सीम्। वाम्। पृक्षः। भुरजन्त। पक्वाः।। ५।।

*विशाल तुम्हारा रथ, सब ओर पहुँचता है द्युलोक में,*
*इस ओर जब अन्तरिक्ष से लौटता है (वह रथ) तुम्हारा।*
*माधुर्य से युक्त को, हे मधु प्रदाताओ!, मधु को तुम्हारे लिये सींचते हैं (उपासक),*
*जब सब ओर से तुम्हारी आहुति को, प्राप्त होते हैं पके (धान)।। ५।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम्हारा विशाल रथ द्युलोक में सब ओर पहुँचता है। वह अन्तरिक्ष से लेकर इस ओर पृथिवी तक भी गति करता है। ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ तुम्हारी गति नहीं है। उपासक जन तुम्हें माधुर्य से युक्त मीठी स्तुतियों से सींचते हैं। वे तुम्हें पके अन्नों से युक्त उत्तम आहुतियां भी प्रदान करते हैं।

टि. *सब ओर पहुँचता है द्युलोक में* - **परि नक्षति द्याम्**। द्याम् परि गच्छति - वे.। द्युलोकस्य

परितः गच्छति - सा.। सर्वतः व्याप्नोति द्याम् - दया.। reacheth heaven - G.

*इस ओर लौटता है* - **आ अभि वर्तते**। आभिमुख्येन गच्छति - सा.। turneth hither - G.

*सींचते हैं* - **प्रुषायन्**। सिञ्चन्ति - वे.। सिञ्चन्ति अध्वर्यवः - सा.। प्राप्नुवन्ति - दया.।

*प्राप्त होते हैं पके (धान)* - **भुरजन्त पक्वाः**। पक्वाः रश्मयः अन्नं भरन्ति - वे.। पक्वा यवा प्राप्नुवन्ति - सा.। प्राप्नुवन्ति परिपक्वज्ञानाः परिपक्वस्वरूपा वा - दया.। the boiled (barley) may be united with the libation offered to you - W. have they dressed for you as daily viands - G.

**सिन्धुर् ह वां रसया सिञ्चद् अश्वान् घृणा वयो ऽरुषासः परि ग्मन्।**
**तद् ऊ षु वाम् अजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः।। ६।।**

सिन्धुः। ह। वाम्। रसया। सिञ्चत्। अश्वान्। घृणा। वयः। अरुषासः। परि। ग्मन्।
तत्। ऊँ इति। सु। वाम्। अजिरम्। चेति। यानम्। येन। पती इति। भवथः। सूर्यायाः।। ६।।

*सिन्धु निश्चय से तुम्हारे, जलधारा से सींचता है, अश्वों को,*
*दीप्ति के साथ रश्मियां आरोचमान, सब ओर गमन करती हैं।*
*वह निश्चय से सम्यक् तुम्हारा, अचिर जान लिया जाता है यान,*
*जिससे पालन करने वाले हो तुम, सूर्य की पुत्री के।। ६।।*

हे आत्मा और परमात्मा! समुद्र, मेघ और नदियां मानो अपनी जलधाराओं से, तुम्हारे गमनसाधनों में जुतकर उन्हें गति देने वाली शक्तियों को सींचती हैं, उन्हें शक्ति प्रदान करती हैं। दीप्तिमती ज्ञानरश्मियां मानो अपनी दीप्तियों के साथ तुम्हारी सब ओर गमन करती हैं, तुम्हारी परिक्रमा करती हैं। चूँकि तुम ज्ञानरूपी सूर्य की पुत्री प्रथमज्ञानरश्मि रूपी उषा का सदा पालन करते हो, उसे पुष्ट करते हो, इसलिये तुम्हारे उपासक तुम्हारे रथ को, तुम्हारे गतिसाधनों को अविलम्ब पहचान लेते हैं, उनका समुचित रूप से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

टि. *सिन्धु* - **सिन्धुः**। समुद्रः - वे.। सिन्धुः स्यन्दमानो मेघ उदकं वा - सा.। नदी समुद्रो वा - दया.। the flowing (stream) - W.

*जलधारा से* - **रसया**। स्वभूतया नद्या - वे.। रसेन - सा.। रसादिना - दया.। with moisture - W. with his wave - G.

*दीप्ति के साथ* - **घृणा**। दीप्त्या - वे.। सा.। प्रदीप्ताः - दया.। with lustre - W.

*रश्मियां* - **वयः**। रश्मयः - वे.। पक्षिसदृशा वेतारो वा अश्वाः - सा.। व्यापिनः - दया.। पक्षी के समान वेग वाले घोड़े - सात.। birds - W. birds : flying steeds - G.

*अचिर जान लिया जाता है* - **अजिरम् चेति**। क्षिप्रं ज्ञायते - वे.। अजिरं क्षिप्रनामैतत्। चेति ज्ञायते। सा.।

*पालन करने वाले* - **पती**। पालयितारौ वोढारौ - सा.। पालकौ - दया.। the lords - W. G.

*सूर्य की पुत्री के* - **सूर्यायाः**। सूर्यस्येयं कान्तिर् उषाः तस्याः - दया.।

**इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयम् अस्मे सुमतिर् वाजरत्ना।**

**उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्।। ७।। १९।।**

इहऽइंह। यत्। वाम्। समना। पपृक्षे। सा। इयम्। अस्मे इति। सुऽमतिः। वाजऽरत्ना।
उरुष्यतम्। जरितारम्। युवम्। ह। श्रितः। कामः। नासत्या। युवद्रिक्।। ७।।

*यहां, यहां, चूँकि तुम दोनों को, एक साथ युक्त करता हूँ (स्तुति से),*
*वह यह (है) हमपर सौमनस्य (तुम्हारा), हे रमणीय ऐश्वर्यों वालो।*
*रक्षा करो (मुझ) स्तुतिगायक की, तुम दोनों निश्चय से,*
*आश्रित कामना (हो गई है हमारी), हे सदासत्यो!, तुम्हारी ओर।। ७।।*

हे आत्मा और परमात्मा! चूँकि हम तुम दोनों की एक साथ स्तुतियां करते हैं, इसी लिये, हे रमणीय ऐश्वर्यों वालो!, हम उपासकों पर तुम्हारी यह महान् कृपादृष्टि हो रही है। तुम निश्चित रूप से स्तुतिगान करने वालों की रक्षा करते रहो। हे कभी असत्य न होने वालो! हमारी कामनाएं तुम्हारी ओर ही मुड़ गई हैं। हमारी सब आशाएं तुमपर ही ही आश्रित हैं।

टि. चूँकि - **यत्**। यस्मात्। यया वा सुमत्या। सा.।

*एक साथ* - **समना**। योग्या समानी - वे.। समानमनस्कौ। सदृशाव् इत्यर्थः। सा.। समनस्कौ - दया.। both like-minded - W.

*युक्त करता हूँ* - **पपृक्षे**। सम्पृक्ता भवति - वे.। सुमत्या स्तुत्या संयोजयामि - सा.। I associate you - W. I gratified you - G.

*हमपर* - **अस्मे**। अस्माकम् - वे.। अस्माकम् एव फलवती भवत्विति शेषः। सा.।

*सौमनस्य* - **सुमतिः**। स्तुतिः - वे.। शोभनस्तुतिः - सा.। शोभना प्रज्ञा - दया.। the earnest praise - W. your grace - G.

*हे रमणीय ऐश्वर्यों वालो* - **वाजरत्ना**। हे रमणीयधनौ - वे.। रमणीयान्नौ। अन्नं वै वाजः (शत. ब्रा. ९.३.४.१) इति श्रुतेः। सा.। वाजो बोधो रत्नं धनं ययोस् तौ - दया.। distributers of food - W. O ye rich in booty - G.

*आश्रित कामना (हो गई है)* - **श्रितः कामः**। कामः आप्तः - वे.। कामो ऽस्मदीयः श्रितः प्राप्तः - सा.। आश्रितः, कामः इच्छा - दया.। my desire is gratified - W. is my wish directed - G.

*तुम्हारी ओर* - **युवद्रिक्**। युवाम् एव प्रति गच्छन् - वे.। सा.। युवां प्राप्नुवन् - दया.। directed towards you - W. to you - G.

## सूक्त ४४

ऋषिः - पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ। देवता - अश्विनौ। छन्दः - त्रिष्टुप्। सप्तर्चं सूक्तम्।

**तं वां रथं वयम् अद्या हुवेम पृथुज्रयम् अश्विना संगतिं गोः।**
**यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर् गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम्।। १।।**

तम्। वाम्। रथम्। वयम्। अद्य। हुवेम। पृथुऽज्रयम्। अश्विना। सम्ऽगतिम्। गोः।
यः। सूर्याम्। वहति। वन्धुरऽयुः। गिर्वाहसम्। पुरुऽतमम्। वसुऽयुम्।। १।।

*उसको तुम्हारे रथ को, हम आज बुलाते हैं,*
*विस्तृत वेग वाले को, हे अश्वियो!, मिलाने वाले को रश्मि के।*
*जो सूर्या को वहन करता है, बैठने के लिये स्थानों वाला,*
*स्तुतियों को वहन करने वाला, विशाल, निवास को चाहने वाला।। १।।*

हे आत्मा और परमात्मा! हम उपासक जन इस समय तुम्हारे यानभूत इस शरीर अथवा जगत् का आह्वान करते हैं, इसकी प्रशंसा करते हैं। यह विस्तृत वेग वाला है और ज्ञानरश्मियों से हमारा मेल कराने वाला है। इस जगत् में मानव शरीर प्राप्त करने से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। मानव योनि के अतिरिक्त किसी अन्य योनि में ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नहीं है। यह शरीररूपी रथ ज्ञानरूपी सूर्य की पुत्री अर्थात् प्रारम्भिक ज्ञानरश्मिरूपी उषा को वहन करता है। इसमें ज्ञानरश्मियों के संचय के लिये स्थान का प्रावधान है। यह तुम्हारे लिये स्तुतियों को वहन करता है। यह विशाल है और तुम दोनों के निवास को चाहने वाला है।

टि. *विस्तृत वेग वाले को* - **पृथुज्रयम्**। पृथुवेगम् - वे.। प्रथितवेगम् - सा.। दया.।

*मिलाने वाले को रश्मि के* - **सङ्गतिं गोः**। सङ्गमनम् उदकस्य - वे.। गां गवां सङ्गमयितारम् - सा.। associator of the solar ray - W. the gathering of the sun-light - G.

*बैठने के लिये स्थानों वाला* - **वन्धुरायुः**। वन्धुरवान् - वे.। रथे निवासाधारभूतः काष्ठो वन्धुरं तद्वान् - सा.। banked - W. fitted with seats - G.

*स्तुतियों को वहन करने वाला* - **गिर्वाहसम्**। गिरां वोढारम् - वे.। स्तुतीनां वोढारम् - सा.। laden with praises - W. praised in hymns - G.

*निवास चाहने वाला* - **वसुयुम्**। धनानीच्छन्तम् - वे.। वसुमन्तम् - सा.। wealthy - W. G.

**युवं श्रियम् अश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः।**
**युवोर् वपुर् अभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत् ककुहासो रथे वाम्।। २।।**

युवम्। श्रियम्। अश्विना। देवता। ताम्। दिवः। नपाता। वनथः। शचीभिः।
युवोः। वपुः। अभि। पृक्षः। सचन्ते। वहन्ति। यत्। ककुहासः। रथे। वाम्।। २।।

*तुम दोनों श्री को, हे अश्वियो!, प्रकाशमान, उसको,*
*हे द्युलोक को गिरने न देने वालो!, भोगते हो, शक्तियों से (अपनी)।*
*तुम दोनों के सुन्दर स्वरूप से, सब ओर से अन्न युक्त होते हैं,*
*वहन करती हैं जब दिशाएं, रथ में तुम दोनों को।। २।।*

हे प्रकाशलोक को धारण करने वाले आत्मा और परमात्मा! दिव्यता आदि गुणों से युक्त तुम दोनों अपनी शक्तियों के द्वारा श्री का भोग करते हो। चूँकि सब दिशाएं इस जगत् रूपी रथ में विराजमान तुम दोनों को वहन कर रही हैं, अर्थात् तुम इस जगत् के अन्दर सब दिशाओं में व्याप्त हो, इसलिये सब प्रकार के हव्य, नैवेद्य और समर्पण तुम्हारे स्वरूप को सब ओर से प्राप्त हो रहे हैं।

टि. *श्री को* - **श्रियम्**। लक्ष्मीम् - दया.। glory - W.

*प्रकाशमान* - **देवता**। देवतानां मध्ये - वे.। देवते। विभक्तिव्यत्ययः। सा.। दिव्यगुणसम्पन्नौ -

दया.। divinities - W. by your Godhead - G.

*द्युलोक को गिरने न देने वालो* - **दिवः नपाता**। देवपुत्रौ - वे.। आदित्यस्य पुत्रस्थानीयौ द्युलोकस्य वा न पातयितारौ - सा.। द्युलोकस्य पातरहितौ - दया.। grandsons of heaven - W.

*भोगते हो* - **वनथः**। प्रयच्छथः - वे.। वनथः संभजेथे। यद्वा। वनतिर् दानार्थः। सा.। संसेवेथाम् - दया.। you enjoy - W. ye gained - G.

*शक्तियों से* - **शचीभिः**। कर्मभिः शक्तिभिर् वा - सा.। प्रज्ञाभिः - दया.। by your actions - W. by your own might and power - G.

*सुन्दर स्वरूप को* - **वपुः**। शरीरम् - वे.। सा.। दया.। to your persons - W. upon your bright appearing - G.

*दिशाएं* - **ककुहासः**। अश्वाः - वे.। महान्तो ऽश्वाः। यद्वा। स्तुतयः। सा.। दिशः - दया.। powerful horses - W. stately horses - G.

**को वाम् अद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वाऽर्कैः।**
**ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत्।। ३।।**

कः। वाम्। अद्य। करते। रातऽहव्यः। ऊतये। वा। सुतऽपेयाय। वा। अर्कैः।
ऋतस्य। वा। वनुषे। पूर्व्याय। नमः। येमानः। अश्विना। आ। ववर्तत्।। ३।।

*कौन तुम दोनों को आज बुलाता है, दिये हुए हव्यों वाला,*
*समृद्धि के लिये और सोम के पान के लिये, स्तुतियों से।*
*ऋत के भी सेवन के लिये, पुरातन काल से आने वाले के लिये,*
*नमस्कारों को प्रदान करता हुआ, हे अश्वियो!, इधर लाता है।। ३।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम्हें अपनी भेंट और पूजापा समर्पित करने वाला वह कौन सौभाग्य-वान् उपासक है, जो अपनी रक्षा समृद्धि आदि के लिये, आनन्दरस की प्राप्ति के लिये और आदि काल से चले आ रहे सत्यनियम का पालन करने का सामर्थ्य प्राप्त करने के लिये आज तुम्हें अपनी स्तुतियों के द्वारा पुकार रहा है, और जो अपने नमस्कार प्रदान करता हुआ तुम्हें अपनी ओर आकृष्ट कर रहा है? निःश्रेयस और अभ्युदय की कामना वाला और सत्यतनयम का पालन करने वाला कोई सौभाग्यवान् उपासक ही तुम्हें पुकारता है।

टि. *बुलाता है* - **करते**। आकरोति आकारयति।। करोति - वे.। दया.। करते कुर्यात् स्तुतिम् - सा.। addresses you - W. bringeth - G.

*दिये हुए हव्यों वाला* - **रातहव्यः**। दत्तहविष्कः - वे.। रातहव्यः दत्तसोमः - सा.।

*ऋत के भी सेवन के लिये* - **ऋतस्य वा वनुषे**। यज्ञस्य वा भजनाय - वे.। उदकस्य यज्ञस्य वा संभजनाय - सा.। सत्यस्य वा याचसे - दया.। for the fulfilment of sacrifice - W. for the sacrifice's lover - G.

*पुरातन काल से आने वाले के लिये* - **पूर्व्याय**। पुरातनाय - वे.। सा.।

*नमस्कारों को प्रदान करता हुआ* - **नमः येमानः**। अन्नं नियच्छन् - वे.। नमस्कारं कुर्वाणः -

सा.। अन्नं नियच्छन्तः - दया.। offerer of adoration - W. offering homage - G.

**हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम्।**
**पिबाथ इन् मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय।। ४।।**

हिरण्ययेन। पुरुभू इति पुरुऽभू। रथेन। इमम्। यज्ञम्। नासत्या। उप। यातम्।
पिबाथः। इत्। मधुनः। सोम्यस्य। दधथः। रत्नम्। विधते। जनाय।। ४।।

*सुवर्ण के वर्ण वाले से, हे सर्वव्यापको!, रथ से,*
*इस यज्ञ में, हे असत्य न होने वालो!, पहुँचो तुम।*
*पान करो निश्चय से मधु का, सोमयुक्त का,*
*प्रदान करो रमणीय धन को, उपासक जन को।। ४।।*

हे सभी स्थानों में निवास करने वाले, कभी असत्य न होने वाले आत्मा और परमात्मा! तुम सुवर्ण के वर्ण वाले इस प्रकाशरूपी ज्योतिर्मय गमनसाधन से हमारे प्रत्येक शुभ कर्म में पधारो। हमारे प्रत्येक शुभ कर्म को प्रकाश और ज्ञान के द्वारा सम्पन्न करो। हमने तुम्हारे लिये भक्तिरसरूपी सोम का सवन किया है। तुम इसका पान करो और हम उपासकों को रमणीय ऐश्वर्य प्रदान करो।

टि. हे *सर्वव्यापको* - **पुरुभू।** बहुषु भवन्तौ - वे.। बहु भवन्तौ - सा.। यौ पुरून् भावयतस् तौ - दया.। who are manifold - W. ye omnipresent - G.

*पान करो मधु का सोमयुक्त का* - **पिबाथः मधुनः सोम्यस्य।** सोमसम्बन्धिनो मधुररसस्य। कर्मणि षष्ठ्यौ। पिबाथः पिबथः। सा.। drink of the sweet Soma beverage - W.

*प्रदान करो* - **ददाथः।** धारयथः। दधतेर् दानार्थस्य लेटि रूपम्। सा.।

*उपासक जन को* - **विधते जनाय।** परिचरते जनाय - सा.। पुरुषार्थं कुर्वते जनाय - दया.। to the man who celebrates (your worship) - W. to the people who adore you - G.

**आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन।**
**मा वाम् अन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद् ददे नाभिः पूर्व्या वाम्।। ५।।**

आ। नः। यातम्। दिवः। अच्छ। पृथिव्याः। हिरण्ययेन। सुऽवृता। रथेन।
मा। वाम्। अन्ये। नि। यमन्। देवऽयन्तः। सम्। यत्। ददे। नाभिः। पूर्व्या। वाम्।। ५।।

*इधर हमारे पास गमन करो द्युलोक से, (इस) ओर पृथिवीलोक से,*
*सुवर्ण के वर्ण वाले के द्वारा, सुख से लुढ़कने वाले रथ के द्वारा।*
*मत तुमको दूसरे नियन्त्रण में करें, देवों को (तुमको) चाहने वाले,*
*भली प्रकार चूँकि बाँध रहा है बन्धन, पूर्व वाला, तुम दोनों को।। ५।।*

हे सर्वव्यापक आत्मा और परमात्मा! तुम द्युलोक और पृथिवीलोक में जहां-कहीं भी हो, सुख से गति करने वाले अपने ज्योतिर्मय गमनसाधन के द्वारा हमारे पास आ जाओ। यहाँ अतिशय प्रेम के कारण भक्त ईर्ष्या से भरकर कह रहा है, कि हे मेरे उपास्यो! तुम्हें प्रेम करने वाले और भी बहुत से भक्त हैं। वे कहीं तुम्हें मार्ग में ही अपने वश में न कर लेवें। इसलिये तुम उनसे बचकर सीधे हमारे पास आ जाओ, क्योंकि हमने तुमको पहले से ही किये हुए अनुबन्धन में बाँध रखा है।

टि. *द्युलोक से पृथिवीलोक से* - **दिवः पृथिव्याः**। विस्तृतायाः दिवः - वे.। द्युलोकात् पृथिव्याः सकाशाद् वा - सा.। whether from heaven or earth - W. from earth, from heaven - G.

*सुख से लुढ़कने वाले के द्वारा* - **सुवृता**। सुवर्तनेन - वे.। शोभनावर्तनेन - सा.। शोभनावरणेन - दया.। with well-constructed - W. on (chariot) rolling lightly - G.

*मत दूसरे नियन्त्रण में करें देवों को चाहने वाले* - **मा अन्ये नि यमन् देवयन्तः**। मा अन्ये नि यच्छन्तु यजमानाः - वे.। अन्ये देवौ युवाम् इच्छन्तो यजमाना नियमनं मा कुर्वन् - सा.। मा अन्ये निग्रहं कुर्वन्तु कामयन्तः - दया.। let not other devout worshippers detain you - W. Suffer not other worshippers to stay you - G.

*भली प्रकार चूँकि बाँध रहा है* - **सम् यत् ददे**। यस्मात् अस्माभिः (प्रथमम् एव) स्तोत्रम् सम् आ ददे - वे.। यस्मात् संबध्नाति - सा.। awaits you (here) - W. are ye bound - G.

*बन्धन पूर्व वाला तुम दोनों को* - **नाभिः पूर्व्या वाम्**। प्रथमम् एव युवयोः बन्धनसाधनम् स्तोत्रम् - वे.। पूर्व्या पूर्वाहेतर् अयष्टृभ्यः पूर्वभाविनी नाभिर् बन्धिका स्तुतिः - सा.। a prior attraction - W. by earlier bonds of worship - G.

**नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथाम् उभयेष्वस्मे।**
**नरो यद् वाम् अश्विना स्तोमम् आवन् त्सधस्तुतिम् आजमीळ्हासो अग्मन्।। ६।।**

नु। नः। रयिम्। पुरुऽवीरम्। बृहन्तम्। दस्रा। मिमाथाम्। उभयेषु। अस्मे इति।
नरः। यत्। वाम्। अश्विना। स्तोमम्। आवन्। सधऽस्तुतिम्। आजऽमीळ्हासः। अग्मन्।। ६।।

*अब हमें धन को, बहुत वीरों वाले को, प्रभूत को,*
*हे शत्रुविनाशको!, प्रदान करो तुम दोनों, उभयविधों को हमको।*
*नायक चूँकि तुम्हें, हे अश्वियो!, स्तोत्र को समर्पित कर रहे हैं,*
*सहस्तुति के लिये भी, स्वामी को स्तुतियों से सींचने वाले पहुँच गए हैं।। ६।।*

हे हिंसकों का हनन करने वाले आत्मा और परमात्मा! क्योंकि दूसरों का मार्गदर्शन करने वाले स्तोता तुम्हें अपने स्तोत्र समर्पित कर रहे हैं और अपने उपास्य को विभिन्न स्तुतियों से सींचने वाले साधारण जन भी अपनी स्तुतियां तुम्हें समर्पित कर रहे हैं, इसलिये अब तुम यज्ञ आदि शुभ कर्म करने वालों और अपनी स्तुतियों से तुम्हें प्रसन्न करने वालों को, हम विशेष और साधारण उभयविध उपासकों को, उत्तम सन्तानों से युक्त प्रभूत धन प्रदान करो।

टि. *बहुत वीरों वाले को* - **पुरुवीरम्**। बहुपुत्रोपेतम् - सा.। बहवो वीरा यस्मात् तम् - दया.। with store of heroes - G.

*प्रदान करो तुम* - **मिमाथाम्**। कुरुतम् - वे.। सा.। विधत्तम् - दया.। mete out - W. G.

*उभयविधों को हमको* - **उभयेषु अस्मे**। उभयेषु अस्मासु पुरुमीढाजमीढेषु - वे.। सा.। राजप्रजाजनेष्वस्मासु - दया.। for us both, i.e. priests and patrons - G.

*समर्पित कर रहे हैं* - **आवन्**। गच्छन्ति - वे.। अगमन्। प्राप्ताः। सा.। प्राप्नुयाम - दया.। have addressed to you - W. have sent you - G.

*स्वामी को स्तुतियों से सींचने वाले* - **आजमीळ्हासः**। अजं नेतारं स्तुतिभिः सिञ्चन्ति ये ते।। अजमीढाः पुरुमीढाश् च - वे.। अजमीळ्हसम्बन्धिनो ऽपि - सा.। ये ऽजान् विद्यया सिञ्चन्ति तदपत्यानि - दया.।

**इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयम् अस्मे सुमतिर् वाजरत्ना।**
**उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्।। ७।। २०।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ४.४३.७ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त ४५

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अश्विनौ। छन्दः - जगती। सप्तर्चं सूक्तम्।

**एष स्य भानुर् उद् इयर्ति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि।**
**पृक्षासो अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दृतिस् तुरीयो मधुनो वि रप्शते।। १।।**

एषः। स्यः। भानुः। उत्। इयर्ति। युज्यते। रथः। परिऽज्मा। दिवः। अस्य। सानवि।
पृक्षासः। अस्मिन्। मिथुनाः। अधि। त्रयः। दृतिः। तुरीयः। मधुनः। वि। रप्शते।। १।।

*यह वह भानु उदित हो रहा है, जोता जा रहा है,*
*रथ, सब ओर जाने वाला, द्युलोक के इसके शिखर पर।*
*अन्न इसके ऊपर, मिथुनीभूत, तीन,*
*चर्मपात्र चौथा, मधु का, विराजता है।। १।।*

यह वह दीप्तिमान् सूर्य जिस समय उदित हो रहा है, उसी समय, हे आत्मा और परमात्मा!, ब्रह्माण्ड में सब ओर गति करने वाला तुम्हारा दीप्तिमान् रथ भी इस द्युलोक के उच्चतम स्थान में जुत गया है। इस रथ में एक ही स्रोत से उत्पन्न होने वाले, देवों, मनुष्यों और पशु-पक्षी आदि जीवों के जीवन के आधारभूत ये तीन प्रकार के अन्न लदे हुए हैं। चौथा इस रथ में आनन्दरस अथवा अमृत से परिपूर्ण वह पात्र, वह अमृतकलश, सुशोभित हो रहा है, जिसका पान केवल प्रभु के प्यारे भक्त जन ही कर सकते हैं।

टि. *उदित हो रहा है* - **उत् इयर्ति**। उत् एति - वे.। ऊर्ध्वं गच्छति - सा.।

*सब ओर जाने वाला* - **परिज्मा**। परितो गन्ता - वे.। सा.। परितः सर्वतो ज्यायां भूमौ गच्छति त्यजति वा। ज्मेति पृथिवीनाम (निघ. १.१)। दया.।

*द्युलोक के इसके शिखर पर* - **दिवः अस्य सानवि**। दिवः अस्य समुच्छ्रिते देशे - वे.। दिवो द्योतमानस्यादित्यस्य सानवि सानौ समुच्छ्रितप्रदेशे - सा.।

*अन्न तीन* - **पृक्षासः त्रयः**। खाद्यपेयाद्यभेदात् त्रिविधानि अन्नानि - वे.। त्रिविधानि अन्नानि। त्रेधा विहितं चान्नम्। इदम् अन्नम् अशनं पानं खादश् चेति हि श्रुतम्। सा.। सम्बद्धा वायुजलविद्युतः - दया.। three kinds of food - W. three shares of food - G.

*मिथुनीभूत* - **मिथुना**। संश्लिष्टानि - वे.। मिथुनीभूताः। त्रिष्वपि पदार्थेषु मिथुनशब्दस् तैत्तिरीयेषु दृश्यते। माता पिता पुत्रस् तद् एव तन् मिथुनम् इति। सा.। द्वन्द्वा द्वौ द्वौ मिलिताः - दया.। analogous

- W. kindred - G.

*चर्मपात्र* - दृतिः। भस्त्रा - वे.। रसद्रव्याधारः पदार्थश् चर्ममयो दृतिर् इत्युच्यते। सा.। मेघनाम एतत् (निघ. १.१०)। दया.।

*विराजता है* - वि रप्शते। वि राजते - वे.। विविधं राजते - सा.। विशेषेण राजते - दया.।

**उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु।**
**अपोर्णुवन्तस् तम आ परीवृतं स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः।। २।।**

उत्। वाम्। पृक्षासः। मधुऽमन्तः। ईरते। रथाः। अश्वासः। उषसः। विऽउष्टिषु।
अपऽऊर्णुवन्तः। तमः। आ। परिऽवृतम्। स्वः। न। शुक्रम्। तन्वन्तः। आ। रजः।। २।।

*ऊँचे से तुम्हारे अन्नवान् मधुर, उच्चारते हैं (स्तुतियों को),*
*रथवान्, अश्ववान् (भी), उषा के तमोविनाशक कालों में।*
*परे हटाते हुए तम को, सब ओर छाए हुए को,*
*सूर्य की तरह प्रकाशमान को, फैलाते हुए सर्वत्र तेज को।। २।।*

जिस समय उषा रात्रि के अन्धकारों को अपनी रश्मियों से दूर भगाती है, उस ब्राह्ममुहूर्त में मधुर रस से युक्त तुम्हारे पवित्र अन्नों का भक्षण करने वाले, रथों पर आरोहण करने वाले और घोड़ों पर सवार होने वाले अर्थात् साधनसम्पन्न मनुष्य तुम्हारी स्तुतियों का उच्चारण करते हैं। हे आत्मा और परमात्मा! जिस प्रकार सूर्य छाए हुए अन्धकार को परे हटाता हुआ अपने प्रकाशमान तेज को सब ओर फैलाता है, उसी प्रकार वे स्तोता तुम्हारी स्तुतियों से अपने अज्ञान-अन्धकार को परे हटाते हुए अपने हृदयाकाश में ज्ञान के प्रकाश का विस्तार करते हैं।

टि. *ऊँचे से उच्चारते हैं (स्तुतियों को)* - उत् ईरते। स्तुतीः उच्चारयन्ति - स्कन्द. (ऋ. १.८३.३)। उत् गच्छन्ति - वे.। appear - W. forth come - G.

*अन्नवान्, रथवान् अश्ववान्, (भी)* - **पृक्षासः रथाः अश्वासः**। पृक्षवन्तो ऽन्नवन्तः, रथवन्तो ऽश्ववन्तश् च। अत्र सर्वत्र मतुपो लोपः। अथाप्यस्यां ताद्धितेन कृत्स्नवन् निगमा भवन्ति (नि. २.५)। अथवा 'मञ्चाः क्रोशन्ति' इति वत् लाक्षणिका इमे प्रयोगाः।। अन्नादीनि रथाः अश्वाः च - वे.। पृक्षासः पृक्षास् त्रिविधान्नवन्तो ऽश्वासो ऽश्वयुक्ता रथाः। यद्वा। पृक्षा रथा अश्वाः। सा.।

*परे हटाते हुए तम को* - **अपोर्णुवन्तः तमः**। तमः अपगमयन्तः - वे.। अपोर्णुवन्तस् तमो ऽपाकुर्वन्तः - सा.। निवारयन्तो रात्रीम् - दया.।

*सब ओर छाए हुए को* - **परीवृतम्**। परिवृत्य स्थितम् - वे.। परितो व्याप्तम् - सा.। सर्वत आवृतम् - दया.।

*सूर्य की तरह प्रकाशमान को फैलाते हुए* - **स्वः न शुक्रम् तन्वन्तः**। उदकम् इव निर्मलं (ज्योतिः सर्वतः) विस्तारयन्तः - वे.। आदित्य इव दीप्तं (तेजः) तन्वन्तः - सा.। आदित्य इव शुद्धं विस्तृणन्तः - दया.।

*सर्वत्र तेज को* - **आ रजः**। ज्योतिः सर्वतः - वे.। रजस् तेजः। आकारश् चार्थे। सा.। रजः लोकलोकान्तरम् - दया.।

**मध्वः पिबतं मधुपेभिर् आसभिर् उत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम्।**
**आ वर्तनिं मधुना जिन्वथस् पथो दृतिं वहेथे मधुमन्तम् अश्विना।। ३।।**

मध्वः। पिबतम्। मधुऽपेभिः। आसऽभिः। उत। प्रियम्। मधुने। युञ्जाथाम्। रथम्।
आ। वर्तनिम्। मधुना। जिन्वथः। पथः। दृतिम्। वहेथे इति। मधुऽमन्तम्। अश्विना।। ३।।

*मधु का पान करो तुम, मधु का पान करने वाले मुखों से,*
*और प्रिय को, मधु के लिये, जोतो तुम रथ को।*
*सब ओर से बटिया को, मधु से सींचो तुम, (सींचो) मार्गों की,*
*चर्मपात्र को वहन करो तुम, मधु वाले को, हे अश्वियो।। ३।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम सदा आनन्द का पान करने के अभ्यासी हो, इसलिये तुम सदा आनन्द का ही पान करते रहो। तुम सदा अपने साधनों का उपयोग आनन्द की प्राप्ति करने और कराने के लिये ही करते रहो। जिन-जिन छोटे-बड़े मार्गों से तुम गमन करते हो, उन-उन सभी स्थानों को तुम आनन्दरस से सींच डालो। उनको सब ओर से जीवन के आनन्द से भर दो। तुम आनन्द से परिपूर्ण अमृतकलश को हमारी ओर ले आओ। आनन्द का पान तुम स्वयं भी करो और हमें भी उसका पान कराओ।

टि. *मधु का पान करने वाले मुखों से* - **मधुपेभिः आसभिः।** सोमपैः आस्यैः - वे.। सोमपानार्हैर् आस्यैः - सा.। with lips accustomed to the draught - G.

*बटिया को मधु से सींचो तुम मार्ग की* - **वर्तनिम् मधुना जिन्वथः पथः।** सिञ्चतं मार्गस्य पद्धतिम् गमनमार्गम् - वे.। वर्तनिं यजमानगृहम् आगच्छतम् इति शेषः। पथो गमनमार्गान् मधुना जिन्वथः प्रीणयतम्। यद्वैकं वाक्यम्। पथो वर्तनिम् आकाशं जिन्वथः। सा.। वर्तनिम् वर्तन्ते यस्मिंस् तं मार्गम्, मधुना माधुर्यगुणोपेतेन, जिन्वथः गच्छथः, पथः मार्गान् - दया.। Refresh the way ye go, refresh the paths - G.

**हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्रिधो हिरण्यपर्णा उहुव उषर्बुधः।**
**उदप्रुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सवनानि गच्छथः।। ४।।**

हंसासः। ये। वाम्। मधुऽमन्तः। अस्रिधः। हिरण्यऽपर्णाः। उहुवः। उषःऽबुधः।
उदऽप्रुतः। मन्दिनः। मन्दिऽनिस्पृशः। मध्वः। न। मक्षः। सवनानि। गच्छथः।। ४।।

*हंस जो तुम्हारे (हैं) माधुर्य वाले, हिंसा न करने वाले,*
*सुनहरे पंखों वाले, वहन करने वाले, उषाकाल में जागने वाले।*
*जलों को लाँघ जाने वाले, आनन्दों वाले, आनन्द का स्पर्श कराने वाले,*
*मधु की ओर जैसे मधुमक्खियां, सवनों की ओर जाते हो तुम (उनसे)।। ४।।*

हंस का एक अर्थ अश्व भी है। हंस अथवा अश्व दोनों ही अर्थ तीव्र गति के प्रतीक हैं। यहाँ कहा गया है, कि हे आत्मा और परमात्मा! तुम्हारी तीव्र गतियां माधुर्यपूर्ण अर्थात् मनोरम हैं, किसी की हिंसा न करने वाली हैं, सुनहरे पंखों वाली अर्थात् तेजों से युक्त हैं, शीघ्रता से वहन करने वाली हैं, उषाकाल अर्थात् सृष्टि के आरम्भ में ही प्रारम्भ हो जाने वाली हैं, बड़े-बड़े जलसमूहों को लाँघ

जाने वाली हैं, स्वयं आनन्दमय हैं और अन्यों को आनन्द प्राप्त कराने वाली हैं। तुम यज्ञ आदि हमारे शुभ कर्मों में आनन्द की प्राप्ति के लिये अपनी इन गतियों से इस प्रकार पधारो, जिस प्रकार मधुमक्खियां मधु की ओर तीव्र गति से पहुँचती हैं।

टि. *हंस* - **हंसासः**। अश्वाः - वे.। अध्वनि शीघ्रं गन्तारः - सा.। हंस इव सद्यो गन्तारो ऽश्वाः। हंसास इत्यश्वाः (निघ. १.१४)। दया.। swans : the Aśvin's chariot-steeds - G.

*हिंसा न करने वाले* - **अस्रिधः**। अक्षीणाः - वे.। अद्रोग्धारः - सा.। अहिंसिताः - दया.। friendly - G.

*वहन करने वाले* - **उहुवः**। वोढारः - वे.। सा.। strong to draw - G.

*जलों को लाँघ जाने वाले* - **उदप्रुतः**। उदकस्य गमयितारः - वे.। दया.। उदप्रुतः उदकस्य प्लावयितारः - सा.। swimming the flood - G.

*आनन्दों का स्पर्श कराने वाले* - **मन्दिनिस्पृशः**। सोमस्य निष्प्रष्टारः - वे.। मन्दिनं सोमं स्पृशन्तः - सा.। sipping the Soma-juice - W.

*मधु की ओर जैसे मधुमक्खियां* - **मध्वः न मक्षः**। मधूनि इव मक्षिकाः - वे.। मधुनः इव मक्षिराजः - दया.। as flies to honey - W.

**स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्नय उस्रा जरन्ते प्रति वस्तोर् अश्विना।**
**यन् निक्तहस्तस् तरणिर् विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तम् अद्रिभिः।। ५।।**

सुऽअध्वरासः। मधुऽमन्तः। अग्नयः। उस्रा। जरन्ते। प्रति। वस्तोः। अश्विना।
यत्। निक्तऽहस्तः। तरणिः। विऽचक्षणः। सोमम्। सुसाव। मधुऽमन्तम्। अद्रिऽभिः।। ५।।

*शोभन यज्ञों वाले, सोमों वाले, अग्नि,*
*प्रकाशमानों की स्तुति करते हैं, उषाकाल में, अश्वियों की।*
*जब धोए हाथों वाला, कर्मकर्त्ता, दूरद्रष्टा,*
*सोम का सवन करता है, माधुर्ययुक्त का, ग्रावों से।। ५।।*

जिस समय ब्राह्ममुहूर्त्त में धोकर शुद्ध किये हाथों वाला, यज्ञकर्मों का निष्पादन करने वाला, दूरद्रष्टा यजमान ग्रावों से मधुर सोम का सवन करता है, उसी समय शोभन यज्ञों का सम्पादन करने वाली, सोम की आहुतियों को स्वीकार करने वाली यज्ञ की अग्नियां तेजों वाले आत्मा और परमात्मा का स्तुतिगान करती हैं। भाव यह है, कि प्रातःकाल में सवन किये जाने वाले सोम और अग्नियों के माध्यम से दी जाने वाली आहुतियां सब आत्मा और परमात्मा को ही समर्पित होती हैं।

टि. *शोभन यज्ञों वाले* - **स्वध्वरासः**। शोभनयज्ञाः - वे.। शोभनयागसाधनाः - सा.।

*प्रकाशमानों की* - **उस्रा**। यजमानानां होतृत्वम् आस्थिताः - वे.। उस्रा सह निवसन्तौ - सा.। रश्मीन्। उस्रा इति रश्मिनाम. (निघ. १.५)। दया.। associated - W.

*स्तुति करते हैं* - **जरन्ते**। स्तुवन्ति - वे.। सा.। दया.।

*उषाकाल में* - **प्रति वस्तोः**। अह्नि - वे.। अन्वहम् - सा.। at the break of the day - G.

*धोए हाथों वाला* - **निक्तहस्तः**। निर्णिक्तहस्तः - वे.। समन्त्रेणोदकेन शोधितहस्तः - सा.।

शुद्धहस्तः - दया.। with washed hands - W. with pure hands - G.

*कर्मकर्त्ता* - तरणिः। क्षिप्रकारी - वे.। कर्मणस् तारयिता - सा.। दुःखेभ्यस् तारकः - दया.। the conductor of the rite - W. energetic - G.

**आकेनिपासो अहभिर् दविध्वतः स्वर् ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः।**
**सूरश् चिद् अश्वान् युयुजान ईयते विश्वाँ अनु स्वधया चेतथस् पथः।। ६।।**

आकेऽनिपासः। अहऽभिः। दविध्वतः। स्वः। न। शुक्रम्। तन्वन्तः। आ। रजः।
सूरः। चित्। अश्वान्। युयुजानः। ईयते। विश्वान्। अनु। स्वधया। चेतथः। पथः।। ६।।

*निकट में आने वाली रश्मियां, दिनों में कँपाती हुई (तमों को),*
*सूर्य की तरह प्रकाशमान का विस्तार करती हुई, सर्वत्र तेज का।*
*सूर्य भी आशुगामिनी किरणों को, जोतता हुआ गमन करता है,*
*सब का, अनुसार स्वेच्छा के, ज्ञान कराते हो तुम मार्गों का।। ६।।*

सूर्य की रश्मियों की तरह उपासकों के हृदयों के निकट पहुँचने वाली तुम्हारी ज्ञानरश्मियां सभी दिनों में उनके अज्ञानान्धकार को ध्वस्त कर डालती हैं और अपने प्रकाशमान तेज का सब ओर विस्तार कर देती हैं। तुम्हारे मार्गदर्शन में ही सूर्य भी अपनी आशुगामिनी किरणों को रथ में जोतकर अपने मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। इस प्रकार, हे आत्मा और परमात्मा!, तुम अपनी इच्छा के अनुसार सब को उनके मार्गों का ज्ञान कराते चलते हो।

टि. *निकट में जाने वाली रश्मियां* - **आकेनिपासः।** आसन्ने प्रातःसवने नितरां पातारः - वे.। आके ऽन्तिके निपतन्तीति आकेनिपा रश्मयः - सा.। य आके समीपे नितरां यान्ति ते किरणाः - दया.। the near-advancing (rays) - W. G.

*दिनों में* - **अहभिः।** दिवसेभ्यः - वे.। अहोभिः - सा.। दिनैः। अत्र वा च्छन्दसीति रुत्वाभावः नलोपश् च - दया.। by the light of day - W. with day - G.

*कँपाती हुई* - **दविध्वतः।** धूनयन्तः - वे.। कम्पयन्तो ध्वंसयन्तो वा तमांसि - सा.। पदार्थान् ध्वंसयन्तः - दया.। dispersing (the darkness) - W. chasing (the gloom) - G.

*अनुसार स्वेच्छा के* - **अनु स्वधया।** अन्नेनोदकेन वा प्रदित्सितेन सह - वे.। अनु अनुक्रमेण स्वधयान्नेन सोमलक्षणेन - सा.। with sacrificial food - W. through your godlike nature - G.

*ज्ञान कराते हो* - **चेतथः।** जानीथः - वे.। चेतयथः प्रज्ञापयथः - सा.। दया.।

**प्र वाम् अवोचम् अश्विना धियंधा**
**रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति।**
**येन सद्यः परि रजांसि याथो**
**हविष्मन्तं तरणिं भोजम् अच्छ।। ७।। २१।। ४।।**

प्र। वाम्। अवोचम्। अश्विना। धियम्ऽधाः। रथः। सुऽअश्वः। अजरः। यः। अस्ति।
येन। सद्यः। परि। रजांसि। याथः। हविष्मन्तम्। तरणिम्। भोजम्। अच्छ।। ७।।

*खूब तुम्हारा स्तवन करता हूँ मैं, हे अश्वियो! चिन्तनों को धारण करने वाला,*

*रथ, शोभन अश्वों वाला, जीर्ण न होने वाला (कभी) जो (तुम्हारा) है।*
*जिससे अविलम्ब सब ओर लोकों में जाते हो तुम दोनों,*
*हविष्मान् की, तारक की, पालक की ओर (यज्ञ की, उससे आ जाओ)।। ७।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! उच्च विचारों और उदात्त भावनाओं को धारण करने वाला मैं तुम्हारा उपासक तुम्हारी तन्मयता से स्तुति और उपासना करता हूँ। हे मेरे उपास्य देवो! सुन्दर अश्वों वाला, कभी पुराना और क्षीण न होने वाला जो तुम्हारा रथ है, अर्थात् उत्तम शक्तियों से युक्त कभी शिथिल न होने वाला तुम्हें सब ओर भ्रमण कराने वाला तुम्हारा जो अद्वितीय सामर्थ्य है, तुम उससे पालन करने वाले, भवसागर से पार उतारने वाले, समर्पणों से युक्त मेरे अन्तर्यज्ञ में पधारो।

टि. *खूब स्तवन करता हूँ मैं* - **प्र अवोचम्**। प्रब्रवीमि स्तौमि - सा.। I glorify - W. Ihave declared - G.

*चिन्तनों को धारण करने वाला* - **धियंधाः**। कर्मणो विधाता - वे.। कर्मणां धारकः - सा.। यो धियं प्रज्ञां शिल्पविद्यां कर्म दधाति - दया.। celebrating rites - W. devout in thought - G.

*सब ओर लोकों में जाते हो* - **परि रजांसि याथः**। सर्वान् लोकान् परि गच्छथः - वे.। सा.। लोकान् ऐश्वर्याणि वा गच्छथः - दया.।

*तारक की (ओर)* - **तरणिम्**। क्षिप्रकारिणम् - वे.। तारकं शीघ्रगामिनम् - सा.। तारकम् - दया.। promptly passing away - W. prompt - G.

*पालक की ओर* - **भोजम् अच्छ**। यजमानं प्रति - वे.। भोजयितारम् अस्मद्यागं प्राप्तुम् आगच्छतम् इति शेषः - सा.। भोक्तुं योग्यम् अच्छ - दया.। to yielder of enjoyment - W. to worshipper - G.

## सूक्त ४६

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रवायू। छन्दः - गायत्री। सप्तर्चं सूक्तम्।

**अग्रं पिबा मधूनां सुतं वायो दिविष्टिषु।**
**त्वं हि पूर्वपा असि।। १।।**

अग्रम्। पिब। मधूनाम्। सुतम्। वायो इति। दिविष्टिषु। त्वम्। हि। पूर्वऽपाः। असि।। १।।

*उत्तम का पान कर तू, मधुर सोमों के,*
*सवन किये हुए रस का, हे वायो!, यज्ञों में।*
*तू चूँकि, सबसे पहले पान करने वाला है।। १।।*

वायु प्राणशक्ति है। बाह्य जगत् में हम यज्ञ आदि जो भी शुभ कर्म करते हैं और हमारे आभ्यन्तर जगत् में जो अन्तर्यज्ञ प्रवर्तमान है, उनमें चलने वाली आध्यात्मिक प्रक्रियाओं से जिस आनन्द की प्राप्ति हमें होती है, उसका सर्वप्रथम भोक्ता प्राण ही है। इसलिये इस मन्त्र में उससे प्रार्थना की गई है, कि आनन्द का सर्वप्रथम पान करने वाला होने के कारण वह हमारे अन्तर्यज्ञ में सवन किये हुए श्रेष्ठ आनन्द का सर्वप्रथम पान करे।

टि. *उत्तम का पान कर तू* – **अग्रम् पिब**। इन्द्रादिभ्यः पूर्वं पिब – सा.। अग्रम् उत्तमम्। पिबेत्यत्र द्व्यचो ऽतस् तिङ इति दीर्घः। दया.। drink first - W. drink the best draught - G.

*मधुर सोमों के* – **मधूनाम्**। सोमानाम् – वे.। मधुररसानां सोमानाम् – सा.। मधूनां मधुराणां रसानां मध्ये – दया.। of Soma - G.

*यज्ञों में* – **दिविष्टिषु**। दिवसस्यागमनेषु – वे.। दिवः स्वर्गस्य प्रापकेषु यज्ञेषु। यद्वा। अस्माकं दिवः स्वर्गस्यैषणेषु निमित्तेषु। सा.। दिव्यासु क्रियासु – दया.। at the rites that secure heaven - W. at our holy rites - G.

*सबसे पहले पान करने वाला* – **पूर्वपाः**। त्वं हि पूर्वं पिबसि – वे.। वायोर् अग्रपानं प्रसिद्धम् – सा.। यः पूर्वान् पाति सः – दया.। the first drinker - W. G.

**शतेना नो अभिष्टिभिर् नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः।**
**वायो सुतस्य तृम्पतम्।। २।।**

शतेन। नः अभिष्टिऽभिः। नियुत्वान्। इन्द्रऽसारथिः। वायो इति। सुतस्य। तृम्पतम्।। २।।

*असंख्यों के साथ, हमारे पास, अभीष्टों के, (आ जाओ),*
*अश्वों पर आरोहण करने वाला, इन्द्र के साथ वाला।*
*हे वायो! (तू और इन्द्र), सोम से तृप्त होवो दोनों ।।*

हे प्राण! तू इन्द्रियों अथवा बलों पर आरोहण करने वाला है। जीवात्मा सदा तेरे साथ चलने वाला और तेरी सहायता करने वाला है। वही तेरी शक्ति का आधार है। उसके बिना तू कुछ भी नहीं कर सकता। हे प्राण तू और जीवात्मा तुम दोनों हमारी भक्ति के आनन्द का पान करो और हमारी असंख्य अभिलाषाओं की पूर्ति के साथ हमारे पास आ जाओ, हमारे शरीर में सम्यक् निवास करो।

टि. *असंख्यों के साथ अभीष्टों के* – **शतेन अभिष्टिभिः**। बहुभिः आगमनैः – वे.। शतेनापरिमितैर् अभिष्टिभिर् अभित एषणीयैः कामैर् निमित्तभूतैः – सा.। शतेन असंख्येन अभिष्टिभिः अभीष्टाभिः क्रियाभिः – दया.। (come for the fulfilment) of our numerous wishes - W. with thy hundred helps - G.

*अश्वों पर आरोहण करने वाला* – **नियुत्वान्**। नियुद्भिस् तद्वान् – सा.। बलवान् समर्थो वायुः – दया.। team-drawn - G.

*इन्द्र के साथ वाला* – **इन्द्रसारथिः**। इन्द्रसहायः सन् – सा.। इन्द्रो विद्युत् सारथिर् यस्य सः – दया.। who hast Indra for charioteer - W. with Indra seated in the car - G.

*सोम से तृप्त होवो दोनों* – **सुतस्य तृम्पतम्**। सोमेन तृप्यतम् – वे.। सुतस्य सुतम् अभिषुतं सोमं तृम्पतं पिबतम् – सा.। drink of the libation - W. drink your fill of juice - G.

**आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः।**
**वहन्तु सोमपीतये।। ३।।**

आ। वाम्। सहस्रम्। हरयः। इन्द्रवायू इति। अभि। प्रयः। वहन्तु। सोमऽपीतये।। ३।।

*इस ओर तुम दोनों को हजार अश्व,*

*हे इन्द्र और वायो! अभिमुख अन्न के।*
*वहन करें, सोमपान के लिये।। ३।।*

हे जीवात्मा और प्राण! तुम्हारे असंख्य बलशाली गतिसाधन तुम दोनों को तुम्हारे तृप्तिकारक भोजन, हमारे भक्तिरस के पान के निमित्त इस ओर वहन करें।

टि. हजार *अश्व* – **सहस्रम् हरयः।** बहवः अश्वाः – वे.। सहस्रसंख्याका अश्वाः। अत्र हरिशब्दो ऽश्वसामान्यवचनः। सा.। सहस्रम् असंख्यम्। हरयः हरणशीला मनुष्याः। दया.।

*अभिमुख अन्न के* – **अभि प्रयः।** अस्माकम् अन्नार्थम् – वे.। अन्नं प्रति – सा.। प्रयः कमनीयम् – दया.। eager for food - W. to the feast - G.

**रथं हिरण्यवन्धुरम् इन्द्रवायू स्वध्वरम्।**
**आ हि स्थाथो दिविस्पृशम्।। ४।।**

रथम्। हिरण्यऽवन्धुरम्। इन्द्रवायू इति। सुऽअध्वरम्। आ। हि। स्थाथः। दिविऽस्पृशम्।। ४।।

*रथ पर, सुनहरे आसनों वाले पर,*
*हे इन्द्र और वायो!, शोभन यज्ञों वाले पर।*
*स्थित होते हो तुम, द्युलोक का स्पर्श कराने वाले पर।। ४।।*

हे जीवात्मा और प्राण! यह शरीर तुम्हारा रथ है। इसके अन्दर तुम्हारे निवास के लिये बहुत सुन्दर स्थान बने हुए हैं। यह शरीर यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करने के लिये मुख्य साधन है (शरीरम् आद्यं खलु धर्मसाधनम् – कालिदासः)। शेष सब योनियां तो मात्र भोग योनियां हैं। मानव शरीर ही केवल ऐसी योनि है, जिसमें यज्ञ आदि शुभ कर्म करके मनुष्य स्वर्ग अथवा मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। तुम ऐसे शरीररूपी उत्तम रथ में सवार हो।

टि. *शोभन यज्ञों वाले पर* – **स्वध्वरम्।** शोभनयज्ञहेतुम् – वे.। शोभनाध्वरवन्तम् – सा.। सुष्ठु अध्वरा अहिंसिता क्रिया यस्मात् तम् – दया.। propitious to sacrifice - W. that aids the sacrifice - G.

*स्थित होते हो तुम* – **आ हि स्थाथः।** आ तिष्ठतः हि – वे.। आस्थितौ खलु – सा.। भवथः – दया.। mount - W. G.

*द्युलोक का स्पर्श कराने वाले पर* – **दिविस्पृशम्।** दीप्तेः स्रष्टारम् – वे.। द्युलोकस्पर्शिनम् – सा.। दिवि स्पृशति येन तम् – दया.। soaring to heaven - W. that reaches heaven - G.

**रथेन पृथुपाजसा दाश्वांसम् उप गच्छतम्।**
**इन्द्रवायू इहा गतम्।। ५।।**

रथेन। पृथुऽपाजसा। दाश्वांसम्। उप। गच्छतम्। इन्द्रवायू इति। इह। आ। गतम्।। ५।।

*रथ से, विशाल बल वाले से,*
*हविदाता के पास, गमन करो तुम।*
*हे इन्द्र और वायो! यहाँ आ जाओ।। ५।।*

हे जीवात्मा और प्राण! तुम दोनों देवों को हवि देने वाले परोपकारी मनुष्य के विशाल बल वाले

इस शरीर में निवास करो और उसे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर करो।

टि. *विशाल बल वाले से* - **पृथुपाजसा**। प्रभूतबलेन - सा.। विस्तीर्णबलेन - दया.। with very strong chariot - W. on far refulgent chariot - G.

*हविदाता के पास* - **दाश्वांसम् उप**। दातारं यजमानम् उप - सा.। दातारम् - दया.। to the sacrifice - W. unto the man who offers gifts - G.

**इन्द्र॑वायू अ॒यं सु॒तस् तं दे॒वेभि॑: स॒जोष॑सा।**
**पिब॑तं दा॒शुषो॑ गृ॒हे।। ६।।**

इन्द्र॑वायू इति॑। अ॒यम्। सु॒तः। तम्। दे॒वेभि॑:। स॒ऽजोष॑सा। पिब॑तम्। दा॒शुष॑:। गृ॒हे।। ६।।

*हे इन्द्र और वायो!, यह सवन किया गया है (सोम),*
*इसका देवों के साथ, समान प्रीति वाले (होकर)।*
*पान करो तुम दोनों, हविदाता के घर में ।। ६।।*

हे जीवात्मा और प्राण! मेरे द्वारा यह परमेश्वर की भक्ति के रस का सवन किया गया है। तुम दोनों हवि, नैवेद्य आदि को समर्पित करने वाले मुझ उपासक के इस शरीर के अन्दर भली प्रकार निवास करते हुए देवों अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों के साथ मिलकर इस भक्तिरस का पान करो।

टि. *देवों के साथ समान प्रीति वाले (होकर)* - **देवेभिः सजोषसा**। देवैः समानप्रीतौ - सा.। sympathysing with gods - W. accordant with the gods - G.

*हविदाता के घर में* - **दाशुषः गृहे**। हविर्दातुर् यागशालायाम् - सा.। in the dwelling of the donor - W. G.

**इ॒ह प्र॒याण॑म् अस्तु वा॒म् इन्द्र॑वायू वि॒मोच॑नम्।**
**इ॒ह वां॒ सोम॑पीतये।। ७।। २२।।**

इ॒ह। प्र॒ऽयान॑म्। अ॒स्तु॒। वा॒म्। इन्द्र॑वायू इति॑। वि॒ऽमोच॑नम्। इ॒ह। वा॒म्। सोम॑ऽपीतये।। ७।।

*यहाँ प्रकर्ष से, गमन होता रहे तुम्हारा,*
*हे इन्द्र और वायो!, विमोचन (होवे यहाँ अश्वों का)।*
*यहाँ तुम्हारा (आगमन होवे), सोमपान के लिये।। ७।।*

हे जीवात्मा और प्राण! इस शरीर में तुम्हारी गति उत्तम रीति से बनी रहे। आप यहाँ अपने इन इन्द्रियरूपी अश्वों को विश्राम कराइये और आनन्दरस का पान कीजिये।

टि. *गमन होता रहे* - **प्रयाणम् अस्तु**। गमनम् अस्तु - सा.। दया.। be your course - W. be your journey - G.

*विमोचन (होवे यहाँ अश्वों का)* - **विमोचनम्**। विमोचनम् अश्वानाम् अस्तु - सा.। be the letting of your horses loose - W. unyoke your steeds - G.

## सूक्त ४७

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्रवायू। छन्दः - अनुष्टुप्। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**वायो॑ शु॒क्रो अ॑यामि ते॒ मध्वो॒ अग्रं॒ दिवि॑ष्टिषु।**
**आ या॑हि॒ सोम॑पीतये स्पा॒र्हो दे॑व नि॒युत्व॑ता।। १।।**

वायो॒ इति॑। शु॒क्रः। अ॒या॒मि॒। ते॒। मध्वः॑। अग्र॑म्। दिवि॑ष्टिषु।
आ। या॒हि॒। सोम॑ऽपीतये। स्पा॒र्हः। दे॒व॒। नि॒युत्व॑ता।। १।।

*हे वायो!, शुचि (मैं), समर्पित करता हूँ तुझे,*
*मधु के अग्र भाग को, देवपूजाओं में।*
*आ जा तू सोम के पान के लिये,*
*स्पृहणीय, हे देव!, अश्वों वाले रथ से।। १।।*

हे मेरे प्राण अथवा प्राणपालक परमेश्वर! मैं उपासक यम, नियम आदि के पालन से शुद्ध और पवित्र आचार वाला होकर अपनी देवपूजाओं में अपने भक्तिरस के प्रथम और मुख्य भाग को बड़ी श्रद्धा के साथ तुझे समर्पित कर रहा हूँ। हे प्रकाशस्वरूप! आप अत्यन्त कमनीय हैं। आप अपने गमनसाधनों के साथ मेरे इस भक्तिरस के पान के लिये मेरे इस शरीर में विराजमान हूजिये।

टि. *शुचि (मैं)* - **शुक्रः।** शुक्रवर्णस् त्वम् असि - वे.। व्रतचर्यादिना दीप्तो ऽहम् - सा.। शुद्धस्वभावः (अहम्) - दया.। purified (by holy acts I) - W. the bright ( meath) - G.

*समर्पित करता हूँ तुझे* - **अयामि ते।** प्रेरयामि तुभ्यम् - वे.। आययामि तुभ्यम्। अयतिर् अन्तर्भावितण्यर्थः। प्राप्नोति तव (मधुरस्य) - दया.। I bring to thee - W.

*मधु के अग्र भाग को* - **मध्वः अग्रम्।** सोमस्य अग्रम् - वे.। मध्वो मधुरं सोमरसम्। कर्मणि षष्ठी। अग्रम् इतरेभ्यः पूर्वम्। सा.। the Soma, first (offered to thee at sacrifices) - W.

*देवपूजाओं में* - **दिविष्टिषु।** दिवसस्यागमनेषु - वे.। दिवो द्युलोकस्यैषणेषु सत्सु - सा.। प्रकाशे स्थितासु क्रियासु - दया.। that seek to gain heaven - W. at holy rites - G.

*स्पृहणीय* - **स्पार्हः।** स्पृहणीयः - वे.। सा.। who art ever longed - W. longed for - G.

*अश्वों वाले रथ से* - **नियुत्वता।** नियुत्वता रथेन - वे.। नियुद् वायोः प्रतिनियुतो ऽश्वः। तेन साधनेन। सा.। प्रभुणा राज्ञा सह - दया.। with thy Niyut steeds - W. on team-drawn car - G.

**इन्द्र॑श् च वायव् एषां॒ सोमा॑नां पी॒तिम् अ॑र्हथः।**
**यु॒वां हि यन्तीन्द॑वो नि॒म्नम् आपो॒ न स॒ध्र्य॑क्।। २।।**

इन्द्रः॑। च॒। वा॒यो॒ इति॑। ए॒षा॒म्। सोमा॑नाम्। पी॒तिम्। अ॒र्ह॒थः॒।
यु॒वाम्। हि। यन्ति॑। इन्द॑वः। नि॒म्नम्। आपः॑। न। स॒ध्र्य॑क्।। २।।

*हे इन्द्र! और हे वायो!, इनके,*
*सोमों के, पान के अधिकारी हो तुम।*
*तुम्हारे पास ही पहुँचते हैं सोमबिन्दु,*
*निम्न स्थान में, जल जैसे एक साथ।। २।।*

हे मेरे जीवात्मा और हे मेरे प्राण! हमारे भक्तिरस के पान के अधिकारी वस्तुतः तुम ही हो।

हमारे भक्तिरस की बूँदें तुम्हारे पास इस प्रकार स्वाभाविक रूप से पहुँचती हैं, जिस प्रकार जल सहज रूप से समूहरूप में एक साथ निम्न स्थान में पहुँच जाते हैं।

टि. *सोमबिन्दु* - **इन्दवः**। विन्दवः। आदिवर्णलोपो ऽत्र।। सोमाः - सा.। सङ्गन्तारः पूजनीयाः। इन्दुर् इति यज्ञनाम (निघ. ३.१७)। दया.। drops - W. G.

*एक साथ* - **सध्र्यक्**। सहैव - सा.। यः सह अञ्चति - दया.। together - W.

**वायव् इन्द्रश् च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती।**
**नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये।। ३।।**

वायो इति। इन्द्रः। च। शुष्मिणा। सऽरथम्। शवसः। पती इति।
नियुत्वन्ता। नः। ऊतये। आ। यातम्। सोमऽपीतये।। ३।।

*हे वायो! और हे इन्द्र! बल वाले (हो तुम),*
*समान रथ पर (चढ़कर), हे बल के पालको।*
*अश्वों वाले, हमारे पास, संरक्षण के लिये,*
*आ जाओ तुम, सोम के पान के लिये।। ३।।*

हे मेरे प्राण और हे मेरे जीवात्मा! तुम दोनों ही बलशाली और बलों का पालन करने वाले हो। तुम दोनों ही अपने गमनसाधनों से युक्त और इस शरीररूपी समान रथ पर आरूढ़ होकर हमारे भक्तिरस के पान के लिये और हमारे जीवन की सुरक्षा के लिये इसमें विराजो।

टि. *बल वाले* - **शुष्मिणा**। बलवन्तौ - सा.। बलिष्ठौ - दया.।

*समान रथ पर (चढ़कर)* - **सरथम्**। समानम् एव रथम् आरुह्य - सा.। सरथं समानं यानम् - दया.। (riding in) the same car - W. speeding together - G.

*हे बल के पालको* - **शवसस्पती**। बलस्य पती - सा.। बलस्य पालकौ - दया.। who are lords of strength - W. G.

*अश्वों वाले* - **नियुत्वन्ता**। नियुत्संज्ञकाश्ववन्तौ - सा.। with your team - G.

**या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा।**
**अस्मे ता यज्ञवाहसेन्द्रवायू नि यच्छतम्।। ४।। २३।।**

याः। वाम्। सन्ति। पुरुऽस्पृहः। निऽयुतः। दाशुषे। नरा।
अस्मे इति। ताः। यज्ञऽवाहसा। इन्द्रवायू इति। नि। यच्छतम्।। ४।।

*जो तुम्हारे हैं, बहुतों से वाञ्छित,*
*अश्व, आहुतिदाता के लिये, हे नायको।*
*हमें उनको, हे यज्ञ का वहन करने वालो!,*
*हे इन्द्र और वायो!, नितरां प्रदान करो तुम।। ४।।*

हे मेरे जीवात्मा और प्राण! हे मार्गदर्शन करने वालो! असंख्य जनों के द्वारा चाहे जाने वाले, परन्तु केवल आहुति प्रदान करने वाले उपासक को ही दिये जाने वाले जो तुम्हारे गमनसाधन हैं, जीवनयात्रा को लक्ष्य की ओर बढ़ाने वाले उपाय हैं, हे इस जीवनयज्ञ का सम्पादन करने वालो!, तुम उनको हमें

भली प्रकार प्रदान करो।

टि. *बहुतों से वाञ्छित* - **पुरुस्पृहः।** बहुभिः स्पृहणीयाः - सा.। दया.। desired of many - W. longed for - G.

*हे यज्ञ का वहन करने वालो* - **यज्ञवाहसा।** यज्ञवाहकौ - सा.। यज्ञप्रापकौ - दया.। conveyer of sacrifices - W. to whom the sacrifice is paid - G.

## सूक्त ४८

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - वायुः। छन्दः - अनुष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**विहि होत्रा अवीता विपो न रायो अर्यः।**
**वायव् आ चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये।। १।।**

विहि। होत्राः। अवीताः। विपः। न। रायः। अर्यः।
वायो इति। आ। चन्द्रेण। रथेन। याहि। सुतस्य। पीतये।। १।।

*भक्षण कर तू हवियों का, अभक्षितों का,*
*मेधावी जैसे (भोगता है) धनों को, स्वामी।*
*हे वायो! इधर, आह्लादक से रथ से,*
*गमन कर तू, सोम के पान के लिये।। १।।*

हे मेरे प्राण! जिस प्रकार कोई मेधावी पुरुष धनों का स्वामी बनकर उनका सुखपूर्वक उपभोग करता है, उसी प्रकार तू भी मेरे द्वारा समर्पित इन अछूते नैवेद्यों का उपभोग कर। हे मेरे प्राण! तू मेरे भक्तिरस के पान के लिये अपने आह्लादक व्यापनसाधन के साथ इस शरीर में निवास कर।

टि. *भक्षण कर तू हवियों का* - **विहि होत्राः।** कामयस्व स्तुतिवाचः - वे.। विहि वीहि भक्षय होत्रा होमसाधिकाः सोमाहुतीः - सा.। व्याप्नुहि आददानाः - दया.। drink the oblations - W. taste offerings - G.

*अभक्षितों का* - **अवीताः।** असेविताः - वे.। अन्यैः पूर्वम् अभक्षिताः - सा.। नाशरहिताः - दया.। yet untasted - W. never tasted yet - G.

*मेधावी जैसे धनों को, स्वामी* - **विपो न रायः अर्यः।** विप्रस्य इव यजमानस्य धनानि स्वामी - वे.। विपो न शत्रूणां वेपयिता राजेव। किं चार्यः स्तोतुर् मम रायो धनानि सम्पादयेति शेषः। सा.। मेधावीव धनानि वैश्यः - दया.। like (a prince) the terrirfier of foes - W. as bards enjoy the foeman's wealth - G.

*आह्लादक से* - **चन्द्रेण।** आह्लादकेन - सा.। सुवर्णमयेन - दया.। with brilliant - W. on refulgent (car) - G.

**निर्युवाणो अशस्तीर् नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः।**
**वायव् आ चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये।। २।।**

निःऽयुवानः। अशस्तीः। नियुत्वान्। इन्द्रऽसारथिः।

वायो इति। आ। चन्द्रेण। रथेन। याहि। सुतस्य। पीतये।। २।।

*पूर्णतः निवारता हुआ अभिशापों को,*

*अश्वों का स्वामी, इन्द्र के साथ वाला।*

*हे वायो!, इधर, आह्लादक से रथ से,*

*गमन कर तू, सोम के पान के लिये।। २।।*

हे मेरे प्राण! तू दुष्ट विचारों और दुर्वचनों को परे करने वाला है। तू उत्तम अश्वों अर्थात् बलवान् ज्ञानेन्द्रियों का स्वामी है। जीवात्मा तेरा साथी है। तू मेरे भक्तिरस के पान के लिये मेरे इस आनन्ददायक शरीर में आकर इसका आनन्द प्राप्त कर।

टि. *पूर्णतः निवारता हुआ* – **निर्युवाणः**। मिश्रणामिश्रणकर्मणो यौतेर् धातोर् शानजन्तं रूपम् इदम्।। पृथक् कुर्वन् – वे.। निश्शेषेण नियोजयन् – सा.। निर्गता युवानो यस्मान् नितरां युवानो वा – दया. । the represser - W. removing - G.

*अभिशापों को* – **अशस्तीः**। बाधाः – वे.। अभिशस्तीः – सा.। अहिंसाः – दया.। of calumnies - W. curses - G.

**अनु कृष्णे वसुधिती येमाते विश्वपेशसा।**

**वायव् आ चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये।। ३।।**

अनु। कृष्णे इति। वसुधिती इति वसुऽधिती। येमाते इति। विश्वऽपेशसा।

वायो इति। आ। चन्द्रेण। रथेन। याहि। सुतस्य। पीतये।। ३।।

*पीछे (तेरे), आकर्षणों वाले, वासों को देने वाले,*

*गमन करते हैं, सभी रूपों को धारण करने वाले।*

*हे वायो! इधर, आह्लादक से रथ से,*

*गमन कर तू, सोम के पान के लिये।। ३।।*

हे वायो! परस्पर आकर्षणों वाले, देवों और मनुष्यों को बसाने वाले, सब रूपों को धारण करने वाले द्युलोक और भूलोक तेरा ही अनुसरण करते हैं, तेरी प्राणशक्ति का ही सेवन करते हैं। अर्थात् द्युलोक और भूलोक में वास करने वाले नानारूप सभी जीव तेरी प्राणशक्ति से ही जीवित रहते हैं। हे वायो! हे प्राणशक्ति! तू मेरे भक्तिरस का पान करने के लिये मेरे इस आनन्ददायक शरीर में वास करता हुआ इसका पान कर।

टि. *आकर्षणों वाले* – **कृष्णे**। कृष्णवर्णा रात्रिः – वे.। कृष्णवर्णे – सा.। कर्षिते – दया.। dark - W. G. two attractive sources - Satya.

*वासों को देने वाले* – **वसुधिती**। निहितहविर्धाने – वे.। वसूनां धात्र्यौ – सा.। वसूनां धितिर् ययोर् द्यावापृथिव्योस् ते – दया.। nurses of wealth - W. two treasures of wealth - G.

*पीछे (तेरे) गमन करते हैं* – **अनु येमाते**। अनु नियच्छतः – वे.। अनुगच्छतः – सा.। अनु नियमेन गच्छतः – दया.। attend upon thee - W. wait on thee - G.

*सभी रूपों को धारण करने वाले* – **विश्वपेशसा**। विश्वरूपम् अहश् च – वे.। विश्वरूपे द्यावा-

पृथिव्यौ - सा.। सर्वस्वरूपेण - दया.। the universal forms ( heaven and earth) - W. that wear all beauties - G.

**वहन्तु त्वा मनोयुजो युक्तासो नवतिर् नव।**
**वायव् आ चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये।। ४।।**

वहन्तु। त्वा। मनःऽयुजः। युक्तासः। नवतिः। नव।
वायो इति। आ। चन्द्रेण। रथेन। याहि। सुतस्य। पीतये।। ४।।

*वहन करें तुझको, सङ्कल्पमात्र से जुतने वाले,*
*जुते हुए (रथ में), नव्वे (और) नौ (अश्व)।*
*हे वायो! इस ओर, आह्लादक से, रथ से,*
*गमन कर तू, सोम के पान के लिये।। ४।।*

हे मेरे प्राणवायो! इच्छामात्र से जुतने वाले नव्वे और नौ अश्व अर्थात् प्रभूत संख्या वाली तीव्र गति से ले जाने वाली शक्तियां तुझको मुझे प्राप्त कराएं। तेरा हमसे कभी वियोग न हो। हे मेरे प्राण! तू मेरे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त करने के लिये अपने गमनसाधन के साथ मेरे शरीर में स्थित हो।

टि. *सङ्कल्पमात्र से जुतने वाले* - **मनोयुजः**। मनोवेगाः - वे.। मनःसमानगतयः - सा.। ये मनसा ब्रह्म युञ्जते ते - दया.। मन से जुड़ जाने वाले - सात.। as swift as thought - W. who yoke them at thy will - G.

**वायो शतं हरीणां युवस्व पोष्याणाम्।**
**उत वा ते सहस्रिणो रथ आ यातु पाजसा।। ५।। २४।।**

वायो इति। शतम्। हरीणाम्। युवस्व। पोष्याणाम्।
उत। वा। ते। सहस्रिणः। रथः। आ। यातु। पाजसा।। ५।।

*हे वायो!, सौ को अश्वों को,*
*जोत तू, पोषण के योग्यों को।*
*अपि च, तुझ बलवान् अश्वों वाले का,*
*रथ इस ओर गमन करे, बल के साथ।। ५।।*

हे मेरे प्राणवायो! तू सैंकड़ों पुष्ट बलवती शक्तियों को अपने रथ में जोतकर मेरे शरीर में निवास कर, अपि च हजारों बलवती शक्तियों वाले का तेरा रथ बल के साथ मेरे शरीर में गमन करे। तुझ बलवान् की बलवती शक्तियां मेरे शरीर में सदा निवास करती रहें।

टि. *जोत तू* - **युवस्व**। रथे निमिश्रय - वे.। योजय रथे - सा.। कर्मसु प्रेर्स्व - दया.।

*अपि च* - **उत वा**। अपि वा - वे.। अथवा - सा.। or even - W.

*तुझ बलवान् अश्वों वाले का* - **ते सहस्रिणः**। तव सहस्राश्वयुक्तस्य - वे.। ते सहस्रसंख्यापूरका अश्वाः - सा.। असंख्यपुरुषधनयुक्तस्य - दया.। a thousand - W.

पिछले कुछ सूक्तों के मन्त्रों में इन्द्र, वायु आदि देवताओं के प्रसंग में अश्व, रथ आदि शब्दों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है। यहाँ यह ज्ञातव्य है, कि रथ, अश्व, आयुध आदि पदार्थ देवता से

भिन्न कुछ भी नहीं हैं। देवता अपना रथ, अश्व, हथियार आदि स्वयं ही होते हैं। यास्काचार्य का कथन है कि देव स्वयं ही अपना रथ होते हैं, स्वयं ही अपना अश्व, स्वयं ही अपना आयुध, स्वयं ही अपने बाण होते हैं। देव स्वयं ही अपना सब-कुछ होते हैं। आत्मैवैषां रथो भवति। आत्माश्वः। आत्मायुधम्। आत्मेषवः। आत्मा सर्वं देवस्य। नि. ७.४।

## सूक्त ४९

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - इन्द्राबृहस्पती। छन्दः - गायत्री। षड़ृचं सूक्तम्।

**इ॒दं वा॑म् आ॒स्ये॑ ह॒विः प्रि॒यम् इन्द्रा॑बृहस्पती। उ॒क्थं मद॑श् च शस्यते।। १।।**

इ॒दम्। वा॒म्। आ॒स्ये॑। ह॒विः। प्रि॒यम्। इ॒न्द्रा॒बृ॒ह॒स्प॒ती॒ इति॑। उ॒क्थम्। मद॑ः। च॒। श॒स्य॒ते॒।। १।।

*इसको तुम्हारे मुख में, हवि को (देते हैं हम),*
*तृप्तिकारक को, हे इन्द्र और बृहस्पति।*
*स्तोत्र, सोम भी, उच्चारण किया जा रहा है।। १।।*

हे संसार को उत्पन्न करके रक्षा करने वाली और वेदवाणी का पालन करने वाली परमेश्वर की शक्तियो! मैं तृप्ति करने वाली इस आहुति को तुम्हारे मुख में डाल रहा हूँ, अपने समर्पण से तुम्हें प्रसन्न कर रहा हूँ। इतना ही नहीं, मैं इस आनन्ददायक स्तुति का तुम्हारे लिये गान कर रहा हूँ और इस प्रकार अपनी भक्ति का रस तुम्हें समर्पित कर रहा हूँ। तुम इसे सहर्ष स्वीकार करो और मुझपर अपनी कृपादृष्टि सदा बनाए रखो।

टि. *तृप्तिकारक* - **प्रियम्।** तर्पणार्थस्य प्रीणयतेर् धातो रूपसिद्धिः।। प्रियम् - सा.। कमनीयम् - दया.। agreeable - W. dear - G.

*स्तोत्र आनन्ददायक भी* - **उक्थम् मदः च।** तथा मदकरः सोमः - वे.। उक्थं शस्त्रं च मदः मदजनकम् - सा.। उक्थं प्रशंसनीयम् मदः आनन्दः च - दया.। and the hymn and the exhalarating beverage - W. the laud, the gladdening draught - G.

*उच्चारण किया जा रहा है* - **शस्यते।** स्तूयते - दया.। are offered - W. is famed - G.

**अ॒यं वा॒ं परि॑ षिच्यते॒ सोम॑ इन्द्राबृहस्पती। चारु॒र् मदा॑य पी॒तये॑।। २।।**

अ॒यम्। वा॒म्। परि॑। सि॒च्य॒ते॒। सोम॑ः। इ॒न्द्रा॒बृ॒ह॒स्प॒ती॒ इति॑। चारु॑ः। मदा॑य। पी॒तये॑।। २।।

*यह तुम्हारे लिये सर्वतः परोसा जा रहा है,*
*सोम, हे इन्द्र और बृहस्पति।*
*रोचक, हर्ष के लिये, पान के लिये।। २।।*

हे जगत् को उत्पन्न करके रक्षा करने वाली और महान् वेदवाणी का पालन करने वाली ईश्वरीय शक्तियो! यह हमारे द्वारा तुम्हारे लिये सर्वत्र रोचक भक्तिरस समर्पित किया जा रहा है। यह तुम्हारे पीने के लिये और आनन्द की प्राप्ति के लिये है। तुम इसे सहर्ष स्वीकार करो।

टि. *सर्वतः सींचा जा रहा है* - **परि सिच्यते।** परितो दीयते - सा.। तैय्यार किया जा रहा है - सात.। is offered - W. is effused - G.

रोचक - चारुः। शोभनः - सा.। अत्युत्तमः - दया.। delicious - W. lovely - G.

**आ नं इन्द्राबृहस्पती गृहम् इन्द्रंश् च गच्छतम्।**
**सोमपा सोमंपीतये।। ३।।**

आ। नः। इन्द्राबृहस्पती इति। गृहम्। इन्द्रः। च। गच्छतम्। सोमऽपा। सोमंऽपीतये।। ३।।

*इधर हमारे, हे इन्द्र और बृहस्पति!,*
*और घर में, हे इन्द्र!, गमन करो तुम दोनों।*
*सोम को पीने वाले, सोमपान के लिये।। ३।।*

हे जगत् को उत्पन्न करके उसकी रक्षा करने वाली और पवित्र वेदवाणी का पालन करने वाली ईश्वरीय शक्तियो! तुम दोनों उपासकों के भक्तिरस का पान करने वाली हो। तुम हमारे रोचक भक्तिरस के पान के लिये हमारी इस शरीररूपी यज्ञशाला में पधारो।

टि. *हे इन्द्र और बृहस्पति* - इन्द्राबृहस्पती इन्द्रः च। अत्रेन्द्रश्चेत्यधिकम्।। हे बृहस्पते त्वं चेन्द्रश् च - सा.। राजाध्यापकौ - दया.।

*घर में* - गृहम्। गृहम् अस्मद्यागसम्बन्धि - सा.।

*सोम को पीने वाले* - सोमपा। सोमपौ - सा.। यौ सोमं पिबतः तौ - दया.। the words *indraś ca* of the text are manifestly superflous - G.

**अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनंम्।**
**अश्वांवन्तं सहस्रिणंम्।। ४।।**

अस्मे इति। इन्द्राबृहस्पती इति। रयिम्। धत्तम्। शतऽग्विनंम्। अश्वंऽवन्तम्। सहस्रिणंम्।। ४।।

*हमें हे इन्द्र और बृहस्पति!,*
*धन को दो तुम सैंकड़ों गौओं वाले को।*
*अश्वों वाले को, हजारों की संख्या से युक्त।। ४।।*

हे जगत् को उत्पन्न करके उसकी रक्षा करने वाली और वेदवाणी का पालन करने वाली ईश्वरीय शक्तियो! तुम हमें सैंकड़ों की संख्या में ज्ञानरश्मियां और हजारों की संख्या में अश्वबल से युक्त सामर्थ्य प्रदान करो।

टि. *सैंकड़ों गौओं वाले को* - शतग्विनम्। शतसंख्याकाभिर् गोभिर् युक्तम् - सा.। शतग्वो ऽसंख्याता गावो विद्यन्ते यस्मिंस् तम् - दया.। comprising of a hundred cattle - W. hundredfold - G.

*हजारों की संख्या से युक्त* - सहस्रिणम्। सहस्रसंख्यायुक्तम् - सा.। सहस्रसंख्याः पदार्था विद्यन्ते यस्मिंस् तम् - दया.।

**इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर् हंवामहे।**
**अस्य सोमंस्य पीतयें।। ५।।**

इन्द्राबृहस्पती इति। वयम्। सुते। गीःऽभिः। हवामहे। अस्य। सोमंस्य। पीतयें।। ५।।

*हे इन्द्र और बृहस्पति, हम,*

*सोम का सवन होने पर, स्तुतियों से बुलाते हैं (तुमको)।*
*इस सोम के पान के लिये।। ५।।*

हे जगत् को उत्पन्न करके रक्षा करने वाली और वेदवाणी की पालक ईश्वरीय शक्तियो! हमने अपने हृदय में भक्तिरस रूपी सोम का सवन कर लिया है। अब हम अपनी स्तुतियों से तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं। तुम इसका आस्वादन करने के लिये हमारे हृदय में स्थान ग्रहण करो।

टि. *सोम का सवन होने पर* - **सुते**। सोमे ऽभिषुते - सा.। निष्पन्ने - दया.। when the libation is effused -W. when the meath is shed - G.

*स्तुतियों से* - **गीर्भिः**। स्तुतिभिः - सा.। with praises - W. with songs - G.

**सोम॑म् इन्द्राबृहस्पती पिब॑तं दा॒शुषो॑ गृहे। मा॒दयै॑थां॒ तदो॑कसा।। ६।। २५।।**

सोम॑म्। इ॒न्द्रा॒बृ॒ह॒स्प॒ती॒ इति॑। पिब॑तम्। दा॒शुष॑ः। गृ॒हे। मा॒दयै॑थाम्। तत्ऽओ॑कसा।। ६।।

*सोम को, हे इन्द्र और बृहस्पति!,*
*पियो तुम दोनों हविदाता के घर में।*
*आनन्दित होवो तुम, उसके घर में विराजमान।। ६।।*

हे जगत् को उत्पन्न करके उसकी रक्षा करने वाली और वेदवाणी का पालन करने वाली परमेश्वर की शक्तियो! तुम आहुति, नैवेद्य आदि समर्पित करने वाले मुझ उपासक के हृदयरूपी निवास को अपना घर समझकर इसमें विराजो और मेरे भक्तिरस के पान से आनन्दित होवो।

टि. *उसके घर में विराजमान* - **तदोकसा**। यजमानगृहे समवेतौ तदोकसाव् इति - वे.। तद् एव यजमानगृहम् ओको निवासस्थानं ययोस् तौ - सा.। तद् ओकः स्थानं ययोस् तौ - दया.।

## सूक्त ५०

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-९ बृहस्पतिः, १०,११ इन्द्राबृहस्पती। छन्दः - १-९,११ त्रिष्टुप्, १० जगती। एकादशर्चं सूक्तम्।

**यस् त॒स्तम्भ॒ सह॑सा॒ वि ज्मो अन्ता॒न् बृ॒हस्पति॑स् त्रिषध॒स्थो रवे॑ण।**
**तं प्र॒त्नास॒ ऋष॑यो॒ दीध्या॑नाः पु॒रो विप्रा॑ दधिरे म॒न्द्रजि॑ह्वम्।। १।।**

यः। त॒स्तम्भ॑। सह॑सा। वि। ज्मः। अन्ता॑न्। बृ॒ह॒स्पति॑ः। त्रि॒ऽस॒ध॒स्थः। रवे॑ण।
तम्। प्र॒त्नास॑ः। ऋष॑यः। दीध्या॑नाः। पु॒रः। विप्रा॑ः। द॒धि॒रे। म॒न्द्रऽजि॑ह्वम्।। १।।

*जो थाम रहा है बल से, विविधतया पृथिवी के छोरों को,*
*बृहस्पति, तीन सहस्थानों वाला, (आज्ञा के) शब्द से (अपने)।*
*उसको पुरातन ऋषि, ध्यान करते हुए (उसका),*
*सम्मुख, मेधावी, धारण करते हैं, मधुर वाणी वाले को।। १।।*

वह वेदज्ञान का पालक परमेश्वर इस पृथिवी के छोरों को, दस दीर्घ दिशाओं को, अपने बल से और आज्ञा के शब्दों से विविध प्रकार से नियन्त्रण में रख रहा है। वह जगत् के अन्दर पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक इन तीनों स्थानों में निवास करता है, अर्थात् सर्वत्र व्यापक है। पुरातन काल

से वेदार्थद्रष्टा ऋषि और मेधावी जन वेद की मधुर वाणी वाले उस परमेश्वर को उसके साक्षात् के लिये अपने सम्मुख स्थापित करते आ रहे हैं, उसकी स्तुति और आराधना करते आ रहे हैं।

टि. *पृथिवी के छोरों को* - **ज्मः अन्तान्**। पृथिव्याः पर्यन्तान् - वे.। दश दिश इत्यर्थः - सा.। the ends of the earth - W. G.

*बृहस्पतिः* - **बृहस्पतिः**। बृहतो देवस्य यज्ञस्य वा पालयिता देवः - सा.। महान् बृहतां पतिर् वा - दया.।

*तीन सहस्थानों वाला* - **त्रिषधस्थः**। त्रिस्थानः - वे.। त्रिषु स्थानेषु वर्तमानः - सा.। त्रिषु समानस्थानेषु कर्मोपासनाज्ञानेषु वा - दया.। in three regions - W. who sitteth in threefold seat - G.

*शब्द से* - **रवेण**। गर्जितरवेण - वे.। एवं तिष्ठतेत्यनेन शब्देन - सा.। उपदेशेन - दया.। with noise - W. with thunder - G.

*ध्यान करते हुए* - **दीध्यानाः**। दीप्यमानाः - वे.। सा.। शुभैर् गुणैः प्रकाश्यमानाः - दया.। illustrious - W. deep thinking - G.

*मधुर वाणी वाले को* - **मन्द्रजिह्वम्**। मोदनवाचम् - वे.। मादनजिह्वं मोदनजिह्वम् - सा.। मन्द्रा आनन्ददा कल्याणकारी जिह्वा यस्य तं विद्वांसम् - दया.। pleasing-tongued - W. the pleasant tongue - G.

**धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस् ततस्रे।**
**पृषन्तं सृप्रम् अदब्धम् ऊर्वं बृहस्पते रक्षताद् अस्य योनिम्।। २।।**

धुनऽईतयः। सुऽप्रकेतम्। मदन्तः। बृहस्पते। अभि। ये। नः। ततस्रे।
पृषन्तम्। सृप्रम्। अदब्धम्। ऊर्वम्। बृहस्पते। रक्षतात्। अस्य। योनिम्।। २।।

*हिला देने वाली गति वाले, सुज्ञाता को (तुझको), प्रसन्न करते हुए,*
*हे बृहस्पते!, सब ओर जो हमारे, कम्पित करते हैं (शत्रुओं को)।*
*सुखसेचक की, गतिशील की, अजेय की, विशाल की,*
*हे बृहस्पते!, रक्षा कर तू इनके घर की।। २।।*

हे वेदवाणी के पालक परमेश्वर! हमारे सब ओर विद्यमान जो उपासक जन तुझे अपनी स्तुतियों से आनन्दित करते हैं और इस प्रकार चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को कम्पित करके उन्हें नष्ट करते रहते हैं, हे महान् देवों के स्वामी! तू उनके इस शरीर की, जो सुखों से सींचने वाला है, विकासशील है, अयोध्या होने से अजेय है, और विशाल है, सदा रक्षा करता रह।

टि. *हिला देने वाली गति वाले* - **धुनेतयः**। धूननपरगमनाः - वे.। धुना शत्रूणां कम्पयित्रीतिर् गतिर् येषां ते - सा.। ये धुनान् धर्मात्मनां कम्पकान् कम्पयन्ति ते - दया.। terrifiers (of foes) - W. wild in their course - G.

*कम्पित करते हैं* - **ततस्रे**। ये अभिगच्छन्ति मेघाः - वे.। आत्मानम् उपक्षिपन्ति स्तुवन्ति वा - सा.। उपक्षयन्ति - दया.। glorify thee - W. pressed - G.

*सुखसेचक को* - **पृषन्तम्**। अथैकवद् आह। सिञ्चन्तम्। वे.। फलानि सिञ्चन्तम् - सा.।

विद्यादिशुभगुणान् सिञ्चन्तम् - दया.। fruit-yielding - W.

घर की - **योनिम्।** मेघस्य उदकस्य निस्सरणमार्गम् - वे.। कारणं यज्ञं यजमानं वा - सा.। कारणम् - दया.। sacrifice - W. the birth-place - G.

**बृहस्पते या परमा परावद् अत आ त ऋतस्पृशो नि षेदुः।**
**तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम्।। ३।।**

बृहस्पते। या। परमा। पराऽवत्। अतः। आ। ते। ऋतऽस्पृशः। नि। सेदुः।
तुभ्यम्। खाताः। अवताः। अद्रिऽदुग्धाः। मध्वः। श्चोतन्ति। अभितः। विऽरप्शम्।। ३।।

*हे बृहस्पते!, जो परम (निवास) बहुत दूर (है तेरा),*
*उससे आकर इधर तेरी, ऋत का स्पर्श करने वाली (रश्मियां) स्थित होवें।*
*तेरे लिये खोदे हुए कुओं (की तरह), सिलबट्टों से दोहन किये हुए,*
*सोम चू रहे हैं सब ओर, विशेष स्तुतियों से भरपूर।। ३।।*

हे महान् वेदज्ञान के पालक परमेश्वर! वह जो बहुत दूर तेरा परम स्थान है, वहाँ से आकर सत्यनियम का पालन करने वाली तेरी ज्योतियां हमारे हृदयों में भली प्रकार निवास करें। जिस प्रकार खोदे हुए कुएं अपने जलों से निकटवर्ती खेतों को खूब सींचते हैं, उसी प्रकार हमारे द्वारा परिश्रमपूर्वक निष्पादित किये हुए भक्तिरस रूपी सोम हमारे हृदयों से स्तुति रूपी उद्गारों के रूप में सब ओर बह रहे हैं। तू इनका भरपूर आनन्द प्राप्त कर।

टि. *जो परम (निवास) बहुत दूर (है तेरा)* - **या परमा परावत्।** यः परमः देशः - वे.। या प्रसिद्धा परमोत्कृष्टा परावद् अत्यन्तं दूरभूता वसतिः स्वर्गाख्यास्ति। यद्वा लिङ्गव्यत्ययः। परमं स्थानम् अस्ति। सा.। those (steeds) which had come from that distant (region), the best of all - W. from thy remotest distance - G.

*ऋत का स्पर्श करने वाली (रश्मियां)* - **ऋतस्पृशः।** यज्ञस्पृशो ऽश्वाः - वे.। यज्ञं स्पृशन्तो ऽश्वाः - सा.। सत्यस्पर्शस्य - दया.। who love the law eternal - G.

*खोदे हुए कुओं (की तरह)* - **खाताः अवताः।** खाताः कूपाः - वे.। लुप्तोपमैषा। यथा खाताः कूपा अभितः श्चोतन्ति तथा - सा.। खनिताः कूपाः - दया.।

*सोम चू रहे हैं* - **मध्वः श्चोतन्ति।** सोमान् प्रेरयन्ति - वे.। सोमाः स्रवन्ति - सा.। मधुरादिगुण-युक्तजलोपेताः सिञ्चन्ति - दया.।

*स्तुतियों से भरपूर* - **विरप्शम्।** स्तुतिमन्तं त्वां प्रति - वे.। विरप्शं विशेषेण शब्देन स्तोत्रं यथा भवति तथा - सा.। महान्तं संसारम् - दया.। by the sounds of praise-like (deep wells) - W. murmuring - G. ऋ. १.८.८ इत्यत्र विरप्शीत्यस्मिन् पदे टिप्पण्यपि द्रष्टव्या।

**बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्।**
**सप्तास्यस् तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिर् अधमत् तमांसि।। ४।।**

बृहस्पतिः। प्रथमम्। जायमानः। महः। ज्योतिषः। परमे। विऽओमन्।
सप्तऽआस्यः। तुविऽजातः। रवेण। वि। सप्तऽरश्मिः। अधमत्। तमांसि।। ४।।

*बृहस्पति, सब से पूर्व प्रकट होने वाला,*
*महान् ज्योति के (स्थान में), परम आकाश में।*
*सात मुखों वाला, बहुत रूपों में प्रकट, घोष से (युक्त),*
*दूर, सात रश्मियों वाला, फूंक से उड़ाता है तमों को।। ४।।*

वेदज्ञान का पालक परमेश्वर महान् ज्योति के स्थान उस परम व्योम में सबसे पूर्व प्रादुर्भूत होता है। वह सात छन्दों वाले मन्त्रों का गान करने के कारण, अथवा सात दिशाओं में व्याप्त होने के कारण सात मुखों वाला कहा जाता है। वह विश्वरूप है अर्थात् सब पदार्थों में उन्हीं के रूप वाला हो जाता है। वह सात रश्मियों वाला है, अर्थात् प्रकाश में सात रंग उसी के हैं। वह वेदवाणी के घोष से अन्धकारों को फूंक के समान उड़ा देता है।

टि. *महान् ज्योति के* - **महः ज्योतिषः**। महतः ज्योतिषः - वे.। महो महतो ज्योतिषः दीप्तस्यादित्यस्य - सा.। महतः प्रकाशात् - दया.। of supreme light - W. from mighty splendour - G.

*सात मुखों वाला* - **सप्तास्यः**। सप्तमुखः - वे.। सप्तछन्दोमयमुखः - सा.। सप्त किरणा आस्यानि यस्य - दया.। seven-mouthed - W. with his sevenfold mouth ... seven rays : as identified with Agni - G.

*बहुत रूपों में प्रकट* - **तुविजातः**। बहुजननः - वे.। बहुप्रकारं संभूतः - सा.। बहुषु प्रसिद्धः - दया.। multiform - W. strong - G.

*घोष से (युक्त)* - **रवेण**। शब्देन महता - वे.। शब्देन - सा.। दया.। (combined) with sound - W. with noise of thunder - G.

*सात रश्मियों वाला* - **सप्तरश्मिः**। सर्पणस्वभावतेजोयुक्तः - सा.। सप्तविधकिरणः - दया.।

*फूंक से उड़ा देता है तमों को* - **अधमत् तमांसि**। धमतिर् गतिकर्मेति निरुक्तम् (६.२)। विविधं गच्छति। नाशयतीत्यर्थः। सा.। निराकरोति रात्रीः - दया.। has subdued the darkness - W. has dispersed the darkness - G.

**स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण।**
**बृहस्पतिर् उस्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद् वावशतीर् उद् आजत्।। ५।। २६।।**

सः। सुऽस्तुभा। सः। ऋक्वता। गणेन। वलम्। रुरोज। फलिऽगम्। रवेण।
बृहस्पतिः। उस्रियाः। हव्यऽसूदः। कनिक्रदत्। वावशतीः। उत्। आजत्।। ५।।

*वह शोभन स्तुति वाले के, वह अर्चना वाले के, गण के साथ,*
*आवरक को भग्न कर डालता है, भञ्जक को, शब्द से (अपने)।*
*बृहस्पति भोग देने वालियों को, हव्यों को स्वादु बनाने वालियों को,*
*कड़कता हुआ, रम्भाने वाली गौओं को, उबार देता है।। ५।।*

वेदवाणी का पालक वह परमेश्वर उसकी उत्तम स्तुति और अर्चना करने वाली अपनी दिव्य शक्तियों के समूह के साथ मिलकर जल, प्रकाश आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने

वाली विनाशक आसुरी शक्ति को अपनी आज्ञामात्र से ध्वस्त कर डालता है। इसके विपरीत वह अनेक प्रकार के भोगों को देने वाली, अपने उपास्य को समर्पित किये जाने वाले पदार्थों को और अधिक स्वीकार्य बना देने वाली और ऊँचे स्वर से उसका आह्वान करने वाली दैवी शक्तियों को अपनी हुंकारमात्र से आसुरी शक्तियों के पंजे से मुक्त करा देता है।

टि. *शोभन स्तुति वाले के, अर्चना वाले के, गण के साथ* - **सुष्टुभा ऋक्वता गणेन।** शोभन-स्तुतिकेन ऋग्भिर् युक्तेन गणेन - वे.। शोभनस्तुतिमता दीप्तिमता गणेनाङ्गिरसाम् - सा.। शोभनेन प्रशंसितेन बहुप्रशंसायुक्तेन किरणसमूहेनोपदेश्यविद्यार्थिसमुदायेन - दया.। (aided) by the praised and brilliant group (of the Aṅgirasas) - W.

*आवरक को* - **वलम्।** वल संवरणे। वलति संवृणोति सर्वं सुखसाधनम् इति वलस् तम्।। असुरम् - वे.। सा.। वक्रगतिम् - दया.।

*भग्न कर डालता है* - **रुरोज।** हिंसितवान् - वे.। बभञ्ज - सा.। destroyed - W. G.

*भञ्जक को* - **फलिगम्।** मेघाकारम् - वे.। ञिफला विशरणे। फलिर् भेदः। तेन गच्छतीति फलिगम्। सा.। मेघम् - दया.। mischievous - W. obstructive - G.

*भोग देने वालियों को* - **उस्रियाः।** भोगानाम् उत्स्राविणीः - सा.। पृथिव्यां वर्तमानाः - दया.। boon-bestowing - W. cows - G.

*हव्यों को स्वादु बनाने वालियों को* - **हव्यसूदः।** हविषः प्रेरयित्रीः - वे.। क्षीरादिहविष्प्रेरकाः - सा.। यो हव्यानि सूदयति क्षरयति सः - दया.। oblation-supplying - W. who make oblations ready - G.

*रम्भाने वाली गौओं को* - **वावशतीः।** कामयमानाः - वे.। सा.। वावशतीः भृशं कामयमानाः प्रजाः - दया.। kine - W. lowing - G.

*उबार देता है* - **उत् आजत्।** उद्घाटयति स्म - सा.। set free - W. drave forth - G.

**ए॒वा पि॒त्रे वि॒श्वदे॑वाय॒ वृष्णे॑ य॒ज्ञैर् वि॑धेम॒ नम॑सा ह॒विर्भिः॑।**
**बृह॑स्पते सुप्र॒जा वी॒रव॑न्तो व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो र॒यी॒णाम्।। ६।।**

ए॒व। पि॒त्रे। वि॒श्वऽदे॑वाय। वृष्णे॑। य॒ज्ञैः। वि॒धे॒म॒। नम॑सा। ह॒विःऽभिः॑।
बृह॑स्पते। सु॒ऽप्र॒जाः। वी॒रऽव॑न्तः। व॒यम्। स्या॒म॒। पत॑यः। र॒यी॒णाम्।। ६।।

*इस प्रकार पालक के लिये, सर्वपूज्य के लिये, सुखवर्षक के लिये,*
*यज्ञों से, पूजा समर्पित करें हम, नमस्कार से, हवियों से,*
*हे बृहस्पते!, शोभन सन्ततियों वाले, वीर पुत्रों वाले,*
*हम होवें (सदा ही), स्वामी धनों के।। ६।।*

हे वेदवाणी के पालक परमेश्वर! इस प्रकार हम यज्ञ आदि शुभ कर्मों, नमस्कारों और नैवेद्य आदि उत्तम समर्पणों के द्वारा सबका पालन करने वाले, सब पर सुखों की वर्षा करने वाले, सब के उपास्य तुझ सर्वेश्वर को अपनी पूजाएं समर्पित करते रहें। तेरी महती कृपा से हम सदा उत्तम सन्तानों वाले, वीर पुत्रों वाले और दानयोग्य धनों के स्वामी होवें।

टि. *पालक के लिये* - **पित्रे**। पालयित्रे - वे.। पालकाय - सा.। दया.। to the paternal - W. the Father - G.

*सर्वपूज्य के लिये* - **विश्वदेवाय**। सर्वेषां देवाय - वे.। सर्वदेवतारूपाय। देवानां मन्त्र-प्रतिपाद्यत्वाद् वैश्वदेवत्वम्। यद्वा। अत्र देवशब्दः स्तुत्यर्थः। सर्वैः स्तुत्याय। सा.। विश्वस्य प्रकाशकाय - दया.। to the universal deity - W.

*सुखवर्षक के लिये* - **वृष्णे**। वर्षकाय - सा.। वृष्टिकराय - दया.। to the showerer (of benefits) - W.

**स इद् राजा प्रतिजन्यानि विश्वा शुष्मेण तस्थाव् अभि वीर्येण।**
**बृहस्पतिं यः सुभृतं बिभर्ति वल्गूयति वन्दते पूर्वभाजम्।। ७।।**

सः। इत्। राजा। प्रतिऽजन्यानि। विश्वा। शुष्मेण। तस्थौ। अभि। वीर्येण।
बृहस्पतिम्। यः। सुऽभृतम्। बिभर्ति। वल्गुऽयति। वन्दते। पूर्वऽभाजम्।। ७।।

*वह ही राजा (बनकर), विरोधी जनशक्तियों को सबको,*
*तेज से, स्थित होता है आक्रान्त करके, बल से।*
*बृहस्पति का जो शोभनभर्ता का भरण-पोषण करता है,*
*स्तुति करता है, वन्दना करता है, प्रथम संभक्ता की।। ७।।*

जो मनुष्य उत्तम भरण-पोषण करने वाले, वेदवाणी के पालक परमेश्वर की भली प्रकार परिचर्या करता है, सबसे पूर्व अपने भाग को ग्रहण करने वाले की उसकी स्तुति और वन्दना करता है, वह अपने पुण्यकर्मों के फलस्वरूप राजा अथवा तेजस्वी बनकर अपने तेज और बल से विरोधी जनशक्तियों को अभिभूत कर लेता है। इसी प्रकार प्रभु की भक्ति और सेवा-शुश्रूषा करने वाला उपासक अपनी इन्द्रियों को वश में करके काम, क्रोध आदि विरोधी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

टि. *विरोधी जनशक्तियों को* - **प्रतिजन्यानि**। प्रतिजनपदप्रादुर्भूतानि - वे.। जन्यं युद्धं प्रति बलानीत्यर्थः। प्रत्यर्थजनपदानि वा। सा.। प्रत्यक्षेण जनितुं योग्यानि - दया.। the hostile people - W. of his foes' possessions - G.

*स्थित होता है आक्रान्त करके* - **तस्थौ अभि**। अभिक्रम्य तिष्ठति।। अभि तिष्ठति - वे.। अभिगम्य तिष्ठति - सा.। overcomes - W. hath made - G.

*शोभन भर्ता का भरण-पोषण करता है* - **सुभृतं बिभर्ति**। सुष्ठु हविःस्तोत्रादिनान्नाच्छादनादिना वा बिभर्ति भरति - सा.। सुष्ठु धृतं धरति - दया.। cherishes (Bṛhaspati) well-tended - G.

*स्तुति करता है* - **वल्गूयति**। स्तौति - वे.। सा.। सत्करोति - दया.। glorifies - W.

*प्रथम संभक्ता की* - **पूर्वभाजम्**। पूर्वम् एव भजमानं मुख्यम् - वे.। इतरेभ्यः प्रथमसंभक्तारं कृत्वा - सा.। पूर्वैर् भजनीयम् - दया.। the first sharer - W. foremost sharer - G.

**स इत् क्षेति सुधित ओकसि स्वे तस्मा इळा पिन्वते विश्वदानीम्।**
**तस्मै विशः स्वयम् एवा नमन्ते यस्मिन् ब्रह्मा राजनि पूर्व एति।। ८।।**

सः। इत्। क्षेति। सुऽधितः। ओकसि। स्वे। तस्मै। इळा। पिन्वते। विश्वऽदानीम्।

तस्मै। विशः। स्वयम्। एव। नमन्ते। यस्मिन्। ब्रह्मा। राजनि। पूर्वः। एति।। ८।।

*वह ही बसता है सुष्ठु तृप्त (होकर) निवास में अपने,*
*उसके लिये भूमि फलती-फूलती है सदा ही।*
*उसके लिये प्रजाएं, स्वयं ही नत हो जाती हैं,*
*जिसमें ब्रह्मा, राजा (के राज्य) में, आगे-आगे चलता है।*

जिस राजा के राज्य में वेदवाणी के स्वामी परमेश्वर अथवा वेद के ज्ञाता विद्वान् को प्राथमिकता दी जाती है, उसकी पूजा और आदर-सत्कार होता है, वह अपने राज्य में तृप्त और सन्तुष्ट होकर निवास करता है। धरती माता भी सदा उसके लिये उत्तम अन्न, ओषधियां, खनिज आदि उगलती रहती है। प्रजाएं उसके सामने स्वयं नतमस्तक होकर उसके आदेशों का पालन करती हैं। अतः शासक को ईश्वरविश्वासी और वेद के ज्ञाता विद्वज्जनों का सत्कार करने वाला होना चाहिये।

टि. *सुष्ठु तृप्त (होकर)* - **सुधितः**। सुप्रीतः - वे.। सुष्ठु तृप्तः सन् - सा.। सुहितस् तृप्तः। अत्र सुधितवसुधितेति सूत्रेण हस्य धः। दया.। prosperous - W. in peace and comfort - G.

*उसके लिये भूमि फलती-फूलती है* - **तस्मै इळा पिन्वते**। तस्मै पृथिवी सदा कामान् पिन्वते - वे.। भूमिर् वर्धते फलैः - सा.। तस्मै प्रशंसिता वाग् भूमिर् वा सेवते - दया.। for him the earth bears fruit - W. to him holy food flows richly - G.

*ब्रह्मा आगे-आगे चलता है* - **ब्रह्मा पूर्वः एति**। बृहस्पतिमूलः पुरोधा ब्राह्मणः कर्मणाम् अग्रे गच्छति - वे.। ब्रह्मा प्रथमं पूज्यः सन् गच्छति वर्तत इत्यर्थः - सा.। चतुर्वेदवित् आदिभूत आदिमः प्राप्नोति - दया.। the Brāhmaṇa first, (duly reverenced), repairs - W. with whom the Brahman hath precedence - G.

**अप्रतीतो जयति सं धनानि प्रतिजन्यान्युत या सजन्या।**
**अवस्यवे यो वरिवः कृणोति ब्रह्मणे राजा तम् अवन्ति देवाः।। ९।।**

अप्रतिऽइतः। जयति। सम्। धनानि। प्रतिऽजन्यानि। उत। या। सऽजन्या।
अवस्यवे। यः। वरिवः। कृणोति। ब्रह्मणे। राजा। तम्। अवन्ति। देवाः।। ९।।

*विरोध न किया हुआ, प्राप्त करता है सम्यक् धनों को,*
*विरोधी जन सम्बन्धियों को, (और) जो (हैं) जनसामान्यसम्बन्धी।*
*वृद्धि चाहने वाले को, जो स्थान प्रदान करता है,*
*ब्रह्मज्ञानी को राजा, उसकी वृद्धि करते हैं देव।। ९।।*

जो राजा सुखसमृद्धि चाहने वाले ब्रह्मज्ञानी पुरुष को स्थान, सुखसमृद्धि, धनधान्य आदि प्रदान करता है, देव उसको बढ़ाते हैं और उसकी रक्षा करते हैं। वह बिना किसी विरोध के विरोधी जनों के धनों को जीत लेता है और सामान्य जनों से भी धनों को प्राप्त करता है।

टि. *विरोध न किया हुआ* - **अप्रतीतः**। शत्रुभिर् अप्रतिगतः - वे.। अन्यैर् अप्रतिगतः - सा.। शत्रुभिर् अपराजितः - दया.। unopposed - W. G.

*विरोधी जन सम्बन्धियों को* - **प्रतिजन्यानि**। प्रतिजनभवानि - वे.। प्रतिस्पर्धिजनसम्बन्धीनि -

सा.। जनं जनं प्रति योग्यानि - दया.। of hostile people - W. G.

*जनसामान्यसम्बन्धी* - **सजन्या।** सजन्यानि - वे.। जनसम्बन्धीनि - सा.। समानैर् जनैः सह वर्तमानानि - दया.। of his own subjects - W. G.

*वृद्धि चाहने वाले को* - **अवस्यवे।** रक्षणम् इच्छते - वे.। दया.। अवसीयसे धनरहिताय रक्षणम् इच्छते - सा.। seeking his protection - W. who seeks his favour - G.

*स्थान प्रदान करता है* - **वरिवः कृणोति।** पूजां करोति - वे.। धनं करोति ददाति - सा.। bestows riches - W. helps - G.

**इन्द्रश् च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू।**
**आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवो ऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम्।। १०।।**

इन्द्रः। च। सोमम्। पिबतम्। बृहस्पते। अस्मिन्। यज्ञे। मन्दसाना। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू।
आ। वाम्। विशन्तु। इन्दवः। सुऽआभुवः। अस्मे इति। रयिम्। सर्वऽवीरम्। नि। यच्छतम्।। १०।।

*इन्द्र और (तू), सोम का पान करो तुम दोनों, हे बृहस्पते!,*
*इस यज्ञ में, आनन्दित होते हुए, हे धनों को बरसाने वालो।*
*सर्वतः तुममें प्रवेश करें बूँदें, उत्तम बल प्रदान करने वाली,*
*हमें धन को, सब वीर पुत्रों वाले को, नितरां प्रदान करो तुम।। १०।।*

हे वेदवाणी के पालक परमात्मा! तू और आत्मा तुम दोनों आनन्दरूपी धनों की वर्षा करने वाले हो। तुम दोनों आनन्दित होते हुए हमारे इस जीवनरूपी यज्ञ में हमारे भक्तिरस का पान करो। उत्तम सामर्थ्य प्रदान करने वाली हमारे भक्तिरस की बूँदें तुम्हारे अन्दर सब ओर से प्रवेश करें। तुम हमें दानयोग्य धन और सब प्रकार की उत्तम वीर सन्तानें प्रदान करो।

टि. *आनन्दित होते हुए* - **मन्दसाना।** मोदमानौ - वे.। हृष्यन्तौ - सा.। प्रशंसिताव् आनन्दितौ - दया.। exulting - W. rejoicing - G.

*धनों को बरसाने वालो* - **वृषण्वसू।** हे वृष्यमाणधनौ - वे.। वर्षितृधनौ। यजमानेभ्यो दीयमान-धनौ - सा.। यौ वृष्णो बलिष्ठान् वीरान् वासयतस् तौ - दया.। showering riches - W. rainers of treasure - G.

*उत्तम बल प्रदान करने वाली* - **सुऽआभुवः।** शोभनभवनाः - वे.। स्वाभुवः सुष्ठु सर्वतो भवन्तः - सा.। ये स्वयं भवन्ति ते - दया.। all-pervading - W. abundant - G.

*सब वीर पुत्रों वाले को* - **सर्ववीरम्।** सर्वैर् वीरैर् युक्तम् - वे.। सर्वपुत्राद्युपेतम् - सा.। सर्वे वीरा यस्मात् तम् - दया.। हर तरह से वीर सन्तानों से युक्त - सात.। comprising all male descendants - W. with full store of heroes - G.

**बृहस्पत इन्द्र वर्धतं नः सचा सा वां सुमतिर् भूत्वस्मे।**
**अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर् जजस्तम् अर्यो वनुषाम् अरातीः।। ११।। २७।।**

बृहस्पते। इन्द्र। वर्धतम्। नः। सचा। सा। वाम्। सुऽमतिः। भूतु। अस्मे इति।
अविष्टम्। धियः। जिगृतम्। पुरम्ऽधीः। जजस्तम्। अर्यः। वनुषाम्। अरातीः।। ११।।

*हे बृहस्पते!, हे इन्द्र!, बढ़ाओ हमको,*
*साथ-साथ वह तुम्हारा सौमनस्य होवे हमपर।*
*बढ़ाओ तुम विचारों को, जागृत करो प्रज्ञाओं को,*
*नष्ट करो शत्रुओं को संभक्ताओं के, अदाताओं को।। ११।।*

हे वेदवाणी के पालक परमेश्वर और हे मेरे आत्मा! तुम दोनों हमारी वृद्धि करो। तुम दोनों की कृपादृष्टि एक साथ ही हम पर बनी रहे। तुम हमारे विचारों को उन्नत और उदात्त बनाओ। तुम हमारी सोई पड़ी बुद्धियों को जागृत कर दो। हम मिल-बाँट कर खाने वालों के जो विरोधी हैं, और जो अपनी कमाई में से दूसरों को कुछ भी नहीं देते, सब-कुछ स्वयं ही खा जाते हैं, तुम ऐसे पापी जनों को समूल नष्ट कर दो।

टि. *बढ़ाओ हमको* - **वर्धतम् नः**। वर्धयतम् अस्मान् - वे.। सा.।

*सौमनस्य* - **सुमतिः**। अनुग्रहबुद्धिः - सा.। श्रेष्ठा प्रज्ञा - दया.। the favourable disposition - W. your benevolence - G.

*जागृत करो प्रज्ञाओं को* - **जिगृतम् पुरन्धीः**। प्रकाशयतं प्रज्ञाः - वे.। पुरन्धीः पुरं शरीरं धीयते स्थाप्यते याभिर् मतिभिस् ताः स्तुतीर् जिगृतं प्रबुध्यतम् - सा.। be awake to our laudatins - W. wake up our spirit - G.

*नष्ट करो* - **जजस्तम्**। उपक्षपयतम् - वे.। युध्यतम् उपक्षपयतम् इत्यर्थः - सा.।

*संभक्ताओं के* - **वनुषाम्**। याचितृणाम् - वे.। संभक्तृणाम् - सा.। संविभाजकानाम् - दया.। of th donors - W.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां तृतीये ऽष्टके सप्तमो ऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त ५१

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - उषाः। छन्दः - त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**इदम् उ त्यत् पुरुतमं पुरस्ताज् ज्योतिस् तमसो वयुनावद् अस्थात्।**
**नूनं दिवो दुहितरो विभातीर् गातुं कृणवन्नुषसो जनाय।। १।।**

इदम्। ऊँ इति। त्यत्। पुरुऽतमम्। पुरस्तात्। ज्योतिः। तमसः। वयुनऽवत्। अस्थात्।
नूनम्। दिवः। दुहितरः। विऽभातीः। गातुम्। कृणवन्। उषसः। जनाय।। १।।

*यह निश्चय से वह अत्यधिक, सामने की ओर,*
*ज्योति अन्धकार में से, प्रज्ञान वाली उठ रही है।*
*निश्चय से प्रकाश की पुत्रियां, प्रकाशित होती हुई,*
*मार्ग बनाती हैं उषाएं, मनुष्य के लिये।। १।।*

अध्यात्म में उषा ज्ञान की वह प्रथम रश्मि है, जो सम्पूर्ण ज्ञान रूपी सूर्य के उदय से पूर्व उपासक के हृदयक्षितिज पर उदित होती है। उषा की क्रमशः प्रादुर्भूत होने वाली ये ज्ञानरश्मियां शनैः-शनैः उपासक की ज्ञानराशि में वृद्धि करती रहती हैं और अन्ततो गत्वा सम्पूर्ण ज्ञानरूपी सूर्य का उदय हो जाता है। यही बात इस मन्त्र में कही गई है। हृदयाकाश में सामने की ओर प्रज्ञान से युक्त अत्यधिक जाज्वल्यमान ज्ञानप्रकाश अज्ञानान्धकार का भेदन करके उसके अन्दर से ही उदित हो रहा है। इस समय ज्ञानप्रकाश की पुत्रियां ये उषाएं अर्थात् ज्ञानरश्मियां प्रकाशित होती हुईं उपासक के लिये अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिये मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

टि. *अत्यधिक* - **पुरुतमम्**। बहुतमम् - वे.। अत्यन्तप्रभूतम् - सा.। अतिशयेन बहुप्रकारम् - दया.। widely-spread - W. most abundant - G.

*प्रज्ञान वाली* - **वयुनावत्**। प्रज्ञानवत् - वे.। दया.। वेतेः कान्तिकर्मण इदम्। प्रकृष्टकान्तिमत्। अथवा वयुनम् इति प्रज्ञानाम। प्रज्ञोपेतम्। सर्वस्य प्रज्ञापकम् इत्यर्थः। सा.। sense-bestowing - W.

*उठ रही है* - **अस्थात्**। उद् अस्थात्।। आविर् भवति - वे.। अस्थात् उदतिष्ठत् - सा.। वर्तते - दया.। has sprung up - W. hath mounted - G.

*प्रकाश की* - **दिवः**। आदित्यस्य - सा.। प्रकाशस्य - दया.। of heaven - W. G.

*मार्ग बनती हैं* - **गातुम् कृणवन्**। आगमनं कुर्वन्ति - वे.। गातुं गमनं गमनादिव्यापारसामर्थ्यम् अकुर्वन् - सा.। are giving (the faculty of act) - W. bring welfare - G.

**अस्थुर् उ चित्रा उषसः पुरस्तान् मिता इव स्वरवो ऽध्वरेषु।**
**व्यू व्रजस्य तमसो द्वारोच्छन्तीर् अव्रञ् छुचयः पावकाः।। २।।**

अस्थुः। ऊँ इति। चित्राः। उषसः। पुरस्तात्। मिताःऽइव। स्वरवः। अध्वरेषु।
वि। ऊँ इति। व्रजस्य। तमसः। द्वारा। उच्छन्तीः। अव्रन्। शुचयः। पावकाः।। २।।

*उदित हो रही हैं निश्चय से पूज्य उषाएं सम्मुख,*
*निर्मित किये हुओं की तरह यूपों की, यज्ञों में।*

*सपाट निश्चय से बाड़े के, अन्धकार के, द्वारों को,*
*चमकती हुईं, उद्घाटित कर देती हैं, दीप्तिमती, शोधिका।। २।।*

प्रथम ज्ञानरश्मि रूपी पूज्य उषाएं हृदयाकाश के उदयाचल पर इस प्रकार उदित होकर स्थित हैं, जिस प्रकार यज्ञों के अन्दर बनाकर गाड़े हुए यूप दूर से ही दृश्यमान होते हैं। सचमुच प्रकाशमान, दीप्तिमती, पवित्र करने वाली ये ज्ञानरश्मि रूपी उषाएं हृदयाकाश में अज्ञान के बाड़े के द्वारों को स्पष्टतया खोलकर वहाँ स्थित अन्धकार को ध्वस्त कर डालती हैं। इस प्रकार अज्ञान के अन्धकार का विनाश होकर सर्वत्र ज्ञान के प्रकाश का साम्राज्य हो जाता है।

टि. *पूज्य* - **चित्राः**। चित्रवर्णाः - वे.। चायनीयाः - सा.। विचित्रगुणकर्मस्वभावाः - दया.। many-limbed - W. the richly-coloured - G.

*निर्मित किये हुओं की तरह* - **मिताः इव**। खाता इव - सा.। planted - W. G.

*यूपों की (तरह)* - **स्वरवः**। यूपाः - वे.। यूपा इव। ते यथा वेद्याः पुरतो भासन्ते तद्वत्। यद्यपि स्वरुशब्दो यूपच्छेदपतितप्रथमशकलवाची यः प्रथमः शकलः परापतेत् स स्वरुः कार्य इत्युक्तत्वात् तथाप्यत्र मितशब्दश्रवणाच् चषालवन्तः स्वरवः (ऋ. ३.८.१०) इत्यादौ तथा दर्शनाच् चात्र यूपवचनः। सा.। like the pillars - W. G.

*बाड़े के, अन्धकार के, द्वारों को* - **व्रजस्य तमसः द्वारा**। तमसो व्रजस्य द्वारेत्यन्वयः।। वारकस्य तमसः द्वाराणि - वे.। व्रजस्य वारकस्य तमसो द्वारा द्वाराणि - सा.। the doors of the obstructing gloom - W. the portals of the fold of darkness - G.

*उद्घाटित कर देती हैं* - **वि अव्रन्**। वि वृण्वन्ति - वे.। अव्रन् व्यवृण्वन् - सा.। विवासयन्त्यः - दया.। opening - W. unbarred - G.

*दीप्तिमती* - **शुचयः**। दीप्ताः - वे.। सा.। पवित्राः - दया.। radiant - W. splended - G.

**उच्छन्तीर् अद्य चितयन्त भोजान् राधोदेयायोषसो मघोनीः।**
**अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानास् तमसो विमध्ये।। ३।।**

उच्छन्तीः। अद्य। चितयन्त। भोजान्। राधःऽदेयाय। उषसः। मघोनीः।
अचित्रे। अन्तर् इति। पणयः। ससन्तु। अबुध्यमानाः। तमसः। विऽमध्ये।। ३।।

*प्रकाशित होती हुई, आज जगाएं पालकों को,*
*धनों के दान के लिये, उषाएं दानशीला।*
*न जगाने वाले के अन्दर, कंजूस सोते रहें,*
*न जगाए जाते हुए, तम के ठीक मध्य में।। ३।।*

उदित होकर अपने ज्ञानप्रकाश को सब ओर फैलाने वाली, दान के स्वभाव वाली उषाएं दूसरों को भोजन देने वाले और पालन करने वाले धर्मात्मा जनों को अपने धनों का दान करने के लिये ब्राह्ममुहूर्त्त में ही जगा देती हैं। जो दूसरों को न देने वाले, कंजूस, तामसिक वृत्ति वाले जन हैं, वे न जगाने वाले अज्ञान-अन्धकार के ठीक बीच में सोते रहते हैं। वे कभी जागते नहीं। उषा उनको सोता हुआ छोड़कर अपने मार्ग पर आगे बढ़ जाती है। (प्र बोधयोषः पृणतो मघोन्यबुध्यमानाः पणयः

ससन्तु - ऋ. १.१२४.१०।)

टि. *जगाएं* - **चितयन्त**। चित संचेतने बोधने।। बोधयन्तु - वे.। प्रज्ञापयन्ति - सा.। विज्ञापयन्ति - दया.। animate - W. urge - G.

*पालकों को* - **भोजान्**। पृणतः (द्रष्टव्य ऋ. १.१२४.१०)।। भोजयितॄन् उदारान् - वे.। भोजयितॄन् यजमानान् - सा.। पालकान् पतीन् - दया.। liberal givers - G.

*न जगाने वाले के अन्दर* - **अचित्रे अन्तः**। चित संचेतने बोधने।। चित्ररहिते अप्रज्ञायमान-सर्वपदार्थे - वे.। अचायनीये - सा.। अनाश्चर्ये मध्ये - दया.। in the unlovely (depth of darkness) - W. in the unlightened (depth of darkness) - G.

*कंजूस* - **पणयः**। लुब्धाः - वे.। वणिज इवादातारः - सा.। प्रशंसनीयाः - दया.। churlish (traffickers) - W. niggard (traffickers) - G.

**कुवित् स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयाद् उषसो वो अद्य।**
**येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रेवती रेवद् ऊष।। ४।।**

कुवित्। सः। देवीः। सनयः। नवः। वा। यामः। बभूयात्। उषसः। वः। अद्य।
येन। नवऽग्वे। अङ्गिरे। दशऽग्वे। सप्तऽआस्ये। रेवतीः। रेवत्। ऊष।। ४।।

*बार-बार वह, हे प्रकाशमानो!, पुराना नया भी,*
*गमन होता रहे, हे उषाओ!, तुम्हारा आज।*
*जिससे नवग्व पर, अङ्गिरा पर, दशग्व पर,*
*सात वाणियों वाले पर, हे धन वालियो!, धनवत्ता से प्रकाशित होती हो तुम।। ४।।*

हे प्रथम ज्ञानरश्मियों से प्रकाशमान अध्यात्म उषाओ! पूर्व काल में भी तुम्हारा आगमन इस ओर हमारे हृदयाकाश में होता रहा है और वर्तमान काल में भी तुम्हारा आगमन इस ओर हो रहा है। हे वैभव वालियो! जिस आगमन से तुम नौ मास के याग में यज्ञाग्नि से तपकर सिद्धि को प्राप्त करने वाले, दस मास के याग में यज्ञाग्नि से तपकर सिद्धि को प्राप्त करने वाले और सात छन्दों वाली ऋचाओं का अपने मुख से गान करने वाले, यज्ञाग्नि को तृप्त करने वाले साधक को धनवत्ता के साथ ज्ञानप्रकाश प्रदान करती रही हो, आज भी वह तुम्हारा आगमन बार-बार इस ओर होता रहे।

टि. *बार-बार* - **कुवित्**। कुविद् इति बहुनाम (निघ. ३.१)।। बहुः - वे.। बहुवारम् - सा.। महान् - दया.। frequent - W.

*पुराना* - **सनयः**। पुरातनः - वे.। सा.। विभक्त्रयः - दया.। old - W.

*गमन होता रहे* - **यामः बभूयात्**। गमनं भवतु - वे.। यामो गमनसाधनो रथो बभूयाद् भवेद् गच्छेद् इत्यर्थः - सा.। यामः यो याति सः, भृशं भूयात् - दया.। chariot be - W.

*नवग्व पर* - **नवग्वे**। नव गावो विद्यन्ते यस्य तस्मै - दया.। the observers of the nine days' rite - W. ऋ. १.३३.६ मन्त्रे १.६२.४ मन्त्रे च टिप्पणी द्रष्टव्या।

*दशग्व पर* - **दशग्वे**। दश गावो यस्य तस्मै - दया.। the observers of the ten days' rite - W. ऋ. १.६२.४ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।

*सात वाणियों वाले पर* – **सप्तास्ये**। बृहस्पतिना च युक्ते युद्धे – वे.। सप्तास्ये सप्तछन्दोयुक्तमुखे – सा.। सप्त प्राणा आस्ये यस्य तस्मिन् – दया.। upon the seven-mouthed (troop) - W. the seven-toned singer - G.

*प्रकाशित होती हो तुम* – **ऊष**। निवसितवत्यः – वे.। विभातं कृतवत्यः। वसेर् व्युच्छनकर्मणो लिण्मध्यमबहुवचनस्येदं रूपम्। सा.। निवासयन्ति – दया.। you shine - W. ye seek - G.

**यूयं हि देवीर् ऋतयुग्भिर् अश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः।**
**प्रबोधयन्तीर् उषसः ससन्तं द्विपाच् चतुष्पाच् चरथाय जीवम्।। ५।। १।।**

यूयम्। हि। देवीः। ऋतयुक्ऽभिः। अश्वैः। परिऽप्रयाथ। भुवनानि। सद्यः।
प्रऽबोधयन्तीः। उषसः। ससन्तम्। द्विऽपात्। चतुःऽपात्। चरथाय। जीवम्।। ५।।

*तुम निश्चय से, हे प्रकाशमानो!, ऋत से जुते अश्वों से,*
*सब ओर प्रयाण करती हो, लोकों में अविलम्ब।*
*जगाती हुई, हे उषाओ!, सोते हुए को,*
*दोपाए को, चोपाए को, विचरण के लिये, जीव को।। ५।।*

हे दीप्तिमती अध्यात्म उषाओ! जिस प्रकार लौकिक उषाएं सोते हुए दोपायों, चोपायों और जीव-जन्तुओं को अपने-अपने कार्यों में संलग्न होने के लिये जगाती हुई अपने निश्चित समय पर बिना किसी विलम्ब के ईश्वरीय नियमों के द्वारा नियुक्त होने वाली बलवती शक्तियों के साथ सब लोकों में गमन करती हैं, उसी प्रकार तुम भी अपनी ज्ञानरश्मियों से प्राण, मन, इन्द्रिय आदि को प्रेरित करती हुई ऋत का पालन करती हुई अपनी दिव्य शक्तियों के साथ मानव पिण्ड में सर्वत्र गमन करती हो।

टि. *ऋत से जुते अश्वों से* – **ऋतयुग्भिः अश्वैः**। यज्ञार्थं युक्तैः अश्वैः – वे.। यज्ञगामिभिर् अश्वैः – सा.। य ऋतेन सत्येन युज्जते तैः अश्वैः – दया.। with horses that frequent sacrifices - W. with horses harnessed by eternal Order - G.

*सब ओर प्रयाण करती हो* – **परिप्रयाथ**। परिगच्छथ – वे.। परितः प्रकृष्टं गच्छथ – सा.। सर्वतः प्राप्नुयात – दया.। travel - W. G.

*विचरण के लिये* – **चरथाय**। चरणाय – वे.। चरणाय गमनादिव्यवहाराय – सा.। to pursue (functions) - W. to motion - G.

**क्व स्विद् आसां कतमा पुराणी यया विधाना विदधुर् ऋभूणाम्।**
**शुभं यच् छुभ्रा उषसश् चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीर् अजुर्याः।। ६।।**

क्व। स्वित्। आसाम्। कतमा। पुराणी। यया। विऽधाना। विऽदधुः। ऋभूणाम्।
शुभम्। यत्। शुभ्राः। उषसः। चरन्ति। न। वि। ज्ञायन्ते। सऽदृशीः। अजुर्याः।। ६।।

*कहाँ (है), इनमें से कौन सी है पुरानी,*
*जिससे विधान विहित हुए हैं, ऋभुओं के।*
*प्रकाश के साथ जब, दीप्तिमती उषाएं विचरती हैं,*

*नहीं अलग-अलग जानी जाती हैं, सदृश, जरारहित।। ६।।*

यदि यह पूछा जाए, कि सबसे पुरानी उषा कौन सी थी और वह कहाँ उदित हुई, जिसके उदित होने के साथ कार्यों को विधि-विधान पूर्वक करने वाले देवों और मनुष्यों के लिये विधान का निर्माण हुआ, तो इस प्रश्न का उत्तर देना सरल नहीं है। सब उषाएं समान और जरारहित हैं, नित्यनूतन और सदा युवावस्था में रहने वाली हैं। इसलिये यह कहना कठिन है, कि सबसे पहली उषा कौन सी थी और वह कहाँ और कब उदित हुई। अतः यह बताना भी कठिन है कि जगत् और उसके विधान, शाश्वत नियम अर्थात् ऋत की सृष्टि कब हुई। वस्तुतः प्रभु अनादि और अनन्त है और उसकी सृष्टि और विधान भी अनादि और अनन्त हैं।

टि. *जिससे विधान विहित हुए हैं ऋभुओं के* - **यया विधाना विदधुर् ऋभूणाम्।** यया उषसा देवाः दीप्तीनां विधातव्यानि तेजांसि विदधुः - वे.। यया ऋभूणां सम्बन्धीनि विधाना चमसादिनिर्माणानि विदधुर् अकुर्वन्नृभवः - सा.। through whom the works of the Ṛbhus were accomplished - W. through whom they fixed the Ṛbhus' regulations - G.

*नहीं अलग-अलग जानी जाती हैं* - **न वि ज्ञायन्ते।** पृथक् न वि ज्ञायन्ते - वे.। अद्यतन्य एता एताः पुराण्य इति न ज्ञायन्ते - सा.। are not distinguished - W. are not known apart - G.

*जरारहित* - **अजुर्याः।** जरारहिताः - वे.। अशीर्णा नित्यनूतनाः - सा.। अजीर्णाः - दया.।

**ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुर् अभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः।**
**यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवञ् छंसन् द्रविणं सद्य आप।। ७।।**

ताः। घ। ताः। भद्राः। उषसः। पुरा। आसुः। अभिष्टिऽद्युम्नाः। ऋतजातऽसत्याः।
यासु। ईजानः। शशमानः। उक्थैः। स्तुवन्। शंसन्। द्रविणम्। सद्यः। आप।। ७।।

*वे निश्चय से, वे कल्याणी उषाएं, पुरातन काल में थीं,*
*अभीष्ट प्रकाशों वाली, ऋत के पालन से उत्पन्न सत्यों वाली।*
*जिनमें यजन करता हुआ (उपासक), प्रशंसा करता हुआ स्तोत्रों से,*
*स्तुति करता हुआ, सराहता हुआ, धन को तुरन्त प्राप्त करता था।। ७।।*

निस्सन्देह प्राचीन काल में कल्याण करने वाली ऐसी उषाएं उदित होती थीं, जो कमनीय ज्ञानप्रकाशों को देने वाली थीं और जो शाश्वत नियम का पालन करने के कारण उत्पन्न हुए सत्य से युक्त थीं। उनके अन्दर देवों के लिये यजन करता हुआ और स्तोत्रगानों से परमेश्वर की प्रशंसा करता हुआ, स्तुति करता हुआ और सराहना करता हुआ उपासक लौकिक और अलौकिक धनों को अविलम्ब प्राप्त कर लेता था। इस काल में भी उनके सदृश ही नित्य युवा उषाएं उदित होती हैं, जिनमें यजन, स्तुति, प्रशंसा आदि करने से उपासकों को वैसा ही फल प्राप्त हो सकता है।

टि. *कल्याणी* - **भद्राः।** भजनीयाः - वे.। कल्याण्यः - सा.। कल्याणकरीः - दया.। auspicious - W. blest - G.

*अभीष्ट प्रकाशों वाली* - **अभिष्टिद्युम्नाः।** अभ्येषणीयान्नाः - वे.। अभिगमनमात्रेण द्युम्नं धनं यासां ताः - सा.। प्रशंसितयशोधनाः - दया.। rich with desired blessings - W. shining with

succour - G.

*ऋत के पालन से उत्पन्न सत्यों वाली* - **ऋतजातसत्याः**। यज्ञार्थं जातसत्यभूतसर्वपदार्थाः (उषसः) - वे.। ऋतार्थं यज्ञार्थं जाताश् च ताः सत्याः सत्यफलाश् च तादृश्यः - सा.। ऋताज् जातेषु व्यवहारेषु सत्सु साध्व्यः - दया.। truthful (bestowers) of the results of sacrifice - W. true with the truth that springs from holy Order - G.

*यजन करता हुआ* - **ईजानः**। यागं कुर्वाणः - सा.।

*प्रशंसा करता हुआ* - **शशमानः**। शंसमानः - सा.। प्राप्तप्रशंसः सन् - दया.।

**ता आ चरन्ति समना पुरस्तात् समानतः समना पप्रथानाः।**
**ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते॥ ८॥**

ताः। आ। चरन्ति। समना। पुरस्तात्। समानतः। समना। पप्रथानाः।
ऋतस्य। देवीः। सदसः। बुधानाः। गवाम्। न। सर्गाः। उषसः। जरन्ते॥ ८॥

*वे इस ओर विचरती हैं, एक साथ मिलकर, सामने से,*
*समान स्थान से, साथ मिलकर, अत्यधिक विस्तृत होती हुईं।*
*ऋत के, दीप्तियों वाली, स्थान का बोध कराती हुईं,*
*गौओं के गतिमान झुंड की तरह, उषाएं गमन करती हैं॥ ८॥*

ये ज्ञानरश्मिरूपी उषाएं अपने से पूर्व स्थित और स्रोतभूत सम्पूर्णज्ञानरूपी सूर्य से आकर और एक साथ मिलकर उपासक के हृदय में प्रवेश करती हैं। ये उस समान स्थान से एक साथ मिलकर उपासक के हृदय में विस्तार को प्राप्त होती हैं। ज्ञान की दीप्तियों से युक्त ये ज्ञानरश्मि रूपी उषाएं उपासक को ऋत के उद्गमस्थान उस परमेश्वर का बोध कराती हुई गौओं अथवा सूर्यरश्मियों के चलते झुण्ड की तरह विचरण करती हैं।

टि. *एक साथ मिलकर* - **समना**। समानम् एव - वे.। सर्वतः समानाः - सा.। समानाः। अत्र सुपां सुलुग् इति जसो लुक्। दया.। of similar form, alike - W. all at once, in the self-same manner - G.

*समान स्थान से* - **समानतः**। समाने काले - वे.। समानाद् देशात् - सा.। from the same region - W. from one place - G.

*ऋत के स्थान का बोध कराती हुई* - **ऋतस्य सदसः बुधानाः**। सत्यं स्थानं जानत्यः - वे.। ऋतस्य यज्ञस्य सदसः सदः। तत्रत्यम् ऋत्विग्घविरादिकम् इत्यर्थः। बुधाना बोधयन्त्यः। सा.। arousing the assembly of sacrifice - W. awaking, from the seat of holy Order - G.

*गौओं के गतिमान झुण्ड की तरह* - **गवां न सर्गः**। उदकानां सृष्टय इव - सा.। are glorified like the (rays) creative of the waters - W. like troops of cattle - G.

**ता इन् न्वे३व समना समानीर् अमीतवर्णा उषसश् चरन्ति।**
**गूहन्तीर् अभ्वम् असितं रुशद्भिः शुक्रास् तनूभिः शुचयो रुचानाः॥ ९॥**

ताः। इत्। नु। एव। समना। समानीः। अमीतऽवर्णाः। उषसः। चरन्ति।

गूहन्तीः। अभ्वम्। असितम्। रुशत्ऽभिः। शुक्राः। तनूभिः। शुचयः। रुचानाः।। ९।।

*वे ही अब एक साथ मिलकर, समान रूपों वाली,*
*अहिंसित वर्णों वाली उषाएं, विचरण कर रही हैं।*
*ढकती हुई महान् कृष्णवर्ण तम को, प्रकाशमानों से,*
*शुक्लवर्णा, विस्तृत शरीरों से, पवित्र, प्रकाशित होती हुई।। ९।।*

समान स्वरूपों वाली, अम्लान तेजों वाली, प्रकाशमान ज्ञान वाली, पवित्र, प्रकाशित होती हुई ये ज्ञानरश्मिरूपी उषाएं अपने प्रकाशमान विस्तारों से (प्राचीन काल की तरह) वर्तमान काल में भी मिलकर कृष्णवर्ण अज्ञान के विशाल अन्धकारों को विनाश के गर्त में छुपाती हुई विचरण कर रही हैं।

टि. *समान रूपों वाली* - **समानीः**। समान्यः - वे.। एकरूपाः - सा.। of similar form - W.

*अहिंसित वर्णों वाली* - **अमीतवर्णाः**। अम्लानवर्णाः - वे.। अहिंसितवर्णा अपरिमित वर्णा वा - सा.। अहिंसितवर्णाः - दया.। of infinite hues - W. with undiminished colours - G.

*महान् कृष्णवर्ण तम को* - **अभ्वम् असितम्**। महत् तमः - वे.। अभ्वम् महन्नामैतत्। अतिमहत्। असितं कृष्णं रूपम्। सा.। the very great gloom - W. the gigantic might of darkness - G.

*विस्तृत शरीरों से* - **तनूभिः**। स्वशरीरैः - सा.। विस्तृतशरीरैः - दया.।

**रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः।**
**स्योनाद् आ वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम।। १०।।**

रयिम्। दिवः। दुहितरः। विऽभातीः। प्रजाऽवन्तम्। यच्छत। अस्मासु। देवीः।
स्योनात्। आ। वः। प्रतिऽबुध्यमानाः। सुऽवीर्यस्य। पतयः। स्याम।। १०।।

*धन को, हे सूर्य की पुत्रियो!, दीप्तिमती (तुम),*
*प्रजाओं से युक्त को, प्रदान करो हमें, हे प्रकाशमानो!*
*सुख के निमित्त, सब ओर से तुम को जगाते हुए,*
*श्रेष्ठ बल के स्वामी होवें हम।। १०।।*

हे सम्पूर्णज्ञानरूपी सूर्य की पुत्रियो! हे ज्ञानप्रकाश प्रदान करने वाली अध्यात्म उषाओ! तुम ज्ञान के प्रकाश से भली प्रकार प्रकाशित हो। तुम हमें आभ्यन्तर और बाह्य, निःश्रेयस और अभ्युदय, दोनों प्रकार के धन प्रदान करो, जिनमें उत्तम सन्तति भी सम्मिलित हो। हम अपने सुख के निमित्त तुम्हें अपनी स्तुतियों से सम्बोधित कर रहे हैं, जागृत कर रहें हैं, तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं। हम तुम्हारी कृपा से सुखों को प्राप्त करने के लिये उत्तम बलवीर्य के स्वामी बनें।

टि. *हे सूर्य की पुत्रियो* - **दिवः दुहितरः**। द्योतमानस्यादित्यस्य दुहितृस्थानीयाः - सा.। सूर्यस्य कन्या इव किरणाः - दया.। Daughters of heaven - W. G.

*सुख के निमित्त* - **स्योनात्**। सुखस्य स्थानात् - वे.। स्योनात् सुखान् निमित्तभूतात् - सा.। सुखात् - दया.। for our benefit - W. from our pleasant place of rest - G.

*तुम को जगाते हुए* - **वः प्रतिबुध्यमानाः**। यूयं प्रतिबुध्यमाना भवथ - वे.। युष्मान् प्रतिबुध्यमानाः प्रतिबोधयन्तो वयम् - सा.। we awaking you - W. we rouse us - G.

**तद् वो दिवो दुहितरो विभातीर् उप ब्रुव उषसो यज्ञकेतुः।**
**वयं स्याम यशसो जनेषु तद् द्यौश् च धत्तां पृथिवी च देवी।। ११।। २।।**

तत्। वः। दिवः। दुहितरः। विऽभातीः। उप। ब्रुवे। उषसः। यज्ञऽकेतुः।
वयम्। स्याम। यशसः। जनेषु। तत्। द्यौः। च। धत्ताम्। पृथिवी। च। देवी।। ११।।

*इसलिये तुमको, हे सूर्य की पुत्रियो!, प्रकाशमानों को,*
*निकट से बुलाता हूँ मैं, हे उषाओ!, यज्ञ की पहचान वाला।*
*हम होवें यशों वाले मनुष्यों में,*
*उसे द्यौ प्रदान करे, और पृथिवी प्रकाशमाना।। ११।।*

इसलिये हे सम्पूर्णज्ञान रूपी सूर्य की पुत्रियो! सदा ज्ञानप्रकाश से प्रकाशित होने वालियों को तुमको यज्ञ आदि शुभ कर्मों से पहचाना जाने वाला मैं उपासक अपने हृदय से पुकार रहा हूँ। हम उपासक जन सदा अपने आस-पास रहने वाले मनुष्यों में यशस्वी होवें। उस यश को तुम हमें प्रदान करो। ये द्यौ और पृथिवी भी हमें उसे प्रदान करें।

टि. *निकट से बुलाता हूँ मैं* - **उप ब्रुवे**। उपेत्य ब्रवीमि - सा.।I address you - W. G.

*यज्ञ की पहचान वाला* - **यज्ञकेतुः**। पूर्वपदोदात्तत्वाद् बहुव्रीहिः समासः।। यज्ञो यस्य प्रज्ञापकः - वे.। यज्ञ एव केतुः प्रज्ञापको यस्य तादृशो ऽहम् - सा.। यज्ञस्य प्रापकः - दया.।(as) the announcer of the sacrifice - W. well-skilled in lore of sacrifice - G.

*यशों वाले* - **यशसः**। यशस्विनः - वे.। दया.। कीर्त्तेर् अन्नस्य वा (स्वामिनः) - सा.।(the possessors) of celebrity - W. glorious - G.

*उसे द्यौ प्रदान करे और पृथिवी* - **तत् द्यौश् च धत्तां पृथिवी च**। तत् अस्मभ्यं द्यावापृथिवी च प्रयच्छताम् - वे.। तद् यशो द्यौः पृथिवी च धारयताम् - सा.।

## सूक्त ५२

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - उषाः। छन्दः - गायत्री। सप्तर्चं सूक्तम्।

**प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः। दिवो अदर्शि दुहिता।। १।।**

प्रति। स्या। सूनरी। जनी। विऽउच्छन्ती। परि। स्वसुः। दिवः। अदर्शि। दुहिता।। १।।

*सामने वह उत्तम नेत्री, जनयित्री,*
*तम को भगाती हुई, समाप्ति पर भगिनी के।*
*सूर्य की दिखाई दे रही है पुत्री।। १।।*

सम्मुख पूर्णज्ञान रूपी सूर्य की पुत्रीस्थानीया, अन्य ज्ञानरश्मियों का नेतृत्व करने वाली, आह्लाद, सुख और आनन्द को उत्पन्न करने वाली, प्रथमज्ञानरश्मि रूपी उषा अपनी बहन रात्रि के अन्धकारों को उसकी समाप्ति पर दूर भगाती हुई और इस ओर आती हुई अर्थात् उपासक की हृदयगुहा में प्रवेश करती हुई अनुभूत हो रही है।

ज्ञान का प्रतिनिधित्व करने वाली उषा और अज्ञान का प्रतिनिधित्व करने वाली रात्रि साहचर्य के

कारण परस्पर बहनें हैं। तु. स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै योनिम् आरैक् (ऋ. १.१२४.८)।

टि. *उत्तम नेत्री* - **सूनरी**। उषाः - वे.। सुष्ठु प्राणिनां नेत्री - सा.। सुष्ठु नेत्री - दया.। the kind conductress (of men) - W. this lady - G.

*जनयित्री* - **जनी**। जनयित्री - वे.। दया.। जनयित्री फलानाम् - सा.। the parent of benefits - W. giver of delight - G.

*समाप्ति पर* - **परि**। परिसमाप्तौ।। उपरिभागे रात्रिपर्यवसानकाले - सा.। after - G.

*भगिनी के* - **स्वसुः**। रात्रेः - वे.। स्वसृस्थानीयाया रात्रेः - सा.। भगिन्याः - दया.। of her sister night - W. (after) her sister - G.

**अश्वैव चित्रारुषी माता गवाम् ऋतावरी। सखाभूद् अश्विनोर् उषाः।। २।।**

अश्वाऽइव। चित्रा। अरुषी। माता। गवाम्। ऋतऽवरी। सखा। अभूत्। अश्विनोः। उषाः।। २।।

*अश्वा की तरह विविधवर्णा, आरोचमाना,*

*माता रश्मियों की, सत्यनियम की पालिका।*

*मित्र बन गई है, अश्वियों की, उषा।। २।।*

साधक के हृदयाकाश में सबसे पहले प्रकट होने वाली प्रथमज्ञानरश्मि रूपी अध्यात्म उषा अनेक वर्णों वाली घोड़ी की तरह अनेक रूपों वाली और अपने ज्ञानप्रकाश को सब ओर फैलाने वाली है। यह सर्वप्रथम प्रवेश करने के कारण तत्पश्चात् प्रवेश करने वाली ज्ञानरश्मियों को उत्पन्न करने वाली अर्थात् उनकी मातृस्थानीया है। यह सत्यनियम का पालन करने वाली है। यह साधक के हृदय में प्रवेश करके बुद्धि और मन की मित्र बन जाती है।

टि. *आरोचमाना* - **अरुषी**। रोचमाना - वे.। आरोचमाना - सा.। आरक्ता - दया.।

*माता रश्मियों की* - **माता गवाम्**। रश्मीनां माता - वे.। दया.। रश्मीनां निर्मात्री - सा.। mother of the rays of light - W. mother of the kine - G.

*सत्यनियम की पालिका* - **ऋतावरी**। यज्ञवती - वे.। सा.। बहुसत्यप्रकाशिका - दया.। the object of sacrifice - W. unfailing - G.

**उत सखास्यश्विनोर् उत माता गवाम् असि। उतोषो वस्व ईशिषे।। ३।।**

उत। सखा। असि। अश्विनोः। उत। माता। गवाम्। असि। उत। उषः। वस्वः। ईशिषे।। ३।।

*और मित्र है तू अश्वियों की,*

*और माता रश्मियों की है तू।*

*ओर हे उषा! धनों पर शासन करती है तू।। ३।।*

और हे साधक के हृदयाकाश में सर्वप्रथम प्रादुर्भूत होने वाली ज्ञानरश्मि! तू बुद्धि और मन की सहचरी है। तू अनन्तर प्रादुर्भूत होने वाली ज्ञानरश्मियों के लिये मातृस्थानीया है। तू घर, अन्न आदि बाह्य और सुख, आनन्द आदि आभ्यन्तर धनों की स्वामिनी है।

टि. *धनों पर शासन करती है तू* - **वस्वः ईशिषे**। धनस्येशिषे। ईश्वरा भवसि। सा.। धनस्य इच्छसि - दया.। thou rulest over riches - W. G.

**यावयद्द्वेषसं त्वा चिकित्वित् सूनृतावरि। प्रति स्तोमैर् अभुत्स्महि।। ४।।**

यवयत्ऽद्वेषसम्। त्वा। चिकित्वित्। सूनृताऽवरि। प्रति। स्तोमैः। अभुत्स्महि।। ४।।

*द्वेषों को दूर करने वाली को, तुझको,*
*प्रज्ञापिका को, हे सत्य मधुर वचनों वाली।*
*प्रत्यक्ष स्तोत्रों से (अपने), जगाते हैं हम।। ४।।*

हे सत्य और मधुर वेदवचनों वाली प्रथमज्ञानरश्मि रूपी उषा! तू द्वेष की भावनाओं और द्वेष करने वाले दुष्ट जनों से दूर रहने वाली और उनको दूर भगाने वाली है। तू अपने उत्तम ज्ञानों से हमें सब पदार्थों का बोध कराने वाली है। हम स्तोत्रों और स्तुतिगानों के द्वारा तुझे अपने हृदयों में प्रत्यक्ष रूप से जागृत करना चाहते हैं। तू हमारे हृदयों में प्रतिदिन उदित होती रह, यही हमारी कामना है।

टि. *द्वेषों को दूर करने वाली को* - **यावयद्द्वेषसम्।** पृथक्क्रियमाणशत्रुकाम् - वे.। यवयन्तो वियुज्यमाना द्वेषांसि द्वेष्टारो यस्यास् तादृशी। पृथक् क्रियन्ते द्वेषांस्यनयेति वा। रात्रौ हननायोद्युक्ता द्वेषिण उषःकाले हि पलायन्ते। तादृशीम्। सा.। यावयन्तं द्वेष्टारं द्वेषसं द्वेष्टारं पृथक्कारयन्तीम् - दया.। baffler of animosities - W. who driveth hate away - G.

*प्रज्ञापिका को* - **चिकित्वित्।** चिकितुषीम् - वे.। ज्ञापयन्तीम् - सा.। दया.। the restorer of consciousness - W. thinking of thee - G.

*हे सत्य मधुर वचनों वाली* - **सूनृतावरि।** सूनृतेति वाङ्नाम। तद्वति। सा.। सत्यवाक्प्रकाशिके - दया.। thou who art endowed with truth - W. O Joyous One - G.

*प्रत्यक्ष जगाते हैं हम* - **प्रति अभुत्स्महि।** प्रति बोधयामः - वे.। स्तुम इत्यर्थः - सा.। विजानीयाम - दया.। we awaken thee - W. we wake - G.

**प्रति भद्रा अदृक्षत गवां सर्गा न रश्मयः। ओषा अप्रा उरु ज्रयः।। ५।।**

प्रति। भद्राः। अदृक्षत। गवाम्। सर्गाः। न। रश्मयः। आ। उषाः। अप्राः। उरु। ज्रयः।। ५।।

*सामने कल्याणी, दिखाई दे रही हैं,*
*गौओं के चलते झुंडों सी, रश्मियां।*
*सर्वतः उषा पूर रही है, विस्तृत स्थान को ।। ५।।*

सर्वप्रथम हृदयाकाश में उदित होने वाली अध्यात्म उषा की ज्ञानरश्मियां गौओं के चलते झुंडों अथवा जलों के बहते ओघों की तरह हृदय में प्रवेश करती हुई दिखाई दे रही हैं, अनुभव की जा रही हैं। और इस समय अध्यात्म उषा सब ओर से हृदय के विस्तृत स्थान को अपने तेजों से भर रही है।

टि. *गौओं के चलते झुंडों सी* - **गवाम् सर्गाः न।** विसृष्टाः इव गावः - वे.। गवाम् उदकानां सर्गा न वर्षधारा इव - सा.। पृथिवीनां सृष्टय इव - दया.। like showers of rain - W. like troops of cattle loosed to feed - G.

*पूर रही है* - **अप्राः।** पूरयतु - वे.। आपूरयत् - सा.। प्राति व्याप्नोति - दया.। has filled - W. hath filled full - G.

*विस्तृत स्थान को* - **उरु ज्रयः।** उरु बलम् - वे.। महत् तेजः - सा.। बहु अतितेजोमयम् -

दया.। with ample light - W. the wide expanse - G. ऋ. १.९५.९ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।

**आपप्रुषी विभावरि व्यावर् ज्योतिषा तमः। उषो अनु स्वधाम् अव।। ६।।**

आऽपप्रुषी। विभाऽवरि। वि। आवः। ज्योतिषा। तमः। उषः। अनु। स्वधाम्। अव।। ६।।

*सब ओर से पूरती हुई, हे विशेष दीप्तियों वाली!,*
*उद्घाटित कर दे तू, ज्योति से तम को (हमारे)।*
*हे उषा! अनुसार अपनी धारणाशक्ति के, बढ़ा तू (हमको)।। ६।।*

हे विशेष ज्ञानप्रकाशों वाली, पूर्ण ज्ञान से पूर्व उदित होने वाली प्रथमज्ञानरश्मि रूपी अध्यात्म उषा! तू हमारे हृदयाकाश को सब ओर से अपनी आभाओं से परिपूर्ण करती हुई अपनी ज्ञानज्योतियों से अज्ञान के अन्धकार को हमसे दूर कर दे। तू अपनी धारणाशक्ति के अनुसार हमारे ज्ञान को बढ़ा।

टि. *सब ओर से पूरती हुई* - **आपप्रुषी**। आपूरयन्ती - वे.। सा.। समन्तात् सर्वा विद्या व्याप्नुवती - दया.। filling (the world with light) - W. thou hast filled it - G.

*उद्घाटित कर दे तू* - **वि आवः**। वि वारयसि - वे.। व्यावृणोः - सा.। वि रक्ष - दया.। thou dispersest (the darkness) - W. thou layest bare - G.

*अनुसार अपनी धारणाशक्ति के* - **अनु स्वधाम्**। अन्नं प्रति - वे.। अनु पश्चात् स्वधां हविर्लक्षणम् अन्नम् - सा.। thereafter (protect) the oblation - W. after thy nature - G.

*बढ़ा तू* - **अव**। आगच्छ - वे.। रक्ष - सा.। दया.। protect - W. aid us - G.

**आ द्यां तनोषि रश्मिभिर् आन्तरिक्षम् उरु प्रियम्।**
**उषः शुक्रेण शोचिषा।। ७।। ३।।**

आ। द्याम्। तनोषि। रश्मिऽभिः। आ। अन्तरिक्षम्। उरु। प्रियम्। उषः। शुक्रेण। शोचिषा।। ७।।

*सब ओर से द्युलोक को, विस्तारती है रश्मियों से,*
*सब ओर से अन्तरिक्ष को, विस्तीर्ण को, प्रिय को।*
*हे उषा!, पवित्र प्रकाश से (विस्तारती है तू)।। ७।।*

हे अध्यात्म उषा!, तू अपनी प्रथम ज्ञानरश्मियों से उपासक के मस्तिष्करूपी द्युलोक को सब ओर से विस्तृत कर देती है। तू अपने पवित्र आह्लादक प्रकाश से विस्तीर्ण और प्रीति उत्पन्न करने वाले हृदयरूपी अन्तरिक्षलोक को और अधिक विस्तीर्ण कर देती है। तू परमेश्वर के उपासक को अपनी ज्ञानरश्मियों से सब ओर से परिपूर्ण कर देती है।

टि. *सब ओर से विस्तारती है* - **आ तनोषि**। दिवम् आ तनोषि - सा.। विस्तृणासि - दया.। thou overspreadest the heaven - W. G.

*पवित्र प्रकाश से* - **शुक्रेण शोचिषा**। दीप्तेन प्रकाशेन युक्ता सती - सा.। शुद्धेन प्रकाशेन - दया.। with pure lustre - W. with thy bright shining lustre - G.

## सूक्त ५३

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - सविता। छन्दः - जगती। सप्तर्चं सूक्तम्।

**तद् देवस्य सवितुर् वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः।**
**छर्दिर् येन दाशुषे यच्छति त्मना तन् नो महाँ उद् अयान् देवो अक्तुभिः।। १।।**

तत्। देवस्य। सवितुः। वार्यम्। महत्। वृणीमहे। असुरस्य। प्रऽचेतसः।
छर्दिः। येन। दाशुषे। यच्छति। त्मना। तत्। नः। महान्। उत्। अयान्। देवः। अक्तुऽभिः।। १।।

*उसका, देव सविता के वरणीय महान् (तेज) का,*
*वरण करते हैं हम, प्राणदाता के, प्रज्ञानवान् के।*
*शरण जिसके द्वारा, हविदाता को देता है स्वयम्,*
*वह हमारे लिये महान् उदित होवे देव, तेजों के साथ।। १।।*

सविता जगत् को उत्पन्न करने वाले और सब प्राणियों को अपने-अपने कर्म के प्रति प्रेरित करने वाले परमेश्वर का नाम है। वह सबका प्राणदाता है और महान् प्रज्ञा से युक्त है। हम उस परमदेव के वरण के योग्य महान् तेज का वरण करते हैं (तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि - ऋ. ३. ६२.१०)। वह हम सबका शरण्य है और अपने तेज के द्वारा सब यज्ञ आदि शुभ कर्म करने वालों को शरण और सुरक्षा प्रदान करता है। वह सदा अपने पवित्र तेजों के साथ इस जगत् को प्रकाशित करता रहे और हमारी बुद्धियों को शुभ कर्मों में प्रेरित करता रहे।

टि. *सविता के* - **सवितुः।** प्रेरकस्य - सा.। वृष्ट्यादीनां प्रसवकर्तुः - दया.।

*वरणीय महान् (तेज) का* - **वार्यम् महत्।** वरणीयं महत् तेजः - वे.। वरणीयं पूज्यं तद् धनम् - सा.। desirable and ample wealth - W. this great gift worthy of our choice - G.

*प्राणदाता के* - **असुरस्य।** असुर् बलम्, तद्वतः - सा.। मेघस्य - दया.। powerful - W.

*शरण* - **छर्दिः।** छर्दिः = छदिः।। धनम् - वे.। गृहनामैतत्। गृहोपलक्षितं धनजातम्। यद्वा। छर्दिर् इति तेजोनाम। सा.। गृहम्। छर्दिर् इति गृहनाम (निघ. ३.४)। दया.। a dwelling - W. defence - G.

*उदित होवे* - **उत् अयान्।** उत् यच्छतु - वे.। दया.। करोत्वित्यर्थः। यद्वा। तत्तेज उद्यच्छत्विति। सा.। may grant us - W. hath vouchsafed to us - G.

*तेजों के साथ* - **अक्तुभिः।** रात्रिभ्यः - वे.। रात्रिभिः। एतद् अह्नाम् अप्युपलक्षणम्। सर्वैर् दिवसैः सर्वेषु दिवसेषु। सा.। every day - W. with his rays - G.

**दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः।**
**विचक्षणः प्रथयन्नापृणन्नुर्वजीजनत् सविता सुम्नम् उक्थ्यम्।। २।।**

दिवः। धर्ता। भुवनस्य। प्रजाऽपतिः। पिशङ्गम्। द्रापिम्। प्रति। मुञ्चते। कविः।
विऽचक्षणः। प्रथयन्। आऽपृणन्। उरु। अजीजनत्। सविता। सुम्नम्। उक्थ्यम्।। २।।

*द्युलोक का धारक, जगत् का (भी), प्रजाओं का पालक,*
*तेजोरूप कवच को धारण करता है, क्रान्त प्रज्ञा वाला।*
*दूरद्रष्टा, फैलाता हुआ (तेज को), सर्वतः पूरता हुआ प्रभूत को,*
*उत्पन्न करता है सविता सुख को, प्रशंसा के योग्य को।। २।।*

वह जगत् को उत्पन्न करने वाला और सब प्राणियों को अपने-अपने कर्मों में प्रेरित करने वाला जगदीश्वर द्युलोक और अन्य सब लोकों को धारण करने वाला है। वह सब प्रजाओं का पालक है। सर्वव्यापक होने से वह तीनों कालों और तीनों लोकों के आर-पार देखने के सामर्थ्य वाला है। वह तेजोरूपी सुनहरी कवच को धारण करने वाला है। उसकी दृष्टि दूर से भी दूर पहुँचने वाली है। वह अपने तेज को सब और फैलाता हुआ और इससे समस्त जगत् को सब ओर से भरता हुआ सब प्राणियों के लिये प्रशंसनीय सुख को सब ओर उत्पन्न कर रहा है।

टि. *तेजोरूप कवच को धारण करता है* - **पिशङ्गम् द्रापिम् प्रति मुञ्चते**। पिशङ्गवर्णं तेजोरूपं कवचं प्रति मुञ्चते - वे.। हिरण्मयं कवचं आच्छादयति प्रत्युदयम् - सा.। विचित्ररूपं कवचं प्रति त्यजति - दया.। puts on his golden armour - W. G.

*दूरद्रष्टा* - **विचक्षणः**। विद्रष्टा - वे.। विचक्षणः विविधं द्रष्टा - सा.। विविधपदार्थानां प्रकाशकः - दया.। discriminator (of objects) - W. clear-sighted - G.

*सर्वतः पूरता हुआ प्रभूत को* - **आपृणन् उरु**। उरु अन्तरिक्षम् आपूरयन् - वे.। आपूरयन् परितः प्रभूतम् - सा.। समन्तात् पूरयन् बहु - दया.।

*उत्पन्न करता है* - **अजीजनत्**। जनयतु - वे.। उत्पादयति - सा.। जनयति - दया.।

*सुख को प्रशंसा के योग्य को* - **सुम्नम् उक्थ्यम्**। प्रशस्यं धनम् - वे.। सुम्नं सुखम् उक्थ्यम् स्तुत्यम् - सा.। दया.।

**आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे।**
**प्र बाहू अस्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर् जगत्।। ३।।**

आ। अप्राः। रजांसि। दिव्यानि। पार्थिवा। श्लोकम्। देवः। कृणुते। स्वाय। धर्मणे।
प्र। बाहू इति। अस्राक्। सविता। सवीमनि। निऽवेशयन्। प्रऽसुवन्। अक्तुऽभिः। जगत्।। ३।।

*सर्वतः पूरता है लोकों को (तेजों से), द्युसम्बन्धियों को, पृथिवीसम्बन्धियों को,*
*प्रशंसनीय वाणी को देव उत्पन्न करता है, स्वयं को धारण करने के लिये।*
*प्रकर्ष से भुजाओं को आगे बढ़ाता है सविता, उत्पत्ति के निमित्त (जगत् की),*
*विश्राम कराता हुआ, प्रेरित करता हुआ (कर्म में), तेजों से (अपने) जगत् को।। ३।।*

समस्त जगत् का उत्पादक और प्रेरक परमेश्वर द्युलोकसम्बन्धी सभी स्थानों को और पृथिवी-सम्बन्धी सभी स्थानों को अपने तेजों और प्रकाशों से सब ओर से भर रहा है। वह सब मनुष्यों के लिये अपने-अपने कर्तव्यों को जानने और करने के लिये प्रशंसनीय वेदवाणी को उत्पन्न करता है। वह संसार को उत्पन्न करने के लिये अपनी भुजाओं को भली प्रकार आगे बढ़ाता है, अर्थात् जगत्सृष्टि की प्रक्रिया में प्रवृत्त होता है। वह अपने तेजों से दिनों और रात्रियों को उत्पन्न करके प्राणियों को कार्यों में प्रेरित करता है और उन्हें विश्राम दिलाता है।

टि. *सर्वतः पूरता है (तेजों से)* - **आ अप्राः**। तेजसा आ पूरयति - वे.। आपूरयति स्वाभिर् भाभिर् देवः - सा.। समन्तात् व्याप्नोति - दया.।

*लोकों को, द्युसम्बन्धियों को पृथिवीसम्बन्धियों को* - **रजांसि दिव्यानि पार्थिवा**। दैव्यान्

पार्थिवांश् च लोकान् - वे.। दिव्यानि द्युसम्बन्धीनि पार्थिवा पार्थिवानि रजांसि लोकान्। तिस्रः खलु द्यावः पृथिव्यश् च। तिस्रो भूमीर् धारयन् त्रीँर् उत द्यून् (ऋ. २.२७.८)। इति हि श्रुतम्। सा.।

*प्रशंसनीय वाणी को देव उत्पन्न करता है* - **श्लोकं देवः कृणुते**। अनुज्ञाशब्दं करोति, प्रसौतीत्यर्थः - वे.। प्रशस्तिं करोति - सा.। श्लाघनीयां वाचं देवः कृणुते - दया.।boasts - W. waketh up the hymn - G.

*स्वयं को धारण करने के लिये* - **स्वाय धर्मणे**। आत्मस्वामिकाय मनुष्याणां कर्मणे - वे.। स्वकीयाय धारणाय - सा.।of his own function - W. for his own strengthening - G.

*प्रकर्ष से भुजाओं को आगे बढ़ाता है* - **प्र बाहू अस्राक्**। प्रसृजति बाहू - वे.। बाहू स्वीयौ प्रसृजति प्रसारयतीत्यर्थः - सा.।

*उत्पत्ति के निमित्त* - **सवीमनि**। प्रसवार्थम् - वे.। प्रसवे ऽनुज्ञायां निमित्तायाम् - सा.।for the work of production - W.

*विश्राम कराता हुआ* - **निवेशयन्**। स्वस्वकार्ये स्थापयन् - सा.। regulating - W.

*तेजों से* - **अक्तुभिः**। अञ्जनसाधनैः रश्मिभिः - वे.। कान्तिभिः। अथवा अक्तुभिर् इति रात्रि-नाम। तदुपलक्षितैः सर्वैर् वासरैः सर्वेष्वपि दिनेषु। सा.। रात्रिभिः सह - दया.।with light - W. with his rays - G.

**अदा॑भ्यो॒ भुव॑नानि प्र॒चाक॑शद् व्र॒तानि॑ दे॒वः स॑वि॒ताभि र॑क्षते।**
**प्रास्रा॑ग् बा॒हू भुव॑नस्य प्र॒जाभ्यो॑ धृ॒तव्र॑तो म॒हो अज्म॑स्य राजति।। ४।।**

अदा॑भ्यः। भुव॑नानि। प्र॒ऽचाक॑शत्। व्र॒तानि॑। दे॒वः। स॒वि॒ता अ॒भि। र॒क्ष॒ते॒।
प्र। अ॒स्रा॒क्। बा॒हू इति॑। भुव॑नस्य। प्र॒ऽजाभ्यः॑। धृ॒तऽव्र॑तः। म॒हः। अज्म॑स्य। रा॒ज॒ति॒।। ४।।

*दम्भ के अयोग्य, लोकों को प्रकाशित करता हुआ,*
*सत्यनियमों की देव सविता, सब ओर से रक्षा करता है।*
*खूब आगे बढ़ाता है भुजाओं को, जगत् की प्रजाओं के सहायतार्थ,*
*धारण किये हुए व्रतों वाला, विशाल जगत् पर शासन करता है।। ४।।*

उस सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक परमेश्वर के साथ किसी के द्वारा दम्भ या छल-कपट नहीं किया जा सकता, उसे किसी के द्वारा दबाया नहीं जा सकता, उसे किसी के द्वारा हिंसित नहीं किया जा सकता। वह स्वयं प्रकाशमान है और सब लोकों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता हुआ सत्यनियमों की और प्राणियों के द्वारा किये जाने वाले सब शुभ कर्मों की रक्षा करता है। वह संसार की सब प्रजाओं की सहायता और रक्षा के लिये अपनी भुजाओं को आगे बढ़ाता है। वह स्वयं सत्यनियमों का पालन करने वाला और दूसरों से पालन कराने वाला सर्वेश्वर इस अनन्त जगत् पर शासन कर रहा है।

टि. *दम्भ के अयोग्य* - **अदाभ्यः**। अहिंस्यः - वे.। दया.। अन्यैर् अहिंसितः सन् - सा.। unestrained - W. never to be deceived - G.

*सत्यनियमों की रक्षा करता है* - **व्रतानि अभि रक्षते**। कर्माणि अभि रक्षते - वे.। सा.।protects the righteous acts (of men) - W. protects each holy ordinance - G.

*विशाल जगत् पर शासन करता है* – **महः अज्मस्य राजति**। महतः गृहस्य दिवः ईश्वरो भवति – वे.। महतो जगत ईश्वरो भवति – सा.। rules over the wide world - W. rules his own mighty course - G.

**त्रिर् अन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभूस् त्रीणि रोचना।**
**तिस्रो दिवः पृथिवीस् तिस्र इन्वति त्रिभिर् व्रतैर् अभि नो रक्षति त्मना।। ५।।**

त्रिः। अन्तरिक्षम्। सविता। महिऽत्वना। त्री। रजांसि। परिऽभूः। त्रीणि। रोचना।
तिस्रः। दिवः। पृथिवीः। तिस्रः। इन्वति। त्रिऽभिः। व्रतैः। अभि। नः। रक्षति। त्मना।। ५।।

*तीन भेदों वाले अन्तरिक्ष को, सविता माहात्म्य से (अपने),*
*तीन लोकों को, सब ओर से घेरने वाला, तीन दीप्तियों को।*
*तीन द्युलोकों को, पृथिवियों को तीन को, व्याप्त कर रहा है,*
*तीन प्रकार के व्रतों से, सर्वतः हमारी रक्षा करे वह स्वयम्।। ५।।*

वह सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर उपरि, मध्य और अधः इन तीन भागों वाले अन्तरिक्ष को अपने माहात्म्य से व्याप्त कर रहा है। सबको सब ओर से घेरने वाला वह जगदीश पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ इन तीनों लोकों को तथा अग्नि, विद्युत् और आदित्य इन तीनों ज्योतिःपुञ्जों को अपने तेज से व्याप्त कर रहा है। वह ऊर्ध्व, मध्यम और अधः, द्युलोक के इन तीनों भागों को और ऊर्ध्व, मध्यम और अधः, पृथिवीलोक के इन तीनों भागों को व्याप्त कर रहा है। वह जगत्सृष्टि, पालन और संहार इन तीनों प्रकार के नियमों के द्वारा स्वयं ही हमारी रक्षा करे।

टि. *तीन भेदों वाले अन्तरिक्ष को* – **त्रिः अन्तरिक्षम्**। त्रीणि आन्तरिक्षाणि – वे.। त्रिभेदम् अन्तरिक्षम्। अन्तरा क्षान्तं भवति जगद् इत्यन्तरिक्षम्। वायुविद्युद्वरुणाख्यास् त्रयो लोका अन्तरिक्षभेदाः। सा.। three (divisions of the) firmament - W. thrice (surrounding) mid-air - G.

*तीन लोकों को* – **त्री रजांसि**। त्रीन् पार्थिवान् लोकान् – वे.। रञ्जनात्मकानि त्रीणि क्षित्यन्तरिक्ष-द्युलक्षणान् त्रीन् लोकान्। सा.। the three worlds - W. three regions - G.

*सब ओर से घेरने वाला* – **परिभूः**। परिभवति – वे.। परिभविता सन् – सा.। यः सर्वतो भवति सर्वेषाम् उपरि विराजमानः – दया.। encompassing - W.

*तीन दीप्तियों को* – **त्रीणि रोचना**। त्रीणि च दिव्यानि रजांसि – वे.। रोचना रोचनानि रोचमानान् अग्निवाय्वादित्यान् – सा.। त्रिप्रकाराणि विद्युद्भौतिकसूर्यरूपाणि ज्योतींषि – दया.। the three brilliant spheres - W. triple sphere of light - G.

*तीन द्युलोकों को* – **तिस्रः दिवः**। इन्द्रप्रजापतिसत्याख्यान् त्रीन् लोकान् – सा.। त्रिविधान् प्रकाशान् – दया.। the three heavens - W. G.

*पृथिवियों को तीन को* – **पृथिवीः तिस्रः**। क्षित्यवान्तरभेदान् लोकान् – सा.। तीनों पृथिवीलोकों को – सात.। the threefold earth - W. G.

*व्याप्त कर रहा है* – **इन्वति**। व्याप्नोति – वे.। सा.। pervades - W. sets in motion - G.

*तीन प्रकार के व्रतों से* – **त्रिभिः व्रतैः**। त्रिभिः च कर्मभिः – वे.। कर्मभिर् उष्णवर्षहिमाख्यैः –

सा.। त्रिभिः नियमैः – दया.। by his three functions - W. with his triple law - G.

**बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुर् उभयस्य यो वशी।**
**स नो देवः सविता शर्म यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथम् अंहसः।। ६।।**

बृहत्ऽसुम्नः। प्रऽसविता। निऽवेशनः। जगतः। स्थातुः। उभयस्य। यः। वशी।
सः। नः। देवः। सविता। शर्म। यच्छतु। अस्मे इति। क्षयाय। त्रिऽवरूथम्। अंहसः।।। ६।।

*महान् सुखदाता, सबका उत्पादक, विश्राम में स्थापित करने वाला,*
*जङ्गम को, स्थावर को, उभयविध पदार्थों को, जो वश में करने वाला।*
*वह हमें प्रकाशमान, सबका प्रेरक, सुख प्रदान करे (सदा ही),*
*हमारे निवास के लिये, तीनों लोकों को (रिक्त कर देवे) दुःख से।। ६।।*

वह सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक जगदीश महान् सुखों का दाता है। कर्म करने के पश्चात् वह सब को विश्राम में स्थापित करने वाला है। वह स्थावर और जङ्गम, जड़ और चेतन, उभयविध पदार्थों को अपने वश में रखने वाला है। सर्वप्रकाशक, सबको शुभ कर्मों में प्रेरित करने वाला वह परमेश्वर हमें सदा सुख प्रदान करता रहे और तीनों लोकों को हमारे लिये दुःखरहित कर देवे।

टि. *महान् सुखदाता* – **बृहत्सुम्नः।** महासुखः – वे.। प्रभूतधनः प्रभूतसुखो वा – सा.। महतः सुखस्य – दया.। who is the source of great happiness - W. most gracious God - G.

*सबका उत्पादक* – **प्रसविता।** प्रेरयिता – वे.। प्रकर्षेणानुज्ञाता – सा.। उत्पादकः – दया.। the engender (of good works) - W. who brings to life - G.

*विश्राम में स्थापित करने वाला* – **निवेशनः।** निवेशयिता – वे.। सर्वैर् गन्तव्यः – सा.। निवेशस्य कर्ता – दया.। the comprehender (of all things) - W. who lulls to rest - G.

*सुख प्रदान करे* – **शर्म यच्छतु।** सुखं प्रयच्छतु – वे.। सा.। सुसुखं गृहं ददातु – दया.। grant us happiness - W.

*हमारे निवास के लिये* – **अस्मे क्षयाय।** अस्माकम् (अंहसः) विनाशाय, अपि वास्माकं वासाय – वे.। अस्मे अस्माकम् (अंहसः पापस्य) क्षयाय भवत्विति शेषः – सा.। अस्माकं निवासाय – दया.। (be) to us for the destruction (of sin) - W.

*तीनों लोकों को* – **त्रिवरूथम्।** त्रिगुणम् – वे.। त्रीणि वरूथानि गृहाणि स्थानानि क्षित्यादीनि यस्य तत् तादृशम् – सा.। त्रीणि वरूथानि गृहाणि यस्मिन् – दया.। in the three worlds - W.

*(रिक्त कर देवे) दुःख से* – **अंहसः।** दारिद्र्यम् अतीत्येति – वे.। पापस्य – सा.। दुःखात् पृथग्भूतम् – दया.। of sin - W.

**आगन् देव ऋतुभिर् वर्धतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजाम् इषम्।**
**स नः क्षपाभिर् अहभिश् च जिन्वतु प्रजावन्तं रयिम् अस्मे सम् इन्वतु।। ७।। ४।।**

आ। अगन्। देवः। ऋतुऽभिः। वर्धतु। क्षयम्। दधातु। नः। सविता। सुऽप्रजाम्। इषम्।
सः। नः। क्षपाभिः। अहऽभिः। च। जिन्वतु। प्रजाऽवन्तम्। रयिम्। अस्मे इति। सम्। इन्वतु।। ७।।

*आ जाए देव ऋतुओं के साथ, बढ़ाए घर को (हमारे),*

*प्रदान करे हमें सविता, उत्तम प्रजाओं वाले धन को।*
*वह हमें रात्रियों में, दिनों में भी, प्रसन्न रखे,*
*सन्ततियों वाले धन को, हमें प्राप्त कराए।। ७।।*

उस सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक परमेश्वर की कृपादृष्टि हमपर सदा बनी रहे। वह सभी ऋतुओं में, सभी कालों में, हमें समृद्धि प्रदान करता रहे। वह उत्तम सन्तानों के साथ पवित्र और सात्त्विक अन्न हमें भक्षण करने के लिये प्रदान करता रहे। वह सभी दिनों और रातों में हमपर आनन्द और सुख की वर्षा करता रहे। वह हमें सन्ततियों के साथ पवित्र धन प्रदान करता रहे।

टि. *आ जाए* – **आ अगन्।** आ गच्छतु – वे.। गमेर् लङि रूपम् – सा.। hath come nigh - G.

*बढ़ाए घर को* – **वर्धतु क्षयम्।** वर्धयतु च क्षयम् – वे.। गृहं वर्धयतु – सा.। may he prosper our dwelling - W. G.

*प्रसन्न रखे* – **जिन्वतु।** प्रीणयतु – वे.। प्रीणयतु धनादिभिः – सा.। प्रीणात्वानन्दतु – दया.। may he be favourable to us - W. may he invigorate - G.

*हमें प्राप्त कराए* – **अस्मे सम् इन्वतु।** अस्मासु सम् आगमयतु – वे.। अस्मासु प्रजावन्तं रयिम् समिन्वतु। व्याप्नोतु। प्रापयत्वित्यर्थः। सा.। अस्मभ्यं ददातु – दया.। may he heap upon us - W. may he send us - G.

## सूक्त ५४

ऋषिः – वामदेवो गौतमः। देवता – सविता। छन्दः – १-५ जगती, ६ त्रिष्टुप्। षडर्चं सूक्तम्।

**अभूद् देवः सविता वन्द्यो नु न इदानीम् अह्न उपवाच्यो नृभिः।**
**वि यो रत्ना भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत्।। १।।**

अभूत्। देवः। सविता। वन्द्यः। नु। नः। इदानीम्। अह्नः। उपऽवाच्यः। नृऽभिः।
वि। यः। रत्ना। भजति। मानवेभ्यः। श्रेष्ठम्। नः। अत्र। द्रविणम्। यथा। दधत्।। १।।

*है देव सविता वन्दना के योग्य, निश्चय से हमारे लिये,*
*इस समय में दिन के, निकट से स्तुतियोग्य है वह मनुष्यों के द्वारा।*
*विविध प्रकार से जो रमणीय धनों को, बाँटता है मनुष्यों में,*
*अत्युत्तम को हमें इस जगत् में, धन ताकि प्रदान करे वह।। १।।*

वह स्वयं प्रकाशमान और अपने प्रकाश से सबको प्रकाशित करने वाला सर्वप्रेरक सर्वोत्पादक परमेश्वर निश्चय से हमारा वन्दनीय और पूज्य है। वह प्रभु जो मनुष्यों में रमणीय धन वितरित करता है, प्रभात नाम से पुकारे जाने वाले दिन के इस रमणीय भाग में सब मनुष्यों के द्वारा हृदय की निकटता से स्तुति के योग्य है, ताकि वह हमें सदा श्रेष्ठ ऐश्वर्य प्रदान करता रहे।

टि. *है* – **अभूत्।** भवतु – वे.। अभूत् प्रादुर् आसीत् – सा.। भवति – दया.। उदित हो रहा है – सात.। has been manifested - W.

*निकट से स्तुतियोग्य* – **उपवाच्यः।** उपस्तोतव्यः – वे.। उपदेशनीयः – दया.। to be praised

- W. must we honour - G.

*विविध प्रकार से बाँटता है* – **वि भजति।** apportions - W. distributes - G.

*धन ताकि प्रदान करे वह* – **द्रविणम् यथा दधत्।** गवादिलक्षणं धनं यथा दद्यात् तथा वन्द्य उपवाच्यश् चाभूत् – सा.। in order that he may bestow upon us wealth - W. G.

**दे॒वेभ्यो॒ हि प्र॑थ॒मं य॒ज्ञिये॑भ्यो ऽमृत॒त्वं सु॒वसि॑ भा॒गम् उ॑त्त॒मम्।**
**आद् इद् दा॒मानं॑ सवित॒र् व्यू॑र्णुषे ऽनूची॒ना जी॑वि॒ता मानु॑षेभ्यः॥ २॥**

दे॒वेभ्यः॑। हि। प्र॒थ॒मम्। य॒ज्ञिये॑भ्यः। अ॒मृ॒त॒ऽत्वम्। सु॒वसि॑। भा॒गम्। उ॒त्ऽत॒मम्।
आत्। इत्। दा॒मान॑म्। स॒वि॒तः॒। वि। ऊ॒र्णु॒षे॒। अ॒नू॒ची॒ना। जी॒वि॒ता। मानु॑षेभ्यः॥ २॥

*देवों के लिये ही सर्वप्रथम, पूजा के योग्यों के लिये,*
*अमरता को उत्पन्न करता है तू, भाग को उत्तम को।*
*पश्चात् ही दाता के लिये (हे सविता!), खोल देता है तू (स्वर्गद्वार को),*
*क्रमशः गमन करने वालों को, जीवनों को (देता है तू) मनुष्यों को॥ २॥*

हे सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक परमात्मन्! यज्ञ की भावना से स्वयं को तेरे चरणों में समर्पित कर देने वाले और दिव्य ज्ञान को प्राप्त कर लेने वाले पूज्य मनुष्यों को तू सबसे पहले जीवन के श्रेष्ठतम लाभ अमरता अर्थात् मोक्ष को प्रदान करता है। उसके पश्चात् देवों को आहुति और अन्य प्रणियों को अन्न आदि प्रदान करने वाले यजमान के लिये तू स्वर्ग अर्थात् सुख के द्वारों को खोल देता है। सबके पश्चात् तू साधारण जनों को उनके कर्मानुसार अनुक्रम से चलने वाले जीवन प्रदान करता है, अर्थात् उन्हें विभिन्न योनियों में घुमाता रहता है।

टि. *उत्पन्न करता है* – **सुवसि।** प्रयच्छसि – वे.। अनुजानासि – सा.। प्रेरयसि – दया.। thou engenderest - W. producest - G.

*दाता के लिये* – **दामानम्।** खण्डयितारम् अन्धकारम् – वे.। हविषां दातारम् – सा.। दातारम् – दया.। to the donor (of the oblation) - W. as a gift to men - G.

*खोल देता है* – **वि ऊर्णुषे।** अपावृणोषि – वे.। प्रकाशयसि – सा.। स्वव्याप्त्या आच्छादयसि – दया.। settest open (the day) - W. thou openest existence - G.

*क्रमशः गमन करने वालों को, जीवनों को (देता है तू)* – **अनूचीना जीविता।** अनूचीनानि जीवितानि – वे.। जीवितानि अनुक्रमयुक्तानि। पितृपुत्रपौत्रा इत्यनुक्रमः। ईदृशानि जीवितानि। सा.। यान्यनुचरन्ति तानि जीवितानि – दया.। successive existences - W. life succeeding life - G.

**अचि॑त्ती॒ यच् च॑कृमा दैव्ये॒ जने॑ दी॒नैर् दक्षै॒ः प्रभू॑ती पूरुष॒त्वता॑।**
**दे॒वेषु॑ च सवित॒र् मानु॑षेषु च॒ त्वं नो॒ अत्र॑ सुवता॒द् अना॑गसः॥ ३॥**

अचि॑त्ती। यत्। च॒कृ॒म। दैव्ये॑। जने॑। दी॒नैः। दक्षैः॑। प्रऽभू॑ती। पु॒रु॒ष॒त्वता॑।
दे॒वेषु॑। च॒। स॒वि॒तः॒। मानु॑षेषु। च॒। त्वम्। न॒ः। अत्र॑। सु॒व॒ता॒त्। अना॑गसः॥ ३॥

*अनजाने में जो किया हमने दिव्यतायुक्त जन के विषय में,*
*दीनों के साथ, दक्षों के साथ (जो किया), प्रभुता के कारण, पौरुष के कारण।*

*देवों के विषय में भी, हे सविता!, मनुष्यों के विषय में भी, (जो किया),*
*तू हमको इन विषयों में, कर दे अपराधों से रहित।। ३।।*

हे सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक जगदीश्वर! हमने अनजाने में दिव्यगुणों वाले किसी महात्मा पुरुष के विषय में यदि कोई अपराध किया हो, अथवा पद आदि की प्रभुता के कारण अथवा अपने पौरुष के अभिमान के कारण दीन जनों या बलवानों के साथ यदि कोई अपराध किया हो, अथवा देवों, विद्वान् जनों और साधारण मनुष्यों के प्रति यदि कोई अपराध किया हो तो तू कृपा करके हमें उन सब अपराधों से मुक्त कर दे।

टि. *अनजाने में* – **अचित्ती**। अज्ञानेन – वे.। अप्रज्ञया – सा.। अचित्त्या अविद्यया – दया.। through ignorance - W. through want of thought - G.

*दिव्यतायुक्त जन के विषय में* – **दैव्ये जने**। देवे त्वयि – सा.। देवेषु विद्वत्सु कुशले विदुषि – दया.। against thy divine person - W. agqinst the gods - G.

*दीनों के साथ* – **दीनैः**। दीनत्वेन – वे.। दुर्बलैः पुत्रादिभिर् ऋत्विग्भिर् वा – सा.। क्षीणैः – दया.। through pride in feeble (dependants) - W. in weakness - G.

*दक्षों के साथ* – **दक्षैः**। वृद्ध्या – वे.। प्रवृद्धैर् वा – सा.। चतुरैः – दया.। through pride in powerful (dependants) - W. through insolence - G.

*प्रभुता के कारण* – **प्रभूती**। प्रभावेन – वे.। प्रभूत्या। ऐश्वर्यमदेनेति यावत्। सा.।

*पौरुष के कारण* – **पूरुषत्वता**। पौरुषेण – वे.। पुरुषवत्तया – सा.।

कर दे *अपराधों से रहित* – **सुवतात् अनागसः**। अनागस्कान् अस्मान् प्रसुवेति – वे.। अनागसो ऽनुजानीहि – सा.। प्रेरय अनपराधिनः – दया.। thou hold us unoffending - W. absolve us from the guilt - G.

**न प्रमिये सवितुर् दैव्यस्य तद्**
**यथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति।**
**यत् पृथिव्या वरिमन्ना स्वङ्गुरिर्**
**वर्ष्मन् दिवः सुवति सत्यम् अस्य तत्।। ४।।**

न। प्रऽमिये। सवितुः। दैव्यस्य। तत्। यथा। विश्वम्। भुवनम्। धारयिष्यति।
यत्। पृथिव्याः। वरिमन्। आ। सुऽअङ्गुरिः। वर्ष्मन्। दिवः। सुवति। सत्यम्। अस्य। तत्।। ४।।

*नहीं हिंसित किया जा सकता है, सविता देव का वह (कर्म),*
*क्योंकि समस्त भुवन को, धारण कर रहा है वह (इसके द्वारा)।*
*जो पृथिवी के विस्तार पर, सब ओर शोभन अंगुलियों वाला,*
*विस्तार पर द्युलोक के रचता है वह, सत्य है इसका वह।। ४।।*

सर्वप्रेरक सर्वोत्पादक प्रकाशमान वह परमेश्वर जगत्सृष्टि, पालन, संहार आदि जो-जो कर्म इस संसार में करता है, उसे नष्ट नहीं किया जा सकता, क्योंकि इन्हीं कर्मों के द्वारा वह इस जगत् को धारण कर रहा है और आगे भी धारण करता रहेगा। इस विस्तृत पृथिवी में और विशाल द्युलोक में

सुन्दर अंगुलियों वाला वह शिल्पी जो भी रचना करता है, वह सत्य है। उसे कभी किसी के द्वारा झुठलाया नहीं जा सकता।

टि. *नहीं हिंसित किया जा सकता है* - **न प्रमिये**। न प्रमातुं शक्यम् - वे.। न प्रमीयते। न प्रहिंस्यते। हिंसार्हं न भवतीत्यर्थः। कृत्यार्थे केन् प्रत्ययः। सा.। न मरणं प्राप्नुयात् - दया.। not fit to obstruct - W. none may impede - G.

*वह कर्म* - **तत्**। तत् कर्म - वे.। सा.। that power - G.

*धारण कर रहा है* - **धारयिष्यति**। धारयिष्यति धारयति च - वे.। धारयति - सा.।

*पृथिवी के विस्तार पर* - **पृथिव्याः वरिमन्**। पृथिव्याः विस्तृते देशे - वे.। भूम्या वरिमन् उरुत्वे - सा.। over the extent of the earth - W. on earth's expanse - G.

*विस्तार पर द्युलोक के* - **वर्ष्मन् दिवः**। दिवः उच्छ्रिते (देशे) - वे.। द्युलोकस्य वर्ष्मन् उरुत्वे - सा.। over the magnitude of heaven - W. on the height of heaven - G.

*शोभन अंगुलियों वाला* - **सुऽअङ्गुरिः**। शोभनाङ्गुलिकः - वे.। शोभनाङ्गुल्युपलक्षितहस्तः - सा.। शोभना अङ्गुलयो यस्य सः - दया.। by his glorious hand - W. fair-fingered - G.

**इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः पर्वतेभ्यः क्षयाँ एभ्यः सुवसि पस्त्यावतः।**
**यथायथा पतयन्तो वियेमिर एवैव तस्थुः सवितः सवाय ते।। ५।।**

इन्द्रऽज्येष्ठान्। बृहत्ऽभ्यः। पर्वतेभ्यः। क्षयान्। एभ्यः। सुवसि। पस्त्यऽवतः।
यथाऽयथा। पतयन्तः। विऽयेमिरे। एव। एव। तस्थुः। सवितर् इति। सवाय। ते।। ५।।

*तुझ ऐश्वर्यवान् को श्रेष्ठ मानने वालों को, महान् पर्वतों से (ऊपर उठाता है तू),*
*निवासों को इन्हें प्रदान करता है तू, घरों वालों को।*
*जैसे-जैसे ऊर्ध्वगति को प्राप्त होते हुए, नियन्त्रित होते हैं (मन, वचन, कर्म से),*
*वैसे-वैसे ही स्थित होते हैं ये, हे सविता!, आदेश के पालन के लिये तेरे।। ५।।*

हे सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक प्रभो! जो मनुष्य तुझ ऐश्वर्यशाली परमेश्वर को मुख्य और श्रेष्ठ मानते हैं, तू उनको बड़े-बड़े पर्वतों और मेघों से भी ऊँचे उठा देता है, उनको इस जगत् में महान् बना देता है। तू उन्हें निवास के लिये अनेक कक्षों वाले विशाल भवन प्रदान करता है, अथवा तू उन्हें श्रेष्ठ अंगों वाले स्वस्थ शरीर प्रदान करता है। जैसे-जैसे वे भक्ति, उपासना, योग, ध्यान आदि के द्वारा अपनी इन्द्रियों और मन को अपने वश में करते जाते हैं, वैसे-वैसे ही वे तेरी महिमा को जानते हुए तेरे नियमों और आदेशों का पालन करने के लिये तत्पर हो जाते हैं।

टि. *तुझ ऐश्वर्यवान् को श्रेष्ठ मानने वालों को* - **इन्द्रज्येष्ठान्**। इज्यमानेनेन्द्रेण युक्तान् - वे.। इन्द्रः परमैश्वर्ययुक्तस् त्वम् एवेन्द्रो वा ज्येष्ठो ज्यायान् पूज्यो येषां ते तादृशाः। तान् अस्मान्। सा.। इन्द्रो विद्युत् सूर्यो वा ज्येष्ठो येषां तान् - दया.। of whom Indra is cuief - W. G.

*महान् पर्वतों से (ऊपर उठाता है तू)* - **बृहद्भ्यः पर्वतेभ्यः**। महद्भ्यः शिलोच्चयेभ्यः - वे.। महद्भ्यः पर्वतेभ्यो ऽप्यधिकान् - सा.। महद्भ्यो मेघादिभ्यः - दया.। thou elevatest above the vast clouds - W. to lofty hills thou sendest - G.

*निवासों को प्रदान करता है* – **क्षयान् सुवसि।** ऋषिनिवासान् प्रसुवसि – वे.। निवासान् ग्राम-नगरादीन् प्रेरयसि – सा.। thou providest dwelling (places) - W.

*ऊर्ध्वगति को प्राप्त होते हुए* – **पतयन्तः।** पतयन्तः मनुष्याः – वे.। गच्छन्तः – सा.। advancing - W. they may fly - G.

*नियन्त्रित होते हैं* – **वियेमिरे।** कर्मणि विविधं गच्छन्ति – वे.। विनियम्यन्ते त्वया – सा.। they detained thee - W. they may draw themselves apart - G.

*वैसे-वैसे* – **एव एव।** तथा तथा – वे.। एवम् एव – सा.। विशेषेण नियच्छन्ति – दया.।

*स्थित होते हैं आदेश के पालन के लिये तेरे* – **तस्थुः सवाय ते।** तव आज्ञाम् अपेक्ष्य तिष्ठन्ति – वे.। तवानुज्ञायै नियमनम् अनतिक्रम्य तिष्ठन्ति – सा.। तिष्ठन्ति ऐश्वर्याय तव – दया.। at thy command they stayed - W. they stand obeying thy behest - G.

**ये ते त्रिर् अहन् त्सवितः सवासो**
**दिवेदिवे सौभगम् आसुवन्ति।**
**इन्द्रो द्यावापृथिवी सिन्धुर् अद्भिर्**
**आदित्यैर् नो अदितिः शर्म यंसत्।। ६।। ५।।**

ये। ते। त्रिः। अहन्। सवितर् इति। सवासः। दिवेऽदिवे। सौभगम्। आऽसुवन्ति।
इन्द्रः। द्यावापृथिवी इति। सिन्धुः। अत्ऽभिः। आदित्यैः। नः। अदितिः। शर्म। यंसत्।। ६।।

*जो तेरे तीन बार (हैं) दिन में, हे सविता!, सवन,*
*प्रतिदिन परम ऐश्वर्य का जो, आवहन करते हैं।*
*सूर्य, द्युलोक-भूलोक, सिन्धु जलों के साथ,*
*आदित्यों के साथ हमें अदिति, सुख प्रदान करे।। ६ ।।*

हे सर्वोत्पादक, सर्वप्रेरक परमेश्वर! उपासक जन तेरे लिये प्रतिदिन तीन बार जो सोम का सवन करते हैं, तेरे निमित्त किये गए वे सवन हम उपासकों के लिये परम ऐश्वर्य को लाने वाले होवें। बारह मासों के साथ समय और स्थान की सीमाओं से परे, अनन्त अखण्ड ज्योतिस्वरूप तू परमेश्वर, सूर्य, प्रकाशलोक और भूलोक तथा जलों के साथ समुद्र आदि सभी हमें सुख प्रदान करें।

टि. *तीन बार हैं सवन* – **त्रिः सवासः।** प्रातः मध्यन्दिने सायम् इति ये त्रयः सवाः – वे.। सवासः सवाः सोमाः। द्वितीयार्थे प्रथमा। सोमान्। यद्वा। सवासः सवनानि प्रातरादीनि प्रति त्रिः – सा.। सवासः उत्पन्नाः पदार्थाः – दया.। libations poured to thee thrice a day - G.

*परम ऐश्वर्य का आवहन करते हैं* – **सौभगम् आ सुवन्ति।** सौभाग्यम् आसुवन्ति – वे.। सौभाग्यजनकम् अभिषुण्वन्ति – सा.। सुभगस्य श्रेष्ठैश्वर्यस्य भावम् उत्पादयन्ति – दया.। who pour out the auspicious (Soma) - W. may bring us blessing - G.

*सूर्य* – **इन्द्रः।** सूर्यः – दया.।

*सिन्धु* – **सिन्धुः।** सरस्वती – वे.। सिन्ध्वभिमानिदेवता – सा.।

*सुख प्रदान करे* – **शर्म यंसत्।** सुखं यच्छतु – वे.। शर्म यंसत् यच्छतु – सा.। सुखं प्रदद्यात् –

दया.। may bestow happiness on us - W. may give us shelter - G.

## सूक्त ५५

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - १-७ त्रिष्टुप्, ८-१० गायत्री। दशर्चं सूक्तम्।

**को वंस् त्राता वंसवः को वंरूता द्यावांभूमी अदिते त्रासींथां नः।**
**सहींयसो वरुण मित्र मर्तात् को वों ऽध्वरे वरिंवो धाति देवाः।। १।।**

कः। वः। त्राता। वसवः। कः। वरूता। द्यावांभूमी इतिं। अदिते। त्रासींथाम्। नः।
सहींयसः। वरुण। मित्र। मर्तात्। कः। वः। अध्वरे। वरिंवः। धाति। देवाः।। १।।

*कौन तुममें से रक्षक (है), हे वसुओ!, कौन निवारक (कष्टों का),*
*हे द्युलोक और भूलोक!, हे अविनाशियो!, रक्षा करो तुम हमारी।*
*(रक्षा करो) अधिक बलवान् से, हे वरुण!, हे मित्र! मनुष्य से,*
*कौन तुममें से यज्ञ में उदारता को प्रदान करता है, हे देवो।। १।।*

हे स्वयं बसने और अन्यों को बसाने वाली ईश्वरीय शक्तियो! तुममें से कौन सी शक्ति हमारी रक्षा करने वाली और कौन सी शक्ति कष्टों और विपत्तियों से बचाने वाली है? तुम तो सभी हमारी रक्षा और हमारा बचाव करने वाली हो। हे अविनाशी द्युलोक और भूलोक! तुम सदा ही हमारी रक्षा करते रहो। हे कवच बनकर हमारी रक्षा करने वाली और हिंसा से बचाने वाली ईश्वरीय शक्तियो! जो हमसे अधिक बलवान् मनुष्य अन्यायपूर्वक हमें अभिभूत करना चाहता है, तुम उससे हमारी रक्षा करो। हे परमेश्वर की दानशील और दिव्य गुणों से युक्त शक्तियो! तुममें से जो भी शक्ति इस जीवनरूपी यज्ञ में हमें हृदय की विशालता प्रदान करने वाली हो, वह हमारे हृदय को इतनी विशालता प्रदान करे, कि इस वसुधा के सभी प्राणी हमारे लिये अपना परिवार बन जाएं।

टि. *निवारक (कष्टों का)* - **वरूता**। सम्भक्ता - वे.। वारयिता दुःखानां वरणीयो वा - सा.। स्वीकर्ता - दया.। protector - W. G.

*हे द्युलोक और भूलोक! हे अविनाशियो!* - **द्यावाभूमी अदिते**। हे द्यावाभूमी अदिते - वे.। हे अदिते अखण्डनीये। एतद् अपि द्यावापृथिव्योर् विशेषणम्। संख्याव्यत्ययः। यदीदं पृथग् देवतामन्त्रणं स्यात् तर्हि निघातो न स्यात्। आमन्त्रितं पूर्वम् अविद्यमानवद् इति पूर्वस्याविद्यमानवत्त्वेनास्यैव पादादित्वात्। सा.। प्रकाशपृथिव्यौ, अविनाशिन् - दया.। haven and earth and Aditi - W. G.

*अधिक बलवान् से मनुष्य से* - **सहीयसः मर्तात्**। अभिभवितुः मनुष्यात् - वे.। सा.। from the strong man - W. from the stronger mortal - G.

*उदारता को प्रदान करता है* - **वरिवः धाति**। पूजां धारयति - वे.। वरिवो धनं धाति ददाति। यद्वा। युष्माकं मध्ये को वरिवो धारयति। सा.। परिचरणं सेवनं दधाति - दया.। that offers you wealth - W. giveth comfort - G.

**प्र ये धामांनि पूर्व्याण्यर्चान् वि यद् उच्छान् वियोतारो अमूंराः।**
**विधातारो वि ते दंधुर् अजंस्रा ऋतधींतयो रुरुचन्त दस्माः।। २।।**

प्र। ये। धामानि। पूर्व्याणि। अर्चान्। वि। यत्। उच्छान्। विऽयोतारः। अमूराः।
विऽधातारः। वि। ते। दधुः। अजस्राः। ऋतऽधीतयः। रुरुचन्त। दस्माः।। २।।

*प्रकर्ष से जो विधानों का, प्राचीनों का, सत्कार करते हैं,*
*अलग जो अन्धकार को करते है, अलग करने वाले, अमूढ।*
*विधान करने वाले विशेष रूप से वे, धारण करते हैं अविनाशी (विधानों को),*
*सत्यनियम को धारण करने वाले, चमकते हैं (जगत् में) दर्शनीय।। २।।*

दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त जो दिव्य शक्तियां और विद्वज्जन प्राचीन काल से चले आ रहे परम्परागत नियमों, व्रतों, परम्पराओं का आदर-सत्कार करते हैं, अज्ञान-अन्धकार को दूर करने वाले जो ज्ञानी जन अज्ञान-अन्धकार को दूर करते हैं, जो अविनाशी दिव्य शक्तियां विधानों का निर्माण करके उनका पालन करती हैं, सत्यनियम को धारण करने वाली वे जगत् में चमकती हैं, लोकप्रिय और दर्शनीय हो जाती हैं।

टि. *विधानों का प्राचीनों का सत्कार करते हैं* - **धामानि पूर्व्याणि अर्चान्।** धामानि पूर्व्याणि अर्चन्ति - वे.। पुरातनानि धामानि स्थानानि वा अर्चन्ति। प्रयच्छन्ति स्तोतृभ्यः। सा.। जन्मनामस्थानानि पूर्वैः साक्षात्कृतानि सत्कुर्युः - दया.। who with laud extol the ancient statutes - G.

*अलग जो अन्धकार को करते हैं* - **वि यत् उच्छान्।** वि उच्छन्ति यदा - वे.। यत् ये च व्युच्छन्ति। तमो विवासयन्ति देवाः। सा.। ये विवासयेयुः - दया.। when they shine forth - G.

*अलग करने वाले* - **वियोतारः।** पृथक्कर्तारः पापस्य - वे.। दुःखानाम् अमिश्रयितारः - सा.। विभाजकाः - दया.। separators of light (from darkness) - W. dividers - G.

*विधान करने वाले विशेष रूप से धारण करते हैं अविनाशी* - **विधातारः वि दधुः अजस्राः।** विधतारः वि दधुः अजस्राः रश्मयः - वे.। विधातारः फलानां कर्तारो ऽजस्रा नित्या विदधुः कुर्वन्त्यभिमतम् - सा.। निर्मातारः वि दध्युः अहिंसकाः - दया.। the eternal distributers (of rewards) grant (what is desired) - W. have ordered as perpetual ordainers - G.

*सत्यनियम को धारण करने वाले* - **ऋतधीतयः।** सत्यदीप्तयः - वे.। सत्यकर्माणः - सा.। ऋतस्य धीतिर् धारणं येषां ते - दया.। the true (recompensers) of pious acts - W. as holy-thoughted (wonder-workers) - G.

**प्र पस्त्या३म् अदितिं सिन्धुम् अर्कैः स्वस्तिम् ईळे सख्याय देवीम्।**
**उभे यथा नो अहनी निपात उषासानक्ता करताम् अदब्धे।। ३।।**

प्र। पस्त्याम्। अदितिम्। सिन्धुम्। अर्कैः। स्वस्तिम्। ईळे। सख्याय। देवीम्।
उभे इति। यथा। नः। अहनी इति। निऽपातः। उषसानक्ता। करताम्। अदब्धे इति।। ३।।

*प्रकर्ष से गृहहितैषिणी की अदिति की, सिन्धु की,*
*ऋचाओं से, स्वस्ति की, स्तुति करता हूँ मैं, मित्रभाव के लिये देवी की।*
*दोनों, चूँकि हमारा, दिन और रात, नितराम् पालन करते हैं,*
*उषा और रात्रि (सिद्ध) करें (अभीष्ट को) हमारे, दबाई न जा सकने वाली।। ३।।*

मैं उपासक परमेश्वर की अनेकानेक दिव्य शक्तियों की वेदमन्त्रों के द्वारा स्तुति करता हूँ। मैं घरों और गृहस्थों का हित करने वाली देवमाता अखण्डनीया दिव्य शक्ति की स्तुति करता हूँ। मैं शान्ति और सुख प्रदान करने वाले जलप्रवाहों की प्रशंसा करता हूँ। मैं मित्रभाव के निमित्त दिव्य कल्याणी शक्ति की स्तुति करता हूँ। किसी के भी द्वारा हिंसित न की जा सकने वाली, दबाई न जा सकने वाली, धोखा न दी जा सकने वाली उषा और निशा अथवा दिन और रात की हम स्तुति करते हैं, जो काम और विश्राम का अवसर प्रदान करके हमारा पालन करती हैं। वे सदा हमारे अभीष्टों को सिद्ध करती रहें।

टि. *गृहहितैषिणी की अदिति की* - **पस्त्याम् अदितिम्**। गृहहितां अदितिं सरस्वतीम् - वे.। पस्त्यां सर्वैर् गन्तव्याम् अदितिम् अदीनां देवमातरं तां देवीम् - सा.। पस्त्याम् गृहम्, अदितिम् अखण्डिताम् - दया.। venerated Aditi - W. the House-wife Goddess - G.

*ऋचाओं से* - **अर्कैः**। स्तोत्रैः - वे.। मन्त्रैः - सा.। दया.।

*स्वस्ति की देवी की* - **स्वस्तिम् देवीम्**। सुखनिवासाम् एतन्नामिकां देवीम् - वे.।

*दिन और रात* - **अहनी**। अहोरात्रे - वे.। द्यावापृथिव्यौ - सा.। रात्रिदिने - दया.।

*(सिद्ध) करें (अभीष्ट को)* - **करताम्**। कर्म कुरुताम् - वे.। कुरुताम् अभिमतम् इति शेषः - सा.। do (what we desire) - W. may provide for protection - G.

**व्यर्यमा वरुणश् चेति पन्थाम् इषस् पतिः सुवितं गातुम् अग्निः।**
**इन्द्राविष्णू नृवद् उ षु स्तवाना शर्म नो यन्तम् अमवद् वरूथम्॥ ४॥**

वि। अर्यमा। वरुणः। चेति। पन्थाम्। इषः। पतिः। सुवितम्। गातुम्। अग्निः।
इन्द्राविष्णू इति। नृऽवत्। ऊँ इति। सु। स्तवाना। शर्म। नः। यन्तम्। अमऽवत्। वरूथम्॥ ४॥

*विशेष रूप से अर्यमा, वरुण (भी), ज्ञान कराता है मार्ग का,*
*अन्न का पालक, सुगम का (ज्ञान कराता है) मार्ग का, अग्नि।*
*इन्द्र और विष्णु, मनुष्यों की रीति से, सुष्ठु स्तुति किये जाते हुए,*
*आच्छादन को हमें प्रदान करें, (और) सशक्त सुरक्षाकवच को॥ ४॥*

परमेश्वर की दुष्टों को नियन्त्रण में रखने वाली शक्ति और जगत् को सब ओर से आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली शक्ति उपासकों को कल्याणमार्ग का ज्ञान कराती हैं। इसी प्रकार हवियों की रक्षा करने वाली और उन्हें सब तक पहुँचाने वाली, सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाली शक्ति हमें यज्ञ के सुगम मार्ग का ज्ञान कराती है। प्रभु की ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली और समस्त जगत् को व्याप्त करने वाली शक्तियां जब उचित मानवीय रीति से स्तुति की जाती हैं, तो वे हमें सशक्त सुरक्षा कवच और आच्छादन को प्राप्त कराती हैं।

टि. *विशेष रूप से ज्ञान कराता है* - **वि चेति**। वि चिनोति - वे.। ज्ञापयति - सा.। विचेति विजानाति - दया.। instruct us - W. have disclosed - G.

*सुगम का (ज्ञान कराता है) मार्ग का* - **सुवितं गातुम्**। शोभनमार्गम् - वे.। सुखकरं गमनं मार्गं वा स्वर्गादेः - सा.। way to happiness - W. the road to welfare - G.

*मनुष्यों की रीति से* – **नृवत्।** मनुष्ययुक्तम् – वे.। सा.। in manly mode - G.

*स्तुति किये जाते हुए* – **स्तवाना।** स्तूयमानौ – वे.। सा.। सत्यप्रशंसकौ – दया.।

*सशक्त सुरक्षाकवच को* – **अमवत् वरूथम्।** बलवत् वरणीयं गृहम् – वे.। वरणीयं बलोपेतं गृहं सुखं वा – सा.। प्रशस्तरूपयुक्तं गृहम् – दया.। powerful defence and shelter - G.

**आ पर्व॑तस्य म॒रुता॑म् अवां॑सि दे॒वस्य॑ त्रा॒तुर् अ॑व्रि भग॑स्य।**
**पात् पति॑र् जन्या॒द् अंह॑सो नो मि॒त्रो मि॑त्रिया॑द् उ॒त न॑ उरुष्येत्।। ५।। ६।।**

आ। पर्व॑तस्य। म॒रुता॑म्। अवां॑सि। दे॒वस्य॑। त्रा॒तुः। अ॒व्रि। भग॑स्य।
पात्। पति॑ः। जन्या॑त्। अंह॑सः। न॒ः। मि॒त्रः। मि॒त्रिया॑त्। उ॒त। न॒ः। उ॒रु॒ष्ये॒त्।। ५।।

*सब ओर से पर्वत के, मरुतों के रक्षणों का,*
*दिव्यगुणों वाले के, त्राता के, वरण करता हूँ, भग के।*
*पालन करे पालनकर्ता, मनुष्यों से मिलने वाले दुःख से हमारा,*
*और मित्र मित्र से प्राप्त होने वाले से, हमारी रक्षा करे।। ५।।*

मैं प्रभु का उपासक पर्वतों और मेघों से प्राप्त होने वाली जीवनरक्षाओं का वरण करता हूँ। मैं वायुओं से प्राप्त होने वाली जीवनरक्षाओं का वरण करता हूँ। मैं दिव्य गुणों से युक्त, सब का त्राण करने वाले, भजनीय परमेश्वर के संरक्षणों का वरण करता हूँ। जगत् को सब ओर से आवृत करके पालन करने वाला वह परमेश्वर सामान्य मनुष्यों से प्राप्त होने वाले दुःखों से हमारा पालन करे। सब का मित्रभूत वह प्रभु मित्रों से मिलने वाले दुःखों और कष्टों से भी हमारा सदा पालन करता रहे।

टि. *पर्वत के* – **पर्वतस्य।** मेघस्य – वे.। दया.। इन्द्रसखस्यैतन्नामकस्य देवस्य – सा.।

*वरण करता हूँ मैं* – **अव्रि।** वृणे – वे.। सा.। आवृणोमि – दया.। I have recourse to - W. I have besought - G.

*पालन करे* – **पात्।** रक्षतु – वे.।

*पालनकर्ता* – **पतिः।** पाल॒यिता इन्द्रः – वे.। वरुणो देवः – सा.। स्वामी – दया.। the lord (Varuṇa) - W. the Lord : Varuṇa - G.

*मनुष्यों से मिलने वाले से* – **जन्यात्।** जनभवात् – वे.। जनसम्बन्धात् – सा.। उत्पत्स्यमानात् – दया.। from human wretchedness - W. from the trouble caused by man - G.

*मित्र से प्राप्त होने वाले से* – **मित्रियात्।** मित्रभवात् उपद्रवात् – वे.। मित्रभावेन – सा.। मित्रात् – दया.। with a friendly regard - W. sent by his friend Varuṇa - G.

**नू रोद॑सी॒ अहि॑ना बु॒ध्न्ये॑न स्तुवी॒त दे॑वी॒ अप्ये॑भिर् इ॒ष्टैः।**
**स॒मु॒द्रं न सं॒चर॑णे सनि॒ष्यवो॑ घ॒र्मस्व॑रसो न॒द्यो॒३॑ अप॑ व्रन्।। ६।।**

नु। रो॒द॒सी॒ इति॑। अहि॑ना। बु॒ध्न्ये॑न। स्तु॒वी॒त। दे॒वी॒ इति॑। अप्ये॑भिः। इ॒ष्टैः।
स॒मु॒द्रम्। न। स॒म्ऽचर॑णे। स॒नि॒ष्यव॑ः। घ॒र्मऽस्व॑रसः। न॒द्य॑ः। अप॑। व्र॒न्।। ६।।

*निश्चय से, हे द्युलोक और भूलोक!, मेघ के साथ अन्तरिक्षस्थ के,*
*स्तुति करता हूँ मैं, हे प्रकाशमानो!, प्रापणीय अभीष्टों के निमित्त।*

*समुद्र की जिस प्रकार (स्तुति करते हैं) संचरण के निमित्त, धनकामी,*
*प्रदीप्त स्वरों से युक्त नदियां विलीन कर लेती हैं (स्वयं को जिसमें)।। ६।।*

हे दान आदि दैवी गुणों से युक्त आकाश पिता और धरती माता! मैं प्राप्ति के योग्य अभीष्ट पदार्थों को पाने के लिये पवित्र जलों को बरसाने वाले अन्तरिक्षस्थ मेघ के साथ तुम्हारी भी स्तुति करता हूँ। मैं तुम्हारी स्तुति इस प्रकार करता हूँ, जिस प्रकार व्यापार के द्वारा धनों की कामना करने वाले वणिक् जन समुद्र में आवागमन के लिये उस महान् समुद्र की स्तुति करते हैं, जिसमें कलकल ध्वनियों वाली उज्ज्वल नदियां अपने जलों के साथ स्वयं को विलीन कर देती हैं।

टि. *मेघ के साथ अन्तरिक्षस्थ के* – **अहिना बुध्न्येन**। अहिना बुध्न्येन देवेन – वे.। अहिर्बुध्न्य-नामकेन देवेन सह – सा.। मेघेन अन्तरिक्षे भवेन – दया.।

*स्तुति करता हूँ मैं* – **स्तुवीत**। स्तुवे – सा.। प्रशंसेत् – दया.। I praise you - W. agree - G.

*प्रापणीय अभीष्टों के निमित्त* – **अप्येभिः इष्टैः**। आपनीयैः कामैर् निमित्तभूतैः – सा.। अप्सु भवैः संगन्तुं प्राप्तुम् अर्हैः – दया.। for those (good things that are) desired - W. through these our watery oblations - G.

*धनकामी* – **सनिष्यवः**। सम्भक्तुम् इच्छवः – वे.। सा.। विभागं करिष्यमाणाः – दया.। desirous of acquiring (riches) - W.

*प्रदीप्त स्वरों से युक्त* – **घर्मस्वरसः**। क्षरदुदकाः – वे.। दीप्तध्वनयः – सा.। घर्मे यज्ञे स्वकीयो रसो यस्य सः – दया.। sounding - W. the Gharma-heaters - G.

*नदियां विलीन कर लेती हैं (स्वयं को जिसमें)* – **नद्यः अप व्रन्**। नद्यः अप गच्छन्तु यथाकामं चरन्तु – वे.। देवा नदीर् अपवृण्वन्तीति परोक्ष एव। अथवा ते देवा नद्यः नदीर् अपवृण्वन्त्वित्याशीः। सा.। अपवृण्वन्ति – दया.। rivers disappear - W. have opened the rivers - G.

**दे॒वैर् नो॑ दे॒व्यदि॑ति॒र् नि पा॑तु दे॒वस् त्रा॒ता त्रा॑यता॒म् अप्र॑युच्छन्।**
**न॒हि मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य धा॒सिम् अर्हा॑मसि प्र॒मियं॒ सान्व॒ग्नेः।। ७।।**

दे॒वैः। नः॒। दे॒वी। अदि॑तिः। नि। पा॒तु। दे॒वः। त्रा॒ता। त्रा॒य॒ता॒म्। अप्र॑ऽयुच्छन्।
न॒हि। मि॒त्रस्य॑। वरु॑णस्य। धा॒सिम्। अर्हा॑मसि। प्र॒ऽमिय॑म्। सानु॑। अ॒ग्नेः।। ७।।

*देवों के साथ हमारा, देवी अदिति नितरां पालन करे,*
*देव त्राण करने वाला त्राण करे हमारा, प्रमाद न करता हुआ।*
*नहीं मित्र के, वरुण के अन्न को,*
*योग्य हैं हम हिंसित करने के, (और) शिखा को अग्नि की।। ७।।*

अखण्ड दिव्य अनन्तता अथवा अनन्त चेतनाशक्ति अन्य दिव्य शक्तियों के साथ मिलकर हमारा पालन करे। सर्वत्राता सतत जागरूक परमेश्वर प्रमादरहित होकर सदा हमारा त्राण करता रहे। विनाश से त्राण करने वाले और सब ओर से आवृत करके पालन करने वाले परमेश्वर को समर्पित किये जाने वाले नैवेद्य को हिंसित करना, उसे समर्पित न करना, हमें उचित नहीं है। अग्नि की शिखा को हिंसित करना अर्थात् देवों को आहुति प्रदान करने के लिये अग्नि को प्रज्वलित न करना भी हमें

उचित नहीं है। परमेश्वर को समर्पण और देवों को आहुति हमारे लिये अनिवार्य है।

टि. देव *त्राण करने वाला* - **देवः त्राता**। पालको देवः। इन्द्र इत्यर्थः। सा.। protecting (deity, Indra) - W. saviour god - G.

*प्रमाद न करता हुआ* - **अप्रयुच्छन्**। अप्रमाद्यन् - सा.। दया.। ever-attentive - W. with care unceasing - G.

*अन्न को* - **धासिम्**। अन्नम् - वे.। दया.। अन्नं सोमादिलक्षणम् - सा.। the (sacrificial) food - W. the sacred food - G.

*नहीं योग्य हैं हम हिंसित करने के* - **नहि अर्हामसि प्रमियम्**। न प्रहिंसितुम् अर्हामः - वे.। हिंसितुं नार्हामः - सा.। we are not able to withhold - W. we dare not stint - G.

*शिखा को अग्नि की* - **सानु अग्नेः**। अग्नेः समुच्छ्रितं हविः - वे.। सानु शिखरं अग्नेः पावकस्य - दया.। upon the back of Agni - G.

**अ॒ग्निर् ईशे वसु॒व्य॑स्या॒ऽग्निर् म॒हः सौभ॑गस्य। तान्य॒स्मभ्य॑ं रासते।। ८।।**

अ॒ग्निः। ईशे॒। व॒सु॒व्य॑स्य। अ॒ग्निः। म॒हः। सौभ॑गस्य। तानि॑। अ॒स्मभ्य॑म्। रा॒स॒ते॒।। ८।।

*अग्नि शासन करता है वाससमूहों पर,*

*अग्नि (शासन करता है) महान् ऐश्वर्य पर।*

*उनको हमें प्रदान करे वह (सदा ही)।। ८।।*

सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला परमेश्वर ग्राम, नगर आदि निवाससमूहों पर और उनमें निवास करने वाले मनुष्यों पर शासन करता है। वह महान् ऐश्वर्यों का स्वामी है। वह उन उत्तम निवासों और ऐश्वर्यों को हमें प्रदान करे।

टि. *शासन करता है* - **ईशे**। ईश्वरः - वे.। ईष्टे दातुम् - सा.। ईष्टे - दया.। is lord - W. is Sovran Lord - G.

*वाससमूहों पर* - **वसव्यस्य**। वसूनां समूहस्य - वे.। धनसमूहस्य - सा.। वसुषु धनेषु साधोः - दया.। over treasure - W. of wealth - G.

*महान् ऐश्वर्य पर* - **महः सौभगस्य**। महतः सौभाग्यस्य - वे.। महतः सुभगत्वस्य - सा.। over great good fortune - W. of great prosperity - G.

*प्रदान करे* - **रासते**। प्रयच्छतु - वे.। ददातु - सा.। ददाति - दया.।

**उषो॑ मघो॒न्या व॑ह॒ सूनृ॑ते॒ वार्या॑ पु॒रु। अ॒स्मभ्य॑ं वाजिनीवति।। ९।।**

उष॑ः। म॒घो॒नि॒। आ। व॒ह॒। सूनृ॑ते। वार्या॑। पु॒रु। अ॒स्मभ्य॑म्। वा॒जि॒नी॒ऽव॒ति॒।। ९।।

*हे उषा!, हे पूज्य धनों वाली!, इस ओर वहन कर,*

*हे सच्ची मीठी वाणियों वाली, वरणीयों को बहुतों को।*

*हमारे लिये, हे उत्तम बल प्रदान करने वाली।। ९।।*

हे प्रथमज्ञानरश्मिरूपी अध्यात्म उषा! हे ज्ञानरूपी पवित्र धनों वाली! हे उपासक जनों की स्तुतिरूपी सच्ची और मीठी वाणियों को प्रेरित करने वाली! हे श्रेष्ठ अध्यात्म शक्तियों को प्रदान करने

वाली! तू हम उपासकों के लिये प्रभूत मात्रा में आनन्दरूपी धनों को इस ओर ले आ।

टि. हे *सच्ची मीठी वाणियों वाली* - सूनृते। प्रियसत्यरूपवागभिमानिनि - सा.। सत्यवाक् - दया.। truth-speaking - W. pleasant - G.

*वरणीयों को बहुतों को* - **वार्या पुरु**। पुरूणि धनानि - वे.। वरणीयानि बहूनि धनानि - सा.। वार्या वर्तुम् अर्हाणि वस्तूनि - दया.। many good things - W. many thins to be desired - G.

*हे उत्तम बल प्रदान करने वाली* - **वाजिनीवति**। अन्नवति . सा.। food-abounding - W. who hath ample store of wealth - G.

**तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा।**
**इन्द्रो नो राधसा गमत्।। १०।। ७।।**

तत्। सु। नः। सविता। भगः। वरुणः। मित्रः। अर्यमा। इन्द्रः। नः। राधसा। आ। गमत्।। १०।।

*उस (धन को) भली प्रकार हमें (देवे), सविता, भग,*
*वरुण, मित्र अर्यमा।*
*इन्द्र हमारे पास (उस) धन के साथ आ जाए।। १०।।*

सर्वप्रेरक, सबके द्वारा सेवनीय, समस्त जगत् को आवृत करके उसका पालन करने वाला, विनाश से त्राण करने वाला, दुष्ट हिंसक जनों को नियन्त्रण में रखने वाला, ऐश्वर्यों का स्वामी वह परमेश्वर उस अभूतपूर्व दिव्य धन के साथ हमारे पास आकर हमारे अन्तस्तल में निवास करे और उससे हमें भली प्रकार मालामाल कर देवे।

## सूक्त ५६

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - द्यावापृथिवी। छन्दः - १-४ त्रिष्टुप्, ५-७ गायत्री। सप्तर्चं सूक्तम्।

**मही द्यावापृथिवी इह ज्येष्ठे रुचा भवतां शुचयद्भिर् अर्कैः।**
**यत् सीं वरिष्ठे बृहती विमिन्वन् रुवद् धोक्षा पप्रथानेभिर् एवैः।। १।।**

मही इति। द्यावापृथिवी इति। इह। ज्येष्ठे इति। रुचा। भवताम्। शुचयत्ऽभिः। अर्कैः।
यत्। सीम्। वरिष्ठे इति। बृहती इति। विऽमिन्वन्। रुवत्। ह। उक्षा। पप्रथानेभिः।। एवैः।। १।।

*महान् द्युलोक और भूलोक यहाँ, प्रशंसा के योग्य,*
*दीप्ति से युक्त, हो जाएं पवित्रकारक स्तुतियों से युक्त।*
*जब सर्वतः विस्तृतों को, विशालों को, अलग-अलग स्थापित करता हुआ,*
*घोष करता है निश्चय से सेचक, (गमन करता हुआ) विशाल मार्गों से।। १।।*

आकाश पालक होने से हमारा पिता है। भूमि निर्माता होने से हमारी माता है। ये दोनों ही महान् हैं और हमारी स्तुति के योग्य हैं। ये दोनों अपने तेजों से युक्त हैं। ये हमारी पवित्रकारक स्तुतियों से युक्त होवें, अर्थात् उन्हें सहर्ष स्वीकार करें। ये एक-दूसरे के पूरक होते हुए भी अलग-अलग स्थित हैं। गर्जना के साथ जलों को बरसाने वाला मेघ अत्यन्त विस्तृत और अत्यन्त विशाल इन दोनों के

परस्पर सम्बन्ध को स्थापित करता है। वह आकाश में उत्पन्न होकर धरती को जलों से सींचता है, जिससे धरती पर निवास करने वाले प्राणियों के लिये ओषधियां और अन्न उत्पन्न होते हैं। इन्हीं अन्नों और ओषधियों से याजक अग्नि में अपनी आहुतियां समर्पित करते हैं, जिनसे द्युलोकवासी देव प्रसन्न होते हैं और पुनः मेघ के द्वारा धरती पर वर्षा करते हैं। इस प्रकार यह क्रम निरन्तर चलता रहता है।

टि. *प्रशंसा के योग्य* - **ज्येष्ठे**। प्रशस्यतमे - वे.। दया.। प्रशस्ये - सा.। most excellent - W. most meet for honour - G.

*पवित्रकारक स्तुतियों से युक्त* - **शुचयद्भिः अर्कैः**। शुचयद्भिः अन्नैः सह - वे.। दीपयद्भिर् मन्त्रैः सोमादिहविर्भिर् वा - सा.। पवित्रयद्भिर् अर्चनीयैः - दया.। by sanctifying hymns - W. with gleaning splendours - G.

*विस्तृतों को* - **वरिष्ठे**। उरुतरे - सा.। अतिशयेन वरे - दया.। vast - G.

*अलग-अलग स्थापित करता हुआ* - **विमिन्वन्**। परिच्छिन्दन् - वे.। परिच्छिन्दन् स्थापयन् - सा.। विशेषेण प्रक्षिपन् - दया.। fixing them apart - G.

*घोष करता है सेचक* - **रुवत् उक्षा**। शब्दं करोति पर्जन्यः - वे.। सेक्ता पर्जन्यः रौति शब्दं करोति - सा.। प्रशस्तशब्दवत् सूर्यः - दया.। the Steer roars loudly - G.

*विशाल मार्गों से* - **पप्रथानेभिः एवैः**। प्रथमानैः मरुद्भि : - वे.। प्रथमानैर् एवैर् गमनशीलैर् मरुद्भिर् मेघैर् वा - सा.। भृशं विस्तृतैः सुखप्रापकैः - दया.। in far-reaching courses - G.

**दे॒वी दे॒वेभि॑र् यज॒ते यज॑त्रै॒र् अमि॑नती तस्थतुर् उ॒क्षमा॑णे।**
**ऋ॒तावि॑री अ॒द्रुहा॑ दे॒वपु॑त्रे य॒ज्ञस्य॑ ने॒त्री शु॒चय॑द्भिर् अ॒र्कैः॥ २॥**

दे॒वी इति॑। दे॒वेभि॑ः। य॒ज॒ते इति॑। यज॑त्रैः। अमि॑नती॒ इति॑। त॒स्थ॒तुः। उ॒क्षमा॑णे॒ इति॑।
ऋ॒तव॑री॒ इत्यृ॒तऽव॑री। अ॒द्रुहा॑। दे॒वपु॑त्रे॒ इति॑ दे॒वऽपु॑त्रे। य॒ज्ञस्य॑। ने॒त्री इति॑। शु॒चय॑त्ऽभिः। अ॒र्कैः॥ २॥

*दिव्य गुणों वाले दिव्य गुणों वालों के साथ, पूज्य पूज्यों के साथ,*
*हिंसित न करते हुए, स्थित होते हैं, सींचते हुए (सुखों से)।*
*ऋत का पालन करने वाले, द्रोह न करने वाले, देवों के माता-पिता,*
*यज्ञ का नेतृत्व करने वाले, पवित्र करने वाली स्तुतियों से युक्त॥ २॥*

हम सबका पालन करने वाला पिता आकाश और हम सबका निर्माण करने वाली माता भूमि, ये दोनों दान दिव्यता आदि गुणों से युक्त हैं और इसलिये पूजनीय हैं। ये कभी किसी की हिंसा अर्थात् अहित नहीं करते। ये दोनों हमपर सुखों की वर्षा करने वाले हैं। ये सत्यनियमों का पालन करने वाले हैं। ये कभी किसी से द्रोह नहीं करते। सब देव इनके ही पुत्र हैं। ये जगत् में निरन्तर प्रवर्तमान शाश्वत यज्ञ का नेतृत्व करने वाले हैं। ये पवित्र मन्त्रों के द्वारा सदा स्तुति किये जाते हैं। पूजा के योग्य ये दोनों अन्य दिव्य शक्तियों से मिलकर जगत् के संचालन के लिये स्थित हैं।

टि. *पूज्य* - **यजते**। यष्टव्ये - वे.। सा.। सङ्गन्तव्ये - दया.। adorable - W. holy - G.

*हिंसित न करते हुए* - **अमिनती**। अहिंसत्यौ - वे.। सा.। अहिंसिके - दया.। benevolent - W. exhaustless - G.

*देवों के माता-पिता* – **देवपुत्रे।** देवाः पुत्रा ययोस् ते – वे.। देवोत्पादयित्र्यौ – सा.। whose sons are the gods - W. having Gods for children - G.

*यज्ञ का नेतृत्व करने वाले* – **यज्ञस्य नेत्री।** यज्ञस्य नेत्र्यौ – वे.। दया.। यज्ञस्य निर्वाहयित्र्यौ – सा.। the leaders of sacrifice - W. G.

**स इत् स्वपा भुवनेष्वास य इमे द्यावापृथिवी जजान।**
**उर्वी गभीरे रजसी सुमेके अवंशे धीरः शच्या सम् ऐरत्।। ३।।**

सः। इत्। सुऽअपाः। भुवनेषु। आस। यः। इमे इति। द्यावापृथिवी इति। जजान।
उर्वी इति। गभीरे इति। रजसी इति। सुमेके इति सुऽमेके। अवंशे। धीरः। शच्या। सम्। ऐरत्।। ३।।

*वह ही उत्तम कारीगर, लोकों में आसीन है (सब में),*
*जो इनको, द्युलोक और भूलोक को, उत्पन्न करता है।*
*विस्तीर्णों को, गम्भीरों को, लोकों को, शोभन रूप वालों को,*
*बिना बांस के आधार के, प्रज्ञावान् शक्ति से (अपनी) थामता है।। ३।।*

जिसने इन द्युलोक और पृथिवीलोक को उत्पन्न किया है, वह उत्तम कारीगर विश्वकर्मा परमपिता परमेश्वर ही इन सब लोकों में व्याप्त है। वह प्रज्ञावान् सुन्दर रूप वालों, विशाल और गम्भीर इन दोनों लोकों को अपनी शक्ति से बिना बांस आदि किसी स्थूल आधार के अन्तरिक्ष में थाम रहा है।

टि. *उत्तम कारीगर* – **सुऽअपाः।** सुकर्मा – वे.। शोभनकर्मा – सा.। शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्य सः – दया.। the doer of a good work - W. a skilful Craftsman - G.

*आसीन है* – **आस।** अभवत् – वे.। आस्ते – सा.। दया.। was - W. G.

*विस्तीर्णों को* – **उर्वी।** विस्तीर्णे – वे.। सा.। बहुपदार्थयुक्ते – दया.। vast - W. spacious - G.

*गम्भीरों को* – **गभीरे।** गम्भीरे – वे.। अविचले – सा.। immovable - W. deep - G.

*शोभन रूप वालों को* – **सुमेके।** शोभनमाने – वे.। सुमेके शोभनरूपे – सा.। एकीभूते सम्बद्धे – दया.। beautiful - W. well-fashioned - G.

*बिना बांस के आधार के* – **अवंशे।** उत्पत्तिरहिते अनाधारे वान्तरिक्षे – सा.। अविद्यमानो वंशो ययोस् ते अन्तरिक्षस्थे – दया.। unsupported - W. G.

*शक्ति से थाम रहा है* – **शच्या सम् ऐरत्।** कर्मणा अस्तभ्नात् – वे.। कुशलकर्मणा सम्यक् प्रेरितवान् – सा.। प्रज्ञया कम्पयति यथाक्रमं चालयति – दया.। gave an impulse by his deeds - W. with his power brought together - G.

**नू रोदसी बृहद्भिर् नो वरूथैः पत्नीवद्भिर् इषयन्ती सजोषाः।**
**उरूची विश्वे यजते नि पातं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। ४।।**

नु। रोदसी इति। बृहत्ऽभिः। नः। वरूथैः। पत्नीवत्ऽभिः। इषयन्ती इति। सऽजोषाः।।
उरूची इति। विश्वे इति। यजते इति। नि। पातम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः।। ४।।

*शीघ्र, हे द्युलोक-भूलोक!, विशालों के साथ हमारे गृहों के,*
*पत्नियों वालों के, अन्न प्रदान करते हुए, समान प्रीति वाले।*

*विस्तार को प्राप्त करने वाले, सर्वव्यापक, पूज्य, सम्यक् पालन करो,*
*कर्म के द्वारा होवें हम, रथों वाले, सदा भोगों को भोगने वाले।। ४।।*

हे आकाश पिता और पृथिवी माता! तुम दोनों दूर तक विस्तारों वाले, सर्वत्र व्याप्त और पूजा के योग्य हो। तुम शीघ्र ही समान प्रीति वाले होकर सुन्दर और सुशील पत्नियों से युक्त विशाल घरों के साथ हमें अन्नों से मालामाल करते हुए हमारा भली प्रकार पालन करो। हम अपनी बुद्धि और कर्मों के द्वारा उत्तम रथी बनें और सदा भोगों को भोगने वाले होवें।

टि. *विशालों के साथ गृहों के* - **बृहद्भिः वरूथैः**। महद्भिः अस्मद्गृहैः - वे.। सा.। with our spacious dwellings - W. with high protection - G.

*अन्न प्रदान करते हुए* - **इषयन्ती**। अन्नं कुर्वाणे - वे.। अस्माकम् अन्नम् इच्छन्त्यौ - सा.। सुखं प्रापयन्त्यौ - दया.। promoting - G.

*समान प्रीति वाले* - **सजोषाः**। वचनव्यत्ययः।। सङ्गते - वे.। सा.। समानप्रीतिसेवी - दया.। united in satisfaction - W. with one accord - G.

*विस्तार को प्राप्त करने वाले* - **उरूची**। उरुत्वम् अञ्चन्त्यौ - वे.। उर्वञ्चने - सा.। ये उरून् बहून् अञ्चतस् ते - दया.। vast - W. far-reaching - G.

*सर्वव्यापक* - **विश्वे**। व्याप्ते - वे.। सा.। अन्तरिक्षे प्रविष्टे - दया.। universal - W. G.

*कर्म के द्वारा* - **धिया**। कर्मणा - वे.। प्रज्ञया कर्मणा वा - दया.। for our (pious) acts - W. through song - G.

*रथों वाले* - **रथ्यः**। रथिनः - वे.। बहुरथादियुक्ताः - दया.। car-borne - G.

*सदा भोगों को भोगने वाले* - **सदासाः**। सदा सम्भक्तारः - वे.। त्वां सर्वदा भजमानास् त्वदर्थं हवीरूपस्यान्नस्य दातारो वा स्याम भूयास्म - सा. (ऋ. ४.१६.२१)। ससेवकाः - दया.। possessed of slaves - W. be victorious ever - G.

**प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे। शुची उप प्रशस्तये।। ५।।**

प्र। वाम्। महि। द्यवी इति। अभि। उपऽस्तुतिम्। भरामहे। शुची इति। उप। प्रऽशस्तये।। ५।।

*प्रकर्ष से तुम दोनों के, महान् को, प्रकाशमानों के पास,*
*प्रिय स्तुति को लाते हैं हम।*
*(तुम) पवित्रों के पास (आते हैं हम), प्रशंसा के लिये।। ५।।*

हे पालन करने वाले आकाश पिता और निर्माण करने वाली धरती माता! तुम दोनों प्रकाश से युक्त हो। तुम दोनों पवित्र करने वाले हो। हम अपनी उच्च, प्रिय स्तुतियों को तुम्हारे पास लाते हैं। तुम पवित्र हो। हम तुम्हारी प्रशंसा के लिये तुम्हारे पास आते हैं। तुम हमारी स्तुतियों और प्रशंसाओं को स्वीकार करो।

टि. *प्रकाशमानों के पास* - **द्यवी अभि**। अभि द्यावापृथिव्यौ - वे.। द्योतमाने अभि - सा.। to you both resplendent (Heaven and Earth) - W. O Heaven and Earth - G.

*प्रिय स्तुति को लाते हैं हम* - **उपस्तुतिं भरामहे**। स्तोत्रं प्रकर्षेण संपादयामः - सा.। उपमितां

प्रशंसां धरामहे - दया.। we offer earnest praise - W. we bring you our song of praise - G.

*पवित्रों के पास (आते हैं हम)* - **शुची उप**। दीप्यमाने उप - वे.। शुद्धे युवाम् उपगच्छाम इति शेषः। उपसर्गश्रुतेर् उचितक्रियाध्याहारः। सा.। पवित्रे उप - दया.। we approach you who are pure - W. Pure Ones, we glorify you both - G.

**पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः। ऊह्याथे सनाद् ऋतम्।। ६।।**

पुनाने इति। तन्वा। मिथः। स्वेन। दक्षेण। राजथः। ऊह्याथे इति। सनात्। ऋतम्।। ६।।

*पवित्र करते हुए स्वरूप से (अपने) परस्पर,*
*अपने बल से सुशोभित होते हो तुम दोनों।*
*वहन करते हो सनातन काल से ऋत को।। ६।।*

हे पिता द्यौ और हे माता धरित्री! तुम अपने स्वरूप से परस्पर एक-दूसरे को पवित्र करते हो। द्युलोक वर्षा के पवित्र जलों के द्वारा पृथिवी को पवित्र करता है, और पृथिवी से देवताओं को पहुँचने वाली पवित्र आहुतियां द्युलोक को पवित्र करती हैं। तुम दोनों अपने बलों और सामर्थ्यों से सुशोभित हो रहे हो। तुम आदि काल से ही शाश्वत ईश्वरीय विधान का पालन करते आ रहे हो।

टि. *पवित्र करते हुए स्वरूप से (अपने)* - **पुनाने तन्वा**। क्षरन्त्यौ ततेन हविषा उदकेन च - वे.। स्वकीयया मूर्त्या शोधयन्त्यौ यज्ञं यजमानं वा। यद्वा। स्वस्वशरीरैकदेशेन परस्परं शोधयन्त्यौ। द्यौः स्वीयेनासारेण भुवं सा च स्वकीयेन कार्श्येन चन्द्रमसि स्थितेन दिवम् इति विवेकः। सा.। पवित्र-कारिके शरीरेण - दया.। sanctifying (each other) of your own substance - W. ye sanctify each other's form - G.

*सुशोभित होते हो तुम दोनों* - **राजथः**। you shine - W. ye rule - G.

*वहन करते हो सनातन काल से ऋत को* - **उह्याथे सनात् ऋतम्**। वहथः च चिराद् आरभ्य यज्ञम् - वे.। सदाकालं यज्ञं वहथः - सा.। वितर्कयथः सनातनात् सत्यम् - दया.। ever bear away the offering - W. from of old observe the Law - G.

**मही मित्रस्य साधथस् तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परि यज्ञं नि षेदथुः।। ७।। ८।।**

मही इति। मित्रस्य। साधथः। तरन्ती इति। पिप्रती इति। ऋतम्। परि। यज्ञम्। नि। सेदथुः।। ७।।

*महान् दोनों मित्र के साधते हैं (अभिमत को),*
*पार करते हुए (उपासक को), पालन करते हुए ऋत का।*
*सब ओर यज्ञ के नितरां स्थित होते हैं (ये दोनों)।। ७।।*

पिता आकाश और माता धरती ये दोनों ही महान् हैं। जो उपासक इनका मित्र बन जाता है, ये उसकी सब कामनाओं और प्रयोजनों को सफल बना देते हैं। सदा ऋत का पालन करने वाले ये दोनों अपने उपासक को दुःखों और विघ्न-बाधाओं से पार कर देते हैं। इस जगत् में परम पिता परमेश्वर का जो शाश्वत यज्ञ निरन्तर चल रहा है, उसको ये दोनों सब ओर से घेरकर स्थित हैं। अर्थात् उस यज्ञ के प्रवर्तन में इन दोनों का पूर्ण सहयोग है।

टि. *मित्र के साधते हैं (अभिमत को)* - **मित्रस्य साधथः**। सख्युः (ऋतम्) यज्ञं साधयथः -

वे.। मित्रभूतस्य स्तोतुर् अभिमतं साधयथः - सा.। सर्वस्य सुहृदः साध्नुतः - दया.। you fulfil the desires of your friend - W. fulfilling Mitra's Law - G.

*पार करते हुए* - **तरन्ती**। तरन्त्यौ - वे.। ऋतम् अन्नं तरन्ती तारयन्त्यौ - सा.। दुःखं प्लावयन्त्यौ - दया.। distributing food - W. furthering - G.

*पालन करते हुए ऋत का* - **पिप्रती ऋतम्**। मित्रं पूरयन्त्यौ - वे.। पूरयन्त्यौ यज्ञम् - सा.। पिप्रती सर्वानन्दं प्रपूरयन्त्यौ, ऋतं सत्यं कारणम् - दया.। giving sustenance - W.

*स्थित होते हैं* - **नि सेदथुः**। आश्रयतः - वे.। निषीदतः - दया.। you have sat down - W.

## सूक्त ५७

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - १-३ क्षेत्रपतिः, ४ शुनः, ५,८ शुनासीरौ, ६-७ सीता। छन्दः - १,४,६,७ अनुष्टुप्, २,३,८ त्रिष्टुप्, ५ पुरउष्णिक्।

**क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि।**
**गाम् अश्वं पोषयित्न्वा स नो मृळातीदृशे।। १।।**

क्षेत्रस्य। पतिना। वयम्। हितेनऽइव। जयामसि।
गाम्। अश्वम्। पोषयित्नु। आ। सः। नः। मृळाति। ईदृशे।। १।।

*क्षेत्र के पति के माध्यम से हम,*
*हितैषी के माध्यम से जिस प्रकार, प्राप्त करें।*
*गौओं को, अश्वों को, पोषक धन को सर्वतः,*
*वह हमें सुखी करे, इस प्रकार के (धन में)।। १।।*

क्षेत्र शब्द के अनेक अर्थ हैं, जैसे निवास, गृह, खेत, शरीर, जगत् आदि। इन सबका पालक अथवा स्वामी वह परमेश्वर है। इस मन्त्र में कामना की गई है, कि हम उपासक जन सर्वविध क्षेत्रों के स्वामी उस परमात्मा से अपनी उपासना और समर्पण के द्वारा गौओं, अश्वों आदि बाह्य पोषक धनों को, और आत्मिक ज्ञान, शारीरिक बल आदि दिव्य अन्तर्धनों को प्राप्त करें। वह हमें सदा सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के धनों से सुखी और आनन्दित करे।

टि. *क्षेत्र के पति के माध्यम से* - **क्षेत्रस्य पतिना**। क्षेत्रस्य पतिना देवेन। रुद्रं क्षेत्रपतिं प्राहुः केचिद् अग्निम् अथापरे। स्वतन्त्र एव वा कश्चित् क्षेत्रस्य पतिर् उच्यते।। सा.। शस्यस्योत्पत्त्यधिकरणस्य स्वामिना - दया.। क्षेत्रपति की सहायता से - सात. with the master of the field - W. through the Master of the field - G.

*हितैषी के माध्यम से जिस प्रकार* - **हितेनऽइव**। सुहितेनेव - वे.। इवशब्द एवार्थे। सर्वप्राणिहितेनैव तेन। अथवा मित्रेणेव। यथा सख्युः साहाय्ये सन् स्वकार्यं साधयति तद्वत्। सा.। हितसाधकेन सैन्येनेव - दया.। as through a friend - G.

*प्राप्त करें* - **जयामसि**। जयामः - वे.। दया.। जयामः क्षेत्रम् - सा.। we obtain - G.

*पोषक धन को सर्वतः* - **पोषयित्नु आ**। पोषयितृ चाहर इति यास्कः (नि. १०.१५) - वे.।

पोषयितृ गवाश्वलक्षणं धनम् आहरत्विति शेषः। उपसर्गश्रुतेर् योग्यक्रियाध्याहारः। सा.। nourishment - W. what nourisheth (our kine and steeds) - G.

*सुखी करे* – **मृळाति।** मृळातिर् दानकर्मा – या. (नि. १०.१५)। सुखयति – सा.। he makes us happy - W. may he be good to us - G.

**क्षेत्र॑स्य पते॒ मधु॑मन्तम् ऊ॒र्मिं धे॒नुरि॑व॒ पयो॑ अ॒स्मासु॑ धुक्ष्व।**
**म॒धु॒श्चुतं॑ घृ॒तमि॑व॒ सुपू॑तम् ऋ॒तस्य॑ नः॒ पत॑यो मृळयन्तु।। २।।**

क्षेत्र॑स्य। प॒ते॒। मधु॑ऽमन्तम्। ऊ॒र्मिम्। धे॒नुःऽइ॑व। पय॑ः। अ॒स्मासु॑। धु॒क्ष्व॒।
म॒धु॒ऽश्चुत॑म्। घृ॒तम्ऽइ॑व। सु॒ऽपू॑तम्। ऋ॒तस्य॑। नः॒। पत॑यः। मृ॒ळ॒य॒न्तु॒।। २।।

*हे क्षेत्र के पालक!, माधुर्ययुक्त को जललहर को,*
*दुधारू गौ जिस प्रकार दूध को, हमारे लिये दुह तू।*
*मधु को चुवाने वाले घृत की तरह, सम्यक् छने हुए की,*
*ऋत के, हमको, पालन करने वाले सुखी करें।। २।।*

हे निवासों, गृहों, खेतों, शरीरों आदि के पालक परमेश्वर! दुधारू गौ जिस प्रकार हमारे लिये मीठे दूध को दुहती है और माधुर्य से युक्त अच्छी प्रकार छने हुए घृत को प्रदान करती है, उसी प्रकार तू हमें माधुर्ययुक्त स्वच्छ जललहरों को प्रदान कर। हमें स्वच्छ, मधुर पेय जल की अपने लिये, अपने पशुओं के लिये और अपनी खेतियों के लिये कोई कमी न रहे। सत्यनियम का पालन करने वाली तेरी दिव्य शक्तियां सदा हमें सुखी, प्रसन्न और आनन्दित करती रहें।

टि. *माधुर्ययुक्त को जललहर को* – **मधुमन्तम् ऊर्मिम्।** मधुमन्तम् ऊर्मिं गोसङ्घं – वे.। माधुर्योपेतं प्रवृद्धम् उदकम् – सा.। मधुरादिगुणयुक्तां जलधाराम् – दया.। sweet abundant water - W. the wave that beareth sweetness - G. the wave of honey-bliss - Fra.

*हमारे लिये दुह तू* – **अस्मासु धुक्ष्व।** प्रयच्छ पशून् – वे.। pour for us freely - G.

*मधु को चुवाने वाले घृत की तरह* – **मधुश्चुतम् घृतमिव।** मधुश्चुतम् ऊर्मिं घृतमिव – वे.। मधुश्चुतं मधुस्राावि – सा.। dropping like honey, bland as butter - W.

*सम्यक् छने हुए की* – **सुपूतम्।** सुपूतम् अस्मासु धुक्ष्व – वे.। सुष्ठु पवित्रम् – दया.।

*ऋत का पालन करने वाले* – **ऋतस्य पतयः।** यज्ञस्य पतयः – वे.। यज्ञस्योदकस्य वा स्वामिनः – सा.। the lords of water - W. the Lords of holy Law - G.

"The field is the natural world. the Lord of the field is the indwelling Spirit, the soul. Through his fostering care we win the abundance of nature symbolised by the cow and horse, which inwardly are knowledge and energy." Fra. p. 224.

**मधु॑मती॒र् ओष॑धी॒र् द्याव॒ आपो॒ मधु॑मन् नो भवत्व॒न्तरि॑क्षम्।**
**क्षेत्र॑स्य॒ पति॒र् मधु॑मान् नो अ॒स्त्वरि॑ष्यन्तो॒ अन्वे॑नं चरेम।। ३।।**

मधु॑ऽमतीः। ओष॑धीः। द्याव॑ः। आप॑ः। मधु॑ऽमत्। नः॒। भ॒व॒तु॒। अ॒न्तरि॑क्षम्।
क्षेत्र॑स्य। पति॑ः। मधु॑ऽमान्। नः॒। अ॒स्तु॒। अरि॑ष्यन्तः। अनु॑। ए॒न॒म्। च॒रे॒म॒।। ३।।

*माधुर्य से युक्त ओषधियां, द्यौ आदि लोक, जल,*

*माधुर्य से युक्त, हमारे लिये होवे अन्तरिक्ष।*
*क्षेत्रपति माधुर्य से युक्त हमारे लिये होवे,*
*अहिंसित होते हुए, इसका अनुगमन करें हम।। ३।।*

परमेश्वर की महती कृपा से जौ आदि अन्न हमारे लिये मिठास से युक्त होवें। द्यौ आदि लोक हमारे लिये आनन्ददायक होवें। जल हमारे लिये माधुर्य से पूर्ण होवें। अन्तरिक्ष अपने पवित्र जलों के द्वारा हमारे लिये सुखदायक होवे। शरीरों, निवासों, खेतों आदि का स्वामी परमेश्वर स्वयं हमारे लिये माधुर्यों को प्रदान करने वाला होवे। हम सुरक्षित रहते हुए इसका अनुगमन करते रहें।

टि. *द्यौ आदि लोक* - **द्यावः**। तिस्रो दिव इत्युक्तत्वाद् बहुवचनं युक्तम् - सा.। सूर्यादिप्रकाशाः - दया.। the heavens - W. G.

*अन्तरिक्ष* - **अन्तरिक्षम्**। अन्तरिक्षम् - सा.। आकाशम् - दया.। the firmament - W. air's mid-region - G. the inner realm - Fra.

*अहिंसित होते हुए* - **अरिष्यन्तः**। अहिंस्यमानाः - वे.। सा.। दया.। undetered by foes - W. uninjured - G. unharmed - Fra.

*इसका अनुगमन करें हम* - अनु एनम् चरेम। क्षेत्रपतिम् अनुसृत्य संचरेम सुखेन - सा.।

**शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम्।**
**शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनम् अष्ट्राम् उद् इङ्गय।। ४।।**

शुनम्। वाहाः। शुनम्। नरः। शुनम्। कृषतु। लाङ्गलम्।
शुनम्। वरत्राः। बध्यन्ताम्। शुनम्। अष्ट्राम्। उत्। इङ्गय।। ४।।

*सुख से बैल (बाहें हल को), सुख से मनुष्य (जोतें बैलों को),*
*सुख से जोते खेत को हल।*
*सुख से रस्सियां बाँधी जाएं,*
*सुख से प्रतोद को उठा तू (बैल पर, हे कृषक)।। ४।।*

मनुष्य का शरीर एक खेत के समान है। जिस प्रकार अनेक प्रकार से कृषिकर्म करते हुए बैलों से हल चलाकर खेत को जोता जाता है, उसमें बीज बोया जाता है और वह बीज उगकर, बढ़कर, पुष्पवान् और फलवान् होता है, उसी प्रकार इस शरीररूपी खेत के अन्दर मनुष्य अनेक प्रकार के कर्मरूपी बीजों को बोता है, जो समय आने पर फलवान् हो जाते हैं। ज़ीवन में ये सभी कार्य सहज, सुखपूर्वक और सुख तथा आनन्द की प्राप्ति के लिये होने चाहियें।

टि. *सुख से* - **शुनम्**। सुखम्। शुनो देवता मन्त्रस्य। तच् च सुखम्। भवति हि क्षेत्रकर्षणे सुखम् इति। वे.। सुखनामैतत्। सुखं यथा भवति तथा वहन्त्विति शेषः। शुनाख्यो वाय्विन्द्रयोर् अन्यतमः सुखकृद् देवः। सा.। सुखम् - दया.।

*मनुष्य* - **नरः**। कीनाशाः नरः - वे.। नेतारो मनुष्याः कर्षकाः - सा.। दया.।

*बैल* - **वाहाः**। बलीवर्दाः कृषन्तु - वे.। सा.।

*रस्सियां बाँधी जाएं* - **वरत्राः बध्यन्ताम्**। वरत्रा वरणेन त्रायमाणाः प्रग्रहा बध्यन्ताम् - सा.।

रश्मयः बध्यन्ताम् - दया.। may the traces bind - W. be the traces bound - G.

*प्रतोद को* - **अष्ट्राम्।** अस्त्राम्।। प्रतोदम् - सा.। कृषिसाधनावयवम् - दया.।

*उठा तू* - **उत् इङ्गय।** उत् इङ्गय इति द्विकर्मकः - वे.। प्रेरय - सा.। उद् गमय - दया.। wield the goad - W. may he ply the goad - G.

**शुनासीराव् इमां वाचं जुषेथां यद् दिवि चक्रथुः पयः। तेनेमाम् उप सिञ्चतम्।। ५।।**

शुनासीरौ। इमाम्। वाचम्। जुषेथाम्। यत्। दिवि। चक्रथुः। पयः। तेन। इमाम्। उप। सिञ्चतम्।। ५।।

*हे हल और हलमुख!, इस वाणी का सेवन करो तुम दोनों,*

*जिसको आकाश में, उत्पन्न करते हो तुम जल को।*

*उससे इस (पृथिवी को), निकट से सींचो तुम।। ५।।*

हे वायु और आदित्य तुम दोनों मेरी इस स्तुतिरूपी वाणी को स्वीकार करो। तुम आकाश में परस्पर सहयोग से जिस जल को उत्पन्न करते हो, तुम उससे इस पृथिवी को भली प्रकार सींचो, जिससे यह पृथिवी ओषधियों और वनस्पतियों से हरी-भरी और सुख देने वाली हो जाए।

टि. *हे हल और हलमुख* - **शुनासीरौ।** इन्द्रः सुखरूपेण परिणमति, वायुः सीररूपो भवति। हे शुनासीरौ। वे.। द्युदेवः शुनदेवतेति। अतः शुन इन्द्रः सीरो वायुः। शुनो वायुः शु एत्यन्तरिक्षे सीर आदित्यः सरणात्। (नि. ९.४०) इति यास्कः। हे शुनासीरौ। सा.। क्षेत्रपतिभृत्यौ - दया.। in ordinary acceptation Śunasīra is a name of Indra - W. Professor Roth conjectures that the words mean here ploughshare and plough. Professor Grassman translates ' Pflug unt Lenker', 'plough and ploughman' - G. O landlords and farmers - Satya.

*जल को* - **पयः।** उदकम् - वे.। सा.। with water - W. with the milk - G. milk - Fra.

" the spiritual life as a kind of cultivation is often compared to agriculture.It is the organic harmonisation of our nature by the auspiciousness of our inner being." Fra.

**अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा।**

**यथा नः सुभगाऽससि यथा नः सुफलाससि।। ६।।**

अर्वाची। सुऽभगे। भव। सीते। वन्दामहे। त्वा।

यथा। नः। सुऽभगा। अससि। यथा। नः। सुऽफला। अससि।। ६।।

*हमारी ओर आने वाली, हे उत्तम ऐश्वर्यों वाली, हो जा तू,*

*हे सीते!, हम वन्दना करते हैं तेरी।*

*जिससे हमें उत्तम ऐश्वर्यों को देने वाली हो जाए तू,*

*जिससे हमें उत्तम फलों को देने वाली हो जाए तू।। ६।।*

सीता खेत में हल चलाने से खेत में बनने वाली वह गहरी लकीर है, जिसके अन्दर बोया जाकर बीज अङ्कुरित होकर उत्पन्न होता है। इसलिये वह उत्तम ऐश्वर्यों और फलों को देने वाली कही गई है। यहाँ उससे कामना की गई है, कि वह सदा हमारे अनुकूल रहे। हम उपासक रूपी कृषक जन सदा उसकी वन्दना करते हैं, ताकि वह हमें उत्तम ऐश्वर्य और उत्तम कर्मफल देने वाली हो जाए।

टि. *हमारी ओर आने वाली* - **अर्वाची**। अभिमुखी - वे.। अर्वागञ्चना - सा.। या अर्वाग् अधो अञ्चति - दया.। (be) present - W. come thou near - G.

*हे सीते* - **सीते**। हलादिकर्षणावयववायोनिर्मिता - दया.। Sītā is usually a furrow - W. the Furrow or Husbandry personified and addressed as a deity - G.

*हो जाए* - **असिस**। भवसि - वे.। सा.। असि। अत्र बहुलं छन्दसीति शपो लुगभावः। दया.।

**इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु।**
**सा नः पयस्वती दुहाम् उत्तरामुत्तरां समाम्।। ७।।**

इन्द्रः। सीताम्। नि। गृह्णातु। ताम्। पूषा। अनु। यच्छतु।
सा। नः। पयस्वती। दुहाम्। उत्तराम्ऽउत्तराम्। समाम्।। ७।।

*इन्द्र सीता को नीचे गहराई तक ले जाए,*
*उसको पूषा अनुकूलता से नियन्त्रण में रखे।*
*वह हमारे लिये दुधारू (बनकर), दुहे (दूध को),*
*प्रत्येक आने वाले संवत्सर में।। ७।।*

उस परम ऐश्वर्यशाली प्रभु की कृपा से खेत में हल से खुदने वाले खूड खूब गहराई तक खुदें। सबका पोषण करने वाले उस परमेश्वर की कृपा से हल से खेत में बनने वाले ये खूड सीधे बनें। इस तरह भली प्रकार की हुई खेत की जुताई एक दुधारू गौ की तरह प्रत्येक आने वाले वर्ष में हमें अधिक से अधिक अन्न प्रदान करे। हमारे द्वारा किये हुए कर्म हमें उत्तम फल देने वाले होवें।

टि. *सीता को* - **सीताम्**। सीताधारकाष्ठाम् - सा.। भूमिकर्षिकाम् - दया.। the furrow - G.

*नीचे गहराई तक ले जाए* - **नि गृह्णातु**। पृथिव्यां निगृह्णातु - वे.। may take hold of - W. may press down - G. Fra.

*अनुकूलता से नियन्त्रण में रखे* - **अनु यच्छतु**। अनु नियच्छतु - वे.। नियमयतु - सा.। अनु-गृह्णातु -दया.। may guide her - W. may guide its course aright - G.

*वह दुधारू (बनकर) दुहे* - **सा पयस्वती दुग्धाम्**। सा सीता रसवती दुग्धाम् अन्नम् - वे.। सा द्यौः उदकवती दुह्यात् - सा.। may she, well-stored with water, yield it as milk - W. may she as rich in milk, be drained for us - G.

*प्रत्येक आने वाले संवत्सर में* - **उत्तरामुत्तराम् समाम्**। उत्तरस्मिन् संवत्सरे तत उत्तरस्मिंश् चेति - वे.। उत्तरम् उत्तरं संवत्सरम् - सा.। पुनः पुनर् निर्मितां शुद्धाम् - दया.। year after year - W.

"Sita is the Goddess of the furrow. the Goddess of the plowed up Earth. She is the inner Earth of our psyche receptive to the Self." Fra.

**शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः।**
**शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनम् अस्मासु धत्तम्।। ८।। ९।।**

शुनम्। नः। फालाः। वि। कृषन्तु। भूमिम्। शुनम्। कीनाशाः। अभि। यन्तु। वाहैः।
शुनम्। पर्जन्यः। मधुना। पयःऽभिः। शुनासीरा। शुनम्। अस्मासु। धत्तम्।। ८।।

*सुख से हमारे लिये फाले बाहें भूमि को,*
*सुख से कृषक साथ-साथ चलें बैलों के।*
*सुख से मेघ (सींचे भूमि को) मधुर जलों से,*
*वायु और आदित्य सुख को हम पर स्थापित करें।। ६।।*

हलों के फाले सुख के साथ भूमि को जोतें। हल चलाते समय किसान लोग सुख से बैलों को किसी प्रकार का कष्ट दिये बिना उनके साथ-साथ प्रेम से चलते रहें। मेघ सदा मीठे, शुद्ध, पवित्र जलों से भूमि को सींचते रहें, ताकि फसलें खूब फलें फूलें। हे वायु और आदित्य तुम दोनों अपनी जलवर्षक क्रियाओं के द्वारा हमपर सुखों की वर्षा करते रहो।

टि. *सुख से* - **शुनम्।** सुखम् - वे.। दया.। शुनं यथा भवति तथा - सा.। happily - W. G. auspicious - Fra.

*फाले* - **फालाः।** सीराग्राणि - वे.। भूमिविदारककाष्ठाः - सा.। अयोनिर्मिता भूमिविलेखनार्थाः - दया.। the ploughshares - W. the shares - G.

*बाहें भूमि को* - **वि कृषन्तु भूमिम्।** भूमि को जोतें - सात. may break up our land - W. let turn up the ploughland - G.

*(सींचे भूमि को) मधुर जलों से* - **मधुना पयोभिः।** उदकेन सारैश् चौषधिभूतैः - वे.। मधुना मधुरैः पयोभिर् उदकैः सिञ्चतु - सा.। मधुना मधुरादिगुणेन पयोभिः उदकैः - दया.। may (water the earth) with sweet showers - W. with meath and milk - G.

## सूक्त ५८

ऋषिः - वामदेवो गौतमः। देवता - अग्निः सूर्यो वा आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर् वा। छन्दः - १-१० त्रिष्टुप्, ११ जगती। एकादशर्चं सूक्तम्।

**समुद्राद् ऊर्मिर् मधुमाँ उद् आरद् उपांशुना सम् अमृतत्वम् आनट्।**
**घृतस्य नाम गुह्यं यद् अस्ति जिह्वा देवानाम् अमृतस्य नाभिः।। १।।**

समुद्रात्। ऊर्मिः। मधुऽमान्। उत्। आरत्। उप। अंशुना। सम्। अमृतत्वम्। आनट्।
घृतस्य। नाम। गुह्यम्। यत्। अस्ति। जिह्वा। देवानाम्। अमृतस्य। नाभिः।। १।।

*समुद्र से ऊर्मि माधुर्य वाली ऊपर उठती है,*
*निकट स्थित सोम के साथ अमरता को प्राप्त होती है।*
*प्रकाशमय ज्ञान का नाम गोपनीय जो है,*
*(जिह्वा) है वह देवों की, अमृत की नाभि।। १।।*

हमारा हृदय अपनी गहराइयों के कारण एक समुद्र के समान है। उसमें अनेक प्रकार की विचारतरंगें उठती रहती हैं। इनमें से मधुरता से युक्त जो विचारतरंग भक्तिरसरूपी सोम के साथ मिल जाती है, वह अमरत्व को प्राप्त कराने वाली होती है। अर्थात् माधुर्य से युक्त उत्तम विचार जब भक्तिभाव से युक्त हो जाते हैं तो जीवात्मा की यात्रा अमरता की ओर होने लगती है। घृत अध्यात्म

में प्रकाशमय ज्ञान का प्रतीक है। इसका गुह्य अर्थात् बुद्धि में स्थित जो रूप है वह देवों अर्थात् इन्द्रियों के माध्यम से अथवा विद्वज्जनों की वाणी से प्रकट होता है। यही ज्ञान मोक्ष का आधार है।

टि. *समुद्र से ऊर्मि माधुर्य वाली ऊपर उठती है* – **समुद्रात् ऊर्मिः मधुमान् उत् आरत्।** समुद्रात् कश्चन उदकवान् ऊर्मिः अग्निर् आदित्यो वा उदगात् – वे.। संमोदन्ते ऽस्मिन् यजमाना इति वा समुद्रो ऽग्निः पार्थिवः अथवा समुद्द्रवन्त्यापो ऽस्माद् इति व्युत्पत्त्या वैद्युतो ऽग्निः। तस्माद् ऊर्मिर् ऊर्मिवद् उपर्युपर्युद्धूतो मधुमान् माधुर्योपेतफलसमूह उद्गच्छति। अथवा वैद्युताद् ऊर्म्युत्पादको रसः उद्भूतः। अथवा समुद्रात् समुद्द्रवणसाधनाद् आदित्याद् ऊर्मी रस उदकलक्षण उदारत्। आदित्याज् जायते वृष्टिर् इति श्रुतेः। यद्वा। समुद्राद् उक्तव्युत्पत्तेर् अन्तरिक्षाद् ऊर्मिर् उदकम् उदारत्। अथवा समुद्राद् उक्तलक्षणाद् गवाम् ऊधसः सकाशाद् ऊर्मिर् उज्ज्वलः क्षीररसः। एतद् घृतपक्षे ऽपि समानम्। यद्यपि घृतं क्षीराज् जायते तथापि तस्योधस उत्पत्तेर् एवम् उपचर्यते। शिष्टं वाक्यम् अग्न्यादिपञ्चसु पक्षेष्वपि समानम्। सा.। अन्तरिक्षात् जलसमूहः मधुरगुणः उत्कृष्टतया प्राप्नोति – दया.। समुद्र से मीठी लहर ऊपर उठी – सात. the sweet water swells up from the firmament - G. forth from the ocean sprang the wave of sweetness - G.

*सोम के साथ* – **अंशुना।** आत्मीयेन अंशुना – वे.। दीप्त्यांशेन – सा.। सूर्येण – दया.। by the (solar) ray - W. together with the stalk - G.

*प्रकाशमय ज्ञान का नाम गोपनीय* – **घृतस्य नाम गुह्यम्।** क्षरणशीलस्य गुह्यं नाम – वे.। घृतस्य दीप्तस्य क्षीरद्रव्यरूपस्य वा गुह्यं नाम गोपनीयं नमनसाधनम् – सा.। उदकस्य गुप्तम् – दया.। which is the secret name of clarified butter - W. G.

*जिह्वा (है वह) देवों की* – **जिह्वा देवानाम्।** देवानां जिह्वा भवति – वे.। देवानां जिह्वा आस्वादक-जिह्वास्थानीयम् – सा.। जिह्वा विदुषां दिव्यानां गुणानां वा – दया.।

*अमृत की नाभि* – **अमृतस्य नाभिः।** अग्नौ हि देवानां होमः आदित्ये वा अमृतत्वस्य च स्थानं भवतीति – वे.। अमृतस्य बन्धकम् – सा.। the navel of ambrosia - W. Amṛta's centre - G.

**वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः।**
**उप ब्रह्मा शृणवच् छस्यमानं चतुःशृङ्गो ऽवमीद् गौर एतम्।। २।।**

वयम्। नाम। प्र। ब्रवाम। घृतस्य। अस्मिन्। यज्ञे। धारयाम। नमःऽभिः।
उप। ब्रह्मा। शृणवत्। शस्यमानम्। चतुःशृङ्गः। अवमीत्। गौरः। एतम्।। २।।

*हम नाम का खूब बखान करें घृत के,*
*इस यज्ञ में धारण करें (उसे), नमस्कारों के साथ।*
*निकट से ब्रह्मा सुने (उसे), कथन किये जाते हुए को,*
*चार सींगों वाला उगलता है, वाणी का स्वामी इसको।। २।।*

हम उपासक जन प्रकाशमय ज्ञान के नाम का खूब बखान करें, क्योंकि इसी से हमारी यात्रा जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की ओर आरम्भ होती है। हम इसे अपने जीवनरूपी यज्ञ में नमस्कारों के साथ धारण करें। वेदज्ञान का जिज्ञासु उपदेश किये जाते हुए इस ज्ञान को ध्यान से सुने। चारों

वेदों के ज्ञान को अपने मस्तिष्क में धारण करने वाले, वाणी के स्वामी परमेश्वर ने ही इस प्रकाशमय ज्ञान को हमारे कल्याण के लिये अपने अन्दर से उगला है।

टि. *खूब बखान करें* - **प्र ब्रवाम**। स्तुमः - सा.। उपदिशेम - दया.। we celebrate - W. let us declare aloud - G.

*निकट से ब्रह्मा सुने* - **उप ब्रह्मा शृणवत्**। उप शृणोति महान् अग्निः - वे.। परिवृढो देवः उपशृणुयात् - सा.। उप चतुर्वेदवित् शृणुयात् - दया.।

*चार सींगों वाला* - **चतुःशृङ्गः**। चत्वारि शृङ्गाणि वेदचतुष्टयरूपाणि यस्य सः। आदित्याग्निपक्ष एवम्। इतरेष्वपि यास्कोक्तव्युत्पत्त्या शृङ्गशब्दो व्याख्येयः। सा.। चत्वारो वेदाः शृङ्गाणीव यस्य सः - दया.। the four-horned - G.

*उगलता है* - **अवमीत्**। वमति प्रकाशयति - वे.। उद्गिरति निर्वहतीत्यर्थः - सा.। उपदिशेत् - दया.। may perfect this rite - W. hath emitted - G.

*वाणी का स्वामी* - **गौरः**। अरुणवर्णस् तादृशो देवः - सा.। यो गवि सुशिक्षितायां वाचि रमते सः - दया.। the fair-complexioned deity - W. buffalo - G.

**च॒त्वारि॒ शृङ्गा॒ त्रयो॑ अस्य॒ पादा॒ द्वे शी॒र्षे स॒प्त हस्ता॑सो अस्य।**
**त्रिधा॑ ब॒द्धो वृ॑ष॒भो रो॑रवीति म॒हो दे॒वो मर्त्याँ॒ आ वि॑वेश।। ३।।**

च॒त्वारि॑। शृङ्गा॑। त्रयः॑। अ॒स्य॒। पादाः॑। द्वे इति॑। शी॒र्षे इति॑। स॒प्त। हस्ता॑सः। अ॒स्य॒।
त्रिधा॑। ब॒द्धः। वृ॒ष॒भः। रो॒र॒वी॒ति॒। म॒हः। दे॒वः। मर्त्या॑न्। आ। वि॒वे॒श॒।। ३।।

*चार सींग (हैं), तीन (हैं) इसके पाँव,*
*दो सिर (हैं), सात हाथ (हैं) इसके।*
*तीन स्थानों पर बँधा हुआ, वृषभ शब्द कर रहा है,*
*महान् देव मनुष्यों में, प्रवेश कर गया है।। ३।।*

चार वेद इस परमेश्वर के चार सींग हैं। ज्ञान, कर्म और उपासना ये तीन इसके तीन पाँव हैं। अभ्युदय और निःश्रेयस इसके दो सिर हैं। भिन्न-भिन्न वर्णों वाली सात आदित्यरश्मियां इसके सात हाथ हैं। सब पर सुखों की वर्षा करने वाला यह जगदीश श्रद्धा, पुरुषार्थ और योगाभ्यास, इन तीन से बाँधा जाकर अर्थात् वश में किया जाकर अपने उपासकों को वेदवाणी का उपदेश करता है। सबका पूज्य देवों का देव यह महादेव सब प्राणियों के हृदय में प्रवेश करके निवास कर रहा है।

टि. *चार सींग* - **चत्वारि शृङ्गा**। चत्वारि शृङ्गेति वेदा वा एत उक्ताः - या. (नि. १३.७)। तस्य गौरस्य चत्वारि शृङ्गाणि भवन्ति - वे.। अस्य यज्ञात्मकस्याग्नेश् चत्वारि शृङ्गा चत्वारो वेदाः शृङ्गस्थानीयाः। सूर्यपक्षे चत्वारि शृङ्गा चतस्रो दिशः। सा.। चत्वारो वेदा शृङ्गाणीव - दया.।

*तीन (हैं) पाँव इसके* - **त्रयः अस्य पादाः**। सवनानि त्रीणि - या. (तत्रैव)। गौरस्य त्रयः पादाः - वे.। पादाः सवनानि त्रीण्यस्य पादाः। प्रवृत्तिसाधनत्वात् पादा इत्युच्यन्ते। सूर्यपक्षे त्रयो वेदाः पादस्थानीया भवन्ति। सा.। कर्मोपासनाज्ञानानि अस्य धर्मव्यवहारस्य पादाः पत्तव्याः - दया.।

*दो सिर* - **द्वे शीर्षे**। प्रापणीयोदयनीये - या. (तत्रैव)। ब्रह्मौदनं प्रवर्ग्यश् च। इष्टिसोमप्राधान्येनेदम्

उक्तम्। सूर्यपक्ष अहश् च रात्रिश् चेति द्वो शिरसी। सा.। अभ्युदयनिःश्रेयसे शिरसी इव - दया.।

*सात हाथ* - **सप्त हस्तासः।** सप्त छन्दांसि - या. (तत्रैव)। सप्त छन्दांसि। सूर्यपक्षे सप्त रश्मयः षड् विलक्षणा ऋतव एकः साधारण इति वा सप्त हस्ता भवन्ति। सा.। पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि वा कर्मेन्द्रियाणि अन्तःकरणम् आत्मा च हस्तवद् वर्तमानाः - दया.।

*तीन स्थानों पर बँधा हुआ* - **त्रिधा बद्धः।** त्रेधा बद्धो मन्त्रब्राह्मणकल्पैः - या. (तत्रैव)। मन्त्रकल्पब्राह्मणैस् त्रिप्रकारं बद्धः। सूर्यपक्षे ग्रीष्मवर्षाहेमन्ताख्यैस् त्रिभिस् त्रेधा बद्धो वा। सा.। त्रिधा श्रद्धापौरुषयोगाभ्यासैः बद्धः - दया.।

*वृषभ शब्द कर रहा है* - **वृषभः रोरवीति।** रोरवणम् अस्य सवनक्रमेण ऋग्भिर् यजुर्भिः सामभिर् यद् एनम् ऋग्भिः शंसन्ति यजुर्भिर् यजन्ति सामभिः स्तुवन्ति। या. (तत्रैव)। वृषभः शब्दं करोति - वे.। फलानां वर्षिता भृशं शब्दायते। सूर्यपक्षे शब्दं करोति वृष्ट्यादिद्वारा। सा.। वृषभः सुखानां वर्षणात् भृशम् उपदिशति - दया.। showerer (of benefits) roars aloud - W.

**त्रिधा॑ हि॒तं प॒णिभि॑र् गु॒ह्यमा॑नं॒ गवि॑ दे॒वासो॑ घृ॒तम् अन्व॑विन्दन्।**
**इन्द्र॒ एकं॒ सूर्य॒ एकं॑ जजान वे॒नाद् एकं॑ स्व॒धया॒ निष्ट॑तक्षुः।। ४।।**

त्रिधा॑। हि॒तम्। प॒णिऽभि॑ः। गु॒ह्यमा॑नम्। गवि॑। दे॒वासः॑। घृ॒तम्। अनु॑। अ॒वि॒न्द॒न्।
इन्द्रः॑। एक॑म्। सूर्यः॑। एक॑म्। ज॒जा॒न॒। वे॒नात्। एक॑म्। स्व॒धया॑। निः। त॒त॒क्षुः।। ४।।

*तीन प्रकार से रखे हुए को, पणियों के द्वारा छुपाए हुए को,*
*(वाणीरूप) गौ में देवों ने, घृत को अनुकूलता से ढूँढ निकाला।*
*इन्द्र ने एक को, सूर्य ने एक को, उत्पन्न किया,*
*कमनीय (अग्नि) से एक को, हविरूप अन्न से निर्मित किया।। ४।।*

घृत शब्द क्षरण और दीप्ति अर्थ वाले घृ धातु से सिद्ध होता है। अतः यहां इसका अर्थ है क्षरित होने वाला जल, दीप्तिमान् प्रकाश और प्रदीप्त ज्ञानरश्मि। इसलिये कहा गया है कि घृत इस जगत् में जल, प्रकाश और ज्ञानरश्मि इन तीन रूपों में स्थित है। पणि शब्द का अर्थ है अदाता, कंजूस जन। अतः पणि आसुरी शक्ति के प्रतीक हैं। ये आसुरी शक्तियां जल, प्रकाश और ज्ञान के रूप में विद्यमान इस घृत को अपने अधिकार में करके किसी अज्ञात स्थान में छुपा देती हैं। गौ वाणी का प्रतीक है। चिन्तन के पश्चात् ज्ञानी जन इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि इन तीनों को वेदवाणी में अर्थात् ज्ञान के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने यजमान बनकर निष्काम भाव से कमनीय अग्नि में आहुतियां डालीं। अग्नि से वे आहुतियां पहले इन्द्र अर्थात् वायु को और फिर सूर्य को प्राप्त हुईं, जिससे जल, प्रकाश और ज्ञानरश्मियों का प्रादुर्भाव हुआ। इस प्रकार ज्ञानी जनों ने इन सुखसाधनों को आसुरी शक्तियों से छीनकर पुनः इनका सर्वहितार्थ प्रजाओं में प्रचार-प्रसार किया।

टि. *तीन प्रकार से रखे हुए को* - **त्रिधा हितम्।** क्षीरदध्याज्यरूपेण त्रिप्रकारं निहितम् - सा.। त्रिभिः प्रकारैः स्थितम् - दया.।

*गौ में* - **गवि।** गोषु - सा.। वाचि - दया.। within the Cow - G.

*घृत को* - **घृतम्।** उदकम् - वे.। दीप्तं रसरूपं वा द्रव्यम् - सा.। घृतम् इवानन्दप्रदं विज्ञानम्

– दया.। that oil - G.

*कमनीय (अग्नि) से* – **वेनात्।** अग्नेः – वे.। कान्तिमतो ऽग्नेः – सा.। कमनीयात् परमात्मनः सकाशात् – दया.। from the resplendent (Agni) - W. from Vena - G.

*हविरूप अन्न से निर्मित किया* – **स्वधया निः ततक्षुः।** हविषा निः कृण्वन्ति – वे.। स्वधयान्नेन निमित्तेन द्रव्येण वा साधनेन निष्टतक्षुः निरपादयन् – सा.। स्वधया स्वकीयया घृतया प्रज्ञया नितरां विस्तृण्वन्ति – दया.। fabricated for the sake of the oblation - W. formed by their own power - G.

**एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्राच् छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।**
**घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्।। ५।। १०।।**

एताः। अर्षन्ति। हृद्यात्। समुद्रात्। शतऽव्रजाः। रिपुणा। न। अवऽचक्षे।
घृतस्य। धाराः। अभि। चाकशीमि। हिरण्ययः। वेतसः। मध्ये। आसाम्।। ५।।

*(धाराएं) ये बह रही हैं, हृदयहारी समुद्र से,*
*सैंकड़ों प्रवाहों वाली, शत्रु से न देखी जाती हुईं।*
*घृत की (इन) धाराओं को, सर्वतः देख रहा हूँ मैं,*
*सुनहरा बैंत (स्थित है), मध्य में इनके।। ५।।*

सैंकड़ों प्रवाहों वाली, सुखों को देने वाली ये धाराएं हृदयहारी सुखसागर उस परमेश्वर के अन्दर से प्रादुर्भूत होकर ही प्रवाहमान हो रही हैं। उस दण्डधारी प्रभु के भय के कारण हिंसक आसुरी शक्तियां अपनी कुदृष्टियों को इनकी ओर नहीं उठा सकतीं, इनपर अपना एकाधिकार नहीं जमा सकतीं। इसके विपरीत मैं परमेश्वर का भक्त इन सुखधाराओं का भली प्रकार दर्शन कर रहा हूँ, प्रभु की इन कृपादृष्टियों का सम्यक् अनुभव कर रहा हूँ, इनका आनन्द प्राप्त कर रहा हूँ। वह ज्योतिर्मय जगदीश्वर इन सुखधाराओं के अन्दर स्वयं इस प्रकार स्थित है, जिस प्रकार कोई सुनहरा बैंत नदी के प्रवाह के अन्दर खड़ा होता है।

टि. *बह रही हैं* – **अर्षन्ति।** गच्छन्ति – वे.। अधः पतन्ति – सा.। प्राप्नुवन्ति – दया.।

*हृदयहारी समुद्र से* – **हृद्यात् समुद्रात्।** हृद्यात् अन्तरिक्षात् – वे.। हृदयस्य प्रियाद् अन्तरिक्षात् – दया.। from the heart-delighting firmament - W. from inmost reservoir - G.

*सैंकड़ों प्रवाहों वाली* – **शतव्रजाः।** शतसङ्घाः – वे.। अपरिमितगतयः – सा.। हृदयङ्गमाद् अन्तरिक्षात् – सा.। अपरिमितगतयः – दया.। hundred-channelled - W. in countless channels - G.

*शत्रु से न देखी जाती हुईं* – **रिपुणा न अवचक्षे।** शत्रुणा न अवख्यातव्याः – वे.। दया.। जलमोकप्रतिबन्धकारिणा शत्रुणा वृत्रेण न अवदर्शनाय यथादृष्टं भवति तथार्षन्ति – सा.। unobserved by the hostile (cloud) - W. the foe beholds not - G.

*सर्वतः देख रहा हूँ मैं* – **अभि चाकशीमि।** अभि पश्यामि – वे.। सा.। प्रकाशयामि – दया.।

*सुनहरा बैंत* – **हिरण्ययः वेतसः।** हिरण्मयः कश्चित् वेतसः तिष्ठति – वे.। हिरण्मयो ऽप्सम्भवो ऽग्निर् वैद्युत आसाम् अपां मध्ये वर्तत इति शेषः – सा.। तेजोमयः सुवर्णमयो वा कमनीयः – दया.। the Golden Reed - G.

**स॒म्यक् स्र॑वन्ति स॒रितो॒ न धेना॑ अ॒न्तर् हृ॒दा मन॑सा पू॒यमा॑नाः।**
**ए॒ते अ॑र्षन्त्यू॒र्मयो॑ घृ॒तस्य॑ मृ॒गा इ॑व क्षि॒प॒णोर् ईष॑माणाः।। ६।।**

स॒म्यक्। स्र॒व॒न्ति॒। स॒रितः॑। न। धेनाः॑। अ॒न्तः। हृ॒दा। मन॑सा। पू॒यमा॑नाः।
ए॒ते। अ॒र्ष॒न्ति॒। ऊ॒र्मयः॑। घृ॒तस्य॑। मृ॒गाःऽइ॑व। क्षि॒प॒णोः। ईष॑माणाः।। ६।।

*सम्यक् बह रही हैं नदियों की तरह वाणियां,*
*अन्तर् में हृदय से मन से पवित्र की जाती हुई।*
*ये गमन कर रही हैं तरंगें घृत की,*
*वन्य पशुओं की तरह, वाणवर्षक व्याध से (डरकर) भागे हुओं की।। ६।।*

उपासकों के अन्तस्तल से निकली हुई, हृदय और मन से पवित्र की जाती हुई वेदवाणियां, वेदमन्त्र, स्तुतियां उस प्रभु की ओर इस प्रकार बह रही हैं, जिस प्रकार नदियां अपने स्वामी समुद्र से मिलने के लिये उसकी ओर बहती हैं। सुखों की वर्षा और दीप्तियों का विस्तार करने वाली ये ऊर्मियां अपने लक्ष्यभूत उस परमेश्वर की ओर इस प्रकार गतिमान् हो रही हैं, जिस प्रकार बाणों की वर्षा करने वाले व्याध के भय से वन्य पशु अपने स्थानों की ओर दौड़ते हैं।

टि. *वाणियां* - **धेनाः**। वाचः - वे.। प्रीणयित्र्यः (नद्य इव) - सा.। धेनाः विद्यायुक्ता वाचः - दया.। (like) pleasing (rivers) - W. our libations - G.

*अन्तर् में हृदय से मन से* - **अन्तः हृदा मनसा**। अन्तः अग्निना मनसा हृदयेन च - वे.। अन्तर्हृदा मनसा हृदयमध्यगतेन चित्तेन। भावनासचिवेनेति यावत्। सा.। अन्तःस्थितेनात्मना शुद्धेन अन्तःकरणेन - दया.। by the mind seated in the heart - W. in inmost heart and spirit - G.

*गमन कर रही हैं* -**अर्षन्ति**। गच्छन्ति - वे.। दया.। गच्छन्ति, जुह्वाः सकाशाद् अग्नेर् उपरि पतन्ति - सा.। descend (upon the fire)) - W. pour swiftly downward - G.

*वाणवर्षक व्याध से (डरकर) भागे हुओं की* - **क्षिपणोः ईषमाणाः**। क्षेप्तुर् व्याधात् भयात् पलायमानाः - वे.। क्षेपकाद् व्याधात् पलायमाना मृगा इव। ते यथा कक्षं प्रविशन्ति तद्वत्। सा.। प्रेषकात् गच्छन्तः - दया.। flying from the hunter - W. that fly before the bowman - G.

**सिन्धो॑रिव प्राध्व॒ने शू॑घ॒नासो॒ वात॑प्रमियः पतयन्ति य॒ह्वाः।**
**घृ॒तस्य॒ धारा॑ अ॒रु॒षो न वा॒जी काष्ठा॑ भि॒न्दन्नू॒र्मिभि॒ः पिन्व॑मानः।। ७।।**

सिन्धोः॑ऽइव। प्र॒ऽअ॒ध्व॒ने। शू॒घ॒नासः॑। वात॑ऽप्रमियः। प॒त॒य॒न्ति॒। य॒ह्वाः।
घृ॒तस्य॑। धाराः॑। अ॒रु॒षः। न। वा॒जी। काष्ठाः॑। भि॒न्दन्। ऊ॒र्मिऽभिः॑। पिन्व॑मानः।। ७।।

*नदी के जिस प्रकार ढलान वाले मार्ग पर, (जलधाराएं) शीघ्र गति वाली,*
*वायु के समान उत्कृष्ट वेग वाली, गमन करती हैं महान्।*
*घृत की धाराएं, आरोचमान की तरह बलवान् सूर्य की,*
*दिशाओं का भेदन करते हुए की, तरंगों से परिपुष्ट की।। ७।।*

नदी की तीव्र गति वाली जलधाराएं ढलान वाले मार्ग में जिस प्रकार बड़ी तेजी से आगे बढ़ती हैं, और आरोचमान, बलवान् सूर्य जिस प्रकार अपनी रश्मि रूपी तरंगों से दिशाओं का भेदन करता

हुआ और पुष्ट होता हुआ बड़ी तेजी से आगे बढ़ता है, उसी प्रकार वायु के समान उत्कृष्ट वेग वाली, शान्ति की वर्षा करने वाली और दीप्तियों से युक्त सुख की धाराएं सब दिशाओं का भेदन करती हुई और पुष्ट होती हुई समान रूप से अति शीघ्र सब प्राणियों तक पहुँचती हैं।

टि. *ढलान वाले मार्ग पर* - **प्राध्वने**। अध्वनः प्रारम्भे पतनदेशे - वे.। प्रवणवति देशे - सा.। प्रकृष्टतया गन्तव्याय मार्गाय - दया.। down a declivity - W. down the rapids - G.

*शीघ्र गति वाली* - **शूघनासः**। शीघ्रं गन्त्र्यः - वे.। दया.। आशुगन्त्र्यः। आशु इति च शु इति च क्षिप्रनामनी भवत इति निरुक्तम् (६.१)। सा.। rapid - W.

*वायु के समान उत्कृष्ट वेग वाली* - **वातप्रमियः**। पृथिव्यां वातवेगेन इतस्ततः प्रक्षिप्यमाणाः - वे.। वातप्रमियो वायुवत्प्रकृष्टवेगाः - सा.। या वातं वायुं प्रमिन्वन्ति ताः - दया.। swift as the wind - W. swifter than the wind - G.

*आरोचमान की तरह बलवान् सूर्य की* - **अरुषः न वाजी**। आरोचमानः इव अश्वः - वे.। आरोचमानो गर्वेण गमनशीलो ऽश्व इव - सा.। अरुणरूप इवाश्वः - दया.। like a high-spirited steed - W. like a red courser - G.

*दिशाओं का भेदन करते हुए (की तरह))* - **काष्ठाः भिन्दन्**। दिशो मेघैर् अधिष्ठिताः भिन्दन् - वे.। मर्यादाभूतान् परिधीन् भिन्दन् - सा.। दिश इव तटीः विदृणन्ति - दया.। breaking through the confining banks - W. bursting through the fences - G.

*परिपुष्ट (की तरह)* - **पिन्वमानः**। वर्धमानः - सा.। प्रसादयन् - दया.। swelling - G.

**अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।**
**घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः।। ८।।**

अभि। प्रवन्त। समनाऽइव। योषाः। कल्याण्यः। स्मयमानासः। अग्निम्।
घृतस्य। धाराः। सम्ऽइधः। नसन्त। ताः। जुषाणः। हर्यति। जातऽवेदाः।। ८।।

*प्रमुखता से गति करती हैं, समान मनों वालियों की तरह स्त्रियों की,*
*मंगल रूप वालियों की, मुस्काने वालियों की, अग्नि के पास।*
*घृत की धाराएं सम्यक् प्रकाशमान, पहुँचती हैं (पास उसके),*
*उनकी, समान प्रीति वाला, कामना करता है (वह) जातप्रज्ञ।। ८।।*

जिस प्रकार अपने पतियों के साथ समान विचारों वाली, पवित्र रूप यौवन आदि गुणों से सम्पन्न, अपने मुखों पर मुस्कान को लिये हुए पत्नियां अपने पतियों से मिलती हैं, उसी प्रकार सेचन और दीप्ति आदि गुणों से युक्त, सम्यक् प्रकाशमान, ज्ञान और प्रकाश की धाराएं मुख्य रूप से उस अग्रणी परमेश्वर को ही प्राप्त होती हैं, क्योंकि वही उनका उद्गमस्थान है। सभी उत्पन्न पदार्थों को जानने वाला वह सर्वज्ञ परम पिता भी समान प्रीति वाला होकर उनकी कामना करता है।

टि. *प्रमुखता से गति करती हैं* - **अभि प्रवन्त**। अभिनमन्त - या. (नि. ७.१७)। यद्यप्ययं प्रवतिर् गतिकर्मसु पठितः (निघ. २.१४.२४) तथापीहोपसर्गबलान् नमनार्थः सम्पद्यते (दुर्ग.)। अभिनमयन्ति। निमग्नं कुर्वन्ति। सा.। गच्छन्तु - दया.। incline - W. G.

*समान मनों वालियों की तरह* – **समनाऽइव**। समनस इव। समनं समननाद् वा संमाननाद् वा – या. (नि. ७.१७)। समनसः समानमनस्काः (दुर्ग.)। सा.। समानमनस्का पतिव्रतेव – दया.। devoted wives - W.

*मंगल रूप वालियों की (तरह)* – **कल्याण्यः**। रूपयौवनादिगुणसम्पन्ना भद्ररूपा – दुर्ग. (नि. ७. १७)। भद्ररूपाः – सा.। कल्याणकारिण्यः – दया.। auspicious - W. fair to look on - G.

*सम्यक् प्रकाशमान* – **समिधः**। समिन्धयन्त्यः सम्यग् दीपयन्त्यः – दुर्ग. (तत्रैव)। सा.। काष्ठानि – दया.। like fuel - W. the fuel - G.

*पहुँचती हैं* – **नसन्त**। नसतिर् आप्नोतिकर्मा वा नमतिकर्मा वा – या. (तत्रैव)। व्याप्नुवन्तीत्यर्थः (दुर्ग.)। व्याप्नुवन्ति – सा.। प्राप्नुवन्ति – दया.। attain - G.

*कामना करता है* – **हर्यति**। अभिकामयते। 'हर्य गतिकान्त्योः'। पुनः पुनः प्रेप्सतीत्यर्थः। (दुर्ग.)। accepts - W. receives - G.

**क॒न्या॑इव वह॒तुम् एत॒वा उ॑ अ॒ञ्ज्य॑ञ्जा॒ना अ॒भि चा॑कशीमि।**
**यत्र॒ सोम॑ः सू॒यते॒ यत्र॑ य॒ज्ञो घृ॒तस्य॒ धारा॑ अ॒भि तत् प॑वन्ते॥ ९॥**

क॒न्या॑ःइव। व॒ह॒तुम्। ए॒त॒वै। ॐ इति॑। अ॒ञ्जि। अ॒ञ्जा॒नाः। अ॒भि। चा॒क॒शी॒मि॒।
यत्र॑। सोम॑ः। सू॒यते॑। यत्र॑। य॒ज्ञः। घृ॒तस्य॑। धारा॑ः। अ॒भि। तत्। प॒व॒न्ते॒॥ ९॥

*कन्याएं जिस प्रकार बारात में जाने के लिये निश्चय से,*
*प्रसाधनों से सजती हैं, सर्वतः देख रहा हूँ मैं (उनको)।*
*जहाँ सोम सवन किया जाता है, (जहाँ यजा जाता है) यज्ञ,*
*घृत की धाराएं, ओर उस (स्थान) की, बहती जाती हैं॥ ९॥*

मैं भली प्रकार यह अनुभव कर रहा हूँ, कि जहाँ सोम का सवन होता है और जहाँ यज्ञ आदि परहितार्थ शुभ कर्मों का सम्पादन होता है, उस स्थान पर ज्ञान, प्रकाश, सुख, शान्ति आदि की ये धाराएं इस प्रकार सज-धज कर जाती हैं, जिस प्रकार कन्याएं अपने शरीर को तैल तथा अन्य सुगन्धित पदार्थों से समक्त करके और सज-धज कर वरयात्रा में सम्मिलित होती हैं। जहाँ सोमसवन और यज्ञ आदि शुभ कर्म सम्पन्न होते हैं, वहाँ ज्ञान-प्रकाश और सुख-समृद्धि का साम्राज्य होता है।

टि. *बारात में जाने के लिये* – **वहतुम् एतवै**। भर्तारम् एतुम् – वे.। वहतुम् उद्‌वाहं प्राप्तुं एतवा उ एतुं पतिं गन्तुम् – सा.। वोढारं प्राप्तुम् – दया.। विवाह के लिये जाने वाली – सात.। to go to the bridegroom - W. to join the bridal feast - G.

*प्रसाधनों से सजती हैं* – **अञ्जि अञ्जानाः**। भर्तारम् एतुं शरीरम् अलङ्कुर्वाणाः –वे.। अञ्ज्यञ्जकम् आभरणं तेजो वाञ्जाना व्यञ्जयन्त्यः – सा.। अञ्जि व्यक्तं सुलक्षणम् अञ्जाना प्रकटयन्त्यः – दया.। अलंकार आदि धारण करके अपना तेज प्रकट करती हैं – सात.। decorating themselves with unguents - W. deck themselves with gay adornment - G.

*ओर उस (स्थान) की बहती जाती हैं* – **अभि तत् पवन्ते**। तत्र अभि गच्छन्ति – वे.। तद् यज्ञम् अभिलक्ष्य गच्छन्ति – सा.। flow - W. thither are running - G.

**अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यम् आजिम् अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।**
**इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते।। १०।।**

अभि। अर्षत। सुऽस्तुतिम्। गव्यम्। आजिम्। अस्मासु। भद्रा। द्रविणानि। धत्त।
इमम्। यज्ञम्। नयत। देवता। नः। घृतस्य। धाराः। मधुऽमत्। पवन्ते।। १०।।

*प्राप्त करो तुम शोभन स्तुति को, गोविषयक प्रतिस्पर्द्धा में (पहुँचो तुम),*
*हमें कल्याण करने वालों को धनों को, प्रदान करो तुम।*
*इस यज्ञ को ले चलो तुम, देवताओं के पास हमारे,*
*घृत की धाराएं, मधुरता के साथ बह रही हैं (जहाँ)।। १०।।*

हे दान, प्रकाश आदि दिव्य गुणों से युक्त ज्ञानी महानुभावो! तुम हमारी श्रेष्ठ स्तुतियों और प्रशंसाओं को स्वीकार करो। यदि किसी स्थान पर किसी ज्ञानगोष्ठी में वाणी अथवा ज्ञानसम्बन्धी चर्चा या प्रतिस्पर्द्धा चल रही हो, तो तुम वहाँ पहुँचकर उसमें अवश्य भाग लो और सत्य और असत्य का निर्णय करने में विद्वानों की सहायता करो। तुम उत्तम निष्कर्षों पर पहुँचकर हमें अपने ज्ञानरूपी उत्तम धनों से मालामाल कर दो। हम जिस अन्तर्यज्ञ का सम्पादन प्रतिक्षण कर रहे हैं, तुम कृपा करके उसे देवताओं तक पहुँचाओ। इससे यज्ञ के प्रति हमारा उत्साह बढ़ेगा। जहाँ सोमसवन और यज्ञ आदि शुभ कर्मों का सम्पादन होता है, वहाँ निरन्तर ज्ञान और सुख-शान्ति की धाराएं बहती रहती हैं।

टि. *प्राप्त करो तुम* – **अभि अर्षत।** अभि गच्छत – वे.। सा.। प्राप्नुत – दया.। address - W. send (to our eulogy) - G.

*गोविषयक प्रतिस्पर्द्धा में (पहुँचो तुम)* – **गव्यम् आजिम्।** गोहितं गमनशीलम् अग्निम् – वे.। गोसमूहरूपं गोसम्बन्धिनं वा आजिम् संघातम्। अत्र गोशब्देनोदकानि गावो वोच्यन्ते। तत्संघातोऽभिप्रेतः। सा.। गवे वाचे हितं व्यवहारं प्रसिद्धम् – दया.। (the source) of herds of cattle - W. a herd of cattle - G.

*देवताओं के पास* – **देवता।** देवतासु – वे.। अत्र यष्टव्यान् देवान् – सा.। देव एव देवता विद्वान् एव। देवात् तल् इति स्वार्थे तल् जाताव् एकवचनं च। दया.। to the gods - W. G.

**धामन् ते विश्वं भुवनम् अधि श्रितम्**
**अन्तः समुद्रे हृद्य१न्तर् आयुषि।**
**अपाम् अनीके समिथे य आभृतस्**
**तम् अश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्।। ११।। ११।। ५।।**

धामन्। ते। विश्वम्। भुवनम्। अधि। श्रितम्। अन्तर् इति। समुद्रे। हृदि। अन्तः। आयुषि।
अपाम्। अनीके। सम्ऽइथे। यः। आऽभृतः। तम्। अश्याम। मधुऽमन्तम्। ते। ऊर्मिम्।। ११।।

*तेज में तेरे, समस्त भुवन आश्रय लिये हुए है,*
*अन्दर अन्तरिक्ष के (व्याप्त है तू), हृदय के अन्दर, (अन्दर) जीवन के।*
*जलों के संघात में, समिधा में जो सर्वत्र परिपूर्ण है,*
*उसका भोग करें हम, माधुर्ययुक्त का, तेरी आनन्दलहर का।। ११।।*

हे अग्नि के स्वभाव वाले परमेश्वर! यह समस्त जगत् तेरे तेज का आश्रय लेकर स्थित है। तू अन्तरिक्ष के अन्दर वैद्युताग्नि के रूप में व्याप्त है, हृदय के अन्दर तू वैश्वानर अग्नि के रूप में व्याप्त है और प्राणियों के जीवन में तू प्राणाग्नि के रूप में व्याप्त है। वह तेरा आनन्द जो जलों के संघात में रस के रूप में व्याप्त है, जो समिधाओं में पवित्र अग्नि के रूप में व्याप्त है अथवा धर्मयुद्ध में शौर्याग्नि के रूप में विद्यमान है, हम उस आनन्दतरंग का सदा उपभोग करें।

टि. *तेज में तेरे आश्रय लिये* हुए है - **धामन् ते अधि श्रितम्।** हे अग्ने! सूर्य! वा तव तेजसि विश्वं भूतजातम् अधि श्रितम् - वे.। ते त्वदीये धामन् धामनि तेजःस्थाने विश्वं भुवनम् अधि श्रितम् - सा.। आधारे तव सर्वं जगत् उपरि स्थितम् - दया.। finds an asylum in thine effulgence - W. depends upon thy power and might - G.

*अन्दर अन्तरिक्ष के* - **अन्तः समुद्रे।** अन्तरिक्षस्य अन्तः वर्तसे - वे.। अन्तः समुद्रे वडवाग्नित्वेन - सा.। अन्तरिक्षे - दया.। in the ocean - W. G.

*अन्दर जीवन के* - **अन्तः आयुषि।** मनुष्ये च - वे.। अन्ने सर्वप्राण्याहारत्वेन । यद्वा। आयुषीत्येतद् धृद्विशेषणम्। जठराग्निना खल्वायुर् वर्धते। सा.। जीवननिमित्ते प्राणे - दया.। in the life (of living beings) - W. within all life - G.

*जलों के संघात में* - **अपाम् अनीके।** अपां सङ्घे - वे.। उदकसंस्ताये वैद्युताग्नित्वेन - सा.। in the assemblage of the waters - W. o'er the surface of the floods - G.

*समिधा में* - **समिथे।** सङ्गते - वे.। संग्रामे च शौर्याग्निरूपेण - सा.। प्राणानां सैन्ये - दया.।

इति भागीरथीशङ्करसूनुना कम्बोजान्वयेन विदुषां विधेयेन जियालालेन
पदानुक्रमशः कृतेन हिन्दीभाषानुवादेन, शोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यया, प्राचीनाचार्याणाम्
अर्वाचीनानां विदुषां च भाष्येभ्यो ऽनुवादेभ्यश् च समाहृताभिः टिप्पणीभिश् च समन्वितायाम्
ऋग्वेदसंहितायाम् अद्य विक्रमस्य २०६२तमे संवत्सरे चैत्रमासे शुक्लपक्षे (राम)नवम्यां
(ख्रीस्तस्य २००५तमे ऽब्दे, अप्रेलमासस्य १८ तारिकायाम्), सोमवासरे,
चतुर्थम् इदं मण्डलं समाप्तम्।

अथ

# ऋग्वेदसंहिता

## पञ्चमं मण्डलम्

### सूक्त १

ऋषिः - बुधगविष्ठिराव् आत्रेयौ। देवता - अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। द्वादशर्चं सूक्तम्।

**अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीम् उषासम्।**
**यह्वाइव प्र वयाम् उज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकम् अच्छ।। १।।**

अबोधि। अग्निः। सम्ऽइधा। जनानाम्। प्रति। धेनुम्ऽइव। आऽयतीम्। उषसम्।
यह्वाःऽइव। प्र। वयाम्। उत्ऽजिहानाः। प्र। भानवः। सिस्रते। नाकम्। अच्छ।। १।।

*जगाया जाता है अग्नि समिधाओं के द्वारा मनुष्यों की,*
*सम्मुख दुधारू गौ जैसी की, आती हुई उषा की।*
*महान् वृक्षों की तरह, खूब शाखाओं को ऊपर उठाने वालों की,*
*प्रकर्ष से ज्वालाएं (इसकी), फैल रही हैं आकाश की ओर।। १।।*

*अधिदेव :* दुधारू गौ की तरह चित्त को प्रसन्न करने वाली, उदित होती हुई उषा के सम्मुख यज्ञाग्नि यजमानों के द्वारा प्रातःकाल में समिधाओं से यज्ञकुण्ड में प्रज्वलित किया जा रहा है। बड़े-बड़े वृक्ष जिस प्रकार अपनी शाखाओं को ऊपर की ओर उठांकर खड़े होते हैं, उसी प्रकार इस यज्ञाग्नि की ज्वालाएं आकाश की ओर फैल रही हैं।

*अध्यात्म :* हृदय के अन्दर चित्त को प्रसन्न करने वाली प्रारम्भिक ज्ञानरश्मियों के उदयकाल में साधक जन अपनी समर्पणरूपी समिधाओं के द्वारा अध्यात्म-अग्नि को प्रज्वलित करते हैं। जिस प्रकार बड़े-बड़े वृक्षों की शाखाएं आकाश की ओर उठी होती हैं, उसी प्रकार इस अध्यात्म अग्नि की ज्वालाएं आत्मा की ओर उठती हैं और उसके कल्मषों को जलाकर भस्म करती हुई हृदयाकाश में सब ओर फैल जाती हैं।

टि. *समिधाओं के द्वारा* - **समिधा**। समिद्भिः - सा.। इन्धनैर् घृतादिना - दया. by the fuel - W. by the kindling - Fra.

*दुधारू गौ जैसी की* - **धेनुम् इव**। अग्निहोत्रार्थधेनुं प्रति यथा - सा.।

*महान् वृक्षों की तरह* - **यह्वाः इव**। महान्तः इव वृक्षाः - वे.। सा.। दया.। like stately (trees)

- W. like young trees - G. like the mighty ones - Ar. as if mighty rivers - Fra.

*शाखाओं को ऊपर उठाने वालों (की)* – **वयाम् उज्जिहानाः।** शाखाम् उत् गमयन्तः – वे.। शाखां प्रोद्गमयन्तः – सा.। शाखां त्यजन्तः – दया.। throwing aloft their branches - W. G.

*प्रकर्ष से ज्वालाएं (इसकी), फैल रही हैं आकाश की ओर* – **प्र भानवः सिस्रते नाकम् अच्छ।** अग्नेः भानवः अन्तरिक्षं प्रति प्र सिस्रते – वे.। भानवो ज्वालाः – सा.। दीप्तयः सरन्ति गच्छन्ति अविद्यमानदुःखम् अन्तरिक्षं सम्यक् – दया.। his flames rise up to the sky - W. his lustre spreads towards heaven - Ar.

**अबोधि होता यजथाय देवान् ऊर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातर् अस्थात्।**
**समिद्धस्य रुशद् अदर्शि पाजो महान् देवस् तमसो निर् अमोचि।। २।।**

अबोधि। होता। यजथाय। देवान्। ऊर्ध्वः। अग्निः। सुऽमनाः। प्रातः। अस्थात्।
सम्ऽइद्धस्य। रुशत्। अदर्शि। पाजः। महान्। देवः। तमसः। निः। अमोचि।। २।।

*जाग गया है होता, पूजने के लिये देवों को,*
*उत्तम अग्नि शोभन मन वाला, प्रातः खड़ा हो गया है।*
*प्रज्वलित हुए का, आरोचमान दिखाई दे रहा है तेज,*
*महान् देव तम से, निर्मुक्त हो गया है।। २।।*

यह यजन करने वाला, साधकों के प्रति शोभन मन वाला, उत्तम अध्यात्म-अग्नि साधना के प्रारम्भिक काल में साधक के अन्दर इन्द्रिय आदि दिव्य शक्तियों को अभिपूजित करने के लिये, उनको निर्मल करने के लिये, प्रादुर्भूत होता है। साधक के द्वारा समर्पणों से प्रज्वलित किये जाने पर इसका आरोचमान तेज स्वयं ही दिखाई देने लगता है, इसका सकारात्मक प्रभाव अनुभव में आने लगता है। यह प्रकाशमान अध्यात्म-अग्नि स्वयं अज्ञान के अन्धकार से पूर्णतया मुक्त होता है और साधक के आत्मा को भी उससे पूर्णतः मुक्त कर देता है।

टि *पूजने के लिये देवों को* – **यजथाय देवान्।** देवान् यष्टुम् – वे.। देवान् यष्टव्यान् यष्टुम् – सा.। यजनाय विदुषः दिव्यान् गुणान् वा – दया.। for the worship of the gods - W. G. for sacrifice to gods - Ar. Fra.

*शोभन मन वाला* – **सुमनाः।** शोभनमनस्को यजमानानुग्रहबुद्धिः सन् – सा.। favourably minded - W. gracious - G. with his right thinking - Ar. well-minded - Fra.

*आरोचमान दिखाई दे रहा है तेज* – **रुशत् अदर्शि पाजः।** श्वेतं दृश्यते तेजः – वे.। आरोचमानं बलं ज्वालालक्षणं दृश्यते – सा.। the radiant vigour is manifested - W. his radiant might is made apparent - G. the red-glowing mass of him is seen - Ar.

*तम से निर्मुक्त हो गया है* – **तमसः निः अमोचि।** तमसः निः मुक्तः – वे.। अन्धकारान् निर्मुक्तो ऽभूत् – सा.। has been liberated from the darkness - W. G. Ar. Fra.

**यद् ईं गणस्य रशनाम् अजीगः शुचिर् अङ्क्ते शुचिभिर् गोभिर् अग्निः।**
**आद् दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानाम् ऊर्ध्वो अधयज् जुहूभिः।। ३।।**

यत्। ईम्। गणस्य। रशनाम्। अजीगर् इति। शुचिः। अङ्क्ते। शुचिऽभिः। गोभिः। अग्निः।
आत्। दक्षिणा। युज्यते। वाजऽयन्ती। उत्तानाम्। ऊर्ध्वः। अधयत्। जुहूभिः।। ३।।

*जब यह गण की बागडोर को, करता है अपने वश में,*
*पवित्र (यह) लिप्त करता है (उसको), पवित्र दीप्तियों से अग्नि।*
*तदनन्तर विवेकशक्ति जुट जाती है (कार्य में), बल को बढ़ाती हुई (अपने),*
*ऊपर उठी हुई का, ऊपर उठा हुआ, पान करता है जिह्वाओं से (अपनी)।। ३।।*

जिस समय यह अध्यात्म अग्नि साधक के मन, प्राण इन्द्रिय आदि रूप अन्तर्जगत् की बागडोर को अपने हाथ में ले लेता है, अपने वश में कर लेता है, तो यह पवित्र अग्नि उसे अपनी पवित्र दीप्तियों से सब ओर से लिप्त कर देता है, उसे अपनी ज्योति से जाज्वल्यमान बना देता है। ऐसा होने पर विवेचना शक्ति के बल की वृद्धि हो जाती है और वह अपने कार्यों में जुट जाती है। वह ऊर्ध्वगति को प्राप्त होती है, और ऊर्ध्वगति को प्राप्त हुआ यह अग्नि अपनी दीप्तिरूपी जिह्वाओं से उसका पान करता है, उसके कार्यकलाप से आनन्द को प्राप्त करता है।

टि. *गण की बागडोर को* - **गणस्य रशनाम्।** प्राणिजातस्य नियमनीम् निद्राम् - वे.। संघातात्मकस्य जगतो रशनां रज्जुर् इव - सा.। समूहस्य रज्जुम् - दया.। the (contining) girdle of the aggregated (world) - W. the line of his attendants - G. the long cord of his troop -Ar. the circumference of his powers - Fra.

*करता है अपने वश में* - **अजीगः।** निगिरति - वे.। व्यापारप्रतिबन्धकं तमो गिरति गृह्णाति वा। समिद्धो भवतीत्यर्थः। सा.। भृशं गिरति - दया.। has seized upon - W. hath stirred - G. has aroused - Fra.

*लिप्त करता है पवित्र दीप्तियों से* - **अङ्क्ते शुचिभिः गोभिः।** शुद्धैस् तेजोभिः जगत् अङ्क्ते - वे.। दीप्तै रश्मिभिर् व्यनक्ति विश्वं जगत् - सा.। प्रसिद्धो भवति पवित्रैः किरणैः - दया.। makes all manifest with brilliant rays - W. with the pure milk is anointed - G. reveals all by the pure herds of his rays - Ar. the Fire anoints himself with pure light - Fra.

*विवेकशक्ति जुट जाती है* - **दक्षिणा युज्यते।** प्रवृद्धाज्यधारा युक्ता भवति - सा.। food-desiring (oblation) is added (to the flame) - W. the gift is made ready - G. the goddess of under- standing is yoked - Ar. his vigorous discernment is put to work. Fra.

*ऊपर उठी हुई का पान करता है जिह्वाओं से* - **उत्तानाम् अधयत् जुहूभिः।** उत्तानां दिवं तेजोभिर् धयति - वे.। उत्तानाम् ऊर्ध्वतानाम् उपरि विस्तृतां जुहूभिर् पिबति - सा.। drinks it as it is (spread out) recumbent by the ladles - W. with tongues, erect, he drinketh - G.

**अग्निम् अच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति।**
**यद् ईं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम्।। ४।।**

अग्निम्। अच्छ। देवऽयताम्। मनांसि। चक्षूंषिऽइव। सूर्ये। सम्। चरन्ति।
यत्। ईम्। सुवाते इति। उषसा। विरूपे इति विऽरूपे। श्वेतः। वाजी। जायते। अग्रे। अह्नाम्।। ४।।

*अग्नि की ओर देवपूजकों के मन,*
*आँखें जिस प्रकार सूर्य पर, विचरण करते हैं।*
*जब इसको उत्पन्न करते हैं दिन-रात, विपरीत रूपों वाले,*
*श्वेतवर्ण अश्व उत्पन्न हो जाता है, पूर्व भाग में दिनों के।। ४।।*

देवों और देवों के देव परमेश्वर में श्रद्धा रखने वाले उपासकों की आँखें जिस प्रकार सूर्य की ओर लगी रहती हैं, अर्थात् जिस प्रकार वे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति की प्रतीक्षा करते रहते हैं, उसी प्रकार उनके मन अन्तस्तल में प्रकट होने वाली दिव्यज्योति रूपी अग्नि में भी संचरित होते रहते हैं। दो उषाएं (उषसा) अर्थात् दिन और रात क्रमशः ज्ञानावस्था और अज्ञानावस्था के प्रतीक हैं। इन दोनों ही अवस्थाओं में दिव्य ज्योति का प्रादुर्भाव सम्भव है। जब साधक इन दोनों अवस्थाओं में ज्ञान की दिव्य ज्योति को प्राप्त करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है तो ज्ञान के प्रारम्भिक उदयों के साथ पूर्णज्ञान रूपी सूर्य का उदय हो जाता है।

टि. *देवपूजकों के मन* - **देवयताम् मनांसि**। यजमानानां मनांसि - वे.। देवान् आत्मन इच्छतां यजमानानां मनांसि - सा.। the minds of the devout - W. the spirits of the pious - G. the minds of God-seekers - Fra.

*उत्पन्न करते हैं दिन-रात विपरीत रूपों वाले* - **सुवाते उषसा विरूपे**। जनयतः अहोरात्रे भिन्नरूपे - वे.। दया.। उषसा सह विरूपे नानारूपे द्यावापृथिव्यौ जनयतः - सा.। the multiform (heaven and earth) bring him forth along with the dawn - W. both Dawns of different hues have borne him - G. Ar. Fra.

*श्वेतवर्ण अश्व* - **श्वेतः वाजी**। श्वेतवर्णो बलवान् - वे.। प्रकृष्टवर्णोपेतो वेजनवान् अग्निः - सा.। as a white courser - W. G. Ar.

**जनि॑ष्ट॒ हि जेन्यो॒ अग्रे॒ अह्ना॑ हि॒तो हि॒तेष्व॑रु॒षो वने॑षु।**
**दमे॑दमे स॒प्त रत्ना॒ दधा॑नो॒ ऽग्निर् होता॒ नि ष॑सादा॒ यजी॑यान्।। ५।।**

जनि॑ष्ट। हि। जेन्यः॑। अग्रे॑। अह्ना॑म्। हि॒तः। हि॒तेषु॑। अ॒रु॒षः। वने॑षु।
दमे॑ऽदमे। स॒प्त। रत्ना॑। दधा॑नः। अ॒ग्निः। होता॑। नि। स॒सा॒द॒। यजी॑यान्।। ५।।

*उत्पन्न होता है निश्चय से, विजेता पूर्व में दिनों के,*
*मंगलदायक मंगलमयों में, आरोचमान, वनों में।*
*घर-घर में सात रत्नों को, स्थापित करता हुआ,*
*अग्नि आह्वाता आसीन होता है, अत्यन्त पूजनीय।। ५।।*

अज्ञान के अन्धकार पर विजय प्राप्त करने वाला यह दिव्य अग्नि ज्ञान की प्रारम्भिक अवस्था में उपासक के अन्तस्तल में प्रादुर्भूत होता है। अपने प्रकाश से प्रकाशमान यह मंगलदायक दिव्याग्नि मानव शरीर के मंगलमय बीहड़ों में विद्यमान रहता है। प्रत्येक शरीररूपी घर के अन्दर अपनी सात दीप्तियों को, सात प्रकार के आनन्दों को प्रदान करता हुआ उत्तम याजक, अत्यन्त पूजनीय, यह दिव्य अग्नि वहीं पर आसीन होता है।

टि. *उत्पन्न होता है* – **जनिष्ट।** अजायत – वे.। प्रादुर् अभूत् – सा.। is born - W.

*विजेता* – **जेन्यः।** जनयितव्यः – वे.। उत्पादनीयः – सा.। जेतुं शीलः – दया.। capable of birth - W. the noble One - G. Fra. victorious - Ar.

*मंगलदायक मंगलमयों में वनों में* – **हितः हितेषु वनेषु** । निहितः निहितेषु काष्ठेषु – वे.। हितेषु वनोत्थेषु काष्ठेषु हितः स्थापितः – सा.। हितकारी सुखनिमित्तेषु जङ्गलेषु – दया.। he is deposited in the friendly woods - W. laid mid the well-laid fuel - G. established in established things, in the woodlands - Ar. auspicious in things auspicious - Fra.

*घर-घर में* – **दमेदमे।** गृहेगृहे – वे.। दया.। तत्तद्यागगृहे – सा.।

*सात रत्नों को* – **सप्त रत्ना।** सप्त रत्नानि – वे.। रमणीयाः सप्त ज्वालाः – सा.। seven rich treasures - G. the seven ecstasies - Ar. Fra.

**अ॒ग्निर् होता॒ न्य॑सीदद् यजी॑यान् उ॒पस्थे॑ मा॒तुः सु॑र॒भा उ॑ लो॒के।**
**युवा॑ क॒विः पु॑रुनि॒ःष्ठ ऋ॒तावा॑ ध॒र्ता कृ॑ष्टी॒नाम् उ॒त मध्य॑ इ॒द्धः।। ६।। १२।।**

अ॒ग्निः। होता॑। नि। अ॒सी॒द॒त्। यजी॑यान्। उ॒पऽस्थे॑। मा॒तुः। सु॒र॒भौ। ॐ इति॑। लो॒के।
युवा॑। क॒विः। पु॒रु॒नि॒ःऽस्थः। ऋ॒तऽवा॑। ध॒र्ता। कृ॒ष्टी॒नाम्। उ॒त। मध्ये॑। इ॒द्धः।। ६।।

*अग्नि होता (बनकर) बैठता है अत्यन्त पूजनीय,*
*गोद में माता की, सुगन्धित प्रदेश में।*
*नित्यतरुण, ज्ञानी, बहुस्थानी, सत्यनियम का पालक,*
*धारक प्रजाओं का, और मध्य में प्रज्वलित (उनके)।। ६।।*

बाह्य जगत् में वह अग्नि सबका नेतृत्व करने वाला और सबका शुभ कर्मों में आह्वान करने वाला परमेश्वर है। वह सबके द्वारा अत्यन्त पूजनीय है। वह शुभ कर्म रूपी यज्ञ की वेदिभूत और उत्तम सुगन्धियों का स्थान बने हुए इस माता पृथिवी की गोद में अपना स्थान ग्रहण किये हुए है। वह नित्य तरुण अर्थात् नित्य एकरस रहने वाला है। वह क्रान्तदर्शी अर्थात् तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान रखने वाला है। वह सब पदार्थों में व्याप्त है। वह सब प्रजाओं को धारण करने वाला और सदा उनके द्वारा अपने मध्य में प्रकाशित, प्रचारित और प्रसारित किया जाता है।

टि. *अग्नि* – **अग्निः।** Strength - Ar.

*गोद में माता की* – **उपस्थे मातुः।** पृथिव्याः उपस्थे – वे.। सर्वस्य मातुर् निर्मातुर् भूम्या उत्सङ्गे – सा.। समीपे मातुः – दया.। on the lap of his mother - W. G. Ar. Fra.

*सुगन्धित प्रदेश में* – **सुरभौ उ लोके।** सुरभौ देशे – वे.। आज्यादिसौरभयुक्ते सर्वैर् द्रष्टव्ये स्थाने वेदिलक्षणे – सा.। in a fragrant place - W. G. in that rapturous other world - Ar. in that delightful other realm of vision - Fra.

*बहुस्थानी* – **पुरुनिःष्ठः।** पुरुषु मनुष्येषु च निष्ठितः – वे.। बहुस्थानः – सा.। पुरवो बहुविधा निष्ठा यस्य बहुस्थानो वा – दया.। many-stationed - W. preeminent over many - G. manyfold in his fixed knowledge - Ar. manifoldly perfect - Fra.

*सत्यनियम का पालक* - **ऋतावा**। सत्यकर्मा - वे.। यज्ञवान् - सा.। the celebrator of sacrifice - W. faithful - G. possessed of the Truth - Ar. truth-bearing - Fra.

**प्र णु त्यं विप्रम् अध्वरेषु साधुम् अग्निं होतारम् ईळते नमोभिः।**
**आ यस् ततान रोदसी ऋतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन।। ७।।**

प्र। नु। त्यम्। विप्रम्। अध्वरेषु। साधुम्। अग्निम्। होतारम्। ईळते। नमःऽभिः।
आ। यः। ततान। रोदसी इति। ऋतेन। नित्यम्। मृजन्ति। वाजिनम्। घृतेन।। ७।।

*खूब निश्चय से उस मेधावी की, यज्ञों में कार्यसाधक की,*
*अग्नि की, आह्वाता की, स्तुति करते हैं नमस्कारों के साथ।*
*सब ओर से जो विस्तार रहा है, द्युलोक-भूलोक को सत्यनियम से,*
*मार्जन कर रहे हैं (याजक जिस) बलवान् का, घृत से।। ७।।*

वह अग्रणी परमेश्वर उत्कृष्ट मेधा से युक्त है। वह इस जीवनरूपी यज्ञ में सब उपासकों के प्रयोजनों को सिद्ध करने वाला है। वह सब मनुष्यों का शुभ कर्मों को करने के लिये आह्वान करता है। इसलिये उपासक नमस्कारों के साथ उसकी स्तुति करते हैं। वह ही सत्यनियम के अधीन इस धरती पर और आकाश में चलने वाले सभी कार्यकलापों का विस्तार कर रहा है। इसी लिये उपासक जन उस सर्वशक्तिमान् को घृत, दुग्ध, जल आदि की आहुतियों से सींचते हैं, उसे अपने नैवेद्य समर्पित करते हैं।

टि. *कार्यसाधक की* - **साधुम्**। साधयितारम् - वे.। फलसाधकम् - सा.। the fulfiller (of desires) - W. excellent - G. who achieves perfection - Ar. perfect - Fra.

*स्तुति करते हैं* - **ईळते**। स्तुवन्ति - वे.। सा.। glorify - W. G. pray - Ar. adore - Fra.

*सत्यनियम से* - **ऋतेन**। उदकेन तेजसा वा - वे.। उदकेन - सा.। सत्येन - दया.। with water - W. by Law Eternal - G. by the Truth - Ar. with truth - Fra.

*मार्जन कर रहे हैं* - **मृजन्ति**। परिचरन्ति - वे.। सा.। शुन्धन्ति - दया.। worship - W. balm with oil - G. rub bright - Ar. cleanse - Fra.

**मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः।**
**सहस्रशृङ्गो वृषभस् तदोजा विश्वाँ अग्ने सहसा प्रास्यन्यान्।। ८।।**

मार्जाल्यः। मृज्यते। स्वे। दमूनाः। कविऽप्रशस्तः। अतिथिः। शिवः। नः।
सहस्रऽशृङ्गः। वृषभः। तत्ऽओजाः। विश्वान्। अग्ने। सहसा। प्र। असि। अन्यान्।। ८।।

*मार्जनीय मार्जन किया जाता है, स्वगृह में, अरिदमन,*
*ज्ञानियों से प्रशंसित, अतिथि मङ्गलमय हमारा।*
*असंख्यरश्मियों वाला, सुखवर्षक, अपने बल से बल वाला,*
*सबको, हे अग्ने!, बल से, पराभूत करता है तू अन्यों को।। ८।।*

हे पूजनीय परमेश्वर! दूसरों को न देने वाले दुष्ट हिंसक जनों का दमन करने वाला तू याजकों के द्वारा घृत आदि की आहुतियों से तृप्त किया जाता है। ज्ञानी जन तेरी स्तुतियां करते हैं। तू हमारा

मङ्गलमय अतिथि है, तू सर्वत्र अटन करने वाला सब स्थानों पर व्याप्त हो रहा है। तू असंख्य तेजों और दीप्तियों वाला है। तू सब पर सुखों की वर्षा करने वाला है। तू अपने ही बल से बलवान् है। हे अग्रणी परमेश्वर! तू अपने बल से अन्य सब को पराभूत कर देता है।

टि. *मार्जनीय मार्जन किया जाता है* - **मार्जाल्यः मृज्यते।** मार्जन्यः मृज्यते - वे.। संमार्जनीयो ऽयम् अग्निर् मृज्यते परिचर्यते - सा.। संशोधकः शुध्यते - दया.। entitled to worship he is worshipped - W. worshipful is worshipped - G. The purifier he is rubbed bright and pure - Ar. the pure lord of the house - Fra.

*अरिदमन* - **दमूनाः।** दममनाः - वे.। दमूना दानमना दान्तमना वा - सा.। दमूनाः दमनशीलः - दया.। humble-minded - W. house-friend - G. the dweller - Ar.

*अपने बल से बल वाला* - **तदोजाः।** ज्वालाबलः - वे.। यत् प्रसिद्धं बलं तेजो वास्ति तद् एवौजा यस्य तादृशः - सा.। दया.। of well-known might - W. that strength - G. thou hast the strength of That - Ar. with the power of thatness - Fra.

*बल से पराभूत करता है तू अन्यों को* - **सहसा प्र असि अन्यान्।** अन्यान् बलेन प्र भवसि अतिगच्छसि - वे.। सहसा बलेन प्रासि। प्रेति परेत्यर्थे। पराभवसि। व्याप्तुं वा प्रभवसि। सा.। surpassest all others in strength - W. G. Ar. Fra.

**प्र स॒द्यो अ॑ग्ने॒ अत्ये॑ष्य॒न्यान् आ॒विर् यस्मै॒ चारु॑तमो ब॒भूथ॑।**
**ई॒ळेन्यो॑ वपु॒ष्यो॑ वि॒भावा॑ प्रि॒यो वि॒शाम् अति॑थि॒र् मानु॑षीणाम्।। ९।।**

प्र। स॒द्यः। अ॒ग्ने॒। अति॑। ए॒षि॒। अ॒न्यान्। आ॒विः। यस्मै॑। चारु॑ऽतमः। ब॒भूथ॑।
ई॒ळेन्यः॑। व॒पु॒ष्यः॑। वि॒भाऽवा॑। प्रि॒यः। वि॒शाम्। अति॑थिः। मानु॑षीणाम्।। ९।।

*प्रकर्ष से तुरन्त, हे अग्ने!, तू अतिक्रमण कर जाता है अन्यों का,*
*प्रकट जिसके लिये, अत्यन्त आरोचमान, हो जाता है तू।*
*स्तुति के योग्य, सुन्दर रूप वाला, विशेष दीप्तियों वाला,*
*प्रिय प्रजाओं का, अतिथि की तरह पूज्य, मनुष्यसम्बन्धियों का।। ९।।*

हे सब को सन्मार्ग में आगे बढ़ाने वाले जगदीश्वर! तेरा स्वरूप अत्यन्त रुचिकर है। तू स्तुति के योग्य है। तू ब्रह्माण्ड रूपी सुन्दर दृश्यमान रूप वाला है। तू विशेष दीप्तियों और तेजों से युक्त है। तू मनुष्यसम्बन्धी प्रजाओं के लिये अतिथि के समान पूज्य और प्रिय है। तेरे नियमों का पालन करने वाले जिस मनुष्य पर तेरी कृपादृष्टि हो जाती है, तू उसके लिये अविलम्ब अपने स्वरूप को प्रकट कर देता है, अपने रहस्यों को खोल देता है। इसके विपरीत जो अन्य मनुष्य तेरे नियमों के विरुद्ध आचरण करते हैं, तू उनकी परवाह न करता हुआ उनको पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाता है।

टि. *तू अतिक्रमण कर जाता है अन्यों का* - **अति एषि अन्यान्।** अन्यान् अति एषि शात्रून् - वे.। अन्यान् स्वसमानान् अतिक्रामसि - सा.। dost thou pass to others - W. thou passest by all others - G. overpassest all others - Ar. you surpass all that is other - Fra.

*प्रकट जिसके लिये हो जाता है तू* - **आविर् यस्मै बभूथ।** त्वं यस्मै यजमानाय आविः भवसि

– वे.। from him to whom thou hast been manifest - W. for him to whom thou hast appeared - G. in whomsoever thou hast become manifest - Ar. for whom you have been revealed - Fra.

*सुन्दर रूप वाला* – **वपुष्यः**। वपुषे हितः – वे.। वपुष्करो दीप्तिकरो वा – सा.। वपुषि सुन्दरे रूपे भवः – दया.। radiant - W. wondrously fair - G. great of body - Ar. beautiful - Fra.

*विशेष दीप्तियों वाला* – **विभावा**। दीप्तिमान् – वे.। विशिष्टदीप्तिमान् – सा.। विशेषेण भानवान् – दया.। many-shining - W. effulgent - G. wide of light - Ar. pervasive - Fra.

**तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिम् अग्ने अन्तित ओत दूरात्।**
**आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत् ते अग्ने महि शर्म भद्रम्।। १०।।**

तुभ्यम्। भरन्ति। क्षितयः। यविष्ठ। बलिम्। अग्ने। अन्तितः। आ। उत। दूरात्।
आ। भन्दिष्ठस्य। सुऽमतिम्। चिकिद्धि। बृहत्। ते। अग्ने। महि। शर्म। भद्रम्।। १०।।

*तेरे लिये लाती हैं प्रजाएं, हे युवतम!,*
*पूजा को, हे अग्ने!, निकट से और दूर से।*
*सर्वतः उत्तम स्तोता के, शोभन विचार को जान ले तू,*
*महान् है तेरी, हे अग्ने!, पूजा के योग्य, शरण मंगलमयी।। १०।।*

हे नित्य एकरस रहने वाले परमात्मन्! सब मनुष्य निकट से और दूर से तेरे लिये पूजा, नैवेद्य, हव्य आदि समर्पणों को समर्पित करते हैं। हे जगदीश्वर! तू अपने उत्तम स्तोता के श्रेष्ठ विचार और समर्पणभाव को भली प्रकार जान ले और तदनुसार उसकी शुभ कामनाओं को पूर्ण कर दे। हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तेरी शरण महान् है, पूजनीय है और कल्याणी है।

टि. *लाती हैं पूजा को* – **भरन्ति बलिम्**। हविः भरन्ति – वे.। सम्पादयन्ति पूजां हविर्लक्षणाम् – सा.। धरन्ति भक्ष्यभोज्यादिपदार्थसमुदायम् – दया.। (men) present oblations - W. (people) bring their tribute - G.

*उत्तम स्तोता के शोभन विचार को* – **भन्दिष्ठस्य सुमतिम्**। स्तोतृतमस्य सुमतिम् – वे.। अतिशयेन स्तोतुः सुमतिं स्तुतिम् – सा.। अतिशयेन कल्याणाचरणस्य शोभनां प्रज्ञाम् – दया.। the praise of him who most extols thee - W. G. to that right-mindedness of man's happiest state - Ar. right thought of the highest praise - Fra.

*सर्वतः जान ले तू* – **आ चिकिद्धि**। आभिमुख्येन जानीहि – वे.। आ इति चार्थे। चिकिद्धि आजानीहि। सा.। accept - W. mark well - G. awake - Ar. know - Fra.

*पूजा के योग्य शरण मंगलमयी* – **महि शर्म भद्रम्**। महच् च तव सुखं भजनीयम् – वे.। सुखं महत् स्तुत्यं च – सा.। the felicity is vast, auspicious - W. high, auspicious is thy shelter - G. great and auspicious peace - Fra.

**आद्य रथं भानुमो भानुमन्तम् अग्ने तिष्ठ यजतेभिः समन्तम्।**
**विद्वान् पथीनाम् उर्वन्तरिक्षम् एह देवान् हविरद्याय वक्षि।। ११।।**

आ। अ॒द्य। रथ॑म्। भा॒नु॒ऽम॒:। भा॒नु॒ऽमन्त॑म्। अग्ने॑। तिष्ठ॑। य॒ज॒तेभि॑:। सम्ऽअ॑न्तम्।
वि॒द्वान्। प॒थी॒नाम्। उ॒रु। अ॒न्तरि॑क्षम्। आ। इ॒ह। दे॒वान्। ह॒वि॒:ऽअद्या॑य। व॒क्षि॒।। ११।।

*आकर आज रथ पर, हे दीप्तिमान्!, दीप्तिमान् पर,*
*हे अग्ने!, स्थित हो जा तू, पूजनीयों के साथ सब ओर।*
*जानता हुआ मार्गों को, विस्तीर्ण अन्तरिक्ष को,*
*इस ओर यहाँ देवों को, हविभक्षण के लिये वहन कर तू।। ११।।*

हे सबका मार्गदर्शन करने वाले प्रकाशमान परमेश्वर! यह मेरा शरीर अनेक प्रकार की दिव्यताओं से युक्त है। तू अपनी समस्त पूज्य शक्तियों के साथ आकर इसके अन्दर सब ओर अपना स्थान ग्रहण कर। तू इस आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली अयोध्या नगरी के अन्दर दिव्य शक्तियों के मार्गों और विस्तीर्ण हृदयरूपी आकाश को भली प्रकार जानता है। तू अपनी दिव्य शक्तियों को मेरे समर्पणों को स्वीकार करने के लिये इसके अन्दर वहन कर।

टि. हे *दीप्तिमान्* – **भानुमः**। हे दीप्तिमन् – वे.। सा.। radiant - W. O luminous one - Ar.

*पूजनीयों के साथ* – **यजतेभिः**। यष्टव्यैः देवैः – वे.। सा.। सङ्गतैर् अश्वादिभिः – दया.। together with the adorable (gods) - W.

*सब ओर* – **समन्तम्**। समन्तम् समन्तात् इत्यस्य पर्यायः।। समावृतपर्यन्तम् – वे.। समीचीन-प्रान्तोपेतम् – सा.। सर्वतो दृढाङ्गम् – दया.। well-conducted - W. around it - G. (the luminous) wholeness - Ar. most perfect - Fra.

*जानता हुआ मार्गों को* – **विद्वान् पथीनाम्**। विद्वान् देवयानान् मार्गान् – वे.। यष्टव्यदेव-परिज्ञानवांस् त्वं देवयजनमार्गान् प्रति। द्वितीयार्थे षष्ठी। सा.। cognizant of the ways (of worship) - W. knowing the paths - G. knower of the paths (of the wide interior realm) - Fra.

*हविभक्षण के लिये* – **हविरद्याय**। हविषो भक्षणाय – वे.। सा.।

**अवो॑चाम क॒वये॒ मेध्या॑य**
**वचो॑ व॒न्दारु॑ वृ॒ष॒भाय॒ वृष्णे॑।**
**गवि॑ष्ठिरो॒ नम॑सा॒ स्तोम॑म् अ॒ग्नौ**
**दि॒वी॑व रु॒क्मम् उ॑रु॒व्यञ्च॑म् अश्रेत्।। १२।।१३।।**

अवो॑चाम। क॒वये॑। मेध्या॑य।
वच॑:। व॒न्दारु॑। वृ॒ष॒भाय॑। वृष्णे॑।
गवि॑ष्ठिरः। नम॑सा। स्तोम॑म्। अ॒ग्नौ।
दि॒वि॒ऽइ॑व। रु॒क्मम्। उ॒रु॒ऽव्यञ्च॑म्। अ॒श्रे॒त्।। १२।।

*उच्चारते हैं हम क्रान्तदर्शी के लिये, पूज्य के लिये,*
*वचन को वन्दनायुक्त को, सुखवर्षक के लिये, बलवान् के लिये।*
*वाणी में स्थिर (उपासक), नमस्कार के साथ स्तोत्र को अग्नि में,*
*आकाश में जैसे आरोचमान विस्तीर्णगति (सूर्य) को, समर्पित करता है।। १२।।*

हम उपासक जन क्रान्तदर्शी, सबके द्वारा पूजा के योग्य, सब पर सुखों की वर्षा करने वाले, महान् बलों वाले उस परमेश्वर के लिये वन्दना से युक्त स्तुतियों का उच्चारण सदा करते हैं। वाणी में स्थिर अथवा इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने वाला प्रत्येक उपासक अपने स्तोत्र को उस अग्रणी परमेश्वर के लिये नमस्कार के साथ इस प्रकार समर्पित करता है, जिस प्रकार वह जगदीश प्रकाशमान, विस्तीर्ण गति वाले सूर्य को आकाश में स्थापित करता है।

टि. *वन्दनायुक्त को* – **वन्दारु**। वन्दनशीलम् – वे.। सा.। encomiastic - W. homage - G.

*वाणी में स्थिर (उपासक)* – **गविष्ठिरः**। गविष्ठिरो ऽयम् ऋषिः – सा.। यो गवि सुशिक्षितायां वाचि तिष्ठति – दया.।

*आरोचमान को* – **रुक्मम्**। अलङ्कारम् – वे.। रोचमानम् – सा.। रुचिकरं भास्वरम् – दया.। like gold light - G. like a mass of gold - Ar. Fra.

*विस्तीर्णगति (सूर्य) को* – **उरुव्यञ्चम्**। विस्तीर्णव्यञ्जनम् – वे.। उरुगमनम् आदित्यम् इव – सा.। बहुव्याप्तिमन्तम् – दया. wide-sojourning (sun) - W. far-reaching - G. Ar.

*समर्पित करता है* – **अश्रेत्**। श्रयति – वे.। श्रयति स्म – सा.। आश्रयेत् – दया. hath raised - G. has taken refuge - Ar.

## सूक्त २

ऋषिः – कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः, उभौ वा, २,९ वृशो जानः। देवता – अग्निः। छन्दः – १-११ त्रिष्टुप्, १२ शक्वरी। द्वादशर्चं सूक्तम्।

**कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे।**
**अनीकम् अस्य न मिनज् जनासः पुरः पश्यन्ति निहितम् अरतौ।। १।।**

कुमारम्। माता। युवतिः। सम्ऽउब्धम्। गुहा। बिभर्ति। न। ददाति। पित्रे।
अनीकम्। अस्य। न। मिनत्। जनासः। पुरः। पश्यन्ति। निऽहितम्। अरतौ।। १।।

*कुमार को माता नवयौवना, ढके हुए को,*
*गुहा में धारण करती है, नहीं देती है पिता को।*
*तेज को इसके, नहीं हिंसित होते हुए को, मनुष्य,*
*सम्मुख देखते हैं, निहित जो था (पहले) अरणि में।। १।।*

कुमार काष्ठ के अन्दर निहित अग्नि है। अरणि नाम से पुकारे जाने वाले काष्ठ के दो टुकड़े, जिनको रगड़कर अग्नि को उत्पन्न किया जाता है, माता है। यज्ञ में अग्न्याधान की इच्छा वाला यजमान पिता है। अरणिरूपी माता अग्निरूपी शिशु को अपने गर्भ में छुपाए हुए है। वह अग्न्याधान की इच्छा वाले यजमान को उसे नहीं दे रही है। जब यजमान अरणि नामक अधःकाष्ठ और उपरिकाष्ठ के संघर्षण से अग्नि की चिंगारी को उत्पन्न करता है, तो सब मनुष्यों को उस अग्निरूपी पुत्र के मुख का, जिसे किसी के द्वारा हिंसित नहीं किया जा सकता, साक्षात् दर्शन हो जाता है।

अध्यात्म में कुमार, मनुष्य के पिण्ड के अन्दर अन्तश्चेतना में छुपी हुई दिव्य ज्योति है। इसे

प्रकट करना सरल कार्य नहीं है। जब साधक योगसाधना की अरणि का संघर्षण करता है, तभी अध्यात्म दिव्यज्योति का प्रादुर्भाव होता है और इसका स्पष्ट दर्शन होने लगता है। शनैः-शनैः यह दिव्यज्योति इतना विशाल रूप धारण कर लेती है, कि इसके तेज को किसी के द्वारा भी नष्ट नहीं किया जा सकता।

सायण शाट्यायनब्राह्मणोक्त एक इतिहास को उद्धृत करने के पश्चात् लिखते हैं - ''अथवा सूक्तस्याग्नेयत्वात् कुमार इत्यग्निर् उच्यते। तं मातारणिर् युवतिर् मिश्रयन्ती समुब्धं निगूढं गुहायां बिभर्ति। पित्र उत्पादकाय यजमानाय न ददाति। अस्याग्नेर् मिनत् हिंसत् दाहकम् अनीकं तेजो जना न पश्यन्ति। किन्तु अरताव् अरण्यां हितं पश्यन्ति।''

"The kindling of sacrificial fire is figuratively described." - Griffith.

"On the spiritual side, the fire so generatd is the fire of spiritual knowledge, the Divine Enlightenment, which has to be kindled by the yogin out of his innermost sub- consciousness." - Satya.

टि. *ढके हुए को* - **समुब्धम्।** आच्छादितम् - वे.। सम्यक् निगूढम् - सा.। समत्वेन गूढम् - दया.। mutilated - W. pressed to her close - G. suppressed - Ar.

*तेज को इसके नहीं हिंसित होते हुए को, मनुष्य सम्मुख देखते हैं* - **अनीकम् अस्य न मिनत् जनासः पुरः पश्यन्ति।** अस्य कुमारस्य हिंसकं जनाः न पुरः पश्यन्ति - वे.। अस्य कुमारस्यानीकं रूपं मिनत् हिंसितं जना न पश्यन्ति - सा.। बलं सैन्यम् अस्य न मिनत् हिंसत् विद्वांसः पश्यन्ति - दया.। (the) people see his unfading contenance before them - G. his force is undiminished, men see him in front - Ar.

*निहित जो था (पहले) अरणि में* - **निहितम् अरतौ।** निहितम् अन्तर्हिते देशे - वे.। अरताव् अरमणे देशे निहितं स्थितम् - सा.। निहितम् स्थितम् अरतौ अरमणवेलायाम् - दया.। in an unresting position - W. when he lies upon the arm - G. established in the movement - Ar.

**कम् एतं त्वं युवते कुमारं पेषी बिभर्षि महिषी जजान।**
**पूर्वीर् हि गर्भः शरदो ववर्धापश्यं जातं यद् असूत माता।। २।।**

कम्। एतम्। त्वम्। युवते। कुमारम्। पेषी। बिभर्षि। महिषी। जजान।
पूर्वीः। हि। गर्भः। शरदः। ववर्ध। अपश्यम्। जातम्। यत्। असूत। माता।। २।।

*किसको इसको तू, हे नवयौवने!, बालक को,*
*पीसनहारी उठाए हुए है, पटरानी ने जना है (जिसको)।*
*बहुतों तक ही गर्भ, शरत्कालों तक, बढ़ता रहा,*
*देखा मैंने उत्पन्न हुए को, जब जना माता ने (इसको)।। २।।*

काष्ठ के दो टुकड़ों में से जो नीचे वाली अरणि है, उसे यहाँ महिषी पूजनीया अथवा पटरानी कहा गया है। अग्निरूपी गर्भ को यही अरणि धारण किये हुए है। काष्ठ का दूसरा टुकड़ा अथवा ऊपर वाली अरणि, जो केवल संघर्षण का कार्य करती है, कम महत्त्वपूर्ण है। इसी लिये इसे पेषी, पीसने-कूटने का काम करने वाली, दासी कहा गया है। संघर्षण से अग्नि उत्पन्न होकर

सर्वप्रथम इसी को पकड़ता है, इसलिये इसे शिशु को उठाने वाली कहा गया है। अग्निरूपी गर्भ असंख्य संवत्सरों तक काष्ठ के साथ ही वृद्धि को प्राप्त होता रहता है। जब तक यह काष्ठ के अन्दर छुपा रहता है, तब तक यह दिखाई नहीं देता। परन्तु जब यह संघर्षण से प्रकट होकर अपने वास्तविक स्वरूप में आ जाता है, तो इसके दर्शन हो जाते हैं।

अध्यात्म में अन्तःकरण नीचे वाली अरणि है, जो अधिक महत्त्वपूर्ण है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि यौगिक क्रियाएं ऊपर वाली अरणि हैं। दिव्यज्योति रूपी अग्नि जन्म से लेकर ही अन्तःकरण में वृद्धि को प्राप्त होता रहता है, पर वह दिखाई नहीं देता। जब इन यौगिक क्रियाओं के द्वारा संघर्षण होता है, तो वह दिव्यज्योति प्रकट हो जाती है और साधक को इसके दर्शन हो जाते हैं।

टि. *पीसनहारी* – **पेषी।** पिशाचिका – वे.। हिंसिका पिशाचिका सती – सा.। पेष्याकारं गर्भाशयस्थं वीर्यं कृतवती – दया.। a malevolent spirit - W. handmaid - G. when thou art compressed into form - Ar.

*पटरानी* – **महिषी।** महती पूजनीयारणिः – सा.। महारूपबलशीलादियोगेन पूजनीया – दया.। the mighty (queen) - W. the Consort-Queen - G. when thou art vast - Ar.

**हिरण्यदन्तं शुचिवर्णम् आरात् क्षेत्राद् अपश्यम् आयुधा मिमानम्।**
**ददानो अस्मा अमृतं विपृक्वत् किं माम् अनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः।। ३।।**

हिरण्यऽदन्तम्। शुचिऽवर्णम्। आरात्। क्षेत्रात्। अपश्यम्। आयुधा। मिमानम्।
ददानः। अस्मै। अमृतम्। विपृक्वत्। किम्। माम्। अनिन्द्राः। कृणवन्। अनुक्थाः।। ३।।

*सुनहरी दाँतों वाले को, शुचि वर्ण वाले को, निकट से,*
*निवास से देखा मैंने, आयुधों को पैना करते हुए को।*
*देते हुए ने इसके लिये, अमृततुल्य को पवित्र (हवि) को,*
*क्या मेरा कर लेंगे इन्द्रविरोधी, स्तुतियां न करने वाले।। ३।।*

जो साधक दो अरणियों से प्रादुर्भूत होने वाली इस दिव्यज्योति के दर्शन कर लेता है, वह यह कहने का अधिकारी हो जाता है, कि मैंने सुनहरी रश्मियों वाली, देदीप्यमान वर्ण वाली, अज्ञान के अन्धकार का विनाश करने के लिये अपने ज्योतिरूपी आयुधों को तीक्ष्ण करने वाली उस दिव्यज्योति को अपने निवासस्थान इस शरीर के अन्दर निकट से देख लिया है। मैं इसे अमृततुल्य, पवित्र हवि नित्य प्रदान करता हूँ। वे दुष्ट नास्तिक जन जो परमेश्वर को नहीं मानते और उसकी स्तुतियां नहीं करते, दिव्यज्योति का दर्शन करने वाले और परमेश्वर की स्तुतियां करने वाले का मेरा भला क्या बिगाड़ लेंगे। अर्थात् दुष्ट नास्तिक जन प्रभुभक्त का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

टि. *सुनहरी दाँतों वाले को* – **हिरण्यदन्तम्।** हितरमणीयज्वालादन्तम् – वे.। हिरण्यसदृशदन्त-स्थानीयज्वालोपेतम् – सा.। हिरण्येन सुवर्णेन तेजसा वा तुल्या दन्ता यस्य तम् – दया.।

*शुचि वर्ण वाले को* – **शुचिवर्णम्।** शोचमानवर्णम् – वे.। प्रदीप्तवर्णम् – सा.।

*आयुधों को पैना करते हुए को* – **आयुधा मिमानम्।** तेजांसि मिमानम् – वे.। आयुधानि आयुधस्थानीयान् स्फुलिङ्गान् ज्वाला वा मिमानं निर्मिमाणम् – सा.। wielding (flames like)

weapons - W. hurling his weapons - G. shaping his weapons - Ar.

*अमृततुल्य को पवित्र (हवि) को* – **अमृतम् विपृक्वत्।** हविः विपर्चनवद् उपस्तृताभिघारितम् – वे.। अमृतम् अविनाश्यमृतत्वसाधनं वा, विपृक्वत् सर्वतो व्याप्तम् – सा.। अमृततुल्य हवि को – सात.। the ambrosial, all-diffusing (oblation) - W. Amṛta free from mixture - G. immortality in my several parts - Ar.

*इन्द्रविरोधी* – **अनिन्द्राः।** इन्द्रवर्जिताः – वे.। इन्द्रः परमैश्वर्यो ऽग्निस् तद्रहिताः। सा.। Indraless - G. who possess not Indra - Ar.

*स्तुतियां न करने वाले* – **अनुक्थाः।** स्तोत्रवर्जिताः – वे.। अस्तुतय इन्द्रम् अस्तुवन्तः – सा.। अनैश्वर्याः – दया.। hymnless - G. who have not the word - Ar.

**क्षेत्राद् अपश्यं सनुतश् चरन्तं सुमद् यूथं न पुरु शोभमानम्।**
**न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीर् इद् युवतयो भवन्ति।। ४।।**

क्षेत्रात्। अपश्यम्। सनुतर् इति। चरन्तम्। सुऽमत्। यूथम्। न। पुरु। शोभमानम्।
न। ताः। अगृभ्रन्। अजनिष्ट। हि। सः। पलिक्नीः। इत्। युवतयः। भवन्ति।। ४।।

*निवासस्थान से देखा है मैंने, छुपकर विचरण करते हुए को,*
*स्वयम् एव, गोसङ्घ की तरह, बहुत शोभाओं को वहन करते हुए को।*
*नहीं उनको पकड़ सकते (मनुष्य), उत्पन्न हो जाता है फिर वह,*
*पलित केशों वाली भी, नवयौवना हो जाती हैं (तब)।। ४।।*

*अधिदेव :* मुझ यजमान ने यज्ञशाला के अन्दर गौओं के झुण्ड की तरह शोभाओं को धारण करने वाली अग्नि की ज्वालाओं को समिधाओं के अन्दर गुप्तरूप से स्वच्छन्द विचरण करते हुए देखा है, अनुभव किया है। समिधाओं के अन्दर उन्हें कोई ग्रहण नहीं कर सकता, देख नहीं सकता। परन्तु जब संघर्षण की प्रक्रिया से वे अग्नि के रूप में उत्पन्न हो जाती हैं, तब वे सबको स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं, और आहुतियों को प्राप्त करके उनकी शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि दुर्बल से दुर्बल, जरायुक्त ज्वालाएं भी अपने यौवन में दिखाई देने लगती हैं।

*अध्यात्म :* साधक यह अनुभव करता है, कि दिव्यज्योति की रश्मियां उसके अन्तस्तल में सूर्यरश्मियों की तरह शोभाओं को धारण करके स्वेच्छानुसार विचरण कर रही हैं। परन्तु उसे उनका स्पष्ट रूप से दर्शन नहीं होता। किन्तु जब योगसाधना के द्वारा वे दिव्यज्योति के रूप में प्रकट हो जाती हैं, और निरन्तर योगाभ्यास के द्वारा उनकी शक्ति और अधिकाधिक बढ़ती जाती है, तो वे अपने पूरे यौवन में दिखाई देने लगती हैं।

टि. छुपकर – **सनुतः।** अन्तर्हितम् – वे.। निगूढम् – सा.। सनातनात् – दया.। passing secretly - W. from the place he dwells in - G. ranging apart - Ar.

*स्वयम् एव* – **सुमत्।** कल्याणम् – वे.। स्वयम् एव – सा.। दया.। of his own accord - W.

*पलित केशों वाली* – **पलिक्नीः।** पलिताः – वे.। दया.। पलिता जीर्णा ज्वालाः – सा.।

**के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर् न येषां गोपा अरणश् चिद् आस।**

**य ईं जगृभुर् अव ते सृजन्त्वाजाति पश्व उप नश् चिकित्वान्।। ५।।**

के। मे। मर्यकम्। वि। यवन्त। गोभिः। न। येषाम्। गोपाः। अरणः। चित्। आस।
ये। ईम्। जगृभुः। अव। ते। सृजन्तु। आ। अजाति। पश्वः। उप। नः। चिकित्वान्।। ५।।

*कौन मेरे परिजनों को, वियुक्त करते हैं गौओं से,*
*नहीं जिनका पालक, नहीं रमण कराने वाला कोई है।*
*जिन्होंने इनपर हाथ डाला है, छोड़ वे देवें (इनको),*
*इस ओर हाँक देवे गौओं को, पास हमारे सर्वज्ञ।। ५।।*

वे कौन अधार्मिक पापी लोग हैं, जो हमारे पुत्रों, पौत्रों, बन्धुओं आदि को ज्ञानज्योतियों से अलग करना चाहते हैं। ऐसे वही अभागे नास्तिक लोग हो सकते हैं, जिनका न तो कोई पालक अथवा रक्षक है और न ही जिनको कोई सुखी और प्रसन्न करने वाला है। ऐसे पापी जनों पर देव भी कृपा नहीं करते। जो नियमों का पालन करने वाले हमारे धार्मिक जनों को आक्रान्त करना चाहते हैं, वे इनसे दूर ही रहें। वह सर्वज्ञ परमेश्वर ज्ञानरश्मियों को हमारी ओर सदा प्रेरित करता रहे।

टि. *परिजनों को* – **मर्यकम्।** राष्ट्रम् – वे.। मर्त्यसङ्घं राष्ट्रम् – सा.। मर्यम् – दया.। people - W. young bull - G. my strengh - Ar.

*वियुक्त करते हैं गौओं से* – **वि यवन्त गोभिः।** गोभिः वि युक्तं कुर्वन्ति – वे.। दया.। गोभिः सह वियुक्तम् अकुर्वन्। गा भृत्यांश् च व्ययोजयन्। सा.। who have disunited from the cattle - W. G. divorces from the herds - Ar.

*नहीं रमण कराने वाला* – **अरणः।** गमनशीलो ऽग्निः – वे.। अरणो ऽभिगन्ता – सा.। संगन्ता – दया.। invincible - W. no stranger - G. fighter - Ar.

छोड़ वे देवें (इनको) – **अव ते सृजन्तु।** ते तद् (राष्ट्रम्) अव सृजन्तु – वे.। ते नश्यन्तु – सा.। may perish - W. let them free them - G. Ar.

*इस ओर हाँक देवे गौओं को पास हमारे* – **आ अजाति पश्वः उप नः।** अपहृतान् पशून् उप आ अजतु – वे.। अस्माकं पशून् उपागच्छति – सा.। approaches (to protect) the cattle - W. may drive the herd to us-ward - G. is driving back to me my herds of vision - Ar.

*सर्वज्ञ* – **चिकित्वान्।** ज्ञातशत्रुः – वे.। चेतनावान् अस्मद्विषयज्ञानवान् अग्निः – सा.। observant - G. has become aware - Ar.

**वसां राजानं वसतिं जनानाम् अरातयो नि दधुर् मर्त्येषु।**
**ब्रह्माण्यत्रेर् अव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु।। ६।। १४।।**

वसाम्। राजानम्। वसतिम्। जनानाम्। अरातयः। नि। दधुः। मर्त्येषु।
ब्रह्माणि। अत्रेः। अव। तम्। सृजन्तु। निन्दितारः। निन्द्यासः। भवन्तु।। ६।।

*वासियों के राजा को, आवास को मनुष्यों के,*
*न देने वाले, अवलुप्त कर देते हैं मनुष्यों में।*
*स्तुतियां त्रितापरहित की, मुक्त उसको कर देवें,*

*निन्दक निन्दनीय हो जाएं, (दुष्कर्मों से अपने)।। ६।।*

उस परमेश्वर रूपी दिव्य ज्योति को, जो वास करने वाली सभी प्रजाओं का स्वामी है और सभी मनुष्यों का निवासस्थान है, अपनी कमाई में से दूसरों को न देने वाले कंजूस नास्तिक जन धरती में गाड़ देते हैं, अर्थात् उसकी अवमानना और तिरस्कार करते हैं। इसके विपरीत घूम-घूम कर उसका प्रचार करने वाला, तीनों तापों से मुक्त प्रभुभक्त उसकी स्तुतियों के द्वारा अपने प्रयासों से उसे इस दुष्प्रचार से मुक्त करके उसके माहात्म्य को पुनः स्थापित कर देता है। ऐसा करने पर प्रभु के निन्दक दुष्ट जन प्रजाओं में स्वयं ही निन्दा के पात्र हो जाते हैं।

टि. *वासियों के राजा को* - **वसाम् राजानम्**। वसतां प्राणिनां स्वामिनम् - सा.। दया.। the king of living beings - W..

*आवास को* - **वसतिम्**। आवासस्थानम् - वे.। दया.। वसतिम् आवासभूतं त्र्यरुणम् उक्तलक्षणम् अग्निम् - सा.। the asylum - W. home (of the people) - G.

*अवलुप्त कर देते हैं* - **नि दधुः**। नि-हितवन्तः - वे.। अगोपयन् - सा.। गाड़कर गुप्त रूप से रखें - जय.। have secreted - W. G. have hidden - Ar.

*मनुष्यों में* - **मर्त्येषु**। मारकेषु पाशेषु - वे.। लोकेषु मध्ये - सा.। amongst mortals - W. G.

*त्रितापरहित की* - **अत्रेः**। पुरोहितस्य अत्रेः - वे.। अत्रिगोत्रस्य वृशस्य - सा.। अविद्यमान-त्रिविधदुःखस्य - दया.। ऋ. १.४५.३ मन्त्रे टिप्पण्यपि द्रष्टव्या।

**शुनंश् चिच् छेपं निदितं सहस्राद् यूपाद् अमुञ्चो अशमिष्ट हि षः।**
**एवास्मद् अग्ने वि मुमुग्धि पाशान् होतश् चिकित्व इह तू निषद्य।। ७।।**

शुनःऽशेपम्। चित्। निऽदितम्। सहस्रात्। यूपात्। अमुञ्चः। अशमिष्ट। हि। सः।
एव। अस्मत्। अग्ने। वि। मुमुग्धि। पाशान्। होतर् इति। चिकित्वः। इह। तु। निऽसद्य।। ७।।

*शुनःशेप को भी बँधे हुए को, बलवान् से,*
*खूँटे से, छुड़ाता है तू, शान्त करता है (जब) वह (तुझको)।*
*इसी प्रकार हमसे, हे अग्ने!, छुड़ा दे पाशों को,*
*हे होता!, हे सर्वज्ञ!, यहाँ आसीन होकर (तू)।। ७।।*

कुत्ते की दुम के स्वभाव वाला, अपनी कुटिलताओं को कभी न छोड़ने वाला, काम-क्रोध राग-द्वेष आदि कुवृत्तियों के कारण बन्धन में पड़ा हुआ मनुष्य भी जब तुझे अपनी स्तुतियों से शान्त करके अपने अनुकूल बना लेता है, तो तू उसे उसके दृढ़ बन्धनों से छुड़ा देता है। इसी प्रकार, हे सर्वज्ञ!, हे इस जगत् में प्रवर्तमान यज्ञ का यजन करने वाले होता, हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर!, हमारी इस हृदयरूपी वेदि पर विराजमान होकर तू हमसे भी बन्धनों को छुड़ा दे।

टि. *शुनःशेप को भी* - **शुनःशेपम् चित्**। शुनःशेपम् ऋषिम् - वे.। पदस्य मध्ये पदान्तरस्य संहितायां व्यत्ययेनावस्थितिः। सा.। सुखस्य प्रापकम् इन्द्रियारामम् - दया.। ऋ. १.२.१२ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।

*बँधे हुए को* - **निदितम्**। निबद्धम् - वे.। नितरां बद्धम् - सा.। निन्दितम् - दया.। fettered -

W. bound - G.

*बलवान् से खूँटे से* - **सहस्रात् यूपात्।** पाशसहस्रात् यूपात् - वे.। सहस्रात् अनेकरूपाद् यूपात् - सा.। असंख्यात् मिश्रिताद् अमिश्रितात् बन्धनात् - दया.। from a thousand stakes - W. from the stake for a thousand - G. from the thousandfold post of sacrifice - Ar.

*शान्त करता है वह* - **अशमिष्ट हि सः।** स खलु त्वां प्रति शशाम - वे.। स ऋषिर् अशमिष्ट हि। शान्तवान् खलु। यद्वा। स हि यस्माद् अशमिष्ट। स्तुतिकर्मैतत्। अस्तावीत्। सा.। शाम्यति यतः सः - दया.। for he was patient in endurance - W. for he prayed with fervour - G. he attained to calm - Ar.

*यहाँ आसीन होकर* - **इह निषद्य।** इह वेद्याम् अवस्थाय - सा.। युक्ते धर्म्ये व्यवहारे निषण्णो भूत्वा - दया.। do thou take thy seat in us - Ar.

**हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच।**
**इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहम् अग्ने अनुशिष्ट आगाम्।। ८।।**

हृणीयमानः। अप। हि। मत्। ऐयेः। प्र। मे। देवानाम्। व्रतऽपाः। उवाच।
इन्द्रः। विद्वान्। अनु। हि। त्वा। चचक्ष। तेन। अहम्। अग्ने। अनुऽशिष्टः। आ। अगाम्।। ८।।

*'क्रोध करता हुआ परे निश्चय से, मुझसे चला जाएगा तू',*
*स्पष्ट मुझे, देवों से व्रतों का पालन कराने वाले ने, बताया है।*
*इन्द्र ने सर्वज्ञ ने, ओर निश्चय से तेरी देखा, (यह कहकर),*
*इसलिये मैं, हे अग्ने!, शिक्षित होकर (उससे) आ गया (पास तेरे)।। ८।।*

इन्द्रिय आदि दिव्य शक्तियों से उनके कर्तव्यों और नियमों का पालन कराने वाले मेरे मन ने मुझे स्पष्ट रूप से बताया है, कि यदि तुम इस अग्रणी परमेश्वर को अपने विपरीत आचरण से नाराज कर दोगे, तो निश्चित ही यह क्रुद्ध होकर तुमसे दूर चला जाएगा। यह कहकर उसने तुम्हारी ओर निहारा, अर्थात् मुझे तुम्हारी शरण में आने का संकेत किया। इसलिये हे सबको सन्मार्ग पर ले चलने वाले जगदीश! उसकी सीख से मैं तेरी शरण में आ गया हूँ।

टि. *क्रोध करता हुआ* - **हृणीयमानः।** ब्रह्महत्यया क्रुध्यन् - वे.। क्रुध्यन् - सा.। दया.।

*परे मुझसे चला जाएगा तू* - **अप मत् ऐयेः।** मत्तः अप अगमः - वे.। मत्तो ऽपागाः। ई गताव् इत्यस्माच् श्यन्विकरणाल् लङि मध्यमे छान्दसे परस्मैपद आडागमे वृद्धौ व्यत्ययेन श्यनो ऽकारस्य एकारे च कृते रूपम्। सा.। अप मत् गच्छेः - दया.।

*देवों से व्रतों का पालन कराने वाले ने* - **देवानां व्रतपाः।** देवानां कर्मणः पालकः - सा.। विदुषां सत्यरक्षकः - दया.। the protector of the worship of the gods - W. the protector of God's Laws - G. he who guards the law of working of the gods - Ar.

*ओर तेरी देखा* - **अनु त्वा चचक्ष।** त्वां ददर्श - सा.। अनु त्वां कथयेत् - दया.। has looked upon thee - W. bent his eye upon thee - G. saw thee - Ar.

**वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निर् आविर् विश्वानि कृणुते महित्वा।**

**प्रादेवीर् मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे।। ९।।**

वि। ज्योतिषा। बृहता। भाति। अग्निः। आविः। विश्वानि। कृणुते। महिऽत्वा।
प्र। अदेवीः। मायाः। सहते। दुःऽएवाः। शिशीते। शृङ्गे इति। रक्षसे। विऽनिक्षे।। ९।।

*विशेष रूप से ज्योति के साथ महान् के, प्रदीप्त होता है अग्नि,*
*प्रकट सब (पदार्थों) को कर देता है, माहात्म्य से (अपने)।*
*खूब आसुरी शक्तियों को अभिभूत करता है, दुष्ट गति वालियों को,*
*तीक्ष्ण करता है सींगों को, राक्षसों के विनाश के लिये।। ९।।*

वह दिव्यज्योति परमेश्वर अपने महान् तेजों के साथ प्रकाशित होता है और अपने माहात्म्य से जगत् के सब पदार्थों को प्रकट कर देता है। वह दुष्ट चेष्टाओं वाली आसुरी शक्तियों को पराभूत कर देता है। वह राक्षसी स्वभाव वाले जनों के विनाश के लिये अपने दुष्टविनाशक साधनों को सदा तैयार रखता है।

टि. *आसुरी शक्तियों को* - **अदेवीः मायाः**। राक्षसीश् च मायाः - वे.। अदेवनशीला आसुरीर् मायाः - सा.। अशुद्धाः छलादियुक्ताः प्रज्ञाः - दया.। undivine delusions - W. godless enchantments - G. the workings of knowledge that are undivine - Ar.

*दुष्ट गति वालियों को* - **दुरेवाः**। दुष्टगमनाः - वे.। दुःखगमनाः - सा.। दुष्टम् एवः प्रापणं कर्म यासां ताः - दया.। malignant - W. malign - G. evil in their impulse - Ar.

*तीक्ष्ण करता है सींगों को* - **शिशीते शृङ्गे**। तीक्ष्णीकुरुते शृङ्गे - वे.। शिशीते तीक्ष्णीकरोति शृङ्गे शृङ्गाणि, शृङ्गसदृशीर् हिंसिका वा ज्वालाः - सा.।

*राक्षसों के विनाश के लिये* - **रक्षसे विनिक्षे**। रक्षसो विनाशाय - वे.। सा.। *Rakṣasas :* a collective noun signifying the whole race of Rākṣasas; originally, harm, injury - G.

**उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेस् तिग्मायुधा रक्षसे हन्तवा उ।**
**मदे चिद् अस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः।। १०।।**

उत। स्वानासः। दिवि। सन्तु। अग्नेः। तिग्मऽआयुधाः। रक्षसे। हन्तवै। ऊँ इति।
मदे। चित्। अस्य। प्र। रुजन्ति। भामाः। न। वरन्ते। परिऽबाधः। अदेवीः।। १०।।

*और शब्दवती ज्वालाएं, आकाश में (प्रकट) होवें अग्नि की,*
*तीक्ष्ण आयुधों वाली, राक्षसों को मारने के लिये निश्चय से।*
*हर्ष में इस (सोम) के भी, खूब दुःखी करते रहें तेज,*
*नहीं बाधित करती हैं (इसको), बाधाएं आसुरी।। १०।।*

सब कुछ अपने पास ही रख लेने के स्वभाव वाले दुष्ट असुरवृत्ति जनों के हनन के लिये उस अग्रणी परमेश्वर की आयुधों के रूप में धारण की जाने वाली शब्दायमान क्रोधरूपी ज्वालाएं सदा आकाश में और पृथिवी पर प्रकट होती रहें, ताकि जगत् में सुख और शान्ति का साम्राज्य बना रहे। अपने उपासकों की स्तुतियों के आनन्द से आनन्दित इस प्रभु के तेज दुष्ट पापी जनों को दण्डित करते रहें। वह जगदीश्वर सर्वशक्तिमान् और सर्वमहान् है। आसुरी वृत्ति वाले दुष्ट जनों के द्वारा

उत्पन्न किये हुए विघ्न और बाधाएं उसके कार्यों को कभी रोक नहीं सकतीं।

टि. *शब्दवती ज्वालाएं* - **स्वानासः**। स्वननशीलाः अग्नेः भानवः - वे.। शब्दं कुर्वाणा ज्वालाः - सा.। उपदेशकाः - दया.। roaring (flames) - W. voices of the Fire - Ar.

*खूब दुःखी करते हैं तेज* - **प्र रुजन्ति भामाः**। प्र हिंसन्ति राक्षसान् भानवः - वे.। भामाः क्रोधा दीप्तयो वा प्रकर्षेण भङ्गं गच्छन्ति पीडयन्ति वा - सा.। प्रभञ्जन्ति क्रोधाः- दया.। his shining (rays) inflict (destruction) - W. forth burst his splendours - G. angers break down - Ar.

*नहीं बाधित करती हैं बाधाएं* - **न वरन्ते परिबाधाः**। न वारयन्ति राक्षस्यः मायाः - वे.। परितो बाधिका आसुर्यः सेना न वारयन्ति - सा.। न इव वरन्ते स्वीकुर्वन्ति सर्वतो बाधनानि - दया.। opposing (hosts) arrest him not - W. obstructions cannot hem him in - Ar.

**एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्।**
**यदीद् अग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीर् अप एना जयेम।। ११।।**

एतम्। ते। स्तोमम्। तुविऽजात। विप्रः। रथम्। न। धीरः। सुऽअपाः। अतक्षम्।
यदि। इत्। अग्ने। प्रति। त्वम्। देव। हर्याः। स्वःऽवतीः। अप। एन। जयेम।। ११।।

*इसको तेरे लिये स्तोत्र को, हे बहुत रूपों में प्रादुर्भूत!, मेधावी ने,*
*रथ को जैसे (बनाता है) धीमान् शोभनकर्मा, बनाया है मैंने।*
*यदि ही, हे अग्ने!, तू हे देव!, स्वीकार करे इसको,*
*स्वर्लोक वाले जलों को, इससे प्राप्त करें हम।। ११।।*

हे जगत् में विविध रूपों में प्रकट होने वाले विश्वरूप परमेश्वर! जिस प्रकार कोई श्रेष्ठ कर्मकुशल, बुद्धिमान् बढ़ई रथ का निर्माण करता है, उसी प्रकार मुझ मेधावी उपासक ने तेरे लिये इस स्तोत्र का सम्पादन किया है। हे सबको सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले, दान दिव्यता आदि गुणों से युक्त जगदीश्वर! यदि तू मेरे इस स्तोत्र को स्वीकार कर लेगा, तो मुझे इससे जल, प्रकाश, ज्ञान आदि पारलौकिक सुखों की प्राप्ति होगी।

टि. *हे बहुत रूपों में प्रादुर्भूत* - **तुविजात**। हे बहुजनन - वे.। बहुभावम् आपन्नाग्ने - सा.। बहुषु विद्वत्सु प्रसिद्ध - दया.। born with many faculties - W. of the many births - Ar.

*धीमान्* - **धीरः**। धृष्टः - वे.। steady - W. skilled - G. the thinker - Ar.

*शोभनकर्मा* - **सुऽअपाः**। सुकर्मा - वे.। शोभनकर्मा - सा.। सुष्ठुकर्मा - दया.। dexterous (artisan) - W. crafts-man - G. the man of perfect works - Ar.

*स्वीकार करे* - **प्रति हर्याः**। प्रति कामयेथाः - वे.। सा.। thou approve of it - W. thou accept it gladly - G. if thou shouldst take an answering joy in it - Ar.

*स्वर्लोक वाले जलों को* - **स्वर्वतीः अपः**। शोभनगुणाः अपः - वे.। स्वरणवतीर् व्याप्तिमतीर् अपः - सा.। abudant flowing water - W. the heavenly waters - G. the waters that carry the light of the sun-world - Ar.

**तुविग्रीवो वृषभो वावृधानो ऽशत्र्वर्यः सम् अजाति वेदः।**
**इतीमम् अग्निम् अमृता अवोचन् बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्**
**धविष्मते मनवे शर्म यंसत्॥ १२॥ १५॥**

तुविऽग्रीवः। वृषभः। ववृधानः। अशत्रु। अर्यः। सम्। अजाति। वेदः।
इति। इमम्। अग्निम्। अमृताः। अवोचन्। बर्हिष्मते। मनवे। शर्म। यंसत्।
हविष्मते। मनवे। शर्म। यंसत्॥ १२॥

*मजबूत ग्रीवा वाला, सुखवर्षक, वृद्धि को प्राप्त होता हुआ,*
*शत्रुरहित को, न देने वाले के सम्यक् प्राप्त कराए धन को।*
*यह बात अग्नि को अमरणधर्मा देव कहते हैं,*
*दर्भासन पर आसीन मनुष्य को, सुख प्रदान करे वह,*
*हवि देने वाले मनुष्य को, सुख प्रदान करे वह॥ १२॥*

दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने वाले सभी विद्वान् अग्रणी परमेश्वर को यही बात कहते हैं, यही प्रार्थना करते हैं, कि संहार के समय समस्त ब्रह्माण्ड को निगल जाने के कारण दृढग्रीव कहलाने वाला, सब पर सुखों की वर्षा करने वाला, निरन्तर वृद्धि को ही प्राप्त करने वाला वह परमेश्वर धनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाले और दूसरों को न देने वाले आसुरी वृत्ति वाले दुष्ट शत्रुजनों से धनों को छीनकर नियमों का पालन करने वाली साध्वी प्रजाओं में वितरित करता रहे। जो मनुष्य यज्ञवेदि पर दर्भासन पर आसीन होकर उसे अपनी हवियां और नैवेद्य समर्पित करता है, उसे वह सदा सुख प्रदान करता रहे।

टि. *मजबूत ग्रीवा वाला* - **तुविग्रीवः**। तुविर् बलवती दृढा ग्रीवा यस्य सः। ग्रीवा गिरतेर् वा - या.(नि. २.२८)॥ बहुकण्ठः - वे.। बहुज्वालः प्रभूतग्रीवो वा - सा.। बहुबलयुक्तः सुन्दरी वा ग्रीवा यस्य सः - दया.। many-necked - W. stroong-necked - G. with the neck of might - Ar.

*शत्रुरहित को, न देने वाले के सम्यक् प्राप्त कराए धन को* - **अशत्रु अर्यः सम् अजाति वेदः**। शत्रुरहितं धनं सम् गमयति स्वामी - वे.। अर्यो ऽरेर् वेदो धनम् अशत्र्वकण्टकं सम् अजाति संयोजयति - सा.। अशत्रु अविद्यमानाः शत्रवो यस्य तम्, अर्यः स्वामी, सम् अजाति प्राप्नुयात्, वेदः धनम् - दया.। collects together the wealth of the enemy without opposition - W. G.

*दर्भासन पर आसीन मनुष्य को* - **बर्हिष्मते मनवे**। बर्हिष्मते मनुष्याय - वे.। यागवते मनुष्याय - सा.। प्रवृद्धज्ञानाय मनुष्याय - दया.। on the man who offers sacrifice - W. to man who spreads the grass - G.

*प्रदान करे* - **यंसत्**। प्रयच्छतु - वे.। सा.। will bestow - W. may he grant - G. he may work out - Ar.

## सूक्त ३

ऋषिः - वसुश्रुत आत्रेयः। देवता - १-२,४-१२ अग्निः, ३ मरुद्रुद्रविष्णवः। छन्दः - १ विराट्, २-१२ त्रिष्टुप्। द्वादशर्चं सूक्तम्।

**त्वम् अग्ने वरुणो जायसे यत् त्वं मित्रो भवसि यत् समिद्धः।**
**त्वे विश्वे सहसस् पुत्र देवास् त्वम् इन्द्रो दाशुषे मर्त्याय॥ १॥**

त्वम्। अग्ने। वरुणः। जायसे। यत्। त्वम्। मित्रः। भवसि। यत्। सम्ऽइद्धः।
त्वे इति। विश्वे। सहसः। पुत्र। देवाः। त्वम्। इन्द्रः। दाशुषे। मर्त्याय॥ १॥

*तू, हे अग्ने!, वरुण (होता है), उत्पन्न होता है जब,*
*तू मित्र होता है, जब प्रज्वलित (हो जाता है)।*
*तेरे अन्दर (हैं) सब, हे बल के बहुत्राता!, देव,*
*तू इन्द्र (हो जाता है), हविदाता मनुष्य के लिये॥ १॥*

हे सबका नेतृत्व करने वाले प्रभो! जब तू ब्रह्माण्ड के रूप में प्रादुर्भूत होता है, तो समस्त ब्रह्माण्ड को सर्वतः आवृत करके स्थित होने के कारण तू वरुण कहलाता है। जगत्सृष्टि के पश्चात् जब उपासकों के द्वारा तुझे अपने अन्तःकरण में प्रज्वलित करके आहुतियां समर्पित की जाती हैं, तो उपासकों का विनाश से त्राण करने और उनके साथ मैत्री करने के कारण तू मित्र कहलाता है। हे बलों की बहुत प्रकार से रक्षा करने वाले जगदीश! सब दिव्य शक्तियां तेरे अन्दर ही निवास करती हैं। तू नैवेद्य समर्पित करने वाले मरणधर्मा मनुष्यों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाला परमेश्वर है।

टि. *वरुण* – **वरुणः**। वरुणो वृणोतीति सतः (नि. १०.३)॥ तमसां वारको रात्र्यभिमानी देवः - सा.। दुष्टानां बन्धकृच् छ्रेष्ठः – दया.। regarded as the type of royalty - G.

*मित्र* – **मित्रः**। मित्रः प्रमीतेः त्रायते मेदयतेर् वा (नि. १०.२१)॥ अहरभिमानी देवः प्रमीतेस् त्राता – सा.। सखा – दया.। the friendly, beneficent God - G.

*हे बल के बहुत्राता* – **सहसः पुत्र**। पुत्रः पुरु त्रायते (नि. २.११)॥ सहसः पुत्रः बलेन मथ्यमानत्वात् – सा.। बलस्य पालक – दया.। son of strength -W. O son of Force - Ar. O source of strength - Satya.

**त्वम् अर्यमा भवसि यत् कनीनां नाम स्वधावन् गुह्यं बिभर्षि।**
**अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर् यद् दम्पती समनसा कृणोषि॥ २॥**

त्वम्। अर्यमा। भवसि। यत्। कनीनाम्। नाम। स्वधाऽवन्। गुह्यम्। बिभर्षि।
अञ्जन्ति। मित्रम्। सुऽधितम्। न। गोभिः। यत्। दम्पती इति दम्ऽपती। सऽमनसा। कृणोषि॥ २॥

*तू अर्यमा हो जाता है, जब कन्याओं के विषय में,*
*नाम को, हे स्वनियमधारक!, गोपनीय को धारण करता है तू।*
*मालिश करते हैं (तुझ) मित्र की, सुहित की तरह, घृतों से,*
*जब घर के स्वामी स्वामिनी को, समान मनों वाले बनाता है तू॥ २॥*

हे अग्रणी परमेश्वर! कन्याओं के विषय में तू काम आदि शत्रुओं पर नियन्त्रण रखने वाला अर्यमा कहा जाता है। हे अपने नियमों को स्वयं धारण करने और कराने वाले जगदीश्वर! तू 'क', 'तद्वन' आदि गुह्य नामों को धारण करने वाला है। विवाह के समय जब तू पत्नी और पति को प्रेमसूत्र में बाँधकर समान मनों वाला बनाता है, तो जिस प्रकार उत्तम हितकारी मित्र का दूध, घी आदि के द्वारा

आदर-सत्कार किया जाता है, उसी प्रकार दूध, घृत आदि की आहुतियों से तेरा भी आदर-सत्कार किया जाता है।

टि. *अर्यमा* - **अर्यमा**। सर्वेषां नियमिता - सा.। न्यायाधीशः - दया.।

*कन्याओं के विषय में* - **कनीनाम्**। यदा विवाहे कन्यानाम् अर्थाय समिध्यसे - वे.। कन्यकानां सम्बन्धी - सा.। कामयमानानाम् - दया.। in relation to maidens - W. as regardeth maidens - G. (when thou bearest the secret name) of the Virgins - Ar.

हे *स्वनियमधारक* - **स्वधावन्**। हे हविर्लक्षणान्नवन् - सा.। प्रशस्तान्नयुक्त - दया.। enjoyer of sacrificial food - W. O Self-sustainer - G. O holder of the self-law - Ar.

*मित्र की सुहित की तरह* - **मित्रम् सुधितम् न**। सखायम् इव दृढं सुष्ठु निहितम् - वे.। सुष्ठु निहितं मित्रम् इव - सा.। सखायं सुष्ठु प्रसन्नम् इव - दया.। like a welcome friend - W. as a kind friend - G. as Mitra firmly founded - Ar.

*घृतों से* - **गोभिः**। गोविकारैः पयःप्रभृतिभिः - वे.। विकारे प्रकृतिशब्दः - सा.। वागादिभिः - दया.। with milk and butter - W. with streams of milk - G. with the Rays - Ar.

*स्वामी और स्वामिनी को* - **दम्पती**। जायापती - वे.। सा.। husband and wife - W. wife and lord - G. the Lord of the house and Spouse - Ar. For a detailed discussion on the word *Dampatī* see Author's *Semantic Change in Sanskrit*, pp.56-57.

**तव॑ श्रि॒ये म॒रुतो॑ मर्जयन्त॒ रुद्र॒ यत् ते॒ जनि॑म॒ चारु॑ चि॒त्रम्।**
**प॒दं यद् विष्णो॑र् उप॒मं नि॒धायि॒ तेन॑ पासि॒ गुह्यं॒ नाम॒ गोना॑म्॥ ३॥**

तव॑। श्रि॒ये। म॒रुतः॑। म॒र्ज॒य॒न्त॒। रुद्र॑। यत्। ते॒। जनि॑म। चारु॑। चि॒त्रम्।
प॒दम्। यत्। विष्णोः॑। उ॒प॒ऽमम्। नि॒ऽधायि॑। तेन॑। पा॒सि॒। गुह्य॑म्। नाम॑। गोना॑म्॥ ३॥

*तेरी शोभा के लिये, मरुत् मार्जन करते हैं (तेरा),*
*हे रुद्र! जो तेरा जन्म है, सुन्दर (और) अद्भुत।*
*पद जो विष्णु का, उच्चतम रखा जाता है,*
*उससे रक्षा करता है तू, गुप्त नाम की गौओं के॥ ३॥*

हे दुष्टों को रुलाने वाले परमेश्वर! जगत् के रूप में तेरा यह प्रादुर्भाव अत्यन्त सुन्दर और अनोखा है। वायुगण तेरी शोभा के लिये इस जगत् का शोधन करते हैं, पर्यावरण की शुद्धि करते हैं। सर्वव्यापक होते हुए भी तुझ प्रभु के द्वारा अपने लिये जो विशेष उच्चतम अगम्य स्थान (विष्णोः परमं पदम्) निश्चित् किया गया है, तू वहीं पर स्थित होकर जलों, प्रकाशों, ज्ञानरश्मियों आदि गूढ़ सुखसाधनों की सदा रक्षा करता रहता है।

टि. *शोभा के लिये* - **श्रिये**। श्र्यर्थम् - वे.। श्रयणाय - सा.। for the glory - W. G.

*मरुत् मार्जन करते हैं* - **मरुतः मर्जयन्त**। मरुतः परिचरन्ति - वे.। अपो ऽन्तरिक्ष्या मार्जयन्ति - सा.। मनुष्याः शोधयन्तु - दया.। Maruts sweep the firmament - W. The Maruts deck their beauty - G. the life-powers make bright (thy birth) - Ar.

सुन्दर *(और)* *अद्भुत* – **चारु चित्रम्।** चारु चरणीयं चित्रं चायनीयम् – सा.। चारु सुन्दरम्, चित्रम् अद्भुतम् – दया.।

*पद जो विष्णु का उच्चतम रखा जाता है* – **पदम् यत् विष्णोः उपमम् निधायि।** पदम् यत् विष्णोः अन्तिकं निधायि – वे.। विष्णोर् व्यापनशीलस्य देवस्योपमं गुह्यम् अगम्यम् यत् पदम् अधायि – सा.। विष्णोः व्यापकस्येश्वरस्य – दया.। the middle step of Viṣṇu has been placed - W. that which was fixed as Viṣṇu's loftiest station - G. when the highest step of Viṣṇu is founded within - Ar.

*गुप्त नाम की गौओं के* – **गुह्यम् नाम गोनाम्।** गोनाम् उदकानां गुह्यं नाम नामानि – सा.। गोनाम् इन्द्रियाणां किरणानां वा – दया.। the mysterious name of the waters - W. the secret of the Cows - G. the secret name of the Ray-cows - Ar.

**तव॑ श्रि॒या सु॒दृशो॑ देव दे॒वाः पु॒रू दधा॑ना अ॒मृतं॑ सपन्त।**
**होता॑रम् अ॒ग्निं मनु॑षो॒ नि षे॑दुर् दश॒स्यन्त॑ उ॒शिजः॒ शंस॑म् आ॒योः।। ४।।**

तव॑। श्रि॒या। सु॒ऽदृशः॑। दे॒व॒। दे॒वाः। पु॒रु। दधा॑नाः। अ॒मृत॑म्। स॒प॒न्त॒।
होता॑रम्। अ॒ग्निम्। मनु॑षः। नि। से॒दुः। द॒श॒स्यन्तः॑। उ॒शिजः॑। शंस॑म्। आ॒योः।। ४।।

*तेरे आश्रय से, शोभन चिन्तनों वाले, हे देव!, विद्वज्जन,*
*बहुत (तेजों को) धारण करते हुए, अमृत का आस्वादन करते हैं।*
*होता के अग्नि के पास मनुष्य (वेदि पर) बैठते हैं,*
*देते हुए हवि को, कामनाओं वाले, स्तुति को, जीवन के लिये।। ४।।*

हे दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त परमेश्वर! तेरे आसरे और सहारे से ही दैवी सम्पदाओं वाले उपासक जन बहुत प्रकार के तेजों, ऐश्वर्यों आदि को धारण करते हुए अमृत का पान करते हैं। अनेक प्रकार की कामनाओं वाले वे मननशील जन दीर्घ और उत्तम जीवन की प्राप्ति के लिये सबका सन्मार्ग में आह्वान करने वाले तुझ अग्रणी जगदीश्वर को अपनी हवियां और स्तुतियां समर्पित करते हुए तेरी उपासना करते हैं।

टि. *आश्रय से* – **श्रिया।** ज्वालया – वे.। समृद्ध्या – सा.। शोभया लक्ष्म्या वा – दया.। by thy glory - W. Ar. through thy glory - G.

*शोभन चिन्तनों वाले* – **सुदृशः।** सुदर्शाः – वे.। ये सुष्ठु पश्यन्ति – दया.। (made) comely - W. who art so lovely - G. who hast the true seeing - Ar.

*बहुत (तेजों को) धारण करते हुए* – **पुरु दधानाः।** पुरु धनं प्रयच्छन्तः – वे.। अत्यधिकं त्वयि प्रीतिं धारयन्तः – सा.। बहु धरन्तः – दया.। bearing (the) great (affection) - W. granting abundant gifts - G. hold a multiple completeness - Ar.

*अमृत का आस्वादन करते हैं* – **अमृतम् सपन्त।** हविः सचन्ते – वे.। अमृतं स्पृशन्ति – सा.। मृत्युरहितम् आक्रोशन्ति – दया.। sip the ambrosia - W. gained life immortal - G. taste (or touch) immortality - Ar.

देते हुए हवि को - **दशस्यन्तः**। प्रयच्छन्तः हविः - वे.। हविर् वितरन्तः - सा.। विस्तारयन्तः - दया.। presenting oblations - W. making a gift - Ar.

*स्तुति को जीवन के लिये* - **शंसम् आयोः**। मनुष्यस्य शंसनीयम् - वे.। शंसं फलम्, आयोर् मनुष्यस्य यजमानस्यार्थम् - सा.। शंसम् शंसन्ति येन तम्, आयोः जीवनस्य - दया.। serve him fain for praise for him who liveth - G. of the self-expression of the human being - Ar.

**न त्वद् धोता पूर्वो अग्ने यजीयान् न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः।**
**विशश् च यस्या अतिथिर् भवासि स यज्ञेन वनवद् देव मर्तान्।। ५।।**

न। त्वत्। होता। पूर्वः। अग्ने। यजीयान्। न। काव्यैः। परः। अस्ति। स्वधाऽवः।
विशः। च। यस्याः। अतिथिः। भवासि। सः। यज्ञेन। वनवत्। देव। मर्तान्।। ५।।

*नहीं तुझसे होता प्राचीनतर है, हे अग्ने!, (नहीं) पूज्यतर,*
*नहीं ऋषिदृष्टियों में बढ़कर है (तुझसे), हे स्वाधीन।*
*घर का भी जिसके, अतिथि हो जाता है तू,*
*वह यज्ञ के द्वारा जीत लेता है, हे देव!, मनुष्यों को।। ५।।*

हे सबको सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! तुझसे प्राचीनतर कोई भी यज्ञ का सम्पादन करने वाला और तुझसे अधिक पूजा के योग्य नहीं है। हे पूर्णतः स्वतन्त्र! ऋषिदृष्टियों में भी तुझसे बढ़कर कोई नहीं है। हे दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त परमेश्वर! जिस भी घर में अथवा मानव शरीर में तुझे अतिथि के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है, तो उसका गृहस्वामी यज्ञ आदि निष्काम कर्मों के द्वारा सब मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है।

टि. *प्राचीनतर* - **पूर्वः**। प्रथमः - वे.। पूरकः पुराणो वा - सा.। prior (to thee) - W. who precedes thee - Ar.

*पूज्यतर* - **यजीयान्**। यष्टृतरः - वे.। यष्टा वा - सा.। अतिशयेन यष्टा - दया.। more venerable - W. mightier for sacrifice - Ar.

*ऋषिदृष्टियों में बढ़कर* - **काव्यैः परः**। स्तोत्रैः परः - वे.। काव्यैः स्तोत्रैः स्तुत्यः परः परस्तात् परस्मिन्नपि काले - सा.। काव्यैः कविभिर् निर्मितैः, परः श्रेष्ठः - दया.। (neither) is any one subsequent to be more glorified by hymns - W. (none) passes thee in wisdom - G. supreme over thee in the seer-wisdoms - Ar.

*हे स्वाधीन* - **स्वधावः**। हे अन्नवन् - वे.। सा.। बहुधनधान्ययुक्त - दया.। giver of food - W. Self-sustainer - G. O master of the self-law - Ar.

*घर का* - **विशः**। विशन्ति अस्याम् इति विट् गृहम्, तस्य।। प्रजाया ऋत्विग्रूपायाः - सा.। प्रजायाः - दया.। of the man - W. Ar. within whose house - G.

*जीत लेता है* - **वनवत्**। भजते - वे.। वनवद् वृश्चति हिनस्ति। यद्वा। संभजेत्। सा.। सेवयसि - दया.। destroys - W. shall conquer - G. conquers - Ar.

**वयम् अग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः।**

**वयं समर्ये विदथेष्वह्नां वयं राया सहसस् पुत्र मर्तान्।। ६।। १६।।**

वयम्। अग्ने। वनुयाम। त्वाऽऊताः। वसुऽयवः। हविषा। बुध्यमानाः।
वयम्। सऽमर्ये। विदथेषु। अह्नाम्। वयम्। राया। सहसः। पुत्र। मर्तान्।। ६।।

*हम, हे अग्ने!, विजय प्राप्त करें, तुझसे संरक्षित होकर,*
*धनों की कामना करते हुए, हवि से बोध को पाते हुए।*
*हम संघर्ष में, ज्ञानगोष्ठियों में, दिनों के (मध्य),*
*हम धन में, हे बल के पालक!, (जीतें) मनुष्यों को।। ६।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! हम उपासक जन लौकिक और अलौकिक ऐश्वर्यों की कामना वाले होकर, आहुतिदान आदि शुभ कर्मों को करके ज्ञान की प्राप्ति करते हुए तेरे संरक्षण में विजयों को प्राप्त करें। हे बल के पालक! अथवा अपने ही बल से प्रादुर्भूत! हम सभी दिनों में जीवन के संघर्षों में और ज्ञानगोष्ठियों में विजयों को प्राप्त करें। हम तुझसे रक्षा पाकर लौकिक और अलौकिक धनों की प्राप्ति में सब मनुष्यों को पीछे छोड़ दें।

टि. *विजय प्राप्त करें* – **वनुयाम।** प्रयच्छेम – वे.। वनुयाम शत्रून् पीडयाम संभजेमहि वा धनम् – सा.। याचेमहि – दया.। may we acquire - W. may we conquer - G. may we win - Ar.

*हवि से बोध को पाते हुए* – **हविषा बुध्यमानाः।** हविषा दीयमानेन त्वया बुध्यमानाः – वे.। हविषा त्वां बोधयन्तः – सा.। हविषा दानेन – दया.। arousing thee by oblations - W. through our oblations, awakened - G. by the offering, awakened (by thee) - Ar.

*ज्ञानगोष्ठियों में* – **विदथेषु।** यज्ञेषु – वे.। यागेषु – सा.। विज्ञानव्यवहारेषु – दया.। in sacrifices - W. in assemblies - G. in our discoveries of knowledge - Ar.

*हे बल के पालक* – **सहसः पुत्र।** पुरु त्रायत इति पुत्रः।। बलस्य पुत्र पालक वा – सा.। बलस्य पालक – दया.। son of strength - W. G. O son of force - Ar.

**यो न आगो अभ्येनो भरात्यधीद् अघम् अघशंसे दधात।**
**जही चिकित्वो अभिशस्तिम् एताम् अग्ने यो नो मर्चयति द्वयेन।। ७।।**

यः। नः। आगः। अभि। एनः। भराति। अधि। इत्। अघम्। अघऽशंसे। दधात।
जहि। चिकित्वः। अभिऽशस्तिम्। एताम्। अग्ने। यः। नः। मर्चयति। द्वयेन।। ७।।

*जो हमारी ओर अपराध को, पाप को, लाता है,*
*ऊपर ही (उस) पाप को, (उस) पापी पर स्थापित कर देवे।*
*नष्ट कर दे तू, हे सर्वज्ञ!, पापाचारिता को इसको,*
*हे अग्ने!, (नष्ट कर उसे भी), जो हमें बाधता है इन दोनों से।। ७।।*

हे सबको सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश! जो दुराचारी मनुष्य हमारे प्रति अपराध अथवा पाप का आचरण करता है, तू उस अपराध अथवा पाप को उसी दुराचारी पर स्थापित कर दे, उसी को उसका भाजन बना दे। हे वास्तविकता को जानने वाले परमेश्वर! तू उस पापाचारिता को समूल नष्ट कर दे और उस पापी को भी नष्ट कर दे, जो पाप और अपराध इन दोनों से हमें

हानि पहुँचाता है।

टि. *अपराध को* – **आगः**। अपराधम् – सा.। दया.। offence - W.

*पाप को* – **एनः**। पापं च – वे.। सा.। दया.। wickedness - W.

*(उस) पापी पर स्थापित कर देवे* – **अघशंसे दधात**। तस्मिन् अघशंसे अधि दधात ददात्वग्निः – सा.। स्तेने दध्यात् – दया.। may inflict upon the evil-doer - W. He shall bring evil on the evil-plotter - G.

*नष्ट कर दे तू* – **जहि**। अत्र द्व्यचो ऽतस् तिङ इति दीर्घः – दया.। destroy - W.

*जो हमें बाधता है इन दोनों से* – **यः नः मर्चयति द्वयेन**। यः अस्मान् आगसा एनसा च बाधते – वे.। यो ऽस्मान् द्वयेनोक्तेनागसैनसा वा मर्चयति बाधते – सा.। दया.। who injures us in these two ways - W. whoever injures us with double-dealing - G.

**त्वाम् अ॒स्या व्युषि॑ देव॒ पूर्वे॑ दू॒तं कृ॑ण्वा॒ना अ॑यजन्त ह॒व्यैः।**
**सं॒स्थे यद् अ॑ग्न॒ ईय॑से र॒यी॒णां दे॒वो मर्तै॒र् वसु॑भिर् इ॒ध्यमा॑नः।। ८।।**

त्वाम्। अ॒स्याः। वि॒ऽउषि॑। दे॒व॒। पूर्वे॑। दू॒तम्। कृ॒ण्वा॒नाः। अ॒य॒ज॒न्त॒। ह॒व्यैः।
स॒म्ऽस्थे। यत्। अ॒ग्ने॒। ईय॑से। र॒यी॒णाम्। दे॒वः। मर्तैः॑। वसु॑ऽभिः। इ॒ध्यमा॑नः।। ८।।

*तुझको इस रात्रि के उषाकाल में, हे देव!, पूर्वज,*
*शत्रुसन्तापक स्वीकार करते हुए, पूजते रहे हैं हव्यों से।*
*संस्थान में जब, हे अग्ने!, गमन करता है तू धनों के,*
*द्योतमान, मनुष्यों के द्वारा वासकों के, प्रज्वलित किया जाता हुआ।। ८।।*

हे दान, दिव्यता आदि दैवी गुणों से सम्पन्न जगदीश्वर! प्राचीन काल से ही उपासक जन अपने जीवन के उषाकाल से प्रारम्भ करके तुझे हिंसक जनों का सन्तापक स्वीकार करते हुए अपने समर्पणों के द्वारा तेरी पूजा करते आए हैं। उस समय, हे अग्रणी परमेश्वर!, अपने हृदयमन्दिरों में तुझे बसाने वाले मनुष्यों के द्वारा स्तुति किया जाता हुआ तू बाह्य और आभ्यन्तर धनों के आगार में गमन करता है, अर्थात् उन्हें लौकिक और अलौकिक उभयविध ऐश्वर्य प्रदान करता रहता है।

टि. *इस रात्रि के उषाकाल में* – **अस्याः व्युषि**। रात्रेर् विवासे – वे.। अस्या रात्रेर् व्युष्टायाम् उषसीत्यर्थः – सा.। अस्याः प्रजाया मध्ये सेवसे – दया.। at the dawn of the day - W. at this dawn's flushing - G. in the dawning of this night - Ar.

*शत्रुसन्तापक स्वीकार करते हुए* – **दूतम् कृण्वानाः**। देवानां प्रेरकं कुर्वाणाः – सा.। दूतम् यो दुनोति शत्रूंस् तम् – दया.। constituting thee the messenger (of the gods) - W. making thee their envoy - G.

*संस्थान में धनों के* – **संस्थे रयीणाम्**। रयीणां संस्थाने युद्धे – वे.। रयीणां हविर्लक्षणानां संस्थे संस्थान आसादने सति – सा.। संस्थे सम्यक् तिष्ठन्ति यस्मिंस् तस्मिन् – दया.। to the store of wealth - G. to the House of the Treasures - Ar.

*मनुष्यों के द्वारा वासकों के* – **मर्तैः वसुभिः**। वासयितृभिः मनुष्यैः – वे.। मर्तैर् मनुष्यैर्

ऋत्विग्भिर् वसुभिर् वासकैः - सा.। मरणधर्मैर् मनुष्यैर् धनादियुक्तैः - दया.। wih good things by mortals - G. by mortals who have the light (or the riches) - Ar.

**अव॑ स्पृधि पि॒तरं॒ योधि॑ वि॒द्वान् पु॒त्रो यस् ते॑ सहसः सून ऊ॒हे।**
**कु॒दा चि॑कित्वो अ॒भि च॑क्षसे नो ऽग्ने॑ क॒दाँ ऋ॑त॒चिद् या॑तयासे।। ९।।**

अव॑। स्पृ॒धि॒। पि॒तर॑म्। योधि॑। वि॒द्वान्। पु॒त्रः। यः। ते॒। स॒ह॒सः॒। सू॒नो॒ इति॑। ऊ॒हे।
कु॒दा। चि॒कि॒त्वः॒। अ॒भि। च॒क्ष॒से॒। नः॒। अग्ने॑। कु॒दा। ऋ॒त॒ऽचित्। या॒त॒या॒से॒।। ९।।

*पार कर दे (भवसागर से), अलग कर दे (पाप से उसे); पिता समझता हुआ,*
*पुत्र जो तेरे लिये, हे बल के उत्पादक!, वहन करता है (हवियों को)।*
*कब, हे सर्वज्ञ!, ओर दृष्टिपात करेगा हमारी,*
*हे अग्ने!, कब ऋत का ज्ञाता तू, ले चलेगा (हमें मोक्ष की ओर)।। ९।।*

हे बलों को उत्पन्न करने वाले अथवा स्व अपने बल से प्रादुर्भूत होने वाले परमात्मन्! जो मनुष्य तुझे अपना पिता और स्वयं को तेरा पुत्र समझकर तेरे लिये हवि आदि समर्पणों को लाता है, तू उसको पापों से मुक्त कर दे और उसे इस भवसागर से पार कर दे। हे सर्वज्ञ परमेश्वर! तेरी कृपादृष्टि हमपर कब होगी? हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले जगदीश! तू सत्यनियमों का ज्ञाता है। तू हमें मोक्ष की ओर यात्रा कब कराएगा?

टि. *पार कर दे* - **अव स्पृधि।** अव प्रीणय (मदीयं पितरम्) - वे.। पारय - सा.। अभिकाङ्क्ष - दया.। rescue (thy father) - Ar.

*अलग कर दे (पाप से)* - **योधि।** पृथक् कुरु च तस्य शत्रुं (जानन्) - वे.। पृथक् कुरु पापात् - सा.। वियोजय - दया.। keep him safe - Ar.

*पिता समझता हुआ* - **पितरम् विद्वान्।** त्वां पितरं पालकं पितृभूतं विद्वान् जानन् - सा.।

*वहन करता है (हवियों को)* - **ऊहे।** अहं (तव पुत्रः) तुभ्यं हविर् वहामि - वे.। वहति हविः - सा.। वितर्कयामि - दया.। who bears thee - Ar.

*ऋत का ज्ञाता* - **ऋतचित्।** सत्यज्ञः - वे.। यज्ञस्योदकस्य वा चेतयिता - सा.। य ऋतं चिनोति सः - दया.। director of sacrifice - W. skilled in holy law - G. with thy Truth-consciousness - Ar.

*कब ले चलेगा (हमें मोक्ष की ओर)* - **कदा यातयासे।** कदा युद्धाय निर्गमयसि - वे.। कदा प्रेरयसि सन्मार्गेण - सा.। कदा प्रेरयेः - दया.। when dost thou direct us (to good ways) - W. when wilt thou set us to our journey - Ar.

**भूरि॒ नाम॒ वन्द॑मानो दधाति पि॒ता व॑सो॒ यदि॒ तज् जो॒षया॑से।**
**कुवि॒द् दे॒वस्य॒ सह॑सा चका॒नः सु॒म्नम् अ॒ग्निर् व॑नते वावृधा॒नः।। १०।।**

भूरि॑। नाम॑। वन्द॑मानः। द॒धा॒ति॒। पि॒ता। व॒सो॒ इति॑। यदि॑। तत्। जो॒षया॑से।
कु॒वित्। दे॒वस्य॑। सह॑सा। च॒का॒नः। सु॒म्नम्। अ॒ग्निः। व॒न॒ते॒। व॒वृ॒धा॒नः।। १०।।

*बहुत नाम की स्तुति करता हुआ, (उपासक) प्रदान करता है हवि को,*

*पालक (तू), हे बसाने वाले!, जब उसका सेवन करता है।*
*बहुत देने वाले की (हवि की), बल से (अपने) कामना करता हुआ,*
*सुख का अग्नि सेवन करता है, वृद्धि को प्राप्त होता हुआ।। १०।।*

हे सबको बसाने वाले और सबमें बसने वाले जगदीश्वर! उपासक हमेशा ही तेरे नाम का स्तवन करता है और तुझे अपनी हवियां समर्पित करता है। सबका पालक तू सर्वस्व को समर्पित करने वाले उस उपासक की स्तुति और नैवेद्य की अपने बल से कामना करता हुआ जब उसका सेवन करता है, तो आनन्द का अनुभव करता है और वृद्धि को प्राप्त होता है।

टि. *प्रदान करता है हवि को* - **दधाति**। प्रयच्छति - वे.। धारयति सामर्थ्याद् धविः - सा.।

*जब उसका सेवन करता है* - **यदि तत् जोषयासे**। यदि त्वं तत् सेवसे - वे.। सा.। दया.।

*बहुत* - **कुवित्**। बहु हविः - सा.। महत् - दया.। when thou acceptest this - G.

*देने वाले की* - **देवस्य**। व्यवहर्तुर् यजमानस्य। यद्वा कर्मणि षष्ठी। देवं यजमानम्। सा.। विदुषः - दया.। (in strength) of Godhead - G.

*कामना करता हुआ* - **चकानः**। दीप्यमानः - वे.। कामयमानः - सा.। दया.।

*सेवन करता है* - **वनते**। प्रयच्छति - वे.। सा.। सम्भजति - दया.। bestows upon him - W.

**त्वम् अ॒ङ्ग ज॑रि॒तारं॑ यविष्ठ॒ विश्वा॑न्यग्ने दुरि॒ताति॑ पर्षि।**
**स्ते॒ना अ॑दृश्रन् रि॒पवो॒ जना॒सो ऽज्ञा॑तकेता वृजि॒ना अ॑भूवन्।। ११।।**

त्वम्। अ॒ङ्ग। ज॒रि॒तार॑म्। य॒वि॒ष्ठ॒। विश्वा॑नि। अ॒ग्ने॒। दुः॒ऽइ॒ता। अति॑। प॒र्षि॒।
स्ते॒नाः। अ॒दृ॒श्र॒न्। रि॒पवः॑। जना॑सः। अज्ञा॑तऽकेताः। वृ॒जि॒नाः। अ॒भू॒व॒न्।। ११।।

*तू शीघ्र स्तोता को, हे युवतम!,*
*सबको, हे अग्ने!, कठिनाइयों को पार करा दे।*
*शैतान दिखाई दे रहे हैं, (और) शत्रु जन,*
*अज्ञात सोचों वाले, वर्जित हो जाएं (वे सब)।। ११।।*

हे जरा, जीर्णता आदि से रहित होकर सदा एकरस रहने वाले अग्रणी परमेश्वर! तू अपने स्तोता को सब प्रकार की विपत्तियों, कठिनाइयों आदि को अविलम्ब पार करा दे। इस समय धूर्त, कुटिल हिंसक जन हमें सब ओर दिखाई दे रहे हैं। पता नहीं, उनके मन में हमारे प्रति क्या-क्या दुर्भावनाएं हैं। आप की कृपा से वे सब हमसे दूर हो जाएं।

टि. *शीघ्र* - **अङ्ग**। क्षिप्रम् - वे.। स्वामिन् - सा.। मित्र - दया.। verily - W. G. indeed - Ar.

*पार करा दे* - **अति पर्षि**। अति पारय - वे.। अतिपारयसि - सा.। अति पर्षि अत्यन्तं पालयसि - दया.। thou bearest (safe) beyond (all calamities) - W. G. Ar.

*शैतान* - **स्तेनाः**। तस्कराः - सा.। चोराः - दया.। thieves - W. G. Ar.

*दिखाई दे रहे हैं* - **अदृश्रन्**। दृश्यन्ते - वे.। सा.। पश्यन्ति - दया.। have been detected - W. have been seen - G. are seen - Ar.

*अज्ञात सोचों वाले* - **अज्ञातकेताः**। अज्ञातनिवासस्थानाः - वे.। अप्रज्ञातचिह्नाः - सा.। अज्ञातः

केतः प्रज्ञा यैस् ते मूढाः – दया.। with covert evil intentions - W. even they who know not the light of intuitive knowledge - Ar.

*वर्जित हो जाएं* – **वृजिनाः अभूवन्।** चोदिता भवन्तु – वे.। वृजिना अस्माभिर् वर्जिता भवन्ति – सा.। पापाचारा वर्जनीया भवन्ति – दया.। have been avoided by us - W. and turn to crookedness - Ar.

**इमे यामासस् त्वद्रिग् अभूवन् वसवे वा तद् इद् आगो अवाचि।**
**नाहायम् अग्निर् अभिशस्तये नो न रीषते वावृधानः परा दात्।। १२।। १७।।**

इमे। यामासः। त्वद्रिक्। अभूवन्। वसवे। वा। तत्। इत्। आगः। अवाचि।
न। अह। अयम्। अग्निः। अभिऽशस्तये। नः। न। रीषते। ववृधानः। परा। दात्।। १२।।

*ये यात्राएं (हमारी), तेरी ओर मुड़ गई हैं,*
*और तुझ बसाने वाले को, वह अपराध बता दिया गया है।*
*नहीं निश्चय से यह अग्नि, निन्दक को हमें,*
*न हिंसक को (हमें), वृद्धि को प्राप्त होता हुआ सौंपे।। १२।।*

हे परमेश्वर! तू ही हमारा चरम लक्ष्य है। इसलिये हमने अपनी यात्राओं को तेरी ओर ही मोड़ दिया है। हम तेरी ही शरण में आ गए हैं। और हे सब को बसाने और सब में बसने वाले प्रभो! हमने जो अपराध और पाप अपने जीवन में किये हैं, वे भी हमने तेरे सामने कबूल कर लिये हैं। इसलिये तू अपनी कृपा का हाथ हमारे सिर पर रख देना। हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश! हमारी स्तुतियों और समर्पणों से वृद्धि को प्राप्त होता हुआ तू हमें कभी दूसरों की निन्दा करने वाले और दूसरों की हिंसा करने वाले किसी दुष्ट मनुष्य के हाथों में मत सौंप देना।

टि. *ये यात्राएं तेरी ओर मुड़ गई हैं* – **इमे यामासः त्वद्रिक् अभूवन्।** अमी शत्रवः गन्तारः त्वदभिमुखा भवन्ति – वे.। इमे गन्तारः स्तोमास् त्वदभिमुखा भवन्ति – सा.। इमे यमनियमान्विताः त्वां प्रति यतमाना भवन्ति – दया.। To thee these eulogies have been directed - G. These journeys have turned towards thee - Ar.

*और* – **वा।** च। समुच्चयार्थीयो वाशब्दः। वे.। वा अथवा – सा.। or - G.

*बसाने वाले को* – **वसवे।** वासयित्रे अग्नये – वे.। वासकाय – सा.। धनाय – दया.। to (thee), the giver of dwellings - W. to the Vasu - G. to the Shining One - Ar.

*वह अपराध बता दिया गया है* – **तत् इत् आगः अवाचि।** तद् उपद्रवं मयोक्तम् – वे.। तद् अपराधम् आशासनरूपम् उक्तवान् अहम्। इदं देहीति याचनम् एवापराधः। इद् इति पूरणः। सा.। but perhaps an offence has thereby been uttered to (thee) - W.

*न हिंसक को सौंपे* – **न रीषते परा दात्।** न हिंसते प्रयच्छति – वे.। सा.।

## सूक्त ४

ऋषिः – वसुश्रुत आत्रेयः। देवता – अग्निः। छन्दः – त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**त्वाम् अग्ने वसुपतिं वसूनाम् अभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन्।**
**त्वया वाजं वाजयन्तो जयेमाभि ष्याम पृत्सुतीर् मर्त्यानाम्।। १।।**

त्वाम्। अग्ने। वसुऽपतिम्। वसूनाम्। अभि। प्र। मन्दे। अध्वरेषु। राजन्।
त्वया। वाजम्। वाजऽयन्तः। जयेम। अभि। स्याम। पृत्सुतीः। मर्त्यानाम्।। १।।

*तुझको, हे अग्ने!, प्रभूत धनों के स्वामी को,*
*सर्वतः खूब आनन्दित करता हूँ, यज्ञों में, हे प्रकाशमान।*
*तेरे द्वारा बल को, बल की कामना करते हुए, प्राप्त करें हम,*
*अभिभूत करें हम सेनाओं को, शत्रुजनों की।। १।।*

हे जीवनयात्रा में मार्गदर्शन करने वाले परमात्मन्! तू असंख्य धनों और ऐश्वर्यों का स्वामी है। हे स्वयंप्रकाशमान और दूसरों को प्रकाशित करने वाले प्रभो! हम जीवन के सभी शुभ कर्मों में अपनी स्तुतियों और अपने उत्तम व्यवहारों से तुझे प्रसन्न करते हैं। बलों की कामना करने वाले हम तेरी कृपा से शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक सभी प्रकार के श्रेष्ठ बलों को अर्जित करें और दुष्ट, दुर्जन आदि बाह्य तथा काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं की सेनाओं को पराजित कर डालें।

टि. *प्रभूत धनों के स्वामी को* - **वसुपतिम् वसूनाम्।** धनपतिम् - वे.। वृत्त्यवृत्तिभ्यां वसूनां बाहुल्यं तत्स्वामित्वं चोक्तम्। बहूनां धनानां स्वामिनम्। सा.। धनस्वामिनं धनानाम् - दया.। who art the lord of vast riches - W. lord of wealth and treasures - G. the Wealth-master of riches - Ar.

*आनन्दित करता हूँ* - **मन्दे।** स्तौमि - वे.। सा.। आनन्दयेयम् आनन्दयामि वा - दया.। in thee is my delight - G. I delight in thee - Ar.

*अभिभूत करें हम सेनाओं को शत्रुजनों की* - **अभि स्याम पृत्सुतीः मर्त्यानाम्।** अभि भवेम पृतनाः मनुष्याणाम् - वे.। मरणधर्मकाणां सेना अभिभवेम - सा.। मर्त्यानां मरणधर्माणां शत्रूणाम् - दया.। may we overcome hosts of (hostile) men - W. may we overcome the fierce attacks of mortals - G. may we overcome the battle-hosts of mortals - Ar.

**हव्यवाळ् अग्निर् अजरः पिता नो विभुर् विभावा सुदृशीको अस्मे।**
**सुगार्हपत्याः सम् इषो दिदीह्यस्मद्र्य१क् सं मिमीहि श्रवांसि।। २।।**

हव्यऽवाट्। अग्निः। अजरः। पिता। नः। विऽभुः। विभाऽवा। सुऽदृशीकः। अस्मे इति।
सुऽगार्हपत्याः। सम्। इषः। दिदीहि। अस्मद्र्यक्। सम्। मिमीहि। श्रवांसि।। २।।

*हव्यों को वहन करने वाला, अग्नि, जरारहित, पालक हमारा,*
*विविध रूपों को धारण करने वाला, दीप्तिमान्, सुदर्शनीय हमारा।*
*शोभन गृहपति के योग्यों को, सम्यक्, अन्नों को प्रदान कर तू (हमें),*
*हमारी ओर सम्यक्, माप दे तू यशों को (हे मार्गदर्शन करने वाले)।। २।।*

वह सबका मार्गदर्शन करने वाला परमेश्वर समर्पणों को स्वीकार करने वाला है। वह कभी जरा, क्षय आदि को प्राप्त नहीं होता। वह हमारा पालन करने वाला है। वह विविध पदार्थों में उन्हीं के

अनुरूप रूपों को धारण करने वाला अर्थात् सर्वव्यापक है। वह विशेष दीप्तियों से युक्त है। वह हम सबके लिये सुष्ठु दर्शनीय अर्थात् चिन्तन करने और जानने के योग्य है। हे अग्रणी परमेश्वर! तू हम गृहस्थों को गृहपति के योग्य शोभन अन्न प्रदान कर। तू हमें यश प्रदान कर।

टि. *विविध रूपों को धारण करने वाला* - **विभुः**। विविधं भवन् - वे.। व्याप्तः - सा.। all-pervading - W.

*दीप्तिमान्* - **विभावा**। दीप्तिमान् - वे.। सा.। विविधभानवान् - दया.। resplendent - W.

*सुदर्शनीय* - **सुदृशीकः**। सुदर्शनीयः - वे.। शोभनदर्शनः - सा.। of pleasing aspect - W. perfect in vision - Ar.

*शोभन गृहपति के योग्यों को अन्नों को* - **सुगार्हपत्याः इषः**। शोभनगृहपतिकानि अन्नानि - वे.। शोभनगार्हपत्ययुक्तानि अन्नानि - सा.। (supply us) plentifully with food in return for our well-maintained household fire - W.

*प्रदान कर तू* - **दिदीहि**। प्रकाशय ददस्व वा - सा.। देहि - दया.। supply - W.

*माप दे तू यशों को* - **मिमीहि श्रवांसि**। अन्नानि सह कुरु - वे.। अन्नानि प्रयच्छ - सा.। grant us viand abundantly - W. measure out to us abundant glory - G. turn towards us thy inspirations - Ar.

**वि॒शां क॒विं वि॒श्पतिं॒ मानु॑षीणां॒ शुचिं॑ पाव॒कं घृ॒तपृ॑ष्ठम् अ॒ग्निम्।**
**नि होता॑रं विश्व॒विदं॑ दधिध्वे॒ स दे॒वेषु॑ वनते॒ वार्या॑णि।। ३।।**

वि॒शाम्। क॒विम्। वि॒श्पति॑म्। मानु॑षीणाम्। शुचि॑म्। पा॒व॒कम्। घृ॒तऽपृ॑ष्ठम्। अ॒ग्निम्।
नि। होता॑रम्। वि॒श्व॒ऽविद॑म्। द॒धि॒ध्वे॒। सः। दे॒वेषु॑। व॒न॒ते॒। वार्या॑णि।। ३।।

*प्रजाओं के, क्रान्तदर्शी को, प्रजापति को, मनुष्यसम्बन्धियों के,*
*पवित्र को, पवित्र करने वाले को, तेजोमय स्वरूप वाले अग्नि को।*
*सम्यक्, यज्ञनिष्पादक को, सर्वज्ञ को, धारण करो तुम (हृदय में),*
*वह देवों में विभक्त करता है, वरणीय पदार्थों को (सदा ही)।। ३।।*

वह सन्मार्ग दिखाने वाला परमेश्वर मानवीय प्रजाओं का पालक और तीनों लोकों तथा तीनों कालों का ज्ञाता है। वह स्वयं परम शुद्ध है और दूसरों को पवित्र करने वाला है। वह तेजोमय और प्रकाशमान स्वरूप वाला है। वह जगत् में प्रवर्तमान शाश्वत यज्ञ का याजक है। वह सर्वज्ञ है। हे उपासको! उस ऐसे प्रभु को तुम अपने हृदयों में धारण करो। वह दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त जनों में वरण के योग्य ऐश्वर्यों का वितरण करता है। वह तुम्हारी कामनाओं को भी अवश्य पूर्ण करेगा।

टि. *तेजोमय स्वरूप वाले को* - **घृतपृष्ठम्**। प्रदीप्तपृष्ठोपलक्षितशरीरम्। अथवा उपरितन-भागाज्योपेतम्। सा.। cherished with oblations of butter - W. balmed with butter - G. with its back of light - Ar.

*सम्यक् धारण करो तुम (हृदयों में)* - **नि दधिध्वे**। धारयथ - सा.। you possess - W. ye

stablish - G. set within you - Ar.

*वह देवों में विभक्त करता है वरणीय पदार्थों को* - **सः देवेषु वनते वार्याणि।** स देवेषु मनुष्याणां धनानि भजते - वे.। देवेषु मध्ये वरणीयानि धनानि संभजते ऽस्मदर्थम्। स्वयं वा वार्याणि हवींषि वनते। सा.। स विद्वत्सु दिव्येषु पदार्थेषु वा सम्भजति वरितुं स्वीकर्तुम् अर्हाणि - दया.। he among the gods bestows desirable (riches) - W. He wins among the gods things worth the choosing - G. Ar.

**जुषस्वाग्न इळया सजोषा यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य।**
**जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान् हविरद्याय वक्षि।। ४।।**

जुषस्व। अग्ने। इळया। सऽजोषाः। यतमानः। रश्मिऽभिः। सूर्यस्य।
जुषस्व। नः। सम्ऽइधम्। जातऽवेदः। आ। च। देवान्। हविःऽअद्याय। वक्षि।। ४।।

*सेवन कर (स्तुति का), हे अग्ने!, वाणी के साथ, समानप्रीति (होकर),*
*प्रयत्नशील होता हुआ, रश्मियों के साथ सूर्य की।*
*सेवन कर हमारी समिधा का, हे उत्पन्न हुओं को जानने वाले!,*
*और इस ओर देवों को, हविभक्षण के लिये, वहन कर तू।। ४।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! सूर्य की रश्मियों के साथ इस जगत् को प्रकाशित करने का प्रयत्न करते हुए तू हमारी स्तुतिरूपी वाणी का उसके साथ समान प्रीति वाला होकर सेवन कर। हे जगत् में सभी उत्पन्न पदार्थों को जानने वाले जगदीश! हम जो नैवेद्य, उपहार आदि समिधा के प्रतीक के रूप में तुझे समर्पित करें, उसे तू स्वीकार कर। तू अपनी दिव्य शक्तियों को हमारे नैवेद्यों को स्वीकार करने के लिये हमारी ओर ला।

टि. *वाणी के साथ, समानप्रीति (होकर)* - **इळया सजोषाः।** इडया सङ्गतः - वे.। इळया वेदिलक्षणया भूम्या वाचा वा सजोषाः समानप्रीतिः - सा.। इलया प्रशंसितया वाचा समानप्रीतिसेवनः - दया.। sharing in satisfaction with Iḷā - W. of one accord with Iḷā - G. of one mind with the goddess of revelation - Ar.

**जुष्टो दमूना अतिथिर् दुरोण इमं नो यज्ञम् उप याहि विद्वान्।**
**विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयताम् आ भरा भोजनानि।। ५।। १८।।**

जुष्टः। दमूनाः। अतिथिः। दुरोणे। इमम्। नः। यज्ञम्। उप। याहि। विद्वान्।
विश्वाः। अग्ने। अभिऽयुजः। विऽहत्य। शत्रुऽयताम्। आ। भर। भोजनानि।। ५।।

*प्रिय, विनयशील, अतिथिसम पूज्य, बारणे में (हमारे),*
*इसमें, हमारे यज्ञ में, पहुँच तू, जानता हुआ (सबकुछ)।*
*सब को, हे अग्ने!, आक्रमणकारी सेनाओं को, मारकर,*
*शत्रुता का व्यवहार करने वालों के, इधर ला तू भोगों को।। ५।।*

हे प्रभो! तू हमें बहुत प्रिय है। तू विनयशील है। तू हमारे द्वार पर पधारे अतिथि, उपदेशक, संन्यासी के समान पूज्य है। तू सर्वज्ञ है। तू हमारे जीवन में प्रवर्तमान इस यज्ञ में पदार्पण कर और

इसका सम्यक् संचालन कर। हमारे इस यज्ञ में अनेक प्रकार के विघ्नों और बाधाओ को उत्पन्न करने वाली असंख्य आसुरी शक्तियां हैं। तू शत्रुता का व्यवहार करने वाली इन शक्तियों का विनाश कर और उनके द्वारा अपने एकाधिकार में लिये हुए भोग्य पदार्थों को उनसे लेकर सबमें बाँट दे।

टि. *प्रिय* - **जुष्टः**। पर्याप्तः - वे.। सा.। सेवितः प्रीतो वा - दया.। propitiated - W. dear - G. cherished - Ar.

*विनयशील* - **दमूनाः**। दममनाः - वे.। सा.। शमदमादियुक्तः - दया.। lowly-minded - W. House-Friend - G. domiciled - Ar.

*अतिथि* - **अतिथिः**। अतिथिर् अभ्यतितो गृहान् भवति। अभ्येति तिथिषु परकुलानीति वा परगृहाणीति वा। या. (नि. ४.५)। अतिथिस् तद्वत् पूज्यः - सा.। अकस्माद् आगतः - दया.।

*बारणे में* - **दुरोणे**। दुरोण इति गृहनाम। दुरवा भवन्ति दुस्तर्पाः। (वहीं)।। गृहे - वे.। सा.। in our gated house - Ar.

*आक्रमणकारी सेनाओं को* - **अभियुजः**। अभियोक्त्रीः सेनाः - वे.। अभियोक्तृन् - सा.। या आभिमुख्यं युञ्जते ताः शत्रुसेनाः - दया.। adversaries - W. assailants - G. Ar.

*भोगों को* - **भोजनानि**। अन्नानि - वे.। अन्नानि धनानि - सा.। प्रजापालनानि भोक्तव्यान्यन्नानि वा - दया.। posssssions - W. G. enjoyments - Ar.

**वधेन दस्युं प्र हि चातयस्व वयः कृण्वानस् तन्वे३ स्वायै।**
**पिपर्षि यत् सहसस् पुत्र देवान् त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजे अस्मान्।। ६।।**

वधेन। दस्युम्। प्र। हि। चातयस्व। वयः। कृण्वानः। तन्वै। स्वायै।
पिपर्षि। यत्। सहसः। पुत्र। देवान्। सः। अग्ने। पाहि। नृऽतम। वाजे। अस्मान्।। ६।।

इस मन्त्र में आए नृतम का सायण और दयानन्द द्वारा दिया गया पदपाठ नृतम है।

*आयुध से (अपने), हिंसक को, पूर्णतः नष्ट कर दे तू,*
*जीवन को प्राप्त कराता हुआ, शरीर के लिये अपने।*
*पालन करता है तू चूँकि, हे बल के बहुरक्षक!, देवों का,*
*वह (तू), अग्ने!, पालन कर, पुरुषोत्तम!, ऐश्वर्य के नमित्त हमारा।। ६।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! तू अपने शरीरभूत इस जगत् और इसमें निवास करने वाले प्राणियों को जीवन प्राप्त कराता हुआ, उनके जीवन की रक्षा करता हुआ, अपने दण्डव्यवस्था रूपी आयुध से दुष्ट हिंसक जनों का भली प्रकार विनाश कर दे। हे पवित्र बलों की अनेक प्रकार से रक्षा करने वाले जगदीश! चूँकि तू दान, दिव्यता आदि गुणों वाले जनों का पालन और उनकी रक्षा करता है, इसलिये, हे पुरुषोत्तम!, तू उत्तम ऐश्वर्यों की प्राप्ति के निमित्त हमारा पालन और रक्षा कर, अथवा जीवन के संघर्षों में हमारा पालन और रक्षा कर।

टि. *हिंसक को* - **दस्युम्**। उपक्षपयितारम् - सा.। साहसिकं चोरम् - दया.। the Dasyu - G. the Destroyer - Ar.

*पूर्णतः नष्ट कर दे* - **प्र हि चातयस्व**। प्रकर्षेण पीडय - वे.। प्रणाशय। हीति पूरणः। सा.। हिंसय

हिन्धि वा - सा.। demolish - W. drive you away - G. Ar.

*जीवन को प्राप्त कराता हुआ* - **वयः कृण्वानः**। गमनं कुर्वाणः - वे.। वयो ऽन्नं कुर्वाणः - सा.। वयः जीवनम् - दया.। appropriating the sustenance - W. gaining vital power - G. making free space - Ar.

*शरीर के लिये अपने* - **तन्वे स्वायै**। स्वस्मै शरीराय - वे.। दया.। अथवा यजमानादिरूपाय पुत्राय - सा.। to thine own person - W. G. Ar.

*पालन करता है* - **पिपर्षि**। पारयसि - वे.। तर्पयसि - सा.। satisfiest - W. G.

*ऐश्वर्य के निमित्त* - **वाजे**। युद्धे - वे.। सा.। दया.। in battle- W. G. in the plentitude - Ar.

**व॒यं ते॑ अग्न उ॒क्थैर् वि॑धेम व॒यं ह॒व्यैः पा॑वक भद्रशोचे।**
**अ॒स्मे र॒यिं वि॒श्ववा॑रं॒ सम् इ॑न्वा॒स्मे विश्वा॑नि॒ द्रवि॑णानि धेहि॥ ७॥**

व॒यम्। ते॒। अ॒ग्ने॒। उ॒क्थैः। वि॒धे॒म॒। व॒यम्। ह॒व्यैः। पा॒व॒क॒। भ॒द्र॒ऽशो॒चे॒।
अ॒स्मे इति॑। र॒यिम्। वि॒श्वऽवा॑रम्। सम्। इ॒न्व॒। अ॒स्मे इति॑। विश्वा॑नि। द्रवि॑णानि। धे॒हि॒॥ ७॥

*हम तेरी, हे अग्ने!, स्तोत्रों से पूजा करते हैं,*
*हम हव्यों से, हे पवित्रकर्त्ता!, हे कल्याणकर तेजों वाले।*
*हमें धन को, सब के द्वारा वरणीय को, प्राप्त करा तू,*
*हमपर सब ऐश्वर्यों को, स्थापित कर दे तू (हे अग्रणी!)॥ ७॥*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! हम स्तुतियों से तेरी पूजा करते हैं। हे सब को पवित्र करने वाले और कल्याणकर तेजों वाले प्रभो! हम तेरी हव्यों, नैवेद्यों, समर्पणों आदि के द्वारा पूजा करते हैं। तू हमें वे श्रेष्ठ धन प्रदान कर, जिन्हें सब प्राप्त करना चाहते हैं। हे परमेश्वर! तू हमें सब प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त करा।

टि. *पूजा करते हैं* - **विधेम**। परिचरणं कुर्मः - वे.। परिचरेम - सा.। कुर्याम - दया.। we worship thee - W. Ar. may we adore thee - G.

*हे कल्याणकर तेजों वाले* - **भद्रशोचे**। भजनीयदीप्ते - वे.। कल्याणदीप्ते - सा.। कल्याण-प्रकाशक - दया.। of auspicious lustre - W. fair-beaming - G. O Happy light - Ar.

*प्राप्त करा तू* - **सम् इन्व**। सं गमय - वे.। प्रापय - सा.। व्याप्नुहि - दया.। bestow upon us - W. send to us - G. into us bring - Ar.

**अ॒स्माक॑म् अग्ने अध्व॒रं जु॑षस्व॒ सह॑सः सूनो त्रिषधस्थ ह॒व्यम्।**
**व॒यं दे॒वेषु॑ सु॒कृत॑ः स्याम॒ शर्म॑णा नस् त्रि॒वरू॑थेन पाहि॥ ८॥**

अ॒स्माक॑म्। अ॒ग्ने॒। अ॒ध्व॒रम्। जु॒ष॒स्व॒। सह॑सः। सू॒नो॒ इति॑। त्रि॒ऽस॒ध॒स्थ॒। ह॒व्यम्।
व॒यम्। दे॒वेषु॑। सु॒ऽकृत॑ः। स्या॒म॒। शर्म॑णा। न॒ः। त्रि॒ऽवरू॑थेन। पा॒हि॒॥ ८॥

*हमारे, हे अग्ने!, हिंसारहित यज्ञ का सेवन कर तू,*
*हे निज बल से उत्पन्न! हे त्रिलोकवासी! हव्य का (सेवन कर तू)।*
*हम देवों में, श्रेष्ठ कर्मों वाले होवें, (सदा ही),*

*सुख से हमारा, तिहरे से, पालन कर तू।। ८।।*

हे अपनी ही शक्ति से प्रादुर्भूत होने वाले स्वयम्भो!, हे तीनों लोकों में निवास करने वाले जगदीश! यह जो हमारा हिंसारहित जीवनयज्ञ चल रहा है, तू इसमें हमारा सहायक बन। हम जो हव्य, नैवेद्य आदि तुझे समर्पित करें, तू उसे सहर्ष स्वीकार कर। हम सदा सज्जनों की सङ्गति करें और उनके साथ मिलकर शुभ कर्म ही करें। तू हमारा वाचिक, मानसिक और शारीरिक इस तिहरे सुख से पालन कर। अथवा तू हमें तीन मंजिलों वाले प्रासाद में रहने का सुख प्रदान कर।

टि. हे *त्रिलोकवासी* - **त्रिषधस्थ**। हे त्रिस्थान - वे.। त्रिषु क्षित्यादिषु स्थानेषु स्थित - सा.।त्रिभिः प्रजाभृत्यात्मीयैर् जनैः सह पक्षपातरहितस् तिष्ठति तत्सम्बुद्धौ - दया.। the abider in the three regions - W. G. O holder of the triple world of thy session - Ar.

*श्रेष्ठ कर्मों वाले होवें* - **सुकृतः स्याम**। शोभनकर्माणः स्याम - वे.। सा.। may we be counted pious - G. May we be doers of good deeds - Ar.

*सुख से तिहरे से* - **शर्मणा त्रिवरूथेन**। सुखेन त्रिगुणेन - वे.। वाचिकादिभेदेन त्रिधा वरणीयेन शर्मणा सुखेन त्रिच्छदिष्केण गृहेण वा - सा.। गृहेण त्रिषु वर्षाहेमन्तग्रीष्मसमयेषु वरूथेन वरेण - दया.। with triply- protected felicity - W. protect us with a triply-guarding shelter - G. protect us with a triple armour of peace - Ar.

**विश्वा॑नि नो दु॒र्गहा॑ जातवेद॒ः सिन्धुं॒ न ना॒वा दु॑रि॒ताति॑ पर्षि।**
**अग्ने॑ अत्रि॒वन् नम॑सा गृणा॒नो३॒॑ ऽस्माकं॑ बोध्यवि॒ता त॒नूना॑म्।। ९।।**

विश्वा॑नि। न॒ः। दु॒ःऽगहा॑। जा॒त॒ऽवे॒द॒ः। सिन्धु॑म्। न। ना॒वा। दु॒ःऽइ॒ता। अति॑ प॒र्षि।
अग्ने॑। अ॒त्रि॒ऽवत्। नम॑सा। गृ॒णा॒नः। अ॒स्माक॑म्। बो॒धि॒। अ॒वि॒ता। त॒नूना॑म्।। ९।।

*सब को हमारी, कठिनता से अवगाहनयोग्यों को, हे उत्पन्नों के ज्ञाता,*
*नदी को जिस प्रकार नाव से, कठिनाइयों को पार करा दे तू।*
*हे अग्ने!, त्रितापरहित ज्ञानी की तरह, नमस्कार के साथ स्तुति किया जाता हुआ,*
*हमारे हो जा तू, रक्षा करने वाला शरीरों की।। ९।।*

हे सब उत्पन्न हुए पदार्थों को जानने वाले परमेश्वर! जिस प्रकार नाविक किसी यात्री को नाव के द्वारा नदी पार करा देता है, उसी प्रकार तू कठिनाई से अवगाहन के योग्य हमारी सभी कठिनाइयों को हमें पार करा दे। हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले प्रभो! जिस प्रकार किसी त्रितापरहित ज्ञानी की नमस्कार के साथ स्तुति की जाती है, उसी प्रकार हम नमस्कार के साथ तेरी स्तुति करते हैं। तू हमारे शरीरों की रक्षा करने वाला हो जा।

टि. *कठिनता से अवगाहनयोग्यों को* - **दुर्गहा**। दुःखेन गाहितव्यानि - वे.। दुःखेन गाह्यानि दुःखेन भोग्यानि - सा.। दुःखेन पारं गन्तुं योग्यानि - दया.। difficult passages - Ar.

*कठिनाइयों को पार करा दे तू* - **दुरिता अति पर्षि**। दुरितानि अति पारय - वे.। सा.। दुरिता दुःखेन प्राप्तुं योग्यानि - दया.। carry us through all calamities - Ar.

*त्रितापरहित ज्ञानी की तरह* - **अत्रिवत्**। अत्रिणेव - वे.। अत्रेर् यथा - सा.। अत्रयः सततं

गन्तारो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.। as (that shown) by Atri - W.

*हो जा* - **बोधि**। बुध्यस्व - वे.। सा.। बुध्यसे - दया.। know thyself - W. be - G. awake and be (the guardian) - Ar.

**यस् त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानो ऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि।**
**जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिर् अग्ने अमृतत्वम् अश्याम्।। १०।।**

यः। त्वा। हृदा। कीरिणा। मन्यमानः। अमर्त्यम्। मर्त्यः। जोहवीमि।
जातऽवेदः। यशः। अस्मासु। धेहि। प्रऽजाभिः। अग्ने। अमृतऽत्वम्। अश्याम्।। १०।।

*जो तुझको हृदय से, स्तुति करने वाले से, स्मरण करता हुआ,*
*अमरणधर्मा को, मरणधर्मा पुकारता हूँ मैं।*
*हे उत्पन्न हुओं के ज्ञाता!, यश हमें प्रदान कर तू,*
*सन्तानों के साथ, अमरता को प्राप्त करूँ मैं।। १०।।*

हे सभी उत्पन्न हुए पदार्थों के ज्ञाता जगदीश्वर! तू अमरणधर्मा है, मैं मरणधर्मा हूँ। मैं स्तुति के स्वभाव वाले अपने हृदय से तेरा स्मरण करता हुआ तुझे पुकार रहा हूँ। हे सर्वज्ञ! तू हमें यश प्रदान कर। तू हमें ऐसी उत्तम सन्तानें प्रदान कर, कि हम उनके साथ शुभ कर्मों को करते हुए अमरता को प्राप्त हो जाएं।

टि. *हृदय से, स्तुति करने वाले से* - **हृदा कीरिणा**। हृदयेन विक्षिप्तेन - वे.। स्तुत्यादिषु विक्षिप्तेन हृदयेन युक्तः। यद्वा। स्तोतृवाचकेन कीरिणाशब्देन स्तुतिर् उपलक्ष्यते। स्तुतियुक्तेन मनसा। सा.। स्तावकेन। कीरिर् इति स्तोतृनाम (निघ. ३.१६)। दया.। with a devoted heart - W. with grateful spirit - G. with a heart that is thy bard - Ar.

*स्मरण करता हुआ* - **मन्यमानः**। स्तुवन् - वे.। सा.। विजानन् - दया.। praising thee - W. remembring - G. I think of thee - Ar.

**यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकम् अग्ने कृणवः स्योनम्।**
**अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति।। ११।। १९।।**

यस्मै। त्वम्। सुऽकृते। जातऽवेदः। ऊँ इति। लोकम्। अग्ने। कृणवः। स्योनम्।
अश्विनम्। सः। पुत्रिणम्। वीरऽवन्तम्। गोऽमन्तम्। रयिम्। नशते। स्वस्ति।। ११।।

*जिसको तू, सुकर्मा पुरुष को, हे उत्पन्नों के ज्ञाता!,*
*स्थान को, हे अग्ने!, प्रदान करता है, सुखद को।*
*अश्वों वाले को, वह, पुत्रों वाले को, वीरों वाले को,*
*गौओं वाले को, धन को प्राप्त करता है, कल्याण के लिये।। ११।।*

हे सभी उत्पन्न पदार्थों को जानने वाले अग्रणी नायक! शुभ कर्म करने वाले जिस मनुष्य को तू सुखद निवासस्थान प्रदान करता है, वह तेरी कृपा से अपने कल्याण के लिये उत्तम अश्वों, वीर पुत्रों और दुधारू गौओं वाले धन को प्राप्त करता है। शारीरिक बल, ज्ञान और सन्तति को प्राप्त करता है।

टि. *सुकर्मा पुरुष को* - **सुकृते**। सुकर्मणे - वे.। सुकृते सुकर्मणे यजमानाय - सा.। धर्मात्मने

– दया.। upon whatsoever performer of good works - W. the pious man - G. the doer of great deeds - Ar.

*स्थान को प्रदान करता है सुखद को* – **उ लोकम् कृणवः स्योनम्।** कृणोषि लोकम् आवासस्थानं सुखकरम् – वे.। उ इति पूरणः। लोकं स्योनं सुखकरं अकरोः। यद्वा। लोकम् आलोकेन स्योनं कृणवः। अनुग्रहेण कुर्वित्यर्थः। सा.। द्रष्टव्यं करोषि सुखकारणम् – दया.। castest a favourable regard - W. to whom thou grantest ample room and pleasure - G. for whom thou shalt make that happy other world - Ar.

*कल्याण के लिये* – **स्वस्ति।** अविनाशेन – वे.। अविनश्वरम् – सा.। सुखमयम् – दया.। welfare - W. for his well-being - G. reaches in peace - Ar.

## सूक्त ५

ऋषिः – वसुश्रुत आत्रेयः। देवता – १ इध्मः समिद्धो ऽग्निर् वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीर् द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः, (आप्री सूक्तम्)। छन्दः – गायत्री। एकादशर्चं सूक्तम्।

**सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।। १।।**

सुऽसमिद्धाय। शोचिषे। घृतम्। तीव्रम्। जुहोतन। अग्नये। जातऽवेदसे।। १।।

*सुष्ठु प्रदीप्त के लिये, तेजोमय के लिये,*
*घृत को तीव्र को, प्रदान करो तुम।*
*अग्नि के लिये, उत्पन्नों के ज्ञाता के लिये।। १।।*

हे उपासको! सब को सन्मार्ग पर आगे ले जाने वाला वह जगदीश जगत् में उत्पन्न सभी प्राणियों और पदार्थों को भली प्रकार जानता है। वह अपने ही प्रकाश और ज्ञान से प्रकाशित है। वह अपने तेजों ही से तेजोमय है। तुम उसे अपने प्रकृष्ट ज्ञान की आहुतियां समर्पित करो। उसके महान् ज्ञान को प्राप्त करने के लिये अपने स्वल्प ज्ञान को उसके चरणों में समर्पित कर दो।

टि. *सुष्ठु प्रदीप्त के लिये* – **सुसमिद्धाय।** सुष्ठु समिध्यमानाय – वे.। सुष्ठु समिद्धायैतन्नामकाय अग्नये – सा.। सुप्रदीप्ताय – दया.। to Susamiddha - W. to the well-enkindled God - G. on the high-kindled - Ar.

*तेजोमय के लिये* – **शोचिषे।** दीप्तिमते – सा.। पवित्रकराय – दया.। तेजस्वी को – सात.। to the resplendent - W. to the flame - G. on the flame - Ar.

*घृत को तीव्र को* – **घृतम् तीव्रम्।** घृतं तीव्ररसम् – वे.। घृतम् आज्यं तीव्रं प्रभूतम् – सा.। आज्यं सुशोधितम् – दया.। बल से युक्त घी – सात.। abundant butter - W. thick sacrificial oil - G. a poignant clarity - Ar.

*प्रदान करो तुम* – **जुहोतन।** हु दानादानयोः।। आहुति दो – सात.। offer - W. G. pour as offering - Ar.

**नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञम् अदाभ्यः। कविर् हि मधुहस्त्यः।। २।।**

नराशंसः। सुसूदति। इमम्। यज्ञम्। अदाभ्यः। कविः। हि। मधुऽहस्त्यः॥ २॥

*नरों से प्रशंसनीय, खूब प्रेरित करता है,*
*इस यज्ञ को, हिंसित न किया जाने वाला।*
*क्रान्तदर्शी है चूँकि वह, हाथों में मधु वाला॥ २॥*

वह मार्गदर्शक परमेश्वर मनुष्यों के द्वारा प्रशंसा के योग्य है। वह किसी के भी द्वारा हिंसित नहीं किया जा सकता। वह जगत् में प्रवर्तमान इस शाश्वत यज्ञ का भली प्रकार सम्पादन कर रहा है। चूँकि वह त्रिकालदर्शी और त्रिलोकदर्शी है, इसलिये वह शुभ कर्म करने वाले साधुवृत्ति जनों को अपने हाथों से मधु प्रदान करता है।

टि. *नरों से प्रशंसनीय* – **नराशंसः**। नरैः शंसनीयः – वे.। सा.। दया.। Narāśaṁsa - W. G. the spokesman of the godhead - Ar.

*खूब प्रेरित करता है* – **सुषूदति**। सुष्ठु प्रेरयति – वे.। सा.। अमृतं क्षरति – दया.। animates - W. inspireth - G. hastens - Ar.

*हाथों में मधु वाला* – **मधुहस्त्यः**। मादयितृहस्ताङ्गुलिकः – वे.। मधुरहस्त्यः – सा.। मधुहस्तेषु साधुः – दया.। मधुरतापूर्ण किरणों वाला – सात.। sweet-handed - W. with sweets in hand - G. with the wine of sweetness in his hands - Ar.

**ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रम् इह प्रियम्। सुखै रथेभिर् ऊतये॥ ३॥**

ईळितः। अग्ने। आ। वह। इन्द्रम्। चित्रम्। इह। प्रियम्। सुऽखैः। रथेभिः। ऊतये॥ ३॥

*स्तुति किया हुआ, हे अग्ने!, इस ओर वहन कर तू,*
*इन्द्र को, पूजनीय को, यहाँ, प्रिय लगने वाले को।*
*सुख से चलने वाले रथों से, वृद्धि के लिये (हमारी)॥ ३॥*

इस मन्त्र में स्तुति किया हुआ अग्नि परमात्मा है। इन्द्र जीवात्मा है। रथ शरीरों के प्रतीक हैं। उपासक परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा है, कि वह परमेश्वर हमारे इस जीवन में स्वस्थ और बलवान् शरीरों के अन्दर हमारे जीवात्मा को सशक्त, पूजा के योग्य और सब को प्रिय लगने वाला बनाए रखे, ताकि हमारी सर्वतोमुखी वृद्धि सदा होती रहे। अथवा इन्द्र का अर्थ है ऐश्वर्य। हे परमेश्वर! हमें वृद्धि के लिये अनुपम और प्रिय ऐश्वर्य प्रदान कर। (ऋ. १.१.४; १४२.४ मन्त्र भी देखिये)।

टि. *स्तुति किया हुआ* – **ईळितः**। स्तुतः – वे.। सा.। प्रशंसितः – दया.। who art Īḷita - W. adored - G. we have sought thee with our adoration - Ar.

*इन्द्र को* – **इन्द्रम्**। परमैश्वर्यम् – दया.। ऐश्वर्यवान् पुरुषों और नाना ऐश्वर्यों को – जय.। Indra - W. the sun - Satya.

*पूजनीय को* – **चित्रम्**। चायनीयम् – सा.। अद्भुतम् – दया.। wonderful - W. G. the rich in light - Ar.

*सुख से चलने वाले रथों से* – **सुखैः रथेभिः**। सुखैः रथेभिः रथैः – सा.। सुखकारकैः यानैः – दया.। with his easy-going chariots - W. on lightly rolling car - G.

**ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्यर्का अनूषत। भवा नः शुभ्र सातये।। ४।।**

ऊर्णऽम्रदाः। वि। प्रथस्व। अभि। अर्काः। अनूषत। भव। नः। शुभ्र। सातये।। ४।।

*ऊन के समान कोमल, विस्तीर्ण हो जा तू,*

*सर्वतः स्तुतियां गाई जा रही हैं (तेरे लिये)।*

*हो जा तू हमें, हे शुभ्र!, प्राप्ति के लिये।। ४।।*

इस मन्त्र में वेदि पर बिछने वाले दर्भासन की स्तुति की गई है। मानव शरीर एक यज्ञशाला है। हृदय इसकी वेदि है। सात्त्विक विचार और उदात्त भावनाएं इस वेदि पर बिछाया जाने वाला दर्भासन है। यहाँ कहा गया है, कि हे सात्त्विक विचारो और उदात्त भावनाओ! तुम कोमल ऊन के समान मृदु, स्वच्छ और पवित्र हो। तुम मेरी इस हृदयरूपी वेदि को भली प्रकार आच्छादित कर लो। मुझ उपासक के द्वारा सब ओर तुम्हारी महिमाओं का गान किया जा रहा है। हे शुभ विचारो और भावनाओ! तुम बलवती होकर मुझे मेरे लक्ष्य की प्राप्ति कराने वाली हो जाओ।

टि. *ऊन के समान कोमल* - **ऊर्णम्रदाः**। हे ऊर्णवन् मृदु बर्हिः - वे.। ऊर्णाकम्बलवन् मृदु हे बर्हिः - सा.। soft as wool - W. G. Ar.

*विस्तीर्ण हो जा तू* - **वि प्रथस्व**। त्वं विस्तीर्णं भव - वे.। प्रथय - सा.। प्रख्याहि - दया.।

*सर्वतः स्तुतियां गाई जा रही हैं* - **अभि अर्काः अनूषत**। त्वां मन्त्राः अभ्यस्तुवन् - वे.। स्तोतारः स्तुवन्ति - सा.। अर्काः मन्त्रार्थविदः - दया.। the worshippers praise thee - W. the holy hymns have sung to thee - G. the songs of illuminations sound high - Ar.

*प्राप्ति के लिये* - **सातये**। दानाय - वे.। धनाय तद्दानाय वा - सा.। दायविभागाय - दया.। be to us (source of) liberality - W. bring gain to us - G. for the conquest - Ar.

**देवीर् द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा न ऊतये। प्रप्र यज्ञं पृणीतन।। ५।। २०।।**

देवीः। द्वारः। वि। श्रयध्वम्। सुप्रऽअयनाः। नः। ऊतये। प्रऽप्र। यज्ञम्। पृणीतन।। ५।।

*हे दिव्य द्वारो!, खुल जाओ तुम,*

*शोभन मार्गों वाले, हमारी वृद्धि के लिये।*

*खूब यज्ञ को (हमारे), पूर्ण करो तुम।। ५।।*

मनुष्य का शरीर एक नगर है, जिसमें नौ द्वार हैं। (अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूर् अयोध्या - अथर्व. १०.२.३१)। ये द्वार हैं - दो आँखें, दो कान, दो नासिकाएं, एक मुख, एक मलद्वार और एक मूत्रद्वार। ये बाह्य ज्ञान की प्राप्ति और आन्तरिक मल आदि के निकास में सहायक होने के कारण दिव्य कहलाते हैं। इसलिये इन्हें सुन्दर मार्गों वाले भी कहा गया है। इस मन्त्र में इन से प्रार्थना की गई है, कि हे दिव्य द्वारो! तुम हमारी अभिवृद्धि के लिये सदा भली प्रकार खुले रहो। सदा अपने-अपने कार्यों को सम्पन्न करने की स्थिति में बने रहो। हमारी शरीररूपी यज्ञशाला में जो अन्तर्यज्ञ चल रहा है, उसे तुम भली प्रकार सम्पन्न करने में सहायक बनो।

टि. *खुल जाओ तुम* - **वि श्रयध्वम्**। विघटिताः भवत - वे.। वियुक्ता भवत - सा.। open - W. open yourselves - G. swing wide - Ar.

*शोभन मार्गों वाले* - **सुप्रायणाः**। सुप्रगमनाः - वे.। शोभनगमनसाधनाः - सा.। passages - W. easy of access - G. Ar.

*खूब पूर्ण करो तुम* - **प्रप्र पृणीतन**। प्रपूरयत - वे.। पूरयत कामैः फलैर् वा - सा.। fill full - W. Ar. fill more and more - G.

**सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा। दोषाम् उषासम् ईमहे।। ६।।**

सुप्रतीके इति सुऽप्रतीके। वयःऽवृधा। यह्वी इति। ऋतस्य। मातरा। दोषाम्। उषसम्। ईमहे।। ६।।

*सुन्दर रूपों वाली, जीवनशक्ति को बढ़ाने वाली,*
*महान् सन्तानें ऋत की, निर्माणकार्य करने वाली।*
*निशा से (और) उषा से, याचना करते हैं हम।। ६।।*

उषा अर्थात् दिन परा विद्या की प्रतीक है। दोषा अर्थात् रात्रि अपरा विद्या की प्रतीक है। ये दोनों ही आकर्षक होने के कारण सुन्दर रूपों वाली हैं। ये एक-दूसरे की पूरक हैं और जीवनयात्रा का सफलतापूर्वक निर्वाह करने के लिये अनिवार्य हैं। ऋत से उत्पन्न होने के कारण ये दोनों ऋत की सन्तानें कहलाती हैं। दोनों में मनुष्यों के द्वारा निर्माण कार्य किये जाने के कारण इन्हें माता या निर्माता कहा जाता है। हम उपासक दोनों से ही जीवनयात्रा की सफलता की याचना करते हैं।

टि. *सुन्दर रूपों वाली* - **सुप्रतीके**। शोभनावयवे - वे.। सुरूपे शोभनाङ्गे वा - सा.। सुष्ठु प्रतीतिकरे - दया.। lovely - W. fair - G. with their fair front - Ar.

*जीवनशक्ति को बढ़ाने वाली* - **वयोवृधा**। अन्नस्य वर्धयित्र्यौ - वे.। सा.। ये वयः कमनीयं जीवनं वर्धयतः - दया.। food-bestowing - W. strengtheners of vital power - G. who increase our being's space - Ar.

*महान् सन्तानें ऋत की* - **यह्वी ऋतस्य**। यज्ञस्य (निर्मात्र्यौ), महत्यौ - वे.। महत्यौ, यज्ञस्योदकस्य वा (निर्मात्र्यौ) - सा.। महत्यौ, सत्यस्य - दया.। young (Mothers) of eternal Law - G. two mighty (Mothers) of the Truth - Ar. ऋ. १.१४२.७ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।

*याचना करते हैं हम* - **ईमहे**। अभिलषितं याचामहे - वे.। स्तुमः - सा.। याचामहे - दया.। we glorify - W. we supplicate - G. we seek with desire - Ar.

**वातस्य पत्मन्नीळिता दैव्या होतारा मनुषः। इमं नो यज्ञम् आ गतम्।। ७।।**

वातस्य। पत्मन्। ईळिता। दैव्या। होतारा। मनुषः। इमम्। नः। यज्ञम्। आ। गतम्।। ७।।

*वायु के मार्ग से, स्तुति किये हुए,*
*दिव्य शक्तियों वाले, आह्वाता मनुष्य के।*
*इस हमारे यज्ञ में, आ जाओ तुम दोनों।। ७।।*

आत्मा और परमात्मा दिव्य शक्तियों वाले हैं। ये मनुष्य का सन्मार्ग में आह्वान करने वाले हैं। परमात्मा अपनी वेदवाणी से और आत्मा अपनी भीतरी मूक वाणी से मनुष्य को कुमार्ग छोड़कर सन्मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं। ये नित्य ही मनुष्यों के द्वारा स्तुति किये जाते हैं। ये दोनों वायु के मार्ग से अर्थात् वायु के सदृश तीव्र गति से आकर जीवन में चलने वाले हमारे इस यज्ञ में

सहायक बनें।

टि. *वायु के मार्ग से* - **वातस्य पत्मन्।** वातस्य पतने अन्तरिक्षे वर्तमानौ - वे.। लुप्तोपमैषा। वायुगमनसदृशगमनार्थम्। यद्वा। वातस्य पतनसाधने ऽन्तरिक्षे गच्छन्तौ। सा.।on the path of the wind - W. Ar. on the wind's flight - G.

*दिव्य शक्तियों वाले* - **दैव्या।** दैव्यौ - वे.। देवाद् अग्नेर् आदित्याच् च समुद्भूतौ - सा.।divine - W. celestial - G. divine - Ar.

*आह्वाता मनुष्य के* - **होतारा मनुषः।** होतारौ मनुष्यस्य - वे.। देवानाम् आह्वातारौ। मनुषो मनुष्यस्येमं नः। सा.।Priests of man - G. priests of man's call - Ar.

**इळा॒ सर॑स्वती म॒ही ति॒स्रो दे॒वीर् म॑यो॒भुव॑ः। ब॒र्हिः सी॑दन्त्व॒स्रिध॑ः।। ८।।**

इळा॑। सर॑स्वती। म॒ही। ति॒स्रः। दे॒वीः। म॒यः॒ऽभुव॑ः। ब॒र्हिः। सी॒द॒न्तु॒। अ॒स्रिध॑ः।। ८।।

*इळा, सरस्वती, महान् (भारती),*
*तीनों दिव्य शक्तियां सुखोत्पादक।*
*आसन पर आसीन हों, निर्बाध (होकर)।। ८।।*

इडा, पिङ्गला और सुषुम्णा ये तीनों नाड़ियां दिव्य शक्तियों वाली हैं और आत्मा को उसकी यात्रा में ऊर्ध्वगति प्रदान करने में सहायक होने से सुखों को उत्पन्न करने वाली हैं। परमेश्वर से प्रार्थना है, कि ये तीनों शक्तियां बिना किसी बाधा के हमारे शरीरों में अपने निश्चित स्थानों पर आसीन होकर अपना-अपना कार्य सुचारु रूप से करती रहें।

टिप्पणियों के लिये ऋ. १.१३.९ मन्त्र देखिये।

**शि॒वस् त्व॑ष्टर् इ॒हा ग॑हि वि॒भुः पोष॑ उ॒त त्मना॑। य॒ज्ञेय॑ज्ञे न॒ उद् अ॑व।। ९।।**

शि॒वः। त्व॒ष्ट॒रिति॑। इ॒ह। आ। ग॒हि॒। वि॒ऽभुः। पोषे॑। उ॒त। त्मना॑। य॒ज्ञेऽय॑ज्ञे। न॒ः। उत्। अ॒व॒।। ९।।

*कल्याणकर, हे त्वष्टा!, यहाँ आ जा तू,*
*व्यापक, पोषण के निमित्त, और (आकर) स्वेच्छा से।*
*प्रत्येक यज्ञ में हमारी, उत्कर्ष से रक्षा कर तू।।*

हे रूपों के निर्माता, जगत्स्रष्टा परमेश्वर! तू सब का कल्याण करने वाला है। तू सभी पदार्थों में तद्रूप होकर व्याप्त हो रहा है। तू हमारे पोषण के निमित्त स्वेच्छा से आकर हमारे हृदय में निवास कर। तू यज्ञ आदि प्रत्येक शुभ कार्य में उत्तम रीति से हमारी रक्षा और अभिवृद्धि कर।

टि. *हे त्वष्टा* - **त्वष्टः।** त्वष्टर् देव - सा.। सर्वदुःखछेत्तः - दया.।O maker of forms - Ar.

*व्यापक* - **विभुः।** ईश्वरस् त्वम्- वे.। व्याप्तः - सा.। व्यापकः परमेश्वर इव - दया.। diffusive - W. rich - G. all-pervading - Ar.

*पोषण के निमित्त* - **पोषे।** पोषणे - वे.। पोषकरणे - सा.। पोषे पुष्यन्ति यस्मिंस् तस्मिन् - दया.।in kindness - W. in all plenty - G. in thy fostering - Ar.

*स्वेच्छा से* - **त्मना।** आत्मनैव - वे.। स्वयम् एव - सा.। दया.।

*उत्कर्ष से रक्षा कर तू* - **उत् अव।** रक्ष - वे.। उत्कृष्टं रक्ष - सा.। दया.।help us - G.

**यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि। तत्र हव्यानि गामय।। १०।।**

यत्र। वेत्थ। वनस्पते। देवानाम्। गुह्या। नामानि। तत्र। हव्यानि। गमय।। १०।।

*जहाँ जानता है तू, हे वनों के पालक!,*
*देवों के गुह्यों को, नामों को,*
*वहाँ हव्यों को पहुँचा दे तू।। १०।।*

चूँकि वह परमेश्वर ओषधियों, पेड़-पौधों, वृक्षों आदि में रस के रूप में विद्यमान होकर उनका पालन करता है, इसलिये वह वनस्पति, अर्थात् वनों वृक्षों का पालन करने वाला, कहलाता है। सूखे घास, काष्ठ आदि में वह अग्नि के रूप में विद्यमान होने से भी वनस्पति कहलाता है। वनों, वृक्षों की तरह उगने, बढ़ने, मृत्यु से कटने और पुनः उत्पन्न हो जाने वाले मनुष्यों, पशु-पक्षी आदि जीवों में वह जीवात्मा के रूप में विद्यमान होने से वनस्पति है। इस मन्त्र में उससे प्रार्थना की जा रही है, कि हे ओषधियों, पेड़-पौधों, मनुष्यों, पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं के पालक जगदीश्वर! इस जगत् में जो-जो जीव अथवा पदार्थ दिव्यता से युक्त है, उन सब को तू हमारे द्वारा अर्पित हवि को पहुँचा दे। हमारी हवियां सभी दैवी शक्तियों के पालन और अभिवृद्धि के लिये हों।

टि. *हे वनों के पालक* - **वनस्पते**। यूपाभिमानिदेव - सा.। वनस्य पालक - दया.। Tree - Ar. O Lord of vegetation - Satya.

*गुह्यों को नामों को* - **गुह्या नामानि**। गुह्यानि नामानि - वे.। नामकानि रूपाणि - सा.। the secret forms - W. mysterious names - G.

पहुँचा दे तू - **गमय**। प्रापय - सा.। अत्र तुजादीनाम् इति दीर्घः - दया.।

**स्वाहाग्नये वरुणाय स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः।**
**स्वाहा देवेभ्यो हविः।। ११।। २१।।**

स्वाहा। अग्नये। वरुणाय। स्वाहा। इन्द्राय। मरुत्ऽभ्यः।
स्वाहा। देवेभ्यः। हविः।। ११।।

*सु-आहुत होवे अग्नि के लिये, वरुण के लिये,*
*सु-आहुत होवे इन्द्र के लिये, मरुतों के लिये।*
*सु-आहुत होवे देवों के लिये, हवि (हमारी)।। ११।।*

मैं सब मनुष्यों को सन्मार्ग पर ले चलने वाले परमेश्वर को अपनी आहुति समर्पित करता हूँ। मैं इस जगत् को सब ओर से आवृत करके रक्षा और पालन करने वाले परमेश्वर को अपनी आहुति समर्पित करता हूँ। मैं समस्त ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर को अपनी आहुति समर्पित करता हूँ। मैं ईश्वरीय कार्यों में सहायक दिव्य शक्तियों को अपनी आहुति समर्पित करता हूँ। मैं दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त सभी दैवी शक्तियों को अपनी आहुति समर्पित करता हूँ। वे इसे स्वीकार करें।

टि. *सु-आहुत होवे हवि* - **स्वाहा हविः**। स्वाहेत्येतत् सु आहेति वा। स्वा वाग् आहेति वा। स्वं प्राहेति वा। स्वाहुतं हविर् जुहोतीति वा। या. (नि. ८.२०)। स्वाहुतम् अस्तु हविः। अपि वा स्वाहा कृणोमि। वे.। इदं हविः स्वाहा करोमीति शेषः। स्वाहुतं करोमीत्यर्थः। सा.। स्वाहा सत्या वाक्, सत्या

क्रिया, हविः दातव्यम् अस्तु - दया.। The oblation is offered with reverence - W. with Svāhā be oblation brought - G. Svāhā be our offerings - Ar.

## सूक्त ६

ऋषिः - वसुश्रुत आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - पङ्क्तिः। दशर्चं सूक्तम्।

**अग्निं तं मन्ये यो वसुर् अस्तं यं यन्ति धेनवः।**

**अस्तम् अर्वन्त आशवो ऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर।। १।।**

अग्निम्। तम्। मन्ये। यः। वसुः। अस्तम्। यम्। यन्ति। धेनवः।

अस्तम्। अर्वन्तः। आशवः। अस्तम्। नित्यासः। वाजिनः। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर।। १।।

*अग्नि की उसकी स्तुति करता हूँ मैं, जो बसाने वाला है,*

*आश्रयभूत के जिसके पास, जाती हैं प्रसन्न करने वाली गौएं।*

*आश्रयभूत के (जिसके पास जाते हैं), अश्व आशुगामी,*

*आश्रयभूत के (जिसके पास जाते हैं), नित्य बलशाली,*

*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। १।।*

मैं सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले उस परमेश्वर की स्तुति करता हूँ, जो सब को बसाने वाला और सब में वास करने वाला है, जिस आश्रयभूत की शरण में मन को प्रसन्न करने वाली दुधारू गौएं, ज्ञानरश्मियां और स्तुति रूपी वाणियां जाती हैं, जिस अशरणशरण की शरण में आशुगमी अश्व, शारीरिक बल और प्राणशक्तियां जाती है, जिस अशरणशरण की शरण को नित्य आध्यात्मिक बल वाले मेधावी उपासक जन प्राप्त होते हैं। हे अग्रणी परमेश्वर! तू हम अपने उपासकों को सन्मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणाएं तथा जीवनयापन के लिये उत्तम अन्न-धन सब ओर से प्राप्त करा।

टि. *स्तुति करता हूँ मैं* - मन्ये। स्तौमि - वे.। सा.। I glorify - W. I value - G. I meditate -Ar.

*बसाने वाला* - **वसुः**। वासयिता - वे.। वासकः - सा.। सर्वत्र वस्ता - दया.। the giver of dwellings - W. that good Lord - G. the dweller in things - Ar.

*आश्रयभूत के* - **अस्तम्**। गृहभूतम् - वे.। अस्तं गृहवद् आश्रयभूतम् - सा.। प्रक्षिप्तं प्रेरितम् - दया.। to their home - W. as to their home - Ar.

*नित्य बलशाली* - **नित्यासः वाजिनः**। अजस्राः बलवन्तः - वे.। नित्यासो नित्यप्रवृत्तयो वाजिनो हविर्लक्षणान्नवन्तो यजमानाः - सा.। अविनाशिनः वेगवन्तः - दया.। the constant offerers of oblations - W. strong enduring steeds - G. the eternal steeds of swiftness - Ar.

*प्रेरणा को* - **इषम्**। अन्नम् - वे.। सा.। दया.। food - W. the force of thy impulse - Ar.

**सो अग्निर् यो वसुर् गृणे सं यम् आयन्ति धेनवः।**

**सम् अर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर।। २।।**

सः। अग्निः। यः। वसुः। गृणे। सम्। यम्। आऽयन्ति। धेनवः।

सम्। अर्वन्तः। रघुऽद्रुवः। सम्। सुऽजातासः। सूरयः। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर।। २।।

*वह अग्नि (है), जो बसाने वाला स्तुति किया जाता है,*

*सम्यक् जिसके पास, आती हैं गौएं।*

*सम्यक् (आते हैं) अश्व फुर्ती से दौड़ने वाले,*

*सम्यक् (आते हैं) उत्तम जन्मों वाले, मेधावी जन,*

*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। २।।*

वही सब को सन्मार्ग दिखाकर आगे ले चलने वाला परमेश्वर है, जो सब को बसाने वाला और सब में वास करने वाला है, और जो सब के द्वारा स्तुति किया जाता है। वही सर्ववासक परमेश्वर है, जिसकी शरण में सब के मन को प्रसन्न करने वाली दुधारू गौएं, ज्ञानरश्मियां और स्तुतिरूपी सच्ची मीठी वाणियां आती हैं, फुर्ती से दौड़ने वाले अश्व, शारीरिक बल और प्राणशक्तियां जिसकी शरण में आती हैं, अपने शुभ कर्मों से उत्तम जन्मों को पाने वाले मेधावी उपासक जन जिसकी शरण में आते हैं। हे अग्रणी परमेश्वर! तू हम उपासकों को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाली उत्तम प्रेरणाएं और जीवनयापन के लिये श्रेष्ठ अन्न तथा धन प्राप्त करा।

टि. *स्तुति किया जाता है* - **गृणे**। स्तूयते - वे.। सा.। स्तौमि - दया.। whom we laud as good - G. voiced by me - Ar.

*उत्तम जन्मों वाले मेधावी जन* - **सुजातासः सूरयः**। शोभनजननाः प्राज्ञाः - वे.। सूरयो मेधाविनः - सा.। प्रसिद्धाः विद्वांसः - दया.। the well-born devout worshippers - W. well-born princes - G. who have come to the perfect birth - Ar.

**अग्निर् हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः।**

**अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यम् इषं स्तोतृभ्य आ भर।। ३।।**

अग्निः। हि। वाजिनम्। विशे। ददाति। विश्वऽचर्षणिः।

अग्निः। राये। सुऽआभुवम्। सः। प्रीतः। याति। वार्यम्। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर।। ३।।

*अग्नि बलवान् को, प्रवेश करने वाले के लिये,*

*प्रदान करता है, सब को देखने वाला।*

*अग्नि धन को (प्रदान करता है), सुष्ठु कार्यसाधक को,*

*वह प्रसन्न (होकर), प्राप्त होता है वरणीय को,*

*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। ३।।*

वह अग्रनायक परमेश्वर सब पर दृष्टि रखने वाला, सब के शुभाशुभ कर्मों को देखने वाला है। वह प्रभुभक्ति में प्रवेश करने वाले मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से बलवान् सन्तति प्रदान करता है। वह उसे सब कार्यों को भली प्रकार साधने वाला धन भी प्रदान करता है। जब वह परमेश्वर उस वरणीय उपासक पर प्रसन्न हो जाता है, तो स्वयं उसे प्राप्त हो जाता है। हे अग्रणी प्रभो! तू हम उपासकों को सन्मार्ग में आगे बढ़ाने वाली प्रेरणाएं और जीवनयापन के लिये उत्तम अन्न और धन प्राप्त करा।

टि. *बलवान् को* - **वाजिनम्।** अश्वम् - वे.। अन्नवन्तं पुत्रम् अश्वम् अन्नं वा - सा.। बहुवेगवन्तम् - दया.। (a son) possessing abundant food - W. a steed - G. steed of plenitude - Ar.

*प्रवेश करने वाले के लिये* - **विशे।** मनुष्याय - वे.। यजमानाय - सा.। प्रजायै - दया.। to the man (who worships him) - W. to man - G. Ar.

*सब को देखने वाला* - **विश्वचर्षणिः।** विश्वस्य द्रष्टा - वे.। विश्वे चर्षणयो मनुष्या रक्षणीया अर्चका वा यस्य स तथोक्तः। यद्वा। पश्यतिकर्मैतत्। सर्वस्य द्रष्टा। सा.। विश्वप्रकाशकः - दया.। the all-beholding - W. God of all mankind - G. all-seeing - Ar.

*धन को* - **राये।** धनार्थम् - वे.। धनार्थिने। अथवा द्वितीयार्थे चतुर्थी। धनम्। सा.। राये धनाय - दया.। wealth - W. for wealth - G. for the riches - Ar.

*सुष्ठु कार्यसाधक को* - **सुऽआभुवम्।** शोभनभवनम् - वे.। सुष्ठु सर्वत्र व्याप्तम् - सा.। यः स्वयम् आभवति तम् - दया.। which is of its own nature precious - W. precious gear - G.

**आ ते॑ अग्न इधीमहि द्यु॒मन्तं॑ देवा॒जर॑म्।**
**यद् ध॒ स्या ते॒ पनी॑यसी स॒मिद् दी॒दय॑ति॒ द्यवीषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥ ४॥**

आ। ते॒। अ॒ग्ने॒। इ॒धी॒म॒हि॒। द्यु॒ऽमन्त॑म्। दे॒व॒। अ॒जर॑म्।
यत्। ह॒। स्या। ते॒। पनी॑यसी। स॒म्ऽइत्। दी॒दय॑ति। द्यवि॑। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॥ ४॥

*सब ओर से तुझको, हे अग्ने! प्रज्वलित करें हम,*
*दीप्तिमान् को, हे देव!, जरारहित को।*
*ताकि निश्चय से, वह तेरी प्रशंसनीया,*
*दीप्ति, खूब प्रदीप्त होती रहे, द्युलोक में,*
*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू॥ ४॥*

हे दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त मार्गदर्शन करने वाले जगदीश्वर! तू प्रकाशमान है, तू अजर और अमर है। हम सदा अपनी स्तुतियों के द्वारा तेरी महिमाओं को प्रकाशित करते रहें, उनका प्रचार-प्रसार सर्वत्र करते रहें, ताकि तेरी महिमाओं की वह प्रशंसा के योग्य दीप्ति हमारे हृदयरूपी आकाश में सदा खूब प्रदीप्त होती रहे। हे अग्रणी परमेश्वर! तू हम उपासकों को सन्मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणाएं और जीवनयापन के लिये उत्तम अन्न और धन सब ओर से प्राप्त करा।

टि. *प्रज्वलित करें हम* - **इधीमहि।** दीपयामः - वे.। सा.। प्रदीपयेम - दया.। अतीव प्रशंसनीया प्रदीप्ता - दया.। we kindle thee - W. we will kindle thee - G.

*प्रशंसनीया दीप्ति* - **पनीयसी समित्।** स्तुत्या दीप्तिः - सा.। glorious blaze - W. glorious fuel - G. the fuel becomes more effective in its labour - Ar.

*खूब प्रदीप्त होती रहे* - **दीदयति।** सन्दीपयति - वे.। दीप्यते - सा.। प्रदीप्यते - दया.।

*द्युलोक में* - **द्यवि।** अह्नि - वे.। द्युलोके - सा.। प्रकाशे - दया.। in heaven - W. by day - G. in our hearts - Satya.

**आ ते॑ अग्न ऋ॒चा ह॒विः शु॒क्रस्य॑ शोचिषस् पते।**
**सुश्च॑न्द्र॒ दस्म॒ विश्प॑ते॒ हव्य॑वा॒ट् तुभ्यं॑ हूयत॒**
**इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र।। ५।। २२।।**

आ। ते॒। अ॒ग्ने॒। ऋ॒चा। ह॒विः। शु॒क्रस्य॑। शो॒चि॒षः॒। प॒ते॒।
सु॒ऽच॑न्द्र। दस्म॑। विश्प॑ते। हव्य॑ऽवाट्। तुभ्य॑म्। हू॒य॒ते॒। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र।। ५।।

*सर्वतः तुझे, हे अग्ने!, ऋचा के साथ हवि (दी जा रही है),*
*हे तेजस्वी प्रकाश के स्वामी।*
*हे सुष्ठु आह्लादक!, हे दुःखविनाशक!, हे प्रजापालक!,*
*हे समर्पणों को स्वीकार करने वाले!, तुझे हवि दी जा रही है,*
*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। ५।।*

हे तेजस्वी प्रकाश के स्वामी!, हे अपने उपासकों को भली प्रकार आह्लादित करने वाले!, हे तीनों प्रकार के तापों और हिंसक जनों का विनाश करने वाले!, हे प्रजाओं का पालन करने वाले!, हे उपासक जनों के समर्पणों को स्वीकार करने वाले!, हे सब को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! हम तुझे वेदमन्त्रों के साथ अपना नैवेद्य समर्पित कर रहे हैं। तू अपने उपासकों को सन्मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये उत्तम प्रेरणाएं और जीवनयापन के लिये अन्न एवं धन प्रदान कर।

टि. *हे तेजस्वी प्रकाश के स्वामी* - **शुक्रस्य शोचिषः पते।** हे शोचिषो दीप्तेः पते स्वामिन् शक्रस्य दीप्तस्य ते - सा.। शुद्धस्य प्रकाशस्य स्वामिन् - दया.। splended, Lord of flame - G. O Master of the brilliant Light - Ar.

*हे सुष्ठु आह्लादक* - **सुश्चन्द्र।** हे सुकान्त - वे.। सुष्ठ्वाह्लादक शोभनहिरण्य वा - सा.। शोभनं चन्द्रं हिरण्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.। giver of pleasure - W. bright - G.

*हे दुःखविनाशक* - **दस्म।** दर्शनीय - वे.। दस्म शत्रूणाम् उपक्षपयितः - सा.। दुःखोपक्षयितः - दया.। destroyer (of foes) - W. wondrous - G. achiever of works - Ar.

**प्रो त्ये अ॒ग्नयो॒ ऽग्निषु॒ विश्वं॑ पुष्यन्ति॒ वार्य॑म्।**
**ते हि॑न्वि॒रे॒ त इ॑न्वि॒रे॒ त इ॑षण्यन्त्यानु॒षग् इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र।। ६।।**

प्रो इति॑। त्ये। अ॒ग्नय॑ः। अ॒ग्निषु॑। विश्व॑म्। पु॒ष्य॒न्ति॒। वार्य॑म्।
ते। हि॒न्वि॒रे॒। ते। इ॒न्वि॒रे॒। ते। इ॒ष॒ण्य॒न्ति॒। आ॒नु॒षक्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र।। ६।।

*प्रकर्ष से वे अग्नियां, अग्नियों के मध्य,*
*प्रत्येक को पुष्ट करती हैं, वरणीय पदार्थ को।*
*वे वृद्धि करती हैं, वे प्रसन्न करती हैं,*
*वे कामना करती हैं, अनुकूलता के साथ,*
*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। ६।।*

हे सबका नेतृत्व करने वाले परमात्मन्! तेरे द्वारा उत्पन्न की हुई अग्नियों में जो भी अग्नियां हैं, चाहे वह मेघों में उत्पन्न होने वाली विद्युताग्नि हो, चाहे जलों में उत्पन्न होने वाली वडवाग्नि हो,

चाहे वनों में उत्पन्न होने वाली दवाग्नि हो, चाहे यज्ञकुण्ड में अरणियों से उत्पन्न होने वाली यज्ञाग्नि हो, चाहे प्राणियों के शरीरों में विद्यमान जठराग्नि हो, और चाहे कोई अन्य अग्नि हो, ये सब अग्नियां हमारे लिये वरणीय पदार्थों को पुष्ट करती हैं, हमारे अनेक प्रकार के कार्यों को साधती हैं। वे हमारे अनुकूल होकर हमें जीवन में आगे बढ़ाती हैं, वे हमें अनेक प्रकार की प्रसन्नताएं प्रदान करती हैं और बदले में हमसे कुछ चाहती भी हैं। हे परमेश्वर! तू अपने उपासकों को सन्मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये उत्तम प्रेरणाएं और सुखी जीवन जीने के लिये पवित्र अन्न और धन प्रदान कर।

टि. *वे वृद्धि करती हैं* – **ते हिन्विरे**। हि गतौ वृद्धौ च (प.पा. १२५७)।। ते धनं प्रेरयन्ति - वे.। ते प्रीणयन्ति – सा.। वर्धयन्ति – दया.। they give delight - W.

*वे प्रसन्न करती हैं* – **ते इन्विरे**। ते ऽस्मान् प्रीणयन्ति – वे.। ते व्याप्नुवन्ति – सा.। दया.। they spread abroad - W.

*वे कामना करती हैं* – **ते इषण्यन्ति**। ते अस्माकम् अन्नम् इच्छन्ति – वे.। सा.। दया.। they move themselves continually - G.

**तव॒ त्ये अ॑ग्ने अ॒र्चयो॒ महि॑ व्राधन्त वा॒जिन॑ः।**

**ये पत्व॑भिः श॒फाना॑ं व्र॒जा भु॒रन्त॒ गोना॒म् इष॑ं स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र।। ७।।**

तव॑। त्ये। अ॒ग्ने॒। अ॒र्चय॑ः। महि॑। व्रा॒ध॒न्त॒। वा॒जिन॑ः।

ये। पत्व॑ऽभिः। श॒फाना॑म्। व्र॒जा। भु॒रन्त॑। गोना॑म्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्य॑ः। आ। भ॒र।। ७।।

*तेरी वे, हे अग्ने!, दीप्तियां,*

*अत्यधिक बढ़ती हैं, बलशाली।*

*जो पातों से शफों के,*

*व्रजों में पहुँचती हैं गौओं के,*

*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। ७।।*

हे सब के नायक परमेश्वर! तेरी दीप्तियां, तेरी प्रकाश-रश्मियां बहुत बलशाली हैं और अत्यधिक तीव्र गति से आगे बढ़ती रहती हैं। ये दीप्तियां अपने शफों के पातों से अर्थात् अपनी तीव्र गतियों से गौओं अर्थात् सूर्यरश्मियों के बाड़ों अथवा समूहों में पहुँच जाती हैं और उनके साथ मिलकर जगत् को प्रकाशित करने का कार्य करती हैं। हे जगदीश्वर! तू अपने उपासकों को सन्मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणाएं प्रदान कर और जीवनयापन के लिये उत्तम अन्न और धन प्रदान कर।

टि. *अत्यधिक बढ़ती हैं* – **महि व्राधन्त**। अत्यन्तं वर्धयन्ति – वे.। महद् अत्यधिकं वर्धन्ते - सा.। महान्तः वर्धन्ते – दया.। wax mightily - G. greaten the Vast - Ar.

*बलशाली* – **वाजिनः**। बलवन्तः – वे.। अन्नवन्तः। यद्वा लुप्तोपमा। अश्वा इव। सा.। वेगवन्तः – दया.। with abundant food - W. like strong chargers - G. thy steeds of plenitude - Ar.

*पातों से शफों के* – **पत्वभिः शफानाम्**। शफानां पतनैः – वे.। सा.। पत्वभिः गमनैः खुराणाम् – दया.। with the treadings of their hoofs - G. Ar.

*व्रजों में पहुँचती हैं गौओं के* – **व्रजा भुरन्त गोनाम्**। गवाम् व्रजाः आ गच्छन्ति तान्।

प्रयच्छन्ति पशून् इत्यर्थः। वे.। गोनां व्रजा यूथानि भुरन्त इच्छन्ति। आयता ज्वाला होमाय काङ्क्षन्त इत्यर्थः। सा.। वेगान् धरन्ति गवाम् - दया.। they seek the pastures of hoofed cattle - W. go swiftly to the stalls of kine - G. Ar.

**नवा॑ नो अग्न॒ आ भ॑र स्तो॒तृभ्यः॑ सुक्षि॒तीर् इषः॑।**
**ते स्या॑म॒ य आ॑नृ॒चुस् त्वादू॑तासो॒ दमे॑दम॒ इष॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥ ८॥**

नवाः॑। न॒ः। अ॒ग्ने॒। आ। भ॒र। स्तो॒तृऽभ्यः॑। सु॒ऽक्षि॒तीः। इषः॑।
ते। स्या॒म॒। ये। आ॒नृ॒चुः। त्वाऽदू॑तासः। दमे॑ऽदमे। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॥ ८॥

*स्तुत्यों को हमें, हे अग्ने!, प्राप्त करा तू,*
*स्तोताओं को, शोभन निवासों को, प्रेरणाओं को।*
*वे होवें हम (समृद्ध), जो ऋचाओं का गान करते हैं,*
*तुझे दुःखविनाशक मानने वाले, घर-घर में,*
*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू॥ ८॥*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! हम स्तोताओं को इस जीवन में प्रशंसनीय प्रेरणाएं और उत्तम निवासस्थान अर्थात् उत्तम लोक प्रदान कीजिये। हे प्रभो! हम जो तेरे उपासक विभिन्न ऋचाओं के द्वारा तेरा स्तुतिगान करते हैं और तुझे सब प्रकार के दुःखों का विनाशक मानते हैं, वे हम अपने-अपने घरों में लौकिक और अलौकिक सब प्रकार की समृद्धियों को प्राप्त करें। हे जगदीश्वर! तू हम स्तोताओं को जीवन में आगे बढ़ने के लिये उत्तम प्रेरणाएं और जीवनयापन के लिये श्रेष्ठ अन्न और धन प्रदान कर।

टि. *स्तुत्यों को* - **नवाः**। स्तुत्या नूत्ना वा - सा.। नवीनाः - दया.। new - W. safe - G.

*शोभन निवासों को* - **सुक्षितीः**। सुप्रजाः - वे.। सुनिवासाः सुप्रजा वा - सा.। शोभनाः क्षितयः पृथिव्यो मनुष्या वा यासु ताः - दया.। dwellings - W. happy homes - G. happy worlds - Ar.

*ऋचाओं का गान करते हैं* - **आनृचुः**। अर्चयन्ति - सा.। अर्चामः - दया.।

*तुझे दुःखविनाशक मानने वाले* - **त्वादूतासः**। त्वं दूतः येषां ते - वे.। दया.। त्वां दूतं फलसूचकं लब्धवन्तः सन्तः स्याम - सा.। having thee for a messenger - W. G. Ar.

*घर-घर में* - **दमेदमे**। यज्ञेयज्ञे - वे.। सर्वेषु यागगृहेषु - सा.। गृहेगृहे- दया.। in every house - W.G. in home and home - Ar.

**उ॒भे सु॑श्चन्द्र स॒र्पिषो॒ दर्वी॑ श्रीणीष आ॒सनि॑।**
**उ॒तो न॒ उत् पु॑पूर्या उ॒क्थेषु॑ शवसस् पत॒ इष॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥ ९॥**

उ॒भे इति॑। सु॒ऽच॒न्द्र॒। स॒र्पिषः॑। दर्वी॒ इति॑। श्री॒णी॒षे॒। आ॒सनि॑।
उ॒तो इति॑। न॒ः। उत्। पु॒पू॒र्याः॒। उ॒क्थेषु॑। श॒व॒सः॒। प॒ते॒। इष॑म्। स्तो॒तृभ्यः॑। आ। भ॒र॥ ९॥

*दोनों को, हे उत्तम आह्लादक!, घृत की,*
*दर्वियों को, पकाता है तू मुख में।*
*और हमारा उत्तमता से, पालन कर तू,*

*स्तुतिकर्मों में, हे बल के पालक!,*

*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। ९।।*

हे अपने उपासकों को भली प्रकार प्रसन्न करने वाले परमेश्वर! हम तुझे अपने नैवेद्यों को दो प्रकार से भेंट करते हैं। एक तो अपने हाथों से आहुति को यज्ञकुण्ड में डालकर अर्थात् शारीरिक रूप से, और दूसरे अपने विचारों को मन के द्वारा तुझे अर्पित करके। तू इन दोनों ही प्रकार से भेंट किये हुए हमारे समर्पणों को भली प्रकार स्वीकार करता है। हे प्रभो! तू हमपर सतत अपनी कृपादृष्टि बनाए रख। हे बलों के पालक! तू स्तुति और यज्ञ आदि शुभ कर्मों में हमारा उत्तम प्रकार से पालन करता रह और हमें सब प्रकार के धनों से परिपूर्ण कर दे। तू सन्मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये अपने स्तोताओं को उत्तम प्रेरणाएं और जीवनयापन के लिये उत्तम अन्न एवं धन प्रदान कर।

टि. *दोनों को दर्वियों को* – **उभे दर्वी।** जुहूपभृतौ – वे.। सा.। दृणाति याभ्यां ते पाकसाधने उभे – दया.। both ladles of the oil - G. Ar.

*हे उत्तम आह्लादक* – **सुश्चन्द्र।** हे सुकान्त – वे.। शोभनाह्लादन शोभनहिरण्य वा – सा.। सुष्ठुसुवर्णाद्यैश्वर्य – दया.। thou brilliant God - G. O delightful Flame - Ar.

*पकाता है तू मुख में* – **श्रीणीषे आसनि।** आस्ये श्रयसि – वे.। आस्ये पचसि – सा.। पचसि – दया.। within thy mouth warmest - G. turneth towards thy mouth - Ar.

*उत्तमता से पालन कर तू* – **उत् पुपूर्याः।** उत् पूरय – वे.। सा.। अलङ्कुर्याः पालयेः त्वम् – दया.। mayest thou fulfil (our desires) - W. fill us - G. mayest thou carry us high - Ar.

*स्तुतिकर्मों में* – **उक्थेषु।** यागेषु – सा.। प्रशंसितेषु धर्म्येषु कर्मसु – दया.। at our solemn rites - W. in our hymns - G. in the utterances - Ar.

**एवाँ अ॒ग्निम् अ॑जुर्यमुर् गी॒र्भिर् य॒ज्ञेभि॑र् आनु॒षक्।**
**दध॑द् अ॒स्मे सु॒वीर्य॑म् उ॒त त्यद् आ॒श्वश्व्य॒म्**
**इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र।। १०।। २३।।**

ए॒व। अ॒ग्निम्। अ॒जु॒र्य॒मुः। गी॒ःऽभिः। य॒ज्ञेभिः॑। आ॒नु॒षक्।
दध॑त्। अ॒स्मे इति॑। सु॒ऽवीर्य॑म्। उ॒त। त्यत्। आ॒शु॒ऽअश्व्य॑म्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र।। १०।।

*इस प्रकार अग्नि के पास जाते हैं, नियन्त्रित करते हैं (उसको),*
*स्तुतियों से, यज्ञों से, अनुकूलता के साथ।*
*प्रदान करे वह हमें उत्तम वीर सन्तति को,*
*और उस आशुगति अश्वसमूह को,*
*प्रेरणा को स्तोताओं के लिये, सब ओर से प्रदान कर तू।। १०।।*

इस प्रकार उपासक जन सबका नेतृत्व करने वाले उस परमेश्वर की शरण में जाते हैं और अनुकूलता के साथ अपनी स्तुतियों और समर्पणों के द्वारा उसे अपने वश में करने का, अपने अनुकूल बनाने का, प्रयास करते हैं। वह जगदीश्वर हमें पुत्र, पौत्र आदि वीर सन्तानें प्रदान करे। वह हमें तीव्र गति वाला अश्वसमूह अथवा तपःपूत बलवान् इन्द्रियसमूह प्रदान करे। हे प्रभो! तू अपने

स्तोताओं को सन्मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये उत्तम प्रेरणाएं और जीवनयापन के लिये उत्तम अन्न और धन प्रदान कर।

टि. *अग्नि के पास जाते हैं, नियन्त्रित करते हैं उसको* - **अग्निम् अजुर्यमुः**। अग्निम् अस्तुवन्, अपि वा स्तुवन्ति यच्छन्तीत्याख्यातद्वयजं पदम्। अपि वा द्वे एते पदे 'अजुः', 'यमुः' इति। तत्र द्वितीयस्यापि निपातो दृष्टः। वे.। अग्निं गच्छन्ति। तथा कृत्वा यमुः यमयन्ति स्थापयन्ति। हविर्भिर् यजन्तीत्यर्थः। अत्राख्यातम् आख्यातेन क्रियासातत्य इति समासः। सा.। प्रक्षिपेयुर् नियच्छेयुश् च - दया.। repaired to Agni - W. Agni have we duly served - G. have they driven and controlled the Fire - Ar.

*उत्तम वीर सन्तति को* - **सुवीर्यम्**। शोभनवीर्यम् - वे.। शोभनपुत्रादिकम् - सा.। सुष्ठुपराक्रमम् - दया.। male descendants - W. G. the perfect hero-might - Ar.

*आशुगति अश्वसमूह को* - **आशुऽअश्व्यम्**। आशु गन्तारम् अश्वसमूहम् - वे.। आशवो ऽश्वा यस्य भवन्ति स आश्वश्वः। तस्य भाव आश्वश्व्यम्। सा.। आशवो वेगादयो गुणा अश्वा इव यस्मिंस् तम् - दया.। wealth of fleet horses - W. G. the perfect power of the Horse - Ar.

## सूक्त ७

ऋषिः - इष आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-९ अनुष्टुप्, १० पङ्क्तिः। दशर्चं सूक्तम्।

**सखा॑यः सं वः॑ स॒म्यञ्च॑म् इषं॑ स्तोमं॑ चा॒ग्नये॑।**
**वर्षि॑ष्ठाय क्षिती॒नाम् ऊ॒र्जो नप्त्रे॒ सह॑स्वते।। १।।**

सखा॑यः। सम्। व॒ः। स॒म्यञ्च॑म्। इष॑म्। स्तोम॑म्। च॒। अ॒ग्नये॑।
वर्षि॑ष्ठाय। क्षि॒ती॒नाम्। ऊ॒र्जः। नप्त्रे॑। सह॑स्वते।। १।।

*हे मित्रो! सम्यक् (प्रदान करो), अपने उपयुक्त को,*
*अन्न को, स्तोत्र को भी, अग्नि के लिये।*
*उत्तम सुखवर्षक के लिये, प्रजाओं के निमित्त,*
*बल का पतन न करने वाले के लिये, बलवान् के लिये।। १।।*

हे उपासक मित्रो! सब का नायक वह परमेश्वर प्रजाओं के लिये उत्तम सुखवर्षक है। वह स्वयं बलवान् है और अपने बल को कभी अपने से दूर नहीं होने देता। तुम उसे कभी मत बिसारो। तुम उसे उसके अपने उपयुक्त अन्न की आहुतियां और स्तुतियां प्रदान किया करो।

टि. *सम्यक् (प्रदान करो)* - **सम्**। सम् प्रयच्छत - वे.। यूयं संस्कुरुत। उपसर्गश्रुतेर् योग्य-क्रियाध्याहारः। सा.। offer - W. G.

*उपयुक्त को* - **सम्यञ्चम्**। समीचीनम् - वे.। दया.। fitting - W. seemly - G.

*उत्तम सुखवर्षक के लिये* - **वर्षिष्ठाय**। अत्यन्तं वर्षित्रे - वे.। अतिशयेन प्रवृद्धाय - सा.। अतिशयेन वृष्टिकराय - दया.। to the most liberal benefactor - W. to the supremest - G. to the most powerful - Ar.

*बल का पतन न करने वाले के लिये* - ऊर्जः नप्त्रे। अन्नस्य पौत्राय - वे.। बलस्य न पातयित्रे तत्पुत्राय वा - सा.। पराक्रमयुक्तस्य नप्त्र इव वर्तमानाय - दया.। to the son of strength - W. G. to the child of energy - Ar.

**कुत्रा॑ चिद् यस्य॒ समृ॑तौ र॒ण्वा नरो॑ नृ॒षद॑ने।**
**अर्ह॑न्तश् चि॒द् यम् इ॑न्ध॒ते सं॑ज॒नय॑न्ति ज॒न्तव॑ः।। २।।**

कुत्र॑। चि॒त्। यस्य॑। सम्ऽऋ॑तौ। र॒ण्वाः। नर॑ः। नृ॒ऽसद॑ने।
अर्ह॑न्तः। चि॒त्। यम्। इ॒न्ध॒ते। स॒म्ऽज॒नय॑न्ति। ज॒न्तव॑ः।। २।।

*कहाँ है (वह), जिसकी संगति के निमित्त,*
*आनन्दित होते हैं नर, जनसभा में।*
*पूजनीय भी जिसको, प्रज्वलित करते हैं,*
*सम्यक् उत्पन्न करते है, (अन्य) प्राणी भी।। २।।*

वह अग्रणी परमेश्वर कहाँ निवास करता है, जिससे सङ्गम के लिये विद्वज्जन ज्ञानगोष्ठियों में उसकी विभिन्न चर्चाएं चलाते हुए और महिमाओं का गान करते हुए आनन्द की प्राप्ति करते हैं, पूज्य ऋषि-मुनि भी जिसकी जोत को अपने हृदयों में जगाते हैं और अन्य साधारण जन भी जिसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना नित्य करते हैं।

टि. *कहाँ है (वह)* - **कुत्र चित्**। सो ऽग्निः कुत्र चित् भवति - वे.। सो ऽग्निः कुत्र चिद् वर्तत इति शेषः - सा.। कस्मिन्। अत्र ऋचि तुनुघेति दीर्घः। दया.।

*संगति के निमित्त* - **समृतौ**। सङ्गमने - वे.। सम्प्राप्तौ - सा.। सम्यग् यथार्थबोधयुक्तायां प्रज्ञायाम् - दया.। upon whose presence - W. G.

*आनन्दित होते हैं नर जनसभा में* - **रण्वाः नरः नृसदने**। रममाणाः नरः नृणां सदने गृहे वर्तन्ते - वे.। दया.। रममाणा नेतार ऋत्विजः, नृषदने यागगृहे - सा.। the rejoicing conductors (of the ceremony) are offering homage in the hall of sacrifice - W.

*पूजनीय भी* - **अर्हन्तः चित्**। यजमानाः - वे.। चिद् इति पूजायाम्। अर्हन्तः पूज्याः पूजयन्तो वा सन्तः - सा.। सत्कुर्वन्तः चित् - दया.। worthy ones - G.

**सं यद् इ॒षो वना॑मह॒ सं ह॒व्या मानु॑षाणाम्।**
**उ॒त द्यु॒म्नस्य॒ शव॑स ऋ॒तस्य॑ र॒श्मिम् आ द॑दे।। ३।।**

सम्। यत्। इ॒षः। वना॑महे। सम्। ह॒व्या। मानु॑षाणाम्।
उ॒त। द्यु॒म्नस्य॑। शव॑सा। ऋ॒तस्य॑। र॒श्मिम्। आ। द॒दे॒।। ३।।

*सम्यक् जब इच्छाओं को, जीत लेते हैं हम,*
*सम्यक् हव्यों को, (समर्पित करते हैं) मनुष्यों के।*
*तब (बढ़े हुए) तेज के, सामर्थ्य से,*
*सत्यनियम की लगाम को, थामता है वह।। ३।।*

जब हम मनुष्य अपनी इच्छाओं को वश में कर लेते हैं और अपने से सम्बन्ध रखने वाले सभी

पदार्थों को आहुति के रूप में उसे समर्पित कर देते हैं, तब उसका तेज वृद्धि को प्राप्त हो जाता है और उस तेज के सामर्थ्य से वह परमेश्वर सत्यनियम को अपने वश में रखता हुआ उसका सब ओर से भली प्रकार पालन कराता है। भाव यह है, कि जब हम अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण रखते हुए प्रभु की इच्छाओं के अनुसार आचरण करते हैं और अपना सब-कुछ उसी को समर्पित कर देते हैं, तो उससे उसका और दैवी शक्तियों का पक्ष सशक्त होता है। इससे आसुरी शक्तियां हतोत्साह होती हैं और सभी प्रजाएं सत्यनियमों का पालन करने लगती हैं।

टि. *इच्छाओं को जीत लेते हैं हम* - **इषः वनामहे**। अन्नानि संभजामहे - सा.। दया.। when we present him food - W. G. we win completely the impulsions of force - Ar.

*हव्यों को (समर्पित करते हैं) मनुष्यों के* - **हव्या मानुषाणाम्**। हवनीयानि हवींषि यजमानानाम् - वे.। हवींष्यग्निः संसेवते - सा.। दातुम् आदातुम् अर्हा मनुष्याणाम् - दया.। (when he accepts) the oblations of men - W. and sacrificial gifts of men - G. Ar.

*तब* - **उत**। तदानीम् - वे.। उत तदानीम् - सा.।

*तेज के सामर्थ्य से* - **द्युम्नस्य शवसा**। अन्नस्य बलस्य च - वे.। द्योतमानस्यान्नस्य शवसा बलेन सामर्थ्येन - सा.। द्युम्नस्य धनस्य यशसो वा शवसा - दया.। by the power of brilliant (viands) - W. by the might of splendour - G. and the might and the Truth - Ar.

*सत्यनियम की लगाम को थामता है वह* - **ऋतस्य रश्मिम् आ ददे**। यज्ञस्य सम्बन्धिनं रश्मिम् आ दत्ते - वे.। यज्ञस्य रश्मिं रश्मिवद् ग्राहकं स्तवम् आदत्ते ऽग्निः - सा.। सत्यस्य प्रकाशम् आ ददे - दया.। he assumes the radiance of the rite - W. grasps the holy Ordinance's rein - G. he gathers to himself the Ray of the light - Ar.

**स स्मा॑ कृणोति के॒तुम् आ नक्तं॑ चिद् दू॒र आ सु॒ते।**
**पा॒व॒को यद् व॒नस्पती॒न् प्र स्मा॑ मि॒नात्य॒जरः॑॥ ४॥**

सः। स्म॒। कृ॒णो॒ति॒। के॒तुम्। आ। नक्त॑म्। चि॒त्। दू॒रे। आ। सु॒ते।
पा॒व॒कः। यत्। व॒नस्पती॑न्। प्र। स्म॒। मि॒नाति॑। अ॒जरः॑॥ ४॥

*वह निश्चय से देता है, प्रज्ञान को सब ओर से,*
*रात्रि में भी, दूर पर भी वर्तमान के लिये।*
*पवित्र करने वाला, जब बड़े-बड़े वृक्षों को,*
*पूर्णतः भस्म कर डालता है, जीर्ण न होने वाला॥ ४॥*

वह सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाला जगदीश्वर अज्ञान की रात्रि में भी ज्ञान के प्रकाश से दूर अज्ञानान्धकार में भटकने वाले मनुष्य को भी निश्चित् रूप से सब ओर से उत्तम ज्ञान प्रदान करता है। वह पतितपावन है और कभी विनाश को प्राप्त नहीं होता। वह अज्ञान के बीहड़ वनों को जलाकर भस्म कर डालता है। उसी की शरण में आकर उसकी कृपा प्राप्त करनी चाहिये।

टि. *निश्चय से* - **स्म**। खलु - वे.। सा.। अत्रोभयत्र निपातस्य चेति दीर्घः - दया.।

*देता है प्रज्ञान को* - **कृणोति केतुम्**। कृणोति प्रज्ञानम् -वे.। सा.। दया.। gives a signal - W.

G. creates the light of intuition - Ar.

*दूर पर भी वर्तमान के लिये* - **दूरे आ सते**। दूरे ऽप्यासीनाय - वे.। आ इति चार्थे। दूरे ऽपि वर्तमानाय मनुष्याय। सा.। सते सत्पुरुषाय - दया.।

*बड़े-बड़े वृक्षों को* - **वनस्पतीन्**। काष्ठानि - वे.। वनस्पतीन् एधांसि - सा.। वनानां पालकान् - दया.। the forest-lords - W. sovrans of the wood - G. the trees of the forest - Ar.

*जीर्ण न होने वाला* - **अजरः**। अजीर्णो ऽनभिभाव्यः सन् - सा.। नाशरहितः - दया.। undecaying - W. unchanged by eld - G. imperishable - Ar.

**अव॑ स्म॒ यस्य॒ वेष॑णे॒ स्वेदं॑ प॒थिषु॒ जुह्व॑ति।**
**अ॒भीम् अह॒ स्वजे॑न्यं॒ भूमा॑ पृ॒ष्ठेव॑ रुरुहुः।। ५।। २४।।**

अव॑। स्म॒। यस्य॑। वेष॑णे। स्वेद॑म्। प॒थिषु॑। जुह्व॑ति।
अ॒भि। ई॒म्। अह॑। स्वऽजे॑न्यम्। भूम॑। पृ॒ष्ठाऽइ॑व। रु॒रु॒हुः।। ५।।

*नीचे को निश्चय से, जिसकी परिचर्या में,*
*पसीने को मार्गों में (समर्पण के), होमते हैं।*
*सब ओर से उसपर ही, आत्मजन्मा पर,*
*महान् पर, शिखरों की तरह आरोहण करते हैं।। ५।।*

श्रेयस की ओर आगे बढ़ाने वाले जिस परमेश्वर की उपासना में उपासक जन अपने पसीने को समर्पण के मार्गों में होमते हैं, यम-नियम, प्राणायाम, ध्यान, समाधि आदि यौगिक क्रियाओं से और आत्मसमर्पण से उसे पाने का प्रयास करते हैं, समय आने पर वे उस स्वयम्भू, विराट् ब्रह्म पर इस प्रकार विजय प्राप्त कर लेते हैं, जिस प्रकार पर्वत पर आरोहण करने की इच्छा वाले मनुष्य मार्ग में होने वाले परिश्रम से पसीना बहाकर उसकी चोटियों पर आरोहण कर जाते हैं।

टि. *परिचर्या में* - **वेषणे**। दावरूपस्य व्याप्तौ - वे.। परिचर्यायाम् - सा.। व्याप्ते व्यवहारे - दया.। at whose worship - W. in whose service - G. Ar.

*पसीने को* - **स्वेदम्**। स्वेदजलम् - वे.। स्रवद् आज्यम् - सा.। the dripping butter - W. drops of sweat - G. sweat - Ar.

*आत्मजन्मा पर* - **स्वजेन्यम्**। स्वभूतजायमानपदार्थाम् - वे.। स्वोत्पन्नम् - सा.। स्वेन जेतुं योग्यम् - दया.। as their kin - G. self-born - Ar.

*महान् पर* - **भूम**। भूमिम् एनाम् - वे.। बहु भवतीति भूमापत्यम् - सा.। पृथिव्याः - दया.। high - G. ground - Ar.

*शिखरों की तरह आरोहण करते हैं* - **पृष्ठाऽइव रुरुहुः**। पुनश् चाभ्यारोहन्त्येव यथाश्वपृष्ठानि अश्वारोहाः - वे.। पितुः पृष्ठदेशान् इव। पुत्रा यथा पितुर् अङ्कम् आरोहन्ति तद्वत्। सा.। mount upon the fire as (boys ride) upon the back (of a father) - W. on him have they mounted as ridges on the earth - G. they ascend as if to wide levels - Ar.

**यं मर्त्यः पुरुस्पृहं विदद् विश्वस्य धायसे।**
**प्र स्वादनं पितूनाम् अस्ततातिं चिद् आयवे।। ६।।**

यम्। मर्त्यः। पुरुऽस्पृहम्। विदत्। विश्वस्य। धायसे।
प्र। स्वादनम्। पितूनाम्। अस्तऽतातिम्। चित्। आयवे।। ६।।

*जिसको मनुष्य, बहुतों से स्पृहणीय को,*
*जानता है, सबके धारण के लिये।*
*खूब स्वादु बनाने वाले को, अन्नों के,*
*निवास देने वाले को भी, मनुष्य के लिये।। ६।।*

वह सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला परमेश्वर ही है, असंख्य जनों के द्वारा चाहे जाने वाले को जिसको उपासक सब को धारण करने वाले के रूप में, सब प्रकार के स्वादु और पोषक भोजनों को देने वाले के रूप में और सब मनुष्यों को यह निवासस्थान अथवा यह अनमोल मानव शरीर प्रदान करने वाले के रूप में जानता है।

टि. *बहुतों से स्पृहणीय को* – **पुरुस्पृहम्।** बहुभिः स्पृहणीयम् – वे.। सा.।

*जानता है* – **विदत्।** मनुष्याः विन्दन्ति – वे.। वेत्ति – सा.। लभेत – दया.। recognises - W.

*धारण के लिये* – **धायसे।** धारणार्थम् – वे.। दया.। व्याप्त्यर्थम् – सा.। sustainer - W.

*स्वादु बनाने वाले को अन्नों के* – **स्वादनम् पितूनाम्।** अन्नानां स्वादुकर्तारम् – वे.। सा.।

*निवास देने वाले को* – **अस्ततातिम्।** निरस्तधनम् दत्तधनम् – वे.। अस्ततातिम् अस्ते गृहे निवासकर्तारम् – सा.। गृहस्थम् – दया.। provider of dwellings - W. the home - G.

**स हि ष्मा धन्वाक्षितं दाता न दात्या पशुः।**
**हिरिश्मश्रुः शुचिदन्नृभुर् अनिभृष्टतविषिः।। ७।।**

सः। हि। स्म। धन्व। आऽक्षितम्। दाता। न। दाति। आ। पशुः।
हिरिऽश्मश्रुः। शुचिऽदन्। ऋभुः। अनिभृष्टऽतविषिः।। ७।।

*वह ही निश्चय से अन्तरिक्ष को, सर्वव्यापक को,*
*दाता की तरह देता है (हमें), सब ओर से, सर्वद्रष्टा।*
*सुनहरी मूछों वाला, चमकीले दाँतों वाला,*
*विस्तृत प्रकाश वाला, अनश्वर बल वाला।। ७।।*

वह सर्वनायक परमेश्वर सुवर्णिम रश्मियों वाला, देदीप्यमान किरणों वाला और अनश्वर बल वाला है। उस सर्वद्रष्टा ने ही निश्चय से यह सब ओर विस्तृत आकाश एक महान् दाता की तरह हमें प्रदान किया है।

टि. *अन्तरिक्ष को सर्वव्यापक को* – **धन्व आक्षितम्।** निरुदकं देशं वनस्पतिभिर् अधिष्ठितम् – वे.। सा.। अन्तरिक्षं समन्ताद् अनष्टम् इव – दया.। desert dwelling place - Ar.

*दाता की तरह देता है* – **दाता न दाति।** दाति ददाति। विकरणव्यत्ययः।। छेत्ता इव छिनत्ति – वे.। सर्वतः खण्डयति दहतीत्यर्थः। दाता तृणादिखण्डयिता। सा.। दाता इव ददाति – दया.।

*सर्वद्रष्टा* – **पशुः**। पश्यतीति पशुः।। पशुर् इत्यग्निम् आह – वे.। पशुर् न पशुर् इव – सा.। as a herd - G. like a beast - Ar.

*अनश्वर बल वाला* – **अनिभृष्टतविषिः**। अनपभ्रष्टबलः – वे.। अपीडितबलः – सा.। with his unabated might - G. whose force is un-afflicted - Ar.

**शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् प्र स्वधितीव रीयते।**
**सुषूर् असूत माता क्राणा यद् आनशे भर्गम्।। ८।।**

शुचिः। स्म। यस्मै। अत्रिऽवत्। प्र। स्वधितिःऽइव। रीयते।
सुऽसूः। असूत। माता। क्राणा। यत्। आनशे। भगम्।। ८।।

*दीप्तिमान् निश्चय से, जिसे, त्रितापरहित के समान,*
*परशु के समान, (उपासक हविदान के लिये) गमन करता है।*
*उत्तम प्रसव वाली, जनती है जननी (उसे),*
*कर्म करती हुई जब, प्राप्त करती है भाग को।। ८।।*

संसार का संहर्त्ता वह परमेश्वर निश्चय से वृक्षों को काट डालने वाले परशु के समान दीप्तिमान् है। उपासक उसी जगदीश्वर को त्रितापरहित ऋषि के समान अपना नैवेद्य समर्पित करने के लिये उसकी शरण में जाता है। जगत् को उत्पन्न करने के कारण वह प्रभु एक उत्तम जननी के समान है और स्वयं को जन्म देने वाला अर्थात् आत्मजन्मा और स्वयम्भु है। वह जगत्सृष्टि, पालन और संहार रूपी अपने कर्तव्यों का पालन करता हुआ उपासकों से आहुतियां स्वीकार करता है।

टि. *दीप्तिमान् परशु के समान* – **शुचिः स्वधितिःऽइव**। शुचिः भानुः परशुर् इव – वे.। शुचिः दीप्तः, परशुर् इव छिन्दन् – सा.। पवित्रः वज्रधर इव – दया.। bright as an axe - W. G.

*त्रितापरहित के समान* – **अत्रिवत्**। अदनीययुक्तां भूमिम् – वे.। अत्रिर् इव यजमानः। यद्वा। अत्ति तृणम् इत्यत्रिः पशुः, स इव। सा.। like Atri - W. as to Atri - G. like an eater - Ar.

*उत्तम प्रसव वाली* – **सुऽसूः**। सुसूः माता ओषधिः – वे.। सुप्रसवा मातारणिः – सा.। सुष्ठु जनयित्री – दया.। prolific mother - W. well-bearing - G.

*प्राप्त करती है भाग को* – **आनशे भगम्**। एनं भजनीयं पुत्रं व्याप्तवती – वे.। अन्नम् अश्नुते – सा.। प्राप्नोति ऐश्वर्यम् – दया.। obtains (sacrificial) food - W. wins enjoyment of the bliss - Ar.

**आ यस् ते सर्पिरासुते ऽग्ने शम् अस्ति धायसे।**
**ऐषु द्युम्नम् उत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः।। ९।।**

आ। यः। ते। सर्पिःऽआसुते। अग्ने। शम्। अस्ति। धायसे।
आ। एषु। द्युम्नम्। उत। श्रवः। आ। चित्तम्। मर्त्येषु। धाः।। ९।।

*सर्वत्र जो (तू व्याप्त है), तेरे लिये, हे घृतभक्षक!,*
*हे अग्ने!, सुख होवे (आहुति से हमारी), धारक के लिये।*
*सब ओर से इनमें, तेज को और कीर्त्ति को,*

*सब ओर से सद्बुद्धि को, मनुष्यों में स्थापित तू कर दे।। ९।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तू सर्वत्र व्याप्त है। हे सर्पणशील रश्मिसमूह का पान करने वाले, प्रकाश से ओतप्रोत प्रभो!, हम जो नैवेद्य तुझे समर्पित करते हैं, वे तुझ जगत् को धारण करने वाले के लिये आनन्द की प्राप्ति कराने वाले होवें। तेरे नियमों के अनुसार जीवनयापन करने वाले मनुष्यों को तू तेज, कीर्त्ति और सद्बुद्धि प्रदान कर।

टि. हे *घृतभक्षक* – **सर्पिःऽआसुते।** सर्पिर् यस्मिन् आसूयते हूयते – वे.। घृताख्यान्न – सा.। सर्पिभिः सर्वतो जनिते – दया.। the accepter of the oblation - W. to him the oil is shed - G. to whom is poured the running stream of the offering of light - Ar.

*सुख होवे* – **शम् अस्ति।** शमयिता रोगाणाम् अस्ति रश्मिः – वे.। सुखम् अस्ति स्तुतेः सकाशात् – सा.। there is pleasure (from our praise) - W. who is a happy ground - Ar.

*धारक के लिये* – **धायसे।** तद्धारणार्थम् – वे.। सर्वस्य धात्रे – सा.। धात्रे – दया.। the upholder (of all) - W. for establishing thee - Ar.

*तेज को* – **द्युम्नम्।** द्योतमानम् – वे.। यशः – सा.। यशो धनं वा – दया.। wealth - W. splendour - G. the light - Ar.

*कीर्त्ति को* – **श्रवः।** अन्नम् – वे.। सा.। दया.। fame - G. inspiration - Ar.

*सद्बुद्धि को* – **चित्तम्।** अनुग्रहबुद्धिम् – सा.। संज्ञानम् – दया.। intelligence - G. knowledge - Ar.

**इति॑ चिन् म॒न्युम् अ॒ध्रिज॒स् त्वादा॑त॒म् आ प॒शुं द॑दे।**
**आद् अ॑ग्ने॒ अपृ॑ण॒तो ऽत्रिः॑ सासह्या॒द् दस्यू॑न्**
**इ॒षः सा॑सह्या॒न् नॄन्।। १०।। २५।।**

इति॑। चि॒त्। म॒न्युम्। अ॒ध्रिजः॑। त्वाऽदा॑तम्। आ। प॒शुम्। द॒दे।
आत्। अ॒ग्ने॒। अपृ॑णतः। अत्रिः॑। स॒स॒ह्या॒त्। दस्यू॑न्। इ॒षः। स॒स॒ह्या॒त्। नॄन्।। १०।।

*इस प्रकार ही ज्ञान को (प्राप्त करके), धर्षित न होने वाला,*
*तेरे द्वारा प्रदान की हुई को, गौ को ग्रहण करता है।*
*तत्पश्चात्, हे अग्ने!, पालन न करने वालों को,*
*तीनों तापों से रहित (उपासक), विजित करता है दुष्टों को,*
*इच्छाओं को विजित करता है, मनुष्यों को (विरोधियों को)।। १०।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! इस प्रकार तेरी उपासना से ज्ञान को प्राप्त करके कठिनाइयों और विघ्न-बाधाओं से पराजित न होने वाला उपासक तेरे द्वारा प्रदान की हुई दिव्यदृष्टि रूपी गौ को प्राप्त कर लेता है। उसके पश्चात् तीनों प्रकार के तापों और तीनों प्रकार की एषणाओं से रहित होकर वह साधक पालन न करने वाले, अपितु इसके विपरीत हिंसा करने वाले चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को विजित कर लेता है। वह अपनी इच्छाओं को और अपने विरोधी मनुष्यों को भी अपने व्यवहार से जीत लेता है।

टि. *ज्ञान को* – **मन्युम्।** पूज्यम् – वे.। मननसाधनं स्तोत्रम् – सा.। क्रोधम् – दया.। zeal - G. the force of mind - Ar.

*धर्षित न होने वाला* – **अध्रिजः।** अत्रिकुलजातः। छान्दसो धकारः। वे.। अधृतम् अन्यैर् अग्नि-व्यतिरिक्तैर् अधृष्यं वा जनयिता ऋषिः – सा.। अध्रिषु धारकेषु जातः – दया.। resistless one - G. irresistible born - Ar.

*गौ को ग्रहण करता है* – **आ पशुम् ददे।** पशुम आदत्ते – सा.। gained the cattle - G. I receive the cow of vision - Ar.

*पालन न करने वालों को* – **अपृणतः।** अप्रयच्छतः – वे.। सा.। अपालयतः – दया.। who bestow no gifts - G. who satisfy thee not - Ar.

*तीनों तापों से रहित* – **अत्रिः।** अयम् आत्रेयः – वे.। अत्रिः तद्गोत्रः – सा.। सततं पुरुषार्थी – दया.। Atri - W. G. Ar.

*विजित करता है* – **सासह्यात्।** अभिभवतु – वे.। भृशम् अभिभवेत् – सा.। दया.।

*इच्छाओं को* – **इषः।** इषः ऋषिः – वे.। एष्टॄन् नॄन् विरोधिनः – सा.। इच्छाः – दया.। no food. Iṣa is evidently 'food' and not the name of a man. G. forces - Ar.

## सूक्त ८

ऋषिः – इष आत्रेयः। देवता – अग्निः। छन्दः – जगती। सप्तर्चं सूक्तम्।

**त्वाम् अ॑ग्न ऋ॒ताय॒वः सम् ई॑धिरे प्र॒त्नं प्र॒त्नास॑ ऊ॒तये॑ सहस्कृत।**
**पु॒रु॒श्च॒न्द्रं य॑ज॒तं वि॒श्वधा॑यसं॒ दमू॑नसं गृ॒हप॑तिं॒ वरे॑ण्यम्।। १।।**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ऋ॒त॒ऽयवः॑। सम्। ई॒धि॒रे॒। प्र॒त्नम्। प्र॒त्नासः॑। ऊ॒तये॑। स॒हः॒ऽकृ॒त॒।
पु॒रु॒ऽच॒न्द्रम्। य॒ज॒तम्। वि॒श्वऽधा॑यसम्। दमू॑नसम्। गृ॒हऽप॑तिम्। वरे॑ण्यम्।। १।।

*तुझको, हे अग्ने!, ऋत से प्यार करने वाले, प्रदीप्त करते रहे हैं,*
*प्राचीन को, प्राचीन काल वाले, वृद्धि के लिये, हे बल के उत्पादक।*
*बह्वाह्लादक को, पूजा के योग्य को, समस्त जगत् के धारक को,*
*दान के मन वाले को, घर के पालक को, वरण के योग्य को।। १।।*

हे बलों के उत्पादक अग्रणी परमेश्वर! सत्यनियम से प्यार करने वाले पुरातन ऋषि-मुनि अपनी वृद्धि, रक्षा आदि के लिये प्राचीन काल से ही तुझ सनातन को, सब को आनन्दित और सुखी करने वाले को, पूजनीय को, समस्त जगत् को धारण करने वाले को, देने के स्वभाव वाले को, घरों और उनमें निवास करने वालों का पालन करने वाले को और सब के द्वारा वरणीय को सम्यक् प्रकाशित करते रहे हैं, तेरी महिमा का सर्वत्र प्रचार-प्रसार करते आए हैं।

टि. *ऋत से प्यार करने वाले* – **ऋतऽयवः।** यज्ञम् इच्छमानाः – वे.। ऋतायवः यज्ञकामा ऋषयः – सा.। ऋतं सत्यम् इच्छवः – दया.। सत्य के मार्ग पर चलने वाले – सात.। worshippers -W. who loved the Law - G. the seekers of Truth - Ar.

*हे बल के उत्पादक* – **सहःऽकृत।** हे सहसा कृत – वे.। बलस्य कर्तः – सा.। सहो बलं कृतं येन तत्सम्बुद्धौ – दया.। बल को उत्पन्न करने वाले – सात.। manifester of strength - W. urged to strength - G. created by our force - Ar.

*समस्त जगत् के धारक को* – **विश्वधायसम्।** विश्वस्य धर्तारम् – वे.। बह्वन्नम् – सा.। सर्वव्यवहारधनधर्त्तारम् – दया.। the all-sustaining - W. nourisher of all - G.

*दान के मन वाले को* – **दमूनसम्।** दममनसम् – वे.। दानमनसम् – सा.। इन्द्रियान्तःकरणस्य दमकरम् – दया.। the lowly-minded - W. the friend of the house - G. who dwells in the house - Ar.

**त्वाम् अ॑ग्ने॒ अति॑थिं पू॒र्व्यं विशः॑ शो॒चिष्के॑शं गृ॒हप॑तिं॒ नि षे॑दिरे।**
**बृ॒हत्के॑तुं पु॒रु॒रूपं॑ धन॒स्पृतं॑ सु॒शर्मा॑णं॒ स्वव॑सं ज॒रद्वि॑षम्।। २।।**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। अति॑थिम्। पू॒र्व्यम्। विशः॑। शो॒चिःऽके॑शम्। गृ॒हऽप॑तिम्। नि। से॒दि॒रे।
बृ॒हत्ऽके॑तुम्। पु॒रु॒ऽरूप॑म्। ध॒न॒ऽस्पृत॑म्। सु॒ऽशर्मा॑णम्। सु॒ऽअव॑सम्। ज॒रत्ऽवि॑षम्।। २।।

*तेरी, हे अग्ने!, अतिथि की, मुख्य की, प्रजाएं,*
*दीप्त रश्मियों वाले की, गृहपालक की, उपासना करती हैं।*
*महाप्रज्ञ की, बहुत रूपों वाले की, धनों को देने वाले की,*
*शोभन सुखदाता की, उत्तम रक्षक की, नष्ट शत्रुरूप विष वाले की।। २।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! प्रजाएं तुझ अतिथि के समान पूज्य, सब के मुखिया, प्रकाशमान ज्ञानरूपी रश्मियों वाले, घरों और उनके निवासियों की रक्षा करने वाले, महान् प्रज्ञा वाले, बहुत रूपों को धारण करने वाले, धनों का दान करने वाले, शोभन सुखों के दाता, उत्तम रक्षक और नष्ट हुए शत्रुरूप विष वाले की उपासना करती हैं।

टि. *मुख्य की* – **पूर्व्यम्।** मुख्यम् – वे.। ancient - W. G. Ar.

*उपासना करती हैं* – **नि सेदिरे।** प्रतिनिषीदन्ति – वे.। नि षेदिरे गार्हपत्यरूपेण स्थापितवन्त इत्यर्थः – सा.। निषीदन्ति – दया.। have established - W. G. seated thee within - Ar.

*महाप्रज्ञ की* – **बृहत्केतुम्।** बृहज्ज्वालम् – वे.। प्रभूतप्रज्ञानम् – सा.। महाप्रज्ञम् – दया.। vast bannered - W. high-bannered - G. vast in his intuition - Ar.

*धनों को देने वाले की* – **धनस्पृतम्।** यो धनानि स्पृणोति ददातीत्यर्थः, तम्।। धनस्य स्रष्टारम् – वे.। धनानां स्पर्तारम् – सा.। धनस्पृहायुक्तम् – दया.। the dispenser of wealth - W. distributer of wealth - G. he brings out the riches - Ar.

*नष्ट शत्रुरूप विष वाले की* – **जरद्विषम्।** जीर्णशत्रुकम् – वे.। जरतां वृक्षाणां व्यापकं जीर्णोदकं वा – सा.। जरद् विनष्टं शत्रुरूपं विषं यस्य तम् – दया.। the destruction of decaying (trees) - W. drier of the floods - G. a destroyer of the foe - Ar.

**त्वाम् अ॑ग्ने॒ मानु॑षीर् ईळते॒ विशो॑ होत्रा॒विदं॒ विवि॑चिं रत्न॒धात॑मम्।**
**गुहा॒ सन्तं॑ सुभग वि॒श्वद॑र्शतं तुविष्व॒णसं॑ सु॒यजं॑ घृत॒श्रिय॑म्।। ३।।**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। मानु॑षीः। ई॒ळ॒ते॒। विशः॑। हो॒त्रा॒ऽविद॑म्। विवि॑चिम्। र॒त्न॒ऽधात॑मम्।
गुहा॑। सन्त॑म्। सु॒ऽभ॒ग॒। वि॒श्वऽद॑र्शतम्। तु॒वि॒ऽस्व॒नस॑म्। सु॒ऽयज॑म्। घृ॒त॒ऽश्रिय॑म्।। ३।।

*तेरी, हे अग्ने!, मनुष्यसम्बन्धिनी, स्तुति करती हैं, प्रजाएं,*
*आह्वानों को जानने वाले की, विवेकशील की, श्रेष्ठ धनदाता की।*
*गुहा में विद्यमान की, हे उत्तम ऐश्वर्यों वाले!, सर्वद्रष्टा की,*
*सशक्त वाणी वाले की, उत्तम याजक की, प्रकाश के आश्रय की।। ३।।*

हे उत्तम ऐश्वर्यों वाले अग्रणी परमेश्वर! मानवी प्रजाएं तुझ पुकारों को सुनने वाले की, विवेकपूर्वक कर्मों को करने वाले की, श्रेष्ठ धनों को देने वालों में उत्तम की, उपासकों की हृदयरूपी गुहा में निवास करने वाले की, सब को देखने वाले और सब के द्वारा सब के अन्दर देखे जाने योग्य की, सशक्त वेदवाणी वाले की, जगत् में प्रवर्तमान यज्ञ के उत्तम याजक की और प्रकाश, ज्ञान आदि के आश्रयभूत की स्तुति करती हैं।

टि. *आह्वानों को जानने वाले की* - **होत्राविदम्।** स्तोत्रविदम् - वे.। होमानां सप्तहोत्रकाणां वा वेत्तारम् - सा.। होत्राणि हवनानि वेत्ति तम् - दया.। who knowest well burnt offerings - G. who knowest the word of invocation - Ar.

*विवेकशील की* - **विविचिम्।** विवेचकम् - वे.। विवेचकं सदसतोः - सा.। विवेचकं विभागकर्तारम् - दया.। the discriminator (of truth) - W. the Discerner - G. Ar.

*गुहा में विद्यमान की* - **गुहा सन्तम्।** अरणिषु गुहायां वर्तमानम् - वे.। अरण्यां हृदयेषु वा सर्वदा वर्तमानम् - सा.। अन्तःकरणे ऽभिव्याप्य स्थितम् - दया.। dwelling in secret - G. Ar.

*सर्वद्रष्टा की* - **विश्वदर्शतम्।** विश्वस्य दर्शनीयम् - वे.। सर्वैर् द्रष्टव्यम् - सा.। विश्वस्य प्रकाशकम् - दया.। visible to all - W. G. who hast the vision of all things - Ar.

*सशक्त वाणी वाले की* - **तुविष्वणसम्।** महास्वनम् - वे.। प्रभूतध्वनिम् -सा.। बहूनां सेवकम् - दया.। loud-sounding - W. loud roaring - G. with the multitude of thy voices - Ar.

*प्रकाश के आश्रय की* - **घृतश्रियम्।** यस् त्वं घृतं श्रयसि - वे.। घृतं श्रयन्तम् - सा.। thriving upon clarified butter - W. glorified with oil - G. the glory and beauty of thy light - Ar.

**त्वाम् अ॑ग्ने धर्ण॒सिं वि॒श्वधा॑ व॒यं गी॒र्भिर् गृ॒णन्तो॒ नम॒सोप॑ सेदिम।**
**स नो॑ जुषस्व समिधा॒नो अ॑ङ्गिरो दे॒वो मर्त॑स्य य॒शसा॒ सुदी॒तिभिः॑।। ४।।**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ध॒र्ण॒सिम्। वि॒श्वधा॑। व॒यम्। गी॒ःऽभिः। गृ॒णन्तः॑। नम॑सा। उप॑। से॒दि॒म॒।
सः। नः॒। जु॒ष॒स्व॒। स॒म्ऽइ॒धा॒नः। अ॒ङ्गि॒रः॒। दे॒वः। मर्त॑स्य। य॒शसा॑। सु॒दी॒तिऽभिः॑।। ४।।

*तेरे, हे अग्ने!, धारण करने वाले के, सब प्रकार से हम,*
*वाणियों से स्तुतिगान करते हुए, नमस्कार के साथ, पास बैठते हैं।*
*वह (तू) हमें प्यार कर, प्रकाशित किया जाता हुआ, हे अङ्गिरा!,*
*प्रकाशमान, (मुझ) मरणधर्मा के यश से, सुन्दर दीप्तियों से।। ४।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! हम स्तोता नमस्कार के साथ अपनी

वाणियों से तेरा स्तुतिगान करते हुए सब को धारण करने वाले की तेरी शरण में आते हैं। हे जाज्वल्यमान! हम मरणधर्मा उपासकों के दीप्तियों के समान उज्ज्वल कर्मों और यशों से प्रकाश को प्राप्त होता हुआ देदीप्यमान वह तू हमें प्यार कर। हमपर अपनी कृपादृष्टि सदा बनाए रख।

टि. *धारण करने वाले के* - **धर्णसिम्**। धारयितारम् - वे.। सर्वस्य धारकम् - सा.। all-sustaining - W. exceeding strong - G. upholdest of all things - Ar.

*सब प्रकार से* - **विश्वधा**। सर्वदा - वे.। बहुप्रकारेण - सा.। in many ways - W. ever - G. in every way - Ar.

*प्यार कर* - **जुषस्व**। सेवस्व - वे.। सेवस्व धनादिभिः - सा.। be propitious to us - W. be pleased with us - G. do thou accept us - Ar.

*मरणधर्मा के यश से, सुन्दर दीप्तियों से* - **मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः**। मनुष्यस्य यशोऽर्थं शोभनदानैः - वे.। यजमानस्य यशसा सुदीतिभिर् ज्वालाभिः सह जुषस्व - सा.। मनुष्यस्य उदकेनान्नेन धनेन वा, सुष्ठु दानैः - दया.। by the (sacrificial) food offered by the worshipper and by the bright flames (of his sacrifice) - W. by the noble with man's goodly light - G. by the glory of a mortal and by his illuminings - Ar.

**त्वम् अ॑ग्ने पुरु॒रूपो॑ वि॒शेवि॑शे॒ वयो॑ दधासि प्र॒त्नथा॑ पुरुष्टुत।**
**पु॒रूण्यन्ना॒ सह॑सा॒ वि रा॑जसि॒ त्विषि॒ः सा ते॑ तित्विषा॒णस्य॒ नाधृषे॑।। ५।।**

त्वम्। अ॒ग्ने॒। पु॒रु॒ऽरूपः॑। वि॒शेऽवि॑शे। वयः॑। द॒धा॒सि॒। प्र॒त्नऽथा॑। पु॒रु॒ऽस्तु॒त॒।
पु॒रूणि॑। अन्ना॑। सह॑सा। वि। रा॒ज॒सि॒। त्विषिः॑। सा। ते॒। ति॒त्वि॒षा॒णस्य॑। न। आ॒ऽधृषे॑।। ५।।

*तू, हे अग्ने!, बहुत रूपों वाला, प्रत्येक मनुष्य को,*
*जीवन प्रदान करता है, पूर्व काल की तरह, हे बहुस्तुत।*
*सब अन्नों पर बल से (अपने), शासन करता है तू,*
*दीप्ति वह तुझ देदीप्यमान की, नहीं धर्षण के लिये है।। ५।।*

हे बहुतों के द्वारा स्तुति किये जाने वाले सब के मार्गदर्शक परमेश्वर! अनेक रूपों को धारण करने वाला तू हमेशा की तरह ही प्रत्येक मनुष्य को अन्न और जीवन प्रदान करता है। तू अपने बल के कारण सब प्रकार के अन्नों का स्वामी है। तीक्ष्ण तेज वाले के तेरे उस तेज को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता।

टि. *जीवन प्रदान करता है* - **वयः दधासि**। अन्नं प्रयच्छसि - वे.। अन्नं धारयसि - सा.। वयो जीवनम् - दया.। givest food - W. givest subsistense - G.

*बल से शासन करता है तू* - **सहसा वि राजसि**। बलेन भक्षयन् वि राजसि - वे.। सहसा बलेन वि राजसि ईश्वरो भवसि स्वीकर्तुम् - सा.। thou reignest with strength - W. G. thou illuminest them all by thy force - Ar.

*दीप्ति वह तुझ देदीप्यमान की* - **त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य**। दीप्तिः सा तव दीप्यमानस्य - वे.। दीप्तस्य तव सा प्रसिद्धा दीप्तिः - सा.। the splendour of thee when glazing brightly -

W. G. the fury of thy blaze when thou blazest up in thy might - Ar.

*नहीं धर्षण के लिये है* – **न आधृषे।** न धर्षयितुं शक्यते – वे.। अन्यैर् अधृष्या भवति – सा.। is not rivalled (by any) - W. may not be opposed - G. none can do violence - Ar.

**त्वाम् अग्ने समिधानं यविष्ठ्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम्।**
**उरुज्रयसं घृतयोनिम् आहुतं त्वेषं चक्षुर् दधिरे चोदयन्मति।। ६।।**

त्वाम्। अग्ने। सम्ऽइधानम्। यविष्ठ्य। देवाः। दूतम्। चक्रिरे। हव्यऽवाहनम्।
उरुऽज्रयसम्। घृतऽयोनिम्। आऽहुतम्। त्वेषम्। चक्षुः। दधिरे। चोदयत्ऽमति।। ६।।

*तुझको, हे अग्ने!, प्रकाशित किये जाते हुए को, हे युवतम!,*
*देव अज्ञानविनाशक को, बनाते हैं नैवेद्यों को स्वीकार करने वाला।*
*विस्तृत गति वाले को, प्रकाश से उत्पन्न को, आहुति दिये हुए को,*
*प्रदीप्त को, चक्षु के रूप में स्वीकार करते हैं, बुद्धि के प्रेरक के।। ६।।*

हे जरा मरण आदि से रहित सदा एकरस रहने वाले सर्वनायक परमेश्वर! जब उपासक अपनी स्तुतियों से तेरी महिमा को प्रकाशित करते हैं, तो अज्ञान के अन्धकार को परे भगाने वाले, सर्वत्र गति करने वाले, प्रकाश से प्रादुर्भूत होने वाले और आहुतियों से प्रसन्न किये जाने वाले तुझ जगदीश्वर को अपने समर्पणों को स्वीकार करने वाला बना लेते हैं। वे तुझ देदीप्यमान को बुद्धि और विचारों को प्रेरित करने वाले दिव्य चक्षु के रूप में स्वीकार करते हैं।

टि. *प्रकाशित किये जाते हुए को* – **समिधानम्।** समिध्यमानम् – वे.। सा.। देदीप्यमानम् – दया.। in thy high kindling - Ar.

*अज्ञानविनाशक को* – **दूतम्।** दुनोति दुःखम् अज्ञानं वा।। सर्वतो व्यवहारसाधकम् – दया.।

*विस्तृत गति वाले को* – **उरुज्रयसम्।** बहुवेगम् – वे.। सा.। दया.। rapid in movement - W. widely reaching - G. wide are the spaces through which thou movest - Ar.

*प्रकाश से उत्पन्न को* – **घृतयोनिम्।** घृतस्थानम् – वे.। घृतयोनिं घृतं योनिः कारणं यस्य तम् – सा.। घृतम् उदकं प्रदीप्तं कारणं वा योनिर् गृहं यस्य तम् – दया.। of whom butter is the source - W. homed in sacred oil - G. of whom light is the native seat - Ar.

*बुद्धि के प्रेरक के* – **चोदयन्मति।** रात्रौ यस्य बलम् एष चोदयति – वे.। चोदयन्ती मतिर् यस्य तच् चोदयन्मतिः।। मत्या हि चक्षुश् चोद्यते। सा.। प्रज्ञाप्रेरकम् – दया.। instigated by the understanding - W. that stirs the thought - G. that urges the thought - Ar.

**त्वाम् अग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः**
**सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे।**
**स वावृधान ओषधीभिर् उक्षितो३**
**ऽभि ज्रयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे।। ७।। २६।।**

त्वाम्। अग्ने। प्रऽदिवः। आऽहुतम्। घृतैः। सुम्नऽयवः। सुऽसमिधा। सम्। ईधिरे।

सः। वव॒धानः। ओष॑धीभिः। उ॒क्षितः। अ॒भि। ज्रयां॑सि। पार्थि॑वा। वि। ति॒ष्ठ॒से॒।। ७।।

*तुझको, हे अग्ने!, प्राचीन काल से, आहुति दिये हुए को घृत से,*
*सुखों की कामना वाले, उत्तम समिधा से, प्रज्वलित करते रहे हैं।*
*वह (तू) वृद्धि को प्राप्त होता हुआ, ओषधियों से सींचा हुआ,*
*ऊपर विस्तृत स्थानों के पृथिवी के, विविध प्रकार से स्थित होता है।। ७।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! सुख की इच्छा वाले याजक लोग जिस प्रकार प्राचीन काल से घृत की आहुतियों और समिधाओं से यज्ञाग्नि को प्रसन्न करते रहे हैं, उसी प्रकार परमानन्द की प्राप्ति की कामना वाले साधक जन तुझे अपनी स्तुतियों और समर्पणों से सदा से प्रसन्न करते आए हैं। और जिस प्रकार यज्ञ का अग्नि घृत और समिधाओं से सींचा जाकर वृद्धि को प्राप्त होता हुआ वेदि के विस्तृत स्थान पर व्याप्त हो जाता है, उसी प्रकार, हे जगदीश्वर!, अपने उपासकों की स्तुतियों और समर्पणों से प्रसन्न होता हुआ तू शाश्वत यज्ञ के यजनस्थान इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त हो रहा है।

टि. *प्राचीन काल से* – **प्रदिवः**। पुराणम् – वे.। प्रदिवः पुरातनाः – सा.। प्रकृष्टात् प्रकाशात् – दया.। the ancient - W. from of old - G.

*आहुति दिये हुए को* – **आहुतम्**। गृहीतम् – दया.। worshipped - G.

*सुखों की कामना वाले* – **सुम्नायवः**। सुखम् इच्छमानाः – वे.। दया.। सुखम् इच्छन्तो यजमानाः – सा.। seekers after happiness - W. men seeking joy - G. the seekers of bliss - Ar.

*ऊपर विस्तृत स्थानों के पृथिवी के* – **अभि ज्रयांसि पार्थिवा**। पार्थिवानि यजमानानां शत्रुबलानि – वे.। ज्रयांस्यन्नानि पार्थिवा पार्थिवान् वृक्षान्। यद्वा । पार्थिवेति ज्रयोविशेषणम्। पार्थिवानि चरुपुरोडाशादिकानि। सा.। ज्रयांसि वेगयुक्तानि कर्माणि, पार्थिवा पृथिव्यां विदितानि – दया.। over all terrestrial viands - W. over the realms of earth - G. over wide earth-spaces - Ar.

*विविध प्रकार से स्थित होता है* – **वि तिष्ठसे**। विविधं गच्छसि – वे.। अभिव्यज्य वर्तसे – सा.। thou art dominant - W. spreadest thyself abroad - G. Ar.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां तृतीये ऽष्टके ऽष्टमो ऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त ९

ऋषिः - गय आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-४,६ अनुष्टुप् ५,७ पङ्क्तिः। सप्तर्चं सूक्तम्।

**त्वाम् अग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते।**
**मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक्।। १।।**

त्वाम्। अग्ने। हविष्मन्तः। देवम्। मर्तासः। ईळते।
मन्ये। त्वा। जातऽवेदसम्। सः। हव्या। वक्षि। आनुषक्।। १।।

*तेरी, हे अग्ने!, हवियों को धारण करने वाले,*
*प्रकाशमान की, मरणधर्मा, स्तुति करते हैं।*
*पूजा करता हूँ मैं (भी), (तुझ) जातवेद की,*
*वह (तू) हव्यों को (मेरे), वहन कर निरन्तर।। १।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तू प्रकाशमान और ज्ञानवान् है। तुझे अपना सर्वस्व समर्पण करने की इच्छा वाले मनुष्य सदा तेरी स्तुतियां करते हैं। मैं तेरा उपासक भी चर और अचर जगत् को जानने वाले की तेरी यथाशक्ति पूजा करता हूँ। तू अपने उपासकों के द्वारा समर्पित किये जाने वाले नैवेद्यों को प्रीतिपूर्वक निरन्तर स्वीकार कर।

टि. *हवियों को धारण करने वाले* - **हविष्मन्तः**। हविःसम्भरणानन्तरं मनुष्याः - वे.। होमसाधन-द्रव्यसमेता मर्त्याः - सा.। प्रशस्तदानादियुक्ताः - दया.। bearing oblations - W. G.

*पूजा करता हूँ मैं* - **मन्ये**। स्तौमि - वे.। मतिर् अत्र स्तुत्यर्थे वर्तते धातूनाम् अनेकार्थत्वात् - सा.। I praise - W. I deem thee - G. I meditate - Ar.

*जातवेद की* - **जातवेदसम्**। जातप्रज्ञम् - वे.। जातम् उत्पन्नं चराचरं भूतजातं वेत्तीति जातवेदाः। अथवा जातानि स्थावरजङ्गमात्मकान्येनं विदुर् इति जातवेदाः। यद्वा। वेद इति धननाम। जातं सर्वं वेदो धनं यस्यासौ जातवेदाः। एवंविधं त्वाम्। सा.। the knower of all things born - Ar.

*हव्यों को वहन कर* - **हव्या वक्षि**। हव्यानि वह - वे.। हवनसाधनानि हवींषि वक्षि वहसि - सा.। होतुम् अर्हाणि वहसि - दया.। for that thou conveyest oblations - W. bear our offerings - G. thou carriest our offerings - Ar.

*निरन्तर* - **आनुषक्**। अनुषक्तम् - वे.। निरन्तरतयानुषक्तं यथा तथा - सा.। आनुकूल्येन - दया.। successively - W. unceasingly - G. without a break - Ar.

**अग्निर् होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः।**
**सं यज्ञासश् चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः।। २।।**

अग्निः। होता। दास्वतः। क्षयस्य। वृक्तऽबर्हिषः।
सम्। यज्ञासः। चरन्ति। यम्। सम्। वाजासः। श्रवस्यवः।। २।।

*अग्नि आह्वाता है हविदाता का,*
*गृहस्थ का, उच्छिन्न बर्हि वाले का।*

*मिलकर यज्ञ जाते हैं, पास जिसके,*
*मिलकर बलवान्, यशों की कामना वाले।। २।।*

यज्ञ आदि सब श्रेष्ठ कर्म सामूहिक रूप से जिसे प्राप्त होते हैं, जिसे समर्पित किये जाते हैं, और यशों की कामना वाले दीनरक्षक बलवान् पुरुष मिलकर जिसकी शरण में जाते हैं, वह अग्रणी परमेश्वर हृदयरूपी पवित्र वेदि पर उदात्त भावों की कुशाओं को सँवार कर बिछाने वाले और अपने सर्वस्व को हवि के रूप में समर्पित करने वाले गृहस्थ उपासक का सदा सन्मार्ग पर आह्वान करने वाला होता है।

टि. *हविदाता का* - **दास्वतः**। दानवतः - वे.। हविष्प्रक्षेपणादिदानवतः - सा.। दातृस्वभावस्य - दया.। who offers gifts - G. of the giver - Ar.

*गृहस्थ का* - **क्षयस्य**। क्षियन्ति निवसन्ति यस्मिन्निति क्षयो गृहं तात्स्थ्यात् गृहस्थयजमानार्थे वर्तते।। यजमानस्य - वे.। क्षियन्ति निवसन्ति यस्मिन् स्वर्गसाधनफलानीति क्षयः, तस्य यजमानस्य - सा.। निवासस्य - दया.। the abode (of the fruit of good works) - W. in the man's home - G. in the house - Ar.

*उच्छिन्न बर्हि वाले का* - **वृक्तबर्हिषः**। स्तीर्णबर्हिषः - वे.। वृक्तानि लूनानि बर्हींषि दर्भाः येनासौ वृक्तबर्हिः, तस्य - सा.। वृक्तं वर्जितं बर्हिर् यस्मिन् - दया.। where grass is trimmed - G. who has plucked the grass - Ar.

*बलवान्, यशों की कामना वाले* - **वाजासः श्रवस्यवः**। यज्ञाधारा वाजाश् च यजमानानाम् अन्नम् इच्छमानानां अन्नम् इच्छमानाः - वे.। श्रवस्यवः यजमानस्य प्रभूतां कीर्तिं संपादयन्तो वाजासो हवींषि - सा.। वेगवन्तः आत्मनः श्रवम् इच्छवः - दया.। all sacrifices securing food and fame - W. all sacrifices and strengthenings - G. our plenitudes of inspired knowledge - Ar.

**उ॒त स्म॒ यं शिशुं॑ यथा॒ नवं॒ जनि॑ष्टा॒रणी॑।**
**ध॒र्तारं॒ मानु॑षीणां वि॒शाम् अ॒ग्निं स्व॑ध्व॒रम्।। ३।।**

उ॒त। स्म॒। यम्। शिशु॑म्। य॒था॒। नव॑म्। जनि॑ष्ट। अ॒रणी॒ इति॑।
ध॒र्तार॑म्। मानु॑षीणाम्। वि॒शाम्। अ॒ग्निम्। सु॒ऽअ॒ध्व॒रम्।। ३।।

*अपि च जिसको, शिशु को जिस प्रकार,*
*नए को जनती है (जननी), अरणियां (जनती हैं)।*
*धारण करने वाले को, मनुष्यसम्बन्धिनियों के,*
*प्रजाओं के, अग्नि को, शोभन यज्ञ वाले को।। ३।।*

जिस प्रकार माता शिशु को जन्म देती है और जिस प्रकार दो अरणियां यज्ञ की अग्नि को उत्पन्न करती हैं, उसी प्रकार साधक योगसाधना के द्वारा मानवी प्रजाओं को धारण करने वाले और जगत् में प्रवर्तमान शाश्वत यज्ञ के उत्तम याजक उस प्रभु को अपने हृदय की वेदि पर प्रकट करें।

टि. *शिशु को जिस प्रकार नए को जनती है (जननी), अरणियां (जनती हैं)* - **शिशुम् यथा नवम् जनिष्ट अरणी**। यथा काचित् नवतरं पुत्रं जनयति, एवं यम् अरणी जनयतः। उपमानेन समन्वयात् जनिष्ट इत्येकवचनम् अपि भवति। वे.। द्वे अरणी नूतनम् अपत्यम् इव जनिष्ट अजनिषाताम्।

जनी प्रादुर्भावे। लुङ्। छान्दसत्वाद् वचनव्यत्ययः। यथेति पदान्त इति सर्वानुदात्तः। सा.।

*प्रजाओं के* - **विशाम्**। विशन्त्यासु इति विशः गृहाः। तात्स्थ्याद् गृहवासिनो ऽपि विश एव, तासाम्।। प्रजानाम् - वे.। विशन्ति प्रविशन्ति गर्भाशयम् इति विशः प्रजाः, तासाम् - सा.।

**उत स्म दुर्गृभीयसे पुत्रो न ह्वार्याणाम्।**
**पुरू यो दग्धासि वनाग्ने पशुर् न यवसे।। ४।।**

उत। स्म। दुःऽगृभीयसे। पुत्रः। न। ह्वार्याणाम्।
पुरु। यः। दग्धा। असि। वना। अग्ने। पशुः। न। यवसे।। ४।।

*अपि च, कठिनता से पकड़ा जाता है तू,*
*पुत्र जैसे, कुटिल गति वाले सर्पों का।*
*बहुतों को जो जलाने वाला है तू, वनों को,*
*हे अग्ने!, पशु जैसे, जौ के खेत में (खा जाता है उसको)।। ४।।*

हे मनुष्यों को सन्मार्ग पर ले चलने वाले जगदीश्वर! संहारकाल में तू इस जगत् को इस प्रकार भस्म कर डालता है, जिस प्रकार दावाग्नि बनों को जलाकर भस्म कर डालती है, अथवा जिस प्रकार कोई आवारा पशु जौ के खेत में घुसकर उसे तहस-नहस कर डालता है। हे प्रभो! उस समय तुझे वश में करना, अपने अनुकूल बनाना, शान्त करना उतना ही कठिन है, जितना कि कुटिल गति वाले सर्पों के किसी बच्चे को पकड़ना कठिन होता है।

टि. *कठिनता से पकड़ा जाता है तू* - **दुर्गृभीयसे**। दुर्ग्रहम् आत्मानम् इच्छसि - वे.।

*पुत्र जैसे कुटिल गति वाले सर्पों का* - **पुत्रः न ह्वार्याणाम्**। गच्छताम् अश्वानाम् इव युवा - वे.। ह्वार्याणां कुटिलं गच्छतां सर्पाणाम्। यद्वा। आस्कन्दितादिगतिविशेषेण वक्रगमनानाम् अश्वानां पुत्र इव। बालसर्प इवाशिक्षितबालाश्व इव वा दुर्गृभीयसे दुःखेन गृह्यसे। सा.। like the young of tortuously-twining (snakes) - W. like offspring of the wriggling snakes - G. like a son of crookednesses - Ar.

*पशु जैसे जौ के खेत में* - **पशुः न यवसे**। यथा पशुः यवसे विसृष्टः सर्वं यवसं विनाशयति - वे.। तृणे पशुर् इव। अत्यन्तक्षुधार्तः पशुस् तृणविषये विसृष्टः सन् यथा सर्वं भक्षयति तद्वद् इत्यर्थः। सा.।

**अध स्म यस्यार्चयः सम्यक् संयन्ति धूमिनः।**
**यद् ईम् अह त्रितो दिव्युप ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा।। ५।।**

अध। स्म। यस्य। अर्चयः। सम्यक्। सम्ऽयन्ति। धूमिनः।
यत्। ईम्। अह। त्रितः। दिवि। उप। ध्माताऽइव। धमति। शिशीते। ध्मातरि। यथा।। ५।।

*अपि च, जिसकी अर्चियां,*
*सम्यक् सर्वत्र प्राप्त होती हैं, धूएँ वाले की।*
*जब यह निश्चय से, तीनों लोकों का वासी,*
*द्युलोक में, धौंकने वाले की तरह, धौंकता है स्वयं को,*

*तीक्ष्ण हो जाता है, धौंकने वाले के पास (अग्नि) जिस प्रकार।। ५।।*

और धूएँ के आवरण वाले लौकिक अग्नि की तरह उपासक के अज्ञान के आवरण के कारण ओझल हुए इस अग्रणी परमेश्वर की देदीप्यमान रश्मियां जगत् में सर्वत्र पहुँची हुई हैं। जिस प्रकार लोहार अपनी धौंकनी से अग्नि को बढ़ाता है, उसी प्रकार तीनों लोकों में निवास करने वाला यह अग्रनायक स्वयं को अपने अन्दर की धमनक्रिया से ही द्युलोक और उससे भी परे तक फैलाता है। और जिस प्रकार धौंकनी वाले लोहार की धौंकनी से अग्नि तीक्ष्ण हो जाता है, उसी प्रकार यह जगदीश्वर अपनी धमनक्रिया से स्वयं अत्यन्त तीक्ष्ण हो जाता है।

टि. *सम्यक् सर्वत्र प्राप्त होती हैं* - **सम्यक् संयन्ति।** समीचीनं संगच्छन्ते - वे.। शोभनं सर्वतः प्राप्नुवन्ति - सा.। intensely collect - W. completely reach the mark - G. meet perfectly together - Ar.

*धूएँ वाले की* - **धूमिनः।** धूमयुक्तस्य - वे.। धूमवतः - सा.।

*तीनों लोकों का वासी* - **त्रितः।** त्रिस्थानः। त्रयाणाम् अग्न्यादीनाम् एको वायुः। वे.। त्रिषु स्थानेषु ततो व्याप्तः त्रीणि स्थानानि वातीत्य - सा.। संप्लावकः - दया.। diffused in the three regions - W. Trita - G. Trita, the triple one - Ar.

*धौंकता है* - **धमति।** वर्धयति - सा.। inflates himself - W. fanneth thee - G. blows upon him - Ar.

*धौंकने वाले के पास* - **ध्मातरि।** अयस्कारे - वे.। ध्मातृसमीपे विद्यमानो ऽग्निः - सा.। अत्र संहितायाम् इति दीर्घः - दया.।

**तवा॒हम् अ॑ग्न ऊ॒तिभि॑र् मि॒त्रस्य॑ च॒ प्रश॑स्तिभिः।**
**द्वे॒षो॒युतो॒ न दु॑रि॒ता तु॒र्याम॒ मर्त्या॑नाम्।। ६।।**

तव॑। अ॒हम्। अ॒ग्ने॒। ऊ॒तिऽभि॑ः। मि॒त्रस्य॑। च॒। प्रश॑स्तिऽभिः।
द्वे॒षः॒ऽयुत॑ः। न। दुः॒ऽइ॒ता। तु॒र्याम॑। मर्त्या॑नाम्।। ६।।

*तेरी मैं, हे अग्ने!, रक्षाओं से,*
*और (तुझ) मित्र की प्रशंसाओं से।*
*द्वेषयुक्त शत्रुओं की तरह, दुरितों को,*
*तर जाएं हम, मनुष्यों में पाए जाने वालों को।।*

हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! तेरे द्वारा प्रदत्त संरक्षणों, वृद्धियों, प्रीतियों आदि से और हमारे द्वारा की जाने वाली तेरी स्तुतियों से हम मनुष्यों को प्राप्त होने वाले सब दुःखों को इस प्रकार तर जाएं, जिस प्रकार द्वेष करने वाले शत्रुओं पर काबू पा लिया जाता है।

टि. *प्रशंसाओं से* - **प्रशस्तिभिः।** (मित्रस्य च देवस्य) स्तुतिभिः - वे.। युष्मत्प्रशस्तिभिश् चास्मत्कृतैः स्तोत्रैश् च - सा.। प्रशंसाभिः - दया.। by (Mitra's friendly) furtherance - G. by thy utterances (as the friend) - Ar.

*द्वेषयुक्त शत्रुओं की तरह* - **द्वेषोयुतः न।** द्वेषसः मिश्रयितॄन् शत्रून् इव - वे.। द्वेषयुक्तान् शत्रून्

इव। द्विष अप्रीतौ। भावे ऽसुन् प्रत्ययः। यु मिश्रणे। कर्तरि क्विप्। तुक्। कृदुत्तरपदप्रकृतस्वरत्वम्। सा.। द्वेषयुक्ता इव - दया.। as if from malignant (enemies) - W. we, averting hate - G. like men beset by hostile powers - Ar.

*दुरितों को मनुष्यों में पाए जाने वालों को* - **दुरिता मर्त्यानाम्**। दुःखानि यान्येतानि मर्त्यानां दृश्यन्ते - वे.। शत्रुभूतानां मनुष्याणां दुरितानि तत्कर्तृकाणि पापसाधनकर्माणि - सा.। मानवी पापकर्मों से - सात.। from the evil acts of men - W. the wickedness of mortal men - G. the stumbling-places of mortal men - Ar.

*तर जाएं हम* - **तुर्याम**। अतितरेयम्। यथा परोक्षोपक्रमाः प्रत्यक्षापवर्गा मन्त्रा भवन्त्येवम् एकवचनबहुवचनयोर् अपि द्रष्टव्यम् इति। वे.। तरेयम् अयम् अर्थः। सा.। may we pass safe - W. may we subdue - G. may we pass beyond - Ar.

**तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर।**
**स क्षेपयत् स पोषयद् भुवद् वाजस्य सातय**
**उतैधि पृत्सु नो वृधे।। ७।। १।।**

तम्। नः। अग्ने। अभि। नरः। रयिम्। सहस्वः। आ। भर।
सः। क्षेपयत्। सः। पोषयत्। भुवत्। वाजस्य। सातये।
उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे।। ७।।

*उसको हमारे, हे अग्ने!, सर्वतः मनुष्यों के पास,*
*धन को, हे बलशाली!, सब ओर से ले आ।*
*वह परास्त करे (शत्रुओं को), वह पालन करे (हमारा),*
*हो जाए वह, ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये (हमारे),*
*और हो जा तू, संग्रामों में हमारी वृद्धि के लिये।। ७।।*

हे सर्वशक्तिमान् अग्रणी परमेश्वर! तू हमारे मनुष्यों को, हमारे पुत्र-पौत्रों, सगे-सम्बन्धियों और इष्ट-मित्रों को सब ओर से उत्तम धन प्राप्त करा - वह धन जो हमारे शत्रुओं को परास्त करने वाला और हमें पुष्ट करने वाला हो, वह धन जो हमें ऐश्वर्यों की प्राप्ति कराने वाला हो। हे प्रभो! तू हमें जीवन के संघर्षों में आगे ही आगे बढ़ाने वाला, हमें समृद्धि प्राप्त कराने वाला हो।

टि. *मनुष्यों के पास* - **नरः**। नेता त्वम् - वे.। हविषां नेतारः - सा.। नायकान्। व्यत्ययेन प्रथमा। दया.। the institutors (of pious rites) - W. to our heroes - G. to men - Ar.

*हे बलशाली* - **सहस्वः**। हे बलवन् - वे.। षह मर्षणे। असुन्। सहत्यनेन शत्रून् इति सहो बलम्। मतुप्। माद् उपधाया इति वत्वम्। मतुवसो रुः सम्बुद्धौ छन्दसीति रुत्वम्। आमन्त्रितस्य चेति निघातः। सा.। बहुसहनादिगुणयुक्त - दया.। thou victorious God - G.

*परास्त करे* - **क्षेपयत्**। शत्रून् क्षपयतु - वे.। क्षेपयत् अस्मदीयान् शत्रून् क्षेपयतु। क्षिप प्रेरणे। णिजन्ताल् लेट्। इतश् च लोपः। लेटो ऽडाटाव् इत्यडागमः। शब् गुणायादेशौ पररूपत्वं च। सा.। प्रेरयेत् - दया.।

*पालन करे* - **पोषयत्।** अस्मान् पोषयतु - वे.। पुष पुष्टौ - सा.।

*हो जाए* - **भुवत्।** भवतु - वे.। भू सत्तायाम्। भूसुवोस् तिङीति गुणप्रतिषेधः। उवङ्। सा.।

## सूक्त १०

ऋषिः - गय आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-३,५,६ अनुष्टुप्, ४,७ पङ्क्तिः। सप्तर्चं सूक्तम्।

**अग्न॒ ओजि॑ष्ठ॒म् आ भ॑र द्यु॒म्नम् अ॒स्मभ्य॑म् अध्रिगो।**
**प्र नो॑ रा॒या परी॑णसा॒ रत्सि॒ वाजा॑य॒ पन्था॑म्॥ १॥**

अग्ने॑। ओजि॑ष्ठम्। आ। भ॒र। द्यु॒म्नम्। अ॒स्मभ्य॑म्। अ॒ध्रि॒गो॒ इत्य॑ध्रिऽगो।
प्र। नः॒। रा॒या। परी॑णसा। रत्सि॑। वाजा॑य। पन्था॑म्॥ १॥

*हे अग्ने!, अतिशय बल वाले को, इस ओर ले आ,*
*तेज को हमारे लिये, हे अबाधगति रश्मियों वाले।*
*प्रकर्ष से हमारे लिये, धन के भरे-पूरे के साथ,*
*बना दे तू, ऐश्वर्य के लिये मार्ग को॥ १॥*

हे अबाधगति से गमन करने वाली ज्ञानरश्मियों वाले अग्रनायक परमेश्वर! तू हमें अतिशय बल से युक्त तेज प्रदान कर। तू हमारे लिये सब ओर से भरे-पूरे धन के साथ ऐश्वर्यों के मार्ग का भली प्रकार निर्माण कर। तू हमें धनों और ऐश्वर्यों की प्राप्ति का सही मार्ग दिखा।

टि. *अतिशय बल वाले को* - **ओजिष्ठम्।** बलवत्तमम् - वे.। सा.। अतिशयेन पराक्रमयुक्तम् - दया.। most powerful - W. mighty - G. full of energy - Ar.

*तेज को* - **द्युम्नम्।** अन्नम् - वे.। द्योतते कटकमुकुटादिरूपेण सर्वत्र प्रकाशत इति द्युम्नं धनम् - सा.। यशो धनं वा - दया.। treasure - W. splendour - G. a light - Ar.

*हे अबाधगति रश्मियों वाले* - **अध्रिगो।** हे अधृतगमन - वे.। अधृतम् अप्रतिहतं गमनं यस्येत्यधृता अनिवारिता गावो रश्मयो यस्येति वाधृतगुर् इत्यधृतगुः। तस्य सम्बोधनम्। सा.। यो ऽधृन् धारकान् गच्छन्ति तत्सम्बुद्धौ। दया.। of irresistible powers - W. resistless on thy way - G. O unseizable Ray - Ar.

*धन के भरे-पूरे के साथ* - **राया परीणसा।** धनेन महता सह - वे.। परितो व्यापकेन धनेन प्रकर्षेण योजय। णस कौटिल्ये ऽत्र व्याप्त्यर्थो धातूनाम् अनेकार्थत्वात्। अस्मात् सम्पदादिलक्षणो भावे क्विप्। परि प्राप्तं नस् व्यापनं यस्य तत् तथोक्तम्। उपसर्गाद् बहुलम् इति वचनात् णसो णत्वम्। निपातस्य चेति पूर्वपदस्य दीर्घः। बहुव्रीहौ प्रकृत्येति पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्। सा.। with surrounding wealth - W. with overflowing store of wealth - G. by thy opulence pervading on every side - Ar.

*बना दे तू* - **रत्सि।** लिख - वे.। विलिख कुर्वित्यर्थः। रद विलेखने। भौवादिकः। बहुलं छन्दसीति शपो लुक्। पादादित्वान् निघाताभावः। सा.। mark out - W. G. cut out - Ar.

**त्वं नो॑ अग्ने अद्भु॒त॒ क्रत्वा॒ दक्ष॑स्य मं॒हना॑।**

**त्वे असुर्यं१म् आरुहत् क्राणा मित्रो न यज्ञियः।। २।।**

त्वम्। नः। अग्ने। अद्भुत। क्रत्वा। दक्षस्य। मंहना।
त्वे इति। असुर्यम्। आ। अरुहत्। क्राणा। मित्रः। न। यज्ञियः।। २।।

*तू हमारे पास (आ), हे अग्ने!, हे आश्चर्ययुक्त!,*
*प्रज्ञा के साथ, बल की महिमा के साथ।*
*तुझमें प्राणवत्ता आरोहण किये हुए है,*
*कर्मों को करता है तू, सूर्य की तरह पूज्य।। २।।*

हे आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तू अद्भुत है, अभूतपूर्व है, रहस्यमय है। तू अपनी प्रज्ञा और अपने बल की महिमा के साथ हमारे पास आ, हमारे हृदयों में वास कर। तू प्राणवत्ता से ओतप्रोत है। तू अपने कर्मों को सूर्य की तरह निरन्तर करता रहता है और इसलिये सब के द्वारा पूज्य है।

टि. *प्रज्ञा के साथ* - **क्रत्वा**। प्रज्ञया - वे.। दया.। क्रत्वा कर्मणास्मत्कृतेन यज्ञादिव्यापारेण प्रीतः सन् - सा.। चतुरस्य विद्याबलयुक्तस्य महत्त्वेन - दया.। by wisdom - W. with thy will - Ar.

*बल की महिमा के साथ* - **दक्षस्य मंहना**। बलस्य च महत्त्वेन - वे.। दक्षस्य बलस्य धनस्य वा मंहना मंहनं नाम दानं कुर्विति शेषः। मंहतिर् दानकर्मा। सुपां सुलुग् इत्याकारादेशः। सा.। by bounteousness of power - G. with the growth of the judgement - Ar.

*तुझमें प्राणवत्ता आरोहण किये हुए है* - **त्वे असुर्यम् आ अरुहत्**। असुराणां हन्तृरूपम् आ अरुहत् - वे.। यतः कारणात् त्वे त्वय्यसुर्यम् असुरघ्नं बलम् आरुहत् आरूढम् - सा.। in thee abides the strength destroying evil spirits - W. the might of Asuras rests on thee - G. in thee the (sacrificial Friend) can climb to almightiness - Ar.

*कर्मों को करता है तू* - **क्राणा**। कर्माणि कुर्वाणः - वे.। यज्ञघातकराक्षसापनोदनलक्षणानि कर्माणि कुर्वाणो भव। डुकृञ् करणे। शानच्। बहुलं छन्दसीति विकरणस्य लुक्। यणादेशः। सुपां सुलुग् इत्यात्वम्। चित इत्यन्तोदात्तः। सा.। कुर्वन् - दया.। the doer (of great deeds) - W.

*सूर्य की तरह पूज्य* - **मित्रः न यज्ञियः**। सखेव, यज्ञियः - वे.। सूर्य इव यज्ञार्हः - सा.।

**त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय।**
**ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मघान्यानशुः।। ३।।**

त्वम्। नः। अग्ने। एषाम्। गयम्। पुष्टिम्। च। वर्धय।
ये। स्तोमेभिः। प्र। सूरयः। नरः। मघानि। आनशुः।। ३।।

*तू हमारे, हे अग्ने!, इन (स्वजनों) की,*
*सम्पत्ति को, पुष्टि को भी बढ़ा।*
*जो स्तुतियों के द्वारा प्रकर्ष से उपासक,*
*नायक जन पवित्र धनों को प्राप्त करते हैं।। ३।।*

हे सर्वप्रकाशक अग्रणी परमेश्वर! ये जो तेरी उपासना करने वाले और यज्ञ आदि शुभ कर्मों के सम्पादन में हमेशा आगे-आगे रहने वाले हमारे पुत्र-पौत्र, सगे-सम्बन्धी और इष्ट-मित्र तेरी स्तुतियों

के द्वारा परिश्रम के साथ पवित्र धनों को अर्जित करते हैं, तू इनके घर-द्वार, गो-अश्व आदि धन तथा शरीरसम्बन्धी पौष्टिकता, स्वास्थ्य आदि की वृद्धि कर।

टि. *सम्पत्ति को* - **गयम्।** गृहम् - वे.। गम्यते निवासायेति गयं गृहं गीयते स्तूयत इति वा गयं धनम् - सा.। अपत्यं गृहं च। गय इत्यपत्यनाम निघ. २.२। धननाम २.१०। गृहनाम ३.४। दया.। dwelling - W. the acquisition - Ar.

*उपासक नायक जन* - **सूरयः नरः।** स्तोतारः नरः - वे.। सूरयः लब्धवर्णा नरः स्तोतारो मनुष्याः - सा.। विपश्चितः नेतारः - दया.। devout men - W. the men, the princes - G. men that are illuminates - Ar.

*पवित्र धनों को* - **मघानि।** धनानि - वे.। दया.। मंहनीयानि गवादिधनानि - सा.। riches - W.

*प्राप्त करते हैं* - **आनशुः।** व्याप्नुवन् - वे.। सा.। प्राप्नुयुः - दया.। acquired - W.

**ये अ॑ग्ने चन्द्र ते॒ गिर॑ः शु॒म्भन्त्यश्व॑राधसः।**
**शुम्भै॑भिः शु॒ष्मिणो॒ नरो॑ दि॒वश् चि॒द् येषा॑ं बृ॒हत्**
**सु॑की॒र्तिर् बोध॑ति॒ त्मना॑।। ४।।**

ये। अ॒ग्ने॒। च॒न्द्र॒। ते॒। गिर॑ः। शु॒म्भन्ति॑। अश्व॑ऽराधसः।
शुम्भै॑भिः। शु॒ष्मिण॑ः। नर॑ः। दि॒वः। चि॒त्। येषा॑म्। बृ॒हत्। सु॒ऽकी॒र्तिः। बोध॑ति। त्मना॑।। ४।।

*जो, हे अग्ने आह्लादित करने वाले!, तेरे लिये स्तुतियों को,*
*सुशोभित करते हैं, अश्वरूपी धनों वाले (हो जाते हैं वे)।*
*बलों से (तेरे) बलों वाले (हो जाते हैं वे) मनुष्य,*
*द्युलोक से भी जिनकी महान्,*
*शोभन कीर्ति बोध कराती है (अपना) स्वयम्।। ४।।*

हे सब को सुखी और आनन्दित करने वाले अग्रणी परमेश्वर! जो उपासक जन तेरे लिये अपनी स्तुतियों को सुशोभित करते हैं, अपनी स्तुतियों से तेरी महिमा का गान करते हैं, वे अश्वरूपी धनों को और शारीरिक बलों को प्राप्त करते हैं। वे मनुष्य तेरे बलों को पाकर बलशाली हो जाते हैं। उनकी महान् उत्तम कीर्ति द्युलोक तक फैल जाती है। उनकी वह कीर्त्ति अपना बोध स्वयं ही सब स्थानों पर करा देती है, स्वयम् एव सर्वत्र फैल जाती है।

टि. *स्तुतियों को सुशोभित करते हैं* - **गिरः शुम्भन्ति।** तुभ्यं स्तुतिगिरः शोधयन्ति - वे.। त्वत्सम्बन्धिस्तोत्ररूपा वाचः शोभनाः कुर्वन्ति - सा.। धर्म्या वाचः विराजन्ते - दया.। who deck their songs for thee - G. and make beautiful their words of thee - Ar.

*अश्वरूपी धनों वाले* - **अश्वराधसः।** लब्धाश्वधनाः - वे.। ते अश्वधना भवन्ति - सा.। become rich in horses - W.

*बलों से (तेरे) बलों वाले* - **शुम्भेभिः शुष्मिणः।** बलैश् च बलिनः - वे.। बलवन्तः सन्तः स्वकीयैर् बलैः सत्त्वैः शत्रुशोषका भवन्ति - सा.। बलैः बलिनः - दया.। are invigorated with energies - W. the men are mighty in their might - G. Ar.

*बोध कराती है (अपना) स्वयम्* - **बोधति त्मना।** स्वयम् एव प्रकाशते, तेषाम् एषां गयं पुष्टिम् इति - वे.। एवंविधं त्वां गयस् त्मनात्मना स्वयम् एव बोधति बोधयति - सा.। जानाति आत्मना - दया.। arouses (thee) of thine own accord - W. that glory by itself awakes - Ar.

**तव॒ त्ये अ॑ग्ने अ॒र्चयो॒ भ्राज॑न्तो यन्ति धृष्णु॒या।**
**परि॑ज्मानो॒ न वि॒द्युत॑: स्वा॒नो रथो॒ न वा॑ज॒युः।। ५।।**

तव॑। त्ये। अ॒ग्ने॒। अ॒र्चय॑:। भ्राज॑न्तः। य॒न्ति॒। धृ॒ष्णु॒ऽया।
परि॑ऽज्मानः। न। वि॒ऽद्युत॑:। स्वा॒नः। रथ॑:। न। वा॒ज॒युः।। ५।।

*तेरी वे, हे अग्ने!, दीप्तियां,*
*चमकती हुई जाती हैं, धर्षणशील।*
*सब ओर व्याप्त जैसे बिजलियां,*
*घोष करता हुआ रथी जैसे, विजयकामी।। ५।।*

हे सर्वप्रकाशक अग्रनायक परमेश्वर! तेरी प्रकाशमान धर्षणशील उग्र ज्योतियां जगत् में इस प्रकार सब ओर व्याप्त हो रही हैं, जिस प्रकार बिजलियां अपनी चमचमाहट और कड़कड़ाहट के साथ सब ओर व्याप्त हो जाती हैं और जिस प्रकार कोई योद्धा घर्र-घर्र ध्वनि करने वाले अपने रथ पर आरूढ़ होकर विजय की कामना से युद्धभूमि में अपने शत्रुओं को ललकारता हुआ उनपर सब ओर छा जाता है।

टि. *चमकती हुई* - **भ्राजन्तः।** दीप्यमानाः - वे.। सा.। अन्यान् प्रकाशयन्तः - दया.।

*धर्षणशील* - **धृष्णुया।** धर्षणशीलाः - वे.। धृष्णवो ऽत्यन्तप्रगल्भाः। ञिधृषा प्रागल्भ्ये। त्रसिगृधिधृषीत्यादिना क्नुप्रत्ययः। आदितश् च (पा. ७.२.१६) इतीट्प्रतिषेधः। बहुवचने सुपां सुलुग् इत्यादिना याजादेशः। चित इत्यन्तोदात्तत्वम्। सा.। प्रगल्भाः - दया.। fierce - W. violent - Ar.

*सब ओर व्याप्त* - **परिज्मानः।** परितो गन्त्र्यः - वे.। परितो गन्त्र्यः सर्वतो प्राप्ताः - सा.। circumambient - W. flashing round us - G.

*ध्वनि करता हुआ* - **स्वानः।** स्वनवान् - वे.। शब्दायमानः - सा.। दया.।

*रथी विजयकामी* - **रथः वाजयुः।** अत्र रथशब्दो तात्स्थ्यात् 'रथस्थो योद्धा' इत्यर्थे वर्तते। वाजयुर् विजयेच्छुः।। रथः शत्रुभ्यो ऽन्नम् इच्छन् - वे.। रथो ऽन्नकाम इवान्नार्थं युद्धेषु शत्रुविजयाय यथा प्रवर्तते तद्वद् इत्यर्थः - सा.। chariot rushing for booty - W.

**नू नो॑ अग्न ऊ॒तये॑ स॒बाध॑सश् च रा॒तये॑।**
**अ॒स्माका॑सश् च सू॒रयो॒ विश्वा॒ आशा॑स् तरी॒षणि॑।। ६।।**

नु। नः॒। अ॒ग्ने॒। ऊ॒तये॑। स॒ऽबाध॑सः। च॒। रा॒तये॑।
अ॒स्माका॑सः। च॒। सू॒रय॑:। विश्वा॑:। आशा॑:। त॒री॒षणि॑।। ६।।

*शीघ्र हमारी, हे अग्ने!, समृद्धि के लिये (हो तू),*
*और दारिद्र्यादि से बाधित को, देने के लिये।*
*और हमारे विद्वज्जन (तेरी उपासना करने वाले),*

*सब दिशाओं को तरने में (होवें समर्थ)।। ६।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले जगदीश्वर! तू अब अविलम्ब हमारी वृद्धि और रक्षा करने वाला हो जा। जो मनुष्य निर्धनता आदि कठिनाइयों से पीड़ित हैं, तू उन्हें धन प्रदान कर। हे प्रभो! तेरी उपासना करने वाले, तेरे नियमों के अनुसार जीवन को बिताने वाले हमारे जो पुत्र-पौत्र आदि हैं, वे तेरी कृपा से अपनी सभी कामनाओं को पूर्ण करने में और सभी दिशाओं को पार करने में, इस पृथिवी को विजित करके इसपर सर्वत्र अपने लिये स्थान बनाने में समर्थ हों।

टि. *दारिद्र्यादि से बाधित को* - **सबाधसः**। धनाभावाद् बाधायुक्तस्य - वे.। दारिद्रनिमित्त-बाधसहितस्य। बाधेर् असुन्। बाधसा सह वर्तत इति सबाधाः। वोपसर्जनस्येति सहस्य सभावः। कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम्। सा.। बाधेन सह वर्तमानाः - दया.। poverty-repelling (riches) - W. who are opposed and obstructed - Ar.

*हमारे विद्वज्जन* - **अस्माकासः सूरयः**। अस्मदीयाः मेधाविनः पुत्राः - वे.। अस्माकासो ऽस्माकाः पुत्रमित्रादयः सूरयः स्तोतारः। तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकाव् इत्यणि कृते अस्माकादेशः। छान्दसत्वाद् अणो लोपः। बहुवचने ऽसुगागमः। सा.। our pious descendants - W. patrons of our rites - G. our illuminates - Ar.

*सब दिशाओं को तरने में* - **विश्वाः आंशाः तरीषणि**। सर्वाः दिशः तरितुं शक्ता भवन्तु - वे.। विश्वाः सर्वा आशा दिशस् तरीषणि तासां तरणे क्षमा भवन्तु। अथवा आशाः कामाः। अयम् अर्थः। स्वाभिलषितप्रशस्तसमस्तवस्तुसम्पादनं कुर्वित्यर्थः। सा.। subdue all regions of the earth : an allusion to the *digvijaya*, universal conquest, or subjugation of all neighbouring princes - G.

**त्वं नो॑ अग्ने अङ्गिरः स्तु॒तः स्तवा॑न॒ आ भ॑र।**
**होत॑र् विभ्वा॒सहं॑ र॒यिं स्तो॒तृभ्य॒ः स्तव॑से च न**
**उ॒तैधि॑ पृ॒त्सु नो॑ वृ॒धे।। ७।। २।।**

त्वम्। न॒ः। अ॒ग्ने॒। अ॒ङ्गि॒रः॒। स्तु॒तः। स्तवा॑नः। आ। भ॒र।
होत॑ः। वि॒भ्व॒ऽसह॑म्। र॒यिम्। स्तो॒तृऽभ्य॑ः। स्तव॑से। च॒। न॒ः।
उ॒त। ए॒धि॒। पृ॒त्ऽसु। न॒ः। वृ॒धे।। ७।।

*तू हमारे लिये, हे अग्ने!, हे अङ्गिरा!*
*स्तुति किया हुआ, स्तुति किया जाता हुआ, सब ओर से ले आ।*
*हे आह्वाता!, बड़ों-बड़ों को विजित करने वाले धन को,*
*स्तुति करने वालों को, स्तुति करने के लिये (दे सामर्थ्य) भी हमको,*
*और हो जा तू संग्रामों में, हमारी वृद्धि के लिये।। ७।।*

हे सब को सन्मार्ग दिखाने वाले अङ्गारों के समान तेजस्वी परमेश्वर! पूर्वकाल में भी तेरी स्तुति होती रही है और वर्तमान काल में भी हम तेरी स्तुति कर रहे हैं। हे सब का सन्मार्ग में आह्वान करने वाले जगदीश! तू बड़ों-बड़ों को भी विजित करने वाले धन को हमें सब ओर से प्राप्त करा। हे परम

दाता! तू स्तुति करने वालों को हमको तेरी स्तुति, पूजा-अर्चना करने का सामर्थ्य भी प्रदान कर। तू हमारे जीवन के संघर्षों में हमें सफलताएं प्राप्त कराकर आगे ही आगे बढ़ाने वाला हो।

टि. हे *अङ्गिरा* - **अङ्गिरः**। अङ्गिरसाम् एक - वे.। कार्यकारणयोर् अभेदोपचाराद् अङ्गिरसां प्रकृतिभूतो ऽप्यग्निर् अङ्गिरा इत्युच्यते - सा.। प्राण इव प्रिय - दया.।

*स्तुति किया जाता हुआ* - **स्तवानः**। स्तूयमानः - वे.। इदानींतनैश् च स्तूयमानः - सा.। प्रशंसन् - दया.। lauded now - G.

*बड़ो-बड़ों को विजित करने वाले धन को* - **विभ्वासहम् रयिम्**। महताम् अभिभवितारम् - वे.। सा.। यो विभून् आसहते तम् - दया.। riches (enabling us) to overcome the mighty - W. G. riches of a far-reaching force - Ar.

*स्तुति करने के लिये (दे सामर्थ्य)* - **स्तवसे**। बलाय - वे.। स्तोतुं सामर्थ्यम् - सा.। स्तावकाय - दया.। (ability) to praise thee - W. that (singers) may extol thee - G.

## सूक्त ११

ऋषिः - सुतंभर आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - जगती। षडृचं सूक्तम्।

**जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविर् अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे।**
**घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः।। १।।**

जनस्य। गोपाः। अजनिष्ट। जागृविः। अग्निः। सुऽदक्षः। सुविताय। नव्यसे।
घृतऽप्रतीकः। बृहता। दिविऽस्पृशा। द्युऽमत्। वि। भाति। भरतेभ्यः। शुचिः।। १।।

*मनुष्यों का पालक, प्रकट होता है, जागरणशील,*
*अग्नि, शोभन बल वाला, कल्याण के लिये, स्तुत्य के लिये।*
*प्रकाशमान रूप वाला, महान् (तेज) से युक्त, द्यौ को छूने वाले से,*
*प्रकाशवत्ता के साथ खूब दीप्त होता है, हवि लाने वालों के लिये, पवित्र।। १।।*

मनुष्यों का पालन करने वाला, सदा जागरणावस्था में रहने वाला, उत्तम बल वाला, अग्रनायक परमात्मा अपने उपासकों के प्रशंसनीय नूतन कल्याण के लिये उनके हृदयों में प्रकट होता है। वह प्रकाशमय रूप वाला है। वह दिव्यता को स्पर्श करने वाले महान् तेज से युक्त है। वह पवित्र है। वह अपने सर्वस्व को समर्पित करने वाले उपासकों को विशेष प्रकाशवत्ता के साथ अपना प्रकाश और ज्ञान प्रदान करता है।

टि. *प्रकट होता है* - **अजनिष्ट**। जातः - वे.। सा.। जायते - दया.।

*कल्याण के लिये, स्तुत्य के लिये* - **सुविताय नव्यसे**। अभ्युदयाय नवतराय - वे.। नवतराय लोकानां कल्याणाय। तन्वादीनां छन्दस्युपसंख्यानम् इति सोर् उवङादेशः। सुविताय सूपमानात् क्त इत्युत्तरपदान्तोदात्तत्वम्। नव्यसे। नवशब्दाद् अतिशायने ऽर्थे ईयसुन् प्रत्ययः। ईकारलोपश् छान्दसः। अतो लोपः। आद्युदात्तः। सा.। ऐश्वर्याय अतिशयेन नवीनाय - दया.। for the present prosperity - W. for fresh prosperity - G. for a new happy journey - Ar.

*प्रकाशमान रूप वाला* – **घृतप्रतीकः**। घृतलिङ्गः – वे.। घृतेन प्रज्वलिताङ्गः – सा.। fed with butter - W. with oil upon his face - G. luminous in his front - Ar.

*महान् (तेज) से युक्त, द्यौ को छूने वाले से* – **बृहता दिविस्पृशा**। बृहता दिवं स्पृशता तेजसा सह – वे.। महता दिविस्पृशा अभ्रंलिहेन तेजसा युक्तः – सा.।

*हवि लाने वालों के लिये* – **भरतेभ्यः**। मनुष्येभ्यः – वे.। ऋत्विग्भ्यः – सा.। धारणपोषणकृद्भ्यो मनुष्येभ्यः – दया.। for the Bharatas - W. G. for the Bringers - Ar.

**यज्ञस्य॑ के॒तुं प्र॑थ॒मं पु॒रोहि॑तम् अ॒ग्निं नर॑स् त्रिषध॒स्थे सम् ई॑धिरे।**
**इन्द्रे॑ण दे॒वैः स॒रथं॒ स ब॒र्हिषि॒ सीद॒न् नि होता॑ य॒जथा॑य सु॒क्रतुः॑।। २।।**

य॒ज्ञस्य॑। के॒तुम्। प्र॒थ॒मम्। पु॒रःऽहि॑तम्। अ॒ग्निम्। नर॑ः। त्रि॒ऽस॒ध॒स्थे। सम्। ई॒धि॒रे।
इन्द्रे॑ण। दे॒वैः। स॒ऽरथ॑म्। सः। ब॒र्हिषि॑। सीद॑त्। नि। होता॑। य॒जथा॑य। सु॒ऽक्रतुः॑।। २।।

*यज्ञ के प्रज्ञापक को, मुख्य को, सम्मुख स्थापित को,*
*अग्नि को, यज्ञनायक तीनों स्थानों वाले सहस्थान में, प्रदीप्त करते हैं।*
*इन्द्र के साथ, देवों के साथ, समान रथ में वह कुशा के आसन पर,*
*बैठता है, नितरां आह्वाता, यजन के लिये, शोभन कर्मों वाला।। २।।*

वह अग्रनायक परमेश्वर यज्ञ आदि शुभ कर्मों का ज्ञान कराने वाला है। वह इस जगत् में सर्वोपरि है। उसे हम मार्गदर्शन के लिये अपने सम्मुख स्थापित करते हैं। यज्ञ के नायक जन पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक इस त्रिलोकरूपी सहस्थान में निवास करने वाले उस अग्रनायक को अपने हृदयों में प्रदीप्त करते हैं, उसकी ज्योति को जगाते हैं। उत्तम कर्मों का कर्ता, जगत् में प्रवर्तमान यज्ञ का याजक वह जगदीश आत्मा रूपी इन्द्र और बुद्धि, मन, इन्द्रिय आदि देवों के साथ शरीर रूपी समान रथ में विराजमान होकर हमारे अन्तर्यज्ञ के संचालन के लिये हमारे हृदय रूपी पवित्र आसन पर आसीन होता है।

टि. *यज्ञ के प्रज्ञापक को* – **यज्ञस्य केतुम्**। यागस्य प्रज्ञापकम्। कित ज्ञाने। औणादिक उप्रत्ययः। अन्तोदात्तः। सा.। the banner of sacrifice - W. Ensign of sacrifice - G. the intuition of the sacrifice - Ar.

*तीनों स्थानों वाले सहस्थान में* – **त्रिषधस्थे**। त्रयाणां बर्हिषो धातूनां सहस्थाने – वे.। त्रिस्थाने विहारप्रदेशे। आहवनीयादिलक्षणेन त्रिप्रकारेणानेन सह तिष्ठतीति त्रिषधस्थः। कप्रत्ययः। सध मादस्थयोश् छन्दसीति सधादेशः। कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम्। सा.। त्रिभिस् सह स्थाने – दया.। in three places - W. in his threefold seat - G. in the triple world of his session - Ar.

*यजन के लिये* – **यजथाय**। यज्ञाय – वे.। सा.। सङ्गमनाय – दया.। for the (celebration of the) rite - W. to complete the sacrifice - G. to sacrifice - Ar.

**अस॑मृष्टो जायसे मा॒त्रोः शुचि॑र् म॒न्द्रः क॒विर् उद् अ॑तिष्ठो वि॒वस्व॑तः।**
**घृतेन॑ त्वावर्धयन्नग्न आहुत धूमस् ते॑ के॒तुर् अ॑भवद् दि॒वि श्रि॒तः।। ३।।**

अस॑म्ऽमृष्टः। जा॒य॒से॒। मा॒त्रोः। शुचि॑ः। म॒न्द्रः। क॒विः। उत्। अ॒ति॒ष्ठः। वि॒वस्व॑तः।

घृतेन। त्वा। अवर्धयन्। अग्ने। आऽहुत। धूमः। ते। केतुः। अभवत्। दिवि। श्रितः।। ३।।

*बाधित न किया हुआ, प्रकट होता है तू दो माताओं में, पवित्र,*
*प्रशंसनीय, क्रान्तदर्शी, उठ खड़ा होता है तू, विवस्वान् के (घर से)।*
*घृत से तुझको बढ़ाते हैं, हे अग्ने!, हे सब ओर से आहुतियां पाए हुए,*
*धूआँ तेरा ज्ञापक है, प्रकाशलोक में आश्रय लेने वाला।। ३।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले प्रभो! चूँकि तू महान् है, इसलिये तुझे कोई बाधित नहीं कर सकता। जिस प्रकार यज्ञ का अग्नि दो अरणियों में उत्पन्न होता है, उसी प्रकार तेरी ज्योति साधक की अन्तश्चेतना में उत्पन्न होती है। तू पवित्र, प्रशंसनीय और क्रान्तदर्शी है। तू विशेष रूप से तुझमें ही वास करने वाले, तुझे ही अपने हृदय में बसाने वाले उपासक के अन्तस्तल में अपनी ज्योति के साथ उदित होता है। हे सब ओर से आहुतियों को स्वीकार करने वाले अग्रणी परमेश्वर! सब याजक अपनी आहुतियों से तुझे ही बढ़ाते हैं। जिस प्रकार धूआँ लौकिक अग्नि का ज्ञापक है, उसी प्रकार प्रकाशलोक में स्थित भी तुझको ढक लेने वाला हमारे अज्ञान का आवरण हमें तेरा पता बताता है। जहाँ-जहाँ भी अज्ञान का आवरण होगा, वहाँ-वहाँ से उसे परे हटाकर ही उसके पीछे स्थित का तेरा हम दर्शन कर सकेंगे।

टि. *बाधित न किया हुआ* - **असंमृष्टः**। शत्रुभिः असंमृष्टः - वे.। अबाधितः - सा.। unobstructed - W. unadorned - G. unopposed - Ar.

*प्रशंसनीय* - **मन्द्रः**। मादयिता - वे.। सर्वैः स्तुत्यः। मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु। अत्र स्तुत्यर्थाद् अस्मात् स्फायितञ्चीत्यादिना रक्। अन्तोदात्तः। सा.। प्रशंसितः - दया.। adorable - W. rapturous - Ar.

*विवस्वान् के (घर से)* - **विवस्वतः**। यजमानात् - वे.। अग्निहोत्राद्यर्थं गृहे विशेषेण वसतो यजमानात्। विपूर्वाद् वसतेः सम्पदादिलक्षणो भावे क्विप्। तद् अस्यास्तीति मतुप्। माद् उपधायाश् चेति वत्वम्। मतुपो ऽनुदात्तत्वाद् धातुस्वरः। सा.। सूर्यात् - दया.। from (the devotion of ) the householder - W. comest from Vivasvān - G. from the sun - Ar.

*हे सब ओर से आहुतियां पाए हुए* - आहुत। हे आहुतिभिर् हुत - सा.। सत्कारेण निमन्त्रित - दया.। to whom burnt offerings are made - W. Ar. O worshipped God - G.

**अग्निर् नो यज्ञम् उप वेतु साधुयाग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे।**
**अग्निर् दूतो अभवद् धव्यवाहनो ऽग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम्।। ४।।**

अग्निः। नः। यज्ञम्। उप। वेतु। साधुऽया। अग्निम्। नरः। वि। भरन्ते। गृहेऽगृहे।
अग्निः। दूतः। अभवत्। हव्यऽवाहनः। अग्निम्। वृणानाः। वृणते। कविऽक्रतुम्।। ४।।

*अग्नि हमारे यज्ञ के समीप आए, कार्यों को साधने वाला,*
*अग्नि को यज्ञों के प्रणेता, विविध प्रकार से ले जाते हैं, घर-घर में।*
*अग्नि दुःखविनाशक है, हव्यों को स्वीकार करने वाला,*
*अग्नि का वरण करने वाले, वरण करते हैं (उस) क्रान्तप्रज्ञ का।। ४।।*

सन्मार्ग में आगे बढ़ाने वाला और कार्यों को सिद्ध करने वाला वह परमेश्वर यज्ञ आदि शुभ कर्मों में विद्यमान रहकर सदा हमारा मार्गदर्शन करता रहे। यज्ञ के प्रणेता जन सब घरों में उसे ही आहुतियां प्रदान करते हैं, अथवा अपने-अपने अन्तर्यज्ञ में उसका ही यजन करते हैं। वह सर्वेश्वर सब दुःखों और संकटों को दूर भगाने वाला है। वह उपासकों द्वारा समर्पित नैवेद्यों को अवश्य स्वीकार करता है। उस अग्रणी का वरण करने वाले उपासक जन उस महान् शक्ति को ही अपनाते हैं, जिससे बढ़कर प्रज्ञा वाला और दूसरा कोई भी नहीं है।

टि. *यज्ञ के समीप आए* - **यज्ञम् उप वेतु**। यज्ञम् उप गच्छतु - वे.। अस्मदीयं यागं प्रति आगच्छतु - सा.। संगन्तव्यं व्यवहारं व्याप्नोतु - दया.। may come to our sacrifice - W. G. Ar.

*कार्यों को साधने वाला* - **साधुया**। सुष्ठु - वे.। सर्वपुरुषार्थानां साधकः। सुपां सुलुग् इत्यादिना विभक्तेर् यादेशः। सा.। साधवः - दया.। the fulfiller (of all desires) - W. graciously - G. with power to accomplish - Ar.

*यज्ञों के प्रणेता* - **नरः**। मनुष्याः - वे.। सा.। नेतारो मनुष्याः - दया.। men - W. G. Ar.

*अग्नि का वरण करने वाले वरण करते हैं (उस) क्रान्तप्रज्ञ का* - **अग्निं वृणानाः वृणते कविक्रतुम्**। अग्निम् एव यज्ञाय वृणानाः वृणते होतारं क्रान्तप्रज्ञम् - वे.। वृणानाः संभजमानाः सन्तः क्रान्तप्रज्ञं अग्निं संभजन्ते - सा.। those adoring Agni adore him as the accomplisher of the sacrifice - W. electing Agni, men choose one exceeding wise - G. when men accept the Fire it is the seer-will that they accept - Ar.

**तुभ्येदम् अग्ने मधुमत्तमं वचस् तुभ्यं मनीषा इयम् अस्तु शं हृदे।**
**त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर् महीर् आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च।। ५।।**

तुभ्यं। इदम्। अग्ने। मधुमत्ऽतमम्। वचः। तुभ्यम्। मनीषा। इयम्। अस्तु। शम्। हृदे।
त्वाम्। गिरः। सिन्धुम्ऽइव। अवनीः। महीः। आ। पृणन्ति। शवसा। वर्धयन्ति। च।। ५।।

*तेरे लिये (होवे) यह, हे अग्ने!, अतिशय माधुर्ययुक्त वचन,*
*तेरे लिये मनन यह (मेरा) होवे, सुखकर हृदय के लिये।*
*तुझको वाणियां (मेरी), सागर को जैसे नीचे को बहते जल महान्,*
*सब ओर से पूर रहे हैं, और वेग से बढ़ा रहे हैं (तुझको)।। ५।।*

हे आगे बढ़ाने वाले परमात्मन्! मेरा यह अत्यन्त माधुर्ययुक्त स्तुतिवचन तेरे लिये ही होवे। यह मेरा चिन्तन भी तेरे हृदय के लिये सुखकर होवे। मेरी ये स्तुतियां तुझको सब ओर से इस प्रकार बल और वेग से भर रही हैं और बढ़ा रही हैं, जिस प्रकार नीचे की ओर बहने वाले महान् जल अथवा नदियां समुद्र को सब ओर से भर रही हैं और उसके बल तथा वेग से बढ़ा रही हैं।

टि. *तेरे लिये* - **तुभ्य**। तुभ्यम् - वे.। सा.। अत्र सुपां सुलुग् इति भ्यसो लुक् - दया.।

*मनन* - **मनीषा**। स्तुतिः - वे.। सा.। प्रज्ञा - दया.। praise - W. product of my thought - G. thinking - Ar.

*सागर को जैसे नीचे को बहते जल महान्* - **सिन्धुम् इव अवनीः महीः**। समुद्रम् इव आपः

महत्यः - वे.। महत्यो ऽवन्यो नद्यः समुद्रम् इव - सा.।

*वेग से* - **शवसा**। वेगेन - वे.। बलेन - सा.। दया.। with vigour - W. with force - Ar.

**त्वाम् अग्ने अङ्गिरसो गुहा हितम्**
**अन्वविन्दञ् छिश्रियाणं वनेवने।**
**स जायसे मथ्यमानः सहो महत्**
**त्वाम् आहुः सहसस् पुत्रम् अङ्गिरः।। ६।। ३।।**

त्वाम्। अग्ने। अङ्गिरसः। गुहा। हितम्। अनु। अविन्दन्। शिश्रियाणम्। वनेऽवने।
सः। जायसे। मथ्यमानः। सहः। महत्। त्वाम्। आहुः। सहसः। पुत्रम्। अङ्गिरः।। ६।।

*तुझको, हे अग्ने!, अङ्गिराओं ने गुहा में स्थित को,*
*अनुक्रम से पा लिया, आश्रय लिये हुए को प्रत्येक वृक्ष में।*
*वह (तू) प्रादुर्भूत होता है, मन्थन किया जाता हुआ बल से महान् से,*
*तुझको बताते हैं बल का बहुत्राता, हे अङ्गारों की तरह प्रदीप्त।। ६।।*

हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले जगदीश्वर! तू हृदयरूपी गुहा में छुपा हुआ है। परन्तु यज्ञों के प्रवर्तक ऋषि गण वृक्षों की तरह बढ़ने, कटने और पुनः उग आने वाले अपने शरीरों के अन्दर आश्रय लिये हुए को तुझको चिन्तन-मनन के द्वारा इस प्रकार प्राप्त कर लेते हैं, जिस प्रकार दूध का मन्थन करके घृत को प्राप्त कर लिया जाता है, अथवा सागर का मन्थन करके अमृत को पा लिया जाता है। जब साधक अपनी पूरी शक्तियों से तेरा अवलोडन करते हैं, तो तू हृदय में प्रकट हो जाता है। हे अङ्गारों की तरह महान् तेजस्वी! तुझे मनस्वी जन बल का महान् त्राता बताते हैं।

टि. *अङ्गिराओं ने* - **अङ्गिरसः**। अङ्गिरस ऋषयः - सा.।

*प्रत्येक वृक्ष में* - **वनेवने**। काष्ठेकाष्ठे - वे.। वृक्षेवृक्षे - सा.। जङ्गलेजङ्गले ऽग्नाव् इव जीवेजीवे - दया.। from wood o wood - W. G. in tree and tree - Ar.

*बल से महान् से* - **सहः महत्**। महत् बलम् (आहुः) - वे.। महता बलेन - सा.। wih great force - W. conquering might - G. a mighty force - Ar.

*बल का बहुत्राता* - **सहसः पुत्रम्**। पुत्रः पुरु त्रायते - या. (नि. २.११)।। विद्याशरीरबलयुक्तस्य पुत्रम् - दया.। the son of strength - W. G. the Son of Force - Ar.

## सूक्त १२

ऋषिः - सुतम्भर आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। षड्चं सूक्तम्।

**प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म।**
**घृतं न यज्ञ आस्ये३ सुपूतं गिरं भरे वृषभाय प्रतीचीम्।। १।।**

प्र। अग्नये। बृहते। यज्ञियाय। ऋतस्य। वृष्णे। असुराय। मन्म।
घृतम्। न। यज्ञे। आस्ये। सुऽपूतम्। गिरम्। भरे। वृषभाय। प्रतीचीम्।। १।।

*प्रकर्ष से अग्नि के लिये, महान् के लिये, पूज्य के लिये,*
*ऋत के संचालक के लिये, प्राणदाता के लिये, विचारयुक्त को।*
*घृत को जैसे यज्ञ में, (अग्नि के) मुख में, सुष्ठु पवित्र को,*
*वाणी को लाता हूँ मैं, सुखवर्षक के लिये, अभिमुखी को।। १।।*

जिस प्रकार यज्ञ के अन्दर अग्नि के मुख में भली प्रकार पवित्र किये हुए घृत को समर्पित किया जाता है, उसी प्रकार मैं महान्, पूजा के योग्य, सत्यनियम का संचालन करने वाले, प्राणों के दाता और सुखों की वर्षा करने वाले, सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले उस परमेश्वर के लिये चिन्तन मनन, आदि के द्वारा तैयार की हुई अनुकूल स्तुति को समर्पित करता हूँ।

टि. *ऋत के संचालक के लिये* - **ऋतस्य वृष्णे**। उदकस्य वर्षित्रे - वे.। सा.। दया.। the rainer of water - W. to Steer of eternal Law - G. to the Bull of the Truth - Ar.

*प्राणदाता के लिये* - **असुराय**। बलवते - वे.। असेर् औणादिक उरन् प्रत्ययः। सा.। असुषु प्राणेषु रममाणाय - दया.। the vigorous - W. to Asura - G.

*विचारयुक्त को* - **मन्म**। स्तुतिम् - वे.। ज्ञानसाधनम् - सा.। ज्ञानोत्पादकं कारणम् - दया.। the acceptable praise - W. prayer - G. thought - Ar.

*सुखवर्षक के लिये* - **वृषभाय**। वर्षित्रे - वे.। कामानां वर्षित्रे - सा.। बलिष्ठाय - दया.। for the master of the herds - Ar.

*अभिमुखी को* - **प्रतीचीम्**। अग्निं प्रति गच्छन्तीम् - वे.। अभिमुखीम् - सा.। पश्चिमां क्रियाम् - दया.। present - W. directed - G. turned to meet him - Ar.

**ऋतं चिकित्व ऋतम् इच् चिकिद्ध्यृतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः।**
**नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः।। २।।**

ऋतम्। चिकित्वः। ऋतम्। इत्। चिकिद्धि। ऋतस्य। धाराः। अनु। तृन्धि। पूर्वीः।
न। अहम्। यातुम्। सहसा। न। द्वयेन। ऋतम्। सपामि। अरुषस्य। वृष्णः।। २।।

*हे सत्यनियम को जानने वाले!, सत्यनियम का ही ज्ञान करा तू,*
*सत्यनियम की धाराओं को, अनुक्रम से काटकर बहा, बहुसंख्यों को।*
*न (तो) मैं मार्ग का बलपूर्वक (अनुसरण करता हूँ), न दोगलेपन से,*
*सत्यनियम का (ही) अनुसरण करता हूँ मैं, आरोचमान के, सुखवर्षक के।। २।।*

हे सत्यनियम को जानने वाले परमेश्वर! तू अपने सत्यनियम का ही सब को ज्ञान करा। उसका सबको सम्यक् पालन करा। सत्यनियम की जो असंख्य धाराएं हैं, भेदोपभेद हैं, तू उनके रहस्यों को क्रमशः खोलकर, उन्हें स्पष्ट करके, सब मनुष्यों तक पहुँचा। मैं किसी भी मार्ग का न तो बलपूर्वक, बुद्धि से सोचे-विचारे विना, अनुसरण करता हूँ, और न ही सत्य और असत्य इन दोनों के मिश्रण अर्थात् दोगलेपन से ही उसका अनुसरण करता हूँ। मैं तो प्रकाशमान और सबपर सुखों की वर्षा करने वाले उस जगदीश्वर के सत्यनियम का ही पालन करता हूँ।

टि. हे *सत्यनियम के जानने वाले* - **ऋतं चिकित्वः**। हे ऋतस्य ज्ञातः - वे.। ऋतं स्तोत्रं हे

चिकित्वो जानन्नग्ने। ऋतम् इति पदस्य परस्मिन्नामन्त्रिते विद्यमाने ऽपि छान्दसत्वात् पराङ्गवद्भावाभावः। सा.। ऋतं सत्यं कारणम्, ऋतं सत्यं ब्रह्म - दया.।O thou conscious of the Truth - Ar.

*धाराओं को अनुक्रम से काटकर बहा* - **धाराः अनु तृन्धि।** ऋतस्योदकस्य धारास् तस्य पोषणार्थम् उत्पादयितुं मेघान् अनुविध्य - सा.।send forth the full streams of eternal Order - G. cut out in succession many streams of the Truth - Ar.

*मार्ग का* - **यातुम्।** सत्यभूतं मार्गम् - वे.। कर्मणां नाशकरीं हिंसाम् - सा.। गन्तुम् - दया.। sorcery - G. how to travel - Ar.

*बलपूर्वक* - **सहसा।** अविचारेण - वे.। बलेन युक्तो ऽहम् - सा.। बलेन - दया.।

*न दोगलेपन से* - **न द्वयेन।** नापि सत्येन चानृतेन च - वे.। न सत्यानृताभ्याम् - सा.। इव कार्यकारणात्मकेन - दया.।nor with both (truth and untruth) - W. nor with falsehood - G. nor by division - Ar.

*अनुसरण करता हूँ* - **सपामि।** स्पृशामि - वे.। करोमीति यावत्। षप समवाये। सा.। आक्रुशामि - दया.।I undertake - W. I follow - G.

**कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः।**
**वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुर् अस्य रायः।। ३।।**

कया। नः। अग्ने। ऋतयन्। ऋतेन। भुवः। नवेदाः। उचथस्य। नव्यः।
वेद। मे। देवः। ऋतुऽपाः। ऋतूनाम्। न। अहम्। पतिम्। सनितुः। अस्य। रायः।। ३।।

*किस (युक्ति) से हमारे, हे अग्ने!, ऋत को चाहता हुआ ऋत से,*
*होगा तू भली प्रकार जानने वाला, स्तोत्र को, स्तुति के योग्य।*
*जानता है मुझको दान दिव्यता आदि गुणों वाला, ऋतुपालक ऋतुओं का,*
*नहीं मैं (जानता हूँ) पालक को, विभाजक को इस धन के।। ३।।*

हे हम सबका मार्गदर्शन करने वाले जगदीश्वर! चूँकि तू स्वयं सत्यनियम का पालन करता है और दूसरों से कराता है, इसलिये सत्यनियम तुझे बहुत प्रिय है। हे प्रभो! हमारे लिये वह कौन सी युक्ति है, कौन सा उपाय है, जिससे स्तुति के योग्य तू हमारे स्तोत्र को भली प्रकार जानने वाला, सुनने वाला, हो जाएगा। हे ऋतुओं का और उनमें होने वाले यज्ञों का पालन करने वाले परमात्मन्! दान दिव्यता आदि गुणों वाला तू तो मुझ अपने उपासक को भली प्रकार जानता है, परन्तु मैं तो इन धनों का वितरण करने वाले के तेरे विषय में कुछ भी नहीं जानता।

टि. *किस (युक्ति) से* - **कया।** कीदृशा वाचा - वे.। केनापि (ऋतेन) - सा.। कया विद्यया युक्त्या वा - दया.।how - G. by what thought of ours - Ar.

*ऋत को चाहता हुआ ऋत से* - **ऋतयन् ऋतेन।** सत्येनैव सत्यं कर्मेच्छन् - वे.। ऋतयन् सर्वप्राणिनां जीवनहेतुकम् उदकं कुर्वन् ऋतेन सत्येन क्रियमाणेन कर्मणा - सा.। सत्यम् आचरन् सत्येन - दया.।(hast thou,) follower of the Law eternal, (become the knower) - G. seeking the Truth by the Truth - Ar.

*होगा तू* - **भुवः**। भवसि - वे.। भवेः। भू सत्तायाम्। लिङर्थे लेट्यडागमः। उवङादेशः। सा.।

*भली प्रकार जानने वाला* - **नवेदाः**। ज्ञाता - वे.। न न वेत्तीति वेत्तीत्यस्मिन्नर्थे वर्तते। कथम् एतल् लभ्यते। निपातनात्। द्विनञ्पूर्वस्यासुन्प्रत्ययान्तस्य वेदेर् एकस्य नञो लोपो ऽन्यस्य प्रकृतिभावश् च स्कन्दस्वामिना निपातितः। पाणिनिना तु नभ्राण् नपाद् इति सूत्रेण वेत्तीत्यस्मिन्नर्थे निपातितः। अस्यार्थस्यानुपपन्नत्वात् स्कन्दस्वामिपक्ष एवाश्रीयते। सा.। यो न विन्दति सः - दया.।

*स्तुति के योग्य* - **नव्यः**। स्तुत्यः - वे.। सा.। नवेषु साधुः - दया.। adorable - W. of a new (song) - G. a new discoverer ( of the word) - Ar.

*ऋतुपालक ऋतुओं का* - **ऋतुपाः ऋतूनाम्**। ऋतुपाः यः ऋतून् पाति, ऋतूनाम् वसन्तादीनाम् - दया.। the guardian of the seasons - W. G. who is guardian of the orders and Laws of the Truth - Ar.

*विभाजक को* - **सनितुः**। प्रदातारम् - वे.। भजमानस्य - सा.। विभाजकस्य - दया.। of which I am the possessor - W. of the conquering (riches) - Ar.

**के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः।**
**के धासिम् अग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वचसः सन्ति गोपाः।। ४।।**

के। ते। अग्ने। रिपवे। बन्धनासः। के। पायवः। सनिषन्त। द्युऽमन्तः।
के। धासिम्। अग्ने। अनृतस्य। पान्ति। के। असतः। वचसः। सन्ति। गोपाः।। ४।।

*कौन हैं वे तेरे, हे अग्ने!, शत्रु को बाँधने वाले,*
*कौन रक्षा करने वाले हैं, देते हैं (धनों को) तेजस्वी।*
*कौन धारण करने वाले से, हे अग्ने!, असत्य को, पालन करते हैं,*
*कौन (हैं वे तेरे, जो) असत्य वचन से हैं रक्षा करने वाले।। ४।।*

हे आगे ले चलने वाले परमेश्वर! जो मनुष्य अपने शारीरिक बल से चोर, डाकू आदि बाह्य शत्रुओं को और आत्मिक बल से काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को बाँध लेते हैं, वे तेरे कौन होते हैं? जो तेजस्वी वीर पुरुष दीनों की रक्षा और असहायों की सहायता करते हैं और भूखों को अन्न तथा धन देते हैं, वे तेजस्वी तेरे कौन होते हैं? जो जीवन में असत्य को धारण करने वाले मनुष्य से दूसरों की रक्षा करते हैं, वे तेरे कौन होते हैं? और हे प्रभो! जो असत्य वचन से दूसरों की रक्षा करते हैं, वे तेरे कौन होते हैं? इन सब प्रश्नों का केवल एक ही उत्तर है, वे ऐसे मनुष्य एकमात्र तेरे अनन्य उपासक ही हो सकते हैं।

टि. *शत्रु को बाँधने वाले* - **रिपवे बन्धनासः**। रिपवे इत्यत्र विभक्तिव्यत्ययः। षष्ठीस्थाने चतुर्थी।। शत्रोः बन्धकाः रश्मयः - वे.। स्वकीयस्य शत्रोः बन्धकाः - सा.। imprisoners of foes -W. in alliance with thy foeman - G. binders of the adversary - Ar.

*देते हैं (धनों को) तेजस्वी* - **सनिष्यन्त द्युमन्तः**। प्रयच्छन्ति धनानि दीप्तिमन्तः - वे.। दीप्तिमन्तो दीनेभ्यो धनं प्रयच्छन्ति - सा.। विभजन्ते कामयमानाः - दया.। the splendid distributers of gifts - W. splendid helpers won for them - G. the luminous ones that

shall possess and conquer - Ar.

*धारण करने वाले से असत्य को* - **धासिम् अनृतस्य।** धासिम् इत्यत्र विभक्तिव्यत्ययः। पञ्चमीस्थाने द्वितीया।। अनृतकर्मणः धारकं पुरुषम् - वे.। अनृतस्य धासिं धारकं जनम्। यद्वा। अनृतजनितपापात् परिहृत्य सन्मार्गप्रदानेन रक्षन्ति - सा.। धासिम् अन्नम् - दया.। the asserter of untruth - W. the dwelling place of falsehood - G. the foundation of falsehood - Ar.

*असत्य वचन से* - **असतः वचसः।** असत्यस्य वचसः - वे.। दुष्टस्याभिशापादिलक्षणस्य वचसः। यद्वा। अभिशापादिलक्षणाद् वचसः। सा.। निन्द्यात् वचनात् - दया.। (protectors) of the speech of liars - G. (the guardians) of the untrue Word - Ar.

**सखा॑यस् ते॒ विषु॑णा अग्न ए॒ते शि॒वास॒ः सन्तो॒ अशि॑वा अभूवन्।**
**अधू॑र्षत स्व॒यम् एते वचो॑भिर् ऋजूय॒ते वृ॑जि॒नानि॑ ब्रु॒वन्त॑ः।। ५।।**

सखा॑यः। ते॒। विषु॑णाः। अ॒ग्ने॒। ए॒ते। शि॒वास॑ः। सन्त॑ः। अशि॑वाः। अ॒भू॒व॒न्।
अधू॑र्षत। स्व॒यम्। ए॒ते। वच॑ःऽभिः। ऋ॒जु॒ऽय॒ते। वृ॒जि॒नानि॑। ब्रु॒वन्त॑ः।। ५।।

*मित्रगण तेरे विमुख (होकर तुझसे), हे अग्ने!, ये,*
*भद्र होते हुए भी, अभद्र हो जाते हैं।*
*हिंसित हो जाते हैं स्वयं ये, वचनों से (अपने),*
*ऋजुगामी के लिये, कुटिल वचनों को बोलते हुए।। ५।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! ये तेरे उपासक, जो तेरी पूजा-अर्चना के द्वारा तेरी मित्रता को प्राप्त कर लेते हैं, कल्याण के पात्र बन जाते हैं। परन्तु जब ये अपने झूठे अभिमान और अज्ञान के कारण तुझसे विमुख हो जाते हैं, तो पुनः अकल्याण और विनाश के पात्र हो जाते हैं। जब ये किसी ऋजुगामी धर्मात्मा पुरुष के लिये कुटिल वचनों को बोलते हैं, तो अपने वचनों से स्वयं ही विनाश को प्राप्त हो जाते हैं।

टि. *विमुख (होकर तुझसे)* - **विषुणाः।** विष्वग्गमनाः अभूवन् पराबभूवुः स्वदोषान् - वे.। विप्रकीर्णाः सर्वत्र व्याप्ताः - सा.। विद्यां व्याप्नुवन्तः - दया.। everywhere dispersed -W. have turned them from thee - G. who have turned away from thee - Ar.

*भद्र होते हुए भी अभद्र हो जाते हैं* - **शिवासः सन्तः अशिवाः अभूवन्।** पुरा भद्राः सन्तः पश्चात् अभद्राः अभूवन् - वे.। पूर्वम् अशिवाः परनिन्दादिकुर्वाणास् त्वत्परिचर्यां त्यजन्तो ऽभद्राः सन्त इदानीं त्वत्परिचर्यां कुर्वन्तः शिवासः शिवा आढ्या अभूवन् - सा.। मङ्गलाचरणाः सन्तः अमङ्गलाचरणाः भवेयुः - दया.। gracious of old, they have become ungracious - G. Ar.

*हिंसित हो जाते हैं* - **अधूर्षत।** हिंसितवन्तः - वे.। अहिंस्यन्त। धूर्षतेर् हिंसाकर्मण इदं रूपम्। सा.। हिंसन्तु - दया.। bring evil upon themselves - W. they have deceived themselves - G. they have done violence to themselves - Ar.

*ऋजुगामी के लिये* - **ऋजूयते।** ऋजुकर्माचरते तुभ्यम् - वे.। ऋजु सम्यग् आचरते ऽपि मह्यम् - सा.। against the righteous - G. to the seeker after straightness - Ar.

*कुटिल वचनों को* - **वृजिनानि।** वर्जितव्यानि वचांसि।। अनृतानि - वे.। कुटिलानि - सा.। wicked words - G.

**यस् तें अग्ने नमसा यज्ञम् ईट्टे**
**ऋतं स पात्यरुषस्य वृष्णः।**
**तस्य क्षयः पृथुर् आ साधुर् एतु**
**प्रसर्स्राणस्य नहुषस्य शेषः।। ६।। ४।।**

यः। ते। अग्ने। नमसा। यज्ञम्। ईट्टे। ऋतम्। सः। पाति। अरुषस्य। वृष्णः।
तस्य। क्षयः। पृथुः। आ। साधुः। एतु। प्रऽसर्स्राणस्य। नहुषस्य। शेषः।। ६।।

*जो तेरे लिये, हे अग्ने!, नम्रता के साथ, यज्ञ को करता है,*
*ऋत का (ही) वह पालन करता है, (तुझ) आरोचमान सुखवर्षक के।*
*उसको निवास विस्तृत सब ओर से कार्यसाधक, प्राप्त हो जाए,*
*खूब विस्तार को प्राप्त होने वाले को, राजा को (प्राप्त हो जाए) शेष (सब-कुछ)।। ६।।*

हे अग्रनायक परमेश्वर! जो मनुष्य तेरे लिये नित्य नम्रतापूर्वक यज्ञ, पूजा-अर्चना आदि करता है, वह तुझ प्रकाशमान और सुखों की वर्षा करने वाले के तेरे सत्यनियम का ही पालन करता है। उसे सब कार्यों को साधने वाला विशाल निवासस्थान, प्रभु के चरणों में निवास, बिना किसी बाधा के ही प्राप्त हो जाता है। वह राजा, स्वशासक, बन जाता है और अपने राज्य का विस्तार करने वाले को उसको शेष सुखसाधन भी अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं।

टि. *नम्रता के साथ* - **नमसा।** नमस्कारेण सह - वे.। स्तोत्रेण - सा.। अन्नादिना - दया.।

*यज्ञ को करता है* - **यज्ञम् ईट्टे।** यज्ञं स्तौति - वे.। यज्ञं यजनीयं ते त्वाम् ईट्टे स्तौति। यद्वा। ते तुभ्यं यज्ञं यागं नमसान्नरूपेण हविषेट्टे यजति। अस्मिन् पक्षे यजेर् बहुलं छन्दसीति शपः श्लुः। सा.। pays sacrifice to thee - G. desires the sacrifice - Ar.

*ऋत का (ही) वह पालन करता है* - **ऋतं सः पाति।** आत्मविषयप्रजापश्वादिदानात्मकं शोभन-कर्म अविच्छेदेनैव रक्षति - वे.। ऋतं स्तोत्रं पाति रक्षति - सा.। सत्यं न्यायं रक्षति - दया.। keeps the Red Steer's Law eternal - G. he guards the Truth - Ar.

*निवास विस्तृत* - **क्षयः पृथुः।** निवासः विस्तीर्णः - वे.। दया.। गृहं विस्तीर्णं भवति। पश्वादिलक्षणैर् धनैः सम्पूर्णं भवतीत्यर्थः। सा.। wide habitation - Ar.

*कार्यसाधक* - **साधुः।** धनसमृद्धः - वे.। कामानां साधकः - सा.। श्रेष्ठः - दया.।

*खूब विस्तार को प्राप्त होने वाले को राजा को (प्राप्त हो जाए) शेष (सब-कुछ)* - **प्रसर्स्राणस्य नहुषस्य शेषः।** नहुषो बहुवचनं निघण्टुग्रन्थेषु मनुष्यनामसु पठ्यते, नहुष एकवचनं तूणादिसूत्रेषु राज्ञि।। त्वां प्रति पुनःपुनः सरतः मनुष्यस्य शेषभूतः - वे.। प्रकर्षेण परिचर्यां गच्छतो नहुषस्य मनुष्यस्य (कामानां साधकः) शेषः। शिष्यत इति शेषः। पुत्र ऐतु। आगच्छतु। भवत्वित्यर्थः। सा.। प्राप्नोतु भृशं धर्मं प्रापमाणस्य नहुषस्य मनुष्यस्य। शेषः यः शिष्यते सः। दया.। May the noble offspring of Nahuṣa who wandered forth come hither - G.

the last state of man as he advances on his journey - Ar.

## सूक्त १३

ऋषिः - सुतम्भर आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - गायत्री। षडृचं सूक्तम्।

**अर्चन्तस् त्वा हवामहे ऽर्चन्तः समिधीमहि। अग्ने अर्चन्त ऊतये।। १।।**

अर्चन्तः। त्वा। हवामहे। अर्चन्तः। सम्। इधीमहि। अग्ने। अर्चन्तः। ऊतये।। १।।

*पूजा करते हुए तुझको बुलाते हैं हम,*
*पूजा करते हुए प्रदीप्त करते हैं (तुझको)।*
*हे अग्ने!, पूजा करते हुए समृद्धि के लिये।।*

हे सन्मार्ग में आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! हम अपनी समृद्धि, संरक्षण आदि के लिये तेरी पूजा-अर्चना करते हुए अपनी स्तुतियों से तेरा आह्वान करते हैं, तेरी पूजा-अर्चना करते हुए ही हम अपनी आहुतियां, नैवेद्य और समर्पण तुझे समर्पित करते हैं। तू कृपा करके अपनी समृद्धियां और संरक्षण हमें प्रदान कर।

टि. *पूजा करते हुए* - **अर्चन्तः**। पूजयन्तः - वे.। पूजयन्तः स्तुवन्तः। अर्चन्त इति तृतीयं पदम् आदरातिशयार्थम्। सा.। सत्कुर्वन्तः - दया.। adoring - W. with songs of praise - G. singing the word of illumination - Ar.

*प्रदीप्त करते हैं* - **सम् इधीमहि**। सन्दीपयामः - वे.। सा.। प्रकाशयेम - दया.। we kindle - W. G. Ar.

*समृद्धि के लिये* - **ऊतये**। रक्षणाय - वे.। रक्षणाय तर्पणाय - सा.। रक्षणाद्याय - दया.। for protection - W. for help - G. thou mayest be our guard - Ar.

**अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रम् अद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः।। २।।**

अग्नेः। स्तोमम्। मनामहे। सिध्रम्। अद्य। दिविऽस्पृशः। देवस्य। द्रविणस्यवः।। २।।

*अग्नि के स्तोत्र का चिन्तन करते हैं हम,*
*पुरुषार्थ को सिद्ध करने वाले का, आज, द्युलोक में व्याप्त के।*
*प्रकाशमान के, धनों की कामना वाले।। २।।*

आज और आज की तरह अन्य दिनों में भी लौकिक और अलौकिक ऐश्वर्यों की कामना वाले हम उपासक द्युलोक और अन्य लोकों को व्याप्त करने वाले, स्वयं प्रकाशमान और अन्यों को प्रकाशित करने वाले अग्रनायक परमेश्वर के, पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाले स्तोत्र का हम मनन, चिन्तन आदि करते हैं। स्तोत्र में वर्णित उस प्रभु के गुण कर्म और स्वभाव पर विचार करते हैं और उनको अपने जीवन में ग्रहण करने का प्रयास करते हैं।

टि. *चिन्तन करते हैं हम* - **मनामहे**। उच्चारयामः - वे.। ब्रूमः - सा.। we recite - W. we meditate - G. Ar.

*पुरुषार्थ को सिद्ध करने वाले का* - **सिध्रम्**। कामानां साधकम् - वे.। पुरुषार्थानां साधकम् -

सा.। साधकम् - दया.। effectual - G. all-achieving - Ar.

*द्युलोक में व्याप्त के* - **दिविस्पृशः**। ज्वालाभिः दिवं स्पृशतः - वे.। सूर्यरूपेणाकाशं व्याप्नुवतः - सा.। यो दिवि परमात्मनि सुखं स्पृशति तस्य - दया.। who touches heaven - G. Ar.

*धनों की कामना वाले* - **द्रविणस्यवः**। द्रविणम् इच्छमानाः - वे.। सा.। दया.।

**अ॒ग्निर् जु॑षत नो॒ गिरो॒ होता॒ यो मानु॑षे॒ष्वा। स य॑क्ष॒द् दैव्यं॒ जन॑म्।। ३।।**

अ॒ग्निः। जु॒ष॒त॒। न॒ः। गिर॑ः। होता॑। यः। मानु॑षेषु। आ। सः। य॒क्ष॒त्। दैव्य॑म्। जन॑म्।। ३।।

*अग्नि स्वीकार करे, हमारी स्तुतियों को,*

*आह्वाता है जो, मनुष्यों के मध्य सब ओर।*

*वह सत्कृत करे, दिव्यगुणयुक्त मनुष्य को।। ३।।*

वह अग्रणी परमेश्वर, जो मनुष्यों के अन्दर सबका सन्मार्ग पर आह्वान करने वाला है, हमारी स्तुतियों को प्रीतिपूर्वक स्वीकार करे। मनुष्यों में जो दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त जन हैं, वह जगदीश्वर उन्हें सत्कृत करे, जीवन में उन्हें स्वास्थ्य, दीर्घ जीवन, सुख और समृद्धि प्रदान करता हुआ अपने चरम लक्ष्य मोक्ष की ओर सदा बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान करता रहे।

टि. *स्वीकार करे* - **जुषत**। सेवताम् - सा.। जुषते - दया.। ग्रहण करे - सात.। may accept - W. Ar. may take pleasure - G.

*मनुष्यों के मध्य सब ओर* - **मानुषेषु** आ। मानुषेषु आ वर्तते - वे.। यो मानुषेषु आ वसति - सा.। amongst men - W. G.Ar.

*सत्कृत करे* - **यक्षत्**। यजतु - वे.। सा.। संगच्छेत् पूजयेद् वा - दया.। may offer sacrifice - W. Ar. may worship - G.

*दिव्यगुणयुक्त मनुष्य को* - **दैव्यम् जनम्**। देवसम्बन्धिजनम् - सा.। दिव्येषु गुणेषु भवं विद्वांसम् - दया.। to the divine beings - W. Celestial Folk - G. to the divine kind - Ar.

**त्वम् अ॑ग्ने स॒प्रथा॑ असि॒ जुष्टो॒ होता॒ वरे॑ण्यः। त्वया॑ य॒ज्ञं वि त॑न्वते।। ४।।**

त्वम्। अ॒ग्ने॒। स॒ऽप्रथा॑ः। अ॒सि॒। जुष्ट॑ः। होता॑। वरे॑ण्यः। त्वया॑। य॒ज्ञम्। वि। त॒न्व॒ते॒।। ४।।

*तू, हे अग्ने!, विस्तार से युक्त है,*

*प्रिय, आह्वान करने वाला, वरण के योग्य।*

*तेरे द्वारा यज्ञ का वितान करते हैं (याजक)।। ४।।*

तू हे अग्रणी परमेश्वर! अत्यन्त विस्तार वाला है। तू इस ब्रह्माण्ड के अन्दर और इससे परे भी व्याप्त है। तू सबका प्रिय और सब के द्वारा प्रीति के साथ सेवन के योग्य है। तू सबका सन्मार्ग में आह्वान करने वाला है। तू सबके द्वारा वरण के योग्य है। सब उपासक तेरी कृपा और सहायता से ही यज्ञ आदि शुभ कर्मों का सम्पादन करते हैं।

टि. *विस्तार से युक्त* - **सप्रथाः**। सर्वतः पृथुतमः - वे.। सर्वतः पृथुः। तत्राह यास्कः। सप्रथाः सर्वतः पृथुः (नि. ६.७) इति। सा.। प्रसिद्धकीर्त्तिः - दया.। mighty - W. spread widely forth - G. Great is thy wideness - Ar.

*प्रिय* – **जुष्टः**। पर्याप्तः – वे.। सर्वदा प्रीतः – सा.। सेवितः – दया.। gracious - W. dear - G. beloved - Ar.

*आह्वान करने वाला* – **होता**। दातादाता वा – दया.। our priest of the call - Ar.

*तेरे द्वारा यज्ञ का वितान करते हैं* – **त्वया यज्ञं वि तन्वते**। त्वया यज्ञं कुर्वन्ति – वे.। त्वया साधनेन यज्ञं वि तन्वते – सा.। through thee worshippers complete the sacrifice - W. through thee men make the sacrifice complete - G. Ar.

**त्वाम् अ॑ग्ने वाज॒सात॑म॒ं विप्रा॑ वर्धन्ति॒ सुष्टु॑तम्। स नो॑ रास्व सु॒वीर्य॑म्।। ५।।**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। वा॒ज॒ऽसात॑मम्। विप्राः॑। व॒र्धन्ति॒। सुऽस्तु॑तम्। सः। न॒ः। रा॒स्व॒। सु॒ऽवीर्य॑म्।। ५।।

*तुझको, हे अग्ने!, ऐश्वर्य देने वालों में उत्तम को,*
*मेधावी बढ़ाते हैं, सुष्ठु स्तुति किये हुए को।*
*वह हमें प्रदान कर तू, उत्तम बल को।। ५।।*

हे अग्रनायक परमेश्वर! उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करने वाले को, स्तुतियों से भली प्रकार स्तुति किये जाने वाले को तुझको मेधावी उपासक अपनी स्तुतियों से बढ़ाते हैं। इस प्रकार हमारे द्वारा स्तुति किया हुआ तू हमें उत्तम बल और उत्तम सन्तान प्रदान कर।

टि. *ऐश्वर्य देने वालों में उत्तम को* – **वाजसातमम्**। अतिशयेन अन्नस्य दातारम् – वे.। वाजो ऽन्नम्। तद् ददतम्। सा.। वाजानां विज्ञानानां वेगानाम् अतिशयेन विभाजकम् – दया.। the bountiful giver of food - W. best giver of our strength - G. the strong conqueror of the plenitude - Ar.

*मेधावी* – **विप्राः**। मेधाविनः – वे.। दया.। मेधाविनः स्तोतारः – सा.। wise worshippers - W. singers - G. the illumined wise - Ar.

*उत्तम बल को* – **सुवीर्यम्**। शोभनं वीर्यम् – वे.। सर्वैः श्लाघनीयं बलम् – सा.। सुष्ठु-पराक्रमम् – दया.। excellent strength - W. heroic might - G. a complete hero-might - Ar.

**अग्ने॑ ने॒मिर् अ॒राँ इ॑व दे॒वांस् त्वं प॑रि॒भूर् अ॑सि।**
**आ राध॑श् चि॒त्रम् ऋ॑ञ्जसे।। ६।। ५।।**

अग्ने॑। ने॒मिः। अ॒रान्ऽइ॑व। दे॒वान्। त्वम्। प॒रि॒ऽभूः। अ॒सि॒।
आ। राध॑ः। चि॒त्रम्। ऋ॒ञ्ज॒से॒।। ६।।

*हे अग्ने!, नेमि अरों को जिस प्रकार,*
*देवों को तू, सब ओर से घेर रहा है।*
*सर्वतः धन को अद्भुत को, साधता है तू।। ६।।*

हे सबध्को सन्मार्ग पर ले चलने वाले परमेश्वर! नेमि जिस प्रकार अरों को चारों ओर से घेरकर उनकी रक्षा करती है, उसी प्रकार तू भी दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त मनुष्यों की रक्षा करता है। हे प्रभो! तू अपने अनोखे दिव्य धनों को हमें प्रदान करता है।

टि. *तू सब ओर से घेर रहा है* – **त्वम् परिभूः असि**। त्वं परितो भवसि – वे.। स्वतेजसा

परिभवसि - सा.। सर्वतो भावयिता असि - दया.। encompassest - W.

*धन को* - **राधः**। अन्नम् - वे.। साधयन्त्यनेन पुरुषार्थान् इति राधो धनम्। धननामसु पाठाद् राधो धनम् इत्युक्तम्। सा.। दया.। bounty - G. our rich achievement - Ar.

*सर्वतः साधता है तू* - **आ ऋञ्जसे**। प्रसाधयसि - वे.। स्तोतृभ्यः प्रसाधय। सा.। ऋञ्जसे प्रसाध्नोषि - दया.। bestow - W. I yearn for - G. thou shalt arrange for us - Ar.

## सूक्त १४

ऋषिः - सुतम्भर आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - गायत्री। षडृचं सूक्तम्।

**अग्निं स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम्। हव्या देवेषु नो दधत्।। १।।**

अग्निम्। स्तोमेन। बोधय। सम्ऽइधानः। अमर्त्यम्। हव्या। देवेषु। नः। दधत्।। १।।

*अग्नि को स्तोत्र से, जागृत कर तू,*
*प्रदीप्त करता हुआ अमरणधर्मा को।*
*हव्यों को, देवों में, हमारे, स्थापित करे वह।। १।।*

हे उपासक!, तू अपने स्तोत्र से उस सन्मार्ग दिखाने वाले परमेश्वर को जागृत कर, उसे प्रसन्न कर, उसे अपने प्रति संवेदनशील बना। जब वह हमारी स्तुतियों से प्रसन्न होगा तो वह हमारे द्वारा समर्पित किये हुए हव्यों, नैवेद्यों, समर्पणों आदि से दान, दिव्यता आदि गुणों से सम्पन्न सज्जनों, विद्वानों तथा अन्य प्रजाओं को भी लाभान्वित करेगा। इससे हमारे समर्पण जनहित के लिये होंगे।

टि. *जागृत कर तू अमरणधर्मा को* - **बोधय अमर्त्यम्**। अमरणधर्माणम् अग्निं स्वाभिलषितार्थसिद्धये प्रबोधय - सा.। प्रदीपय मरणधर्मरहितम् - दया.। enkindling the immortal, wake Agni - G.

*प्रदीप्त करता हुआ* - **समिधानः**। काष्ठैः समिधानः - वे.। समिधानः स्तोत्रैः सम्यक् प्रकाशमानः - सा.। सम्यक् स्वयं प्रकाशमानः - दया.। being kindled - W.

*देवों में स्थापित करे वह* - **देवेषु दधत्**। देवेषु अस्माकं प्रयच्छतु - वे.। देवेषु दधत् निदधातु - सा.। विद्वत्सु दिव्यगुणपदार्थेषु वा - दया.। may bear to the gods - W. let him set (our offerings) in the godheads - Ar.

**तम् अध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम्। यजिष्ठं मानुषे जने।। २।।**

तम्। अध्वरेषु। ईळते। देवम्। मर्ताः। अमर्त्यम्। यजिष्ठम्। मानुषे। जने।। २।।

*उसकी यज्ञों में स्तुति करते हैं,*
*द्योतमान की, मरणधर्मा अमरणधर्मा की।*
*अतिशय पूजनीय की, मानवी प्रजाओं में।। २।।*

सबको सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला वह परमेश्वर स्वयं प्रकाशमान है और दूसरों को प्रकाशित करने वाला है। वह जन्म-मरण आदि के बन्धनों से परे है। वह पूज्यों में सबसे अधिक पूजनीय है। मनुष्यों के मध्य मरणधर्मा उपासक जन यज्ञ आदि हिंसारहित शुभ कार्यों में उसकी स्तुतियां करते हैं।

टि. *यज्ञों में* - **अध्वरेषु।** सप्ततन्तुषु - सा.। अहिंसनीयेषु धर्म्येषु व्यवहारेषु - दया.। at high solemnities - G. in the pilgrim sacrifices - Ar.

*मानवी प्रजाओं में* - **मानुषे जने।** मानुषे जने वर्तमानम् - वे.। मनुष्याणां सम्बन्धिनि लोके - सा.। among the human race - W. among mankind - G. in human kind - Ar.

**तं हि शश्वन्त ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुता। अग्निं हव्याय वोळ्हवे।। ३।।**

तम्। हि। शश्वन्तः। ईळते। स्रुचा। देवम्। घृतऽश्चुता। अग्निम्। हव्याय। वोळ्हवे।। ३।।

*उसकी ही सब स्तुति करते हैं,*

*स्रुचापात्र के साथ, द्योतमान की, घृत चुवाने वाले के।*

*अग्नि की, हव्यों को वहन करने के लिये।। ३।।*

सभी उपासक जन स्वयं प्रकाशमान और सूर्य, अग्नि आदि प्रकाशमानों को प्रकाशित करने वाले उस अग्रनायक परमेश्वर की ही स्नेह की वर्षा करने वाले चित्त के साथ स्तुति करते हैं, ताकि वह हमारे नैवेद्यों, समर्पणों आदि को सहर्ष स्वीकार करे और हमपर अपनी कृपादृष्टि सदा बनाए रखे।

टि. *सब* - **शश्वन्तः।** बहवः - वे.। बहवः स्तोतारः - सा.। अनादिभूता जीवाः - दया.। numerous (worshippers) - W. all - G. the perpetual generators - Ar.

*स्रुचापात्र के साथ घृत चुवाने वाले के* - **स्रुचा घृतश्चुता।** घृतश्चुता जुह्वा - वे.। घृतं क्षरन्त्या स्रुचा सहिताः - सा.। घृतं श्चोतति तेन यज्ञसाधनेन - दया.। pouring out butter from the (sacrificial) ladle - W. with ladle that distilleth oil - G.with ladle dripping clarity - Ar.

**अग्निर् जातो अरोचत घ्नन् दस्यूञ् ज्योतिषा तमः।**

**अविन्दद् गा अपः स्वः।। ४।।**

अग्निः। जातः। अरोचत। घ्नन्। दस्यून्। ज्योतिषा। तमः। अविन्दत्। गाः। अपः। स्व१र् इति स्वः।। ४।।

*अग्नि प्रादुर्भूत होकर, प्रकाशित होता है,*

*नष्ट करता हुआ हिंसकों को, तेज से, तम को।*

*प्राप्त कराता है गौओं को, जलों को, सुख को।। ४।।*

सबको सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला जगदीश्वर इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में प्रकट होकर सब ओर प्रकाशित हो रहा है। वह अपने तेज से दुष्ट हिंसक जनों को तथा ब्रह्माण्ड और मानव पिण्ड में फैले हुए तम को नष्ट कर देता है। वह हमें पृथिवी को, वाणी को, ज्ञानरश्मियों को, जलों को और अन्य सब प्रकार के सुखसाधनों को प्राप्त कराता है।

टि. *प्रादुर्भूत होकर* - **जातः।** अरण्योर् मथनेन प्रादुर्भूतः - सा.। प्रकटः सन् - दया.।

*हिंसकों को* - **दस्यून्।** राक्षसान् - वे.। दस्यून् यज्ञविघ्नकारिणः शत्रून् - सा.। दुष्टांश् चोरान् - दया.। Dasyus - W. G. the destroyers - Ar.

*तेज से* - **ज्योतिषा।** तेजसा - वे.। सा.। प्रकाशेन - दया.। by his lustre - W. with light - G. by the light - Ar.

*प्राप्त कराता है* – **अविन्दत्।** अन्तर्हितण्यर्थो ऽयम्।। अवेदयत् – सा.। लभते – दया.। He has discovered - W. He found - G. Ar.

*गौओं को, जलों को, सुख को* – **गाः अपः स्वः।** गन्त्रीः अपः स्वर्लोकात् – वे.। गा अप उदकानि सूर्यं च – सा.। किरणान् अन्तरिक्षम् आदित्यम् – दया.। the cows, the waters, the sun - W. the kine, the floods, the sun - G. the Ray-cows, the Waters, the Sun-world - Ar.

**अ॒ग्निम् ई॑ळे॒न्यं॑ क॒विं घृ॒तपृ॑ष्ठं सपर्यत। वेतु॑ मे शृ॒णव॒द् ध॒र्वम्।। ५।।**

अ॒ग्निम्। ई॒ळे॒न्य॑म्। क॒विम्। घृ॒तऽपृ॑ष्ठम्। स॒प॒र्य॒त। वेतु॑। मे॒। शृ॒णव॑त्। ह॒व॑म्।। ५।।

*अग्नि को, प्रशंसनीय को, क्रान्तदर्शी को,*
*प्रकाशमान उपरि भाग वाले को, पूजो तुम।*
*पान करे मेरे (सोम का), सुने आह्वान को (मेरे)।। ५।।*

हे उपासको! तुम स्तुति के योग्य, सभी कालों और लोकों के आर-पार देखने वाले, प्रकाशमान उपरि लोकों वाले उस अग्रणी परमेश्वर की पूजा करो। वह कृपा करके हमारे भक्तिरस रूपी सोम का पान करे और हमारी पुकार को सुने।

टि. *प्रकाशमान उपरि भाग वाले को* – **घृतपृष्ठम्।** दीप्तोपरिभागम् –सा.। दीपनम् आज्यम् उदकं वा पृष्ठे यस्य तम् – दया.। whose summit blazes with butter - W. whose back is balmed with oil - G. with his back of light - Ar.

*पान करे मेरे (सोम का), सुने आह्वान को (मेरे)* – **वेतु मे शृणवत् हवम्।** स पिबतु मम सोमम् शृणोतु च आह्वानम् – वे.। मदीयम् आह्वानं वेतु कामयतां शृणोतु च – सा.। वेतु व्याप्नोतु – दया.। may he hear and comprehend my invocation - W. Let him approach and hear my call - G. may he come, may he hear my call - Ar.

**अ॒ग्निं घृ॒तेन॑ वावृधुः स्तोमे॑भिर् वि॒श्वच॑र्षणिम्।**
**स्वा॒धीभि॑र् वच॒स्युभिः॑।। ६।। ६।। १।।**

अ॒ग्निम्। घृ॒तेन॑। व॒वृ॒धुः॒। स्तोमे॑भिः। वि॒श्वऽच॑र्षणिम्। सु॒ऽआ॒धीभिः॑। व॒च॒स्युऽभिः॑।। ६।।

*अग्नि को, घृत से बढ़ाते हैं,*
*स्तोत्रों के द्वारा, सर्वद्रष्टा को।*
*उत्तम चिन्तनों वालों के द्वारा, (उत्तम) वचनों वालों के द्वारा।। ६।।*

आगे होकर मार्गदर्शन करने वाले परमेश्वर के उपासक सब प्राणियों को और उनके शुभाशुभ कर्मों को देखने वाले की उसकी उत्तम विचारों वाले तथा मधुर और सुन्दर शब्दविन्यास वाले स्तोत्रों से वृद्धि करते हैं। अर्थात् वे परमेश्वर और उसके नियमों का पालन करने वाले मनुष्यों के पक्ष को सशक्त बनाते हैं।

टि. *घृत से* – **घृतेन।** आज्येन – दया.। by the light - Ar.

*सर्वद्रष्टा को* – **विश्वचर्षणिम्।** सर्वस्य द्रष्टारम् – वे.। सा.। विश्वप्रकाशकम् – दया.। the beholder of all - W. God of all mankind - G. the all-seeing - Ar.

*उत्तम चिन्तनों वालों के द्वारा* - **स्वाधीभिः**। सुकर्मभिः - वे.। शोभनाध्यानैः - सा.। सुष्ठुध्यान-युक्तैः - दया.। with (the gods) the objects of pious meditations - W. (with hymns) devout - G. by (their lauds) that place rightly the thought - Ar.

*(उत्तम) वचनों वालों के द्वारा* - **वचस्युभिः**। स्तुतिवचनम् इच्छद्भिः ऋत्विग्भिः - वे.। स्तुतिकामैर् देवैः - सा.। आत्मनो वचनम् इच्छुभिः - दया.। with (the gods) desirous of praise - W. (with hymns) eloquent - G. that seek for the word - Ar.

## सूक्त १५

ऋषिः - धरुण आङ्गिरसः। देवता - अग्निः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे यशसे पूर्व्याय।**
**घृतप्रसत्तो असुरः सुशेवो रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः।। १।।**

प्र। वेधसे। कवये। वेद्याय। गिरम्। भरे। यशसे। पूर्व्याय।
घृतऽप्रसत्तः। असुरः। सुऽशेवः। रायः। धर्ता। धरुणः। वस्वः। अग्निः।। १।।

*प्रकर्ष से विधाता के लिये, क्रान्तदर्शी के लिये, ज्ञातव्य के लिये,*
*स्तुति को लाता हूँ मैं, यशस्वी के लिये, सब से पूर्व विद्यमान के लिये।*
*प्रकाश में प्रकर्ष से आसीन, प्राणदाता, उत्तम सुखों वाला,*
*धन को धारण करने वाला, धारक आवास का, अग्नि।। १।।*

सबका मार्गदर्शक वह परमेश्वर सब ओर से प्रकाश में स्थित है। वह सब जीवों का प्राणदाता है। वह उत्तम सुखों को देने वाला है। वह हमारे लिये सब प्रकार के धनों को धारण कर रहा है। वह हमें सुख से रहने के लिये आवास प्रदान करता है। मैं उस जगद्विधाता, क्रान्तदर्शी, सबके द्वारा जानने योग्य, उत्तम यशों और कीर्तियों वाले और सब से पूर्व वर्तमान उस परमात्मा को अपनी स्तुतियां समर्पित करता हूँ।

टि. *विधाता के लिये* - **वेधसे**। विधात्रे - वे.। सा.। मेधाविने - दया.। to the creator - W. Ar. to him the ordainer - G.

*ज्ञातव्य के लिये* - **वेद्याय**। वेदितव्याय - वे.। दया.। स्तुत्याय। विदिर् अयं मनिना समनार्थो मनिश् च स्तुतिकर्मा। सा.। to the adorable - W. to him the far renowned - G. to him, whom we must know - Ar.

*सब से पूर्व विद्यमान के लिये* - **पूर्व्याय**। पुरातनाय - वे.। मुख्याय - सा.। to the first (of the gods) - W. to the ancient - G. Ar. to the primordial - Fra.

*प्रकाश में प्रकर्ष से आसीन* - **घृतप्रसत्तः**। घृतेन निषण्णः - वे.। घृतप्रसत्तः हवीरूपेण घृतेन प्रसन्नः - सा.। घृते प्रसत्तः - दया.। who is propitiated by oblations - W. enthroned in oil - G. seated in light - Ar. made evident by clarity - Fra.

*प्राणदाता* - **असुरः**। प्राज्ञः - वे.। बलवान् - सा.। प्राणेषु सुखदाता - दया.। the strong - W.

the Asura - G. the Mighty One - Ar. almighty - Fra.

*धारक आवास का* - **धरुणः वस्वः**। गवात्मकस्य तथा अन्यस्यापि धनस्य धर्ता - वे.। धरुणो हविषां धारको वस्वो वासकः - सा.। धारकः पृथिव्यादेः - दया.। firm support of noble riches - G. the continent of the riches - Ar. the support of plenitude - Fra.

**ऋतेन॑ ऋ॒तं ध॒रुण॑ं धारयन्त य॒ज्ञस्य॑ शा॒के प॑र॒मे व्यो॑मन्।**
**दि॒वो धर्म॑न् ध॒रुणे॑ से॒दुषो॒ नॄन् जा॒तैर् अजा॑ताँ अ॒भि ये न॑न॒क्षुः।। २।।**

ऋ॒तेन॑। ऋ॒तम्। ध॒रुण॑म्। धा॒र॒य॒न्त॒। य॒ज्ञस्य॑। शा॒के। प॒र॒मे। विऽओ॑मन्।
दि॒वः। धर्म॑न्। ध॒रुणे॑। से॒दुषः॑। नॄन्। जा॒तैः। अजा॑तान्। अ॒भि। ये। न॒न॒क्षुः।। २।।

*ऋत के द्वारा, ऋत को, धारक को, धारण करते हैं,*
*यज्ञ को शक्ति प्रदान करने वाले में, परम व्योम में।*
*द्युलोक के धर्म में, धारक में, बैठने वाले नायकों को,*
*उत्पन्न हुओं के द्वारा, न उत्पन्न हुओं को, सम्यक् जो पा लेते हैं।। २।।*

जो साधक अन्तर्यज्ञ को बल प्रदान करने वाले हृदयरूपी परम आकाश में सत्यनियम का पालन करने से सब को धारण करने वाले उस सत्यनियम को धारण करते हैं, उसका नित्य पालन करते हैं, वे संसार में उत्पन्न होने वाले महापुरुषों और सद्गुरुओं का मार्गदर्शन पाकर द्युलोक के अन्दर धारण करने वाले धर्म में स्थित, उत्पन्न न होने वाले, परन्तु मार्गदर्शन करने वाले देवों को अर्थात् प्रभु की दिव्य शक्तियों को भली प्रकार प्राप्त कर लेते हैं।

टि. *यज्ञ को शक्ति प्रदान करने वाले में* - **यज्ञस्य शाके**। यज्ञस्य सहायभूते - वे.। शाके कर्मणि निमित्ते - सा.। सर्वस्य व्यवहारस्य शक्तिनिमित्ते - दया.। by help of sacrifice - G. in the might of the sacrifice - Ar. in the power of the sacrifice - Fra.

*परम व्योम में* - **परमे व्योमन्**। परमे स्थाने उत्तरवेद्याम् - वे.। उत्कृष्टे स्थाने - सा.। प्रकृष्टे व्यापके - दया.। in the most eminent place - W. in loftiest heaven - G. in the supreme ether - Ar. Fra.

*द्युलोक के धर्म में, धारक में* - **दिवः धर्मन् धरुणे**। द्युलोकस्य धारके यज्ञकर्मणि - वे.। दिवो द्युलोकस्य धरुणे धारके धर्मन् यज्ञे - सा.। सूर्यादेः धर्मे धारके - दया.। in the law that is the upholder of heaven - Ar. Fra.

*बैठने वाले नायकों को* - **सेदुषः नॄन्**। स्थितान् नेतॄन् देवान् - वे.। सेदुषः आसीनान् नॄन् अजातान् देवान् - सा.। ज्ञानवतो मनुष्यान् - दया.।

*उत्पन्न हुओं के द्वारा न उत्पन्न हुओं को* - **जातैः अजातान्**। मनुष्येषु अजातान् जातैः पश्वादिभिः - वे.। जातैर् मनुष्यैर् ऋत्विग्भिर् अजातान् देवान् - सा.। the unborn with the born (or gods and men) - W. who by the births have attained the Unborn - Fra.

**अं॒हो॒युव॑स् त॒न्व॑स् तन्व॒ते वि वयो॑ म॒हद् दु॒ष्टरं॑ पू॒र्व्याय॑।**
**स सं॒वतो॒ नव॑जातस् तुतुर्यात् सिं॒हं न क्रु॒द्धम् अ॒भितः॒ परि॑ ष्ठुः।। ३।।**

अंहःऽयुवः। तन्वः। तन्वते। वि। वयः। महत्। दुस्तरम्। पूर्व्याय।
सः। सम्ऽवतः। नवऽजातः। तुतुर्यात्। सिंहम्। न। क्रुद्धम्। अभितः परि। स्थुः।। ३।।

*पापों को दूर भगाने वाले, शरीरों का (अपने) विस्तार करते हैं,*
*जीवनशक्ति का महान् का, दुस्तर का, सर्वप्रथम के लिये।*
*वह मिलकर आए हुओं को, नवजात, तर जाता है (उनको),*
*सिंह के जैसे क्रुद्ध के (वन्य पशु), (जो) सब ओर उसके खड़े होते हैं।। ३।।*

शुभ कर्मों के द्वारा पापों और दुःखों को दूर भगाने वाले साधक अपने तप और श्रम के द्वारा अपने शरीरों को जगत् में सब से पूर्व विद्यमान प्रभु के चरणों में अर्पित करते हैं। वे अपनी महान् और अजेय जीवनशक्ति को भी उसे ही समर्पित कर देते हैं। इस जगत् में नए-नए रूपों में प्रादुर्भूत होने वाला वह प्रभु आक्रमण के लिये मिलकर आई हुई आसुरी शक्तियों को अपनी शक्तिमत्ता से अभिभूत कर देता है। वे दुष्ट शक्तियां उसके चारों इस प्रकार दीन और असहाय होकर स्थित हो जाती हैं, जिस प्रकार वन के पशु क्रोध में आए सिंह के चारों ओर खड़े हो जाते हैं।

टि. *पापों को दूर भगाने वाले* - **अंहोयुवः**। अग्नेः पाशं मिश्रयितारः राक्षसाः - वे.। ये ऽपराधं पृथक् कुर्वन्ति ते - दया.। exempt from defect - W. averting woe - G. that reject evil - Ar. who ward away narrowness - Fra.

*शरीरों का विस्तार करते हैं* - **तन्वः तन्वते वि**। युयुत्सया आत्मशरीराणि विस्तारयन्ति - वे.। तन्वः स्वास् तनूर् अंहोयुवो ऽंहसा वियोजिका वि तन्वते विस्तारयन्ति - सा.। enjoy forms - W. they labour hard - G. they weave bodis - Ar. they extend themselves wide - Fra.

*जीवनशक्ति का महान् का* - **वयः महत्**। (यानि शरीराणि) महत् (दुःखेन च तरणीयम्) अन्नम् इव भवन्ति - वे.। महद् अधिकं वयो हवीरूपम् अन्नम् - सा.। जीवनं महत् - दया.। the great food of sacrifice - W. plenteous food as power resistless - G. they weave a vast expansion - Ar. as a great life-energy - Fra.

*मिलकर आए हुओं को* - **संवतः**। सङ्गतान् राक्षसान् - वे.। सङ्गतान् शत्रून् - सा.। assailants - G. the converging currents - Fra.

*(जो) सब ओर उसके खड़े होते हैं* - **अभितः परि स्थुः**। अभितः परिवर्ज्याग्निं तिष्ठन्ति - वे.। सर्वतो वर्तमानाः शत्रवो मां वर्जयित्वा तिष्ठेयुः - सा.। round him they stand - G. Ar. that have encompassed him - Fra.

**मातेव यद् भरसे पप्रथानो जनंजनं धायसे चक्षसे च।**
**वयोवयो जरसे यद् दधानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि।। ४।।**

माताऽइव। यत्। भरसे। पप्रथानः। जनम्ऽजनम्। धायसे। चक्षसे। च।
वयःऽवयः। जरसे। यत्। दधानः। परि। त्मना। विषुऽरूपः। जिगासि।। ४।।

*माता की तरह चूँकि पालता-पोसता है तू, विस्तृत होता हुआ,*
*जन-जन को धारण करने के लिये, देखने के लिये भी।*
*प्रत्येक जीव को जीर्ण बनाता है तू चूँकि, धारण करता हुआ,*

*सब ओर स्वयं नानारूप (होकर), गमन करता है तू।। ४।।*

हे सबका मार्गदर्शन करने वाले जगदीश्वर! चूँकि तू प्रत्येक जीवधारी को धारण करने और उसके शुभाशुभ कर्मों को देखने के लिये इस ब्रह्माण्ड के अन्दर और बाहर सर्वत्र विस्तार को प्राप्त होकर उसका माता की तरह पालन–पोषण कर रहा है, और चूँकि तू प्रत्येक प्राणी को धारण करता हुआ उसे प्रौढ़ता, परिपक्वता, जरा और मृत्यु की ओर ले जा रहा है, इसलिये यह स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती, कि तू नानारूप होकर सर्वत्र व्याप्त हो रहा है। तूने सब पदार्थों में उन्हीं के रूपों को धारण कर लिया है।

टि. *चूँकि पालता–पोसता है तू* – **यद् भरसे**। यदा बिभर्षि – वे.। यद् यस् त्वं भरसे बिभर्षि – सा.। when thou cherishest - W. when to nourish - G.

*विस्तृत होता हुआ* – **पप्रथानः**। प्रथमानः – वे.। predominating - W. spreading forth - G.

*धारण करने के लिये, देखने के लिये* – **धायसे चक्षसे**। धारणाय जीवनाय च – वे.। धारणाय दर्शनाय च सर्वैः प्रार्थ्यसे – सा.। to behold and to support them - W. to cherish and regard (each man that liveth) - G. for firm foundation, for vision - Ar. for sustenance and for vision - Fra.

*प्रत्येक जीव को जीर्ण बनाता है तू* – **वयःऽवयः जरसे**। नानाजातीयम् अन्नं हविर्लक्षणं जरयसि – वे.। सर्वम् अन्नं जरयसि – सा.। कमनीयं जीवनं जीवनं स्तौषि – दया.। thou maturest every kind of food - W. consuming all the strength that thou hast gotten - G. when assuming all life-energies you sing - Fra.

*नानारूप (होकर) गमन करता है तू* – **विषुरूपः जिगासि**। नानारूपः सन् गच्छसि राक्षसान् हन्तुम् – वे.। नानारूपः सन् सर्वभूतानि परिगच्छसि – सा.। प्राप्तविद्यः प्रशंससि – दया.। multiform (Agni) thou comprisest (all beings) - W. wanderest round in varied fashion - G. thou encompassest all things - Ar. in diverse forms you revolve - Fra.

**वाजो नु ते शवसस् पात्वन्तम् उरुं दोघं धरुणं देव रायः।**
**पदं न तायुर् गुहा दधानो महो राये चितयन्नत्रिम् अस्पः।। ५।। ७।।**

वाजः। नु। ते। शवसः। पातु। अन्तम्। उरुम्। दोघम्। धरुणम्। देव। रायः।
पदम्। न। तायुः। गुहा। दधानः। महः। राये। चितयन्। अत्रिम्। अस्पर् इत्यस्पः।। ५।।

*बल निश्चय से तेरे वेग का, पालन करे,*
*पूर्ण का, विस्तृत का, कामदोग्धा का, धारक का, हे देव!, धन के।*
*(चुराए) द्रव्य को जिस प्रकार चोर, गुप्त स्थान में स्थापित करता हुआ,*
*महान् धन के लिये चेताता हुआ, त्रितापरहित को पार कर तू।। ५।।*

हे प्रकाशमान अग्रणी परमेश्वर! तेरा बल लबालब भरे हुए, विस्तार से युक्त, कामनाओं का दोहन करने वाले, धनों को धारण करने वाले तेरे वेग की निश्चय से सदा रक्षा करता रहे। जिस प्रकार चोर द्रव्य को चुराकर उसे किसी गुप्त स्थान में रखकर उसकी भली प्रकार रक्षा करता है, उसी प्रकार तू भी अपने उपासक को सुरक्षित स्थान में रखकर उसका पालन करता हुआ, उसे महान् आत्मिक

धन को पाने के लिये जागरूक बनाता हुआ, तीनों प्रकार के तापों से मुक्त करके इस संसारसागर से पार कर दे।

टि. *बल निश्चय से तेरे वेग का* - **वाजः नु ते शवसः**। वाजः हविर्लक्षणम् अन्नं तव शवसः बलस्य - वे.। सा.। वेगः सद्यः ते बलस्य - दया.। May strength preserve the compass of thy vigour - G. May thy plenitude (guard the last limit) of thy force - Ar. Let wakeful vigour (guard) the compass of your strength - Fra.

*पूर्ण का* - **अन्तम्**। समाप्तिं संपूर्तिम् - सा.। the last limit - Ar.

*कामदोग्धा का* - **दोघम्**। कामानां दोहम् - वे.। दोघं कामानां दोग्धारम् - सा.। प्रपूरकम् - दया.। stream - G.

*(चुराए) द्रव्य को जिस प्रकार चोर गुप्त स्थान में स्थापित करता हुआ* - **पदम् न तायुः गुहा दधानः**। यथा स्तेनो गुहायां पदं निधत्ते एवम् अत्रिम् ऋषिम् असुरैः जिघांसितं तद्दुःखेनैव गुहायां निधाय - वे.। तस्करो यथा गुहायां द्रव्यं धारयन् रक्षति तद्वत् - सा.। पादचिह्नम् इव चोरः बुद्धौ दधानः - दया.।

*महान् धन के लिये चेताता हुआ* - **महः राये चितयन्**। महते धनाय चेतयन्। महश्शब्दः सकारान्तो ऽप्यस्ति। ततः चतुर्थ्याः लुक्। वे.। महो महते राये धनाय धनलाभार्थं चितयन् सन्मार्गं प्रकाशयन् - सा.। महते धनाय ज्ञापयन् - दया.। to great wealth by teaching - G. awakening him to the consciousness of the great riches - Ar. awakening to great splendour - Fra.

*त्रितापरहित को पार कर तू* - **अत्रिम् अस्पः**। स्पृणोतिः पारकर्मा। वे.। अत्रिम् ऋषिम् अप्रीणयः। स्पृ प्रीणनपारणयोर् इति धातुः। सा.। अत्रिं पालकम् अस्पः प्रीणय - दया.। be propitious to Atri - W. hast holpen Atri - G. thou hast rescued Atri - Ar. Fra.

## सूक्त १६

ऋषिः - पूरुर् आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-४ अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**बृहद् वयो हि भानवे ऽर्चा देवायाग्नये।**
**यं मित्रं न प्रशस्तिभिर् मर्तासो दधिरे पुरः।। १।।**

बृहत्। वयः। हि। भानवे। अर्च। देवाय। अग्नये।
यम्। मित्रम्। न। प्रशस्तिऽभिः। मर्तासः। दधिरे। पुरः।। १।।

*महान् आयु को ही, ज्योतिष्मान् के लिये,*
*समर्पित कर दे तू, दिव्यगुण अग्नि के लिये।*
*जिसको मित्र की तरह, स्तुतियों के द्वारा,*
*मरणधर्मा (उपासक), रखते हैं सम्मुख।। १।।*

हे उपासक! तू ज्योतिर्मय, दान दिव्यता आदि गुणों से युक्त, सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर के लिये अपने इस महान्, बहुमूल्य जीवन को ही समर्पित कर दे - उस प्रभु के लिये

जिसको मरणधर्मा उपासक जन उसकी स्तुतियां करते हुए अभिन्नहृदय मित्र की तरह अपना पुरोहित, नायक और नेता स्वीकार करते हैं।

टि. *महान् आयु को ही* – **बृहत् वयः हि।** महत् अन्नम् – वे.। बृहद् वयो हविरूपम् अन्नं हि – सा.। abundant (sacrificial) food - W. great power - G. a wide expansion - Ar.

*ज्योतिष्मान् के लिये* – **भानवे।** दीप्ताय – वे.। दीप्तिमते – सा.। प्रकाशाय – दया.। to the brilliant - W. for the light - Ar.

*समर्पित कर दे* – **अर्च।** प्रयच्छ – वे.। सा.। पूजय। द्व्यचो ऽतस् तिङ इति दीर्घः। दया.। offer - W. sing praise - G. create - Ar.

*मित्र की तरह* – **मित्रं न।** सखायम् इव – वे.। सा.। दया.। as a friend - W. like Mitra or as a friend - G. as Mitra the friend - Ar.

*रखते हैं सम्मुख* – **दधिरे पुरः।** आहवनीये धारयन्ति – वे.। पुरस्कुर्वन्ति – सा.। दधति पुरस्तात् – दया.। have placed before them - W. Ar. have set in foremost place - G.

**स हि द्युभिर् जनानां होता दक्षस्य बाह्वोः।**
**वि हव्यम् अग्निर् आनुषग् भगो न वारम् ऋण्वति।। २।।**

सः। हि। द्युऽभिः। जनानाम्। होता। दक्षस्य। बाह्वोः।
वि। हव्यम्। अग्निः। आनुषक्। भगः। न। वारम्। ऋण्वति।। २।।

*वह निश्चय से तेजों से युक्त, मनुष्यों का,*
*आह्वाता है, कार्यकुशल की भुजाओं में (बल का दाता)।*
*विविध प्रकार से, हव्य को, अग्नि निरन्तर,*
*विभक्ता की तरह, वरणीय को, प्रदान करता है।। २।।*

सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाला वह परमेश्वर निश्चय से तेजों से युक्त है। वह सन्मार्ग पर चलने के लिये सब मनुष्यों का आह्वान करता है। कार्यों को साधने में दाक्षिण्य से युक्त किसी भी मनुष्य की भुजाओं में उत्तम बल और वाञ्छित साहस वही प्रदान करता है। वह अग्रनायक ही अपनी दिव्य शक्तियों को विविध प्रकार से निरन्तर हव्य पहुँचाकर उन्हें पुष्ट करता है, और विभक्ता के रूप में वही प्रभु मनुष्यों को उनके वरणीय पदार्थ प्रदान करता है।

टि. *तेजों से युक्त* – **द्युभिः।** दीप्तैः तेजोभिः – वे.। द्युतिभिर् युक्तः – सा.। (endowed) with the lustre - W. by the splendour (of his arms) - G. by his illuminations - Ar.

*कार्यकुशल की भुजाओं में* – **दक्षस्य बाह्वोः।** (जनानां मध्ये) बाह्वोः दक्षस्य समर्थस्य कर्मपरस्य यजमानस्य – वे.। बाह्वोर् भुजयोर् दक्षस्य बलस्य – सा.। दया.। of the strength of his arms - W. in his two arms of understanding - Ar.

*विभक्ता की तरह* – **भगः न।** यथा भगः भाग्यं मनुष्येष्विति – वे.। सूर्य इव – सा.। दया.। like Bhaga - W. G. as Bhaga, the enjoyer - Ar.

*विविध प्रकार से प्रदान करता है* – **वि ऋण्वति।** प्रक्षिपति – वे.। व्यृण्वति विशेषेण प्रयच्छति

– सा.। साध्नोति – दया.। distributes - W. deal; - G. reaches - Ar.

**अस्य स्तोमे मघोनः सख्ये वृद्धशोचिषः।**
**विश्वा यस्मिन् तुविष्वणि समर्ये शुष्मम् आदधुः।। ३।।**

अस्य। स्तोमे। मघोनः। सख्ये। वृद्धऽशोचिषः।
विश्वा। यस्मिन्। तुविऽस्वनि। सम्। अर्ये। शुष्मम्। आऽदधुः।। ३।।

*इसकी स्तुति में, पवित्रधनदाता की,*
*मित्रता में (होवें हम), बढ़े तेजों वाले की।*
*सब प्राणी जिसमें, बलवती वाणी वाले में,*
*सम्यक् स्वामी में, बल को धारण करते हैं।। ३।।*

सबको सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला यह परमेश्वर पवित्र धनों को देने वाला है। यह सबसे अधिक बढ़े हुए तेजों वाला है। हम सभी मनुष्य इसकी स्तुति करने वाले बनें और इसकी आज्ञाओं का पालन करने से इसकी मित्रता को प्राप्त करें। यह वह बलवान् आदेशों और उपदेशों वाला स्वामी है, जिसमें सब बल को धारण करते हैं, जिसके बल से ही सब बलवान् होते हैं।

टि. *बढ़े तेजों वाले की* – **वृद्धशोचिषः।** प्रवृद्धतेजसः – वे.। वृद्धानि शोचींषि तेजांसि यस्यासौ – सा.। वृद्धा शोचिर् दीप्तिर् यस्य सः – दया.। upon the high-flaming God - G.

*सब प्राणी* – **विश्वा।** सर्वाणि भूतानि पञ्चजनाः अपि – वे.। सुपां सुलुग् इति डादेशः। विश्वे सर्वे ऋत्विजः। सा.। सर्वाणि – दया.।

*बलवती वाणी वाले में* – **तुविष्वणि।** महास्वने युद्धे सञ्जाते सति – वे.। बहुशब्दे – सा.। बलसेवने – दया.। all-sounding - W. loud-roaring - G. in this Fire of many voices - Ar.

*स्वामी में* – **अर्ये।** स्वामिनि – वे.। सा.। दया.। on all-ruling - W. in the Noble One - Ar.

*बल को धारण करते हैं* – **शुष्मम् आदधुः।** शत्रुविजयार्थं हविर्भिः बलम् आदधुः – वे.। बलं हविर्भिः स्तोत्रैश् चादधति – सा.। बलं धरन्तु – दया.। have conferred vigour - W. men have founded their strength - G.

**अधा ह्यग्न एषां सुवीर्यस्य मंहना।**
**तम् इद् यह्वं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः।। ४।।**

अध। हि। अग्ने। एषाम्। सुऽवीर्यस्य। मंहना।
तम्। इत्। यह्वम्। न। रोदसी इति। परि। श्रवः। बभूवतुः।। ४।।

*और निश्चय से, हे अग्ने!, इन (हम उपासकों) को,*
*उत्तम बल को प्रदान करने के लिये (हो जा तू)।*
*उसकी (तेरी) ही, महान् सूर्य की तरह, द्युलोक-भूलोक,*
*सब ओर प्रसिद्धि को फैला रहे हैं।। ४।।*

हे मनुष्यों को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! तू अवश्य ही हम उपासकों को उत्तम बल और शोभन सन्तानें प्रदान कर। उस महान् सूर्य की तरह ये द्युलोक और भूलोक भी अर्थात् इनमें

निवास करने वाले देवता और मनुष्य भी तेरे यश और कीर्ति को सर्वत्र फैला रहे हैं।

टि. *इन (हम उपासकों) को* - **एषाम्।** एषां भूतानां मध्ये - वे.। अस्माकं यजमानानाम् - सा.। एषां वीराणाम् - दया.।

*उत्तम बल को प्रदान करने के लिये (हो जा तू)* - **सुवीर्यस्य मंहना।** सुवीर्यस्य तव महत्त्वेन - वे.। सर्वैः स्पृहणीयस्य बलस्य मंहना मंहनायै दानाय भव - सा.। सुष्ठुपराक्रमस्य मंहना महत्त्वेन - दया.। with liberal gift of hero strength - G. a plenitude of heroic strength - Ar.

*महान् सूर्य की तरह* - **यह्वम् न।** महान्तम् न - वे.। महान्तं सूर्यम् इव - सा.। दया.। like the vast (sun) - W.

*सब ओर प्रसिद्धि को फैला रहे हैं* - **परि श्रवः बभूवतुः।** स शत्रूणां यशश् च परिभवति - वे.। श्रवः सर्वैः श्रवणीयम् अग्निम् एव परिगृह्णीतः - सा.। सर्वतः अन्नं भवतः - दया.। have (not) surpassed in glorious fame - G. have become an inspired knowledge - Ar.

**नू न एहि वार्यम् अग्ने गृणान आ भर।**
**ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचो-**
**तैधि पृत्सु नो वृधे।। ५।। ८।।**

नु। नः। आ। इहि। वार्यम् अग्ने। गृणानः। आ। भर।
ये। वयम्। ये। च। सूरयः। स्वस्ति। धामहे। सचा। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे।। ५।।

*अब हमारे पास आ जा तू, वरणीय (धन) को,*
*हे अग्ने!, स्तुति किया जाता हुआ, इधर ले आ तू।*
*जो हम हैं, और जो (हमारे) मेधावी उपासक हैं,*
*कल्याण को स्थापित करें हम सब मिलकर,*
*और हो जा तू संघर्षों में, हमारी वृद्धि के लिये।। ५।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! तू आकर हमारे हृदयों में वास कर। हम सदा तेरी स्तुतियां करते रहें। जो वरण के योग्य लौकिक और अलौकिक धन हैं, तू उन्हें सदा हमें प्रदान करता रह। जो हम हैं तथा जो तेरी उपासना करने वाले हमारे पुत्र-पौत्र, सगे-सम्बन्धी और मित्र-गण हैं, वे सदा मिलकर स्वहित और विश्वकल्याण के कार्य करते रहें। हे प्रभो! तू हमारे जीवन में चलने वाले संघर्षों में सदा हमारी वृद्धि और रक्षा करने वाला बन।

टि. *और जो मेधावी उपासक हैं* - **ये च सूरयः।** ये च अस्मदीयाः स्तोतारः - वे.। सा.। we (who are thine) adorers - W. and these our princes - G. and the illumined seers - Ar.

*कल्याण को स्थापित करें हम सब मिलकर* - **स्वस्ति धामहे सचा।** स्वस्ति सह त्वां धारयामः - वे.। सचा हविर्भिर् सहिता स्वस्ति स्तोत्रं धामहे कुर्मः - सा.। offer thee welcome together with oblations - W. will assemble for the good of all - G. let us together found our blissful state - Ar.

*संघर्षों में* - **पृत्सु।** युद्धेषु - वे.। पृतनासु - सा.। संग्रामेषु - दया.। in battles - W. G. Ar.

## सूक्त १७

ऋषिः - पूरुर् आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-४ अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**आ य॒ज्ञैर् दे॑व॒ मर्त्य॑ इ॒त्था तव्यां॑सम् ऊ॒तये॑।**
**अ॒ग्निं कृ॒ते स्व॑ध्व॒रे पू॒रुर् ई॑ळी॒ताव॑से।। १।।**

आ। य॒ज्ञैः। दे॒व॒। मर्त्यः॑। इ॒त्था। तव्यां॑सम्। ऊ॒तये॑।
अ॒ग्निम्। कृ॒ते। सु॒ऽअ॒ध्व॒रे। पू॒रुः। ई॒ळी॒त॒। अव॑से।। १।।

*आह्वान करता है यज्ञों के द्वारा, हे देव!, मरणधर्मा उपासक,*
*इस प्रकार अतिशय बढ़े हुए की, समृद्धि के लिये (अपनी)।*
*अग्नि की, सम्पादित किये हुए शोभन हिंसारहित यज्ञ में,*
*मनुष्य कर्तव्यों का पालक, स्तुति करे वृद्धि के लिये।। २।।*

हे दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त अग्रनायक परमेश्वर! तू तेज, ओज, बल आदि में सबसे बहुत आगे बढ़ा हुआ है। तेरा उपासक मरणधर्मा मनुष्य तेरी प्रीति तथा अपनी समृद्धि, रक्षा आदि के लिये यज्ञ आदि शुभ कर्मों के द्वारा सदा इसी प्रकार तेरा आह्वान करता है। अपने कर्तव्यों का पालन करने वाले उस मनुष्य को चाहिये, कि वह अपनी रक्षा, प्रसन्नता, समृद्धि आदि के लिये सम्पन्न किये जाने वाले यज्ञ आदि परहित कर्मों में सदा तुझ अग्रणी परमेश्वर की स्तुति करता रहे।

टि. *आह्वान करता है* - आ। आ ह्वयति। योग्यक्रियाध्याहारः।। आभिमुख्येन - वे.। आ ह्वयति। सा.। may call hither - G.

*अतिशय बढ़े हुए की* - तव्यांसम्। प्रवृद्धम् - वे.। स्वतेजोभिः प्रवृद्धम् - सा.। अतिशयेन वृद्धम् - दया.। who art endowed with lustre - W. the strong - G.

*समृद्धि के लिये* - ऊतये। रक्षणाय - वे.। तर्पणाय - सा.। रक्षणाद्याय - दया.। to aid - G.

*सम्पादित किये हुए में* - कृते। हविषि - वे.। कृते - सा.। when (the sacred rite) is solemnized - W. when (sacrifice) is well prepared - G. well-done - Ar.

*मनुष्य कर्तव्यों का पालक* - पूरुः। पूरुः नामा ऽयम् ऋषिः - वे.। मनुष्यः स्तोता - सा.। मननशीलो मनुष्यः - दया.। Pūru - W. a man - G. Ar.

*स्तुति करे* - ईळीत। स्तौति - वे.। सा.। दया.। adores - W. may call - G. must pray - Ar.

**अस्य॒ हि स्वय॑शस्तर आ॒सा वि॑धर्म॒न् मन्य॑से।**
**तं नाकं॑ चि॒त्रशो॑चिषं म॒न्द्रं प॒रो म॑नी॒षया॑।। २।।**

अस्य॑। हि। स्वय॑शःऽतरः। आ॒सा। वि॒ऽध॒र्म॒न्। मन्य॑से।
तम्। नाक॑म्। चि॒त्रऽशो॑चिषम्। म॒न्द्रम्। प॒रः। म॒नी॒षया॑।। २।।

*इसके ही, आत्मयश वालों में अत्यन्त यशस्वी,*
*सांनिध्य में, हे विशिष्ट धर्मों वाले, स्तुति करता है तू।*
*उसकी दुःखों से रहित की, अद्भुत तेजों वाले की,*
*आनन्दित करने वाले की, परे (है जो) बुद्धि से।। २।।*

हे विशिष्ट कर्तव्यों का पालन करने वाले उपासक! इस अग्रणी परमेश्वर के सांनिध्य में अपनी कीर्ति को अर्जित करने वालों में अत्यन्त यशस्वी तू उस प्रभु का स्तुतिगान करता है, जो दुःख से रहित है, जो अद्भुत तेजों वाला है, जो भक्तों को आनन्द देने वाला है, और जो मनुष्य की बुद्धि और चिन्तन से परे है।

टि. *आत्मयश वालों में अत्यन्त यशस्वी* - स्वयशस्तरः। स्वभूतकीर्तिमत्तरः - वे.। त्वं सुयशसां मध्ये ऽतिशयेन सुयशाः - सा.। अतिशयेन स्वकीयं यशो यस्य सः - दया.। who art deservedly renowned - W. thou seemest mightier still in native glory - G. becomest greater in his self-glory - Ar.

हे *विशिष्ट धर्मों वाले* - विधर्मन्। हे विविधकर्मन् - वे.। विशिष्टो धर्मो यस्यासौ विधर्मा स्तोता। तस्य सम्बोधनम्। हे स्तोतः। सा.। विशेषधर्मानुचारिन् - दया.। performer of various functions - W. set to hold - G. in his complete law - Ar.

*दुःखों से रहित की* - नाकम्। अविद्यमानदुःखम् - वे.। दया.। नाकं सुखम्। अकं दुःखम्। न विद्यते ऽकं यस्य सः। सा.। vault of heaven - G. heaven - Ar.

*अद्भुत तेजों वाले की* - चित्रशोचिषम्। चित्रतेजसम् - वे.। सा.। अद्भुतप्रकाशम् - दया.। flame-hued - G. manifoldly brilliant - Ar.

*आनन्दित करने वाले की* - मन्द्रम्। मोदनम् - वे.। स्तुत्यम् - सा.। आनन्दप्रदम् - दया.। adorable - W. lovely - G. rapturous - Ar.

*परे है जो बुद्धि से* - परः मनीषया। स्तुत्या त्वं परः भवसि। परः पारणात्। वे.। मनीषया प्रकृष्टबुद्ध्या साधनेन। परः परस्तात् स्थितम्। सा.। परः प्रज्ञया - दया.। supreme in understanding - W. beyond the thought of man - G. beyond the thinking mind - Ar.

**अ॒स्य वासा उ॑ अ॒र्चिषा॒ य आयु॑क्त तु॒जा गि॒रा।**
**दि॒वो न यस्य॒ रेत॑सा बृ॒हच्छोच॑न्त्य॒र्चयः॑।। ३।।**

अ॒स्य। वै। अ॒सौ। ॐ इति॑। अ॒र्चिषा॑। यः। अयु॑क्त। तु॒जा। गि॒रा।
दि॒वः। न। यस्य॑। रेत॑सा। बृ॒हत्। शोच॑न्ति। अ॒र्चयः॑।। ३।।

*इसके निश्चय से वह तेज से,*
*जो युक्त होता है, बल से, वाणी से।*
*सूर्य के जिस प्रकार, जिसके तेज से,*
*अत्यन्त दीप्त होती हैं रश्मियां।। ३।।*

निश्चय से यह जो मनुष्य है, वह इस अग्रनायक परमेश्वर के तेजों से ही बल से युक्त होता है और वाणी का स्वामी बनता है। जैसे सूर्य के प्रकाश से सब ओर प्रकाश फैल जाता है, उसी प्रकार उस परमेश्वर के तेज से सूर्य, विद्युत्, अग्नि आदि प्रकाशपुञ्ज अत्यन्त प्रकाशित होते हैं।

टि. *जो युक्त होता है बल से वाणी से* - यः अयुक्त तुजा गिरा। यः (अयम्) अग्निः देवान् हविषो दानेन स्तुत्या च संयुनक्ति - वे.। यो ऽग्निस् तुजा जगद्रक्षणसमर्थेन बलेन गिरा स्तुत्यायुक्त

सम्बद्धो भवति - सा.। यः आयुक्त युक्तो भवति। तुजा प्रेरय। अत्र द्व्यचो ऽतस् तिङ इति दीर्घः। गिरा वाण्या। दया.। He who is endowed with vigour, is (glorified) by praise - W. whom powerful song hath bound to act - G. who has become possessed of the force and the word - Ar.

*सूर्य के जिस प्रकार* - **दिवः न**। आदित्यस्य इव - वे.। द्योतमानस्यादित्यस्येव - सा.। कमनीयार्थस्य इव - दया.। like that of the sky - W. of heaven - Ar.

*तेज से* - **रेतसा**। शरीरात् निर्गच्छता रेतसा - वे.। प्रभया - सा.। वीर्येण - दया.। by whose radiance - W. by the seed - Ar.

*अत्यन्त दीप्त होती हैं रश्मियां* - **बृहत् शोचन्ति अर्चयः**। अत्यन्तं दीप्यन्ते अर्चयः - वे.। अर्चयः सत्कृतयः - दया.। the rays of light shine brightly - W. blaze into a vast light - Ar.

**अस्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य वसु रथ आ।**
**अधा विश्वासु हव्यो ऽग्निर् विक्षु प्र शंस्यते।। ४।।**

अस्य। क्रत्वा। विऽचेतसः। दस्मस्य। वसु। रथे। आ।
अध। विश्वासु। हव्यः। अग्निः। विक्षु। प्र। शस्यते।। ४।।

*इसके प्रज्ञान से, विशेष ज्ञानों वाले के,*
*दुःखविनाशक के, धन रथ में आ जाता है।*
*तत्पश्चात् सब में, आह्वान के योग्य,*
*अग्नि, प्रजाओं में, प्रशंसित होता है।। ४।।*

विशेष प्रज्ञाओं वाले, दुःखों का विनाश करने वाले इस अग्रणी परमेश्वर के द्वारा प्रदत्त उत्तम ज्ञान से सब प्रकार के अभीष्ट पदार्थ अथवा शक्तियां उपासक के रथ में अथवा शरीररूपी रथ में आ जाती हैं, अर्थात् उसे प्राप्त हो जाती हैं। जब प्रभु की इस प्रकार कृपादृष्टि होती है, तो उपासकों के द्वारा आह्वान के योग्य उस परमेश्वर की प्रजाओं में सर्वत्र प्रशंसा और स्तुति होने लगती है।

टि. *प्रज्ञान से* - **क्रत्वा**। प्रज्ञानेन - वे.। कर्मणा यज्ञादिना - सा.। प्रज्ञया - दया.। by the worship of him - W. by the will - Ar.

*विशेष ज्ञानों वाले के* - **विचेतसः**। विशिष्टबुद्धेः - वे.। सुमतय ऋत्विजः - सा.। विज्ञापकस्य - दया.।. wonder-worker's (car) - G.of completely conscious - Ar.

*दुःखविनाशक के* - **दस्मस्य**। दर्शनीयस्य - वे.। सा.। दुःखापक्षयितुः - दया.।

*आ जाता है* - **आ**। आगच्छति - वे.। आ दधति - सा.। loads - G. are there - Ar.

*आह्वान के योग्य* - **हव्यः**। हवनार्हः - वे.। हव्यो यज्ञार्थम् आह्वातव्यः - सा.। आदातुम् अर्हः - दया.। to whom oblations are due - W. meet to be invoked - G. to be called - Ar.

**नू न इद् धि वार्यम् आसा संचन्त सूरयः।**
**ऊर्जो नपाद् अभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तये**
**उतैधि पृत्सु नो वृधे।। ५।। ९।।**

नु। नः। इत्। हि। वार्यम्। आसा। सचन्त। सूरयः।
ऊर्जः। नपात्। अभिष्टये। पाहि। शग्धि। स्वस्तये। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे।। ५।।

*शीघ्र हमारे, निश्चय से, वरणीय को (प्रदान कर तू),*
*मुख से (स्तुति के द्वारा जिसे), प्राप्त करते हैं स्तोता।*
*हे पराक्रम से पतित न होने वाले!, अभिलषित की प्राप्तिहेतु,*
*पालन कर हमारा, शक्त हो तू कल्याण के लिये (हमारे),*
*और हो जा तू संघर्षों में, हमारी वृद्धि के लिये (सदा ही)।। ५।।*

हे कभी पराक्रम से च्युत न होने वाले अग्रणी परमेश्वर! जगत् में जो-जो वरण के योग्य पदार्थ हैं और जिन्हें स्तोता लोग अपनी स्तुतियों से प्राप्त करते हैं, तू उन सबको हमें प्राप्त कराइये। कमनीय पदार्थों की प्राप्ति के लिये तू सदा हमारा पालन और हमारी रक्षा कर। तू हमारे कल्याण के लिये सदा समर्थ बना रह। तू जीवन में आने वाले संघर्षों में सदा हमारी वृद्धि करता रह।

टि. *वरणीय को (प्रदान कर तू)* - **वार्यम्**। वरणीयं धनम् - वे.। वार्यं वरणीयं धनं यच्छ - सा.। वरेषु पदार्थेषु भवम् - दया.। (give us) desirable (wealth) - W.

*मुख से* - **आसा**। आस्येन स्तोत्रेण - वे.। सा.। उपवेशनेन - दया.। by our lips - G. by the mouth of Fire - Ar.

*प्राप्त करते हैं स्तोता* - **सचन्त सूरयः**। अस्माकं स्तोतारः सेवन्ते - वे.। स्तोतारः त्वत्तः सकाशाद् धनं लभन्ते - सा.। सम्बध्नन्ति विद्वांसः - दया.। the devout obtain - W.

*हे पराक्रम से पतित न होने वाले* - **ऊर्जः नपात्**। हे अन्नस्य पौत्र - वे.। अन्नस्य न पातयितर् बलस्य पुत्र वा - सा.। पराक्रमाद् यो न पतति - दया.। son of strength - W. O thou Son of Strength - G. Ar.

*शक्त हो तू* - **शग्धि**। शक्तश् च भव - वे.। त्वां याचे। व्यत्ययेन मध्यमा। शक्तो भवेति वा। सा.। समर्थो भव - दया.। be alert - W. lend thy succour - G.

## सूक्त १८

ऋषिः - द्वित आत्रेयः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-४ अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**प्रातर् अग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः।**
**विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति।। १।।**

प्रातः। अग्निः। पुरुऽप्रियः। विशः। स्तवेत। अतिथिः।
विश्वानि। यः। अमर्त्यः। हव्या। मर्तेषु। रण्यति।। १।।

*प्रातःकाल में अग्नि, बहुतों का प्रिय,*
*प्रजाओं में स्तुति किया जाता है, अतिथि।*
*सबका, जो न मरने के धर्म वाला,*
*हव्यों का, मरणधर्माओं में आस्वादन करता है।। १।।*

सबको सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला वह परमेश्वर सब को प्रिय है। वह घरों में आने वाले अतिथि के समान पूज्य है। वह ब्राह्ममुहूर्त्त में ही सब घरों और सब प्रजाओं में स्तुति किया जाता है। मरणधर्मा मनुष्यों के द्वारा जो हव्य, नैवेद्य, समर्पण आदि उसे समर्पित किये जाते हैं, वह अजर-अमर जगदीश्वर उन सब को स्वीकार करके उनका आनन्द प्राप्त करता है।

टि. *प्रजाओं में* - **विशः**। विशन्त्येषु इति विशो गृहाः। तात्स्थ्यात् गृहाः गृहस्थाः प्रजाः। तासु। विभक्तिव्यत्ययः।। यजमानस्य - वे.। यजमानो धनस्य निवेशकः - सा.। प्रजाः - दया.। (the guest) of man - W. Ar. (the guest) of the house - G.

*स्तुति किया जाता है* - **स्तवेत**। स्तूयते - वे.। सा.। प्रशंसेत् - दया.। be present - W. be glorified - G. let receive the laud - Ar.

*अतिथि* - **अतिथिः**। अतिथिः भवन् - वे.। यजमानानां गृहान् प्रति तिथिष्वभ्येतीत्यतिथिः। तथाह यास्कः। अतिथिर् अभ्यतितो गृहान् भवत्यभ्येति तिथिषु परकुलानीति वा परगृहाणीति वा (नि. ४.५) इति। सा.। पूजनीय आप्तो विद्वान् - दया.।

*हव्यों का आस्वादन करता है* - **हव्या रण्यति**। हवींषि (देवेभ्यो) रमयति - वे.। हवींषि कामयते - सा.। दातुम् अर्हाणि रमते - दया.। desires the oblations - W. delights in all oblations - G. takes joy in all their offerings - Ar.

**द्विताय॑ मृ॒क्तवा॑हसे॒ स्वस्य॑ दक्ष॑स्य मं॒हना॑।**
**इन्दुं॑ स ध॑त्त आनु॒षक् स्तो॒ता चि॑त् ते अमर्त्य।। २।।**

द्विता॑य। मृ॒क्तऽवा॑हसे। स्वस्य॑। दक्ष॑स्य। मं॒हना॑।
इन्दु॑म्। सः। ध॒त्ते॒। आ॒नु॒षक्। स्तो॒ता। चि॒त्। ते॒। अ॒म॒र्त्य॒।। २।।

*दोहरे ज्ञान वाले को, शुद्धहव्यवाहक को,*
*अपने बल की उपदाओं को (प्रदान कर तू)।*
*सोम को वह धारण करता है, निरन्तर,*
*स्तोता भी तेरा, हे अमरणधर्मा।। २।।*

हे सबको सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! जो तेरा उपासक लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के ज्ञानों को धारण करता है, और जो तुझे शुद्ध पवित्र हव्य समर्पित करता है, तू उसे अपने बल से प्राप्त होने वाली सब उपदाएं, सब उपहार प्रदान कर। और हे अमरणधर्मा प्रभो! वह मनुष्य भी, जो हमेशा तेरी स्तुति करता है, निरन्तर तेरे आनन्दरूपी सोम को प्राप्त करता है।

टि. *दोहरे ज्ञान वाले को* - **द्विताय**। द्वित इत चास्य नाम तस्मै मह्यम् - वे.। द्विताय द्वितपुत्राय - सा.। द्वाभ्यां जन्मभ्यां विद्यां प्राप्ताय - दया.। to Dvita - W. G. for the twofold power - Ar.

*शुद्धहव्यवाहक को* - **मृक्तवाहसे**। यजमानाय - वे.। मृक्तं शुद्धं हविर् देवेभ्यो वहति प्रापयतीति मृक्तवाहाः, तस्मै - सा.। शुद्धविज्ञानप्रापकाय - दया.। to the bearer of pure oblations - W. who receives maimed offerings - G. that carries the purified offering - Ar.

*अपने बल की उपदाओं को* - **स्वस्य दक्षस्य मंहना**। स्वस्य दक्षस्य महत्त्वेन - वे.। आत्मीयस्य

बलस्य धनस्य वा मंहनायै दानाय भव - सा.। मंहना महत्त्वेन - दया.। Be ( willing to make) a grant of thine own strength - W. through wealth of native strength - G. the plenitude of his own understanding - Ar.

*सोम को वह धारण करता है* - इन्दुम् सः धत्ते। सोमं प्रयच्छति स्तोता सन् - वे.। स मृक्तवाहाः सोमं धारयति - सा.। इन्दुम् ऐश्वर्यम् - दया.। brings to thee the Soma juice - W. the praiser gains Soma drops - G. he holds the moon-wine - Ar.

**तं वो दीर्घायुशोचिषं गिरा हुवे मघोनाम्।**
**अरिष्टो येषां रथो व्यश्वदावन्नीयते।। ३।।**

तम्। वः। दीर्घायुऽशोचिषम्। गिरा। हुवे। मघोनाम्।
अरिष्टः। येषाम्। रथः। वि। अश्वऽदावन्। ईयते।। ३।।

*उस तुझको, दीर्घ आयु को प्रकाशित करने वाले को,*
*स्तुति के द्वारा बुलाता हूँ मैं, दानशीलों के निमित्त।*
*हिंसित न किया जा सकने वाला, जिनका रथ,*
*विविध प्रकार से, हे अश्वदाता!, गमन करता है।। ३।।*

हे अश्व के से शारीरिक बल को प्रदान करने वाले परमेश्वर! मैं तेरा उपासक दीर्घ आयु प्रदान करके उसे सुख और ज्ञान के प्रकाश से भर देने वाले उस तुझको, अपने पवित्र धनों को दूसरों को देने वाले उन दानी पुरुषों के निमित्त, अपनी स्तुति के द्वारा बुलाता हूँ, जिनका जीवन की यात्रा का रथ तेरी कृपा से बिना किसी प्रकार की विघ्नबाधा के विविध प्रकार से गमन करता है।

टि. *उस तुझको* - तम् वः। तं युष्मदर्थम् - वे.। पूजायां बहुवचनम्। त्वाम्। सा.। वः युष्माकम् - दया.। thee - W. that car of yours - G. (I call) him for you - Ar.

*दीर्घ आयु को प्रकाशित करने वाले को* - दीर्घायुशोचिषम्। दीर्घगमनयुक्ततेजसम् - वे.। दीर्घगमनदीप्तिम् - सा.। दीर्घम् आयुः शोचिः पवित्रकरं यस्य तम् - दया.। bright-shining through a long life - W. (that car) that shines with lengthened life - G. who is the light of long-extended life - Ar.

*दानशीलों के निमित्त* - मघोनाम्। हविष्मताम् अर्थाय - वे.। धनिनां कृते -सा.।

*हे अश्वदाता* - अश्वदावन्। हे अश्वान् दातः - वे.। अश्वानां दातः - सा.। यो ऽश्वान् व्याप्तिकरान् विज्ञानादिगुणान् ददाति तत्सम्बुद्धौ - दया.। God who givest steeds - G. Ar.

*विविध प्रकार से गमन करता है* - वि ईयते। संग्रामे विविधं गच्छति - वे.। वीयते विगच्छतु - सा.। hither and thither goes - G. goes abroad - Ar.

**चित्रा वा येषु दीधितिर् आसन्नुक्था पान्ति ये।**
**स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे श्रवांसि दधिरे परि।। ४।।**

चित्रा। वा। येषु। दीधितिः। आसन्। उक्था। पान्ति। ये।
स्तीर्णम्। बर्हिः। स्वःऽनरे। श्रवांसि। दधिरे। परि।। ४।।

*और अद्भुत है जिनमें विचारशक्ति,*
*मुख में स्तुतियों को पालते हैं जो।*
*बिछाया गया है दर्भासन, स्वर्ग में ले जाने वाले यज्ञ में,*
*कीर्तियों को धारण करते हैं वे, सब ओर (अपने)।। ४।।*

जिन मनुष्यों में परमात्मा के विषय में अद्भुत चिन्तनशक्ति है, जो अपनी वाणी से सदा ही परमेश्वर की स्तुतियों का गान करते रहते हैं, जिन्होंने स्वर्ग की प्राप्ति कराने वाले बाह्य यज्ञ में पवित्र आसन को बिछाया हुआ है, अथवा जो तम से ज्योति की ओर ले चलने वाले अन्तर्यज्ञ में साधनारत हैं, उनकी कीर्तियों का गान सर्वत्र सब के कानों में गूँजता रहता है।

टि. *विचारशक्ति* - **दीधितिः**। स्तुतिः - वे.। दीधितिः यज्ञविषया क्रिया - सा.। प्रकाशमाना विद्या - दया.। the ceremonial - W. thought - G. light of thought - Ar.

*मुख में स्तुतियों को* - **आसन् उक्था**। आस्ये शस्त्राणि - वे.। आसन् आस्ये उक्थानि स्तोत्राणि - सा.। आसन् आसन आस्ये वा। उक्था प्रशंसनीयानि कर्माणि। दया.। lauds within their lips - G. the utterances in their mouth - Ar.

*स्वर्ग में ले जाने वाले यज्ञ में* - **स्वर्णरि**। सर्वनरे - वे.। स्वः स्वर्गं नरं यजमानं नयतीति स्वर्णरो यज्ञः तस्मिन् - सा.। सुखेन युक्ते नरे - दया.। before the light - G. in the Godhead of the sun-world - Ar.

*कीर्तियों को धारण करते हैं वे* - **श्रवांसि दधिरे**। अन्नानि धारयन्ति - वे.। श्रवांसि अन्नानि हवींषि दधिरे निधीयन्ते - सा.। अन्नादीनि दध्युः - दया.। sacrificial viands are placed - W. have decked themselves with heavy renown - G. they found the inspirations - Ar.

**ये मे पञ्चाशतं ददुर् अश्वानां सधस्तुति।**
**द्युमद् अग्ने महि श्रवो बृहत् कृधि मघोनां नृवद् अमृत नृणाम्।। ५।। १०।।**

ये। मे। पञ्चाशतम्। ददुः। अश्वानाम्। सधऽस्तुति।
द्युऽमत्। अग्ने। महि। श्रवः। बृहत्। कृधि। मघोनाम्। नृऽवत्। अमृत। नृणाम्।। ५।।

*जो मुझे पचास को देते हैं,*
*अश्वों को, स्तुति के साथ।*
*प्रकाशमान को, हे अग्ने!, पूज्य ज्ञान को,*
*महान् को, प्रदान कर तू, उन धनदाताओं को,*
*मनुष्यों से युक्त को, हे अमृत!, नायकों को।। ५।।*

हे अजर-अमर अनादि-अनन्त अग्रणी परमेश्वर! जो उदारचेता दानी महानुभाव तेरी स्तुति करने पर मुझको और मुझ जैसे अन्य उपासकों को प्रभूत संख्या में अश्व, गौ, अन्न आदि जीवनयापन के साधन प्रदान करते हैं, जो तेरे स्तोताओं के जीवन की अनेक प्रकार से रक्षा करते हैं, तू धर्म का उन्नयन करने वाले उन धनदाताओं को प्रकाश के गुणों से युक्त, पूजा के योग्य महान् ज्ञान को नेतृत्व के गुणों वाली सन्ततियों के साथ सदा प्रदान कर।

टि. *स्तुति के साथ* – **सधस्तुति।** स्तुतिभिः सह, त्वयि मया स्तूयमाने इत्यर्थः – वे.। स्तुत्या सहितं त्वत्स्तोत्रसमनन्तरम् – सा.। सहप्रशंसितम् – दया.। upon (my) praise (of thee) - W. at the synod met for praise - G. in the moment of the laud - Ar.

*प्रकाशमान को* – **द्युमत्।** दीप्तिमन्तम् – वे.। द्युमत् दीप्तिमत् – सा.। यथार्थज्ञानप्रकाशयुक्तम् – दया.। brilliant - W. illustrious - G. luminous - Ar.

*पूज्य ज्ञान को* – **महि श्रवः।** महत् अन्नम् – वे.। सा.। दया.। ample food - W. lofty fame - G. inspired knowledge - Ar.

*प्रदान कर तू* – **कृधि।** कुरु – वे.। देहीत्यर्थः – सा.। bestow - W. create - Ar.

*मनुष्यों से युक्त को* – **नृवत्।** यथा मनुष्या याचिताः प्रयच्छन्ति – वे.। परिचारकमनुष्ययुक्तम् – सा.। नृभिस् तुल्यम् – दया.। (supporting numcrous) dependants - W. Heroes' illustrious (fame) - G. with its gods - Ar.

## सूक्त १९

ऋषिः – वव्रिर् आत्रेयः। देवता – अग्निः। छन्दः – १-२ गायत्री, ३-४ अनुष्टुप्, ५ विराट्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते प्र वव्रेर् वव्रिश् चिकेत।**
**उपस्थे मातुर् वि चष्टे।। १।।**

अभि। अवऽस्थाः। प्र। जायन्ते। प्र। वव्रेः। वव्रिः। चिकेत।
उपऽस्थे। मातुः। वि। चष्टे।। १।।

*विविध अवस्थाएं उत्पन्न हो जाती हैं,*
*भली प्रकार से गूढ़ को, गूढ़ (ही) जानता है।*
*गोद में निर्माता की (बैठकर), भली प्रकार देखता है।। १।।*

इस जगत् में दो तत्त्व – आत्मा और परमात्मा अत्यन्त गूढ़ और रहस्यमय हैं। इनमें से एक आत्मा हृदय रूपी गुहा में छुपकर बैठा है और दूसरा परमात्मा ब्रह्माण्ड के अन्दर छुपकर बैठा हुआ है। इनमें जो आत्मा है, वह अपने शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार विविध अवस्थाओं और योनियों को प्राप्त होता है। परन्तु वह गूढ़ आत्मा ही उस गूढ़ परमात्मा को जानने में समर्थ है। जब वह आत्मा अपने शुभ कर्मों और ज्ञान के द्वारा जगत् की निर्मातृशक्ति परमात्मा की गोद में अपना स्थान बना लेता है, तो उसका तीसरा नेत्र खुल जाता है और उसके लिये सब रहस्य उद्घाटित हो जाते हैं।

टि. *विविध अवस्थाएं उत्पन्न हो जाती हैं* – **अभि अवस्थाः प्र जायन्ते।** वव्रेः अवस्थाः अभि प्र जायन्ते। वव्रेः मम जरा च जायते। अकालं विकृता वार्धक्यादयः शरीरावस्थाः। वे.। वव्रेर् ऋषेर् अभ्युत्तरोत्तरम् अवस्था अशोभना दशाः प्रजायन्ते – सा.। अवस्थाः अवतिष्ठन्ति विरुद्धं प्राप्नुवन्ति यासु ता वर्तमाना दशाः – .दया.। Unprosperous circumstances affect Vavri - W. One state begets another state - G. s tate upon state is born - Ar.

*भली प्रकार से गूढ़ को गूढ़ (ही) जानता है* – **प्र वव्रेः वव्रिः चिकेत।** सो ऽयं वव्रिः समीपस्थं

पश्यति। दूरस्थम् असंचरान् न पश्यति। वे.। तादृशीर् वव्रिर् हविषां संभक्ता सो ऽग्निः प्रजानीयात्। ज्ञात्वा चापनयत्विति भावः। सा.। स्वीकर्तुः स्वीकर्त्ता विजानीयात् - दया.। May the accepter of (oblations) become cognizant (of them) - W. husk is made visible from husk - G. covering upon covering has become conscious and aware - Ar.

*गोद में निर्माता की* - **उपस्थे मातुः**। पृथिव्याः उपस्थे आसीनस् - वे.। मातुः पृथिव्याः समीपे - सा.। समीपे जनन्याः - दया.। Within his Mother's side (he speakes) - G. in the lap of the mother (he sees) - Ar.

**जुहुरे वि चितयन्तो ऽनिमिषं नृम्णं पान्ति। आ दृळ्हां पुरं विविशुः।। २।।**

जुहुरे। वि। चितयन्तः। अनिऽमिषम्। नृम्णम्। पान्ति। आ। दृळ्हाम्। पुरम्। विविशुः।। २।।

*आह्वान करते हैं (तेरा), विशेषतः जानते हुए (तुझको),*

*बिना पलक झपके, पौरुष की रक्षा करते हैं (तेरे)।*

*सब ओर से दृढ़ दुर्ग में, प्रवेश कर जाते हैं वे।। २।।*

हे अग्रनायक परमेश्वर! जो मनुष्य तुझको भली प्रकार जानकर अपनी स्तुतियों के द्वारा तेरा आह्वान करते हैं, और बिना पलक झपके निरन्तर तेरे बल की रक्षा करते हैं, अपने सामर्थ्य को तेरे बल के साथ मिलाकर दुर्जनों का संहार और सज्जनों की रक्षा करते हैं, वे सर्वतः तेरे दृढ़ दुर्ग में प्रवेश कर जाते हैं, अर्थात् उन्हें तेरा अभेद्य रक्षाकवच प्राप्त हो जाता है और कोई दुष्ट शक्ति उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकती।

टि. *आह्वान करते हैं* - **जुहुरे**। आहूतवन्तो युद्धार्थम् - वे.। यज्ञार्थम् आह्वयन्ति - सा.। invoke thee - W. have they offered gifts - G.

*जानते हुए* - **चितयन्तः**। यौवने शत्रून् बुध्यन्तः - वे.। तव प्रभावं जानन्तो जनाः - सा.। discerning - G. awaking to an entire knowledge - Ar.

*पौरुष की रक्षा करते हैं* - **नृम्णम् पान्ति**। बलं च अरक्षन् - वे.। तव बलं हविर्भिः स्तोत्रैश् च रक्षन्ति - सा.। nourish thy strength (by oblations) - W. they guard the strength - G.

*दृढ़ दुर्ग में* - **दृळ्हाम् पुरम्**। शत्रुपुरीम् - वे.। शत्रुभिः साधयितुम् अशक्यां पुरीम् - सा.। in an impregnable city - W. (have entered) the strong fortified city - Ar.

**आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो द्युमद् वर्धन्त कृष्टयः।**
**निष्कग्रीवो बृहदुक्थ एना मध्वा न वाजयुः।। ३।।**

आ। श्वैत्रेयस्य। जन्तवः। द्युऽमत्। वर्धन्त। कृष्टयः।
निष्कऽग्रीवः। बृहत्ऽउक्थः। एना। मध्वा। न। वाजऽयुः।। ३।।

*सर्वतः प्रकाश के पुत्र के, जन्मों वाले,*

*द्युतिमान् बल को, बढ़ाते हैं प्रजा जन।*

*स्वर्णाभरणकण्ठों वाले, महान् स्तुतियों वाले,*

*इस स्तुति से, सोम से जैसे, बल के इच्छुक।। ३।।*

संसार में जन्म लेने वाले, बड़ी-बड़ी स्तुतियां करने वाले, अपनी समृद्धियों के कारण अपने कण्ठों में सोने के आभूषणों को धारण करने वाले, अन्न, धन और ऐश्वर्य को चाहने वाले मनुष्य अपने ही प्रकाश से उत्पन्न होने वाले परमेश्वर के दीप्तियुक्त बल और सामर्थ्य को अपनी इन स्तुतियों के द्वारा इस प्रकार बढ़ाते हैं, जिस प्रकार ऋत्विक् और यजमान सोम के सवन और सेवन से अपने बल, बुद्धि और ऐश्वर्य को बढ़ाते हैं।

टि. *प्रकाश के पुत्र के* - **श्वैत्रेयस्य।** श्वित्राया अपत्यस्य मे वव्रेः - वे.। श्वितम् अन्तरिक्षं तत्रभवस्य वैद्युताग्नेः - सा.। of thee abiding in the white firmament - W. Śvaitreya's (people) - G. of the son of the white mother - Ar.

*जन्मों वाले* - **जन्तवः।** जाताः - वे.। जायन्त इति जन्तवः - सा.। जीवाः - दया.।

*द्युतिमान् बल को* - **द्युमत्।** दीप्तियुक्तम् - वे.। दया.। दीप्तिमद् बलम् - सा.।

*स्वर्णाभरणकण्ठों वाले* - **निष्कग्रीवः।** पुत्राणां नामानि - निष्कग्रीवः बृहदुक्थः अनेन मधुना सह वाजयुः चेति चत्वारः पुत्राः - वे.। निष्केण सुवर्णेनालङ्कृतग्रीवाः। व्यत्ययेनैकवचनम्। सा.। श्वित्रासु अन्तरिक्षस्थासु दिक्षु भवस्य जलस्य - दया.।

*इस स्तुति से* - **एना।** अनेन - वे.। एनया स्तुत्या - सा.। एनेन - दया.।

*सोम से जैसे* - **मध्वा न।** मधुना सह - वे.। मधुनेव। यद्वा नकारश् चार्थः। मधुना च। सा.। मधुनेव - दया.।

**प्रि॒यं दु॒ग्धं न काम्य॒म् अजा॑मि जा॒म्योः सचा॑।**
**घ॒र्मो न वाज॑जठ॒रो ऽद॑ब्धः शश्व॑तो॒ दभ॑ः।। ४।।**

प्रि॒यम्। दु॒ग्धम्। न। काम्य॑म्। अजा॑मि। जा॒म्योः। सचा॑।
घ॒र्मः। न। वाज॑ऽजठरः। अद॑ब्धः। शश्व॑तः। दभ॑ः।। ४।।

*प्रिय दूध की तरह कमनीय की (कमनीय है वह),*
*सहायकरहित होता हुआ, दो साथियों का सहायक।*
*देगचे की तरह (है वह), जठर में अन्न वाले की,*
*हिंसा न किया जाने वाला, नित्य, शत्रुहिंसक।। ४।।*

जिस प्रकार माता अथवा गौ का दूध सब को प्रिय और अभीष्ट होता है, उसी प्रकार वह अग्रनायक जगदीश्वर भी सब को प्रिय और अभीष्ट है। उसका कोई साथी, साथ चलने वाला अथवा बराबरी करने वाला नहीं है, परन्तु वह स्वयं भूलोक और द्युलोक में निवास करने वाले देवों और मनुष्यों का साथ देने वाला, उनके साथ रहने वाला है। देगचे में पकने वाले अन्न की तरह यह समस्त ब्रह्माण्ड उसके उदर में पड़ा हुआ पचने वाला उसका भोजन है। वह नित्य, अनादि और अनन्त है। उसकी कोई हिंसा नहीं कर सकता, परन्तु वह दुष्ट आसुरी शक्तियों का नाशक है।

टि. *सहायक रहित होता हुआ* - **अजामि।** पुनःपुनः दर्शने ऽपि यत् श्रद्धाम् आवहति तत् अजामि, तादृशं मम शरीरम् - वे.। अजामि दोषरहितं प्रियम् अस्मदीयं स्तोत्रं शृणोतु - सा.। प्राप्नोमि - दया.। faultless (praise) - W. I bring - G. uncompanioned - Ar.

*दो साथियों का सहायक* - **जाम्योः सचा।** द्यावापृथिव्योः सहायभूतम् - वे.। द्यावापृथिव्योः सहायभूतो ऽग्निः - सा.। अत्तव्यान्नप्रदयोर् द्यावापृथिव्योः सम्बन्धेन - दया.। with his two relatives (heaven and earth) - W. as 't were, of the sister-pair - G. abiding with the two companions - Ar.

*देगचे की तरह* - **घर्मः इव।** प्रवर्ग्य इव - सा.। प्रताप इव - दया.। like the mixed oblation - W. like to a caldron - G. he is the blaze of the light - Ar.

*जठर में अन्न वाले की* - **वाजजठरः।** अन्तःसक्तहविष्कः - वे.। वाजो ऽन्नं जठरे यस्य सः। हविर्जठर इत्यर्थः। सा.। वाजो क्षुद्वेगो जठरे यस्मात् सः - दया.। is filled with food - W. filled with food - G. and the belly of the plenitude - Ar.

*शत्रुहिंसक* - **दब्धः।** अनेकेषां हिंसकः - वे.। शत्रूणां हिंसकः - सा.। all-conqueror - Ar.

**क्रीळ॑न् नो रश्म आ भु॑वः सं भस्म॑ना वा॒युना॒ वेवि॑दानः।**
**ता अ॑स्य सन् धृषजो॒ न ति॒ग्माः सुसं॑शिता व॒क्ष्यो॑ वक्षणे॒स्थाः।। ५।। ११।।**

क्रीळ॑न्। न॒ः। र॒श्मे॒। आ। भु॒वः। सम्। भस्म॑ना। वा॒युना॑। वेवि॑दानः।
ताः। अ॒स्य॒। स॒न्। धृ॒षजः॑। न। ति॒ग्माः। सुऽसं॑शिताः। व॒क्ष्यः॑। व॒क्ष॒णे॒ऽस्थाः।। ५।।

*क्रीडा करता हुआ हमारे पास, हे दीप्तिमान्, इधर हो तू,*
*सम्यक् भासमान प्राणवायु के द्वारा, जाना जाता हुआ।*
*वे इसकी होवें धर्षणशील (शत्रु के लिये), न तीक्ष्ण (हों हमारे लिये),*
*सुष्ठु तेज की हुई रश्मियां, वक्षःस्थल में स्थित।। ५।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले तेजों और ज्ञानरश्मियों से युक्त परमेश्वर! तू प्राणियों के द्वारा भासमान प्राणवायु से जाना जाता है। तू क्रीड़ा करता हुआ आकर हमारे शरीरों में निवास कर। यह तेजस्वी प्राणवायु तेरी शक्ति से ही शरीरों में प्रवाहित हो रहा है। काम, क्रोध आदि शत्रुओं का धर्षण करने वाली, मनुष्यों के वक्षःस्थलों में स्थित तेरी अत्यन्त तीक्ष्ण रश्मियां शत्रुओं के लिये तो तीक्ष्ण होवें, परन्तु हमारे लिये कभी तीक्ष्ण न होवें। वे कभी हमें हानि न पहुँचाएं।

टि. *हे दीप्तिमान्* - **रश्मे।** हे रश्मिमन्नग्ने - सा.। रश्मिवद्वर्तमान - दया.। Radiant (Agni) - W. Beam of light - G. O Ray - Ar.

*सम्यक् भासमान प्राणवायु के द्वारा, जाना जाता हुआ* -**सम् भस्मना वायुना वेविदानः।** चिता-भस्मना वायुना च ज्ञायमानः - वे.। भस्मना स्वकार्येण भसितेन वायुना प्रेरकेण मरुता च सम्यक् ज्ञायमानः - सा.। who art made manifest by the wind, and (art sporting) amidst the ashes (of the forest) - W. finding thyself close to the wind that fans thee - G. unifying thy knowledge with the shining of the breath of life - Ar.

*रश्मियां* - **वक्ष्यः।** वहनशीलाः - वे.। हविर् वहन्तीति वक्ष्यो ज्वालाः - सा.। वक्ष्यः वोढ्र्यः - दया.। strong to carry - Ar.

*वक्षःस्थल में स्थित* - **वक्षणेस्थाः।** वहनशीले ऽग्नौ स्थिताः - वे.। वक्षणेस्थाः वक्षणे वह्नौ

स्थिताः - सा.। या वाहने तिष्ठन्ति ताः - दया.। on his breast - G. settled in the breast - Ar.

## सूक्त २०

ऋषिः - प्रयस्वन्त आत्रेयाः। देवता - अग्निः। छन्दः - १-३ अनुष्टुप्, ४ पङ्क्तिः। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**यम् अग्ने वाजसातम त्वं चिन् मन्यसे रयिम्।**
**तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम्।। १।।**

यम्। अग्ने। वाजऽसातम। त्वम्। चित्। मन्यसे। रयिम्।
तम्। नः। गीःऽभिः। श्रवाय्यम्। देवऽत्रा। पनय। युजम्।। १।।

*जिसको, हे अग्ने!, हे ऐश्वर्यदाताओं में श्रेष्ठ!,*
*तू निश्चय से, स्वीकार करता है, धन को।*
*उसको, हमारी स्तुतियों के साथ, प्रशस्य को,*
*देवों में प्राप्त करा तू, (दान के) उपयुक्त को।। १।।*

हे ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाले अग्रणी परमेश्वर! जिस धन को तू सचमुच ही वास्तविक धन मानता है, दान के उपयुक्त, प्रशंसा के योग्य, उस श्रेष्ठ अन्तर्धन को तू हमारी स्तुतियों के साथ दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त सज्जनों और विद्वानों को प्राप्त करा। वे ही इसके पात्र हैं।

टि. हे *ऐश्वर्यदाताओं में श्रेष्ठ* - **वाजसातम**। अन्नानां दातृतम - वे.। अत्यन्तान्नप्रद - सा.। अतिशयेन वाजानां विज्ञानादिपदार्थानां विभाजक - दया.। bounteous giver of food - W. best winner of the spoil - G. most strong to conquer the plenitudes - Ar.

*प्रशस्य को* - **श्रवाय्यम्**। श्रवणीयम् - वे.। दया.। श्रवणीयं शस्यम् - सा.। which deserves to be commended - W. that make full of inspiration - Ar.

*प्राप्त करा तू* - **पनय**। ब्रूहि - वे.। प्रापयेत्यर्थः - सा.। व्यवहारेण प्रापय - दया.। do thou convey - W. cause us to praise - G. set it to work - Ar.

*(दान के) उपयुक्त को* - **युजम्**। योग्यम् - वे.। युजं युक्तम् - सा.। यो युनक्ति तम् - दया.। as our ally - Ar.

**ये अग्ने नेरयन्ति ते वृद्धा उग्रस्य शवसः।**
**अप द्वेषो अप ह्वरो ऽन्यव्रतस्य सश्चिरे।। २।।**

ये। अग्ने। न। ईरयन्ति। ते। वृद्धाः। उग्रस्य। शवसः।
अप। द्वेषः। अप। ह्वरः। अन्यऽव्रतस्य। सश्चिरे।। २।।

*जो, हे अग्ने!, नहीं नत होते हैं, तेरे,*
*वृद्धि को पाकर, तेजस्वी बल के (आगे)।*
*परे (हटकर) द्वेष को, परे (हटकर) कुटिलता को,*
*सत्य से भिन्न व्रत वाले की, पा लेते हैं (वे)।। २।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! जो लोग तेरी कृपा से धन-धान्य की वृद्धि को प्राप्त

करके भी तेरे तेजस्वी बल के आगे नत नहीं होते, तुझे नमस्कार नहीं करते, तेरी स्तुति नहीं करते, वे तेरे बल के आगे इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार वायु के प्रखर वेग के आगे बड़े-बड़े वृक्ष टूटकर धराशायी हो जाते हैं। वे सन्मार्ग से परे हटकर सत्य से भिन्न व्रत वाले किसी धूर्त मनुष्य के द्वेष और कुटिलता का शिकार हो जाते हैं।

टि. *नहीं नत होते हैं* - **न ईरयन्ति।** न प्रेरयन्ति काष्ठादिकम् - वे.। हवींषि न प्रयच्छन्ति - सा.। who do not offer oblations - W. who ward not off the anger - G. impel us not on the way - Ar.

*तेजस्वी बल के आगे* - **उग्रस्य शवसः।** उद्गूर्णस्य तेजसः - वे.। त उग्रस्याधिकेन शवसो बलेनान्नेन वाप नीताः। बलान्नहीना भवन्तीत्यर्थः। सा.। उत्कृष्टस्य बलस्य - दया.। (become destitute) of great strength - W. of thy power and might - G. (They have grown) on thy forceful strength - Ar.

*परे (हटकर) द्वेष को, परे (हटकर) कुटिलता को सत्य से भिन्न व्रत वाले की पा लेते हैं* - **अप द्वेषः अप ह्वरः अन्यव्रतस्य सश्चिरे।** द्वेषः पापम्। यज्ञभ्रंशनिमित्त उपद्रवो ह्वरः। यस्य यजमानस्य प्रमादाद् व्रताद् अन्यद् असत्यादिकम् उपनतं सो ऽन्यव्रतः। सश्चतिर् आस्वादनकर्मा। यजमानस्य प्रमादकृतं पापं तत आददत इत्यर्थः। वे.। अन्यव्रतस्य अन्यद् वैदिकाद् विभक्तं व्रतं कर्म यस्य तस्यासुरस्य द्वेषः त्वत्सम्बन्धिनं विरोधं ह्वरो ऽतिहिंसां चाप सश्चिर आत्मानं प्रापयन्ति। सा.। द्वेषः ये द्विषन्ति ते, ह्वरः कुटिलाचरणाः। अन्यव्रतस्य धर्मविरुद्धाचरणस्य सश्चिरे। दया.। Stir up (the wrath and hatred) due to one who holds an alien creed - G. they fall away (and cleave to the hostility, cleave to the crookedness) of one who has a law alien to thine - Ar.

**होतारं त्वा वृणीमहे ऽग्ने दक्षस्य साधनम्।**
**यज्ञेषु पूर्व्यं गिरा प्रयस्वन्तो हवामहे।। ३।।**

होतारम्। त्वा। वृणीमहे। अग्ने। दक्षस्य। साधनम्।
यज्ञेषु। पूर्व्यम्। गिरा। प्रयस्वन्तः। हवामहे।। ३।।

*आह्वाता का तेरा, वरण करते हैं हम,*
*हे अग्ने!, बल बुद्धि के साधक का।*
*यज्ञों में पूर्व से विद्यमान को, स्तुति के द्वारा,*
*हव्यरूपी अन्नों वाले, बुलाते हैं हम (तुझको)।। ३।।*

हे सबको सन्मार्ग पर आगे ले जाने वाले जगदीश्वर! तू हम सब का सन्मार्ग पर आह्वान करता है। तू हमें बल और बुद्धि प्रदान करने वाला है। हम तेरा वरण करते हैं। हम तेरी शरण में आते हैं। तू इस जगत् में सब से पूर्व से विद्यमान है। हम यज्ञ आदि शुभ कर्मों में तुझे अपनी आहुतियां और नैवेद्य समर्पित करते हैं और स्तुतियों से तेरा आह्वान करते हैं।

टि. *बल-बुद्धि के साधक को* - **दक्षस्य साधनम्।** बलस्य साधयितारम् - वे.। बलस्य साधनं साधकं साधयितारम् - सा.। the means of strength - W. the perfecter of strength and skill

- G. one who accomplishes a discerning knowledge - Ar.

*पूर्व से विद्यमान को* – **पूर्व्यम्**। पूर्वकालभवं मुख्यम् – वे.। मुख्यम् – सा.। (we glorify thee) first - W. thee Chief - G. the ancient one - Ar.

*हव्यरूपी अन्नों वाले* – **प्रयस्वन्तः**। प्रयस्वन्तः नाम्ना वयम् – वे.। अन्नवन्त एतन्नामका वयम् – सा.। प्रयतमानाः – दया.। who bring sacred food - W. Ar.

**इत्था यथा त ऊतये सहसावन् दिवेदिवे।**
**राय ऋताय सुक्रतो गोभिः ष्याम सधमादो**
**वीरैः स्याम सधमादः।। ४।। १२।।**

इत्था। यथा। ते। ऊतये। सहसाऽवन्। दिवेऽदिवे।
राये। ऋताय। सुक्रतो इति सुऽक्रतो। गोभिः। स्याम। सधऽमादः। वीरैः। स्याम। सधऽमादः।। ४।।

*ऐसा (कर तू), जिस प्रकार तेरी तृप्ति के लिये,*
*हे बलों के स्वामी! (होवें हम) दिनप्रतिदिन।*
*धन के लिये, सत्यनियम के लिये, हे सुप्रज्ञ!,*
*गौओं के साथ होवें, मिलकर आनन्दित होने वाले,*
*वीरों के साथ होवें, मिलकर आनन्दित होने वाले।। ४।।*

हे अग्रनायक परमात्मन्! हे बलों के स्वामी! तू हमपर ऐसी कृपा कर, कि हम दिनप्रतिदिन तुझे अपनी स्तुतियों से प्रसन्न करने वाले बन जाएं। हे शोभन प्रज्ञाओं वाले! तू हमपर ऐसी दया कर, कि हम श्रेष्ठ अन्तर्धन की प्राप्ति करने वाले बन जाएं, हम तेरे सत्यनियमों का पालन करने वाले बन जाएं। हम गौ आदि पशुओं, वाणी से गाई जाने वाली तेरी स्तुतियों और ज्ञानरश्मियों के मध्य वास करने से आनन्द प्राप्त करने वाले बन जाएं, हम धर्मनिष्ठ वीरसन्ततियों के साथ वास करते हुए आनन्द प्राप्त करने वाले बन जाएं।

टि. *तेरी तृप्ति के लिये* – **ऊतये**। तर्पणाय – वे.। रक्षणाय – सा.। रक्षणाद्याय – दया.। thine aid we toil - G. we may live in thy protection - Ar.

*हे बलों के स्वामी* – **सहसावन्**। हे बलवन् – वे.। सा.। O Conqueror - G.

*सत्यनियम के लिये* – **ऋताय**। तथ्यभूताय (धनाय) – वे.। यज्ञाय – सा.। धर्म्यव्यवहारेण प्राप्ताय (धनाय) – दया.। for Law - G. we may grow towards the Truth - Ar.

*मिलकर आनन्दित होने वाले* – **सधमादः**। सहमोदितारः – वे.। सह माद्यन्तः – सा.। सहस्थानाः – दया.। together rejoicing in - Ar.

## सूक्त २१

ऋषिः – सस आत्रेयः। देवता – अग्निः। छन्दः – १-३ अनुष्टुप्, ४ पङ्क्तिः। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**मनुष्वत् त्वा नि धीमहि मनुष्वत् सम् इधीमहि।**

**अग्ने॑ मनु॒ष्वद् अ॑ङ्गिरो दे॒वान् दे॑वय॒ते य॑ज।। १।।**

म॒नु॒ष्वत्। त्वा॒। नि। धी॒म॒हि॒। म॒नु॒ष्वत्। सम्। इ॒धी॒म॒हि॒।
अग्ने॑। म॒नु॒ष्वत्। अ॒ङ्गि॒रः॒। दे॒वान्। दे॒व॒ऽय॒ते। य॒ज॒।। १।।

*ज्ञानी जन की तरह, तुझको स्थापित करें हम,*
*ज्ञानी जन की तरह, सम्यक् प्रदीप्त करें हम।*
*हे अग्ने!, ज्ञानी जन की तरह, हे अङ्गारसदृश!,*
*देवों को, देवपूजक के लिये, अभिपूजित कर तू।। १।।*

हे मनुष्यों को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! जिस प्रकार ज्ञानी जन तुझे अपने हृदयों में स्थापित करते हैं, उसी प्रकार हम तेरे उपासक भी तुझे अपने हृदयों के अन्दर स्थापित करें। जिस प्रकार ज्ञानी जन तुझे प्रज्वलित करते हैं, तेरे प्रकाश को अपने अन्दर भरते हैं, उसी प्रकार हम भी तेरे तेज को अपने अन्दर प्रज्वलित करें। हे अङ्गारों के सदृश तेजस्वी परमात्मन्! तू ज्ञानी जनों की तरह ही तुझ देव की पूजा करने वालों और देवत्व को चाहने वालों को हम सब को प्रोत्साहित करने के लिये दान दिव्यता आदि गुणों से युक्त सुजनों को अभिपूजित कर।

टि. *ज्ञानी जन की तरह* - मनुष्वत्। मनुर् यथा - वे.। मनुर् इव। मनुशब्दो मनुपर्यायः। नभोऽङ्गिरोमनुषां वत्युपसंख्यानम् इति भसंज्ञायां रुत्वाभावः। सा.। मनुष्येण तुल्यम् - दया.। like Manu - W. as Manus used. *Manus* : another form for Manu - G. as the human - Ar.

*तुझको स्थापित करें हम* - त्वा नि धीमहि। we meditate upon thee - W. we stablish thee - G. we set thee within us - Ar.

*हे अङ्गारसदृश* - अङ्गिरः। हे अङ्गारात्मकाग्ने - सा.। प्राणा इव प्रिय - दया.।

*देवों को देवपूजक के लिये अभिपूजित कर तू* - देवान् देवयते यज। देवान् इच्छते यजमानाय देवान् यज - वे.। देवयते देवकामाय यजमानाय देवान् यज - सा.। worship the gods on behalf of the worshipper - W. for the pious man worship gods - W. offer sacrifice to the gods for the seeker of the godheads - Ar.

**त्वं हि मानु॑षे॒ जने ऽग्ने॒ सुप्री॑त इ॒ध्यसे॑।**
**स्रुच॑स् त्वा यन्त्यानु॒षक् सुजा॑त॒ सर्पि॑रासुते।। २।।**

त्वम्। हि। मानु॑षे। जने॑। अग्ने॑। सुऽप्री॑तः। इ॒ध्यसे॑।
स्रुच॑ः। त्वा॒। य॒न्ति॒। आ॒नु॒षक्। सुऽजा॑त। सर्पि॑ःऽआसुते।। २।।

*तू निश्चय से ज्ञानी जन में,*
*हे अग्ने!, सुप्रसन्न (होकर) प्रदीप्त होता है।*
*स्रुक् तेरी ओर गमन करते हैं निरन्तर,*
*हे शोभन प्रादुर्भाव वाले, हे प्रकाश के पान वाले।। २।।*

हे अग्रनायक जगदीश्वर, हे जगत् के रूप में सुन्दर प्रादुर्भाव वाले, हे प्रकाश का आचमन करने वाले, जिस प्रकार आहुतियां डालने के लिये स्रुक् अग्नि की ओर उठते हैं, उसी प्रकार सभी उपासकों के समर्पण तेरी ओर निरन्तर गमन करते हैं। तू स्तुतियों और समर्पणों से प्रसन्न होकर अवश्य ही

ज्ञानी जन में प्रदीप्त होता है, अपनी ज्योति को उसके अन्दर प्रदीप्त करता है।

टि. *ज्ञानी जन में* – **मानुषे जने।** मनुष्यलोके – सा.। (thou shinest) upon the human race - W. ( thou art kindled) midst mankind - G. thou art kindled in the human being - Ar.

*सुप्रसन्न (होकर)* – **सुप्रीतः।** स्तोत्रैः सुष्ठु प्रीतः सन् – सा.। when thou art pleased - W.

*हे शोभन प्रादुर्भाव वाले* – **सुजात।** सुष्ठुजात – दया.। well-born - W. high-born - G. O perfect in thy birth - Ar.

*हे प्रकाश के पान वाले* – **सर्पिरासुते।** यस्मिन् सर्पिर् आसूयते हूयते स तथोक्तः – वे.। हे घृतयुक्तान्न – सा.। सर्पिषा समन्तात् प्रदीपिते – दया.। feeder upon clarified butter - W. whose food is oil - G. O thou who receivest as oblation the stream of his clarities - Ar.

**त्वां विश्वे॑ स॒जोष॑सो दे॒वासो॑ दू॒तम् अ॑क्रत।**
**स॒प॒र्यन्त॑स् त्वा कवे य॒ज्ञेषु॑ दे॒वम् ई॑ळते।। ३।।**

त्वाम्। विश्वे॑। स॒ऽजोष॑सः। दे॒वास॑ः। दू॒तम्। अ॒क्रत॒।
स॒प॒र्यन्त॑ः। त्वा॒। क॒वे॒। य॒ज्ञेषु॑। दे॒वम्। ई॒ळ॒ते॒।। ३।।

*तुझको सब समान प्रीति वाले (होकर),*
*देव, दुःखविनाशक स्वीकार करते हैं।*
*पूजा करते हुए तेरी, हे क्रान्तदर्शी,*
*यज्ञों में (तुझ) देव की स्तुति करते हैं।। ३।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त सब विद्वान् और भद्रपुरुष तुझे अपना दुःखविनाशक मानते हैं। तू ही सब के दुःखों को हरने वाला है। हे तीनो कालों और तीनों लोकों के आर–पार देखने वाले जगदीश्वर! सभी जन यज्ञ आदि शुभ कर्मों में तुझ परमदेव की पूजा करते हैं, स्तुतियां करते हैं और तुझे हवियां प्रदान करते हैं।

टि. *समान प्रीति वाले (होकर)* – **सजोषसः।** सङ्गताः – वे.। सह प्रीयमाणाः – सा.। समान–प्रीतिसेविनः – दया.। of one accord - G. with one mind of acceptance - Ar.

*दुःखविनाशक स्वीकार करते हैं* – **दूतम् अक्रत।** दूतम् अकृण्वन् – वे.। सा.। have made their messenger - W. made their envoy - Ar.

*पूजा करते हुए* – **सपर्यन्तः।** पूजयन्तः – वे.। परिचरन्तः – सा.। दया.।

*हे क्रान्तदर्शी* – **कवे।** हे क्रान्तदर्शिन् – सा.। विपश्चित् – दया.। wise - W. O seer - Ar.

**दे॒वं वो॑ देवय॒ज्यया॒ऽग्निम् ई॑ळीत॒ मर्त्यः॑।**
**समि॑द्धः शुक्र दीदिह्यृ॒तस्य॒ योनि॒म् आस॑दः**
**स॒सस्य॒ योनि॒म् आस॑दः।। ४।। १३।।**

दे॒वम्। व॒ः। दे॒व॒ऽय॒ज्यया॑। अ॒ग्निम्। ई॒ळी॒त॒। मर्त्यः॑।
सम्ऽइ॑द्धः। शु॒क्र॒। दी॒दि॒हि॒। ऋ॒तस्य॑। योनि॑म्। आ। अ॒स॒दः॒। स॒सस्य॑। योनि॑म्। आ। अ॒स॒दः॒।। ४।।

*प्रकाशमान की तेरी, देवपूजा के साथ,*

*अग्नि की, स्तुति करे मरणधर्मा।*
*प्रदीप्त किया हुआ, हे तेजस्वी!, प्रकाशित हो तू,*
*सत्यनियम के स्थान में आसीन हो तू,*
*सुषुप्ति के स्थान में आसीन हो तू।। ४।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! मनुष्य का यह कर्तव्य है, कि वह पूजा के साथ तुझ प्रकाशमान अग्रणी परमेश्वर की स्तुति सदा करता रहे। हे ज्योतिर्मय प्रभो! तू उपासक के द्वारा हृदय की गुहा में प्रदीप्त किया हुआ अपनी ज्योति से उसके अन्तस्तल को भर दे। तू सत्यनियम के स्थान में आसीन हो। स्वयं सत्यनियम की रक्षा करता हुआ सब से उसका पालन करा। तू सुषुप्ति के स्थान में आसीन हो। स्वयं परमानन्द की स्थिति में होता हुआ तू अपने उपासकों को सुषुप्ति, योगनिद्रा, ब्रह्मलीनता, परमानन्द की स्थिति प्रदान कर।

टि. *तेरी* - **वः**। युष्माकम् - वे.। दया.। त्वाम् - सा.।

*देवपूजा के साथ* - **देवयज्यया**। देवयागार्थम् - वे.। देवयज्यायै देवयागार्थम् - सा.। देवानां विदुषां सङ्गत्या - दया.। to convey his offerings - W. with worship due to gods - G.

*हे तेजस्वी* - **शुक्र**। शुक्रवर्ण - वे.। हे शोचिष्मन् - सा.। bright Agni - W. Radiant One - G. O brilliant Flame - Ar.

*सत्यनियम के स्थान में आसीन हो तू* - **ऋतस्य योनिम् आ असदः**। यज्ञस्य स्थानम् आसीद - वे.। सत्यभूतस्य (ससस्य ऋषेर्) मम योनिं योनिकारणं स्वर्गसाधनं यज्ञस्थानम् आसदः। देवतारूपेण आसीद। सा.। ऋतस्य सत्यस्य प्रमाण्वादेः योनिं कारणम् - दया.। take thy seat in the chamber of sacrifice - W. sit in the chamber of the Law - G. mayest thou take thy seat in the native home of the Truth - Ar.

*सुषुप्ति के स्थान में आसीन हो तू* - **ससस्य योनिम् आ असदः**। ससनाम्नो मम गृहम् आसीद - वे.। ससस्य ऋषेर् मम। आदरातिशयद्योतनार्थं पुनर्वचनम्। सा.। ससस्य कार्यादेः - दया.। in the chamber of the sincere Sasa - W. sit in the chamber of the food - G. take thy seat in the native home of peace - Ar.

## सूक्त २२

ऋषिः - आत्रेयो विश्वसामा। देवता - अग्निः। छन्दः - १-३ अनुष्टुप्, ४ पङ्क्तिः। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**प्र विश्वसामन्नत्रिवद् अर्चा पावकशोचिषे।**
**यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि।। १।।**

प्र। विश्वऽसामन्। अत्रिऽवत्। अर्च। पावकऽशोचिषे।
यः। अध्वरेषु। ईड्यः। होता। मन्द्रऽतमः। विशि।। १।।

*खूब, हे सब सामों के गायक!, त्रिदोषरहित की तरह,*
*गान कर तू, शोधक दीप्तियों वाले के लिये।*

*जो है यज्ञों के अन्दर, स्तुति के योग्य,*
*आह्वाता, अतिशय आनन्ददायक, घर में।। १।।*

हे ऋचाओं का गान करने वाले उपासक! तू दैहिक, मानसिक और वाचिक तीनों प्रकार के दोषों से रहित पवित्रात्मा पुरुष की तरह पवित्र करने वाली दीप्तियों वाले परमेश्वर के लिये स्तुतियों का भली प्रकार गान कर। वही जगदीश्वर यज्ञ आदि शुभ कर्मों में स्तुति के योग्य है। वही सब का सन्मार्ग पर आह्वान करने वाला है। वही सब प्रजाओं में, उपासकों के घरों में, उनके शरीरों में और हृदयरूपी निवासों में आनन्द प्रदान करने वाला है।

टि. *हे सब सामों के गायक* - **विश्वसामन्**। ऋषेः सम्बोधनम् एतत् - सा.। विश्वानि सामानि यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.। O thou of the universal space - Ar.

*त्रिदोषरहित की तरह* - **अत्रिवत्**। यथैनम् अत्रिर् अस्तौत् -- वे.। अत्रिर् इव - सा.। व्यापक-विद्यवत् - दया.। as the Atri - Ar.

*शोधक दीप्तियों वाले के लिये* - **पावकशोचिषे**। शोधकतेजसे - वे.। पावकशोचिषे शोधक-दीप्तये - सा.। पावकस्य शोचिः प्रकाश इव प्रकाशो यस्य तस्मै - दया.। to him of purifying light - G. Ar.

*अतिशय आनन्ददायक, घर में* - **मन्द्रतमो विशि**। मादयितृतमः मनुष्येषु - वे.। स्तुत्यतमो जने - सा.। अतिशयेनानन्दयुक्तः प्रजायाम् - दया.। the most adorable by man - W. most welcome in the house - G. most rapturous in man - Ar.

**न्य१ग्निं जा॒तवे॑दसं॒ दधा॑ता दे॒वम् ऋ॒त्विज॑म्।**
**प्र य॒ज्ञ ए॑त्वानु॒षग् अ॒द्या दे॒वव्य॑चस्तमः।। २।।**

नि। अ॒ग्निम्। जा॒तऽवे॑दसम्। दधा॑त। दे॒वम्। ऋ॒त्विज॑म्।
प्र। य॒ज्ञः। ए॒तु। आ॒नु॒षक्। अ॒द्य। दे॒वव्य॑चःऽतमः।। २।।

*नितरां अग्नि को, उत्पन्नों को जानने वाले को,*
*धारण करो तुम, दीप्तिमान् को, ऋत्विक् को।*
*प्रकर्ष से यज्ञ चलता रहे, निरन्तर (निर्बाध),*
*आज, अतिशय देवों को व्याप्त करने वाला।। २।।*

हे मनुष्यो! यह अग्रणी परमेश्वर जगत् में उत्पन्न हुए सब पदार्थों को जानने वाला है। यह स्वयं प्रकाशमान और सब को प्रकाशित करने वाला है। यह सभी कालों में जगत् में निरन्तर चलने वाले शाश्वत यज्ञ का संचालन करने वाला है। इसे तुम अपने हृदयों के अन्दर धारण करो। इसकी तुम हृदय से पूजा करो। इस परमेश्वर का अग्नि, वायु, सूर्य आदि सभी देवों को अतिशय व्याप्त करने वाला शाश्वत यज्ञ आज और भविष्य में भी बिना किसी बाधा के निरन्तर चलता रहे। इसके लिये तुम अपनी आहुति इस यज्ञ में सदा समर्पित करते रहो।

टि. *उत्पन्नों को जानने वाले को* - **जातवेदसम्**। जातप्रज्ञम् - वे.। जातवेदसं जातप्रज्ञं जातधनं वा - सा.। जातेषु विद्यमानम् - दया.। by whom all that exists is known - W. Jātavedas - G.

*नितरां धारण करो तुम* – **नि दधात**। नि धत्त आयतने – वे.। निधत्त – सा.। धरत। अत्र संहितायाम् इति दीर्घः – दया.। cherish - W. set in his place - G. set within you - Ar.

*ऋत्विक् को* – **ऋत्विजम्**। काले यष्टारम् – वे.। ऋतुयष्टारम् – सा.। the priest (of rite) - W. the Minister - G. ordinant of the rite - Ar.

*यज्ञ चलता रहे* – **यज्ञः एतु**। एतु अग्निः – वे.। यज्ञो यज्ञसाधनम् अस्माभिर् दीयमानं हविर् एतु गच्छतु (तम् अग्निम्) – सा.। may the sacrifice proceed to them - W. let sacrifice proceed - G. let your sacrifice march forward - Ar.

*देवों को व्याप्त करने वाला* – **देवव्यचस्तमः**। अतिशयेन देवानां व्यापकः – वे.। देवानाम् आप्ततमः – सा.। यो देवान् पृथिव्यादीन् धरति भिनत्ति च सो ऽतिशयितः – दया.। most suitable to the gods - W. comprising all the gods - G. to bring the epiphany of the gods - Ar.

**चिकित्विन्मनसं त्वा देवं मर्तास ऊतये।**
**वरेण्यस्य ते ऽवस इयानासो अमन्महि।। ३।।**

चिकित्वित्ऽमनसम्। त्वा। देवम्। मर्तासः। ऊतये।
वरेण्यस्य। ते। अवसः। इयानासः। अमन्महि।। ३।।

*हे ज्ञानवान् मन वाले!, तेरी,*
*दीप्तिमान् की, मरणधर्मा, संरक्षणार्थ।*
*वरण के योग्य की तेरी, समृद्धि को,*
*प्राप्त करते हुए, स्तुति करते हैं हम।। ३।।*

हे ज्ञान से परिपूर्ण मन वाले अग्रणी परमेश्वर! हम मरणधर्मा मनुष्य तुझसे संरक्षण पाने के लिये, वरण के योग्य की तेरी समृद्धियों को प्राप्त करते हुए, तुझ प्रकाशमान की स्तुतियां करते हैं।

टि. *हे ज्ञानवान् मन वाले* – **चिकित्विन्मनसम्**। यस्य मनः सर्वं जानाति तम् – वे.। चिकित्विज् जानन् मनो यस्यासौ, तम् – सा.। चिकित्वितां विज्ञानवतां मन इव मनो यस्य तम् – दया.। who art of intelligent mind - W. the god of most observant mind - G. who hast the mind of conscious knowledge - Ar.

*संरक्षणार्थ* – **ऊतये**। तृप्तये – वे.। रक्षणार्थम् –सा.। रक्षणाद्याय – दया.। for security - W. Ar.

*समृद्धि को* – **अवसः**। तव रक्षणम् – वे.। अवसे तर्पणाय – सा.। कमनीयस्य – दया.। thy protection - W. of thine favour - G. for the guardian - Ar.

*प्राप्त करते हुए* – **इयानासः**। भजमानाः – वे.। उपगच्छन्तः – सा.। दया.। seeking - W. as we long for it - G. as we journey - Ar.

*स्तुति करते हैं हम* – **अमन्महि**। स्तुमः – वे.। सा.। विजानीयाम – दया.। we praise thee - W. we bethink us - G. we fix our minds on thee - Ar.

**अग्ने चिकिद्ध्य१स्य न इदं वचः सहस्य।**
**तं त्वा सुशिप्र दम्पते स्तोमैर् वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः।। ४।। १४।।**

अग्ने। चिकिद्धि। अस्य। नः। इदम्। वचः। सहस्य।
तम्। त्वा। सुऽशिप्र। दम्ऽपते। स्तोमैः। वर्धन्ति। अत्रयः। गीःऽभिः। शुम्भन्ति। अत्रयः।। ४।।

*हे अग्ने!, जान ले तू, इस (विचार) को हमारे,*
*इस स्तुतिवचन को, हे विजेता!, (जान ले तू)।*
*वैसे को तुझको, हे दृढजम्भ!, हे घर के स्वामी!,*
*स्तोत्रों से बढ़ाते हैं (उपासक), तीन दोषों से रहित,*
*स्तुतियों से सजाते हैं, तीन तापों से रहित।। ४।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश! हे विश्वविजेता! तेरे प्रति जो हमारे श्रद्धाभक्ति से युक्त विचार हैं, उनको तू जान ले। जो स्तुतिवचन हम तुझे समर्पित कर रहे हैं, उनको भी तू भली प्रकार जान ले। हे दुष्टों को अपने जबड़ों में पीस डालने वाले, इस ब्रह्माण्डरूपी घर के स्वामी परमात्मन्! ऐसी अनुपम शक्ति वाले तुझको हम काम, क्रोध और लोभ इन तीन दोषों से तथा शारीरिक, मानसिक और वाचिक इन त्रिविध तापों से रहित तेरे उपासक अपने स्तोत्रों से बढ़ाते हैं, तुझे हम अपनी स्तुतियों से सजाते हैं।

टि. *जान ले तू इस (विचार) को हमारे, इस स्तुतिवचन को* – **चिकिद्धि अस्य नः इदम् वचः।** बुध्यस्व अस्माकम् अत्रीणाम् अस्य विश्वसाम्नः इदं स्तुतिवचः – वे.। नो ऽस्मदीयम् अस्येदं परिचरणम् इदं वचः स्तोत्रं जानीहि – सा.। recognise the words of this our (laudation) - W. mark this our speech - G. become conscious of this in us, this is our word - Ar.

हे *विजेता* – **सहस्य।** हे सहसो जात – वे.। सहस्य बलस्य पुत्र – सा.। सहसि बले साधो – दया.। son of strength - W. thou victorious One - G. O forceful Flame - Ar.

हे *दृढजम्भ* – **सुशिप्र।** हे सुहनो – वे.। शोभने शिप्रे हनू नासिके वा यस्यासौ। तस्य सम्बोधनम्। सा.। शोभनहनुनासिक – दया.। handsome-chinned - W. Strong-jawed - G. Ar.

हे *घर के स्वामी* – **दम्पते।** गृहपते – वे.। सा.। lord of the dwelling - W. the homestead's Lord - G. master of the house - Ar.

*तीनों दोषों से रहित* – **अत्रयः।** अत्रयः – वे.। सा.। अविद्यमानत्रिविधदुःखाः। त्रिभिः कामक्रोधलोभदोषै रहिताः – दया.। the sons of Atri - W. the Atris - G. Ar.

## सूक्त २३

ऋषिः – द्युम्नो विश्वचर्षणिः। देवता – अग्निः। छन्दः – १-३ अनुष्टुप्, ४ पङ्क्तिः। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**अग्ने सहन्तम् आ भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिम्।**
**विश्वा यश् चर्षणीर् अभ्या३सा वाजेषु सासहत्।। १।।**

अग्ने। सहन्तम्। आ। भर। द्युम्नस्य। प्रऽसहा। रयिम्।
विश्वाः। यः। चर्षणीः। अभि। आसा। वाजेषु। ससहत्।। १।।

*हे अग्ने!, अभिभविता को, इधर ले आ,*

*प्रकाश के विजेता को, धन को।*
*सब को जो प्रजाओं को, मुख्यतया,*
*निरसन से संग्रामों में, विजित करता है।। १।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! तू हमें विघ्न-बाधाओं को अभिभूत करने वाले ज्ञान-प्रकाश आदि को प्राप्त कराने वाले अध्यात्म धन को प्राप्त करा। यह वह धन है, जो जीवन में आने वाले संघर्षों में मुख्यतया काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं के द्वारा सभी प्रजाजनों को प्यार से जीत लेने में समर्थ होता है।

टि. *अभिभविता को* - **सहन्तम्**। शत्रून् अभिभवन्तम् - वे.। सा.। victorious - G. forceful - Ar.

*प्रकाश के विजेता को* - **द्युम्नस्य प्रासहा**। द्युम्नस्य मम शत्रून् प्रसह्य - वे.। प्रकृष्टेन बलेन (सहन्तं) द्युम्नस्य द्युम्नाय मम ऋषये। चतुर्थ्यर्थे षष्ठी। सा.। द्युम्नस्य धनस्य यशसो वा, प्रासहा याः प्रकर्षेण शत्रुबलानि सहन्ते ताः सेनाः - दया.। by thy fair splendour's mighty power - G. by force of the light - Ar.

*धन को* - **रयिम्**। रयिं पुत्रम् - सा.। धनम् - दया.। a son - W. wealth - G. Ar.

*निरसन से* - **आसा**। निरसनेन - वे.। आस्येन स्तोत्रेण युक्तः सन् - सा.। आस्येन - दया.। near us - G. by the mouth - Ar.

*विजित करता है* - **सासहत्**। अभि भवति - वे.। सा.। भृशं सहेत - दया.।

**तम् अ॑ग्ने पृतना॒षहं॑ र॒यिं स॑हस्व॒ आ भ॑र।**
**त्वं हि स॒त्यो अद्भु॑तो दा॒ता वाज॑स्य॒ गोम॑तः।। २।।**

तम्। अ॒ग्ने॒। पृ॒त॒ना॒ऽसह॑म्। र॒यिम्। स॒ह॒स्व॒ः। आ। भ॒र।
त्वम्। हि। स॒त्यः। अद्भु॑तः। दा॒ता। वाज॑स्य। गोऽम॑तः।। २।।

*उसको, हे अग्ने!, शत्रुसेना के विजेता को,*
*धन को, हे विजेता!, इस ओर ले आ तू।*
*तू निश्चय से सत्य (है), अद्भुत (है),*
*दाता (है तू) ऐश्वर्य का, गौओं वाले का।। २।।*

हे सब को सन्मार्ग पर अग्रसर करने वाले परमेश्वर! हे सब को पराभूत करने वाले जगदीश! तू काम, क्रोध आदि शत्रुओं की सेनाओं को विजित करने वाले द्युतिमान् अन्तर्धन को हमें प्राप्त करा। हे प्रभो! निश्चय से तू ही सत्य है और तू ही सब से निराला है। तू ही गौ आदि पशु, पृथिवी के राज्य, वाणी की वाग्मिता और ज्ञानरश्मि आदि श्रेष्ठ धनों को देने वाला है।

टि. *शत्रुसेना के विजेता को* - **पृतनाषहम्**। पृतनाः सेना अभिभवितारम् - सा.। दया.। able to encounter hosts - W. that vanquisheth in war - G. which overcomes armies - Ar.

*धन को* - **रयिम्**। पुत्रम् - सा.। धनम् - दया.। a son - W. the wealth - G. Ar.

*हे विजेता* - **सहस्वः**। हे बलवन् - सा.। बहु सहो बलं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.। victorious - G. O forceful (Fire) - Ar.

*ऐश्वर्य का, गौओं वाले का* - **वाजस्य गोमतः।** गोभिर् युक्तस्यान्नस्य - सा.। वाजस्य सुखधनादेः, गोमतः बह्व्यो गावो धेनुपृथिव्यादयो विद्यन्ते यस्मिंस् तस्य - दया.।(the giver) of food with cattle - W. of strength in herds of kine - G. of the plenitude of the Ray-Cows - Ar.

**विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषः।**
**होतारं सद्मसु प्रियं व्यन्ति वार्या पुरु।। ३।।**

विश्वे। हि। त्वा। सऽजोषसः। जनासः। वृक्तऽबर्हिषः।
होतारम्। सद्मऽसु। प्रियम्। व्यन्ति। वार्या। पुरु।। ३।।

*सब निश्चय से तुझसे, समान प्रीति वाले,*
*मनुष्य, काट-छाँट कर बिछाई गई कुशाओं वाले।*
*आह्वाता से, यज्ञगृहों में, प्रीति-उत्पादक से,*
*माँगते हैं वरणीय धनों को, बहुतों को।। ३।।*

हे अग्रनायक जगदीश्वर! इस जगत् में सब मनुष्य समान प्रीति वाले होकर, प्रसन्नतापूर्वक परस्पर सहमति से, अपनी हृदयरूपी यज्ञशालाओं में सुलझे हुए उदात्त विचार रूपी सँवारी हुई कुशाओं को बिछाकर सन्मार्ग पर आह्वान करने वाले, सब से प्यार करने वाले और सब के प्रिय तुझ प्रभु से वरण के योग्य अनन्त शाश्वत अन्तर्धनों की याचना करते हैं।

टि. *काट-छाँट कर बिछाई गई कुशाओं वाले* - **वृक्तबर्हिषः।** स्तीर्णबर्हिषः - वे.। वृक्तबर्हिषः लूनबर्हिषः - सा.।bearing the clipt sacred grass - W. whose sacred grass is trimmed and strewn - G. who have plucked the sacred grass - Ar.

*यज्ञगृहों में* - **सद्मसु।** आत्मगृहे - वे.। यज्ञगृहेषु - सा.। राजगृहेषु - दया.।to the chambers (of sacrifice) - W. to their worship halls - G. in their houses - Ar.

*माँगते हैं* - **व्यन्ति।** कामयन्ते याचन्ते - वे.। याचन्ते - सा.। प्राप्नुवन्ति - वे.।solicit thee - W. invite thee - G. reach in thee (the multitude of desirable things) - Ar.

**स हि ष्मा विश्वचर्षणिर् अभिमाति सहो दधे।**
**अग्ने एषु क्षयेष्वा रेवन् नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि।। ४।। १५।।**

सः। हि। स्म। विश्वऽचर्षणिः। अभिऽमाति। सहः। दधे।
अग्ने। एषु। क्षयेषु। आ। रेवत्। नः। शुक्र। दीदिहि। द्युऽमत्। पावक। दीदिहि।। ४।।

*वह निश्चय से, सबका द्रष्टा,*
*शत्रुविनाशक, बल को प्रदान करे, (हमको)।*
*हे अग्ने!, इन निवासों में, सर्वतः,*
*धनवत्ता के साथ, हमारे लिये, हे तेजस्विन्!, प्रकाशित हो तू,*
*दीप्तिमत्ता के साथ, (हमारे लिये), हे शोधक!, प्रकाशित हो तू।। ४।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! तू सब जीवों का द्रष्टा है और उन्हें उनके कर्मानुसार शुभ और अशुभ फल

प्रदान करता है। तू ही अपने उपासकों को चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को अभिभूत करने वाले बल को प्रदान करता है। हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश! तू हमारे इन निवासों में और हमारे इन शरीरों में हमारे हित के लिये प्रकाशित हो। हे तेजों से युक्त परमेश्वर! तू हमारे हित के लिये धनवत्ता के साथ प्रकाशित हो, हे पापों के शोधक परमेश्वर! तू हमारे हित के लिये दीप्तिमत्ता और कीर्त्तिमत्ता के साथ प्रकाशित हो।

टि. *सब का द्रष्टा* – **विश्वचर्षणिः**। सर्वस्य द्रष्टा – वे.। विश्वचर्षणिर् ऋषिः – सा.। अखिलविद्याप्रकाशः – दया.। the (sage) on whom all men rely - W. the god of all men - G. This is the labourer in all man's works - Ar.

*शत्रुविनाशक बल को प्रदान करे* – **अभिमाति सहः दधे**। शत्रूणाम् अभिभवनशीलं बलं धारयति – वे.। शत्रूणां हिंसकं बलं धारयतु – सा.। अभिमन्यते येन, [तेन] सहः बलं दधाति – दया.। possess foe-subduing strength - W. hath gotten him might that quelleth foes - G. He holds in himself an all-besieging force - Ar.

*धनवत्ता के साथ* – **रेवत्**। धनयुक्तम् – वे.। धनयुक्तं यथा भवति तथा – सा.। प्रशस्तधनयुक्तम् – दया.। (shine out) full of joy and opulence - Ar.

*दीप्तिमत्ता के साथ* – **द्युमत्**। दीप्तियुक्तम् – वे.। दीप्तियुक्तं यशोयुक्तं च – सा.। (shine out) full of light - Ar.

## सूक्त २४

ऋषिः – गौपायना लौपायना वा बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर् विप्रबन्धुश् च। देवता – अग्निः। छन्दः – द्विपदा विराट्। 'विंशतिका द्विपदा विराजः' (ऋ.अ. १.१२.८)। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः।**
**वसुर् अग्निर् वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः।। १। २।।**

अग्ने। त्वम्। नः। अन्तमः। उत। त्राता। शिवः। भव। वरूथ्यः।
वसुः। अग्निः। वसुऽश्रवाः। अच्छ। नक्षि। द्युमत्ऽतमम्। रयिम्। दाः।। १।। २।।

*हे अग्ने! तू हमारा निकटतम (बन्धु) और त्राता (है),*
*कल्याणकर हो जा तू (हमारा), शरण के योग्य।*
*बसाने वाला, अग्रनायक, धनकीर्त्ति, ओर (हमारी) प्राप्त हो तू,*
*अतिशय दीप्तियुक्त को, धन को, प्रदान कर तू (हमें)।। १।। २।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! तू हमारा निकटतम बन्धु और पापों तथा अपराधों से हमारा त्राण करने वाला है। तू वरेण्य और शरण्य है। हम तेरी शरण में आते हैं। तू हमारा कल्याण करने वाला हो जा। हे अग्रनायक! तू सब को बसाने वाला और सब में वास करने वाला है। तू लौकिक और अलौकिक धनों को प्रदान करने से बढ़े हुए यशों वाला है। तू हमारी ओर आकर हमारे हृदय में वास कर। तू अतिशय दीप्तियुक्त अन्तर्धन को हमें प्रदान कर।

टि. *निकटतम (बन्धु)* - **अन्तमः**। अन्तिकतमः - वे.। सा.। समीपस्थः - दया.। ever nigh to us - W. nearest Friend - G. inmost inmate - Ar.

*शरण के योग्य* - **वरूथ्यः**। गृहहितः - वे.। वरणीयः संभजनीयः। यद्वा। वरूथैः परिधिभिर् वृतः। सा.। वरूथेषूत्तमेषु गृहेषु भवः - दया.। to be adored - W. a gracious Friend - G. our armour of protection - Ar.

*बसाने वाला* - **वसुः**। वासयिता - वे.। दया.। वासकः - सा.। the giver of dwellings - W. excellent - G. who art the lord of substance - Ar.

*धनकीर्त्ति* - **वसुश्रवाः**। वस्वन्नः - वे.। व्याप्तान्नः - सा.। धनधान्ययुक्तः - दया.। dispenser of food - W. wealth most splendidly renowned - G. who of that substance hast the divine knowledge - Ar.

*ओर (हमारी) प्राप्त हो तू* - **अच्छ नक्षि**। अस्मान् अभिव्याप्याप्नुहि - वे.। अच्छाभिमुख्येन नक्षि अस्मान् व्याप्नुहि - सा.। be present with us - W. give us - G. Ar.

**स नो॑ बोधि श्रुधी हव॑म् उरु॒ष्या णो॑ अघाय॒तः स॑मस्मात्।**
**तं त्वा॑ शोचिष्ठ दीदिवः सु॒म्नाय॑ नू॒नम् ईमहे॒ सखि॑भ्यः।। ३। ४।। १६।।**

सः। नः। बोधि। श्रुधि। हव॑म्। उरु॒ष्य। नः। अघऽयतः। समस्मात्।
तम्। त्वा। शोचिष्ठ। दीदिऽवः। सुम्नाय॑। नूनम्। ईमहे। सखि॑ऽभ्यः।। ३। ४।।

*वह हमारा हो जा तू, सुन पुकार को, रक्षा कर हमारी,*
*पाप की कामना वाले से, प्रत्येक (मनुष्य) से।*
*उस तुझको, हे अतिशय तेजस्विन्!, हे दीप्तिमान्!, सुख के लिये,*
*निश्चय से याचना करते हैं हम, सखाओं के लिये।। ३। ४।।*

हे अग्रनायक परमेश्वर! तू हमारा हो जा और हमें अपना बना ले। तू हम अपने उपासकों की पुकार को सुन। तू पापकर्मों में प्रीति रखने वाले प्रत्येक मनुष्य से हम असहायों की रक्षा कर। हे अत्यन्त तेजस्वी पापशोधक प्रकाशमान जगदीश्वर! हम निश्चय ही अपने मित्रों, पुत्र-पौत्रों और सगे-सम्बन्धियों के सुख और शान्ति के लिये तुझसे सदा याचना करते हैं।

टि. *वह हमारा हो जा तू* - **सः नः बोधि**। स त्वम् अस्मान् बुध्यस्व - वे.। सा.। सः अस्माकं बोधय - दया.। understand us - W. So hear us - G. awake - Ar.

*पाप की कामना वाले से, प्रत्येक (मनुष्य) से* - **अघायतः समस्मात्**। अघम् इच्छतः सर्वस्माद् अपि - वे.। सा.। आत्मनो ऽघम् आचरतः सर्वस्मात् - दया.। from all malevolent (people) - W. keep us far from every sinful man - G. keep us far from all that seeks to turn us to evil - Ar.

*हे दीप्तिमान्* - **दीदिवः**। दीप्त - वे.। सा.। सत्यप्रद्योतक - दया.। resplendent - W. O Radiant God - G. O shining One - Ar.

*सुख के लिये* - **सुम्नाय**। सुखार्थम् - वे.। सुम्नम् इति सुखनाम। तदर्थम्। सा.। for the

happiness - W. G. may have the bliss - Ar.

*सखाओं के लिये* - **सखिभ्यः**। पुत्रादिभ्यः - वे.। समानख्यातिभ्यः पुत्रेभ्यः - सा.। मित्रेभ्यः - दया.। (of ourselves) and our friends - W. of our friends - G. for our comrades - Ar.

## सूक्त २५

ऋषिः - वसूयुनामान आत्रेयाः। देवता - अग्निः। छन्दः - अनुष्टुप्। नवर्चं सूक्तम्।

**अच्छा वो अग्निम् अवसे देवं गासि स नो वसुः।**
**रासत् पुत्र ऋषूणाम् ऋतावा पर्षति द्विषः।। १।।**

अच्छ। वः। अग्निम्। अवसे। देवम्। गासि। सः। नः। वसुः।
रासत्। पुत्रः। ऋषूणाम्। ऋतऽवा। पर्षति। द्विषः।। १।।

*ओर अपने अग्रणी की, रक्षा के लिये,*
*प्रकाशमान की, गान कर तू, वह (है) हमारा वासक।*
*प्रदान करे वह (सुधन हमें), पुरुत्राता ऋषियों का,*
*ऋत का स्वामी, पार कराए वह शत्रुओं को (हमें)।। १।।*

हे उपासक! तू अपनी रक्षा, समृद्धि, तृप्ति आदि के लिये सन्मार्ग में आगे ले चलने वाले, देदीप्यमान परमेश्वर की स्तुतियों का गान कर, क्योंकि वही सुखसाधन प्रदान करके हमें बसाने वाला है। मन्त्रार्थद्रष्टाओं का बहुत प्रकार से त्राण करने वाला वह ईश्वर हमें बाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के श्रेष्ठ धन प्रदान करे। सत्यनियम का स्वामी, स्वयं उसका पालन करने और दूसरों से कराने वाला वह जगदीश चोर, डाकू आदि बाह्य तथा काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं पर हमें विजय प्राप्त कराए।

टि. *ओर गान कर तू* - **अच्छ गासि**। अभिगच्छ - वे.। अभिप्रगायत - सा.। सम्यक् प्रशंससि - दया.। celebrate - W.I will sing near - G. Raise thy song towards (the Will) - Ar.

*हमारा वासक* - **नः वसुः**। अस्माकं वासयिता - वे.। अग्निहोत्रार्थं यजमानानां गृहे वासयिता - सा.। अस्मभ्यं द्रव्यप्रदः - दया.। who presides over dwellings - W. for he is good to us - G. for he is our lord of substance - Ar.

*प्रदान करे वह (सुधन हमें)* - **रासत्**। अस्मभ्यम् अभिमतं प्रयच्छति - वे.। दया.। अस्मभ्यं कामान् ददातु - सा.। may grant our desires - W. may he give gifts - G.

*पुरुत्राता ऋषियों का* - **पुत्रः ऋषूणाम्**। ऋषीणां पुत्रः - वे.। ऋषिभिर् मन्थनेन जनितत्वात् पुत्र इत्युपचर्यते - सा.। अपत्यं मन्त्रार्थविदाम् - दया.। the son of the seekers of knowledge - Ar.

*ऋत का स्वामी* - **ऋतावा**। सत्यकर्मा - वे.। ऋतावान् सत्यवान् उदकवान् वा - सा.। सत्यस्य विभाजकः - दया.। the observer of truth - W. righteous - G. the keeper of the Truth - Ar.

*पार कराए शत्रुओं को* - **पर्षति द्विषः**। शत्रूंश् चास्माकं तरति - वे.। अस्माकं शत्रून् पारयतु - सा.। दया.। may save us from those who hate us - W.

**स हि सत्यो यं पूर्वे चिद् देवासश् चिद् यम् ईधिरे।**
**होतारं मन्द्रजिह्वम् इत् सुदीतिभिर् विभावसुम्।। २।।**

सः। हि। सत्यः। यम्। पूर्वे। चित्। देवासः। चित्। यम्। ईधिरे।
होतारम्। मन्द्रऽजिह्वम्। इत्। सुदीतिऽभिः। विभाऽवसुम्।। २।।

*वह निश्चय से सत्य है, जिसको पूर्वज ऋषि भी,*
*देव भी जिसको, प्रदीप्त करते आए हैं (सदा से)।*
*आह्वाता को, मादक वाणी वाले को ही,*
*शोभन दीप्तियों से (युक्त को), प्रभा के धन वाले को।। २।।*

निश्चय से सब का सन्मार्ग पर आह्वान करने वाला, वेदमन्त्ररूपी मधुर वाणी को मनुष्यमात्र के लिये प्रदान करने वाला, सुन्दर दीप्तियों से युक्त, ज्ञानज्योतिरूपी धनों वाला वह परमेश्वर ही सत्य है, पूर्वज ऋषि भी और देवता भी जिस की ज्योति को सदा अपने हृदयों में जगाते आए हैं।

टि. *पूर्वज ऋषि* - **पूर्वे**। पूर्वे ऋषयः - वे.। पूर्वे महर्षयः - सा.। प्राचीनाः - दया.। the ancients - W. men of old - G. the seers of old - Ar.

*प्रदीप्त करते आए हैं* - **ईधिरे**। समीधिरे - वे.। समैधन्त - सा.। प्रदीपयन्ति - दया.।

*मादक वाणी वाले को* - **मन्द्रजिह्वम्**। मोदनवाचम् - वे.। हविषां प्रदानेन देवानां मादयित्री जिह्वा यस्य सः, तम्। यद्वा। मोदनजिह्वम्। तथाह यास्कः। मन्द्रजिह्वं मन्दनजिह्वं मोदनजिह्वम् इति वा। (नि. ६.२३)। सा.। मन्द्रा प्रशंसनीया जिह्वा यस्य तम् - दया.। bright-tongued - W. with the delicious tongue - G. with his tongue of ecstasy - Ar.

*शोभन दीप्तियों से (युक्त को)* - **सुदीतिभिः**। युक्तम् इति शेषः।। शोभनदानैर् हविभिः - वे.। शोभन- दीप्तिभिर् युक्तम् - सा.। सुष्ठु दीप्तिभिस् सहितम् - दया.। with holy splendours - W. with perfect outstandings - Ar.

*प्रभा के धन वाले को* - **विभावसुम्**। प्रभाधनम् - सा.। प्रकाशयुक्तं वसु धनं यस्य तम् - दया.। radiant - W. into his wide substance of the light - Ar.

**स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या।**
**अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर् वरेण्य।। ३।।**

सः। नः। धीती। वरिष्ठया। श्रेष्ठया। च। सुऽमत्या।
अग्ने। रायः। दिदीहि। नः। सुवृक्तिऽभिः। वरेण्य।। ३।।

*वह हमारे लिये चिन्तन के साथ, अतिशय वरणीय के,*
*और अतिशय प्रशंसनीय के साथ, उत्तम बुद्धि के।*
*हे अग्ने!, धनों को प्रकाशित कर तू, हमारे लिये,*
*सुन्दर रीति से घड़े स्तोत्रों के द्वारा, हे वरणीय।। ३।।*

हे वरण करने के योग्य अग्रणी परमेश्वर! तेरे उपासक हम तेरे लिये सुन्दर रीति से निर्मित स्तोत्रों का गान करते हैं। तू हमारी इन स्तुतियों से प्रसन्न होकर हमें अत्यन्त प्रशंसनीय बुद्धि प्रदान कर। तू

हमें अत्यन्त कमनीय विचारशक्ति प्रदान कर। और इनके साथ तू हमारे लिये लौकिक और आत्मिक धनों को प्रकाशित कर दे। हम सुख से जीवन बिताते हुए आत्मा की उन्नति करते चलें।

टि. *चिन्तन के साथ* - **धीती**। कर्मणा - वे.। अस्मदीयेन परिचरणात्मकेन कर्मणा - सा.। धीत्या धारणवत्या - दया.। by adoration - W. with wisdom - G. by our thinking - Ar.

*साथ उत्तम बुद्धि के* - **सुमत्या**। सुमतिर् इति शस्त्रम् उच्यते। शस्त्रेण प्रीतः। सा.। शोभनया प्रज्ञया - दया.। by hymns - W. with gracious will - G. by our perfected mentality - Ar.

*धनों को प्रकाशित कर तू* - **रायः दिदीहि**। धनानि प्रज्वलय - वे.। धनानि दीदिहि देहि - सा.। दया.। bestow upon us riches - W. shine wealth on us - G. let light give bliss - Ar.

*सुन्दर रीति से घड़े स्तोत्रों के द्वारा* - **सुवृक्तिभिः**। स्तोत्रैर् अस्मदीयैः - वे.। स्तुतिभिः (स्तूयमानः) - सा.। through hymns of praise - G. by its utter cleaving away of all evil - Ar.

**अ॒ग्निर् दे॒वेषु॑ राजत्य॒ग्निर् मर्ते॒ष्वावि॒शन्।**
**अ॒ग्निर् नो॑ हव्य॒वाह॑नो॒ ऽग्निं धी॒भिः स॑पर्यत॥ ४॥**

अ॒ग्निः। दे॒वेषु॑। रा॒ज॒ति॒। अ॒ग्निः। मर्ते॑षु। आ॒ऽवि॒शन्।
अ॒ग्निः। नः॒। ह॒व्य॒ऽवाह॑नः। अ॒ग्निम्। धी॒भिः। स॒प॒र्य॒त॒॥ ४॥

*अग्नि देवों में प्रकाशित होता है,*
*अग्नि (प्रकाशित होता है) मनुष्यों में, प्रविष्ट होकर।*
*अग्नि हमारे हव्यों को वहन करने वाला (है),*
*अग्नि को विचारों से (अपने), पूजो तुम॥ ४॥*

सब को सन्मार्ग पर ले चलने वाला परमेश्वर देवों के अन्दर प्रविष्ट होकर उन्हें अपना प्रकाश और ज्ञान प्रदान करता है। इसी प्रकार वह दयालु प्रभु मनुष्यों के अन्दर प्रविष्ट होकर उन्हें भी अपना प्रकाश और ज्ञान प्रदान करता है। वह जगदीश हमारे द्वारा श्रद्धापूर्वक भेंट किये हुए समर्पणों को सहर्ष स्वीकार करता है। हे उपासको! तुम अपनी बुद्धि में उसका चिन्तन और ध्यान करते हुए उसकी पूजा करो। वह तुम्हें अपना प्रकाश और ज्ञान अवश्य प्रदान करेगा।

टि. *अग्नि देवों में प्रकाशित होता है* - **अग्निः देवेषु राजति**। उभयेषु देवमनुष्येषु अग्निः विराजति - वे.। यो ऽग्निर् देवानां मध्ये राजति देवतारूपेण प्रकाशते - सा.। पावक इव वर्तमानो विद्वान् विद्वत्सु पृथिव्यादिषु वा प्रकाशते - दया.। Agni shines amongst the gods - W. Agni is King, for (he extends to mortals and) gods (alike) - G. The Will is that which shines out in the gods - Ar.

*मनुष्यों में प्रविष्ट होकर* - **मर्तेषु आविशन्**। मनुष्येषु आहवनीयादिरूपेण प्रविष्टो भवति - सा.। मरणधर्मेषु मनुष्यादिषु आविष्टः सन् - दया.। is present amongst mortals - W. he extends - G. which enters with its light into mortals - Ar.

*अग्नि को विचारों से पूजो तुम* - **अग्निम् धीभिः सपर्यत**। तम् इमम् अग्निं पूजयत कर्मभिः - वे.। अग्निं प्रज्ञाभिः सेवध्वम् - दया.। glorify Agni with praises - W. worship ye Agni with

your thoughts - G. the Will seek and serve in all your thoughts - Ar.

**अ॒ग्निस् तु॑विश्र॑वस्तमं तु॒विब्र॑ह्माणम् उ॒त्तमम्।**
**अ॒तूर्तं॑ श्राव॒यत्प॑तिं पु॒त्रं द॑दाति दा॒शुषे॑।। ५।। १७।।**

अ॒ग्निः। तु॒विश्र॑वःऽतमम्। तु॒विऽब्र॑ह्माणम्। उ॒त्ऽत॒मम्।
अ॒तूर्त॑म्। श्र॒व॒यत्ऽप॑तिम्। पु॒त्रम्। द॒दा॒ति॒। दा॒शुषे॑।। ५।।

*अग्नि प्रबल कीर्त्ति वालों में उत्तम को,*
*प्रबल वेदज्ञान वाले को, श्रेष्ठ को।*
*अजेय को, पिता की प्रसिद्धि करने वाले को,*
*पुत्र को प्रदान करता है, हविदाता के लिये।। ५।।*

सब को सन्मार्ग में आगे चलाने वाला जगदीश्वर बाह्य और आभ्यन्तर यज्ञ में आहुति देने वाले अर्थात् परोपकार और प्रभु की भक्ति करने वाले उपासक को, प्रबल कीर्त्ति वालों में उत्तम, प्रबल वेदज्ञान वाला, अत्यन्त प्रशंसनीय, दुष्ट, चोर, डाकू आदि बाह्य तथा काम, क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं से पराजित न होने वाला और बाप-दादा एवं कुल के नाम की सब दिशाओं में प्रसिद्धि करने वाला पुत्र प्रदान करता है।

टि. *प्रबल कीर्त्ति वालों में उत्तम को* - **तुविश्रवस्तमम्।** अतिशयेन प्रसिद्धकीर्त्तिम् - वे.। अतिशयेन बह्वन्नम् - सा.। अतिशयेन बह्वन्नश्रवणयुक्तम् - दया.। abounding in food - W. of mightiest fame - G. who teems with the many inspirations - Ar.

*प्रबल वेदज्ञान वाले को* - **तुविब्रह्माणम्।** बहुस्तोत्रम् - वे.। सा.। बहवो ब्रह्माणस् चतुर्वेदविदो विद्वांसो यस्य तम् - दया.। abounding in devotion - W. G.

*अजेय को* - **अतूर्तम्।** शत्रुभिः अहिंसितम् - वे.। सा.। दया.। unharmed - W. ne'er subdued - G. unassailable - Ar.

*पिता की प्रसिद्धि करने वाले को* - **श्रावयत्पतिम्।** श्रावयितॄणां यशस्विनां पतिम् - वे.। श्रावयति विश्रुतान् करोति पतीन् पालयितॄन् पितॄन् इति स्वकर्मणा पितॄणां प्रख्यापक इति श्रावयत्पतिः, तथाविधम् - सा.। श्रावयन् पतिर् यस्य तम् - दया.। conferring honour upon his progenitors - W. bringer of glory to his sire - G. the Master of things who opens our ears to the knowledge - Ar.

**अ॒ग्निर् द॑दाति॒ सत्प॑तिं सा॒साह॒ यो यु॒धा नृभिः॑।**
**अ॒ग्निर् अत्यं॑ रघु॒ष्यद॒ं जेता॒रम् अप॑राजितम्।। ६।।**

अ॒ग्निः। द॒दा॒ति॒। स॒त्ऽप॑तिम्। स॒साह॑। यः। यु॒धा। नृऽभिः॑।
अ॒ग्निः। अत्य॑म्। र॒घु॒ऽस्यद॑म्। जेता॑रम्। अप॑राऽजितम्।। ६।।

*अग्नि प्रदान करता है, सुजनों के पालक (पुत्र) को,*
*जीतता है जो (शत्रु को), युद्ध से नायकों के साथ।*
*अग्नि अश्व को शीघ्रगामी को (प्रदान करता है),*
*विजेता को (सब के), पराजित न होने वाले को।। ६।।*

सन्मार्ग पर अग्रसर करने वाला जगदीश्वर बाह्य और आभ्यन्तर यज्ञ में आहुति देने वाले उपासक को ऐसी सन्तति प्रदान करता है, जो सज्जनों का पालन करने वाली होती है, जो युद्ध करके अपने शूर योद्धाओं के साथ शत्रुओं को विजित करती है। वह अग्रणी परमेश्वर अपने उपासक को ऐसे तीव्र गति वाले अश्व आदि पशु और दुर्धर्ष शारीरिक बल प्रदान करता है, जो सब को विजित करने में समर्थ होते हैं, परन्तु वे स्वयं किसी से पराजित नहीं होते।

टि. *सुजनों के पालक को* - **सत्पतिम्**। सतां पतिं पुत्रम् - वे.। सत्पतिं सतां पालयितारम् - सा.। the protector of the good - W. the hero-lord - G. the Lord of existenses - Ar.

*जीतता है जो (शत्रु को) युद्ध से नायकों के साथ* - **सासाह यः युधा नृभिः**। यः शत्रून् युद्धेन नृभिः सहते - वे.। यो युद्धेन परिजनैः शत्रून् अभिभवति - सा.। ससाह सहते। अत्र लडर्थे लिट्। तुजादीनाम् इत्यभ्यासदैर्घ्यम्। दया.। who conquers with the men in fight - G. who conquers in the battle by souls of power - Ar.

*अश्व को शीघ्रगामी को* - **अत्यम् रघुष्यदम्**। अश्वं क्षिप्रगामिनम् - वे.। रघुर् लघुः स्यदो जवो यस्य तम्। अत्यो ऽश्वः तम्। सा.। swift-footed steed - W. fleet-foot steed - G.

**यद् वाहिष्ठं तद् अग्नये बृहद् अर्च विभावसो।**
**महिषीव त्वद् रयिस् त्वद् वाजा उद् ईरते।। ७।।**

यत्। वाहिष्ठम्। तत्। अग्नये। बृहत्। अर्च। विभावसो इति विभाऽवसो।
महिषीऽइव। त्वत्। रयिः। त्वत्। वाजाः। उत्। ईरते।। ७।।

*जो अत्यन्त वाहक (स्तोत्र) है, वह अग्नि के लिये है,*
*खूब सत्कृत कर तू (उसको), हे प्रभा के वास वाले।*
*महान् प्रभा की तरह, तुझसे धन (उत्पन्न होता है),*
*तुझसे (ही विविध) ऐश्वर्य, उत्पन्न होते हैं।। ७।।*

हे जगदीश! स्तोता का उसके विचारों और भक्तिभावों को उत्तमता से वहन करने वाला जो स्तोत्र होता है, वह अग्रनायक तुझ परमेश्वर के लिये होता है और वह तुझे ही समर्पित किया जाता है। हे प्रकाश में वास करने वाले और प्रकाश को उपासकों के हृदय में बसाने वाले जगदीश्वर! तू स्तोता के इस स्तोत्र को अत्यन्त आदर के साथ स्वीकार कर। जगत् को प्रकाशित करने वाली महान् प्रभा की तरह समस्त धन और अन्न, बल आदि नाना प्रकार के ऐश्वर्य तुझसे ही उत्पन्न होते हैं। तू इन्हें प्रसन्नतापूर्वक अपने स्तोता को प्रदान कर।

टि. *अत्यन्त वाहक (स्तोत्र)* - **वाहिष्ठम्**। वोढृतमं तेजः - वे.। वोढृतमं स्तोत्रम् - सा.। अतिशयेन वोढारम् - दया.। that (praise) which best conveys (our veneration) - W. mightiest song - G. that which is strongest in us to upbear - Ar.

*खूब सत्कृत कर तू* - **बृहत् अर्च**। महत् तत् तेजो ऽनेन हविषा पूजय - वे.। बह्वन्नं धनं वास्मभ्यं प्रयच्छ - सा.। अर्च सत्कुरु - दया.। shine on high - G. Sing out the Vast - Ar.

*हे प्रभा के वास वाले* - **विभावसो**। हे प्रभाधन - सा.। स्वप्रकाश - दया.। thou who art rich

in light - G. O thou whose wide substance is its light - Ar.

*महान् (प्रभा) की तरह* - **महिषी इव।** यथा राजस्त्री स्वगृहाद् अलङ्कृता निर्गच्छति - वे.। महिषी महती रयिः। इवेति पूरणः। सा.। ज्येष्ठा राज्ञीव - दया.। great (wealth) - W. like the Chief Consort of a King - G. as if the largeness of the Goddess (Aditi) herself - Ar.

**तव॑ द्यु॒मन्तो॑ अ॒र्चयो॑ ग्रावे॑वोच्यते बृ॒हत्।**
**उ॒तो ते॑ तन्य॒तुर् य॑था स्वा॒नो अ॑र्त॒ त्मना॑ दि॒वः।। ८।।**

तव॑। द्यु॒ऽमन्तः॑। अ॒र्चयः॑। ग्रावा॑ऽइव। उ॒च्य॒ते॒। बृ॒हत्।
उ॒तो इति॑। ते॒। त॒न्य॒तुः। य॒था॒। स्वा॒नः। अ॒र्त॒। त्मना॑। दि॒वः।। ८।।

*तेरी दीप्तिमती (हैं) रश्मियां,*
*ग्रावा की तरह, उच्चारा जाता है (शब्द तेरे द्वारा) बहुत।*
*और तेरा, मेघ की गर्जना की तरह,*
*शब्द उत्पन्न होता है स्वयं द्युलोक से।। ८।।*

हे मनुष्यों को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! तेरी ज्ञानरश्मियां सब ओर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाली हैं। सोम का सवन करने वाला सिलबट्टा जिस प्रकार मधुर और गम्भीर ध्वनि करता है, उसी प्रकार तू मनुष्यों के आनन्द के लिये रहस्यमयी मधुर वेदवाणी को प्रादुर्भूत करता है। जिस प्रकार मेघ से मधुर और गम्भीर घोष उत्पन्न होता है, उसी प्रकार तेरे निवास प्रकाशलोक से उत्पन्न होकर तेरे वेदज्ञान का मधुर और गम्भीर शब्द स्वयं ही मनुष्यों को प्राप्त होता है।

टि. *ग्रावा की तरह उच्चारा जाता है (शब्द तेरे द्वारा) बहुत* - **ग्रावेव उच्यते बृहत्।** शैल इव उच्यते महत्त्वम् - वे.। बृहन् महान् त्वम् अभिषवग्रावेवोच्यते स्तूयते - सा.। mighty art thou termed like the stone - W. loud is thy voice like pressing-stones - G. there rises from thee a vast utterance like the voice of the pressing-stone of delight - Ar.

*मेघ की गर्जना की तरह* - **तन्यतुः यथा।** यथा मेघानां गर्जितशब्दः - वे.। मेघगर्जितम् इव - सा.। विद्युत् यथा - सा.। like thunder - W. like the roaring - G. like a thunder-chant - Ar.

*शब्द उत्पन्न होता है* - **स्वानः अर्त।** शब्दः सर्वं देशं व्याप्नोति - वे.। स्वानः शब्दो ऽर्त उद्गच्छति - सा.। thy voice spreads - W. thy thunder goes forth - G.

*स्वयं द्युलोक से* - **त्मना दिवः।** स्वयम्, अरण्ये दीप्तस्य - वे.। आत्मना द्योतमानस्य- सा.। spontaneously, through the sky - W. itself, of the heaven - G. thy cry of itself (rises up) from the heavens - Ar.

**ए॒वाँ अ॒ग्निं व॑सू॒यवः॑ सहसा॒नं व॑वन्दिम।**
**स नो॒ विश्वा॒ अति॒ द्वि॒षः॒ पर्ष॑न् ना॒वेव॑ सु॒क्रतुः॑।। ९।। १८।।**

ए॒व। अ॒ग्निम्। व॒सु॒ऽयवः॑। स॒ह॒सा॒नम्। व॒व॒न्दि॒म॒।
सः। नः॒। विश्वाः॑। अति॑। द्विषः॑। पर्ष॑त्। ना॒वाऽइ॑व। सु॒ऽक्रतुः॑।। ९।।

*निश्चय से अग्नि की, धनों की कामना वाले,*

*शत्रुविजेता की, वन्दना करें हम (सर्वदा ही)।*
*वह हमारी सब का, अतिक्रमण करके शत्रुताओं का,*
*पार कराए (हमको), नाव से जैसे, शोभन कर्मों वाला।। ९।।*

निश्चय से इस प्रकार आवास आदि धनों की कामना वाले हम उपासक जन चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को पराजित करने वाले उस अग्रनायक परमेश्वर की सदा ही वन्दना करते रहें। उत्तम कर्मों और श्रेष्ठ प्रज्ञा वाला वह परमेश्वर सब द्वेष-भावनाओं का अतिक्रमण करके हमें इस भवसागर से इस प्रकार पार उतार देवे, जिस प्रकार समुद्र को पार करने की इच्छा वाला मनुष्य नाव से समुद्र को पार कर जाता है।

टि. *धनों की कामना वाले* - **वसूयवः**। वसूयवः नाम्ना वयम् - वे.। वसुकामाः - सा.। we, Vasuyus - W. seeking riches and strength - G. desiring substance - Ar.

*शत्रुविजेता को* - **सहसानम्**। बलाचरणशीलम् - वे.। अस्माकं बलम् इवाचरन्तम् - सा.। the vigorous - W. Conqueror - G. forceful to conquer - Ar.

*सब का अतिक्रमण करके शत्रुताओं का, पार कराए* - **विश्वाः अति द्विषः पर्षत्**। विश्वाः द्वेष्ट्रीः सेना अति नयतु - वे.। सर्वान् शत्रून् अतिपारयतु - सा.। समग्रा द्वेषयुक्ताः क्रियाः पारयेत् - दया.। may he enable us to pass over all our enemies - W. may he carry us over all our foes - G. may he carry us beyond all the forces that seek to destroy us - Ar.

## सूक्त २६

ऋषिः - वसूयवः। देवता - अग्निः। छन्दः - गायत्री। नवर्चं सूक्तम्।

**अग्ने॑ पावक रो॒चिषा॑ म॒न्द्रया॑ देव ज़ि॒ह्वया॑। आ दे॒वान् व॑क्षि॒ यक्षि॑ च।। १।।**

अग्ने॑। पा॒व॒क॒। रो॒चिषा॑। म॒न्द्रया॑। दे॒व॒। जि॒ह्वया॑। आ। दे॒वान्। व॒क्षि॒। यक्षि॑ च॒।। १।।

*हे अग्ने!, हे पवित्रकारक!, प्रकाशवती से,*
*आनन्ददायिका से, हे देव!, जिह्वा से (अपनी)।*
*इधर देवों को ला तू, यजन भी करा (उनका)।। १।।*

हे दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त, सब को पवित्र करने वाले अग्रणी जगदीश्वर! तू ज्ञान का प्रकाश करने वाली, सब को आनन्दविभोर करने वाली अपनी वेदवाणी के माध्यम से दान दिव्यता आदि गुणों से युक्त विद्वानों और सज्जनों को हमारी ओर ले आ, उनकी हमसे संगति करा, उनको हमसे सत्कृत और अभिपूजित भी करा।

टि. *प्रकाशवती से* - **रोचिषा**। स्वदीप्त्या - सा.। अतिरुचियुक्तया - दया.। with radiant - W. with splendour - G.

*आनन्ददायिका से* - **मन्द्रया**। देवानां मादयित्र्या - सा.। विज्ञानानन्दप्रदया - दया.। with pleasing - W. with pleasant - G.

*जिह्वा से* - **जिह्वया**। वाण्या - दया.। जय.। with tongue - W. G.

*यजन भी करा* – **यक्षि च**। तान् यज – सा.। सत्करोषि सङ्गच्छसे च – दया.। and worship the gods - W. adore the gods - G. offer to them sacrifice - Ar.

**तं त्वां घृतस्नव् ईमहे चित्रभानो स्वर्दृशंम्। देवाँ आ वीतयें वह।। २।।**

तम्। त्वा। घृतस्नो इतिं घृतऽस्नो। ईमहे। चित्रभानो इति चित्रंऽभानो। स्वःऽदृशंम्।
देवान्। आ। वीतयें। वह।। २।।

*उस तुझसे, हे प्रकाश को बरसाने वाले, याचना करते हैं हम,*
*हे विचित्र दीप्तियों वाले!, सुखों का दर्शन कराने वाले से।*
*देवों को इस ओर, प्राप्ति के लिये, वहन कर तू।। २।।*

हे जगत् में प्रकाश को फैलाने वाले! हे अद्भुत ज्ञानरश्मियों वाले अग्रनायक जगदीश्वर! सुखों का दर्शन कराने वाले तुझ दयालु पिता से हम यही याचना करते हैं, कि तू दान, दिव्यता आदि गुणों वाले, विद्वान्, ज्ञानी जनों की हमसे सङ्गति कराने के लिये उन्हें हमारी ओर ले आ, ताकि हम उनकी सङ्गति में रहते हुए, अपने जीवन को उन जैसा बनाते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

टि. हे *प्रकाश को बरसाने वाले* – **घृतस्नो**। घृत इति शब्दो 'घृ क्षरणदीप्त्योर्' इत्यस्माद् धातोः सिध्यति, स्नुत इति च 'ष्णु प्रस्रवणे' इत्यस्माद् धातोः सिध्यति।। हे उदकस्य प्रापयितः – वे.। घृतस्य प्रेरक । यद्वा। घृतेन जनित। सा.। यो घृतं स्नाति शुन्धति तत्सम्बुद्धौ – दया.। Feeder upon butter - W. who droppest oil - G. who drippest the clarity -Ar.

*हे विचित्र दीप्तियों वाले* – **चित्रभानो**। चित्रदीप्ते – वे.। चित्रा नानाविधा भानवो रश्मयो यस्यासौ चित्रभानुः। तस्य सम्बोधनम्। सा.। अद्भुतदीप्ते – दया.। bright and variegated radiance - W. bright-rayed - G. of the rich and varied luminousness - Ar.

*सुखों का दर्शन कराने वाले से* – **स्वर्दृशम्**। सर्वस्य द्रष्टारम् – वे.। सा.। यः स्वर् आदित्येन दृश्यते तम् – दया.। the beholder of heaven - W. who lookest on the Sun - G. thou hast the vision of our world of the Truth - Ar.

*प्राप्ति के लिये* – **वीतये**। हविषां भक्षणाय – वे.। सा.। प्राप्तये – दया.। to partake of the (sacrificial) food - W. to feast - G. for their manifesting, or "for the journeying" to the luminous world of the Truth, or "for the eating" of the oblations - Ar.

**वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं सम् इंधीमहि। अग्ने बृहन्तंम् अध्वरे।। ३।।**

वीतिऽहोत्रम्। त्वा। कवे। द्युऽमन्तंम्। सम्। इधीमहि। अग्ने। बृहन्तंम्। अध्वरे।। ३।।

*यज्ञ में प्रीति वाले को, तुझको, हे क्रान्तदर्शी,*
*दीप्तियों वाले को, सम्यक् प्रदीप्त करते हैं हम।*
*हे अग्ने!, महान् को, हिंसारहित यज्ञ में।। ३।।*

हे तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान रखने वाले परमेश्वर! यज्ञ आदि शुभ कर्मों में प्रीति रखने और उनका आनन्द प्राप्त करने वाले तथा जगत् को अपने प्रकाश से प्रकाशित करने वाले तुझ महान् को हम यज्ञ आदि शुभ कर्मों में अपनी स्तुतियों और समर्पणों से प्रकाशित करते हैं, तेरे तेज, तेरी शक्ति और तेरी ख्याति को सब ओर बढ़ाते हैं।

टि. *यज्ञ में प्रीति वाले को* – वीतिहोत्रम्। प्रिययज्ञम् – वे.। कान्तयज्ञम् – सा.। whose food is the oblation - W. caller of the gods to feast - G. who carriest the offerings on their journey - Ar.

*दीप्तियों वाले को* – द्युमन्तम्। दीप्तिमन्तम् – वे.। सा.। प्रकाशवन्तम् – दया.। bright - G.

**अग्ने विश्वेभिर् आ गहि देवेभिर् हव्यदातये। होतारं त्वा वृणीमहे।। ४।।**

अग्ने। विश्वेभिः। आ। गहि। देवेभिः। हव्यऽदातये। होतारम्। त्वा। वृणीमहे।। ४।।

*हे अग्ने!, सब के साथ आ जा तू,*

*देवों के साथ, हव्यदान के लिये।*

*आह्वाता का तेरा, वरण करते हैं हम।। ४।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमात्मन्! तू हमारे समर्पणों को स्वीकार करने के लिये अपनी दिव्य शक्तियों के साथ हमारे हृदयमन्दिर में आ जा। हम तेरे उपासक तेरा अपने सन्मार्गद्रष्टा के रूप में वरण करते हैं।

टि. *हव्यदान के लिये* – हव्यदातये। यजमानायास्मै – वे.। हविषां दात्रे यजमानाय – सा.। दातव्यदानाय – दया.। to the donor (of the oblation) - W. to our sacrificial gift - G. for the giving of the oblation - Ar.

**यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह। देवैर् आ सत्सि बर्हिषि।। ५।। १९।।**

यजमानाय। सुन्वते। आ। अग्ने। सुऽवीर्यम्। वह। देवैः। आ। सत्सि। बर्हिषि।। ५।।

*यजमान के लिये, सवन करने वाले के,*

*सर्वतः इधर, हे अग्ने!, उत्तम बल को ला तू।*

*देवों के साथ आकर, बैठ जा बर्हि पर।। ५।।*

हे सन्मार्ग पर अग्रसर करने वाले परमेश्वर! जो उपासक अपने हव्य तुझे भेंट करता है और अपनी भक्ति के रस को तुझे समर्पित करता है, उसे तू उत्तम शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक बल प्राप्त कर। तू अपनी दिव्य शक्तियों के साथ आकर हमारे हृदय रूपी यज्ञशाला की पवित्र यज्ञवेदि पर विराजमान हो।

टि. *सवन करने वाले के (लिये)* – सुन्वते। अभिषवं कुर्वते – वे.। सा.। यज्ञं निष्पादते – दया.। who pours the juice - G. who presses the wine of his delight - Ar.

*उत्तम बल को* – सुवीर्यम्। शोभनं बलम् – वे.। heroic strength - G. perfect energy - Ar.

*बर्हि पर* – बर्हिषि। यज्ञे – वे.। सा.। upon the sacred grass - W. upon the grass - G. on the seat of the soul's fullness - Ar.

**समिधानः सहस्रजिद् अग्ने धर्माणि पुष्यसि। देवानां दूत उक्थ्यः।। ६।।**

सम्ऽइधानः। सहस्रऽजित्। अग्ने। धर्माणि। पुष्यसि। देवानाम्। दूतः। उक्थ्यः।। ६।।

*सम्यक् प्रदीप्त किया हुआ, हे बलवानों के विजेता!,*

*हे अग्ने!, पवित्र कर्मों का पालन करता है तू (हमारे)।*

*देवों के (शत्रुओं का) सन्तापक, प्रशंसा के योग्य।। ६।।*

हे महाबलशालियों को भी पराभूत कर डालने वाले अग्रणी परमेश्वर! जब हम उपासकों के द्वारा तुझे अपने हृदयों में प्रदीप्त किया जाता है, तो तू हमारे सब पवित्र कर्मों को पुष्ट करता हुआ, विघ्न-बाधाओं से उनकी रक्षा करता हुआ, उन्हें सम्पन्न करता है। तू दुष्ट आसुरी शक्तियों का सन्तापक होने से हम सब के द्वारा स्तुति के योग्य है।

टि. *हे बलवानों के विजेता* – **सहस्रजित्।** शत्रुसहस्रस्य जेतः – वे.। सा.। असंख्यानां विजेता – दया.। Victor of thousands - W. G. conqurer of thousandfold riches - Ar.

*पवित्र कर्मों का पालन करता है तू* – **धर्माणि पुष्यसि।** कर्म प्रवर्तयसि – वे.। कर्माणि यज्ञादिक्रियाः पोषयसि – सा.। धर्म्याणि कर्माणि पुष्यसि – दया.। favourest our holy rites - W. cherishest the laws - G. increasest the divine laws - Ar.

*सन्तापक* – **दूतः।** दुनोति सन्तापयति दुष्टान् इति दूतः।। यो दुनोति समाचारं दूरं दूराद् वा गमयत्यागमयति – दया.। messenger - W. envoy - G. Ar.

*प्रशंसा के योग्य* – **उक्थ्यः।** प्रशस्यः – वे.। सा.। प्रशंसनीयः – दया.। the honoured - W. laud-worthy - G. who hast the word - Ar.

**न्य१ग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्ठ्यम्। दधाता देवम् ऋत्विजम्।। ७।।**

नि। अग्निम्। जातऽवेदसम्। होत्रऽवाहम्। यविष्ठ्यम्। दधात। देवम् ऋत्विजम्।। ७।।

*नितरां अग्नि को, उत्पन्नों को जानने वाले को,*

*यज्ञों को वहन करने वाले को, युवतम को।*

*स्थापित करो तुम, प्रकाशमान को, ऋत्विक् को।। ७।।*

हे मनुष्यो! सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाला यह परमेश्वर संसार के सभी उत्पन्न पदार्थों को जानने वाला, जगत् के अन्दर प्रवर्तमान तथा अन्य सभी यज्ञों और शुभ कर्मों को सम्पन्न करने वाला है। यह सदा युवावस्था में रहने वाला और एकरस है। सभी कालों में यज्ञ आदि शुभ कर्मों का सम्पादन करने वाले, स्वयं प्रकाशमान और दूसरों को प्रकाशित करने वाले इस परमेश्वर को तुम अपने हृदयों में धारण करो।

टि. *नितरां स्थापित करो* – **नि दधात।** नि धत्त – वे.। सा.। reverence - W. set down - G. set within you - Ar.

*यज्ञों को वहन करने वाले को* – **होत्रवाहम्।** होत्राणां वोढारम् – वे.। होत्रस्य यज्ञस्य वोढारम् – सा.। यो होत्राणि हुतानि द्रव्याणि वहति – दया.। the bearer of oblations - W. the bearer of our sacred gifts - G. bearer of the offering - Ar.

*ऋत्विक् को* – **ऋत्विजम्।** ऋतौ यष्टारम् – वे.। सा.। यज्ञसाधकम् – दया.। the ministrant priest - W. minister - G. divine sacrificer in the seasons of the Truth - Ar.

**प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः। स्तृणीत बर्हिर् आसदे।। ८।।**

प्र। यज्ञः। एतु। आनुषक्। अद्य। देवव्यचःऽतमः। स्तृणीत। बर्हिः। आऽसदे।। ८।।

*प्रकर्ष से यज्ञ चलता रहे निरन्तर,*
*आज, देवों को अतिशय व्याप्त करने वाला।*
*बिछाओ तुम पवित्र आसन को, बैठने के लिये।। ८।।*

हे उपासको! आज और आगे आने वाले समय में भी तुम्हारा अन्तर्यज्ञ प्रकर्ष से निरन्तर चलता रहे। यह यज्ञ इन्द्रियों, मन और बुद्धि आदि दिव्य शक्तियों को व्याप्त करने वाला, उनका रूपान्तरण करने वाला है। इसी यज्ञ का यजन करने से वह अग्रणी परमेश्वर तुम्हारे अन्दर अवतरित होगा। तुम उसके बैठने के लिये अपने हृदयमन्दिर में पवित्र विचार रूपी आसन को बिछाओ।

टि. देवों को *अतिशय व्याप्त करने वाला* - **देवव्यचस्तमः**। अतिशयेन देवव्यापी - वे.। देवैः **प्रकाशमानैः** स्तोतृभिर् व्याप्ततमः - सा.। यो देवेषु दिव्येषु पदार्थेष्वतिशयेन व्याप्तः - दया.। most solemnly offered by the devout - W. comprising all the gods - G.that shall bring the whole epiphany of the godheads - Ar.

*बिछाओ तुम पवित्र आसन को* - **स्तृणीत बर्हिः**। आच्छादयत अन्तरिक्षम् - दया.। strew holy grass - G. strew the seat of thy soul - Ar.

**एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः।**
**देवासः सर्वया विशा।। ९।। २०।।**

आ। इदम्। मरुतः। अश्विना। मित्रः। सीदन्तु। वरुणः। देवासः। सर्वया। विशा।। ९।।

*आकर इसपर, मरुत्, अश्वी दोनों,*
*मित्र बैठें, (और बैठे) वरुण।*
*देव (सब बैठें), समस्त परिवार के साथ।। ९।।*

प्राणशक्तियां, बलशाली बुद्धि और मन, मैत्रीभाव, सुरक्षा का भाव तथा अन्य दिव्य शक्तियां अपने-अपने प्रभाव के साथ इस उत्तम विचारों रूपी आसन पर विराजें, सदा हमारे चिन्तन-मनन का विषय बनी रहें।

टि. मरुत् - **मरुतः**। मनुष्याः - दया.। the life-powers - Ar.

*अश्वी दोनों* - **अश्विना**। अध्यापकोपदेशकौ - दया.। the Riders of the Horse - Ar.

*मित्र* - **मित्रः**। सखा - दया.। the Lord of Love - Ar.

*वरुण* - **वरुणः**। सर्वोत्तमः - दया.। the Lord of Wideness - Ar.

*समस्त परिवार के साथ* - **सर्वया विशा**। सर्वैः अनुचरैः सह - वे.। समस्तेन स्वीयेन परिजनेन सार्धम् - सा.। विशा प्रजया - दया.। with all tueir company - G. with all their nation - Ar.

## सूक्त २७

ऋषिः - त्रिवृष्णस्य पुत्रस् त्र्यरुणः पुरुकुत्ससस्य पुत्रः त्रसदस्युः भरतस्य पुत्रो ऽश्वमेध एते त्रय ऋषयः। अत्रिर् वा ऋषिः। देवता - १-५ अग्निः, ६ इन्द्राग्नी। छन्दः - १-३ त्रिष्टुप्, ४-६ अनुष्टुप्। षड्टचं सूक्तम्।

**अनस्वन्ता सत्पतिर् मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः।**

**त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर् वैश्वानर त्र्यरुणश् चिकेत।। १।।**

अनस्वन्ता। सत्ऽपतिः। ममहे। मे। गावा। चेतिष्ठः। असुरः। मघोनः।
त्रैवृष्णः। अग्ने। दशऽभिः। सहस्रैः। वैश्वानर। त्रिऽअरुणः। चिकेत।। १।।

*शकट में जुते हुओं को, सुजनों का पालक, देता है मुझको,*
*बैलों को दो को, उत्तम ज्ञानी, प्राणदाता, पवित्र धनदाता।*
*तीनों लोकों में सुखों का वर्षक, हे अग्ने, दस हजार से,*
*हे सर्वजननायक!, तीन ज्योतियों वाला, जाना जाता है।। १।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे चलाने वाले परमेश्वर! तू सज्जनों का पालक, उत्तम ज्ञानी, सब जीवों का प्राणदाता और सब को पवित्र धन प्रदान करने वाला है। तू मुझ उपासक को इस शरीर रूपी गाड़ी के साथ इसे खींचने के लिये बल और बुद्धि रूपी दो बैल भी प्रदान करता है। हे सब मनुष्यों के नायक प्रभो! तू पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ इन तीनों लोकों में अरुण वर्ण वाली तीन ज्योतियों अग्नि, विद्युत् और सूर्य के समान परोपकार के गुणों वाला होने से और हजारों-हजारों सुखों की वर्षा करने वाला होने से सर्वलोकप्रसिद्ध है।

टि. *शकट में जुते हुओं को* - **अनस्वन्ता।** अनोवहनयोग्यौ - वे.। अनस्वन्तौ। अनसा शकटेन संयुक्तौ। सा.। two (oxen) with a wagon - G. two (cows) of the Light that draw his wain - Ar.

*देता है* - **ममहे।** पुरुषव्यत्ययः।। अददात् - वे.। ददौ। महि दाने। सा.। सत्कुर्याम् - दया.।

*उत्तम ज्ञानी* - **चेतिष्ठः।** अतिशयेन देवान् प्रति स्तोत्रवतो ज्ञाता - वे.। ज्ञातृतमः - सा.। अतिशयेन चेतिता ज्ञापकः - दया.। most wise -W. famousest of nobles - G.

*प्राणदाता* - **असुरः।** निरसिता शत्रूणाम् - वे.। असुरः बलवान् - सा.। असुषु प्राणेषु रममाणः - दया.। powerful - W. god-like - G.

*पवित्र धनदाता* - **मघोनः।** धनवान् - वे.। मघवा धनवान्। प्रथमार्थे ङसिः। सा.।

*तीनों लोकों में सुखों का वर्षक* - **त्रैवृष्णः।** त्रिवृष्णपुत्रः - सा.। यस् त्रिषु वर्षति स एव - दया.। son of the triple Bull - Ar.

*तीन ज्योतियों वाला* - **त्र्यरुणः।** त्र्यरुणः एतन्नामा राजर्षिः - सा.। त्रयो ऽरुणा गुणा यस्य सः - दया.। He of the triple dawn - Ar.

*जाना जाता है* - **चिकेत।** पुरुषव्यत्ययः।। ममाग्रतः प्रादुर् अभूत् - वे.। सर्वैर् जनैर् अनेन दानेन ज्ञायते - सा.। has become renowned - W. has distinguished himself - G. has awakened to knowledge - Ar.

**यो मे शता च विंशतिं च गोनां हरी च युक्ता सुधुरा ददाति।**
**वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानो ऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म।। २।।**

यः। मे। शता। च। विंशतिम्। च। गोनाम्। हरी इति। च। युक्ता। सुऽधुरा। ददाति।
वैश्वानर। सुऽस्तुतः। ववृधानः। अग्ने। यच्छ। त्रिऽअरुणाय। शर्म।। २।।

*जो मुझे सैंकड़ों (धनों) को, और बीस गौओं को,*

*अश्वों को दो को, जुते हुओं को, सुष्ठु धुरावाहकों को, देता है।*
*हे सब के नायक! सम्यक् स्तुति किया हुआ, वृद्धि को प्राप्त होता हुआ,*
*हे अग्ने!, प्रदान कर तू, तीन ज्योतियों वाले को, शरण (अपनी)।। २।।*

अपने उपासकों के द्वारा भली प्रकार स्तुति किया हुआ और इसलिये वृद्धि को प्राप्त होता हुआ, हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले सर्वजननायक परमेश्वर!, जो तू मुझे और मुझ जैसे अन्य उपासकों को सैंकड़ों द्रव्य, पाँच महाभूत, पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच कर्मेन्द्रियां और पाँच इन्द्रियविषय इन इन्द्रियसम्बन्धी बीस वस्तुओं को और शरीररूपी रथ में जुतकर उसे भली प्रकार खींचने वाले प्राण और अपान रूपी दो अश्वों को प्रदान करता है, अग्नि विद्युत् और सूर्य इन तीन परोपकारी दिव्य ज्योतियों के गुणों को अपने अन्दर धारण करने वाले मुझ दानी पुरुष को अपनी शरण में ले ले और घर-गृहस्थ का सब प्रकार का सुख प्रदान कर।

टि. *सैंकड़ों धनों को और बीस गौओं को* - **शता च विंशतिं च गोनाम्।** पूर्वोक्तेभ्यो ऽधिकं शतानि विंशतिं च - वे.। शतानि सुवर्णानां गवां विंशतिं च - सा.। a hundred kine and twenty - G. hundred and twenty cows of dawn - Ar.

*सुष्ठु धुरावाहकों को* - **सुधुरा।** शोभनधूर्वहनसमर्थौ - वे.। सुष्ठु धुरं वहन्तौ - सा.। burden-bearing - W. good at draught - G. that bear aright the yoke - Ar.

*प्रदान कर तू शरण* - **यच्छ शर्म।** सुखं प्रयच्छ - वे.। सा.। देहि गृहं सुखं वा - दया.। bestow happiness - W. protect - G. extend peace and bliss - Ar.

**एवा तें अग्ने सुमतिं चंकानो नविंष्ठाय नवमं त्रसदंस्युः।**
**यो मे गिरंस् तुविजातस्यं पूर्वीर् युक्तेनाभि त्र्यंरुणो गृणातिं।। ३।।**

एव। ते। अग्ने। सुऽमतिम्। चकानः। नविंष्ठाय। नवमम्। त्रसदंस्युः।
यः। मे। गिरंः। तुविऽजातस्यं। पूर्वीः। युक्तेनं। अभि। त्रिऽअंरुणः। गृणातिं।। ३।।

*निश्चय से तेरे लिये, हे अग्ने!, सुमति की कामना करता हुआ,*
*अत्यन्त स्तुत्य के लिये, स्तुति को (गाता है), दुष्टों को डराने वाला।*
*जो मेरी स्तुतियों को, बहुत जन्मों वाले की, बहुत संख्या वालियों को,*
*समाहित मन से, मुख्यतया, तीन ज्योतियों वाला, स्वीकारता है।। ३।।*

हे सन्मार्गदर्शन करने वाले जगदीश्वर! अग्नि, विद्युत् और सूर्य रूपी इन तीन ज्योतियों वाला जो तू बहुत जन्मों को ग्रहण करने वाले मुझ उपासक की बहुसंख्य स्तुतियों को अत्यन्त समाहित मन के साथ स्वीकार करता है, सो काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को भयभीत करने वाला मैं तेरा भक्त तुझसे सद्बुद्धि और कृपा की कामना करता हुआ तुझ अत्यन्त स्तुत्य के लिये भावविभोर होकर अपने स्तोत्र का गान करता हूँ।

टि. *कामना करता हुआ* - **चकानः।** चकानः भवति निवेदयतीत्यर्थः - वे.। चकानः कामयमानः - सा.। दया.। craving (thy favour) - G. desiring (thy grace of mind) - Ar.

*अत्यन्त स्तुत्य के लिये* - **नविष्ठाय।** नविष्ठाय अत्यन्तं स्तुत्याय - सा.। अतिशयेन नवीनाय -

दया.। youthful - G. new-given for him - Ar.

*स्तुति को (गाता है)* - **नवमम्**। नवतमां (सुमतिम्) - सा.। नवानां पूरणम् - दया.। for the ninth time - G. new-manifested - Ar.

*दुष्टों को डराने वाला* - **त्रसदस्युः**। त्रसदस्युः - वे.। त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात् सः - दया.। the disperser of destroyers - Ar.

*बहुत जन्मों वाले की* - **तुविजातस्य**। बहुपुत्रस्य - वे.। बह्वपत्यस्य मे - सा.। of me who have many children - W. from me the mighty - G. of my many births - Ar.

*समाहित मन से* - **युक्तेन**। युक्तेन वचनेन - वे.। अभियुक्तेन मनसा - सा.। कृतयोगाभ्यासेन मनसा - दया.। with attentive spirit - G. with attentive mind - Ar.

*स्वीकारता है* - **गृणाति**। इदं ददामीति वदतीत्यर्थः - वे.। इदं गृहाणेदं गृहाणेति तथा मां ब्रवीति - सा.। accepteth - G. gives response - Ar.

**यो म इति प्रवोचत्यश्वमेधाय सूरये।**
**ददद् ऋचा सनिं यते ददन् मेधाम् ऋतायते।। ४।।**

यः। मे। इति। प्रऽवोचति। अश्वऽमेधाय। सूरये।
ददत्। ऋचा। सनिम्। यते। ददत्। मेधाम्। ऋतऽयते।। ४।।

*जो 'मुझे दे' ऐसी प्रार्थना करता है,*
*आशुगति मेधा वाले को, मेधावी को।*
*देता है, ऋचा के साथ, भोग को, यत्नशील को,*
*देता है मेधा को, सत्यनियम की कामना वाले को।। ४।।*

परमेश्वर उत्तम मेधा वाला है। वह तीव्र गति वाली मेधा से युक्त है। जो उपासक उस की शरण में आकर उससे प्रार्थना करता है - 'हे मेरे दाता! तू मुझे दे', स्तुतिगान के साथ प्रयत्न करने वाले ऐसे उस प्रार्थी को वह भोग प्रदान करता है। सत्यनियम से प्यार करने वाले उस याचक को वह प्रभु उत्तम मेधा प्रदान करता है।

टि. *आशुगति मेधा वाले को* - **अश्वमेधाय**। अश्वमेधाय राजर्षये - सा.। अश्वमेधाय आशुपवित्राय - दया.। to the (illumined) giver of the Horse-sacrifice - Ar.

*ऋचा के साथ यत्नशील को* - **ऋचा यते**। अग्नेः स्तोत्रेण सहात्मनः समीपं गच्छते -सा.। ऋचा ऋग्वेदादिना यत्नशीलाय - दया.। comes (to him) with a verse - W.

*भोग को* - **सनिम्**। धनम् - सा.। सेवनीयां सत्यासत्ययोर् विभाजिकां वाणीम् - दया.। gain - G. possession of the goal of his journey - Ar.

*सत्यनियम की कामना वाले को* - **ऋतायते**। यज्ञम् इच्छते - वे.। सा.। ऋतं कामयमानाय - दया.। who wishes to offer sacrifice - W. to him who keeps the Law - G. to the seeker of the Truth - Ar.

**यस्य मा परुषाः शतम् उद्धर्षयन्त्युक्षणः।**

**अश्वमेधस्य दानाः सोमा इव त्र्याशिरः।। ५।।**

यस्य। मा। परुषाः। शतम्। उत्ऽहर्षयन्ति। उक्षणः।
अश्वऽमेधस्य। दानाः। सोमाःइव। त्रिऽआशिरः।। ५।।

*जिसके मुझको, कठोर शरीरों वाले, सौ,*
*उत्कर्ष से हर्षित करते हैं, सेचनसमर्थ वीर।*
*आशुगति मेधा वाले के (ये) दान,*
*सोमों की तरह, त्रिमिश्रण वालों की।। ५।।*

आशुगति अर्थात् उत्तम मेधा वाले उस अग्रणी परमेश्वर के द्वारा प्रदान किये हुए, परिश्रम के कारण कठोर शरीरों वाले, सेचनसमर्थ पुत्र, पौत्र आदि ये असंख्य दान मुझे उसी प्रकार आनन्दित करते हैं, जिस प्रकार दूध, दही और सत्तु इन तीन से मिश्रित सोम उन्हें पीने वालों को आनन्दित करते हैं।

टि. *कठोर शरीरों वाले* - **परुषाः**। बलोत्सिक्ताः - वे.। परुषाः कामानां पूरकाः - सा.। कठोराः - दया.। robust - W. of speckled hue - G. strong - Ar.

*सेचनसमर्थ वीर* - **उक्षणः**। उक्षाणो बलीवर्दाः - सा.। मधुरैर् उपदेशैः सेचमानाः - दया.। oxen - W.G. bulls - Ar.

*दान* - **दानाः**। दत्ताः - सा.। ददानाः - दया.। the offering - W. the gifts - G. Ar.

*त्रिमिश्रण वालों की* - **त्र्याशिरः**। सक्तवः पयो धाना इति सोममिश्रणानि त्रीणि - वे.। दधि-सक्तुपयोरूपास् तिस्र आशिरो ऽधिश्रयणसाधनभूता येषां ते त्र्याशिरः - सा.। यास् त्रिभिर् जीवाग्नि-वायुभिर् अश्यन्ते भुज्यन्ते ताः - दया.। triple-mixed - W. thrice-mingled draughts - G. with triple infusions - Ar.

**इन्द्राग्नी शतदाव्न्यश्वमेधे सुवीर्यम्।**
**क्षत्रं धारयतं बृहद् दिवि सूर्यमिवाजरम्।। ६।। २१।।**

इन्द्राग्नी इति। शतऽदाव्नि। अश्वऽमेधे। सुऽवीर्यम्।
क्षत्रम्। धारयतम्। बृहत्। दिवि। सूर्यम्ऽइव। अजरम्।। ६।।

*हे इन्द्र और अग्नि! सैंकड़ों देने वाले पर,*
*आशुगति मेधा वाले पर, उत्तम वीर्य को।*
*क्षात्रबल को, धारण करो तुम, महान् को,*
*द्युलोक में सूर्य को जैसे, जरारहित को।। ६।।*

हे परमेश्वर की दुष्टसंहारक और सन्मार्गदर्शक दिव्य शक्तियो! तुम आशुगति मेधा वाले दानी महापुरुष के लिये पुत्र, पौत्र आदि उत्तम सन्तानों को और दीनों तथा बलहीनों की रक्षा करने वाले महान् क्षात्रबल को इस प्रकार धारण करो, जिस प्रकार जरा आदि से रहित सूर्य को द्युलोक में धारण किया जा रहा है।

टि. *हे इन्द्र और अग्नि* - इन्द्राग्नी। the God-Mind and the God-Will - Ar.

*सैंकड़ों देने वाले पर* - **शतदाव्नि**। शतम् अपरिमितम् अर्थिभ्यो धनं ददातीति शतदावा, तस्मिन्।

सा.। असंख्यदाने - दया.। on the munificent - W. who bestows a hundred gifts - G.

*उत्तम वीर्य को -* **सुवीर्यम्।** शोभनवीर्यसहितम् - सा.। सुष्ठु वीर्यं पराक्रमो बलं च यस्मिंस् तत् - दया.। (with) excellent posterity - W. hero-power - G. a perfect energy - Ar.

*क्षात्रबल को -* **क्षत्रम्।** क्षत्रम् (निघ. २.१०) इति धननामेति। वे.। (जरारहितं) क्षत्रं धनम् - सा.। क्षत्रियकुलं राष्ट्रं वा - दया.। wealth - W. rule - G. a vast force of battle - Ar.

## सूक्त २८

ऋषिः - अत्रिगोत्रोत्पन्ना विश्ववारा। देवता - अग्निः। छन्दः - १,३ त्रिष्टुप्, २ जगती, ४ अनुष्टुप्, ५,६ गायत्री, षड्ऋचं सूक्तम्।

**समिद्धो अग्निर् दिवि शोचिर् अश्रेत् प्रत्यङ्ङुषसम् उर्विया वि भाति।**
**एति प्राची विश्ववारा नमोभिर् देवाँ ईळाना हविषा घृताची॥ १॥**

सम्ऽइद्धः। अग्निः। दिवि। शोचिः। अश्रेत्। प्रत्यङ्। उषसम्। उर्विया। वि। भाति।
एति। प्राची। विश्वऽवारा। नमःऽभिः। देवान्। ईळाना। हविषा। घृताची॥ १॥

*प्रदीप्त हुआ अग्नि अन्तरिक्ष में, तेज का आश्रय लेता है,*
*अभिमुख होकर उषा के, विस्तार के साथ खूब चमकता है।*
*उदित होती है पूर्वदिशा में सब से वरणीया, नमस्कारों के साथ,*
*देवों की स्तुति करती हुई, हवि वाली स्रुवा से (आहुति देती हुई)॥ १॥*

*अधिदेव :* ब्राह्ममुहूर्त्त में जब अग्नि यज्ञकुण्ड में प्रदीप्त होता है, तो उसका तेज अन्तरिक्ष लोक में फैल जाता है। उस समय सब के द्वारा वरण के योग्य अथवा सब के कष्टों, दुःखों और पापों का निवारण करने वाली उषा नमस्कारों के साथ सभी देवों की स्तुति करती हुई और हवि वाली अपनी स्रुवा से देवों को आहुति देती हुई उदित होती है। वह अग्नि उदित हुई उस उषा के सम्मुख बड़े विस्तार के साथ खूब प्रकाशित होता है।

*अध्यात्म :* अध्यात्म में अग्नि परमात्मतत्त्व, अन्तरिक्ष हृदयाकाश अथवा अन्तश्चेतना, उषा ज्ञान की प्रथम रश्मियां और देव इन्द्रियां, प्राण, मन, बुद्धि आदि हैं। प्रभुमिलन की प्रातःवेला में जब परमात्मतत्त्व हृदय के अन्दर अपने प्रकाश को प्रज्वलित करता है, तो उसी समय वरण के योग्य प्रारम्भिक ज्ञानरश्मियां उत्पन्न होकर इन्द्रियों तथा मन, बुद्धि आदि को सत्कृत करती हुई उन्हें अपनी ऊर्जा प्रदान करती हैं। इस तरह ज्ञानरश्मियों के उदय में परमात्मतत्त्व अन्तश्चेतना में अपने प्रकाश को खूब विस्तारता है।

टि. *तेज का आश्रय लेता है -* **शोचिः अश्रेत्।** औषसं तेजः श्रयति - वे.। शोचिः तेजः श्रयति - सा.। spreads lustre - W. hath sent his lustre - G. rises to pure light - Ar.

*विस्तार के साथ -* **उर्विया।** उरु विस्तीर्णम् - सा.। widely - W. G.

*सब से वरणीया -* **विश्ववारा।** सर्वैर् वरणीया - वे.। सर्वम् अपि पापरूपं शत्रुं वारयित्री एतन्नामिका - सा.। या विश्वं वृणोति सा - दया.।. all blessing - G. the Dawn - Ar.

*हवि वाली स्रुवा से* - **हविषा घृताची।** हविषा सह घृतं चाञ्चन्ती प्रवयन्ती प्रवर्तयन्ती यज्ञम् इत्यर्थः - वे.। हविषा पुरोडाशादिलक्षणेन युक्तया घृताच्या स्रुचा सहिता - सा.। bearing the ladle with the oblation - W. with the oblation, luminous with the clarity - Ar.

**स॒मि॒ध्यमा॑नो अ॒मृत॑स्य राजसि ह॒विष्कृ॒ण्वन्तं॑ सचसे स्व॒स्तये॑।**
**विश्व॑ स ध॑त्ते॒ द्रवि॑णं॒ यम् इन्व॑स्याति॒थ्यम् अ॑ग्ने॒ नि च॑ धत्त॒ इत् पु॒रः॥ २॥**

स॒म्ऽइ॒ध्यमा॑नः। अ॒मृत॑स्य। रा॒ज॒सि॒। ह॒विः। कृ॒ण्वन्त॑म्। स॒च॒से॒। स्व॒स्तये॑।
विश्व॑म्। सः। ध॒त्ते॒। द्रवि॑णम्। यम्। इन्व॑सि। आ॒ति॒थ्यम्। अ॒ग्ने॒। नि। च॒। ध॒त्ते॒। इत्। पु॒रः॥ २॥

*सम्यक् दीप्त किया जाता हुआ, अमरता पर शासन करता है तू,*
*हवि प्रदान करने वाले को, युक्त करता है तू कल्याण से।*
*सम्पूर्ण को वह धारण करता है धन को, जिसे व्याप्त करता है तू,*
*और अतिथि-सत्कार को, हे अग्ने!, नितरां रखता ही है वह सम्मुख (तेरे)॥ २॥*

हे सबको सन्मार्ग पर ले चलने वाले परमेश्वर! जब उपासक अपने हृदय में तेरी जोत को जगा लेता है, तो अमरता का स्वामी तू जगदीश उसे अमरता प्रदान कर देता है। हे सर्वेश्वर! जो यजमान तुझे अपनी आहुति प्रदान करता है, अपना सर्वस्व तुझे समर्पित कर देता है, उसे तू कल्याण से युक्त कर देता है। हे प्रभो! जिस भाग्यशाली मनुष्य को तू प्राप्त हो जाता है, जिसपर तेरी कृपादृष्टि हो जाती है, लौकिक और अलौकिक सभी प्रकार के धन उसे प्राप्त हो जाते हैं। वह तुझे अपना पूज्य अतिथि बना लेता है और तेरा खूब अतिथिसत्कार करता है।

टि. *अमरता पर शासन करता है तू* - **अमृतस्य राजसि।** अन्नस्य ईश्वरो भवसि - वे.। उदकस्य राजसि। ईशिषे। सा.। कारणस्योदकस्य प्रकाशसे - दया.। thou rulest over ambrosial (water) - W. thou art King of the immortal world - G. thou art king of immortality - Ar.

*युक्त करता है तू कल्याण से* - **सचसे स्वस्तये।** सेवसे अविनाशाय - वे.। सा.। समवैषि सुखाय - दया.। thou art present for his welfare - W. thou attendest for his weal - G.

*जिसे व्याप्त करता है तू* - **यम् इन्वसि।** यं त्वं व्याप्नोषि - वे.। यं यजमानं इन्वसि गच्छसि - सा.। to whom thou repairest - W. whom thou urgest on - G.

*नितरां रखता ही है वह सम्मुख (तेरे)* - **नि धत्ते इत् पुरः।** अतिथीनाम् अग्रतो निधत्ते एव - वे.। तव पुरस्ताद् एव नि धत्ते स्थापयति - सा.। he sets thee within in his front - Ar.

**अग्ने॒ शर्ध॑ मह॒ते सौभ॑गाय॒ तव॑ द्यु॒म्नान्यु॑त्त॒मानि॑ सन्तु।**
**सं जा॑स्प॒त्यं सु॒यम॒म् आ कृ॑णुष्व शत्रूय॒ताम् अ॒भि ति॑ष्ठा॒ महां॑सि॥ ३॥**

अग्ने॑। शर्ध॑। म॒ह॒ते। सौभ॑गाय। तव॑। द्यु॒म्नानि॑। उ॒त्ऽत॒मानि॑। स॒न्तु॒।
सम्। जाः॒ऽप॒त्यम्। सु॒ऽयम॑म्। आ। कृ॒णु॒ष्व॒। श॒त्रु॒ऽय॒ताम्। अ॒भि। ति॒ष्ठ॒। महां॑सि॥ ३॥

*हे अग्ने!, पराजित कर (शत्रुओं को), महान् ऐश्वर्य के लिये,*
*तेरे तेज उत्तम, (हमारे कल्याण के लिये) होवें (सदा ही)।*
*सम्यक् दाम्पत्य को (हमारे), सुनियन्त्रण वाला सर्वतः कर तू,*

*(हमारे साथ) शत्रुता चाहने वालों के, अभिभूत कर तू तेजों को।। ३।।*

हे मनुष्यों को सन्मार्ग पर ले चलने वाले परमेश्वर! तू हमें लौकिक और अलौकिक महान्, उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करने के लिये हमारे बाह्य और आभ्यन्तर शत्रुओं को नष्ट कर दे। तेरे उत्तम तेज सदा हमारे कल्याण के लिये होवें। हे जगदीश! तू हमारे दाम्पत्य को संयम, नियमितताओं और मर्यादाओं से युक्त कर। जो दुष्ट जन सदा हमसे बैर रखना चाहते हैं, तू उनके तेजों को नष्ट कर दे।

टि. *पराजित कर (शत्रुओं को)* - **शर्ध**। उद्युक्तो भव - वे.। शत्रून् सहस्व - सा.। प्रंशंसित-बलयुक्त - दया.। repress - W. show thyself strong - G. put forth thy battling might - Ar.

*तेज* - **द्युम्नानि**। अन्नानि - वे.। धनानि तेजांसि वा - सा.। यशांसि धनानि वा - दया.। riches - W. splendours - G. illumination - Ar.

*दाम्पत्य को* - **जास्पत्यम्**। जायापत्योर् द्वन्द्वम् - वे.। जा जाया च पतिश् च जायापती, तयोः कर्म जास्पत्यम्। तत्। सा.। जायायाः पतित्वम् - दया.। the relation of man and wife - W. our household relationship - G. of the Lord and his Spouse - Ar.

*सुनियन्त्रण वाला* - **सुयमम्**। सुष्ठु संयुक्तम् - वे.। सुष्ठु नियमनोपेतम्। अन्योऽन्य- संश्लिष्टम् इत्यर्थः। सा.। शोभनो यमः सत्याचरणनिग्रहो यस्मिंस् तम् - दया.। easy to maintain - G. well-governed union - Ar.

*अभिभूत कर तू तेजों को* - **अभि तिष्ठ महांसि**। तेजांसि अभि तिष्ठ - वे.। तेजांस्याक्रमस्व - सा.। overpower the energies - W. overcome the might - G. set thy foot on the greatness (of hostile powers) - Ar.

**समिद्धस्य प्रमहसो ऽग्ने वन्दे तव श्रियम्।**
**वृषभो द्युम्नवाँ असि सम् अध्वरेष्विध्यसे।। ४।।**

सम्ऽइद्धस्य। प्रऽमहसः। अग्ने। वन्दे। तव। श्रियम्।
वृषभः। द्युम्नऽवान्। असि। सम्। अध्वरेषु। इध्यसे।। ४।।

*सम्यक् प्रदीप्त की, प्रकृष्ट तेजस्वी की,*
*हे अग्ने!, प्रशंसा करता हूँ मैं, तेरी शोभा की।*
*सुखों का वर्षक, तेजों का स्वामी, है तू,*
*भली प्रकार यज्ञों में प्रदीप्त किया जाता है तू।। ४।।*

हे सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले जगदीश्वर! बाह्य और आभ्यन्तर यज्ञों में प्रदीप्त किये जाने वाले और महान् तेजस्वी बने हुए की तेरी शोभा की मैं मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करता हूँ। तू हम उपासकों पर अपने सुखों की वर्षा करने वाला और तेजों का स्वामी है। तुझे याजकों के द्वारा बाह्य और आभ्यन्तर यज्ञों में सदा प्रदीप्त किया जाता है।

टि. *प्रकृष्ट तेजस्वी की* - **प्रमहसः**। प्रकृष्टतेजसः - वे.। सा.। प्रकृष्टस्य महतः - दया.।

*प्रशंसा करता हूँ मैं तेरी शोभा की* - **वन्दे तव श्रियम्**। स्तौमि तव कान्तिम् - वे.। तव सम्बन्धिनीं दीप्तिम् अहं यजमानः स्तौमि - सा.। प्रशंसामि सत्करोमि वा तव धनम् - दया.। I praise

the glory of thee - W. Ar.

*सुखों का वर्षक* - **वृषभः**। वर्षिता कामानाम् - वे.। सा.। बलिष्ठ उत्तमो वा - दया.। a Steer - G. thou art the Bull - Ar.

*तेजों का स्वामी* - **द्युम्नवान्**। अन्नवान् - वे.। धनवान् - सा.। यशस्वी - दया.। of brilliant splendour - G. with the illuminations - Ar.

**समिद्धो अग्न आहुत देवान् यक्षि स्वध्वर। त्वं हि हव्यवाळ् असि।। ५।।**

सम्ऽइद्धः। अग्ने। आऽहुत। देवान्। यक्षि। सुऽअध्वर। त्वम्। हि। हव्यऽवाट्। असि।। ५।।

*सम्यक् प्रदीप्त किया हुआ, हे अग्ने!, हे यजन किये हुए,*
*देवों को अभिपूजित कर तू, हे यज्ञों के मार्गदर्शक।*
*तू चूँकि हव्यों को, वहन करने वाला है।। ५।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले, हे याजकों के द्वारा सदा यजन किये जाने वाले, हे यज्ञों में याजकों का मार्गदर्शन करने वाले परमेश्वर!, चूँकि तू हमारे हव्यों, हमारे समर्पणों, हमारी पूजाओं को स्वीकार करने वाला है और उन्हें सब दिव्य शक्तियों तक पहुँचाने वाला है, इसलिये तू हमारे द्वारा समर्पित की हुई पूजाओं को उनकी पात्रभूत इन सभी दिव्य शक्तियों तक पहुँचा दे।

टि. *हे यजन किये हुए* - **आहुत**। यजमानैः समन्ताद् हुत - सा.। सत्कृत - दया.। invoked - W. G. that receivest our offerings - Ar.

*देवों को अभिपूजित कर तू* - **देवान् यक्षि**। द्योतमानान् इन्द्रादीन् यजस्व - सा.। दिव्यान् गुणान् विदुषो वा पूजयसि - दया.। worship the gods - W. serve the gods - G. offer our oblation to the godheads - Ar.

*हे यज्ञों के मार्गदर्शक* - **स्वध्वर**। शोभनयज्ञोपेत - सा.। सुष्ठु अहिंसायुक्त - दया.। at the holy rite - W. thou skilled in sacrifice - G. perfect guide of the sacrifice - Ar.

**आ जुहोता दुवस्यताग्निं प्रयत्यध्वरे। वृणीध्वं हव्यवाहनम्।। ६।। २२।।**

आ। जुहोत। दुवस्यत। अग्निम्। प्रऽयति। अध्वरे। वृणीध्वम्। हव्यऽवाहनम्।। ६।।

*सब ओर से यजन करो, परिचर्या करो,*
*अग्नि की, प्रवृत्त होने पर यज्ञ के।*
*वरण करो तुम, हव्यों के वाहक का।। ६।।*

हे उपासको! जब बाह्य अथवा अन्तर्यज्ञ प्रारम्भ हो जाए, तो तुम उस अग्रणी परमेश्वर की हृदय से पूजा करो और उसकी सब प्रकार से परिचर्या करो। वही तुम्हारे समर्पणों को स्वीकार करने वाला और उनसे सब दिव्य शक्तियों को सन्तुष्ट करने वाला है। वही तुम्हारी पूजा का पात्र है।

टि. *यजन करो* - **जुहोत**। जुहुत - वे.। दत्त। अत्र संहितायाम् इति दीर्घः। दया.।

*प्रवृत्त होने पर यज्ञ के* - **प्रयति अध्वरे**। वर्तमाने यज्ञे - वे.। अस्मदीययागे प्रयति प्रवृत्ते सति - सा.। प्रयत्नसाध्ये शिल्पादिव्यवहारे - दया.। when the sacrifice is solemnized - W.while the sacrificial rite proceeds - G. Ar.

*हव्यों के वाहक का* – हव्यवाहनम्। अग्निर् हव्यवाहनस् तम्। न तु कव्यवाहनं नाप्यसुराणाम् अग्निं सहरक्षसम् इति। वे.। हविषां वोढारम् एतन्नामकम्। त्रयो वा अग्नयो हव्यवाहनो देवानां कव्यवाहनः पितॄणां सहरक्षा असुराणाम्। सा.। उत्तमपदार्थप्रापकम् – दया.। the bearer of the oblation to the gods - W. the carrier of our oblation - Ar.

## सूक्त २९

ऋषिः – गौरिवीतिः शाक्त्यः। देवता – इन्द्रः। छन्दः – त्रिष्टुप्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**त्र्य॑र्य॒मा मनु॑षो दे॒वता॑ता॒ त्री रो॑च॒ना दि॒व्या धा॑रयन्त।**
**अर्च॑न्ति त्वा म॒रुत॑: पू॒तद॑क्षा॒स् त्वम् ए॑षा॒म् ऋषि॑र् इन्द्रासि॒ धीर॑:।। १।।**

त्री। अ॒र्य॒मा। मनु॑षः। दे॒वऽता॑ता। त्री। रो॒च॒ना। दि॒व्या। धा॒र॒य॒न्त॒।
अर्च॑न्ति। त्वा॒। म॒रुत॑:। पू॒तऽद॑क्षाः। त्वम्। ए॒षा॒म्। ऋषि॑:। इ॒न्द्र॒। अ॒सि॒ धीर॑:।। १।।

*तीन तेज हैं, मनुष्य से सम्बन्धित देवपूजा में,*
*तीन ज्योतियों को, दिव्यों को, धारण करती हैं वे।*
*अर्चना करते हैं तेरी मरुत्, पवित्र बलों वाले,*
*तू इनका ऋषि, हे इन्द्र!, है प्रज्ञावान्।। १।।*

मनुष्य जो देवपूजा आदि करता है, उसका सीधा सम्बन्ध तेजों से युक्त तीन लोकों से है। ये तीन लोक हैं – पृथिवीलोक, अन्तरिक्षलोक और द्युलोक। ये तीनों लोक तीन दिव्य ज्योतियों को धारण किये हुए हैं, अपने साथ लिये हुए हैं – पृथिवीलोक अग्नि को, अन्तरिक्षलोक विद्युत् अथवा वायु को और द्युलोक सूर्य को। हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तेजों से युक्त इन तीनों लोकों के कल्याण के लिये पवित्र बलों से युक्त, प्राणधारी मनुष्य तेरी पूजा-अर्चना करते हैं। और हे परमेश्वर! प्रज्ञावान् तू इन सब का द्रष्टा है, इनके शुभाशुभ कर्मों को देखने वाला और तदनुसार फलों का दाता है।

''मनुष्य का जीवन एक यज्ञ है, जिसमें मन, बुद्धि और चित्त ये तीन अर्यमा या श्रेष्ठ तत्त्व मनन, विवेक और ज्ञानरूपी तीन दिव्य शक्तियां धारण करते हैं। मरुत्रूपी प्राण पवित्र होकर इस यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करते हैं। इन्द्र अर्थात् आत्मा इस यज्ञ को देखता है।'' – सातवळेकर।

टि. *तीन तेज हैं* – त्री अर्यमा। अर्यमशब्दः प्रेरयितृवचनः। त्रीणि तेजांसि अग्न्यादीनि प्रेरयन्ति। वे.। त्रीण्यर्यमाणि यानि तेजांसि सन्ति – सा.। there are three refulgences - W. three great lustres - G.

*मनुष्य से सम्बन्धित देवपूजा में* – मनुषः देवताता। मनुष्यं यज्ञे – वे.। मनोः सम्बन्धिनि यज्ञे – सा.। in the adoration of the gods by Manu - W. man's worship of the gods - G.

*तीन ज्योतियों को, दिव्यों को* – त्री रोचना दिव्या। त्रीण्येव तानि अन्तरिक्षस्थानि सर्वदा वर्तन्ते – वे.। तथा त्रीणि रोचमानानि वाय्वग्निसूर्यात्मकानि दिव्यान्यन्तरिक्षे भवानि – सा.। three luminaries in heaven - W. and three celestial lights - G.

*मरुत्, पवित्र बलों वाले* – मरुतः पूतदक्षाः। मरुतः च शुद्धबलाः – वे.। सा.। मनुष्याः

पवित्रबलाः - दया.। Maruts of pure energy - W. Maruts gifted with pure strength - G.

*ऋषि प्रज्ञावान्* - **ऋषिः धीरः**। त्वम् एषाम् अग्न्यादीनां न्यूनातिरिक्तावेक्षणं प्रभुः सन् करोषि प्राज्ञः - वे.। द्रष्टा भवसि धीमान् - सा.। intelligent Ṛṣi - W. sapient Ṛṣi - G.

**अनु यद् ईं मरुतो मन्दसानम् आर्चन्निन्द्रं पपिवांसं सुतस्य।**
**आदत्त वज्रम् अभि यद् अहिं हन्नपो यह्वीर् असृजत् सर्तवा उ।। २।।**

अनु। यत्। ईम्। मरुतः। मन्दसानम्। आर्चन्। इन्द्रम्। पपिऽवांसम्। सुतस्य।
आ। अदत्त। वज्रम्। अभि। यत्। अहिम्। हन्। अपः। यह्वीः। असृजत्। सर्तवै। ऊँ इति।। २।।

*अनुकूलता से जब इसकी मरुत्, मुदित होते हुए की,*
*अर्चना करते हैं इन्द्र की, पान करने वाले की सोम के।*
*ग्रहण करता है वज्र को, सर्वतः तब आहन्ता को मारता है,*
*जलों को महानों को, विसर्जित कर देता है बहने के लिये ही।। २।।*

जब आनन्द से युक्त, भक्तिरस का पान करने वाले इस परमैश्वर्यवान् परमात्मा की इसकी सहायक शक्तियां अथवा मनुष्य अनुकूलता के साथ पूजा-अर्चना करते हैं, तो यह प्रसन्न हो जाता है और जल, प्रकाश आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये अपनी न्यायव्यवस्था को हाथ में ले लेता है, उन विनाशकारी शक्तियों का संहार कर डालता है और सुखसाधनों को सब प्राणियों तक पहुँचने के लिये मुक्त कर देता है।

टि. मुदित होते हुए की - **मन्दसानम्**। मोदमानम् - वे.। मन्दसानं तृप्यन्तम् - सा.। स्तूयमानम् - दया.। exulting - W. joyous - G.

*पान करने वाले की सोम के* - **पपिवांसम् सुतस्य**। सोमं पपिवांसम् - वे.। सोमं पीतवन्तम् - सा.। drinking of the effused libation - W. when he had drunk of Soma juices - G.

*ग्रहण करता है वज्र को* - **आ अदत्त वज्रम्**। वज्रम् आददौ - सा.।

*सर्वतः आहन्ता को मारता है* - **अभि अहिम् हन्**। अहिं हतवान् - वे.। वृत्रम् अभ्यहन् अभिहतवान् - सा.। मेघं हन्ति - दया.। to slay the Dragon - G.

**उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः।**
**तद् धि हव्यं मनुषे गा अविन्दद् अहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य।। ३।।**

उत। ब्रह्माणः। मरुतः। मे। अस्य। इन्द्रः। सोमस्य। सुऽसुतस्य। पेयाः।
तत्। हि। हव्यम्। मनुषे। गाः। अविन्दत्। अहन्। अहिम्। पपिऽवान्। इन्द्रः। अस्य।। ३।।

*और हे ब्रह्मवेत्ता प्राणवान् मनुष्यो!, (तुम) मेरे इसको,*
*(और) इन्द्र, सोम को सुष्ठु सवन किये हुए को, पियो।*
*उस ही हव्य को, मनुष्य के लिये, गोरूप में प्राप्त कराता है,*
*मार डालता है असुर को, पान करके इन्द्र इसका।। ३।।*

हे प्राणशक्तियों से युक्त ब्रह्मज्ञानी मनुष्यो! मैंने तुम्हारे लिये और परमैश्वर्यवान् प्रभु के लिये बड़ी श्रद्धा से इस भक्तिरसरूपी सोम का सवन किया है। वह मेरा परमेश्वर तुम सब और इसका यथेष्ट

रूप से पान करो। मेरे द्वारा समर्पित की हुई इस आहुति को ही वह प्रभु मुझ मनुष्य को गौओं, जलों, ज्ञानरश्मियों, सुखों आदि के रूप में प्राप्त कराता है। मैं उसे जो आहुतिरूप में देता हूँ, उसी को वह सुखों के रूप में मुझे लौटा देता है। इसी आनन्द का पान करके वह परमेश्वर दुष्ट हिंसक आसुरी शक्तियों का विनाश कर डालता है।

टि. हे *ब्रह्मवेत्ता प्राणवान् मनुष्यो* - **ब्रह्माणः मरुतः**। हे ब्राह्मणाः हे मरुतः - वे.। हे ब्रह्माणो बृहन्तो हे मरुतो यूयम् - सा.। चतुर्वेदविदः मनुष्याः - दया.। mighty Maruts - W. O ye Brahmanas, Maruts - G.

*(तुम) मेरे इसको, (और) इन्द्र सोम को पिये* - **मे अस्य इन्द्रः सोमस्य पेयाः**। मम इमं सोमं इन्द्रः पिबतु - वे.। यूयम् इन्द्रश् च मदीयस्यास्य सोमस्येमं सोमम्। द्वितीयार्थे षष्ठी। पेयाः पिबत। पिबतेर् आशीर्लिङि मध्यमबहुवचनस्यैकवचनम्। सा.।

*उसको ही हव्य को गोरूप में प्राप्त कराता है* - **तत् हि हव्यम् गाः अविन्दत्**। तत् हि सोमाख्यं हविः पणिभिर् अपहृतान् पशून् अविन्दत् - वे.। तत् खलु हव्यं युष्माभिः पीतं सोमात्मकं हविर् (मनुष्याय यजमानाय) गा धेनूर् वृष्टिलक्षणान्युदकानि वा अविन्दत् वेदयति। यजमानं गा लम्भयती-त्यर्थः। सा.। then the offered libation obtains cattle (for the offerer) - W. For this oblation found (for man) the cattle - G.

**आद् रोद॑सी वि॒तरं॒ वि ष्क॑भायत् संवि॒व्या॒नश् चि॑द् भि॒यसे॑ मृ॒गं क॑ः।**
**जिग॑र्ति॒म् इन्द्रो॑ अप॒जर्गु॑राण॒ः प्रति॑ श्व॒सन्त॒म् अव॑ दान॒वं ह॑न्।। ४।।**

आत्। रोद॑सी॒ इति॑। वि॒ऽत॒रम्। वि। स्क॒भा॒य॒त्। स॒म्ऽवि॒व्या॒नः। चि॒त्। भि॒यसे॑। मृ॒गम्। कु॒र् इति॑ कः।
जिग॑र्तिम्। इन्द्र॑ः। अ॒प॒ऽजर्गु॑राणः। प्रति॑। श्व॒सन्त॑म्। अव॑। दा॒न॒वम्। ह॒न्निति॑ हन्।। ४।।

*तत्पश्चात् द्युलोक-भूलोक को, नितान्त थाम दिया उसने,*
*(इनमें) छुपे हुए ने ही उसने, भय के लिये शिकार को कर दिया।*
*आच्छादित को (उसको) इन्द्र ने, आच्छादनरहित करते हुए ने,*
*सम्मुख होकर हांपते हुए को, नीचे दानव को, मार गिराया।। ४।।*

अपने उपासकों के भक्तिरस का पान करने के पश्चात् ही वह परमेश्वर आनन्दविभोर होकर तथा नवीन उत्साह और संबल प्राप्त करके धरती और आकाश को भली प्रकार स्थिर और व्यवस्थित करता है। धरती और आकाश में व्याप्त वह जगदीश अपने बल और महिमा से ही इन्हीं लोकों में छुपे हुए अपने शिकार उस वृत्र को, सुख-साधनों पर कुण्डली मारकर बैठ जाने वाले उस महासर्प को, भयभीत कर देता है। वह उस छुपे हुए असुर को ढूँढ निकालता है और उसके सम्मुख होकर सब के देखते ही देखते उस दानव को थकाकर और हँपाकर मार गिराता है।

टि. *नितान्त थाम दिया उसने* - **वितरं वि स्कभायत्**। पुरा अत्यन्तं विश्लिष्टं स्थापितवान् अधः पृथिवीम् उपरि द्याम् - वे.। वितरम् अतिशयेन। अमु च छन्दसीति वेस् तरपि कृते ऽमुप्रत्ययः। वि ष्कभायद् व्यस्तभ्नात्। चलनरहिते अकरोत्। सा.। fixed firmly - W. sundered and supported - G.

*छुपे हुए ने* - **संविव्यानः**। अरण्येनाच्छादयन् - वे.। संवृण्वानः संगच्छमानो वा - सा.। व्ययतेर्

वा संवरणकर्मणो वेतेर् वा गतिकर्मणो रूपम्। सा.। सम्यग् व्याप्नुवन् - दया.। resolutely advancing - W. wrapped - G.

*शिकार को* - **मृगम्।** बलिनं सिंहादिकम् - वे.। मृगवत् पलायमानं वृत्रम् - सा.। like a deer - W. the Beast - G.

*आच्छादित को* - **जिगर्तिम्।** गरणशीलम् - वे.। गिरन्तम् आच्छादयन्तम् - सा.। endeavouring to hide - W. the Engulfer - G.

*आच्छादनरहित करते हुए ने* - **अपजर्गुराणः।** अपबाधमानः - वे.। अपजर्गुराण आच्छादनाद् विमोचयन् - सा.। आच्छादनात् पृथक् कुर्वन् - दया.। stripping off his covering - W. forced to disgorgement - G.

*दानव को* - **दानवम्।** वृत्रम् - वे.। दनोः पुत्रं वृत्रम् - सा.। दुष्टप्रकृतिम् - दया.।

**अध क्रत्वा मघवन् तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम्।**
**यत् सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीर् उपरा एतशे कः।। ५।। २३।।**

अध। क्रत्वा। मघऽवन्। तुभ्यम्। देवाः। अनु। विश्वे। अददुः। सोमऽपेयम्।
यत्। सूर्यस्य। हरितः। पतन्तीः। पुरः। सतीः। उपराः। एतशे। कर् इति कः।। ५।।

*तब (तेरे इस) कर्म के कारण, हे धनदाता!, तुझे देव,*
*अनुकूलता से सब, प्रदान करते हैं सोम के पान को।*
*जो सूर्य की हरिद्वर्ण रश्मियों को, गमन करने वालियों को,*
*सम्मुख विद्यमानों को, उपरत एतश के निमित्त कर देता है तू।। ५।।*

हे उत्तम धन प्रदान करने वाले परमेश्वर! द्युलोक और भूलोक को धारण करने और सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति का विनाश करने के कारण सब देव अनुकूलता के साथ तुझे भक्तिरसरूपी सोमपान समर्पित करते हैं, अपने नमस्कारों और स्तुतियों से तुझे आनन्दित करते हैं। इससे पुनः प्रसन्न होकर तू अपने तीव्र गति वाले प्रखर प्रकाश को इस प्रकार सर्वत्र फैला देता है, कि सूर्य की सर्वत्र गति करने वाली, सम्मुख स्थित रश्मियां उसके सामने नष्टप्रभ हो जाती हैं, मन्द पड़ जाती हैं।

इस मन्त्र में सूर्य की रश्मियों को घोड़ियां (हरितः) और इन्द्र (परमेश्वर) के प्रखर प्रकाश को तीव्रगति वाला अश्व (एतश) कहा गया है। परमेश्वर के प्रकाश के आगे सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, तारे आदि सभी प्रकाश टिमटिमाते हुए से दृष्टिगोचर होते हैं। उपनिषद् में कहा है - न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम्। नेमा विद्युतो भान्ति कुतो ऽयम् अग्निः। तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम्। तस्य भासा सर्वम् इदं विभाति।। मु.उप. २.२.१०।।

टि. *कर्म के कारण* - **क्रत्वा।** कर्मणा - वे.। क्रत्वा क्रतुना त्वदीयेन कर्मणा - सा.। प्रज्ञया - दया.। for this exploit - W.

*हरिद्वर्ण रश्मियों को* - **हरितः।** अश्वाः - वे.। वडवाः - सा.। हरितवर्णाः किरणाः - दया.। the horses - W. the mares - G.

*गमन करने वालियों को* – **पतन्तीः**। गच्छन्तीः – वे.। दया.। आगच्छन्तीः – सा.।

*उपरत कर देता है तू* – **उपराः कः**। उप्ताः कृतवान् असि – वे.। उपरता मन्दगतीः – सा.। thou hast retarded - W. didst cause to tarry - G.

*एतश के निमित्त* – **एतशे**। एतशस्य विजयार्थं तस्मिन् ऋषौ – वे.। एतशाख्याय ऋषये। एतशो हि स्वश्वपुत्रेण सूर्येण सह स्पर्धाम् अकरोद् इति यावत्। सा.। for the sake of Etaśa - W. G.

**नव यद् अस्य नवतिं च भोगान् त्साकं वज्रेण मघवा विवृश्चत्।**
**अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा वाधत द्याम्।। ६।।**

नव। यत्। अस्य। नवतिम्। च। भोगान्। साकम्। वज्रेण। मघऽवा। विऽवृश्चत्।
अर्चन्ति। इन्द्रम्। मरुतः। सधऽस्थे। त्रैस्तुभेन। वचसा। वाधत। द्याम्।। ६।।

*नौ को जब इसके और नव्वे को, पुरों को,*
*एक साथ वज्र से, धनदाता काट डालता है।*
*अर्चना करते हैं इन्द्र की मरुत्, सहस्थान में,*
*त्रैस्तुप् स्तोत्र से, (जब) बाधता है वह द्युलोक को।। ६।।*

जब सुखों को आवृत करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति (शम्बर) प्रकाश और सुखों के स्थानों को बाधित करती है, तो सब को अपने उत्तम धन देकर सुखी करने वाला वह जगदीश्वर उसके भोगों के असंख्य सुरक्षित ठिकानों को अपनी न्यायव्यवस्था से एक साथ नष्ट कर डालता है। उस समय प्राणवान् मनुष्य किसी सार्वजनिक स्थान में एकत्रित होकर त्रिष्टुप् छन्द वाले अथवा तीन प्रकार की स्तुति वाले स्तोत्र से उस परमेश्वर की पूजा-अर्चना करते हैं।

टि. इसके – **अस्य**। दानवस्य शम्बरस्य वा। शं सुखं वृणोतीति शंवरः। शंवर एव शम्बरः।। प्रकृतस्याहेः – वे.। अस्येत्यनेन शम्बर उच्यते। अस्य शम्बरस्य। सा.। सूर्यस्य – दया.।

*पुरों को* – **भोगान्**। यतो हि भोगानां स्थितिः पूर्षु विद्यत अतः पुरो ऽत्र भोगा इति कथिताः तात्स्थ्यात्।। भोगायतनानि पुराणि – वे.। पुराणि। भोगान् इत्यन्तोदात्तः पुरवचनः। सा.। castles - G.

*काट डालता है* – **विवृश्चत्**। व्यवृश्चत्। अभिनत्। सा.। छिनत्ति – दया.।

*त्रैस्तुप् स्तोत्र से* – **त्रैष्टुभेन वचसा**। त्रैष्टुभेन स्तुतिवचनेन – वे.। त्रिष्टुपछन्दस्केन वाग्रूपेण स्तोत्रेण – सा.। त्रिधा स्तुतेन वचसा – दया.।

*(जब) बाधता है वह द्युलोक को* – **बाधत द्याम्**। इन्द्रो दीप्तम् अहिं बाधितवान् इति – वे.। प्रयुज्यमानेन मन्त्रेण दीप्तं शम्बराख्यम् असुरम् अबाधत पिपीडे – सा.।

**सखा सख्ये अपचत् तूयम् अग्निर् अस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि।**
**त्री साकम् इन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम्।। ७।।**

सखा। सख्ये। अपचत्। तूयम्। अग्निः। अस्य। क्रत्वा। महिषा। त्री। शतानि।
त्री। साकम्। इन्द्रः। मनुषः। सरांसि। सुतम्। पिबत्। वृत्रऽहत्याय। सोमम्।। ७।।

*सखा सखा के लिये, पकाता है शीघ्र अग्नि,*
*इसके कर्म के कारण, महान् अन्नों को तीन सौ को।*

*तीन से, एक साथ इन्द्र, मनुष्य के सोमपात्रों से,*
*सवन किये हुए को पीता है, वृत्रहनन के लिये सोम को।। ७।।*

यह यज्ञ का अग्नि उस परमैश्वर्यवान् प्रभु के लिये हवियों को वहन करने के कारण उसका सखा है। यह उसके महान् कर्मों के कारण उसके लिये असंख्य हव्यरूप महान् अन्नों को अविलम्ब पकाकर तैयार कर देता है। वह परमेश्वर सुखों को आवृत करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति का हनन करने के लिये उत्साह और बल की प्राप्त के हेतु मनुष्यों के द्वारा सवन किये हुए भक्तिरसरूपी सोम का मन, वचन और कर्म रूपी तीन पात्रों से पान करता है। अर्थात् उपासक जन मन, वचन और कर्म के द्वारा जो नैवेद्य उसे समर्पित करते हैं, वह उसे स्वीकार करके आनन्द की प्राप्ति करता है।

टि. *शीघ्र* - **तूयम्**। क्षिप्रम् - वे.। सा.। तूर्णम् - दया.। quickly - W. G.

*महान् अन्नों को तीन सौ को* - **महिषा त्री शतानि**। महिष इतीदं पदं यास्कीये निघण्टौ (३. ३), भास्कररायीयवैदिककोशे (१.३.३), माधवीयनामानुक्रमण्यां (६१२ पङ्क्त्याम्) महन्नामसु पठितः। (७१ पङ्क्त्यां) च सोमनामसु पठितः। प्राणा वै महिषः (शत.ब्रा. ६.७.४.५)। महिषा महिषाणि महान्ति अन्नानीति शेषः। अत्र नपुंसकलिङ्गे प्रयुक्तम् इदं पदं नहि पश्वर्थे भवितुम् अर्हति।। त्रीणि शतानि महिषान् - वे.। महिषा महिषाणां पशूनां त्री त्रीणि शतानि शतसंख्याकानि - सा.। महिषाणां महतां पशूनां त्रीणि शतानि - दया.। तीन सौ शक्तिवर्धक कन्दों को (पकाया) - सात.। (has consumed) three hundred buffaloes - W. G.

*तीन से, मनुष्य के सोमपात्रों से* - **त्री मनुषः सरांसि**। मनुषः यजमानस्य त्रीणि सरांसि यथा पूर्णानि भवन्ति तथा - वे.। मनुषो मनोः सम्बन्धीनि त्री त्रीणि सरांसि पात्राणि। अत्र सरःशब्देन पूतभृदाधवनीयद्रोणकलशसंज्ञानि पात्राण्युच्यन्ते। सा.। त्रीणि मनुषस्य सरांसि तडागान् - दया.। three vessels of Soma offered by Manu - W. from man's gift three lakes - G.

**त्री यच् छता म॑हि॒षाणा॒म् अघो॒ मास् त्री सरां॑सि म॒घवा॑ सो॒म्यापाः॑।**
**क॒ारं न विश्वे॑ अह्वन्त दे॒वा भर॒म् इन्द्रा॑य॒ यद् अहिं॑ ज॒घान॑।। ८।।**

त्री। यत्। श॒ता। म॒हि॒षाणा॑म्। अघः॑। माः। त्री। सरां॑सि। म॒घऽवा॑। सो॒म्या। अपाः॑।
क॒ारम्। न। विश्वे॑। अ॒ह्व॒न्त॒। दे॒वाः। भर॑म्। इन्द्रा॑य। यत्। अहि॑म्। ज॒घान॑।। ८।।

*तीन को जब सैंकड़ों को, महान् अन्नों के खाता है तू,*
*निर्माता, तीन पात्रों को, धनदाता, सोमपूर्णों को पीता है तू।*
*विजयगान को मानो, सब के सब गाते हैं देव,*
*हर्षोत्पादक को इन्द्र के लिये, जब आहन्ता को मारता है वह।। ८।।*

वह इस जगत् का कर्ता परमेश्वर हव्यरूपी असंख्य महान् अन्नों का भक्षण करने वाला है। पवित्र धनों का दाता वह जगदीश अपने उपासकों के भक्तिरसरूपी सोम को उनके पवित्र मन, वचन और कर्म रूपी पात्रों के माध्यम से पान करता है। जब वह प्रभु सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति का विनाश कर डालता है, तो सभी देवता और दान, दिव्यता आदि गुणों वाले मनुष्य, उसके लिये हर्ष और उत्साह उत्पन्न करने वाले विजयगान को गाते हैं।

टि. *खाता है तू* - **अघः**। इन्द्रः अभक्षयत् - वे.। सा.। hadst eaten - W. G.

*निर्माता* - **माः**। मातीति माः माता कर्ता रचयिता।। मांसम् - वे.। सा.। the flesh - W. G.

*विजयगान को मानो* - **कारम् न**। शङ्खम् इव - वे.। स्वामिनः कर्मकरम् इव - सा.। कर्त्तारम् - दया.। as if he had been a servant - W. as 't were a shout of triumph - G. a song or hymn of praise, a battle song - MW.

*हर्षोत्पादक को* - **भरम्**। भरश् च शङ्खवद् वाद्यविशेषः - वे.। सोमादिना पूर्णम् - सा.। full of food - W. praise - G.

**उ॒शना॒ यत् स॑ह॒स्यै॑३॒॑र् अया॑तं गृ॒हम् इ॑न्द्र जूजुवा॒नेभि॒र् अश्वैः॑।**
**व॒न्वा॒नो अत्र॑ स॒रथं॑ ययाथ॒ कुत्से॑न दे॒वैर् अव॑नोर् ह॒ शुष्ण॑म्।। ९।।**

उ॒शना॑। यत्। स॒ह॒स्यैः॑। अया॑तम्। गृ॒हम्। इ॒न्द्र॒। जू॒जु॒वा॒नेभिः॑। अश्वैः॑।
व॒न्वा॒नः। अत्र॑। स॒ऽरथ॑म्। य॒या॒थ॒। कुत्से॑न। दे॒वैः। अव॑नोः। ह॒। शुष्ण॑म्।। ९।।

*(तू और) उशना जब, बलवानों के साथ गमन करते हो,*
*घर में, हे इन्द्र!, वेगवानों के साथ अश्वों के।*
*विजित करता हुआ उस समय, समान रथ से जाता है तू,*
*कुत्स के साथ, देवों के साथ, हिंसित करता है तू शुष्ण को।। ९।।*

इस मन्त्र में इन्द्र आत्मा का, उशना बुद्धि का, रथ शरीर का, कुत्स वाणी का, शुष्ण शोषक आसुरी शक्ति का और देव प्राणों के प्रतीक हैं। जब आत्मा और बुद्धि बलवान् और वेगवान् इन्द्रियों से खींचे जाने वाले इस शरीररूपी रथ में आसीन होकर इस शरीररूपी निवास के गुह्यतम स्थान हृदय में प्रवेश करके परस्पर सहयोग से कार्य करते हैं, तो अनेक प्रकार की विजयें प्राप्त होती हैं और यह आत्मा वाणी और प्राणों के साथ मिलकर उनकी सहायता से ज्ञान का शोषण करने वाली दुष्ट आसुरी शक्ति का विनाश कर देता है।

टि. *बलवानों के साथ* - **सहस्यैः**। बलकरणयोग्यैः - वे.। अभिभवनशीलैः - सा.। सहस्सु बलेषु भवैः - दया.। with vigorous - W.

*वेगवानों के साथ* - **जूजुवानेभिः**। वेगवद्भिः - वे.। तुजादीनाम् इत्यभ्यासदीर्घम् - दया.। जूजुवानैर् गच्छद्भिः - सा.। with rapid - W.

*विजित करता हुआ* - **वन्वानः**। वनोतिर् वधकर्मा। शुष्णं हन्तुकामः - वे.। वन्वानः शत्रून् हिंसन् - सा.। याचमानः - दया.। destroying his foes - W. conquering together - G.

*कुत्स के साथ* - **कुत्सेन**। ऋषिः कुत्सो भवति कर्ता स्तोत्राणाम् इत्यौपमन्यवः - या. (नि. ३. ११)।। वज्रेणेव दृढेन कर्मणा - दया.।

*हिंसित करता है तू* - **अवनोः**। हतवान् असि - वे.। सा.। thou hast slain - W. G.

**प्रान्यच् च॒क्रम् अ॑वृ॒हः सूर्य॑स्य॒ कुत्सा॑या॒न्यद् वरि॑वो॒ यात॑वे ऽकः।**
**अ॒नासो॒ दस्यूँ॑र् अमृणो व॒धेन॒ नि दु॑र्यो॒ण आ॑वृणङ् मृध्रवा॑चः।। १०।। २४।।**

प्र। अ॒न्यत्। च॒क्रम्। अ॒वृ॒हः॒। सूर्य॑स्य। कुत्सा॑य। अ॒न्यत्। वरि॑वः। यात॑वे। अ॒कर् इत्य॑कः।

अनासः। दस्यून्। अमृणः। वधेन। नि। दुर्योणे। अवृणक्। मृध्रऽवाचः।। १०।।

*प्रकर्ष से एक चक्र को बढ़ा देता है आगे, सूर्य के,*
*कुत्स के लिये दूसरे को, विस्तृत को, गमन के लिये कर देता है।*
*वाणी से रहितों को, हिंसकों को, नष्ट कर देता है तू हथियार से,*
*नितरां घर में (उनके) काट डालता है, कठोर वाणी वालों को।। १०।।*

ज्ञानरूपी सूर्य के रथ के दो पहिये हैं - श्रेय और प्रेय। श्रेय नामक एक पहिया अथवा मार्ग मनुष्य को उसके चरम लक्ष्य मोक्ष की ओर ले जाता है और प्रेय नामक दूसरा मार्ग मनुष्य को चकाचौंध वाले आकर्षक लौकिक जीवन की ओर ले जाता है। वह परमैश्वर्यवान् जगदीश मनुष्यों के लिये ये दोनों ही मार्ग खुले रखता है। प्रभु की स्तुति करने वाला दूरद्रष्टा उपासक तो निःश्रेयस की ओर ले जाने वाले विस्तृत श्रेय मार्ग को ही अपनाता है। जो वाणी से रहित अर्थात् परमेश्वर का गुणगान न करने वाले प्रेय मार्ग को अपनाने वाले नास्तिक हिंसक जन हैं, उन्हें वह उनके ही घर में अपने न्यायरूपी शस्त्र से काट डालता है। जो कठोर वाणी वाले, अपनी वाणी से दूसरों के मन में घाव कर डालने वाले प्रेयमार्गी दुर्जन हैं, उन्हें भी वह इसी प्रकार नष्ट कर देता है।

टि. *बढ़ा देता है आगे* - **अवृहः**। अवृहः शत्रुवधार्थम् - वे.। अवृहः पृथक् चकर्थ - सा.। वर्धयेः - दया.। hast detached - W. thou rolledst forward - G.

*कुत्स के लिये* - **कुत्साय**। कुत्सस्य - सा.। वज्राय - दया.। to Kutsa - W. for Kutsa - G.

*विस्तृत को, गमन के लिये* - **वरिवः यातवे**। धनस्य आगमनाय - वे.। धनं प्राप्तुम् - सा.। to acquire wealth - W. thou settest free to move - G.

*वाणी से रहितों को नष्ट कर देता है तू* - **अनासः अमृणः**। अननशीलान् श्वसतः हतवान् असि - वे.। अनास आस्यरहितान्। आस्यशब्देन शब्दो लक्ष्यते। अशब्दान् मूकान्। सा.। अविद्यमानास्यान् हिंस्याः - दया.। thou hast confounded the voiceless - W. thou slewest noseless - G.

*घर में (उनके) काट डालता है कठोर वाणी वालों को* - **दुर्योणे अवृणक् मृध्रवाचः**। दुर्योणाख्ये देशे हिंसितवान् असि परुषवाचस् तान् - वे.। संग्रामे हिंसितवागिन्द्रियान् छिन्नवान् असि - सा.। गृहनयने वृङ्धि हिंस्रावाचो जनान् - दया.। thou hast destroyed in battle the speech-bereft (foes) - W. in their home o'erthrewest hostile speakers - G.

**स्तोमा॑सस् त्वा गौरि॑वीतेर् अवर्धन्नर॑न्धयो वैदथिनाय पिप्रु॑म्।**
**आ त्वाम् ऋजिश्वा॑ सख्याय॑ चक्रे पच॑न् पक्तीर् अपि॑बः सोम॑म् अस्य।। ११।।**

स्तोमा॑सः। त्वा। गौरि॑ऽवीतेः। अवर्धन्। अर॑न्धयः। वैदथिनाय॑। पिप्रु॑म्।
आ। त्वाम्। ऋजिश्वा॑। सख्याय॑। चक्रे। पच॑न्। पक्तीः। अपि॑बः। सोम॑म्। अस्य।। ११।।

*स्तोत्र तुझको वाणी के स्वामी के, बढ़ाते हैं,*
*नष्ट कर देता है तू, ज्ञानी के पुत्र के लिये, उदरपूरक को।*
*सब ओर से तुझको ऋजुगामी, मित्रता के लिये बनाता है,*
*पकाता हुआ पाकों को, पीता है तू सोम को उसके।। ११।।*

हे उत्तम धनों के स्वामी परमात्मन्! वाणी को भली प्रकार जानने वाले विद्वान् के स्तोत्र तेरे माहात्म्य की वृद्धि करते हैं। ज्ञानी विद्वानों की कुलपरम्परा में उत्पन्न होने वाले विद्वान् की रक्षा के लिये तू केवल अपना ही पेट भरने की मानसिकता वाले मनुष्य को नष्ट कर डालता है। सरल स्वभाव वाला निष्छल निष्कपट, मनुष्य सदा तुझे अपना सखा बनाने का प्रयास करता है। वह तुझे अनेक प्रकार के हव्य और नैवेद्य समर्पित करता है। ऐसे ऋजुगामी उपासक के भक्तिरसरूपी सोम को तू सहर्ष स्वीकार करता है।

टि. *वाणी के स्वामी के* - **गौरिवीतेः**। गौरिवीतेः मम - वे.। एतन्नामकस्य मन्त्रद्रष्टुर् मम - सा.। यो गौरीं वाचं व्येति सः। गौरीति वाङ्नाम (निघ. १.११)। दया.।

*ज्ञानी के पुत्र के लिये* - **वैदथिनाय**। विदथिनः पुत्राय ऋजिश्वने - वे.। सा.। विदिथिना संग्रामकर्त्रा निर्मिताय - दया.।

*उदरपूरक को* - **पिप्रुम्**। आत्मीयम् उदरम् एव पूरयतीति पिप्रुर् उदरम्भरिः। पिपर्तेः पालन-पूरणार्थस्य धातो रूपम् इदम्।। पिप्रुं नाम शत्रुम् - वे.। एतन्नामकम् असुरम् - सा.।

**नवग्वासः सुतसोमास इन्द्रं दशग्वासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।**
**गव्यं चिद् ऊर्वम् अपिधानवन्तं तं चिन् नरः शशमाना अप व्रन्।। १२।।**

नवऽग्वासः। सुतऽसोमासः। इन्द्रम्। दशऽग्वासः। अभि। अर्चन्ति। अर्कैः।
गव्यम्। चित्। ऊर्वम्। अपिधानऽवन्तम्। तम्। चित्। नरः। शशमानाः। अप। व्रन्।। १२।।

*नौ गौओं वाले, सवन किये हुए सोमों वाले, इन्द्र की,*
*दश गौओं वाले, खूब अर्चना करते हैं, स्तोत्रों से (अपने)।*
*गौओं वाले को निश्चय से गोष्ठ को, आच्छादन करने वाले को,*
*उसको निश्चय से नायक जन, स्तुतियां करते हुए खोल देते हैं।। १२।।*

पशुवत् आचरण करने वाले पांच प्राणों, मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार - इन नौ को अपने वश में करने वाले, तथा पशुवत् आचरण करने वाली पांच ज्ञानेन्द्रियों और पांच कर्मेन्द्रियों - इन दश को वश में करने वाले और अपने भक्तिरसरूपी सोम को परमेश्वर को समर्पित करने वाले उपासक जन अपने स्तोत्रों से प्रभु की पूजा-अर्चना करते हैं। अन्य मनुष्यों का मार्गदर्शन करने वाले ये ज्ञानी जन उस प्रभु का स्तुतिगान करते हुए ज्ञान के बन्द पड़े बाड़े को फिर से खोल देते हैं।

टि. *नौ गौओं वाले, दश गौओं वाले* - **नवग्वासः दशग्वासः**। गवाम् अयनेन यन्तो ऽङ्गिरसः केचन नवसु मास्सु उदतिष्ठन्, दशसु केचित्, तेन नवग्वासः च दशग्वासः च भवन्ति - वे.। सत्रयागम् अनुतिष्ठन्तो ये नवभिर् मासैः समाप्य गतास् ते नवग्वाः। दशभिर् मासैः समाप्य ये गतास् ते दशग्वाः। सा.। नवग्वासः नवीनगतयः। दशग्वासः दश गाव इन्द्रियाणि जितानि यैस् ते दशग्वासः - दया.। the observers of the nine months' celebration, those of the ten months - W. The seekers, who have brought their nine (i.e. five vital breaths and four psychic powers, mind, consciousness, intellect and ego) under discipline and their ten (five organs of sensation and five of action) under control - Satya.

*गौओं वाले को गोष्ठ को* - **गव्यम् ऊर्वम्**। गोसङ्घं च महान्तम् - वे.। गोसम्बन्धिनं समूहम् - सा.। the cave - W. the stall of kine - G. the door of the cave of wisdom - Satya.

*आच्छादन वाले को* - **अपिधानवन्तम्**। पणिभिर् आहतम् - वे.। वलेनासुरेणाच्छादितवन्तम् - सा.। concealing the cattle - W. firmly closed and fastened - G.

*स्तुतियां करते हुए* - **शशमानाः**। त्वां परिचरन्तः - वे.। स्तुवन्तः - सा.। अविद्या उल्लङ्घमानाः - दया.। glorifying him - W. labouring at their task - G.

*खोल देते हैं* - **अप व्रन्**। विवृतद्वारं कृतवन्तः - वे.। अपावृण्वन् - सा.। have set open - W. laid open - G.

**कुथो नु ते परि चराणि विद्वान् वीर्या मघवन् या चकर्थ।**
**या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम॥ १३॥**

कुथो इति। नु। ते। परि। चराणि। विद्वान्। वीर्या। मघऽवन्। या। चकर्थ।
या। चो इति। नु। नव्या। कृणवः। शविष्ठ। प्र। इत्। ऊँ इति। ता। ते। विदथेषु। ब्रवाम॥ १३॥

*कैसे निश्चय से तेरी परिचर्या करूँ मैं, जानता हुआ (भी),*
*वीरकर्मों को, हे धनदाता!, जिनको (पहले) कर चुका है तू।*
*और जिनको अब नूतनों को कर रहा है तू, हे बलवत्तम!,*
*प्रकर्ष से उन तेरों का, ज्ञानगोष्ठियों में (कैसे) कथन करूँ मैं॥ १३॥*

हे पवित्र धनों के दाता परमेश्वर! बीते काल में तूने दीनों की रक्षा और दुष्टों का संहार आदि जो वीरतापूर्ण कार्य किये हैं, उनको भली प्रकार जानता हुआ भी भला मैं तेरी सेवा-शुश्रूषा, स्तुति-प्रशंसा, धन्यवाद आदि कैसे कर सकता हूँ। मुझमें इतना सामर्थ्य कहाँ है? और हे सर्वशक्तिमान्! जो नए वीरतापूर्ण कार्य तू अब कर रहा है, ज्ञानगोष्ठियों में उनका कथन भी मैं सम्यक् रूप से कैसे कर सकता हूँ। उसके लिये मेरे पास शब्द कहाँ हैं?

टि. *परिचर्या करूँ मैं* - **परि चराणि**। परिचर्यां करवाणि - सा.। how may I adequately offer thee adoration - W. how shall I serve thee - G.

*वीरकर्मों को* - **वीर्या**। वीर्याणि - वे.। सा.। heroic acts - W. hero deeds - G.

*कर रहा है तू* - **कृणवः**। कृणोषि - वे.। कुर्याः - सा.। करोषि - दया.। which thou hast achieved - W. which thou wilt do - G.

*ज्ञानगोष्ठियों में* - **विदथेषु**। यज्ञेषु - वे.। सा.। सङ्ग्रामेषु - दया.। in sacred synods - G.

**एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्यपरीतो जनुषा वीर्येण।**
**या चिन् नु वज्रिन् कृणवो दधृष्वान्**
**न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः॥ १४॥**

एता। विश्वा। चकृऽवान्। इन्द्र। भूरि। अपरिऽइतः। जनुषा। वीर्येण।
या। चित्। नु। वज्रिन्। कृणवः। दधृष्वान्। न। ते। वर्ता। तविष्याः। अस्ति। तस्याः॥ १४॥

*इन सब को किया है (तूने), हे इन्द्र!, बहुतों को,*

*बिना आक्रान्त हुए (शत्रुओं से), सहज बल के द्वारा।*
*और जिनको अब, हे वज्रधारी!, कर रहा है तू, धर्षक (शत्रुओं का),*
*नहीं तेरे निवारण करने वाला बल का, है (कोई) उसका।। १४।।*

हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन्! इन सब महान् कार्यों को, जिनको तूने पूर्व काल में आसुरी शक्तियों से बिना अभिभूत हुए अपने सहज बल के द्वारा सम्पन्न किया है, और हे वज्रधारी! जिन कार्यों को तू इस समय दुष्ट आसुरी शक्तियों को धर्षित करता हुआ अपनी सहज शक्ति के साथ कर रहा है, तेरी उस सर्वजयी शक्ति का निवारण करने वाला जगत् में कोई भी नहीं है।

टि. *बिना आक्रान्त हुए* - **अपरीतः**। अपरिगतः - वे.। शत्रुभिर् अपरिगतः - सा.। unmatched (by any) - W. resistless - G.

*सहज बल के द्वारा* - **जनुषा वीर्येण**। जातेन केनचित् वीर्येण - वे.। जननसिद्धेनात्मीयेन बलेन - सा.। by thine innate energy - W. from of old through hero courage - G.

*धर्षक (शत्रुओं का)* - **दधृष्वान्**। धर्षणशीलः - वे.। सपत्नान् धर्षयन् - सा.। humbler of foes - W.

*निवारण करने वाला बल का* - **वर्ता तविष्याः**। बलस्य वारयिता - वे.। सा.। the arrester of this thy prowess - W. who may hinder this thy prowess - G.

**इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म।**
**वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूयू रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्।। १५।। २५।।**

इन्द्र। ब्रह्म। क्रियमाणा। जुषस्व। या। ते। शविष्ठ। नव्याः। अकर्म।
वस्त्राऽइव। भद्रा। सुऽकृता। वसुऽयुः। रथम्। न। धीरः। सुऽअपाः। अतक्षम्।। १५।।

*इन्द्र!, स्तोत्रों को समर्पित किये जाते हुओं को, स्वीकार कर तू,*
*जिनको तेरे लिये, हे बलवत्तम!, नूतनों को, उच्चारता हूँ मैं।*
*वस्त्रों की तरह शोभनों की, सुनिर्मितों की, वासाभिलाषी,*
*रथ को जैसे धीमान्, उत्तम कर्मों वाला (उन्हें) घड़ता हूँ मैं।। १५।।*

हे परम ऐश्वर्यों के स्वामी प्रभो! जो स्तुतियां हम तुझे समर्पित कर रहे हैं, तू उन्हें स्वीकार कर। और हे सर्वशक्तिमान्! जिन नवीन स्तोत्रों का हम तेरे लिये उच्चारण कर रहे हैं, उन्हें भी तू स्वीकार कर। जिस प्रकार कोई जुलाहा सुन्दर और उत्तम बुनाई वाले वस्त्रों का निर्माण करता है और जिस प्रकार कोई चतुर बढ़ई रथ को बनाता है, उसी प्रकार उत्तम कर्मों को करने वाला और तेरे साथ अथवा तेरे अन्दर वास चाहने वाला मैं तेरा उपासक तेरे लिये स्तोत्रों का निर्माण करता हूँ।

टि. *स्तोत्रों को समर्पित किये जाते हुओं को* - **ब्रह्म क्रियमाणा**। ब्रह्म स्तोत्राणि क्रियमाणानि - वे.। अस्माभिः क्रियमाणानि ब्रह्माणि - सा.। the prayers which we are about to offer - W. G.

*वासाभिलाषी* - **वसुयुः**। धनम् इच्छन् - वे.। धनकामः - सा.। दया.। desirous of wealth - W. seeking riches - G.

*धीमान्* - **धीरः**। प्राज्ञः - वे.। धीमान् - सा.। ध्यानवान् योगी - दया.। बुद्धिमान् - सात.।

firm - W. a deft craftsman - G.

## सूक्त ३०

ऋषिः - बभ्रुः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**क्व१ स्य वीरः को अपश्यद् इन्द्रं सुखरथम् ईयमानं हरिभ्याम्।**
**यो राया वज्री सुतसोमम् इच्छन् तद् ओको गन्ता पुरुहूत ऊती।। १।।**

क्वं। स्यः। वीरः। कः। अपश्यत्। इन्द्रम्। सुखऽरथम्। ईयमानम्। हरिऽभ्याम्।
यः। राया। वज्री। सुतऽसोमम्। इच्छन्। तत्। ओकः। गन्ता। पुरुऽहूतः। ऊती।

*कहाँ (है) वह वीर, किसने देखा है (उस) इन्द्र को,*
*सौखे रथ वाले को, जाते हुए को दो अश्वों से।*
*जो देय धन के साथ, वज्रधारी, सवन किये सोम को चाहता हुआ,*
*उसके घर में जाता है, बहुतों से पुकारा हुआ, वृद्धि के लिये।। १।।*

सब ऐश्वर्यों का स्वामी परमात्मा इन्द्र है। यह जगत् उसका रथ है, जो सत्यनियमों के अधीन बड़ी सरलता से गति कर रहा है, चल रहा है। जीवन और मृत्यु रूपी दो अश्व इसमें जुते हुए हैं। वह दण्डव्यवस्थारूपी वज्र को अपने अधीन रखता है। असंख्य लोग उसे अपनी सहायता के लिये पुकारते हैं। वह अपने उपासकों से भक्तिरसरूपी सोम की इच्छा करता है। वह अपने भक्त की समृद्धि के लिये उसे लौकिक और दिव्य धन प्रदान करने के लिये स्वयं उसके घर जाता है। प्रश्न यह है, कि दुष्ट आसुरी शक्तियों का संहार करने वाला वह परमेश्वर कहाँ है और उसे कौन देख सकता है? इस प्रश्न का उत्तर यही है, कि उस प्रभु के ठिकाने का किसी को कोई पता नहीं और उसे कोई नहीं देख सकता, अथवा कोई विरला ही योगसाधना के द्वारा उसे देख सकता है।

टि. *सौखे रथ वाले को* - **सुखरथम्।** सुद्वाररथम् - वे.। शोभनाक्षद्वारो रथो यस्य स सुखरथः। सुष्ठु खनति लिखति भूमिं इति वा सुखं। तादृग् रथम्। सुहितं खेभ्यः खं पुनः खनतेर् इति यास्कः। (नि. ३.१३)। सुखाय रथः सुखरथः तम् - दया.। seated in his easy chariot - W. borne on light-rolling car - G.

*देय धन के साथ* - **राया।** धनेन - वे.। देयेन धनेन - सा.।

*बहुतों से पुकारा हुआ* - **पुरुहूतः।** बहुभिर् आहूतः - वे.। सा.। बहुभिः स्तुतः - दया.।

*वृद्धि के लिये* - **ऊती।** रक्षणार्थम्। ऊत्यै रक्षायै - सा.। रक्षणाद्याय- दया.।

**अवाचचक्षं पदम् अस्य सस्वर् उग्रं निधातुर् अन्वायम् इच्छन्।**
**अपृच्छम् अन्याँ उत ते म आहुर् इन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम।। २।।**

अवं। अचचक्षम्। पदम्। अस्य। सस्वः। उग्रम्। निऽधातुः। अनुं। आयम्। इच्छन्।
अपृच्छम्। अन्यान्। उत। ते। मे। आहुः। इन्द्रम्। नरः। बुबुधानाः। अशेम।। २।।

*देखना चाहा मैंने स्थान को इसके, छुपे हुए को,*
*उग्र को, विधाता के, अनुसरण किया मैंने चाहते हुए।*

*पूछा मैंने दूसरों को, और उन्होंने मुझे बताया,*
*इन्द्र को (यज्ञों के प्रणेता), जानते हुए प्राप्त करें हम।। २।।*

मुझ उपासक ने जगत् के विधाता परमेश्वर के स्थान को देखना चाहा, वह स्थान जो गुप्त है, जिसका किसी को कोई अता-पता नहीं और जो दुष्ट पापी जनों के लिये भय उत्पन्न करने वाला है। मैंने इसके विषय में अन्य ज्ञानी जनों से भी पूछा। उन्होंने मुझे यही बताया, कि उस परमेश्वर को यज्ञ आदि शुभ कर्मों का प्रणयन करने वाले हम उपासक जन ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं।

टि. *देखना चाहा मैंने* - **अव अचचक्षम्**। पृथिव्याम् अधश् चक्षुषा अपश्यम् - वे.। अवाद्राक्षम् - सा.। I have looked down upon - W. I have beheld - G.

*छुपे हुए को* - **सस्वः**। अन्तर्हितम् - वे.। सा.। गुप्तम् - दया.। the secret - W. G.

*विधाता के* - **निधातुः**। स्वं स्थापयितुः - सा.। धरतुः - दया.। of the self-sustainer - W. the Founder's (habitation) - G.

*अनुसरण किया मैंने* - **अनु आयम्**। अनुगतवान् अस्मि - वे.। सा.। I have sought - G.

*जानते हुए प्राप्त करें हम* - **बुबुधनाः अशेम**। वयम् अपि इन्द्रं ज्ञातुकाम एव स्थितवन्तः - वे.। बुभुत्समाना वयम् इन्द्रं प्राप्तवन्तः स्म - सा.। सम्बोधयुक्ताः प्राप्नुयाम - दया.। the searchers after wisdom (have said to me) let us have recourse to Indra - W. May we, awakened men, attain to Indra - G.

**प्र नु वयं सुते या ते कृतानीन्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः।**
**वेददविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान् वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः।। ३।।**

प्र। नु। वयम्। सुते। या। ते। कृतानि। इन्द्र। ब्रवाम। यानि। नः। जुजोषः।
वेदत्। अविद्वान्। शृणवत्। च। विद्वान्। वहते। अयम्। मघऽवा। सर्वऽसेनः।। ३।।

*प्रकर्ष से अब हम सोमसवन के अवसर पर, जो तेरे किये हुए हैं (उनका),*
*हे इन्द्र! बखान करें हम, (और) जिन हमारे (कर्मों) का सेवन किया है तूने।*
*जान लेवे न जानने वाला, और सुना देवे (दूसरों को) जानने वाला,*
*वहन करता है (सभी कर्मों को), यह धनदाता, सब सेनाओं वाला।। ३।।*

भक्तिरस के समर्पण के अवसर पर इस समय हम उपासक जन उन सभी वीरतापूर्ण कर्मों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं, जो उस परमेश्वर ने हमारे हित के लिये किये हैं और हमारे जिन कर्मों को उस जगदीश्वर ने स्वीकार किया है, जिनका उसने अनुमोदन किया है। प्रत्येक अज्ञानी मनुष्य को यह बात भली प्रकार जान लेनी चाहिये और प्रत्येक ज्ञानी मनुष्य को यह बात सब के कानों में डाल देनी चाहिये, कि सब का धनदाता, सब प्रजाओं का स्वामी वह परमेश्वर ही सब कार्यों को सम्पन्न करने वाला है। कर्त्ता-धर्त्ता तो केवल वही है। हम सब तो निमित्तमात्र हैं।

टि. *सोमसवन के अवसर पर* - **सुते**। यज्ञे - वे.। सोमे ऽभिषुते सति - सा.। when the libation is offered - W. when we pour libation - G.

*जिन हमारे (कर्मों) का सेवन किया है तूने* - **यानि नः जुजोषः।** यानि च पुरा अस्माभिः कृतानि त्वं सेवितवान् असि - वे.। त्वम् अप्यस्मदर्थं यानि कर्माणि जुजोषः असेवथाः - सा.। यानि अस्माकं जुषसे - दया.। those (exploits) which thou hast been pleased (to achieve) for us - W. what mighty deeds thou hast performed to please us - G.

*और सुना देवे जानने वाला* - **शृणवत् च विद्वान्।** विद्वान् अपि अस्माभिर् उच्यमानानि शृणोतु - वे.। विद्वान् शृणुयाच् च। यद्वा। विद्वान् जानन् पुरुषो ऽजानन्तम् अपि जनं श्रावयेच् च। सा.। let him who is acquainted (with them) make them known - W. let him listen - G.

*वहन करता है (सभी कर्मों को)* - **वहते।** प्रविशति - वे.। जानतश् च शृणवतच् च तान् जनान् प्रति अश्वैर् उह्यते - सा.। प्राप्नोति प्रापयति च - दया.। hither rides (Maghavan) - G.

**स्थिरं मनश् चकृषे जात इन्द्र वेषीद् एको युधये भूयसश् चित्।**
**अश्मानं चिच् छवसा दिद्युतो वि विदो गवाम् ऊर्वम् उस्रियाणाम्।। ४।।**

स्थिरम्। मनः। चकृषे। जातः। इन्द्र। वेषि। इत्। एकः। युधये। भूयसः। चित्।
अश्मानम्। चित्। शवसा। दिद्युतः। वि। विदः। गवाम्। ऊर्वम्। उस्रियाणाम्।। ४।।

*स्थिर मन को कर लेता है तू, आविर्भूत होकर, हे इन्द्र!,*
*जाता ही है अकेला, संग्राम के लिये, बहुतों के पास भी।*
*पर्वत को भी बल से (अपने), भग्न कर देता है तू,*
*विशेषतः प्राप्त करता है तू, गौओं के समूह को, दुधारुओं के।। ४।।*

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! जब तू आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये प्रकट होता है, तो उनका संहार करने के लिये अपने मन को दृढ़ कर लेता है, दृढ़निश्चयी हो जाता है। तू अकेला ही असंख्यों के साथ युद्ध करने के लिये चल पड़ता है। तू पुञ्जीभूत अज्ञान के पर्वत को भी अपने बल से ध्वस्त कर डालता है। तू अज्ञान के आवरण से आच्छादित अमृत प्रदान करने वाली ज्ञान रश्मियों को प्राप्त करके उन्हें अपने उपासकों के लिये प्रकट कर देता है।

टि. *स्थिर मन को कर लेता है तू* - **स्थिरम् मनः चकृषे।** चलनरहितं चित्तं चकर्थ - सा.। निश्चलम् अन्तःकरणं करोति - दया.।

*जाता ही है अकेला* - **वेषि इत् एकः।** एकः एव गच्छसि - वे.। असहाय एव वेषि अवेः अगमः - सा.। व्याप्नोषि एव एकः - दया.। thou hast gone alone - W.

*पर्वत को भग्न कर देता है तू* - **अश्मानम् चित् दिद्युतः।** ततः धनं प्रकाशीकृतवान् असि - वे.। गवाम् आवरकं पर्वतम् अपि व्यभिनः - सा.। thou clavest even the rock asunder - G.

*गौओं के समूह को दुधारुओं के* - **गवाम् ऊर्वम् उस्रियाणाम्।** गवाम् उत्सरणशीलानां सङ्घातम् - वे.। क्षीरम् उत्सारयन्तीनां गवां धेनूनां समूहम् - सा.। the herd of milk-yielding kine - W. the stable of the milch-kine - G.

**परो यत् त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत्।**
**अतश् चिद् इन्द्राद् अभयन्त देवा**

**विश्वा॑ अ॒पो अ॑जयद् दा॒सप॑त्नीः॥ ५॥२६॥**

पु॒रः। यत्। त्वम्। प॒रमः। आ॒ऽजनि॑ष्ठाः। प॒रा॒ऽवति॑। श्रुत्य॑म्। नाम॑। बिभ्र॑त्।
अतः॑। चि॒त्। इन्द्रा॑त्। अ॒भ॒य॒न्त॒। दे॒वाः। विश्वाः॑। अ॒पः। अ॒ज॒य॒त्। दा॒सऽप॑त्नीः॥ ५॥

*श्रेष्ठ जब तू श्रेष्ठतम, प्रादुर्भूत होता है (वृत्रहन्ता जगत् में),*
*दूरवर्ती स्थान पर भी, श्रवणीय नाम को धारण करता हुआ।*
*तब से लेकर ही (तुझ) इन्द्र से, डरने लगते हैं देव (भी),*
*सब जलों को जीत लेता है वह (तू), हिंसक (बन गया) है स्वामी जिनका॥ ५॥*

हे परमेश्वर! तू श्रेष्ठ है, तू श्रेष्ठतम है। दुष्ट आसुरी शक्तियों का हनन करने वाला तू जब दूर-दूर तक प्रसिद्ध अपने इस श्रवणीय इन्द्र नाम को धारण करता हुआ इस जगत् में प्रकट होता है, तो उस अनादि काल से ही सभी प्राणी, यहां तक कि देव भी, तुझसे भय खाते हैं। तू जल, प्रकाश आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार जमाकर बैठ जाने वाली हिंसक आसुरी शक्ति का विनाश करके और उन सुखसाधनों को उससे छीनकर उन्हें सब प्रजाओं के लिये मुक्त कर देता है।

टि. *श्रेष्ठ* - **परः।** परस्ताद् उपरिष्टात् स्थितः - सा.। उत्कृष्टः - दया.। most excellent - W.

*दूरवर्त्ती स्थान पर भी* - **परावति।** दूरे - वे.। सा.। दूरे देशे - दया.। at a distance - G.

*श्रवणीय नाम को धारण करता हुआ* - **श्रुत्यं नाम बिभ्रत्।** श्रुत्यम् श्रवणीयं इन्द्राख्यं नाम बिभ्रत् - वे.। श्रवणीयं नामधेयं धारयन् - सा.। श्रुत्यं श्रुतौ श्रवणे भवम् - दया.। bearing a name renowned - W. G.

*हिंसक (बन गया) है स्वामी जिनका* - **दासपत्नीः।** यासां दासः पतिः - वे.। दासो वृत्रः पतिः पालयिता यासाम् अपां ताः - सा.। यो जलं ददाति स दासो मेघः, स पतिः पालको यासां ताः - दया.। the brides of the slave (Vṛtra) - W. which served the Dāsa - G.

**तुभ्येद् ए॒ते म॒रुतः॑ सु॒शेवा॒ अर्च॑न्त्य॒र्कं सु॒न्वन्त्यन्धः॑।**
**अहि॑म् ओहा॒नम् अ॒प आ॒शया॑नं॒ प्र मा॒याभि॑र् मा॒यिनं॑ सक्ष॒द् इन्द्रः॑॥ ६॥**

तुभ्य॑। इत्। ए॒ते। म॒रुतः॑। सु॒ऽशेवाः॑। अर्च॑न्ति। अ॒र्कम्। सु॒न्वन्ति॑। अन्धः॑।
अहि॑म्। ओ॒हा॒नम्। अ॒पः। आ॒ऽशया॑नम्। प्र। मा॒याभिः॑। मा॒यिन॑म्। स॒क्ष॒त्। इन्द्रः॑॥ ६॥

*तेरे लिये ही ये स्तोता, उत्तम सुखों वाले,*
*गाते हैं स्तोत्र को, सवन करते हैं सोम का।*
*आहन्ता को, बाधने वाले को, जलों को घेरकर शयन करने वाले को,*
*प्रकर्ष से शक्तियों से (अपनी), छलबल वाले को अभिभूत करता है इन्द्र॥ ६॥*

हे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! तुझे सुखी अर्थात् प्रसन्न करने की इच्छा वाले ये स्तोता तेरे लिये ही अपनी स्तुतियों का गान करते हैं और तुझे आनन्दित करने के लिये ही अपने हृदय में भक्तिरस का सवन करते हैं। तू परमेश्वर जल आदि सुखसाधनों को घेरकर बैठ जाने वाली, प्रजाओं को दुःखी करने वाली, छल-कपट के बल वाली, हिंसक आसुरी शक्ति को अपने बलों से परास्त कर देता है।

टि. *तेरे लिये ही* - **तुभ्य इत्।** तुभ्यम् एव - वे.। सा.। अत्र विभक्तेर् लुक् - दया.।

*स्तोता* – **मरुतः**। महद् रवन्ति वदन्तीति मरुतः स्तोतारः – सा.। ऋत्विजः – दया.।

*उत्तम सुखों वाले* – **सुशेवाः**। सुसुखाः – वे.। शेवम् इति सुखनाम। शोभनसुखाः। सा.।devoted - W. blissful - G.

*बाधने वाले को* – **ओहानम्**। युध्यन्तम् – वे.। देवान् बाधमानम् – सा.।harassing the gods - W. the lurker - G.

*अभिभूत करता है* – **सक्षत्**। अभिव्याप्तवान् – वे.। अभ्यभवत् – सा.। समवैति – दया.।has overcome - W. subdued - G.

**वि षू मृधो॑ ज॒नुषा॒ दान॒म् इन्व॒न्नह॒न् गवा॑ मघवन् त्संचका॒नः।**
**अत्रा॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चे॒ः शिरो॒ यद् अव॑र्तयो॒ मन॑वे गा॒तुम् इ॒च्छन्।। ७।।**

वि। सु। मृधः॑। ज॒नुषा॑। दान॑म्। इन्व॑न्। अह॑न्। गवा॑। म॒घ॒ऽव॒न्। स॒म्ऽच॒का॒नः।
अत्र॑। दा॒सस्य॑। नमु॑चेः। शिरः॑। यत्। अव॑र्तयः। मन॑वे। गा॒तुम्। इ॒च्छन्।। ७।।

*विविधतया सुष्ठु शत्रुओं को, आदि काल से काट डालना चाहता हुआ,*
*मार डालता है (उनको) गौ के लिये, हे धनदाता, स्तुति किया जाता हुआ।*
*इस जगत् में हिंसक के, धन को न छोड़ने वाले के, शिर को जब,*
*लुढ़का देता है तू, मनुष्य के लिये प्रगति चाहता हुआ।। ७।।*

हे धनों के दाता परमेश्वर! तू आदि काल से ही हिंसक आसुरी शक्तियों को काट डालना चाहता हुआ और गौ, जल, प्रकाश, ज्ञान आदि का सब में समान रूप से वितरण करने के लिये उपासकों के द्वारा स्तुति किया जाता हुआ आनन्दविभोर होकर आसुरी शक्तियों का हनन कर डालता है। इसी निमित्त तू हिंसा की वृत्ति वाले, धन को दूसरों के लिये न छोड़ने वाले, दान न देने वाले दुष्ट मनुष्य के सिर को दूसरे मनुष्यों की प्रगति और उपकार के लिये काट डालता है।

टि. *काट डालना चाहता हुआ* – **दानम् इन्वन्**। दानवं खण्डयिता – वे.। दानं देवानां बाधकम्, इन्वन् प्रेरयन् – सा.।the Giver, speeding - G.

*गौ के लिये* – **गवा**। तेजसा – वे.। वज्रेण – सा.। किरणेन – दया.।joying in milk - G.

*स्तुति किया जाता हुआ* – **संचकानः**। संदीप्यमानः – वे.। अस्माभिः स्तूयमानः। संपूर्वः कायतिः शब्दर्मा। तस्य लडर्थे लिटि रूपम्। सा.। सम्यक् कामयमानः – दया.।

*हिंसक के* – **दासस्य**। उपक्षपयितुः – वे.। उपक्षपयितुर् असुरस्य – सा.। सेवकवद् वर्तमानस्य मेघस्य – दया.।of the slave - W. of the Dāsa - G.

*धन को न छोड़ने वाले के* – **नमुचेः**। एतन्नामकस्य – सा.। यः स्वं रूपं न मुञ्चति तस्य – दया.।of Namuci - W. G.

*मनुष्य के लिये प्रगति चाहता हुआ* – **मनवे गातुम् इच्छन्**। संरुद्धाय बभ्रवे गमनमार्गम् इच्छन् – वे.। नमुचिनापहृतगोधनाय मह्यं सुखम् इच्छन् – सा.। मननशीलाय धार्मिकाय मनुष्याय भूमिं वाणीं वा इच्छन् – दया.।desiring to do good to Manu - W. seeking man's prosperity - G.

**यु॒जं हि माम् अकृ॑था॒ आद् इद् इ॑न्द्र शिरो॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चेर् मथा॒यन्।**

**अश्मानं चित् स्वर्यं१ वर्तमानं प्र चक्रियेव रोदसी मरुद्भ्यः॥ ८॥**

युजम्। हि। माम्। अकृथाः। आत्। इत्। इन्द्र। शिरः। दासस्य। नमुचेः। मथायन्।
अश्मानम्। चित्। स्वर्यम्। वर्तमानम्। प्र। चक्रियाऽइव। रोदसी इति। मरुत्ऽभ्यः॥ ८॥

*साथी निश्चय से मुझको बना ले तू तब, हे इन्द्र!,*
*शिर को विनाशक के, न छोडने वाले के, मथता हुआ।*
*व्यापक सूर्य को भी, स्वर्लोक में स्थित को, घूमते हुए को,*
*खूब (साथी बना ले), पहिये जैसों को, द्युलोक-भूलोक को, प्राणियों के लिये॥ ८॥*

हे परमेश्वर! चूँकि तू सज्जनों की रक्षा और हिंसकों का विनाश करना चाहता है, इसलिये तू हिंसा की वृत्ति वाली और दान के लिये धन का त्याग न करने वाली आसुरी शक्ति के विनाश के इस पुण्य कार्य में मुझको भी अपना साथी बना ले। तू इस कार्य में प्रकाशलोक में स्थित, निरन्तर गतिमान, प्रकाश से सर्वत्र व्यापक इस सूर्य को भी अपना साथी बना ले। तू प्राणियों के हित के लिये पहियों की तरह गति करने वाले धरती और आकाश को भी अपना साथी बना ले।

टि. *साथी बना ले* - **युजम् अकृथाः**। सहायम् अकृथाः - वे.। सखायं चकृषे - सा.। युक्तं कुर्याः - दया.। thou hast made me associate - W. G.

*मथता हुआ* - **मथायन्**। मथितुम् इच्छन् - वे.। चूर्णयन् - सा.। मन्थनं कुर्वन् - दया.।

*व्यापक सूर्य को भी* - **अश्मानम् चित्**। अशु व्याप्ताव् इत्यस्माद् सिध्यति रूपम् इदम्। यद्वा अश्मेव दिवि वर्तमानम्॥ वज्रं च - वे.। मेघम् इव स्थितम् - सा.। अश्नुवन्तं मेघम् - दया.। cloud - W. stone - G.

*स्वर्लोक स्थित को* - **स्वर्यम्**। स्वरणकुशलम् - वे। स्वरेण सहितम् - सा.। स्वरेषु शब्देषु साधु - दया.। sounding - W. that is in heaven - G.

*घूमते हुए को* - **वर्तमानम्**। अभिमते देशे गच्छन्तम् - वे.। भ्रमन्तम् - सा.। rolling - W. G.

*पहिये जैसों को* - **चक्रिया इव**। चक्रे इव - वे.। चक्रे इव प्रास्ताम्। सा.। यथा चक्राणि तथा - दया.। as on a car - G.

**स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नबला अस्य सेनाः।**
**अन्तर् ह्यख्यद् उभे अस्य धेने अथोप प्रैद् युधये दस्युम् इन्द्रः॥ ९॥**

स्त्रियः। हि। दासः। आयुधानि। चक्रे। किम्। मा। करन्। अबलाः। अस्य। सेनाः।
अन्तः। हि। अख्यत्। उभे इति। अस्य। धेने इति॥ अथ। उप। प्र। ऐत्। युधये। दस्युम्। इन्द्रः॥ ९॥

*स्त्रियों को ही हिंसक ने, आयुध बना लिये (इसने),*
*क्या मेरा कर लेंगी (भला), निर्बल इसकी सेनाएं।*
*अन्दर ही अन्दर देख लिया उसने, दोनों को इसके बलधारक जबड़ों को,*
*और पास प्रकर्ष से पहुँचा (इसके), लड़ने के लिये दस्यु के, इन्द्र॥ ९॥*

जो हिंसक, दुष्ट, दुराचारी, आततायी लोग होते हैं, उनके लड़ने के साधन उनके कर्मानुसार स्वयं ही दुर्बल हो जाते हैं। भला ये दुर्बल साधन और निर्बल सेनाएं परमेश्वर के बल के सामने कैसे

ठहर सकते हैं। वह प्रभु अन्दर ही अन्दर जानता है, कि इन दुष्टों के जबड़ों में कितना बल है। इसलिये वह शीघ्र ही ऐसी दुष्ट हिंसक शक्तियों से लड़ने के लिये उनके पास स्वयं ही पहुँच जाता है और उन्हें समूल नष्ट कर देता है। हमेशा सत्य, धर्म और न्याय की ही विजय होती है, असत्य, अधर्म और अन्याय की कभी विजय नहीं हो सकती।

टि. *स्त्रियों को ही हिंसक ने आयुध बना लिया* - **स्त्रियः हि दासः आयुधानि चक्रे।** दासः उपक्षपयिता नमुचिर् असुरः स्त्रीर् युद्धसाधनानि कृतवान् खलु - सा.।

*अन्दर ही अन्दर देख लिया उसने दोनों को इसकी बलधारक भुजाओं को* - **अन्तः हि अख्यत उभे अस्य धेने।** धेना दधातेः - या. (नि. ६.१७)। अथ च धेने आधस्त्ये दंष्ट्रे जिह्वोपजिह्वके वा (दुर्ग.)।। तासु स्त्रीषु रूपयुक्ते द्वे स्त्रियाव् आदाय अन्तः चकार - वे.। इन्द्रस् तासां मध्ये अस्यासुरस्य धेने प्रीणयित्र्यौ सुरूपे उभे द्वे स्त्रियाव् अन्तर् अख्यद् धि - वे.। अन्तः किल प्रकटयति उभे मन्दतीव्रे अस्य मेघस्य धेने वाचौ - दया.। the two his best beloved, (Indra) confined in the inner apartments - W. well he distinguished his two different voices - G.

**सम् अत्र गावो ऽभितो ऽनवन्तेहेह वत्सैर् वियुता यद् आसन्।**
**सं ता इन्द्रो असृजद् अस्य शाकैर्**
**यद् ईं सोमासः सुषुता अमन्दन्।। १०।। २७।।**

सम्। अत्र। गावः। अभितः। अनवन्त। इहऽइह। वत्सैः। विऽयुताः। यत्। आसन्।
सम्। ताः। इन्द्रः। असृजत्। अस्य। शाकैः। यत्। ईम्। सोमासः। सुऽसुताः। अमन्दन्।। १०।।

*सम्यक् यहाँ गौएं, सर्वतः स्तुति करती हैं,*
*इधर-उधर, बछड़ों से बिछुड़ जब जाती हैं।*
*मिला उनको इन्द्र देता है, अपनी शक्तियों से,*
*जब इसको सोम सुष्ठु सवन किये हुए, आनन्दित करते हैं।। १०।।*

गौ ज्ञान और ज्ञानी का प्रतीक है और बछड़े ज्ञान के पिपासु जिज्ञासु जन का प्रतीक हैं। जब ज्ञान अथवा ज्ञानी अपने जिज्ञासुओं से बिछुड़ जाता है तो वह बहुत दुःखी और सन्तप्त होता है और पुनर्मिलन के लिये परमेश्वर की स्तुति करता है। जिज्ञासुओं को ही ज्ञान की आवश्यकता नहीं है, अपितु ज्ञान अथवा ज्ञानियों को भी जिज्ञासु शिष्यों की आवश्यकता होती है। वह भी उनके बिना नहीं रह सकता। यम नचिकेता को कहता है - हमें तेरे जैसे जिज्ञासु शिष्य की ही आवश्यकता है (त्वादृङ् नो भूयान् नचिकेतः प्रष्टा - कठ.उप. २.९)। जब परमेश्वर ज्ञानियों की योगसाधना आदि के द्वारा की हुई भक्ति के द्वारा आनन्दविभोर हो जाता है, तो वह अपने सामर्थ्यों से उन ज्ञानों अथवा ज्ञानियों को पुनः उनके जिज्ञासुओं से मिला देता है।

टि. *सम्यक् स्तुति करती हैं* - **सम् अनवन्त।** सम् अगच्छन्त - वे.। सम् अनवन्त अत्यन्तम् अगच्छन् - सा.। स्तुवन्तु - दया.। wandered about - W. cows went lowing around - G.

*मिला देता है* - **सम् असृजत्।** वत्सैः सह समयोजयत् - सा.। reunited - W. G.

*शक्तियों से* - **शाकैः।** मरुद्भिः सह - वे.। शाकैः शक्तैर् मरुद्भिः सह - सा.। शक्तिभिः - दया.।

with his vigorous (Maruts) - W. with his helpers - G.

*आनन्दित करते हैं* - **अमन्दन्।** अमादयन् - सा.। आनन्दयन्ति - दया.।

**यद् ईं सोमा बभ्रुधूता अमन्दन्नरोरवीद् वृषभः सादनेषु।**
**पुरन्दरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर् गवाम् अददाद् उस्रियाणाम्।। ११।।**

यत्। ईम्। सोमाः। बभ्रुऽधूताः। अमन्दन्। अरोरवीत्। वृषभः। सदनेषु।
पुरम्ऽदरः। पपिऽवान्। इन्द्रः। अस्य। पुनः। गवाम्। अददात्। उस्रियाणाम्।। ११।।

*जब इसको सोम, हविदाता द्वारा सवन किये हुए, आनन्दित करते हैं,*
*अत्यधिक शब्द करता है सुखों का वर्षक, लोकों में।*
*पुरों को दीर्ण करने वाला, पान करता है, इन्द्र इसका,*
*फिर से गौओं को ला देता है, दूध देने वालियों को।। ११।।*

उस परमेश्वर के लिये अपनी आहुतियां लाने वाला यजमान जब उसे अपना भक्तिरसरूपी सोम समर्पित करता है, तो वह आनन्दविभोर होकर तीनों लोकों में गर्जना करता है, जिससे सब दुष्ट आसुरी शक्तियां भयभीत हो जाती हैं। दुष्ट आसुरी शक्तियों के दुर्गों को ध्वस्त कर डालने वाला वह जगदीश जब उपासक के भक्तिरस रूपी अमृत का पान करता है, तो आनन्दित होकर प्रकाश आदि सुखसाधनों को आसुरी शक्तियों के अधिकार से मुक्त करके उस अपने उपासक के लिये फिर से ला देता है।

टि. *हविदाता द्वारा सवन किये हुए* - **बभ्रुधूताः।** बभ्रुणा हविषां भर्त्रा सुताः। बिभर्ति हव्यानि देवेभ्य इति बभ्रुर् याजकः।। बभ्रुनाम्ना मया सुताः - वे.। बभ्रुणाभिषुताः - सा.। बभ्रुभिर् धृतविद्यैर् धूताः पवित्रीकृताः - दया.।

*अत्यधिक शब्द करता है* - **अरोरवीत्।** अत्यन्तं शब्दं करोति - वे.। अत्यर्थं शब्दम् अकरोत् - सा.। भृशं शब्दायते - दया.। shouted aloud - W. loud the Steer bellowed - G.

*लोकों में* - **सदनेषु।** युद्धेषु - वे.। सा.। स्थानेषु - दया.। in the combats - W. in his habitations - G.

*दूध देने वालियों को* - **उस्रियाणाम्।** क्षीरम् उत्स्राविणीर् गाः - सा.। किरणानाम् - दया.।

**भद्रम् इदं रुशमा अग्न अक्रन् गवां चत्वारि ददतः सहस्रा।**
**ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम्।। १२।।**

भद्रम्। इदम्। रुशमाः। अग्ने। अक्रन्। गवाम्। चत्वारि। ददतः। सहस्रा।
ऋणम्ऽचयस्य। प्रऽयता। मघानि। प्रति। अग्रभीष्म। नृऽतमस्य। नृणाम्।। १२।।

*कल्याण कार्य को इसको तेजस्वी जनों ने, हे अग्रणी!, किया है,*
*(ऋग्ज्ञानरूपी) गौओं के चार को, देते हुओं ने हजारों को।*
*ऋण से मुक्त कराने वाले के, प्रदान किये हुओं को, धनों को,*
*स्वीकार किया हमने अतिशय नेतृत्व करने वाले के, नेताओं में से।। १२।।*

हे सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले परमेश्वर! हजारों ऋचाओं का ज्ञान प्रदान करके तेजस्वी जनों

ने हमपर कल्याण करने वाला यह महान् उपकार किया है। विभिन्न प्रकार के ऋणों से मुक्त कराने वाले, मार्गदर्शकों में तुझ उत्तम मार्गदर्शक के द्वारा प्रदान किये हुए इन पवित्र धनों को हम सहर्ष स्वीकार करते हैं।

टि. *कल्याण कार्य को* - **भद्रम्**। भटाः दीप्ताः - वे.। कल्याणम् इदं कर्म - सा.। कल्याणम् - दया.। good deed - G.

*ज्ञानी ऋषियों ने* - **रुशमाः**। रुशम इति कश्चिज् जनपदविशेषः। अत्र रुशमशब्देन तत्रत्या जना उच्यन्ते। रुशमा ऋणंचयनाम्नो राज्ञः किंकराः। सा.। ये रुशान् हिंसकान् मिन्वन्ति - दया.।

*ऋणों से मुक्त कराने वाले के* - **ऋणंचयस्य**। एतन्नामकेन राज्ञा - सा.। ऋणं चिनोति येन तस्य - दया.। Ṛṇacaya's - G.

*प्रदान किये हुओं को* - **प्रयता**। प्रत्तानि - वे.। प्रयतानि दत्तानि - सा.। प्रयत्नेन - दया.।

*धनों को* - **मघानि**। मंहनीयानि गोधनानि - वे.। गोरूपाणि धनानि - सा.। धनानि - दया.।

**सुपेशसं मावं सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रै रुशमासो अग्ने।**
**तीव्रा इन्द्रम् अममन्दुः सुतासो ऽक्तोर् व्युष्टौ परितक्म्यायाः।। १३।।**

सुऽपेशसम्। मा। अव। सृजन्ति। अस्तम्। गवाम्। सहस्रैः। रुशमासः। अग्ने।
तीव्राः। इन्द्रम्। अममन्दुः। सुतासः। अक्तोः। विऽउष्टौ। परिऽतक्म्यायाः।। १३।।

*शोभन रूप वाले को मुझको, ले जाते हैं घर में,*
*गौओं के हजारों से युक्त (में), तेजस्वी जन, हे अग्ने।*
*रसवान्, इन्द्र को मुदित करते हैं, सवन किये हुए (सोम),*
*रात्रि की समाप्ति पर, सर्वतः घेरने वाली की (तम से)।। १३।।*

योगसाधना, तपश्चर्या आदि के द्वारा जब साधक भक्तिरस रूपी सोमों का सवन करके उन्हें प्रभु को समर्पित करता है, तो उससे वह आनन्दित हो जाता है। उसकी कृपा से उपासक के लिये तम से घेरने वाली अज्ञान-अन्धकार रूपी रात्रि का अवसान होकर ज्ञानरूपी दिवस का उदय हो जाता है। उपासक के सब दुरित, पाप, कल्मष आदि धुल जाते हैं। पवित्र स्वरूप वाले उस पवित्रात्मा उपासक को, हे मार्गदर्शक परमेश्वर!, आप की कृपा से ज्ञानी जन हजारों ज्ञानरश्मियों से जाज्वल्यमान ज्ञान के सदन में प्रवेश कराते हैं।

टि. *शोभन रूप वाले को* - **सुपेशसम्**। सुरूपम् - वे.। सुरूपम् अलङ्काराच्छादनादिभिः संस्कृतम् - सा.। with fair adornment - G.

*ले जाते हैं* - **अव सृजन्ति**। प्रापयन्ति स्म - सा.। sent me - G.

*घर में* - **अस्तम्**। गृहम् - वे.। सा.। homeward - G.

*रात्रि की समाप्ति पर* - **अक्तोः व्युष्टौ**। (अस्याः) रात्रेः व्युच्छने - वे.। सा.। upon the breaking up of the night - W. when night changed to morning - G.

*घेरने वाली की (तम से)* - **परितक्म्यायाः**। तकतिर् गतिकर्मा। ऋणञ्चयम् अपहाय बभ्रुर् यस्यां रात्र्याम् आगतः सा परितक्म्योच्यते - वे.। तमसा भूतानि परितस् तकति गच्छतीति परितक्म्या तस्याः

– सा.। परितः सर्वतस् तकन्ति हसन्ति यैः कर्मभिस् तेषु भवायाः – दया.।(gloom-) investing - W. whose course was ending - G.

**औच्छ॒त् सा रात्री॒ परि॑तक्म्या॒ याँ ऋ॑णंच॒ये राज॑नि रु॒शमा॑नाम्।**
**अत्यो॒ न वा॒जी र॒घुर् अ॒ज्यमा॑नो ब॒भ्रुश् च॒त्वार्य॑सनत् स॒हस्रा॑।। १४।।**

औच्छ॑त्। सा। रात्री॑। परि॑ऽतक्म्या। या। ऋ॒ण॒म्ऽच॒ये। राज॑नि। रु॒शमा॑नाम्।
अत्यः॑। न। वा॒जी। र॒घुः। अ॒ज्यमा॑नः। ब॒भ्रुः। च॒त्वारि॑। अ॒स॒न॒त्। स॒हस्रा॑।। १४।।

*दिन में बदल गई वह रात्री, तमोमयी (घेरने वाली) जो (थी),*
*ऋणमोचक के, (कृपा करने पर,) स्वामी के, ज्ञानियों के।*
*अश्व की तरह बलवान् की, फुर्तीले की, हाँके जाते हुए की,*
*हवियों को लाने वाला, चार को प्राप्त करता है हजार को (गौओं के)।। १४।।*

अज्ञान–अन्धकार की वह रात्रि जो मनुष्य के जीवन में सब ओर उपस्थित हो जाती है, ज्ञानी गुरुओं, ऋषि–मुनियों और सन्त–महात्माओं के द्वारा मार्गदर्शन करने पर उनके स्वामी उस परम–पिता परमात्मा की कृपा से ज्ञान से भरे प्रकाशमान दि॒न में परिवर्तित हो जाती है। एक बलवान्, शीघ्रगति सम्यक् हाँका जाता हुआ अश्व जिस प्रकार अतिशीघ्र अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाता है, उसी प्रकार ज्ञानी गुरुओं के द्वारा सन्मार्ग पर प्रेरित किया हुआ याजक, साधक, उपासक अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और ज्ञान, प्रकाश आदि हजारों प्रकार की प्रभु की कृपाओं को प्राप्त करता है।

टि. *दिन में बदल गई* – औच्छत्। व्युष्टाभवत् – सा.। विवासयति – दया.।has dispersed with the dawn - W. well nigh ended - G.

*ऋणमोचक के, (कृपा करने पर,) स्वामी के* – ऋणञ्चये राजनि। राजनि प्रभाव् ऋणञ्चय एतत्संज्ञके तत्समीप एव – सा.। ऋणं चिनोति यस्मात् तस्मिन् राजनि – दया.।(upon the appearance of) Ṛṇañcaya, the Rāja (of the Ruśmas) - W. G.

*हाँके जाते हुए की (तरह)* – अज्यमानः। प्रेर्यमाणः – सा.। चाल्यमानः – दया.।being summoned - W. urged onward - G.

**चतु॑ःसह॒स्रं गव्य॑स्य प॒श्वः प्रत्य॑ग्रभीष्म रु॒शमे॑ष्वग्ने।**
**घ॒र्मश् चि॑त् त॒प्तः प्र॒वृ॒जे य आसी॑द्**
**अय॒स्मय॒स् तम् वादा॑म॒ विप्राः॑।। १५।। २८।।**

चतु॑ःऽसहस्रम्। गव्य॑स्य। प॒श्वः। प्रति॑। अ॒ग्र॒भी॒ष्म॒। रु॒शमे॑षु। अ॒ग्ने॒।
घ॒र्मः। चि॒त्। त॒प्तः। प्र॒ऽवृजे॑। यः। आसी॑त्। अ॒य॒स्मयः॑। तम्। कुँ इति॑। आदा॑म। विप्राः॑।। १५।।

*चार हजार को, गोजाति पशुओं को,*
*ग्रहण किया हमने रुशमों के पास, हे अग्ने।*
*देगचा भी खौलता हुआ, प्रवर्ग्य के लिये जो था,*
*सुवर्णमय, उसको भी प्राप्त किया हम उपासकों ने।। १५।।*

हे अग्रणी इन्द्र!, ऐश्वर्यवान् परमात्मन्! तुझे अपना स्वामी स्वीकार करने वाले सद्‌गुरुओं,

ऋषि-मुनियों और साधु-सन्तों से हमने असंख्य ज्ञानराशियों को ग्रहण किया है। इसी प्रकार हम उपासकों ने सदा खौलते रहने वाले महावीर पात्र की तरह, प्रभुचिन्तन में सहायक, तेजोमय मानसिक कलश को भी प्राप्त किया है।

टि. *देगचा* - **घर्मः**। महावीर इव - सा.। प्रतापः - दया.। ewer - W. the caldron - G.

*खौलता हुआ* - **तप्तः**। सन्तप्तः शोभनवर्णः - सा.। glowing - W. which was heated - G.

*प्रवर्ग्य के लिये* - **प्रवृजे**। प्रवृञ्जनाय - वे.। सा.। प्रवृजते यस्मिंस् तस्मिन् - दया.। for the solemnity - W. for Pravargya - G.

*सुवर्णमय* - **अयस्मयः**। हिरण्येन निर्मितः - वे.। अयोमयो हिरण्यमयः कलशः - सा.। हिरण्यम् इव तेजोमयः - दया.। golden - W. of metal - G.

*उपासकों ने* - **विप्राः**। मेधाविनः - वे.। सा.। दया.। wise - W. the singers - G.

## सूक्त ३१

ऋषिः - अवस्युर् आत्रेयः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। त्रयोदशर्चं सूक्तम्।

**इन्द्रो॒ रथा॑य प्र॒वतं॑ कृणोति॒ यम् अ॒ध्यस्था॑न् म॒घवा॑ वाज॒यन्त॑म्।**
**यू॒थेव॑ प॒श्वो व्यु॑नोति गो॒पा अरि॑ष्टो याति प्रथ॒मः सिषा॑सन्॥ १॥**

इन्द्रः॑। रथा॑य। प्र॒ऽवत॑म्। कृ॒णो॒ति॒। यम्। अ॒धि॒ऽअस्था॑त्। म॒घऽवा॑ वा॒ज॒ऽयन्त॑म्।
यू॒थाऽइ॑व। प॒श्वः। वि। उ॒नो॒ति॒ गो॒पाः। अरि॑ष्टः। या॒ति॒। प्र॒थ॒मः। सिसा॑सन्॥ १॥

*इन्द्र रथ के लिये, ढलान वाले मार्ग को बनाता है,*
*जिस (रथ) पर स्थित होता है धनदाता, ऐश्वर्याभिलाषी पर।*
*लहँडों को जिस प्रकार पशुओं के, हाँकता है गवाला,*
*अहिंसित, गमन करता है, मुखिया, धन को चाहता हुआ॥ १॥*

यह जगत् परम ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश्वर का रथ है। यह जगत् भी अपने स्वामी की तरह अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त और अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों की कामना वाला है। वह धनों का दाता स्वामी स्वयं इस रथ में सवार होकर इसे सरल और समतल मार्ग से आगे बढ़ाता है। वह प्रभु सब से महान् है। उसे कोई भी हिंसित नहीं कर सकता। वह सब प्रकार के ऐश्वर्यों को अपने उपासकों को देना चाहता हुआ दुष्ट आसुरी शक्तियों को इस प्रकार आगे-आगे खदेड़ता हुआ चलता चलता है, जिस प्रकार कोई गवाला पशुओं के झुंडों को आगे-आगे हाँकता हुआ चलता है।

टि. *ढलान वाले मार्ग को बनाता है* - **प्रवतं कृणोति**। गमनयोग्यं प्रवणवन्तं देशं करोति - वे.। प्रवणम् आजिं करोति - सा.। निम्नं स्थलं करोति - दया.। directs downwards - W. G.

*लहँडों को जिस प्रकार पशुओं के* - **यूथा इव पश्वः**। गोयूथान् इव गोपालः - वे.। पश्वो यूथेव पशोः पशूनां यूथानि यथा - सा.। समूहान् इव पशूनाम् - दया.।

*हाँकता है* - **व्युनोति**। विविधं प्रेरयति - वे.। (गोपालः पशूनां यूथानि यथा) प्रेरयति (तथा शत्रुसैन्यानि प्रेरयति) - सा.। विशेषेण प्रेरयति - दया.। drives - W. G.

*धन को चाहता हुआ* - **सिषासन्।** शत्रून् सिषासन् - वे.। शत्रुधनानीच्छन् - सा.। इच्छन् - दया.। fain for treasure - G.

**आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व।**
**नहि त्वद् इन्द्र वस्यो अन्यद् अस्त्यमेनांश् चिज् जनिवतश् चकर्थ।। २।।**

आ। प्र। द्रव। हरिऽवः। मा। वि। वेनः पिशङ्गऽराते। अभि। नः। सचस्व।
नहि। त्वत्। इन्द्र। वस्यः। अन्यत्। अस्ति। अमेनान्। चित्। जनिऽवतः। चकर्थ।। २।।

*इधर प्रकर्ष से दौड़ तू, हे अश्ववान्!, मत विगतकाम हो तू,*
*हे पीतवर्ण दानों वाले!, सब ओर से हमसे मिल जा तू।*
*नहीं तुझसे, हे इन्द्र!, बढ़कर वासक दूसरा है।*
*स्त्रीरहितों को भी, पत्नियों वाले बना देता है तू।। २।।*

हे शक्तिमान् परमेश्वर! तू दौड़कर आ और हमारी सुध ले। तू हमसे रूठ मत जाना। तू हमारे प्रति अपनी प्रीति और कृपादृष्टि को कम मत कर देना। हे सुवर्णादि पीतवर्ण पदार्थ प्रदान करने वाले प्रभो! तू हमसे मिल जा। तू हमारा हो जा और हमें अपना बना ले। इस जगत् में तुझसे बढ़कर बसने वाला और बसाने वाला और दूसरा कोई नहीं है। तू विद्यास्नात अविवाहित वरों को विदुषी पत्नियां प्रदान करता है, जिससे मनुष्यजाति की वृद्धि और प्रसार होता है।

टि. *मत विगतकाम हो तू* - **मा वि वेनः।** वेनतिः कान्तिकर्मा। अस्मासु विगतकामो मा भूः। सा.। Be not indifferent to us - W. Be not ungracious - G.

*हे पीतवर्ण दानों वाले* - **पिशङ्गराते।** पिशङ्गा रातिर् यस्येति बहुव्रीहिः। पिशङ्गवर्णस्य सुवर्णादेर् इत्यर्थः। वर. (नि.स. ७)। बहुरूपधनेन्द्र - सा.। यः पिशङ्गं सुवर्णादिकं राति ददाति तत्सम्बुद्धौ - दया.। distributer of manifold wealth - W. lover of gold-hued oblation - G.

*नहीं तुझसे बढ़कर वासक* - **नहि त्वत् वस्यः।** यस्मात् त्वत्तः किञ्चिद् अपि वसुमत्तरो नास्ति - वर. (तत्रैव)। त्वत्तः प्रशस्ततरम् नहि अस्ति - वे.। त्वत्तः श्रेयस्करं नह्यस्ति - सा.। there is nothing else that is better than thou - W.There is naught else better than thou art - G.

*स्त्रीरहितों को* - **अमेनान्।** अस्त्रीकान् - वे.। मेनाशब्दः स्त्रीवाची। अपगतस्त्रीकान्। सा.। अविद्यमाना मेनाः प्रक्षेपकर्त्र्यः स्त्रियो येषां तान् - दया.। the wifeless - G.

*पत्नियों वाले* - **जनिवतः।** जायावतः - वर. (तत्रैव)। वे.। सा.। जन्मवतः - दया.।

**उद् यत् सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा।**
**प्राचोदयत् सुदुघा वव्रे अन्तर् वि ज्योतिषा संववृत्वत् तमो ऽवः।। ३।।**

उत्। यत्। सहः। सहसः। आ। अजनिष्ट। देदिष्टे। इन्द्रः। इन्द्रियाणि। विश्वा।
प्र। अचोदयत्। सुऽदुघाः। वव्रे। अन्तः। वि। ज्योतिषा। सम्ऽववृत्वत्। तमः। अवर् इत्यवः।। ३।।

*उत्पन्न जब बल बल से, सब ओर हो जाता है,*
*दे देता है इन्द्र अपनी शक्तियों को, सब को (उपासकों को)।*
*हाँक देता है सुदुघा गौओं को, बाड़े के अन्दर (स्थितों को),*

*विवृत ज्योति से (अपनी), आवरक तम को कर देता है।। ३।।*

जब वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर अपने बल से ही सब ओर बलों का प्रसार करता है, तो वह अपनी सब शक्तियों को अपने उपासकों को भी प्रदान कर देता है। साधक के शरीररूपी बाड़े के अन्दर जो ज्ञानरश्मियां अज्ञान से घिरी हुई सुप्तावस्था में पड़ी होती हैं, वह उनको झझकोरकर जगा देता है और ज्ञान को घेरने वाले अज्ञानान्धकार के आवरण को परे हटा देता है।

टि. *दे देता है इन्द्र शक्तियों को सबको* - **देदिष्ट इन्द्रः इन्द्रियाणि विश्वा।** सर्वाणि बलानि इन्द्रः दीपयति - वे.। इन्द्रः सर्वाणि धनानि। इन्द्रियम् इति धननामैतत्। देदिष्टे यजमानेभ्यो दिशति। सा.। उपदिशति यौगैश्वर्ययुक्तः श्रोत्रादीनि धनानि वा - दया.। Indra grants all sorts of)wealth - W. Indra displayed all powers that he possesses - G.

*बाड़े के अन्दर (स्थितों को)* - **वव्रे अन्तः।** व्रते अन्तः स्थिताः - वे.। वव्रे निवारके पर्वते ऽन्तर् मध्ये बलेन निरुद्धाः - सा.। वृणोति मध्ये - दया.। from the interior of the obstructing (mountain) - W. forth from the cave - G.

*विवृत ज्योति से आवरक तम को कर देता है* - **वि ज्योतिषा संववृत्वत् तमः अवः।** ज्योतिषा वेष्टमानं तमः वि वृणोति - वे.। तेजसा संवरणशीलं तमो निवारितवान् - सा.। dissipates the enveloping darkness with light - W. with the light laid bare investing darkness - G.

**अनवस् ते रथम् अश्वाय तक्षन् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्।**
**ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैर् अवर्धयन्नहये हन्तवा उ।। ४।।**

अनवः। ते। रथम्। अश्वाय। तक्षन्। त्वष्टा। वज्रम्। पुरुऽहूत। द्युऽमन्तम्।
ब्रह्माणः। इन्द्रम्। महयन्तः। अर्कैः। अवर्धयन्। अहये। हन्तवै। ऊँ इति।। ४।।

*प्राण तेरे लिये रथ को, आशुगमन के लिये बनाते हैं,*
*त्वष्टा वज्र को (बनाता है), हे बहुतों से स्तुत!, दीप्तिमान् को।*
*ब्रह्मज्ञानी (तुझ) इन्द्र को, पूजा करते हुए स्तुतिगानों से,*
*बढ़ाते हैं, आहन्ता को मारने के लिये, निश्चय से।। ४।।*

हे बहुतों के द्वारा पुकारे जाने वाले आत्मा अथवा परमात्मा! प्राण अथवा वायु ही इस शरीररूपी अथवा जगद्रूपी रथ को तेरे लिये शीघ्रगमन के निमित्त उत्तम अवस्था में बनाए रखते हैं। इस जगत् का रचयिता तू ही इस पारदर्शी न्यायव्यवस्था की रचना करता है। इस जगत् में सत्य, पुण्य, प्रकाश आदि का हनन करने वाली आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये ब्रह्मज्ञानी लोग अपने स्तुतिगानों से तेरी पूजा करते हुए तुझे बढ़ाते हैं, तेरी महिमाओं का प्रजाओं में प्रचार-प्रसार करते हैं।

टि. *प्राण* - **अनवः।** अन प्राणन इत्यस्माद् धातोर् अनुर् इति रूपं सिध्यति ।। मनुष्याः ऋभवः - वे.। सा.। मनुष्याः। अनव इति मनुष्यनाम (नि. २.३)। दया.। the Ṛbhus - W. Anus - G.

*आशुगमन के लिये* - **अश्वाय।** अश्वानुगुणम् (रथम्) - वे.। अश्वाभ्यां संयोगार्हम् - सा.। सद्योगमनाय - दया.। adapted to its horses - W. for thy Courser - G.

*ब्रह्मज्ञानी पूजा करते हुए* - **ब्रह्माणः महयन्तः।** ब्राह्मणाः पूजयन्तः - वे.। ब्रह्माणो ऽङ्गिरसः

परिवृढा मरुतो वा - सा.। चतुर्वेदविदः पूजयन्तः - दया.। the Brāhmaṇas - G.

*आहन्ता को मारने के लिये* - **अहये हन्तवै।** अहिं वृत्रं हन्तवै हन्तुम् - सा.। मेघाय हन्तुम् - दया.। that he might slaughter Ahi - G.

**वृष्णे यत् ते वृषणो अर्कम् अर्चान् इन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोषाः।**
**अनश्वासो ये पवयो ऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तन्त दस्यून्।। ५।। २९।।**

वृष्णे। यत्। ते। वृषणः। अर्कम्। अर्चान्। इन्द्र। ग्रावाणः। अदितिः। सऽजोषाः।
अनश्वासः। ये। पवयः। अरथाः। इन्द्रऽइषिताः। अभि। अवर्तन्त। दस्यून्।। ५।।

*सेचक के लिये जब तेरे लिये, सेचनसमर्थ स्तुति का गान करते हैं,*
*हे इन्द्र! सोमसवन करने वाले बट्टे, (और) अदिति संगता।*
*बिना अश्वों वाली जो चक्रधाराएं, बिना रथों वाली,*
*इन्द्र के द्वारा प्रेषित, लुढ़कती हैं हिंसकों की ओर।। ५।।*

हे ऐश्वर्यवान् परमेश्वर! जब दुष्टों के अभिमान को ढीला करने वाले वीर योद्धा तुझ सुखों की वर्षा करने वाले के लिये स्तुति का गान करते हैं, और इसी प्रकार सोमसवन करने वाले सिलबट्टे सोमसवन की ध्वनि से तेरा ही गुणगान करते हैं, अर्थात् तेरे लिये श्रद्धापूर्वक सोम का सवन होता है, तथा अदीना प्रकृति संगत होकर तेरा ही स्तुतिगान करती है, तो दुष्टविनाशक तेरे आयुध बिना अश्वों और रथों वाली, अर्थात् केवल आयुधरूप में ही प्रयुक्त होने वाली चक्रधाराओं की तरह दुष्टों के ऊपर लुढ़ककर उनको कुचल डालते हैं।

टि. *सेचनसमर्थ* - **वृषणः।** वर्षितारः - वे.। वृषणः सेचनसमर्था मरुतः - सा.। वृष्टिनिमित्ताः - दया.। Maruts - W. heroes - G.

*सिलबट्टे* - **ग्रावाणः।** अभिषवपाषाणाः - सा.। मेघाः - दया.। stones - W. G.

*अदिति संगता* - **अदितिः सजोषाः।** गौः सङ्गता - वे.। अदीनाः। वचनव्यत्ययः। सजोषाः सङ्गता बभूवुः। सा.। अन्तरिक्षं समानप्रीतिसेवी - दया.। Aditi accordant - G.

*चक्रधाराएं* - **पवयः।** आयुधानि - वे.। पवमानाः - सा.। चक्राणि - दया.। fellies - G.

*लुढ़कती हैं हिंसकों की ओर* - **अभ्यवर्तन्त दस्यून्।** दस्यून् अभि अवर्तन्त - वे.। शत्रून् अभिभूतान् कुर्वन्तो वर्तन्ते - सा.। अभि वर्तन्ते दुष्टान् चोरान् - दया.। have overcome the Dasyus - W. rolled upon the Dasyus - G.

**प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन् या चकर्थ।**
**शक्तीवो यद् विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनवे दानुचित्राः।। ६।।**

प्र। ते। पूर्वाणि। करणानि। वोचम्। प्र। नूतना। मघऽवन्। या। चकर्थ।
शक्तिऽवः। यत्। विऽभराः। रोदसी इति। उभे इति। जयन्। अपः। मनवे। दानुऽचित्राः।। ६।।

*प्रकर्ष से तेरे पूर्व कर्मों को, बखानता हूँ मैं,*
*प्रकर्ष से नूतनों को, हे धनदाता!, जिनको करता है तू।*
*हे शक्तिमन्!, जब विलग करता है तू द्युलोक-भूलोक को, दोनों को,*

*विजित करता हुआ जलों को, मनुष्य के लिये, अद्भुत दान वालों को।। ६।।*

हे लौकिक और अलौकिक धनों के दाता परमेश्वर! जो कर्म तूने पूर्व काल में किये हैं और जिन नूतन कर्मों को तू वर्तमान काल में कर रहा है, मैं उन सब का खूब बखान कर रहा हूँ। उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा हूँ। हे सर्वशक्तिमान्! तू ही कल्प के आदि में मनुष्य जाति के लिये अद्भुत दान वाले अप्रकेत जलों को वश में करके, उनको हिरण्यगर्भ के रूप में परिणत करके, उस हिरण्यगर्भ को द्युलोक और भूलोक इन दो भागों में अलग-अलग कर देता है। यह सब-कुछ तू मनुष्यों के उपकार के लिये ही करता है।

टि. *कर्मों को* - **करणानि**। कर्माणि - वे.। सा.। कुर्वन्ति यैस् तानि साधनानि - दया.। exploits - W. G.

*विलग करता है तू* - **विभराः**। विविधं बिभर्षि - वे.। विविच्य बिभर्षि - सा.। ये विशेषेण विभरन्ति पोषयन्ति ते - दया.। thou hast distributed (waters) - W. thou sunderedst (earth and heaven) - G.

*अद्भुत दान वालों को* - **दानुचित्राः**। चित्रदानानि (उदकानि) - वे.। चित्रदानाः - सा.। चित्राणि अद्भुतानि दानानि येषां ते - दया.। wonderfully beautiful - W. moistly gleaning waters - G.

**तद् इन् नु ते कर॑णं दस्म वि॒प्राहिं॒ यद् घ्नन्नोजो॒ अत्रामि॑मीथाः।**
**शुष्ण॑स्य चि॒त् परि॑ मा॒या अ॑गृभ्णाः प्रपि॒त्वं यन्नप॒ दस्यूँ॑र् असेधः।। ७।।**

तत्। इत्। नु। ते॒। कर॑णम्। द॒स्म॒। वि॒प्र॒। अहि॑म्। यत्। घ्नन्। ओज॑ः। अत्र॑। अमि॑मीथाः।
शुष्ण॑स्य। चि॒त्। परि॑। मा॒याः। अ॒गृ॒भ्णाः॒। प्र॒ऽपि॒त्वम्। यन्। अप॑। दस्यू॑न्। अ॒से॒धः॒।। ७।।

*वह ही निश्चय से तेरा कर्म है, हे हिंस्रहिंसक!, हे मेधावी!,*
*आहन्ता को जब मारते हुए, बल को इस लोक में प्रदर्शित करता है तू।*
*शोषक के भी सब ओर से छलकपटों को, वश में कर लेता है तू,*
*दौड़कर पास जाता हुआ, परे हिंसकों को खदेड़ देता है तू।। ७।।*

हे हिंसकों की हिंसा कर डालने वाले!, हे प्रज्ञावान् परमेश्वर! तेरा कर्तव्य तो यही है, जो तू सज्जनों का हनन करने वाली कुटिलवृत्ति आसुरी शक्ति को मार डालते हुए अपने बल का प्रदर्शन करता है। जो तू निर्धनों का शोषण करने वाले किसी पुँजीपति के छलकपटों को जानकर उन्हें नष्ट कर देता है। और जो तू अतिशीघ्र हिंसावृत्ति जनों के पास पहुँचकर उन्हें नष्ट कर डालता है।

टि. *हे हिंस्रहिंसक* - **दस्म**। हे दर्शनीय - वे.। सा.। उपक्षेतः - दया.। handsome - W. wonderful - G.

*बल को प्रदर्शित करता है तू* - **ओजः अमिमीथाः**। बलं कृतवान् असि - वे.। बलं प्रकाशितवान् असि - सा.। बलम् इव जलं निर्माणं कुर्याः - दया.। thou hast displayed thy vigour - W. G.

*छलकपटों को वश में कर लेता है तू* - **मायाः अगृभ्णाः**। असुरस्य मायाः परिगृहीतवान् असि - वे.। प्रज्ञाः परिगृहीतवान् असि - सा.। प्रज्ञाः गृहाण - दया.। thou hast arrested the devices - W. didst check and stay wiles and magic - G.

*दौड़कर पास जाता हुआ* - **प्रपित्वम् यन्**। प्राप्तिं गच्छन् - वे.। संग्रामं समीपं वा प्राप्नुवन् - सा.। प्राप्तिं यन् - दया.। urging the combat - W. drawing nigh - G.

*परे खदेड़ देता है तू* - **अप असेधः**। अपाबाधथाः - सा.। निवारयतु - दया.। thou hast overcome - W. didst chase away - G.

**त्वम् अपो यदवे तुर्वशायारमयः सुदुघाः पार इन्द्र।**
**उग्रम् अयातम् अवहो ह कुत्सं सं ह यद् वाम् उशनारन्त देवाः॥ ८॥**

त्वम्। अपः। यदवे। तुर्वशाय। अरमयः। सुऽदुघाः। पारः। इन्द्र।
उग्रम्। अयातम्। अवहः। ह। कुत्सम्। सम्। ह। यत्। वाम्। उशना। अरन्त। देवाः॥ ८॥

*तू जलों को, यत्नशील के लिये, गति के इच्छुक के लिये,*
*थाम देता है, सुष्ठु दोहन वालों को, पार करने वाला, हे इन्द्र।*
*उग्र पर प्रयाण करते हो तुम दोनों, वहन करता है तू स्तोत्रकर्ता को,*
*मिलकर जब तुम दोनों को, प्रसन्न करते हैं उशना और देव॥ ८॥*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! उपासकों को दुःखों और संसारसागर से पार करने वाला तू प्रगति चाहने वाले और प्रयत्न करने वाले मनुष्य को उत्तम फल प्रदान करने वाले जल आदि सुखसाधन प्रदान करता है। तू और तेरी स्तुति करने वाला उपासक, तुम दोनों मिलकर उग्र स्वभाव वाले दुष्ट आततायी को आक्रान्त करते हो। तू कार्यों में सहायता करने वाले अपने स्तोता को सुखों की ओर ले जाता है। जीवन में बल, ज्ञान आदि को चाहने वाले और दान, दिव्यता आदि गुणों वाले मनुष्य तुझे और तेरे स्तोता को अपनी स्तुतियों से प्रसन्न करते हैं।

टि. *यत्नशील के लिये* - **यदवे**। यदुनामकाय राज्ञे - सा.। मनुष्याय - दया.।

*गति के इच्छुक के लिये* - **तुर्वशाय**। त्वरां वष्टीति तुर्वशः। मनुष्यनामैतत् (निघ. २.३)॥ एतन्नामकाय राज्ञे च - सा.। सद्यो वशकरणसमर्थाय - दया.।

*थाम देता है* - **अरमयः**। रमितवान् असि - सा.। रमय - दया.। hast rendered agreeable - W. didst stay - G.

*सुष्ठु दोहन वालों को* - **सुदुघाः (अपः)**। ओषधिवनस्पतीन् सुष्ठु दुहतीः - सा.। सुष्ठु दोग्धुम् अर्हाः - दया.। fertilizing - W. the gushing (waters) - G.

*पार करने वाला* - **पारः**। पारे नदीनां तीरे प्रवृद्ध इति शेषः - सा.। यः पारयिता - दया.। abiding on the further bank - W. on the farther bank - G.

*उग्र पर प्रयाण करते हो तुम दोनों* - **उग्रम् अयातम्**। उग्रं शुष्णासुरम् अगच्छतम् - वे.। उग्रम् उद्गूर्णम् - सा.। दुर्जयम् अप्राप्तम् - दया.। have assailed the fierce (Śuṣṇa) - W.

*स्तोत्रकर्ता को* - **कुत्सम्**। ऋषिः कुत्सो भवति कर्ता स्तोमानाम् इत्यौपमन्यवः (नि. ३.११)॥

*उशना* - **उशना**। कामयमानः, कान्तः। वश कान्तौ। वशेः कनसिः (उणा. ४.२३८)इति कनस्॥ उशना भार्गवः - सा.।

*मिलकर प्रसन्न करते हैं* - **सम् अरन्त**। सम् अगच्छन्त - वे.। संभेजिरे - सा.। have honoured

- W. came to you together - G.

**इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेना वाम् अत्या अपि कर्णे वहन्तु।**
**निः षीम् अद्भ्यो धमथो निः षधस्थान् मघोनो हृदो वरथस् तमांसि।। ९।।**

इन्द्राकुत्सा। वहमाना। रथेन। आ। वाम्। अत्याः। अपि। कर्णे। वहन्तु।
निः। सीम्। अत्ऽभ्यः। धमथः। निः। सधऽस्थात्। मघोनः। हृदः। वरथः। तमांसि।। ९।।

*हे इन्द्र और स्तोत्रकर्ता! वहन करते हुए रथ के द्वारा,*
*इस ओर तुम दोनों को अश्व भी, श्रवणक्षेत्र में वहन करें।*
*पूर्णतः उसको जलों से फूँक देते हो तुम, पूर्णतः सहस्थान से,*
*धनदाता के हृदय से, निवारित कर देते हो तुम तमों को।। ९।।*

इस मन्त्र में इन्द्र परमात्मा है, इन्द्र के लिये स्तोत्रों की रचना करने वाला कुत्स ऋषि आत्मा है। रथ शरीर है, उसमें जुतने वाले अश्व इन्द्रियां, जल मस्तिष्क और सहस्थान हृदय है। यहाँ प्रार्थना की जा रही है, कि हे परमेश्वर और परमेश्वर का स्तुतिगान करने वाले ऋषि आत्मा! हम उपासकों के इन्द्रियरूपी अश्व तुम दोनों को शरीररूपी रथ में बिठाकर हमारे कानों के इतने निकट ले आएं कि हम तुम्हारे मधुर वचनों और उपदेशों का सुख से श्रवण कर सकें। जब तुम्हारी कृपा होती है, तो तुम पापरूपी असुर को उपासक के मस्तिष्क और हृदय से फूँक मारकर पूर्णतया उड़ा देते हो। तुम धनदाता उपासक के हृदय से अज्ञान के अन्धकारों का भी पूर्णरूपेण निवारण कर देते हो।

टि. *श्रवणक्षेत्र में वहन करें* – **कर्णे वहन्तु।** कर्णकुलजाते मयि – वे.। स्तोत्राणि कृणोति करोतीति कर्णः स्तोता यजमानो वा। तत्समीपे ऽपीति यावत्। आ वहन्तु। आ समन्ताद् वाहका भवन्तु। सा.। कुर्वन्ति येन तस्मिन्, वहन्तु गमयन्तु – दया.। may bring you both to the worshipper - W. let bring you both within hearing distance - G.

*पूर्णतः जलों से फूँक देते हो तुम* – **निः अद्भ्यः धमथः।** अन्तरिक्षात् निः धमथः – वे.। अद्भ्यो ऽप्सु प्रविष्टं शुष्णासुरं निर्धमथः। अबाधेथाम्। सा.। Ye blew him from the waters - G.

*पूर्णतः सहस्थान से* – **निः सधस्थात्।** निः धमथः पृथिव्याः – वे.। सधस्थात्। स्वकीयात् स्थानात् – सा.। from his dwelling - G.

*धनदाता के हृदय से* – **मघोनः हृदः।** महतो ऽस्माकं हृदयात् – वे.। हविष्मतो यजमानस्य हृदयात् – सा.। from the heart of the affluent (adorer) - W. from the noble's spirit - G.

*निवारित कर देते हो तुम* – **वरथः।** वारयथः।। निवारयथः – वे.। सा.।

**वातस्य युक्तान् त्सुयुजश् चिद् अश्वान् कविश् चिद् एषो अजगन्नवस्युः।**
**विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीम् अवर्धन्।। १०।। ३०।।**

वातस्य। युक्तान्। सुऽयुजः। चित्। अश्वान्। कविः। चित्। एषः। अजगन्। अवस्युः।
विश्वे। ते। अत्र। मरुतः। सखायः। इन्द्र। ब्रह्माणि। तविषीम्। अवर्धन्।। १०।।

*वायु के जुते हुओं को, सुष्ठु दमनीयों को भी अश्वों को,*
*क्रान्तदर्शी भी यह प्राप्त करता है, वृद्धि की कामना वाला।*

*सब तेरे यहाँ मरुत्, सहायता करने वाले,*
*हे इन्द्र!, स्तोत्र (भी) बल को बढ़ाते हैं।। १०।।*

इस मन्त्र में इन्द्र इन्द्रियों का स्वामी आत्मा है। यहाँ अश्व इन्द्रियों के और मरुत् प्राणों के प्रतीक हैं। कहा जा रहा है, कि हे मेरे आत्मा! अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कामना वाले क्रान्तदर्शी इस साधक ने वायु के वेग के समान गतिशील, दमन के योग्य इन्द्रियों को प्राप्त कर लिया है। अर्थात् इन्द्रियां अब इसके वश में हो गई हैं। इस शरीर में इस साधक के ये सब प्राण, जो हमेशा तेरे साथ चलने वाले हैं, और स्तोत्र सब के सब तेरे बल को बढ़ाने वाले हैं।

टि. *वायु के* - **वातस्य**। गच्छतः - वे.। वायोर् वेगेन - सा.। दया.। endowed (with the speed) of the wind - W. Vāta's - G.

*सुष्ठु दमनीयों को* - **सुयुजः**। सुष्ठु योजनीयान् - सा.। ये सुष्ठु युञ्जते तान् - दया.। उत्तम प्रकार से जुड़ने वाले - सात.। docile - W. G.

*प्राप्त करता है* - **अजगन्**। मनसा गच्छति - वे.। प्राप्नोत् - सा.। hath come - G.

*वृद्धि की कामना वाला* - **अवस्युः**। अवस्युः ऋषिः - वे.। एतन्नामकः - सा.। आत्मनो ऽवो रक्षणम् इच्छुः - दया.। the Sage Avasyu - W. looknig for succour - G.

*मरुत्* - **मरुतः**। बहवः स्तोतारः - सा.। ऋत्विजो विद्वांसः - दया.। all thine adorers - W.

*बल को बढ़ाते हैं* - **तविषीम् अवर्धन्**। बलम् अवर्धयन् - वे.। बलं (ब्रह्माणि ब्रह्मभिः) अवर्धयन् - सा.। सेनां वर्धयन्ति - दया.। बल को बढ़ाया - सात.। augment thy vigour - W. have increased thy power - G.

**सूरश् चिद् रथं परितक्म्यायां पूर्वं करद् उपरं जूजुवांसम्।**
**भरच् चक्रम् एतशः सं रिणाति पुरो दधत् सनिष्यति क्रतुं नः।। ११।।**

सूरः। चित्। रथम्। परिऽतक्म्यायाम्। पूर्वम्। करत्। उपरम्। जूजुऽवांसम्।
भरत्। चक्रम्। एतशः। सम्। रिणाति। पुरः। दधत्। सनिष्यति। क्रतुम्। नः।। ११।।

*प्रेरक (वह इन्द्र) रथ को, समाप्ति पर रात्रि की,*
*पहले कर देता है पीछे वाले को, (बना देता है) शीघ्रगामी।*
*खींचता है चक्र को अश्व (बनकर), मिल जाता है (इससे),*
*आगे स्थापित करता हुआ (स्वयं को), स्वीकार करे वह यज्ञ को हमारे।। ११।।*

जब साधक के अज्ञान-अन्धकार की रात्रि समाप्त हो जाती है, तो सर्वप्रेरक वह परमेश्वर साधना की यात्रा में पिछड़ जाने वाले उस साधक को आगे कर देता है और उसकी गति को और तेज कर देता है। वह प्रभु प्रकाशमान अश्व बनकर इस संसारचक्र को खींच रहा है। वह इस जगत् में सर्वत्र व्याप्त हो रहा है। वह हमारा अगुआ बनकर जीवन में चलने वाले हमारे इस यज्ञ को स्वीकार करे। इस का पुरोहित बनकर इसे पूर्णता की ओर अग्रसर करे।

टि. *प्रेरक* - **सूरः**। सूर्यस्य - वे.। सा.। सूर्यः - दया.। of the sun - W. G.

*समाप्ति पर रात्रि की* - **परितक्म्यायाम्**। रात्र्याम् - वे.। संग्रामे। परितो गच्छन्त्यस्यां भय इति

परितक्म्या संग्रामः। सा.। in battle - W. when night was near its close - G.

*पहले कर देता है पीछे वाले को* – **पूर्वं करत् उपरम्।** अग्रतः प्रादुर्भूतं प्रह्वीचक्रे – वे.। उपरम् उपरतव्यापारं पूर्वं करत् पुरो ऽकरोत् – सा.। carried forward backward in its running - G.

*अश्व (बनकर)* – **एतशः।** एतशः ऋषिः – वे.। एतशाय। विभक्तिव्यत्ययः। सा.।

*मिल जाता है* – **सम् रिणाति।** इन्द्रेण संगच्छते – वे.। हिनस्ति – सा.। गच्छति – दया.। demolishes - W. firmly stays it - G.

*आगे स्थापित करता हुआ (स्वयं को)* – **पुरः दधत्।** सर्वेषां पुरतः स्थापयन् – वे.। अस्मान् पुरस्कुर्वन् – सा.। पुरस्तात् दधाति – दया.। giving us precedence - W. setting eastward - G.

*स्वीकार करे वह यज्ञ को हमारे* – **सनिष्यति क्रतुं नः।** अस्मद्यज्ञम् आगमिष्यति – वे.। अस्मदीयं यज्ञं संभजतु – सा.। संभजेत् प्रज्ञां कर्माणि वा अस्माकम् – दया.। be propitiated by our rite - W. he shall give us courage - G.

**आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोमम् इच्छन्।**
**वदन् ग्रावाव वेदिं भ्रियाते यस्य जीरम् अध्वर्यवश् चरन्ति।। १२।**

आ। अयम्। जनाः। अभिऽचक्षे। जगाम। इन्द्रः। सखायम्। सुतऽसोमम्। इच्छन्।
वदन्। ग्रावा। अव। वेदिम्। भ्रियाते। यस्य। जीरम्। अध्वर्यवः। चरन्ति।। १२।

*इधर यह, हे मनुष्यो!, देखने के लिये, गमन करता है,*
*इन्द्र, सखा को, सवन किये सोम वाले को, ढूँढता हुआ।*
*शब्द करता हुआ ग्रावा, नीचे की ओर वेदि के ले जाया जाता है,*
*जिसकी द्रुतगति को, अध्वर्यु संचालित करते हैं।। १२।।*

हे मनुष्यो! यह परमैश्वर्यवान् प्रभु भक्तिरसरूपी सोम का सवन करने वाले अपने मित्रभूत उपासक को ढूँढता हुआ मिलने के लिये उसके पास आता है। केवल उपासक ही अपने प्रियतम के मिलन के लिये उसकी खोज नहीं करता, अपितु प्रेम के बन्धन में बँधा हुआ वह ईश्वर भी अपने भक्त को मिलने के लिये उसकी खोज करता है। इसी लिये याजक लोग अपने नैवेद्यों को प्रभु को समर्पित करने के साथ-साथ भक्तिरसरूपी सोम के सवन की प्रक्रिया का भी द्रुतगति से संचालन करते रहते हैं। नैवेद्यों के साथ उसे भक्तिरस का आनन्द भी समर्पित करते हैं।

टि. *देखने के लिये* – **अभिचक्षे।** अभिदर्शनार्थम् – वे.। युष्मान् अभिद्रष्टुम् – सा.। अभितः ख्यातुम् – दया.। to see you - G.

*ढूँढता हुआ* – **इच्छन्।** अन्विच्छन् – वे.। अभिलषन् – सा.। seeking - G.

*नीचे की ओर वेदि के ले जाया जाता है* – **अव वेदिम् भ्रियाते।** वेदिं प्रति वेद्याम् इत्यर्थः, तत्राधस्तात् भ्रियते। दीर्घः छान्दसः। वे.। वेदिम् अभिह्रियते – सा.। supply the altar - W. is laid upon the altar - G.

*द्रुतगति को संचालित करते हैं* – **जीरम् चरन्ति।** क्षिप्रं चरन्ति यज्ञ इतस्ततः – वे.। जीरं क्षेपणं प्रेरणं चरन्ति – सा.। वेगं चरन्ति – दया.। whose rotation (the priesrs) hasten - W. come to

turn it quickly - G.

**ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मर्ता अमृत मो ते अंह आरन्।**
**वावन्धि यज्यूँर् उत तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम।। १३।। ३१।।**

ये। चाकनन्त। चाकनन्त। नु। ते। मर्ताः। अमृत। मो इति। ते। अंहः। आ। अरन्।
ववन्धि। यज्यून्। उत। तेषु। धेहि। ओजः। जनेषु। येषु। ते। स्याम।। १३।।

*जो चाहते हैं (तुझको), चाहते ही हैं निश्चय से वे (तुझको),*
*मरणधर्मा, हे अमरणधर्मा!, मत वे विपत्ति को प्राप्त होवें (कभी)।*
*अपना बना ले तू (उन) पूजकों को, और उनमें स्थापित कर,*
*बल को मनुष्यों में, जिन के मध्य में तेरे होकर रहें हम (सदा ही)।। १३।।*

हे अविनाशी परमेश्वर! जो मनुष्य तुझे प्यार करते हैं, वे तो हमेशा तुझे प्यार ही करते हैं। घोर विपत्तियां और संकट आने पर भी वे तुझे प्यार ही करते हैं। हे प्रभो! ऐसे तेरे प्रिय भक्तों को कभी आपदाएं न घेरें। निष्काम कर्म की भावना वाले ऐसे परोपकारी मनुष्यों को तू अपना बना ले। उनको तू अपनी शरण में ले ले। तू उन्हें ऐसा बल प्रदान कर, कि दुष्ट अत्याचारी लोग उनका बाल भी बाँका न कर सकें। हम भी ऐसे लोगों के मध्य में ही सदा तेरे बनकर रहें।

टि. *चाहते हैं* - **चाकनन्त**। कामितवन्तः - वे.। अकामयन्त - सा.। कामयन्ते - दया.। who were happy still be happy - G.

*मत वे विपत्ति को प्राप्त होवें* - **मो ते अंहः आ अरन्**। अमी मा पापं प्राप्नुवन्तु - वे.। ते जना अनर्थं मा गमन्। मा उ इति निपातसमुदायो मेत्येकनिपातार्थे वर्तते। सा.। मो ते अपराधं समन्तात् प्राप्नुयुः - दया.। let not fall into sin - W. let them not come to sorrow - G.

*अपना बना ले तू पूजकों को* - **ववन्धि यज्यून्**। भजस्व तान् अस्मान् यष्टॄन् - वे.। यजमानान् संभजस्व - सा.। be pleased with sacrificers - W. love thou the pious - G.

## सूक्त ३२

ऋषिः - गातुर् आत्रेयः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। द्वादशर्चं सूक्तम्।

**अदर्दर् उत्सम् असृजो वि खानि त्वम् अर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः।**
**महान्तम् इन्द्र पर्वतं वि यद् वः सृजो वि धारा अव दानवं हन्।। १।।**

अदर्दः। उत्सम्। असृजः। वि। खानि। त्वम्। अर्णवान्। बद्बधानान्। अरम्णाः।
महान्तम्। इन्द्र। पर्वतम्। वि। यत्। वर् इति वः। सृजः। वि। धाराः। अव। दानवम्। हन्निति हन्।। १।।

*प्रस्फुटित कर देता है तू स्रोत को, खोल देता है द्वारों को (जलों के),*
*तू जलप्रवाहों को रुके हुओं को, मुक्त कर देता है (बहने के लिये)।*
*महान् को, हे इन्द्र!, पर्वत को, जब विवृत कर देता है तू,*
*बहा देता है धाराओं को, नीचे असुर को मार गिराता है तू।। १।।*

हे ऐश्वर्यशाली जगदीश्वर! तू साधक के हृदय के अन्दर सुप्त पड़े ज्ञान के स्रोत को प्रस्फुटित

कर देता है। तू बन्द पड़े ज्ञान के द्वारों को खोल देता है। तू साधक के अन्दर रुके पड़े ज्ञान के जलप्रवाहों को बहने के लिये मुक्त कर देता है। हे परमेश्वर! जब तू साधक के अन्दर घनीभूत अज्ञानरूपी महान् पर्वत पर प्रहार करके उसे उखाड़ डालता है, तो ज्ञान की धाराएं मुक्त होकर बहने लगती हैं। तू अज्ञानरूपी असुर को मारकर धराशायी कर देता है।

टि. *प्रस्फुटित कर देता है तू स्रोत को* - **अदर्दः उत्सम्।** अदृणा उत्सम्। उत्स उत्सरणाद् वा। उत्सदनाद् वा। उत्स्यन्दनाद् वा। उनत्तेर् वा। या. (नि. १०.९)। दारितवान् असि अपाम् उत्सम् - वे.। उत्सम् उत्स्यन्दमानं मेघम् अदर्दः, विदारितवान् असि - सा.। विदृणाति कूपम् इव - दया.। hast rent the cloud asunder - W. the well thou clavest - G.

*खोल देता है द्वारों को (जलों के)* - **असृजः वि खानि।** मेघद्वाराणि वि असृजः - वे.। खानि मेघस्थोदकानां निर्गमनद्वाराणि व्यसृजः विशेषेण सृष्टवान् असि - सा.। खानि इन्द्रियाणि - दया.। thou hast set open the flood-gates - W. settest free the fountains - G. gavest rest - G.

*मुक्त कर देता है तू* - **अरम्णाः।** रम्णातिः संयमनकर्मा - या. (नि. १०.९)। स्वेस्वे स्थाने अरमयः - वे.। विसर्जयसि। क्षारयसीत्यर्थः। सा.। रमय - दया.। thou hast liberated - W.

*पर्वत को जब विवृत कर देता है तू* - **पर्वतम् वि यत् वः।** यदा महान्तं मेघं दारितवान् असि - वे.। यद् यस् त्वम्। यद् इति लिङ्गव्यत्ययः। मेघं विवृतवान् असि। सा.। hast opened the cloud - W. laying the (great) mountain open - G.

**त्वम् उत्साँ ऋतुभिर् बद्बधानाँ अरंह ऊधः पर्वतस्य वज्रिन्।**
**अहिं चिद् उग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीम् अधत्थाः।। २।।**

त्वम्। उत्सान्। ऋतुऽभिः। बद्बधानान्। अरंहः। ऊधः। पर्वतस्य। वज्रिन्।
अहिम्। चित्। उग्र। प्रऽयुतम्। शयानम्। जघन्वान्। इन्द्र। तविषीम्। अधत्थाः।। २।।

*तू स्रोतों को, ऋतुओं के साथ, रुके हुओं को,*
*चालू कर देता है, ओढी को (भी) पर्वत की, हे वज्रधारी।*
*आहन्ता को भी, हे तेजस्वी!, पसरकर लेटे हुए को,*
*मार डालता है, हे इन्द्र!, बल को अपने दिखा देता है तू।। २।।*

हे न्यायव्यवस्था को अपने वश में रखने वाले जगदीश्वर! तू समय के साथ रुके पड़े ज्ञान के स्रोतों को तेजी से प्रवाहित कर देता है। तू घनीभूत अज्ञान की ग्रन्थि को अतिशीघ्र गलाकर उसके विकार को नष्ट कर देता है। हे दुष्टों के लिये उग्र रूप को धारण करने वाले परमेश्वर! तू साधक के अन्दर पसरकर लेटे हुए अज्ञानरूपी हिंस्र राक्षस को मार डालता है। इस प्रकार तेरे बल की ख्याति सब दिशाओं में फैल जाती है।

टि. *ऋतुओं के साथ रुके हुओं को* - **ऋतुभिः बद्बधानान्।** वर्षर्तुभिः बाधमानान् - वे.। ऋतुषु वृष्टिकालेषु प्रतिबध्यमानान् - सा.। वसन्तादिभिः संबद्धान् - दया.। obstructed in their seasons - G.

*चालू कर देता है (तू)* - **अरंहः।** अगमयः - वे.। सा.। गमयसि - दया.। thou hath invigorated (the strength of the cloud) - W. madest flow - G.

पसरकर लेटे हुए को - **प्रयुतं शयानम्।** प्रवृद्धं शयानम् - वे.। प्रयुतं उद्युक्तं शयानं जले शयनं कुर्वन्तम् - सा.। that lay extended - G.

*बल को अपने दिखा देता है तू* - **तविषीम् अधत्थाः।** बलम् अकृणोः - वे.। बलम् अधारयः। वृत्रवधानन्तरम् इन्द्रो लोके प्रख्यातो भवतीत्यर्थः। सा.। बलयुक्तां सेनां दध्याः - दया.। thou hast established the reputation of thy prowess - W. hast shown thy vigour - G.

**त्यस्यं चिन् महतो निर् मृगस्य वधर् जघान तविषीभिर् इन्द्रः।**
**य एक इद् अप्रतिर् मन्यमान आद् अस्माद् अन्यो अजनिष्ट तव्यान्।। ३।।**

त्यस्यं। चित्। महतः। निः। मृगस्यं। वधः। जघान। तविषीभिः। इन्द्रः।
यः। एकः। इत्। अप्रतिः। मन्यमानः। आत्। अस्मात्। अन्यः। अजनिष्ट। तव्यान्।। ३।।

*उसपर भी महान् पर, निश्शेषेण मार्गणीय पर,*
*आयुध से प्रहार करता है, बलों के साथ इन्द्र।*
*जो एकमात्र, प्रतिस्पर्धिरहित मानता है (स्वयं को),*
*अनन्तर उससे अन्य (इन्द्र), प्रादुर्भूत हो जाता है बलवत्तर।। ३।।*

ज्ञान, प्रकाश आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति स्वयं को अद्वितीय, बेजोड़, और प्रतिस्पर्धिरहित मानती है। परन्तु उससे भी अधिक बलवती ईश्वरीय शक्ति उसके साथ ही अविलम्ब प्रादुर्भूत हो जाती है। वह ईश्वरीय शक्ति आसुरी शक्ति की इस प्रकार तलाश में रहती है, जिस प्रकार मृगयु (शिकारी) मृग (शिकार) की तलाश में रहता है और अवसर मिलते ही अपने सारे बलों के साथ उसपर अपने आयुध से प्रहार करके उसे मार डालती है।

टि. *मार्गणीय पर* - **मृगस्य।** मृग्यत इति मृगस् तस्य।। मृगरूपस्य वधार्थम् - वे.। मृगवद् शीघ्रगामिनः - सा.। सद्योगामिनः - दया.। of that beast - W. of that wild creature - G.

*निश्शेषेण आयुध से प्रहार करता है* - **निः वधः जघान।** आत्मीयं वज्रं निः बलैः जघान इन्द्रः - वे.। आयुधं निश्शेषेणावधीत् - सा.। has annihilated the weapon - W. smote down the weapon - G.

*प्रतिस्पर्धिरहित* - **अप्रतिः।** प्रतिद्वन्द्विरहितः - सा.। अविद्यमाना प्रतिः प्रतीतिर् यस्य - दया.। unmatched - W. unequalled - G.

*अन्य प्रादुर्भूत हो जाता है* - **अन्यः अजनिष्ट।** अन्यः शुष्णो नाम अजनिष्ट - वे.। अन्यो ऽसुरः प्रादुरभूत् - सा.। इन्द्र पैदा हुआ - सात.। another was generated - W. another had been born - G.

**त्यं चिद् एषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम्।**
**वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम्।। ४।।**

त्यम्। चित्। एषाम्। स्वधया। मदन्तम्। मिहः। नपातम्। सुऽवृधम्। तमःऽगाम्।
वृषऽप्रभर्मा दानवस्यं। भामम्। वज्रेण। वज्री। नि। जघान। शुष्णम्।। ४।।

*उसको इन लोकों के बीच में, स्वेच्छा से मुदित होते हुए को,*

*जलों को न गिराने वाले को, सुष्ठु बढ़े हुए को, तमोगामी को।*
*वीर्यवान् पर प्रहार करने वाला, असुर के क्रोध को, वज्र से,*
*वज्रधारी पूर्णत: नष्ट कर देता है, सुखा डालने वाले को।। ४।।*

इन लोकों के मध्य में स्वेच्छा से प्रसन्नतापूर्वक विचरण करने वाली अथवा इन मनुष्यों के बीच में उनके ही अन्न-धन से मौजें उड़ाने वाली, जलों को बरसने न देने वाली, भली प्रकार वृद्धि को प्राप्त, अन्धकार में गति अथवा निवास करने वाली इस आसुरी शक्ति को वीर्यसम्पन्न बलवानों पर प्रहार करने वाला, न्यायव्यवस्थारूपी वज्र को धारण करने वाला वह परमेश्वर उसके सुखा डालने वाले क्रोध के साथ ही नष्ट कर डालता है।

टि. *इन लोकों के बीच में स्वेच्छा से मुदित होते हुए को* - **एषाम् स्वधया मदन्तम्।** एषां मनुष्याणां स्वभूतेनोदकेन मदन्तम् - वे.। एषां प्राणिनाम् अन्नेन मोदमानं सर्वप्राणिनाम् अन्नं स्वयम् एव भुञ्जानम् - सा.। एषां वीराणां मध्ये अन्नादिना हर्षन्तम् - दया.। whom the heavenly food of these delighted - G.

*जलों को न गिराने वाले को* - **मिहः नपातम्।** मिहः पौत्रम् - वे.। सेचनसमर्थस्य मेघस्य नपातं पातारं रक्षितारम्। अत्र नपाच्छब्दः पातरि वर्तते। प्राणो वै तनूनपात् स हि तन्वः पाति। (ऐ.ब्रा. २.४)। इति ब्राह्मणम्। सा.। वृष्टेः अपतनशीलम् - दया.। the protector of showering cloud - W. child of the mist - G.

*तमोगामी को* - **तमोगाम्।** तमसो निर्गमयितारम् - वे.। तमो ऽन्धकारं गच्छन्तम् - सा.। प्राप्तान्धकारम् - दया.। the walker in darkness - W. couched in darkness - G.

*वीर्यवान् पर प्रहार करने वाला* - **वृषप्रभर्मा।** वर्षणशीलप्रहरणः - वे.। वर्षणशीलस्य मेघस्य प्रहर्ता - सा.। यो वर्षणशीलं मेघं प्रबिभर्ति सः - दया.। the bolt-hurling - G.

*क्रोध को* - **भामम्।** क्रोधम् - वे.। दया.। अत्र क्रोधवाचिभामशब्देन क्रोधाद् उत्पन्नः शुष्णासुरो लक्ष्यते - सा.। the wrath-born - (son) - W. wrath-fire - G.

*सुखा डालने वाले को* - **शुष्णम्।** शुष्णासुरम् - सा.। शोषकं बलवन्तम् - दया.।

**त्यं चिद् अस्य क्रतुभिर् निषत्तम् अमर्मणो विदद् इद् अस्य मर्म।**
**यद् ईं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये धाः।। ५।।**

त्यम्। चित्। अस्य। क्रतुऽभिः। निऽसत्तम्। अमर्मणः। विदत्। इत्। अस्य। मर्म।
यत्। ईम्। सुऽक्षत्र। प्रऽभृता। मदस्य। युयुत्सन्तम्। तमसि। हर्म्ये। धाः।। ५।।

*उस (वृत्र) को भी, उसके कर्मों के द्वारा (जान लेता है) गहरे में स्थित को,*
*स्वयं को मर्मरहित समझने वाले के, जान ही लेता है वह उसके मर्म को।*
*जब इसको, हे उत्तम बल वाले!, समर्पित किये जाने पर हर्षकर सोम के,*
*युद्ध करना चाहने वाले को, अन्धकार वाले स्थान में धर दबोचता है तू।। ५।।*

वह जगदीश्वर गूढ़ स्थान में छुपी हुई को भी उस आसुरी शक्ति को उसके कर्मों के द्वारा जान लेता है और स्वयं को मर्महीन समझने वाली के उसके प्रहार के योग्य दुर्बल अंग (मर्मस्थान) को

भी जान लेता है। हे उत्तम बलों वाले! जब तेरे उपासक तुझे अपने भक्तिरसरूपी सोमों को समर्पित करते हैं, जब सच्चे हृदय से तुझे पुकारते हैं, तो युद्ध करने की इच्छा वाली उस आसुरी शक्ति को तू उसके घुप अन्धेरे वाले स्थान में ही धर दबोचता है और उसे समूल नष्ट कर देता है।

टि. उस *(वृत्र)* को भी - **त्यम् चित्**। तम् - वे.। त्यं त्यद् तद् एव। लिङ्गव्यत्ययः। सा.।

*उसके कर्मों के द्वारा* - **अस्य क्रतुभिः**। इन्द्रः प्रज्ञाभिः अविन्दत् - वे.। अस्य वृत्रस्य प्रज्ञानैः - सा.। by his acts - W.

*गहरे में स्थित को* - **निषत्तम्**। निषत्तशब्द आवासवचनः। शुष्णासुरस्य तं निषत्तं तमसि स्थितम्। वे.। निषण्णम् - सा.। दया.। the secret - W.

*स्वयं को मर्महीन समझने वाले के* - **अमर्मणः**। गूढमर्मणः - वे.। मर्महीनम् आत्मानं मन्यमानस्य वृत्रस्य। मर्म प्राणस्थानम्। यत्र स्थाने विद्धो म्रियते तन् मर्मेत्युच्यते। सा.। अविद्यमानानि मर्माणि यस्य तस्य। मर्म गुह्यावयवम्। दया.। of him who thought himself invulnerable - W.

*समर्पित किये जाने पर हर्षकर सोम के* - **प्रभृता मदस्य**। सोममदस्य प्रादुर्भावे - वे.। मादकस्य सोमस्य प्रभृतौ संभरणे सति - सा.। प्रकर्षेण धारणे पोषणे वा हर्षस्य - दया.। in the exhilaration of the Soma - W. after offered draughts - G.

*अन्धकार वाले स्थान में धर दबोचता है तू* - **तमसि हर्म्ये धाः**। हरणशीले तमसि निहितवान् - वे.। हर्म्ये हारके तमसि धाः न्यदधाः। वृत्र इन्द्रस्य भयात् तमसि प्राविशद् इत्यर्थः। सा.। thou hast detected him in his dark abode - W. thou laidest him in the pit in darkness - G.

**त्यं चिद् इत्था कत्पयं शयानम् असूर्ये तमसि वावृधानम्।**
**तं चिन् मन्दानो वृषभः सुतस्योच्चैर् इन्द्रो अपगूर्या जघान।। ६।। ३२।।**

त्यम्। चित्। इत्था। कत्पयम्। शयानम्। असूर्ये। तमसि। ववृधानम्।
तम्। चित्। मन्दानः। वृषभः। सुतस्य। उच्चैः। इन्द्रः। अपऽगूर्य। जघान।। ६।।

*उसको निश्चय से सचमुच, सुखों का पान करने वाले को, लेटे हुए को,*
*सूर्य से रहित स्थान में, अन्धकार के अन्दर, वृद्धि को प्राप्त होते हुए को।*
*उसको निश्चय से हर्षित होता हुआ, सुखवर्षक, सोम के पान से,*
*ऊँचा, इन्द्र उठाकर (वज्र को), मार डालता है (वृत्र को)।। ६।।*

उस आसुरी शक्ति को अन्धकार और अज्ञान ही प्रिय है। वह प्रकाश और ज्ञान से परे अन्धकार और अज्ञान के स्थान में ही बढ़ती और परिपुष्ट होती है। वह परमेश्वर के द्वारा सब के लिये प्रदान किये हुए सुखसाधनों को अपने नीचे दबाकर उनपर लेट जाती है और उन सुखों का केवल स्वयं ही उपभोग करती है। अपने लिये ही जीने वाली ऐसी उस दुष्ट स्वार्थी आसुरी शक्ति को भक्तिरसरूपी सोम के पान से आनन्दविभोर होकर सुखों की वर्षा करने वाला वह परमेश्वर अपनी न्यायव्यवस्था के उच्च प्रभाव से नष्ट कर डालता है।

टि. सचमुच - **इत्था**। इत्थम् - वे.। अमुत्रान्तरिक्षलोके - सा.। अनेन प्रकारेण - दया.।

*सुखों का पान करने वाले को* - **कत्पयम्**। 'सुखपयसम्, सुखम् अस्य पयः' इति यास्कः (६.

३)। वे.। कत् सुखकरं पयो यस्य तम् - सा.। कतिःयम्। अत्र छान्दसो वर्णलोपः। दया.। enjoying the dews of firmament - W. huge in length, extended - G.

*सूर्य से रहित स्थान में* - **असूर्ये**। सूर्यरहिते - सा.। दया.। in sunless (darkness) - W.

*हर्षित होता हुआ सोम के पान से* - **मन्दानः सुतस्य**। सुतेन सोमेन तृप्यन् - वे.। अभिषुतेन सोमेन मोदमानः - सा.। rejoicing in the poured libation - G.

*उठाकर (वज्र को)* - **अपगूर्य**। वज्रम् उद्यम्य - सा.। after loud-voiced threats - G.

**उद् यद् इन्द्रो महते दानवाय वधर् यमिष्ट सहो अप्रतीतम्।**
**यद् ईं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोर् अधमं चकार।। ७।।**

उत्। यत्। इन्द्रः। महते। दानवाय। वधः। यमिष्ट। सहः। अप्रतिऽइतम्।
यत्। ईम्। वज्रस्य। प्रऽभृतौ। ददाभ। विश्वस्य। जन्तोः। अधमम्। चकार।। ७।।

*ऊपर को जब इन्द्र, महान् दानव के लिये,*
*आयुध को उठाता है, विजेता को, अनाक्रान्त को।*
*जब उसको वज्र के प्रहार से, हिंसित कर देता है,*
*सब जीवों से नीचा, बना देता है (उसको)।। ७।।*

जब परमेश्वर महान् दुष्ट आसुरी शक्ति के विनाश के लिये बलवती और किसी के द्वारा भी अन्यथा न की जा सकने वाली अपनी न्यायव्यवस्था का भली प्रकार प्रयोग करता है, तो वह उसे उसके द्वारा नष्ट कर डालता है और सब जीवों की अपेक्षा निम्नतम स्थिति में पहुँचा देता है।

टि. *ऊपर को आयुध को उठाता है* - **उत् वधः यमिष्ट**। उदयच्छद् आयुधम् - वे.। वज्रम् उदयच्छत् - सा.। raised his weapon - W.

*विजेता को* - **सहः**। सहनशीलम् - वे.। शत्रूणाम् अभिभवितृ - सा.। बलम् - दया.। powerful - W. power - G.

*वज्र के प्रहार से* - **वज्रस्य प्रभृतौ**। वज्रस्य प्रहरणे - वे.। वज्रस्य प्रभृतौ प्रहृतौ प्रहरणे सति - सा.। with the blow of the thunderbolt - W. at the hurling of his bolt - G.

*सब जीवों से नीचा बना देता है* - **विश्वस्य जन्तोः अधमम् चकार**। सर्वस्य प्राणिजातस्य अधः चकार - वे.। सा.। made him the lowest of all the creatures - W. G.

**त्यं चिद् अर्णं मधुपं शयानम् असिन्वं वव्रं मह्याददद् उग्रः।**
**अपादम् अत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचम्।। ८।।**

त्यम्। चित्। अर्णम्। मधुऽपम्। शयानम्। असिन्वम्। वव्रम्। महि। आदत्। उग्रः।
अपादम्। अत्रम्। महता। वधेन। नि। दुर्योणे। अवृणक्। मृध्रऽवाचम्।। ८।।

*उसको भी गतिशील को, मधु का पान करने वाले को, लेटे हुए को,*
*शत्रुपरास्ता को, आच्छादक को, महान् को, वश में कर लेता है उग्र।*
*पाँव से हीन को, खा जाने वाले को, महान् से अपने आयुध से,*
*नितरां घर में (उसके ही), काट डालता है, कठोर वाणी वाले को।। ८।।*

दुष्टों के लिये उग्र रूप को धारण करने वाला वह परमेश्वर दूसरों पर आक्रमण करने वाली, देवों से छीनकर सोम आदि का पान करने वाली, सुखसाधनों पर एकाधिकार करके लेट जाने वाली, प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त कर डालने वाली, प्रकाश ज्ञान आदि को ढक लेने वाली महान् आसुरी शक्ति को अपने वश में कर लेता है। पाँव से रहित अर्थात् अस्थिर, दूसरों का भक्षण करने वाली, दुर्वचनों को बोलने वाली उस दुष्ट आसुरी शक्ति को वह जगदीश्वर अपनी महान् न्यायव्यवस्था के द्वारा उसके अपने ही स्थान में भली प्रकार छिन्न-भिन्न कर डालता है।

टि. *गतिशील को* – **अर्णम्।** उदकं प्रति - वे.। गन्तारम् - सा.। जलम् - दया.। moving - W. restless - G.

*मधु का पान करने वाले को* – **मधुपम्।** उदकस्य पातारम् – वे.। मधुनो ऽंभसः पातारं पालयितारम् – सा.। यन् मधूनि पाति तम् – दया.। having drunk the Soma - W.

*शत्रुपरास्ता को* – **असिन्वम्।** अबन्धनम् – वे.। सपत्नानाम् अवक्षेप्तारम् – सा.। **अबद्धम्** – दया.। subduing his foes - W. insatiate - G.

*आच्छादक को* – **वव्रम्।** वारकम् – वे.। वृण्वन्तं सर्वम् अप्याच्छादयन्तम् – सा.। वरणीयम् – दया.। enveloping the world - W.

*खा जाने वाले को* – **अत्रम्।** भक्षणशीलम् – वे.। अमत्रम् अमात्रं परिमाणरहितम् – सा.। यो ऽतति सर्वत्र व्याप्नोति तम् – दया.। measureless - W.

घर में – **दुर्योणे।** दुर्योणाख्ये देशे – वे.। संग्रामे – सा.। गृहे – दया.। in battle - W in his dwelling - G..

*कठोर वाणी वाले को* – **मृध्रवाचम्।** परुषवाचम् – वे.। हिंसितवागिन्द्रियम् – सा.। हिंसित-वाचम् – दया.। measureless - W. evil-speaking - G.

**को अ॒स्य॒ शुष्मं॑ तवि॑षीं वरात॒ एको॒ धना॑ भरते॒ अप्र॑तीतः।**
**इ॒मे चि॑द् अ॒स्य॒ ज्रय॑सो॒ नु दे॒वी इन्द्र॒स्यौज॑सो भि॒यसा॑ जिहाते।। ९।।**

कः। अ॒स्य॒। शुष्म॑म्। तवि॑षीम्। व॒रा॒ते॒। एकः॑। धना॑। भ॒र॒ते॒। अप्र॑तिऽइतः।
इ॒मे इति॑। चि॒त्। अ॒स्य॒। ज्रय॑सः। नु। दे॒वी इति॑। इन्द्र॑स्य। ओज॑सः। भि॒यसा॑। जि॒हा॒ते॒ इति॑।। ९।।

*कौन इसके शोषक तेज को, बल को (भी), रोक सकता है,*
*अकेला धनों का हरण करता है, बिना प्रतिरोध किया हुआ।*
*ये दोनों भी इस वेगवान् के, निश्चय से दिव्य गुणों वाले,*
*इन्द्र के बल के, भय से, चलायमान हो जाते हैं।। ९।।*

ऐश्वर्यों के स्वामी इस परमेश्वर के रिपुओं को सुखा डालने वाले तेज और बल को भला कौन रोक सकता है। यह अकेला ही किसी के द्वारा प्रतिरोध न किया जा सकने वाला आसुरी शक्तियों के धनों को हर लेता है। दिव्य गुणों वाले ये द्युलोक और भूलोक भी इस वेगवान् इन्द्र के बल के डर से काँपने लगते हैं।

टि. *शोषक तेज को, बल को* – **शुष्मं तविषीम्।** शोषकं तेजो बलं च – वे.। **शुष्मं शोषणीं**

तविषीं बलम्। शुष्मशब्दस्य स्त्रीलिङ्गविशेषणत्वे ऽपि नियतलिङ्गत्वात् पुँल्लिङ्गत्वम् एव। सा.। शुष्मं बलम्, तविषीं सेनाम् – दया.। the withering might - W. his strength or his vigour - G.

*रोक सकता है* – **वराते**। वारयितुं शक्नोति – वे.। निवारयेत् – सा.। वृणुयाताम् – दया.। may resist - W. may arrest - G.

*धनों का हरण करता है* – **धना भरते**। शत्रुधनानि आहरति – वे.। धना धनानि शत्रूणां वसूनि भरते बिभर्ति हरते वा – सा.। carries off the riches - W. he bears off all riches - G.

*वेगवान् के* – **त्रयसः**। वेगात् – वे.। वेगवतः – सा.। of the quick-moving - W. from his dominion - G.

*भय से चलायमान हो जाते हैं* – **भियसा जिहाते**। भयेन कम्पेते – वे.। भयेन गच्छतः चलत इत्यर्थः – सा.। proceed swiftly - W. through terror retire - G.

**न्यस्मै देवी स्वधितिर् जिहीत इन्द्राय गातुर् उशतीव येमे।**
**सं यद् ओजो युवते विश्वम् आभिर् अनु स्वधाव्ने क्षितयो नमन्त।। १०।।**

नि। अस्मै। देवी। स्वऽधितिः। जिहीते। इन्द्राय। गातुः। उशतीऽइव। येमे।
सम्। यत्। ओजः। युवते। विश्वम्। आभिः। अनु। स्वधाऽव्ने। क्षितयः। नमन्त।। १०।।

*नीचे को इसके पास, दीप्तिमान् स्वधारक आकाश गमन करता है,*
*इन्द्र को, पृथिवी कामिनी की तरह, आत्मसमर्पण करती है।*
*भली प्रकार चूँकि बल को, मिला देता है समस्त को इनके साथ,*
*अनुकूलतापूर्वक (अतः), स्वधारक को प्रजाएं नमन करती हैं।। १०।।*

स्वयं को धारण करने वाला देदीप्यमान आकाश मानो इस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की शरण में इसकी परिचर्या के लिये जाता है। यह पृथिवी भी प्रिया पत्नी की तरह स्वयं को उसके लिये आत्मसमर्पण करती है। वह प्रभु चूँकि दोनों लोकों की प्रजाओं के लिये अपनी सभी शक्तियों को लगा देता है, इसलिये मानवी और दैवी उभयविध प्रजाएं उस स्वधारक को नमन करती हैं।

टि. *दीप्तिमान् स्वधारक आकाश* – **देवी स्वधितिः**। देवनशीलम् आयुधम् – वे.। स्वधितिः स्वधृतिः स्वेन धृता देवी द्योतमाना – सा.। स्वधितिः वज्र इव – दया.। the divine, self-sustaining heaven - W. the Celestial Axe - G.

*पृथिवी* – **गातुः**। पृथिवी – वे.। सा.। दया.। the moving (earth) - W. the Earth - G.

*आत्मसमर्पण करती है* – **(नि) येमे**। आत्मानं नियच्छति – वे.। सा.। यच्छति – दया.। resigns (herself) - W. gives way to Indra - G.

*भली प्रकार बल को मिला देता है* – **सम् ओजः युवते**। आत्मीयं बलं संमिश्रयति – वे.। बलं संयोजयति। इन्द्रः स्वकीयं बलं सर्वासु प्रजासु निहितवान् इत्यर्थः। सा.। shares all his vigour - W. he imparts all vigour (to these people) - G.

*स्वधारक के लिये* – **स्वधाव्ने**। अन्नवते – वे.। बलवते – सा.। स्वधाव्ने यः स्वं दधाति तस्मै – दया.। to the potent Indra - W. to him the Godlike - G.

**एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु।**
**तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर् हवमानास इन्द्रम्।। ११।।**

एकम्। नु। त्वा। सत्ऽपतिम्। पाञ्चऽजन्यम्। जातम्। शृणोमि। यशसम्। जनेषु।
तम्। मे। जगृभ्रे। आऽशसः। नविष्ठम्। दोषा। वस्तोः। हवमानासः। इन्द्रम्।। ११।।

*एक को निश्चय से तुझको, सज्जनों के पालक को, पञ्चजनहितैषी को,*
*प्रकट को (जगत् में), सुनता हूँ मैं यशों वाले को, मनुष्यों के मध्य।*
*उसको मेरी ग्रहण करें (सन्ततियां), कामनाओं वाली, अत्यन्त स्तुत्य को,*
*रात्रि में, दिन में (भी), आह्वान करती हुई इन्द्र का।। ११।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तू एक ही है, तू अद्वितीय है। तू सज्जनों का पालक है। तू ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद (वनवासी), मानव समाज के इन पाँच वर्गों के हितों को साधने वाला है। तू इस जगत् में यशस्वी के रूप में प्रादुर्भूत हुआ है, ऐसा मैं मनुष्यों के बीच में सुनता हूँ। तुझ अतिशय स्तुति के योग्य का विविध कामनाओं वाली मेरी आगे आने वाली सन्तानें दिनों और रातों में सदा हृदय से आह्वान करती रहें, मेरी यही अभिलाषा है।

टि. *सज्जनों के पालक को* - **सत्पतिम्।** सतां पतिम् - वे.। सतां साधूनां पालकम् - सा.। सतां पालकम् - दया.। the protector of the good - W. Lord of heroes - G.

*पञ्चजनहितैषी को* - **पाञ्चजन्यम्।** पञ्चजनहितम् - वे.। पञ्चजनेभ्यो मनुष्येभ्यो हितम् - सा.। friendly to the five classes of beings - W. of the Five Races - G.

*यशों वाले को* - **यशसम्।** यशस्विनम् - वे.। दया.। यशोयुक्तम् - सा.।

*कामनाओं वाली* - **आशसः।** आशंसितारः - वे.। कामानां शंसमानाः - सा.। कामम् इच्छन्तः - दया.। representing their wishes - W. my wishes - G.

*अत्यन्त स्तुत्य को* - **नविष्ठम्।** अत्यर्थं स्तुत्यम् - वे.। सा.। अतिशयेन नवम् - दया.। the glorified - W. most lately - G.

**एवा हि त्वाम् ऋतुथा यातयन्तं**
**मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि।**
**किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो**
**ये त्वाया निदधुः कामम् इन्द्र।। १२।। ३३।। २।।**

एव। हि। त्वाम्। ऋतुऽथा। यातयन्तम्। मघा। विप्रेभ्यः। ददतम्। शृणोमि।
किम्। ते। ब्रह्माणः। गृहते। सखायः। ये। त्वाऽया। निऽदधुः। कामम्। इन्द्र।। १२।।

*इस प्रकार ही तुझको, कालानुसार यत्न कराते हुए को,*
*धनों को ज्ञानियों को प्रदान करते हुए को, सुनता हूँ मैं।*
*क्या तेरे ऋचाओं के ज्ञाता, ग्रहण करते हैं सखा जन,*
*जो तुझमें स्थापित करते हैं कामनाओं को, हे इन्द्र।। १२।।*

हे परमेश्वर! मैं सदा तुझे इसी प्रकार अपने उपासकों से समय के अनुसार यथायोग्य प्रयत्न कराते

हुए को और धनों को उनपर एकाधिकार कर लेने वाली आसुरी शक्तियों से छीनकर ज्ञानी और साधु जनों को प्रदान करते हुए को सुनता हूँ। वैदिक ऋचाओं के ज्ञाता और उनसे तेरी स्तुति करने वाले तथा अपनी कामनाओं को तुझमें स्थापित करने वाले, अर्थात् तुझपर ही भरोसा करने वाले तेरे स्तोता मित्र तुझसे क्या ग्रहण करते हैं, यह एक प्रश्न प्रायः पूछा जाता है। वस्तुतः तुझसे मित्रता करने वाले तेरे स्तोता सब-कुछ तुझसे ही ग्रहण करते हैं। तू ही उनका परम दाता है।

टि. *कालानुसार यत्न कराते हुए को* - **ऋतुथा यातयन्तम्।** कालेकाले शत्रून् घ्नन्तम् - वे.। कालेकाले यातयन्तं जन्तून् प्रेरयन्तम् - सा.। ऋतोर् ऋतोर् मध्ये सन्तानाय प्रयतन्तम् - दया.। influencing (creatures) according to the season - W. in due season urging to action - G.

*सुनता हूँ मैं* - **शृणोमि।** निशामयामि। एतन् मृषैव प्रतिभाति। सा.।

*क्या ऋचाओं के ज्ञाता ग्रहण करते हैं* - **किम् ब्रह्माणः गृहते।** किं तुभ्यं ब्राह्मणा गृह्णते, तुभ्यं प्रदानाय किम् आददत इत्यर्थः - वे.। ब्रह्माणो बृहन्तस् ते किं गृह्णन्ते - सा.। किं चतुर्वेदविदः गृह्णन्ति - दया.। what do the devoted (friends) obtain - W.

*जो तुझमें स्थापित करते हैं कामनाओं को* - **ये त्वाया निदधुः कामम्।** त्वत्कामनया प्रजापश्वादिकं कामम् आत्मनि निदधुः - वे.। त्वाया त्वयि ये स्तोतारः कामं स्वीयाभिलाषं नि दधुः न्यक्षिपन् - सा.। त्वाया त्वयि। अत्र विभक्तेः सुपां सुलुग् इति याजादेशः। दया.। who have entrusted their desires to thee - W. who rest their hopes on thee - G.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां चतुर्थे ऽष्टके प्रथमो ऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त ३३

ऋषिः - प्रजापतिपुत्रः संवरणः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। दशर्चं सूक्तम्।

**महिं महे तवसे दीध्ये नॄन् इन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान्।**
**यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जने समर्यश् चिकेत।। १।।**

महिं। महे। तवसे। दीध्ये। नॄन्। इन्द्राय। इत्था। तवसे। अतव्यान्।
यः। अस्मै। सुऽमतिम्। वाजऽसातौ। स्तुतः। जने। सऽमर्यः। चिकेत।। १।।

*महान् (स्तोत्र) को, महान् बल के लिये, ध्याता हूँ, मनुष्यों के लिये,*
*इन्द्र के लिये, इस प्रकार बलवान् के लिये, निर्बल (मैं)।*
*जो इसके लिये सुमति को, ऐश्वर्य की प्राप्ति के निमित्त,*
*स्तुति किया हुआ, मनुष्य के लिये मनुष्यों वाला, जनाता है।। १।।*

मैं उपासक अत्यन्त निर्बल हूँ। वह परमेश्वर अत्यधिक बलवान् है। मैं महान् बल की प्राप्ति के लिये और मनुष्यों पर उसकी कृपादृष्टि के लिये उस प्रभु का मन ही मन में गुणगान करता हूँ। मनुष्यों के द्वारा स्तुति किया जाने वाला वह जगदीश्वर ऐश्वर्यों की प्राप्ति के निमित्त मुझ उपासक के द्वारा इस प्रकार स्तुति किये जाने पर उत्तम बुद्धि प्रदान करता है।

टि. *ध्याता हूँ मैं* - **दीध्ये**। अत्यन्तं तीक्ष्णं करोमि - वे.। दीपयामि प्रकाशयामि - सा.। प्रकाशये - दया.। I offer praise - W. I ponder - G.

*मनुष्यों के लिये* - **नॄन्**। कर्मणो नेतॄन् ऋत्विजः - वे.। षष्ठ्यर्थे द्वितीया। मनुष्याणाम् अस्मदीयानां तवसे बलाय। यद्वा। नॄन् अस्मद्विरोधिनाम् अभिभवायेति शेषः। सा.। मनुष्यान् - दया.।

*बल वाले के लिये निर्बल* - **तवसे अतव्यान्**। तवीयसे अतवीयान्। छान्दसो वर्णलोपः।। वृद्धाय अवृद्धः - वे.। अतव्यान् अत्यन्तम् इव दुर्बलः सन् तवसे बलवते - सा.।

*मनुष्य के लिये* - **जने**। जनानां मध्ये - वे.। जनाय संवरणाय - सा.।

*मनुष्यों वाला* - **समर्यः**। मरुद्भिः सह - वे.। मर्त्यैः स्तोतृभिः सहितो यद्वा सहम्रियमाणैर् युध्यमानैर् मरुदादिभिर् अथवा समरार्हः - सा.। associated with the Maruts - W. with his band - G.

*जनाता है* - **चिकेत**। प्रज्ञापयति - वे.। जानाति - सा.। shows favour - W. G.

**स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्कैर् हरीणां वृषन् योक्त्रम् अश्रेः।**
**या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः सक्षि जनान्।। २।।**

सः। त्वम्। नः। इन्द्र। धियसानः। अर्कैः। हरीणाम्। वृषन्। योक्त्रम्। अश्रेः।
याः। इत्था। मघऽवन्। अनु। जोषम्। वक्षः। अभि। प्र। अर्यः। सक्षि। जनान्।। २।।

*वह तू हमारी, हे इन्द्र!, चिन्तन किया जाता हुआ, स्तुतियों के द्वारा,*
*अश्वों के, हे सुखों के वर्षक!, जोत को बाँध दे (जूओं के साथ)।*
*(प्रेरित होकर) जिनको इस ओर, हे धनदाता!, प्रीति-अनुसार लाता है तू,*
*अभिमुख होकर प्रकर्ष से, न देने वालों को पराभूत कर तू मनुष्यों को।। २।।*

हे सुखों की वर्षा करने वाले, ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश! हम तेरे उपासक अपनी स्तुतियों के द्वारा तेरे बलों का चिन्तन करते हैं। तू हमारी इन स्तुतियों से प्रेरित होकर अपनी शक्तियों को इस संसार रूपी रथ के जूओं में जोत दे, सांसारिक कार्यकलापों में नियुक्त कर दे। हे उत्तम धनों के दाता परमेश्वर! तू हमारी स्तुतियों से प्रसन्न होकर इन अपनी शक्तियों को हमारी भलाई के लिये हमारी ओर ला। हे प्रभो! जो मनुष्य कमाए हुए अपने धनों को अपने पास ही रख लेते हैं, दीनों और असहायों को नहीं देते, तू उनके अभिमुख होकर अपनी शक्तियों से उनको पराभूत कर दे।

टि. *चिन्तन किया जाता हुआ* - **धियसानः।** प्रीयमाणः - वे.। अस्मान् ध्यायन् - सा.। ध्यानं कुर्वन् - दया.। meditating upon us - W. made attentive - G.

*अश्वों के जोत को बाँध दे* - **हरीणां योक्त्रम् अश्रेः।** अश्वानां योक्त्रं रथयुगैः समयोजयः - वे.। रथे नियोज्यमानानाम् अश्वानां योक्त्रं नियोजनरज्जुम् अश्रेः आश्रयसि - सा.। fastenest the traces of thy horses - W. thou fastenedst the girth of thy Bay Coursers - G.

*जिनको* - **याः।** याहि - वे.। लिङ्गव्यत्ययः। यान् अर्कान्। सा.। in which - W. which - G.

*इस ओर* - **इत्था।** इत्थम् - सा.। hither - G.

*प्रीति-अनुसार* - **अनु जोषम्।** सेव्यं मां प्रति - वे.। प्रीतिम् अनु - सा.। प्रीतिम् - दया.।

*लाता है तू* - **वक्षः।** वह प्रापण इत्यस्माद् भौवादिकाद् धातोर् लेटि रूपम्।। वह - वे.। अवहः - सा.। प्राप्नुहि - दया.। thou drivest - G.

*न देने वालों को पराभूत कर तू मनुष्यों को* - **अर्यः सक्षि जनान्।** षह मर्षणे इत्यस्माद् भौवादिकाद् धातोर् लटि रूपम्।। अस्मदीयान् जनान् स्वामी सन् तान् प्र सक्षि च। सचिः सेवाकर्मेति। वे.। अस्मदरीन् जनान् पराभव - सा.। स्वामी राजा सम्बध्नासि मनुष्यान् - दया.। do thou overcome (for us) hostile men - W. subdue for us the men who hate us - G.

**न ते त इन्द्राभ्य१स्मद् ऋष्वायुक्तासो अब्रह्मता यद् असन्।**
**तिष्ठा रथम् अधि तं वज्रहस्ता रश्मिं देव यमसे स्वश्वः।। ३।।**

न। ते। ते। इन्द्र। अभि। अस्मत्। ऋष्व। अयुक्तासः। अब्रह्मता। यत्। असन्।
तिष्ठ। रथम्। अधि। तम्। वज्रऽहस्त। आ। रश्मिम्। देव। यमसे। सुऽअश्वः।। ३।।

*नहीं वे तेरे (हैं), हे इन्द्र!, अभिमुखतया हमसे भिन्न (हैं), हे महान्!,*
*नहीं जुड़े हुए (तुझसे), अश्रद्धा के कारण चूँकि हैं वे।*
*स्थित हो रथ के ऊपर इसके, हे वज्र को हाथों में धारण करने वाले!,*
*रश्मि को (रथ की) हे देव!, नियन्त्रित कर तू, शोभन अश्वों वाला।। ३।।*

हे महान् परमेश्वर! जो मनुष्य अश्रद्धा के कारण तेरी पूजा-अर्चना नहीं करते, वे तुझसे जुड़े हुए नहीं हैं। ऐसे वे मंनुष्य तेरे नहीं हैं। वे तो तेरे उपासकों से हमसे भी मुख्य रूप से भिन्न हैं। हे न्याय-व्यवस्था को अपने वश में रखने वाले प्रकाशमान जगदीश्वर! उत्तम बलों वाला तू इस जगत् रूपी रथ में आरूढ़ होता हुआ और इस जगत् की व्यवस्था की बाग-डोर को अपने नियन्त्रण में रखता हुआ दूसरों की हिंसा करने वाले असुरवृत्ति जनों को समूल नष्ट कर दे।

टि. *अभिमुख्यतया हम से भिन्न हैं* - **अभि अस्मत्**। न अस्मान् अभि आगच्छन्ति - वे.। अस्मद् अस्मत्तस् त्वद्भक्तेभ्यो ऽन्ये - सा.। differing from us - W. not turned to us-ward - G.

*हे महान्* - **ऋष्वः**। हे दर्शनीय - वे.। महन् - सा.। mighty - W. lofty - G.

*नहीं जुड़े हुए हैं (तुझसे)* - **अयुक्तासः**। रथे अयुक्ताः - वे.। त्वयासंयुक्ताः - सा.। योगरहिताः - दया.। not united with thee - W. unharnessed - G.

*हैं* - **असन्**। अभवन् - वे.। आसन् अभवन् - सा.। भवन्ति - दया.।

*अश्रद्धा के कारण* - **अब्रह्मता**। अस्माकं स्तोत्रवर्जिततया - वे.। ब्रह्म परिवृढं कर्म। तद्रहितत्वात्। सा.। through their lack of devotion - W. through the lack of prayer - G.

**पुरू यत् त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकर्थोर्वरासु युध्यन्।**
**ततक्षे सूर्याय चिद् ओकसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्।। ४।।**

पुरु। यत्। ते। इन्द्र। सन्ति। उक्था। गवे। चकर्थ। उर्वरासु। युध्यन्।
ततक्षे। सूर्याय। चित्। ओकसि। स्वे। वृषा। समत्ऽसु। दासस्य। नाम। चित्।। ४।।

*बहुत से जो तेरे, हे इन्द्र!, हैं स्तुति के योग्य वीरकर्म,*
*गोनिमित्त (जिनको) करता है तू, विस्तीर्ण लोकों में युद्ध करता हुआ।*
*ताछ देता है तू (तम को) सूर्य के लिये भी, घर में (उसके) अपने में,*
*सुखों का वर्षक, युद्धों में, उपक्षेता के नाम को भी (काट डालता है तू)।। ४।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! स्तुति के योग्य जो तेरे असंख्य वीरोचित कर्म हैं, जिनको तू विस्तृत लोकों में गौओं, जलों, प्रकाशरश्मियों आदि को प्रजाओं को प्राप्त कराने के लिये आसुरी शक्तियों के साथ युद्ध करता हुआ सम्पन्न करता है, उनमें से एक यह भी है, जो सुखों का वर्षक तू सूर्य की रक्षा के लिये उसके अपने ही स्थान में उसे आवृत करने वाले तम को काट डालता है और युद्धों में उस हिंसक आसुरी शक्ति के नाम को भी नष्ट कर देता है।

टि. *बहुत से जो* - **पुरु यत्**। पुरूणि यानि।। अङ्गिरोभिः प्रयुक्तानि बहूनि, यदा - वे.। पुरूणि यदा - सा.। बहूनि यानि - दया.। because many - G.

*स्तुति के योग्य वीरकर्म* - **उक्था**। उक्था उक्थ्या उक्थ्यानि स्तोतव्यानि वीरकर्माणीति शेषः।। स्तोत्राणि - वे.। उक्थानि शस्त्राणि - सा.। प्रशंसितानि कर्माणि - दया.। lauds - G.

*गोनिमित्त* - **गवे**। पणिभिर् अपहृतेषु गोषु तज्जयार्थम् - वे.। वृष्ट्युदकाय - सा.। गवादिपशुहिताय - दया.। for the sake of shedding water - W. for cattle - G.

*विस्तीर्ण लोकों में* - **उर्वरासु**। उरुवरासु भूमिषु। विस्तृतेषु लोकेषु।। पणीनां तेषु तेषु क्षेत्रेषु - वे.। सस्योपेतासु भूमिषु निमित्तभूतासु - सा.। भूमिषु - दया.। on fertile lands - W. in fields - G.

*ताछ देता है तू* - **ततक्षे**। तक्षणं कृतवान् असि - वे.। ततक्षे संपादयसि - सा.। तनूकरोषि - दया.। hast destroyed - W. formedst - G.

*सूर्य के लिये भी घर में (उसके) अपने में* - **सूर्याय चित् ओकसि स्वे**। सूर्याय स्वे स्थाने

स्थिराय असुरैर् उत्पादितेन तमसावृताय प्रकाशार्थम् - वे.। सूर्यस्य स्वे स्वकीये स्थाने - सा.। on behalf of the sun, in his own dwelling - W.

*उपक्षेता के नाम को भी* - **दासस्य नाम चित्।** दासस्य उपक्षपयितुः नमयिता च - वे.। नामापि ततक्षे नाशयसीत्यर्थः - सा.। दासस्य संज्ञाम् अपि - दया.। even a Dāsa's nature - W.

**व॒यं ते॑ त॑ इन्द्र॒ ये च॒ नर॒:**
**शर्धो॑ जज्ञा॒ना या॒ताश् च॒ रथा॑:।**
**आस्माञ् ज॑गम्याद् अहिशुष्म॒ सत्वा॒**
**भगो॒ न हव्य॑: प्रभृ॒थेषु॒ चारु॑:॥ ५॥ १॥**

व॒यम्। ते। ते॒। इन्द्र॒। ये। च॒। नर॑:। शर्ध॑:। ज॒ज्ञा॒नाः। या॒ताः। च॒। रथा॑:।
आ। अ॒स्मान्। ज॒ग॒म्या॒त्। अ॒हि॒ऽशु॒ष्म॒। सत्वा॑। भग॑:। न। हव्य॑:। प्र॒ऽभृ॒थेषु॑। चारु॑:॥ ५॥

*हम वे तेरे (हैं), हे इन्द्र!, और जो नायक (हमारे),*
*और वेग को जानने वाले, गमनशील (हैं जो) रथ।*
*इधर हमारे पास गमन कर तू, हे असुरशोषक, बलशाली,*
*ऐश्वर्य की तरह आह्वान के योग्य, संग्रामों में सहायक॥ ५॥*

हे ऐश्वर्यशाली जगदीश्वर! तेरे वीरकर्मों की इस प्रकार स्तुति करने वाले वे हम तेरे ही हैं। जीवन के संघर्षों और यज्ञ आदि शुभ कर्मों में हमारा नेतृत्व करने वाले हमारे नायक भी तेरे ही हैं। जीवन में गति के महत्त्व को जानने वाले और निरन्तर गति करने वाले हमारे शरीररूपी रथ भी तेरे ही हैं। हे हिंसक असुरवृत्ति जनों को अपने तेज से सुखा डालने वाले परमेश्वर! तू शत्रुविनाशक बलों से युक्त, अभीष्ट ऐश्वर्यों की तरह प्राप्ति के योग्य और जीवन के संघर्षों में सहचर, सहायता करने वाला है। तू हमें प्राप्त होकर हमारे हृदयमन्दिर में निवास कर।

टि. *नायक* - **नरः।** अस्मदीया योद्धारः - वे.। नरः कर्मणां नेतार ऋत्विग्यजमानाः - सा.। नायकाः - दया.। the leaders (of rites) - W. all these people - G.

*वेग को जानने वाले* - **शर्धः जज्ञानाः।** त्वदीयं वेगं जानन्तः - वे.। शर्धो बलं जज्ञाना उत्पादयन्तः - सा.। promoters of (thy) strength - W. conscious of might - G.

*गमनशील* - **याताः।** संग्रामं प्रति गताश् चासन् - वे.। होतुं त्वां प्राप्ताः - सा.। ये प्राप्तास् ते - दया.। willing applicants (to thee) - W. set in motion - G.

*रथ* - **रथाः।** रंहणशीलाः वयम् - सा.। यानादयः - दया.।

*हे असुरशोषक* - **अहिशुष्म।** हे अहेः शोषक - वे.। अहिशुष्म अहिर् अयनात्। सर्वतो व्याप्तबलेन्द्र। सा.। all-powerful - W. O Strong as Ahi - G.

*बलशाली* - **सत्वा।** शत्रूणां सादनं बलम् - वे.। भृत्यादिः - सा.। यः सीदति - दया.। many adherents worthy of commendation - W.

*संग्रामों में* - **प्रभृथेषु।** संग्रामेषु यज्ञेषु वा - सा.। प्रकर्षेण धर्तव्येषु - दया.। in war - G.

*सहायक* - **चारुः।** कल्याणम् - वे.। संगन्ता - सा.। सुन्दरः - दया.। faithful - W.

**पपृक्षेण्यम् इन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः।**
**स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्य: स्तुषे तुविमघस्य दानम्।। ६।।**

पपृक्षेण्यम्। इन्द्र। त्वे इति। हि। ओजः। नृम्णानि। च। नृतमानः। अमर्तः।
सः। नः। एनीम्। वसवानः। रयिम्। दाः। प्र। अर्यः। स्तुषे। तुविऽमघस्य। दानम्।। ६।।

*पूछने के योग्य, हे इन्द्र!, तुझमें निश्चय से बल है,*
*पौरुष भी (हैं), नर्तनशील अमरणधर्मा है तू।*
*वह (तू) हमको शुभ्र, आच्छादित करने वाला (जगत् को), धन दे,*
*खूब स्वामी के, स्तुति करता हूँ मैं, बहुधनवान् के दान की।। ६।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! निश्चय से तेरे पास पूछने के योग्य, मांगने के योग्य, कमनीय धन है। तेरे पास असंख्य पौरुष भी हैं। तू आसुरी शक्तियों के साथ चलने वाले संघर्षों में युद्धक्षेत्र में नृत्य और क्रीड़ाएं करने वाला है। तू अमरणधर्मा है। तू अपने तेज से जगत् को आच्छादित करने वाला और मनुष्यों को सुखसाधनों से बसाने वाला है। तू हमें उचित उपायों से कमाया जाने वाला पवित्र धन प्रदान कर। मैं बहुत धनों वाले तुझ स्वामी के दान की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ।

टि. *पूछने के योग्य* - **पपृक्षेण्यम्।** प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् इत्यस्य धातो रूपम् इदम्।। भीरूणां संसेव्यम् - वे.। संपर्कार्हं पूज्यं वा - सा.। प्रष्टुं योग्यम् - दया.। glorious - W. much to be desired - G.

*पौरुष भी (हैं)* - **नृम्णानि च।** बलानि च - वे.। द्रविणानि च - सा.। नरैः रमणीयानि धनानि - दया.। exulting - W. (his) hero exploits - G.

*नर्तनशील* - **नृतमानः।** नर्तनशीलः - वे.। नृत्यन् - सा.। अत्र विकरणव्यत्ययेन शः। दया.।

*शुभ्र धन* - **एनीम् रयिम्।** श्वेतां निर्मलां रयिम् - वे.। एनवर्णां श्वेतवर्णां रयिं धनम् -सा.। brilliant wealth, literally white riches - W. splended riches - G.

*बसाने वाला* - **वसवानः।** आच्छादयन् स्वतेजसा जगत् - वे.। सा.। निवासयन् - दया.। clothing (the world with light) - W.

*बहुधनवान् के* - **तुविमघस्य।** बहुधनस्य - वे.। सा.। दया.।

**एवा न इन्द्रोतिभिर् अव पाहि गृणतः शूर कारून्।**
**उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः।। ७।।**

एव। नः। इन्द्र। ऊतिऽभिः। अव। पाहि। गृणतः। शूर। कारून्।
उत। त्वचम्। ददतः। वाजऽसातौ। पिप्रीहि। मध्वः। सुऽसुतस्य। चारोः।। ७।।

*निश्चय से हमारी, हे इन्द्र!, रक्षणों से रक्षा कर तू,*
*पालन कर स्तोताओं का, हे शूर!, कर्म करने वालों का।*
*और कवच को प्रदान करने वालों को, संग्राम में,*
*पूर दे तू सोम से, सुष्ठु सवन किये हुए से, रोचक से।। ७।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! निश्चय से तू अपने संरक्षणों से हमारी रक्षा कर। जो मनुष्य तेरी

स्तुतियां करते हैं और तेरे लिये यज्ञ आदि शुभ कर्मों का सम्पादन करते हैं, उनका तू, हे हिंसकहन्ता!, सदा ही भली प्रकार पालन कर। आसुरी शक्तियों के साथ चलने वाले संघर्षों में जो मनुष्य तुझे सब ओर से आच्छादित किये रहते हैं, तेरी ढाल बनकर तेरे साथ खड़े हो जाते हैं, उनको तू भली प्रकार सम्पादित किये हुए, रुचने वाले, भक्ति के आनन्द से तृप्त कर दे।

टि. *निश्चय से* - **एव**। एवम् - वे.। सा.। एवा निश्चये। अत्र निपातस्य चेति दीर्घः। दया.।

*कर्म करने वालों को* - **कारून्**। स्तोतॄन् - वे.। कर्तॄन् ऋत्विजः - सा.। शिल्पिनः - दया.। worshipping thee - W. the bards - G.

*कवच को प्रदान करने वालों को* - **त्वचं ददतः**। शत्रुभ्यः आत्मीयां त्वचं ददतः प्रदर्शयतः। धारणकर्मा वा ददातिः, त्वचं बिभ्रत इति - वे.। आच्छादकं रूपं ददतः प्रयच्छतः - सा.। त्वग् आच्छादकं रक्षकवर्म - दया.। that yields (a defensive) covering - W. who offer a skin - G.

*पूर दे तू* - **पिप्रीहि**। प्रीणय - सा.। प्राप्नुहि - दया.। be propitiated - W. be friendly - G.

*सोम से रोचक से* - **मध्वः चारोः**। चारुणा सोमेन - वे.। मनोहरस्य सोमस्य - सा.।

**उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सूरेस् त्रसदस्योर् हिरणिनो रराणाः।**
**वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर् नु सश्चे।। ८।।**

उत। त्ये। मा। पौरुऽकुत्स्यस्य। सूरेः। त्रसदस्योः। हिरणिनः। रराणाः।
वहन्तु। मा। दश। श्येतासः। अस्य। गैरिऽक्षितस्य। क्रतुऽभिः। नु। सश्चे।। ८।।

*और वे मुझको, बहुतों द्वारा स्तुति किये जाने योग्य के, मेधावी के,*
*हिंसकों को भयभीत करने वाले के, सुवर्णधारक के, क्रीड़ाएं करने वाले।*
*वहन करें मुझको, दश (संख्या वाले), श्वेत वर्ण वाले (अश्व), इसके,*
*पर्वत में निवास करने वाले के, कर्मों के साथ अब युक्त होता हूँ मैं।। ८।।*

वह परमेश्वर सब मनुष्यों के द्वारा स्तुति किये जाने के योग्य है। वह महान् ज्ञाता है। वह दूसरों की हिंसा करने वाले दुष्ट जनों को भयभीत करने वाला है। वह हित साधने वाले और रमण कराने वाले सुवर्ण आदि बहुमूल्य पदार्थों का स्वामी है। वह गुरुता से युक्त इस जगत् अथवा शरीर रूपी पर्वत में निवास करने वाला है। पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां - ये उसके क्रीड़ा करने और कराने वाले दश अश्व हैं। शुभ कर्मों को करने में सहायक होने से ये शुभ्र वर्ण वाले कहे गए हैं। ये सदा मुझे भली प्रकार वहन करते रहें, मेरी जीवनयात्रा में मेरे सहायक बने रहें। जिस परमेश्वर ने मुझे जीवन की आधारभूत ऐसी उत्तम ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां दी हैं, मैं अब स्वयं को और इन इन्द्रियों को उसी के कार्य में नियुक्त करता हूँ।

टि. *बहुतों द्वारा स्तुति किये जाने योग्य के* - **पौरुकुत्स्यस्य**। पुरुकुत्सपुत्रस्य - वे.। सा.। बहु-वज्रादिशस्त्रास्त्रविदो ऽपत्यस्य - दया.। of the son of Purukutsa - W. G.

*सुवर्णधारक के* - **हिरणिनः**। हिरण्यवतः - सा.। हिरण्यादिधनयुक्तस्य - दया.।

*क्रीड़ाएं करने वाले* - **रराणाः**। रममाणाः - वे.। रातेर् दानार्थस्य कर्मणि लिटः कानचि रूपम्। दत्ता इत्यर्थः। सा.। रममाणा ददमाना वा - दया.।

*पर्वत में निवास करने वाले के* - **गैरिक्षितस्य।** गिरिक्षितगोत्रोत्पन्नस्य - सा.। गिरौ पर्वते क्षितं निवसनं यस्य तस्य - दया.। of the race of Girikṣita - G.

*युक्त होता हूँ मैं* - **सश्चे।** सक्तो भवामि - वे.। गच्छेयम् - सा.। सम्बध्नामि - दया.।

**उत त्ये मा मारुताश्वस्य शोणाः क्रत्वामघासो विदथस्य रातौ।**
**सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकम् अर्यो वपुषे नार्चत्।। ९।।**

उत। त्ये। मा। मारुतऽअश्वस्य। शोणाः। क्रत्वाऽमघासः। विदथस्य। रातौ।
सहस्रा। मे। च्यवतानः। ददानः। आनूकम्। अर्यः। वपुषे। न। आर्चत्।। ९।।

*और वे मुझे (वहन करते हैं), मरुतों के बल वाले के, रक्तवर्ण अश्व,*
*(उत्तम) कर्म के कारण पूजे जाने वाले, ज्ञानगोष्ठी के दान में (दिये हुए)।*
*सहस्रों धनों को मेरे लिये बरसाता हुआ, (और) प्रदान करता हुआ,*
*अनुकूलता से, न देने वाले की शोभा के लिये, नहीं सत्कृत करता है।। ९।।*

मरुतों के बल वाले परमेश्वर के, उत्तम कर्मों को करने से पूजा के योग्य, ज्ञान आदि में विशिष्टता के कारण प्रदान किये हुए वे ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय रूपी अश्व मेरे सभी उत्तम कार्यों का सम्पादन करते हैं। वह जगदीश्वर मेरे लिये अनुकूलता के साथ असंख्य धनों की वर्षा करता है और उन्हें मुझे प्रदान करता है। परन्तु वह प्रभु दूसरों को न देने वाले और सब-कुछ अपने पास ही रख लेने वाले कंजूस मनुष्य के शरीर की शोभा के लिये उन्हें कभी प्रदान नहीं करता।

टि. *मरुतों के बल वाले के* - **मारुताश्वस्य।** मारुताश्वस्य राज्ञः - वे.। मरुत्सदृशवेगाश्ववान् मरुताश्वः, तदपत्यस्य - सा.। मरुताम् इवाश्वानाम् अयम्, तस्य - दया.। of Mārutāśva - G.

*(उत्तम) कर्म के कारण पूजे जाने वाले* - **क्रत्वामघासः।** क्रतुना कर्मणा शीघ्रगमनादिलक्षणेन माहनीया अश्वाः - सा.। क्रतुः प्रज्ञा कर्मैव मघं धनं येषां ते - दया.। powerful - G.

*ज्ञानगोष्ठी के दान में* - **विदथस्य रातौ।** विदथस्यैतन्नामकस्य राज्ञः रातौ दाने - सा.। लब्धुं योग्यस्य दाने - दया.। the donation of Vidatha - W. bestowed as sacrificial guerdon - G.

*बरसाता हुआ* - **च्यवतानः।** च्यावयन् - सा.। दया.। kind Cyavatāna - G.

*अनुकूलता से* - **आनुकम्।** आभरणम् - सा.। आनुकूल्यम् - दया.। abundantly - G.

*न देने वाले की शोभा के लिये* - **अर्यः वपुषे।** पूज्यस्य मे। चतुर्थ्यर्थे षष्ठी। पूज्याय मह्यम्। वपुषे स्वशरीरालङ्काराय। सा.। अर्यः स्वामी, वपुषे सुरूपाय शरीराय - दया.। for adornment - G.

*नहीं सत्कृत करता है* - **न अर्चत्।** प्रायच्छत्। नेति चार्थे। सा.। न निषेधे। अर्चत् सत्कुर्यात्। दया.। bestowed - G.

**उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः।**
**मह्ना रायः संवरणस्य ऋषेर् व्रजं न गावः प्रयता अपि ग्मन्।। १०।। २।।**

उत। त्ये। मा। ध्वन्यस्य। जुष्टाः। लक्ष्मण्यस्य। सुऽरुचः। यतानाः।
मह्ना। रायः। सम्ऽवरणस्य। ऋषेः। व्रजम्। न। गावः। प्रऽयताः। अपि। ग्मन्।। १०।।

*और वे मुझे (वहन करते हैं), स्तुतियोग्य के, सेवन किये हुए,*

*शुभ लक्षणों वाले के, शोभन दीप्तियों वाले के, यत्नवान् (अश्व)।*
*महिमा के साथ धन (प्रवेश करते हैं घर में), वेदरक्षक मन्त्रद्रष्टा के,*
*बाड़े में जिस प्रकार गौएं, नियन्त्रण में रखी हुई प्रवेश करती हैं।। १०।।*

वेदमन्त्रों से स्तुतिगान किये जाने वाले, शुभ लक्षणों वाले, सुन्दर दीप्तियों वाले उस परमेश्वर के वे निरन्तर सेवन किये जाने वाले, सदा अपने कार्यों में प्रयत्नशील ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय रूपी अश्व मेरे कार्यों को निरन्तर साधते रहते हैं। और उस प्रभु के द्वारा दिये जाने वाले बाह्य और आभ्यन्तर धन वेदों की रक्षा करने वाले मुझ मन्त्रार्थद्रष्टा को उसकी महिमाओं के साथ इस प्रकार प्राप्त होते हैं, जिस प्रकार सब ओर से घेरकर वश में की हुई गौएं गोवाट में प्रवेश करती हैं।

टि. *स्तुतियोग्य के* - **ध्वन्यस्य।** ध्वन्यनामकस्य - सा.। ध्वनिषु कुशलस्य - दया.। by Dhvanya - W. G.

*शुभ लक्षणों वाले के* - **लक्ष्मण्यस्य।** लक्षणवतः - वे.। लक्ष्मणपुत्रस्य राज्ञः सम्बन्धिनो ऽश्वाः - सा.। सुलक्षणेषु भवस्य - दया.। (by) son of lakṣmaṇa - W. G.

*शोभन दीप्तियों वाले के* - **सुरुचः।** शोभनदीप्तयः - वे.। सा.। सुष्ठुप्रीतिमत्यः - दया.।

*यत्नवान्* - **यतानाः।** यतमानाः - वे.। वहमानाय यतमानाः - सा.। active - G.

*महिमा के साथ धन* - **मह्ना रायः।** धनस्य महत्त्वेन हेतुना - वे.। मह्ना महत्त्वेन युक्ता रायः - सा.। महत्त्वेन धनस्य - दया.। the riches endowed with greatness - W. with magnitude of riches - G.

*वेदरक्षक मन्त्रद्रष्टा के* - **संवरणस्य ऋषेः।** स्वीकृतस्य मन्त्रार्थविदः - दया.।

## सूक्त ३४

ऋषिः - प्राजापत्यः संवरणः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - १-८ जगती, ९ त्रिष्टुप्। नवर्चं सूक्तम्।

**अजा॑तशत्रुम् अ॒जरा॒ स्व॑र्व॒त्यनु॑ स्व॒धामि॑ता द॒स्मम् ई॑यते।**
**सु॒नोत॑न॒ पच॑त॒ ब्रह्म॑वाहसे पुरु॒ष्टु॒ताय॑ प्र॒तरं॑ दधातन।। १।।**

अजा॑तऽशत्रुम्। अ॒जरा॑। स्व॑ःऽवती। अनु॑। स्व॒धा। अमि॑ता। द॒स्मम्। ई॒य॒ते॒।
सु॒नोत॑न। पच॑त। ब्रह्म॑ऽवाहसे। पु॒रु॒ऽस्तु॒ताय॑। प्र॒ऽत॒रम्। द॒धा॒त॒न॒।। १।।

*उत्पन्न न हुए शातयिता वाले को, जरारहित, सुखों वाली,*
*अनुक्रम से स्वधारकशक्ति अपरिमित, हिंस्रहिंसक को प्राप्त होती है।*
*सवन करो तुम (सोम का), पकाओ (हव्य को), दिव्यवाणीप्रापक के लिये,*
*बहुतों से स्तुति किये जाने वाले के लिये, खूब प्रदान करो तुम (उसे)।। १।।*

वह परमेश्वर सब हिंसकों की हिंसा कर डालने वाला है, परन्तु उसकी हिंसा करने वाला आज तक जगत् में कोई भी उत्पन्न नहीं हुआ। कभी जीर्ण न होने वाली, सुख, दिव्यता आदि से युक्त, अपरिमेय स्वधारणाशक्ति उसे स्वयं ही प्राप्त हो रही है। हे मनुष्यो! वह जगदीश दिव्य वेदवाणी को प्राप्त कराने वाला और असंख्य प्राणियों के द्वारा स्तुति किया जाने वाला है। उसके लिये तुम

भक्तिरसरूपी सोम का सवन करो और उसे तुम हव्य आदि सर्वस्व समर्पित करो।

टि. *उत्पन्न न हुए शातयिता वाले को* - **अजातशत्रुम्।** अविद्यमानशत्रुम् - वे.। अनुत्पन्ना शातयितारो यस्य तम् - सा.। दया.। whose adversaries are unborn - W. G. Fra.

*सुखों वाली* - **स्वर्वती।** सुखवती महती - वे.। स्वरणवती - सा.। सुखवती - दया.। heaven-conferring - W. the heavenly - G.

*स्वधारकशक्ति* - **स्वधा।** हविर्लक्षणम् अन्नम् - वे.। अन्नं हविः - सा.। या स्वं दधाति सा - दया.। (sacrificial) food - W. food of gods - G. Waters of the sun-World - Fra.

*हिंस्रहिंसक को* - **दस्मम्।** दर्शनीयम् - वे.। शत्रूणाम् उपक्षपयितारम् - सा.। दुष्टोपक्षेतारम् - दया.। to the tamer (of enemies) - W. to the doer of wondrous deeds - G. Fra.

*दिव्यवाणीप्रापक के लिये* - **ब्रह्मवाहसे।** स्तोत्रं यस्य वाहकं तस्मै - वे.। ब्रह्मणः परिवृढस्य स्तोत्रस्य वाहकाय - सा.। धनप्रापकाय - दया.। to him who is the accepter of prayer - W. G. conveyer of the Divine Word - Fra.

*खूब* - **प्रतरम्।** प्रकर्षेण - वे.। प्रकृष्टतरम् - सा.। प्रतरन्ति दुःखं येन तम् - दया.। diligently - W. with special zeal - G.

**आ यः सोमे॑न ज॒ठर॒म् अपि॑प्र॒ताम॑न्दत म॒घवा॒ मध्वो॒ अन्ध॑सः।**
**यद् ईं॑ मृ॒गाय॒ हन्त॑वे म॒हाव॑धः स॒हस्र॑भृष्टिम् उ॒शना॑ व॒धं यम॑त्।। २।।**

आ। यः। सोमे॑न। ज॒ठर॑म्। अपि॑प्रत। अम॑न्दत। म॒घऽवा॑। मध्वः॑। अन्ध॑सः।
यत्। ईम्। मृ॒गाय॑। हन्त॑वे। म॒हाऽव॑धः। स॒हस्र॑ऽभृष्टिम्। उ॒शना॑। व॒धम्। यम॑त्।। २।।

*सब ओर से जो सोम से, उदर को पूर लेता है,*
*हर्षित हो जाता है धनदाता, माधुर्ययुक्त अन्न से।*
*जब यह हिंस्रजन्तु के हनन के लिये, महास्त्रधारक,*
*सहस्र धाराओं वाले को, इच्छुक, अस्त्र को उठाता है।। २।।*

सभी सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली दुष्ट आसुरी शक्ति वन्य जीवों की हिंसा करने वाले सिंह आदि हिंस्रजन्तु के समान है। उससे दो-दो हाथ करने की इच्छा वाला, उसे मौत के घाट उतार देने के लिये महास्त्रधारी वह परमेश्वर असंख्य धाराओं वाली अपनी अभेद्य न्यायव्यवस्था को अपने हाथ में लेता है। परन्तु इससे पूर्व वह पवित्रधनदाता अपने उपासकों के द्वारा समर्पित भक्तिरस रूपी सोम का जी भरकर पान करता है और उनके हव्य आदि समर्पणों को स्वीकार करता है। इसी से सम्बल पाकर वह आसुरी शक्ति को समूल नष्ट कर देता है।

टि. *सब ओर से पूर लेता है* - **आ अपिप्रत।** आ अपूरयत् - वे.। सर्वतो ऽपूरयत् - सा.।

*हिंस्रजन्तु के हनन के लिये* - **मृगाय हन्तवे।** मृगासुरस्य हननाय - वे.। एतन्नामकायासुराय हन्तुम् - सा.। मृगं हन्तुम् - दया.। to slay Mṛga - W. to slay the monstrous beast - G. Fra.

*महास्त्रधारक* - **महावधः।** महाप्रहरणः - वे.। महावज्रः - सा.। महान् वधो नाशनं येन (सः) - दया.। destructive weapon - W. mighty weapon - G.

इच्छुक - **उशना।** उशना - वे.। कामयमानः - सा.। दया.।Uśanā - G. Fra.

*अस्त्र को उठाता है* - **वधं यमत्।** वज्रम् उदयच्छत् -वे.। सा.।has lifted up - W. gave him the weapon - G. Fra.

**यो अ॑स्मै घ्रं॒स उ॒त वा॒ य ऊध॑नि॒ सोम॑ सु॒नोति॒ भव॑ति द्यु॒माँ अह॑।**
**अपा॑प श॒क्रस् त॑त॒नुष्टि॑म् ऊहति त॒नूशु॑भ्रं म॒घवा॒ यः क॑वास॒खः।। ३।।**

यः। अ॒स्मै॒। घ्रं॒से। उ॒त। वा॒। यः। ऊध॑नि। सोम॑म्। सु॒नोति॑। भव॑ति। द्यु॒ऽमान्। अह॑।
अप॑ऽअप। श॒क्रः। त॒त॒नुष्टि॑म्। ऊ॒ह॒ति॒। त॒नूऽशु॑भ्रम्। म॒घऽवा॑। यः। क॒व॒ऽस॒खः।। ३।।

*जो इसके लिये दिन में, और जो रात्रि में,*
*सोम का सवन करता है, हो जाता है वह द्युतिमान् निश्चय से।*
*परे ही परे इन्द्र, आडम्बर के वितान के इच्छुक को हटा देता है,*
*शरीर को सजाने वाले को, धनदाता, जो है क्रान्तदर्शियों का सखा।। ३।।*

जो मनुष्य दिन में और रात्रि में अर्थात् हर समय इस परमैश्वर्यवान् परमात्मा के लिये अपने भक्तिरस रूपी सोम का सवन करता रहता है, अपनी भक्ति के रस से उसे आनन्दित करता रहता है, वह निश्चय से तेजस्वी हो जाता है। इसके विपरीत जो मनुष्य बाह्य आडम्बर और झूठे दिखावे में विश्वास रखता है और जो शरीर की सजावट में ही अपने समय को नष्ट करता रहता है, उसे क्रान्तदर्शी ज्ञानियों का सखा वह धनदाता परमेश्वर अपने से परे से भी परे कर देता है।

टि. *जो दिन में और जो रात्रि में* - **यः घ्रंसे उत वा यः ऊधनि।** घ्रंस इत्यहर्नाम। ग्रस्यन्ते ऽस्मिन् रसाः। स्नेहानुप्रदानसामान्याद् रात्रिर् अप्यूध उच्यते। या. (नि. ६.१९)। सा.। यः अहनि यो वा रात्रौ - वे.। उद्धततरं भवत्युन्नद्धम् इति वोधो रात्रिः - सा.। घ्रंसे दिने। घ्रंस इत्यहर्नाम (निघ. १.९)। ऊधनि उषःसमये - दया.।by day or by night - W. in sunshine or in cloud and rain - G. in the heat or in the rain - Fra.

*द्युतिमान् निश्चय से* - **द्युमान् अह।** द्युतिमान् एव - वे.। द्युमान् दीप्तिमान्। अहेति विनिग्रहार्थीयः। सा.।undoubtedly becomes illustrious - W. G. becomes resplendent - Fra.

*परे ही परे हटा देता है* - **अप अप ऊहति।** अपोहति - सा.।disregards - W. advanceth more and more - G. removes away - Fra.

*आडम्बर के वितान के इच्छुक को* - **ततनुष्टिम्।** तितनिषुं धर्मसन्तानाद् अपेतम् - या. (तत्रैव)। ततस्य धर्मसन्तानस्य दाहकं धर्मसन्तानाद् अपेतम् - वे.। ततं धर्मसन्ततिं नुदति वष्टि कामयते कामान् इति ततनुष्टिः। तम्। सा.। विस्तारम् - दया.।who is proud of his descendants - W. progeny - G. his conditioning - Fra.

*शरीर को सजाने वाले को* - **तनूशुभ्रम्।** अलङ्करिष्णुम् अयज्वानम् - या. (तत्रैव)। तनूनां शोभयितारम् अलङ्करिष्णुम् - वे.। तनू शुभ्रा शोभनीयालङ्कारादिभिर् यस्य तम् - सा.। दया.।vain of his person - W. beauteous - G. luminous in himself - Fra.

*क्रान्तदर्शियों का सखा* - **कवासखः।** यः कुत्सितः सखा न यजते तम् इति - वे.।

कुत्सितपुरुषसहायस् तम् - सा.। कविः सखा यस्य - दया.। the friend of the base - W. the sage's friend - G. Fra.

**यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते।**
**वेतीद् वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषाद् ईषते वस्व आकरः।। ४।।**

यस्य। अवधीत्। पितरम्। यस्य। मातरम्। यस्य। शक्रः। भ्रातरम्। न। अतः। ईषते।
वेति। इत्। ऊँ इति। अस्य। प्रऽयता। यतम्ऽकरः। न। किल्बिषात्। ईषते। वस्वः। आऽकरः।। ४।।

*जिसके वध करता है पिता का (पापी का), जिसकी माता का,*
*जिसके शक्तिमान् (वध करता है) भ्राता का, नहीं उससे भागता है।*
*स्वीकार ही करता है निश्चय से इसकी उपदाओं को, नियन्त्रणकर्ता,*
*नहीं पापी से भागता है (कभी), वाससाधनों को लाने वाला।। ४।।*

यदि किसी धर्मात्मा मनुष्य का पिता, माता अथवा भ्राता पापी है, दूसरों की हिंसा करने वाला है, तो वह सर्वशक्तिमान् परमेश्दर उसका वध अवश्य कर डालता है। परन्तु वह उस धर्मात्मा मनुष्य का साथ कभी नहीं छोड़ता। सदा उसकी सहायता ही करता है। सबको अपने वश में रखने वाला वह सर्वनियन्ता जगदीश्वर उसके द्वारा समर्पित किये हुए नैवेद्यों को अवश्य स्वीकार करता है। सब प्राणियों के लिये वायु, जल, अन्न, धन आदि वाससाधनों को देने वाला वह सर्वेश्वर पापी से अथवा उसके पाप से डरकर कभी नहीं भागता। उसका तो वह वध ही कर डालता है।

टि. *नहीं उससे भागता है* - **न अतः ईषते।** तस्मात् न पलायते - वे.। अस्माद् अयज्वनः सकाशान् न बिभेति न गच्छति वा - सा.। does not turn away from him - W. G. Fra.

*स्वीकार करता है इसकी उपदाओं को* - **वेति अस्य प्रयता।** कामयते अस्य हवींषि - वे.। अस्य दत्तानि हवींषि कामयते - सा.। दया.। is willing to accept his offerings - W. G. he arouses their exertions - Fra.

*नियन्त्रणकर्ता* - **यतंकरः।** यमनकरः - वे.। सा.। यः प्रयत्नं करोति - दया.। the regulator (of acts) - W. the Avenger - G. the maker of efforts - Fra.

*पापी से* - **किल्बिषात्।** तत्सामीप्याद् अङ्गाङ्गिभावाद् वा किल्बिषशब्दः तत्कर्तृवचनः।। पापात् - दया.। from iniquity - W. from sin - G. Fra.

*वाससाधनों को लाने वाला* - **वस्वः आकरः।** वसूनि वाससाधनानि आकरोति आनयति यः सः।। धनस्य आकरः - वे.। वसुनो धनस्याभिमुख्यकर्ता - सा.। धनस्य समूहः - दया.। the bestower of riches - W. source of riches - G. the distributer of fullness of light - Fra.

**न पञ्चभिर् दशभिर् वष्ट्यारभं**
**नासुन्वता सचते पुष्यता चन।**
**जिनाति वेद् अमुया हन्ति वा धुनिर्**
**आ देवयुं भजति गोमति व्रजे।। ५।। ३।।**

न। पञ्चऽभिः। दशऽभिः। वष्टि। आऽरभम्। न। असुन्वता। सचते। पुष्यता। चन।

जि॒नाति॑। वा॒। इत्। अ॒मुया॑। हन्ति॑। वा॒। धुनिः॑। आ। दे॒व॒ऽयुम्। भ॒जति॒। गोऽम॑ति। व्र॒जे।। ५।।

*नहीं पांच के साथ, (नहीं) दस के साथ, चाहता है कार्यारम्भ को,*

*न सवन न करने वाले के साथ मिलता है, स्वपोषक के साथ भी नहीं।*

*और विजित कर लेता है और उसको मार भी डालता है, कँपा डालने वाला,*

*सब ओर से देवपूजक को, स्थापित कर देता है, गौओं वाले वाट में।। ५।।*

परमेश्वर को अपने कार्यों को साधने के लिये पांच, दस अथवा इससे भी अधिक मनुष्यों की आवश्यकता नहीं है। जो मनुष्य अपने जीवन में आनन्द की निष्पत्ति नहीं करता, जिसका जीवन नीरस है, जो परमेश्वर को अपनी भक्ति के आनन्द से आनन्दित नहीं करता, उसे वह साथी नहीं बनाता। वह अपने को ही पुष्ट करने वाले मनुष्य के साथ भी संगति नहीं करता। अपने तेज से दुष्टों को कँपा डालने वाला वह प्रभु अपने लिये ही जीने वाले ऐसे मनुष्य को पराभूत करके मार डालता है। इसके विपरीत जो मनुष्य उस परमदेव की पूजा करता है और विद्वानों का आदर-सत्कार करता है, उसे वह गौ आदि पशु और जल प्रकाश आदि सुखसाधनों से मालामाल कर देता है।

टि. *पांच के साथ दस के साथ* - **पञ्चभिः दशभिः।** पञ्चभिः दशभिः पञ्चदशभिर् वा कर्मभिः - वे.। पञ्चभिर् दशभिर् वा सहायैः। यद्वा। पञ्चभिर् दशभिर् वा यज्ञाद् अन्यैर् उपायैः। सा.। पञ्चभिर् इन्द्रियैर् दशभिः प्राणैः - दया.।

*नहीं चाहता है कार्यारम्भ को* - **न वष्टि आरभम्।** पुरुषम् आरब्धुं न इच्छति - वे.। आरम्भं शत्रुहननाय आलम्बनं न वष्टि। साहाय्यं नापेक्षत इत्यर्थः। यद्वा। उद्योगं कर्तुं न कामयते। सा.। न कामयते आरब्धुम् - दया.। He desires not (associatioh in) enterprises - W. he seeks no enterprise to aid - G. He does not seek alliance - Fra.

*स्वपोषक के साथ भी नहीं* - **पुष्यता चन।** पुष्टेनापि न असुन्वता सङ्गतो भवति - वे.। पुष्यता चन बन्ध्वादीन् अपोषयतापि - सा.। पुष्टिम् आचरता अपि - दया.। and cherishes not (his dependants) - W. though prospering well - G. who never provide nourishment - Fra.

*और विजित कर लेता है* - **जिनाति वा।** हिनस्ति वा - वे.। वाशब्दश् चार्थे। जिनाति च। बाधते। सा.। अभिभवति - दया.। punishes - W. conquers - G. Fra.

*उसको* - **अमुया।** अमुम् - वे.। अमुम् अयष्टारम् - सा.।

*कँपा डालने वाला* - **धुनिः।** कम्पयिता शत्रूणाम् - वे.। सा.। terrifier - W. shaker - G.

*स्थापित कर देता है* - **भजति।** प्रवेशयति - वे.। योजयति - सा.। places - W. gives - G.

**वि॒त्व॒क्ष॑णः॒ समृ॑तौ च॒क्रमा॑स॒जो ऽसु॑न्वतो॒ विषु॑णः सु॒न्व॒तो वृ॒धः।**
**इन्द्रो॒ विश्व॑स्य दमि॒ता वि॒भीष॑णो यथाव॒शं न॑यति॒ दास॒म् आर्यः॑।। ६।।**

वि॒ऽत्व॒क्ष॑णः। सम्ऽऋ॑तौ। च॒क्रम्ऽआ॒स॒जः। असु॑न्वतः। विषु॑णः। सु॒न्व॒तः। वृ॒धः।
इन्द्रः॑। विश्व॑स्य। द॒मि॒ता। वि॒ऽभीष॑णः। य॒था॒ऽव॒शम्। न॒यति॒। दास॑म्। आर्यः॑।। ६।।

*विशेषतः छा जाने जाने वाला (शत्रु पर) युद्ध में, चक्का जाम कर देने वाला,*

*सवन न करने वाले को परे रखने वाला, सवन करने वाले का वर्धक।*

*इन्द्र सब को दान्त बनाने वाला है, भय उत्पन्न करने वाला (शत्रुओं को),*
*अपनी इच्छानुसार चलाता है, दूसरों की हिंसा करने वाले को, स्वामी।। ६।।*

वह परमेश्वर जगत् में चलने वाले देवासुरसंग्राम में आसुरी शक्तियों पर हावी हो जाता है। वह आसुरी शक्तियों के आगे बढ़ते हुए कदमों को रोक देता है। जो मनुष्य उसका ध्यान नहीं करते, अपनी भक्ति के रस से उसे आनन्दित नहीं करते, वह उनको अपने से दूर कर देता है। इसके विपरीत जो मनुष्य उसका ध्यान करते हैं, उसे अपने भक्तिरस से आनन्दित करते है, उनकी वह सब प्रकार से वृद्धि करता है। वह ऐश्वर्यवान् परमात्मा सब को शिक्षित करने वाला और नियन्त्रण में रखने वाला है। वह दुष्टों के हृदयों में भय उत्पन्न करने वाला है। सब का स्वामी वह प्रभु दुष्टों को कठपुतलियों की तरह अपनी इच्छानुसार चलाता और घुमाता है।

टि. *विशेषतः छा जाने वाला* - **वित्वक्षणः**। विविधम् असाधूनां तनूकरणकारी - वे.। विशेषेण तनूकर्ता शत्रूणाम् - सा.। विशेषेण दुःखस्य विच्छेत्ता - दया.। thinning his enemies - W. exceeding strong - G. skillful - Fra.

*चक्का जाम कर देने वाला* - **चक्रमासजः**। आयुधस्य आसक्ता - वे.। रथचक्रस्यासञ्जयिता - सा.। accelerating the wheels (of his car) - W. he stays the chariot wheel - G. Fra.

*परे रखने वाला* - **विषुणः**। पराङ्मुखः - वे.। सा.। turns away from him - W.

*दान्त बनाने वाला* - **दमिता**। दमयिता - वे.। शिक्षयिता - सा.। subduer - W. tamer - G.

*अपनी इच्छानुसार चलाता है* - **यथावशं नयति**। आत्मीयानुगुणं करोति - वे.। यथेच्छं नयति स्ववशम् - सा.। conducts (the Dāsa) at his will - W. leads away at his will - G. Fra.

**सम् ईं पणेर् अजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु।**
**दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीम् अचुक्रुधत्।। ७।।**

सम्। ईम्। पणेः। अजति। भोजनम्। मुषे। वि। दाशुषे। भजति। सूनरम्। वसु।
दुःऽगे। चन। ध्रियते। विश्वः। आ। पुरु। जनः। यः। अस्य। तविषीम्। अचुक्रुधत्।। ७।।

*सम्यक् वह पणि से, जाता है भोजन को छीनने के लिये,*
*विविध प्रकार से हविदाता को, प्रदान करता है वह सुन्दर धन।*
*दुर्ग में भी नहीं जीवित रहता है प्रत्येक, सर्वतः महान् में,*
*मनुष्य जो इसकी बलवती शक्ति को, क्रोधित कर देता है।। ७।।*

जिस प्रकार कोई क्षत्रिय किसी लालची लुटेरे के द्वारा अपने बाड़े में बन्द की हुई, दूध, दही, नवनीत, घृत आदि भोज्य पदार्थों को देने वाली गौओं को छीनने के लिये उसपर आक्रमण करता है, उसी प्रकार वह परमेश्वर जल, प्रकाश आदि पालन के साधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति से उन्हें बलपूर्वक छीनने के लिये उसपर आक्रमण करता है। वह उन सुन्दर वासक साधनों को उससे छीनकर यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करने वाले मनुष्यों को दे देता है। जो कुमार्गगामी मनुष्य अपने दुष्कर्मों से उस प्रभु की बलवती शक्ति को क्रोधित कर देता है, ऐसा प्रत्येक जन बड़े भारी किले में सर्वतः शरण ले लेने पर भी जीवित नहीं रह सकता।

टि. *भोजन को* – **भोजनम्।** भुज पालनाभ्यवहारयोर् इत्येतस्माद् धातोर् ल्युट्प्रत्ययान्तं रूपम् इदम्।। पशून् – वे.। धनम् अन्नं वा – सा.। पालनम् अन्नादिकं वा – दया.। the wealth - W.

*सुन्दर धन* – **सूनरं वसु।** शोभननृयुक्तं धनम् – वे.। शोभनमनुष्यं धनम् – सा.। शोभना नरा यस्मिंस् तद् धनम् – दया.। that are prized by man upon the donor - W. excellent wealth - G. the joyous wealth - Fra.

*दुर्ग में भी नहीं जीवित रहता है सर्वतः महान् में* – **दुर्गे चन ध्रियते आ पुरु।** पुरुणि दुर्गे आ ध्रियते – वे.। पुरु पुरुणि दुर्गे चन दुःखेन गन्तव्य आपद्यपि आ ध्रियते आ स्थास्यते – सा.। is involved in great difficulty - W. not even in wide stronghold may stand firm - G. Fra.

*बलवती शक्ति को क्रोधित कर देता है* – **तविषीम् अचुक्रुधत्।** बलं क्रोधयति – वे.। who provokes the might of Indra to wrath - W.

**सं यज् जनौ सुधनौ विश्वशर्धसाव् अवेद् इन्द्रो मघवा गोषु शुभ्रिषु।**
**युजं ह्य१न्यम् अकृत प्रवेपन्युद् ईं गव्यं सृजते सत्वभिर् धुनिः।। ८।।**

सम्। यत्। जनौ। सुऽधनौ। विश्वऽशर्धसौ। अवेत्। इन्द्रः। मघऽवा। गोषु शुभ्रिषु।
युजम्। हि। अन्यम्। अकृत। प्रऽवेपनी। उत्। ईम्। गव्यम्। सृजते। सत्वऽभिः। धुनिः।। ८।।

*सम्यक् जब दो जनों को, बहुत धनों वालों को, सब बलों वालों को,*
*जान लेता है इन्द्र, पवित्र धनों वाला, गौओं के शोभनों के निमित्त।*
*जोड़ीदार निश्चय से एक को बना लेता है, प्रकर्ष से शत्रुकम्पयिता,*
*उत्सृष्ट उसके लिये गोसमूह को कर देता है, मनुष्यों के साथ, कम्पयिता।। ८।।*

जब परमेश्वर यह जान लेता है, कि कोई दो मनुष्य हैं। दोनों ही बहुत धनों वाले हैं। दोनों ही सब प्रकार के बलों, उत्साहों और शक्तियों से सम्पन्न हैं और दोनों ही गौ आदि उत्तम पशुओं तथा ज्ञान आदि सुखसाधनों के निमित्त संघर्ष कर रहे हैं, परन्तु उनमें से एक तो सब का हित चाहने वाला दैवी वृत्ति वाला है और दूसरा केवल अपना ही पेट भरने वाला आसुरी वृत्ति वाला है, तो दुष्ट हिंसक जनों के हृदयों में भय उत्पन्न करने वाला पवित्रधन देने वाला वह प्रभु उस दैवी वृत्ति वाले मनुष्य को अपना सखा बना लेता है। वह तेजस्वी परमेश्वर अपने उपासक साधु जनों के साथ मिलकर उसे गौ आदि लौकिक तथा ज्ञान आदि अलौकिक धनों को देकर मालामाल कर देता है।

टि. *सब बलों वालों को* – **विश्वशर्धसौ।** परिपूर्णबलौ – वे.। विश्वशर्धसौ व्याप्तबलौ बहूत्साहौ वा – सा.। समप्रबलयुक्तौ – दया.। exerting themselves (against each other) - W. fighting (for beauteous cows) with all their followers - G.

*सम्यक् जान लेता है* – **सम् अवेत्।** जानाति – वे.। संजानाति – सा.। प्राप्नुयात् – दया.। discriminates - W. hath marked - G.

*जोड़ीदार एक को बना लेता है* – **युजम् अन्यम् अकृत।** तयोः अन्यं यजमानम् आत्मना युक्तं कृणोति – वे.। अन्यं यष्टारं युजं सहायं कृतवान् – सा.। takes one of them as his associate - W. makes one as his close ally - G.

*शत्रुकम्पयिता* – **प्रवेपनी**। शत्रूणां प्रवेपनवान् – सा.। who stirs all things - G.

*मनुष्यों के साथ* – **सत्वभिः**। बलैः – वे.। मरुद्भिः सह – सा.। पदार्थैः – दया.। with the Maruts - W. with his Heroes - G.

**सहस्रसाम् आग्निवेशिं गृणीषे शत्रिम् अग्न उपमां केतुम् अर्यः।**
**तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन् क्षत्रम् अमवत् त्वेषम् अस्तु।। ९।। ४।।**

सहस्रसाम्। आग्निऽवेशिम्। गृणीषे। शत्रिम्। अग्ने। उपऽमाम्। केतुम्। अर्यः।
तस्मै। आपः। सम्ऽयतः। पीपयन्त। तस्मिन्। क्षत्रम्। अमऽवत्। त्वेषम्। अस्तु।। ९।।

*हजारों देने वाले की, यज्ञगृह में यजन करने वाले की, स्तुति करता हूँ मैं,*
*दुष्टविच्छेदक की, हे अग्रणी!, उपमानभूत की, ज्ञापक की, स्वामी।*
*उसके लिये जल, सम्यक् गमन करते हुए, वृद्धि को लाने वाले होवें,*
*उसके अन्दर क्षत्रियत्व, बल से युक्त, (और) तेज होवे।। ९।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले चलने वाले इन्द्र! मैं उपासक हजारों की संख्या में धनों को बाँट देने वाले, यज्ञगृह में सदा यज्ञ का सम्पादन करने वाले, दुष्ट हिंसक जनों को काट डालने वाले, अन्य मनुष्यों के लिये आदर्शभूत, अपने प्रकाश से दूसरों को मार्ग दिखाने वाले महामानव की स्तुति करता हूँ। जल आदि सुखसाधन समूहरूप में प्राप्त होकर उसकी सब ओर से वृद्धि करें। बल से युक्त क्षात्रधर्म और तेज उसके अन्दर निवास करे।

टि. *हजारों देने वाले की* – **सहस्रसाम्**। सहस्रस्य दातारम् – वे.। अमितधनप्रदम् – सा.। यः सहस्रान् असंख्यातान् पदार्थान् सनति विभजति तम् – दया.। the bestower of thousands - W.

*यज्ञगृह में यजन करने वाले की* – **आग्निवेशिम्**। यजमानानां सम्भक्तारम् – वे.। अग्निवेशि-सुतम् – सा.। यो ऽग्निं प्रवेशयति तम् – दया.। the son of Agniveśa - W.

*स्तुति करता हूँ मैं* – **गृणीषे**। वदसि – वे.। गृणे स्तौमि – सा.। स्तौषि – दया.।

*दुष्टविच्छेदक की* – **शत्रिम्**। शत्रूणां शातयितारम् – वे.। एतन्नामकं राजर्षिम् – सा.। दुःख-विच्छेदकम् – दया.।

*हे अग्रणी* – **अग्ने**। अङ्गनादिगुणविशिष्टेन्द्र – सा.। पावक इव – दया.।

*सम्यक् गमन करते हुए* – **संयतः**। सङ्गताः – वे.। सम्यक् गच्छन्त्यः – सा.। संयमयुक्ताः – दया.। collected - W. G.

*क्षत्रयित्व, बल से युक्त* – **क्षत्रम् अमवत्**। बलं सहाययुक्तम् – वे.। क्षत्रं धनं अमवद् बल-सहितम् – सा.। धनं राज्यं वा गृहेण तुल्यम् – दया.। powerful dominion - G.

## सूक्त ३५

ऋषिः – प्रभूवसुर् आङ्गिरसः। देवता – इन्द्रः। छन्दः – १-७ अनुष्टुप्, ८ पङ्क्तिः। अष्टर्चं सूक्तम्।

**यस् ते साधिष्ठो ऽवस इन्द्र क्रतुष् टम् आ भर।**

**अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरम्।। १।।**

यः। ते। साधिष्ठः। अवसे। इन्द्र। क्रतुः। तम्। आ। भर।
अस्मभ्यम्। चर्षणिऽसहम्। सस्निम्। वाजेषु। दुस्तरम्।। १।।

*जो तेरा अतिशय कार्यसाधक, वृद्धि के लिये,*
*हे इन्द्र प्रज्ञान (है), उसको इस ओर ला तू।*
*हमारे लिये, मनुष्यों को अधीन करने वाले को,*
*पवित्र को, संघर्षों में कठिनता से तरे जाने वाले को।। १।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! जो अतिशय कार्यसाधक तेरा प्रज्ञान है, कर्मकौशल है, जिसे जीवन के संघर्षों और प्रतियोगिताओं में विरोधियों के द्वारा जीता नहीं जा सकता, इसके विपरीत जो सभी मनुष्यों को जीत लेने में समर्थ होता है और जो अत्यन्त पवित्र है, उसे तू हमारी अभिवृद्धि, संरक्षण आदि के लिये हमें प्राप्त करा।

टि. *अतिशय कार्यसाधक* - **साधिष्ठः**। साधयितृतमः - वे.। अतिशयेन साधकः - सा.। अतिशयेन साधुः - दया.। perfect - W. most effectual - G.

*प्रज्ञान* - **क्रतुः**। कर्म - वे.। कर्म प्रज्ञा वा - सा.। प्रज्ञा - दया.। act - W. power - G.

*मनुष्यों को अधीन करने वाले को* - **चर्षणीसहम्**। मनुष्याणाम् अभिभवितारम् - वे.। सा.। दया.। subduer of men - W. which conquers men - G.

*पवित्र को* - **सस्निम्**। सम्भजनशीलम् - वे.। संस्नातं शुद्धम् - सा.। ब्रह्मचर्यव्रतविद्याग्रहणाभ्यां पवित्रम् - दया.। holy - W. which wins the spoil - G.

**यद् इन्द्र ते चतस्रो यच् छूर सन्ति तिस्रः।**
**यद् वा पञ्च क्षितीनाम् अवस् तत् सु न आ भर।। २।।**

यत्। इन्द्र। ते। चतस्रः। यत्। शूर। सन्ति। तिस्रः।
यत्। वा। पञ्च। क्षितीनाम्। अवः। तत्। सु। नः। आ। भर।। २।।

*जो, हे इन्द्र!, तेरी चार (रक्षाएं) हैं,*
*जो, हे हिंस्रहिंसक!, हैं तीन (रक्षाएं तेरी)।*
*और जो पांच (हैं), प्रजाओं के लिये,*
*रक्षाओं को उनको, सुष्ठु हमारे पास ले आ तू।। २।।*

हे परमैश्वर्यवान् जगदीश्वर! हमारे पालन के लिये चारों दिशाओं में जो तेरी रक्षाएं हैं, उनसे तू हमारी रक्षा कर। हे हिंसकों की हिंसा करने वाले प्रभो! पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक इन तीनों लोकों के लिये जो तेरी रक्षाएं हैं, उनसे हमारी रक्षा कर। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद इन पाँच वर्गों वाली प्रजाओं के लिये जो तेरी रक्षाएं हैं, उन सब से तू भली प्रकार हमारी रक्षा कर।

टि. चार (रक्षाएं) - **चतस्रः**। चतस्रः रक्षाः - वे.। ऊतयश् चतस्रश् चतुर्षु वर्णेषु संश्रिताः सन्ति - सा.। सामदामदण्डभेदाख्या वृत्तयः - दया.।

*तीन (रक्षाएं तेरी)* - **तिस्रः**। त्रिषु लोकेषु वर्तमानाः - सा.। सुशिक्षिता सभा सेना प्रजा (चेति

तिस्रः) - दया.।

*पाँच (हैं) प्रजाओं के लिये* - **पञ्च क्षितीनाम्**। पञ्च स्तोतॄणाम् अर्थाय - वे.। पञ्चजनसम्बन्धिन्य ऊतयः सन्ति - सा.। भूम्यादीनि पञ्च तत्त्वानि - दया.। accorded to the five (classes) of men - W. of the five tribes of men - G.

*रक्षाओं को उनको* - **अवः तत्**। वचनव्यत्ययः। तानि अवांसि।। सर्वास् ता रक्षाः - वे.। तत् सर्वं रक्षणम् - सा.। रक्षणादिकं तत् - दया। all the help - G.

**आ ते ऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे।**
**वृषजूतिर् हि जज्ञिष आभूभिर् इन्द्र तुर्वणिः।। ३।।**

आ। ते। अवः। वरेण्यम्। वृषन्ऽतमस्य। हूमहे।
वृषऽजूतिः। हि। जज्ञिषे। आऽभूभिः। इन्द्र। तुर्वणिः।। ३।।

*सब ओर से तेरे रक्षण की, वरणीय की,*
*सुखवर्षकों में सर्वोत्तम की, कामना करते हैं हम।*
*वृष के समान वेग वाला, चूँकि प्रादुर्भूत होता है तू,*
*सहायक शक्तियों के साथ, हे इन्द्र!, शत्रुओं का हिंसक।। ३।।*

हे परमेश्वर! तू सुखों की वर्षा करने वालों में सर्वोत्तम है। तू वृषभ के वेग के समान वेग वाला है। तू दुष्ट हिंसक आसुरी शक्तियों का हनन करने वाला है। चूँकि तू अपनी सहायक दैवी शक्तियों के साथ इस जगत् में सर्वत्र व्याप्त है, इसलिये हम उपासक जन तुझसे वरण के योग्य रक्षा, वृद्धि, प्रीति आदि की प्राप्ति की सब ओर से कामना करते हैं।

टि. *सुखवर्षकों में सर्वोत्तम की* - **वृषन्तमस्य**। कामानाम् अतिशयेन वर्षितुः - वे.। फलानां वर्षकतमस्य - सा.। अतिशयेन बलिष्ठस्य - दया.। of the most liberal showerer (of benefits) - W. of thee the mightiest - G.

*सब ओर से कामना करते हैं हम* - **आ हूमहे**। आह्वयामहे - वे.। आह्वयामः - सा.। स्वीकुर्महे - दया.। we invoke - W. hitherward we call - G.

*वृष के समान वेग वाला* - **वृषजूतिः**। वर्षितृवेगः - वे.। वर्षणगमनः - सा.। वृषस्येव जूतिर् वेगो यस्य सः - दया.। the distributer of rain - W. with hero might - G.

*सहायक शक्तियों के साथ* - **आभूभिः**। आभवनशीलैर् मरुद्भिः - वे.। सर्वतो भवद्भिर् व्याप्तैर् मरुद्भिः - सा.। ये विद्याविनये समन्ताद् भवन्ति तैः सह - दया.। (associated) with the present (Maruts) - W. with the Strong - G.

*शत्रुओं का हिंसक* - **तुर्वणिः**। क्षिप्रकारी - वे.। तूर्णवनिर् हिंसकः - सा.। the quick destroyer (of foes) - W. conquering - G.

**वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः।**
**स्वक्षत्रं ते धृषन् मनः सत्राहम् इन्द्र पौंस्यम्।। ४।।**

वृषा। हि। असि। राधसे। जज्ञिषे। वृष्णि। ते। शवः।

स्वऽक्षत्रम्। ते। धृषत्। मनः। सत्राऽहम्। इन्द्र। पौंस्यम्।। ४।।

*सुखवर्षक निश्चय से है तू, ऐश्वर्य के लिये,*
*प्रादुर्भूत होता है तू, सुखवर्षक है तेरा बल।*
*स्वबल से सम्पन्न है, तेरा धर्षणशील मन,*
*एक साथ मार डालने वाला, हे इन्द्र!, पौरुष।। ४।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश्वर! निश्चय से तू अपनी प्रजाओं पर सुखों की वर्षा करने वाला है। तू अपने ऐश्वर्यों को प्रदान करने के लिये इस जगत् में सर्वत्र व्याप्त हो रहा है। तेरा बल भी सब पर सुखों की वर्षा करने वाला है। दुष्टों का संहार कर डालने वाला तेरा धर्षणशील चित्त अपने ही बल से बलशाली है। हे प्रभो! तेरा पौरुष एक साथ असंख्यों को मार डालने में समर्थ है।

टि. *सुखवर्षक* - **वृष्णि**। वर्षणशीलम् - वे.। वर्षितृ - सा.। सुखवर्षकम् - दया.। rains (blessings) - W. mighty - G.

*स्वबल से सम्पन्न* - **स्वक्षत्रम्**। स्वभूतबलम् - वे.। स्वायत्तबलम् - सा.। स्वं राज्यं स्वस्य क्षत्रियकुलं वा - दया.। self-invigorated - W. native power - G.

*एक साथ मार डालने वाला* - **सत्राहम्**। सत्यम् एवाहन्तृ - वे.। संघहन्तृ - सा.। the destroyer of multitudes - W. slays a host - G.

**त्वम् तम् इन्द्र मर्त्यम् अमित्रयन्तम् अद्रिवः।**
**सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस् पते।। ५।। ५।।**

त्वम्। तम्। इन्द्र। मर्त्यम्। अमित्रऽयन्तम्। अद्रिऽवः।
सर्वऽरथा। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। नि। याहि। शवसः। पते।। ५।।

*तू उसके पास, हे इन्द्र!, मरणयोग्य (मनुष्य) के,*
*शत्रु का सा आचरण करने वाले के, हे वज्रधारी।*
*सर्वत्र गति करने वाला, हे सैंकड़ों कर्मों वाले!,*
*निश्चय से जा (मारने के लिये), हे बल के पालक।। ५।।*

हे न्यायरूपी वज्र को अपने हाथों में धारण करने वाले सर्वेश्वर! तू सब स्थानों में गति करने के कारण सर्वव्यापक है। हे असंख्य कर्मों को करने वाले! हे बल की वृद्धि करने वाले प्रभो! तू सज्जनों के साथ शत्रु के समान आचरण करने वाले, सदा उनका अहित चाहने वाले, मृत्यु के योग्य मनुष्य के पास निश्चयपूर्वक जा और उस दुष्ट पापी का वध कर दे।

टि. *शत्रु का सा आचरण करने वाले के (पास)* - **अमित्रयन्तम्**। मनुष्यं शत्रूयन्तम् - वे.। शत्रुत्वम् आचरन्तं शत्रुं वेच्छन्तम् - सा.। शत्रुवद् आचरन्तम् - दया.। who entertains hostility towards thee - W. who shows himself thy foe - G.

*हे वज्रधारी* - **अद्रिवः**। हे वज्रिन् - वे.। वज्रवन् - सा.। wielder of the thunderbolt - W. Caster of the Stone - G.

*सर्वत्र गति करने वाला* - **सर्वरथा**। सर्वरथैः त्वदीयैः - वे.। सर्वत्र व्याप्तेन रथेन - सा.। सर्वे

रथा यानानि यस्य सः - दया.। अपने सब जगह चलने वाले रथ से - सात.। riding in an all-pervading car - W. with all thy chariot's force - G.

**त्वाम् इद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः।**
**उग्रं पूर्वीषु पूर्व्यं हवन्ते वाजसातये।। ६।।**

त्वाम्। इत्। वृत्रहन्ऽतम्। जनासः। वृक्तऽबर्हिषः।
उग्रम्। पूर्वीषु। पूर्व्यम्। हवन्ते। वाजऽसातये।। ६।।

*तुझको ही, हे आवरकहन्ताओं में श्रेष्ठ!,*
*मनुष्य, काट-छाँट कर बिछाई कुशाओं वाले।*
*उग्र को, पूर्व सृष्टियों से भी पूर्ववर्ती को,*
*बुलाते हैं, ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये।। ६।।*

हे सुखसाधनों को आच्छादित करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्तियों का हनन करने वालों में श्रेष्ठ परमेश्वर! यज्ञवेदि पर दर्भासनों को बिछाकर यज्ञादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त याजक जन, दुष्टों के लिये उग्र रूप धारण करने वाले, पूर्वकालीन सृष्टियों से भी पूर्व से वर्तमान तुझ प्रभु को ही ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति के लिये पुकारते हैं।

टि. हे *आवरकहन्ताओं में श्रेष्ठ* - **वृत्रहन्तम**। हे अतिशयेन वृत्रस्य हन्तः - वे.। अतिशयेन वृत्राणां हन्तः - सा.। slayer of Vṛtra - W. Mightiest Vṛtra-slayer - G.

*काट-छाँट कर बिछाई कुशाओं वाले* - **वृक्तबर्हिषः**। छिन्नबर्हिषः - वे.। आच्छादितदर्भाः। प्रवृत्तयज्ञा इत्यर्थः। सा.। with clipped sacred grass - W. G.

*पूर्व सृष्टियों से भी पूर्ववर्ती को* - **पूर्वीषु पूर्व्यम्**। पूर्वीणाम् अपि पूर्वं प्रजानाम् - वे.। पूर्वीषु बह्वीषु प्रजासु मध्ये पूर्व्यं पुरातनं सन्तम् -सा.। foremost among many - W. G.

*ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये* - **वाजसातये**। युद्धार्थम् - वे.। सा.। अन्नादीनां विभागाय वा - दया.। in battle - W. to battle where the spoil is won - G.

**अस्माकम् इन्द्र दुष्टरं पुरोयावानम् आजिषु।**
**सयावानं धनेधने वाजयन्तम् अवा रथम्।। ७।।**

अस्माकम्। इन्द्र। दुस्तरम्। पुरःऽयावानम्। आजिषु।
सऽयावानम्। धनेऽधने। वाजऽयन्तम्। अव। रथम्।। ७।।

*हमारे, हे इन्द्र!, जीतने में कठिन की,*
*आगे आगे चलने वाले की, युद्धों में।*
*सहायों वाले की, प्रत्येक धनप्राप्ति में,*
*ऐश्वर्य की कामना वाले की, रक्षा कर रथ की।। ७।।*

इस मन्त्र में रथ शरीर का प्रतीक है और इन्द्र परमात्मा अथवा आत्मा का। यहाँ परमात्मा अथवा आत्मा से कामना की जा रही है कि हे परमैश्वर्यवान्! यह हमारा शरीर जीवन के सभी संघर्षों में आगे से आगे बढ़कर कार्य करने वाला है। विरोधी शक्तियों के लिये इसे जीत पाना सरल काम नहीं

है। ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां और प्राण लौकिक और अलौकिक धनों की प्राप्ति की प्रत्येक प्रक्रिया में इसके साथ चलने वाले और इसका साथ देने वाले हैं। यह शरीर जीवन में अनेक उद्देश्यों की पूर्ति की कामना वाला है। हे प्रभो! तू हमारे इस शरीर रूपी रथ की सदा रक्षा कर।

टि. *आगे आगे चलने वाले की युद्धों में* - **पुरोयावानम् आजिषु।** सङ्ग्रामेषु पुरो गन्तारम् - वे.। संग्रामेषु पुरतो मिश्रयितारम् - सा.। mingling foremost in combats - W. G.

*सहायों वाले की* - **सयावानम्।** सह गच्छन्तम् - वे.। अनुचरैः सह गन्तारम् - सा.। सेनादिना सह गच्छन्तम् - दया.। followed by attendants - W. that bears its part in every fray - G.

*प्रत्येक धनप्राप्ति में* - **धनेधने।** सर्वेषु धनेषु - सा.। for repeated spoil - W.

*ऐश्वर्य की कामना वाले की* - **वाजयन्तम्।** अन्नम् इच्छन्तम् - वे.। संग्रामं धनं वेच्छन्तम् - सा.। seeking spoil - G.

*रथ की* - **रथम्।** रथं रंहणस्वभावं वा पुत्रम् - सा.। रमणीयं यानम् - दया.।

**अस्माकम् इन्द्रेहि नो रथम् अवा पुरन्ध्या।**
**वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे।। ८।। ६।।**

अस्माकम्। इन्द्र। आ। इहि। नः। रथम्। अव। पुरम्ऽध्या।
वयम्। शविष्ठ। वार्यम्। दिवि। श्रवः। दधीमहि। दिवि। स्तोमम्। मनामहे।।। ८।।

*हमारा (है तू), हे इन्द्र!, आ जा पास हमारे,*
*रथ (हमारे) की रक्षा कर तू, बुद्धि से (सदा ही)।*
*हम, हे सर्वशक्तिमान्!, वरणीय को,*
*दीप्तिमान् (तुझ) में, कीर्त्ति को, स्थापित करते हैं।*
*(तुझ) दीप्तिमान् के निमित्त, स्तोत्र का ज्ञान करते हैं।। ८।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश्वर! तू हमारा है और हम तेरे हैं। तू आकर हमारे हृदयों में वास कर। तू सब प्रकार की विद्याओं को धारण करने वाली उत्तम बुद्धि हमें प्रदान करके हमारे शरीररूपी रथ की सदा रक्षा कर। हे सर्वशक्तिमान्! हम तुझ दीप्तिमान् में उत्तम कीर्ति स्थापित करते हैं, तेरे यश को बढ़ाते हैं, और तुझ दीप्तिमान् के निमित्त स्तोत्रों का मनन, चिन्तन और गान करते हैं।

टि. *बुद्धि से* - **पुरन्ध्या।** प्रज्ञया - वे.। शोभनबुद्ध्या - सा.। पुरंध्या बहुविद्याधरित्र्या प्रज्ञया - दया.। by thy providence - W. with thine intelligence - G.

*हे सर्वशक्तिमान्* - **शविष्ठ।** हे बलवत्तम - वे.। अतिशयेन बलवान् - सा.। दया.।

*दीप्तिमान् (तुझ) में* - **दिवि।** दीप्ते त्वयि - वे.। द्योतमाने त्वयि - सा.। कमनीये राष्ट्रे, प्रशंसनीये राज्ये - दया.। in thee who art divine - W. at the break of day, at dawn - G.

*कीर्त्ति को स्थापित करते हैं* - **श्रवः दधीमहि।** हविः निदधीमहि - वे.। अन्नं कीर्त्तिं वा स्थापयामः - सा.। श्रवणम् अन्नं वा धरेम - दया.। we contemplate all vigour - W. may we attain excellent fame - G.

*स्तोत्र का ज्ञान करते हैं* - **स्तोमम् मनामहे।** स्तोमम् उच्चारयामः - वे.। स्तोत्रं मनामहे करवामह

इत्यर्थः - सा.। सकलशास्त्राध्ययनाध्यापनं विजानीयाम - दया.। we offer praise - W. may we meditate our hymn - G.

## सूक्त ३६

ऋषिः - प्रभूवसुर् आङ्गिरसः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - १-२,४-६ त्रिष्टुप्, ३ जगती। षडृचं सूक्तम्।

**स आ गमद् इन्द्रो यो वसूनां चिकेतद् दातुं दामनो रयीणाम्।**
**धन्वचरो न वंसगस् तृषाणश् चकमानः पिबतु दुग्धम् अंशुम्।। १।।**

सः। आ। गमत्। इन्द्रः। यः। वसूनाम्। चिकेतत्। दातुम्। दामनः। रयीणाम्।
धन्वऽचरः। न। वंसगः। तृषाणः। चकमानः। पिबतु। दुग्धम्। अंशुम्।। १।।

*वह आ जाए (पास हमारे) इन्द्र, जो धनों को,*
*जानता है देना, देने के मन वाला धनों को।*
*मरुस्थल में विचरने वाला, जैसे कमनीयगति वृषभ, प्यासा,*
*कामना करता हुआ (पीने की), पिये सवन किये सोम को।। १।।*

हमेशा अपने धनों को देने की इच्छा वाला वह परमेश्वर, जो धनों को देना भी जानता है, आकर हमारे हृदयों में वास करे। वह हमारे द्वारा दोहन किये हुए भक्तिरसरूपी सोम का, पीने की कामना करता हुआ, इस प्रकार जी भरकर पान करे, जिस प्रकार मरुस्थल में विचरण करने वाला कमनीय गति वाला प्यासा बैल पानी मिलने पर उसे जी भरकर पीता है।

टि. देने के *मन वाला* - **दामनः**। दास्यामीति मन्यते इत्यर्थः - वे.। दामनो दाता दानमना वा - सा.। the donor of wealth - W. from his store of riches - G.

*मरुस्थल में विचरने वाला* - **धन्वचरः**। निरुदके देशे वर्तमानः - वे.। धनुषा सह संचरन् धानुष्कः - सा.। like a warrior - W. who roams the deserts - G.

*कमनीयगति वृषभ* - **वंसगः**। वंसगो वृषभ उच्यते वननीयगमनत्वात् - स्क. (ऋ. १.७.८)। वननीयगमनः - सा.। marching boldly - W. steer - G.

*कामना करता हुआ* - **चकमानः**। कामयमानः - वे.। सा.। desirous (of the draught) - W.

*सवन किये सोम को* - **दुग्धम् अंशुम्**। दुग्धं सोमम् - वे.। अभिषुतं सोमम् - सा.। the effused Soma juice - W. the milked out Soma - G.

**आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत् सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे।**
**अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन् गीर्भिर् मदेम पुरुहूत विश्वे।। २।।**

आ। ते। हनू इति। हरिऽवः। शूर। शिप्रे इति। रुहत्। सोमः। न। पर्वतस्य। पृष्ठे।
अनु। त्वा। राजन्। अर्वतः। न। हिन्वन्। गीःऽभिः। मदेम। पुरुऽहूत। विश्वे।। २।।

*सर्वतः तेरे जबड़ों पर, हे अश्ववान्!, हे शूर!, गालों पर (तेरी),*
*आरोहण करे सोम, जिस प्रकार पर्वत की पीठ पर (आरोहण करता है वह)।*
*तेरे साथ, हे राजन्!, अश्वों को जैसे प्रेरित करता हुआ (अश्वारोह),*

*स्तुतियों से (प्रेरित करते हुए) हर्षित होवें हम, हे बहुतों से स्तुत!, सब के सब।। २।।*

हे ज्ञानरश्मियों वाले परमेश्वर! हे हिंसकों का हनन करने वाले प्रभो! हमारा भक्तिरस रूपी सोम तेरी दाढ़ों और तेरी गालों पर इस प्रकार आरोहण करे, जिस प्रकार सोम का पौधा पर्वत की ढलान पर स्थित होकर उसकी शोभा को बढ़ाता है। अर्थात् हमारा भक्तिरस तेरे आनन्द और तेरी शोभा की पूर्ण रूप से वृद्धि करे। हे सब पर शासन करने वाले!, हे बहुतों से स्तुति किये जाने वाले जगदीश! जिस प्रकार सवार अश्वों का संचालन करते हुए हर्षित और उत्साहित होते हैं, उसी प्रकार हम सब तेरे उपासक भी तुझे अपनी स्तुतियों से प्रेरित करते हुए तेरे साथ हर्ष को प्राप्त करें।

टि. *जबड़ों पर* - हनू। अन्नस्य भक्षितस्य हननसाधने - वे.। हननसाधने। यद्यप्ययं शिप्रावचनस् तथापि पुनः शिप्राभिधानाद् गौणो ऽवगन्तव्यः। सा.। मुखनासिके - दया.। to thy jaws - G.

*गालों पर* - **शिप्रे**। उक्तरूपे संहते वा शिप्रे - सा.। सुशोभिते - दया.। to thy cheeks - G.

*आरोहण करे सोम, जिस प्रकार पर्वत की पीठ पर* - **रुहत् सोमः न पर्वतस्य पृष्ठे**। सोमः आ रोहतु, न पर्वतस्य पृष्ठे वृथा तिष्ठतु - वे.। आरोहतु प्राप्नोतु सोमो ऽस्मद्दत्तः। पर्वतस्य पृष्ठे नारोहति। तत्र न तिष्ठतीत्यर्थः। यद्वा नशब्दः पुरस्तात् प्रयुक्तो ऽप्यत्रोपमार्थीयः। पर्वतस्य पृष्ठ उपरिदेशे सोमो न। सा.। may the Soma rise (to thy cheeks and jaws) like mountain-ridges - G.

*तेरे साथ* - **अनु त्वा**। त्वाम् अनु त्वया सह। तृतीयार्थ इत्यनोः कर्मप्रवचनीयत्वम्। सा.।

*अश्वों को जैसे प्रेरित करता हुआ* - **अर्वतः न हिन्वन्**। यथा अश्वान् युद्धे प्रेरयन् अनुमदति - वे.। अश्वान् इव तृणादिभिर् हिन्वन् हिन्वन्तस् त्वां प्रीणयन्तः सन्तः - सा.। अश्वान् इव गमयन् - दया.। as he who driveth coursers - G.

**च॒क्रं न वृ॒त्तं पु॑रुहूत वेपते॒ मनो॑ भि॒या मे॒ अम॑ते॒र् इद् अ॑द्रिवः।**
**रथा॒द् अधि॑ त्वा जरि॒ता स॑दावृध कु॒विन् नु स्तो॑षन् मघवन् पुरू॒वसुः॑।। ३।।**

च॒क्रम्। न। वृ॒त्तम्। पु॒रु॒ऽहू॒त॒। वे॒प॒ते॒। मनः॑। भि॒या। मे॒। अम॑तेः। इत्। अ॒द्रि॒ऽव॒ः।
रथा॑त्। अधि॑। त्वा॒। ज॒रि॒ता। स॒दा॒ऽवृ॒ध॒। कु॒वित्। नु। स्तो॒ष॒त्। म॒घ॒ऽव॒न्। पु॒रु॒ऽवसुः॑।। ३।।

*पहिये की तरह घूमते हुए की, हे बहुतों से स्तुत!, काँपता है,*
*मन भय से मेरा, बुद्धिहीन का, हे वज्र को धारण करने वाले।*
*रथ के ऊपर (आरूढ़ की) तेरी, स्तोता, हे सदा बढ़ने वाले!,*
*बहुत, निश्चय से, स्तुति करता है, हे धनदाता!, प्रभूत धनों वाला।। ३।।*

हे बहुतों के द्वारा स्तुति किये हुए!, हे न्यायव्यवस्था के स्वामी!, मैं बुद्धिहीन हूँ, अज्ञानी हूँ। इस लिये मेरा मन भय के कारण गतिमान् पहिये की तरह काँप रहा है। हे सदा वृद्धि को प्राप्त होने वाले और अपने उपासकों की सदा वृद्धि करने वाले!, हे पवित्र धनों को देने वाले! तुझसे प्रभूत धनों को पाने वाला मैं तेरा स्तोता इस जगत् रूपी और शरीर रूपी रथ में आरोहण करने वाले तुझ रथी की निश्चय से भूरि-भूरि स्तुति करता हूँ।

टि. *पहिये की तरह घूमते हुए की* - **चक्रं न वृत्तम्**। चक्रम् इव वर्तमानम् - वे.। भूमौ वर्तमानं चक्रम् इव - सा.। like a whirling wheel - W. like a rolling wheel - G.

*बुद्धिहीन का* - **अमतेः**। दारिद्र्याद् अस्तोतुर् वा सकाशात् - सा.। निर्बुद्धेः - दया.। through dread of poverty - W. for fear of penury - G.

*रथ के ऊपर (आरूढ़ की)* - **रथात् अधि**। रथाद् यावद् एव त्वं नावतरसि - वे.। रथाद् अधि उपरि स्थितम् - सा.। seated in thy chariot - W. mounted on thy car - G.

*बहुत* - **कुविद्**। बहुनाम (निघ. ३.१)।। कुवित् पुरुवसुः इति द्वे संज्ञे अस्य सः - वे.। बहु - सा.। महान् - दया.। abundantly - W.

*प्रभूत धनों वाला* - **पुरुवसुः**। अहम् ऋषिः - सा.। असंख्यातधनः - दया.।

**एष ग्रावेव जरिता त इन्द्रेयर्ति वाचं बृहद् आशुषाणः।**
**प्र सव्येन मघवन् यंसि रायः प्र दक्षिणिद् धरिवो मा वि वेनः।। ४।।**

एषः। ग्रावाऽइव। जरिता। ते। इन्द्र। इयर्ति। वाचम्। बृहत्। आशुषाणः।
प्र। सव्येन। मघऽवन्। यंसि। रायः। प्र। दक्षिणित्। हरिऽवः। मा। वि। वेनः।। ४।।

*यह सिलबट्टे की तरह स्तोता, तेरे लिये, हे इन्द्र!,*
*चलाता है वाणी को, बहुत अधिक पाना चाहता हुआ।*
*प्रकर्ष से बाएँ (हाथ) से, हे दाता!, देता है तू धनों को,*
*प्रकर्ष से दाएँ से, हे अश्ववान्!, मत विगतकाम हो तू (देने में)।। ४।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! मैं तेरा उपासक तुझसे बहुत-कुछ पाना चाहता हूँ। इसलिये सोम का सवन करते समय सिलबट्टा जिस प्रकार निरन्तर ऊँची ध्वनि करता है, उसी प्रकार मैं भी ऊँचे स्वर से तेरे नाम का जप कर रहा हूँ। हे दाता! जब तू देने पर आता है, तो बाएँ और दाएँ दोनों हाथों से देता है। खूब जी भरकर देता है। इसलिये हे प्राणापान के स्वामी! तू मुझे धनों को देने में इच्छारहित मत होना। मुझे लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के धन इच्छापूर्वक देना।

टि. *चलाता है वाणी को* - **इयर्ति वाचम्**। वाचं प्रेरयति - वे.। वाचं स्तुतिम् इयर्ति प्रेरयतीत्यर्थः - सा.। urges praise to thee - W. lifts his voice - G.

*बहुत अधिक पाना चाहता हुआ* - **बृहत् आशुषाणः**। अत्यर्थं त्वाम् अश्नुवानः - वे.। महत् प्रभूतं फलम् आशु संभक्ता सन् - सा.। महद् व्याप्नुवन् सन् - दया.। participating in the great (reward) - W. with strong endeavour - G.

*देता है तू* - **यंसि**। प्रयच्छ - वे.। प्रयच्छसि - सा.।

*विगतकाम मत हो तू (देने में)* - **मा वि वेनः**। मा विगतकामो भूः स्तोतरि - वे.। विगतकामं मा कार्षीः - सा.। be not reluctant - W. G.

**वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौर् वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम्।**
**स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन् भरे धाः।। ५।।**

वृषा। त्वा। वृषणम्। वर्धतु। द्यौः। वृषा। वृषऽभ्याम्। वहसे। हरिऽभ्याम्।
सः। नः। वृषा। वृषऽरथः। सुऽशिप्र। वृषक्रतो इति वृषऽक्रतो। वृषा। वज्रिन्। भरे। धाः।। ५।।

*सुखवर्षक, तुझ सुखवर्षक को, बढ़ाए द्यौ,*

*सुखवर्षक (तू), सुखवर्षकों से वहन किया जाता है, अश्वों से।*
*वह हमको सुखवर्षक (तू), सुखवर्षक रथ वाला, हे शोभन शिरस्त्राण वाले!*
*हे सुखवर्षक कर्मों वाले!, सुखवर्षक (तू), हे वज्री!, संग्राम में धारण कर।। ५।।*

हे सुखों की वर्षा करने वाले परमेश्वर! सुखों की वर्षा करने वाला द्युलोक ऋत का पालन करता हुआ तेरी वृद्धि करे। सुखों की वर्षा करने वाले का तेरा यह जगत् रूपी रथ सुखों की वर्षा करने वाले प्राण और अपान रूपी अश्वों के द्वारा तुझे वहन करता है। हे उत्तम संरक्षणों वाले, हे सुखवर्षक कर्मों वाले, हे न्यायव्यवस्था रूपी वज्र को धारण करने वाले जगदीश! सुखों की वर्षा करने वाले जगत् रूपी रथ का स्वामी सुखवर्षक तू हमें जीवनसंग्राम में सहारा प्रदान कर।

टि. *सुखवर्षक द्यौ* - **वृषा द्यौः**। वर्षिता द्यौः - वे.। वृषा वर्षित्री द्यौर् द्योतयित्री स्तुतिः। द्योततेर् दीव्यतेर् वा स्तुत्यर्थस्येदं रूपम्। सा.। सुखवर्षकः सत्यकामः - दया.। the effective eulogium - W. the strong Heaven - G.

*वहन किया जाता है* - **वहसे**। उह्यसे। कर्मणि कर्तृप्रत्ययः।। गच्छसि - वे.। यज्ञं प्रत्युह्यसे - सा.। प्राप्नोषि प्रापयसि वा - दया.। thou art borne - W. G.

*हे शोभन शिरस्त्राण वाले* - **सुशिप्र**। हे सुहनो - वे.। शोभनहनो - सा.। of the handsome chin - W. fair of cheek - G.

*हे सुखवर्षक कर्मों वाले* - **वृषक्रतो**। वृषकर्मन् - वे.। वर्षणकर्मन् - सा.। वृषाणां बलवतां प्रज्ञाकर्माणीव प्रज्ञाकर्माणि यस्य सः - दया.। strong-willed - G.

*संग्राम में धारण कर* - **भरे धाः**। सङ्ग्रामे धारय - वे.। सङ्ग्रामे भरणवति यज्ञे वा धाः धारय - सा.। do thou defend us in battle - W. uphold us - G.

**यो रोहिंतौ वाजिनौं वाजिनींवान् त्रिभिः शतैः सचंमानाव् अदिंष्ट।**
**यूने समंस्मै क्षितयों नमन्तां श्रुतरंथाय मरुतो दुवोया।। ६।। ७।।**

यः। रोहिंतौ। वाजिनौं। वाजिनीऽवान्। त्रिऽभिः। शतैः। सचंमानौ। अदिंष्ट।
यूनें। सम्। अस्मै। क्षितयः। नमन्ताम्। श्रुतऽरंथाय। मरुतः। दुवःऽया।। ६।।

*जो रोहित वर्ण वालों को, दो अश्वों को, वेगवत्ता का स्वामी,*
*तीन सौ (गौओं) के साथ, साथ-साथ चलने वालों को देता है।*
*नित्य युवा को सम्यक् इसको, निवासी प्रजाएं नमस्कार करती हैं,*
*विश्रुत रथों वाले को, हे इन्द्रसहायो!, परिचर्या की इच्छा से (सदा ही)।। ६।।*

ऐश्वर्यों का स्वामी वह परमेश्वर वेग और बल से युक्त है। वह इन शरीररूपी रथों का प्रसिद्ध स्वामी है। उसने इन शरीरों में जुतने के लिये कई सौ नस-नाड़ियों के साथ, साथ-साथ चलने वाले प्राण और अपान रूपी दो अश्व प्रदान किये हैं। अजर और अमर वह परमेश्वर नित्य तरुण रहने वाला है। हे ईश्वरीय नियमों का पालन करने वाले ऋत के पक्षधर मनुष्यो! नगरों और ग्रामों में निवास करने वाली सभी प्रजाएं उसकी परिचर्या की इच्छा से उसे नमस्कार करती हैं।

टि. *वेगवत्ता का स्वामी* - **वाजिनीवान्**। अन्नवान् - वे.। सा.। वेगक्रियाज्ञानयुक्तः - दया.। the

possessor of abundance - W.

*तीन सौ (गौओं) के साथ* - **त्रिभिः शतैः**। गवाम् उक्तसंख्याभिः - वे.। गवां धनानां वा उक्तसंख्याभिः - सा.। accompanied by three hundred cattle - W. G.

*देता है* - **अदिष्ट**। युद्धे अतिदिशति - वे.। ददातेर् वा दिशतेर् वा लुङीदं रूपम् - सा.। दिशेत् - दया.। has bestowed - W. gave me - G.

*नित्य युवा को* - **यूने**। यूने सर्वत्र मिश्रयित्रे नित्यतरुणाय वा - सा.। youthful - W. G.

*निवासी प्रजाएं* - **क्षितयः**। मरुतः - वे.। सर्वाः प्रजाः - सा.। मनुष्याः - दया.।

*विश्रुत रथों वाले को* - **श्रुतरथाय**। विश्रुतरथाय इन्द्राय - वे.। श्रुतरथाय राज्ञे - सा.। श्रुता रथा यस्य - दया.।

*हे इन्द्रसहायो* - **मरुतः**। मरुतो मितराविणो वा मितरोचिनो वा महद् द्रवन्तीति वा - या. (नि. ११. १३)। मनुष्याः - दया.।

*परिचर्या की इच्छा से* - **दुवोया**। युष्मासु परिचरणेच्छा भवतु - वे.। तृतीयैकवचनस्य याज् आदेशः। परिचर्यया। सा.। यौ दुवः परिचरणं यातस् तौ - दया.।

## सूक्त ३७

ऋषिः - अत्रिर् भौमः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः।**
**तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान् य इन्द्राय सुनवामेत्याह।। १।।**

सम्। भानुना। यतते। सूर्यस्य। आऽजुह्वानः। घृतऽपृष्ठः। सुऽअञ्चाः।
तस्मै। अमृध्राः। उषसः। वि। उच्छान्। यः। इन्द्राय। सुनवाम। इति। आह।। १।।

*सम्यक् तेज के साथ, स्पर्धा करता है सूर्य के,*
*सर्वत्र आह्वान किया जाता हुआ, प्रदीप्त ज्वालाओं वाला, शोभनगति।*
*उसके लिये, हिंसित न करने वाली उषाएं, उदित होती हैं,*
*जो 'इन्द्र के लिये सोम का सवन करें हम', ऐसा कहता है।। १।।*

प्रातःकाल में जब सूर्य का उदय होता है, तो उस पवित्र वेला में यज्ञ का अग्नि भी प्रज्वलित हो जाता है। प्रदीप्त ज्वालाओं वाला, उत्तम गति वाला, याजकों के द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ आहुतियां प्रदान किया जाता हुआ वह यज्ञाग्नि सूर्य के तेज के साथ स्पर्धा करता हुआ खूब शोभायमान होता है। यह वह समय होता है जब उपासकों का मन प्रभु की भक्ति में खूब लगता है। इस समय में जो उपासक उस परमेश्वर को अपना सर्वस्व समर्पित करने की इच्छा प्रकट करता है, हिंसित न करने वाली, अज्ञान के अन्धकार को दूर भगाने वाली आभ्यन्तर उषाएं उसके लिये उदित हो जाती हैं।

टि. *सम्यक् स्पर्धा करता है* - **सम् यतते**। सङ्गच्छते - वे.। vies - W.

*सर्वत्र आह्वान किया जाता हुआ* - **आजुह्वानः**। आहूयमानः - वे.। सर्वत्र हूयमानः। कर्मणि

कर्तृप्रत्ययः। सा.। कृताह्वानः - दया.। piously worshipped - W. meetly worshipped - G.

*प्रदीप्त ज्वालाओं वाला* - **घृतपृष्ठः**। प्रदीप्तज्वालः - सा.। bedewed with holy oil - G.

*शोभनगति* - **स्वञ्चाः**। स्वञ्चनः - वे.। सा.। यः सुष्ठु अञ्चति - दया.। Swift One -G.

*हिंसित न करने वाली* - **अमृध्राः**। या न हिंसन्ति ताः - वे.। अहिंसिताः - सा.। अहिंसकाः - दया.। innoxious to him - W. without cessation - G.

*उषाएं उदित होती हैं* - **उषसः वि उच्छान्**। उषसः व्युच्छन्तु - वे.। सा.।

**समिद्धाग्निर् वनवत् स्तीर्णबर्हिर् युक्तग्रावा सुतसोमो जराते।**
**ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्ययद् अध्वर्युर् हविषाव सिन्धुम्।। २।।**

समिद्धऽअग्निः। वनवत्। स्तीर्णऽबर्हिः। युक्तऽग्रावा। सुतऽसोमः। जराते।
ग्रावाणः। यस्य। इषिरम्। वदन्ति। अयत्। अध्वर्युः। हविषा। अव। सिन्धुम्।। २।।

*प्रज्वलित अग्नि वाला, भजे (इन्द्र को), बिछे आसन वाला,*
*जुते अभिषवपाषाणों वाला, सवन किये सोम वाला, स्तुति करे (उसकी)।*
*अभिषवपाषाण जिसके लिये, अभिलषित ध्वनि को उत्पन्न करते हैं,*
*ले चले अध्वर्यु (वह), हवि के साथ नीचे को स्यन्दनशील सोम को।। २।।*

प्रभु का उपासक अन्तर्यज्ञ के लिये आभ्यन्तर अग्नि को प्रज्वलित करके और हृदय की वेदि पर आसन को बिछाकर उस परमेश्वर का भजन करे। प्राण-अपान के अवलोडन और यौगिक क्रियाओं से युक्त होकर वह भक्ति-आनन्द रूपी सोम का सवन करे। वह हृदय से प्रभु की स्तुति करे। उचित समय पर यौगिक क्रियाओं से ही उसके हृदय में अभिलषित अनाहत नाद उत्पन्न होगा। अन्तर्यजन करने वाला वह उपासक अपनी हवि के साथ हृदयकलश से स्रवित होने वाले अपने भक्तिरस रूपी सोम को अपने इष्टदेव को समर्पित करे।

टि. *भजे* - **वनवत्**। भजते - वे.। सा.। offers worship - W. let him worship - G.

*स्तुति करता है* - **जराते**। जरति स्तौति - सायणादयः। offers praise - W. let sing - G.

*अभिलषित ध्वनि को उत्पन्न करते हैं* - **इषिरं वदन्ति**। अभिलषितं सोमं वदन्ति - वे.। एषणीयं गमनशीलं वा शब्दं वदन्ति - सा.। गमनं वदन्ति - दया.। utter the sounds of bruising - W. ring forth loudly - G.

*ले चलता है हवि के साथ नीचे को स्यन्दनशील सोम को* - **अयत् हविषा अव सिन्धुम्**। स्यन्दनशीलं सोमं पुरोडाशादिना सह अव गमयति - वे. descends with the oblation (for previous ablution) to the stream - W. let go down with his oblation to the river - G.

**वधूर् इयं पतिम् इच्छन्त्येति य ईं वहाते महिषीम् इषिराम्।**
**आस्य श्रवस्याद् रथ आ च घोषात् पुरू सहस्रा परि वर्तयाते।। ३।।**

वधूः। इयम्। पतिम्। इच्छन्ती। एति। यः। ईम्। वहाते। महिषीम्। इषिराम्।
आ। अस्य। श्रवस्यात्। रथः। आ। च। घोषात्। पुरु। सहस्रा। परि। वर्तयाते।। ३।।

*वधू यह पति की इच्छा करती हुई, गमन कर रही है,*

*जो इसको वहन करता है, महान् गुणवती को, गमनशीला को।*
*सर्वत्र इसके लिये कीर्ति को फैलाता है रथ, सर्वत्र घोष भी करता है,*
*अनेक सहस्रों (ऐश्वर्यों) को, सब ओर गतिमान् करता है (इन्द्र)।। ३।।*

जगज्जननी अदिति, प्रकृति, वधू है। जगत्पिता परमात्मा पति है। जगत्सृष्टि के लिये इन दोनों का मेल आवश्यक है। प्रजनन की कामना वाली होकर प्रकृतिरूपी वधू परमात्मा का पति के रूप में वरण करना चाहती है। इसलिये परमात्मा महान् गुणों वाली और परिवर्तनशील इस प्रकृति को पत्नी के रूप में अपनाता है। इस प्रकार इस जगत् अथवा ब्रह्माण्ड की सृष्टि होती है। यह जगत् परमेश्वर के रथ के समान है, क्योंकि वह इसी में आसीन होकर सर्वत्र व्याप्त हो रहा है। इस जगत्सृष्टि से उस प्रभु की कीर्ति सर्वत्र फैल रही है और इसमें वास करने वाले प्राणी सर्वत्र उसका जयघोष कर रहे हैं। वह परमेश्वर प्राणियों के लिये असंख्य ऐश्वर्यों को सब ओर भेज रहा है।

टि. *महान् गुणवती को* – **महिषीम्।** महाशुभगुणाम् – दया.। queen - W. consort - G.

*गमनशीला को* – **इषिराम्।** इष्टाम् (उषसम्) – वे.। गमनवतीम् – सा.। accompanying - W. vigorous - G.

*कीर्ति को फैलाता है* – **श्रवस्यात्।** अस्माकम् अन्नम् इच्छतु – वे.। अन्नम् इच्छति – सा.। may convey us ample food - W. may seek fame - G.

*घोष करता है* – **घोषत्।** घोषयतु – वे.। आघुष्यति शब्दयति – सा.। may it sound loudly - W. may loudly thunder - G.

*सब ओर गतिमान् करता है (इन्द्र)* – **परि वर्तयाते।** परि वर्तयति। स्वस्मान् निर्गमयति। वे.। परितो वर्तयति प्रापयति – सा.। सर्वतः वर्तयेत। लेट्प्रथमैकवचन आडागमे णिजन्तस्य वर्तेः प्रयोगः। दया.। may scatter it around - W. may make revolutions - G.

**न स राजा॑ व्यथते॒ यस्मि॒न्निन्द्र॑स् ती॒व्रं सोम॑ पिब॑ति॒ गोस॑खायम्।**
**आ स॑त्व॒नैर् अज॑ति॒ हन्ति॑ वृ॒त्रं क्षेति॑ क्षि॒तीः सु॒भगो॒ नाम॒ पुष्य॑न्।। ४।।**

न। सः। राजा॑। व्य॒थ॒ते॒। यस्मि॑न्। इन्द्र॑ः। ती॒व्रम्। सोम॑म्। पिब॑ति। गोऽस॑खायम्।
आ। स॒त्व॒नैः। अज॑ति। हन्ति॑। वृ॒त्रम्। क्षेति॑। क्षि॒तीः। सु॒ऽभग॑ः। नाम॑। पुष्य॑न्।। ४।।

*नहीं वह राजा व्यथित होता है, जिसके पास से इन्द्र,*
*तीव्र सोम का पान करता है, दूधों से मिश्रित का।*
*सर्वत्र बलों के साथ (अपने) चलता है, मारता है वृत्र को,*
*बसाता है बस्तियों को, सौभाग्यवान्, नाम को पुष्ट करता हुआ।। ४।।*

*अधिभूत :* जिस राजा के राज्य में प्रजाजन धार्मिक वृत्ति वाले, देवों को दुग्धमिश्रित सोम और आज्य की आहुतियां प्रदान करने वाले और प्रभु की स्तुतियां करने वाले होते हैं, जो राजा अपनी बलवती सेनाओं के साथ विजय के लिये प्रयाण करता है, जो अपने शत्रुओं को मार गिराता है, जो अपने राज्य में नए-नए ग्रामों और नगरों को बसाता है, वह राजा ऐश्वर्यों का स्वामी बनकर अपनी कीर्ति को सब ओर फैलाता है। वह कभी शोक को प्राप्त नहीं होता।

*अध्यात्म :* ज्ञान के प्रकाश से युक्त जिस मनुष्य के श्रद्धा से युक्त भक्तिरस रूपी सोम को परमेश्वर स्वीकार करता है, जो अपनी ज्ञानशक्तियों के साथ विचरण करता है, जो पाप आदि शत्रुओं का विनाश करने वाला है, जो सद्गुणों की बस्तियों को अपने अन्दर बसाता है, प्रभु के नाम को पुष्ट करने वाला वह मनुष्य सौभाग्यवान् हो जाता है। वह कभी शोक को प्राप्त नहीं होता।

टि. *दूधों से मिश्रित का* - **गोसखायम्।** पयोमिश्रणम् - वे.। विकारे प्रकृतिशब्दः। क्षीरादि-मिश्रणवन्तम्। सा.। mixed with milk - W. with milk commingled - G.

*बलों के साथ* - **सत्वनैः।** भूतैः सह - वे.। सत्वभिर् अनुचरैः - सा.। attended by (faithful) followers - W. with heroes - G.

*बसाता है बस्तियों को* - **क्षेति क्षितीः।** अधिवसति च भूमीः - वे.। क्षेति गच्छति क्षितीः प्रजाः। अथवा क्षितीर् निवासान् निवसते। सा.। निवासयत्यैश्वर्यं करोति वा, क्षितीः मनुष्यान् - दया.। he protects his subjects - W. he guards his people - G.

*नाम को पुष्ट करता हुआ* - **नाम पुष्यन्।** नाम उदकम् (निघ. १.१२) पुष्यन् - वे.। नाम नामकं धनम् इन्द्रस्य स्तोत्रं वा पुष्यन् पोषयन् - सा.। प्रसिद्धिं पुष्यन् - दया.। he cherishes the name of Indra - W. cherishing that name - G.

**पुष्या॒त् क्षेमे॑ अ॒भि योगे॑ भवात्यु॒भे वृतौ॑ संय॒ती सं ज॑याति।**
**प्रि॒यः सूर्ये॑ प्रि॒यो अ॒ग्ना भ॑वाति॒ य इन्द्रा॑य सु॒तसो॑मो॒ ददा॑शत्॥ ५॥ ८॥**

पुष्या॑त्। क्षेमे॑। अ॒भि। योगे॑। भ॒वा॒ति॒। उ॒भे इति॑। वृतौ॑। सं॒य॒ती इति॑ स॒म्ऽय॒ती। सम्। ज॒या॒ति॒।
प्रि॒यः। सूर्ये॑। प्रि॒यः। अ॒ग्ना। भ॒वा॒ति॒। यः। इन्द्रा॑य। सु॒तऽसो॑मः। ददा॑शत्॥ ५॥

*पुष्ट करे (स्वयं को), क्षेम में सर्वतः, योग में, समर्थ हो जावे,*
*उभयविध मार्गों को, सङ्गति वालों को, सम्यक् विजित कर लेवे।*
*प्रिय (हो जावे) सूर्य को, प्रिय अग्नि को हो जावे (उपासक वह),*
*जो इन्द्र को, सवन किये हुए सोम वाला, (आहुति) प्रदान करता है॥ ५॥*

जो मनुष्य भक्तिरस रूपी सोम का सवन करके उसे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मा को श्रद्धा के साथ समर्पित करता है, वह सब प्रकार से पुष्टि को प्राप्त करता है। वह परस्पर संगति वाले पितृयान और देवयान नामक क्रमशः स्वर्ग और मोक्ष की ओर ले जाने वाले मार्गों को भली प्रकार विजित कर लेता है। वह अप्राप्य की प्राप्ति (योग) और प्राप्त की रक्षा (क्षेम) में समर्थ हो जाता है, अथवा उद्योग और विश्राम दोनों स्थितियों में सफलताएं प्राप्त करने वाला हो जाता है। वह प्रकाश और ऊर्जा के स्रोतभूत सूर्य और अग्नि को प्रिय हो जाता है।

टि. *क्षेम में सर्वतः, योग में, समर्थ हो जावे* - **क्षेमे अभि योगे भवाति।** क्षेमे लब्धपरिपालना-पेक्षायाम् (स पोषं पुष्यति)। अभि भवति च शत्रून् अलब्धलिप्सायाम्। वे.। क्षेमे प्राप्तस्य धनस्य रक्षणे योगे ऽलब्धस्य प्राप्तौ चाभि भवाति। भवति। अभीत्यनर्थको धात्वर्थानुवादी वा। प्रभुर् भवतीत्यर्थः। सा.। he (reigns) in welfare and prosperity - W. May he (support) in peace and win in battle - G.

*उभयविध मार्गों को, संगति वालों को* - **उभे वृतौ संयती।** द्वौ च मार्गौ सङ्गच्छमानौ - वे.। उभे वृतौ वर्तमाने संयती नियते अहोरात्रे - सा.। उभे वृतौ संवृतौ आच्छादने सम्मिलिते - दया.। in present and continuous time - W. he masters both the hosts that meet together - G.

*(आहुति) प्रदान करता है* - **ददाशत्।** प्रयच्छति - वे.। सोमं ददाति - सा.।

## सूक्त ३८

ऋषिः - अत्रिः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - अनुष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**उरोष् ट॑ इन्द्र राध॑सो विभ्वी रातिः श॑तक्रतो।**
**अधा॑ नो विश्वचर्षणे द्युम्ना सु॑क्षत्र मंहय।। १।।**

उरोः। ते। इन्द्र। राध॑सः। विऽभ्वी। रातिः। शतक्रतो इति॑ शतऽक्रतो।
अध॑। नः। विश्वऽचर्षणे। द्युम्ना। सुऽक्षत्र। मंहय।। १।।

*व्यापक की तेरे, हे इन्द्र!, ऐश्वर्य की,*
*व्यापक (है) देन, हे असंख्य कर्मों वाले।*
*इसलिये हमें, हे सब पर दृष्टि रखने वाले!,*
*तेजस्वी धनों को, हे शोभनधन!, सादर प्रदान कर।। १।।*

हे असंख्य कर्मों को सम्पन्न करने वाले, विपुल ज्ञान के स्वामी, परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! तू स्वयं सर्वव्यापक है और तेरे द्वारा दिये जाने वाले ऐश्वर्यों की देन भी सर्वव्यापक है। इसलिये हे सब के शुभाशुभ कर्मों को देखने वाले और तदनुसार फल देने वाले न्यायकारी परमेश्वर! हे उत्तम धनों वाले जगदीश! तू हमें अन्न, वस्त्र, आवास आदि बाह्य तथा सत्य, अहिंसा, दया, न्यायप्रियता आदि आभ्यन्तर तेजस्वी धनों को सम्मान के साथ प्रदान कर।

टि. *व्यापक की* - **उरोः।** महतः - वे.। प्रभूतस्य - सा.। बहोः - दया.। wide - G.

*व्यापक (है) देन* - **विभ्वी रातिः।** महद् दानम् - वे.। विभ्वी महती रातिर् दानम् - सा.। विभ्वी व्यापिका रातिः दानम् - दया.। the bounty of thy ample grace - G.

*हे सब पर दृष्टि रखने वाले* - **विश्वचर्षणे।** सर्वस्य द्रष्टः - वे.। सा.। समस्तद्रष्टव्यदर्शन - दया.। all-beholder - W. Friend of all men - G.

*तेजस्वी धनों को* - **द्युम्ना।** अन्नानि - वे.। धनानि - सा.। यशसा धनेन वा - दया.।

*हे शोभनधन* - **सुक्षत्र।** सुबल - वे.। शोभनधनेन्द्र। क्षत्रम् इति धननाम। सा.।

*सादर प्रदान कर* - **मंहय।** प्रयच्छ - वे.। सा.। महतः कुरु - दया.।

**यद् ईम् इन्द्र श्रवाय्यम् इष॑ं शविष्ठ दधिषे।**
**पप्रथे दी॑र्घश्रुत्त॑मं हिर॑ण्यवर्ण दुष्टर॑म्।। २।।**

यत्। ईम्। इन्द्र। श्रवाय्य॑म्। इष॑म्। शविष्ठ। दधिषे।
पप्रथे। दीर्घश्रुत्ऽत॑मम्। हिर॑ण्यऽवर्ण। दुस्तर॑म्।। २।।

*जो यह, हे इन्द्र!, श्रवण के योग्य,*

*कामना के योग्य, हे बलिष्ठ!, देता है तू।*
*विस्तृत होता है, दीर्घ कीर्ति वालों में श्रेष्ठ,*
*हे तेजस्वी वर्ण वाले!, दुर्जेय (ज्ञानधन)।। २।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! हे सर्वाधिक बल वाले!,जो तू यह श्रवण के योग्य और कामना के योग्य ज्ञान रूपी धन अपने उपासकों को प्रदान करता है, हे तेजस्वी प्रभो!, दीर्घ काल तक और बहुत दूर तक फैली कीर्ति वालों में श्रेष्ठ और विरोधियों के द्वारा जीते न जा सकने वाला, छीना न जा सकने वाला, यह विद्या रूपी धन देने से विस्तृत ही होता रहता है।

टि. *श्रवण के योग्य* - **श्रवाय्यम्।** श्रवणीयम् - वे.। सा.। दया.। worthy of renown - G.

*कामना के योग्य* - **इषम्।** इष्यमाणं धनम् - वे.। अन्नम्। इषशब्दो नपुंसकलिङ्गो अपि अस्ति। सा.। अन्नादिकम् - दया.। food - G.

*देता है तू* - **दधिषे।** धारय - वे.। धारयसि ददासि वा - सा.। thou possessest - W. G.

*विस्तृत होता है* - **पप्रथे।** प्रथते - सा.। दया.। is bruited - G.

*दीर्घ कीर्ति वालों में श्रेष्ठ* - **दीर्घश्रुत्तमम्।** दीर्घकालं श्रोतव्यम् - वे.। अतिदूरश्रवणीयतमम्। सर्वत्र कीर्त्यम् इत्यर्थः। सा.। यो दीर्घेण कालेन शृणोति सो ऽतिशयितस् तम् - दया.। it is most notoriously reported - W. as most widely famed - G.

*हे तेजस्वी वर्ण वाले* - **हिरण्यवर्ण।** हितरमणीयवर्ण - वे.। यो हिरण्यं वृणोति तत्सम्बुद्धौ - दया.। golden-hued - W. G.

**शुष्मा॑सो॒ ये ते॑ अद्रिवो मे॒हना॑ केत॒साप॑ः।**
**उ॒भा दे॒वाव् अ॒भिष्ट॑ये दि॒वश् च॒ ग्मश् च॑ राजथः।। ३।।**

शुष्मा॑सः। ये। ते॒। अ॒द्रि॒ऽव॒ः। मे॒हना॑। के॒त॒ऽसाप॑ः।
उ॒भा। दे॒वौ। अ॒भिष्ट॑ये। दि॒वः। च॒। ग्मः। च॒। रा॒ज॒थ॒ः।। ३।।

*शत्रुशोषक (सहायक) जो तेरे, हे वज्रधारी!,*
*धाराप्रवाह से, इच्छाओं को पूर्ण करने वाले।*
*दोनों देव (वे और तू), अभीष्ट के लिये,*
*द्युलोक के भी, भूलोक के भी, शोभते हो।। ३।।*

हे न्यायव्यवस्था को अपने अधिकार में रखने वाले ऐश्वर्यशाली जगदीश्वर! जो आसुरी शक्तियों को सुखा डालने वाली तेरी सहायक शक्तियां हैं, जो धाराप्रवाह से तेरी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली, तेरी आज्ञाओं का अविलम्ब पालन करने वाली हैं, वे सब और तू, दोनों, एक साथ मिलकर द्युलोक और भूलोक के तथा इनमें वास करने वाले देवों और मनुष्यों के अभीष्ट की सिद्धि के लिये अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए शोभायमान हो रहे हो।

टि. *शत्रुशोषक (सहायक)* - **शुष्मासः।** रश्मयः - वे.। बलभूता मरुतः - सा.। अतिबलवन्तः - दया.। the strong (Maruts) - W. the powers - G.

*धाराप्रवाह से* - **मेहना।** मंहनीयाः - वे.। सा.। वर्षणेन - दया.। adorable - W. readily - G.

*इच्छाओं को पूर्ण करने वाले* - **केतसापः**। विज्ञानस्पृशः - वे.। प्रज्ञापकं कर्मान्तरिक्षं वा स्पृशन्तः - सा.। ये केतेन प्रज्ञया सपन्ति ते - दया.। whose exploits are renowned - W. which obey thy will - G.

*दोनों देव (वे और तू)* - **उभा देवा**। त्वं अग्निश् च, उभौ देवौ - वे.। त्वं च मरुत्समूहश् च - सा.। उभौ दिव्यगुणकर्मस्वभावौ - दया.। both divinities (thou and they) - W. G.

*अभीष्ट के लिये* - **अभिष्टये**। अभीष्टसिद्ध्यर्थम् - वे.। इष्टसिद्धये - दया.।

*द्युलोक के भी, भूलोक के भी* - **दिवश् च ग्मश् च**। द्यावापृथिव्योः - वे.। अन्तरिक्षस्य पृथिव्याः च - दया.। over heaven and earth - W.

**उतो नो अस्य कस्य चिद् दक्षस्य तव वृत्रहन्।**
**अस्मभ्यं नृम्णम् आ भरास्मभ्यं नृमणस्यसे।। ४।।**

उतो इति। नः। अस्य। कस्य। चित्। दक्षस्य। तव। वृत्रऽहन्।
अस्मभ्यम्। नृम्णम्। आ। भर। अस्मभ्यम्। नृऽमनस्यसे।। ४।।

*और हमारे लिये, इसको, किसी को,*
*बल को अपने, हे आवरक के हन्ता।*
*हमारे लिये पौरुष को, सब ओर से ला तू,*
*हमारे लिये, पौरुष को लाना चाहता है तू (चूँकि)।। ४।।*

हे सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आसुरी शक्ति का हनन कर डालने वाले परमेश्वर! चूँकि तू हमारे अन्दर पौरुष का संचार करना चाहता है, इसलिये तू हमें दुष्ट आसुरी शक्तियों का विनाश करने वाले अपने इस अथवा ऐसे ही किसी अन्य बल को प्रदान कर। तू अपने पौरुष को हमें सब ओर से प्रदान कर। हम इस पौरुष के द्वारा, अपने परिश्रम से खून-पसीना बहाकर ही सब-कुछ पाना चाहते हैं। हमें बिना परिश्रम किये मिलने वाला धन नहीं चाहिये।

टि. *बल को* - **दक्षस्य**। बलस्य (प्रयच्छ) - वे.। प्रवृद्धस्य दातुर् वा - सा.। (the wealth) of any powerful man - W. from whatever power of thine - G.

*पौरुष को* - **नृम्णम्**। धनम् - वे.। सा.। नरो रमन्ते यस्मिंस् तद् धनम् - दया.। the wealth - W. heroic strength - G.

*पौरुष को लाना चाहता है तू* - **नृमणस्यसे**। धनप्रदानम् इच्छसि - सा.। आत्मनो नृम्णम् इच्छसि - दया.। for thou art disposed to enrich us - W. thou hast a man's regard for us - G.

**नू त आभिर् अभिष्टिभिस् तव शर्मञ् छतक्रतो।**
**इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः।। ५।। ९।।**

नु। ते। आभिः। अभिष्टिऽभिः। तव। शर्मन्। शतक्रतो इति शतऽक्रतो।
इन्द्र। स्याम। सुऽगोपाः। शूर। स्याम। सुऽगोपाः।। ५।।

*शीघ्र तेरी, इन शुभ कामनाओं से,*
*तेरी शरण में, हे असंख्य कर्मों वाले।*

*हे इन्द्र!, होवें हम शोभन रक्षणों वाले,*
*हे शत्रुहन्ता!, होवें (हम) शोभन रक्षणों वाले।। ५।।*

हे असंख्य कर्मों को सम्पन्न करने वाले सर्वज्ञ परमेश्वर! तेरी शरण में रहते हुए हम तेरे उपासक तेरी इन शुभ कामनाओं, शुभ आशिषों, कृपाओं से उत्तम रक्षणों वाले होवें। हे हिंसक जनों का हनन करने वाले जगदीश! हम सदा उत्तम रक्षणों वाले होवें।

टि. *शुभ कामनाओं से* - **अभिष्टिभिः**। स्तुतिभिः - वे.। अभिगमनैः शीघ्रं समृद्धा भवेमेति शेषः - सा.। इष्टेच्छाभिः - दया.। through our prayers - W. with these aids - G.

*शरण में* - **शर्मन्**। त्वदीयसुखे - वे.। शर्मणि सुखे - सा.। शर्मणि गृहे - दया.। may we (partake of) thy felicity - W. in thy protection - G.

*शोभन रक्षणों वाले* - **सुगोपाः**। शोभनगोपनाः - वे.। शोभनरक्षणाः - सा.। सुष्ठु रक्षकाः, यथावत् प्रजापालकाः - दया.। well secured - W. may we be guarded well - G.

## सूक्त ३९

ऋषिः - अत्रिः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - १-४ अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**यद् इ॑न्द्र चित्र मे॒हनास्ति॒ त्वादा॑तम् अद्रिवः।**
**राध॒स् तन् नो॑ विदद्वस उभयाह॒स्त्या भ॑र।। १।।**

यत्। इ॒न्द्र॒। चि॒त्र॒। मे॒हना॑। अस्ति॑। त्वाऽदा॑तम्। अ॒द्रि॒ऽव॒ः।
राधः॑। तत्। न॒ः। वि॒द॒द्व॒स॒ो॒ इति॑ विदत्ऽवसो। उ॒भ॒या॒ह॒स्ति। आ। भ॒र।। १।।

*जो, हे इन्द्र!, हे विलक्षण!, वृष्टिवत् है,*
*तेरे द्वारा देने योग्य (धन), हे वज्रधारी।*
*धन को, उसको हमारे लिये, हे धनप्रापक!,*
*दोनों हाथों से, इस ओर ला तू, (सदा ही)।। १।।*

हे विलक्षण गुण, कर्म, स्वभाव वाले ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! हे अपनी न्यायव्यवस्था के द्वारा दुष्टों को दण्ड देने वाले प्रभो! वृष्टि की तरह तेरे द्वारा दिया जाने योग्य जो धन है, अथवा तेरे द्वारा दिया जाने वाला जो अलौकिक धन मेरे पास अभी तक नहीं है, हे धनों को प्राप्त कराने वाले जगदीश्वर! उस धन को तू दोनों हाथों से, अर्थात् बहुत अधिक मात्रा में, हमें प्रदान कर।

टि. *हे विलक्षण* - **चित्र**। चित्रं चायनीयम् - या. (नि. ४.४)। वे.। हे चायनीय - सा.। अद्भुतगुणकर्मस्वभाव - दया.। wonderful - W. Wondrous One - G.

*वृष्टिवत् है* - **मेहना (म+इह+न - साम. ३४५) अस्ति**। मंहनीयं धनम् अस्ति। यन् म इह नास्तीति वा। त्रीणि मध्यमानि पदानि। या. (तत्रैव)। मंहनीयम् - सा.। वृष्टिः अस्ति - दया.। precious treasuer is - W. wealth - G.

*तेरे द्वारा देने योग्य* - **त्वादातम्**। त्वया नस् तद् दातव्यम्। या. (तत्रैव)। वे.। त्वया दातव्यम् - सा.। त्वया शोधितम् - दया.। is to be distributed by thee - W.

हे *वज्रधारी* - **अद्रिवः**। अद्रिर् आदृणात्येनेन। अपि वात्तेः स्यात्। या. (तत्रैव)। वे.। वज्रवन् - सा.। wielder of the thunderbolt - W. stone-darting - G.

हे *धनप्रापक* - **विदद्वसो**। वित्तधन - वे.। possessor of riches - W. Treasure-Finder - G.

*दोनों हाथों से इस ओर ला तू* - **उभयाहस्ति आ भर**। उभाभ्यां हस्ताभ्याम् आहर - या. (तत्रैव)। वे.। सा.। उभयाहस्ति उभये हस्ता प्रवर्तन्ते यस्मिंस् तत् - दया.।

**यन् मन्य॑से॒ वरे॑ण्य॒म् इन्द्र॑ द्यु॒क्षं तद् आ भ॑र।**
**वि॒द्याम॒ तस्य॑ ते व॒यम् अकू॑पारस्य दा॒वने॑॥ २॥**

यत्। मन्य॑से। वरे॑ण्यम्। इन्द्र॑। द्यु॒क्षम्। तत्। आ। भ॒र।
वि॒द्याम॑। तस्य॑। ते॒। व॒यम्। अकू॑पारस्य। दा॒वने॑॥ २॥

*जिसको मानता है तू, वरण के योग्य,*
*हे इन्द्र!, प्रकाशनिवासी को उसको इधर ला।*
*जानते हैं उस तुझको हम (सदा ही),*
*अपरिमित को, दान में (धनों के)॥ २॥*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी जगदीश्वर! जिस दिव्य, अलौकिक धन को तू वरण के योग्य मानता है, उसे हमें प्राप्त कराइये। हम जानते हैं, कि धनों के दान की तेरी कोई सीमाएं नहीं हैं। तू असीम और अपरिमित धनों को देने वाला है। अथवा, हम तेरे द्वारा दिये हुए धनों को सदा दूसरों को देने वाले होवें। तू हमें दे। हम दूसरों को दें। यह धन तो तेरा ही है, हमारा नहीं।

टि. *प्रकाशनिवासी को* - **द्युक्षम्**। दीप्तम् - वे.। द्युक्षम् अन्नम् - सा.। धर्मविद्याप्रकाशयुक्तम् - दया.। food - W. that which is in heaven - G.

*जानते हैं हम* - **विद्याम वयम्**। वयं लभेमहि - वे.। स्याम - सा.। जानीयाम - दया.। let us be - W. may we know thee as thou art - G.

*अपरिमित को दान में* - **अकूपारस्य दावने**। अकूपरणस्य दानस्य - या. (नि. ४.१८)। यद्वा - अकूपारस्य तव दानाय सम्भरेमेति - वे.। अकुत्सितः पारो ऽन्तो यस्य तादृशस्यान्नस्य दावने दाने - सा.। अकुत्सितः पारो यस्य तस्य दावने दात्रे - दया.। (in the relation of thy) gift of unlimited sustenance - W. boundless in thy munificence - G. For *Akūpāra* see SV. p. 154.

**यत् ते॑ दि॒त्सु प्र॒राध्यं॒ मनो॒ अस्ति॑ श्रु॒तं बृ॒हत्।**
**तेन॑ दृ॒ळ्हा चि॑द् अद्रिव॒ आ वाजं॑ दर्षि सा॒तये॑॥ ३॥**

यत्। ते॒। दि॒त्सु। प्र॒ऽराध्य॑म्। मनः॑। अस्ति॑। श्रु॒तम्। बृ॒हत्।
तेन॑। दृ॒ळ्हा। चि॒त्। अ॒द्रि॒ऽव॒ः। आ। वाज॑म्। द॒र्षि॑। सा॒तये॑॥ ३॥

*जो तेरा, दान की कामना वाला, प्रशंसा के योग्य,*
*मन है, सुना हुआ (सब ओर), महान्।*
*उसके द्वारा दृढ़ शत्रुदुर्गों को भी, हे वज्रधर!,*
*सर्वतः (शत्रु के) ऐश्वर्य को (भी), दीर्ण कर दानार्थ॥ ३॥*

हे शत्रुविनाशक परमेश्वर! तेरा चित्त सदा देने की इच्छा वाला, अत्यन्त प्रशंसा के योग्य, सब दिशाओं में प्रसिद्ध और विशाल है। हे अपनी न्यायव्यवस्था से दुष्टों को दण्डित करने वाले प्रभो! तू अपने उस दृढ़ चित्त के द्वारा आसुरी शक्तियों के गढ़ों को ध्वस्त कर दे और उनके ऐश्वर्यों को भी उनसे अलग करके, उनसे छीनकर, अपने उपासकों में वितरित कर दे। तेरे ऐश्वर्य समान रूप से सब जीवों के लिये हैं। उनपर स्वार्थी लोगों का एकाधिकार नहीं होना चाहिये।

टि. *दान की कामना वाला* - **दित्सु**। दानेच्छु - वे.। सा.। bountiful - W. fain to give - G.

*प्रशंसा के योग्य* - **प्राध्यम्**। प्रकर्षेण पूजनीयम् - वे.। प्रकर्षेण स्तुत्यम् - सा.। प्रकर्षेण साद्धुं योग्यम् - दया.। praiseworthy - W. prompt to win - G.

*दृढ़ शत्रुदुर्गों को, (शत्रु के) ऐश्वर्य को (भी)* - **दृळ्हा चित् वाजम्**। दृढान्यपि शत्रुपुरादीनि अन्नम् - वे.। दृढम् अपि वाजम् अन्नम् - सा.। दृढा दृढानि, वाजं सङ्ग्रामम् - दया.। substantial food - W.

*सर्वतः दीर्ण कर दानार्थ* - **आ दर्षि सातये**। अस्मभ्यं दानाय आ दरय। आदृणातिः द्विकर्मकश् च भवति। वे.। आ दर्षि आदरयसि सातये ऽस्मत्संभजनाय लाभाय वा - सा.। विदृणासि धर्माधर्मविभागाय - दया.। thou hast made ready for bestowing upon us - W.

**मंहि॑ष्ठं वो म॒घोना॒ं राजा॑नं चर्षणी॒नाम्।**
**इन्द्र॒म् उप॒ प्रश॑स्तये पू॒र्वीभि॑र् जुजुषे॒ गिर॑ः।। ४।।**

मंहि॑ष्ठम्। व॒ः। म॒घोना॑म्। राजा॑नम्। च॒र्ष॒णी॒नाम्।
इन्द्र॑म्। उप॑। प्रऽश॑स्तये। पू॒र्वीभि॑ः। जु॒जु॒षे॒। गिर॑ः।। ४।।

*अत्यन्त पूजनीय की, तुम्हारे धनवानों के,*
*राजा की मनुष्यों के।*
*इन्द्र की निकट से प्रशंसा के लिये,*
*पुरातन स्तुतियों से, सेवा करते हैं स्तोता।। ४।।*

हे मनुष्यो! दुष्ट आसुरी शक्तियों को छिन्न-भिन्न कर डालने वाला वह इन्द्र, परमेश्वर, जो तुम्हारे धनवानों में सबसे अधिक पूजनीय है और जो सब मनुष्यों का राजा है, उसकी हृदय से पूजा के लिये स्तोता गण परम्परागत पुरातन स्तोत्रों के द्वारा स्तुति करते हैं।

टि. *अत्यन्त पूजनीय की* - **मंहिष्ठम्**। दातृतमम् - वे.। अतिशयेन पूज्यम् - सा.। अतिशयेन महान्तम् - दया.। most worthy - W. most liberal - G.

*पुरातन स्तुतियों से सेवा करते हैं स्तोता* - **पूर्वीभिः जुजुषे गिरः**। बह्वीभिः स्तुतिभिः उप सेवते स्तोतायं होता - वे.। पूर्वीभिः पुरातनीभिर् वाग्भिर् गिरः स्तोतारो जुजुषे सेवन्ते - सा.। प्राचीनाभिः प्रजाभिः सह सेवसे प्रीणासि वा वाणीः - दया.। with ancient (hymns) the pious approach Indra - W. Singers with many songs have made Indra propitious - G.

**अस्मा॒ इत् काव्य॒ं वच॑ उ॒क्थम् इन्द्रा॑य॒ शंस्य॑म्।**
**तस्मा॑ उ॒ ब्रह्म॑वाहसे॒ गिरो॑ वर्ध॒न्त्यत्र॑यो॒ गिर॑ः शुम्भ॒न्त्यत्र॑यः।। ५।। १०।।**

अस्मै। इत्। काव्यम्। वचः। उक्थम्। इन्द्राय। शंस्यम्।
तस्मै। ऊँ इति। ब्रह्मऽवाहसे। गिरः। वर्धन्ति। अत्रयः। गिरः। शुम्भन्ति। अत्रयः।। ५।।

*इसके लिये ही कविकृत वचन,*
*स्तोत्र, इन्द्र के लिये, कथन के योग्य हैं।*
*इसके लिये निश्चय से, स्तुतिवाहक के लिये,*
*स्तुतियों को बढ़ाते हैं, त्रिदोषरहित,*
*स्तुतियों को सजाते हैं, त्रितापरहित।। ५।।*

कवियों के द्वारा सभी काव्य दुष्टहन्ता इसी परमेश्वर के लिये रचे गए हैं। स्तोताओं के द्वारा सभी स्तोत्र इस जगदीश्वर की स्तुति के लिये ही गाए गए हैं। यह प्रभु सबकी स्तुतियों को स्वीकार करने वाला है। काम, क्रोध और लोभ - इन तीनों दोषों से रहित ऋषि-मुनि अपनी स्तुतियां इसे ही समर्पित करते हैं। शारीरिक, मानसिक और वाचिक - इन तीनों प्रकार के तापों से रहित साधु-सन्त भी अपनी स्तुतियों को इसी के लिये सजाते हैं।

टि. *कविकृत वचन* - **काव्यं वचः**। कविकृतं वचः - वे.। कवेः स्तोतुः सम्बन्धि। यद्वा। कु शब्दे। शब्दनीयं वचो वाग्रूपम्। सा.। कविभिः कमनीयं वचः - दया.। poetical prayer - W. G.

*स्तोत्र* - **उक्थम्**। शस्त्रम् - सा.। articulate prayer - W. the hymn of praise - G.

*स्तुतिवाहक के लिये* - **ब्रह्मवाहसे**। स्तोत्रैः उह्यमानाय - वे.। परिवृढस्य स्तोत्रस्य वाहकाय - सा.। यो ब्रह्माणि धनानि वहति प्राप्नोति सः - दया.। to him the conveyer of pious praise - W. accepter of the prayer - G.

*त्रिदोषरहित, त्रितापरहित* - **अत्रयः**। अत्रिगोत्राः - सा.। अविद्यमानत्रिविधदुःखाः। अविद्यमान-त्रिविधगुणानां दोषा येषु। दया.। the sons of Atri - W. the Atris - G.

## सूक्त ४०

ऋषिः - अत्रिः। देवता - १-४ इन्द्रः, ५ सूर्यः, ६-९ अत्रिः। छन्दः - १-३ उष्णिक्, ५,९ अनुष्टुप्, ४,६-८ त्रिष्टुप्। नवर्चं सूक्तम्।

**आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब।**
**वृषन्निन्द्र वृषभिर् वृत्रहन्तम।। १।।**

आ। याहि। अद्रिऽभिः। सुतम्। सोमम्। सोमऽपते। पिब।
वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम।। १।।

*आ जा तू, ग्रावाओं से सवन किये हुए को,*
*सोम को, हे सोम के स्वामी!, पी तू।*
*हे सुखवर्षक!, हे इन्द्र!, सुखवर्षकों के साथ, हे आवरकहन्ताओं में श्रेष्ठ।। १।।*

हे आनन्द के स्वामी!, हे सुखों की वर्षा करने वाले!, हे सुखसाधनों को अपने लिये ही छुपाकर रख लेने वाली आसुरी शक्तियों को ध्वस्त कर डालने वाले परमेश्वर! तू हमारे जीवन में प्रवर्तमान

इस यज्ञ में सुखों की वर्षा करने वाली अपनी शक्तियों के साथ सम्मिलित होकर तप, योगसाधना आदि के द्वारा निष्पादित हमारे भक्तिरसरूपी सोम का पान कर।

टि. *हे सोम के स्वामी* - **सोमपते**। सोमस्य पते - वे.। सोमस्य स्वामिन् - सा.। ऐश्वर्यपालक - दया.। Lord of the Soma - W. G.

*सुखवर्षकों के साथ* - **वृषभिः**। मरुद्भिः सह - वे.। वर्षकैर् मरुद्भिः सह - सा.। बलिष्ठैः सह - दया.। with the showering Maruts - W. with the Strong - G.

*हे आवरकहन्ताओं में श्रेष्ठ* - **वृत्रहन्तम**। अतिशयेन वृत्रस्य हन्तः - वे.। अतिशयेन शत्रूणां हन्तृतम - सा.। यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति सो ऽतिशयितस् तत्सम्बुद्धौ - दया.। utter destroyer of Vṛtra - W. best Vṛtra-slayer - G.

**वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः।**
**वृषन्निन्द्र वृषभिर् वृत्रहन्तम।। २।।**

वृषा। ग्रावा। वृषा। मदः। वृषा। सोमः। अयम्। सुतः।
वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम।। २।।

*सुखवर्षक (है) ग्रावा, सुखवर्षक आनन्द (है),*
*सुखवर्षक (है) सोम यह, सवन किया हुआ।*
*हे सुखवर्षक!, हे इन्द्र!, सुखवर्षकों के साथ, हे आवरकहन्ताओं में श्रेष्ठ!,*
*(सोम को इसको, हे सोम के स्वामी!, पी तू)।। २।।*

भक्तिरस रूपी सोम का निष्पादन करने वाली यह यौगिक प्रक्रिया अत्यन्त सुखदायक है। यौगिक प्रक्रिया के द्वारा निष्पन्न किया हुआ यह भक्तिरस भी अत्यन्त सुखदायक है। इस भक्तिरस से मिलने वाला आनन्द भी अत्यन्त सुखदायक है। हे सुखों की वर्षा करने वाले, हे सुखसाधनों को अपने लिये ही छुपाकर रख लेने वाली आसुरी शक्तियों को छिन्न-भिन्न कर डालने वाले जगदीश्वर! तू सुखों की वर्षा करने वाली अपनी दिव्य शक्तियों के साथ हमारे हृदयों में आकर हमारे इस भक्तिरस रूपी सोम का पान कर।

टि. *सुखवर्षक* - **वृषा**। वर्षकः सोमरसस्य फलस्य वा - सा.। वृष्टिकरः - दया.। the showerer - W. Strong - G.

*ग्रावा* - **ग्रावा**। अभिषवसाधनः पाषाणः - सा.। मेघः - दया.। the stone - W. G.

*आनन्द* - **मदः**। मदः सोमपानेन जनितः - सा.। हर्षः - दया.। the inebriation - W. the draught - G.

**वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ् चित्राभिर् ऊतिभिः।**
**वृषन्निन्द्र वृषभिर् वृत्रहन्तम।। ३।।**

वृषा। त्वा। वृषणम्। हुवे। वज्रिन्। चित्राभिः। ऊतिऽभिः।
वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम।। ३।।

*स्तुतिसेचक, तुझको, सुखवर्षक को बुलाता हूँ मैं,*

*हे वज्र के धारक!, अद्भुत समृद्धियों के हेतु।*
*हे सुखवर्षक!, हे इन्द्र!, सुखवर्षकों के साथ, हे आवरकहन्ताओं में श्रेष्ठ!,*
*(सोम को इसको , हे सोम के स्वामी!, पी तू)।। ३।।*

हे परमेश्वर! तू प्रजाओं को सुखों से सींचने वाला है। हे दुष्टों को दण्ड देने के लिये न्याय-व्यवस्था को अपने वश में रखने वाले जगदीश!, विभिन्न स्तुतियों से सींचने वाला मैं तेरा उपासक तुझे अपनी विलक्षण समृद्धियों के लिये पुकारता हूँ। हे सुखवर्षक!, हे सुखसाधनों को अपने लिये ही छुपाकर रख लेने वाली आसुरी शक्तियों का उन्मूलन करने वालों में श्रेष्ठ परमेश्वर!, तू अपनी सुखवर्षक सहायक दिव्य शक्तियों के साथ आकर हमारे भक्तिरस रूपी सोम का पान कर।

टि. *बुलाता हूँ मैं* - **हुवे**। द्वयोर् एकं क्रियापदं हुवे इति - वे.। आह्वयामि - सा.।

*अद्भुत समृद्धियों के हेतु* - **चित्राभिः ऊतिभिः**। हेतौ तृतीया ऊतिभिः इति - वे.। चायनीयाभिर् रक्षाभिर् निमित्तभूताभिः - सा.। अद्भुताभिः रक्षादिभिः क्रियाभिः - दया.। for thy marvellous protections - W. with various aids - G.

**ऋजीषी वज्री वृषभस् तुराषाट् छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा।**
**युक्त्वा हरिभ्याम् उप यासद् अर्वाङ् माध्यन्दिने सवने मत्सद् इन्द्रः।। ४।।**

ऋजीषी। वज्री। वृषभः। तुराषाट्। शुष्मी। राजा। वृत्रऽहा। सोमऽपावा।
युक्त्वा। हरिऽभ्याम्। उप। यासत्। अर्वाङ्। माध्यन्दिने। सवने। मत्सत्। इन्द्रः।। ४।।

*शत्रु-अपवर्जक, वज्रवान्, सुखवर्षक, बलवान् शत्रुओं का विजेता,*
*शत्रुशोषक, शासक, आवरकहन्ता, सोम का पान करने वाला।*
*जोतकर (रथ को) अश्वों से, निकट गमन करे अभिमुख (हमारे),*
*दिन के मध्य भाग में होने वाले सवन में, हर्षित होवे इन्द्र।। ४।।*

परमैश्वर्यशाली जगदीश हिंसक आसुरी शक्तियों को परे खदेड़ने वाला, दण्डव्यवस्था को अपने अधीन रखने वाला, सज्जनों पर सुखों की वर्षा करने वाला, बलवान् शत्रुओं का विजेता, दुष्टों को भयमात्र से सुखा डालने वाला, सबका शासक, सुखसाधनों को छुपाकर बैठ जाने वाली आसुरी शक्तियों का उच्छेदक और भक्तिरस रूपी सोम का पान करने वाला है। वह परमेश्वर मध्याह्न में समर्पित किये जाने वाले हमारे नैवेद्य को स्वीकार करने के लिये हमारे हृदय में आए।

टि. *शत्रु-अपवर्जक* - **ऋजीषी**। सवनद्वये ऽभिषुतस्य गतसारस्य सोमरसस्य तृतीयसवन आप्यायाभिषुतो यो ऽस्ति स ऋजीषः सोमः। सो ऽस्यास्तीत्यृजीषी। सा.। the accepter of the spiritless libation - W. impetuous - G.

*बलवान् शत्रुओं का विजेता* - **तुराषाट्**। क्षिप्रकारिणो यो ऽभिभवतीति स तुराषाट् - वे.। तुराणां त्वरमाणानां शत्रूणां सोढा - सा.। तुरान् हिंसकान् शत्रून् सहते - दया.। the overcomer of the quick- (flying foes) - W. quelling the mighty - G.

*निकट गमन करे* - **उप यासत्**। उपगच्छतु - सा.। दया.।

*हर्षित होवे* - **मत्सत्**। माद्यतु सोमेन - सा.। आनन्देत् - दया.। may be exhilarated - W.

**यत् त्वा सूर्य स्वर्भानुस् तमसाविध्यद् आसुरः।**
**अक्षेत्रविद् यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः।। ५।। ११।।**

यत्। त्वा। सूर्य। स्वः॒ऽभानुः। तमसा। अविध्यत्। आसुरः।
अक्षेत्रऽवित्। यथा। मुग्धः। भुवनानि। अदीधयुः।। ५।।

*जब तुझको, हे सूर्य!, (तेरे) प्रकाश से प्रकाशमान (चन्द्रमा),*
*तम से बींध देता है, आसुरी स्वभाव वाला (होकर)।*
*निवास को न पा सकने वाले की तरह, विमूढ की,*
*प्राणी सब, सोचते (ही) रह जाते हैं, (यह क्या हुआ)।। ५।।*

हे समस्त जगत् के प्रेरक सूर्य! यह चन्द्रमा तेरे प्रकाश से प्रकाशमान है। परन्तु जब यह आसुरी स्वभाव वाला होकर तुझे तम से बींध देता है, अपने प्रकाशहीन आवरण से तेरे प्रकाश को पृथिवी पर आने से रोक देता है, तो धरती पर हाहाकार मच जाता है। जिस प्रकार कोई दिग्भ्रान्त जन निर्जन स्थान में घूमता हुआ अपने निवासस्थान को भी ढूँढ पाने में समर्थ नहीं हो पाता, उसी प्रकार पृथिवी पर निवास करने वाले सब प्राणी किंकर्तव्यविमूढ हो जाते हैं और सोचते ही रह जाते हैं, कि यह क्या हो गया।

अध्यात्म में सूर्य ज्ञान का, स्वर्भानु दूसरे के प्रकाश को चुराकर प्रकाशित होने वाले अज्ञान का और अत्रि ज्ञानरक्षक ब्राह्मण ऋषि का प्रतीक है।

टि. *(तेरे) प्रकाश से प्रकाशमान (चन्द्रमा)* - **स्वर्भानुः**। स्वर् आदित्यो भवति (नि. २.१४), तस्य भासा भातीति स्वर्भानुश् चन्द्रमाः।। सैंहिकेयः - वे.। स्वर्भानुसंज्ञकः - सा.। यः स्वर् आदित्यं भाति स विद्युद्रूपः - दया.। सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होने वाला - जय.।

*आसुरी स्वभाव वाला (होकर)* - **आसुरः**। असुरपुत्रः - वे.। असुरस्य प्राणापहर्तुर् असुर्या वा पुत्रः - सा.। अनुद्भूतरूपः - दया.। the Asura's descendant - G.

*निवास को न पा सकने वाले की तरह* - **अक्षेत्रवित् यथा**। यथा अक्षेत्रज्ञः - वे.। स्वस्वस्थानम् अजानन् - सा.। यः क्षेत्रं रेखागणितं न जानाति - दया.। knowing not his place - W.

*प्राणी सब* - **भुवनानि**। भूतानि - वे.। भुवनानि सर्वाणि - सा.। all creatures - G.

*सोचते (ही) रह जाते हैं* - **अदीधयुः**। ध्यानपराणि - वे.। दृश्यन्ते - सा.। दया.। were beheld like one - W.looked like one - G.

**स्वर्भानोर् अध यद् इन्द्र माया अवो दिवो वर्तमाना अवाहन्।**
**गूळ्हं सूर्यं तमसापव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्दद् अत्रिः।। ६।।**

स्वः॒ऽभानोः। अध। यत्। इन्द्र। मायाः। अवः। दिवः। वर्तमानाः। अवऽअहन्।
गूळ्हम्। सूर्यम्। तमसा। अपऽव्रतेन। तुरीयेण। ब्रह्मणा। अविन्दत्। अत्रिः।। ६।।

*परप्रकाश से प्रकाशमान की, तत्पश्चात्, जब हे इन्द्र!, मायाओं को,*
*नीचे की ओर सूर्य के वर्तमानों को, हिंसित कर डालता है तू।*
*छुपे हुए सूर्य को, अन्धकार से, कार्यावरोधक से,*

*चतुर्थ से, मन्त्रोच्चारण से, प्राप्त कर लेता है त्रिदोषरहित।। ६।।*

स्वयं किसी अन्य महान् शक्ति के प्रकाश से प्रकाशित होने वाला जो पुरुष अपने आसुरी स्वभाव के कारण कृतघ्न होकर उसी प्रकाश को दूसरों तक पहुँचने से रोक देता है, तो हे परमेश्वर! प्रकाश के मार्ग में आड़े आने वाले उसके सब कार्यकलापों को तू नष्ट कर डालता है। ऐसा होने पर काम, क्रोध और लोभ – इन तीन दोषों से रहित ज्ञानी उपासक दिनभर में तीन बार की जाने वाली सामान्य स्तुतियों के अतिरिक्त प्रतिदिन निरन्तर की जाने वाली चौथे प्रकार की विशिष्ट उपासना के द्वारा कार्यरोधक अज्ञान के अन्धकार में छुपे हुए ज्ञानरूपी सूर्य को फिर से प्राप्त कर लेता है।

टि. *नीचे की ओर सूर्य के* – **अवः दिवः**। द्योतमानाद् आदित्याद् अवस्तात् – वे.। सा.। which were spread below the sun - W. that spread itself beneath the sky - G.

*कार्यावरोधक से* – **अपव्रतेन**। अपगतकर्मणा – वे.। सा.। अन्यथा वर्तमानेन – दया.। impeding his functions - W. that stayed his functions - G.

*मन्त्रोच्चारण से* – **ब्रह्मणा**। 'ग्राव्णो ब्रह्मा' (ऋ. ५.४०.८) इत्यनेन – वे.। सा.। by sacred prayer - W. G.

**मा माम् इमं तव सन्तम् अत्र इरस्या द्रुग्धो भियसा नि गारीत्।**
**त्वं मित्रो असि सत्यराधास् तौ मेहावतं वरुणश् च राजा।। ७।।**

मा। माम्। इमम्। तव। सन्तम्। अत्र। इरस्या। द्रुग्धः। भियसा। नि। गारीत्।
त्वम्। मित्रः। असि। सत्यऽराधाः। तौ। मा। इह। अवतम्। वरुणः। च। राजा।। ७।।

*मत मुझको ऐसी अवस्था वाले को, तेरा बने हुए को, हे त्रिदोषरहित!,*
*भोजन की इच्छा से, शत्रुता रखने वाला, भयङ्कर तम से निगल जाए।*
*तू विनाश से त्राण करने वाला है, सच्चे ऐश्वर्यों वाला,*
*वे (तुम) दोनों मेरी यहाँ रक्षा करो, (तू) और वरुण राजा।। ७।।*

इस मन्त्र में ज्ञान रूपी सूर्य के द्वारा ज्ञानी ब्राह्मण ऋषि से प्रार्थना की गई है। हे ज्ञानी ऋषि! मैं तो तेरा ही हूँ। मैं इस समय दुरवस्था में हूँ। शत्रुता की भावना वाला अज्ञान खा जाने की इच्छा से भयङ्कर अन्धकार के द्वारा मुझे निगल जाना चाहता है। मुझे पाकर तू सच्चे ऐश्वर्यों वाला हो गया है। तू विनाश से रक्षा करने में समर्थ मेरा सच्चा मित्र है। तू और जगत् पर शासन करने वाला तथा उसे संरक्षण प्रदान करने वाला परमेश्वर दोनों मिलकर संकट की इस घड़ी में मेरी रक्षा करो।

तुल. विद्या ह वै ब्राह्मणम् आ जगाम गोपाय मा शेवधिष् टे ऽहम् अस्मि।। नि. २.४।।

टि. *भोजन की इच्छा से* – **इरस्या**। अन्नेच्छया – वे.। सा.। दया.। through hunger - W. through anger - G.

*शत्रुता रखने वाला* – **द्रुग्धः**। निन्दितो ऽसुरः – वे.। द्रोग्धासुरः – सा.। प्राप्तद्रोहः – दया.। violator - W. oppressor - G.

*मत भयङ्कर तम से निगल जाए* – **मा भियसा नि गारीत्**। भयेन मा नि गिरतु – वे.। सा.। let not swallow with fearful darkness - W. let not with this dread swallow - G.

तू *विनाश से त्राण करने वाला है* - त्वम् मित्रः असि। त्वं मम मित्रो भवसि - वे.। प्रमीतेः सकाशात् त्राता भवसि - सा.। thou art Mitra - W.

**ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः सपर्यन् कीरिणा देवान् नमसोपशिक्षन्।**
**अत्रिः सूर्यस्य दिवि चक्षुर् आधात् स्वर्भानोर् अप माया अघुक्षत्।। ८।।**

ग्राव्णः। ब्रह्मा। युयुजानः। सपर्यन्। कीरिणा। देवान्। नमसा। उपऽशिक्षन्।
अत्रिः। सूर्यस्य। दिवि। चक्षुः। आ। अधात्। स्वःऽभानोः। अप। मायाः। अघुक्षत्।। ८।।

*ग्रावाओं को ब्राह्मण जोतता हुआ, पूजा करता हुआ,*
*स्तोत्र से देवों को, (और) नमस्कार से, रिझाता हुआ।*
*त्रिदोषरहित (होकर), सूर्य के आकाश में चक्षु को, स्थापित करता है,*
*(और) अन्य के प्रकाश से प्रकाशमान की, परे मायाओं को हटा देता है।। ८।।*

ज्ञान रूपी सूर्य की प्रार्थना को सुनकर ब्राह्मण ऋषि सोम का सवन करता है और उससे यज्ञ के द्वारा देवों की सेवा करता है। वह स्तोत्रों और नमस्कारों से देवों को प्रसन्न करता है। वह उनसे शक्ति को प्राप्त करके दूसरे के तेज से प्रकाश को प्राप्त करने वाले आसुरी वृत्ति वाले अज्ञान रूपी तम की सब मायाओं को छिन्न-भिन्न कर डालता है और ज्ञान रूपी सूर्य के मण्डल को पुनः हृदयाकाश में स्थापित करता है।

टि. *ब्राह्मण* - **ब्रह्मा**। ब्राह्मणः - सा.। चतुर्वेदवित् - दया.।

*स्तोत्र से* - **कीरिणा**। कीर्यते शिक्ष्यत इति कीरिः स्तोत्रम्। तेन। सा.।

*नमस्कार से रिझाता हुआ* - **नमसा उपशिक्षन्**। अन्नेनोपसाधयन् - वे.। adoring with reverence - W. serving with adoration - G.

*सूर्य के आकाश में चक्षु को* - **सूर्यस्य दिवि चक्षुः**। सूर्यस्य सर्वप्रेरकस्य चक्षुः सर्वस्य ख्यापकं मण्डलं दिव्यन्तरिक्षे। निस्तमस्कं कृतवान् इत्यर्थः। सा.। placed the eye of Sūrya in the sky - W.

*परे मायाओं को हटा देता है* - **अप मायाः अघुक्षत्**। मायाः तमोरूपाः अप अगूहत् - वे.। स्वाश्रयमया मोहयन्ती परांस् तथा कुर्वती मायेत्युच्यते। तादृशीर् माया अपाघुक्षद् अजुगोप। न्यवारयद् इत्यर्थः। सा.। dispersed the delusions - W. caused magic arts to vanish - G.

**यं वै सूर्यं स्वर्भानुस् तमसाविध्यद् आसुरः।**
**अत्रयस् तम् अन्वविन्दन् नह्य१न्ये अशक्नुवन्।। ९।। १२।।**

यम्। वै। सूर्यम्। स्वःऽभानुः। तमसा। अविध्यत्। आसुरः।
अत्रयः। तम्। अनु। अविन्दन्। नहि। अन्ये। अशक्नुवन्।। ९।।

*जिसको निश्चय से सूर्य को, परप्रकाश से प्रकाशमान,*
*तम से बींध डालता है, आसुरी स्वभाव वाला।*
*त्रिदोषरहित (ज्ञानी), उसको पा लेते हैं (प्रयासों से अपने),*
*नहीं समर्थ होते हैं अन्य, (कार्य को इसको करने में)।। ९।।*

आसुरी स्वभाव वाला दुष्ट जन स्वयं जिस प्रकाश अथवा ज्ञान से प्रकाश अथवा ज्ञान को प्राप्त करता है, उसी को अन्धकार अथवा अज्ञान से ढक देता है और उसे दूसरों तक पहुँचने से रोक देता

है। इसके विपरीत सब का हित चाहने वाले सज्जन काम, क्रोध और लोभ अथवा शारीरिक, मानसिक और वाचिक दोषों से मुक्त होकर अपने भक्तिरस से परमेश्वर को आनन्दित करते हुए, अपने नैवेद्यों को उसे समर्पित करते हुए और अपनी स्तुतियों और नमस्कारों से उसे प्रसन्न करते हुए अन्धकार में ढके हुए ज्ञान के सूर्य को सब के लिये ढूँढ निकालते हैं। विरोधी स्वभाव वाले दुष्ट जन ऐसा नहीं कर सकते।

टि. *आसुरी स्वभाव वाला* - **आसुरः**। the Asura - W. The word Āsura in this hymn means belonging to, or descendant of, Asuras, demons or evil spirits. This use of the word is unknown in the earliest portions of the Ṛgveda. G.

*त्रिदोषरहित* - **अत्रयः**। त्रिभ्यो दोषेभ्यो रहिताः।। the sons of Atri - W. the Atris - G.

## सूक्त ४१

ऋषिः - भौमो ऽत्रिः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - १-१५,१८,१९ त्रिष्टुप्, १६,१७ अतिजगती, २० एकपदा विराट्। विंशत्यृचं सूक्तम्।

**को नु वां मित्रावरुणाव् ऋतायन् दिवो वा महः पार्थिवस्य वा दे।**
**ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वा पशुषो न वाजान्।। १।।**

कः। नु। वाम्। मित्रावरुणौ। ऋतऽयन्। दिवः। वा। महः। पार्थिवस्य। वा। दे।
ऋतस्य। वा। सदसि। त्रासीथाम्। नः। यज्ञऽयते। वा। पशुऽसः। न। वाजान्।। १।।

*कौन निश्चय से तुम दोनों को, हे मित्र और वरुण!, सत्यनियम का इच्छुक,*
*द्युलोक से महान् से, पृथिवीलोक से अथवा, देने के लिये (समर्थ है)।*
*सत्यनियम के स्थान में भी, तुम दोनों रक्षा करो हमारी,*
*यज्ञ की कामना वाले के लिये भी, पशुस्वामी की तरह (प्रदान करो) ऐश्वर्यों को।। १।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और सब ओर से अपनी शरण में लेकर रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! सत्यनियम के पालन की इच्छा वाला वह तुम्हारा कौन सा उपासक है, जो महान् द्युलोक से अथवा पृथिवीलोक से तुम्हारे लिये पूजाएं समर्पित करने में समर्थ है। भाव यह है, कि यह कार्य सरल नहीं है। सत्यनियम के स्थान में विद्यमान, अर्थात् सत्यनियम का पालन करने में लगे हुओं की तुम हमारी रक्षा करो। पशुओं के बीच में बैठने वाला अर्थात् सर्वतः पशुओं से घिरा हुआ प्रभूत पशुधन का स्वामी जिस प्रकार खूब दूध, घी और पशुधन प्रदान करता है, उसी प्रकार तुम भी यज्ञ आदि परोपकार के कर्मों को करने वालों को पुष्कल ऐश्वर्य प्रदान करो।

टि. देने के *लिये (समर्थ है)* - **दे**। दानाय - वे.। हविर्दात्रे - सा.। देदीप्यमानौ देवौ। अत्र छान्दसो वर्णलोपो वेति वलोपः। सुपां सुलुग् इति विभक्तेर् लुक्। दया.।

*सत्यनियम के स्थान में भी* - **ऋतस्य वा सदसि**। सत्यस्य स्थाने ऽकौटिल्ये - वे.। ऋतस्य उत्पादकस्यान्तरिक्षस्य सदसि। तद्धेतुत्वात् ताच्छब्द्यम्। सा.। सत्यस्य वा सभायाम् - दया.। or of the firmament - W. in the seat of holy Order - G.

*यज्ञ की कामना वाले के लिये* - **यज्ञायते**। यज्ञम् इच्छते - वे.। दया.। give the offerer - G.

*पशुस्वामी की तरह (प्रदान करो) ऐश्वर्यों को* - **पशुषः न वाजान्**। यथा आढ्यो ऽन्नानि। पशुषु सीदतीति पशुषः। आर्षो डः। वे.। पशुषु सीदतो वाजान् अन्नानि क्षीरदध्यादीनीव - सा.। पशून् इव वाजान् - दया.। cattle and food - W. power that winneth cattle - G.

**ते नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो अर्य॒मायुर् इन्द्रं॑ ऋभु॒क्षा म॒रुतो॑ जुषन्त।**
**नमो॑भिर् वा॒ ये दध॑ते सुवृ॒क्तिं स्तोमं॑ रु॒द्राय॑ मी॒ळ्हुषे॑ स॒जोषाः॑।। २।।**

ते। नः॒। मि॒त्रः। वरु॑णः। अ॒र्य॒मा। आ॒युः। इन्द्रः॑। ऋ॒भु॒क्षाः। म॒रुतः॑। जु॒ष॒न्त॒।
नम॑ःऽभिः। वा॒। ये। दध॑ते। सु॒ऽवृ॒क्तिम्। स्तोम॑म्। रु॒द्राय॑। मी॒ळ्हुषे॑। स॒ऽजोषाः॑।। २।।

*वे हमें मित्र, वरुण, अर्यमा, वायु,*
*इन्द्र, ऋभुक्षा और मरुत्, प्यार करें।*
*और नमस्कारों के साथ जो धारण करते हैं, सुनिर्मित को,*
*स्तोत्र को, रुद्र के लिये सुखसेचक के लिये, समान प्रीति वाले।। २।।*

सर्वशक्तिमान् परमात्मा की विनाश से त्राण करने वाली, सब ओर से अपनी शरण में लेकर रक्षा करने वाली, हिंसक आसुरी शक्तियों को नियन्त्रण में करने वाली, वायु नाम वाली, ऐश्वर्यों को धारण करने वाली और प्राणों को धारण करने वाली दिव्य शक्तियां तथा अन्य शक्तियां, जो सब पर सुखों की वर्षा करने वाले, दुर्जनों को रुलाने वाले परमेश्वर को नमस्कारों के साथ, समान प्रीति वाली होकर सुनिर्मित स्तोत्र को धारण करती हैं, हमें अपना प्यार प्रदान करें।

टि. *वायु* - **आयुः**। आयुः सततगतिर् वायुर् उच्यते - सा.। जीवनम् - दया.। Āyu - W. G.

*ऋभुक्षाः* - **ऋभुक्षाः**। महान् - वे.। महान् विद्वान् - दया.।

*प्यार करें* - **जुषन्त**। सेवन्ताम् - सा.। who accept pious praise - W. may love us - G.

*सुनिर्मित को स्तोत्र को* - **सुवृक्तिं स्तोमम्**। सुवृक्तं स्तोमम् - वे.। शोभनपापादिवर्जनवत् स्तोत्रम् - सा.। सुवृक्तिम् सुष्ठुवर्जनम् - दया.। hymn and laud - G.

*सुखसेचक के लिये* - **मीळ्हुषे**। सेक्त्रे - वे.। सुखं सिञ्चते - दया.। to the showerer (of benefits) - W. with bounteous (Rudra) - G.

*समान प्रीति वाले* - **सजोषाः**। सजोषसः। वचनव्यत्ययः।। सङ्गताः - वे.। सजोषसः सह प्रीयमाणाः - सा.। समानप्रीतिसेविनः - दया.। who of one mind - G.

**आ वां॒ येष्ठा॑श्विना हु॒वध्यै॒ वात॑स्य॒ पत्म॑न् रथ्य॑स्य पु॒ष्टौ।**
**उ॒त वा॑ दि॒वो असु॑राय॒ मन्म॒ प्रान्धां॑सीव॒ यज्य॑वे भरध्वम्।। ३।।**

आ। वा॒म्। येष्ठा॑। अ॒श्वि॒ना॒। हु॒वध्यै॑। वात॑स्य। पत्म॑न्। रथ्य॑स्य। पु॒ष्टौ।
उ॒त। वा॒। दि॒वः। असु॑राय। मन्म॑। प्र। अन्धां॑सिऽइव। यज्य॑वे। भ॒र॒ध्व॒म्।। ३।।

*इस ओर तुम दोनों श्रेष्ठ नियन्ताओं को, हे अश्वियो!, बुलाना चाहता हूँ मैं,*
*वायु के वेग वाले की, रथ में जुतने वाले अश्व की पुष्टि के निमित्त।*
*अपि च, द्युलोक के बलवान् स्वामी के लिये, स्तुति को,*

*प्रकर्ष से, हवि के अन्नों को जैसे यज्ञकामी के लिये, ले चलो तुम।। ३।।*

हे प्राण और अपान! तुम दोनों शरीर और मन को उत्तम रीति से नियन्त्रण में रखने वाले हो। मैं उपासक तुम दोनों को वायु की गति के समान गति वाले और इस शरीररूपी रथ में जुतने वाले आत्मा की पुष्टि के लिये बुलाता हूँ। जिस प्रकार यज्ञ की कामना वाले देवता को आहुतियां समर्पित की जाती हैं, उसी प्रकार तुम और शरीर में स्थित अन्य दिव्य शक्तियां हृदयरूपी आकाश में स्थित जीवात्मा के लिये स्तुतियों को ले चलो।

टि. *श्रेष्ठ नियन्ताओं को* - **येष्ठा**। यातृतमौ - वे.। कामानां यन्तृतमौ - सा.। अतिशयेन नियन्तारौ - दया.। the restrainers (of desires) - W. swiftest of those who travel - G.

*वायु के वेग वाले की* - **वातस्य पत्मन्**। वातस्य पतने - वे.। धर्मसाम्याद् धर्मिग्रहणम्। वायु-समानगतेर् अश्वस्य - सा.। वायोः पत्मनि मार्गे - दया.। with the swiftness of the wind - W. with the wind's flight - G.

*रथ में जुतने वाले की* - **रथ्यस्य**। रथे नियुज्यमानस्य अश्वस्य - वे.। रथस्य - सा.। रथे याने भवस्य - दया.। for the acceleration of your chariot - W. (to feed) the car-horse - G.

*द्युलोक के बलवान् स्वामी के लिये* - **दिवः असुराय**। दिवः आगत्य प्राज्ञाय स्तोत्रे मह्यम् - वे.। दिवो द्योतमानाय। चतुर्थ्यर्थे षष्ठी। असुराय प्राणापहर्त्रे रुद्राय। यद्वा। द्युलोकसम्बन्धिने ऽसुराय प्राणदात्रे सूर्याय वायवे वा। सा.। तेजस्वी प्राणदाता रुद्र के लिये - सात.। to the celestial destroyer of life - W. to the Asura of the heaven - G.

*यज्ञकामी के लिये* - **यज्यवे**। यजमानाय - वे.। यागसाधकाय - सा.। यज्ञानुष्ठानाय यजमानाय वा - दया.। to the accomplisher of the sacrifice - W. to the worshipful - G.

**प्र सुक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः।**
**पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजिं न जग्मुर् आश्वश्वतमाः।। ४।।**

प्र। सुक्षणः। दिव्यः। कण्वऽहोता। त्रितः। दिवः। सऽजोषाः। वातः। अग्निः।
पूषा। भगः। प्रऽभृथे। विश्वऽभोजाः। आजिम्। न। जग्मुः। आश्वश्वऽतमाः।। ४।।

*प्रकर्ष से विजयशील, द्युलोकवासी, मेधावियों से आह्वान किया जाने वाला,*
*तीनों स्थानों में व्याप्त (इन्द्र), सूर्य के साथ समान प्रीति वाला, वायु, अग्नि।*
*पूषा, भग, प्रभरण वाले जीवनयज्ञ में (विचरते हैं), सब का पालन करने वाले,*
*युद्ध में जिस प्रकार गमन करते हैं, आशुगति अश्वों वालों में श्रेष्ठ।। ४।।*

दुष्ट आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने वाली, प्रकाशलोक में निवास करने वाली, उपासकों के द्वारा आह्वान की जाने वाली, तीनों लोकों में व्याप्त और सूर्य के साथ सहयोग करने वाली, परमेश्वर की इन्द्रनामक शक्ति, प्राणप्रेरक वायु, सब में निवास करने वाला अग्नि, परमेश्वर की भरण-पोषण करने वाली शक्ति और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली शक्ति, ये सब दिव्य शक्तियां हमारे जीवनयज्ञ में हमें सन्मार्ग दिखाती हुईं और हमारा उपकार करती हुईं इस प्रकार विचरण करती हैं, जिस प्रकार शीघ्रगामी अश्वों वाले योद्धा युद्धक्षेत्र में विजयें प्राप्त करते हुए विचरण करते हैं।

टि. *विजयशील* - **सक्षणः**। सचनशीलः सविता - वे.। सक्षणो यज्ञं सेवमानः शत्रूणां सोढा वा - सा.। सोढा - दया.। the accepter of sacrifice - W. Victor - G.

*मेधावियों से आह्वान किया जाने वाला* - **कण्वहोता**। कण्व इति मेधाविनाम (निघ. ३.१५), प्राज्ञा यस्य सवितुः ह्वातारो भवन्ति - वे.। कण्वा ऋषयो मेधाविनो वा होतार आह्वातारो यस्य स तथोक्तः - सा.। कण्वो मेधावी चासौ होता दाता च - दया.। of whom the Kaṇvas are the priests -W. he whose priest is Kaṇva - G.

*तीनों स्थानों में व्याप्त* - **त्रितः**। त्रिस्थान इन्द्र इति यास्कः (९.२५) - वे.। त्रिषु क्षित्यादिस्थानेषु तायमानः - सा.। त्रिषु क्षित्युदकान्तरिक्षेषु वर्धमानः - दया.। Trita - W. G.

*सूर्य के साथ समान प्रीति वाला* - **दिवः सजोषाः**। सूर्येण सह समानगतिः समानप्रीतिर् वा - सा.। दिव्याः कामनाः सहैव सेवमानः - दया.। concurring in satisfaction with (the ruler of) heaven - W. with Dyaus accordant - G.

*प्रभरण वाले जीवनयज्ञ में* - **प्रभृथे**। यज्ञगृहे - वे.। प्रभरणवत्यस्मिन् यज्ञे - सा.। शुद्धकरणे व्यवहारे - दया.। (come quickly) to the sacrifice - W. sought the oblation - G.

*सब का पालन करने वाले* - **विश्वभोजाः**। विश्वस्य रक्षका देवाः - वे.। विश्वरक्षकाः कृत्स्नात्तारो वा - सा.। यो विश्वं भुनक्ति पालयति सः - दया.। protectors of the universe - W. all-feeding - G.

*आशुगति अश्वों वालों में श्रेष्ठ* - **आश्वश्वतमाः**। अतिशयेन वेगवदश्वाः - वे.। प्रकृष्ट-गमनाश्ववतां श्रेष्ठाः सन्तः - सा.। आशवः सद्योगामिनो अश्वा विद्यन्ते येषां ते - दया.। fleetest coursers - W. whose steeds are fleetest - G.

**प्र वो र॒यिं यु॒क्ताश्वं॑ भरध्वं रा॒य एषे ऽव॑से दधीत॒ धीः।**
**सु॒शेव॒ एवै॑र् औशि॒जस्य॒ होता॒ ये व॒ एवा॑ मरुतस् तु॒राणा॑म्।। ५।। १३।।**

प्र। व॒ः। र॒यिम्। यु॒क्तऽअ॑श्वम्। भ॒रध्व॒म्। रा॒यः। एषे॑। अव॑से। द॒धी॒त॒। धीः।
सु॒ऽशेव॑ः। एवैः॑। औ॒शि॒जस्य॑। होता॑। ये। व॒ः। एवा॑ः। म॒रु॒त॒ः। तु॒राणा॑म्।। ५।।

*प्रकर्ष से अपने धन को, जुते हुए अश्वों वाले को, (हमें) लाओ तुम,*
*धन की प्राप्ति के लिये, रक्षा के लिये, प्रदान करो बुद्धियों को।*
*उत्तम सुखों वाला (होवे), मार्गों से, मेधावी के पुत्र के, दाता,*
*जो तुम्हारे मार्ग हैं, हे मरुतो!, त्वरा से युक्त गति वालों के।। ५।।*

हे परमेश्वर की सहायक शक्तियो! तुम अश्वों से जुते हुए रथों से सब ओर से हमारे लिये अपने उत्तम ऐश्वर्यों को लाओ। प्रभूत मात्रा में हमें ऐश्वर्य प्रदान करो। तुम इन उत्तम धनों की प्राप्ति और रक्षा के लिये हमें उत्तम बुद्धियां भी प्रदान करो। हे दिव्य शक्तियो! तीव्र गति वालों के तुम्हारे जो सन्मार्ग हैं और शोभन कामनाओं वाले उपासक की कुलपरम्परा में उत्पन्न होने वाले सज्जनों के जो मार्ग हैं, दूसरों को देने वाला उपासक उन मार्गों से चलकर उत्तम सुखों को प्राप्त करने वाला होवे।

टि. *प्राप्ति के लिये, रक्षा के लिये* - **एषे अवसे**। अन्वेषणाय रक्षणाय - वे.। एषे प्राप्तुम्।

अवसे। अव इत्यन्ननाम। अन्नाय प्राप्तानां धनानां रक्षणाय वा। सा.। प्राप्तुं रक्षणाद्याय च - दया.। to acquire and preserve - W. for help and gain - G.

*प्रदान करो बुद्धियों को* - **दधीत धीः**। धारयत कर्माणि - वे.। धीः स्तोता दधीत धारयति स्तुतिम्। सा.। धरत प्रज्ञाः - दया.। the wise man offers you praise - W. let thought be framed - G.

*मार्गों से* - **एवैः**। एवाः गतयः तैः कामैः - वे.। गन्तव्यैः कामैः - सा.। प्रापणैः - दया.। by swift-going horses - W. through courses - G.

*मेधावी के पुत्र के* - **औशिजस्य**। कक्षीवतः - वे.। सा.। कामयमानस्यापत्यस्य - दया.।

*दाता* - **होता**। दाता। हु दानादानयोः।। होता अत्रिः - वे.। सा.। by ministrant priest - W.

**प्र वो॑ वा॒युं रथ॒युजं॑ कृणुध्वं॒ प्र दे॒वं विप्रं॑ पनि॒तार॑म् अ॒र्कैः।**
**इ॒षु॒ध्यव॑ ऋ॒त॒साप॒ः पुरं॑धी॒र् वस्वी॑र् नो॒ अत्र॒ पत्नी॒र् आ धि॒ये धुः॑।। ६।।**

प्र। व॒ः। वा॒युम्। र॒थ॒ऽयुज॑म्। कृ॒णु॒ध्व॒म्। प्र। दे॒वम्। विप्र॑म्। प॒नि॒तार॑म्। अ॒र्कैः।
इ॒षु॒ध्यव॑ः। ऋ॒त॒ऽसाप॑ः। पुर॑म्ऽधीः। वस्वी॑ः। न॒ः। अत्र॑। पत्नी॑ः। आ। धि॒ये। धुर् इति॑ धुः।। ६।।

*प्रकर्ष से अपने प्राणवायु को, रथ में जुतने वाला बनाओ तुम,*
*प्रकर्ष से द्युतिमान् को, मेधावी को, स्तुति करने वाले को स्तोत्रों से।*
*कामनाओं वाली, सत्यनियम का सेवन करने वाली, बहुत धारण करने वाली,*
*बसाने वाली, हमको यहाँ पालक दिव्य शक्तियां, सर्वतः चिन्तन में स्थापित करें।। ६।।*

हे मनुष्यो! तुम दिव्य गुणों वाले, बुद्धि प्रदान करने वाले, स्तोत्रों से प्रभु की स्तुति करने वाले, अपने प्राणवायु को अपने शरीररूपी रथ में भली प्रकार जोतो। कामनाओं को पूर्ण करने वाली, सत्यनियम का पालन करने वाली, बहुत गुणों को धारण करने वाली, बसाने वाली और इस जीवन में हमारा पालन करने वाली ईश्वरीय शक्तियां सर्वतः हमें चिन्तन, मनन आदि में स्थापित करें।

टि. *स्तुति करने वाले को स्तोत्रों से* - **पनितारम् अर्कैः**। अर्कैः देवानां स्तोतारम् - वे.। पनितारम्। कर्मणि कर्तृप्रत्ययः। स्तुत्यम् इत्यर्थः। फलदातारं वा। अर्कैर् अर्चनसाधनैर् मन्त्रैः। सा.। who praises with his song - G.

*कामनाओं वाली* - **इषुध्यवः**। इषुध्यतिः इच्छाकर्मा। इच्छन्त्यः। वे.। गन्त्र्यः - सा. the light-moving - W. praying - G.

*सत्यनियम का सेवन करने वाली* - **ऋतसापः**। यज्ञं स्पृशन्त्यः - वे.। सा.। सत्यसम्बन्धाः - दया.। accepters of sacrifice - W. devout - G.

*बसाने वाली* - **वस्वीः**। वसुमत्यः - वे.। प्रशंस्याः - सा.। बहुपदार्थयुक्ताः - दया.। excellent - W. prudent - G.

*पालक दिव्य शक्तियां* - **पत्नीः**। देवपत्न्यः - वे.। सा.। wives (of the gods) - W. G.

*चिन्तन में स्थापित करें* - **धिये धुः**। कर्मणे आ अदधुः - वे.। धिये कर्मणे तन्निष्पत्तये आ धुः। आगतवत्यः। सा.। प्रज्ञायै दध्युः - दया.। may come to our rite - W. may in their thoughts retain us - G.

**उप॑ व॒ एषे॒ वन्द्ये॑भिः शू॒षैः प्र य॒ह्वी दि॒वश् चि॒तय॑द्भिर् अ॒र्कैः।**
**उ॒षासा॒नक्ता॑ वि॒दुषी॑व॒ विश्व॒म् आ हा॑ वहतो॒ मर्त्या॑य य॒ज्ञम्।। ७।।**

उप॑। व॒ः। एषे॑। वन्द्ये॑भिः। शू॒षैः। प्र। य॒ह्वी इति॑। दि॒वः। चि॒तय॑त्ऽभिः। अ॒र्कैः।
उ॒षसा॒नक्ता॑। वि॒दुषी॑ इ॒वेति॑ वि॒दुषी॑ऽइव। विश्व॑म्। आ। ह॒। व॒ह॒तः। मर्त्या॑य। य॒ज्ञम्।। ७।।

*पास तुम्हारे भेजता हूँ (आहुति को), वन्दनीय सुखकर (अन्य) देवों के साथ,*
*प्रकर्ष से, महान् तुम दोनों के पास, द्युलोक के, प्रज्ञापक स्तोत्रों के साथ।*
*दिन और रात (तुम दोनों), दो विदुषी स्त्रियों की तरह, सम्पूर्ण को,*
*सब ओर से वहन करते हो, मनुष्य के लिये यज्ञ को।। ७।।*

दिन और रात परमेश्वर की दो महान् दिव्य शक्तियां हैं। दोनों ही विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। एक काम के लिये है तो दूसरी विश्राम के लिये। उपासक कह रहा है, कि ज्ञान, प्रकाश आदि प्रदान करने वाले वन्दनीय और सुखकर अन्य देवताओं के साथ मैं तुम्हें भी अपनी हवि ज्ञानवर्धक स्तोत्रों के साथ समर्पित करता हूँ। आप इसे सहर्ष स्वीकार करें। हे दिन और रात! तुम दो विदुषी स्त्रियों की तरह सम्पूर्ण यज्ञ को यजमान के लिये वहन करते हो, उसे उसके लिये प्रेरित करते हो और उसके सम्पादन में उसे समर्थ करते हो।

टि. *पास तुम्हारे भेजता हूँ* - **उप वः एषे**। उप प्र गच्छतो युष्मान् वे.। उपप्रापयामि हविः - सा.। I present (the oblation) - W. I speed to you - G.

*वन्दनीय सुखकर अन्य देवों के साथ* - **वन्द्येभिः शूषैः**। स्तुत्यैः सुखैः कल्याणैः वे.। वन्दनार्हैर् इतरैर् देवैः सह। शूषैः सुखकरैर् (मन्त्रैः)। सा.। वन्दितुं स्तोतुं योग्यैः बलैः - दया.। with powers that should be honoured - G.

*प्रज्ञापक स्तोत्रों के साथ* - **चितयद्भिः अर्कैः**। स्तोत्रैर् मया प्रयुज्यमानैर् आत्मगुणान् चेतयद्भिः वे.। ज्ञापयद्भिर् मन्त्रैः सा.। ज्ञापयद्भिः पूजनीयैर् विद्वद्भिः सह - दया.। with prayers (delighting and) explicit - W. with songs distinguishing - G.

**अ॒भि वो॑ अर्चे पो॒ष्याव॑तो॒ नॄन् वास्तो॒ष्पतिं॒ त्वष्टा॑रं॒ ररा॑णः।**
**धन्या॑ स॒जोषा॑ धि॒षणा॒ नमो॑भि॒र् व॒नस्पतीँ॒र् ओष॑धी रा॒य एषे॑।। ८।।**

अ॒भि। व॒ः। अ॒र्चे॒। पो॒ष्याऽव॑तः। नॄन्। वास्तोः॑। पति॑म्। त्वष्टा॑रम्। ररा॑णः।
धन्या॑। स॒ऽजोषाः॑। धि॒षणा॑। नमः॑ऽभिः। व॒नस्पती॑न्। ओष॑धीः। रा॒यः। एषे॑।। ८।।

*मुख्यतया तुम्हें पूजता हूँ मैं, पोष्य जनों वाले मनुष्यों को,*
*निवास के पालक को; जग के निर्माता को, हवि देता हुआ।*
*धनार्ह, समान प्रीति वाली, वाणी (है जो), नमस्कारों के साथ,*
*बड़े-बड़े वृक्षों को, ओषधियों को, धन की प्राप्ति के लिये।। ८।।*

मैं मुख्य रूप से उन मनुष्यों का आदर-सत्कार करता हूँ, जो अपने घरों में वृद्ध माता-पिता, असहाय बहन, बुआ, सेवक आदि भृत्यवर्ग तथा निर्धन मनुष्यों को भोजन, वस्त्र आदि देकर उनका पालन-पोषण करते हैं। मैं हवि प्रदान करके जगत् के कर्ता (त्वष्टा) और इस संसाररूपी निवास का

पालन करने वाले (वास्तोष्पति) की पूजा-अर्चना करता हूँ। मैं नमस्कारों के साथ ऐश्वर्यों को प्राप्त कराने वाली और सब के साथ प्रीति उत्पन्न कराने वाली वाणी का सम्मान करता हूँ। मैं अपनी आजीविका के लिये धनप्राप्तिहेतु अश्वत्थ, वट आदि बड़े-बड़े वृक्षों तथा यव आदि अन्नों और सोम आदि जड़ी-बूटियों का आदर-सत्कार करता हूँ।

टि. - *पोष्य जनों वाले मनुष्यों को* - **पोष्यावतः नॄन्।** पोष्यधनयुक्तान् नेतॄन् देवान् - वे.। बहुपोष्यजनयुक्तान् कर्मनेतॄन् - सा.। पोष्यावतः बहवः पोष्याः पोषणीया विद्यन्ते येषां तान् नॄन् मनुष्यान् - दया.। the nourishers of heroes - G.

*निवास के पालक को* - **वास्तोः पतिम्।** निवासस्थानस्य पालकम् - दया.। the lord of foundations - W.

*जग के निर्माता को* - **त्वष्टारम्।** तेजस्विनम् - दया.।

*हवि देता हुआ* - **रराणः।** स्तोत्रादिभिः क्रीडन् - सा.। दाता - दया.। gratifying (with oblations) - W. bringing you gifts - G.

*वाणी* - **धिषणा।** स्तुत्या - वे.। वाङ्नामैतत्। वाग्देवता। एता द्वितीयार्थे प्रथमाः। उक्तलक्षणां वाणीम् - सा.। प्रज्ञा - दया.। the goddess of speech - W. Dhiṣṇā - G.

**तुजे नस् तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः।**
**पनित आप्त्यो यजतः सदा नो वर्धान् नः शंसं नर्यो अभिष्टौ।। ९।।**

तुजे। नः। तने। पर्वताः। सन्तु। स्वऽएतवः। ये। वसवः। न। वीराः।
पनितः। आप्त्यः। यजतः। सदा। नः। वर्धात्। नः। शंसम्। नर्यः। अभिष्टौ।। ९।।

*दान के लिये हमारे, विस्तीर्ण के लिये, मेघ होवें (वृष्टि के द्वारा),*
*स्वैरगति जो (हितैषी हैं हमारे), बसाने वालों की तरह वीरों की।*
*स्तुति किया हुआ, प्राप्ति के योग्य, पूजनीय, सदा (बढ़ाए) हमको,*
*बढ़ाए हमारी स्तुति को, नरहितकारी, अभीष्टसिद्धि के निमित्त।। ९।।*

दीनों और असहायों की सहायता करके उन्हें बसाने वाले क्षत्रिय वीरों की तरह प्रजाओं को बसाने वाले, स्वेच्छानुसार विचरण करने वाले मेघ अपनी जलवृष्टि के द्वारा हमें विस्तीर्ण धन प्राप्त कराने वाले होवें। उपासकों से स्तुति किया हुआ, प्राप्ति के योग्य, पूजनीय, नरहितकारी परमदेव सदा हमें बढ़ाने वाला और अभीष्ट की सिद्धि के लिये हमारी स्तुतियों को बढ़ाने वाला होवे।

टि. *दान के लिये हमारे, विस्तीर्ण के लिये* - **तुजे नः तने।** पुत्रे तत्पुत्रे चास्माकम् - वे.। तने विस्तृते तुजे दाने। यद्वा। तनेति पुत्रनाम। षष्ठ्यर्थे चतुर्थी। पुत्रस्य दान इत्यर्थः। अथवा नस् तुजे पुत्रे तने तत्पुत्रे च। सा.। दाने विस्तीर्णे - दया.। in liberal donations - W. for offspring - G.

*मेघ* - **पर्वताः।** मेघाः - वे.। पर्वताः पर्ववन्तः पूरणवन्तो वा मेघाः - सा.। जलप्रदा मेघा इव - दया.। the Parvatas - W. G.

*स्वैरगति* - **स्वैतवः।** स्वायत्तगतयः - वे.। शोभनगमनाः - सा.। दया.। favourable - W. free-moving - G.

*बसाने वालीं की तरह वीरों की* - **वसवः न वीराः।** वासयितारः वीराः इव - वे.। जगतो वासयितारो वीरा इव - सा.। पृथिव्यादय इव प्रज्ञाशरीरबलयुक्ताः - दया.। establishers (of the world) like heroes - W. heroes like the Vasus - G.

*स्तुति किया हुआ* - **पनितः।** स्तुतः - वे.। सा.। दया.। adored - W. exalted - G.

*प्राप्ति के योग्य* - **आप्त्यः।** अद्भ्यो जातः - वे.। आप्तः आप्तव्यः सर्वैः - सा.। आप्तेषु भवः - दया.। accessible (to all) - W. the Āptya - G.

**वृष्णो॑ अस्तोषि भू॒म्यस्य॒ गर्भं॑ त्रि॒तो नपा॑तम् अ॒पां सु॑वृ॒क्ति।**
**गृ॒णी॒ते अ॒ग्निर् ए॒तरी॒ न शू॒षैः शो॒चिष्के॑शो॒ नि रि॑णाति॒ वना॑ ।। १०।। १४।।**

वृष्णः॑। अ॒स्तो॒षि॒। भू॒म्यस्य॑। गर्भ॑म्। त्रि॒तः। नपा॑तम्। अ॒पाम्। सु॒ऽवृ॒क्ति।
गृ॒णी॒ते। अ॒ग्निः। ए॒तरि॑। न। शू॒षैः। शो॒चिःऽके॑शः। नि। रि॒णा॒ति॒। वना॑ ।। १०।।

*वृष्टि करने वाले के, स्तुति करता हूँ मैं, भूमि के हितकर के, गर्भ की,*
*तीर्णतम, पौत्र की जलों के, सुष्ठु काट-छाँट कर निर्मित स्तुतियों से।*
*शब्द करता है अग्नि, गन्ता अश्व की तरह, बलों के साथ,*
*दाहक ज्वालाओं वाला, भस्म कर डालता है वनों को।। १०।।*

*अधिदेव :* उपासना में सबसे आगे बढ़ा हुआ मैं स्तोता अपनी सुन्दरनिर्मित स्तुतियों के साथ जलों की वर्षा करने वाले और इस प्रकार अन्न, ओषधि आदि की उत्पत्ति के द्वारा भूमि का हित साधने वाले मेघ के गर्भभूत, जलों की परम्परा में उत्पन्न होने वाले वैद्युताग्नि की स्तुति करता हूँ। दाहक ज्वालाओं वाला यह अग्नि गमन करते समय हिनहिनाते हुए अश्व की तरह अपने बलों के साथ ध्वनि करता है और अपनी ज्वालाओं से बनों को भस्म कर डालता है।

*अध्यात्म :* परमेश्वर सुख और शान्ति की वर्षा करने वाला है। वह हमें सब प्रकार के सुखों के साधनों को प्राप्त कराता है। वह दुष्ट, हिंसक शक्तियों के विनाश के लिये स्वयं ही अपने अन्दर से क्रोधाग्नि को उत्पन्न करके उन दुष्ट आसुरी शक्तियों को भस्म करता रहता है। हम देवपूजकों का पुनीत कर्तव्य है, कि उसके द्वारा निर्मित किये हुए नियमों का पालन करते हुए देवों के पक्ष की सदा वृद्धि करते रहें।

टि. *स्तुति करता हूँ मैं* - **अस्तोषि।** स्तुतवान् अस्मि - वे.। सा.। प्रशंससि - दया.। I glorify - W. (Trita) praised (him) - G.

*भूमिहितकर के* - **भूम्यस्य।** भूमिहितस्य पर्जन्यस्य - वे.। भूमिर् अन्तरिक्षम्। तदर्हस्य। सा.। अथवा। भूम्यो भूमेर् एवार्हः तदुचितवृष्टिप्रदानात्। तादृशस्य मेघस्य। सा.। भूमौ भवस्य - दया.। of the earth- fertilizing (rain) - W. of the earthly hero - G.

*तीर्णतम* - **त्रितः।** त्रिस्थानो ऽहम् अत्रिः - वे.। तीर्णतमः त्रिषु स्थानेष्वन्येषु त्रित्वापन्नेषु तायमानो ऽग्निः - सा.। त्रिषु वर्द्धकः - दया.। who is threefold - W. Trita - G.

*काट-छाँट कर निर्मित स्तुतियों से* - **सुवृक्ति।** छान्दसो विभक्तिलोपः।। सुवृक्तिभिः - वे.। स्तोत्रकर्मैतत्। शोभनपापादिवर्जनवता स्तोत्रेण। सा.। सुष्ठु व्रजन्ति यस्मिंस् तम् - दया.। with

unqualified praise - W.with pure songs - G.

*अश्व की तरह* - **एतरि न**। एतरि पुरुषे (सुखैः) न - वे.। गन्तरि मयि न (गृणीते न गरणं कुरुते न क्रुध्यतीत्यर्थः) - सा.। एतरी प्राप्नुवन्ती न इव - दया.। like a charger - G.

*बलों के साथ* - **शूषैः**। सुखैः - वे.। सुखकरै रश्मिभिः - सा.। बलैः - दया.। with his withering rays - W. with might - G.

*भस्म कर डालता है वनों को* - **नि रिणाति वना**। उदकानि निर्गमयति - वे.। वना वनानि नि रिणाति हिनस्ति दहतीत्यर्थः - सा.। गच्छति प्राप्नोति वा किरणान् - दया.। consumes the forests - W. destroys the forests - G.

**कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम कद् राये चिकितुषे भगाय।**
**आप ओषधीर् उत नोऽवन्तु द्यौर् वना गिरयो वृक्षकेशाः।। ११।।**

कथा। महे। रुद्रियाय। ब्रवाम। कत्। राये। चिकितुषे। भगाय।
आपः। ओषधीः। उत। नः। अवन्तु। द्यौः। वना। गिरयः। वृक्षऽकेशाः।। ११।।

*कैसे महान् रौद्र रूप वाले के लिये, प्रशंसावचन कहें हम,*
*कब धन के लिये, (स्तुति करें हम), प्राज्ञ की भग की।*
*जल, ओषधियां भी, हमारी रक्षा करें (सदा ही),*
*आकाश, वन, (और) पर्वत, वृक्ष रूपी केशों वाले।। ११।।*

पापियों को रुलाने के लिये रौद्र रूप को धारण करने वाले उस महादेव की प्रशंसा हम किस प्रकार करें। लौकिक और अलौकिक उत्तम धनों को पाने के लिये हम उस ऐश्वर्यशाली सर्वज्ञ जगदीश की स्तुतियां कब करें। मेघों से बरसने वाले पवित्र जल, उनसे उत्पन्न होने वाले अन्न और जड़ी-बूटियां, विस्तृत आकाश और वृक्षों से ढके शिखरों वाले पर्वत सदा-सर्वदा हमारी वृद्धि करते रहें।

टि. *महान् रौद्र रूप वाले के लिये* - **महे रुद्रियाय**। महते रुद्रपुत्राय मरुद्गणाय - वे.। सा.। रुद्रैर् लब्धाय - दया.। to the mighty posterity of Rudra - W. to the great might of Rudra - G.

*प्राज्ञ की भग की* - **चिकितुषे भगाय**। जानते भगाय - वे.। सर्वं जानते भगाय एतन्नामकाय देवाय - सा.। ज्ञातव्याय ऐश्वर्याय - दया.। to the all-knowing Bhaga - W. to Bhaga who takes thought (for riches) - G.

*वृक्ष रूपी केशों वाले* - **वृक्षकेशाः**। वृक्षा एव केशस्थानीया येषां ते - सा.। वृक्षा केशा इव येषां शैलानां ते - दया.। whose tresses are trees - W. G.

**शृणोतु न ऊर्जां पतिर् गिरः स नभस् तरीयाँ इषिरः परिज्मा।**
**शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्राः परि स्रुचो बबृहाणस्याद्रेः।। १२।।**

शृणोतु। नः। ऊर्जाम्। पतिः। गिरः। सः। नभः। तरीयान्। इषिरः। परिऽज्मा।
शृण्वन्तु। आपः। पुरः। न। शुभ्राः। परि। स्रुचः। बबृहाणस्य। अद्रेः।। १२।।

*सुने हमारी, बलों का पालक (वायु), स्तुतियों को,*

*वह नभचारी, गमनशील, पृथिवी की परिक्रमा करने वाला।*
*सुनें जल (स्तुतियों को), पुरों की तरह शुभ्र वर्णों वाले,*
*सब ओर से बरसने के स्वभाव वाले, बढ़ते हुए मेघ के।। १२।।*

बलों का स्वामी, गमन के स्वभाव वाला, आकाश में सब ओर विचरण करने वाला, पृथिवी की परिक्रमा करने वाला वायु हमारी स्तुतियों को सुने। वह जलों की वर्षा के लिये मेघों को घेरकर लाता रहे। वृद्धि को प्राप्त होने वाले मेघ से सब ओर से चूने वाले धवल पुरों के समान स्वच्छ जल भी हमारी प्रार्थनाओं को सुनें। वे धरती पर बरसकर पवित्र अन्नों और जड़ीबूटियों को उत्पन्न करें, जिससे देवों को हवि पहुँचती रहे और वे प्रसन्न होकर धरती पर सुखों की वर्षा करते रहें।

टि. *बलों का पालक* – **ऊर्जां पतिः।** अन्नानां पतिः वायुः – वे.। बलानां पतिर् वायुः। अथवा ऊर्जाम् अन्नानां पतिः। सा.। बलयुक्तानां सेनानाम् अन्नादीनां वा स्वामी पालकः – दया.। lord of vigour - W. Lord of refreshments - G.

*नभचारी* – **नभः तरीयान्।** नभसः अतिशयेन तरिता – वे.। नभो नभसि चारी तरीयान् तरितव्यः – सा.। who traverses the firmament - W. who speeds through cloudy heaven - G.

*गमनशील* – **इषिरः।** गमनशीलः – वे.। सा.। गन्तव्यः – दया.।

*पृथिवी की परिक्रमा करने वाला* – **परिज्मा।** परितो गन्ता – वे.। सा.। दया.। the circumambient - W.

*सब ओर से बरसने के स्वभाव वाले* – **परि स्रुचः।** स्रवन्त्य आपः – वे.। परितः सरणशीलाः – सा.। सर्वतः गमनशीलाः – दया.। flowing round - W. as they flow onward - G.

*बढ़ते हुए मेघ के* – **बबृहाणस्य अद्रेः।** वर्धमानस्य मेघस्य – वे.। सा.। प्रवृद्धस्य मेघस्य – दया.। the towering mountains - W. from the cloven moutain - G.

**वि॒दा चि॒न् नु म॒हान्तो॒ ये व॒ एवा॒ ब्रवा॑म दस्मा॒ वार्यं॒ दधा॑नाः।**
**वय॑श् च॒न सु॒भ्व१॒ आव॑ यन्ति क्षु॒भा मर्त॒म् अनु॑यतं वध॒स्नैः।। १३।।**

वि॒द। चि॒त्। नु। म॒हा॒न्तः॒। ये। व॒ः। एवाः॑। ब्रवा॑म। द॒स्मा॒ः। वार्य॑म्। दधा॑नाः।
वय॑ः। च॒न। सु॒ऽभ्व॑ः। आ। अव॑। य॒न्ति॒। क्षु॒भा। मर्त॑म्। अनु॑ऽयतम्। व॒ध॒ऽस्नैः।। १३।।

*जानते ही हैं हम निश्चय से, हे महानो!, जो तुम्हारे मार्ग हैं,*
*स्तुति करते हैं हम (तुम्हारी), हे हिंस्रहिंसको!, वरणीय को धारण करते हुए।*
*पक्षी भी नहीं होनहार, नीचे उतरते हैं (डर के मारे),*
*क्षोभ से युक्त मनुष्य के पास, पीछा करने वाले के, आयुधों से।। १३।।*

हे महिमा से युक्त परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हम तुम्हारी कार्यपद्धतियों को भली प्रकार जानते हैं। तुम तो सदा ही हमारे प्रति दया की भावना रखने वाली और हमारा हित चाहने वाली हो। हे दुष्टों तथा दुःखों का विनाश करने वालियो! इसी लिये हम अपनी उत्तम भेंटों को तुम्हें समर्पित करने के लिये तुम्हारी शरण में आए हैं। हम तुम्हारी स्तुतियों का गान करते हैं। यदि तुम हिंसक और निर्दय होतीं तो हम कभी तुम्हारे पास भी न फटकते। हम जानते हैं, कि जीवन बचाने की इच्छा वाले पक्षी

भी क्रोध में आए हुए और हथियारों को हाथ में लेकर पीछा करने वाले बहेलिये के पास कभी नीचे धरती पर नहीं उतरते।

टि. *जानते ही हैं हम* - **विद चित्**। जानीत - वे.। जानीथ स्तोत्रम् - सा.। विद विजानीत। अत्र द्व्यचो ऽतस् तिङ इति दीर्घः। चिद् अपि। दया.। we know - G.

*जो तुम्हारे मार्ग हैं* - **ये वः एवाः**। ये पुरुषाः युष्मान् प्रति गन्तारः - वे.। वो युष्मान् य एवा गन्तारो युष्मान् भजमानाः। यद्वा। ये यूयम् अस्मद्यज्ञम् अभिगन्तारः। सा.। your ways - G.

*वरणीय को धारण करते हुए* - **वार्यम् दधानाः**। वरणीयं हविः दधानाः - वे.। वरणीयं हविर् ददाना धारयन्तो वा - सा.। वरणीयं सुखं दधानाः - दया.।

*पक्षी भी नहीं* - **वयः चन**। पक्षिण इव वृक्षात् - वे.। आगन्तारश् चैते मरुतः - सा.। जीवनम् अपि - दया.। even (strong) birds (descend) not - G.

*होनहार* - **सुभ्वः**। द्युलोकात् -वे.। सुष्ठु भवन्तः प्रवृद्धाः - सा.। ये शोभनेषु कर्मसु भवन्ति - दया.। well-disposed - W. strong - G.

*आवेश से युक्त* - **क्षुभा**। क्षोभकेण शत्रुणा - वे.। क्षोभकेण सहितम् - सा.। by agitation - W. with swift blow - G.

*आयुधों से (युक्त)* - **वधस्नैः**। प्रहारैः - वे.। आयुधैः प्रहरन्तः - सा.। with their weapons - W. with weapons - G.

**आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश् चाच्छा सुमखाय वोचम्।**
**वर्धन्तां द्यावो गिरश् चन्द्राग्रा उदा वर्धन्ताम् अभिषाता अर्णाः।। १४।।**

आ। दैव्यानि। पार्थिवानि। जन्म। अपः। च। अच्छ। सुऽमखाय। वोचम्।
वर्धन्ताम्। द्यावः। गिरः। चन्द्रऽअग्राः। उदा। वर्धन्ताम्। अभिऽसाताः। अर्णाः।। १४।।

*सब ओर से देवलोकवासियों को, भूलोकवासियों को, जीवों को,*
*अन्तरिक्षवासियों को, इस ओर, शोभन यज्ञ के लिये बुलाता हूँ मैं।*
*वृद्धि को प्राप्त होवें प्रकाशमान वेदवाणियां, आह्लादक ऊँचाइयों वाली,*
*जल से वृद्धि को प्राप्त होवें, अनेक रूपों में विभक्त हुए, जलाशय।। १४।।*

मैं पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ - इन तीनों लोकों के प्राणियों को अपने यज्ञ में, अपने उत्सव में, अपनी खुशियों में सम्मिलित होने के लिये अपने पास बुलाता हूँ। मैं सब जीवों को अपने साथ प्रसन्न देखना चाहता हूँ। बहुत ऊँची प्रसन्नताओं को प्रदान करने वाली ज्ञान से भरपूर वेदवाणियां वृद्धि को प्राप्त होवें, जिनके गान से हमें आनन्द की प्राप्ति होती रहे। नदी, सरोवर, झील, समुद्र आदि अनेक रूपों में विभक्त जल वृद्धि को प्राप्त होते रहें, जिनसे चारों दिशाओं में सुख और समृद्धि का साम्राज्य स्थापित हो जाए।

टि. *जीवों को* - **जन्म**। जातानि धनानि - वे.। जन्मानि - सा.। दया.। generations - G.

*अन्तरिक्षवासियों को* - **अपः**। अपो ऽप्स्वन्तरिक्षे भवानीत्यर्थः।। वृष्टिलक्षणाः अपः - वे.। अपसा - सा.। अपांसि कर्माणि - दया.। to obtain the waters - W. waters - G.

*शोभन यज्ञ के लिये बुलाता हूँ* - **सुमखाय वोचम्।** सुयज्ञाय मरुद्गणाय अभिब्रवीमि - वे.। सा.। शोभना मखा यज्ञा यस्य तस्मै उपदिशेयम् - दया.। will I summon to feasting - G.

*प्रकाशमान* - **द्यावः।** द्योतमानाः - वे.। स्वप्रतिपाद्यार्थप्रकाशिन्यः - सा.। days - G.

*आह्लादक ऊँचाइयों वाली* - **चन्द्राग्राः।** हिरण्याग्राः - वे.। आह्लादनं हिरण्यं वाग्रे यासां ताः - सा.। सुवर्णम् आनन्दो वाग्रे यासां ताः - दया.। with bright dawns - G.

*अनेक रूपों में विभक्त हुए जलाशय* - **अभिषाताः अर्णाः।** मरुद्दत्ता आपः - वे.। अर्णा नद्य अभिषाता मरुद्भिः संभक्ताः - सा.। अभितो विभक्ताः समुद्राः - दया.। conquered streams - G.

**प॒देप॑दे मे जरि॒मा नि धा॑यि॒**
**वरू॑त्री वा श॒क्रा या पा॒युभि॑श् च।**
**सिष॑क्तु मा॒ता म॒ही र॒सा न॒: स्मत्**
**सू॒रिभि॑र् ऋजु॒हस्ता॑ ऋजु॒वनि॑ः।। १५।। १५।।**

प॒देऽप॑दे। मे॒। ज॒रि॒मा। नि। धा॒यि॒। वरू॑त्री। वा॒। श॒क्रा। या। पा॒युऽभि॑ः। च॒।
सिस॑क्तु। मा॒ता। म॒ही। र॒सा। न॒ः। स्मत्। सू॒रिऽभि॑ः। ऋ॒जु॒ऽहस्ता॑। ऋ॒जु॒ऽवनि॑ः।। १५।।

*पग-पग पर मेरी स्तुति समर्पित हो रही है,*
*दुःखनिवारिका भी, शक्तिशालिनी भी है जो, रक्षणसाधनों से।*
*मिल जाए माता, महिमामयी धरित्री हमको, प्रशंसनीय ढंग से,*
*(हम) मेधावियों के निमित्त, ऋजु हाथों वाली, ऋजु दानों वाली।। १५।।*

पग-पग पर मैं उपासक अपनी स्तुति को अपने प्रभु को समर्पित कर रहा हूँ। यह स्तुति दुःखों और पापों को परे भगाने वाली, अपने रक्षणसाधनों से शक्तिशालिनी है और इसलिये मेरी रक्षा करने में समर्थ है। सबका निर्माण करने वाली, महिमामयी, अनुकूल हाथों वाली, सरल दानों वाली, सर्वविध रसों को देने वाली यह धरती माता प्रशंसनीय ढंग से हमसे मिल जाए, सदा के लिये हमारी ही हो जाए।

टि. *पग-पग पर* - **पदेपदे।** पदनिधाने पदनिधाने - वे.। तदा तदा - सा.। प्राप्तव्ये प्राप्तव्ये वेदितव्ये वेदितव्ये गन्तव्ये गन्तव्ये वा पदार्थे - दया.। continually - W. duly to each one - G.

*स्तुति* - **जरिमा।** जीर्णा - वे.। स्तुतिः - सा.। स्ताविका - दया.। praise - W. laud - G.

*दुःखनिवारिका* - **वरूत्री।** शत्रूणां वारयित्री - वे.। अस्मदुपद्रववारयित्री - सा.। वरसुखप्रदा - दया.। protectress - W. Varūtrī - G.

*मिल जाए* - **सिषक्तु।** सेवताम् - वे.। सा.। संबध्नातु - दया.। may accept - W. may befriend us - G.

*धरित्री* - **रसा।** रसवती भूमिः।। सारभूता - सा.। रसादिगुणयुक्ता - दया.। Rasā - G.

*प्रशंसनीय ढंग से* - **स्मत्।** शोभनम् - वे.। स्मच्छब्दः प्रशस्तवचनः। प्रशस्तैः (सूरिभिः मेधाविभिः)। सा.। एव - दया.।

*ऋजु दानों वाली* - **ऋजुवनिः।** प्रसारितदाना - वे.। कल्याणदाना - सा.। ऋजूनाम् अकुटिलानां

पदार्थानां संविभाजिका - दया.। the giver of good - W. striving forward - G.

**कुथा दांशेमु नमंसा सुदानूंन्**
**एवया मुरुतो अच्छोंक्तौ प्रश्रंवसो मुरुतो अच्छोंक्तौ।**
**मा नो ऽहिंर्बुध्न्यों रिषे धांद् अस्माकं भूद् उपमातिवनिंः।। १६।।**

कुथा। दाशेम। नमंसा। सुऽदानूंन्। एवऽया। मुरुतंः। अच्छंऽउक्तौ। प्रऽश्रंवसः। मुरुतंः। अच्छंऽउक्तौ। मा। नुः। अहिंः। बुध्न्यंः। रिषे। धात्। अस्माकम्। भूत्। उपमातिऽवनिंः।। १६।।

*किस प्रकार आहुति दें हम, नमस्कार के साथ शोभनदाताओं को,*
*द्रुतगति वालों को, मरुतों को, निमन्त्रण के निमित्त,*
*प्रकृष्ट प्रसिद्धि वालों को, मरुतों को, निमन्त्रण के निमित्त।*
*मत हमको आहन्ता, अन्तरिक्ष का वासी, हिंसक को सौंपे,*
*हमारा हो जाए वह, हिंसकों का विनाश करने वाला।। १६।।*

परमेश्वर की प्राणपोषक शक्तियां उत्तम ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली हैं। वे तीव्र गति वाली हैं। वे उत्तम यश और कीर्ति वाली हैं। उनको नम्रतापूर्वक अपने पास बुलाने के लिये हम अपनी पूजाएं किस प्रकार समर्पित करें? अन्तरिक्ष में निवास करने वाला, दुष्ट आसुरी शक्तियों का हनन करने वाला दिव्य शक्तियों का वह संघ हमें कभी हिंसक आसुरी शक्तियों को न सौंपे। इसके विपरीत वह हमारा अहित चाहने वाली दुष्ट हिंसक शक्तियों को समूल नष्ट कर दे।

टि. *द्रुत गति वालों को* - **एवया**। एवं गच्छतः - वे.। एवं क्रियमाणप्रकारेण - सा.। गमनक्रियया - दया.। in a fitting manner - W. swift of course - G.

*निमन्त्रण के निमित्त* - **अच्छोक्तौ**। आभिमुख्येन वचने निमित्ते सति। अभिगन्त्र्युक्तिः स्तुतिर् यस्य तादृशे मयि। यद्वा। स्तोत्रनिमित्ते सति। सा.। सत्योक्तौ, सम्यग्वचने - दया.। with present praise - W. in invocation - G.

*प्रकृष्ट प्रसिद्धि वालों को* - **प्रश्रवसः**। प्रशस्तकीर्तने - वे.। प्रकृष्टान्नाः - सा.। प्रकृष्टं श्रवः श्रवणम् अन्नं वा येषां ते - दया.। far-renowned - G.

*आहन्ता, अन्तरिक्ष का वासी* - **अहिः बुध्न्यः**। अहिर् बुध्न्यो देवः - सा.। मेघः अन्तरिक्षे भवः - दया.। Ahirbudhnya - W. the Dragon of the Deep - G.

*हिंसक को* - **रिषे**। हिंसार्थम् - वे.। हिंसकाय - सा.। अन्नाय - दया.।

*हिंसकों का विनाश करने वाला* - **उपमातिवनिः**। उपस्तुतेः सम्भक्ता - वे.। उपमातिवनिः शत्रूणां हन्ता - सा.। उपमातेर् विभाजकः - दया.। the destroyer (of our enemies) - W. may he welcome our addresses - G.

**इतिं चिन् नु प्रजायैं पशुमत्यै**
**देवांसो वनंते मर्त्यो व आ देवासो वनते मर्त्यो वः।**
**अत्रां शिवां तन्वों धासिम् अस्या जरां चिंन् मे निर्ऋतिर् जग्रसीत।। १७।।**

इतिं। चित्। नु। प्रऽजायैं। पशुऽमत्यै। देवांसः। वनंते। मर्त्यः। वुः। आ। देवासः। वनते। मर्त्यः। वुः।

अत्र॑। शि॒वाम्। त॒न्वः॑। धा॒सिम्। अ॒स्याः।
ज॒राम्। चि॒त्। मे॒। निःऽऋ॑तिः। ज॒ग्र॒सी॒त॒।। १७।।

*इस प्रकार निश्चय से अब, सन्तति के लिये पशुओं वाली के,*
*हे देवो! कामना करता है (यह) मरणधर्मा तुम से,*
*सब ओर से, हे देवो! कामना करता है मरणधर्मा तुम से।*
*यहाँ कल्याणकारी को, शरीरधारक अन्न को, इसके लिये (दो तुम),*
*जीर्णता को ही मेरी मृत्यु ग्रस ले, (शरीर को न ग्रसकर)।। १७।।*

हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारी महिमाओं को जानकर निश्चय से अब मैं तुम्हारा मरणधर्मा उपासक तुमसे सर्वतः उत्तम सन्तानों की और उनके साथ गौ आदि पशुओं की याचना करता हूँ। तुम मेरे इस शरीर के धारण के लिये कल्याणकारी सात्त्विक अन्न भी प्रदान करो। मृत्यु मेरे इस शरीर को अपना ग्रास न बनाए। इसकी बजाय वह मेरे बुढ़ापे को अपना ग्रास बना ले।

टि. *कामना करता है* - **वनते**। भजते - वे.। सा.। worships - W. wins you - G.

*शरीर के लिये अन्न को* - **तन्वः धासिम्**। तन्वः शरीरस्य (जराम् ग्रसताम्), या अस्य अन्नं भवति - वे.। धासिम् अन्नं ममास्यास् तन्वो देवैर् अनुगृहीतस्य पुत्रस्य करोतु - सा.। शरीरस्य अन्नम् - दया.। may sustain my body with salutary food - W. wins wholesome food to feed his body - G.

*मृत्युः* - **निर्ऋतिः**। देवी निर्ऋतिः - वे.। निर्ऋतिर् देवता - सा.। भूमिः। निर्ऋतिर् इति पृथिवीनाम (निघ. १.१)। दया.। Nirṛti - W. G.

*ग्रस ले* - **जग्रसीत**। ग्रसताम् - वे.। ग्रसतु - सा.। ग्रसते - दया.। consume it - G.

**तां वो॑ देवाः सुम॒तिम् ऊ॒र्जय॑न्ती॒म् इष॑म् अश्याम वसव॒ः शसा॒ गोः।**
**सा नः॑ सुदानु॑र् मृ॒ळय॑न्ती दे॒वी प्रति॒ द्रव॑न्ती सुवि॒ताय॑ गम्याः। १८।।**

ताम्। व॒ः। दे॒वा॒ः। सु॒ऽम॒तिम्। ऊ॒र्जय॑न्तीम्। इष॑म्। अ॒श्या॒म॒। व॒स॒व॒ः। शसा॑। गोः।
सा। न॒ः। सु॒ऽदानु॑ः। मृ॒ळय॑न्ती। दे॒वी। प्रति॑। द्रव॑न्ती। सु॒वि॒ताय॑। ग॒म्या॒ः। १८।।

*उसको तुम्हारी, हे देवो!, सुमति को, (और) बल को बढ़ाने वाले को,*
*प्रेरक अन्न को, प्राप्त करें हम, हे बसाने वालो!, स्तुति के द्वारा, गौ से।*
*वह हमारी, शोभनदाना, सुखी करती हुई, दिव्य गुणों वाली,*
*ओर, दौड़ती हुई, अभ्युदय के लिये, गमन करे (सदा ही)।। १८।।*

हे देवो! हे प्रजाओं को सुखों से बसाने वालो! हम गौ माता की, (धरती माता की और वेदमाता वाणी की) सदा प्रशंसा करते रहें। इनकी स्तुतियों के द्वारा हम तुम्हारी उत्तम प्रज्ञा और ऊर्जा को बढ़ाने वाले अन्न को सदा प्राप्त करते रहें। श्रेष्ठ उपदाओं को देने वाली और इस प्रकार हम सबको सुखी करने वाली यह दिव्य गुणों वाली गोमाता अथवा धरती माता अथवा वेदमाता वाणी हमारी उन्नति और अभ्युदय के लिये सदा दौड़कर हमारे पास आती रहे।

टि. *सुमति को* - **सुमतिम्**। सुमतिं शोभनमननसाधनाम्। अन्नेन मतिवृद्धिर् अन्नमयं हि सोम्य

मनः। (छा.उप. ६.५.४)। सा.। श्रेष्ठां प्रज्ञाम् - दया.। mind-sustaining - W. favour - G.

*बल को बढ़ाने वाले को, प्रेरक अन्न को* - **ऊर्जयन्तीम् इषम्।** स्तोतृणाम् अन्नं कुर्वाणां स्तोतृभिर् इष्यमाणाम् - वे.। ऊर्जयन्तीं बलकरीम् इषम् एषणासाधनम् अन्नं क्षीरदध्यादिलक्षणम् - सा.। invigorating food - W. strengthening food - G.

*हे बसाने वालो* - **वसवः।** वासयितारः - सा.। शुभगुणेषु कृतनिवासाः - दया.। Vasus - W.

*स्तुति के द्वारा गौ से* - **शसा गोः।** स्तुतिवाचः शंसने - वे.। स्तुत्या गोः सकाशात् - सा.। प्रशंसया पृथिव्या मध्ये - दया.। from the adorable cow - W. through the Cow's praise - G.

*अभ्युदय के लिये* - **सुविताय।** अभ्युदयार्थम् - वे.। सुखाय - सा.। ऐश्वर्याय - दया.। for our felicity - W. for our well-being - G.

**अभि न इळा यूथस्य माता स्मन् नदीभिर् उर्वशी वा गृणातु।**
**उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणानाभ्यूर्ण्वाना प्रभृथस्यायोः।। १९।।**

अभि। नः। इळा। यूथस्य। माता। स्मत्। नदीभिः। उर्वशी। वा। गृणातु।
उर्वशी। वा। बृहत्ऽदिवा। गृणाना। अभिऽऊर्ण्वाना। प्रऽभृथस्य। आयोः।। १९।।

*सर्वतः हमको भूमि, प्राणिसमूह की माता, प्रशस्त ढंग से,*
*नदियों के साथ, और विस्तृत व्याप्ति वाली (द्यौ), प्रशंसनीय बनाए।*
*विस्तृत व्याप्ति वाली (द्यौ) भी, महान् दीप्ति वाली, प्रशस्त करती हुई,*
*सर्वतः आच्छादित करती हुई, आहुति लाने वाले मनुष्य के (यज्ञ को)।। १९।।*

यह भूमि हमारी माता है। यह समस्त प्राणिसमूह को उत्पन्न करती है और उसका पालन-पोषण करती है। यह अपनी जलधाराओं के साथ प्रशंसनीय ढंग से हमारे जीवन को प्रशस्त बनाए। इसी प्रकार विस्तीर्ण व्याप्ति वाला और महान् दीप्तियों वाला यह आकाश भी अपनी आहुतियों को समर्पित करने वाले हम उपासकों के यज्ञमय जीवन को अपने रश्मिसमूहों से आच्छादित करता हुआ और इस प्रकार उसे उत्तमता प्रदान करता हुआ प्रशंसनीय बनाए।

टि. *भूमि* - **इळा।** भूमिः - वे.। यद्वेळा गोरूपधरा मनोः पुत्रीत्याहुः। यद्वेळा माध्यमिकी वाक्। सा.। प्रशंसनीया वाग् भूमिर् वा - दया.। Iḷā - W. G.

*और विस्तृत व्याप्ति वाली (द्यौ)* - **उर्वशी वा।** उर्वशी चाप्सराः - वे.। अथवोर्वशी माध्यमिकी वाक् - सा.। उरवो बहवो वशे भवन्ति यया सा वाणी। बहुवशकर्त्री प्रज्ञा। दया.। and Urvaśī - W.

*प्रशंसनीय बनाए* - **गृणातु।** स्तौतु - दया.। may be favourable - W. may accept us - G.

*महान् दीप्ति वाली* - **बृहद्दिवा।** बृहद्दिवा चाप्सराः - वे.। प्रभूतदीप्तिः - सा.। बृहती द्यौः प्रकाशो यस्याः सा - दया.। bright-shining - W. in lofty heaven - G.

*सर्वतः आच्छादित करती हुई* - **अभ्यूर्ण्वाना।** जगद् अभिच्छादयन्ती - वे.। आच्छादयन्ती - सा.। आभिमुख्येनार्थान् आच्छादयन्ती - दया.। as she partakes - G.

*आहुति लाने वाले मनुष्य के* - **प्रभृथस्य आयोः।** स्तोत्रं भरमाणस्य मम मनुष्यस्य - वे.। आयोर् आयुं मनुष्यं यजमानम्। प्रभृथस्य तेजसो वोदकस्य वा दानेन। प्रभृथस्य तेजसो वोदकस्येति निरुक्तम्

(११.४९)। सा.। प्रकर्षेण ध्रियमाणस्य जीवनस्य - दया.। मनुष्य के द्वारा दी गई आहुति को - सात.। (the oblation) of the living - G.

**सिषक्तु न ऊर्जव्यस्य पुष्टेः।। २०।। १६।।**

सिसक्तु। नः। ऊर्जव्यस्य। पुष्टेः।। २०।।

*स्वीकार करे (स्तुतियों को) हमारी, बलवृद्धि के, पुष्टि के लिये।। २०।।*

परमेश्वर की दिव्य शक्तियों का समूह हमारी बलवृद्धि और पुष्टि के लिये हमारी स्तुतियों और प्रार्थनाओं को स्वीकार करे।

टि. *स्वीकार करे* - **सिषक्तु**। सेवताम् - वे.। सा.। परिचरतु - दया.। May she cherish us. The nominative to the verb may be either Urvaśī or Iḷā, or the Marudgaṇaḥ, the company of Maruts - W. Visit us - G. may listen to our prayers - Satya.

*बलवृद्धि के, पुष्टि के लिये* - **ऊर्जव्यस्य पुष्टेः**। ऊर्जव्यस्य (राज्ञः) पुष्टेः सकाशात् पुष्टिर् इति - वे.। ऊर्जव्यस्य एतन्नामकस्य राज्ञः पुष्टेः पोषकस्य सम्बन्धिनो ऽस्मान् - सा.। बहुबलप्राप्तस्य पुष्टेः - दया.। (as the servants) of our patron Ūrjavya - W. while she shares Ūrjavya's food - G. for life and energy - Satya.

## सूक्त ४२

ऋषिः - अत्रिर् भौमः। देवता - १-१०, १२-१८ विश्वे देवाः, ११ रुद्रः। छन्दः - त्रिष्टुप्। अष्टादशर्चं सूक्तम्।

**प्र शंतमा वरुणं दीधिती गीर् मित्रं भगम् अदितिं नूनम् अश्याः।**
**पृषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्वतूर्तपन्था असुरो मयोभुः।। १।।**

प्र। शम्ऽतमा। वरुणम्। दीधिती। गीः। मित्रम्। भगम्। अदितिम्। नूनम्। अश्याः।
पृषत्ऽयोनिः। पञ्चऽहोता। शृणोतु। अतूर्तऽपन्थाः। असुरः। मयःऽभुः।। १।।

*प्रकर्ष से, अतिशय सुखदात्री, वरुण को, प्रकाशमाना वाणी,*
*मित्र को, भग को, अदिति को, निश्चय से प्राप्त करे।*
*पृषद्वर्ण अन्तरिक्ष में उद्भूत, पाँच होताओं वाला (वायु), सुने,*
*अहिंसित मार्ग वाला, प्राणों का दाता, सुखों का उत्पादक।। १।।*

अतिशय सुख देने वाली, ज्ञान का प्रकाश करने वाली हमारी स्तुति ढाल बनकर जगत् की रक्षा करने वाले, विनाश से त्राण करने वाले, ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाले, सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त परमेश्वर को प्राप्त होवे। जगत्सृष्टि के समय हिरण्यगर्भ के रूप में विविधवर्ण जलों वाले समुद्र से प्रादुर्भूत होने वाला, पाँच प्राण रूपी होताओं वाला, अहिंसत मार्गों वाला अर्थात् सब जगह पहुँचने वाला, प्राणदाता और सुखों को उत्पन्न करने वाला वह जगदीश्वर हमारी स्तुति को सुने।

टि. *प्रकाशमाना* - **दीधिती**। दीप्ता - वे.। दीधित्या कर्मणा हविष्प्रक्षेपणात्मकेन सह - सा.। प्रकाशयन्ती - दया.। together with our offering - W. with deep devotion - G.

*पृषद्वर्ण अन्तरिक्ष में उद्भूत* - **पृषद्योनिः**। पृषद्वर्णाश्वस्थानः - वे.। पृषद्वर्णान्तरिक्षस्थः - सा.।

पृषतिर् वृष्टिर् योनिर् यस्या सा - दया.। the dweller in the dappled (firmament) - W. dwellng in oblations - G.

*पाँच होताओं वाला* - **पञ्चहोता**। वायुः। 'वायुः पञ्चहोता स प्राणः' (तै.आ. ३.७.२)। वे.। पञ्चविधस्य प्राणापानादिहोमस्य साधको वायुः। यद्वा। पञ्चहोतेति वायोर् नाम। सा.। पञ्च प्राणा होता आदातारो यस्याः सा - दया.। the ministrant of the five (vital airs, Vāyu) - W.

*अहिंसित मार्ग वाला* - **अतूर्तपन्थाः**। अन्यैः अतीर्णमार्गः - वे.। अहिंसितगतिः - सा.। अतूर्तोऽहिंसितः पन्था यस्य सः - दया.। whose path is unimpeded - W.

*प्राणों का दाता* - **असुरः**। बलवान् - वे.। असुरः प्राणस्य दाता - सा.। प्रकाशावरको मेघः - दया.। the giver of life - W. bliss-giving Asura - G.

**प्रति मे स्तोमम् अदितिर् जगृभ्यात् सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम्।**
**ब्रह्म प्रियं देवहितं यद् अस्त्यहं मित्रे वरुणे यन् मयोभु॥ २॥**

प्रति। मे। स्तोमम्। अदितिः। जगृभ्यात्। सूनुम्। न। माता। हृद्यम्। सुऽशेवम्।
ब्रह्म। प्रियम्। देवऽहितम्। यत्। अस्ति। अहम्। मित्रे। वरुणे। यत्। मयःऽभु॥ २॥

*मेरे स्तोत्र को अदिति ग्रहण करे,*
*पुत्र को जैसे माता, हृदयहारी को, सुखकारी को।*
*स्तोत्र प्रीति-उत्पादक, देवों के लिये हितकर, जो है,*
*मैं मित्र को, वरुण को (समर्पित करता हूँ), जो है सुखकर॥ २॥*

मेरे हृदयहारी और सुखोत्पादक स्तोत्र को वह अखण्डशक्ति वाला परमेश्वर इस प्रकार ग्रहण करे, जिस प्रकार जननी अपने प्रिय शिशु को छाती से लगाती है और प्यार करती है। मेरा जो प्रीति को उत्पन्न करने वाला, देवों का हित करने वाला और सुख का संचार करने वाला स्तोत्र है, उसे मैं मित्र की तरह स्नेह करने वाले और वर्म बनकर रक्षा करने वाले जगदीश्वर को समर्पित करता हूँ।

टि. *ग्रहण करे* - **प्रति जगृभ्यात्**। प्रति गृह्णातु - वे.। सा.। भृशं गृह्णीयात् - दया.।

*हृदयहारी को* - **हृद्यम्**। हृदयङ्गमम् - सा.। हृदयस्य प्रियम् - दया.। affectionate - W.

*देवों के लिये हितकर* - **देवहितम्**। देवैर् निहितम् - वे.। देवैः प्राप्यम् - सा.। देवेभ्यो विद्वद्भ्यो हितकारि - दया.। approved of by the gods - W. God-appointed - G.

*सुखकर* - **मयोभु**। सुखोत्पादकम् - वे.। सुखसाधनम् - सा.। सुखं भावुकम् - दया.।

**उद् ईरय कवितमं कवीनाम् उनत्तैनम् अभि मध्वा घृतेन।**
**स नो वसूनि प्रयता हितानि चन्द्राणि देवः सविता सुवाति॥ ३॥**

उत्। ईरय। कविऽतमम्। कवीनाम्। उनत्त। एनम्। अभि। मध्वा। घृतेन।
सः। नः। वसूनि। प्रऽयता। हितानि। चन्द्राणि। देवः। सविता। सुवाति॥ ३॥

*उत्प्रेरित करो अतिशय क्रान्तदर्शी को, क्रान्तदर्शियों के मध्य,*
*अभिषिक्त करो इसको, सब ओर से, मधु से, घृत से।*
*वह हमारे लिये धनों को, प्रयत्न से अर्जितों को, हितकरों को,*

*आह्लादकरों को, देव सविता, प्रेरित करता रहे (सदा ही)।। ३।।*

हे मनुष्यो! हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग पर प्रेरित करने वाले उस परमेश्वर को, जो क्रान्तदर्शियों में अतिशय क्रान्तदार्शी है, जो तीनों कालों और तीनों लोकों के आर-पार देखने वाला है, अपनी स्तुतियों से तुम सदा उत्प्रेरित करते रहो। उसे तुम अपनी सोम और घृत की आहुतियों से सदा सींचते रहो। अपनी भक्ति के आनन्द और समर्पणों से उसे सदा प्रसन्न करते रहो। वह देवाधिदेव, सर्वप्रेरक प्रभु हमें सदा परिश्रम से कमाए जाने वाले, हमारे हितों को साधने वाले और हमें प्रसन्नता प्रदान करने वाले, बसाने वाले धनों को प्रदान करता रहे।

टि. *उत्प्रेरित करो* - **उत् ईरय**। उदीरयत। वचनव्यत्ययः।। उत्थापयत - वे.। ऊर्ध्वं प्रापयत। हर्षयतेत्यर्थः। सा.। प्रेरयत - दया.। celebrate - W. inspirit him - G.

*अभिषिक्त करो* - **उनत्त**। अभिषिञ्चत। तर्पयतेत्यर्थः। सा.। सिञ्चत - दया.। imbue him - W. bedew him - G.

*धनों को* - **वसूनि**। निवासयोग्यानि गवादिधनानि - सा.। द्रव्याणि - दया.।

*प्रयत्न से अर्जितों को* - **प्रयता**। शुद्धानि - वे.। प्रयतानि - सा.। प्रयत्नसाध्यानि - दया.। ample - W. excellent - G.

*प्रेरित करता रहे* - **सुवाति**। प्रेरयति - वे.। सुवाति प्रयच्छत्वित्यर्थः - सा.। सुवेत् प्रयच्छेत् - दया.। may bestow - W. let him provide - G.

**सम् इ॑न्द्र णो॒ मन॑सा नेषि॒ गोभि॒ः सं सू॒रिभि॑र् हरिव॒ः सं स्व॒स्ति।**
**सं ब्रह्म॑णा दे॒वहि॑तं॒ यद् अस्ति॒ सं दे॒वाना॑ं सुम॒त्या य॒ज्ञिया॑नाम्।। ४।।**

सम्। इ॒न्द्र॒। न॒ः। मन॑सा। ने॒षि॒। गोभि॑ः। सम्। सू॒रिऽभि॑ः। ह॒रि॒ऽव॒ः। सम्। स्व॒स्ति।
सम्। ब्रह्म॑णा। दे॒वऽहि॑तम्। यत्। अस्ति॑। सम्। दे॒वाना॑म्। सु॒ऽम॒त्या। य॒ज्ञिया॑नाम्।। ४।।

*सम्यक्, हे इन्द्र!, हमको (पवित्र) मन के साथ ले चल, इन्द्रियों के साथ,*
*सम्यक् ज्ञानियों के साथ, हे इन्द्रियों के स्वामी!, सम्यक् निःश्रेयस के साथ।*
*सम्यक् वेदज्ञान के साथ (ले चल), देवों का हित करने वाला जो है,*
*सम्यक् (ले चल तू) देवों की शोभन मति के साथ, पूजनीयों की।। ४।।*

हे ऐश्वर्यवान् प्रभो! तू हमें इस जीवन में पवित्र मन प्रदान कर। तू हमें संयत इन्द्रियों वाला बना। हे इन्द्रियों के स्वामी! तू हमें विद्वज्जनों का संग प्राप्त करा। तू सन्मार्ग दिखाकर हमें कल्याण और निःश्रेयस की ओर ले चल। तू हमें वेदज्ञान से युक्त कर, जो दैवी वृत्ति वाले साधु जनों के हित को साधने वाला है। हे करुणामय! तू हमें पूजा के योग्य देवों की श्रेष्ठ मति से युक्त कर।

टि. *(पवित्र) मन के साथ ले चल* - **मनसा नेषि**। मनसा नय - वे.। प्रकृष्टेन चेतसा नयसि - सा.। मनसा। विज्ञानेन - दया.। with a (willing) mind thou associatest us - W.

*इन्द्रियों के साथ* - **गोभिः**। अस्मान् गाः प्रापयसीत्यर्थः - सा.। गोभिः इन्द्रियैर् वाग्भिर् वा - दया.। with cattle - W. G.

*निःश्रेयस के साथ* - **स्वस्ति**। अविनाशेन - वे.। स्वस्तिभिः क्षेमैः - सा.। सुखम् - दया.। with

prosperity - W. G.

*वेदज्ञान के साथ* – **ब्रह्मणा।** अन्नेन – वे.। प्रभूतेनान्नेन – सा.। ब्रह्मणा वेदेन धनेनान्नेन वा – दया.। with (sacrificial) food - W. with the sacred prayer - G.

**देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम्।**
**ऋभुक्षा वाज उत वा पुरंधिर् अवन्तु नो अमृतासः तुरासः।। ५।। १७।।**

देवः। भगः। सविता। रायः। अंशः। इन्द्रः। वृत्रस्य। सम्ऽजितः। धनानाम्।
ऋभुक्षाः। वाजः। उत। वा। पुरम्ऽधिः। अवन्तु। नः। अमृतासः। तुरासः।। ५।।

*दानादिगुणयुक्त भग, सविता, धनों का विभागकर्ता,*
*इन्द्र, आवरक के विजित करने वाला धनों को।*
*ऋभुक्षा, वाज, और बहुत ज्ञानों को धारण करने वाला,*
*रक्षा करें सब हमारी, अमरणधर्मा, त्वरितगति।। ५।।*

परमपिता परमेश्वर की अनेक दिव्य शक्तियां हैं। ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली उसकी भग नामक शक्ति दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त है। उसकी सर्वप्रेरक और जगदुत्पादक सविता नामक शक्ति प्राणियों को धनों के भाग प्रदान करती है। आसुरी शक्तियों को ध्वस्त कर डालने वाली इन्द्र नामक शक्ति धनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली शत्रु शक्तियों को विजित करने वाली है। विस्तृत निवास वाली ऋभुक्षा, बल प्रदान करने वाली वाज और असंख्य विद्याओं और धनों को देने वाली पुरन्धि नामक उसकी अन्य शक्तियां हैं। अमरणधर्मा और त्वरित गति वाली परमेश्वर की ये सब दिव्य शक्तियां हमारी सब ओर से रक्षा करें।

टि. *धनों का विभागकर्ता* – **रायः अंशः।** धनस्य (प्रेरयिता) अंशः – वे.। रायो धनस्य स्वाम्यंशः त्वष्टा – सा.। रायः धनानि अंशः विभागः – सा.। the lord of wealth, Aṁśa - W. who deals forth riches - G.

*ऋभुक्षा* – **ऋभुक्षा।** ऋभुः – वे.। महान् – दया.।

*बहुत ज्ञानों को धारण करने वाला* – **पुरन्धिः।** विभ्वा च बहुप्रज्ञः – वे.। सा.। पूर्वी बह्वी धीर् यस्य सः – दया.।

*त्वरितगति* – **तुरासः।** त्वरमाणाः – वे.। सा.। शीघ्रकारिणस् त्वरिताः – दया.। hastening (to our sacrifice) - W. mighty - G.

**मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोर् अजूर्यतः प्र ब्रवामा कृतानि।**
**न ते पूर्वे मघवन् नापरासो न वीर्यं१ नूतनः कश् चनाप।। ६।।**

मरुत्वतः। अप्रतिऽइतस्य। जिष्णोः। अजूर्यतः। प्र। ब्रवाम। कृतानि।
न। ते। पूर्वे। मघऽवन्। न। अपरासः। न। वीर्यम्। नूतनः। कः। चन। आप।। ६।।

*मरुतों की सहायता वाले के, सामना न किया जा सकने वाले के, विजयशील के,*
*जरा को प्राप्त न होने वाले के, प्रकर्ष से बखान करें हम, कर्मों का।*
*न तेरे (बल को) पूर्व वाले, हे धनदाता!, न पीछे वाले (पा सकते हैं),*

*न ही बल को (तेरे) नूतन कोई, प्राप्त कर सकता है।। ६।।*

हे ऐश्वर्यवान् प्रभो! तुझे सब दैवी शक्तियों की सहायता प्राप्त है। जगत् में कोई भी शक्ति तेरा मुकाबला नहीं कर सकती, तेरे सामने नहीं ठहर सकती। तू सब का विजेता है। तुझे कभी बुढ़ापा नहीं आ सकता। तू अजर और अमर है। हम तेरे उपासक तेरे अनुपम कर्मों का बखान कर रहे हैं। प्राचीन काल के लोग भी तेरे बल को प्राप्त नहीं कर सके, वर्तमान काल में भी कोई मनुष्य तेरे बल को प्राप्त नहीं कर सकता, और न ही आगे आने वाले लोग प्राप्त कर सकेंगे।

टि. *सामना न किया जा सकने वाले के* - **अप्रतीतस्य**। शत्रुभिः अप्रतिगतस्य - वे.। युद्धे ऽपलायमानस्य - सा.। प्रतीत्यविषयस्य - दया.। of the unrecoiling - W. of the unrivalled - G.

*जरा को प्राप्त न होने वाले के* - **अजूर्यतः**। जरारहितस्य - वे.। अजीर्यमाणस्य। सर्वदा यून इत्यर्थः। सा.। प्राप्तजीर्णावस्थस्य - दया.। of the undecaying - W. G.

*नूतन* - **नूतनः**। सम्प्रतितनः - वे.। आश्चर्यभूतः - सा.। recent - W. of these days - G.

**उप॑ स्तुहि प्रथ॒मं र॑त्न॒धेयं॒ बृह॒स्पतिं॑ सनि॒तारं॒ धना॑नाम्।**
**यः शंस॑ते स्तुव॒ते शंभ॑विष्ठः पुरू॒वसु॑र् आ॒गम॒ज् जोहु॑वानम्।। ७।।**

उप॑। स्तु॒हि॒। प्र॒थ॒मम्। र॒त्न॒ऽधेय॑म्। बृह॒स्पति॑म्। स॒नि॒तार॑म्। धना॑नाम्।
यः। शंस॑ते। स्तु॒व॒ते। शम्ऽभ॑विष्ठः। पु॒रु॒ऽवसुः॑। आ॒ऽगम॑त्। जोहु॑वानम्।। ७।।

*पास जाकर स्तुति कर प्रकृष्टतम की, रमणीय धनों के दाता की,*
*बृहस्पति की, विभक्त करने वाले की धनों को।*
*जो प्रशंसक के लिये, स्तोता के लिये (है), अतिशय सुखोत्पादक,*
*बहुत धनों वाला, आता है (सदा) आह्वान करने वाले के पास।। ७।।*

हे मेरे अन्तरात्मन्! तू वेदज्ञान के पालक उस परमेश्वर की निकट से स्तुति कर, जो समस्त जगत् में सर्वोत्कृष्ट है, जो रमणीय ऐश्वर्यों का दाता है और जो सब में धनों को बाँटता है। वह जो प्रशंसा करने वाले और स्तुति करने वाले के लिये सुखों का उत्पादक है और बसाने वाले सभी साधनों का स्वामी है, वह बुलाने वाले की पुकार को सुनकर उसके पास अवश्य आता है।

टि. *प्रकृष्टतम की* - **प्रथमम्**। मुख्यम् - वे.। प्रकृष्टतमम् इत्यर्थः - सा.। प्रथमम् आदिमम् - दया.। the first - W. the Chief - G.

*रमणीय धनों के दाता की* - **रत्नधेयम्**। रत्नानां धातारम् - वे.। दया.। रमणीयधनदातारम् - सा.। donor of precious treasure - W. who gives the boon of riches - G.

*बृहस्पति की* - **बृहस्पतिम्**। बृहतो मन्त्रस्य स्वामिनं देवम् - सा.। बृहतां पालकम् - दया.।

*अतिशय सुखोत्पादक* - **शंभविष्ठः**। अतिशयेन शं भावयन् - वे.। दया.। सुखस्य भावयितृतमो भवति - सा.। the bestower pf great happiness - W. blessing most - G.

*आह्वान करने वाले के पास* - **जोहुवानम्**। अत्यन्तम् आह्वयन्तम् - वे.। आह्वयन्तं यजमानम् - सा.। आहूयमानम् आह्वयितारं वा - दया.। to invoker - W. G.

**तवो॒तिभिः॒ सच॑माना॒ अरि॑ष्टा॒ बृह॑स्पते म॒घवा॑नः सु॒वीराः॑।**

**ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्त्रदाः सुभगास् तेषु रायः।। ८।।**

तव। ऊतिऽभिः। सचमानाः। अरिष्टाः। बृहस्पते। मघऽवानः सुऽवीराः।
ये। अश्वऽदाः। उत। वा। सन्ति। गोऽदाः। ये। वस्त्रऽदाः। सुऽभगाः। तेषु। रायः।।

*तेरे संरक्षणों से युक्त (होकर ही), अहिंसित (हो जाते है मनुष्य),*
*हे वेदज्ञान के पालक!, पवित्र धनों वाले, उत्तम वीरों वाले (हो जाते हैं)।*
*जो अश्वों को देने वाले, और (जो) हैं गौओं को देने वाले,*
*जो (हैं) वस्त्रों को देने वाले, सौभाग्यवान् (हैं) उनके पास धन।। ८।।*

हे वेदज्ञान के पालक परमेश्वर! जिनको तेरी सुरक्षा मिल जाती है, उन्हें कोई भी हिंसित नहीं कर सकता। 'जाको राखे साइँया मार सके न कोय'। वे पवित्र धनों के स्वामी हो जाते हैं। वे धनों को उचित उपायों से ही कमाते है और उन्हें शुभ कर्मों में ही व्यय करते हैं। उनके वर्गों में उत्तम वीर सन्तानें ही उत्पन्न होती हैं। जो घोड़ों का दान करने वाले, गौओं का दान करने वाले और वस्त्रों का दान करने वाले हैं, उनके धन ही सौभाग्यवान् हैं। अथवा जो मनुष्य बल से दूसरों की रक्षा करने वाले, दूसरों को ज्ञान का दान देने वाले हैं और दूसरों को अपनी शरण में लेकर उनका कवच बन जाते हैं, उन्हें उत्तम ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

टि. *तेरे संरक्षणों से युक्त (होकर ही)* – तव ऊतिभिः सचमानाः। तव रक्षणैः सङ्गच्छमानाः – वे.। सा.। associated with thy protections - W. G.

*सौभाग्यवान् (हैं) उनके पास धन* – सुभगाः तेषु रायः। तेषु त्वया प्रीयमाणेषु कल्याणा भवन्ति रायः – वे.। तेषु सर्वेषु रायो धनानि संभवन्त्विति शेषः – सा.। may wealth devolve on those, who are generous - W. wealth that brings bliss is found among the givers - G.

**विसर्माणं कृणुहि वित्तम् एषां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः।**
**अपव्रतान् प्रसवे वावृधानान् ब्रह्मद्विषः सूर्याद् यावयस्व।। ९।।**

विऽसर्माणम्। कृणुहि। वित्तम्। एषाम्। ये। भुञ्जते। अपृणन्तः। नः। उक्थैः।
अपऽव्रतान्। पऽसवे। ववृधानान्। ब्रह्मऽद्विषः। सूर्यात्। यवयस्व।। ९।।

*सरकने वाला बना दे धन को इनके, (हे वेदज्ञान के पालक!),*
*जो (स्वयं ही) खाते हैं, न पालते हुए हमें, याच्ञावचनों से (भी)।*
*व्रतों से परे रहने वालों को, सन्तानों से बढ़ते जाने वालों को,*
*ज्ञान से द्वेष करने वालों को, सूर्य से पृथक् कर दे तू (उनको)।। ९।।*

हे वेदज्ञान के पालक परमेश्वर! ये लोग जो अपनी उदरपूर्त्ति में ही लगे हुए हैं, जो याचना करने पर भी हम जैसे असहायों का पालन नहीं करते, दूसरों का पेट नहीं भरते, जो सत्यभाषण, ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का पालन नहीं करते, जो अमर्यादित ढंग से सन्तानों की वृद्धि करते चले जाते हैं, जो परमेश्वर, वेद और ब्राह्मण से द्वेष करते हैं, उनको तू ज्ञान के प्रकाश से अलग करके अज्ञान के अन्धकार में डाल दे।

टि. *सरकने वाला* – विसर्माणम्। विसरणशीलम् – वे.। सा.। यो विसृजति तम् – दया.।

transitory - W. Make their wealth flee - G.

*न पालते हुए हमें* - **अपृणन्तः नः**। अस्मभ्यम् अप्रयच्छन्तः - वे.। सा.। अपूर्णा अपालयन्तो वा - दया.। without giving satisfaction to us - W. who yield not an ample guerdon - G.

*याच्ञावचनों से* - **उक्थैः**। एतैः प्रयुज्यमानैः उक्थैः - वे.। उक्थैः स्तुतिप्रतिपादकैः शस्त्रैर् विशिष्टेभ्यो नो ऽस्मभ्यम् - सा.। उत्तमैर् वाक्यैः - दया.। (who are eminent) by holy hymns - W. through our hymns - G.

*सन्तानों से बढ़ते जाने वालों को* - **प्रसवे वावृधानान्**। स्वनिर्गम एव वर्धमानान् - वे.। प्रसवे उत्पत्तिमति मनुष्यलोके वर्धमानान् - सा.। उत्पन्ने जगति विवर्धमानान् - दया.। prospering in their posterity - W. prospering in their vocation - G.

*ज्ञान से द्वेष करने वालों को* - **ब्रह्मद्विषः**। ब्राह्मणद्वेष्टॄन् मन्त्रद्वेष्टॄन् वा - सा.। ये ब्रह्म वेदं परमात्मानं वा द्विषन्ति - दया.। the adversaries of prayer - W. who hate devotion - G.

**य ओहते रक्षसो देववीताव्**
**अचक्रेभिस् तं मरुतो नि यात।**
**यो वः शमीं शशमानस्य निन्दात्**
**तुच्छ्यान् कामान् करते सिष्विदानः।। १०।। १८।।**

यः। ओहते। रक्षसः। देवऽवीतौ। अचक्रेभिः। तम्। मरुतः। नि। यात।
यः। वः। शमीम्। शशमानस्य। निन्दात्। तुच्छ्यान्। कामान्। करते। सिस्वदानः।। १०।।

*जो ले जाता है राक्षसों को, देवों के भोज में,*
*चक्ररहितों से (रथों से) उसको, हे मरुतो!, नीचे ले जाओ तुम।*
*जो तुम्हारे कर्म की प्रशंसा करने वाले की, निन्दा करता है,*
*निष्फल कामों को बना लेता है (वह), पसीना बहाता हुआ (भी)।। १०।।*

हे परमेश्वर की प्राणप्रद दिव्य शक्तियो! जो मनुष्य देवों के भोज में राक्षसों को निमन्त्रित करता है, देवों को दी जाने वाली आहुति को राक्षसों को दे देता है, उस पापी को तुम अपने चक्रहीन गमनसाधनों से रसातल को पहुँचा दो, उसे नष्ट कर दो। जो नीच मनुष्य तुम्हारे यज्ञ आदि उत्तम कर्मों की स्तुति करने वाले की निन्दा करता है, खून-पसीना बहाने पर भी, गाढ़ परिश्रम करने पर भी, उसकी सब कामनाएं निष्फल हो जाती हैं।

टि. *ले जाता है* - **ओहते**। प्रापयति - वे.। सा.। दया.। invites - W. regards - G.

*देवों के भोज में* - **देववीतौ**। देवैः अशितव्ये अन्ने - वे.। देवानां वीतिः प्राप्तिर् भक्षणं वा यत्र स तथोक्तः। तस्मिन् यज्ञे। सा.। देवैर् विद्वद्भिर् व्याप्तायां क्रियायाम् - दया.। to the food of the gods - W. at the feasts of Gods - G.

*नीचे ले जाओ तुम* - **नि यात**। यातिर् वधकर्मसु पठितः (निघ. २.१९) - वे.। नितरां प्रापयत अन्धकारम् - सा.। send into darkness - W. drive him down - G.

*निष्फल कामों को बना लेता है* - **तुच्छ्यान् कामान् करते**। आत्मीयानां कर्मणां कामान्

अल्पफलान् करोति - वे.। तुच्छ्यान् नश्वरान् कामान् कृष्यादिजनितभोगान् करते कुरुते। अथवा युष्मासु कमनीयान् भोगान् तुच्छ्यान् करोति। सा.। he toils (to realize) vain desires - W. may he form empty wishes - G.

*पसीना बहाता हुआ* - **सिष्विदानः**। कार्येषु स्विद्गात्रः प्रवर्तमानः - वे.। स्विद्यन् आत्मानं क्लेशयन् - सा.। स्निह्यमानः - दया.। while sweating - W. though bathed in sweat - G.

**तम् उं ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य।**
**यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर् देवम् असुरं दुवस्य।। ११।।**

तम्। ऊँ इति। स्तुहि। यः। सुऽइषुः। सुऽधन्वा। यः। विश्वस्य। क्षयति। भेषजस्य।
यक्ष्व। महे। सौमनसाय। रुद्रम्। नमःऽभिः। देवम्। असुरम्। दुवस्य।। ११।।

*उसकी ही स्तुति कर तू, जो शोभन बाण वाला, शोभन धनुष वाला,*
*जो सब को निवास कराता है, रोगनिवारक औषधों को।*
*पूजा कर तू, महान् सौमनस्य के लिये, रुद्र की,*
*नमस्कारों के साथ, देव की शत्रुपरास्ता की, परिचर्या कर तू।। ११।।*

हे मेरे अन्तरात्मन्! तू पापियों को उनके पापकर्म का दण्ड देकर रुलाने वाले परमेश्वर की ही पूजा कर, जो दुष्टों को उनके पापकर्म का दण्ड देने के लिये अपनी न्यायव्यवस्था रूपी अस्त्र-शस्त्र को धारण करता है। वह प्रभु ही मनुष्यों और अन्य प्राणियों को आरोग्य प्रदान करने के लिये सब प्रकार के रोगनिवारक औषधों को जगत् में उत्पन्न करके निवास करा रहा है। तू उसके महान् सौमनस्य और कृपादृष्टि को पाने के लिये शत्रुओं को परास्त करने वाले देवों के देव उस महादेव की ही नमस्कारों के साथ पूजा कर।

टि. *निवास कराता है औषधों को* - **क्षयति भेषजस्य**। भेषजस्य ईश्वरो भवति - वे.। औषधस्य ईश्वरो भवति। शारीरस्य सांसारिकस्य वा रिष्टस्य शमनायेश्वरस्य व्यतिरिक्तस्यौषधस्याभावाद् भिषक्तमत्वाच् चास्य भेषजस्वामित्वम्। सा.। निवसति निवासयति वा औषधस्य - दया.। who presides over all sanitary drugs - W. who is lord of every balm that health - G.

*महान् सौमनस्य के लिये* - **महे सौमनसाय**। महे सौमनस्याय - वे.। महते सुमनस्त्वाय। ईश्वराराधनाच् चित्तशान्तिः प्रसिद्धा। सा.। महते शोभनस्य मनसो भावाय - दया.। for a comprehensive and sound understanding - W. for his great good favour - G.

*शत्रुपरास्ता की परिचर्या कर तू* - **असुरम् दुवस्य**। क्षेप्तारं परिचर - वे.। असुरं प्रकृष्टासुम्। बलवन्तम् इत्यर्थः। यद्वा। प्राणदातारं दुवस्य परिचर। सा.। मेघं सेवस्व - दया.। adore the powerful (divinity) - W. adore the Asura - G.

**दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर् नद्यो विभ्वतष्टाः।**
**सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर् वरिवस्यन्तु शुभ्राः।। १२।।**

दमूनसः। अपसः। ये। सुऽहस्ताः। वृष्णः। पत्नीः। नद्यः। विभ्वऽतष्टाः।
सरस्वती। बृहत्ऽदिवा। उत। राका। दशस्यन्तीः। वरिवस्यन्तु। शुभ्राः।। १२।।

*दान्त मन वाले उत्तम कर्मकर्त्ता, जो (हैं) सधे हाथों वाले,*
*सुखवर्षक की पालक शक्तियां, नदियां सर्वव्यापक के द्वारा निर्मित।*
*वाग्देवता, महान् प्रकाश वाली भी पूर्णिमा की रात,*
*देने की कामना वाली, विस्तार प्रदान करें (हमको), तेजों वाली।। १२।।*

जो अपने मन, इन्द्रियों और शरीर को वश में रखकर कर्मों को करने वाले श्रमिक हैं, जो अपने सधे हुए हाथों से निर्माणों को करने वाले शिल्पी जन हैं, जो सुखों की वर्षा करने वाले परमेश्वर की दिव्य शक्तियां हैं, उस सर्वव्यापक जगदीश्वर के द्वारा निर्मित जीवनदायिनी जो जलधाराएं हैं, जो विविध ज्ञानों और कलाओं का बोध कराने वाली दिव्य वाणी है, और जो सब ओर शीतल, शान्त और सुखद ज्योत्स्ना को बिखेरने वाली पूर्णिमा की रात्रि है, सदा देना ही चाहने वाली ये सब दिव्य विभूतियां हमारा सब ओर विस्तार करें, हमें फैलने और फलने-फूलने का अवसर प्रदान करें।

टि. *दान्त मन वाले* - **दमूनसः।** दममनसः - वे.। दानमनसो दान्तमनसो वा - सा.। दान्ताः - दया.। humble-minded - W. House-friends - G.

*कर्मकर्त्ता* - **अपसः।** व्यापनशीलाः - वे.। चमसाश्वरथगवादिशोभनकर्मवन्तः। ऋभवः। मत्वर्थो लुप्यते। सा.। सुकर्माणः - दया.। artisans (of the gods, Ṛbhus) - W. artists - G.

*सधे हाथों वाले* - **सुहस्ताः।** कल्याणहस्ताः - वे.। कुशलहस्ताः - सा.। शोभनेषु कर्मसु हस्ता येषां ते - दया.। dexterous-handed - W. cunning-handed - G.

*सर्वव्यापक के द्वारा निर्मित* - **विभ्वतष्टाः।** महताम् अपि तनूकर्त्र्यः - वे.। ऋभूणां मध्यमेन कृताः - सा.। विभुनेश्वरेण निर्मिताः - दया.। carved out by Vibhu - W. carved out by Vibhvan ( the artificer of Varuṇa) - G.

*महान् प्रकाश वाली* - **बृहद्दिवा।** बृहद्दिवा च अप्सराः - वे.। प्रभूतदीप्तिः - सा.। बृहती द्यौर् विद्याप्रकाशो यस्यां सा - दया.। brilliant - W. Bṛhaddivā - G.

*पूर्णिमा की रात्रि* - **राका।** राका देवी - सा.। राति ददाति सुखं या सा - दया.। Rākā - W.

*विस्तार प्रदान करें* - **वरिवस्यन्तु।** धनं दातुम् इच्छन्तु - वे.। सा.। सेवन्ताम् - दया.। may be willing to grant us riches - W. may honour and befriend us - G.

**प्र सू म॒हे सु॑श॒र॒णाय॑ मे॒धां गिरं॑ भरे॒ नव्य॑सीं॒ जाय॑मानाम्।**
**य आ॑ह॒ना दु॑हि॒तुर् व॒क्षणा॑सु रू॒पा मि॑ना॒नो अकृ॑णोद् इ॒दं नः॥ १३॥**

प्र। सु। म॒हे। सु॒ऽश॒र॒णाय॑। मे॒धाम्। गिर॑म्। भ॒रे। नव्य॑सीम्। जाय॑मानाम्।
यः। आ॒ह॒नाः। दु॒हि॒तुः। व॒क्षणा॑सु। रू॒पा। मि॒ना॒नः। अकृ॑णोत्। इ॒दम्। न॒ः॥ १३॥

*प्रकर्ष से, सुष्ठु, महान् के लिये, उत्तम रक्षक के लिये, मेधा को,*
*वाणी को, ले चलता हूँ मैं, नवतरा को, (हृदय से) प्रस्फुटित होती हुई को।*
*जो सब ओर गति करने वाला, पुत्रीस्थानीया पृथिवी की जलप्रवाहिका नदियों पर,*
*(विविध) रूपों को निर्मित करता हुआ, बनाता है इस जगत् को हमारे लिये।। १३।।*

मैं प्रभु का उपासक अपने चिन्तन, मनन और विचारों सहित अपनी बुद्धि को तथा हृदय से

प्रस्फुटित नवतरा अपनी स्तुतिरूपी वाणी को भली प्रकार उस महान् और उत्तम रक्षक को समर्पित करता हूँ, जो सर्वत्र व्यापक परमेश्वर पृथिवी रूपी अपनी पुत्री के ऊपर जलों को बहाने वाली नदियों के तटों पर ओषधि, वनस्पति आदि विविध पदार्थों को उत्पन्न करता हुआ इस जगत् का हम मनुष्यों के लिये निर्माण करता है।

टि. *उत्तम रक्षक के लिये* - **सुशरणाय**। सुनिलयाय - वे.। शोभनरक्षकायेन्द्राय पर्जन्याय वा सुसुखाय वा - सा.। शोभनायाश्रयाय - दया.। to the protector - W. to the Sure Protector - G.

*सब ओर गति करने वाला* - **आहनाः**। सर्वत्र गन्ता। हन हिंसागत्योः।। आहननशीलः - वे.। आहन्ता सेक्ता - सा.। या आहन्यन्ते ताः - दया.। the showerer - W.

*जलप्रवाहिका नदियों पर* - **वक्षणासु**। नदीषु - वे.। सा.। वहमानासु नदीषु - दया.। to the rivers - W. within (his Daughter's) bosom - G.

*रूपों को निर्मित करता हुआ* - **रूपा मिनानः**। रूपाणि ओषधिवनस्पत्यादीनां मिनानः उत्पादयन् - वे.। रूपाणि कुर्वाणः - सा.। रूपा सुन्दराणि रूपाणि मिनानः मानं कुर्वाणः - दया.। giving form - W. laying each varied form - G.

*इस जगत् को* - **इदम्**। इदम् (निघ. १.१२) इत्युदकनाम - वे.। उदकम् - सा.। वर्तमानं सुखम् - दया.। this water - W. (made) this (all) - G.

**प्र सु॑ष्टु॒तिः स्त॒नय॑न्तं रु॒वन्त॑म् इ॒ळस् पतिं॑ जरित॒र् नू॒नम् अ॑श्याः।**
**यो अ॑ब्दि॒माँ उ॑दनि॒माँ इय॑र्ति॒ प्र वि॒द्युता॒ रोद॑सी उ॒क्षमा॑णः।। १४।।**

प्र। सुऽस्तुतिः। स्तनय॑न्तम्। रुवन्त॑म्। इ॒ळः। पति॑म्। ज॒रि॒तः। नू॒नम्। अ॒श्या॒ः।
यः। अ॒ब्दिऽमा॑न्। उ॒द॒नि॒ऽमा॑न्। इय॑र्ति। प्र। वि॒ऽद्यु॒ता॑। रोद॑सी॒ इति॑। उ॒क्षमा॑णः।। १४।।

*प्रकर्ष से शोभन स्तुति (तेरी), कड़कने वाले को, गर्जने वाले को,*
*अन्नों के स्वामी को, हे स्तोता!, निश्चय से प्राप्त होवे।*
*जो मेघों का स्वामी, जलों का स्वामी, गमन करता है,*
*प्रकर्ष से विशेष द्युति के साथ, द्युलोक-भूलोक को सींचता हुआ।। १४।।*

हे परमेश्वर की स्तुति करने वाले उपासक! निश्चय से तेरी सुन्दर स्तुति कड़कने और गर्जने वाले मेघ की तरह दुष्टों पर क्रोध करने वाले, अन्नों के स्वामी उस जगदीश्वर को प्राप्त होवे, जो मेघों का स्वामी है और जलों का स्वामी है और जो अपनी विशेष द्युति के साथ द्युलोक और भूलोक को सुख और शान्ति से सींचता हुआ सम्यक् सर्वत्र व्याप्त हो रहा है।

टि. *शोभन स्तुति* - **सुष्टुतिः**। शोभना स्तुतिः। अन्तोदात्तत्वात् तत्पुरुषसमासः।। सुष्टुतिः [त्वम्] - वे.। शोभना स्तुतिः - सा.। शोभना प्रशंसा - दया.। pious praise - W. fair praise - G.

*अन्नों के स्वामी को* - **इळः पतिम्**। पृथिव्याः पतिम् - वे.। दया.। अन्नस्योदकस्य वा पतिं स्वामिनम् - सा.। lord of Iḷā - W. Iḍaspati - G.

*प्राप्त होवे* - **अश्याः**। अश्यात्। पुरुषव्यत्ययः।। व्याप्नोतु - सा.। प्राप्नोतु - दया.।

*मेघों का स्वामी* - **अब्दिमान्**। मेघवान् - वे.। अब्दिर् अपां दानवान् मेघः। तद्वान्। सा.। जलद-

वान् - दया.। rich in clouds - G.

*जलों का स्वामी* - **उदनिमान्।** उन्दनवान् - वे.। उदकवान् - सा.। बहूदकः - दया.।

*गमन करता है* - **इयर्ति।** गच्छति - वे.। सा.। प्राप्नोति - दया.। speeds forth - G.

*विशेष द्युति के साथ* - **विद्युता।** तडिता - सा.। तडिता सह - दया.। with lightning - G.

**एष स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूँर् युवन्यूँर् उद् अश्याः।**
**कामो राये हवते मा स्वस्त्युप स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः।। १५।।**

एषः। स्तोमः। मारुतम्। शर्धः। अच्छ। रुद्रस्य। सूनून्। युवन्यून्। उत्। अश्याः।
कामः। राये। हवते। मा। स्वस्ति। उप। स्तुहि। पृषत्ऽअश्वान्। अयासः।। १५।।

*यह स्तोत्र (मेरा) मरुतों के संघ के पास,*
*रुद्र के पुत्रों के पास, यौवनसम्पन्नों के पास, उत्कर्ष से पहुँचे।*
*सङ्कल्प धन के लिये पुकारता है मुझको, कल्याणहेतु,*
*निकट से स्तुति कर तू, बिन्दुयुक्त अश्वों वालों की, गतिशीलों की।। १५।।*

मुझ उपासक का यह स्तोत्र दुष्टों को रुलाने वाले जगदीश्वर की सन्ततिभूत प्राणशक्तिसमूह के पास, जो नवयौवन से युक्त है, बड़े उत्कर्ष से पहुँचे। प्राणिमात्र के कल्याण के लिये किया हुआ मेरा दृढ़ सङ्कल्प मुझे कर्तव्यपालन के लिये पुकार रहा है। उसके लिये मुझे साधनरूपी धनों की आवश्यकता है। हे मेरे अन्तर्मन!, तू उस धन को पाने के लिये गतिशील और विविध गमनसाधन वाली इन प्राणशक्तियों की हृदय से स्तुति कर।

टि. *मरुतों के संघ के पास* - **मारुतं शर्धः।** मरुतां वेगम् - वे.। मरुतां बलम् - सा.। मनुष्याणाम् इदं बलम् - दया.। the troop of Maruts - G.

*यौवनसम्पन्नों के पास* - **युवन्यून्।** मिश्रणम् इच्छतः - वे.। यूनो मिश्रणेच्छून् वा - सा.। आत्मनो मिश्रितान् अमिश्रितान् पदार्थान् इच्छून् - दया.। the youthful - W. youths in act - G.

*कल्याणहेतु* - **स्वस्ति।** सुष्ठु - वे.। अविनश्वरम् - सा.। सुखम् - दया.। (incites me) to holiness - W. (calls me) to well-being - G.

*गतिशीलों की* - **अयासः।** गच्छतः - वे.। यज्ञगन्तॄन् - सा.। unwearied - G.

**प्रैष स्तोमः पृथिवीम् अन्तरिक्षं वनस्पतीँर् ओषधी राये अश्याः।**
**देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्।। १६।।**

प्र। एषः। स्तोमः। पृथिवीम्। अन्तरिक्षम्। वनस्पतीन्। ओषधीः। राये। अश्याः।
देवःऽदेवः। सुऽहवः। भूतु। मह्यम्। मा। नः। माता। पृथिवी। दुःऽमतौ। धात्।। १६।।

*प्रकर्ष से यह स्तोत्र पृथिवी से, अन्तरिक्ष से,*
*वनस्पतियों को, ओषधियों को, धन के रूप में प्राप्त करे।*
*प्रत्येक देव सुख से आह्वान के योग्य, होवे मेरे लिये,*
*मत हमको माता पृथिवी, दुर्मति में स्थापित करे।। १६।।*

हे परमेश्वर! मैं तेरे इस स्तोत्र के द्वारा पृथिवी से, अन्तरिक्ष से, जौ आदि अन्नों तथा वट,

अश्वत्थ आदि बड़े-बड़े वृक्षों से सुख के साधनों को प्राप्त कर सकूं। प्रत्येक दिव्य शक्ति तथा दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त प्रत्येक मनुष्य मेरे द्वारा सुख से आह्वान के योग्य होवे। ये सब मेरे द्वारा प्रार्थना करने पर मुझे सुखसाधन प्रदान करने वाले होवें। सब का निर्माण करने वाली पृथिवी हमें कभी दुर्बुद्धि में स्थापित न करे, ताकि हम सदा विनाश से बचे रहें । हम उसके अन्न आदि को खाकर सद्बुद्धि वाले बनें और सदा सन्मार्ग पर ही चलते रहें।

टि. *प्रत्येक देव* - **देवःऽदेवः**। सर्वः देवः - वे.। सा.। विद्वान् विद्वान् - दया.।

*सुख से आह्वान के योग्य होवे* - **सुहवः भूतु**। स्वाह्वानो भवतु - वे.। सा.।

*मत दुर्मति में स्थापित करे* - **मा दुर्मतौ धात्**। मा दुष्टे मनने दधातु - वे.। दुर्मतौ मा स्थापयतु - सा.। मा दुष्टायां बुद्धौ दध्यात् - दया.। let not take us into unfavourable thought - W. may with no ill thought regard me - G.

**उरौ देवा अनिबाधे स्याम।। १७।।**

उरौ। देवाः। अनिऽबाधे। स्याम।। १७।।

*विस्तृत में, हे देवो!, बाधारहित (स्थान) में, होवें हम।। १७।।*

हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हम सदा विस्तृत और बाधारहित स्थान में निवास करें। इसी प्रकार हम संकीर्ण विचारों का परित्याग करके विशाल हृदय वाले, उदार और प्रगतिशील बनें।

टि. *विस्तृत में* - **उरौ**। विस्तीर्णे - वे.। महति - सा.। बहुसुखकरे - दया.। (may we enjoy) great - W. in free - G.

*बाधारहित (स्थान) में* - **अनिबाधे**। बाधारहिते - वे.। सा.। निर्विघ्ने सति - दया.। uninterrupted felicity - W. in untroubled bliss - G.

**सम् अश्विनोर् अवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।**
**आ नो रयिं वहतम् ओत वीरान् आ विश्वान्यमृता सौभगानि।। १८।। १९।।**

सम्। अश्विनोः। अवसा। नूतनेन। मयःऽभुवा। सुऽप्रनीती। गमेम।
आ। नः। रयिम्। वहतम्। आ। उत। वीरान्। आ। विश्वानि। अमृता। सौभगानि।। १८।।

*मिलकर अश्वियों के संरक्षण में, नूतन में,*
*सुखोत्पादक में, उत्तम मार्गदर्शन में, गमन करें हम।*
*सर्वतः हमारे लिये धन को वहन करो तुम, और सर्वतः वीरों को,*
*सब ओर से सब को, हे अमरणधर्माओ!, सौभाग्यों को।। १८।।*

हम मनुष्य परस्पर मिलकर आत्मा और परमात्मा के संरक्षण में सुखों को उत्पन्न करने वाले नूतन मार्गदर्शन में अपने जीवन को बिताएं। हे अमरणधर्माओ! तुम दोनों हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करो, तुम हमें उत्तम वीर सन्तानें प्रदान करो, तुम हमें सब प्रकार के सौभाग्य प्रदान करो।

टि. *संरक्षण में* - **अवसा**। रक्षणेन - वे.। सा.। दया.।

*उत्तम मार्गदर्शन में* - **सुप्रणीती**। शोभनप्रणयनेन - वे.। शोभनप्रणयनवता (अवसा) - सा.। सुष्ठु प्रगता नीतिर् याभ्यां तौ - दया.। well-guided (protection) - W. guidance - G.

हे *अमरणधर्माओ* - **अमृता**। अमरणानि - वे.। अमरणाव् अश्विनौ - सा.। नित्यानि (सौभगानि) - दया.। immortals - W. G.

## सूक्त ४३

ऋषिः - अत्रिः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - त्रिष्टुप्। सप्तदशर्चं सूक्तम्।

**आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीर् उप नो यन्तु मध्वा।**
**महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति।। १।।**

आ। धेनवः। पयसा। तूर्णिऽअर्थाः। अमर्धन्तीः। उप। नः। यन्तु। मध्वा।
महः। राये। बृहतीः। सप्त। विप्रः। मयःऽभुवः। जरिता। जोहवीति।। १।।

*सब ओर से दुधारू गौएं, दूध के साथ, तीव्र वेग वाली,*
*हिंसा न करती हुईं, पास हमारे गमन करें, माधुर्य वाले के।*
*महान् धन के लिये, महानों को सात को, ज्ञानी,*
*सुखोत्पादकों को, स्तोता बार-बार बुलाता है (पास अपने)।। १।।*

इस मन्त्र में धेनु (दुधारू गौएं) ज्ञान की धाराओं की प्रतीक हैं। सात की संख्या गायत्री, उष्णिक् आदि सात वैदिक छन्दों की द्योतक है। माधुर्य से युक्त दूध मधुर वेदज्ञान का प्रतीक है। यहाँ कामना की गई है कि तीव्रगति से प्राप्त होने वाली, किसी की भी हिंसा न करने वाली, इसके विपरीत सब को सुखी बनाने वाली वेदज्ञान की धाराएं अपने मधुर ज्ञान के साथ सब ओर से हमारे पास आएँ। परमेश्वर का ज्ञानी स्तोता मैं सुखों को उत्पन्न करने वाली छः अंगों सहित वेदज्ञान की सात महान् धाराओं को ऐहिक और पारलौकिक ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिये बार-बार अपने पास बुला रहा हूँ।

टि. *दुधारू गौएं* - **धेनवः**। प्रीणयित्र्यो नद्यः - सा.। गाव इव वाचः - दया.। the milch kine - W. G.

*तीव्र वेग वाली* - **तूर्ण्यर्थाः**। तूर्णगमनाः - वे.। तूर्ण्यर्थाः त्वरमाणगमनाः। अर्थो ऽर्तेः (नि. १. १८)। सा.। quick-moving - W. who hasten to their object - G.

*हिंसा न करती हुईं* - **अमर्धन्तीः**। अहिंसन्त्यः - वे.। सा.। doing no harm - W.

*महान् धन के लिये* - **महः राये**। महते धनाय - वे.। सा.।

*सात को* - **सप्त**। सर्पणस्वभावाः सप्तसंख्याका गङ्गाद्याः (नद्यः) - सा.।

*ज्ञानी* - **विप्रः**। मेधावी - वे.। दया.। विशेषेण प्रीणयिता - सा.। the wise - W.

*बार-बार बुलाता है* - **जोहवीति**। अत्यन्तम् आह्वयति - वे.। आह्वयति - सा.। calls - G.

**आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे।**
**पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम्।। २।।**

आ। सुऽस्तुती। नमसा। वर्तयध्यै। द्यावा। वाजाय। पृथिवी इति। अमृध्रे इति।
पिता। माता। मधुऽवचाः। सुऽहस्ता। भरेऽभरे। नः। यशसौ। अविष्टाम्।। २।।

*इस ओर, सुन्दर स्तुति के द्वारा, नमस्कार के द्वारा, लाने के लिये,*

*द्यौ को, बल के लिये, पृथिवी को, हिंसारहितों को (बुलाता हूँ मैं)।*
*पिता (और) माता, मधुर वचनों वाले, उत्तम हाथों वाले,*
*प्रत्येक संघर्ष में हमारी, (उत्तम) यशों वाले, रक्षा करें।। २।।*

निर्माता होने के कारण पृथिवी हमारी माता है और पालन करने के कारण द्यौ हमारा पिता है। ये दोनों किसी की हिंसा नहीं करते, अपितु रक्षा ही करते हैं। मैं उपासक बल की प्राप्ति के हेतु इन दोनों को अपनी ओर लाने के लिये शोभन स्तुति के द्वारा और नमस्कार के द्वारा इनका आह्वान करता हूँ। मधुर वचनों वाले, दान देने तथा शोभन कर्मों का सम्पादन करने के कारण सुन्दर हाथों वाले और उत्तम यशों वाले ये दोनों जीवन के प्रत्येक संघर्ष में हमारी रक्षा और वृद्धि करें।

टि. *इस ओर लाने के लिये* - **आ वर्तयध्यै**। आ वर्तयितुम् - वे.। सा.। दया.।

*बल के लिये* - **वाजाय**। अन्नार्थम् - सा.। विज्ञानाय - दया.। for the sake of strength - G.

*हिंसारहितों को* - **अमृध्रे**। अहिंसित्र्यौ - वे.। हिंसारहिते - सा.। अहिंसिते - दया.।

*मधुर वचनों वाले* - **मधुवचाः**। अत्र वचनव्यत्ययः। द्विवचनस्य स्थान एकवचनम्।। मधुवचसौ - वे.। प्रियवचना। उभयविशेषणम्। सा.। sweet-spoken - W. G.

**अध्वर्यवश् चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम्।**
**होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय।। ३।।**

अध्वर्यवः। चकृऽवांसः। मधूनि। प्र। वायवे। भरत। चारु। शुक्रम्।
होताऽइव। नः। प्रथमः। पाहि। अस्य। देव। मध्वः। ररिम। ते। मदाय।। ३।।

*हे अध्वर्युओ! तैयार करते हुए मधुर सोमरसों को,*
*प्रकर्ष से वायु के लिये ले चलो तुम, रुचिकरों को, तेजस्वियों को।*
*होता की तरह, हमारे का, प्रथम (होकर) पान कर तू, इसका,*
*हे देव!, सोम का, दिया है (जो) हमने तेरे हर्ष के लिये।। ३।।*

हे अन्तर्यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले उपासको! तुम भक्तिरसरूपी मधुर सोमों का सम्पादन करते हुए, रुचने वाले इन तेजस्वी सोमों को वायु की तरह सर्वत्र गति करने वाले उस परमेश्वर को समर्पित करो। हे द्युतिमान्, सर्वव्यापक परमेश्वर! तू भी यज्ञ के होता की तरह सर्वप्रथम होकर हमारे द्वारा हर्ष के लिये तुझे दिये जाने वाले इन सोमों का भली प्रकार पान कर।

टि. *तैयार करते हुए* - **चकृवांसः**। अभिषुतवन्तः - वे.। कुर्वाणाः - सा.। दया.। who are preparing (the libation) - W. make (the sweet libations) ready - G.

*रुचिकरों को, तेजस्वियों को* - **चारु शुक्रम्**। वचनव्यत्ययः। बहुवचनस्थान एकवचनम्।। कल्याणम् शुक्रम् - वे.। चरणीयं दीप्तं सोमम् - सा.। delightful and brilliant - W.

*दिया है (जो) हमने* - **ररिम**। वयं दत्तवन्तः - वे.। ददाम - सा.। रमेमहि - दया.।

**दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रिं सोमस्य या शमितारा सुहस्ता।**
**मध्वो रसं सुगभस्तिर् गिरिष्ठां चनिश्चदद् दुदुहे शुक्रम् अंशुः।। ४।।**

दश। क्षिपः। युञ्जते। बाहू इति। अद्रिम्। सोमस्य। या। शमितारा। सुऽहस्ता।

मध्वः। रसम्। सुऽगभस्तिः। गिरिऽस्थाम्। चनिश्चदत्। दुदुहे। शुक्रम्। अंशुः।। ४।।

*दस अंगुलियां जोतती हैं, दो भुजाएं, ग्रावा को,*

*जो सोम को कूटने वाली हैं, सुन्दर हाथों वाली।*

*मधुर सोम के रस को, शोभन शाखाओं वाला, पर्वत पर स्थित,*

*आह्लादित करता हुआ, दुहता है द्युतिमान को, सोम का पादप।। ४।।*

इस मन्त्र में सोम के सवन की और उसके माध्यम से साधक के द्वारा भक्तिरस के निष्पादन की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। सोम का सवन करने वाले सोता की दो भुजाएं हैं, दो भुजाओं में दो हाथ और उनमें दस अंगुलियां हैं। सोम को कूटने वाले दो सुन्दर हाथों वाली दो भुजाएं और उनकी दस अंगुलियां ग्रावा को सोमसवन के कार्य में जोतती हैं। इस प्रकार पर्वतशिखर पर स्थित, सुन्दर शाखाओं वाला, मन को आह्लादित करने वाला सोम का पेड़ दीप्तिमान् माधुर्ययुक्त सोमरस को प्रदान करता है। बहुत परिश्रम के पश्चात् ही सोमरस अर्थात् आनन्द की प्राप्ति होती है।

टि. *अंगुलियां* - **क्षिपः**। अङ्गुलयः - वे.। क्षेप्त्र्यो ऽङ्गुलयः - सा.। क्षिपन्ति प्रेरयन्ति याभिस् ता अङ्गुलयः - दया.। expressers of the juice (the fingers) - W. fingers - G.

*सोम को कूटने वाली* - **शमितारा**। पशोः शमितार इव शमितारौ - वे.। अभिषोतारौ - सा.। शान्त्या यज्ञकर्मकर्तारौ - दया.। immolators - W. G.

*शोभन शाखाओं वाला* - **सुगभस्तिः**। शोभनबाहुपरिगृहीतः - वे.। शोभनाङ्गुलिर् अध्वर्युः - सा.। शोभना गभस्तयः किरणा यस्य सूर्यस्य सः - दया.। skilful-fingered (priest) - W. with its spreading branches - G.

*पर्वत पर स्थित* - **गिरिस्थाम्**। विभक्तिव्यत्ययः। प्रथमास्थाने द्वितीया।। गिरिस्थितम् - वे.। गिरिस्थायिनं गिरिवद् उन्नतप्रदेशस्थितं वा - सा.। mountain-born - W. that dwells in mountains - G.

*आह्लादित करता हुआ* - **चनिश्चदत्**। चदतिर् गतिकर्मा। अत्यन्तं निर्गच्छन्। वे.। आह्लादयन्। चदि आह्लादन इत्यस्माद् यङ्लुकि छान्दसं रूपम्। सा.। आह्लादयति - दया.। fair - G.

*सोम का पादप* - **अंशुः**। व्याप्तः - सा.। किरणः - दया.। that Soma - W. the stalk - G.

**असावि ते जुजुषाणाय सोमः क्रत्वे दक्षाय बृहते मदाय।**

**हरी रथे सुधुरा योगे अर्वाग् इन्द्र प्रिया कृणुहि हूयमानः।। ५।। २०।।**

असावि। ते। जुजुषाणाय। सोमः। क्रत्वे। दक्षाय। बृहते। मदाय।

हरी इति। रथे। सुऽधुरा। योगे। अर्वाक्। इन्द्र। प्रिया। कृणुहि। हूयमानः।। ५।।

*सवन कर लिया गया है, तुझ सेवन करने वाले के लिये सोम,*

*प्रज्ञान के लिये, बल के लिये, महान् आनन्द के लिये।*

*दो अश्वों को रथ में, सुन्दर जूए वालों को, जोतने योग्य में, आगे,*

*हे इन्द्र!, प्रीति उत्पन्न करने वालों को कर तू, आह्वान किया हुआ।। ५।।*

हे ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मन्! तुझ प्रीतिपूर्वक सेवन करने वाले के लिये प्रज्ञान की वृद्धि करने

के लिये, बल को बढ़ाने के लिये और महान् आनन्द को उत्पन्न करने के लिये भक्तिरस रूपी सोम हम उपासकों के द्वारा तैयार कर लिया गया है। हमारे द्वारा आह्वान किये जाने पर तू जूए को उत्तम रीति से धारण करने वाले और प्रीति को उत्पन्न करने वाले प्राण और अपान रूपी इन दो अश्वों को जोतने योग्य इस शरीररूपी रथ में जोतकर इसे आगे बढ़ा।

टि. *प्रज्ञान के लिये* - **क्रत्वे**। प्रज्ञार्थम् - वे.। क्रतवे वृत्रवधादिकर्मणे - सा.। प्रज्ञानाय - दया.। (for giving thee strength) in action - W. to give thee power - G.

*बल के लिये* - **दक्षाय**। बलार्थम् - वे.। बलाय - सा.। चातुर्याय बलाय - दया.। for giving thee strength - W. G.

*सुन्दर जूए वालों को* - **सुधुरा**। शोभनबन्धुरौ - वे.। शोभनायां धुरि नियुक्तौ - सा.।

*जोतने योग्य में* - **योगे**। योगनिमित्तम् - वे.। योगार्हे युक्ते वा - सा.। संयोजने - दया.।

**आ नो॑ म॒हीम् अ॒रम॑तिं स॒जोषा॒ ग्नां दे॒वीं नम॑सा रा॒तह॑व्याम्।**
**मधो॒र् मदा॑य बृ॒हतीम् ऋ॑त॒ज्ञाम् आग्ने॑ वह प॒थिभि॑र् देव॒यानैः॑।। ६।।**

आ। नः॒। म॒हीम्। अ॒रम॑तिम्। स॒ऽजोषाः॑। ग्नाम्। दे॒वीम्। नम॑सा। रा॒तऽह॑व्याम्।
मधोः॑। मदा॑य। बृ॒हतीम्। ऋ॒त॒ऽज्ञाम्। आ। अ॒ग्ने॒। व॒ह॒। प॒थिऽभिः॑। दे॒व॒ऽयानैः॑।। ६।।

*इस ओर हमारे पास, महान् को, आज्ञाकारिणी को, समान प्रीति वाला,*
*स्त्री को, देदीप्यमाना को, नमस्कार के साथ दिये गए हव्यों वाली को।*
*मधुर सोम के आनन्द के लिये, वर्द्धिता को, ऋत को जानने वाली को,*
*सर्वतः, हे अग्ने!, वहन कर तू मार्गों से, देवों के द्वारा चले जाने वालों से।। ६।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! तू हम सब के साथ समान प्रीति वाला है। तू महान्, आज्ञाकारिणी, नमस्कार के साथ नैवेद्य प्रदान की जाने वाली, वृद्धि को प्राप्त, शाश्वत नियम को जानने वाली, सर्वत्र प्रकाश को फैलाने वाली वाणी को हमारे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त करने के लिये देवों वाले मार्गों से सब ओर से हमारे पास ले आ।

टि. *सर्वव्यापिका को* - **अरमतिम्**। अनुपरमां सर्वदा गच्छन्तीम् - वे.। आ समन्ताद् रममाणां सर्वत्र गन्त्रीं वा - सा.। विषयेष्वरममाणाम् - दया.। omnipresent - W. the Aramati: the goddess who presides over worship and active piety, and also personifies the Earth - G.

*स्त्री को, देदीप्यमाना को* - **ग्नाम् देवीम्**। एतन्नामिकां देवताम् - वे.। सर्वैर् गन्तव्यां एतन्नामिकां देवताम्। मेना ग्ना इति स्त्रीणाम् (नि. ३.२१) इति यास्कः। ग्नां गच्छन्ति ज्ञानं यया तां देवीं देदीप्यमानां कमनीयाम् - दया.। the divine (female) Gnā - W. Celestial Lady - G.

*दिये गए हव्यों वाली को* - **रातहव्याम्**। दत्तहविष्काम् - वे.। रातं दत्तं दानाय संकल्पितं हव्यं यस्यास् ताम् - सा.। रातानि हव्यानि दातव्यानि दानानि यया ताम् - दया.। to whom oblations are offered - W. worshipped with our gifts - G.

*वर्द्धिता को* - **बृहतीम्**। प्रवृद्धाम् - सा.। vast - W. exalted - G.

*ऋत को जानने वाली को* - **ऋतज्ञाम्**। सत्यज्ञाम् - वे.। यज्ञम् अभिजानतीम् - सा.। ऋतं सत्यं

जानाति यया ताम् - दया.। cognizant of rites - W. who knoweth holy law - G.

**अ॒ञ्जन्ति॒ यं प्र॒थय॑न्तो॒ न विप्रा॑ व॒पाव॑न्तं॒ नाग्निना॒ तप॑न्तः।**
**पि॒तुर् न पु॒त्र उ॒पसि॒ प्रेष्ठ॒ आ घ॒र्मो अ॒ग्निम् ऋ॒तय॑न्नसादि।। ७।।**

अ॒ञ्जन्ति॑। यम्। प्र॒थय॑न्तः। न। विप्राः॑। व॒पाऽव॑न्तम्। न। अ॒ग्निना॑। तप॑न्तः।
पि॒तुः। न। पु॒त्रः। उ॒पसि॑। प्रेष्ठः॑। आ। घ॒र्मः। अ॒ग्निम्। ऋ॒तय॑न्। अ॒सा॒दि॒।। ७।।

*सजाते हैं जिसको, विस्तारते हुए से, मेधावी,*
*सार वाले से को, अग्नि के द्वारा तपाते हुए।*
*पिता की जिस प्रकार पुत्र गोद में, अतिशय प्रिय, सब ओर से,*
*देगचा अग्नि के ऊपर, ऋत का पालन करता हुआ, स्थित होता है।। ७।।*

यह संसार उस महान् देगचे के समान है, जिसमें विविध प्रकार के उत्तम भोजनों को पकाया जाता है। इस संसार को बुद्धिमान् जन अपनी बुद्धिरूपी अग्नि से तपाते हुए विविध प्रकार के निर्माणों और आविष्कारों से सजाते-सँवारते और विस्तारते हैं। और यह संसाररूपी देगचा ऋत के नियमों के अनुसार सभी पदार्थों को पकाता हुआ, उन्हें परिणाम तक पहुँचाता हुआ, उस परमेश्वररूपी अग्नि की गोद में इस प्रकार स्थित है, जिस प्रकार कोई अतिशय प्रिय पुत्र अपने पिता की गोद में आसीन होता है।

टि. *सार वाले से को* - **वपावन्तं न**। वपाशब्दः सारवचनः। यथा वपावन्तं भाण्डम्। वे.। वपावन्तं प्रवृद्धं पशुम् यथा। सा.। विद्याबीजं वितरन्तम् इव - दया.। as if roasting a marrow-yielding animal - W. that which holds the fatty membrane - G.

*गोद में* - **उपसि**। उपस्थे - वे.। सा.। समीपे - दया.। upon the lap - W.G.

*देगचा* - **घर्मः**। महावीरः - वे.। सा.। यज्ञस् तापो वा - दया.। the sacred caldron - G.

*ऋत का पालन करता हुआ* - **ऋतयन्**। यज्ञम् इच्छन् - वे.। सा.। सत्यम् इवाचरन् - दया.। desirous of the sacrifice - W.

**अच्छा॑ म॒ही बृ॑ह॒ती शंत॑मा॒ गीर् दू॒तो न ग॑न्त्व॒श्विना॑ हु॒वध्यै॑।**
**म॒यो॒भुवा॑ स॒रथा या॑तम् अ॒र्वाग् ग॒न्तं नि॒धिं धुर॑म् आ॒णिर् न नाभि॑म्।। ८।।**

अच्छ॑। म॒ही। बृ॒ह॒ती। शम्ऽत॑मा। गीः। दू॒तः। न। ग॒न्तु॒। अ॒श्विना॑। हु॒वध्यै॑।
म॒यः॒ऽभुवा॑। स॒ऽरथा॑। आ। या॒त॒म्। अ॒र्वाक्। ग॒न्त॒म्। नि॒ऽधिम्। धुर॑म्। आ॒णिः। न। नाभि॑म्।। ८।।

*(उस) ओर पूजा के योग्य, महान्, अतिशय सुखदायिनी स्तुति,*
*सन्देशवाहक की तरह गमन करे, अश्वियों को बुलाने के लिये।*
*सुखों को उत्पन्न करने वाले, समान रथ वाले, आ जाओ तुम दोनों सामने,*
*जाओ तुम स्थापित सोम के पास, धारक के पास, कील जिस प्रकार नाभि के।। ८।।*

जिस प्रकार कोई सन्देशवाहक एक राजा के सन्देश को लेकर दूसरे राजा के पास जाता है, उसी प्रकार पूजा के योग्य, सुखों को देने वाली हमारी महान् स्तुति आत्मा और परमात्मा के आह्वान के लिये उनके पास जाए। सुखों को उत्पन्न करने वाले और एक ही शरीर रूपी रथ में आरोहण करने वाले हे आत्मा और परमात्मा! तुम दोनों हमारे द्वारा तैयार किये हुए भक्तिरसरूपी सोम के पास उसी

प्रकार गमन करो, जिस प्रकार कील पहिये को गिरने से रोकने के लिये धारण करने वाली नाभि के पास जाता है, अर्थात् उसमें लगाया जाता है। जिस प्रकार कील के बिना अक्ष को धारण करने वाली नाभि और स्वयं रथ भी निरर्थक है, उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा के द्वारा स्वीकार किये बिना हमारा भक्तिरस भी निरर्थक है।

टि. *गमन करे* - **गन्तु**। गच्छतु। गमेर् गच्छादेशाभावः।। अभिगच्छतु - वे.। सा.। प्राप्नोतु - दया.।

*सुखों को उत्पन्न करने वाले* - **मयोभुवा**। सुखस्य भावयितारौ - वे.। सा.।

*जाओ तुम (दोनों)* - **गन्तम्**। गच्छतम्। अत्रापि गमेर् गच्छादेशाभावः।। अधिगच्छतम् - वे.।

*स्थापित सोम के पास* - **निधिम्**। निहितं हविः - वे.। निहितं सोमम् - सा.। to the deposited Soma - W. to the banquet - G.

*धारक के पास जिस प्रकार नाभि के* - **धुरम् नाभिम्**। शकटस्य रथनहनसाधनीं धुरम् - वे.। भारवाहिकां नाभिम् - सा.। धुरम् यानाधारकाष्ठम्, नाभिम् मध्यम् - दया.। to the axle of the waggon - W. binding pole and nave - G.

**प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्याहं पूष्ण उत वायोर् अदिक्षि।**
**या राधसा चोदितारा मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन्।। ९।।**

प्र। तव्यसः। नमःऽउक्तिम्। तुरस्य। अहम्। पूष्णः। उत। वायोः। अदिक्षि।
या। राधसा। चोदितारा। मतीनाम्। या। वाजस्य। द्रविणःऽदौ। उत। त्मन्।। ९।।

*प्रकर्ष से बलवत्तम के लिये, नमस्कारवचन को, शीघ्रकारी के लिये,*
*मैं पूषा के लिये और वायु के लिये, उच्चरित कर रहा हूँ।*
*जो आराधना के द्वारा, प्रेरित करने वाले हैं स्तुतियों के,*
*और जो बल के और धन के देने वाले हैं स्वयम्।। ९।।*

मैं परमपिता परमेश्वर की अतिशय बलवान् और तीक्ष्ण गति वाली पोषक और सर्वत्र गमन करके समस्त जगत् को व्याप्त करने वाली शक्तियों के लिये अपनी स्तुतियों को समर्पित कर रहा हूँ। ये दोनों ही शक्तियां आराधना करने पर स्तुतियों को और अधिक प्रेरित करने वाली और बिना माँगे स्वयं ही बल और धन को प्रदान करने वाली हैं।

टि. *बलवत्तम के लिये* - **तव्यसः**। अतिशयेन वृद्धस्य। वे.। प्रकृष्टबलस्य। उक्तगुणाय देवाय। सा.। बलस्य - दया.। to the powerful - W. to mightiest - G.

*शीघ्रकारी के लिये* - **तुरस्य**। क्षिप्रस्य - वे.। त्वरमाणस्य। उक्तलक्षणाय देवाय। सा.। शीघ्रकारिणः - दया.। to the rapid - W. to victorious - G.

*उच्चरित कर रहा हूँ* - **अदिक्षि**। अतिसृजामि - वे.। प्रदिशामि - सा.। उपदिशामि - दया.। I offer - W. I have declared - G.

*आराधना के द्वारा* - **राधसा**। अन्नेन - वे.। हविर्लक्षणेन निमित्तेन - सा.। धनेन - दया.। of the desire of wealth - W. by their bounty - G.

*बल के और धन के देने वाले हैं स्वयम्* - **वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन्**। आत्मनैव द्रविणसो

धनस्य दातारौ - वे.। उतापि च त्मन्नात्मन्यनन्यप्रेरणयैव द्रविणोदौ भवतम् इति शेषः - सा.।(who are both) distributors of riches - W. of themselves give power as a possession - G.

**आ नामभिर् मरुतो वक्षि विश्वान् आ रूपेभिर् जातवेदो हुवानः।**
**यज्ञं गिरो जरितुः सुष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती।। १०।। २१।।**

आ। नामऽभिः। मरुतः। वक्षि। विश्वान्। आ। रूपेभिः। जातऽवेदः। हुवानः।
यज्ञम्। गिरः। जरितुः। सुऽस्तुतिम्। च। विश्वे। गन्त। मरुतः। विश्वे। ऊती।। १०।।

*इस ओर नामों के साथ मरुतों को, वहन कर तू सब को,*
*इस ओर रूपों के साथ, हे उत्पन्नों के ज्ञाता!, बुलाया जाता हुआ।*
*यज्ञ को, वाणियों को, स्तोता की शोभन स्तुति को भी,*
*सब प्राप्त करो तुम, हे मरुतो!, सब के सब प्रीति के साथ।। १०।।*

हे सब उत्पन्न हुए पदार्थों को जानने वाले परमेश्वर! तू हमारे द्वारा पुकारा जाता हुआ दान, दिव्यता आदि गुणों से युक्त सभी दैवी शक्तियों, सुजनों और विद्वानों को उनके नामों और रूपों के साथ हमारी ओर ला। हम सदा उनकी सङ्गति चाहते हैं। और हे दैवी शक्तियो, भद्र पुरुषो और विद्वानो! तुम सब के सब प्रीति के साथ हमारे यज्ञ को, हमारी वाणियों को और विशेषतः मुझ स्तोता की शोभन स्तुति को सहर्ष स्वीकार करो।

टि. *नामों के साथ, रूपों के साथ* - **नामभिः रूपेभिः।** आत्मीयैः नामधेयैः तथा अलङ्कृतैः तेषां रूपैश् च - वे.। नामभिर् इन्द्रवरुणेत्यादिलक्षणैः रूपेभिः सहस्राक्षवज्रहस्तत्वादिलक्षणै रूपैः - सा.। संज्ञाभिः रूपैः - दया.। under their several names and forms - W. G.

*मरुतों को* - **मरुतः।** सर्वान् अपि स्तोत्रभाजो हविर्भाजश् च देवान् - सा.। मनुष्यान् - दया.। the Maruts - W. G.

*सब प्राप्त करो तुम* - **विश्वे गन्त।** सर्व एव गच्छत - वे.। विश्व आगच्छत - सा.। सर्वे गच्छन्तु प्राप्नुवन्तु - दया.। come all ye - W. G.

*प्रीति के साथ* - **ऊती।** रक्षणार्थम् - वे.। ऊती रक्षया सह - सा.। ऊत्या रक्षणादिक्रियया - दया.। with all your protecting faculties - W. with aid - G.

**आ नो दिवो बृहतः पर्वताद् आ सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम्।**
**हवं देवी जुजुषाणा घृताची शग्मां नो वाचम् उशती शृणोतु।। ११।।**

आ। नः। दिवः। बृहतः। पर्वतात्। आ। सरस्वती। यजता। गन्तु। यज्ञम्।
हवम्। देवी। जुजुषाणा। घृताची। शग्माम्। नः। वाचम्। उशती। शृणोतु।। ११।।

*आ जाए, हमारे, द्युलोक से महान् से, अन्तरिक्ष से,*
*आ जाए, सरस्वती पूजनीया, यज्ञ में।*
*आह्वान को प्रकाशमाना स्वीकारती हुई, ज्ञानप्रकाशसेक्ता,*
*सुखदा को हमारी स्तुति को, कामना करती हुई सुने।। ११।।*

पूजा के योग्य, ज्ञानप्रकाश से युक्त, दैवी वाणी हमारे आह्वान को प्रीतिपूर्वक स्वीकार करती हुई

द्युलोक से और अन्तरिक्षलोक से हमारे यज्ञ आदि शुभ और परहित कार्यों में पधारे। ज्ञान के प्रकाश की वर्षा करने वाली वह सुख देने वाली वाणी हमारी स्तुति की कामना करती हुई उसे प्यार से सुने और हमारी कामनाओं को पूर्ण करे।

टि. *द्युलोक से* - **दिवः**। दीप्तात् - वे.। दिवः द्योतमानाद् द्युलोकात् - सा.। कामयमानात् - दया.। from the heavens - W. from (high) heaven - G.

*अन्तरिक्ष से* - **पर्वतात्**। स्वावासात् पर्वतात् - वे.। पर्ववतः पूरणवतः प्रीणनवतो वान्तरिक्षान् मेघाद् वा। यद्वैतद् दिव इत्यस्य विशेषणम्। अस्मिन् पक्षे द्वितीय आकारः पूरणः। सा.। मेघात् - दया.। or from the spacious firmament - W. from the mountain - G.

*पूजनीया* - **यजता**। यष्टव्या - वे.। सा.। संगन्तव्या - दया.। propitious - G.

*ज्ञानप्रकाशसेक्ता* - **घृताची**। उदकम् अञ्चन्ती - वे.। सा.। दया.। the showerer of water - W. the balmy - G.

*सुखदा को* - **शग्माम्**। सुखाम् - वे.। सुखकरीम् - सा.। सुखमयीम् - दया.। glorifying - W. effectual - G.

**आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं सदने सादयध्वम्।**
**सादद्योनिं दम आ दीदिवांसं हिरण्यवर्णम् अरुषं सपेम।। १२।।**

आ। वेधसम्। नीलऽपृष्ठम्। बृहन्तम्। बृहस्पतिम्। सदने। सादयध्वम्।
सादत्ऽयोनिम्। दमे। आ। दीदिऽवांसम्। हिरण्यऽवर्णम्। अरुषम्। सपेम।। १२।।

*सर्वतः विधाता को, नीले पृष्ठ भाग वाले को, महान् को,*
*वेदज्ञान के पालक को, (अपने) सदन में आसीन करो तुम।*
*अन्तर्गृह में आसीन को, गृह में सब ओर देदीप्यमान को,*
*सुनहरे वर्ण वाले को, आरोचमान को, पूजें हम (सदा ही)।। १२।।*

हे साधको! वेदज्ञान का पालक वह परमेश्वर इस जगत् का विधाता है। यह नीला आकाश उसकी पीठ है। वह सब से महान् है। तुम उसको अपने हृदयमन्दिर में स्थापित करो। हृदयमन्दिर के अन्दर अन्तर्गृह में विराजमान की, देदीप्यमान की, सुवर्ण के समान तेजस्वी की, आरोचमान इस परमेश्वर की हम सदा सब प्रकार से पूजा-अर्चना करते रहें।

*विधाता को* - **वेधसम्**। विधातारम् - वे.। विविधकर्तारम् - सा.। मेधाविनम् - दया.। the creator - W. the Disposer - G.

*नीले पृष्ठ भाग वाले को* - **नीलपृष्ठम्**। स्निग्धाङ्गम् - सा.। नीलसंवृत्तं पृष्ठं यस्य तम् - दया.। whose back is dark blue - W. whose back is dusky - G.

टि. *वेदज्ञान के पालक को* - **बृहस्पतिम्**। बृहतो मन्त्रस्य स्वामिनं देवम् - सा.। महतां पतिम् - दया.। Bṛhaspati - W. G.

*अन्तर्गृह में आसीन को* - **सादद्योनिम्**। अध्वर्युभिः साद्यस्थानम् - वे.। योनौ सीदन्तम् - सा.। सीदन्तं धर्म्ये कारणे - दया.। who is seated in the interior of the mansion - W. set

within the dwelling - G.

*पूजें हम* - **सपेम।** स्पृशामः - वे.। परिचरेम - सा.। सुपथैर् नियमयेम - दया.। let us worship - W. G.

**आ धर्णसिर् बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिर् गन्त्वोमभिर् हुवानः।**
**ग्ना वसान ओषधीर् अमृध्रस् त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः।। १३।।**

आ। धर्णसिः। बृहत्ऽदिवः। रराणः। विश्वेभिः। गन्तु। ओमऽभिः। हुवानः।
ग्नाः। वसानः। ओषधीः। अमृध्रः। त्रिधातुऽशृङ्गः। वृषभः। वयःऽधाः।। १३।।

*इस ओर, धारण करने वाला, महान् तेजस्वी, रमण कराने वाला,*
*सब के साथ गमन करे, रक्षाओं के, आह्वान किया जाता हुआ।*
*वाणियों में निवास करता हुआ, ओषधियों में, हिंसा के अयोग्य,*
*त्रिविध दीप्तियों वाला, सुखों का वर्षक, जीवन को देने वाला।। १३।।*

समस्त जगत् को धारण करने वाला, महान् तेजस्वी, सुखसाधनों को देकर जीवन में रमण कराने वाला, सब वाणियों और सब प्रकार के अन्नों और पौधों में निवास करने वाला, किसी के द्वारा भी हिंसित न किया जा सकने वाला, अग्नि, विद्युत् और सूर्य रूपी तीन प्रकार की दीप्तियों वाला, सब पर सुख और शान्ति की वर्षा करने वाला और सब प्राणियों को जीवन प्रदान करने वाला वह परमेश्वर हम उपासकों के द्वारा आह्वान किये जाने पर अपनी रक्षणशक्तियों के साथ हमें प्राप्त होवे।

टि. *धारण करने वाला* - **धर्णसिः।** धारयिता - वे.। सर्वस्य धारकः - सा.। धर्त्ता - दया.। sustainer of all - W. G.

*महान् तेजस्वी* - **बृहद्दिवः।** बृहद्दीप्तिः - वे.। प्रभूतदीप्तिः - सा.। greatly radiant - W. high in heaven - G.

*रक्षाओं के साथ* - **ओमभिः।** पितृभिः सह - वे.। रक्षणैः सह - सा.। रक्षणादिकारकैः सह - दया.। with all his protecting faculties - W. with all his favours - G.

*वाणियों में निवास करता हुआ* - **ग्नाः वसानः।** पत्नीभूताः (ओषधीः) राजयन् - वे.। गन्त्रीर् ज्वाला वसानः - सा.। ग्नाः वाचः। ग्नेति वाङ्नाम (निघ. १.११)। वसानः आच्छादयन्। दया.। clothed with flames - W. Dweller with Dames divine - G.

*त्रिविध दीप्तियों वाला* - **त्रिधातुशृङ्गः।** त्रिगुणदीप्तिः - वे.। त्रिप्रकारशृङ्गवदुन्नतलोहितशुक्लकृष्णवर्णज्वालः - सा.। त्रयो धातवो शुक्लरक्तकृष्णगुणाः शृङ्गवद् यस्य सः - दया.। who has horns of three colours - W. the Steer with triple horn - G.

*जीवन को देने वाला* - **वयोधाः।** अन्नस्य धाता - वे.। हविषो वा धारकः - सा.। यो वयः कमनीयम् आयुर् दधाति सः - दया.। the accepter of oblations - W. the life- bestower - G.

**मातुष् पदे परमे शुक्र आयोर् विपन्यवो रास्पिरासो अग्मन्।**
**सुशेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे।। १४।।**

मातुः। पदे। परमे। शुक्रे। आयोः। विपन्यवः। रास्पिरासः। अग्मन्।

सुऽशेव्यम्। नमसा। रातऽहव्याः। शिशुम्। मृजन्ति। आयवः। न। वासे।। १४।।

*माता के स्थान पर, परम पवित्र पर, यजमान मनुष्य के,*
*स्तोता (सब), आहुतिदान के साधनों से सम्पन्न, पहुँच गए।*
*शोभनसुखार्ह को, नमस्कार के साथ, हव्य देने वाले (शोध रहे हैं),*
*शिशु को शोधते हैं, मनुष्य जिस प्रकार घर में (अपने)।। १४।।*

माता से तात्पर्य सब की निर्मात्री धरती माता से है। यज्ञवेदि इसका परम पवित्र स्थान है। आहुति देने के सब साधनों से सम्पन्न, यजमान के स्तोता जन यजन के लिये यज्ञवेदि पर पधार गए हैं। वे यज्ञकुण्ड में स्थित अग्नि रूपी नवजात शिशु का अपनी आहुतियों से उसी प्रकार पालन-पोषण कर रहे हैं, जिस प्रकार मनुष्य अपने घर में नवजात शिशु का पालन-पोषण और संवर्धन करते हैं।

बाह्य यज्ञ की तरह शरीर के अन्दर हृदयरूपी यज्ञवेदि पर सम्पन्न होने वाले अन्तर्यज्ञ में भी याजक आत्मा के सहायक मन, इन्द्रिय, प्राण आदि आभ्यन्तर यज्ञाग्नि को उसी प्रकार पालते-पोषते और बढ़ाते हैं, जिस प्रकार साधारण जन अपने शिशु को घर में पालते-पोषते ओर बढ़ाते हैं।

टि. *आहुतिदान के साधनों से सम्पन्न* - **रास्पिरासः**। 'रास्पी रास्तेर् दानकर्मणः' इति यास्कः (नि. ६.२१)। हविषो दातारः। वे.। रा धनं हविर्लक्षणम्। तत् स्पृशन्ति रास्पा जुह्वादयः। तद्वान् रास्पी। तद्वन्तो रास्पिराः। उक्तविधा ऋत्विजः। सा.। ये रा दानानि स्पृणन्ति ते - दया.। the holders of (sacrificial) ladles - W. eloquent - G.

*शोभनसुखार्ह को* - **सुशेव्यम्**। शोभनसुखसाधनम् अन्नम् - वे.। सुखाय हितम् - सा.। सुष्ठु सुखेषु भवम् - दया.। the most auspicious - G.

*हव्य देने वाले* - **रातहव्याः**। दत्तहविष्काः - वे.। दत्तहव्याः। हविष्का इत्यर्थः। सा.। दत्तदातव्याः - दया.। offerers of the oblation - W. with offered gifts - G.

*शोधते हैं* - **मृजन्ति**। संमार्जयन्ति - सा.। शोधयन्ति - दया.। foster - W. deck - G.

**बृहद् वयो बृहते तुभ्यम् अग्ने धियाजुरो मिथुनासः सचन्त।**
**देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्।। १५।।**

बृहत्। वयः। बृहते। तुभ्यम्। अग्ने। धियाऽजुरः। मिथुनासः। सचन्त।
देवःऽदेवः। सुऽहवः। भूतु। मह्यम्। मा। नः। माता। पृथिवी। दुःऽमतौ। धात्।। १५।।

*महान् जीवन को (अपने), तुझ महान् के लिये, हे अग्ने!,*
*स्तुतियां करते-करते जरा को प्राप्त दम्पती, समर्पित करते हैं।*
*प्रत्येक देव सुख से आह्वान के योग्य, हो जाए मेरे लिये,*
*मत हमको माता पृथिवी, दुर्बुद्धि में स्थापित करे (कभी)।। १५।।*

हे मनुष्यों को सन्मार्ग पर अग्रसर करने वाले परमेश्वर! स्तुतियां करते-करते जरावस्था को प्राप्त गृहस्थ दम्पती तुझ महान् के लिये अपने महान् जीवन को समर्पित कर देते हैं। मैं भी उसी प्रकार अपने बहुमूल्य जीवन को तुझ महान् के लिये समर्पित करने वाला गृहस्थ हूँ। आप अपनी कृपादृष्टि सदा मुझपर बनाए रखिये। मेरे लिये प्रत्येक देव सुख से आह्वान के योग्य हो जाए। सब की दाता

धरती माता मुझे कभी दुर्बुद्धि में स्थापित न करे। मैं अपने परिश्रम के द्वारा धरती माता से पवित्र अन्न, जल आदि प्राप्त करता रहूँ, जिससे मेरी बुद्धि सदा पवित्र और निर्मल बनी रहे।

टि. *महान् जीवन को* - **बृहत् वयः**। महत् अन्नम् - वे.। सा.। महत् जीवनम् - दया.। abundant sacrificial food - W. great vital power - G.

*स्तुतियां करते-करते जरा को प्राप्त दम्पती* - **धियाजुरः मिथुनासः**। धियाजुरः बुद्ध्या त्वां स्तुवन्तः मिथुनाः पत्नीयजमानाः - वे.। कर्मणा जीर्णाः पत्नीभिः सहिताः - सा.। धिया प्रज्ञया कर्मणा वा प्राप्तजरावस्थाः सपत्नीकाः - दया.। married pairs worn by devout rites - W. pairs waxing old in their devotion - G.

*समर्पित करते हैं* - **सचन्त**। सेवन्ते दानाय - वे.। सेवन्ते - सा.। समवयन्ति - दया.। jointly offer - W. seek thee - G.

**उरौ देवा अनिबाधे स्याम।। १६।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठानुवादादिभ्य ऋ. ५.४२.१७ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

**सम् अश्विनोर् अवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।**
**आ नो रयिं वहतम् ओत वीरान् आ विश्वान्यमृता सौभगानि।। १७।। २२।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठानुवादादिभ्य ऋ. ५.४२.१८ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त ४४

ऋषिः - काश्यपो ऽवत्सारः। यास्त्वृक्षु सदापृणबाहुवृक्तादयः श्रुतास् तासु ते ऽपि समुच्चीयन्ते। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - १-१३ जगती, १४-१५ त्रिष्टुप्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदम्।**
**प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिराशुं जयन्तम् अनु यासु वर्धसे।। १।।**

तम्। प्रत्नऽथा। पूर्वऽथा। विश्वऽथा। इमऽथा। ज्येष्ठऽतातिम्। बर्हिऽसदम्। स्वःऽविदम्।
प्रतीचीनम्। वृजनम्। दोहसे। गिरा। आशुम्। जयन्तम्। अनु। यासु। वर्धसे।। १।।

*उससे, प्राचीनों की तरह, पूर्वजों की तरह, सब की तरह, आधुनिकों की तरह,*
*सब के मुखिया से, (यज्ञ में) आसन पर बैठने वाले से, सुखों को प्राप्त कराने वाले से।*
*अभिमुख होने वाले से, बलवान् से, कामनाओं का दोहन कर तू, स्तुतियों के द्वारा,*
*शीघ्रगामी से, शत्रुविजेता से, अनुकूलता से जिनमें (उस इन्द्र को) बढ़ाता है तू।। १।।*

हे मेरे अन्तरात्मन्! जिस प्रकार प्राचीन ऋषिगण, जिस प्रकार हमारे पूर्वज, जिस प्रकार सब स्तोता जन और जिस प्रकार आधुनिक उपासक वृन्द देवों के अधिदेव, उपासक के हृदयरूपी आसन पर विराजने वाले, सुखों को प्राप्त कराने वाले, अपने अभिमुख स्थित, शक्तिमान्, मन से भी तीव्र गति वाले और आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने वाले उस इन्द्र से अपनी कामनाओं का दोहन कराते आए हैं, उसी प्रकार तू भी अपनी उन स्तुतियों के द्वारा उससे अपनी कामनाओं को पूर्ण करा, जिनसे तू उसके अनुकूल रहता हुआ उसे सदा बढ़ाता रहता है।

टि. *आधुनिकों की तरह* - **इमथा**। संप्रतिनाः - वे.। इम इदानीं वर्तमाना यजमानाः - सा.। इमम् इव - दया.। as now - G.

*सब के मुखिया से* - **ज्येष्ठतातिम्**। प्रशस्तम् - वे.। ज्येष्ठम् - सा.। दया.। the oldest and best of the gods - W. the Princedom - G.

*सुखों को प्राप्त कराने वाले से* - **स्वर्विदम्**। सर्वज्ञम् - वे.। सर्वज्ञं सर्वस्य लम्भयितारं वा - सा.। स्वः सुखं विदन्ति येन तम् - दया.। cognizant of heaven - W. who findeth light - G.

*बलवान् से* - **वृजनम्**। वृष्टिलक्षणान्युदकानि - वे.। बलनामैतद् बलवति वर्तते। बलवन्तम्। सा.। बलम् - दया.। vigorous - W.

*दोहन कर तू* - **दोहसे**। धुक्ष्व सर्वदा सर्वान् कामान्। इत्यन्तरात्मनः प्रैषः। सा.।

*स्तुतियों के द्वारा* - **गिरा**। स्तुत्या - वे.। स्तुत्या साधनेन - सा.। वाण्या - दया.।

*शीघ्रगामी से* - **आशुम्**। आशुकारिणम् - वे.। शीघ्रगामिनं व्याप्तं वा - सा.। swift - G.

*जिन में (उस इन्द्र को) बढ़ाता है तू* - **यासु वर्धसे**। यासु स्तुतिषु (तम्) वर्धयसि। इदम् इहापि स्मर्तव्यम् - यथा द्वयोर् मन्त्रयोर् एकस्यैवार्थस्य विरम्याभिधानाद् एकवचनबहुवचनाभ्यां निर्देशः, एवम् एकस्मिन्नपि मन्त्रे विरम्याभिधानाद् भिन्नपादस्थयोर् एकवचनबहुवचनयोर् अन्वयो भवतीति। वे.। यासु स्तुतिषु वर्धसे प्रवृद्धो भवसि वर्धयसि वेन्द्रं यया स्तुत्येति। यास्विति व्यत्ययेन बहुवचनम्। सा.।

**श्रि॒ये सु॒दृशी॑र् उप॑रस्य॒ याः स्व॑र् वि॒रोच॑मानः क॒कुभा॑म् अचो॒दते॑।**
**सु॒गो॒पा अ॑सि॒ न दभा॑य सुक्रतो प॒रो मा॒याभि॑र् ऋ॒त आ॑स॒ नाम॑ ते॥ २॥**

श्रि॒ये। सु॒ऽदृशीः॑। उप॑रस्य। याः। स्व॑ः। वि॒ऽरोच॑मानः। क॒कुभा॑म्। अ॒चो॒दते॑।
सु॒ऽगो॒पाः। अ॒सि॒। न। दभा॑य। सु॒क्र॒तो॒ इति॑ सुऽक्रतो। प॒रः। मा॒याभिः॑। ऋ॒ते। आ॒स॒। नाम॑। ते॒॥ २॥

*आश्रय के लिये (प्राणियों के), स्वच्छ (जल) मेघ के जो हैं, सुखलोक में,*
*प्रकाशमान, दिशाओं में प्रेरित न करने वाले के, (उनको प्रेरित करता है तू)।*
*उत्तम पालक है तू, नहीं है हिंसा के लिये, हे शोभन कर्मों वाले!*
*महान् (है तू) निर्माणशक्तियों से (अपनी), ऋत में (स्थित) है नाम तेरा॥ २॥*

हे आसुरी शक्तियों के विनाशक परमेश्वर! अपने जलों को दिशाओं में प्रेरित न करने वाले, अर्थात् न बरसाने वाले, मेघ के जो देखने में सुन्दर और स्वच्छ जल हैं, सुख और प्रकाश के लोक में प्रकाशमान तू उन जलों को प्राणियों को सहारा देने के लिये धरती पर सब दिशाओं में बरसा देता है। हे उत्तम प्रज्ञाओं और कर्मों वाले परमेश्वर! तू श्रेष्ठ पालक और रक्षक है। तू अकारण किसी की हिंसा नहीं करता। तू अपनी निर्माणशक्तियों के कारण महान् है। तेरा नाम ऋत के साथ जुड़ा हुआ है।

टि. *आश्रय के लिये* - **श्रिये**। भूम्याश्रयणार्थम् - वे.। प्राणिनां श्रयणाय - सा.। धनाय शोभायै वा - दया.। for the good of mankind - W. shining to him - G.

*स्वच्छ (जल) मेघ के* - **सुदृशीः उपरस्य**। सुदर्शनाः मेघस्य स्वभूताः - वे.। उपरस्य मेघस्य सम्बन्धिन्यः सुदृशीः सुरोचमाना आपः - सा.। शोभनं दृग् दर्शनं यासां ताः मेघस्य - दया.। the

beautiful waters of the cloud - W.

*प्रेरित न करने वाले के* - **अचोदते**। अचोदच्छब्दः ओषधिवचनस् पतिवचनो ऽभिलषितस्य चोदयित्र्या वाचा रहित इति - वे.। अप्रेरयितुः। षष्ठ्यर्थे चतुर्थी। सा.। अप्रेरकाय - दया.। of the unyielding - W.

*महान् (है तू) निर्माण शक्तियों से* - **परः मायाभिः**। तरसि शत्रून् प्रज्ञाभिः - वे.। मायाभिर् आसुरीभिः परो मायाभ्यः परस्ताद् वर्तमानः - सा.। प्रकृष्टः प्रज्ञाभिः - दया.। thou art superior to all delusions - W. far from deceits - G.

**अत्यं॑ ह॒विः स॑चते॒ सच् च॒ धातु॒ चारि॑ष्टगातु॒ः स होता॑ सहो॒भरि॑ः।**
**प्र॒सर्स्रा॑णो॒ अनु॑ ब॒र्हिर् वृषा॒ शिशु॒र् मध्ये॒ युवा॒जरो॑ वि॒स्रुहा॑ हि॒तः।। ३।।**

अत्य॑म्। ह॒विः। स॒च॒ते॒। सत्। च॒। धातु॑। च॒। अरि॑ष्टऽगातुः। सः। होता॑। स॒ह॒ःऽभरि॑ः।
प्र॒ऽसर्स्रा॑णः। अनु॑। ब॒र्हिः। वृषा॑। शिशु॑ः। मध्ये॑। युवा॑। अ॒जर॑ः। वि॒ऽस्रुहा॑। हि॒तः।। ३।।

*गमनशील हवि का सेवन करता है, सत्फला का और धारक का,*
*अबाधित गति वाला वह, यज्ञों का निष्पादक, बलों को लाने वाला।*
*प्रकर्ष से गमन करता हुआ बर्हि की ओर, सुखवर्षक, शिशु,*
*अन्तरिक्ष में (स्थित), युवा, जरारहित, ओषधियों में स्थित।। ३।।*

वह मार्गदर्शक परमेश्वर अपने उपासक के उस नैवेद्य को स्वीकार करता है, जो निरन्तर समर्पित किया जाने वाला है, जो कभी निष्फल नहीं होता और जो ग्रहीता को धारण करने वाला है। वह परमेश्वर अबाधित गति वाला होने से सर्वव्यापक है। वह यज्ञ आदि सब शुभ कर्मों का सम्पादन करने वाला है। वह निर्बलों में बलों को भरने वाला है। वह सदा अपने उपासकों की हृदय रूपी वेदि की ओर गमन करता है। वह सुखों को बरसाने वाला और कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। वह शिशु के समान निश्छल और निष्कपट है, परन्तु सदा युवावस्था में रहता है। वह कभी जरावस्था को प्राप्त नहीं होता। वह अन्तरिक्ष और ओषधियों में सर्वत्र व्याप्त है।

टि. *गमनशील हवि का* - **अत्यं हविः**। पार्थिवाल् लोकाद् देवान् प्रति गमनहितं हविः - वे.। सततगमनार्हम् आज्यादिकम् - सा.। perpetual oblation - W. truth waits upon oblation - G.

*सत्फला का और धारक का* - **सत् च धातु च**। जङ्गमं पश्वादिकं स्थावरम् ओषध्यादिकं च - वे.। सत्फलसाधनत्वाद् धविर् अपि सत्। धातु च धारकं सर्वस्य। सा.। सत् यद् वर्तते तत्। धातु यद् दधाति। दया.। that is the true (source of good), the sustainer of all - W. present and to come - G.

*बलों को लाने वाला* - **सहोभरि.**। राक्षसानां हननार्थं बलस्य भर्ता - वे.। सा.। यः सहो बलं बिभर्ति तत् - दया.। the cherisher of strength - W. victory-bringing - G.

*प्रकर्ष से गमन करता हुआ* - **प्रसर्स्राणः**। प्रकर्षेण सरन् - सा.। प्रकर्षेण भृशं गच्छन् - दया.। gliding especially - W.

*अन्तरिक्ष में (स्थित), ओषधियों में स्थित* - **मध्ये विस्रुहा हितः**। मध्ये मध्यलोके ऽन्तरिक्षे।।

सो ऽयम् अन्तरिक्षस्थानाम् अपां मध्ये निहितः - वे.। विस्रुहाणाम् ओषधीनां मध्ये निहितः - सा.। set in the midst of plants - G.

**प्र वं एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीर् अमुष्मै यम्यं ऋतावृधः।**
**सुयन्तुभिः सर्वशासैर् अभीशुभिः क्रिविर् नामानि प्रवणे मुषायति।। ४।।**

प्र। वः। एते। सुऽयुजः। यामन्। इष्टये। नीचीः। अमुष्मै। यम्यः। ऋतऽवृधः।
सुयन्तुऽभिः। सर्वऽशासैः। अभीशुऽभिः। क्रिविः। नामानि। प्रवणे। मुषायति।। ४।।

*प्रकर्ष से तुम्हारे पास ये सष्ठु मिली हुईं, यज्ञ में जाने की इच्छा से,*
*नीचे को (जाती हैं) उस (यजमान) के लिये, जोड़िया, ऋत की वर्धक।*
*उत्तम नियन्त्रण वालियों से, सब पर शासन करने वालियों से, रश्मियों से,*
*कर्त्ता (जगत् का), जलों को, निम्न स्थान में (बहने वालों को), चुराता है।। ४।।*

हे मनुष्यो! उस सर्वप्रेरक परमेश्वर की परस्पर मिलकर चलने वाली, इस जगत् में प्रवर्तमान शाश्वत यज्ञ में जाकर उसे बढ़ाने की कामना वाली, एक साथ उत्पन्न होने वाली, सत्यनियम की वृद्धि करने वाली ये रक्षक रश्मियां यजमान के कल्याण के लिये नीचे की ओर तुम्हारे पास गमन करती हैं। जगत् का कर्त्ता परमेश्वर सुनियन्त्रित और सब को अपने शासन में रखने वाली इन रश्मियों के द्वारा सरोवर, तड़ाग, समुद्र आदि निम्न स्थानों में पड़े जलों को ऊपर आकाश में उठा ले जाता है और उन्हें मेघों में परिणत करके पुनः जलरूप में धरती पर बरसा देता है।

टि. *यज्ञ में जाने की इच्छा से* - **यामन् इष्टये।** यामन् दिवं प्रति गमने युष्माकम् अभ्युदयार्थम् - वे.। यज्ञगमन एषणाय - सा.। यामनि मार्गे इष्टसुखाय -- दया.। with intent to proceed on the path (of the sacrifice) - W. for furtherance of the rite - G.

*नीचे को (जाती हैं)* - **नीचीः।** नीचीनाग्राः - वे.। नीचं गच्छन्तीति शेषः - सा.। निम्नगताः - दया.। come down - G.

*जोड़िया* - **यम्यः।** उदकस्य यन्त्र्यः - वे.। यम्या गमनार्हाः - सा.। यमाय न्यायकारिणे हिताः - दया.। the twin-born - G.

*उत्तम नियन्त्रण वालियों से* - **सुयन्तुभिः।** शोभनयमनैः - वे.। सुगमनैः - सा.। swift-moving - W. with reins easily guided - G.

*कर्त्ता (जगत् का)* - **क्रिविः।** कूपसदृशो ऽयं पार्थिवो ऽग्निः - वे.। कर्ता - सा.। प्रजापालन-कर्ता - दया.। the hide - G.

*जलों को* - **नामानि।** नामेति उदकनामसु पठितम् (निघ. १.१२)। अन्तरिक्षस्थानानि उदकानि - वे.। नामकान्युदकानि - सा.। दया.। the waters - W. names - G.

**संजर्भुराणस् तरुभिः सुतेगृभं वयाकिनं चित्तगर्भासु सुस्वरुः।**
**धारवाकेष्वृजुगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीर् अभि जीवो अध्वरे।। ५।। २३।।**

सम्ऽजर्भुराणः। तरुऽभिः। सुतेऽगृभम्। वयाकिनम्। चित्तऽगर्भासु। सुऽस्वरुः।
धारऽवाकेषु। ऋजुऽगाथ। शोभसे। वर्धस्व। पत्नीः। अभि। जीवः। अध्वरे।। ५।।

*ग्रहण करता हुआ काष्ठपात्रों से, सवन करके ग्रहण किये हुए को (सोम को),*
*आयु को बढ़ाने वाले को, चित्तग्राहक स्तुतियों से शोभन स्तुतियों वाला।*
*स्तुतियों को धारण करने वालों में, हे सच्ची स्तुतियों वाले!, शोभता है तू,*
*बढ़ा तू पालन करने वालियों को, सर्वतः, जीवनदाता, यज्ञ में।। ५।।*

हे अग्रणी परमेश्वर! चित्ताकर्षक स्तुतियों से सुन्दर स्तुतियों वाला तू, साधकों के द्वारा योगसाधना, तप, स्वाध्याय आदि उपायों से तैयार किये हुए, आयु को बढ़ाने वाले, भक्तिरसरूपी सोम को हृदय रूपी पवित्र पात्रों से ग्रहण करता हुआ वर्तमान है। हे सच्ची स्तुतियों वाले! तू स्तुतियों को धारण करने वाले स्तोताओं के हृदयों में शोभयमान हो रहा है। हे जीवनदाता! तू जगत् में प्रवर्तमान इस यज्ञ में याजकों का पालन करने वाली शक्तियों की सब ओर से वृद्धि कर।

टि. *ग्रहण करता हुआ* - **संजर्भुराणः**। संभरन् - वे.। गृभ्णन् गृह्णन् - सा.। सम्यक् पालयन् धरन् - दया.। moving beauteously - G.

*काष्ठपात्रों से* - **तरुभिः**। विकारे प्रकृतिशब्दः।। ज्वलनसाधनैः तरुभिः - वे.। तरुविकारैर् ग्रहैः - सा.। वृक्षैः - दया.। by the wooden (cups) - W. with trees - G.

*आयु को बढ़ाने वाले को* - **वयाकिनम्**। वयाकशब्दः मिश्रणवचनः। व्याघारणशेषेण आज्येन मिश्रितः पात्रीवतो भवति - वे.। कुत्सिता वयाः शाखा वयाका लताः। तद्वन्तं सोमम्। सा.। व्यापिनम् - दया.। आयु को धारण करने वाले को - सात.।

*शोभन स्तुतियों वाला* - **सुस्वरुः**। शोभनस्वरणस् त्वम् - वे.। शोभनगमनः - सा.। सुष्ठूपदेशकः - दया.। गुहाओं में विचरने वाला - सात.।

*स्तुतियों को धारण करने वालों में* - **धारवाकेषु**। स्तुतिवाक्यानां धारकेषु - वे.। धारयन्ति वाकान् स्तोत्राणीति धारवाका ऋत्विग्यजमानाः। तेषु मध्ये। सा.। शस्त्रवागुपदेशकेषु - दया.। mid the upholders of the voice - G.

*हे सच्ची स्तुतियों वाले* - **ऋजुगाथ**। शोभनस्तुते - वे.। शोभनस्तुतिकाग्ने - सा.। य ऋजुं सरलं व्यवहारं गाति स्तौति तत्सम्बुद्धौ - दया.। true singer - G.

**या॒दृग् ए॒व दद॑ृशे ता॒दृग् उ॑च्यते॒ सं छा॒यया॑ दधिरे सि॒ध्रया॒प्स्वा।**
**म॒हीम् अ॒स्मभ्य॑म् उरु॒षाम् उ॒रु ज्रयो॑ बृ॒हत् सु॒वीर॒म् अन॑पच्युतं॒ सह॑ः।। ६।।**

या॒दृक्। ए॒व। दद॑ृशे। ता॒दृक्। उ॒च्य॒ते॒। सम्। छा॒यया॑। द॒धि॒रे। सि॒ध्रया॑। अ॒प्ऽसु। आ।
म॒हीम्। अ॒स्मभ्य॑म्। उ॒रु॒ऽसाम्। उ॒रु। ज्रय॑ः। बृ॒हत्। सु॒ऽवीर॑म्। अन॑पऽच्युतम्। सह॑ः।। ६।।

*जैसा ही देखा जाता है, वैसा (ही) कहा जाता है,*
*सम्यक् तेज से धारण किया (धरा को) उन्होंने, साधक से, जलों में सब ओर।*
*पृथिवी को हमारे लिये बहुदात्री को, विस्तृत वेग को,*
*महान् उत्तम बल को, अक्षीण बल को (प्रदान करें वे हमको)।। ६।।*

ऋषियों के द्वारा जैसा देखा जाता है, वैसा ही वर्णन किया जाता है। ऋषि बताते हैं कि देवों ने (अर्थात् परमेश्वर ने अपनी दिव्य शक्तियों के द्वारा) इस पृथिवी को जलों में सब ओर कार्यों को

साधने वाले अपने तेज से उत्पन्न किया। वे देव बहुत देने वाली इस पृथिवी को, विस्तृत वेग को, महान् श्रेष्ठ सन्तति को और कभी क्षीण न होने वाले बल को हमें सदा प्रदान करते रहें।

टि. *तेज से, साधक से* - **छायया सिध्रया।** आत्मीयया कामानां धारयित्र्या छायया - वे.। दीप्त्या साधिकया सह - सा.। छायया मङ्गलया - दया.। (they abide) with concentrated splendour - W. with effectual splendour - G.

*जलों में* - **अप्सु।** व्यापकासु स्तुतिषु अप्स्वेव वा - सा.। जलेषु प्राणेषु वा - दया.। in the waters - W. in the floods - G.

*पृथिवी को* - **महीम्।** महतीम् - वे.। महतीं पूज्याम् - सा.। महतीं वाचम् - दया.। honourable - W. Earth - G.

*बहुदात्री को* - **उरुषाम्।** उरूणाम् अर्थानां सातिम् - वे.। बहुदात्रीं रयिम् - सा.। यो बहून् सनति विभजति - दया.। ample (riches) - W. (yield us) room enough - G.

*वेग को* - **व्रयः।** वेगम् - वे.। सा.। वेगवन्तः - दया.। energy - W.

*अक्षीण बल को* - **अनपच्युतं सहः।** अप्रस्खलितं सहः - वे.। अनुपक्षीणं बलम् - सा.। ह्रासरहितं बलम् - दया.। undecaying vigour - W. might invincible - G.

**वेत्यग्रुर् जनिवान् वा अति स्पृधः समर्यता मनसा सूर्यः कविः।**
**घ्रंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गयम् अस्माकं शर्म वनवत् स्वावसुः।। ७।।**

वेति। अग्रुः। जनिऽवान्। वै। अति। स्पृधः। सऽमर्यता। मनसा। सूर्यः। कविः।
घ्रंसम्। रक्षन्तम्। परि। विश्वतः। गयम्। अस्माकम्। शर्म। वनवत्। स्वऽवसुः।। ७।।

*गमन करता है अग्रगामी, जनक, निश्चय से, अतिक्रमण करके शत्रुओं का,*
*युद्ध करने की इच्छा वाले मन से, सब का प्रेरक, क्रान्तदर्शी।*
*दीप्तिमान् को, रक्षा करने वाले को, सब ओर से, घर को,*
*(और) हमें सुख प्रदान करे वह, अपनों को बसाने वाला।। ७।।*

वह जगदीश्वर सब का अगुआ, निश्चय से सब को उत्पन्न करने वाला, सब का प्रेरक और क्रान्तदर्शी है। वह आसुरी शक्तियों के साथ युद्ध करने वाले मन से सब हिंसक शक्तियों को विजित करके इस जगत् में व्याप्त हो रहा है। अपने उपासक जनों को सुख से बसाने वाला वह प्रभु हमें अत्यन्त प्रकाशमान, सब ओर से रक्षा करने वाला, सुख प्रदान करने वाला घर प्रदान करे।

टि. *अग्रगामी* - **अग्रुः।** गमनशीलः - वे.। अग्रगामी - सा.। अग्रगन्ता - दया.। advancing - W..as if unwedded - G.

*जनक* - **जनिवान्।** उदितः - वे.। जन्मवान् जायावान् वा। उषा ह्यस्य जाया। सा.। विद्यायां जन्मवान् - दया.। accompanied by the bride (the dawn) - W. with a Spouse - G.

*अतिक्रमण करके शत्रुओं का* - **अति स्पृधः।** स्पृधः शत्रुभिः - वे.। स्पृधः संग्रामम् अतिवेति अतिगच्छति - सा.। moveth o'er the foes - G.

*युद्ध की इच्छा करने वाले मन से* - **समर्यता मनसा।** संग्रामम् इच्छता मनसा - वे.। सा.।

*दीप्तिमान् को* - **घ्रंसम्**। दीप्तम् - सा.। दिनम् - दया.। brilliant - W. fierce heat - G.

*अपनों को बसाने वाला* - **स्वावसुः**। स्वभूतहविर्धानो ऽस्मदीयो होता - वे.। स्वायत्तधनः सन् - सा.। स्वेषु यो वसति स्वान् वा वासयति - दया.। on whom riches are dependent - W. self-excellent - G.

**ज्यायांसम् अस्य यतुनस्य केतुन ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते।**
**यादृश्मिन् धायि तम् अपस्यया विदद् य उ स्वयं वहते सो अरं करत्।। ८।।**

ज्यायांसम्। अस्य। यतुनस्य। केतुना। ऋषिऽस्वरम्। चरति। यासु। नाम। ते।
यादृश्मिन्। धायि। तम्। अपस्यया। विदत्। यः। ऊँ इति। स्वयम्। वहते। सः। अरम्। करत्।। ८।।

*(तुझ) श्रेष्ठ को (ही समर्पित होता है-स्तोत्र), इस यत्नशील के प्रज्ञान के साथ,*
*ऋषियों के द्वारा गान किया हुआ, चलता है जिन (स्तुतियों) में नाम तेरा।*
*जिसमें स्थापित कर लिया जाता है (मन), उसे कर्मेच्छा से प्राप्त कर लेता है (जन),*
*जो ही स्वयं वहन करता है (कार्य को), वह समर्थ होता है उसे करने में।। ८।।*

हे जगदीश्वर! तुझे पाने के लिये यत्नशील यह उपासक अपने प्रज्ञान और कर्म आदि के साथ उन स्तुतियों को तुझ सर्वश्रेष्ठ को ही समर्पित करता है, जिनमें ऋषियों के द्वारा गाए हुए तेरे नाम का बार-बार उल्लेख होता है। इस प्रकार अपने यत्नों से यह साधक तुझे पा ही लेता है। क्योंकि मनुष्य जिस वस्तु को पाने के लिये मन बना लेता है, वह अपनी कर्मशक्ति के द्वारा उसे पा ही लेता है। जो मनुष्य किसी दूसरे का सहारा न लेकर स्वयं ही अपने कार्य का वहन करता है, वह उसे करने में अवश्य समर्थ हो जाता है।

टि. *इस यत्नशील के प्रज्ञान के साथ* - **अस्य यतुनस्य केतुना**। अस्य यजमानस्य प्रज्ञानेन - वे.। यतुनस्य। यततिर् गतिकर्मा। गन्तुरस्य सूर्यस्य। कर्मणि षष्ठ्यौ। अमुं गन्तारं केतुना प्रज्ञापकेन कर्मणोदयादिलक्षणेन। सा.। अस्य यत्नशीलस्य प्रज्ञानेन - दया.। (who art indicated) by the sign of this moving (revolution) - W. with this swiftmover's light - G.

*ऋषियों के द्वारा गान किया हुआ* - **ऋषिस्वरम्**। ऋषिभिः कीर्त्यमानम् - वे.। ऋषिभिः स्तुत्यम् - सा.। ऋषीणाम् उपदेशम् - दया.। sung forth by Ṛṣis - G.

*स्थापित कर लिया जाता है (मन)* - **धायि**। यादृशे कामे मम सूर्यो निहितो भवति - वे.। धत्ते। कर्तरि चिण्। सामर्थ्यान् मनो गम्यते। सा.। ध्रियते - दया.।

*कर्मेच्छा से* - **अपस्यया**। तदीयकर्मेच्छया - वे.। कर्मणा हविःस्तुत्यादिलक्षणेन - सा.। आत्मनः कर्मेच्छया - दया.। by his devotion - W. by skill - G.

*वह समर्थ होता है उसे करने में* - **सः अरम् करत्**। स स्वयम् एव पर्याप्तं धनम् आत्मनः करोति - वे.। सो ऽरम् अलम् अत्यर्थं करत् करोति - सा.। सः अलं कुर्यात् - दया.। acquires abundant (reward) - W. shall bring the thing to pass - G.

**समुद्रम् आसाम् अव तस्थे अग्रिमा न रिष्यति सवनं यस्मिन्नायता।**
**अत्रा न हार्दि क्रवणस्य रेजते यत्रा मतिर् विद्यते पूतबन्धनी।। ९।।**

समुद्रम्। आसाम्। अवं। तस्थे। अग्रिमा। न। रिष्यति। सवनम्। यस्मिन्। आऽयंता।
अत्रे। न। हार्दि। क्रवणस्यं। रेजते। यत्रं। मतिः। विद्यते। पूतऽबन्धनी।। ९।।

*अन्तरिक्ष में इनमें से, अवस्थित हो जाती है अग्रिमा,*
*नहीं हिंसित होता है सवन, जिसमें विस्तृत हो जाती है वह।*
*यहाँ नहीं हार्दिक मनोरथ, कर्मकर्ता का निष्फल होता है,*
*जहाँ बुद्धि विद्यमान रहती है, पवित्र बन्धनों वाली।। ९।।*

इन स्तुतियों में जो अग्रिमा है, मुख्य है, जिसका हम नित्य बार-बार जप करते हैं, वह तो हमारे हृदयरूपी अन्तरिक्ष में ही स्थित हो जाती है। यज्ञ आदि जिन शुभ कर्मों में हम उसका विस्तार करते हैं, उसे मुख्यता प्रदान करके उसकी आवृत्ति करते हैं, वह कर्म कभी निष्फल नहीं होता। उस मुख्य स्तुति से सम्बन्ध रखने वाली बुद्धि पवित्र हो जाती है और उस पवित्र बुद्धि के द्वारा शुभ कर्मों को करने वाले उपासक के सभी अभीष्ट मनोरथ कभी निष्फल नहीं होते। ऐसा मनुष्य जीवन में कभी निराश नहीं होता।

टि. *अन्तरिक्ष में अवस्थित हो जाती है* - **समुद्रम् अव तस्थे।** अन्तरिक्षं प्रति अवतस्थे अधो गच्छति - वे.। समुद्रवत् पयर्वसानभूतम् अवगच्छति - सा.। अन्तरिक्षम् अवतिष्ठते - दया.। proceeds to the ocean-like sun - W. abideth in the sea - G.

*जिसमें विस्तृत हो जाती है वह* - **यस्मिन् आयता।** (इमा आपः) यस्मिन् सवने वितता भवन्ति - वे.। यस्मिन् विस्तीर्णानि स्तोत्राणि तत् सवनम् इति - सा.। आयता विस्तृतानि - दया.। in which (his praises) are prolonged - W. wherein it is prolonged - G.

*हार्दिक मनोरथ* - **हार्दि।** हृदयाभिलषितम् - वे.। हार्दि हृदयसम्बन्धि हृदयगतं काम्यं फलम् - सा.। हृदयस्येदम् - दया.। the heart's desire - W. the heart - G.

*कर्मकर्त्ता का* - **क्रवणस्य।** वर्षणशीलस्य स्तोतुः - वे.। शब्दकर्तुः - दया.। of the worshipper - W. of him who praiseth - G.

*पवित्र बन्धनों वाली* - **पूतबन्धनी।** पवनस्य बन्धनी - वे.। या पूतान् पवित्रान् गुणान् बध्नाति गृह्णाति सा - दया.। where the mind is known to be attached to the pure (sun) - W. connected with the pure - G.

**स हि क्षत्रस्यं मनसस्य चित्तिभिर्**
**एवावदस्यं यजतस्य सध्रेः।**
**अवत्सारस्यं स्पृणवाम रण्वंभिः**
**शविष्ठं वाजं विदुषां चिद् अर्ध्यम्।। १०।। २४।।**

सः। हि। क्षत्रस्यं। मनसस्यं। चित्तिऽभिः। एवऽवदस्यं। यजतस्यं। सध्रेः।
अवऽत्सारस्यं। स्पृणवाम। रण्वंऽभिः। शविष्ठम्। वाजम्। विदुषां चित्। अर्ध्यम्।। १०।।

*वह ही (उपास्य है), निर्बलसहायक के, मनस्वी के, चिन्तनों से,*
*मार्गों को बताने वाले के, पूजनीय के, कार्यों को साधने वाले के।*

*रक्षकों के पास जाने वाले के, पाने का प्रयास करें हम, रमणीय स्तुतिगानों से,*
*अतिशय बलशाली सामर्थ्य को, विद्वान् से भी जो कामना के योग्य है।। १०।।*

वह सर्वप्रेरक परमेश्वर हम सब के द्वारा उपासना के योग्य है। निर्बलों की सहायता करने वाले के, मनस्वी के, सन्मार्ग दिखाने वाले के, पूजनीय के, कार्यों को साधने वाले के और अरक्षितों की रक्षा करने वालों को प्राप्त होने वाले उस जगदीश्वर के चिन्तनों और रमणीय स्तुतिगानों के द्वारा हम उपासक जन उसके उस अतिशय बलशाली सामर्थ्य को पाने का प्रयास करें, जो किसी भी विद्वान् अथवा ज्ञानी के द्वारा कामना के योग्य है।

टि. *वह ही (उपास्य है)* - **सः हि।** स खलु सविता देवः सर्वैः स्तुत्यः। सर्वकामपूरक इत्यर्थः। सा.। He verily (is to be glorified) - W. for it is he - G.

*निर्बलसहायक के* - **क्षत्रस्य।** अत्रान्ये च ऋषयो ऽत्र दृष्टलिङ्गा इत्युक्तत्वात् क्षत्रादय ऋषयः। एषाम् ऋषीणाम्। सा.। राजकुलस्य राष्ट्रस्य वा - दया.। बलशाली के - सात.।

*मनस्वी के* - **मनसस्य।** यन् मन्यते तस्य - दया.। मन वाले के - सात.।

*चिन्तनों से* - **चित्तिभिः।** चयनक्रियाभिः - दया.। स्तोत्रों से - सात.। with the (pleasant) thoughts - W. with thoughts of (Kṣatra, etc.) - G.

*मार्गों को बताने वाले के* - **एवावदस्य।** एवान् प्राप्तान् गुणान् वदन्ति येन तस्य - दया.। उत्तम वाणी वाले के - सात.।

*कार्यों को साधने वाले के* - **सध्रेः।** सहस्थानस्य - दया.। सर्वधारक के - सात.।

*रक्षकों के पास जाने वाले के* - **अवत्सारस्य।** यो ऽवतो रक्षकान् सरति तस्य - दया.। अन्धकार का नाश करने वाले सूर्य के - सात.।

*रमणीय स्तुतिगानों से* - **रण्वभिः।** रमणीयैः स्तोत्रैः - वे.। रमणीयाभिः (चित्तिभिः) - सा.। रमणीयैः - दया.। with sweet songs - G.

*कामना के योग्य* - **अर्ध्यम्।** पूजनीयम् - वे.। समर्धनीयम् - सा.। to be shared - W.

**श्येन आ॑सा॒म् अदि॑तिः क॒क्ष्यो॒३॑ मदो॑ वि॒श्ववा॑रस्य यज॒तस्य॑ मा॒यिनः॑।**
**सम् अ॒न्यम॑न्यम् अर्थय॒न्त्येत॑वे वि॒दुर् वि॒षाणं॑ परि॒पान॒म् अन्ति॒ ते।। ११।।**

श्ये॒नः। आ॒सा॒म्। अदि॑तिः। क॒क्ष्यः॑। मदः॑। वि॒श्वऽवा॑रस्य। य॒ज॒तस्य॑। मा॒यिनः॑।
सम्। अ॒न्यम्ऽअ॑न्यम्। अ॒र्थ॒य॒न्ति॒। एत॑वे। वि॒दुः। वि॒ऽसान॑म्। प॒रि॒ऽपान॑म्। अन्ति॑। ते।। ११।।

*प्रशंसनीयगति, इन (प्रजाओं) का, अदीन, कक्षापूरक, मादयिता,*
*सव के द्वारा वरणीय का, पूजनीय का, निर्माणशक्ति वाले का।*
*सम्यक् एक-दूसरे का समर्थन करते हैं, प्राप्त करने के लिये,*
*प्राप्त करते हैं विशेष दाता को, सर्वतः पानीय को, निकट में वे।। ११।।*

सब के द्वारा वरणीय, सब के द्वारा पूजनीय और निर्माणशक्तियों वाले उस परमेश्वर का वह परमानन्दरूपी सोम प्रशंसनीय व्याप्ति वाला, अत्यन्त समृद्ध और पान करने वालों के उदरों को पूरने वाला होने से इन मानव प्रजाओं को अत्यन्त आनन्दित करने वाला है। इसके पाने के लिये सब

उपासक एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। विशेष सुख देने वाले उस महान् पान को वे उसके निकट में जाकर प्राप्त करते हैं।

टि. *प्रशंसनीयगति* - **श्येनः**। मेघः - वे.। शंसनीयगमनः। शीघ्रं पातृसकाशं गन्ता। सा.। प्रशंसनीयगतिर् अश्वः - दया.। swift - W. the Hawk - G.

*अदीन* - **अदितिः**। अदीनः - वे.। अदितिः अदीनो ऽतिसमृद्धः - सा.। अविनाशिनी प्रकृतिः - दया.। excessive - W. full source - G.

*कक्षापूरक* - **कक्ष्यः**। द्यावापृथिव्योः कक्षं सेवमानः - वे.। कक्ष्यपूरकः - सा.। कक्षासु भवः - दया.। girth-distending - W. girth-stretching - G.

*समर्थन करते हैं* - **अर्थयन्ति**। समर्थयन्ति। याचन्ते ऽनुज्ञाम्। सा.। they urge - W.

*विशेष दाता को* - **विषाणम्**। विशेषेण प्रयच्छन्तम् - वे.। विशेषेण मदस्य दातारम् - सा.। the prompt giver - W.

*सर्वतः पानीय को* - **परिपानम्**। परितो रक्षितारम् - वे.। परितः सर्वतः पानम् - दया.। the copious draught - W. a fresh draught - G.

*प्राप्त करते हैं* - **विदुः**। जानन्ति लभन्ते वा - सा.। they find - W.

**स॒दा॒पृ॒णो य॑ज॒तो वि द्विषो॑ वधीद् बाहुवृ॒क्तः श्रु॑त॒वित् तर्यो॑ व॒ः सचा॑।**
**उ॒भा स वरा॒ प्रत्ये॑ति॒ भाति॑ च॒ यद् ईं॑ ग॒णं भज॑ते सुप्र॒याव॑भिः।। १२।।**

स॒दा॒ऽपृ॒णः। य॒ज॒तः। वि। द्विषः॑। व॒धी॒त्। बा॒हु॒ऽवृ॒क्तः। श्रु॒त॒ऽवित्। तर्यः॑। व॒ः। सचा॑।
उ॒भा। सः। वरा॑। प्रति॑। ए॒ति॒। भाति॑। च॒। यत्। ई॑म्। ग॒णम्। भज॑ते। सु॒प्र॒याव॑ऽभिः।। १२।।

*सदा पालन करने वाला, पूजनीय, विशेषेण शत्रुओं का वध करता है,*
*भुजाओं से दुष्टों को काटने वाला, ज्ञानवान्, तरणयोग्य, तुम्हारे साथ।*
*दोनों को वह (मनुष्य) वरणीयों को प्राप्त करता है, चमकता भी है (सब ओर),*
*जब इस संघ की (देवों के) उपासना करता है, शोभन स्तुतियों से।। १२।।*

हे मनुष्यो! सदा सब का पालन करने वाला, हमारे द्वारा पूजा के योग्य, अपनी भुजाओं से दुष्टों को काट डालने वाला, सर्वज्ञ, प्राप्ति के योग्य वह परमेश्वर तुम्हारे सहयोग से हिंसक जनों का विशेष रूप से वध कर डालता है। जो उपासक उस जगदीश्वर की और उसका सहयोग करने वाले देवों के संघ की (विद्वज्जनों की) सुन्दर स्तुतियों से उपासना करता है, वह अभ्युदय और निःश्रेयस इन दोनों वरणीय लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है और उसकी प्रसिद्धि सर्वत्र हो जाती है।

टि. *सदा पालन करने वाला* - **सदापृणः**। सर्वदा दानशील एतन्नामा - सा.। यः सदा पृणाति तर्पयति सः - दया.।

*भुजाओं से दुष्टों को काटने वाला* - **बाहुवृक्तः**। बाहुभ्यां वृक्तदर्भः - सा.। यो बाहुभ्यां दुष्टान् वृङ्क्ते छिनत्ति - दया.।

*ज्ञानवान्* - **श्रुतवित्**। श्रुतस्य वेत्ता - सा.। दया.।

*तरणयोग्य* - **तर्यः**। यस् तीर्यते तरितुं योग्यः - दया.।

*तुम्हारे साथ* - **वः सचा।** युष्माकं सहितः। युष्माभिः सहित इत्यर्थः। सा.।

*दोनों वरणीयों को* - **उभा वरा।** उभौ वारकौ शत्रू - वे.। वरा श्रेष्ठाव् उभोभाव् इहलोक-परलोकविषयौ कामौ - सा.। उभौ श्रेष्ठौ श्रोताश्रावकौ - दया.। desires in both (worlds) - W. G.

*शोभन स्तुतियों से* - **सुप्रयावभिः।** सुप्रगमनैः - वे.। सुष्ठु प्रकर्षेण मिश्रयद्भिः स्तोत्रैः - सा.। ये सुष्ठु प्रयान्ति तैः - दया.। with well-mingled (offerings and praises) - W. with well-advancing steeds - G.

**सुतंभरो यजमानस्य सत्पतिर् विश्वासाम् ऊधः स धियाम् उदञ्चनः।**
**भरद् धेनू रसवच् छिश्रिये पयो ऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन्।। १३।।**

सुतम्ऽभरः। यजमानस्य। सत्ऽपतिः। विश्वासाम्। ऊधः। सः। धियाम्। उत्ऽअञ्चनः।
भरत्। धेनुः। रसऽवत्। शिश्रिये। पयः। अनुऽब्रुवाणः। अधि। एति। न। स्वपन्।। १३।।

*सोम को लाने वाला यजमान के लिये, सज्जनों का पालक,*
*सब का स्रोत है वह सुविचारों का, उन्नायक (भी है वह उनका)।*
*लाती है धेनु माधुर्य वाले को, धारण करती है दूध को (जिसको),*
*जप करने वाला (ही) प्राप्त करता है (उसको), नहीं सोने वाला।। १३।।*

वह परमेश्वर यजमान के लिये सोम, हविष्य आदि यज्ञ के साधनों को प्रदान करने वाला है। वह सज्जनों का पालक है। वह सब उत्तम विचारों, बुद्धियों और कर्मों का न केवल स्रोत है, अपितु उनका उन्नायक और संवर्द्धक भी है। वह अपने उपासकों के लिये अमृततुल्य मधुर दूध को धारण करने वाली और उसे सबको प्रदान करने वाली कामधेनु है। उसके नाम का जागरूकता के साथ स्मरण करने वाला ही उसे पा सकता है, सोता रहने वाला कभी नहीं।

टि. *सोम को लाने वाला* - **सुतंभरः।** यागनिर्वाहक एतन्नामा ऋषिः - सा.। य उत्पन्नं जगद् बिभर्ति - दया.। Sutambhara priest - W. G.

*स्रोत सुविचारों का* - **ऊधः धियाम्।** विद्यानाम् ऊधः - वे.। धियां कर्मणाम् ऊध उद्धततरं फलम् - सा.। ऊर्ध्वं गमयिता प्रज्ञानां कर्मणां वा - दया.। the causer (of the upward ascent ) of all holy rites - W. producer of all holy thoughts - G.

*उन्नायक* - **उदञ्चनः।** (कर्मणाम्) उत्थापकः - वे.। ऊर्ध्वम् उद्गमयिता - सा.। उत्कृष्टतां प्रापकः - दया.। upward ascent - W. uplifter - G.

*जप करने वाला प्राप्त करता है* - **अनुब्रुवाणः अधि एति।** अनुक्रमेण कीर्तयन् स्मरत्यवत्सारः - वे.। सा.। पठित्वानूपदिशन् स्मरति - दया.। announcing this in order (Avatsāra) studies - W. who speaks the bidding text knows this - G.

**यो जागार तम् ऋचः कामयन्ते यो जागार तम् उ सामानि यन्ति।**
**यो जागार तम् अयं सोम आह तवाहम् अस्मि सख्ये न्योकाः।। १४।।**

यः। जागार। तम्। ऋचः। कामयन्ते। यः। जागार। तम्। ऊँ इति। सामानि। यन्ति।
यः। जागार। तम्। अयम्। सोमः। आह। तव। अहम्। अस्मि। सख्ये। निऽओकाः।। १४।।

*जो जागता है, उसको ऋचाएं चाहती हैं,*
*जो जागता है, उसके पास ही साम जाते हैं।*
*जो जागता है, उसको यह सोम कहता है,*
*'तेरा हूँ मैं, मित्रता में निश्चित स्थान वाला'।। १४।।*

जो मनुष्य इस जीवनयात्रा में जागरूक रहता है, अपने कर्तव्य और अकर्तव्य के प्रति सावधान रहता है, ऋचाएं उसी को प्यार करती है, उसे ऋचाओं का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जो जागरूक रहता है, सामगान भी उसको ही प्राप्त होते हैं। जो जागरूक रहता है, उसके लिये सोम अर्थात् प्रभुभक्ति का आनन्द यह घोषणा करता हैं, कि मैं तेरा ही हूँ, मैंने तेरी मित्रता में ही अपना स्थान निश्चित कर लिया है, तेरे साथ मेरी दोस्ती पक्की है।

टि. *जो जागता है* - **यः जागार।** यो देवो सर्वदा विनिद्रो जागरूको गृहे वर्तते - सा.। योऽविद्यानिद्राया उत्थाय जागर्ति - दया.। जो हमेशा जागता रहता है - सात.। who is ever vigilant - W. who wakes and watches - G.

*ऋचाएं चाहती हैं* - **ऋचः कामयन्ते।** ऋचः सर्वशास्त्रात्मिकाः कामयन्ते - सा.। him holy verses desire - W. the sacred hymns love him - G.

*साम* - **सामानि।** सामानि स्तोत्ररूपाणि - सा.। sacred songs - W.

*सोम* - **सोमः।** अभिषुतः सोमः - सा.।

*मित्रता में निश्चित स्थान वाला* - **सख्ये निऽओकाः।** सख्ये ऽभिमुख्यस्थाने - वे.। हे अग्ने तादृशस्य तव सख्ये समानख्याने हितकरणे न्योका नियतस्थानो ऽहम् भवामि - सा.। मित्रत्वे निश्चितस्थानः - दया.। तेरी ही मित्रता में मैंने अपना निवास बना लिया है - सात.। I am always abiding in fellowship - W. I have my dwelling in thy friendship - G.

**अ॒ग्निर् जा॑गार॒ तम् ऋच॑ः कामयन्ते॒**
**ऽग्निर् जा॑गार॒ तम् उ॒ सामा॑नि यन्ति।**
**अ॒ग्निर् जा॑गार॒ तम् अ॒यं सोम॑ आह॒**
**तवा॒हम् अ॑स्मि स॒ख्ये न्यो॑काः।। १५।। २५।। ३।।**

अ॒ग्निः। जा॒गा॒र। तम्। ऋच॑ः। का॒म॒य॒न्ते॒। अ॒ग्निः। जा॒गा॒र। तम्। ऊँ इति॑। सामा॑नि। य॒न्ति॒।
अ॒ग्निः। जा॒गा॒र। तम्। अ॒यम्। सोम॑ः। आ॒ह॒। तव॑। अ॒हम्। अ॒स्मि॒। स॒ख्ये। निऽओ॑काः।। १५।।

*अग्नि जागता है, उसे ऋचाएं चाहती हैं,*
*अग्नि जागता है, उसके पास ही साम जाते हैं।*
*अग्नि जागता है, उसको यह सोम कहता है,*
*'तेरा हूँ मैं, मित्रता में निश्चित स्थान वाला'।। १५।।*

अग्नि के समान ज्ञानप्रकाश से युक्त मनुष्य ही अपनी जीवनयात्रा में जागरूक रहता है, ऋचाएं उसी से प्यार करती हैं। अग्नि के समान तेजस्वी मनुष्य ही सावधान रहता है, सामगान उसे ही प्राप्त होते हैं। अग्नि के समान कर्तव्यपरायण मनुष्य ही चौकन्ना रहता है, प्रभुभक्ति का आनन्द उसको ही

कहता है, कि मैं तेरा ही हूँ, मैंने तेरी मित्रता में अपना स्थान निश्चित कर लिया है, तेरे साथ मेरी मित्रता पक्की है।

टि. *अग्नि* – **अग्निः।** यो ऽग्निवत् प्रकाशते ज्ञानादिगुणयुक्तो मनुष्यः।। पावक इव – दया.।

## सूक्त ४५

ऋषिः – सदापृण आत्रेयः। देवता – विश्वे देवाः। छन्दः – त्रिष्टुप्। एकादशर्चं सूक्तम्।

**विदा दिवो विष्यन्नद्रिम् उक्थैर् आयत्या उषसो अर्चिनो गुः।**
**अपावृत व्रजिनीर् उत् स्वर् गाद् वि दुरो मानुषीर् देव आवः।। १।।**

विदाः। दिवः। विऽस्यन्। अद्रिम्। उक्थैः। आऽयत्याः। उषसः। अर्चिनः। गुः।
अप। अवृत। व्रजिनीः। उत्। स्वः। गात्। वि। दुरः। मानुषीः। देवः। आवर् इत्यावः।। १।।

*पा लिया (इन्द्र ने गौओं को) आकाश से फैंकते हुए वज्र को, स्तुतियों से,*
*आती हुई की उषा की रश्मियां, फैल गईं हैं सब ओर।*
*खोल दिया व्रजसम्बन्धी (द्वारों) को, ऊपर सूर्य गमन कर गया है,*
*सपाट (द्वारों को) मनुष्यसम्बन्धियों को भी देव ने खोल दिया है।। १।।*

इस मन्त्र में परम दैवी शक्ति के द्वारा दुष्ट आसुरी शक्तियों का विनाश करके उनसे जल, ज्ञान, प्रकाश आदि को मुक्त कराने का वर्णन है। दुष्ट आसुरी शक्तियां सब सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाती हैं। मेघ जल को पकड़कर बैठ जाता है। अन्धकार प्रकाश को ग्रस लेता है। अज्ञान ज्ञान को आच्छादित कर लेता है। इस प्रकार जगत् में सब ओर हाहाकार मच जाता है। तब प्रभु के भक्त उसकी स्तुतियां करते हैं और आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये उससे प्रार्थना करते हैं। वह परमेश्वर आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये उनपर न्यायरूपी वज्र का प्रहार करता है। ज्ञानरश्मियां छिटक पड़ती हैं। उषा की किरणें सब ओर फैल जाती हैं। सूर्य का उदय हो जाता है। अज्ञान एवं अन्धकार के गढ़ ध्वस्त हो जाते हैं और मनुष्यों के घट के पट खुल जाते हैं।

टि. *फैंकते हुए* – **विऽस्यन्।** विमुञ्चन् – वे.। विष्यन् प्रक्षिपन् – सा.। hurling - W. to throw open - G.

*खोल दिया व्रजसम्बन्धी (द्वारों) को* – **अप अवृत व्रजिनीः।** अपावृतवान् व्रजवतीः (गाः) – वे.। अपावृणोद् व्रजिनीस् तमःपुञ्जवतीर् निशाः – सा.। scattering the clustered gloom - W. oped the stable portals - G.

*सूर्य* – **स्वः।** सूर्यः – वे.। स्वरणशील आदित्यः – सा.। the divine sun - W. G.

*सपाट खोल दिया है* – **वि आवः।** विवृतवान् – वे.। set open - W. hath thrown open - G.

**वि सूर्यो अमतिं न श्रियं साद् ओर्वाद् गवां माता जानती गात्।**
**धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणेव सुमिता दृंहत द्यौः।। २।।**

वि। सूर्यः। अमतिम्। न। श्रियम्। सात्। आ। ऊर्वात्। गवाम्। माता। जानती। गात्।
धन्वऽअर्णसः। नद्यः। खादःऽअर्णाः। स्थूणाऽइव। सुऽमिता। दृंहत। द्यौः।। २।।

*विविध प्रकार से सूर्य ने रूप की तरह, शोभा को बिखेर दिया है,*
*इधर विशाल अन्तरिक्ष से रश्मियों की माता, जानकर गमन कर रही है।*
*बहते जलों वाली नदियां, (बन गई हैं) जलतटों को खा जाने वाली,*
*स्थूण की तरह, भली प्रकार निर्मित किये हुए की, दृढ़ हो गया आकाश।। २।।*

साधक की अज्ञान-अन्धकार की रात्रि की समाप्ति पर ज्ञानरूपी सूर्य सामान्य प्रकाश की तरह अपनी ज्योति को बिखेरने लगता है। ज्ञान रूपी सूर्य के आगमन की सूचना पाकर प्रारम्भिक ज्ञानरश्मियों की माता आध्यात्मिक उषा भी विशाल हृदय रूपी अन्तरिक्ष से अवतरित होने लगती है। इस अवसर पर सुख, शान्ति और आनन्द रूपी जलों वाली सरिताएं अपने किनारों को तोड़कर बाहर की ओर बहने लगती हैं। वृत्तियां शान्त हो जाने पर चित्त भी सुनिर्मित विशाल स्तम्भ की तरह स्थिर और शान्त हो जाता है।

टि. *रूप की तरह* - **अमतिं न।** यथा आत्मीयं रूपम् - वे.। रूपनामैतत्। रूपम् इव द्रव्यम्। सा.। रूपम् इव - दया.। as if it was a substance - W. as splendour - G.

*शोभा को बिखेर दिया है* - **श्रियं सात्।** श्रियम् अमुञ्चत् - वे.। दीप्तिं विभजते। प्रकाशयति इत्यर्थः। यथा द्रव्याणि घटपटादीनि नीलपीतादिरूपं लभन्ते तद्वत्। सा.। श्रियं विभजति - दया.। distributes his radiance - W. hath spread his light - G.

*विशाल अन्तरिक्ष से* - **ऊर्वात्।** उरोर् महतः सङ्घात् - वे.। महतो ऽन्तरिक्षात् - सा.। बहुरूपात् - दया.। from the spacious (firmament) - W. from the stable - G.

*बहते जलों वाली* - **धन्वर्णसः।** गच्छदुदकाः - वे.। धन्वतिर् गतिकर्मा। धन्वन्ति गच्छन्ति अर्णांसि यासु तास् तथोक्ताः। दीर्घाभावश् छान्दसः। सा.। धन्वे स्थले ऽर्णांसि यासां ताः - दया.। with running waters - W. that flow to deserts - G.

*जलतटों को खा जाने वाली* - **खादोअर्णाः।** (निघ. १.१३) इति नदीनाम - वे.। भक्षितकूलोदकाः। कूलङ्कषा इत्यर्थः। सा.। breaking down their banks - W. with biting waves - G.

**अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय।**
**वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौर् आविवासन्तो दसयन्त भूम।। ३।।**

अस्मै। उक्थाय। पर्वतस्य। गर्भः। महीनाम्। जनुषे। पूर्व्याय।
वि। पर्वतः। जिहीत। साधत। द्यौः। आऽविवासन्तः। दसयन्त। भूम।। ३।।

*इस स्तोत्र के कारण (ही), मेघ का गर्भ (निर्मुक्त होता है),*
*महान् जलों को उत्पन्न करने वाले के लिये, पुरातन के लिये।*
*अलग मेघ जलों को छोड़ देता है, साधता है कार्य को आकाश,*
*सर्वतः परिचर्या करने वाले खपाते हैं (श्रम से स्वयं को) बहुत।। ३।।*

जब स्तोता गण जलों को उत्पन्न करने वाले वेद के इन प्राचीन मन्त्रों से उस परमेश्वर की स्तुति करते हैं और उसे आहुतियां प्रदान करते हैं, तो प्रसन्न होकर वह इन्द्र मेघ के अन्दर गर्भ के रूप में स्थित जलों को धरती पर ग़िरा देता है। इस प्रकार मेघ जलों को छोड़ता है और आकाश भी इस

कार्य को साधता हुआ अपने कर्तव्य का पालन करता है। तत्पश्चात् प्रभु की सेवा और स्तुतियां करने वाले उपासक जन अपने कार्यों में और अधिक परिश्रम के साथ जुट जाते हैं। भाव यह है, कि उपासकों की स्तुतियों से परमेश्वर आसुरी शक्तियों के द्वारा अवैध रूप से संगृहीत सुखसाधनों को छीनकर सब में वितरित कर देता है, जिससे वे तेजी से लक्ष्य की ओर बढ़ती हैं।

टि. *मेघ का गर्भ* - **पर्वतस्य गर्भः**। पर्वतस्य गर्भः प्रकाशः - वे.। पर्ववतो मेघस्य गर्भो गर्भ-स्थानीयम् उदकम् - सा.। the burthen of the cloud - W. the burden of the mountain - G.

*महान् जलों को उत्पन्न करने वाले के लिये* - **महीनां जनुषे**। गवां जन्मने - वे.। महतीनां स्तुतीनाम् उत्पादयित्रे - सा.। भूमीनां जन्मने - दया.। as to an author of sacred songs - W. to aid the birth of mighty waters - G.

*छोड़ देता है* - **जिहीत**। चलति चालयति वेन्द्रः - सा.। गच्छति - दया.। parts (with its burthen) - W. parted - G.

*खाते हैं बहुत* - **दसयन्त भूम**। बहुशत्रुजातम् उपक्षपितवन्तः - वे.। भूम अत्यधिकं दसयन्त उपक्षपयन्त्यात्मानं कर्मभिः - सा.। are exhaustd by much (adoration) - W. were worn with constant serving - G.

**सूक्तेभिर् वो वचोभिर् देवजुष्टैर् इन्द्रा न्व१ग्नी अवसे हुवध्यै।**
**उक्थेभिर् हि ष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति।। ४।।**

सुऽउक्तेभिः। वः। वचःऽभिः। देवऽजुष्टैः। इन्द्रा। नु। अग्नी इति। अवसे। हुवध्यै।
उक्थेभिः। हि। स्म। कवयः। सुऽयज्ञाः। आऽविवासन्तः। मरुतः। यजन्ति।। ४।।

*सुष्ठु कहे हुओं से, तुमको, वचनों से, देवसेवितों से,*
*हे इन्द्र!, अब, और हे अग्ने!, वृद्धि के निमित्त बुलाता हूँ मैं।*
*स्तुतियों से चूँकि निश्चय से, क्रान्तदर्शी शोभन यज्ञों वाले,*
*सब ओर से परिचर्या करते हुए, स्तोता पूजते हैं (तुमको)।। ४।।*

हे दुष्ट आसुरी शक्तियों को ध्वस्त करने वाली और उपासकों का मार्गदर्शन करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! मैं उपासक भली प्रकार उच्चारण की हुई और विद्वज्जनों को प्रिय लगने वाली स्तुतियों से तुम्हें अपनी रक्षा, वृद्धि, प्रीति आदि के लिये बुला रहा हूँ, क्योंकि क्रान्तदर्शी, श्रेष्ठ यज्ञों वाले, प्राणशक्तियों से युक्त स्तोता सब ओर से परिचर्या करते हुए अपनी स्तुतियों से सदा तुम्हारी ही पूजा करते हैं।

टि. *सुष्ठु कहे हुओं से, तुमको, वचनों से* - **सूक्तेभिः वः वचोभिः**। युष्माकं रक्षणार्थं सुवचनैः वचोभिः - वे.। वः युवाम्। व्यत्ययेन बहुवचनम्। सूक्तैः सुवचनैः। सा.। with well-uttered words - W. with hymns and God-loved words - G.

*हे इन्द्र, अब, और हे अग्ने* - **इन्द्रा नु अग्नी**। इन्द्रा अग्नी क्षिप्रम् - वे.। हे इन्द्रा हे अग्नी। परस्परापेक्षया प्रत्येकं द्विवचनम्। यद्यप्येकम् एव पदं मध्ये व्यवधानं छान्दसम्। हे इन्द्राग्नी। सा.।

*बुलाता हूँ मैं* - **हुवध्यै**। आह्वातुम् - वे.। आह्वयामि - सा.। ग्रहीतुम् - दया.। I invoke you

- W. will I invoke you - G.

*स्तोता पूजते हैं* – **मरुतः यजन्ति**। मरुतो मितराविणः। मितं छन्दोबद्धं रुवन्ति गायन्ति स्तुवन्तीति। स्तोतारः।। मरुतो मितराविणो वा मितरोचिनो वा महद् द्रवन्तीति वा। या. (नि. ११. १३)। मरुतः च यजन्ति – वे.। मरुत्सदृशाः – सा.। मनुष्याः – दया.। as the Maruts - W. (worship) the Maruts - G.

**एतो न्व१द्य सुध्यो३ भवाम प्र दुच्छुना मिनवामा वरीयः।**
**आरे द्वेषांसि सनुतर् दधामायाम प्राञ्चो यजमानम् अच्छ।। ५।। २६।।**

एतो इति। नु। अद्य। सुऽध्यः। भवाम। प्र। दुच्छुनाः। मिनवाम। वरीयः।
आरे। द्वेषांसि। सनुतः। दधाम। अयाम। प्राञ्चः। यजमानम्। अच्छ।। ५।।

*आओ! शीघ्र आज, उत्तम विचारों वाले बनें हम,*
*खूब बुराइयों को नष्ट करें हम, विस्तार के साथ।*
*दूर द्वेषों को, छुपे हुओं को, निकाल बाहर करें हम,*
*गमन करें हम बढ़ते हुए, यज्ञ करने वाले की ओर।। ५।।*

हे मनुष्यो! आओ, अब हम बीती बातों को बिसारकर उत्तम विचारों वाले बन जाएं। हम सब बुराइयों को पूर्ण रूप से बिल्कुल नष्ट कर डालें। हम अपने अन्दर छुपे हुए द्वेषों और वैरभावनाओं को निकालकर बाहर करें। हम जीवन में प्रगति करते हुए यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करने वाले जनों की संगति प्राप्त करें, क्योंकि संगति तराने वाली और कुसंगति डुबोने वाली होती है।

टि. *उत्तम विचारों वाले बनें हम* – **सुध्यः भवाम**। सुकर्माणाः भवाम – वे.। सा.। शोभना धीर् येषां ते भवाम – दया.। let us be engaged in pious acts - W. may our thoughts be holy - G.

*बुराइयों को नष्ट करें हम* – **दुच्छुनाः मिनवाम**। हिंसामो वयं राक्षसान् – वे.। दुच्छुना द्विषः हिंसाम – सा.। दुष्टाः श्वान इव वर्तमानाः, [ताः] हिंसेम – दया.। let us annihilate the hostile - W. let us cast away misfortune - G.

*विस्तार के साथ* – **वरीयः**। वरीयसः इति – वे.। अत्यन्तम् इत्यर्थः – सा.। entirely - W.

*छुपे हुओं को* – **सनुतः**। अन्तर्हितानि – वे.। संभक्तॄन्। यद्वा। सनुतर् इत्यन्तर्हितनाम। सा.। सदा – दया.। sacred - W.

**एता धियं कृणवामा सखायो ऽप या माताँ ऋणुत व्रजं गोः।**
**यया मनुर् विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग् वङ्कुर् आपा पुरीषम्।। ६।।**

आ। इत। धियम्। कृणवाम। सखायः। अप। या। माता। ऋणुत। व्रजम्। गोः।
यया। मनुः। विशिऽशिप्रम्। जिगाय। यया। वणिक्। वङ्कुः। आप। पुरीषम्।। ६।।

*आओ (मिलकर) सङ्कल्प करें हम, हे मित्रो!,*
*सपाट जिस निर्माता ने, खोल दिया व्रज को गौओं के,*
*जिससे मननशील ने, भक्षक को, अभिभूत कर डाला,*
*जिससे वणिक् ने, विचरणशील ने, प्राप्त किया जल को।। ६।।*

हे मित्रो! आओ, हम मिलकर सङ्कल्प करें! संकल्प में महान् शक्ति होती है। निर्माण कार्यों के आधारभूत इस सङ्कल्प के द्वारा ही आसुरी शक्तियों का हनन करने वाला इन्द्र गौओं को बाड़ों से मुक्त कर देता है, अर्थात् वह परमेश्वर जलों को मेघ के, प्रकाश को तम के और ज्ञान को अज्ञान के चंगुल से छुड़ाकर सब के लिये मुक्त कर देता है। इसी सङ्कल्प के द्वारा ही चिन्तनशील ज्ञानी मनुष्य काम, क्रोध आदि आसुरी शक्तियों को जीत लेता है। इसी सङ्कल्प के द्वारा ही व्यापारी लोग व्यापार के लिये परदेस में जाते हुए मरुस्थल आदि निर्जल भूमियों में भी जलों को पा लेते हैं।

टि. *सङ्कल्प करें हम* - **धियं कृणवाम।** कृणवाम कर्म - वे.। स्तुतिं करवाम - सा.। प्रज्ञानं कुर्याम - दया.। let us celebrate that solemn rite - W. let us carry out the purpose - G.

*सपाट खोल दिया* - **अप ऋणुत।** ऋणुतेत्यत्र आदिवर्णस्य वकारस्य लोपः।। अप ऋणोति विवृतद्वारं करोति इत्यर्थः - वे.। अपावृणोत् - सा.। threw open - G.

*निर्माता ने गौओं के* - **माता गोः।** माता मातृस्थानीयं यत् कर्म, पणिभिर् अपहृतानां गवाम् - वे.। धीर् माता गवां निर्मात्री, गोर् गवां - सा.। the Mother (threw) the Cow's (stall open) - G.

*मननशील ने* - **मनुः।** मनुः, यद्वा मनुः सर्वस्य मन्तेन्द्रः - सा.। मनुष्यः - दया.।

*भक्षक को* - **विशिशिप्रम्।** विक्षु भक्षणार्थं हनू प्रवेशयतीति विशिशिप्रः नाम कश्चिद् असुरः तम् - वे.। विगतहनुं शत्रुम्। यद्वा वृत्रम्। सा.। विशीशिप्रे शोभने हनुनासिके यस्य तम् - दया.।

*वणिक् ने* - **वणिक्।** वणिग् इवाल्पेन कर्मणा बहुफलाकाङ्क्षी कक्षीवान् - सा.। व्यापारी वैश्यः - दया.। merchant - W. G.

*विचरणशील ने* - **वङ्कुः।** असुरः वङ्कुः नाम - वे.। जलेच्छया वनगामी - सा.। धनेच्छुः - दया.। going to wood - W. wandering - G.

*जल को* - **पुरीषम्।** उदकम् - वे.। पूरकम् उदकम् - सा.। पूर्तिकरम् उदकम्। पुरीषम् इत्युदकनाम (निघ. १.१२)। दया.।

**अनूनोद् अत्र हस्तयतो अद्रिर् आर्चन् येन दश मासो नवग्वाः।**
**ऋतं यती सरमा गा अविन्दद् विश्वानि सत्याङ्गिराश् चकार।। ७।।**

अनूनोत्। अत्र। हस्तऽयतः। अद्रिः। आर्चन्। येन। दश। मासः। नवऽग्वाः।
ऋतम्। यती। सरमा। गाः। अविन्दत्। विश्वानि। सत्या। अङ्गिराः। चकार।। ७।।

*शब्द करता है यहाँ, हाथों से प्रेरित किया हुआ ग्रावा,*
*स्तुतिगान करते हैं जिस (सोम) से, दस मासों तक नवग्व।*
*ऋत की पालिका प्रेरणा, ज्ञानरश्मियों को प्राप्त करती है (जिससे),*
*सब कार्यों को सत्य, अग्नि में यजन करने वाला कर दिखाता है।। ७।।*

बाह्य यज्ञ में जिस प्रकार सोम के सवन में हाथों से संचालित सिलबट्टे की ध्वनि होती रहती है, अन्तर्यज्ञ में भी उसी प्रकार जप की ध्वनि होती रहती है। जिस प्रकार ऋत्विक् लोग नौ मासों और दस मासों तक चलने वाले यज्ञों को सम्पन्न करते हैं, उसी प्रकार अन्तर्यज्ञ में भी दीर्घ काल तक निरन्तर यजन चलता रहता है और स्तुतिगान होता रहता है। अन्तश्चेतना में जागृत होने वाली दिव्य

प्रेरणा सत्यनियमों का पालन करती हुई ज्ञानरश्मियों को प्राप्त कर लेती है। इस अन्तर्यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित करने वाला याजक अपने सब सङ्कल्पों को पूरा करके दिखा देता है।

टि. *शब्द करता है* – **अनूनोत्**। नुदतिः प्रेरणकर्मा। विवृतद्वारम् अकरोत्। वे.। नौतिर् अत्र शब्दमात्रे वर्तते। अशब्दयत्। सा.। प्रेरयेत् – दया.। makes a noise - W. loudly hath rung - G.

*दस मासों तक नवग्व* – **दश मासः नवग्वाः**। अङ्गिरसो गवाम् अयनेन यन्तः दश मासान् (अर्चितवन्तः) – वे.। दश मासान् दशमासपर्यन्तम्। नवग्वाः नवमासपर्यन्तं गवार्थम् अनुतिष्ठन्तो ऽङ्गिरसो नवग्वाः। नवगोयुक्ता वा। यद्वा। दशसंख्याकमासोपेता दशमासानुष्ठाना अङ्गिरसो ऽपरे नवग्वाश् चैते सर्वे ऽपि। सा.। नवग्वाः नवीनगतयः – दया.। the nine-months ministrants celebrated the ten-months worship - W. Navagvas through ten months - G.

*ऋत की पालिका प्रेरणा* – **ऋतं यती सरमा**। सत्यभूतं गोधनं प्रति गच्छन्ती सरमा नाम देवशुनी पणिभिर् अपहृताः गाः अविन्दत् – वे.। सत्यं यज्ञं वा प्राप्नुवती सरमा सरणशीला स्तुतिरूपा वाग् – सा.। सत्यं यतमाना समानसरणा – दया.। Saramā going to the ceremony discovered the (cattle) - W. Saramā went aright and found (the cattle) - G.

**विश्वे॑ अ॒स्या व्यु॒षि॒ माहि॑नाया॒ः सं यद् गोभि॒र् अङ्गि॑रसो॒ नव॑न्त।**
**उत्स॑ आसां प॒रमे स॒धस्थ॑ ऋ॒तस्य॑ प॒था स॒रमा॑ विद॒द् गाः॥ ८॥**

विश्वे॑। अ॒स्याः। वि॒ऽउषि॑। माहि॑नायाः। सम्। यत्। गोभि॑ः। अङ्गि॑रसः। नव॑न्त।
उत्स॑ः। आ॒सा॒म्। प॒रमे। स॒धऽस्थे॑। ऋ॒तस्य॑। प॒था। स॒रमा॑। वि॒द॒त्। गाः॥ ८॥

*सब इसके उदित होने पर (उषा के), पूजनीया के,*
*मिलकर जब गौओं के निमित्त, अङ्गिरा स्तुतियां करते हैं।*
*स्रोत को इनके (पा लेते हैं), परम सहस्थान में,*
*ऋत के मार्ग से सरमा (जाकर), पाती है गौओं को॥ ८॥*

जब यह पूजनीया उषा, अर्थात् ज्ञान की प्रथम रश्मियां उपासकों के हृदय में प्रकट होती हैं, तो सब उपासक मिलकर उन ज्ञानरश्मियों की प्राप्ति के लिये प्रभु का धन्यवाद करते हैं और उसकी स्तुतियों का गान करते हैं। उन्हें पता चलता है, कि इन ज्ञानरश्मियों का उद्गम तो उस परम सहस्थान, परम व्योम में ही है। वे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के लिये अपना प्रयास जारी रखते हैं और उनकी चेतना सत्यनियमों का पालन करती हुई उस ज्ञान को प्राप्त कर लेती है।

टि. *उदित होने पर (उषा के), पूजनीया के* – **व्युषि माहिनायाः**। उषसो महत्याः व्युच्छने सति – वे.। मंहनीयाया अस्या उषसो व्युच्छने – सा.। विशिष्टे निवासे महत्त्वयुक्तायाः – दया.। on the opening of this adorable dawn - W. at the dawning of mighty Goddess - G.

*मिलकर स्तुतियां करते हैं* – **सम् नवन्त**। सङ्गता आसन् – वे.। संजग्मिरे – सा.। स्तुवन्ति – सा.। came in contact with - W. sang forth - G.

*स्रोत* – **उत्सः**। क्षीराद्युत्स्रावः। यद्वा। उदकस्य प्रस्रवणः। सा.। कूप इव – दया.। milk and the rest - W. spring - G.

*परम सहस्थान में* - **परमे सधस्थे**। दूरे स्थाने - वे.। उत्कृष्टे सहस्थाने यज्ञे। यद्वा। व्रजस्य निगूहनप्रदेशे। सा.। प्रकृष्टे सहस्थाने - दया.। in the August assembly - W. in the loftiest place of meeting - G.

**आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यद् अस्योर्विया दीर्घयाथे।**
**रघुः श्येनः पतयद् अन्धो अच्छा युवा कविर् दीदयद् गोषु गच्छन्।। ९।।**

आ। सूर्यः। यातु। सप्तऽअश्वः। क्षेत्रम्। यत्। अस्य। उर्विया। दीर्घऽयाथे।
रघुः। श्येनः। पतयत्। अन्धः। अच्छ। युवा। कविः। दीदयत्। गोषु। गच्छन्।। ९।।

*इधर सूर्य गमन करे सात अश्वों वाला, निवासस्थान में,*
*इसके (है जो) विस्तृत में, दीर्घ मार्ग में।*
*द्रुतगति श्येन गमन करता है, भोजन की ओर,*
*युवा, क्रान्तदर्शी, दीप्त होता रहे, गौओं के मध्य जाता हुआ।। ९।।*

वह सर्वप्रेरक परमेश्वर, जिसके इस जगत् रूपी रथ में सात गुणा सात अर्थात् ४९ वायु जुते हुए हैं, अथवा जिसके इस शरीररूपी रथ में सात प्राण जुते हुए हैं, हमारे हृदयरूपी निवास स्थान में पधारे, जो कि इसके विस्तृत मार्ग (व्याप्तिस्थान) के बीच में ही स्थित है। श्येन के समान तीव्र गति वाला वह प्रभु तेजी से आकर हमारे द्वारा समर्पित नैवेद्य को स्वीकार करे। सदा युवावस्था में रहने वाला और तीनों कालों तथा तीनों लोकों के आर-पार देखने वाला वह परमेश्वर अपनी देदीप्यमान दिव्य रश्मियों के साथ गमन करता हुआ अपने प्रकाश को हमारी ओर फैलाता रहे।

टि. *सूर्य* - **सूर्यः**। सर्वस्य प्रेरको देवः - सा.। सविता - दया.।

*निवासस्थान में* - **क्षेत्रम्**। यज्ञगृहं प्रति - वे.। गन्तव्यदेशः - सा.। निवासस्थानम् - दया.। a (distant) goal - W. the field - G.

*विस्तृत में दीर्घ मार्ग में* - **उर्विया दीर्घयाथे**। विस्तीर्णे दीर्घे मार्गे - वे.। उरु अतिप्रभूतायामः, दीर्घयाथे दीर्घगमने - सा.। उर्विया पृथिव्याः दीर्घयाथे। यान्ति यस्मिन् स याथो मार्गः, दीर्घश् चासौ याथश् च तस्मिन्। दया.। distant (goal to reach) by a tedious route - W. that spreadeth wide for his long journey - G.

*द्रुतगति श्येन* - **रघुः श्येनः**। लघुः श्येनः भूत्वा - वे.। रघुः लघुगमनः सन् शंसनीयगमनः - सा.। लघुः अन्तरिक्षस्थः श्येन इव - दया.। fleet as a hawk - W. the rapid Falcon - G.

*दीप्त होता रहे* - **दीदयत्**। दीप्तो भवतु - वे.। दीप्यते - सा.। प्रकाशयति - दया.।

**आ सूर्यो अरुहच् छुक्रम् अर्णो ऽयुक्त यद् धरितो वीतपृष्ठाः।**
**उद्ना न नावम् अनयन्त धीरा आशृण्वतीर् आपो अर्वाग् अतिष्ठन्।। १०।।**

आ। सूर्यः। अरुहत्। शुक्रम्। अर्णः। अयुक्त। यत्। हरितः। वीतऽपृष्ठाः।
उद्ना। न। नावम्। अनयन्त। धीराः। आऽशृण्वतीः। आपः। अर्वाक्। अतिष्ठन्।। १०।।

*सर्वतः सूर्य आरोहण करता है, प्रकाशमान अन्तरिक्ष में,*
*जोतता है वह जब अश्वों को, चमकती पीठ वालों को।*

*जलों में जिस प्रकार नाव को, ले चलते हैं धीमान् (उसको),*
*सुनते हुए (आदेशों को), जल सम्मुख उपस्थित हो जाते हैं।। १०।।*

जिस प्रकार सूर्य अपने तेजस्वी पीठ वाले अश्वों को जोतकर आकाश में आरोहण करता है, उसी प्रकार वह सर्वप्रेरक परमेश्वर अपनी तेजोमयी शक्तियों के साथ समर्पण की भावना वाले उपासकों के पवित्र हृदयाकाश में आरूढ़ हो जाता है। जिस प्रकार नाविक जलों के अन्दर नाव को स्वेच्छानुसार अभीष्ट दिशा में ले जाता है, उसी प्रकार अनन्यभाव से भजने वाले ज्ञानी जन उसे अपने वश में कर लेते हैं। उसके आदेशों का पालन करने वाले सुख, शान्ति और आनन्दरूपी जल भी उपासकों पर बरसने के लिये उसके सम्मुख उपस्थित हो जाते हैं।

टि. *प्रकाशमान अन्तरिक्ष में* - **शुक्रम् अर्णः**। रसाया देवनद्याः शुक्रम् उदकम् - वे.। दीप्तम् उदकम् - सा.। above the glistening water - W. to the shining ocean - G.

*चमकती पीठ वालों को* - **वीतपृष्ठाः**। वीतपृष्ठान्। विभक्तिव्यत्ययः।। कान्तपृष्ठाः - वे.। कान्तपृष्ठान् - सा.। bright- backed steeds - W. fair-backed - G.

*जलों से जिस प्रकार* - **उद्ना न**। उदकेन इव - वे.। सा.।

*सुनते हुए (आदेशों को)* - **आशृण्वतीः**। आभिमुख्येन शृण्वत्यः - वे.। सर्वतो ऽनुज्ञां कुर्वाणाः - सा.। hearing his commands - W. obedient - G.

**धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ययातरन् दश मासो नवग्वाः।**
**अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः।। ११।। २७।।**

धियम्। वः। अप्ऽसु। दधिषे। स्वःऽसाम्। यया। अतरन्। दश। मासः नवऽग्वाः।
अया। धिया। स्याम। देवऽगोपाः। अया। धिया। तुतुर्याम। अति। अंहः।। ११।।

*स्तुति को तेरे लिये अन्तरिक्ष में स्थापित करता हूँ मैं, प्रकाशदा को,*
*जिससे तर जाते हैं, दस मासों तक चलने वाले यज्ञ को, नवग्व।*
*इस स्तुति से होवें हम, देवों से रक्षा किये जाने वाले,*
*इस स्तुति से तर जाएं हम, अतिक्रमण करके पाप का।। ११।।*

हे परमेश्वर! ज्ञानप्रकाश और सुखसाधनों को देने वाली तेरी स्तुति का ऊँचे से उच्चारण करता हुआ मैं इसे अन्तरिक्ष में स्थापित करता हूँ। यह स्तुति बहुत प्रभावशाली है। नौ मासों और दस मासों में अपने यागों को पूर्ण करने की प्रतिज्ञा करने वाले याजकों ने इस स्तुति के द्वारा ही अपने उद्देश्य को प्राप्त किया है। हे जगदीश्वर! तेरी इस स्तुति के द्वारा ही हम तेरी दिव्य शक्तियों से रक्षा पाने वाले और विद्वज्जनों की रक्षा करने वाले बन जाएं। तेरी इस स्तुति को करते हुए ही पापों और दुष्कर्मों को अपने से दूर भगाते हुए हम इस भवसागर से पार हो जाएं।

टि. *स्तुति को तेरे लिये* - **धियं वः**। बहुवचनम् आदरार्थं वचनव्यत्ययो वा।। युष्माकम्, धियं कर्म - वे.। युष्माकं स्तुतिम् - सा.। प्रज्ञां कर्म वा युष्माकम् - दया.।

*अन्तरिक्ष में स्थापित करता हूँ मैं* - **अप्सु दधिषे**। अन्तरिक्षे धारयसि - वे.। अब्निमित्तां धारयामि - सा.। अप्सु धारयेयम् - दया.। I offer (to you gods) for the sake of water a sacrifice - W.

I lay upon the Floods - G.

*प्रकाशदा को* - **स्वर्षाम्।** उदकस्य सम्भक्त्रीम् - वे.। सर्वस्य दात्रीम् - सा.। स्वः सुखं सनति विभजति यया ताम् - दया.। all-bestowing - W. light-winning - G.

*देवों से रक्षा किये जाने वाले* - **देवगोपाः।** देवैर् गुप्ताः - वे.। सा.। देवानां विदुषां रक्षकाः - दया.। may we be the protected of the gods - W. may we have gods to guard us - G.

*तर जाएं हम अतिक्रमण करके पाप का* - **तुतुर्याम अति अंहः।** पापम् अतितरेम - सा.। विनाशयेम पापं पापजन्यं दुःखं वा - दया.। may we cross over the boundaries of sin - W. may we pass safe beyond affliction - G.

## सूक्त ४६

ऋषिः - प्रतिक्षत्रः। देवता - १-६ विश्वे देवाः, ७-८ देवपत्न्यः। छन्दः - १,३-७ जगती, २,८ त्रिष्टुप्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**हयो॒ न वि॒द्वाँ अ॑युजि स्व॒यं धु॒रि तां व॑हामि प्र॒तर॑णीम् अव॒स्युव॑म्।**
**नास्या॑ वश्मि वि॒मुचं॒ नावृ॑तं॒ पुन॑र् वि॒द्वान् प॒थः पु॑रए॒त ऋ॒जु नें॑षति।। १।।**

हय॑ः। न। वि॒द्वान्। अ॒यु॒जि॒। स्व॒यम्। धु॒रि। ताम्। व॒हा॒मि॒। प्र॒ऽतर॑णीम्। अ॒व॒स्युव॑म्।
न। अ॒स्या॒ः। व॒श्मि॒। वि॒ऽमुच॑म्। न। आ॒ऽवृत॑म्। पुन॑ः। वि॒द्वान्। प॒थः। पु॒रः॒ऽए॒ता। ऋ॒जु। ने॒ष॒ति॒।। १।।

*अश्व की तरह, सोच-समझकर जोतता हूँ स्वयं को जूए पर,*
*उसको खींचता हूँ मैं, खूब तारने वाले को, रक्षा करने वाले को।*
*न इसको चाहता हूँ मैं छोड़ना, न लौटना (चाहता हूँ) फिर से,*
*ज्ञाता मार्गों का, अग्रगन्ता, सरल मार्ग से ले चले मुझको।। १।।*

जिस प्रकार कोई अश्व रथ के जूए पर जुतकर उसे खींचता है, उसी प्रकार मैं सोच-समझ कर स्वयं को जीवन में कर्तव्यपालन के जूए पर जोत रहा हूँ। यह जूआ मेरी रक्षा करने वाला और मुझे भवसागर से पार उतारने वाला है। मैं पूरी शक्ति के साथ इसे खींच रहा हूँ। मैं इसे बीच में ही छोड़ देना नहीं चाहता, मैं इस जीवन को भरपूर जीना चाहता हूँ, और मैं यह भी नहीं चाहता कि पुनः मुझे इस संसार में लौटना पड़े और इसी प्रकार फिर से इसी जूए में जुतना पड़े। वह सर्वज्ञ अग्रगन्ता मार्गदर्शक परमेश्वर मुझे सीधे मार्ग पर आगे ही आगे बढ़ाता चले।

टि. *सोच-समझ कर* - **विद्वान्।** विद्वान् अहम् - वे.। सर्वज्ञः प्रतिक्षत्रः - सा.। the sage - W. well knowing - G.

*जोतता हूँ जूए पर* - **अयुजि धुरि।** यज्ञधुरि युक्तो ऽभवम् - वे.। धुरि यज्ञात्मिकायां युक्तो ऽभवत् - सा.। has attached himself to the burthen - W. I have bound me to the pole - G.

*खूब तारने वाले को* - **प्रतरणीम्।** प्रकर्षेण तारयित्रीम् - सा.। प्रतरन्ति यया ताम् - दया.। transcendent - W. which bears us on - G.

*न इसको चाहता हूँ मैं छोड़ना* – **न अस्याः वशिम विमुचम्**। न अस्याः विमोचनम् इच्छामि – वे.। अस्या विमोचनं परित्यागं न कामये – सा.। I do not desire release from it - W. I seek for no release - G.

*न लौटना (चाहता हूँ) फिर से* – **न आवृतिम् पुनः**। न च पुनः आवर्तनम् – वे.। पुनः पुनर् आवरणं धारणम् अपि न च वशिम – सा.। nor yet its reiterated imposition - W. no returning back therefrom - G.

**अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो।**
**उभा नासत्या रुद्रो अध ग्नाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त।। २।।**

अग्ने। इन्द्र। वरुण। मित्र। देवाः। शर्धः। प्र। यन्त। मारुत। उत। विष्णो इति।
उभा। नासत्या। रुद्रः। अध। ग्नाः। पूषा। भगः। सरस्वती। जुषन्त।। २।।

*हे अग्ने!, हे इन्द्र!, हे वरुण!, हे मित्र!, हे देवो!,*
*बल को सुष्ठु प्रदान करो तुम, हे मरुद्गण!, और हे विष्णो।*
*दोनों (अश्वी) असत्य न होने वाले, रुद्र और देवपत्नियां,*
*पूषा, भग, सरस्वती, प्रीति करें (सदा ही हम से)।। २।।*

हे परमेश्वर की सन्मार्ग दिखाने वाली, आसुरी शक्तियों का संहार करने वाली, जगत् को सर्वतः आवृत करने वाली, विनाश से त्राण करने वाली, प्राणों को प्रदान करने वाली और समस्त जगत् में ओतप्रोत दिव्य शक्तियो! तुम हमें सफल जीवन जीने के लिये बल प्रदान करो। कभी असत्य न होने वाले आत्मा और परमात्मा, दुष्टों को रुलाने वाली रौद्र शक्ति, मातृशक्तियां, जगत् का पालन करने वाली शक्ति, ऐश्वर्यों को देने वाली शक्ति और दैवी वाक् सदा हमपर अपनी प्रीति और कृपादृष्टि बनाए रखें और हमारे हव्य को स्वीकार करती रहें।

टि. हे *अग्ने* (इत्यादि) – **अग्ने** (इत्यादीनि आमन्त्रितपदानि)। अत्र सर्वत्र पूर्वस्याविद्यमान-त्त्वेनोत्तरस्योत्तरस्य पादादित्वाद् अनिघातः। प्रथमस्य तु स्वत एव पादादित्वम्। विष्णो इत्यस्योतेत्यनेन व्यवधानान् निघातः। सा.।

*बल को प्रदान करो, हे मरुद्गण* – **शर्धः प्र यन्त, मारुतः**। बलम् अस्माकं प्रापयत, हे मारुत मररुतानि मरुतां बलानि – सा.। give, (O ye Gods) and Marut host - G.

*प्रीति करें* – **जुषन्त**। सेवन्ताम् – वेङ्कटादयः। may be pleased - W. may accept us - G.

**इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः।**
**हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस् पतिं भगं नु शंसं सवितारम् ऊतये।। ३।।**

इन्द्राग्नी इति। मित्रावरुणा। अदितिम्। स्वरिति स्वः। पृथिवीम्। द्याम्। मरुतः। पर्वतान्। अपः।
हुवे। विष्णुम्। पूषणम्। ब्रह्मणः। पतिम्। भगम्। नु। शंसम्। सवितारम्। ऊतये।। ३।।

*इन्द्र और अग्नि को, मित्र और वरुण को, अदिति को, आदित्य को,*
*पृथिवी को, द्यौ को, मरुतों को, पर्वतों को, जलों को।*
*बुलाता हूँ मैं विष्णु को, पूषा को, वेदज्ञान के पालक को,*

*भग को निश्चय से, प्रशंसनीय को सविता को, वृद्धि के लिये।। ३।।*

मैं अब उपासक परमेश्वर की आसुरी शक्तियों का संहार करने वाली और मार्गदर्शन करने वाली शक्तियों का, विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आच्छादित करने वाली शक्तियों का, अखण्डनीया जगन्निर्मात्री शक्ति का, सर्वप्रेरक शक्ति का, पृथिवी का, आकाश का, प्राणदाता वायुओं का, पर्वतों और मेघों का, जलों का, ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त शक्ति का, पोषक शक्ति का, वेदज्ञान की पालिका शक्ति का, ऐश्वर्यों को देने वाली शक्ति का और प्रशंसा के योग्य सर्वप्रेरक शक्ति का रक्षा, वृद्धि, प्रीति आदि के लिये आह्वान करता हूँ। वे अविलम्ब मेरा कल्याण करें।

टि. - *आदित्य को* - **स्वः**। स्वर् इत्यादित्य उच्यते स्वरणात् - सा.। आदित्यम् - दया.।

*पर्वतों को* - **पर्वतान्**। मेघान् शैलान् वा - दया.। the clouds - W. mountains - G.

*प्रशंसनीय को* - **शंसम्**। शंसनीयम् - वे.। प्रशंसनीयम् - दया.। Śaṁsa - G.

**उ॒त नो॒ विष्णु॑र् उ॒त वातो॑ अ॒स्रिधो॑ द्रविणो॒दा उ॒त सोमो॒ मय॑स् करत्।**
**उ॒त ऋ॒भव॑ उ॒त रा॒ये नो॑ अ॒श्विनो॒त त्वष्टो॒त विभ्वानु॑ मंसते।। ४।।**

उ॒त। नः॒। विष्णुः॑। उ॒त। वातः॑। अ॒स्रिधः॑। द्र॒वि॒णः॒ऽदाः। उ॒त। सोमः॑। मयः॑। क॒र॒त्।
उ॒त। ऋ॒भवः॑। उ॒त। रा॒ये। नः॒। अ॒श्विना॑। उ॒त। त्वष्टा॑। उ॒त। विऽभ्वा॑। अनु॑। मं॒स॒ते।। ४।।

*और हमको विष्णु, और वायु अहिंसक,*
*और धनों को देने वाला सोम, सुखी करे।*
*और ऋभु गण, और धन के लिये हमको अश्वी,*
*और त्वष्टा और विभ्वा, अनुमति प्रदान करें।। ४।।*

परमेश्वर की सर्वव्यापिनी शक्ति, किसी की हिंसा न करके सदा सुखी करने वाला वायु और लौकिक तथा अलौकिक सुखों को प्रदान करने वाली प्रभु की आनन्ददायिनी शक्ति, ये सब हमारे लिये सुखों को उत्पन्न करें। मेधावी जन, रोगों और विपत्तियों का निवारण करने वाली शक्तियां, प्रभु की निर्मात्री शक्ति और विविध रूपों को धारण करने वाली शक्ति हमें परिश्रमपूर्वक शुचि उपायों से धनोपार्जन की अनुमति प्रदान करें।

टि. *अहिंसक* - **अस्रिधः**। अक्षीणः - वे.। अहिंसकः सन् - सा.। दया.। innoxious - W.

*अनुमति प्रदान करें* - **अनु मंसते**। अनुमन्यते - वे.। अनु मंसते। यद्वा। अनुमंस्त इति प्रत्येकं सम्बन्धनीयम्। सा.। अनुमन्यन्ताम् - दया.। स्वीकृति दें - सात.। may be favourably disposed - W. may remember us - G.

**उ॒त त्यन् नो॒ मारु॑तं॒ शर्ध॒ आ ग॑मद् दिविक्ष॒यं य॑ज॒तं ब॒र्हिर् आ॒सदे॑।**
**बृह॒स्पति॒ः शर्म॑ पू॒षोत नो य॑मद् वरू॒थ्यं१॒॑ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा।। ५।।**

उ॒त। त्यत्। नः॒। मारु॑तम्। शर्धः॑। आ। ग॒म॒त्। दि॒वि॒ऽक्ष॒यम्। य॒ज॒तम्। ब॒र्हिः। आ॒ऽसदे॑।
बृह॒स्पतिः॑। शर्म॑। पू॒षा। उ॒त। नः॒। य॒म॒त्। व॒रू॒थ्य॑म्। वरु॑णः। मि॒त्रः। अ॒र्य॒मा।। ५।।

*और वह हमारे पास, मरुतों का संघ आ जाए,*
*प्रकाशलोकनिवासी, पूज्य, आसन पर बैठने के लिये।*

*बृहस्पति, सुख को, पूषा भी, हमें प्रदान करे,*
*गृहसम्बन्धी को, मित्र, वरुण, अर्यमा (भी)।। ५।।*

प्रकाश के स्थान में निवास करने वाला, सब के द्वारा पूजा के योग्य, प्राणशक्तियों का वह संघ भी हमारे हृदयरूपी पवित्र आसन पर बैठने के लिये हमारे पास आ जाए। वेदज्ञान की पालक शक्ति और सब का पालन-पोषण करने वाला परमेश्वर और समस्त जगत् को आच्छादित करने वाली, विनाश से त्राण करने वाली और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का दमन करने वाली उसकी शक्तियां भी हमें गृहसम्बन्धी और शरीरसम्बन्धी सुखों को प्रदान करें।

टि. *मरुतों का संघ* - **मारुतं शर्धः**। मारुतो वेगः - वे.। मरुतां बलं सङ्घः - सा.। मरुतां मनुष्याणाम् इदं बलम् - दया.। company of the Maruts - W. the band of Maruts - G.

*प्रकाशलोकनिवासी* - **दिविक्षयम्**। दिवि वर्तमानः - वे.। सा.। दिवि प्रकाशे क्षयो निवासो यस्य तम् - दया.। heaven-abiding - W. dwelling in the sky - G.

*गृहसम्बन्धी* - **वरूथ्यम्**। वारयति शीतवातादिकम् इति वरूथं गृहम्। तदर्हं वरूथ्यम्। सा.। गृहेषु साधु - दया.। domestic - W.

**उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्य१स् त्रामणे भुवन्।**
**भगो विभक्ता शवसावसा गमद् उरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम्।। ६।।**

उत। त्ये। नः। पर्वतासः। सुऽशस्तयः। सुऽदीतयः। नद्यः। त्रामणे। भुवन्।
भगः। विऽभक्ता। शवसा। अवसा। आ। गमत्। उरुऽव्यचाः। अदितिः। श्रोतु। मे। हवम्।। ६।।

*और वे हमारे लिये, पर्वत, शोभन प्रशंसाओं वाले,*
*शोभन दीप्तियों वाली नदियां, रक्षा के लिये होवें।*
*भग, विभक्ता (धनों का), बल के साथ, रक्षण के साथ, आए,*
*विस्तृत व्याप्ति वाला अखण्ड (वह परमेश्वर), सुने मेरी पुकार को।। ६।।*

घने वनों वाले, बहती नदियों वाले, झर्झर झरते झरनों वाले, उत्तम प्रशंसा के योग्य, रमणीय ऊँचे पर्वत और स्वच्छ तेजस्वी जलों वाली कल-कल ध्वनि करती नदियां हमारी रक्षा के लिये होवें। लौकिक और अलौकिक धनों का कर्मानुसार विभाजन करने वाला परमेश्वर अपने बलों और वृद्धियों के साथ हमारे पास आए। विस्तीर्ण व्याप्ति वाला अखण्ड, अनन्त वह जगदीश सदा हमारी पुकार को सुनता रहे।

टि. *शोभन दीप्तियों वाली* - **सुदीतयः**। सुदानाः - सा.। प्रशंसितप्रकाशाः - दया.। beneficent - W. fair-gleaming - G.

*बल के साथ, रक्षण के साथ* - **शवसा अवसा**। अन्नेन रक्षणेन च - सा.। बलेन रक्षणादिना च - दया.। with abundance and protection - W. with power and grace - G.

*विस्तीर्ण व्याप्ति वाला* - **उरुव्यचाः**। बहुव्याप्तिः - वे.। प्रभूतव्याप्तिः - सा.। बहुषु व्याप्तः - दया.। wide-pervading - W. far-pervading - G.

**देवानां पत्नीर् उशतीर् अवन्तु नः प्रावन्तु नस् तुजये वाजसातये।**

**याः पार्थिवासो या अपाम् अपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत।। ७।।**

देवानाम्। पत्नीः। उशतीः। अवन्तु। नः। प्र। अवन्तु। नः। तुजये। वाजऽसातये।
याः। पार्थिवासः। याः। अपाम्। अपि। व्रते। ताः। नः। देवीः। सुऽहवाः। शर्म। यच्छत।। ७।।

*देवों की पालक शक्तियां, स्वेच्छा वाली, बढ़ाएं हमको,*
*खूब बढ़ाएं हमको, सन्तति के लिये, ऐश्वर्यप्राप्ति के लिये (भी)।*
*जो भूनिवासिनी हैं, जो हैं अन्तरिक्ष के (अन्दर) भी, व्रत के निमित्त,*
*वे हमें, हे दानशीलो!, हे सुख से पुकारी जाने वालियो!, सुख प्रदान करो तुम।। ७।।*

देवों की पालक शक्तियां हमें स्वेच्छानुसार बढ़ाएं। वे सन्तति और ऐश्वर्यप्राप्ति के लिये हमारी खूब अभिवृद्धि करें। हे दानशीलो! और हे सुखपूर्वक आह्वान की जाने वालियो! तुम जो धरती पर, जलों के स्थान अन्तरिक्ष में और द्युलोक में भी अपने कर्तव्यपालन के निमित्त विद्यमान रहती हो, वे ऐसी तुम हमें सब ओर से सुख प्रदान करो।

टि. *पालक शक्तियां* - **पत्नीः**। पत्न्यः - वे.। सा.। दया.। wives - W. spouses - G.

*स्वेच्छा वाली* - **उशतीः**। उशत्यः - वे.। उशतीः उशत्यो ऽस्मदीयां स्तुतिं कर्म वा कामयमानाः - सा.। कामयमानाः - दया। desiring our homage - W. of their own free will - G.

*सन्तति के लिये, ऐश्वर्यप्राप्ति के लिये (भी)* - **तुजये वाजसातये**। अपत्यजननाय अन्नाय च - वे.। तुजये बलवते पुत्राय वाजसातये ऽन्नलाभाय संग्रामाय वा - सा.। (to obtain) vigorous (offspring) and abundant food - W. aid us to offspring and the winning of the spoil - G.

जो हैं *अन्तरिक्ष के (अन्दर) भी व्रत के निमित्त* - **याः अपाम् अपि व्रते**। अपाम् अपि व्रते कर्मणि उद्युक्ताः - वे.। याश् चापाम् उदकानां व्रते कर्मण्यन्तरिक्षे वर्तन्ते ताः - सा.। in charge of the waters (in the firmament) - W. in the water's realm - G.

**उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीर् इन्द्राण्य१ग्नाय्यश्विनी राट्।**
**आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर् य ऋतुर् जनीनाम्।। ८।।**

उत। ग्नाः। व्यन्तु। देवऽपत्नीः। इन्द्राणी। अग्नायी। अश्विनी। राट्।
आ। रोदसी इति। वरुणानी। शृणोतु। व्यन्तु। देवीः। यः। ऋतुः। जनीनाम्।। ८।।

*और देवियां हव्य स्वीकार करें, देवों की पालक शक्तियां,*
*इन्द्राणी, अग्नायी, अश्विनी प्रकाशमाना।*
*सब ओर से रोदसी (सुने), वरुणानी सुने,*
*स्वीकार करें (उसको) देवियां, जो है ऋतु जननियों का।। ८।।*

वेद में स्त्री का पुरुष से कम महत्त्व नहीं है। स्त्री और पुरुष इन दोनों के संयोग और सहयोग के बिना कोई भी कार्य उत्पन्न और पूर्ण नहीं हो सकता। इसलिये इस मन्त्र में कहा गया है कि इन्द्र, अग्नि, अश्वी, रुद्र, वरुण आदि पुरुष शक्तियां इन्द्राणी, अग्नायी, अश्विनी, रुद्राणी, वरुणानी आदि स्त्रीशक्तियों के बिना पूर्ण नहीं है। अतः यहाँ कामना की गई है, कि वे हमारी प्रार्थना को सुनें और आकर हमारे हव्यों को स्वीकार करें। कार्यों को उत्पन्न करने वाली वे कार्य की उत्पत्ति के लिये

अपने पुरुष अर्धाङ्ग के साथ संयोग के काल को जानकर कार्य को निष्पन्न करें।

टि. *स्वीकार करें* - **व्यन्तु**। हविर् भक्षयन्तु - सा.। व्याप्नुवन्तु - दया.। may enjoy - G.

*प्रकाशमाना* -**राट्**। राट् राजतेः, दीप्तिः - वे.। राजमाना - सा.। radiant - W. Rāṭ - G.

*रोदसी* - **रोदसी**। द्यावापृथिवी 'रुद्रस्य पत्नी' इति यास्कः - वे.। सा.।

*जो है ऋतु जननियों का* - **यः ऋतुः जनीनाम्**। यः ऋतुकालः जायानां सोमपानस्य - वे.। यो देवजायानां ऋतुः कालः - सा.। दया.। may the (personified) season of the wives of the gods, accept it - W. may the goddesses come at the Matrons' season - G.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां चतुर्थे ऽष्टके द्वितीयो ऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त ४७

ऋषि - प्रतिरथः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - त्रिष्टुप्।

**प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा मही माता दुहितुर् बोधयन्ती।**
**आविवासन्ती युवतिर् मनीषा पितृभ्य आ सदने जोहुवाना।। १।।**

प्रऽयुञ्जती। दिवः। एति। ब्रुवाणा। मही। माता। दुहितुः। बोधयन्ती।
आऽविवासन्ती। युवतिः। मनीषा। पितृऽभ्यः। आ। सदने। जोहुवाना।। १।।

*नियुक्त करती हुई (कार्यों में), द्युलोक से आ रही है, स्तुति की जाती हुई,*
*पूजनीया, निर्माता, पुत्रीस्थानीया (पृथिवी) को जगाती हुई।*
*सब ओर से अन्धकार को परे हटाती हुई, नित्य युवा, प्रज्ञा के द्वारा,*
*पालक देवों के साथ, सब ओर से यज्ञसदन में, आह्वान की जाती हुई।। १।।*

प्रातःकाल में उषा उपासकों के द्वारा स्तुति की जाती हुई और प्राणियों को उनके अपने-अपने कार्यों में लगाती हुई द्युलोक से नीचे की ओर आ रही है। कार्यों का निर्माण करने वाली पूजनीया यह उषा उपजीव्य होने के कारण पुत्रीस्थानीया पृथिवी को अर्थात् पृथिवी पर निवास करने वाले सभी प्राणियों को जगाती हुई आती है। नित्य युवा प्रथमज्ञानरश्मि रूपी यह उषा उपासकों के द्वारा आह्वान की जाती हुई, प्रज्ञा प्रदान करके उनके अज्ञानान्धकार को नष्ट करती हुई, अन्य पालक दिव्य शक्तियों के साथ उनके हृदयरूपी यज्ञगृह में आसीन होती है।

टि. *नियुक्त करती हुई* - **प्रयुञ्जती।** कार्येषु मनुष्यान् प्रयुञ्जाना - वे.। सा.। arousing (men to their labours) - W. urging to toil - G.

*स्तुति की जाती हुई* - **ब्रुवाणा।** प्रबुद्धानां शब्दैः शब्दं कुर्वाणा - वे.। स्तूयमाना। कर्मणि कर्तृप्रत्ययः। सा.। उपदिशन्ती - दया.। the adorable - W. making proclamation - G.

*पुत्रीस्थानीया (पृथिवी) को जगाती हुई* - **दुहितुः बोधयन्ती।** दुहितृस्थानीयां सुप्तजनां पृथिवीं बोधयन्ती - वे.। दुहितुर् भूम्या बोधयन्ती बोधं कुर्वाणा। तदुपजीव्यत्वाद् दुहितृत्वम् उपचर्यते। यद्वा। दुहितुर् दिव इति सम्बन्धः। सा.। the awakener of her daughter (earth) - W. seeking Heaven's Daughter - G.

*प्रज्ञा के द्वारा* - **मनीषा।** प्रज्ञया - वे.। दया.। स्तुतिमती - सा.। glorified - W. Hymn - G.

*पालक देवों के साथ* - **पितृभ्यः।** पालयितृभ्यो देवेभ्यः - वे.। तृतीयार्थे पञ्चमी। पितृभिः पालकैर् देवैः सह। सा.। with the protecting gods - W. unto the Fathers - G.

**अजिरासस् तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम्।**
**अनन्तास उरवो विश्वतः सीं परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः।। २।।**

अजिरासः। तत्ऽअपः। ईयमानाः। आतस्थिऽवांसः। अमृतस्य। नाभिम्।
अनन्तासः। उरवः। विश्वतः। सीम्। परि। द्यावापृथिवी इति। यन्ति। पन्थाः।। २।।

*गमनशील, उसी नित्यकर्म में व्यस्त, गमन करती हुई,*

*सब ओर स्थित होने वाली, अमरत्व की नाभि के।*
*अन्तहीन, विस्तृत, सब ओर से लेकर सब ओर,*
*द्युलोक और भूलोक में, गमन करती हैं रश्मियां।। २।।*

सम्पूर्णज्ञान रूपी सूर्य की रश्मियां गमनशील हैं, ये ज्ञान का विस्तार करने के अपने नित्य के कार्य में लगी हुई हैं, इसलिये ये कभी निष्क्रिय होकर बैठने वाली नहीं हैं। ये अमरत्व के केन्द्रभूत उस सम्पूर्णज्ञान रूपी सूर्य में ओत-प्रोत हैं और उसके सब ओर स्थित रहती हैं। ये अनन्त हैं और अत्यन्त विस्तार वाली हैं। ये सब ओर से लेकर सब ओर तक फैली हुई हैं। ये द्युलोक, अन्तरिक्षलोक और भूलोक अर्थात् साधक के हृदयाकाश में सर्वत्र व्याप्त हो जाती हैं।

टि. *गमनशील* - **अजिरासः**। गमनस्वभावाः - वे.। अजिर् इरच्प्रत्ययान्तो ऽजिरशिशिरेत्यादिना निपातितः। सा.। वेगवन्तः - दया.। swift in their motion - G.

*उसी नित्यकर्म में व्यस्त* - **तदपः**। समानकर्माणः - वे.। तद् एव प्रकाशनरूपं कर्म यस्य तत् - सा.। fulfilling their duty (of bringing on the day) - W. hastng to their duty - G.

*अमरत्व की नाभि के* - **अमृतस्य नाभिम्**। आदित्यम् - वे.। अमृतस्य सूर्यस्य नाभिं संनाहकं मण्डलम् अमृतस्योदकस्य वा नाभिम् अन्तरिक्षम् - सा.। नाशरहितस्य कारणस्य मध्ये - दया.। the orb of the immortal (sun) - W. reaching the central point of life immortal - G.

*रश्मियां* - **पन्थाः**। वचनव्यत्ययः।। पतनशीला रश्मयः - वे.। सा.। मार्गः - दया.। the rays (of light) - W. the spacious paths : the long lines of light - G.

**उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुर् आ विवेश।**
**मध्ये दिवो निहितः पृश्निर् अश्मा वि चक्रमे रजसस् पात्यन्तौ।। ३।।**

उक्षा। समुद्रः। अरुषः। सुऽपर्णः। पूर्वस्य। योनिम्। पितुः। आ। विवेश।
मध्ये। दिवः। निऽहितः। पृश्निः। अश्मा। वि। चक्रमे। रजसः। पाति। अन्तौ।। ३।।

*सेचक, जलवर्षक, आरोचमान, शोभन रश्मियों वाला,*
*पूर्व से स्थित के, स्थान में पिता के, सर्वत्र प्रविष्ट हो गया है।*
*मध्य में द्युलोक के स्थापित है, बहुवर्ण, सर्वव्यापक,*
*विक्रमण करता है, अन्तरिक्ष के पालन करता है दोनों छोरों का।। ३।।*

सुखों से सींचने वाला, जलों की वर्षा करने वाला, प्रकाशमान आकृति वाला, सुन्दर रश्मियों वाला सूर्य पूर्वकाल से विद्यमान परमपिता परमेश्वर के स्थान इस जगत् में प्रवेश कर गया है। विविध वर्णों वाला और सर्वत्र व्याप्ति वाला वह सूर्य परमेश्वर के द्वारा प्रकाशलोक के मध्य में स्थापित किया गया है। वह अपने नियमों के अनुसार भ्रमण कर रहा है और अन्तरिक्ष के दोनों छोरों की रक्षा कर रहा है।

टि. *जलवर्षक* - **समुद्रः**। समुद्द्रवन्ति अस्माद् आपः - वे.। समुन्दनः। यद्वा। संमोदन्ते तस्मिन् देवा इति समुद्रः। सा.। the shedder of dew - W. Sea - G.

*शोभन रश्मियों वाला* - **सुपर्णः**। सुगमनः - सा.। तेजस्वी किरणों वाला - सात.। quick-going (car) - W. with strong wings - G.

*पूर्व से स्थित के, स्थान में पिता के* - **पूर्वस्य योनिम् पितुः।** प्रत्नस्य पितुः स्वोत्पत्तिस्थानम् - वे.। पूर्वस्य। अवयवलक्षणेयम्। पूर्वदिगवयवस्य पितुः पालकस्यान्तरिक्षस्य योनिम् उत्पादकम् अवयवम् - सा.। पूर्णस्याकाशादेः कारणं पालकस्य - दया.। the region of paternal seat - W. dwelling-place of the Primeval Father - G.

*सर्वव्यापक* - **अश्मा।** मणिभिर् इवेत्यौपमिकम् - वे.। सर्वत्र व्याप्तः। लुप्तोपमा वा। अश्मसदृशः। सा.। मेघः - दया.। pervading - W. a gay-hued Stone - G.

**चत्वार ईं बिभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते।**
**त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश् चरन्ति परि सद्यो अन्तान्।। ४।।**

चत्वारः। ईम्। बिभ्रति। क्षेमऽयन्तः। दश। गर्भम्। चरसे। धापयन्ते।
त्रिऽधातवः। परमाः। अस्य। गावः। दिवः। चरन्ति। परि। सद्यः। अन्तान्।। ४।।

*चार इसको धारण करती हैं, निवास कराती हुईं,*
*दस गर्भभूत को (इसको), विचरण के लिये दूध पिलाती हैं।*
*तीन को धारण करने वाली, महान् इसकी रश्मियां,*
*द्युलोक के, विचरण करती हैं, अविलम्ब छोरों के सब ओर।। ४।।*

चार मुख्य दिशाएं - पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर इस सूर्य को निवास और विश्राम प्रदान कराती हुई इसे सँभाले हुए हैं। ये चार मुख्य दिशाएं तथा ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत्य और वायव्य ये चार उपदिशाएं, ऊर्ध्वा और ध्रुवा ये सब मिलकर दस दिशाएं गर्भ की तरह मध्य में स्थित इस सूर्य को पाल-पोस कर बड़ा करने और चलाने के लिये उसे अपनी छाती से दूध पिलाती हैं। तीनों लोकों को धारण करने वाली इसकी महान् रश्मियां इसके उदित होने के तुरन्त पश्चात् द्युलोक के सब छोरों के सब ओर विचरण करने लगती हैं।

अध्यात्म में सूर्य ज्ञान का, गौएं ज्ञानरश्मियों का, दिशाएं, उपदिशाएं और तीन लोक आदि साधक के अन्तर्जगत् में विद्यमान सूक्ष्म पदार्थों का उपलक्षण हैं।

टि. *चार निवास कराती हुईं* - **चत्वारः क्षेमयन्तः।** देवाः क्षेमम् अस्य कुर्वन्तः - वे.। चत्वार ऋत्विजः क्षेमम् आत्मन इच्छन्तः - सा.। पृथिव्यादयः रक्षयन्तः - दया.। the four (chief priests) sustain him - W. four (bear him up) and give him rest and quiet - G.

*दस दूध पिलाती हैं* - **दश धापयन्ते।** दिशश् च स्वरसं धापयन्ति - वे.। दश दिशो गमयन्ति - सा.। दश दिशः धारयन्ति - दया.। the ten (regions of space) invigorate him - W. G.

*तीन को धारण करने वाली* - **त्रिधातवः।** निधीयमानवर्षातपहिमाः - वे.। त्रिप्रकाराः शीतोष्णवर्षभेदेन त्रिविधाः - सा.। त्रयः सत्वरजस्तमांसि धातवो धारका येषां ते - दया.। three elementary rays - W. of threefold nature - G.

**इदं वपुर् निवचनं जनासश् चरन्ति यन् नद्यस् तस्थुर् आपः।**
**द्वे यद् ईं बिभृतो मातुर् अन्ये इहेह जाते यम्या सबन्धू।। ५।।**

इदम्। वपुः। निऽवचनम्। जनासः। चरन्ति। यत्। नद्यः। तस्थुः। आपः।

द्वे इति॑। यत्। ई॒म्। बि॒भृतः॑। मा॒तुः। अ॒न्ये इति॑। इ॒हऽइ॑ह। जा॒ते इति॑। य॒म्या॑। सब॑न्धू॒ इति॒ सऽब॑न्धू।। ५।।

*यह अति सुन्दर है रहस्यज्ञान, हे मनुष्यो!,*
*बहती हैं चूँकि नदियां, स्थिर हैं जल (समुद्र में),*
*दो चूँकि इसको धारण करते है, निर्माता से भिन्न,*
*यहाँ और यहाँ उत्पन्न, नियमन के योग्य, समान सम्बन्ध वाले।। ५।।*

हे मनुष्यो! परमेश्वर का यह रहस्यज्ञान अत्यन्त सुन्दर और आश्चर्यजनक है, कि इसकी इच्छा से ही ये नदियां धरती पर बह रही हैं और जल समुद्रों में स्थिर रूप में विद्यमान है। इस निर्माता से भिन्न ये धरती और आकाश दोनों इसको धारण कर रहे हैं, अर्थात् यह उनमें व्याप्त है। इससे उत्पन्न होकर भी ये दोनों अलग-अलग स्थानों में वर्तमान हैं। ये दोनों उसके द्वारा ही नियन्त्रित किये जाते हैं। एक प्रभु से उत्पन्न होने के कारण इनका उसके साथ समान रिश्ता है।

टि. *यह अति सुन्दर है रहस्यज्ञान* - **इदम् वपुः निवचनम्।** इदम् अस्य रूपम् आभिमुख्येन वक्तव्यम् - वे.। इदं पुरतो दृश्यमानं वपुः शरीरं मण्डलं निवचनं स्तुत्यं भवतीति शेषः - सा.। इदं शरीरं निश्चितं वचनं यस्य तत् - दया.। this indescribable form - W. wondrous is the mystic knowledge - G.

दो *निर्माता से भिन्न* - **द्वे मातुः अन्ये।** द्वे अहोरात्रे मातुर् निर्मातुर् मातृस्थानीयाद् अन्तरिक्षाद् अन्ये - सा.। the two, ( day and night) as well as other seasons (born ) of it - W. two separate from his mother - G.

*नियमन के योग्य* - **यम्या।** मिथुनभूते - वे.। यम्या नियमनीये युग्मभूते वा - सा.। रात्रिदिने - दया.। associated - W. twins - G.

*समान सम्बन्ध वाले* - **सबन्धू।** समानबन्धने - वे.। समानबले समानबन्धने उभयोर् अप्येक एव सूर्यो बन्धको ऽक्षो ययोस् तादृश्यौ - सा.। समानो बन्धुर् ययोस् तद्वद् वर्तमाने - दया.। equally allied - W. closely united - G.

**वि त॑न्वते॒ धियो॑ अस्मा॒ अपां॑सि॒ वस्त्रा॑ पु॒त्राय॑ मा॒तरो॑ वयन्ति।**
**उ॒प॒प्र॒क्षे वृष॑णो॒ मोद॑माना दि॒वस् प॒था व॒ध्वो॑ य॒न्त्यच्छ॑।। ६।।**

वि। त॒न्व॒ते॒। धियः॑। अ॒स्मै॒। अपां॑सि। वस्त्रा॑। पु॒त्राय॑। मा॒तरः॑। व॒य॒न्ति॒।
उ॒प॒ऽप्र॒क्षे। वृष॑णः। मोद॑मानाः। दि॒वः। प॒था। व॒ध्वः॑। य॒न्ति॒। अच्छ॑।। ६।।

*वितान करते हैं स्तुतियों का, इसके लिये (और) कर्मों का,*
*वस्त्रों को पुत्र के लिये, माताएं बुनती हैं।*
*सम्पर्क में सेचक के, मुदित होती हुई,*
*आकाश के मार्ग से, वधुएं जाती हैं सब ओर।। ६।।*

उपासक और याजक लोग इस सूर्य के लिये स्तुतियों और यज्ञ आदि शुभ कर्मों का विस्तार करते हैं। परमेश्वर की निर्माणशक्तियां बहुतों का त्राण करने वाले इस सूर्य के लिये किरण रूपी वस्त्रों को बुनती हैं। रश्मि रूपी ये वधुएं जब सूर्य रूपी वृषभ के सम्पर्क में आती हैं, तो उस सम्पर्क से प्रसन्न

होती हुईं आकाश के मार्ग से सब दिशाओं में फैल जाती हैं।

टि. *स्तुतियों का* - **धियः**। ध्यातारः - वे.। स्तुतीः - सा.। प्रज्ञाः - दया.। prayers - G.

*कर्मों का* - **अपांसि**। कर्माणि - वे.। सा.। दया.। acts - G.

*वस्त्रों को* - **वस्त्रा**। तेजांसि - वे.। वस्त्राणि। वस्त्रसदृशानि तेजांसि। सा.।

*माताएं* - **मातरः**। दिशः - वे.। निर्मात्र्य उषसो दिशो वा - सा.।

*सम्पर्क में सेचक के* - **उपप्रक्षे वृषणः**। उपपर्चनाय मनुष्यान् - वे.। सेक्तुः सूर्यस्य उपपर्चने सम्पर्के सति - सा.। सम्पर्के यूनः - दया.। in the contact of their impregnation - W. for the Steer's impregning contact - G.

*जाती हैं सब ओर* - **यन्ति अच्छ**। अभिगच्छन्ति - वे.। अस्मदभिमुखं प्रसरन्ति - सा.।

**तद् अस्तु मित्रावरुणा तद् अग्ने शं योर् अस्मभ्यम् इदम् अस्तु शस्तम्।**
**अशीमहि गाधम् उत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय।। ७।। १।।**

तत्। अस्तु। मित्रावरुणा। तत्। अग्ने। शम्। योः। अस्मभ्यम्। इदम्। अस्तु। शस्तम्।
अशीमहि। गाधम्। उत। प्रतिऽस्थाम्। नमः। दिवे। बृहते। सदनाय।। ७।।

*यह होवे, हे मित्र और वरुण!, यह, हे अग्ने!,*
*सुखप्राप्ति दुःखनिवृत्ति के लिये हमारी, यह होवे गाया हुआ।*
*प्राप्त करें हम गम्भीरता को और स्थिरता को,*
*नमस्कार हो द्युतिमान् को, महान् को, निवासप्रदाता को।। ७।।*

हे परमेश्वर की विनाश से त्राण कराने वाली और जगत् को सर्वतः आच्छादित करने वाली शक्तियो!, और हे परमेश्वर की मार्गदर्शक शक्ति! हमारे द्वारा गाया हुआ यह स्तोत्र हमारे लिये सुख की प्राप्ति और दुःख की निवृत्ति कराने वाला होवे। हम उपासक अपने जीवन में गम्भीरता और स्थिरता को प्राप्त करें। उस प्रकाशमान, महान् और सबको बसाने वाले परमेश्वर को नमस्कार हो।

टि. *सुखप्राप्ति दुःखनिवृत्ति के लिये* - **शम् योः**। सुखाय दुःखानाम् अमिश्रणाय - सा.। सुखं दुःखात् पृथग्भूतम् - दया.। means of happiness unmixed - W. health and force - G.

*गाया हुआ* - **शस्तम्**। स्तुतम् - सा.। प्रशंसनीयम् - दया.। be valued - W. praise - G.

*गम्भीरता को* - **गाधम्**। उदकमध्यस्थलम् - वे.। स्थितिम् - सा.। गभीरम् - दया.। stability - W. firm ground - G. depth (of life) - Satya.

*स्थिरता को* - **प्रतिष्ठाम्**। स्थितेर् अविच्छित्तिम् - सा.। permanence - W. room for resting - G. stability - Satya.

*निवासप्रदाता को* - **सादनाय**। सर्वेषां वासयित्रे - वे.। आश्रयाय विश्वस्य - सा.। स्थितिमते - दया.। to asylum - W. the (lofty) habitation - G.

## सूक्त ४८

ऋषिः - प्रतिभानुर् आत्रेयः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - जगती। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**कद् उ प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयशसे महे वयम्।**
**आमेन्यस्य रजसो यद् अभ्र आँ अपो वृणाना वितनोति मायिनी।। १।।**

कत्। ऊँ इति। प्रियाय। धाम्ने। मनामहे। स्वऽक्षत्राय। स्वऽयशसे। महे। वयम्।
आऽमेन्यस्य। रजसः। यत्। अभ्रे। आ। अपः। वृणाना। विऽतनोति। मायिनी।। १।।

*कब निश्चय से प्रीतिकर तेज के लिये, स्तुति करें हम,*
*आत्मबल के लिये, आत्मकीर्त्ति के लिये, महान् के लिये हम।*
*अपरिमेय अन्तरिक्ष के (अन्दर), जब मेघ में सब ओर से,*
*जलों का वरण करती हुई, विस्तार करती है, निर्माण करने वाली।। १।।*

प्रीति को उत्पन्न करने वाले तेज के लिये, अपने बल के लिये और स्वकीय महान् यश के लिये हम उपासक जन कार्यों को उत्पन्न करने वाली प्रज्ञावती उस माध्यमिकी वाक् की कब और कैसे स्तुति करें, जो शान्तिदाता अपरिमेय हृदयाकाश के अन्दर शान्ति रूपी जलों का वरण करती हुई उनका सब ओर विस्तार करती है।

टि. *तेज के लिये* - **धाम्ने**। तेजसे - वे.। तेजसे वैद्युताय - सा.।

*स्तुति करें हम* - **मनामहे**। स्तुतिं कुर्मः - वे.। सा.। may we meditate for - G.

*अपरिमेय अन्तरिक्ष के* - **आमेन्यस्य रजसः**। सर्वतो मातव्यस्य अन्तरिक्षस्य - वे.। सा.। समन्तान् मेयस्य लोकस्य - दया.। over the unbounded firmament - W. to the immeasurable middle region's (cloud) - G.

*निर्माण करने वाली* - **मायिनी**। कर्मवती माध्यमिका वाक् - वे.। मायेति प्रज्ञानाम। प्रज्ञावती सती। माध्यमिकी वाग् इति वा योज्यम्। सा.। माया प्रज्ञा विद्यते यस्यां सा - दया.। delusive (energy of Agni) - W. magic energy - G.

**ता अत्नत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वम् आ रजः।**
**अपो अपाचीर् अपरा अपेजते प्र पूर्वाभिस् तिरते देवयुर् जनः।। २।।**

ताः। अत्नत। वयुनम्। वीरऽवक्षणम्। समान्या। वृतया। विश्वम्। आ। रजः।
अपो इति। अपाचीः। अपराः। अप। ईजते। प्र। पूर्वाभिः। तिरते। देवऽयुः। जनः।। २।।

*वे विस्तारती हैं प्रज्ञान को, वीरों से वहनीय को,*
*समान मार्ग से, समस्त में, सब ओर लोक में।*
*पीछे, पीछे वालियों को, अन्यों को परे हटाता है,*
*खूब सामने वालियों से, बढ़ता है देवकामी मनुष्य।। २।।*

वे उषाएं अथवा ज्ञानरश्मियां वीर उत्साही मनुष्यों के द्वारा धारण करने के योग्य प्रज्ञान का समस्त जगत् में सब ओर समान रीति से विस्तार करती हैं। देवों और परमेश्वर से प्यार करने वाला मनुष्य इनमें से जो पीछे बीत चुकी हैं उन्हें पीछे की ओर और अन्य जो आगे आने वाली हैं उन्हें परे की ओर हटा देता है। वह तो इस समय जो उसके सामने हैं, उन्हीं से स्वयं को बढ़ाता है। भाव यह है, कि प्रज्ञावान् प्रभुभक्त भूत और भविष्यत् को छोड़कर वर्तमान में ही जीता है।

टि. *वे विस्तारती हैं प्रज्ञान को* - **ताः अत्नत वयुनम्।** उषसः आ तन्वन्ति ज्ञानसाधनं तेजः - वे.। ता उषसो वितन्वन्ति प्रज्ञानम् - सा.। ताः आपः निरन्तरं गच्छत कर्म प्रज्ञानं वा - दया.।

*वीरों से वहनीय को* - **वीरवक्षणम्।** येन कर्मसूद्युक्तो वीरो जन उह्यते - वे.। वीरैर् ऋत्विग्भिर् वहनीयम्। यद्वा। वक्षणाः कार्यवोढारो येन प्रेर्यन्ते तत् तादृशम्। सा.। वीराणां वहनम् - दया.। that is apprehended by pious men - W.

*समान मार्ग से* - **समान्या वृतया।** समान्या छादयित्र्या दीप्त्या - वे.। एकरूपया आवरकया दीप्त्या - सा.। तुल्यया आवरकया क्रियया - दया.। with uniform, investing (light) - W. with their uniform advance - G.

*पीछे, पीछे वालियों को* - **अपो अपाचीः।** पूर्वा उषसः पराङ्मुखीः - वे.। अपाचीर् अपाञ्चनाः प्रतिनिवृत्तमुखीः। अपरो ऽपशब्दः पूरणः। सा.। the dawns which have turned back - W. back, with their course reversed - G.

*अन्यों को* - **अपराः।** अन्या आगामिनीर् उषसः - सा.। अन्याः - दया.। (those which) are to come - W. the others - G.

*परे हटाता है* - **अप ईजते।** अप गमयति - वे.। अप चालयति - सा.। कम्पते - दया.। disregards - W. (the others) pass away - G.

*सामने वालियों से* - **पूर्वाभिः।** अग्रागताभिः कर्मयोग्याभिः - वे.। पूर्वाभिस् ताभिः - सा.। by those which have proceeded - W. with those that are before : yet to come - G.

**आ ग्रावभिर् अहन्येभिर् अक्तुभिर् वरिष्ठं वज्रम् आ जिघर्ति मायिनि।**
**शतं वा यस्य प्रचरन् त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा।। ३।।**

आ। ग्रावऽभिः। अहन्येभिः। अक्तुऽभिः। वरिष्ठम्। वज्रम्। आ। जिघर्ति। मायिनि।
शतम्। वा। यस्य। प्रऽचरन्। स्वे। दमे। सम्ऽवर्तयन्तः। वि। च। वर्तयन्। अहा।। ३।।

*सर्वतः (युक्त होकर) सोमों से, देदीप्यमान रश्मियों से,*
*विशाल वज्र को, सब ओर से डालता है, मायावी पर।*
*और असंख्य जिसकी (रश्मियां), विचरती हैं अपने घर में,*
*बन्द करती हुईं, और सपाट खोलती हुईं, दिनों को।। ३।।*

आसुरी शक्तियों का संहार करने वाला वह परमेश्वर आनन्दरूपी सोमों से और अपनी देदीप्यमान अथवा अहिंसनीय ज्ञानरश्मियों से युक्त होकर अपने विशाल न्यायव्यवस्था रूपी वज्र से बलवती आसुरी शक्ति पर प्रहार करता है। वह इस प्रकार सुखसाधनों को उसके चंगुल से निकालकर उनका सब प्रजाओं में समान रूप से वितरण कर देता है। उस परमात्मा की असंख्य शक्तियां दिनों को उदित करती हुईं और अस्त करती हुईं अर्थात् प्राणियों को उनके कार्यों में लगाती हुईं और उन्हें विश्राम कराती हुईं जगत् में सब ओर विचरण कर रही हैं।

टि. *सोमों से* - **ग्रावभिः।** अभिषवग्रावभिः - वे.। साध्ये साधनशब्दः। ग्रावसाध्यैर् अभिषवैर् निमित्तभूतैः - सा.। (animated) by the libations - W. with pressing stones - G.

*देदीप्यमान रश्मियों से* - **अहन्येभिः अक्तुभिः।** अह्नि भवैः सोमाक्तैः - वे.। अहन्येभिर् अहनि सम्पादितैर् अक्तुभी रात्रिभिः। तत्र निष्पन्नैर् इत्यर्थः। सा.। दिनैः रात्रिभिः - दया.। offered by day and by night - W. with the bright beams of the day - G.

*डालता है मायावी पर* - **जिघ्रति मायिनि।** पातयति मायायुक्ते शत्रौ - वे.। जिघर्ति दीपयति वृत्रे - सा.। मायिनि। माया प्रशंसिता प्रज्ञा विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ। दया.। sharpens against the beguiler (Vṛtra) - W. hurls (his bolt) against the Guileful One - G.

*असंख्य जिसकी (रश्मियां)* - **शतम् यस्य।** शतं यजमाना यस्य - वे.। यस्येन्द्रात्मकस्य आदित्यस्य शतसंख्याका रश्मयः - सा.। whose hundred (rays) - W. whose hundred - G.

*बन्द करती हुईं* - **संवर्तयन्तः।** संगमयन्तः - वे.। सम्यक् प्रवर्तयन्तः - सा.। सम्यग् वर्तमानाः - दया.। sending away - W. drawing afar - G.

*सपाट खोलती हुईं* - **वि वर्तयन्।** निवर्तयन्ति गतान्येव पुनः प्रापयन्ति - सा.। bringng back - W. bringing them again - G.

**ताम् अ॒स्य री॒तिं प॑र॒शोरि॑व॒ प्रत्यनी॑कम् अख्यं भु॒जे अ॒स्य॒ वर्प॑सः।**
**सचा॒ यदि॑ पितु॒मन्त॑मिव॒ क्षयं॒ रत्नं॒ दधा॑ति॒ भर॑हूतये वि॒शे॥ ४॥**

ताम्। अ॒स्य॒। री॒तिम्। प॒र॒शोःऽइ॑व। प्रति॑। अनी॑कम्। अ॒ख्य॒म्। भु॒जे। अ॒स्य॒ वर्प॑सः।
सचा॑। यदि॑। पि॒तु॒मन्त॑म्ऽइव। क्षय॑म्। रत्न॑म्। दधा॑ति। भर॑ऽहूतये। वि॒शे॥ ४॥

*उसको इसके स्वभाव को, परशु के प्रतिनिधि के समान (जानता हूँ),*
*रश्मिसमूह को कहता हूँ मैं भोग के लिये, इस रूप वाले के।*
*साथ होकर चूँकि (यह), अन्न वाले की तरह, घर की,*
*रमणीय धन को देता है, संघर्ष में बुलाने वाली प्रजा के लिये॥ ४॥*

दुष्ट अवाञ्छित अत्याचारी आसुरी शक्तियों का विनाश कर डालने वाले इस परमेश्वर के स्वभाव को मैं अवाञ्छित झाड़-झंखाड़ आदि को काट डालने वाले कुल्हाड़े के समान समझता हूँ। मैं देखता हूँ कि शत्रुओं को सब ओर से घेरकर नष्ट कर डालने वाले इस प्रभु का शक्तिसमूह भोगों, भोजनों और रक्षासाधनों को प्राप्त कराने वाला है। जब यह साथी हो जाता है, तो संघर्ष में सहायता के लिये बुलाने वाली प्रजाओं के लिये उसी प्रकार रमणीय धनों को प्रदान करने वाला हो जाता है, जिस प्रकार अन्न आदि सुख साधनों से भरा हुआ घर गृहस्वामी को सब प्रकार के सुखों को देने वाला हो जाता है।

टि. *इसके स्वभाव को* - **अस्य रीतिम्।** अस्य युद्धे गमनमार्गम् - वे.। अस्याग्नेः स्वभावं गतिं वा - सा.। the practice of that (Agni) - W. I behold that rapid rush of his - G.

*परशु के प्रतिनिधि के समान* - **परशोः इव प्रति।** अरण्ये परशोः इव मार्गम् प्रति पश्यामि - वे.। परशोः प्रतिनिधिम् इव पश्यामि। परशुर् यथा स्वस्वामिन्यभिमतं साधयति तद्वद् इत्यर्थः। सा.।

*साथ होकर* - **सचा।** सह - वे.। अस्मत्सहायः सन् - सा.।

*रूप वाले के* - **वर्पसः।** शत्रून् आच्छादयतः - वे.। रूपवतो ऽस्यादित्यस्य - सा.। रूपस्य - दया.।

*अन्न वाले की तरह, घर की* - **पितुमन्तम् इव क्षयम्।** अन्नवन्तम् इव गृहम् - वे.। सा.।

*संघर्ष में बुलाने वाली प्रजा के लिये* - **भरहूतये विशे**। या विड् इन्द्रं संग्रामार्थम् आह्वयति तस्यै विशे - वे.। संग्रामे यज्ञे वाह्वानयुक्ताय यजमानाय - सा.। to man who calls on him in fight - G.

**स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम्।**
**न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम्।। ५।। २।।**

सः। जिह्वया। चतुःऽअनीकः। ऋञ्जते। चारु। वसानः। वरुणः। यतन्। अरिम्।
न। तस्य। विद्म। पुरुषत्वता। वयम्। यतः। भगः। सविता। दाति। वार्यम्।। ५।।

*वह वाणी से, चतुर्मुख साधता है (कार्यों को),*
*सुन्दर तेज को ओढ़ता हुआ, तमोनिवारक, नष्ट करता हुआ शत्रु को।*
*नहीं उसके जानते हैं (रहस्य को), मनुष्य होने के नाते हम,*
*जहाँ से विभक्ता, सर्वप्रेरक, प्रदान करता है वरणीय (धन) को।। ५।।*

चारों दिशाओं में सब-कुछ देखने और जानने वाला वह परमेश्वर अपनी वाणी से, आदेशमात्र से सब कार्यों को साधता है, क्योंकि कोई भी शक्ति उसके आदेश का उल्लङ्घन नहीं कर सकती। सुन्दर तेज को धारण करने वाला, अज्ञान और अन्धकार को दूर भगाने वाला वह जगदीश अपने लिये ही जीने वाली आसुरी शक्तियों का विनाशक है। चूँकि हम नर हैं, इसलिये उस नारायण की रहस्यमयी व्यवस्था को नहीं जानते, जिसके द्वारा वह ऐश्वर्यों का विभक्ता, सर्वप्रेरक परमेश्वर वरणीय सुखसाधनों को सब तक पहुँचा रहा है।

टि. *वाणी से* - **जिह्वया**। साध्यस्थाने साधकप्रयोगः।। काकुदेन जलं क्षरता - वे.। वाण्या - दया.।

*चतुर्मुख साधता है* - **चतुरनीकः ऋञ्जते**। चतुरनीकः यस्य रश्मयो ऽनीकानि चतसृष्वपि दिक्षु स्थितानि। ऋञ्जते जगत् प्रसाधयति। वे.। चतुरनीकश् चतुर्दिक्षु प्रसृतज्वालः सन्। ऋञ्जते अलंकरोति स्वात्मानम्। सा.। चतुर्विधान्यनीकानि यस्य सः प्रसाध्नोति - दया.। in the four quarters (of the horizon) he proceeds - W. four-faced stirs himself - G.

*तमोनिवारक* - **वरुणः**। तमोवारकः सन् - सा.। श्रेष्ठः - दया.।

*नष्ट करता हुआ शत्रु को* - **यतन् अरिम्**। हिंसन् शत्रुम् - वे.। अमित्रम् उद्धरन् - सा.। यत्नं कुर्वन् शत्रुम् - दया.। extirpating foes - W. urging on the pious to his task - G.

*मनुष्य होने के नाते* - **पुरुषत्वता**। पौरुषेण - वे.। पुरुषत्वेन कामानां पूरकत्वेन वा युक्तम्। अपरो भावप्रत्ययः पूरणः। सा.। बहुपुरुषार्थेन सह - दया.। (as endowed) with manhood - W. by our human nature - G.

## सूक्त ४९

ऋषिः - प्रतिप्रभ आत्रेयः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**देवं वो अद्य सवितारम् एषे भगं च रत्नं विभजन्तम् आयोः।**
**आ वां नरा पुरुभुजा ववृत्यां दिवेदिवे चिद् अश्विना सखीयन्।। १।।**

देवम्। वः। अद्य। सवितारम्। आ। ईषे। भगम्। च। रत्नम्। विऽभजन्तम्। आयोः।

आ। वाम्। नरा। पुरुऽभुजा। ववृत्याम्। दिवेऽदिवे। चित्। अश्विना। सखिऽयन्।। १।।
*द्युतिमान् को, तुम्हारे लिये आज, सर्वप्रेरक को, बुलाता हूँ मैं,*
*विभक्ता को भी, रमणीय धन बाँटने वाले को, मनुष्यों के लिये।*
*इस ओर तुम दोनों को, हे नेताओ!, हे बहुपालको!, घुमाता हूँ मैं,*
*दिनप्रतिदिन ही, हे अश्वियो!, मित्रता चाहता हुआ (तुम्हारे साथ)।। १।।*

हे मनुष्यो! मैं आज तुम सब के अभ्युदय और निःश्रेयस के लिये ज्ञान और प्रकाश से युक्त सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक जगदीश्वर का आह्वान करता हूँ। मैं मनुष्यों में रमणीय धनों को बाँटने वाले उस भजनीय भगवान् को बुलाता हूँ। हे बहुतों का पालन-पोषण, रक्षण और नेतृत्व करने वालो!, हे मेरे आत्मा और परमात्मा!, मैं प्रतिदिन ही तुम्हारे साथ मित्रता की कामना करता हुआ तुम दोनों को अपनी ओर लाता हूँ।

टि. *सर्वप्रेरक को* - **सवितारम्**। सर्वस्याभ्यनुज्ञातारम् - सा.। ऐश्वर्यवन्तम् - दया.।

*बुलाता हूँ मैं* - **आ ईषे**। आ गमयामि - वे.। उपगच्छामि -सा.।I approach - W. I bring to meet you - G.

*विभक्ता को* - **भगम्**। भजनीयम् - सा.। ऐश्वर्यम् - दया.।

*इस ओर घुमाता हूँ मैं* - **आ ववृत्याम्**। आवर्तयाम्यस्मदभिमुखम् - सा.।I solicit your presence - W. fain would I turn hither - G.

*हे बहुपालको* - **पुरुभुजा**। पुरु भुञ्जाते इति पुरुभुजौ - सा.। यौ पुरून् बहून् पालयतस् तौ - दया.।enjoyers of many (good things) - W. rich in treasures - G.

**प्रति॑ प्र॒याण॒म् असु॑रस्य वि॒द्वान् त्सू॒क्तैर् दे॒वं स॑वि॒तारं॑ दुवस्य।**
**उप॑ ब्रुवीत॒ नम॑सा विजा॒नञ् ज्येष्ठं॑ च॒ रत्नं॑ वि॒भज॑न्तम् आ॒योः।। २।।**

प्रति॑। प्र॒ऽयान॑म्। असु॑रस्य। वि॒द्वान्। सु॒ऽउ॒क्तैः। दे॒वम्। स॒वि॒तार॑म्। दु॒व॒स्य॒।
उप॑। ब्रु॒वी॒त॒। नम॑सा। वि॒ऽजा॒नन्। ज्येष्ठ॑म्। च॒। रत्न॑म्। वि॒ऽभज॑न्तम्। आ॒योः।। २।।
*प्रत्येक प्रगमन में, प्राणदाता की (सत्ता को) जानता हुआ,*
*उत्तम वचनों से दीप्तिमान् की, सर्वप्रेरक की, पूजा कर तू।*
*निकट से स्तुति कर तू, नमस्कार के साथ, सोच-समझ कर,*
*उत्तम रमणीय धनों को बाँटने वाले की, मनुष्यों के लिये।। २।।*

हे मेरे अन्तरात्मन्! पग-पग पर प्राणदाता परमेश्वर की सत्ता का अनुभव करता हुआ तू दान, दिव्यता आदि गुणों वाले, सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर का शोभन स्तुतिवचनों से गुणगान कर। मनुष्यों में श्रेष्ठ रमणीय धनों को बाँटने वाले प्रभु की महिमा को भली प्रकार जानता हु आ तू नमस्कार के साथ उसकी हृदय से स्तुति कर। वही तेरा उद्धार और कल्याण कर सकता है।

टि. *प्रत्येक प्रगमन में* - **प्रति प्रयाणम्**। प्रत्यागतिम् - सा.।the approach - W. (Asura's) time of coming - G.

*प्राणदाता की* - **असुरस्य**। शत्रूणां निरसितुः - सा.।of the expeller (of the foes of the gods

from heaven) - W.

*निकट से स्तुति कर तू* - **उप ब्रुवीत**। स्तौतु भवान् - सा.। praise him - W. let him speak - G.

*उत्तम रमणीय धनों को* - **ज्येष्ठं च रत्नम्**। जाताव् एकवचनम्।। रत्नं धनम् - सा.। दया.।

**अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर् वस्त उस्रः।**

**इन्द्रो विष्णुर् वरुणो मित्रो अग्निर् अहानि भद्रा जनयन्त दस्माः।। ३।।**

अदत्रऽया। दयते। वार्याणि। पूषा। भगः। अदितिः। वस्ते। उस्रः।

इन्द्रः। विष्णुः। वरुणः। मित्रः। अग्निः। अहानि। भद्रा। जनयन्त। दस्माः।। ३।।

*लेने की इच्छा के बिना देता है, वरणीय धनों को,*

*पोषक, विभक्ता, अखण्डनीय, ओढ़ता है तेजों को।*

*इन्द्र, विष्णु, वरुण, मित्र (और) अग्नि,*

*दिनों को कल्याणकर बनाते हैं, दुःखविनाशक।। ३।।*

सब का पालन-पोषण करने वाला, धनों का विभक्ता, अखण्डनीय वह परमेश्वर बदले में कुछ लेने की इच्छा के बिना ही वरणीय धनों को प्रदान करता है। वह तेजों को धारण करता है। दुष्टसंहारक, सर्वव्यापिनी, तमोनिवारक, विनाशत्राता और मार्गदर्शक उसकी दुःखविनाशक शक्तियां मनुष्यों के लिये दिनों को कल्याणकारक बना देती हैं।

टि. *लेने की इच्छा के बिना* - **अदत्रया**। जिह्वया - वे.। अदनीयानि। अदेर् औणादिको ऽत्र-प्रत्ययः। सुपां सुलुग् इति याजादेशः। अथवा अत्तीत्यदत्रा जिह्वा, तया। यद्वा। अदनीयानि। सा.। अत्तुं योग्यान्यन्नादीनि - दया.। viands - W. not for reward - G.

*देता है* - **दयते**। प्रयच्छति - वे.। दयतिर् अनेककर्मात्र दहने वर्तते। दहतीत्यर्थः। यद्वा। ददाति यजमानाय। दय दानगतिहिंसाबलाख्यानेषु। सा.। ददाति - दया.। bstow - W. doth send - G.

*अखण्डनीय* - **अदितिः**। अखण्डनीयः - सा.। माता - दया.।

*ओढ़ता है तेजों को* - **वस्ते उस्रः**। वस्ते तेजांसि उत्सरणशीलः - वे.। उस्रः सूर्यो वस्त आच्छादयति सामर्थ्यात् तेजांसि - सा.। आच्छादयति किरणान् - दया.। the fierce (sun) robes (himself with radiance) - W. his garb is splendour - G.

*दुःखविनाशक* - **दस्माः**। दर्शनीयाः - सा.। दुःखोपक्षयितारः - दया.। the good-looking - W. the Wonder-Workers - G.

**तन् नो अनर्वा सविता वरूथं तत् सिन्धव इषयन्तो अनु ग्मन्।**

**उप यद् वोचे अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः।। ४।।**

तत्। नः। अनर्वा। सविता। वरूथम्। तत्। सिन्धवः। इषयन्तः। अनु। ग्मन्।

उप। यत्। वोचे। अध्वरस्य। होता। रायः। स्याम। पतयः। वाजऽरत्नाः।। ४।।

*उसे (प्रदान करे) हमको, अपराजित सविता, वरणीय (धन) को,*

*उसको नदियां (हमें) प्राप्त कराती हुईं, अनुगमन करें (हमारा)।*

*पास (जाकर) जिसके लिये स्तुति करूँ मैं, यज्ञ का निष्पादक,*
*धन के होवें हम स्वामी, बलों से रमणीय।। ४।।*

यज्ञ आदि शुभ कर्मों का निष्पादन करने वाला मैं उपासक जिस-जिस वस्तु की कामना वाला होकर उस सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर की हृदय से स्तुति करूँ, वह उन्हें हमको प्रदान करे। नदियां अपने पवित्र जलों से हमें सात्त्विक अन्न प्रदान कराती हुई सदा हमारा साथ देती रहें। हम आकर्षक बलों वाले होकर धनों और ऐश्वर्यों के स्वामी बनें।

टि. *अपराजित* - **अनर्वा**। अशत्रुः - वे.। अप्रत्यृतः केनाप्यतिरस्कृतः - सा.। irreproachable - W. the foeless - G.

*वरणीय (धन) को* - **वरूथम्**। वरणीयम् - वे.। वरणीयम् अस्मदभिमतं धनम् - सा.। गृहम् - दया.। desirable (wealth) - W. the shelter - G.

*प्राप्त कराती हुईं* - **इषयन्तः**। गच्छन्त्यः - वे.। सा.। प्राप्नुवन्तः - दया.। may hasten to (convey) it to us - W. shall approach us - G.

*बलों से रमणीय* - **वाजरत्नाः**। रमणीयान्नाः - वे.। अन्नेन बलेन वा रमणीयाः - सा.। विज्ञान-धनवन्तः - दया.। affluent in food - W. (lords of) rich possessions - G.

**प्र ये वसु॑भ्य॒ ईव॒द् आ नमो॒ दुर् ये मि॒त्रे वरु॑णे सू॒क्तवा॑चः।**
**अवै॒त्वभ्वं॑ कृणु॒ता वरी॑यो दि॒वस्पृ॑थि॒व्योर् अव॑सा मदेम।। ५।। ३।।**

प्र। ये। वसु॑ऽभ्यः। ईव॑त्। आ। नम॑ः। दुः। ये। मि॒त्रे। वरु॑णे। सू॒क्तऽवा॑चः।
अव॑। ए॒तु। अभ्व॑म्। कृ॒णु॒त। वरी॑यः। दि॒वःपृ॑थि॒व्योः। अव॑सा। म॒दे॒म॒।। ५।।

*प्रकर्ष से जो वसुओं को, इस प्रकार सर्वतः हवि प्रदान करते हैं,*
*जो (हैं) मित्र के निमित्त, वरुण के निमित्त, स्तोत्रों को बोलने वाले।*
*दूर हो जाए भय (उनका), बना दो विस्तृत स्थान (उनके लिये),*
*आकाश और पृथिवी की समृद्धि से, हर्ष को प्राप्त करें हम।। ५।।*

जो मनुष्य सुख से बसाने वाले देवों को इस प्रकार श्रद्धापूर्वक हवि प्रदान करते हैं, और जो उपासक विनाश से त्राण करने वाले और अज्ञान-अन्धकार का विनाश करने वाले परमेश्वर के लिये स्तोत्रों का गान करते हैं, हे देवो! भय और विनाश सदा उन से दूर रहे। तुम उनके लिये विस्तृत स्थान का निर्माण करो। वे संसार में सब ओर अपना विस्तार करें। हे परमेश्वर! हम आप के उपासक आकाश और पृथिवी के द्वारा प्रदत्त समृद्धियों को पाकर सदा आनन्द में रहें।

टि. *वसुओं को* - **वसुभ्यः**। यज्ञनिवासेभ्यो देवेभ्यः - सा.। धनेभ्यः - दया.।

*इस प्रकार* - **ईवत्**। गमनवत् - वे.। सा.। गतिरक्षणवत् - दया.। such - G.

*हवि* - **नमः**। अन्नम् पशुम् - वे.। नम अन्नं पश्वात्मकम् - सा.। अन्नम् - दया.। हवि - सात.। victims - W. worship - G.

*भय* - **अभ्वम्**। महत् अन्धकारम् - वे.। महद् धनं तेजो वा - सा.। महत् - दया.। बहुत सारा धन - सात.। felicity - W. danger - G.

*विस्तृत स्थान* - **वरीयः**। विस्तृतं तेजः - वे.। उरुतरं सुखम् - सा.। अत्युत्तमं धनादिकम् - दया.। श्रेष्ठ सुख - सात.। ample room - G.

## सूक्त ५०

ऋषिः - स्वस्त्यात्रेयमुनिः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - १-४ अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**विश्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर् मर्तो॑ वुरीत स॒ख्यम्।**
**विश्वो॑ रा॒य इ॑षुध्यति द्यु॒म्नं वृ॑णीत पु॒ष्यसे॑।। १।।**

विश्वः॑। दे॒वस्य॑। ने॒तुः। मर्तः॑। वु॒री॒त॒। स॒ख्यम्।
विश्वः॑। रा॒ये। इ॒षु॒ध्य॒ति॒। द्यु॒म्नम्। वृ॒णी॒त॒। पु॒ष्यसे॑।। १।।

*प्रत्येक, देव की, मार्गदर्शक की,*
*मनुष्य वरण करे, मित्रता का।*
*प्रत्येक धन के लिये कामना करे,*
*तेज का वरण करे, पुष्टि के लिये।। १।।*

प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह इस जगत् में सब का मार्गदर्शन करने वाले सर्वप्रेरक परमेश्वर की मित्रता का वरण करे, उसे अपना सखा बनाए। प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह उससे लौकिक और पारमार्थिक धन की कामना करे। वह शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पुष्टि के लिये तेज का वरण करे।

टि. *वरण करे* - **वुरीत**। वृणीते - वे.। वृणीत - सा.। स्वीकुर्यात् - दया.। let (every man) solicit - W. let (every mortal man) elect - G.

*कामना करे* - **इषुध्यति**। एनं धनार्थम् इच्छति - वे.। पञ्चमलकारः। ईशीत। सा.। इषून् धरति - दया.। स्वामी बनते हैं - सात.। let (every man) desire - W. solicits - G.

*तेज का वरण करे* - **द्युम्नम् वृणीत**। अन्नं वृणीते अस्मात् - वे.। तस्यानुग्रहात् सर्वो जनो द्युम्नं धनं वृणीत - सा.। द्युम्नं यशः - दया.। तेज को प्राप्त करते हैं - सात.। let him request affluence - W. seeks renown - G.

*पुष्टि के लिये* - **पुष्यसे**। त्वं च तत् सर्वं विश्वस्मै पुष्यसि हे सवितः! इति - वे.। पुष्ट्यै - सा.। पुष्टो भवसि - दया.। to nourish - W. to prosper him - G.

**ते ते॑ देव नेत॒र् ये चे॒माँ अ॑नु॒शसे॑।**
**ते रा॒या ते ह्या३॑पृचे॒ सचे॑महि सच॒थ्यैः॑।। २।।**

ते। ते॒। दे॒व॒। ने॒तः॒। ये। च॒। इ॒मान्। अ॒नु॒ऽशसे॑।
ते। रा॒या। ते। हि। आ॒ऽपृचे॑। सचे॑महि। स॒च॒थ्यैः॑।। २।।

*वे (हम) तेरे (ही हैं), हे देव!, हे मार्गदर्शक!,*
*और जो इन (दूसरों) को, रिझाने के लिये (यत्नशील हैं)।*
*वे धन से (युक्त होवें हम), वे निश्चय से युक्त होने योग्य,*

*युक्त होवें हम, युक्त होने योग्य (सब) कामों से।। २।।*

हे दान, प्रकाश आदि गुणों से युक्त परमेश्वर! हे सब का मार्गदर्शन करने वाले!, हम तेरे ही हैं। और ये जो अन्य लोग तेरी ही विभिन्न शक्तियों को प्रसन्न करने में लगे हुए हैं, ये भी तेरे ही हैं। ये हम उभयविध जन, जो निश्चय से तेरी उपदाओं को पाने के अधिकारी हैं, तेरे लौकिक और पारमार्थिक धनों को प्राप्त करें। हम प्राप्त करने योग्य अपनी सभी कामनाओं को पूर्ण करें।

टि. *इन (दूसरों) को रिझाने के लिये* - **इमान् अनुशसे**। इमान् अनुशंसितुम् आशंसितुम् उपतिर्ष्ठान्ति - वे.। इमान्। विभक्तिव्यत्ययः। इमे होत्रादयो ऽनुशसे शंसितुं प्रभवन्ति। एकैव वा महान् आत्मा देवता स सूर्यः स हि सर्वभूतात्मेत्युक्तत्वाद् इतरासां देवतानां तदन्तर्भावाद् इति भावः। न केवलं त्वच्छंसका एवेत्यर्थः। सा.। and these here ready to speak after us - G.

*युक्त होने के योग्य* - **आपृचे**। आपर्चनाय योग्याः - वे.। आपर्चनीयाः। कृत्यार्थे केन् प्रत्ययः। कृन्मेजन्त इत्यव्ययत्वाद् विभक्तेर् अदर्शनम्। सा.। समन्तात् सम्पर्काय - दया.।

*युक्त होने योग्य कामों से* - **सचथ्यैः**। सेवनीयैः धनैः - वे.। सर्वैः कामैः सचेमहि- सा.।

**अतो॑ न॒ आ नॄन् अति॑थी॒न् अत॒: पत्नी॑र् दशस्यत।**
**आ॒रे विश्वं॑ पथे॒ष्ठां द्विषो यु॑योतु यू॒यु॑विः।। ३।।**

अत॑ः। न॒ः। आ। नॄन्। अति॑थीन्। अत॑ः। पत्नी॑ः। द॒श॒स्य॒त॒।
आ॒रे। विश्व॑म्। प॒थे॒ऽस्थाम्। द्विषः। यु॒यो॒तु। यु॒यु॑विः।। ३।।

*इसलिये हमें सब ओर से, मनुष्यों को, अतिथियों को,*
*इसलिये पालक शक्तियों को, प्रदान करो तुम।*
*दूर प्रत्येक को, मार्ग में आड़े आने वाले को,*
*शत्रुओं को (भी) हटा देवे, दूर हटाने वाला।। ३।।*

इसलिये हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम हमें पुत्र, भृत्य आदि जनों, धर्मोपदेश के लिये घूमते-फिरते घर में आने वाले संन्यासियों और साधु-सन्तों को तथा पालन करने वाली अपनी शक्तियों को प्रदान करो। उनका निवास हमारे घर में सदा बना रहे। दोषों, दुष्टों और विघ्नबाधाओं को दूर हटाने वाला वह परमेश्वर धर्ममार्ग में आड़े आने वाले प्रत्येक दुष्ट जन को और काम, क्रोध आदि शत्रुओं को हमसे परे कर देवे।

टि. *इसलिये* - **अतः**। अस्माद् धनात् - वे.। अस्मिन् यज्ञे। सार्वविभक्तिकस् तसिः। सा.।

*मनुष्यों को* - **नॄन्**। अस्माकं दासान् - वे.। नेतॄन्। यद्वा। पुत्रभृत्यादीन्। सा.। धर्माद् वियोज्य धर्मपथं गमयितॄन् - दया.। the leaders (of our rites) - W. Hero Gods - G.

*पालक शक्तियों को* - **पत्नीः**। पत्नीः - वे.। देवानां पत्नीः - सा.। Dames - G.

*प्रदान करो तुम* - **दशस्यत**। प्रयच्छत - वे.। परिचरत - सा.। worship - W. honour - G.

*मार्ग में आड़े आने वाले को* - **पथेष्ठाम्**। मार्गवर्तिनं स्तेनम् - वे.। मार्गे वर्तमानं वैरिणम् - सा.। यो धर्मे पथि तिष्ठति तम् - दया.। adversary - W. who block our path - G.

*दूर हटाने वाला* - **यूयुविः**। पृथक्करणशीलः सविता पूषा वा - वे.। सर्वस्यामिश्रयिता पृथक्कर्ता

– सा.। (divine) discriminator - W.

**यत्र वह्निर् अभिहितो दुद्रवद् द्रोण्यः पशुः।**
**नृमणा वीरपस्त्यो ऽर्णा धीरेव सनिता।। ४।।**

यत्र। वह्निः। अभिऽहितः। दुद्रवत्। द्रोण्यः। पशुः।
नृऽमनाः। वीरऽपस्त्यः। अर्णा। धीराऽइव। सनिता।। ४।।

*जहाँ अग्नि आधान किया जाता है,*
*दौड़ते हैं द्रोण भर दूध देने वाले पशु (जहाँ)।*
*मनुष्यों को चाहने वाला, घर में वीर पुत्रों वाला,*
*नदियों की सतत प्रवाह वालियों की तरह, (हो जाता है) प्रापक।। ४।।*

जिस घर में नित्य अग्नि का आधान होता है, यज्ञ किया जाता है, और जिस घर के आँगन में द्रोणभर दूध देने वाली हृष्ट-पुष्ट गौएं निरन्तर दौड़ती रहती हैं, मनुष्यों से प्यार करने वाला और वीरपुत्रों से भरे-पूरे घर वाला उसका स्वामी अपने अड़ोस-पड़ौस और गली-मोहल्ले को इस प्रकार सुख और प्रसन्नता बाँटने वाला हो जाता है, जिस प्रकार निरन्तर बहने वाली नदियां अपने क्षेत्र को सुख और समृद्धि से भरपूर कर देने वाली होती हैं।

टि. *अग्नि* – **वह्निः**। अग्निः – वे.। यज्ञस्य वोढा – सा.। वोढाग्निः – दया.। fire - W. G.

*द्रोणभर दूध देने वाले पशु* – **द्रोण्यः पशुः**। जाताव् एकवचनम्।। द्रोण्यः पशुर् इत्यौपमिकम्। द्रोणदुग्धा धेनुर् इव ह्यग्निः। वे.। यूपार्हः पशुः – सा.। द्रोण्यः द्रोणेषु शीघ्रगामिषु भवः, पशुः यो दृश्यते – दया.। victim fit to be bound - W. the victim dwelling in the trough - G.

*मनुष्यों को चाहने वाला* – **नृमणाः**। नृषु सुष्ठु मनो ऽस्य सवितुः – वे.। यजमानमनाः सविता – सा.। नृषु मनो यस्य सः – दया.। with mind well disposed towards the worshipper - W. friendly to man - G.

*नदियों की सतत प्रवाह वालियों की तरह* – **अर्णा धीराऽइव**। उदकानि दाता भवति, यथा धीरा स्त्री स्तन्यं कुमाराय प्रयच्छति – वे.। अर्णारणकुशला धीरेव योषिद् इव – सा.। प्रापिका ध्यानवतीव – दया.। like a clever wife - W. like constant streams - G.

**एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रयिः।**
**शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे।। ५।। ४।।**

एषः। ते। देव। नेतर् इति। रथःपतिः। शम्। रयिः।
शम्। राये। शम्। स्वस्तये। इषःऽस्तुतः। मनामहे। देवऽस्तुतः। मनामहे।। ५।।

*यह तेरा, हे देव!, हे मार्गदर्शक!,*
*रथ का पालक, सुख (को करे), धन।*
*सुखकर धन के लिये, सुखकर कल्याण के लिये,*
*प्रेरक की स्तुति करने वाले, स्तुति करते हैं हम,*
*देव की स्तुति करने वाले, स्तुति करते हैं हम।। ५।।*

हे दान, दिव्यता आदि गुणो वाले!, हे सब का मार्गदर्शन करने वाले सर्वप्रेरक परमेश्वर! यह तेरा धन, अन्न, वस्त्र, गृह आदि जीवनयापन का साधन, इस शरीर अथवा जगत् रूपी रथ का पालन करने वाला है। यह हमारे लिये सदा सुख को उत्पन्न करने वाला बने। हम प्रेरणा प्रदान करने वाले परमेश्वर का स्तुतिगान करने वाले हैं। हम दान दिव्यता आदि गुणों वाले जगदीश्वर का स्तुतिगान करने वाले हैं। हम सदा उस प्रभु का ही गुणगान करते हैं।

टि. *रथ का पालक* - **रथस्पतिः**। स्वामी रथानाम् - वे.। सर्वस्य पालकः - सा.। रथस्य स्वामी - दया.। protecting chariot - W. that rule the car - G.

*सुख (को करे)* - **शम्**। सुखकृत् भवति - वे.। शम् करोत्विति शेषः - सा.। शं सुखरूपम् - दया.। (may come for our ) happiness - W. be blest to us - G.

*धन* - **रयिः**। दातव्यधनवान्। मत्वर्थो लुप्यते। सा.। धनम् - दया.। देने वाला - सात.। laden with riches - W. thy riches - G.

*प्रेरक की स्तुति करने वाले* - **इषःस्तुतः**। इषः स्तुवन्तः - वे.। एषणीयस्य सवितुः स्तोतारः - सा.। अन्नादेः स्तावकः - दया.। सब के प्रेरक देव की स्तुति करने वाले - सात.। praisers of the honoured (Savitṛ) - W. this will we ponder praising strength - G.

## सूक्त ५१

ऋषिः - स्वस्त्यात्रेयः। देवता - विश्वे देवाः। छन्दः - १-४ गायत्री, ५-१० उष्णिक्, ११-१३ जगती त्रिष्टुप् वा। १४-१५ अनुष्टुप्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**अग्ने॑ सु॒तस्य॑ पी॒तये॒ विश्वै॒र् ऊमे॑भि॒र् आ ग॑हि।**
**दे॒वेभि॑र् ह॒व्यदा॑तये।। १।।**

अग्ने॑। सु॒तस्य॑। पी॒तये॑। विश्वैः॑। ऊमे॑भिः। आ। ग॒हि॒।
दे॒वेभिः॑। ह॒व्यऽदा॑तये।। १।।

*हे अग्ने!, सवन किये हुए को पीने के लिये,*
*सब के साथ रक्षकों के, आ जा तू।*
*देवों के साथ, हवि को स्वीकार करने के लिये।। १।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! तू हमारे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त करने के लिये रक्षा, वृद्धि आदि करने वाली अपनी सब दिव्य शक्तियों के साथ आकर हमारे हृदयमन्दिर में वास कर।

टि. *सब के साथ रक्षकों के* - **विश्वैः ऊमेभिः**। विश्वैः पितृभिः - वे.। सर्वैर् अपि रक्षकैः - सा.। सर्वैः रक्षणादिकर्तृभिः सह - दया.। with all assistants - G.

*हवि को स्वीकार करने के लिये* - **हव्यदातये**। 'यजमानो वै हव्यदातिः' इति ब्राह्मणम् - वे.। हविर् दानाय तद्दात्रे यजमानाय वा - सा.। दातव्यदानाय - दया.। unto our sacred gifts - G.

**ऋत॑धीतय॒ आ ग॑त॒ सत्य॑धर्माणो अध्व॒रम्।**

**अ॒ग्नेः पि॑बत जि॒ह्वया॑।। २।।**

ऋत॑ऽधीतयः। आ। ग॒त॒। सत्य॑ऽधर्माणः। अ॒ध्व॒रम्। अ॒ग्नेः। पि॒ब॒त॒। जि॒ह्वया॑।। २।।

*हे सत्यनियम को धारण करने वालो!, आ जाओ,*

*हे सच्चे कर्तव्यों वालो!, हिंसारहित यज्ञ में (हमारे)।*

*अग्नि की, पान करो तुम, जिह्वा के द्वारा।। २।।*

हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम परमेश्वर के द्वारा विधान किये हुए सत्य नियमों को धारण करने वाली हो। तुम सत्य कर्तव्यों वाली हो। तुम हिंसा आदि से रहित यज्ञ आदि शुभ कर्मों में हमारे साथ रहो। तुम परमेश्वर की वाणी से निस्सृत ऋचाओं के श्रवण का आनन्द प्राप्त करो।

टि. हे *सत्यनियम को धारण करने वालो* - **ऋतधीतयः**। हे सत्यबुद्धयः - वे.। सत्यस्तुतयो ऽबाध्यकर्माणो वा देवाः - सा.। ऋतस्य सत्यस्य धीतिर् धारणं येषां ते - दया.।(gods who are) devoutly praised - W. whose ways are right - G.

*हे सच्चे कर्तव्यों वालो* - **सत्यधर्माणः**। सत्यकर्माणः - वे.। सत्यस्य धारयितारः - सा.। सत्यो धर्मो येषां ते - दया.।worshipped in truth - W. whose laws are true - G.

**विप्रे॑भिर् विप्र सन्त्य प्रात॒र्याव॑भि॒र् आ ग॑हि।**

**दे॒वेभि॒ः सोम॑पीतये।। ३।।**

विप्रे॑भिः। वि॒प्र॒। स॒न्त्य॒। प्रा॒त॒र्याव॑ऽभिः। आ। ग॒हि॒।

दे॒वेभि॑ः। सोम॑ऽपीतये।। ३।।

*मेधावियों के साथ, हे मेधावी!, हे सेवा के योग्य!,*

*प्रातःकाल में ही गमन करने वालों के साथ, आ जा तू।*

*देवों के साथ, सोमपान के लिये।। ३।।*

हे मेधा के स्वामी!, हे उपासकों के द्वारा परिचर्या के योग्य अग्रणी परमेश्वर! तू मेधाओं से युक्त और सृष्टि के आदि काल से ही अपने करणीय कार्यों में जुट जाने वाली अपनी दिव्य शक्तियों के साथ हमारे श्रेष्ठ कार्यों में हमारे साथ रह और हमारे भक्तिरस रूपी सोम का आनन्द ले।

टि. *हे मेधावी* - **विप्र**। मेधाविन् - वे.। विविधकामानां वा पूरक - सा.।sage - W.

*हे सेवा के योग्य* - **सन्त्य**। सम्भजनशील - वे.। संभजनीय - सा.।adorable - W.

*प्रातःकाल में ही गमन करने वालों के साथ* - **प्रातर्यावभिः**। प्रातःकाल आगन्तृभिः - सा.। ये प्रातर् यान्ति तैः - दया.।with early stirring - W. with those who move at dawn - G.

**अ॒यं सोम॑श् च॒मू सु॒तो ऽम॑त्रे॒ परि॑ षिच्यते।**

**प्रि॒य इन्द्रा॑य वा॒यवे॑।। ४।।**

अ॒यम्। सोम॑ः। च॒मू इति॑। सु॒तः। अम॑त्रे। परि॑। सि॒च्य॒ते॒।

प्रि॒यः। इन्द्रा॑य। वा॒यवे॑।। ४।।

*यह सोम अभिषवण फलकों पर सवन किया हुआ,*

*सोमपात्र में, सब ओर से भरा जाता है।*

*प्रीति-उत्पादक, इन्द्र के लिये, वायु के लिये।। ४।।*

यह भक्तिरस रूपी सोम तप और योगसाधना रूपी अभिषवण फलकों पर परिश्रमपूर्वक निष्पादित किया जाता है और इसे हृदय रूपी पात्र में सँजोकर रखा जाता है। यह दुष्ट आसुरी शक्तियों का संहार करने वाले और सब के अन्दर प्राणरूप में वर्तमान उस परमेश्वर को बहुत प्रिय है।

टि. *अभिषवण फलकों पर* - **चमू**। अधिषवणफलकयोः - वे.। चम्वोर् अत्र्योर् अधिषवण-फलकयोः - सा.। into the ladles - W. by the mortar pressed - G.

*सोमपात्र में* - **अमत्रे**। पात्रे - सा.। into the vase - W. is poured forth to fill the jar - G.

**वायव् आ याहि वीतये जुषाणो हव्यदातये।**
**पिबा सुतस्यान्धसो अभि प्रयः।। ५।। ५।।**

वायो इति। आ। याहि। वीतये। जुषाणः। हव्यऽदातये।
पिब। सुतस्य। अन्धसः। अभि। प्रयः।। ५।।

*हे वायो! आ जा भक्षण के लिये,*
*प्रसन्न होता हुआ हव्यदाता के लिये।*
*पानकर सवन किये सोम का, सर्वतः प्रीतिकर्ता का।। ५।।*

हे सब प्राणियों में प्राणरूप में वर्तमान परमेश्वर! तू नैवेद्य समर्पित करने वाले मुझ उपासक पर प्रसन्न होता हुआ मेरे समर्पणों को स्वीकार करने के लिये आ जा। तू मेरे द्वारा निष्पादित, प्रीति को उत्पन्न करने वाले मेरे भक्तिरस रूपी सोम का जी भरकर पान कर।

टि. *सर्वतः प्रीतिकर्ता का* - **अभि प्रयः**। अन्नं प्राप्तुम् - वे.। प्रयो ऽन्नं सोमाख्यम् अभि अभिलक्ष्य - सा.। प्रयः कमनीयं जलम् - दया.। to partake of the sacrificial food - W. come to the food - G.

**इन्द्रश् च वायव् एषां सुतानां पीतिम् अर्हथः।**
**ताञ् जुषेथाम् अरेपसाव् अभि प्रयः।। ६।।**

इन्द्रः। च। वायो इति। एषाम्। सुतानाम्। पीतिम्। अर्हथः।
तान्। जुषेथाम्। अरेपसौ। अभि। प्रयः।। ६।।

*(तू) और इन्द्र, हे वायो!, इनके,*
*सवन किये हुए सोमों के, पान की अर्हता रखते हो।*
*उनका सेवन करो तुम दोनों, निर्लेप, सर्वतः प्रीतिकर्ता का।। ६।।*

हे परमेश्वर की प्राणदाता शक्ति!, तू और परमेश्वर की दुष्ट आसुरी शक्तियों का संहार करने वाली शक्ति, तुम दोनों हमारे भक्तिरस रूपी सोम के पान की योग्यता रखते हो, क्योंकि तुम सब प्रकार के दोषों और पापों से निर्लेप हो। इसलिये तुम सर्वतः प्रसन्नता देने वाले सोमों का पान करो।

टि. *पान की अर्हता रखते हो* - **पीतिम् अर्हथः**। सोमरसों को पीने योग्य हो - सात.। you ought to drink - W. ye well deserve to drink - G.

निर्लेप - **अरेपसौ**। अपापौ - वे.। अहिंसकौ - सा.। दयालू - दया.। benevolent

(divinities) - W. spotless Pair - G.

**सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः।**
**निम्नं न यन्ति सिन्धवो ऽभि प्रयः।। ७।।**

सुताः। इन्द्राय। वायवे। सोमासः। दधिऽआशिरः।
निम्नम्। न। यन्ति। सिन्धवः। अभि। प्रयः।। ७।।

*सवन किये गए, इन्द्र के लिये, वायु के लिये,*
*सोमरस, दही से मिश्रित किये हुए (जठर में जाते हैं)।*
*नीचे को जिस प्रकार जाती हैं जलधाराएं, सर्वतः प्रीतिकर्ता।। ७।।*

दुष्ट आसुरी शक्तियों का संहार करने वाली शक्ति और प्राणियों को प्राण प्रदान करने वाली ईश्वरीय शक्ति के लिये उपासकों के द्वारा भक्तिरस रूपी सोम तैयार किया गया है। सर्वतः प्रसन्नता प्रदान करने वाले ये भक्तिरस के आनन्द की धाराएं इन ईश्वरीय शक्तियों को इस प्रकार प्राप्त होती हैं, जिस प्रकार बहती हुई जलधाराएं निम्न स्थान की ओर जाती हैं।

टि. *दही से मिश्रित किये हुए* - **दध्याशिरः।** दध्याश्रयणाः - सा.। ये धातुम् अशितुं योग्याः - दया.। mixed with curds - W. G.

**सजूर् विश्वेभिर् देवेभिर् अश्विभ्याम् उषसा सजूः।**
**आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण।। ८।।**

सऽजूः। विश्वेभिः। देवेभिः। अश्विऽभ्याम्। उषसा। सऽजूः।
आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण।। ८।।

*समान प्रीति वाला (होकर तू), सब देवों के साथ,*
*अश्वियों के साथ, उषा के साथ समान प्रीति वाला (होकर)।*
*आ जा हे अग्ने!, अत्रि की तरह सवन किये सोम में रमण कर तू।। ८।।*

हे सब को सन्मार्ग पर ले जाने वाले परमेश्वर! तू अपनी सब दिव्य शक्तियों के साथ, प्रकाशलोक और आधारलोक के साथ तथा ज्ञानरश्मियों के साथ समान प्रीति वाला होकर हमारे हृदयमन्दिर में आ और शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक पापों और दुःखों से रहित एक पुण्यात्मा मनुष्य की तरह हमारे द्वारा तैयार किये हुए भक्तिरस रूपी सोम का आनन्द प्राप्त कर।

टि. *समान प्रीति वाला (होकर तू)* - **सजूः।** सहितः - वे.। सङ्गतः सन् - सा.। संयुक्तः - दया.। accompanied by - W. associate with - G.

*अत्रि की तरह* - **अत्रिवत्।** अत्रिर् इव। अत्रेर् यज्ञे यथा तथेत्यर्थः। यद्वा। अत्रिर् यथा यज्ञे रमते तद्वत्। सा.। व्यापकवत् - दया.। like Atri - W. as erst with Atri - G.

*रमण कर तू* - **रण।** रमस्व - वे.। सा.। उपदिश - दया.। delight - W. enjoy - G.

**सजूर् मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना।**
**आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण।। ९।।**

सऽजूः। मित्रावरुणाभ्याम्। सऽजूः। सोमेन। विष्णुना।

आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण।। ९।।

*समान प्रीति वाला (होकर), मित्र और वरुण के साथ,*
*समान प्रीति वाला, सोम के साथ, विष्णु के साथ, (होकर)।*
*आ जा हे अग्ने!, अत्रि की तरह सवन किये सोम में रमण कर तू।। ९।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे ले जाने वाले जगदीश्वर! तू विनाश से त्राण करने वाली और अज्ञान तथा अन्धकार को दूर भगाने वाली अपनी शक्तियों के साथ, अपनी आनन्द के लिये प्रेरित करने वाली शक्ति एवं सर्वत्र व्याप्त होने वाली शक्ति के साथ समान प्रीति वाला होकर हमारे हृदयमन्दिर में आ और शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक पापों और दुःखों से रहित पुण्यात्मा मनुष्य की तरह हमारे द्वारा तैयार किये हुए भक्तिरसरूपी सोम का आनन्द प्राप्त कर।

**सजूर् आदित्यैर् वसुभिः सजूर् इन्द्रेण वायुना।**
**आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण।। १०।। ६।।**

सऽजूः। आदित्यैः। वसुऽभिः। सऽजूः। इन्द्रेण। वायुना।
आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण।। १०।।

*समान प्रीति वाला (होकर), आदित्यों के साथ, वसुओं के साथ,*
*समान प्रीति वाला, इन्द्र के साथ, वायु के साथ (होकर),*
*आ जा हे अग्ने!, अत्रि की तरह सवन किये हुए सोम में रमण कर तू।। १०।।*

हे सब का मार्गदर्शन करने वाले परमात्मन्! तू ऋतुओं का निर्माण करने वाली शक्तियों के साथ, प्रजाओं को सुखसाधन प्रदान करके उन्हें बसाने वाली शक्तियों के साथ, आसुरी शक्तियों की संहारक शक्ति के साथ और जीवों को प्राणशक्ति प्रदान करने वाली अपनी शक्ति के साथ समान प्रीति वाला होकर हमारे हृदयमन्दिर में आ और शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक पापों तथा दुःखों से रहित धर्मात्मा मनुष्य की तरह हमारे द्वारा तैयार किये हुए भक्तिरसरूपी सोम का आनन्द प्राप्त कर।

**स्वस्ति नो मिमीताम् अश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिर् अनर्वणः।**
**स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।। ११।।**

स्वस्ति। नः। मिमीताम्। अश्विना। भगः। स्वस्ति। देवी। अदितिः। अनर्वणः।
स्वस्ति। पूषा। असुरः। दधातु। नः। स्वस्ति। द्यावापृथिवी इति। सुऽचेतुना।। ११।।

*स्वस्ति हमारे लिये निर्मित करें, अश्वी दोनों (और) भग,*
*स्वस्ति (निर्मित करे) दीप्तिमती अदिति, गतिहीनों के लिये।*
*स्वस्ति पूषा परास्ता (हिंसकों का), प्रदान करे हमको,*
*स्वस्ति (प्रदान करें) द्युलोक और भूलोक, शोभन ज्ञान के साथ।। ११।।*

हमारे लिये दिन और रात कल्याण का निर्माण करें। सुखों को बाँटने वाला परमेश्वर हमारे लिये कल्याण का निर्माण करे। प्रकाशमाना अनन्ता अखण्डनीया देवमाता अदिति हम गतिहीनों और निर्बलों के लिये कल्याण का निर्माण करे। दुष्ट हिंसक शक्तियों को परास्त कर डालने वाला जगदीश हमें कल्याण प्रदान करे। द्युलोक और भूलोक अर्थात् उनके निवासी उत्तम ज्ञान के साथ हमारा कल्याण

करने वाले होवें।

टि. *स्वस्ति* – **स्वस्ति।** अविनाशम् – सा.। सुखम् – दया.। कल्याण – सात.। prosperity - W. health and wealth - G.

*निर्मित करें* – **मिमीताम्।** कुर्वन्ति – वे.। कुरुताम् – सा.। सृजेथाम् – दया.। करें – सात.। may contribute - W. may grant us - G.

*गतिहीनों के लिये* – **अनर्वणः।** चतुर्थीस्थाने द्वितीया।। अशत्रोः मम – वे.। अप्रत्यृतः (पूषा) – सा.। अनश्वस्य – दया.। the irresistible Viṣṇu (Pūṣā) - W. he whom none resist - G.

*परास्ता (हिंसकों का)* – **असुरः।** प्राज्ञः – वे.। शत्रूणां निरसिता – सा.। प्राणदाता – सात.। the scatterer (of foes) - W. the Asura (Pūṣā) - G.

*शोभन ज्ञान के साथ* – **सुचेतुना।** सुप्रज्ञानेन – वे.। शोभनेन प्रज्ञानेन विशिष्टे – सा.। सुष्ठ विज्ञापनेन – दया.। the conscious - W. most wise - G.

**स्वस्तये वायुम् उप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस् पतिः।**
**बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।। १२।।**

स्वस्तये। वायुम्। उप। ब्रवामहै। सोमम्। स्वस्ति। भुवनस्य। यः। पतिः।
बृहस्पतिम्। सर्वऽगणम्। स्वस्तये। स्वस्तये। आदित्यासः। भवन्तु। नः।। १२।।

*स्वस्ति के लिये वायु को, पास बुलाते हैं हम,*
*सोम को स्वस्ति के लिये, जगत् का (है) जो पालक।*
*बृहस्पति को, सब शक्तिसमूह वाले को, स्वस्ति के लिये,*
*कल्याण के लिये, आदित्य होवें हमारे (सदा ही)।। १२।।*

हम कल्याण के लिये प्राणदाता परमेश्वर का आह्वान करते हैं। हम कल्याण के लिये आनन्दस्वरूप उस जगदीश का स्तुतिगान करते हैं, जो इस समस्त जगत् का पालक है। हम कल्याण के लिये अपने दिव्यशक्तिसमूह के साथ महान् ऋचाओं के स्वामी परमात्मा की स्तुति करते हैं। सब सूर्य अपनी रश्मियों के साथ हमारा कल्याण करने वाले हों।

टि. *पास बुलाते हैं हम* – **उप ब्रवामहै।** स्तुमः – सा.। we glorify - W. let us solicit - G.

*सब शक्तिसमूह वाले को* – **सर्वगणम्।** देवगणोपेतम् – सा.। सर्वे गणाः समूहाः यस्मिन् – दया.। (attended by) all the companies - W. G.

**विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुर् अग्निः स्वस्तये।**
**देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।। १३।।**

विश्वे। देवाः। नः। अद्य। स्वस्तये। वैश्वानरः। वसुः। अग्निः। स्वस्तये।
देवाः। अवन्तु। ऋभवः। स्वस्तये। स्वस्ति। नः। रुद्रः। पातु। अंहसः।। १३।।

*सब देव (हों) हमारे आज कल्याण के लिये,*
*सब नरों का स्वामी, बसाने वाला अग्नि, कल्याण के लिये।*
*द्युतिमान् बढ़ाएं हमें ऋभु, कल्याण के लिये,*

*कल्याण के लिये हमारे, रुद्र पालन करे पाप से।। १३।।*

परमेश्वर की सब दिव्य शक्तियां आज हमारे कल्याण के लिये हमारी वृद्धि करें। सब मनुष्यों का स्वामी, सब को बसाने वाला और सब में बसने वाला, सब का मार्गदर्शक जगदीश्वर सदा हमारा कल्याण करने वाला हो। ज्ञान के प्रकाश से दीप्त ज्ञानी जन हमारे कल्याण के लिये हमें आगे ही आगे बढ़ाते चलें। दुष्टों को रुलाने वाला परमेश्वर हमारे कल्याण के लिये हमें पाप से बचाए।

टि. *सब नरों का स्वामी* - **वैश्वानरः**। विश्व एनं नरा नयन्तीति वैश्वानरः - सा.। विश्वेषु नरेषु राजमानः - दया.। the benefactor of all men - W. God of all men - G.

*बसाने वाला* - **वसुः**। सर्वस्य वासयिता - सा.। यः सर्वत्र वसति - दया.। सब को बसाने वाला - सात.। giver of dwellings - W.

रुद्र - **रुद्रः**। दुःखाद् द्रावयिता - सा.। दुष्टदण्डकः - दया.। Rudra - W. G.

*कल्याण के लिये* - **स्वस्ति**। स्वस्तीति चतुर्थ्यन्तम् - वे.। सुखकरं वर्तमानम् - दया.। for our prosperity - W. may bless us - G.

**स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।**
**स्वस्ति न इन्द्रश् चाग्निश् च स्वस्ति नो अदिते कृधि।। १४।।**

स्वस्ति। मित्रावरुणा। स्वस्ति। पथ्ये। रेवति।
स्वस्ति। नः। इन्द्रः। च। अग्निः। च। स्वस्ति। नः। अदिते। कृधि।। १४।।

*कल्याण (करो हमारा), हे मित्र और वरुण!,*
*कल्याण (कर तू), हे पथहितैषिणी!, हे धनवती।*
*कल्याण (करे) हमारा, इन्द्र और अग्नि,*
*कल्याण हमारा, हे अदिते!, कर तू।। १४।।*

परमेश्वर की विनाश से त्राण करने वाली और अज्ञान तथा अन्धकार को दूर भगाने वाली शक्तियां हमारा कल्याण करें। हे जीवनयात्रा में हित करने वाली और उत्तम ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली परमात्मा की शक्तियो! तुम हमारा कल्याण करो। दुष्ट आसुरी शक्तियों का संहार करने वाली और सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाली प्रभु की शक्तियां हमारा कल्याण करें। हे निस्सीम अखण्डनीया प्रकृति देवी! तू हमारा सब प्रकार से कल्याण कर।

टि. हे *पथहितैषिणी, हे धनवती* - **पथ्ये रेवति**। पन्था अन्तरिक्षमार्गः। तत्र हिता मार्गाभिमानिनी देवी। हे तादृशि रेवति धनवति देवि। सा.। Path (of the firmament), and goddess of riches - W. O wealthy Pathyā - G.

**स्वस्ति पन्थाम् अनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।**
**पुनर् ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।। १५।। ७।।**

स्वस्ति । पन्थाम्। अनु। चरेम। सूर्याचन्द्रमसौऽइव।
पुनः। ददता। अघ्नता। जानता। सम्। गमेमहि।। १५।।

*कल्याणकारक मार्ग का, अनुसरण करें हम,*

*(आकाश में) सूर्य और चन्दमा की तरह।*
*फिर से (जन्म) देने वाले के साथ, हिंसा न करने वाले के साथ,*
*सब-कुछ जानने वाले के साथ, संगम करें हम।। १५।।*

जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा जगत् को प्रकाश, ताप, सुख और शान्ति प्रदान करते हुए और सब का भला करते हुए आकाश में विचरण कर रहे हैं, उसी प्रकार हम मनुष्य भी दूसरों का हित साधते हुए अपने जीवन में कल्याणकर मार्ग का अनुसरण करें। हम कर्मों के अनुसार पुनः जन्म देने वाले, हिंसा न करके सदा रक्षा ही करने वाले और सब-कुछ जानने वाले उस परमेश्वर से मेल करें।

टि. *कल्याणकारक मार्ग का* - **स्वस्ति पन्थाम्।** अविनाशेन पन्थानम् - वे.। पन्थानं क्षेमेण - सा.। सुखं पन्थानम् - दया.। may we follow prosperously our path - W. G.

*फिर से (जन्म) देने वाले के साथ* - **पुनः ददता।** पुनःपुनः प्रयच्छता उदारेण - वे.। पुनर् ददताभिमतम् - सा.। पुनः दानकर्त्रा - दया.। requiting - W. with one who gives again - G.

*हिंसा न करने वाले के साथ* - **अघ्नता।** अहिंसित्रा - वे.। चिरकालविलम्बकोपेन अहिंसता - सा.। अहिंसकेन - दया.। grateful - W. with one who slays us not - G.

*सब-कुछ जानने वाले के साथ* - **जानता।** मदीयो ऽयम् इति जानता - वे.। जानता अविस्मरता - सा.। विदुषा - दया.। recognisant (kinsman) - W. with one who knows us well - G.

## सूक्त ५२

ऋषिः - श्यावाश्व आत्रेयः। देवता - मरुतः। छन्दः - १-५,७-१५ अनुष्टुप्, ६,१६,१७ पङ्क्तिः। सप्ददशर्चं सूक्तम्।

**प्र श्या॑वाश्व धृष्णुयार्चा॑ मरुद्भि॑र् ऋक्व॑भिः।**
**ये अ॑द्रोघम् अ॑नुष्वधं श्रवो॑ मद॑न्ति यज्ञियाः॑।। १।।**

प्र। श्याव॒ऽअश्व। धृष्णु॒ऽया। अर्च॑। मरुत्ऽभिः॑। ऋक्व॑ऽभिः।
ये। अद्रोघम्। अनुऽस्वधम्। श्रव॑ः। मद॑न्ति। यज्ञियाः॑।। १।।

*प्रकर्ष से, हे संयत इन्द्रियों वाले!, दृढ़ता के साथ,*
*स्तुतिगान कर तू, मरुतों के साथ, पूजनीयों के।*
*जो बिना द्वेष के, इच्छा के अनुसार,*
*कीर्ति के साथ हर्षित होते हैं, पूजा के योग्य।। १।।*

हे अपनी इन्द्रियों को वश में करने वाले उपासक! तू दृढ़ता और उत्साह के साथ पूज्य, बलवान् और सहायक उन मनुष्यों के साथ, जो पूजा और सत्कार के योग्य हैं, जो किसी से द्वेष नही करते और कीर्तिमान् होकर स्वेच्छा से आनन्द को प्राप्त करते हैं, प्रभु की अर्चना कर।

टि. *हे संयत इन्द्रियों वाले* - **श्यावाश्व।** श्यामवर्णाः परिपक्वावस्थाः संयता अश्वा इन्द्रियाणि यस्यासौ, तत्सम्बुद्धौ।। एतन्नामक ऋषे - सा.। कृष्णशिखाग्नयो ऽश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ - दया.।

*दृढ़ता के साथ* - **धृष्णुया।** धर्षणशीलेभ्यः (मरुद्भ्यः) - वे.। धृष्णुस् त्वम् - सा.। दृढत्वेन - दया.। with perseverance - W. boldly - G.

*पूजनीयों के साथ* - **ऋक्वभिः**। रसाहरणशीलेभ्यः - वे.। स्तुत्यान्। द्वितीयार्थे तृतीया। यद्वा। स्तोतृभिः सह स्तोत्रैर् वा। सा.। सत्कर्तृभिः - दया.। to praise-deserving - W. with (Mauts) who are loud in song - G.

*इच्छा के अनुसार* - **अनुष्वधम्**। हविषो ऽनन्तरम् - वे.। प्रत्यहम्। हविर्लक्षणान्नप्रदानं स्वधा। अनु पश्चाद् वा। सा.। स्वधाम् अन्नम् अनुवर्तमानम् - दया.। daily offered sacrificial food - W. as their wont is - G.

**ते हि स्थिरस्य शवसः सखायः सन्ति धृष्णुया।**
**ते यामन्ना धृषद्विनस् त्मना पान्ति शश्वतः।। २।।**

ते। हि। स्थिरस्य। शवसः। सखायः। सन्ति। धृष्णुऽया।
ते। यामन्। आ। धृषत्ऽविनः। त्मना। पान्ति। शश्वतः।। २।।

*वे निश्चय से, स्थायी बल के,*
*मित्र हैं, स्थिरता के साथ।*
*वे मार्ग में सर्वतः, धर्षक बलों वाले,*
*स्वयं ही रक्षा करते है, बहुतों की।। २।।*

ईश्वरीय कार्यों में सदा सहायक होने वाली वे दिव्य शक्तियां स्थिर बल की अर्थात् स्थिर बल वालों की बड़ी दृढ़ता के साथ मित्र बन जाती हैं। दृढ़ बल वाली वे शक्तियां जीवनयात्रा में सब साधु जनों की स्वयं ही सब ओर से रक्षा करती हैं।

टि. *धर्षक बलों वाले* - **धृषद्विनः**। धर्षणशीलबलयुक्ताः - वे.। धर्षणवन्तः - सा.। बहुदृढत्वादिगुणयुक्ताः - दया.। resolute - W. bold-spirited - G.

*बहुतों की* - **शश्वतः**। बहून् - वे.। बहून् अस्मान् पुत्रभृत्यादीन् - सा.। निरन्तराः - दया.। numerous (descendants) - W. all men - G.

**ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ऽति ष्कन्दन्ति शर्वरीः।**
**मरुताम् अधा महो दिवि क्षमा च मन्महे।। ३।।**

ते। स्पन्द्रासः। न। उक्षणः। अति। स्कन्दन्ति। शर्वरीः।
मरुताम्। अध। महः। दिवि। क्षमा। च। मन्महे।। ३।।

*वे स्पन्दन करने वाले बैलों की तरह,*
*आगे बढ़ जाते हैं, अतिक्रमण करके रात्रियों का।*
*मरुतों की इसलिये महिमा का,*
*द्युलोक में और भूलोक में सम्मान करते हैं हम।। ३।।*

जिस प्रकार बलवान् बैल कूदते हुए आगे बढ़ते हैं, उसी प्रकार ईश्वर की ये सहायक शक्तियां रात्रियों का अर्थात् अन्धकार और अज्ञान का अतिक्रमण करके आगे बढ़ जाती हैं। चूँकि वे प्रकाश और ज्ञान से प्यार करने वाली हैं, इसलिये हम उपासक जन धरती और आकाश में वर्तमान उनकी महिमाओं का आदर-सत्कार करते हैं, उनका स्तुतिगान करते हैं।

टि. *स्पन्दन करने वाले बैलों की तरह* – **स्पन्द्रासः न उक्षणः**। स्यन्द्रास इत्यपि पाठः।। स्यन्दनशीलाः इव वृषभाः – वे.। स्यन्दनशीला जलस्य सेक्तारश् च। नेति चार्थे। सा.। स्यन्द्रासः किञ्चिच् चेष्टमानाः इव सेचकान् – दया.। gliding along and sheddng moisture - W. like steers in rapid motion - G.

*आगे बढ़ जाते हैं अतिक्रमण करके रात्रियों का* – **अति स्कन्दन्ति शर्वरीः**। अस्वपन्तो रात्रीः अति गच्छन्ति – वे.। शर्वर्यो रात्रयः। कालावयवान् इत्यर्थः। तान् अतिक्रम्य गच्छन्ति। सा.। they pass through the nights - W. they advance and overtake the nights - G.

*भूलोक में* – **क्षमा**। विभक्तिलोपः। क्षमायाम्।। भूम्याम् – वे.। सा.।

**मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया।**
**विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः।। ४।।**

मरुत्ऽसु। वः। दधीमहि। स्तोमम्। यज्ञम्। च। धृष्णुऽया।
विश्वे। ये। मानुषा। युगा। पान्ति। मर्त्यम्। रिषः।। ४।।

*(तुम) मरुतों में तुम्हारे लिये, प्रदान करते हैं हम,*
*स्तोत्र को, पूजा को भी, बलवत्ता के साथ (हे मरुतो!)।*
*सब के सब जो, मनुष्यसम्बन्धी युगों तक,*
*रक्षा करते हो मरणधर्मा की, हिंसा से।। ४।।*

हे सदा ईश्वरीय कार्यों में सहायता करने वाली शत्रुधर्षक शक्तियो! हम उपासक जन बड़े उत्साह और दृढ़ता के साथ तुम्हारा स्तुतिगान करते हैं और तुम्हें पूजा समर्पित करते हैं, क्योंकि तुम सब सदा, सभी कालों में, मरणधर्मा मनुष्यों को विपत्तियों और दुःखों से बचाती हो।

टि. *बलवत्ता के साथ* – **धृष्णुया**। धर्षकेषु – वे.। सा.। दृढानि – दया.। with boldness - G.

*प्रदान करते हैं हम* – **दधीमहि**। दधीमहि – वे.। व्यत्ययेनोत्तमः। धत्त। सा.। let us offer - G.

*मनुष्यसम्बन्धी युगों तक* – **मानुषा युगा**। मानुषाणि युगानि – वे.। मानुषाणि युगानि। सर्वेषु कालेष्वित्यर्थः। सा.। मनुष्याणां वर्षाणि – दया.। through all human ages - W. G.

*हिंसा से* – **रिषः**। हिंसकात् – वे.। सा.। दया.। from harm - W. from injury - G.

**अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः।**
**प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः।। ५।। ८।।**

अर्हन्तः। ये। सुऽदानवः। नरः। असामिऽशवसः।
प्र। यज्ञम्। यज्ञियेभ्यः। दिवः। अर्च। मरुत्ऽभ्यः।। ५।।

*पूज्य (हैं) जो, शोभन दानों वाले,*
*मार्गदर्शक, सम्पूर्ण बलों वाले।*
*खूब पूजा को, पूजनीयों के लिये,*
*द्युलोक से आगतों के लिये, समर्पित कर, मरुतों के लिये।। ५।।*

हे मेरे अन्तरात्मन्! प्रभु के कार्यों में सहायक होने वाली जो शक्तियां हैं, जो भटके हुओं को

मार्ग दिखाने वाली हैं, जो बलों से परिपूर्ण हैं, जो उत्तम पदार्थों को देने वाली हैं, और जो सब के द्वारा पूजा के योग्य हैं, स्वर्लोक से आने वाली, पूजा के योग्य इन शक्तियों के लिये तू हृदय से अपनी पूजा समर्पित कर।

टि. *पूज्य* - **अर्हन्तः**। पूजार्हाः - वे.। सा.। योग्यतां प्राप्नुवन्तः - दया.। adorable - W. G.

*सम्पूर्ण बलों वाले* - **असामिशवसः**। परिपूर्णबलाः - वे.। अनल्पबलाः - सा.। अखण्डितबलाः - दया.। possessors of unequalled strength - W. with full and perfect strength - G.

*द्युलोक से (आगतों के लिये)* - **दिवः**। दिवः आगतेभ्यः - वे.। द्योतमानेभ्यः। विभक्ति-वचनयोर् व्यत्ययः। यद्वा कर्मणि षष्ठी। अथवा दिवो ऽन्तरिक्षाद् आगतेभ्य इति सम्बन्धः। सा.। who (have come) from heaven - W. Holy Ones of heaven - G.

**आ रुक्मैर् आ युधा नरं ऋष्वा ऋष्टीर् असृक्षत।**
**अन्वेनाँ अहं विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुर् अर्त त्मना दिवः।। ६।।**

आ। रुक्मैः। आ। युधा। नरः। ऋष्वाः। ऋष्टीः। असृक्षत।
अनु। एनान्। अहं। विऽद्युतः। मरुतः। जज्झतीःऽइव। भानुः। अर्त। त्मना। दिवः।। ६।।

*सर्वतः आरोचमान आभरणों से युक्त, सर्वतः आयुधों से, नेता गण,*
*दर्शनीय, बरछियों को (अपनी), आगे निकालते हैं (मेघों की ओर)।*
*पीछे इनके निश्चय से, (आती हैं) बिजलियां मरुतों के,*
*रम्भती गौओं के पीछे (वृषभ) की तरह, प्रकाश आता है स्वयं द्युलोक से।। ६।।*

इस मन्त्र में ईश्वरीय शक्तियों के द्वारा वृष्टिकर्म का आलङ्कारिक वर्णन है। वर्षाकर्म का नेतृत्व करने वाली ये रूपवती और महान् शक्तियां आभूषणों और आयुधों को धारण करने वाले वीर योद्धाओं की तरह अन्तरिक्षलोक में स्थित हो जाती हैं और जलों को नीचे गिराने के लिये मानो मेघों पर अपनी बरछियों से प्रहार करती हैं। उसी समय इनके पीछे आकाश में बिजलियां चमकने लगती हैं। तब ऐसा प्रतीत होता है मानो रम्भती हुई गौओं के पीछे वृषभ की तरह प्रकाशलोक से प्रकाश स्वयं इनका पीछा कर रहा है।

टि. *आरोचमान आभरणों से युक्त* - **रुक्मैः**। वक्षोऽलङ्करणैः - वे.। रोचमानैर् आभरणविशेषैर् आरोचन्त इति शेषः। उपसर्गश्रुतेः संगतक्रियाध्याहारः। सा.।

*आयुधों से* - **युधा**। योधनसाधनेन आयुधेन - वे.। सा.।

*दर्शनीय* - **ऋष्वाः**। दर्शनीयाः - वे.। महान्तः - सा.। दया.। lofty - G.

*रम्भती (गौओं के पीछे वृषभ) की तरह* - **जज्झतीर् इव**। यथा जज्झशब्दं कुर्वाणा धेनूः ऋषभः - वे.। शब्दकारिण्य आप इव। जज्झतीर् आपो भवन्ति शब्दकारिण्यः (नि. ६.१६)। सा.। शब्दकारिण्यः शीघ्रगतयो वा ता इव - दया.। like laughing lightning - G.

*प्रकाश आता है* - **भानुः अर्त**। इन्द्रो भानुर् अग्निर् वेति, आगच्छति। वे.। भानुर् दीप्तिर् निरगात् - सा.। दीप्तिः प्राप्नुत - दया.।

**ये वावृधन्त पार्थिवा य उराव् अन्तरिक्ष आ।**

**वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो दिवः।। ७।।**

ये। ववृधन्त। पार्थिवाः। ये। उरौ। अन्तरिक्षे। आ।
वृजने। वा। नदीनाम्। सधऽस्थे। वा। महः। दिवः।। ७।।

*जो बढ़ते हैं पृथिवी से सम्बन्ध रखते हुए,*
*जो विस्तृत अन्तरिक्ष में (बढ़ते हैं) सब ओर।*
*स्थानों में भी नदियों के (बढ़ते हैं निरन्तर),*
*सहस्थान में भी, महान् के द्युलोक के।। ७।।*

परमेश्वर की ये वृष्टिकर्म आदि में सहायक दिव्य शक्तियां पृथिवीलोक से सम्बन्ध रखती हुई भी बढ़ती रहती हैं। ये विस्तृत अन्तरिक्षलोक में भी सब ओर बढ़ती रहती हैं। ये नदियों और बहते जलों के स्थानों में भी बढ़ती रहती हैं। और ये महान् द्युलोक के सहस्थान में भी वृद्धि को प्राप्त होती रहती हैं। हे मनुष्यो! तुम इनकी प्रशंसा और स्तुतिगान करो।

टि. *पृथिवी से सम्बन्ध रखते हुए* - **पार्थिवाः**। पृथिव्यां वर्तमानाः - वे.। पृथिवीसम्बद्धाः सन्तः - सा.। पृथिव्यां विदिताः - दया.। who are of the earth - W. G.

*स्थानों में भी नदियों के* - **वृजने वा नदीनाम्**। नदीनां वा वेगे - वे.। नदीनां नदनवतीनां वृजने वा बले। वाशब्दश् चार्थे। सा.। in he force of the rivers - W. in the rivers' compass - G.

**शर्धो मारुतम् उच् छंस सत्यशवसम् ऋभ्वसम्।**
**उत स्म ते शुभे नरः प्र स्पन्द्रा युजत त्मना।। ८।।**

शर्धः। मारुतम्। उत्। शंस। सत्यऽशवसम्। ऋभ्वसम्।
उत। स्म। ते। शुभे। नरः। प्र। स्पन्द्राः। युजत। त्मना।। ८।।

*संघ की मरुतों के, उत्कर्ष से स्तुति कर तू,*
*सच्चे वेग वाले की, अतिशय बल वाले की।*
*और निश्चय से वे, शुभ के लिये नेता गण,*
*प्रकर्ष से स्पन्दनशील, जुत जाते हैं स्वयम्।। ८।।*

ईश्वरीय कार्यों में सहायक होने वाला इन दिव्य शक्तियों का समूह सच्चे वेग वाला और अतिशय बल वाला है। हे मेरे अन्तरात्मन्! तू उत्कर्ष के साथ इसकी प्रशंसा और स्तुतिगान कर। नेतृत्व करने वाली और गतिशील ये शक्तियां स्वयं ही परहित के कार्यों में जुट जाती हैं।

टि. *सच्चे वेग वाले की* - **सत्यशवसम्**। सत्यबलम् - वे.। दया.। सत्यवेगम् - सा.। truth-invigorated - W. truly strong - G.

*अतिशय बल वाले की* - **ऋभ्वसम्**। महत् - वे.। महद् अतिप्रवृद्धम् - सा.। ऋभुं मेधाविनम् असते गृह्णाति तम् - दया.। infinite strength - W. valorous - G.

*शुभ के लिये* - **शुभे**। शोभार्थम् - वे.। उदकार्थम् - सा.। लोककल्याण के लिये किये जाने वाले सत्कार्य में - सात.। for (our) good - W.for victory - G.

*प्रकर्ष से जुत जाते हैं* - **प्र युजत**। प्रायुञ्जत - वे.। समयोजयन् - सा.। are labouring

voluntarily - W. have yoked their deer - G.

**उत स्म ते परुष्ण्याम् ऊर्णा वसत शुन्ध्यवः।**
**उत पव्या रथानाम् अद्रिं भिन्दन्त्योजसा।। ९।।**

उत। स्म। ते। परुष्ण्याम्। ऊर्णाः। वसत। शुन्ध्यवः।
उत। पव्या। रथानाम्। अद्रिम्। भिन्दन्ति। ओजसा।। ९।।

*और निश्चय से वे पोरों वाली (जीवनयात्रा) में,*
*ऊर्णानिर्मित वस्त्रों को ओढ़ाते हैं, पवित्र करने वाले।*
*और चक्रधारा से रथों की,*
*मेघ का भेदन करते हैं, बल से (अपने)।। ९।।*

क्योंकि परमेश्वर की ये सहायक शक्तियां सब का हित साधने वाली हैं, इसलिये अनेक अवस्थाओं वाली हमारी इस जीवनयात्रा में हमें ये पवित्रकारक पवित्र प्रकाश रूपी ऊर्णावस्त्रों से आच्छादित करती हैं। और ये दिव्य शक्तियां अपने रथों की तीक्ष्ण चक्रधाराओं और बल से मेघ का अर्थात् जलों को रोक लेने वाली आसुरी शक्ति का भेदन करके उन्हें सब के लिये बहा देते हैं।

टि. *पोरों वाली (जीवनयात्रा) में* - **परुष्ण्याम्।** परुष्ण्यां नद्याम् - वे.। सा.। पालनकर्त्र्याम् - दया.। on the Paruṣṇī river - W. G.

*ऊर्णानिर्मित वस्त्रों को* - **ऊर्णाः।** विकारे प्रकृतिशब्दः।। प्रच्छन्नाः - वे.। दीप्तीः - सा.। रक्षिताः - दया.। with light - W. in robes of wool (the fleecy vapours) - G.

*ओढ़ाते हैं* - **वसत।** अवसन् मद्गवो भूत्वा - वे.। आच्छादयन्ति - सा.। they clothe themselves - W. they have clothed themselves - G.

*पवित्रकारकों को* - **शुन्ध्यवः।** शोधिकाः - सा.। purifying all - W. fair-gleaming - G.

**आपथयो विपथयो ऽन्तस्पथा अनुपथाः।**
**एतेभिर् मह्यं नामभिर् यज्ञं विष्टार ओहते।। १०।। ९।।**

आऽपथयः। विऽपथयः। अन्तःऽपथाः। अनुऽपथाः।
एतेभिः। मह्यम्। नामऽभिः। यज्ञम्। विऽस्तारः। ओहते।। १०।।

*इस ओर मार्गों वाले, विपरीत दिशा में मार्गों वाले,*
*अन्दर की ओर गुप्त मार्गों वाले, अनुकूल मार्गों वाले।*
*इनके साथ, मेरे लिये, नामों के (साथ),*
*यज्ञ को, विस्तार (मरुतों का), वहन करता है।। १०।।*

परमेश्वर की ये सहायक दिव्य शक्तियां सब दिशाओं में जाने वाली और निवास करने वाली हैं। इसलिये ये इस ओर मार्गों वाली, विपरीत दिशा में मार्गों वाली, अन्दर की ओर गुप्त मार्गों वाली और अनुकूल मार्गों वाली इन 'आपथि' आदि अनेक नामों से पुकारी जाती हैं। इनका संघ सब ओर, सब स्थानों पर जाकर उपासक के यज्ञ आदि शुभ कार्यों की रक्षा करता है।

टि. *इस ओर मार्गों वाले* -**आपथयः।** अभिमुखगमनात् आपथयः - वे.। अस्मदभिमुखा मार्गा येषां

ते – सा.। दया.। those impulses which lead a person to a better spiritual life - Satya.

*विपरीत दिशा में मार्गों वाले* – **विथयः**। विष्वङ्मार्गाः – सा.। विविधा विरुद्धा वा पन्थानो येषां ते – दया.। impulses which lead to a lower trend of life - Satya.

*अन्दर की ओर गुप्त मार्गों वाले* – **अन्तस्पथाः**। दरीसुषिरादिमार्गाः – सा.। आभ्यन्तरे पन्था येषां ते – दया.। those paths that sink into the hollows (of the mountain) - W.impulses leading to the disclosure of inner mysteries of consciousness - Satya.

*अनुकूल मार्गों वाले* – **अनुपथाः**। अनुकूलमार्गाः – सा.। दया.। only treading on the paths shown by others - Satya.

**अधा नरो न्योहते ऽधा नियुत ओहते।**
**अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दर्श्या।। ११।।**

अध। नरः। नि। ओहते। अध। निऽयुतः। ओहते।
अध। पारावताः। इति। चित्रा। रूपाणि। दर्श्या।। ११।।

*और मार्गदर्शक नितरां वहन करते हैं,*
*और नितरां मिले हुए वहन करते हैं (कभी)।*
*और (कभी), दूर देशों में वर्तमान, अतः,*
*विचित्र रूप देखने के योग्य हैं (इनके)।।*

मार्गदर्शन करने वाली ये ईश्वरीय दिव्य शक्तियां परहित के कार्यों को भली प्रकार सम्पन्न करती हैं। और कभी ये शक्तियां परस्पर मिलकर शुभ कर्मों को सम्पन्न करती हैं। और जब कभी ये शक्तियां दूर स्थानों में स्थित होती हैं, तो इनके विचित्र रूप देखने के योग्य होते हैं।

टि. *नितरां वहन करते हैं* – **नि ओहते**। वहन्ति – वे.। नितरां वहन्ति – सा.। निश्चयेन प्राप्नोति प्रापयति वा – दया.। they support - W. well attend - G.

*नितरां मिले हुए* – **नियुतः**। स्वयम् एव मिश्रयितारः – सा.। blending together - W.

दूर *देशों में वर्तमान* – **पारावतः**। परावद् दूरदेशः। तत्सम्बन्धिनश् चान्तरिक्षादिदूरदेशे ग्रहतारा-मेघादिधारकाः – सा.। परावति दूरदेशे भवाः – दया.। situated remote - W. Pārāvatas - G.

*देखने के योग्य* – **दर्श्या**। दर्शनीयानि – वे.। सा.। visible - G.

**छन्दःस्तुभः कुभन्यव उत्सम् आ कीरिणो नृतुः।**
**ते मे के चिन् न तायव ऊमा आसन् दृशि त्विषे।। १२।।**

छन्दःऽस्तुभः। कुभन्यवः। उत्सम्। आ। कीरिणः। नृतुः।
ते। मे। के। चित्। न। तायवः। ऊमाः। आसन्। दृशि। त्विषे।। १२।।

*छन्दों से स्तुतियां करने वाले, जलों को चाहने वाले,*
*जलस्रोत के सब ओर, स्तुति करने वाले नृत्य करते हैं।*
*वे मेरे लिये, कुछ की तरह चोरों की (अदृश्य),*
*रक्षा करने वाले होते हैं, चक्षु में दीप्ति के लिये।। १२।।*

स्तुतियां करने वाली ये ईश्वरीय सहायक शक्तियां मन्त्रों से परमेश्वर की स्तुतियां करती हैं और प्यासी प्रजाओं के लिये जलों जलों को बरसाने की इच्छा वाली होकर जलों के स्रोत मेघों के चारों ओर नृत्य सा करती रहती हैं। वे चोरों की तरह उपासक से कुछ ओझल सी ही रहती हैं, परन्तु हैं उपासक की रक्षा और सहायता करने वाली। ये उपासक के नेत्रों में प्रकाश और तेज प्रदान करने वाली हैं।

टि. *छन्दों से स्तुतियां करने वाले* - **छन्दःस्तुभः।** छन्दःस्तुतः - वे.। छन्दोभिः स्तोतारः। यद्वा। छन्दोभिः स्तुत्याः। स्तोभतिः स्तुतिकर्मा। सा.। ये छन्दोभिः स्तोभनं स्तवनं कुर्वन्ति - दया.। the reciters of sacred metres - W. Hymn-singing - G.

*जलों को चाहने वाले* - **कुभन्यवः।** उदकम् इच्छतः - वे.। उदकेच्छवः। यद्वा। सेक्तारो वृष्ट्युदकस्य। कुभिर् उन्दनकर्मा। सा.। आत्मनः कुभनम् उन्दनम् इच्छवः - दया.। desirous of water - W. seeking water - G.

*स्तुति करने वाले* - **कीरिणः।** करणशीलाः - वे.। स्तोतारः। यद्वा। स्तोतुर् गोतमस्य। सा.। विक्षेपकाः - दया.। celebrating - W. praising - G.

*सब ओर नृत्य करते हैं* - **आ नृतुः।** आ निन्युः - वे.। आनीतवन्तः। नृ नय इत्यस्य वा नर्ततेर् वा विक्षेपमात्रार्थस्येदं रूपम्। सा.। नर्तक इव - दया.। have drawn - W. have danced - G.

*वे मेरे लिये कुछ की तरह चोरों की (अदृश्य)* - **ते मे के चित् न तायवः।** ते मे के चन तस्करा इव - वे.। ते मरुतः केचिन् मह्यं कदाचिद् अप्यदृश्यास् तस्करा इव स्थिताः - सा.। some of them (invisible) as thieves - W.What are they unto me? No thieves, - G.

*चक्षु में दीप्ति के लिये* - **दृशि त्विषे।** चक्षुषि दीप्तये - वे.। दृशि दर्शन आसन्। विषयभूता अभवन्। केचित् त्विषे शरीरदीप्त्यै बलाय वासन्। सा.। दर्शके शरीरात्मदीप्तिबलाय - दया.। to view through the light (of life) - W. splended to behold - G.

**य ऋ॒ष्वा ऋ॒ष्टिवि॑द्युतः क॒वय॒ः सन्ति॑ वे॒धस॑ः।**
**तम् ऋ॑षे॒ मारु॑तं ग॒णं न॑म॒स्या र॒मया॑ गि॒रा।। १३।।**

ये। ऋ॒ष्वाः। ऋ॒ष्टिऽवि॑द्युतः। क॒वय॑ः। सन्ति॑। वे॒धस॑ः।
तम्। ऋ॒षे॒। मारु॑तम्। ग॒णम्। न॒म॒स्य। र॒मय॑। गि॒रा।। १३।।

*जो दर्शनीय, आयुधों से दीप्तिमान्,*
*क्रान्तदर्शी हैं विधान करने वाले।*
*उसको, हे ऋषे!, मरुतों के गण को,*
*नमन कर तू, रमण करा स्तुति से।। १३।।*

हे वेदार्थद्रष्टा विद्वान्! परमेश्वर की ये सहायक दिव्य शक्तियां दर्शनीय हैं, अपने कर्म करने के साधनों से शोभायमान हैं, दूरदृष्टियों से युक्त हैं और विविध प्रकार के कर्मों का विधान करने वाली हैं। तू इस शक्तिसमूह को नमस्कार कर और अपनी स्तुतियों से इसे आनन्दित कर।

टि. *आयुधों से दीप्तिमान्* - **ऋष्टिविद्युतः।** हिरण्मयैर् अलङ्कृताः - वे.। आयुधैर् विद्योतमानाः - सा.। bright with lightning lances - W. with lightning for their spears - G.

*रमण करा स्तुति से* - **रमय गिरा**। रमया रमणीयया गिरा स्तुत्या - सा.। रमया क्रीडयानन्दय गिरा सुशिक्षितया सत्यया कोमलया वाण्या - दया.। with grateful praise - W. make them happy with thy song - G.

**अच्छं ऋषे मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणां।**
**दिवो वां धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिर् इंषण्यत।। १४।।**

अच्छं। ऋषे। मारुतम्। गणम्। दाना। मित्रम्। न। योषणां।
दिवः। वा। धृष्णवः। ओजसा। स्तुताः। धीभिः। इषण्यत।। १४।।

*ओर, हे ऋषे!, मरुतों के गण की, (जा तू),*
*दी हुई (पिता से) पति के पास, जैसे (जाती है) स्त्री।*
*और द्युलोक से, हे धर्षको! बल के साथ,*
*स्तुति किये हुए बुद्धियों से, गमन करो तुम (इस ओर)।। १४।।*

हे वेदार्थद्रष्टा विद्वान्! तू सहायता करने वाली ईश्वरीय शक्तियों की ओर इस प्रकार गमन कर, जिस प्रकार विवाह में पिता के द्वारा वर को दी हुई कन्या सप्तपदी के द्वारा उसकी मित्र बनकर अपने उस मित्र पति के साथ आशाओं और आकाङ्क्षाओं के साथ उसके घर की ओर प्रस्थान करती है। और तुम भी, हे दुष्टों के लिये उग्र रूप धारण करने वाली दिव्य शक्तियो!, हमारे द्वारा बुद्धियों से स्तुति की हुई, द्युलोक से तथा अन्य लोकों से अपने बल के साथ इस ओर गमन करो।

टि. *ओर* - **अच्छ**। अभिगच्छ - वे.। approach - W. invite - G.

*दी हुई (पिता से)* - दाना। धनदानाय - वे.। हविर्दानेन - सा.। दानानि - दया.। with offerings - W. G.

*पति के पास जैसे स्त्री* - **मित्रं न योषा**। मित्रम् इव शत्रूणां पृथक्करणार्थम् - वे.। आदित्यम् इव। यौतेर् इदं रूपम्। यौतीति योषा स्तुतिः। सा.। सखायम् इव स्त्री - दया.। with praise like a friend - W. as a maid her friend - G.

*गमन करो तुम* - **इषण्यत**। गच्छत - वे.। सा.।

**नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणां।**
**दाना संचेत सूरिभिर् यामश्रुतेभिर् अञ्जिभिः।। १५।।**

नु। मन्वानः। एषाम्। देवान्। अच्छं। न। वक्षणां।
दाना। सचेत। सूरिऽभिः। यामऽश्रुतेभिः। अञ्जिऽभिः।। १५।।

*निश्चय से स्तुति करता हुआ इनकी,*
*देवों की ओर (गमन करे), नदी की तरह।*
*दानों को संयुक्त करे मेधावियों से,*
*वेग में प्रसिद्धों से, फलों को प्रकट करने वालों से।। १५।।*

स्तुति करने वाले उपासक का कर्तव्य है कि वह इन सहायक दिव्य शक्तियों की ओर मिलन के लिये इस प्रकार गमन करे, जिस प्रकार नदी अपने पति समुद्र की ओर उसे मिलने के लिये गमन

करती है। वह अपने उपहारों, हव्यों और नैवेद्यों को इन मेधावियों, अपने वेग के लिये प्रसिद्ध और फलों को प्रकट करने वाली दिव्य शक्तियों के लिये समर्पित कर देवे।

टि. *स्तुति करता हुआ* - **मन्वानः**। स्तोत्रं कुर्वन् - वे.। स्तुवन् - सा.। thinking - G.

*नदी की तरह* - **न वक्षणा**। उपमार्थीयस्य नस्य पूर्वप्रयोगः। न गच्छति वक्षणाय - वे.। वहनेन निमित्तेन न मनुते - सा.। न वहनेन - दया.। desiring not to bring (other) deities - W. as with the escort - G.

*संयुक्त करे* - **सचेत**। संगच्छते - वे.। सम्बध्नीत - दया.। associate - W.

*वेग में प्रसिद्धों से* - **यामश्रुतेभिः**। विश्रुतगमनैः - वे.। सा.।

*फलों को प्रकट करने वालों से* - **अञ्जिभिः**। उदकेन अञ्जद्भिः - वे.। फलस्य व्यञ्जकैर् - सा.। विद्याशुभगुणप्रकटकारकैः - दया.।

**प्र ये मे॑ बन्ध्वे॒षे गां वोच॑न्त सू॒रयः॒ पृश्नि॑ं वोचन्त मा॒तर॑म्।**
**अधा॑ पि॒तर॑म् इ॒ष्मिण॑ं रु॒द्रं वो॑चन्त॒ शिक्व॑सः।। १६।।**

प्र। ये। मे॒। ब॒न्धुऽए॒षे। गाम्। वोच॑न्त। सू॒रय॑ः। पृश्नि॑म्। वो॒च॒न्त॒। मा॒तर॑म्।
अध॑। पि॒तर॑म्। इ॒ष्मिण॑म्। रु॒द्रम्। वो॒च॒न्त॒। शिक्व॑सः।। १६।।

*प्रकर्ष से जो मुझे, बन्धु के पूछने पर,*
*गौ को बताते हैं, मेधाओं वाले,*
*(वे ही) विविधवर्णा को बताते हैं माता को।*
*और पिता को, तीव्रगति को,*
*रुद्र को बताते हैं, शक्ति वाले।। १६।।*

जब मुझ अज्ञानी उपासक ने ज्ञानियों से पूछा, कि 'हमारा बन्धु कौन है?', तो उन मेधावियों ने मुझे यही बताया, कि यह गौ अर्थात् वाणी अथवा इस वाणी से जुड़ा हुआ ज्ञान (वागर्थाविव सम्पृक्तौ - रघु. १.१) ही हमारा बन्धु है। उन्होंने यह भी बताया, कि भूरे, काले, लाल वर्णों वाली और सब रूपों वाली यह भूमि (बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपाम् - अथर्व. १२.१.११) हमारी माता है। ज्ञान की शक्ति वाले उन विद्वानों ने यह भी कहा कि तीव्र गति वाला, सर्वत्र सब से पहले पहुँचने वाला, और दुष्टों को उनके पापकर्मों का दण्ड देकर रुलाने वाला परमेश्वर हमारा पिता है।

टि. *बन्धु के पूछने पर* - **बन्ध्वेषे**। मम बन्धूनाम् अन्वेषणे - वे.। स्वेषां बन्धूनाम् अन्वेषणे सति - सा.। बन्धूनाम् इच्छायै - दया.। inquiring of their kindred - W. G.

*गौ को* - **गाम्**। माध्यमिकां वाचं गोदेवतां वा - सा.।

*बताते हैं* - **वोचन्त**। अवोचन् - वे.। उत्तरयोर् आख्यातयोर् यच्छब्दानन्वयान् निघातः - सा.।

*विविधवर्णा को* - **पृश्निम्**। द्युदेवतां पृश्निवर्णां गां वा - सा.। अन्तरिक्षम् - दया.।

*तीव्रगति को* - **इष्मिणम्**। एषणशीलम् - वे.। गमनवन्तम् अन्नवन्तं वा - सा.। बहुविधो [बलम्] विद्यते यस्य तम् - दया.। the food-bestowing - W. impetuous - G.

*रुद्र को* - **रुद्रम्**। दुष्टान् रोदयतीति रुद्रस् तं परमेश्वरम्।। दुष्टानां भयप्रदम् - दया.।

*शक्ति वाले* - **शिक्वसः।** शक्तास् ते मरुतः - वे.। सा.। शक्तिमन्तः - दया.। the mighty ones - W. G.

**सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः।**
**यमुनायाम् अधि श्रुतम् उद् राधो गव्यं मृजे**
**नि राधो अश्व्यं मृजे।। १७।। १०।।**

सप्त। मे। सप्त। शाकिनः। एकम्ऽएका। शता। ददुः।
यमुनायाम्। अधि। श्रुतम्। उत्। राधः। गव्यम्। मृजे। नि। राधः। अश्व्यम्। मृजे।। १७।।

*सात गुणा सात मुझको, शक्तिशाली,*
*एक-एक सौ, प्रदान करें,*
*संगमिनी नदी के किनारे पर, विख्यात को,*
*उत्कर्ष से धन को, गोविषयक को स्पर्श करूँ मैं,*
*नितरां धन को, अश्वविषयक को स्पर्श करूँ मैं।। १७।।*

हे परमेश्वर! मेरे शरीर के अन्दर सात-सात विभागों वाले जो शक्तिशाली सात प्राण हैं, उनमें से प्रत्येक मुझे अपरिमित शक्तियां प्रदान करे। इडा नाड़ी के साथ सङ्गम को प्राप्त होने वाली पिङ्गला नाड़ी के क्षेत्र अर्थात् मूलाधार में जो प्रसिद्ध ज्ञानेन्द्रियविषयक बल है उसे मैं प्राप्त करूँ, कर्मेन्द्रियविषयक जो बल है उसे भी मैं प्राप्त करूँ।

टि. *सात गुणा सात* - **सप्त सप्त।** एकोनपञ्चाशत् - वे.। सप्त सप्तसंख्याकाः सङ्घाः। सप्तगणा वै मरुतः (तै.सं. २.१.११.१) इति श्रुतेः। सा.। सप्तविधा मरुद्गणा मनुष्यभेदाः - दया.। seven times seven (Maruts) - W. G.

*शक्तिशाली* - **शाकिनः।** मरुतः - वे.। शाकिनः सर्वम् अपि कर्तुं शक्ताः - सा.। शक्तिमन्तः - दया.। all-potent - W. the mighty ones - G.

*एक-एक सौ* - **एकम्ऽएका शता।** एकैकं धनशतानि - वे.। ते चैकैको गणो मह्यं शतसंख्याकानि गवाश्वयूथानि - सा.। एकम् एकानि शतानि - दया.। aggregated as a single troop (bestow upon me) hundreds (of cattle) - W. have singly given me hundred gifts - G.

*संगमिनी नदी के किनारे* - **यमुनायाम् अधि।** यमुना प्रयुवती गच्छतीति वा। प्रवियुतं गच्छतीति वा। या. (नि. ९.२६)। यमुनायाः समीपे वर्तमानाः - वे.। यमुनायां नद्याम् अधि। अयं सप्तम्यर्थानुवादी। सा.। यमनियान्वितायां क्रियायाम् - दया.। upon the (banks of) Yamunā - W.

*स्पर्श करूँ मैं* - **मृजे।** उन्मार्जयामि। निमार्ज्मि। सा.। शुन्धामि - दया.। may I possess - W. I have obtained - G.

## सूक्त ५३

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - १,५,१०,११,१५ ककुप्, ६,७,९,१३,१४,१६ सतोबृहती, ८,१२ गायत्री, २ बृहती, ३ अनुष्टुप्, ४ पुरउष्णिक्। षोडशर्चं सूक्तम्।

**को वेद जानम् एषां को वा पुरा सुम्नेष्वास मरुताम्।**
**यद् युयुज्रे किलास्यः।। १।।**

कः। वेद। जानम्। एषाम्। कः। वा। पुरा। सुम्नेषु। आस। मरुताम्।
यत्। युयुज्रे। किलास्यः।। १।।

*कौन जानता है प्रादुर्भाव को इनके,*
*और कौन पूर्वकाल में, सुखों में था मरुतों के।*
*जब जोता बिन्दुमती हिरनियों को, (रथों में इन्होंने)।। १।।*

कोई नहीं जानता, कि सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की इन प्राणप्रद दिव्य शक्तियों का प्रादुर्भाव कब हुआ। यह भी कोई नहीं जानता, कि जब इन्होंने अपने रथों को जोता अर्थात् जब ये अपने कार्यों के सम्पादन में उद्यत हुईं तो सर्वप्रथम इनका कृपापात्र कौन बना और इनके द्वारा प्रदान किये गए सुखों का उपभोग किसने किया। वस्तुतः जिस प्रकार वह परमेश्वर अजन्मा, अनादि, नित्य और शाश्वत है, उसी प्रकार ऋत का पालन करने वाली और सत्कर्मों में सहायक उसकी दिव्य शक्तियां भी अजन्मा, अनादि, नित्य और शाश्वत हैं।

टि. *प्रादुर्भाव को* – **जानम्।** जननम् – वे.। उत्पत्तिम् – सा.। प्रादुर्भावम् – दया.।

*इनके* – **एषाम्।** मरुतां पूर्वसूक्ते प्रस्तुतत्वाद् अत्रान्वादेशविषयत्वाद् एषाम् इत्यस्य निघातता – सा.। मनुष्याणां वायूनां वा – दया.। of these (Maruts) - W.

*सुखों में* – **सुम्नेषु।** सुखेषु – वे.। सा.। दया.। in the favour - G.

*बिन्दुमती हिरनियों को* – **किलास्यः।** श्वेता वडवाः – वे.। किलासीः पृषतीर् इत्यर्थः – सा.। निश्चितम् आस्यं यस्य सः – दया.। the spotted deer - W. G.

**ऐतान् रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः।**
**कस्मै सस्रुः सुदासे अन्वापय इळाभिर् वृष्टयः सह।। २।।**

आ। एतान्। रथेषु। तस्थुषः। कः। शुश्राव। कथा। ययुः।
कस्मै। सस्रुः। सुऽदासे। अनु। आपयः। इळाभिः। वृष्टयः। सह।। २।।

*सर्वतः इनको, रथों पर स्थित हुओं को,*
*किस ने सुना है, कैसे जाते हैं वे।*
*किसके लिये बरसाते हैं सुदाता के, अनुकूलता से बन्धुजन,*
*अन्नों के साथ, सुखवृष्टियों को।। २।।*

यह किसने सुना है, अर्थात् यह कौन जानता है, कि परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां अपने कर्तव्यों को करने के लिये उद्यत होकर उनमें किस प्रकार व्यस्त हो जाती हैं। यह भी भला कौन जानता है, कि बन्धुभूत ये शक्तियां किसी उत्तम दानी के लिये ही अनुकूलता से अन्नों के साथ अन्य सुखसाधनों की वर्षा करती हैं। प्रभु की दिव्य शक्तियां उसे ही देती हैं, जो दूसरों को देता है। जो देता है, सो पाता है। जो नहीं देता, उसे कुछ नहीं मिलता।

टि. *सर्वतः किसने सुना है* – **आ कः शुश्राव।** आ शुश्राव कः – वे.। कः श्रावयेद् इत्यर्थः। यद्वा।

एतेषां क्रोशध्वनिं रथध्वनिं वा कः शृणुयात्। सा.। कः श्रावयति - दया.। who has heard them (declare) - W. who hath heard them tell the way - G.

*सुदाता के लिये* - **सुदासे**। शोभनदानाय - वे.। सुदानाय - सा.। upon liberal worshipper - W. the bounteous man to whom - G.

*बन्धुजन* - **आपयः**। बन्धवः - वे.। बन्धुभूता व्याप्ताः - सा.। kindred - W. G.

*सुखवृष्टियों को* - **वृष्टयः**। वृष्टीः। विभक्तिव्यत्ययः। द्वितीयास्थाने प्रथमा।। वृष्टयः भवन्ति - वे.। वर्षकाः। अयं कर्तरि क्तिच्। सा.। rains - W. G.

**ते मे आहुर् य आययुर् उप द्युभिर् विभिर् मदे।**
**नरो मर्या अरेपस इमान् पश्यन्निति ष्टुहि।। ३।।**

ते। मे। आहुः। ये। आऽययुः। उप। द्युऽभिः। विऽभिः। मदे।
नरः। मर्याः। अरेपसः। इमान्। पश्यन्। इति। स्तुहि।। ३।।

*वे मुझे बताते हैं, जो आते हैं,*
*पास, द्युतिमान अश्वों से, आनन्द के लिये।*
*हे नेताओ!, हे मरणधर्माओ!, निर्लेपों को, इनको,*
*देखते हुए, स्तुति करो तुम (इनकी)।। ३।।*

चिन्तन के क्षणों में परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां जब अपने तेजोमय रूपों के साथ मुझ उपासक के भक्तिरस के आनन्द को स्वीकार करने के लिये मेरे ध्यान में अवतरित होती हैं, तो ये मुझे यही सन्देश देती हैं, कि हे अन्य जनों का मार्गदर्शन करने वाले मरणधर्मा मनुष्यो! परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां, अनुपम विभूतियां, निर्लेप और निरञ्जन हैं। जब भी ये तुम्हारी अन्तर्दृष्टि में आएं, तो तुम इनकी हृदय से स्तुति करो।

टि. *द्युतिमान अश्वों से* - **द्युभिः विभिः**। दीप्तैर् अश्वैः - वे.। द्योतमानैर् गन्तृभिर् अश्वैः - सा.। कामयमानैः पक्षिभिर् इव - दया.। with winged steeds radiant - G.

*आनन्द के लिये* - **मदे**। सोमार्थम् - वे.। मदाय - सा.। आनन्दाय - दया.।

*हे नेताओ* - **नरः**। नेतारः - वे.। सा.। दया.। leaders - W.

*हे मरणधर्माओ* - **मर्याः**। मारकाः - वे.। मनुष्येभ्यो हिताः - सा.। मरणधर्माणः - दया.।

*निर्लेपों को, इनको* - **अरेपसः**। अपापाः - वे.। अलेपाः - सा.। दोषलेपरहिताः - दया.। formless - W. free from spot or stain - G.

*देखते हुए स्तुति करो तुम (इनकी)* - **पश्यन् इति स्तुहि**। पश्यन्त इति स्तुत। वचनव्यत्ययः।। इमान् अस्मान् पश्यन्ति, इत्थं त्वं स्तुहीति - वे.। हे ऋषे- इमान् अस्मान् पश्यन् तथा स्थितान् चक्षुषावलोकयन् स्तुहि इत्याहुः। यद्वा। इतीत्थं पश्यन् स्तुहीति। सा.। when beholding them, repeat our praise - W. Behold us here and praise thou us - G.

**ये अञ्जिषु ये वाशीषु स्वभानवः स्रक्षु रुक्मेषु खादिषु।**
**श्राया रथेषु धन्वसु।। ४।।**

ये। अञ्जिषु। ये। वाशीषु। स्वऽभानवः। स्रक्षु। रुक्मेषु। खादिषु।
श्रायाः। रथेषु। धन्वऽसु।। ४।।

*जो आभूषणों में, जो आयुधों में, स्वयं प्रकाशमान,*
*मालाओं में, स्वर्णाभरणों में, कङ्गणों में।*
*आश्रय लिये हुए हैं, रथों में, धनुषों में।। ४।।*

परमेश्वर की स्वयं प्रकाशमान ये दिव्य शक्तियां और विभूतियां ही सुन्दरियों के आभूषणों में, योद्धाओं के आयुधों में, पुष्पमालाओं में, सुवर्णाभरणों में, कङ्गणों में, देवों के रथों में, धनुर्धारियों के धनुषों में तथा अन्य विभूतिमान् पदार्थों में आश्रय ग्रहण किये हुए हैं। ये ही उनमें निवास करती हैं, उनकी श्री, शोभा और महिमा को बढ़ाती हैं, और स्वयं भी उनसे शोभयमान होती हैं। हमें सदा इनका स्तवन और इनकी महिमा का गान करना चाहिये।

टि. *आभूषणों में* - **अञ्जिषु।** आभरणेषु - वे.। सा.।

*आयुधों में* - **वाशीषु।** वाश्यायुधेषु - वे.। आयुधेषु - सा.।

*स्वयं प्रकाशमान* - **स्वभानवः।** स्वदीप्तयः - सा.। self-irradiating - W. self-luminous - G.

*कङ्गणों में* - **खादिषु।** पादाभरणेषु, आयुधविशेषो वा खादिः - वे.। खादिषु हस्तपादस्थित-कटकेषु - सा.। with armlets - G.

*आश्रय लिये हुए हैं* - **श्रायाः।** श्रयमाणा भवन्ति - वे.। श्रायाः सन्ति। यद्वा। ये ऽञ्जिष्वाभरणेषु निमित्तेषु श्राया आश्रया भविष्यामः। सा.। splendid - W. who shine - G.

*धनुषों में* - **धन्वसु।** धनुःषु - वे.। in bows - W. with bows - G.

**युष्माकं स्मा रथाँ अनु मुदे दधे मरुतो जीरदानवः।**
**वृष्टी द्यावो यतीरिव।। ५।। ११।।**

युष्माकम्। स्म। रथान्। अनु। मुदे। दधे। मरुतः। जीरऽदानवः।
वृष्टी। द्यावः। यतीःऽइव।। ५।।

*तुम्हारे ही मार्गों का अनुसरण करता हुआ,*
*मोद के लिये स्थापित करता हूँ (स्वयं को), हे मरुतो!, हे अविलम्ब दाताओ।*
*वृष्टियों में दीप्तियों का, सर्वत्र जाने वालियों का, (किया जाता है) जिस प्रकार।। ५।।*

हे अपनी उपदाओं को देने में कभी विलम्ब न करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! मैं उपासक अज्ञान और अन्धकार से भरी अपनी जीवनयात्रा में स्वयं को सुख और आनन्द में स्थापित करने के लिये तुम्हारे द्वारा दिखाए गए सन्मार्गों का उसी प्रकार अनुसरण करता हूँ, जिस प्रकार रात्रि के अन्धकार में वर्षा करने वाले मेघों में चमकने वाली बिजलियों के सर्वत्र फैले हुए प्रकाशों का अनुसरण करते हुए गन्तव्य पर पहुँचकर सुख और आनन्द को प्राप्त किया जाता है।

टि. *मार्गों का अनुसरण करता हुआ* - **रथान् अनु।** तात्स्थ्यात् तत्साहचर्याद् वा रथो मार्गवचनः।। रथान् अनु धारयामि - वे.। रथान् अनूद्दिश्य - सा.। I look upon your cars - G.

*हे अविलम्ब दाताओ* - **जीरदानवः।** क्षिप्रदानाः - वे.। शीघ्रदानाः - सा.। munificent - W. O

swift to pour down your bounties down - G.

*वृष्टियों में दीप्तियों का, सर्वत्र जाने वालियों का, (किया जाता है) जिस प्रकार* - **वृष्टी द्यावः यतीःऽइव।** यथा वर्षणाय रश्मयः वः धारयन्ति - वे.। वृष्टी वृष्ट्या यतीः सर्वत्र गच्छन्तीर् द्यावो दीप्तीर् इव - सा.। like wandering lights in the rains - W. like splendours coming through the rain - G.

**आ यं नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशम् अचुच्यवुः।**
**वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः।। ६।।**

आ। यम्। नरः। सुऽदानवः। ददाशुषे। दिवः। कोशम्। अचुच्यवुः।
वि। पर्जन्यम्। सृजन्ति। रोदसी इति। अनु। धन्वना। यन्ति। वृष्टयः।। ६।।

*सर्वतः जिसको नेतागण, उत्तम दानों वाले, हविदाता के लिये,*
*अन्तरिक्ष से, जलकोश को, चुवाते हैं।*
*मेघ को विसर्जित करते हैं, द्युलोक-भूलोक के अनुकूल,*
*मरुभूमियों के साथ, गमन करती हैं वृष्टियां।। ६।।*

जो यजमान देवताओं को हवि प्रदान करता है, सब का नेतृत्व करने वाली और उत्तम दानों वाली ये परमेश्वर की दिव्य शक्तियां उसके लिये आकाश से मेघों को बरसाती हैं। वे मेघों को भूलोक और द्युलोक के अनुकूल चलाती हैं और इस प्रकार मरुभूमियों में वृष्टियां होती हैं। अर्थात् ये ईश्वरीय शक्तियां मेघों से बंजर भूमियों में वर्षा कराती हैं, जिससे भूलोक के निवासी मनुष्यों को अन्न, वस्त्र आदि और द्युलोक के निवासी देवों को आहुतियां प्राप्त होती हैं।

टि. *हविदाता के लिये* - **ददाशुषे।** 'दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश् च' इत्येतत् सूत्रम् अनादृत्य 'दाशृ दाने' इत्येतस्य धातोः क्वसौ द्विर्वचनम् एव।। यजमानाय - वे.। ददाशुषे हविर्दत्तवते - सा.। दात्रे - दया.। for (the benefit) of the donor - W. for the worshipper's behoof - G.

*जलकोश को चुवाते हैं* - **कोशम् अचुच्यवुः।** च्यावयन्ति मेघम् - वे.। कोशम्। मेघनामैतत्। अपां कोशवद् धारकं मेघम्। अचुच्यवुर् आच्यावयन्ति। सा.। कोश इति मेघनाम (निघ. १.१०) - दया.। they cause the treasury (of water) to fall - W. they have cast treasury down - G.

*द्युलोक-भूलोक के अनुकूल* - **रोदसी अनु।** द्यावापृथिव्योर् अर्थाय - वे.। द्यावापृथिव्याव् अनुसृत्य - सा.। दया.। through both the worlds - G.

*मरुभूमियों के साथ* - **धन्वना।** अन्तरिक्षेण - वे.। सर्वत्र गच्छतोदकेन सह - सा.। o'er desert spots - G.

**ततृदानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र सस्रुर् धेनवो यथा।**
**स्यन्ना अश्वा इवाध्वनो विमोचने वि यद् वर्तन्त एन्यः।। ७।।**

ततृदानाः। सिन्धवः। क्षोदसा। रजः। प्र। सस्रुः। धेनवः। यथा।
स्यन्नाः। अश्वाःऽइव। अध्वनः। विऽमोचने। वि। यत्। वर्तन्ते। एन्यः।। ७।।

*तोड़ती हुईं (भूमि को) नदियां जलों से, लोक में,*

*प्रकर्ष से बह रही हैं, नवप्रसूता गौएं (दौड़ती हैं) जिस प्रकार।*
*आशुगति अश्व जिस प्रकार, मार्गों को छोड़ने के निमित्त,*
*विविध रूपों में जहां, बह रही हैं स्वच्छ नदियां।। ७।।*

जिस प्रकार नवप्रसूता गौएं अपने बछड़ों को मिलने के लिये और उन्हें दूध पिलाने के लिये गवाड़ की ओर दौड़ती हैं, जिस प्रकार तेज गति वाले घोड़े मार्गों को पार करके मंजिल पर पहुँचकर जूए से छूटने के लिये तीव्र गति से दौड़ते हैं, उसी प्रकार ईश्वरीय शक्तियों के द्वारा बरसाए गए जलों से निर्मित नदियां अपने जलों से तटों को तोड़कर लोक में सर्वत्र बह रही हैं, अथवा अपने पति समुद्र के मिलन के लिये उसकी ओर दौड़ रही हैं। ये नदियां विविध रूपों वाले जलों के साथ जहाँ-तहाँ सर्वत्र बह रही हैं।

टि. *तोड़ती हुईं* - **ततृदानाः**। रुजन्तः कूलस्थां मृदम् - वे.। निर्भिन्दन्तो मेघान् - सा.। भूमिं हिंसन्तः - दया.। the bursting streams - G.

*जलों से* - **क्षोदसा**। उदकेन - वे.। दया.। उदकेन सह - सा.। in billowy flood - G.

*लोक में* - **रजः**। अन्तरिक्षम् - सा.। लोकम् - दया.। o'er the firmament - G.

*आशुगति* - **स्यन्नाः**। आशुगतयः - सा.। दया.। swift - G.

*मार्गों को छोड़ने के निमित्त* - **अध्वनः विमोचने**। अध्वनः गमनाय विमोचने भवन्ति - वे.। मनुष्याणाम् अध्वविमोकाय - सा.। let loose upon the road - W. hasting to their journey's resting-place - G.

*स्वच्छ नदियां* - **एन्यः**। एत इति पुंसि, एनीति स्त्रियाम्।। नद्यः - वे.। नदीनामैतत् - सा.। या यन्ति ता नद्यः। (निघ. १.१३)। दया.। the rivers - W. glittering brooks - G.

**आ या॑त मरुतो दि॒व आन्तरि॑क्षाद् अ॒माद् उ॒त।**
**माव॑ स्थात परा॒वतः॑।। ८।।**

आ। या॒त। म॒रु॒तः॒। दि॒वः। आ। अ॒न्तरि॑क्षात्। अ॒मात्। उ॒त।
मा। अव॑। स्था॒त। प॒रा॒ऽवतः॑।। ८।।

*आ जाओ, हे मरुतो!, द्युलोक से,*
*आ (जाओ) अन्तरिक्षलोक से, इस लोक से भी।*
*मत अवस्थान करो, दूर देश में (हमसे)।। ९।।*

हे सत्कर्मों में सहयोग करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम द्युलोक में, अन्तरिक्षलोक में और इस पृथिवीलोक में सर्वत्र निवास करती हो। तुम इन स्थानों से आकर हमारे निकट, हमारे हृदयमन्दिर में वास करो। तुम हमसे दूर कभी मत होवो।

टि. *इस लोक से भी* - **अमात् उत**। अमशब्दो गृहवचन इति, इह तु पृथिवीम् आह - वे.। अस्माल् लोकात् - सा.। गृहाद् अपि - दया.। from this (earth) - W. from near at hand - G.

*मत अवस्थान करो* - **मा अव स्थात**। मा अवतिष्ठत - वे.। दया.। अवस्थितिं मा कुरुत - सा.। tarry not (far off) - W. G.

**मा वो रसानितभा कुभा क्रुमुर् मा वः सिन्धुर् नि रीरमत्।**
**मा वः परि ष्ठात् सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत् सुम्नम् अस्तु वः।। ९।।**

मा। वः। रसा। अनितभा। कुभा। क्रुमुः। मा। वः। सिन्धुः। नि। रीरमत्।
मा। वः। परि। स्थात्। सरयुः। पुरीषिणी। अस्मे इति। इत्। सुम्नम्। अस्तु। वः।। ९।।

*मत तुम को शब्दवती, दीप्तिहीना, कुत्सित दीप्ति वाली, क्रमणशीला,*
*मत तुमको स्यन्दनशील, नितरां रोक लेवे।*
*मत तुमको घेरकर खड़ी हो जाए सरणशीला, जलों वाली,*
*हममें निश्चय से सुख होवे (स्थित सदा) तुम्हारा।। ९।।*

हे परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियो! तुम अबाध गति से हमारी ओर चली आओ। हमारी ओर आते समय तुम्हें मार्ग में शोर करने वाली, गन्धलेपन के कारण आभाहीन, मलिन आभा वाली और तीव्र गति वाली जलधाराएं भी न रोक सकें, स्यन्दनशील समुद्र भी तुमको अवरुद्ध न कर सके। जलों से भरी हुई सरणशीला नदी भी तुमको घेरकर खड़ी न हो सके। तुम्हारे सुख की, आनन्द की और कृपा की वृष्टि हमपर सदा निरन्तर होती रहे।

टि. *शब्दवती* – **रसा**। रसा नदी रसतेः शब्दकर्मणः – या. (नि. ११.२५)। रसनवती शब्दवती – सा.। पृथिवी – दया.। motion of the earth - Satya.

*दीप्तिहीना* – **अनितभा**। इता प्राप्ता भा यस्याः सेतभा। न तादृश्यनतिभा। सा.। दया.।

*कुत्सित दीप्ति वाली* – **कुभा**। कुत्सितदीप्तिः – सा.। कुत्सितप्रकाशा – दया.।

*क्रमणशीला* – **क्रुमुः**। सर्वत्रक्रमणः – सा.। क्रमिता – दया.।

*स्यन्दनशील* – **सिन्धुः**। समुद्रः – सा.। नदी समुद्रो वा – दया.। wide-roving ocean - W.

*नितरां रोक लेवे* – **नि रीरमत्**। एताः सप्त नद्यः मा युष्मान् आत्मनि रमयन्तु – वे.। निकृष्टं रमतु – सा.। नितरां रमयेत् – दया.। let (not) delay you - W. let (not) hold you back - G.

*सरणशीला* – **सरयुः**। यः सरति – दया.।

**तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम्।**
**अनु प्र यन्ति वृष्टयः।। १०।। १२।।**

तम्। वः। शर्धम्। रथानाम्। त्वेषम्। गणम्। मारुतम्। नव्यसीनाम्।
अनु। प्र। यन्ति। वृष्टयः।। १०।।

*उसका, तुम्हारे समूह का रथों के,*
*प्रकाशमान गण का मरुतों के, नवीन (जलों) की,*
*पीछे-पीछे प्रकर्ष से गमन करती हैं वृष्टियां।। १०।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जहाँ भी तुम जाती हो, ताजे जलों की वृष्टियां अर्थात् सुख, शान्ति और जीवन का संचार करने वाले साधन तुम्हारे गमनों और तुम्हारे संघ के साथ-साथ सर्वत्र गमन करते हैं। इसलिये जहाँ भी तुम जाती हो, वहीं सुख, शान्ति और जीवन का संचार हो जाता है। इसी लिये हम तुमको अपने पास बुलाते हैं।

टि. *समूह का* - **शर्धम्**। बलम्। यद्वा परेषाम् अभिभावुकं (गणं स्तौमि)। सा.। that brilliant gathering of your cars - G.

*नवीन (जलों) की वृष्टियां* - **नव्यसीनाम् वृष्टयः**। नवतराणाम् अपां वृष्टयः - वे.। नूतनानां रथानाम्। वृष्टयो युष्मान् अनु प्रयन्ति। प्रकर्षेण गच्छन्ति। सा.। of recent chariots; you whom the rains attend - W. of the Youthful Ones; the rain-waters - G.

**शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः।**
**अनु क्रामेम धीतिभिः।। ११।।**

शर्धम्ऽशर्धम्। वः। एषाम्। व्रातम्ऽव्रातम्। गणम्ऽगणम्। सुशस्तिऽभिः।
अनु। क्रामेम। धीतिऽभिः।। ११।।

*प्रत्येक सैन्य का, तुम्हारे का, इनका, प्रत्ये.०क समूह का,*
*प्रत्येक गण का, सुन्दर स्तुतियों के द्वारा।*
*अनुगमन करें हम, चिन्तनों के द्वारा।। ११।।*

हे परमेश्वर की सहायक दिव्य शक्तियो! जो तुम इस प्रकार सुख, शान्ति और जीवनदायक वृष्टियों को अपने साथ लाने वाली हो, हम उपासक जन तुम्हारे प्रत्येक दल का, प्रत्येक समूह का और प्रत्येक गण का शोभन स्तुतियों से और उत्तम चिन्तनों से अनुगमन करते हैं।

टि. *अनुगमन करें हम* - **अनु क्रामेम**। अनुगच्छामः - वे.। अनुगच्छेम - सा.। let we wait with - W. may we follow- G.

*चिन्तनों के द्वारा* - **धीतिभिः**। कर्मभिः - वे.। कर्मभिर् हविष्प्रदानादिलक्षणैः - सा.। with holy rites - W. with hymns - G.

**कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः।**
**एना यामेन मरुतः।। १२।।**

कस्मै। अद्य। सुऽजाताय। रातऽहव्याय। प्र। ययुः।
एना। यामेन। मरुतः।। १२।।

*किस के लिये आज, शोभन जन्म वाले के लिये,*
*हवियां प्रदान करने वाले के लिये, प्रकर्ष से जा रहे हैं।*
*इस मार्ग से मरुत्।। १२।।*

सत्कर्मों में सहायक प्रभु की ये दिव्य शक्तियां आज इस मार्ग से किस प्रभुभक्त पर अपनी कृपाओं की वृष्टि करने जा रही हैं? सचमुच वह कोई सफल जीवन वाला और देवों को हवियां प्रदान करने वाला, निष्काम भाव से यज्ञ आदि शुभ कर्म करके परहित कर्मों को करने वाला, कृतकृत्य मनुष्य ही हो सकता है, जिसपर परमेश्वर की इन दिव्य शक्तियों की कृपा होती है।

टि. *शोभन जन्म वाले के लिये* - **सुजाताय**। शोभनं जातं जन्म यस्य, तस्मै।। to well-born - W. to sprung of noble ancestry - G.

*हवियां प्रदान करने वाले के लिये* - **रातहव्याय**। रातानि दत्तानि हव्यानि हवींषि येन, तस्मै।। दत्तहविष्काय - सा। दत्तदातव्याय - दया.। to oblation-giving (worshipper) - W. G.

*इस मार्ग से* - एना यामेन। अनेन रथेन - सा.। in this car - W. on this course - G.

**येन॑ तो॒काय॒ तन॑याय धा॒न्यं१॒॑ बीजं॒ वह॑ध्वे॒ अक्षि॑तम्।**
**अ॒स्मभ्यं॒ तद् ध॑त्तन॒ यद् व॒ ईम॑हे॒ राधो॑ वि॒श्वायु॒ सौभ॑गम्।। १३।।**

येन॑। तो॒काय॑। तन॑याय। धा॒न्य॑म्। बीज॑म्। वह॑ध्वे। अक्षि॑तम्।
अ॒स्मभ्य॑म्। तत्। ध॒त्त॒न॒। यत्। व॒ः। ईम॑हे। राध॑ः। वि॒श्वऽआ॑यु। सौभ॑गम्।। १३।।

*जिस (सहृदयता) से पुत्र के लिये, पौत्र के लिये धान्य को,*
*(और) बीज को (उसके) वहन करते हो तुम, क्षयरहित को।*
*हमें उसको प्रदान करो तुम, जिसको तुमसे माँगते हैं हम,*
*धन को, सम्पूर्ण आयु देने वाले को, सौभाग्यवर्धक को।। १३।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जिस सहृदयता के साथ तुम पूर्वकाल में अपने पुत्र और पौत्रभूत मनुष्यों को जीवन धारण करने वाले अन्नों को और कारणभूत उनके क्षयरहित बीजों को सदा प्रदान करती आई हो, उसी प्रकार हमें भी इन्हें प्रदान करो। तुम हमें समस्त जीवन को सफल बनाने वाले और सौभाग्य की वृद्धि करने वाले उस अनुपम आत्मधन को प्रदान करो, जिसकी हम तुमसे सदा याचना करते आए हैं।

टि. *जिस (सहृदयता) से* - येन। येन धनेन - वे.। येन सदयेन मनसा - सा.। येन कर्मणा - दया.। with the same (goodwill) - W. through which - G.

*धान्य को (और) बीज को* - धान्यम् बीजम्। धान्यं तत्कारणं बीजं च - वे.। धान्यम् तण्डुलादिकम् बीजम् वपनार्हम् - दया.। grain-seed - W. seed of corn - G.

*सम्पूर्ण आयु देने वाले को* - विश्वायु। सर्वगम् - वे.। विश्वायु सर्वान्नोपेतं कृत्स्नायुष्योपेतं वा - सा.। सम्पूर्णम् आयुष्करम् - दया.। life-sustaining - W. that reacheth to all life - G.

*सौभाग्यवर्धक को* - सौभगम्। सुभगत्वावहम् - वे.। सौभाग्यम् - सा.। सौभाग्यवर्धकम् - दया.। auspicious - W. bliss - G.

**अती॑याम नि॒दस् ति॒रः स्व॒स्तिभि॑र् हि॒त्वाव॒द्यम् अरा॑तीः।**
**वृ॒ष्ट्वी शं योर् आप॑ उ॒स्रि भे॑ष॒जं स्याम॑ मरुतः स॒ह।। १४।।**

अति॑। इ॒या॒म॒। नि॒दः। ति॒रः। स्व॒स्तिऽभि॑ः। हि॒त्वा। अ॒व॒द्यम्। अरा॑तीः।
वृ॒ष्ट्वी। शम्। योः। आप॑ः। उ॒स्रि। भे॒ष॒जम्। स्याम॑। म॒रु॒तः। स॒ह।। १४।।

*अतिक्रमण करें हम निन्दकों का, छुपे हुओं का, कल्याणों से,*
*त्याग करके पाप का, न देने वालों का (समाज के शत्रुओं का)।*
*बरसाकर सुख को, नीरोगता को, (दो) जलों को, प्रकाश को, औषध को,*
*होवें हम, हे मरुतो!, साथ-साथ (कृपा से तुम्हारी)।। १४।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारी कृपा से हम उपासक पापकर्मों का परित्याग करके और दूसरों को न देने वाले समाज के शत्रुओं का बहिष्कार करके कल्याणों को प्राप्त करके, छुपकर निन्दा करने वाले दुष्ट जनों को पीछे छोड़कर जीवन में आगे बढ़ जाएं। हे दिव्य

शक्तियो! तुम हमपर सुख और नीरोगता की वर्षा करके हमें जल, प्रकाश और औषध प्रदान करो। तुम्हारी कृपा से हम साथ-साथ मिलकर रहें और एक-दूसरे के सुख-दुःख को बाँटने वाले बनें।

टि. *निन्दकों को* - **निदः**। निन्दित्रीः - वे.। निन्दकान् - सा.। ये निन्दन्ति तान् मिथ्यावादिनः - दया.। reviling - W. who slander us - G.

*छुपे हुओं को* - **तिरः**। तिरस्कुर्वन्तः - वे.। प्राप्तान्। यद्वा तिरो ऽन्तर्हितम्। सा.। तिरश्चीनं कर्म - दया.। secret - W. leaving behind - G.

*पाप का* - **अवद्यम्**। पापम् - सा.। निन्दितं कर्म - दया.। disgrace - G.

*न देने वालों का* - **अरातीः**। शत्रून् - सा.। adversaries - W. hate - G.

*बरसाकर* - **वृष्ट्वी**। व्याप्य - वे.। वृष्ट्वी वृष्टिषु युष्मत्प्रेरितासु सतीषु - सा.। वृष्ट्वा वर्षित्वा - दया.। through the rain (sent by you) - W. when ye rain (waters down) - G.

*सुख को, नीरोगता को* - **शम् योः**। शं सुखं योः पापानां यावनम् - सा.। शं सुखं योः मिश्रितम् - दया.। unmixed happiness - W. in rest and toil - G.

*जलों को* - **आपः**। उदकानि - वे.। शसः स्थाने जस् - सा.। जलानि - दया.।

*प्रकाश को* - **उस्रि**। गोयुक्तम् अन्नम् - वे.। उस्रि गोयुक्तं भेषजम् - सा.। गवादियुक्तम् - दया.। cattle - W. at dawn - G.

**सुदेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः।**
**यं त्रायध्वे स्याम ते।। १५।।**

सुऽदेवः। समह। असति। सुऽवीरः। नरः। मरुतः। सः। मर्त्यः।
यम्। त्रायध्वे। स्याम। ते।। १५।।

*उत्तम देवों वाला, हे पूजनीय (मरुद्गण)!, होता है वह,*
*शोभन वीरों वाला, हे मार्गदर्शक मरुतो!, वह मरणधर्मा।*
*जिसकी रक्षा करते हो तुम, होवें हम (भी) वे (ही)।। १५।।*

हे दिव्यशक्तिसमूह! हे सब का मार्गदर्शन करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! वह मरणधर्मा मनुष्य देवों की उत्तम कृपा को प्राप्त करने वाला होता है, वह शोभन वीर सन्तानों वाला होता है, जिसकी तुम रक्षा करती हो, जिसे तुम अपनी शरण में ले लेती हो। हम भी उस मनुष्य की तरह ही तेरी कृपा के पात्र और उत्तम वीर सन्तानों वाले हो जाएं।

टि. *उत्तम देवों वाला* - **सुदेवः**। शोभनदेवः - वे.। कल्याणमरुत्संज्ञकदेवोपेतः - सा.। शोभनश् चासौ विद्वान् - दया.। is favoured by the gods - W. G.

*हे पूजनीय (मरुद्गण)* - **समह**। हे पूजासहित मरुद्गण - वे.। प्रशस्तवचनः समहशब्दः। हे पूजित मरुतां गण - सा.। सत्कारसहित - दया.। renowned (host of) Maruts - W.

*होता है वह* - **असति**। भवति - वे.। सा.। दया.। (may) be - G.

**स्तुहि भोजान् त्स्तुवतो अस्य यामनि रणन् गावो न यवसे।**
**यतः पूर्वाँ इव सखीँर् अनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः।। १६।। १३।।**

स्तुहि। भोजान्। स्तुवतः। अस्य। यामनि। रणन्। गावः। न। यवसे।
यतः। पूर्वान्ऽइव। सखीन्। अनु। ह्वय। गिरा। गृणीहि। कामिनः।। १६।।

*स्तवन कर तू पालकों का, स्तवन करने वाले के, इसके मार्ग में,*
*रमण करें वे, गौएं (रमण करती हैं) जिस प्रकार चारे में।*
*जाते हुओं का, पूर्वपरिचितों का जिस प्रकार मित्रों का, आह्वान कर तू,*
*वाणी से गुणगान कर तू, चाहने वाले (मरुतों) का।। १६।।*

हे उपासक! तू इस मरणधर्मा मनुष्य की जीवनयात्रा में पग-पग पर रक्षा करने वाली परमेश्वर की इन दिव्य शक्तियों का भली प्रकार स्तवन कर। ये तेरी स्तुतियों का इस प्रकार आनन्द प्राप्त करें, जिस प्रकार गौएं चारा खाने में आनन्द प्राप्त करती हैं। तू सर्वत्र गमन करने वाली और सज्जनों से प्यार करने वाली इन दिव्य शक्तियों का इस प्रकार आह्वान कर, जिस प्रकार पूर्वपरिचित प्रिय मित्रों को मिलने के लिये और भोजन आदि खिलाने के लिये उन्हें घर पर बुलाया जाता है।

टि. *पालकों का* - **भोजान्।** भुज पालनाभ्यवहारयोः।। भोजयितॄन् - वे.। भोजान् दातॄन् मरुतः - सा.। पालकान् - दया.। the givers of enjoyment - W. the free-givers - G.

*मार्ग में* - **यामनि।** आगमने - वे.। यज्ञे - सा.। मार्गे - दया.। at the sacrifice - W.

*रमण करें वे* - **रणन्।** रमु क्रीडायाम्।। रमन्ताम् - वे.। सा.। they delight in - W.

*पूर्वपरिचितों का, जिस प्रकार मित्रों का* - **पूर्वान् इव सखीन्।** पूर्वान् प्रत्नान् इव सखीन् - वे.। सा.। पहले परिचित मित्रों के समान - सात.। as if upon old friends - W.

*आह्वान कर तू* - **अनु ह्वय।** अनुक्रमेण आह्वय - वे.। आह्वय - सा.। निमन्त्रय - दया.। call upon them - W. call thou unto them - G.

## सूक्त ५४

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - १-१३,१५ जगती, १४ त्रिष्टुप्। पञ्चदशर्चं सूक्तम्।

**प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचम् अनजा पर्वतच्युते।**
**घर्मस्तुभे दिव आ पृष्ठयज्वने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णम् अर्चत।। १।।**

प्र। शर्धाय। मारुताय। स्वऽभानवे। इमाम्। वाचम्। अनज। पर्वतऽच्युते।
घर्मऽस्तुभे। दिवः। आ। पृष्ठऽयज्वने। द्युम्नऽश्रवसे। महि। नृम्णम्। अर्चत।। १।।

*प्रकर्ष से, संघ के लिये मरुतों के, स्वयं प्रकाशमान के लिये,*
*इस स्तुति को ले चलो तुम, मेघों को बरसाने वाले के लिये।*
*यज्ञस्तोता के लिये, द्युलोक की सर्वतः ऊँचाई पर यज्ञकर्ता के लिये,*
*प्रदीप्त ख्याति वाले के लिये, महान् पौरुष का गान करो तुम।। १।।*

हे उपासको! परमेश्वर की दिव्य शक्तियों का यह समूह स्वयं ही प्रकाश, ज्ञान आदि गुणों से युक्त है। यह मेघों से जलों की वर्षा कराने वाला है। तुम अपनी स्तुति को इसे समर्पित करो। यह यज्ञ आदि शुभ कर्मों का प्रशंसक है। यह द्युलोक की ऊँचाइयों से ही प्रजाओं के हित और उपकार

आदि उत्तम कर्मों को सम्पन्न करता है। इसका यश सब दिशाओं में प्रकाशित हो रहा है। हे मनुष्यो! तुम इसके महान् पौरुष और शौर्य का गुणगान करो।

टि. *प्रकर्ष से ले चलो तुम* - **प्र अनज**। प्र गमय - वे.। प्रापय - सा.। उच्चरतोपदिशत। अत्र संहितायाम् इति दीर्घः। व्यत्ययेनैकवचनम्। दया.। offer praise - W. will I make ready - G.

*मेघों को बरसाने वाले के लिये* - **पर्वतच्युते**। मेघानां च्यावयित्रे - वे.। पर्वतस्य च्यावयित्रे - सा.। पर्वतान् मेघाच् च्युतो यः पर्वतं मेघं च्यावयति वा तस्मै - दया.। to the precipitators of mountains - W. who cast the mountains down - G.

*यज्ञस्तोता के लिये* - **घर्मस्तुभे**। यज्ञे स्तोतव्याय - वे.। घर्मस्य स्तोभयित्रे - सा.। to the assuagers of heat - W. who sacrifice in heights of heaven - G.

*ऊँचाई पर यज्ञकर्त्ता के लिये* - **पृष्ठयज्वने**। पृष्ठयजमानाय। पृष्ठं स्पृशतेः। वे.। षट् पृष्ठै रथन्तरबृहदादिभिर् ईजानाय - सा.। यः पृष्ठेन यजति तस्मै - दया.। to whom solemn rites are familiar - W. who stay the heat - G.

*प्रदीप्त ख्याति वाले के लिये* - **द्युम्नश्रवसे**। द्योतमानान्नाय - वे.। सा.। to the givers of abundant food - W. of those illustrious in renown - G.

*पौरुष का* - **नृम्णम्**। धनम् - वे.। धनं हविर्लक्षणम् - सा.। द्युम्नं यशः श्रवः श्रुतं यस्य तस्मै - दया.। नरो ऽभ्यस्यन्ति यत् तत् - दया.। the great strength -G.

*गान करो तुम* - **अर्चत**। प्रयच्छत - वे.। ददत - सा.। सत्कुरुत - दया.। present liberal oblations - W. sing - G.

**प्र वो॑ मरुतस् तवि॒षा उ॑द॒न्यवो॑ वयो॒वृधो॑ अश्व॒युज॒ः परि॑ज्रयः।**
**सं वि॒द्युता॒ दध॑ति॒ वाश॑ति त्रि॒तः स्वर॒न्त्यापो॒ ऽवना॒ परि॑ज्रयः।। २।।**

प्र। व॒ः। म॒रु॒तः॒। त॒वि॒षाः। उ॒द॒न्यवः॑। व॒यः॒ऽवृधः॑। अ॒श्व॒ऽयुजः॑। परि॑ऽज्रयः।
सम्। वि॒ऽद्युता॑। दध॑ति। वाश॑ति। त्रि॒तः। स्वर॑न्ति। आपः॑। अ॒वना॑। परि॑ऽज्रयः।। २।।

*प्रकर्ष से तुम्हारे (संघ हैं), हे मरुतो!, बलों वाले, जलों से प्यार करने वाले,*
*जीवन को बढ़ाने वाले, अश्वों को जोतने वाले, सब ओर गमन करने वाले।*
*साथ विद्युत् के स्थापित करता है (स्वयं को), शब्द करता है, तीनों स्थानों में विस्तृत,*
*शोर करते हैं जल, पृथिवी पर सब ओर गमन करने वाले।। २।।*

हे सत्कर्मों का सम्पादन करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारे समूह शक्तिशाली हैं, जीवनदायक जलों को चाहने वाले, जीवनों को बढ़ाने वाले, सदा कर्तव्यों को करने के लिये उद्यत रहने वाले और सर्वत्र गमन करने वाले हैं। तीनों लोकों में विस्तार वाला तुम्हारा संघ स्वयं को विद्युत् (प्रकाश) के साथ स्थापित करता है और महान् गर्जना करता है। इस प्रकार (शान्तिरूपी) जलों की वर्षा होती है और वे महान् घोष करते हुए पृथिवी पर सब ओर बहने लगते हैं।

टि. *बलों वाले* - **तविषाः**। महान्तः - वे.। दीप्ता महान्तो वा - सा.। बलवन्तः - दया.।

*जीवन को बढ़ाने वाले* - **वयोवृधः**। अन्नवृधः - वे.। अन्नस्य वर्धयितारः - सा.। ये वयसा

वर्धन्ते वयो वर्धयन्ति वा - दया.। augmenting food - W.

*सब ओर गमन करने वाले* - **परिज्रयः**। परितो गन्तारो रथाः - वे.। परितो गन्तारः - सा.। ये परितः सर्वतो गच्छन्ति ते - दया.। spreading everywhere - W. that wander far - G.

*तीनों स्थानों में विस्तृत* - **त्रितः**। त्रिस्थान इन्द्रः - वे.। त्रिषु स्थानेषु तायमानो मेघो मरुद्गणो वा - सा.। त्रिभ्यः - दया.। the triple-(stationed company) - W. Trita - G.

*शोर करते हैं* - **स्वरन्ति**। विसृजन्ति - वे.। अधः पतन्ति - सा.। शब्दयन्ति - दया.।

*पृथिवी पर* - **अवना**। अवनौ - वे.। भूमौ - सा.।

**विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः।**
**अब्दया चिन् मुहुर् आ ह्रादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः।। ३।।**

विद्युत्ऽमहसः। नरः। अश्मऽदिद्यवः। वातऽत्विषः। मरुतः। पर्वतऽच्युतः।
अब्दऽया। चित्। मुहुः। आ। ह्रादुनिऽवृतः। स्तनयत्ऽअमाः। रभसाः। उत्ऽओजसः।। ३।।

*विद्योतमान तेजों वाले, नेतृत्व करने वाले, आयुधों से प्रकाशमान,*
*वायु के समान बल वाले, मरुत्, मेघों से जलों को गिराने वाले।*
*जलप्रदान की इच्छा से बार-बार, आ रहे हैं, हिमावृत करने वाले,*
*घरों को गुँजाने वाले, उद्धत वेगों वाले, उत्तम ओजों वाले।। ३।।*

सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां प्रदीप्त तेजों वाली, मनुष्यों का नेतृत्व करने वाली, आसुरी शक्तियों का विनाश करने वाले आयुधों से शोभायमान, वायु के बल वाली और मेघों से जलों को बरसाने वाली हैं। बिजली के साथ ओलों, हिम आदि से पृथिवी को आच्छादित करने वाली, अपनी गर्ज से घरों को गुँजा देने वाली, तीव्र वेग वाली और उत्तम बलों वाली ये दिव्य शक्तियां जलों तथा सुख-शान्ति को प्रदान करने की इच्छा से बार-बार हमारी ओर आती हैं।

टि. *विद्योतमान तेजों वाले* - **विद्युन्महसः**। विद्योतमानतेजसः - वे.। सा.।

*आयुधों से प्रकाशमान* - **अश्मदिद्यवः**। व्याप्तायुधाः - वे.। सा.। casters of stone - G.

*जलप्रदान की इच्छा से* - **अब्दया चित्**। अपां दातारः - वे.। शसो याजादेशः। चिद् इति पूरणः। सा.। ये ऽपो जलानि ददति ते ऽपि - दया.। through desire to rain - G.

*हिमावृत करने वाले* - **ह्रादुनीवृतः**। ह्रादुनेर् वर्तयितारः - वे.। ह्रादुनीवृतः ह्रादुन्या अशनेः प्रवर्तकाः - सा.। ये ह्रादुन्या शब्दकर्त्र्या विद्युता युक्ताः - दया.। wielders of the thunderbolt - W. coming with storm of hail - G.

*घरों को गुँजाने वाले* - **स्तनयदमाः**। शब्दायमानगृहाः - वे.। दया.। अमाशब्दः साहित्यवाची। शब्दोपेतगणा इत्यर्थः। roaring in concert - W. roaring in onset - G.

**व्य१क्तून् रुद्रा व्यहानि शिक्वसो व्य१न्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः।**
**वि यद् अज्राँ अजथ नाव ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ।। ४।।**

वि। अक्तून्। रुद्राः। वि। अहानि। शिक्वसः। वि। अन्तरिक्षम्। वि। रजांसि। धूतयः।
वि। यत्। अज्रान्। अजथ। नावः। ईम्। यथा। वि। दुःऽगानि। मरुतः। न। अह। रिष्यथ।। ४।।

*अन्दर रात्रियों के, हे रुलाने वालो!, अन्दर दिनों के, हे शक्तिशालियो!,*
*अन्दर अन्तरिक्ष के, अन्दर (अन्य) लोकों के, हे कँपाने वालो।*
*अन्दर जब मार्गों के गमन करते हो तुम, नावों की, इनकी तरह,*
*अन्दर दुर्गों के (शत्रुओं के), हे मरुतो!, नहीं हिंसित होते हो तुम।। ४।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हे दुष्टों को रुलाने वालियो! जब तुम अन्धेरी रात्रियों के अन्दर गमन करती हो, हे शक्तिशालियो! जब तुम प्रकाशमान दिनों के अन्दर गमन करती हो, जब तुम अन्तरिक्ष के अन्दर गमन करती हो, हे पापियों को कँपा देने वालियो! जब तुम अन्य लोकों में गमन करती हो, जब तुम समुद्र पर चलने वाली इन नावों की तरह अपने मार्गों के अन्दर गमन करती हो और जब तुम शत्रुओं के दुर्गों के अन्दर गमन करती हो, तो उस समय कोई भी शक्ति तुम्हें हिंसित नहीं कर सकती, तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकती।

टि. हे *शक्तिशालियो* – **शिक्वसः**। हे शक्ताः – वे.। सा.। शक्तिमन्तः – दया.। mighty - G.

*हे कँपाने वालो* – **धूतयः**। हे कम्पयितारः – वे.। कम्पकाः – सा.। ये धुन्वन्ति – दया.।

*अन्दर जब मार्गों के गमन करते हो तुम* – **वि यत् अज्रान् अजथ**। यदा यूयम् अज्रान् वृक्षान् वि अजथ – वे.। यदाज्रान् मेघान् व्यजथ गमयथ – सा.। यदा सततगामिनः गच्छथ – दया.। when over the broad fields ye drive along - G.

*नहीं हिंसित होते हो तुम* – **न अह रिष्यथ**। न एव श्रमेण जीर्णा भवथ – वे.। नैव हिंसथ – सा.। नैव हिंस्यथ – दया.। but you do no harm - W. but are not harmed - G.

**तद् वी॒र्यं॑ वो मरुतो महित्व॒नं दी॒र्घं त॑तान॒ सूर्यो॒ न योज॑नम्।**
**एता॒ न या॒मे॒ अगृ॑भीतशोचिषो ऽन॑श्वदां॒ यन् न्यया॑तना गि॒रिम्।। ५।। १४।।**

तत्। वी॒र्य॑म्। व॒ः। म॒रु॒तः॒। म॒हि॒ऽत्व॒नम्। दी॒र्घम्। त॒ता॒न॒। सूर्यः॑। न। योज॑नम्।
एताः॑। न। यामे॑। अगृ॑भीतऽशोचिषः। अन॑श्वऽदाम्। यत्। नि। अया॑तन। गि॒रिम्।। ५।।

*वह पराक्रम तुम्हारा, हे मरुतो!, माहात्म्य (तुम्हारा),*
*दूर-दूर तक फैल रहा है, सूर्य की तरह, नियोग (तुम्हारा)।*
*रश्मियों की तरह मार्ग में, असह्य तेज वालियों की,*
*तेज को न देने वाले को, जब हिंसित करते हो तुम, मेघ को।। ५।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारा पराक्रम, तुम्हारा माहात्म्य और तुम्हारा कार्यक्षेत्र सूर्य के प्रकाश की तरह सर्वत्र फैल रहा है। जिस प्रकार असह्य तेज वाली सूर्यरश्मियां मार्ग में आने वाले अन्धकार को नष्ट कर देती हैं, उसी प्रकार तुम भी प्रकाश को अपने पीछे छुपा लेने वाले मेघ को अथवा आसुरी शक्ति को हिंसित कर डालती हो।

टि. *माहात्म्य* – **महित्वनम्**। महत्त्वम् – वे.। सा.। दया.। glory - W. majesty - G.

*सूर्य की तरह नियोग (तुम्हारा)* – **सूर्यः न योजनम्**। सूर्यः इव तेजः – वे.। सूर्यस् तेजः इव – सा.। सूर्य इव, योजनम् युजन्ति येन तद् आकर्षणाख्यम् – दया.। as the sun his radiance - W. like the sun, o'er a lengthened way - G.

*रश्मियों की तरह* - **एताः न**। अश्वाः इव - वे.। एतवर्णा देवानाम् अश्वा इव - सा.। गतयः - दया.। the white (horses of the gods) - W. like deer - G.

*असह्य तेज वालियों की (तरह)* - **अगृभीतशोचिषः**। अन्यैर् अगृहीतबलाः - वे.। अगृहीत-तेजस्काः। यद्वैतन् मरुतां विशेषणम्। हे मरुतो यूयम् अगृभीतशोचिषः सन्तः। सा.। न गृहीतं शोचिस् तेजो यैस् ते - दया.। of unbounded lustre - W. splendour unbounded - G.

*तेज को न देने वाले को* - **अनश्वदाम्**। अश्वस्य अदातारम् - वे.। व्यापकोदकादातारं पणिभिर् अपहतानाम् अश्वानाम् अप्रदातारं वा - सा.। अविद्यमाना अश्वा यस्यां तां गतिम् - दया.। with-holding the waters - W. that gives imperishable rain - G.

*हिंसित करते हो तुम* - **नि अयातन**। नि अयातन पणिभिर् अपहृतान् अश्वान् आहर्तुम् - वे.। निहतवन्तः - सा.। प्राप्नुत - दया.। you clove - W. ye bowed - G.

*मेघ को* - **गिरिम्**। मेघं पर्वतं वा - सा.। मेघम् - दया.। the cloud - W. the hill - G.

**अभ्राजि शर्धो मरुतो यद् अर्णसं मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः।**
**अध स्मा नो अरमतिं सजोषसश् चक्षुरिव यन्तम् अनु नेषथा सुगम्।। ६।।**

अभ्राजि। शर्धः। मरुतः। यत्। अर्णसम्। मोषथ। वृक्षम्। कपनाऽइव। वेधसः।
अध। स्म। नः। अरमतिम्। सऽजोषसः। चक्षुःऽइव। यन्तम्। अनु। नेषथ। सुऽगम्।। ६।।

*सुशोभित होता है संघ (तुम्हारा), हे मरुतो!, जब जल को (मेघ से),*
*छीनते हो तुम, वृक्ष से (जल को) क्रिमि जिस प्रकार, हे विधाताओ।*
*अब निश्चय से हमको, बिना विराम लिये, हे समान प्रीति वालो!,*
*चक्षु जिस प्रकार जाने वाले को, अनुकूलता से ले चलो, सुमार्ग पर।। ६।।*

हे जलवृष्टि आदि का विधान करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब तुम जलों को मेघ से छीनती हो, अर्थात् उसे धरती पर बरसाती हो, उसी प्रकार जिस प्रकार क्रिमि वृक्ष से जल को चूस लेते हैं और उसे सुखा देते हैं, तो उस समय तुम्हारे संघ की अत्यन्त शोभा होती है। निश्चय से तुम महान् हो। इसलिये हे परस्पर समान प्रीति वालियो! तुम बिना रुके हमें अनुकूलता से इस प्रकार सुमार्ग पर ले चलो, जिस प्रकार आँखें चलने वाले को सुमार्ग पर ले जाती हैं।

टि. *सुशोभित होता है* - **अभ्राजि**। दीप्यते - वे.। भ्राजते - सा.। प्रकाश्यते - दया.। is manifested - W. bright shone - G.

*जब जल को (मेघ से) छीनते हो तुम* - **यत् अर्णसम् मोषथ**। यदा उदकं मेघस्थं शनैःशनैः मेघं मोषथ - वे.। यस्माद् उदकवन्तं ताडयथ - सा.। यदा जलं चोरयत - दया.। when shaking the water-laden cloud - W. when ye smote the waving (tree) - G.

*वृक्ष से (जल को) क्रिमि जिस प्रकार* - **वृक्षम् कपना इव**। यथा वृक्षम् अन्तर्जातः क्रिमिर् मुष्णाति - वे.। वृश्च्यते विदीर्यत इति वृक्षो मेघः। इवेत्यनर्थकः। कम्पनाः सन्तः। यद्वा। कपनाः क्रिमयो वृक्षं घुणादयः। ते यथा मुष्णन्ति तद्वत्। सा.। वटादिकं वायुगतय इव - दया.।

*बिना विराम लिये* - **अरमतिम्**। पर्याप्तमतिम् - वे.। आरमणं धनादिकं प्रति - सा.। अरमणम्

– दया.। leading to prosperity - W.

*अनुकूलता से ले चलो सुमार्ग पर* – **अनु नेषथ सुगम्।** नयत शोभनमार्गम् अनु – वे.। अनुक्रमेण नयथ सुगमनं मार्गम् – सा.। conduct us by an easy path - W. have you led our (devotion) onward by an easy path - G.

**न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति।**
**नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ।। ७।।**

न। सः। जीयते। मरुतः। न। हन्यते। न। स्रेधति। न। व्यथते। न। रिष्यति।
न। अस्य। रायः। उप। दस्यन्ति। न। ऊतयः। ऋषिम्। वा। यम्। राजानम्। वा। सुसूदथ।। ७।।

*न वह पराजित होता है, हे मरुतो!, न मारा जाता है,*
*न क्षीण होता है, न पीड़ित होता है, न बाधित होता है।*
*न इसके धन नितान्त नष्ट होते हैं, न (ही) समृद्धियां,*
*ऋषि का अथवा जिस राजा का, संचालन करते हो तुम।। ७।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जिस वेदार्थद्रष्टा ऋषि का अथवा जिस प्रजापालक राजा का तुम मार्गदर्शन करती हो, वह ऋषि अथवा राजा न तो किसी विरोधी से पराजित होता है, न वह किसी के द्वारा मारा जाता है, न वह क्षय को प्राप्त होता है, न वह पीड़ित होता है, न उसके कार्यों में बाधाएं उपस्थित होती है और न ही उस के ऐश्वर्य और समृद्धियां विनाश को प्राप्त होती हैं। तुम्हारे मार्गदर्शन में चलने वाला मनुष्य तुम्हारे संरक्षण में रहता हुआ निश्चिन्त होकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है।

टि. *न पराजित होता है* – **न जीयते।** न पराभाव्यते। जि जये ज्या वयोहानाव् इत्यस्य वा रूपम्। सा.। is never overcome - W. G.

*न क्षीण होता है* – **न स्रेधति।** न क्षीणो भवति – वे.। न क्षीयते – सा.। दया.।

*न बाधित होता है* – **न रिष्यति।** न हिंसितो भवति – वे.। न हिंस्यते। अत्र हिंसा बाधमात्रम्।

*न नितान्त नष्ट होते हैं* – **न उप दस्यन्ति।** नोपदस्तानि भवन्ति – वे.। नोपक्षीयन्ते – सा.।

*ऋषि का* – **ऋषिम्।** मन्त्रद्रष्टारं ब्राह्मणम् – सा.। वेदार्थविदम् – दया.। the sage - W.

*जिसका संचालन करते हो तुम* – **यम् सुषूदथ।** सुष्ठु प्रेरयथ – वे.। यं क्षारयथ प्रेरयथ सत्कर्मसु – सा.। यं रक्षथ – दया.। whom you direct - W. G.

**नियुत्वन्तो ग्रामजितो यथा नरोऽर्यमणो न मरुतः कवन्धिनः।**
**पिन्वन्त्युत्सं यद् इनासो अस्वरन् व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा।। ८।।**

नियुत्वन्तः। ग्रामऽजितः। यथा। नरः। अर्यमणः। न। मरुतः। कवन्धिनः।
पिन्वन्ति। उत्सम्। यत्। इनासः। अस्वरन्। वि। उन्दन्ति। पृथिवीम्। मध्वः। अन्धसा।। ८।।

*अश्वों वाले, (शत्रु)संघों को जीतने वाले जिस प्रकार सेनानी,*
*अरियों को वश में करने वालों जैसे, मरुत्, जलकलशों वाले।*
*पूरते हैं मेघ को जब, स्वामी शोर करते हैं,*

*गीला करते हैं पृथिवी को, मधु के अन्न से।। ८।।*

अश्वों के समान तीव्र गति वाली, शत्रुसंघों को जीतने वाले सेनानियों की तरह आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने वाली, अरियों को वश में करने वाले शूरों की तरह विरोधी शक्तियों को वश में करने वाली, जलकलशों अर्थात् वृष्टिजलों को धारण करने वाली परमेश्वर की सत्कर्मसाधक दिव्य शक्तियां जब मेघ को जलों से परिपूर्ण करती हैं, तो ऐश्वर्यों पर स्वामित्व करने वाली ये शक्तियां विपुल ध्वनि करती हैं और पृथिवी को मधुर जल की बोछार से गीला कर देती हैं, अथवा माधुर्ययुक्त अन्न को उत्पन्न करने वाले जलों से सींच देती हैं। परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां धरती पर जलों को बरसाकर हमें स्वादिष्ठ और पवित्र अन्न प्रदान करती हैं।

टि. *(शत्रु)संघों को जीतने वाले* - **ग्रामजितः**। संग्रामजितो मनुष्याः - वे.। संघात्मकस्य पदार्थस्य विश्लेषयितारः - सा.। ये ग्रामं जयन्ति ते - दया.। दुश्मनों के गाँव जीतने वाले - सात.। overcomers of multitudes - W. over- coming troops - G.

*अरियों को वश में करने वालों जैसे* - **अर्यमणः न**। उदाराः इव - वे.। अर्यमप्रभृतय आदित्या इव। दीप्ता इति शेषः। सा.। radiant as the Ādityas - W. friendly - G.

*जलकलशों वाले* - **कवन्धिनः**। उदकवन्तः - वे.। सा.। बहूदकाः - दया.। the dispensers of water - W. laden with their water-casks - G.

*पूरते हैं मेघ को* - **पिन्वन्ति उत्सम्**। पिन्वन्ति मेघम् - वे.। उत्सं कूपादिनिम्नप्रदेशं मेघं वा पिन्वन्ति प्याययन्त्युदकेन - सा.। fill the clouds - W. let the spring flow - G.

*मधु के अन्न से* - **मध्वः अन्धसा**। उदकस्य अन्नेन हेतुना - वे.। मध्वो मधुरस्योदकस्यान्धसा सारेण - सा.। with sweet (watery) sustenance - W. with floods of pleasant meath - G.

**प्रवत्वंतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वंती द्यौर् भंवति प्रयद्भ्यः।**
**प्रवत्वंतीः पथ्या अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वंन्तः पर्वता जीरदानवः।। ९।।**

प्रवत्वंती। इयम्। पृथिवी। मरुत्ऽभ्यः। प्रवत्वंती। द्यौः। भवति। प्रयत्ऽभ्यः।
प्रवत्वंतीः। पथ्याः। अन्तरिक्ष्याः। प्रवत्वंन्तः। पर्वताः। जीरऽदानवः।। ९।।

*विस्तीर्ण स्थान वाली यह पृथिवी (हो जाती है), मरुतों के लिये,*
*विस्तीर्ण स्थान वाला आकाश हो जाता है, प्रकृष्ट गति वालों के लिये।*
*विस्तीर्ण स्थान वाले मार्ग (हो जाते हैं, अन्तरिक्ष में स्थित,*
*विस्तीर्ण स्थान वाले, मेघ (हो जाते हैं), अविलम्ब जलदाता।। ९।।*

परमात्मा की सत्कर्मसाधक दिव्य शक्तियों की गति सर्वत्र है। पृथिवी उनके लिये अपना विस्तृत स्थान प्रदान करती है। द्युलोक उन्हें अपना विस्तृत स्थान समर्पित करता है। अन्तरिक्ष उनके लिये अपने भीतर विस्तृत मार्ग बना देता है। जलों को तुरन्त देने वाले मेघ उनके लिये अपने भीतर विशाल स्थान बना देते हैं। सभी उनका उदारता और विशालहृदयता से स्वागत करते हैं।

टि. *विस्तीर्ण स्थान वाली* - **प्रवत्वती**। विस्तीर्णा - वे.। प्रवन्तः प्रकर्षवन्तो विस्तीर्णाः प्रदेशा यस्यां सा प्रवत्वती - सा.। निम्नदेशयुक्ता - दया.। wide-extended earth. *Pravatvatī;* a set of

changes is here rung upon the double compound, *pra-vat,* having extent, extention, and *vat,* again, having or possessing, *pravadvat,* extensive, or it may imply, having pre-eminence. W. free is the earth with sloping ways, precipitous - G.

*प्रकृष्ट गति वालों के लिये* – **प्रयद्भ्यः**। गच्छद्भ्यः – वे.। प्रकर्षेण गच्छद्भ्यः – सा.। प्रयत्नं कुर्वद्भ्यः – दया.। for the spreading (winds) - W. for the rushing Ones - G.

*अविलम्ब जलदाता* – **जीरदानवः**। क्षिप्रोदकदानाः – वे.। जीरदानवः क्षिप्रदानाः – सा.। जीवनप्रदाः – दया.। quickly bestowing - W. with their running streams - G.

**यन् मरुतः सभरसः स्वर्णरः**
**सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः।**
**न वो ऽश्वाः श्रथयन्ताह सिस्रतः**
**सद्यो अस्याध्वनः पारम् अश्नुथ।। १०।। १५।।**

यत्। मरुतः। सऽभरसः। स्वःऽनरः। सूर्ये। उत्ऽइते। मदथ। दिवः। नरः।।
न। वः। अश्वाः। श्रथयन्त। अह। सिस्रतः। सद्यः। अस्य। अध्वनः। पारम्। अश्नुथ।। १०।।

*जब, हे मरुतो!, हे समान कार्यभार वालो!, हे सुखों का नेतृत्व करने वालो!,*
*सूर्य उदित होता है, हर्ष को प्राप्त होते हो तुम, हे सूर्य का नेतृत्व करने वालो।*
*नहीं तुम्हारे अश्व अलग होते हैं (जूए से कभी), गमन करने वाले (निरन्तर),*
*बिना विलम्ब किये, इस मार्ग के पार पहुँच जाते हो तुम।। १०।।*

परमेश्वर की सत्कर्मसाधक दिव्य शक्तियां परस्पर सहयोग से कार्यों के भारों को वहन करने वाली हैं। वे सुखों को सब के पास पहुँचाने वाली हैं। वे सूर्य का मार्गदर्शन करने वाली और प्रकाश तथा ज्ञान को सब के पास पहुँचाने वाली हैं। प्रकाश और ज्ञान के सूर्य का उदय होने पर इन शक्तियों को परम हर्ष का अनुभव होता है। निरन्तर गति करने वाले इनके अश्व कभी जूए से अलग नहीं होते, अर्थात् ये शक्तियां निरन्तर अपने कार्यों में जुटी रहती हैं और अविलम्ब ही अपने मार्ग के पार पहुँच जाती हैं, अर्थात् शीघ्र अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेती हैं।

टि. *हे समान कार्यभार वालो* – **सभरसः**। सभाराः – वे.। हे सहबलाः – सा.। समानपालन-पोषणाः – दया.। of combined strength - W. O bounteous - W.

*हे सुखों का नेतृत्व करने वालो* – **स्वःऽनरः**। सर्वनराः – वे.। सर्वस्य नेतारः – सा.। ये स्वः सुखं नयन्ति ते – दया.। leaders of the universe - W. radiant - G.

*हे सूर्य का नेतृत्व करने वालो* – **दिवः नरः**। हे दिवः नेतारः – वे.। हे द्युलोकस्य नेतारः – सा.। कामयमानाः सत्ये धर्मे नेतारः – दया.। guides of heaven - W. Heroes of the sky - G.

*नहीं अलग होते हैं (जूए से)* – **न श्रथयन्त**। नैव श्लथयन्ति। यद्वा न शिथिला भवन्ति। सा.। know no relaxation - W. weary not - G.

**अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः।**
**अग्निभ्राजसो विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः।। ११।।**

अंसेषु। वः। ऋष्टयः। पत्ऽसु। खादयः। वक्षःऽसु। रुक्माः। मरुतः। रथे। शुभः।
अग्निऽभ्राजसः। विऽद्युतः। गभस्त्योः। शिप्राः। शीर्षऽसु। विऽतताः। हिरण्ययीः।। ११।।

*कन्धों पर तुम्हारे बरछियां, पाँवों में नूपुर (शोभते हैं),*
*छातियों पर सोने के हार, हे मरुतो!, रथ पर सज्जाएं।*
*अग्नि की दीप्ति वाले विद्युत्सम वज्र, दोनों भुजाओं में (शोभते हैं),*
*उष्णीष सिरों पर धारण किये हुए, सुवर्ण से बने हुए।। ११।*

इस मन्त्र में परमेश्वर की निराकार निरञ्जन दिव्य बलवती शक्तियों का मानवीकरण करके उनका शस्त्रास्त्रों और सुवर्णाभरणों से सुशोभित रथारूढ़ योद्धाओं के रूप में वर्णन किया गया है। ये कन्धों पर बरछियां धारण किये हुए हैं। इनके पैरों में नूपुर शोभायमान हो रहे हैं। इनकी छातियों पर सुनहरे हार सुशोभित होते हैं। इनका रथ भली प्रकार सुसज्जित है। इनकी दोनों भुजाओं में अग्नि की आभा वाले विद्युत्सदृश वज्र सुशोभित हो रहे हैं। इन्होंने सिरों पर सुनहरे उष्णीष धारण किये हुए हैं।

टि. *सोने के हार* - **रुक्माः**। विकारे प्रकृतिशब्दः।। हाराः - सा.। सुवर्णालङ्काराः - दया.।

*रथ पर सज्जाएं* - **रथे शुभः**। भवतां रथे वाऽलङ्काराः - वे.। रथे मधुराप्रुषा आपः - सा.। रमणीये याने शुम्भमानाः - दया.। gems on your car - G.

*अग्नि की दीप्ति वाले वज्र* - **अग्निभ्राजसः विद्युतः**। अग्निदीप्तयः विद्युतः - वे.। अग्निदीप्ताः विद्युतः - सा.। अग्निर् इव प्रकाशमानाः तडितः - दया.। lightnings aglow with flame - G.

*उष्णीष सिरों पर* - **शिप्राः शीर्षसु**। शिप्राः शिरसः त्राणाय - वे.। शिरःसु शिप्राः उष्णीषमय्यः - सा.। शिरस्सु उष्णिषः - दया.। golden tiaras on your heads - W. visors upon heads - G.

**तं नाकम् अर्यो अगृभीतशोचिषं रुशत् पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ।**
**सम् अच्यन्त वृजनातित्विषन्त यत् स्वरन्ति घोषं विततम् ऋतायवः।। १२।।**

तम्। नाकम्। अर्यः। अगृभीतऽशोचिषम्। रुशत्। पिप्पलम्। मरुतः। वि। धूनुथ।
सम्। अच्यन्त। वृजना। अतित्विषन्त। यत्। स्वरन्ति। घोषम्। विऽततम्। ऋतऽयवः।। १२।।

*उस सुखलोक से, गमनशील, न छीने जा सकने वाले तेज वाले से,*
*शुचि फल को, हे मरुतो!, विविधतया हिलाकर गिरा लेते हो तुम।*
*संयुक्त हो जाते हैं वे (परस्पर), वीरकर्मों को प्रकाशित करते हैं जब,*
*उत्पन्न करते हैं घोष को, विस्तीर्ण को, ऋत से प्यार करने वाले।। १२।।*

हे सर्वत्र गमन करने वाली परमेश्वर की सत्कर्मसाधक दिव्य शक्तियो! तुम अपने सामर्थ्य से किसी के द्वारा भी तेजों से हीन न किये सकने वाले सुखलोक को कँपाकर उससे जल, प्रकाश, ज्ञान आदि शुचि पवित्र फलों को धरा पर निवास करने वाली प्रजाओं के लिये विविधतया हिलाकर इस प्रकार गिरा लेती हो, जिस प्रकार पीपल आदि वृक्षों को हिलाकर उनके फलों को गिरा लिया जाता है। हे दिव्य शक्तियो! जब तुम अपने वीरकर्मों को प्रकाशित करती हो, तो इस कार्य को मिलकर संयुक्त रूप से करती हो। ईश्वरीय सत्यनियम से प्यार करने वाली और उसका पालन करने वाली तुम अपने कर्मों को सम्पन्न करते समय दूर-दूर तक सुनाई देने वाला जयघोष करती हो।

टि. *सुखलोक से शुचि फल को विविधतया हिलाकर गिरा लेते हो तुम* - **नाकम् रुशत् पिप्पलम् वि धूनुथ**। आदित्यं शुक्लम् उदकं कम्पयथ - वे.। नाकम् आदित्यम्। नास्मिन्नकम् अस्तीति नाकः। रुशत् शुभ्रवर्णं पिप्पलम् उदकं विविधं धूनुथ चालयथ। अयं द्विकर्मकः। सा.। you agitate the heaven and (stir) the bright water - W. ye shake the vault of heaven for its shining fruit - G.

*गमनशील* - **अर्यः**। गन्तारः - वे.। सा.।

*न छीने जा सकने वाले तेज वाले से* - **अगृभीतशोचिषम्**। शत्रुभिर् अगृहीतबलम् - वे.। असुरैर् अनपहततेजस्कम् - सा.। जिसके तेज को कोई पकड़ न सके - जय.। of unchecked radiance - W. splendid beyond conception - G

*वीरकर्मों को प्रकाशित करते हैं जब* - **वृजना अतित्विषन्त यत्**। बलानि दीप्यन्ते च - वे.। यदा वृजना बलानि (समच्यन्त सङ्गता बलिनो भवथ। पश्चाद्) अतित्विषन्त दीप्ता भवथ। उभयत्र पुरुषव्यत्ययः। यद्वा। असुरा वृजना बलैः समच्यन्त अतित्विषन्त। यद्वा। उत्तरार्ध ऋत्विग्यजमानपरतया व्याख्येयः। यजमानादयो यदा समच्यन्त सङ्गता वृजना बलान्यतित्विषन्त च। सा.। (when you combine) your energies and are shining brilliantly - W. when they let their deeds of might flash forth - G.

*ऋत से प्यार करने वाले* - **ऋतायवः**। उदकम् इच्छन्तः - वे.। सा.। आत्मन ऋतम् इच्छवः - दया.। purposing to send down rain - W. the Pious Ones - G.

**युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः।**
**न यो युच्छति तिष्यो३ यथा दिवो३ऽस्मे रारन्त मरुतः सहस्रिणम्॥ १३॥**

युष्माऽदत्तस्य। मरुतः। विऽचेतसः। रायः। स्याम। रथ्यः। वयस्वतः।
न। यः। युच्छति। तिष्यः। यथा। दिवः। अस्मे इति। ररन्त। मरुतः। सहस्रिणम्॥ १३॥

*तुम्हारे द्वारा दिये हुए के, हे मरुतो!, हे विविध ज्ञानों वालो!,*
*धन के, होवें हम (स्वामी), रथों वाले, जीवन देने वाले के।*
*नहीं जो च्युत होता है, आदित्य जिस प्रकार द्युलोक से,*
*हममें रमण कराओ, हे मरुतो! सहस्रों की संख्या वाले उस धन को॥ १३॥*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हे विविध ज्ञानों की स्वामिनियो! हम उत्तम शरीररूपी रथों वाले बनकर जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले धनों के स्वामी बनें। हे प्रभु की दिव्य शक्तियो! तुम सहस्रों की संख्या वाले उस श्रेष्ठ धन को हममें रमण कराओ, हममें वास कराओ, जिसका कभी इस प्रकार पतन नहीं होता, जिस प्रकार सूर्य का आकाश से पतन नहीं होता।

टि. *हे विविध ज्ञानों वालो* - **विचेतसः**। सुमतयः - वे.। विविधप्रज्ञाः - सा.। विविधं चेतः संज्ञानं येषां ते - दया.। intelligent - W.

*रथों वाले* - **रथ्यः**। रथिनः - वे.। रथस्वामिनः - सा.। बहुरथादियुक्ताः - दया.। possessed of chariots - W. the drivers of the car - G.

जीवन देने वाले के - **वयस्वतः**। अन्नवतः - वे.। सा.। प्रशस्तं वयो जीवनं विद्यते यस्य तस्य - दया.। comprising food - W. of (riches) full of life - G.

*नहीं च्युत होता है* - **न युच्छति**। न रयिर् गच्छति - वे.। न च्यवते - सा.। न प्रमाद्यति - दया.। that vanishes not - W. G.

*आदित्य* - **तिष्यः**। प्रज्वलितः - वे.। आदित्यः - सा.। आदित्यः पुष्यनक्षत्रं वा - दया.। In its ordinary acceptation *Tiṣya* is the eighth lunar mansion : the appropriation is of some interest, as affording evidence of the existence of the astronomical divisions of the moon's path in the days of the Veda. W.

*हममें रमण कराओ* - **अस्मे रारन्त**। रयिम् अस्मासु रमयत - वे.। सा.। gratify us with infinite (riches) - W. let (that wealth) dwell with us - G.

**यूयं रयिं मरुतः स्पार्हवीरं यूयम् ऋषिम् अवथ सामविप्रम्।**
**यूयम् अर्वन्तं भरताय वाजं यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम्।। १४।।**

यूयम्। रयिम्। मरुतः। स्पार्हऽवीरम्। यूयम्। ऋषिम्। अवथ। सामऽविप्रम्।
यूयम्। अर्वन्तम्। भरताय। वाजम्। यूयम्। धत्थ। राजानम्। श्रुष्टिऽमन्तम्।। १४।।

*तुम (बढ़ाते हो) धन को, हे मरुतो!, कमनीय वीरसन्तति वाले को,*
*तुम मन्त्रद्रष्टा को बढ़ाते हो, साम मन्त्रों के गान में निपुण को।*
*तुम (देते हो) वेगवान् को, भरण-पोषण करने वाले के लिये, बल को,*
*तुम प्रदान करते हो शासक को, (प्रजाओं के कष्टों को) सुनने वाले को।। १४।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमात्मा की दिव्य शक्तियो! तुम सत्यनियमों का पालन करने वाले मनुष्यों के लिये कामना के योग्य वीर सन्तानों से युक्त धन की वृद्धि करती हो। तुम साममन्त्रों के गान में निपुण मन्त्रार्थद्रष्टाओं की अभिवृद्धि करती हो। तुम अपनी व्यवस्था के अधीन प्रजाओं को उनके दुःख-दर्द और कष्टों को सुनने वाला शासक प्रदान करती हो। तुम प्रजाओं का भरण-पोषण करने वाले शासक को वेग से युक्त बल प्रदान करती हो।

टि. *कमनीय वीरसन्तति वाले को* - **स्पार्हवीरम्**। स्पृहणीयवीरम् - वे.। स्पृहणीयैर् वीरैः पुत्र-भृत्यादिभिर् उपेतम् - सा.। अभिकाङ्क्षिता वीरा यस्मिन् - दया.। enviable posterity - W. longed-for heroes - G.

*तुम बढ़ाते हो* - **अवथ**। रक्षथ - वे.। सा.। दया.। you protect - W. ye further - G.

*साम मन्त्रों के गान में निपुण को* - **सामविप्रम्**। सामविप्रं नाम - वे.। साम्नां विविधं प्रेरयितारं यद्वा सामसहिता विप्रा यस्य तादृशम् - सा.। सामसु मेधाविनम् - दया.। learned in the *Sāma* - W. skilled in chanted verses - G.

*वेगवान् को* - **अर्वन्तम्**। अश्वम् - वे.। सा.। प्राप्नुवन्तम् - दया.।

*भरण-पोषण करने वाले के लिये* - **भरताय**। भरताय राज्ञे - वे.। देवान् बिभ्रते श्यावाश्वाय - सा.। धारणपोषणाय - दया.। to (me) the ministrant priest - W. ye give the Bharata - G.

*सुनने वाले को* - **श्रुष्टिमन्तम्**। श्रुष्टिमन्तं (राजानम्) - वे.। सुखवन्तं पुत्रम् इत्यर्थः - सा.।

prosperous - W. who quickly listens - G.

**तद् वो यामि द्रविणं सद्यऊतयो येना स्वर्ण ततनाम नॄँर् अभि।**
**इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो यस्य तरेम तरसा शतं हिमाः।। १५।। १६।।**

तत्। वः। यामि। द्रविणम्। सद्यःऽऊतयः। येन। स्वः। न। ततनाम। नॄन्। अभि।
इदम्। सु। मे। मरुतः। हर्यत। वचः। यस्य। तरेम। तरसा। शतम्। हिमाः।। १५।।

*उसको तुम्हारे माँगता हूँ मैं धन को, हे तुरन्त रक्षा करने वालो!,*
*जिससे सूर्य की तरह, विस्तृत हो जाएं हम, मनुष्यों की ओर।*
*इसको भली प्रकार मेरे, हे मरुतो!, प्यार करो तुम स्तोत्र को,*
*जिसके, पार कर जाएं हम बल से, सौ शीत ऋतुओं को।। १५।।*

हे सत्कर्मों की साधक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हे अविलम्ब रक्षा, वृद्धि आदि करने वालियो! मैं तुम्हारे उस सुधन की याचना करता हूँ, जिससे हम मनुष्यों के पास आकर उनको इस प्रकार सुख प्रदान करें, जिस प्रकार सूर्य अपनी रश्मियों से सब को सुख प्रदान करता है। तुम मेरे इस स्तोत्र को प्रसन्नतापूर्वक भली प्रकार स्वीकार करो, जिससे शक्ति पाकर हम सौ शीत ऋतुओं को पार कर जाएं, सौ संवत्सरों तक सुखपूर्वक कर्म करते हुए जीवन व्यतीत करें।

टि. *हे तुरन्त रक्षा करने वालो* - **सद्यऊतयः**। हे क्षिप्रगन्तारः - वे.। तदानीम् एव रक्षा येषां ते तादृशाः। सद्योगमना वा। सा.। क्षिप्राणि रक्षणादीनि येषां ते - दया.। prompt to grant protection - W. most swift to succour - G.

*सूर्य की तरह* - **स्वः न**। आदित्यः इव - वे.। आदित्य इव रश्मीन् - सा.। स्वः सुखम् इव - दया.। as the sun spreads wide (with his rays) - W. like as the sun - G.

*प्यार करो तुम स्तोत्र को* - **हर्यत वचः**। कामयत वचनम् - वे.। स्तोत्रं कामयध्वम् - सा.। be propitiated by this my praise - W. accept graciously this hymn - G.

*पार कर जाएं हम सौ शीत ऋतुओं को* - **तरेम शतम् हिमाः**। शतसंवत्सरान् तरेम - वे.। शतसंख्याकान् हेमन्तान् तरेम। शतसंवत्सरं जीवेमेत्यर्थः। सा.। हिमाः वर्षाणि - दया.। may we pass over a hundred years - W. we may live a hundred winters - G.

## सूक्त ५५

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - १-९ जगती, १० त्रिष्टुप्। दशर्चं सूक्तम्।

**प्रयज्यवो मरुतो भ्राजदृष्टयो बृहद् वयो दधिरे रुक्मवक्षसः।**
**ईयन्ते अश्वैः सुयमेभिर् आशुभिः शुभं याताम् अनु रथा अवृत्सत।। १।।**

प्रऽयज्यवः। मरुतः। भ्राजत्ऽऋष्टयः। बृहत्। वयः। दधिरे। रुक्मऽवक्षसः।
ईयन्ते। अश्वैः। सुऽयमेभिः। आशुऽभिः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत।। १।।

*परोपकार के उत्कट अभिलाषी मरुत्, दीप्त आयुधों वाले,*
*महान् जीवन को प्रदान करते हैं, सुवर्णयुक्त वक्षःस्थलों वाले।*

*गमन करते हैं अश्वों से, सुदान्तों से, आशु गति वालों से,*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। १।।*

प्रदीप्त आयुधों वाले, छाती पर सुवर्णाभरणों को धारण करने वाले योद्धाओं की तरह शोभा को धारण करने वाली, परोपकार की तीव्र इच्छा वाली, सत्कर्मों की साधक परमेश्वर की दिव्य शक्तियां सत्यनियमों का पालन करने वाले मनुष्यों को उच्च जीवन प्रदान करती हैं। जब वे परहित कर्मों के लिये प्रयाण करती हैं, तो उनके सब साधन अनुकूलता से उनका साथ देते हैं।

इस और अन्य अनेक मन्त्रों में मरुतों के आयुधों, आभूषणों, अश्वों, रथों आदि का वर्णन हुआ है। यास्क आदि नैरुक्तों के अनुसार देवता स्वयं ही अपना रथ, अश्व, आयुध आदि होते हैं। ''आत्मैवैषां रथो भवति, आत्माश्वः, आत्मायुधम्, आत्मेषवः, आत्मा सर्वं देवस्य'' – नि.७.४।

टि. *परोपकार के उत्कट अभिलाषी* – **प्रयज्यवः**। प्रकर्षेण यष्टव्याः – वे.। प्रकर्षेण यष्टारः – सा.। प्रकृष्टयज्यवः सङ्गन्तारो मनुष्याः – दया.। the adorable - W. rushing onward - G.

*महान् जीवन को* – **बृहत् वयः**। बृहत् अन्नम् – वे.। प्रभूतं वयो यौवनलक्षणं प्रभूतम् अन्नं वा – सा.। महत् कमनीयं जीवनम् – दया.। vigorous existence - W. high power of life - G.

*गमन करते हैं* – **ईयन्ते**। गच्छन्ति – वे.। प्राप्यन्ते – सा.। दया.। they hasten - G.

*कल्याणार्थ जाते हुओं के* – **शुभं याताम्**। कल्याणं गच्छतः – वे.। शुभं शोभनं यथा भवति तथा। यद्वा। उदकम् अभिलक्ष्य यातां गच्छताम्। सा.। धर्म्यं व्यवहारं गच्छताम् – दया.। for our good, of the quick-moving - W. as they went to victory - G.

*रथ गति करते हैं* – **रथाः अवृत्सत**। वृतु वर्तने। 'to turn, turn around, revolve, roll' - MW.।। वर्तन्ते रथाः – वे.। may the cars arrive - W. cars moved onward - G.

**स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद बृहन् महान्त उर्विया वि राजथ।**
**उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा शुभं यातामनु रथा अवृत्सत।। २।।**

स्वयम्। दधिध्वे। तविषीम्। यथा। विद। बृहत्। महान्तः। उर्विया। वि। राजथ।
उत। अन्तरिक्षम्। ममिरे। वि। ओजसा। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत।। २।।

*स्वयं धारण करते हो तुम बल को, जैसे जानते हो तुम,*
*अत्यधिक, हे महानो!, विस्तार के साथ विराजते हो तुम।*
*और अन्तरिक्ष को मापते हैं वे, विशेषेण बल से (अपने),*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। २।।*

हे सत्कर्मसाधक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जैसा तुम्हारा उत्कृष्ट ज्ञान है, उसी के अनुरूप तुम्हारा उत्तम बल है। हे प्रकृष्ट माहात्म्य वालियो! तुम अत्यधिक विस्तृत शोभा को प्राप्त हो रही हो। तुम अपने सामर्थ्य से अन्तरिक्ष को भी माप डालती हो। जब तुम परोपकार के लिये प्रयाण करती हो, तो तुम्हारे समस्त साधन भी अनुकूलता से तुंम्हारे साथ चलते हैं।

टि. *जैसे जानते हो तुम* – **यथा विद**। यथा प्रत्यक्षम् अहं वेद्मि – वे.। यथा विद जानीथ। अप्रतिबद्धसामर्थ्या इत्यर्थः। सा.। यथा विजानीत – दया.। चूँकि तुम बहुत ज्ञान प्राप्त करते हो –

सात.। according as you judge (fit) - W. as ye wist - G.

*विस्तार के साथ विराजते हो तुम* – **उर्विया वि राजथ।** विस्तीर्णतया वि राजथ – वे.। यूयम् उर्विया उरवः सन्तः वि राजथ – सा.। you shine vast - W. wide you shine abroad - G.

*मापते हैं वे* – **ममिरे वि।** मा माने।। व्याप्ताः – वे.। सा.। व्याप्नुवन्ति – दया.। you pervade - W. have measured out the sky - G.

**साकं जाताः सुभ्वः साकम् उक्षिताः श्रिये चिद् आ प्रतरं वावृधुर् नरः।**
**विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः शुभं याताम् अनु रथा अवृत्सत।। ३।।**

साकम्। जाताः। सुऽभ्वः। साकम्। उक्षिताः। श्रिये। चित्। आ। प्रऽतरम्। ववृधुः। नरः।
विऽरोकिणः। सूर्यस्यऽइव। रश्मयः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत।। ३।।

*साथ-साथ उत्पन्न हुए, होनहार, साथ-साथ अभिषिक्त,*
*शोभा के लिये ही सब ओर, अत्यधिक बढ़ते हैं मार्गदर्शक।*
*विशेष दीप्तियों वाले, सूर्य की जिस प्रकार रश्मियां,*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। ३।।*

परमपिता परमेश्वर की ये सामर्थ्यवान् उन्नतिशील दिव्य शक्तियां उसके साथ ही उत्पन्न होती हैं। ये परमेश्वर के द्वारा साथ-साथ ही सत्कर्मों के लिये अभिषिक्त होती हैं। ये मार्गदर्शक दिव्य शक्तियां सर्वत्र अत्यधिक वृद्धि को प्राप्त होती हैं, और इससे इनकी शोभा होती है। सूर्य की देदीप्यमान रश्मियों की तरह ये भी विशेष दीप्तियों वाली हैं। जब ये दूसरों की भलाई के लिये प्रयाण करती हैं, तो इनके सब साधन अनुकूलता से इनका साथ देते हैं।

टि. *होनहार* – **सुभ्वः।** शोभनभवनाः – वे.। सुष्ठु भवन्तः, महान्त इत्यर्थः – सा.। ये शोभना भवन्ति – दया.। mighty - W. strong - G.

*अभिषिक्त* – **उक्षिताः।** निषिक्ताः – वे.। सेक्तारो वर्षकाः – सा.। सिक्ताः – दया.। co-dispensers of moisture - W. have waxed great - G.

*अत्यधिक* – **प्रतरम्।** शीघ्रम् – वे.। प्रकृष्टतरम् – सा.। प्रकर्षेण दुःखात् तारकं व्यवहारम् – दया.। exceedingly - W. more and more - G.

*विशेष दीप्तियों वाले* – **विरोकिणः।** विरोचमाना आभरणैः – वे.। सा.। विविधो रोको रुचिर् विद्यते येषु ते – दया.। radiant - W. resplendent - G.

**आभूषेण्यं वो मरुतो महित्वनं दिदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षणम्।**
**उतो अस्माँ अमृतत्वे दधातन शुभं याताम् अनु रथा अवृत्सत।। ४।।**

आऽभूषेण्यम्। वः। मरुतः। महिऽत्वनम्। दिदृक्षेण्यम्। सूर्यस्यऽइव। चक्षणम्।
उतो इति। अस्मान्। अमृतऽत्वे। दधातन। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत।। ४।।

*सर्वतः वर्धापन के योग्य है तुम्हारा, हे मरुतो!, बडप्पन,*
*अत्यन्त दर्शनीय है सूर्य (के दर्शन) की तरह, दर्शन (तुम्हारा)।*
*अपि च हमको, अमरता में स्थापित कर दो तुम, (हे मरुतो!),*

*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। ४।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमात्मा की दिव्य शक्तियो! तुम्हारा माहात्म्य सर्वदा बढ़ाए जाने और प्रशंसा किये जाने के योग्य है। तुम्हारा स्वरूप सूर्य के बिम्ब की तरह सदा चिन्तन और मनन के योग्य है। तुम सदा हमपर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखो और हमें अमरता में स्थापित कर दो। हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब तुम प्रजाओं के हित के लिये ब्रह्माण्ड में गति करती हो, तो तुम्हारे सब साधन भी तुम्हारे साथ ही गति करते हैं।

टि. *सर्वतः वर्धापन के योग्य* - **आभूषेण्यम्।** स्तुतिभिर् आभूषणीयम् - वे.। आभूषेण्यं स्तुत्यम् - सा.। अलङ्कर्तव्यम् - दया.। to be glorified - W. deserves to be adored - G.

*अत्यन्त दर्शनीय* - **दिदृक्षेण्यम्।** दर्शनीयम् - वे.। सा.। द्रष्टुं योग्यम् - दया.। to be contemplated - W. sight to be longed for - G.

*सूर्य (के दर्शन) की तरह दर्शन (तुम्हारा)* - **सूर्यस्य इव चक्षणम्।** सूर्यस्येव तेजः - वे.। सूर्यस्य रूपम् इव - सा.। चक्षणं प्रकाशनम् - दया.। like the orb of the sun - W. like the shining of the sun - G.

**उद् ईरयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं वर्षयथा पुरीषिणः।**
**न वो दस्रा उप दस्यन्ति धेनवः शुभं यातां अनु रथा अवृत्सत।। ५।। १७।।**

उत्। ईरयथ। मरुतः। समुद्रतः। यूयम्। वृष्टिम्। वर्षयथ। पुरीषिणः।
न। वः। दस्राः। उप। दस्यन्ति। धेनवः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत।। ५।।

*ऊपर को प्रेरित करते हो तुम, हे मरुतो!, समुद्र से (जलों को),*
*तुम वृष्टि को बरसाते हो (धरती पर), हे जलों के स्वामियो।*
*नहीं तुम्हारी, हे दुष्टहन्ताओ!, सूखती हैं (कभी मेघरूपी) गौएं,*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। ५।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जलवृष्टि की प्रक्रिया में तुम मुख्य भूमिका निभाती हो। हे जलों वालियो! तुम समुद्र से जलों को ऊपर की ओर प्रेरित करती हो। फिर तुम उन जलों को धरती पर बरसा देती हो। हे दुष्टों का हनन करने वालियो! जलों को देने वाली तुम्हारी ये मेघरूपी गौएं कभी नहीं सूखतीं, जलों को बरसाना कभी बन्द नहीं करतीं। हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब तुम प्रजाओं के हितसाधन के लिये ब्रह्माण्ड में गमन करती हो, तो तुम्हारे सब साधन भी तुम्हारे साथ ही गति करते हैं। तुम एक सुनिश्चित व्यवस्था के अधीन ये समस्त कार्य सम्पन्न करती हो।

टि. *ऊपर को प्रेरित करते हो तुम* - **उत् ईरयथ।** उत् गमयथ - वे.। प्रेरयथ वृष्टिम् - सा.। उत्कृष्टं प्रेरयथ। अत्र संहितायाम् इति दीर्घः। दया.। you send - W. ye uplift - G.

*समुद्र से* - **समुद्रतः।** समुद्द्रवणसाधनाद् अन्तरिक्षात् - सा.। अन्तरिक्षात् - दया.। from the firmament - W. from the Ocean - G.

*हे जलों के स्वामियो* - **पुरीषिणः।** हे उदकवन्तः - वे.। पृणतेः पृणातेर् वा पुरीषम् उदकम्। हे तद्वन्तः। सा.। बहुविधं पोषणं विद्यते येषु ते - दया.। charged with the waters - W. fraught with

vaporous moisture - G.

*हे दुष्टहन्ताओ* – **दस्राः।** हे दर्शनीयाः – वे.। शत्रूणाम् उपक्षपयितारो वा – सा.। उपक्षेतारः – दया.। destroyers of foes - W. ye Wonder-Workers - G.

*नहीं सूखती हैं* – **न उप दस्यन्ति।** न शुष्यन्ति – वे.। सा.। न क्षयन्ति – दया.। कभी नाश को प्राप्त न होवें – जय.। क्षीण नहीं होतीं – सात.। are never dry - W.G.

*(मेघरूपी) गौएं* – **धेनवः।** मेघरूपाः धेनवः – वे.। प्रीणयितारो मेघाः – सा.। धेनवः वाचः – दया.। गौएं या वाणियां – जय.। milch-kine - W. G.

**यद् अश्वा॑न् धूर्षु पृष॑ती॒र् अयु॑ग्ध्वं हि॒रण्यया॒न् प्रत्यत्काँ॒ अमु॑ग्ध्वम्।**
**विश्वा॒ इत् स्पृधो॑ मरुतो॒ व्य॑स्यथ॒ शुभं॑ या॒ताम् अनु॒ रथा॑ अवृत्सत।। ६।।**

यत्। अश्वा॑न्। धूःऽसु। पृष॑तीः। अयु॑ग्ध्वम्। हि॒रण्यया॑न्। प्रति॑। अत्का॑न्। अमु॑ग्ध्वम्।
विश्वाः॑। इत्। स्पृधः॑। म॒रु॒तः॒। वि। अ॒स्य॒थ॒। शुभ॑म्। या॒ताम्। अनु॑। रथाः॑। अ॒वृ॒त्स॒त॒।। ६।।

*जब अश्वों को जूओं पर, बहुवर्णहरिणीरूपियों को, जोतते हो तुम,*
*सुवर्णमयों को कवचों को (भी), धारण करते हो तुम (शरीरों पर)।*
*सब को ही स्पर्धा करने वालियों को, हे मरुतो!, परास्त करते हो तुम,*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। ६।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब तुम आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये बहुवर्ण अश्वों से जुते हुए रथों पर आरोहण करने वाले और शरीरों पर कवचों को धारण करने वाले योद्धाओं की तरह प्रयाण करती हो, तो तुम सभी आसुरी शक्तियों को तहस-नहस कर डालती हो। प्रजाओं का कल्याण करने के लिये जब तुम ब्रह्माण्ड में गति करती हो, तो तुम्हारे सहायक साधन भी अनुकूलता से तुम्हारा अनुगमन करते हैं।

टि. *अश्वों को बहुवर्णहरिणीरूपियों को* – **अश्वान् पृषतीः।** अश्वान् पृषतीः च – वे.। अश्वान्। कीदृशान् अश्वान्। पृषतीः। पृषत्यो मरुताम् इत्युक्तत्वात्। पृषद्वर्णा वडवाः। सारङ्गी वात्राश्वशब्द-वाच्या। सा.। spotted mares - W. spotted deer to be your steeds - G.

*कवचों को धारण करते हो तुम* – **प्रति अत्कान् अमुग्ध्वम्।** कवचान् अङ्गेषु प्रति अमुग्ध्वम् – वे.। कवचान् प्रत्यमुञ्चत – सा.। you lay aside your (golden) breast-plates - W. you put your (golden) mantles on - G.

*स्पर्धा करने वालियों को परास्त करते हो तुम* – **स्पृधः वि अस्यथ।** शत्रून् उत्क्षिपथ – वे.। संग्रामान् विक्षिपथ – सा.। स्पृधः याः स्पर्ध्यन्ते ताः संग्रामा वा विशेषेण प्रचालयत – दया.। you dissipate all hostility - W. you disperse all enemies abroad - G.

**न पर्व॑ता॒ न न॒द्यो॑ वरन्त वो॒ यत्राचि॑ध्वं मरुतो॒ गच्छ॒तेद् उ॒ तत्।**
**उ॒त द्यावा॑पृथि॒वी या॑थना॒ परि॒ शुभं॑ या॒ताम् अनु॒ रथा॑ अवृत्सत।। ७।।**

न। पर्व॑ताः। न। न॒द्यः॑। व॒र॒न्त॒। वः॒। यत्र॑। अचि॑ध्वम्। म॒रु॒तः॒। गच्छ॑त। इत्। ॐ इति॑। तत्।
उ॒त। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। या॒थ॒न॒। परि॑। शुभ॑म्। या॒ताम्। अनु॑। रथाः॑। अ॒वृ॒त्स॒त॒।। ७।।

*न पर्वत, न नदियां, रोक सकती हैं तुमको,*
*जहाँ जाना चाहते हो तुम, हे मरुतो!, चले ही जाते हो वहाँ।*
*और द्युलोक और भूलोक के, गमन करते हो तुम सब ओर,*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। ७।।*

हे परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियो! तुम्हें न तो पर्वत रोक सकते हैं और न ही नदियां। जहाँ जाने का तुम निश्चय कर लेती हो, वहाँ चली ही जाती हो। तुम्हारी गति तो सर्वत्र है। तुम तो द्युलोक और भूलोक के भी सब ओर गमन करती हो। जब तुम प्रजाओं के कल्याण के लिये ब्रह्माण्ड में गमन करती हो, तो तुम्हारे सहायक साधन भी तुम्हारे साथ-साथ चलते हैं।

टि. *न रोक सकती हैं तुमको* - **न वरन्त।** न वारयन्ति - वे.। दया.। न वारयन्तु - सा.। let not arrest you - W. Neither ... nor keep you back - G.

*जहाँ जाना चाहते हो तुम* - **यत्र अचिध्वम्।** यत्र गन्तुं सङ्कल्पयथ - वे.। यस्मिन् यज्ञादिस्थाने जानीथ सङ्कल्पयथ - सा.। यत्र प्राप्नुत गच्छथ - दया.। whither you purpose - W. whither ye have resolved - G.

*वहाँ* - तत्। तत् स्थानम्, तत्र।। तत्र - वे.। तत् स्थानम् - सा.। thither - W. G.

**यत् पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतनं यद् उद्यते वसवो यच् च शस्यते।**
**विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं याताम् अनु रथा अवृत्सत।। ८।।**

यत्। पूर्व्यम्। मरुतः। यत्। च। नूतनम्। यत्। उद्यते। वसवः। यत्। च। शस्यते।
विश्वस्य। तस्य। भवथ। नवेदसः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत।। ८।।

*जो पुरातन है, हे मरुतो!, और जो है नूतन,*
*जो कहा जाता है, हे वासको!, और जो उपदेश किया जाता है।*
*सबके उसके हो तुम, भली प्रकार जानने वाले,*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। ८।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जो पुरातन ज्ञान-विज्ञान और पदार्थ हैं और जो नूतन ज्ञान-विज्ञान और पदार्थ हैं, जो कुछ विद्वानों के द्वारा कहा जाता है और जो कुछ उपदेश किया जाता है, उसे तुम भली प्रकार जानती हो। जब तुम प्रजाओं के कल्याण के लिये जाती हो तो तुम्हारे साधन भी तुम्हारा अनुगमन करते हैं।

टि. *पुरातन* - **पूर्व्यम्।** प्रत्नम् - वे.। पूर्वतनं पूर्वम् अनुष्ठितं यत् कार्यम् अस्ति तद् इत्यर्थः - सा.। पूर्वैर् विद्वद्भिर् निष्पादितम् - दया.। of old - W. ancient - G.

*जो कहा जाता है* - **यत् उद्यते।** यद् ऋग्भिः अभिधीयते - वे.। यद् उद्यते ऊर्ध्वं प्राप्यते - सा.। यत् कथ्यते - दया.। whatever (hymn) is recited - W. whate'er is spoken - G.

*जो उपदेश किया जाता है* - **यत् शस्यते।** यत् शस्त्रैः शस्यते - वे.। यत् शंसनं क्रियते - सा.। यत् स्तूयते - दया.। whaever prayer is repeated - W. what is chanted forth - G.

*भली प्रकार जानने वाले* - **नवेदसः।** न विपरीतं विदन्तीति नवेदसः। वेत्तेर् औणादिको

ऽसुन्प्रत्ययः। ऋ. १.३४.१ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।। जानन्तः - वे.। सा.। न विद्यते वेदो वित्तं येषां ते - दया.। recognisant of - W. who take cognisance of - G.

**मृळत नो मरुतो मा वधिष्टनास्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन।**
**अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन शुभं याताम् अनु रथा अवृत्सत।। ९।।**

मृळत। नः। मरुतः। मा। वधिष्टन। अस्मभ्यम्। शर्म। बहुलम्। वि। यन्तन।
अधि। स्तोत्रस्य। सख्यस्य। गातन। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत।। ९।।

*कृपा करो हमपर, हे मरुतो!, मत हिंसित करो (हमको),*
*हमें सुख अत्यधिक, विविध प्रकार से प्रदान करो तुम।*
*अधिकता से स्तोत्र को, सख्य को (हमारे), स्वीकार करो तुम,*
*कल्याणार्थ जाते हुओं के, अनुकूलता से रथ गति करते हैं।। ९।।*

हे परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियो! तुम अपनी कृपादृष्टि सदा हमपर बनाए रखो। तुम कभी भी हमें पीड़ित मत करो। तुम अत्यधिक मात्रा में विविध प्रकार के सुख हमें प्रदान करती रहो। हम उपासक जिन स्तोत्रों का तुम्हारे लिये गान करें और तुम्हारे साथ जो मित्रता की अभिलाषा व्यक्त करें, उसे तुम सहर्ष स्वीकार करो। प्रजाओं के कल्याण के लिये ब्रह्माण्ड में गमन करने वालियों के तुम्हारे सभी साधन तुम्हारा सहयोग करते रहें।

टि. *कृपा करो हमपर* - **मृळत नः।** अस्मान् सुखयत - वे.। सा.। दया.। Send us felicity - W. Be gracious unto us - G.

*अधिकता से स्तोत्र को, सख्य को स्वीकार करो तुम* - **अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन।** अधि गच्छत च स्तोत्रं सख्यं च - वे.। स्तोत्रं सख्यं अधिगच्छत - सा.। प्रशंसितस्य सख्युर् भावस्य प्रशंसत - दया.। हमारी स्तुतियोग्य मित्रता को तुम जान लो - सात.। reward our adoration by your friendship -W. Pay your due regard unto our friendship and our praise - G.

**यूयम् अस्मान् नयत वस्यो अच्छा निर् अंहतिभ्यो मरुतो गृणानाः।**
**जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। १०।। १८।।**

यूयम्। अस्मान्। नयत। वस्यः। अच्छ। निः। अंहतिऽभ्यः। मरुतः। गृणानाः।
जुषध्वम्। नः। हव्यऽदातिम्। यजत्राः। वयम्। स्याम। पतयः। रयीणाम्।। १०।।

*तुम हमें ले चलो, श्रेष्ठ वास की ओर,*
*निकालकर विपदाओं से, हे मरुतो!, स्तुति किये जाते हुए।*
*सेवन करो तुम, हमारे आहुतिदान का, हे पूजनीयो!,*
*हम हो जाएं स्वामी धनों के, (दानयोग्यों के)।। १०।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम हमारे द्वारा स्तुति की जाती हुई हमें विपत्तियों और संकटों से मुक्त कराकर उत्तम स्थान की ओर, स्वर्ग की ओर, ब्रह्मलोक की ओर ले चलो। हे पूजनीयो! हम जो हवियां और नैवेद्य तुम्हें समर्पित करते हैं, तुम उन्हें सहर्ष स्वीकार करो। तुम्हारी कृपा से हम उन धनों के स्वामी बनें, जिन्हें हम दूसरों की सहायता के लिये दे सकें।

टि. *श्रेष्ठ वास की ओर* - **वस्यः अच्छ।** अभ्युदयं प्रति - वे.। वस्यो वसीयो धनं स्वर्गादि-लक्षणं स्थानं वाच्छाभिलक्ष्य - सा.। वस्यः वसीयसो ऽतिधनाढ्यान् - दया.। बसने के लिये योग्य जगह की ओर - सात.। to opulence - W. to higher fortune - G.

*निकालकर विपदाओं से* - **निः अंहतिभ्यः।** निः निर्गमय्य अंहतिभ्यो विपद्भ्यः।। पापेभ्यः निः नयत - वे.। पापेभ्यो निर्णयत निर्गमयत - सा.। दुर्दशा से हटाकर . सात.। extricate us from sin - W. deliver us from afflictions - G.

*स्तुति किये जाते हुए* - **गृणानाः।** स्तूयमानाः - वे.। कर्मणि कर्तृप्रत्ययः - सा.।

*आहुतिदान का* - **हव्यदातिम्।** हविषां दानम् - वे.। हविर्दानवन्तं यज्ञम् - सा.। दातव्यदानम् - दया.। offered oblation - W. the gifts we bring you - G.

## सूक्त ५६

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - १,२,४-६,८,९ बृहती, ३,७ सतोबृहती। नवर्चं सूक्तम्।

**अग्ने॒ शर्ध॑न्त॒म् आ ग॒णं पि॒ष्टं रु॒क्मेभि॑र् अ॒ञ्जिभि॑ः।**
**विशो॑ अ॒द्य म॒रुता॑म् अव॑ ह्वये दि॒वश् चि॑द् रोच॒नाद् अधि॑।। १।।**

अग्ने॑। शर्ध॑न्तम्। आ। ग॒णम्। पि॒ष्टम्। रु॒क्मेभि॑ः। अ॒ञ्जिभि॑ः।
विश॑ः। अ॒द्य। म॒रुता॑म्। अव॑। ह्व॒ये। दि॒वः। चि॒त्। रो॒च॒नात्। अधि॑।। १।।

*हे अग्ने!, पराभिभूत करते हुए को, सब ओर से गण को,*
*शोभायमान को, सुवर्ण से बने हुओं से, आभरणों से।*
*प्रजाओं को आज मरुतों की, इधर बुलाता हूँ मैं,*
*द्युलोक से, प्रकाशमान से।। १।।*

हे सत्यमार्ग पर आगे ले चलने वाले जगदीश्वर! सत्कर्मों में सहायक तेरी दिव्य शक्तियों का समूह दुष्ट आसुरी शक्तियों को पराभूत करने वाला है। मैं आप का उपासक सुनहरे आभूषणों के समान उत्तम गुणों से सुशोभित प्रजाभूत तेरी इन शक्तियों को प्रकाशमान द्युलोक से इस ओर धरती पर प्रजाओं के दुःखों के निवारण और उनमें सुख के संचार के लिये बुलाता हूँ।

टि. *पराभूत करते हुए को* - **शर्धन्तम्।** वेगम् अनुतिष्ठन्तम् - वे.। शर्धन्तं शत्रून् अभिभवन्तम् - सा.। बलवन्तम् - दया.। victorious - W. valorous - G.

*शोभायमान को* - **पिष्टम्।** आलिप्तम् - वे.। अवयवितं युक्तम् इत्यर्थः - सा.। अवयवीभूतम् - दया.। decorated - W. adorned - G.

*सुवर्ण से बने हुओं से, आभरणों से* - **रुक्मेभिः अञ्जिभिः।** रुक्ममयैः आभरणैः - वे.। रुक्मै रोचमानैर् अञ्जिभिर् आभरणैः - सा.। रुक्मेभिः रोचमानैः सुवर्णादिभिर् वा, अञ्जिभिः कमनीयैः - दया.। with brilliant ornaments - W. with ornaments of gold - G.

**यथा॑ चि॒न् मन्य॑से हृ॒दा तद् इन् मे॑ जग्मुर् आ॒शस॑ः।**

**ये ते नेदिष्ठं हवनान्यागमन् तान् वर्ध भीमसंदृशः।। २।।**

यथा। चित्। मन्यसे। हृदा। तत्। इत्। मे। जग्मुः। आऽशसः।
ये। ते। नेदिष्ठम्। हवनानि। आऽगमन्। तान्। वर्ध। भीमऽसंदृशः।। २।।

*जिस प्रकार से भी सोचता है तू, हृदय से,*
*उस प्रकार से ही, मेरी गति करती हैं आशाएं।*
*जो (मरुत्) तेरे निकटतम, बुलावों पर गमन करते हैं,*
*उनको बढ़ा तू, भयङ्कर आकृति वालों को।। २।।*

हे सब को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले परमेश्वर! मेरी आशाएं, मेरी आकांक्षाएं तेरी सोच के अनुरूप फलवती होती हैं। जब तू उन्हें पूर्ण करना चाहता है, तो वे पूर्ण हो ही जाती हैं और जब तू उन्हें पूर्ण करना नहीं चाहता, तो वे कदापि पूरी नहीं होतीं। यह सब तू अपनी दिव्य शक्तियों के माध्यम से करता है। हे सर्वेश्वर! ये तेरी जो दिव्य शक्तियां अत्यन्त निकटता से तेरे आदेशों का पालन करती हैं, दुष्टों के लिये भयङ्कर आकृति वाली इन शक्तियों का तू सब प्रकार से संवर्धन कर।

टि. *सोचता है तू हृदय से* - **मन्यसे हृदा**। पूजयसि मरुतः हृदयेन - वे.। हृदयेन मरुतो मन्यसे। अतिपूजितं जानासि। तेष्वादरं करोषीत्यर्थः। सा.। thou honourest in thy heart - W. thou thinkest in thy heart - G.

*मेरी गति करती हैं आशाएं* - **मे जग्मुः आशसः**। मे गच्छन्तु मरुतः आशंसनीयाः - वे.। मदर्थं गच्छन्तु आशसः आशंसितार इच्छन्तः शत्रून् हिंसन्तो वा - सा.। आशसः ये आशंसन्ति ते प्राप्नुवन्ति - दया.। may they come to me as benefactors - W. thither my wishes also tend - G.

*बुलावों पर गमन करते हैं* - **हवनानि आगमन्**। हवींषि च आगच्छन्ति - वे.। तव आह्वानानि श्रुत्वागच्छन्ति - सा.। who come to thy invocations - W. have come to invoking calls - G.

*भयङ्कर आकृति वालों को* - **भीमसंदृशः**। भीमरूपान् - वे.। भयङ्करदर्शनान् - सा.।

**मीळ्हुष्मतीव पृथिवी पराहता मदन्त्येत्यस्मद् आ।**
**ऋक्षो न वो मरुतः शिमीवाँ अमो दुध्रो गौरिव भीमयुः।। ३।।**

मीळ्हुष्मतीऽइव। पृथिवी। पराऽहता। मदन्ती। एति। अस्मत्। आ।
ऋक्षः। न। वः। मरुतः। शिमीऽवान्। अमः। दुध्रः। गौःऽइव भीमऽयुः।। ३।।

*दानशीला स्त्री की तरह, पृथिवी, अत्यन्त ताड़िता (वृष्टि से),*
*प्रसन्न होती हुई, गमन कर रही है, हमारी ओर।*
*सूर्य की तरह तुम्हारा, हे मरुतो!, कर्मशक्ति वाला (है) संघ,*
*वश में न किया जा सकने वाला, वृषभ की तरह भयङ्कर की।। ३।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारा संघ निरन्तर कर्मरत होने के कारण सूर्य की तरह कर्मशक्ति से युक्त है। यह वृषभ की तरह वश में न किया जा सकने वाला और भयङ्कर है। इसी लिये पृथिवी तुम्हारे संघ के द्वारा वृष्टि से प्रताड़ित होने पर भी जलों से शस्यश्यामला और प्रसन्नचित्त होकर एक दानशीला स्त्री की तरह हमें प्राप्त हो रही है।

टि. *दानशीला स्त्री की तरह* - **मीळ्हुष्मतीव।** भर्त्रीमतीव स्त्री - वे.। प्रबलस्वामिका - सा.। मीढुः सेक्ता वीर्यप्रदः प्रशस्तः पतिर् विद्यते यस्याः - दया.। having a powerful lord - W. like a bounteous lady, liberal of her gifts - G.

*पृथिवी* - **पृथिवी।** अत्र पृथिवीशब्दस् तदधिष्ठितां प्रजां लक्षयति - सा.।

*अत्यन्त ताड़िता* - **पराहता।** अन्यैर् अभिभूता - सा.। दूरं प्राप्ता - दया.। oppressed (by others) - W. struck down and shaken - G.

*सूर्य की तरह* - **ऋक्षः न।** अग्निर् इव - सा.। पशुविशेषः इव - दया.। सप्तर्षियों के समान - सात.। as fire - W. as a bear - G.

*कर्मशक्ति वाला* - **शिमीवान्।** उत्क्षेपणकर्मवत् - वे.। कर्मवान् - सा.। प्रशस्तकर्मवान् - दया.। active - W. impetuous - G.

*संघ* - **अमः।** बलम् - वे.। बलं गणः - सा.। गृहम् - दया.। company - W. rush - G.

*वश में न किया जा सकने वाला* - **दुध्रः।** दुर्धरम् (बलम्) - वे.। दुर्धरः (गौः) - सा.। दुःखेन धर्त्तुं योग्यः - दया.। difficult to be resisted - W. dreadful - G.

**नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुरः।**
**अश्मानं चित् स्वर्यं१ पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभिः।। ४।।**

नि। ये। रिणन्ति। ओजसा। वृथा। गावः। न। दुःऽधुरः।
अश्मानम्। चित्। स्वर्यम्। पर्वतम्। गिरिम्। प्र। च्यवयन्ति। यामऽभिः।। ४।।

*नितरां जो हिंसित करते हैं (शत्रुओं को), बल से (अपने),*
*बिना आयास के ही, बैलों की तरह, कठोर जूओं को खींचने वालों की।*
*वज्र को भी शब्दकारी को, पर्व वाले को (भी) मेघ को,*
*प्रकर्ष से च्युत कर देते हैं, प्रयाणों से (अपने)।। ४।।*

जगदीश्वर की सत्कर्मों में सहायक ये दिव्य शक्तियां दुष्ट आसुरी शक्तियों को अपने बल से इस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट कर डालती हैं, जिस प्रकार कठोर जूओं पर जुतने वाले बैल उन्हें बिना किसी कष्ट के ही झझकोरकर खींचे लिये चले जाते हैं। ये अपने आक्रमणों से घोर ध्वनि करने वाले शत्रु के आयुध को निष्फल करके नीचे गिरा देते हैं और परतों वाले मेघ पर भी प्रहार करके उससे जलों को धरती पर बहा देते हैं।

टि. *हिंसित करते हैं* - **रिणन्ति।** गच्छन्ति - वे.। हिंसन्ति शत्रून् - सा.। प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा - दया.। destroy (their foes) - W. o'erthrow - G.

*कठोर जूओं को खींचने वाले* - **दुर्धुरः।** ये युक्ता धुर उत्क्षिपन्ति ते दुर्धुर उच्यन्ते - वे.। दुःखेन हिंस्या अश्वाः - सा.। दुर्गता धुरो येषां ते - दया.। difficult to be restrained - W. oxen difficult to yoke - G.

*वज्र को* - **अश्मानम्।** व्याप्तम् - वे.। मेघम् - दया.। the vast - W. heavenly stone - G.

*पर्व वाले को मेघ को* - **पर्वतम् गिरिम्।** मेघं शिलोच्चयं च - वे.। जगत्पूरकोदकवन्तम्। पर्ववान्

पर्वतः। पर्व पुनः पृणातेः पूरयतेर् वा। (नि. १.२०)। तादृशं गिरिं मेघम्। यद्वा। पर्वतम् इति विशेष्यं गिरिम् इति विशेषणम्। निगिरत्युदकम् इति गिरिः। सा.। water-laden cloud - W. rocky mountain - G.

*प्रयाणों से* - **यामभिः**। गमनैः - वे.। सा.। प्रहारैः - दया.। अपने प्रयाणों द्वारा - जय.। by their movements - W. as they race along - G.

**उत् तिष्ठ नूनम् एषां स्तोमैः समुक्षितानाम्।**
**मरुतां पुरुतमम् अपूर्व्यं गवां सर्गमिव ह्वये।। ५।। १९।।**

उत्। तिष्ठ। नूनम्। एषाम्। स्तोमैः। सम्ऽउक्षितानाम्।
मरुताम्। पुरुऽतमम्। अपूर्व्यम्। गवाम्। सर्गम्ऽइव। ह्वये।। ५।।

*उठ तू (हे मरुतों के गण!), निश्चय से इनके,*
*स्तोत्रों से, भली प्रकार अभिषेक किये हुओं के।*
*मरुतों के (तुझ गण को), सब से बड़े को, अपूर्व्य को,*
*गौओं के समूह की तरह, बुलाता हूँ मैं।। ५।।*

हे परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियों के संघ! तू हमारे निकट खड़ा हो जा, ठहर जा। मैं निश्चय से अब स्तोत्रों से समादृत इन शक्तियों के सब से बड़े और सब से पूर्व से वर्तमान तुझ समूह का इस प्रकार आह्वान करना चाहता हूँ, जिस प्रकार जीवननिर्वाह और देवों को हविप्रदान के निमित्त गौओं का आह्वान किया जाता है, उनका पालन-पोषण और सम्मान किया जाता है।

टि. उठ तू - **उत् तिष्ठ**। उत् तिष्ठ आसीनान् समीपस्थान् आह - वे.। उत् तिष्ठत। व्यत्ययेनैकवचनम्। सा.। ऊर्ध्वं गच्छ - दया.। rise up - W. G.

*निश्चय से* - **नूनम्**। क्षिप्रम् - वे.। निश्चयम् - सा.। दया.। verily - W. now - G.

*स्तोत्रों से भली प्रकार अभिषेक किये हुओं के* - **स्तोमैः समुक्षितानाम्**। स्तोमैः संसिक्तानाम् - वे.। स्तोत्रैः वर्धितानाम्। यद्वा। स्तोमैर् उपहूय इति सम्बन्धः। सा.। प्रशंसाभिः सम्यक्सेक्तृणाम् - दया.। by my praises these exalted - W. with lauds, grown up together - G.

*अग्रिम को* - **अपूर्व्यम्**। न विद्यते पूर्व्यो येभ्यस् तम् अपूर्व्यम् - वे.। न विद्यते पूर्वो येभ्यस् तम् अपूर्व्यम् - सा.। अपूर्वे भवम् - दया.। unprecedented - W. unequalled - G.

*गौओं के समूह की तरह* - **गवाम् सर्गम् इव**। गवाम् इव सङ्घम् - वे.। गवाम् उदकानां प्रसिद्धानां गवां वा सर्गं सङ्घम् इव - सा.। like a heap of waters - W. like a herd of kine - G.

**युङ्ग्ध्वं ह्यरुषी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः।**
**युङ्ग्ध्वं हरी अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे।। ६।।**

युङ्ग्ध्वम्। हि। अरुषीः। रथे। युङ्ग्ध्वम्। रथेषु। रोहितः।
युङ्ग्ध्वम्। हरी इति। अजिरा। धुरि। वोळ्हवे। वहिष्ठा। धुरि। वोळ्हवे।। ६।।

*जोतो तुम निश्चय से आरोचमान अश्वाओं को रथ में,*
*जोतो तुम रथों में, लाल वर्ण वाले अश्वों को।*

*जोतो तुम दो कमनीय अश्वों को, गतिशीलों को, जूए पर, वहन करने के लिये,*
*अतिशय वहन करने वालों को, जूए पर, वहन करने के लिये।। ६।।*

हे सत्कर्मों की साधक परमात्मा की दिव्य शक्तियो! तुम दुष्ट आसुरी शक्तियों के संहार और साधु जनों के परित्राण के लिये अपने विविध प्रकार के गतिसाधनों से सब स्थानों पर पहुँचो और दुर्बलों, दीनों, हीनों और असहाय जनों की सदा रक्षा और वृद्धि करती रहो।

टि. *आरोचमान अश्वाओं को* – **अरुषीः**। आरोचमाना वडवाः – सा.। bright red mares - G.
*लाल वर्ण वाले अश्वों को* – **रोहितः**। रोहितवर्णाः च – वे.। सा.। red coursers - G.
*गतिशीलों को* – **अजिरा**। गमनशीलौ – वे.। आशुगमनौ – सा.। the fleet- foot - G.
*अतिशय वहन करने वालों को* – **वहिष्ठा**। वोढृतमौ – वे.। सा.। best at drawing - G.

**उत स्य वाज्यरुषस् तुविष्वणिर् इह स्म धायि दर्शतः।**
**मा वो यामेषु मरुतश् चिरं करत् प्र तं रथेषु चोदत।। ७।।**

उत। स्यः। वाजी। अरुषः। तुविऽस्वनिः। इह। स्म। धायि। दर्शतः।
मा। वः। यामेषु। मरुतः। चिरम्। करत्। प्र। तम्। रथेषु। चोदत।। ७।।

*और वह वेगवान् (अश्व), रक्तवर्ण, प्रभूत शब्दवान्,*
*यहाँ निश्चय से स्थापित किया जाता है, देखने के योग्य।*
*मत तुम्हारे प्रयाणों में, हे मरुतो!, विलम्ब करे वह,*
*प्रकर्ष से उसको, रथों में (जोतकर) हाँको तुम।। ७।।*

अश्व बल का, शक्ति का प्रतीक है। जिस के पास बल होता है, वह आरोचमान होता है, वह ऊँची ध्वनि करने वाला होता है, वह दर्शनीय होता है। ऐसे प्राणी को ही लोक में कार्यों में लगाया जाता है। हे परमेश्वर की सत्कर्मसाधक दिव्य शक्तियो! तुम ऐसे बल को ही अपने अन्दर धारण करके उसका प्रयोग करो। इसे धारण करने से ही तुम्हारे कार्यों में कभी विलम्ब नहीं होगा।

टि. *वेगवान् (अश्व)* – **वाजी**। अश्वः – वे.। वाजी वेजनवान् – सा.। वेगवान् – दया.।
*प्रभूत शब्दवान्* – **तुविष्वणिः**। बहुशब्दः – वे.। प्रभूतध्वनिः – सा.। loud-neighing - W. G.
*यहाँ निश्चय से स्थापित किया जाता है* – **इह स्म धायि**। इह धुरि निधीयताम् – वे.। इदानीं रथे रथे नियोजितः – सा.। who has been placed (in harness) - W. who hath been stationed (or harnessed to the car) - G.
*रथों में (जोतकर) हाँको तुम* – **रथेषु चोदत**। रथेषु युङ्ध्वम् इति – वे.। रथेषु रथे युक्तम् इति शेषः। प्र चोदयत प्रेरयत। सा.। urge him on in the car - W. G.

**रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युम् आ हुवामहे।**
**आ यस्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी।। ८।।**

रथम्। नु। मारुतम्। वयम्। श्रवस्युम्। आ। हुवामहे।
आ। यस्मिन्। तस्थौ। सुऽरणानि। बिभ्रती। सचा। मरुत्ऽसु। रोदसी।। ८।।

*रथ को, निश्चय से मरुतों के हम,*

*यशःकामी को, इस ओर बुलाते हैं।*
*आकर जिसमें स्थित हो गई है, सुरमणीय पदार्थों को धारण करती हुई,*
*साथ में मरुतों के, वायुपत्नी (मरुतों की माता)॥ ८॥*

परमेश्वर की सत्कर्मसाधक दिव्य शक्तियों के सर्वत्र गमन करने के सामर्थ्य का हम आह्वान करते हैं, उसकी भूरि-भूरि स्तुति और प्रशंसा करते हैं, जो सत्कर्मों में सहायक होने के कारण यश और कीर्त्ति का अधिकारी है, और जिसके अन्दर सर्वव्यापक परमेश्वर की अपनी मुख्य शक्ति, सभी दिव्य शक्तियों की माता भी जगत् के रमणीय पदार्थों को लेकर इन दिव्य शक्तियों के साथ स्थान ग्रहण किये हुए है।

टि. *यशःकामी को* - **श्रवस्युम्।** श्रवणीयम् - या. (नि. ११.५०)। अन्नेच्छुम् - वे.। सा.। आत्मनः श्रव इच्छुम् - दया.। food-laden - W. fain to gather glory - G.

*सुरमणीय पदार्थों को धारण करती हुई* - **सुरणानि बिभ्रती।** सुरमणीयान्युदकानि बिभ्रती - या.। (तत्रैव)। सा.। सुरमणीयानि धनानि उदकानि वा धारयन्ती - वे.। सुष्ठु रमणीयानि धरन्त्या बिभ्रती - दया.। bearing the delicious (waters) - W. bringing pleasant gifts - G.

*वायुपत्नी* - **रोदसी।** शब्दो ऽयं यदाद्युदात्तः 'द्यावापृथिव्योः' वर्तते, यदा चान्तोदात्तस् तदा 'रुद्रपत्न्यां वायुपत्न्यां मरुत्पत्न्यां वा' वर्तते॥ रुद्रस्य पत्नी मरुतां माता - वे.। यद्वा। रुद्रो वायुः। तत्पत्नी माध्यमिका देवी। सा.। भूमिसूर्यौ - दया.। the wife of Mīḍhvat, an appelation of Rudra - W. the consort of Rudra and mother of the Maruts - G.

**तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युम् आ हुवे।**
**यस्मिन् त्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळ्हुषी॥ ९॥ २०॥ ४॥**

तम्। वः। शर्धम्। रथेऽशुभम्। त्वेषम्। पनस्युम्। आ। हुवे।
यस्मिन्। सुऽजाता। सुऽभगा। महीयते। सचा। मरुत्ऽसु मीळ्हुषी॥ ९॥

*उसका तुम्हारे संघ का, रथ में शोभने वाले का,*
*दीप्तिमान् का, स्तुति के योग्य का, आह्वान करता हूँ मैं।*
*जिसमें शोभन जन्म वाली, उत्तम ऐश्वर्यों वाली, विराजती है,*
*साथ में मरुतों के, (वायुपत्नी) दानशीला॥ ९॥*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारा समुदाय तेजों से युक्त, स्तुति और प्रशंसा के योग्य तथा मिलकर चलने के कारण शोभाओं को धारण करने वाला है। इसी संघ में दिव्य जन्म वाली, ऐश्वर्यों की स्वामिनी, कमनीय पदार्थों को देने में उदारचेता परमेश्वर की मुख्य शक्ति भी अपनी सन्ततिभूत तुम दिव्य शक्तियों के साथ विराजती है। मैं उपासक तुम्हारे इस संघ का आह्वान करता हूँ, उसे कार्यों की सिद्धि और सहायता के लिये अपने पास बुलाता हूँ।

टि. *दीप्तिमान् का* - **त्वेषम्।** दीप्तम् - वे.। सा.। देदीप्यमानम् - दया.। brilliant - G.

*स्तुति के योग्य का* - **पनस्युम्।** स्तुतिकामम् - वे.। स्तुत्यम् - सा.। adorable - G.

*विराजती है* - **महीयते।** स्तूयते - वे.। पूज्यते - सा.। दया.। shows glorious - G.

*दानशीला* - **मीळ्हुषी।** मीळ्हुष्टम शिवतम इत्यादौ दर्शनान् मीढ्वान् रुद्रः। तत्पत्नी मीळ्हुषी। सा.। वे.। सेचनकर्त्री - दया.। the rain-bestowing goddess - G. the bounteous Dame - G.

## सूक्त ५७

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - १-६ जगती, ७,८ त्रिष्टुप्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुविताय गन्तन।**
**इयं वो अस्मत् प्रति हर्यते मतिस् तृष्णजे न दिव उत्सा उदन्यवे।। १।।**

आ। रुद्रासः। इन्द्रऽवन्तः। सऽजोषसः। हिरण्यऽरथाः। सुविताय। गन्तन।
इयम्। वः। अस्मत्। प्रति। हर्यते। मतिः। तृष्णऽजे। न। दिवः। उत्साः। उदन्यवे।। १।।

*इस ओर, हे दुष्टों को रुलाने वालो!, इन्द्र स्वामी वाले, परस्पर प्रीति वाले,*
*सुनहरी रथों वाले, कल्याण के लिये (हमारे), गमन करो तुम।*
*यह तुम्हारी, हमारी कामना करती है स्तुति,*
*प्यासे के लिये, जिस प्रकार आकाश से जल की बोछारें, जलेच्छु के लिये।। १।।*

हे दुष्टों को रुलाने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम ऐश्वर्यों के पालक परमेश्वर को स्वामी के रूप में स्वीकार करने वाली, परस्पर प्यार करने वाली और तेजोमय गमनसाधनों वाली हो। यह हमारी स्तुति तुम्हें बहुत अधिक चाहती है। हम तुम्हारे प्रति अपने गूढ़ प्रेम की अभिव्यक्ति इस स्तुति के द्वारा कर रहें हैं। तुम हमारे कल्याण के लिये हमारे पास इस प्रकार आ जाओ, जिस प्रकार प्यासे और इसलिये जल की इच्छा वाले मनुष्य के पास जल की बौछारें आती हैं।

टि. *कल्याण के लिये* - **सुविताय।** इण् गतौ। अधिकरणे क्तप्रत्ययः। शोभनं गम्यते यस्मिन् तत् सुवितं यज्ञकर्म। छान्दसत्वाद् उपसर्गस्यापि सोर् उवङादेशः। तस्मै सुविताय यज्ञकर्मणे यज्ञसमाप्त्यर्थम् इत्यर्थः। स्क.। सुप्रसूताय कर्मणे - वे.। सुविताय सुगमनाय तत्साधनाय सुष्ठु सर्वैर् गन्तव्याय यज्ञाय - सा.। ऐश्वर्याय - दया.। come to the accessible (sacrifice) - W. for our prosperity - G.

*तुम्हारी कामना करती है* - **वः प्रति हर्यते।** वः युष्माकम्। प्रतिशब्दो ऽत्र धात्वर्थानुवादी। हर्यतीति कान्तिकर्मा। प्रति हर्यते कामयते। स्क.। युष्मान् कामयते - वे.। सा.। is brought to you - G.

*हमारी स्तुति* - **अस्मत् मतिः।** अस्मत्। व्यत्ययेनेयं पञ्चमी। अस्माकं स्वभूता। मन्यतेर् अर्चतिकर्मणो मतिः स्तुतिः। स्क.। अस्मदीया स्तुतिः - वे.। सा.। an offering from us, this hymn - G.

*प्यासे के लिये* - **तृष्णजे।** तृष्णा पिपासा सा जायते यस्मिन्, तां वा यो जनयति, स तृष्णजः कालो ग्रीष्मान्तः, तस्मिन् - स्क.। तृष्णा जाता यस्य तस्मै - वे.। गोतमाय - सा.। to the thirsty (Gotama) - W. unto one who thirsts - G.

*जल की बौछारें* - **उत्साः।** मेघाः - स्क.। उदकनिष्यन्दाः - सा.। कूपाः - दया.। springs - G.

**वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः।**
**स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्।। २।।**

वाशीऽमन्तः। ऋष्टिऽमन्तः। मनीषिणः। सुऽधन्वानः। इषुऽमन्तः। निषङ्गिणः।
सुऽअश्वाः। स्थ। सुऽरथाः। पृश्निऽमातरः। सुऽआयुधाः। मरुतः। याथन। शुभम्।। २।।

*कुठारों वाले, बरछियों वाले, मन पर विजय पाने वाले,*
*शोभन धनुषों वाले, बाणों वाले, तूणीरों को धारण करने वाले।*
*शोभन अश्वों वाले, हो तुम, शोभन रथों वाले, हे प्रकाश के पुत्रो!,*
*शोभन आयुधों वाले, हे मरुतो!, गमन करो तुम कल्याण के लिये।। २।।*

इस मन्त्र में भी परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियों का स्पष्ट मानवीकरण किया है। उन्हें कुठारों, बरछियों, धनुषों, बाणों, तूणीरों और अन्य आयुधों से युक्त बताया गया है। ये आयुध उनकी वीरता और शक्तिमत्ता के प्रतीक हैं। उन्हें शोभन अश्वों और सुन्दर रथों वाली बताकर उनकी गतिमत्ता की ओर संकेत किया गया है। पृश्नि अर्थात् सात वर्णों वाले प्रकाश को उनकी माता बताकर उनकी प्रकाशमत्ता और तेजस्विता का बोध कराया गया है। उन्हें मन को वश में रखने वाली कहकर उनको संयमशील बताया गया है। उनसे प्रार्थना की गई है, कि वे हमारी ओर आकर सदा हमारा कल्याण करती रहें।

टि. *मन पर विजय पाने वाले* - **मनीषिणः।** मेधाविनः - स्क.। प्राज्ञाः - वे.। मनस ईश्वरा मनस्विनः - सा.। मनस इषिणः - दया.। intelligent - W. full of wisdom - G.

*हे प्रकाश के पुत्रो* - **पृश्निमातरः।** पृश्निर् द्यौः सा माता येषां ते पृश्निमातरः - स्क.। हे गोमातरः - वे.। पृश्नेः पुत्राः - सा.। पृश्निर् अन्तरिक्षं मातेव येषां ते - दया.। sons of Pṛśni - W. G.

*गमन करो तुम कल्याण के लिये* - **याथन शुभम्।** गच्छत उदकं प्रति मेघस्थम् - स्क.। गच्छथ कल्याणम् - वे.। शोभनं यथा भवति तथा गच्छथ - सा.। कल्याणं सङ्ग्रामं वा गच्छथ - दया.। come for our good - W. with good weapons go to victory - G.

**धूनुथ द्यां पर्वतान् दाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया।**
**कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यद् उग्राः पृषतीर् अयुग्ध्वम्।। ३।।**

धूनुथ। द्याम्। पर्वतान्। दाशुषे। वसु। नि। वः। वना। जिहते। यामनः। भिया।
कोपयथ। पृथिवीम्। पृश्निऽमातरः। शुभे। यत्। उग्राः। पृषतीः। अयुग्ध्वम्।। ३।।

*हिलाकर बरसाते हो आकाश से मेघों को, हविदाता को (देते हो) धन,*
*नीचे को, तुम्हारे, वृक्ष झुक जाते हैं, गमन के भय से।*
*क्षुभित कर देते हो तुम पृथिवी को, हे प्रकाश के पुत्रो!,*
*कल्याण के लिये जब, हे उग्रो!, बिन्दुमती अश्वाओं को जोतते हो तुम।। ३।।*

हे परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियो! तुम आकाश में मेघों का आलोडन करके उनसे जलों को बरसाती हो, जिससे अन्न, ओषधियां और वन उत्पन्न होते हैं और याजक को यज्ञ के लिये हव्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। उसकी हवियों से प्रसन्न होकर तुम उसे गृह, वस्त्र आदि धन प्रदान करती हो। जब तुम अन्तरिक्ष में वायुओं के रूप में वेग से गमन करती हो, तो वृक्ष भी तुम्हारे आगे झुक जाते है। हे प्रकाश से उत्पन्न होने वालियो! हे दुष्टों के लिये उग्र रूप धारण करने वालियो! जब तुम प्रजाओं

के कल्याण के लिये प्रयाण करती हो तो पृथिवी भी तुम्हारे भय से काँपने लगती है।

टि. *हिलाकर बरसाते हो आकाश से मेघों को* - **धूनुथ द्याम् पर्वतान्।** धुनोतिर् मन्थनकर्मा द्विकर्मको धातुः।। चिकीर्षितम् अजानतीं कम्पयथ दिवं पर्वतान् च - स्क.। कम्पयथ दिवं मेघांश् च (यजमानाय धनम्) - वे.। द्यां दिवीत्यर्थः। पर्वतान् मेघान् धूनुथ प्रापयथ। सा.। कम्पयथ विद्युतं मेघान् - दया.। You agitate the clouds in the sky - W. from hills and heaven you shake (wealth) - G.

*हविदाता को (देते हो) धन* - **दाशुषे वसु।** हवींषि दत्तवते यजमानाय। यजमानायेति सम्प्रदान-चतुर्थीश्रुतेः दत्तेति वाक्यशेषः। वसु धनं वृष्ट्युदकलक्षणम्। स्क.। हविर्दात्रे यजमानाय वसु धनानि प्रापयथ - सा.। दात्रे द्रव्यम् - दया.। the wealth for the worshipper - G.

*नीचे को वृक्ष झुक जाते हैं* - **नि वना जिहते।** वना वनानि उदकानि वृष्टिलक्षणानि नि जिहते नीचैर् गच्छन्ति - स्क.। वृक्षाः नीचीनं गच्छन्ति - वे.। वना वनानि वृक्षादिसमूहानि नितरां कम्पन्ते - सा.। the forests bow down - W.

*क्षुभित कर देते हो* - **कोपयथ।** आकुलीकुरुथ - स्क.। अभिवृष्ट्या क्षोभयथ - सा.। you incense the earth - W. Ye make the earth to tremble - G.

**वातत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमा इव सुसदृशः सुपेशसः।**
**पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः।। ४।।**

वातऽत्विषः। मरुतः। वर्षऽनिर्निजः। यमाःऽइव। सुऽसदृशः। सुऽपेशसः।
पिशङ्गऽअश्वाः। अरुणऽअश्वाः। अरेपसः। प्रऽत्वक्षसः। महिना। द्यौःऽइव। उरवः।। ४।।

*प्राप्त दीप्तियों वाले, मरुत्, वर्षा से धो डालने वाले,*
*यमजों की तरह सुष्ठु समान आकृतियों वाले, शोभन रूपों वाले।*
*पिशङ्गवर्ण अश्वों वाले, रक्तवर्ण अश्वों वाले, पाप से निर्लेप,*
*प्रकर्ष से शत्रुविनाशक, महिमा में द्यौ के समान विस्तार वाले।। ४।।*

सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियां तेजों से युक्त हैं। ये जलों को धरती पर बरसाकर उसे और उसपर स्थित सभी पदार्थों को धो डालने वाली, शुद्ध और पवित्र कर डालने वाली हैं। समान उद्गम से प्रादुर्भूत होने के कारण अत्यधिक समान आकृतियों वाली हैं। ये सुन्दर रूपों वाली हैं। ये पीत और रक्त वर्ण अश्वों वाली अर्थात् विविध आकर्षक गतियों वाली हैं। ये छल, पाप, दोष आदि से निर्लेप हैं। ये दुष्ट आसुरी शक्तियों को रगड़-पीस कर नष्ट कर डालने वाली हैं। ये महत्ता में आकाश के समान विस्तार वाली हैं।

टि. *प्राप्त दीप्तियों वाले* - **वातत्विषः।** वा गतिगन्धनयोः। वाता गता प्राप्ता त्विट् दीप्तिर् यैस् ते वातत्विषः। स्क.। निगच्छद्दीप्तयः - वे.। संप्राप्तदीप्तयः - सा.। वातस्य त्विट् कान्तिर् येषां ते - दया.। radiant with light - W. bright with the blasts of wind - G.

*वर्षा से धो डालने वाले* - **वर्षनिर्णिजः।** 'निर्णिक्' (निघ. ३.७) इति रूपनाम। वृष्टिरूपाः। अथवा वृष्ट्या निश्चयेन पोषयितारः। स्क.। वर्षरूपाः - वे.। वृष्टेः शोधयितारः। अथवा वर्षम् एव रूपं येषां ते तादृशाः। सा.। purifiers of the rain - W. wrapped in their robes of rain - G.

*सुष्ठु समान आकृतियों वाले* - **सुसदृशः**। सुष्ठु सदृशाः - स्क.। अत्यन्त सदृशाः - वे.। सम्यक्तुल्यगुणकर्मस्वभावाः - दया.। of noble aspect - G.

*प्रकर्ष से शत्रुविनाशक* - **प्रत्वक्षसः**। प्रकर्षेण तनूकर्तारः शत्रूणाम् - स्क.। वे.। प्रकर्षेण सूक्ष्म-कर्तारः - दय.। thinners (of foes) - W. strong in their mightiness - G.

**पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानवस्**
**त्वेषसंदृशो अनवभ्रराधसः।**
**सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो**
**दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे।। ५।। २१।।**

पुरुऽद्रप्साः। अञ्जिऽमन्तः। सुऽदानवः। त्वेषऽसंदृशः। अनवभ्रऽराधसः।
सुऽजातासः। जनुषा। रुक्मऽवक्षसः। दिवः। अर्काः। अमृतम्। नाम। भेजिरे।। ५।।

*प्रभूत जलबिन्दुओं वाले, आभरणों वाले, उत्तम दानों वाले,*
*तेजस्वी आकृतियों वाले, भ्रष्ट न होने वाले धनों वाले।*
*सुन्दर जन्मों वाले, जन्म के साथ से सुनहरी छातियों वाले,*
*द्युलोक के (भी) पूजनीय, अनश्वर यश का सेवन करते हैं।। ५।।*

परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक ये दिव्य शक्तियां प्रभूत जलवृष्टियों को प्रदान करने वाली, अपने अन्दर बल के आहरण के साधनों वाली, उत्तम दानशील, तेजस्वी आकृतियों वाली, उत्कृष्ट धनों वाली, उत्तम प्रादुर्भावों वाली, आदि काल से ही दुष्टों के दलन के लिये तेजस्वी बल और साहस को धारण करने वाली, द्युलोक की अर्थात् द्युलोक में निवास करने वाले देवों की भी पूजनीय और अनश्वर कीर्त्ति को धारण करने वाली हैं।

टि. *प्रभूत जलबिन्दुओं वाले* - **पुरुद्रप्साः**। पुरुः द्रप्सो रसः पयोघृतादिर् येषां ते पुरुद्रप्साः - स्क.। अनेकोदकबिन्दवः - वे.। प्रभूतोदकाः - सा.। rich in drops - G.

*आभरणों वाले* - **अञ्जिमन्तः**। रत्नप्रायम् आभरणम् अञ्जिः तद्वन्तः - स्क.। आभरणवन्तः - वे.। सा.। rich in adornment - G.

*भ्रष्ट न होने वाले धनों वाले* - **अनवभ्रराधसः**। अवभ्रम् इति बिभर्तेर् धारणार्थस्य रूपम् अव अधः भ्रियते धारितं दृश्यते यत् तद्, अवभ्राधो धनं येषां ते अवभ्रराधसः निकृष्टधनाः न अवभ्रराधसः अनवभ्रराधसः उत्कृष्टधनाः - स्क.। अनपभ्रंशितयजमानधनाः - वे.। अनवभ्रष्टधनाः - सा.। न विद्यते ऽवभ्रो धननाशो येषां ते - दया.। of inexhaustible wealth - W. yielding bounties that endure - G.

*द्युलोक के (भी) पूजनीय* - **दिवः अर्काः**। दिवः षष्ठीश्रुतेः साकाङ्क्षत्वान् मरुतां च तत्पुत्रत्वात् पुत्रा इत्यध्याहार्यम्। अर्काः पूज्या देवा मरुतः। स्क.। द्युलोकस्य अर्चनीयाः - वे.। अर्काः पूज्या मरुतो दिवः द्युलोकाद् आगत्य - सा.। entitled to adoration (coming) from heaven - W. the Singers of the sky - G.

*अनश्वर यश का सेवन करते हैं* - **अमृतम् नाम भेजिरे**। अमृतम् अमृतसदृशं नाम उदकं

वृष्टिलक्षणं भेजिरे मेघं घ्नन्तो भजन्ते। स्क.। अमरणसाधनम् उदकं भजन्ते - वे.। अमृतम् अमरणसाधनं नामोदकं नमनहेतुकम् उक्तलक्षणं हविर् वा भेजिरे लब्धवन्तः - सा.। accept the ambrosial oblation - W. have won immortal fame - G.

**ऋ॒ष्टयो॑ वो मरुतो॒ अंस॑यो॒र् अधि॒ सह॒ ओजो॑ बा॒ह्वोर् वो॒ बलं॑ हि॒तम्।**
**नृम्णा शी॒र्षस्वायु॑धा॒ रथे॑षु वो॒ विश्वा॑ व॒ः श्रीर् अधि॑ त॒नूषु॑ पिपिशे।। ६।।**

ऋ॒ष्टय॑ः। व॒ः। म॒रु॒त॒ः। अंस॑योः। अधि॑। सह॑ः। ओज॑ः। बा॒ह्वोः। व॒ः। बल॑म्। हि॒तम्।
नृ॒म्णा। शी॒र्षऽसु॑। आयु॑धा। रथे॑षु। व॒ः। विश्वा॑। व॒ः। श्रीः। अधि॑। त॒नूषु॑। पि॒पि॒शे।। ६।।

*बरछियां तुम्हारे, हे मरुतो!, दोनों कन्धों के ऊपर,*
*शक्ति, ओज, भुजाओं में तुम्हारी, बल (भी) स्थित है।*
*पुरुषोचित बुद्धियां सिरों में, आयुध (हैं) रथों में तुम्हारे,*
*समस्त तुम्हारी श्री, ऊपर शरीरों के प्रदीप्त हुई है।। ६।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जिस प्रकार कोई वीर योद्धा कन्धे पर बरछी, शरीर में शक्ति, ओज और बल, सिर में बुद्धि, रथ में विविध प्रकार के आयुधों और शरीर पर लावण्य को धारण करके युद्ध में उतरता है, उसी प्रकार तुम भी अपनी सब शत्रुविनाशक शक्तियों, ओज, तेज, बल, विचारशक्तियों तथा आभा-शोभा के साथ हिंसक आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये सुसज्जित होकर अवतरित होती हो। एक वीर क्षत्रिय की तरह तुम्हारी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक सभी शक्तियां सज्जनों के त्राण और दुष्टों के विनाश के लिये हैं।

टि. *शक्ति, ओज, बल* - **सहः ओजः बलम्।** मत्वर्थो ऽयं सहशब्दः, सहस्वत् बलवत् ओजः बलम् सेनालक्षणम् - स्क.। सहः ओजः बलम् इति त्रीणि निहितानि। तेषाम् अल्पो भेदः। वे.। सहः शत्रूणाम् अभिभावुकम् ओजः। ओजो नामाष्टमो धातुः। तद्रूपं बलं हितम्। सा.। strength (of) foe-destroying power - W. energy and strength - G.

*पुरुषोचित बुद्धियां सिरों में* - **नृम्णा शीर्षसु।** नृम्णम् इति बलनाम। अन्तर्णीतमत्वर्थं चात्र द्रष्टव्यम्। बलवन्ति। स्क.। 'नृम्णम्' (निघ. २.१०) इति धननाम, हिरण्मयशिप्राः हिताः इत्यर्थः - वे.। शिरःसु नृम्णानि हिरण्यमयानि पट्टोष्णीषादीनि निहितानि - सा.। नरो रमन्ते येषु तानि मस्तकेषु - दया.। golden (tiaras) are on your heads - W. bold thoughts are in your heads - G.

ऊपर *शरीरों के प्रदीप्त हुई है* - **अधि तनूषु पिपिशे।** उपरि शरीराणाम्, शरीरेष्वित्यर्थः। पिपिशे रूप्यते दृश्यत इत्यर्थः। स्क.। अङ्गेषु आश्लिष्टा - वे.। पिपिशे अधिष्ठिता आश्रिता - सा.। शरीरेषु आश्रीयते - दया.। is assembled in your limbs - W. is moulded on your forms - G.

**गोम॒द् अश्वा॑व॒द् रथ॑वत् सु॒वीरं॑ च॒न्द्रव॒द् राधो॑ मरुतो ददा नः।**
**प्रश॑स्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षी॒य वो ऽव॑सो॒ दैव्य॑स्य।। ७।।**

गोऽम॑त्। अश्व॑ऽवत्। रथ॑ऽवत्। सु॒ऽवीर॑म्। च॒न्द्रऽव॑त्। राध॑ः। म॒रु॒त॒ः। द॒द॒। न॒ः।
प्रऽश॑स्तिम्। न॒ः। कृ॒णु॒त॒। रु॒द्रि॒या॒स॒ः। भ॒क्षी॒य। व॒ः। अव॑सः। दैव्य॑स्य।। ७।।

*गौओं वाले को, अश्वों वाले को, रथों वाले को, शोभन पुत्रों वाले को,*

*सुवर्ण आदि से युक्त धन को, हे मरुतो!, प्रदान करो तुम हमको।*
*प्रसिद्धि को हमारी कर दो तुम, हे दुष्टों को रुलाने वाले के पुत्रो!,*
*सेवन करूँ मैं तुम्हारे रक्षण आदि का, देवों के योग्य का।। ७।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम हमें गौओं, अश्वों, रथों, उत्तम सन्तानों, हिरण्य आदि बहुमूल्य धातुओं वाले उत्तम धन प्रदान करो। हे दुष्टों को रुलाने वाले जगदीश्वर की सन्तानो! तुम हमारी प्रशंसा को, हमारी कीर्त्ति, यश और प्रसिद्धि को सब ओर फैला दो। हम तुम्हारे द्वारा दिये हुए देवों के योग्य रक्षण, वृद्धि आदि का भोग सदा करते रहें।

टि. *सुवर्ण आदि से युक्त धन को* - **चन्द्रवत् राधः।** हिरण्येन सहितम् अन्नम् - स्क.। सा.। सुवर्णादियुक्तम् आनन्दादिप्रदं वा - दया.।

*प्रदान करो तुम हमको* - **दद नः।** दद लोडर्थे ऽत्र लिट्। दत्त नः। स्क.। ददत। व्यत्ययेनैकवचनम्। अथवा लोडर्थस्य लिटो मध्यमबहुवचनम्। सा.। अत्र द्व्यचो ऽतस् तिङ इति दीर्घः - दया.। bestow upon us - W. vouchsafe to us - G.

*प्रसिद्धि को हमारी कर दो तुम* - **प्रशस्तिम् नः कृणुत।** प्रशंसाम् अस्माकं कुरुत - स्क.। प्रशस्तिं समृद्धिम् इत्यर्थः, कुरुत - सा.। grant us distinction - W. G.

*हे दुष्टों को रुलाने वाले के पुत्रो* - **रुद्रियासः।** अपत्ये ऽयं घप्रत्ययो द्रष्टव्यः। रुद्रपुत्राः। अथवा रुद्र इति स्तोतृनाम व्यत्ययेन अत्र स्तुत्ये प्रयुज्यते, स्वार्थिकश् च घप्रत्ययः। स्क.। रुद्रपुत्राः - वे.।

**हये नरो मरुतो मृळता नस् तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।**
**सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहद् उक्षमाणाः।। ८।। २२।।**

हये। नरः। मरुतः। मृळत। नः। तुविऽमघासः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः।
सत्यऽश्रुतः। कवयः। युवानः। बृहत्ऽगिरयः। बृहत्। उक्षमाणाः।। ८।।

*हे मार्गदर्शको!, हे मरुतो!, सुखी करो तुम हमको,*
*हे प्रभूत धन वालो!, हे अमरणधर्माओ!, हे ऋत के ज्ञाताओ।*
*हे सत्य से युक्त सुने जाने वालो!, हे मेधावियो!, हे नित्य तरुणो!,*
*हे महान् स्तुतियों वालो!, तुम (हो) अत्यधिक सींचने वाले।। ८।।*

हे सब का मार्गदर्शन करने वाली!, हे प्रभूत ऐश्वर्यों वाली!, हे कभी मृत्यु को प्राप्त न होने वाली!, हे सत्यनियम को जानने वाली!, हे सत्य से युक्त होने के कारण कीर्त्तिमती!, हे क्रान्तदर्शिनी!, हे नित्य तरुणावस्था को प्राप्त!, हे महान् स्तुतियों वाली!, हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो!, तुम हमें सब प्रकार से सुखी करो। तुम प्रजाओं को सुखों से सींचने वाली और प्रजाओं के द्वारा स्तुतियों और आहुतियों से सींची जाने वाली हो।

टि. हे *मार्गदर्शको* - **हये नरः।** हये इति निपातो हेशब्दपर्यायः। अस्माद् अव्यतिरिक्तप्रातिपदिकार्थप्रथमान्तात् 'सम्बोधने च' (पा. २.३.४७) इति प्रथमा। आमन्त्रितत्वाच् च 'आमन्त्रितं पूर्वम् अविद्यमानवत्' (पा. ८.१.७२) इत्यविद्यमानवद्भावः। अतो नर इत्यादीनाम् आमन्त्रितानाम् अनिघातः। हे मनुष्याकाराः। स्क.। हये इति निपातो ऽयम् आमन्त्रितवत् परं सम्बोधयति अविद्यमानवच् च भवति।

हये नेतारः। वे.। सा.। हये सम्बोधने। नरः नायकाः। दया.। Ho leaders - W.

हे *प्रभूत धन वालो* - **तुवीमघासः**। प्रभूतधनाः - स्क.। वे.। सा.। दया.।

हे *ऋत के ज्ञाताओ* - **ऋतज्ञाः**। ऋतं सत्यम् उदकं यज्ञो वा तस्य ज्ञातारः - स्क.। सत्यप्रज्ञाः - वे.। उदकस्य यज्ञस्य वा ज्ञातारः - सा.। ये ऋतं यथार्थं जानन्ति ते - दया.। shedders of rain - W. skilled in law - G.

हे *सत्य से युक्त सुने जाने वालो* - **सत्यश्रुतः**। सत्यस्य स्तोत्रस्य श्रोतारः - स्क.। सत्यस्य श्रोतारः - वे.। सत्येन सत्यफलत्वेन प्रसिद्धाः - सा.। ये सत्यं श्रुतवन्तः शृण्वन्ति वा - दया.। renowned for truth - W. Ye hearers of the truth - G.

हे *महान् स्तुतियों वालो* - **बृहद्गिरयः**। महान्तो गिरयो मेघा हन्तव्यत्वेन येषां ते। महतां मेघानां हन्तारः! इत्यर्थः। - स्क.। महामेघाः - वे.। प्रभूतस्तुतयः - सा.। बहुप्रशंसाः - दया.। अत्यन्त सराहनीय - सात.। greately glorified - W.dwelling on the lofty mountains - G.

*अत्यधिक सींचने वाले* - **बृहत् उक्षमाणाः**। सुष्ठु सिञ्चन्तः अस्मान्। वृष्ट्या वर्धन्त इत्यर्थः। स्क.। अत्यन्तं सिञ्चन्तः - वे.। बृहद् इत्यधिकम् उक्षमाणा हविर्भिः सेविता उदकं वा सिञ्चन्तः - सा.। महत् सेवमानाः - दया.। प्रचण्ड बल से युक्त तुम - सात.। and worshipped with copious oblations - W. grown mighty - G.

## सूक्त ५८

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - त्रिष्टुप्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**तम् उ नूनं तविषीमन्तम् एषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम्।**
**य आश्वश्वा अमवद् वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः।। १।।**

तम्। ऊँ इति। नूनम्। तविषीऽमन्तम्। एषाम्। स्तुषे। गणम्। मारुतम्। नव्यसीनाम्।
ये। आशुऽअश्वाः। अमऽवत्। वहन्ते। उत। ईशिरे। अमृतस्य। स्वऽराजः।। १।।

*उसकी निश्चय से अब, दीप्तिमान् की इनके,*
*स्तुति करता हूँ मैं, गण की, मरुतों के, पूज्यतरों की।*
*जो शीघ्रगामी अश्वों वाले, बलपूर्वक गमन करते हैं,*
*और शासन करते हैं अमरत्व पर, स्वयं प्रकशमान।। १।।*

परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक ये दिव्य शक्तियां स्वयं प्रकाशमान हैं। ये अमरत्व पर शासन करने वाली हैं। इसलिये ये कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होतीं। ये अत्यन्त पूजनीय हैं। इनके गमनसाधन अत्यन्त तीव्र गति वाले हैं। इसलिये ये बलपूर्वक सर्वत्र गति करने वाली हैं। मैं उपासक इनके दीप्तिमान् गण की हृदय से स्तुति करता हूँ।

टि. *दीप्तिमान् की* - **तविषीमन्तम्**। 'तविषी' (निघ. २.९) इति बलनाम। बलवन्तम्। स्क.। बलवन्तम् - वे.। दीप्तिमन्तम् - सा.। brilliant - W. mighty - G.

*स्तुति करता हूँ मैं* - **स्तुषे**। व्यत्ययेनायं मध्यमः। स्तौमि। स्क.। स्तौमि - वे.।

*पूज्यतरों की* - **नव्यसीनाम्**। तृतीयार्थे षष्ठी एषा। नव्यसीभिर् अतिशयेन नवाभिः स्तुतिभिः। स्क.। वे.। लिङ्गव्यत्ययः। नवतराणां स्तुत्यानां वा। सा.। अतिशयेन नवीनानां प्रजानाम् - दया.। of the adorable - W. the youthful - G.

*बलपूर्वक* - **अमवत्**। अमशब्द आत्मवाचकः। अर्हार्थे ऽत्र वतिप्रत्ययः। आत्मार्हः। यथैषां योग्यं तथेत्यर्थः। स्क.। बलयुक्तम् - वे.। बलवन्तो यथा भवन्ति तथा - सा.।

*स्वयं प्रकाशमान* - **स्वराजः**। आत्मनैव स्वसामर्थ्येन दीप्ताः - स्क.। स्वायत्तदीप्तयः। स्वयम् एव राजमानाः। सा.। self-radiant - W. radiant in themselves - G.

**त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम्।**
**मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नॄन्॥ २॥**

त्वेषम्। गणम्। तवसम्। खादिऽहस्तम्। धुनिऽव्रतम्। मायिनम्। दातिऽवारम्।
मयःऽभुवः। ये। अमिताः। महिऽत्वा। वन्दस्व। विप्र। तुविऽराधसः। नॄन्॥ २॥

*दीप्तिमान् गण को, बलवान् को, खादि को हाथों में धारण करने वाले को,*
*कँपाने के व्रत वाले को, निर्माणशक्ति वाले को, दान का संभाग करने वाले को।*
*सुखों को उत्पन्न करने वाले हैं जो, अपरिमित माहात्म्य में (अपने),*
*वन्दना कर तू, हे ज्ञानी पुरुष!, प्रभूत धन वाले नेताओं की॥ २॥*

परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियों का समूह तेजस्वी है, बलवान् है, शत्रुशक्तियों पर प्रहार करने के लिये कटक अथवा शस्त्रास्त्र को हाथों में धारण करने वाला है, दुष्ट आसुरी शक्तियों और मेघों को जल आदि की वृष्टि के लिये कँपाने वाला है, निर्माण करने वाली शक्तियों से युक्त है और देय पदार्थों को प्रजाओं में बाँटने वाला है। प्रभु की ये शक्तियां सुखों को उत्पन्न करने वाली हैं और इनके बड़प्पन की कोई सीमा नहीं है। हे ज्ञानी मनुष्य! तू प्रभूत ऐश्वर्यों वाली और सभी मनुष्यों का मार्गदर्शन करने वाली इन शक्तियों की हृदय से वन्दना कर।

टि. *खादि को हाथों में धारण करने वाले को* - **खादिहस्तम्**। ख(क)टारिकाकार आयुधविशेषः, स हस्ते यस्य स खादिहस्तः, तम् - स्क.। खाद्यायुधहस्तम् -वे.। कटकहस्तम् - सा.। whose arms (are decorated) with bracelets - W. arm-bound with bracelets - G.

*कँपाने के व्रत वाले को* - **धुनिव्रतम्**। धुनिः कम्पनं मेघानां शत्रूणां वा तत्कर्माणम्- स्क.। धूननकर्माणम्, धुनोति हि वृक्षादीन् - वे.। कम्पयितृकर्माणम् - सा.। कम्पनम् इव व्रतं शीलं यस्य तम् - दया.। whose function is the agitation (of the trees) - W. ever-roaring - G.

*निर्माणशक्ति वाले को* - **मायिनम्**। प्रज्ञावन्तम् - स्क.। सा.। कर्मवन्तम् - वे.। प्रशस्ता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् - दया.। who are wise - W. with magical powers - G.

*दान का संभाग करने वाले को* - **दातिवारम्**। दातिर् दानम्। वृङ् सम्भक्तौ। दानस्य सम्भक्तारम्। दातारम् इत्यर्थः। स्क.। दत्तधनम् - वे.। सा.। यो दातिं दानं वृणोति तम् - दया.। by whom wealth is conferred - W. bountiful - G.

*अपरिमित (माहात्म्य में)* - **अमिताः।** अपरिमिताः - स्क.। अपरिच्छिन्नाः - वे.। सा.। अतुल-शुभगुणाः - दया.। unbounded - W. unmeasured - G.

*हे ज्ञानी पुरुष* - **विप्र।** आत्मन एवेदम् अन्तरात्मनः सम्बोधनं प्रैषश् च - स्क.। हे विप्र होतः - सा.। मेधाविन् - दया.। priest - W. thou singer - G.

**आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति।**
**अयं यो अग्निर् मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः।। ३।।**

आ। वः। यन्तु। उदऽवाहासः। अद्य। वृष्टिम्। ये। विश्वे। मरुतः। जुनन्ति।
अयम्। यः। अग्निः। मरुतः। सम्ऽइद्धः। एतम्। जुषध्वम्। कवयः। युवानः।। ३।।

*इस ओर तुम्हारे पास गमन करें, जलों को वहन करने वाले आज,*
*वृष्टि को जो सब के सब मरुत्, प्रेरित करते हैं (प्रजाओं के लिये)।*
*यह जो अग्नि, हे मरुतो!, प्रज्वलित किया गया है (यज्ञकुण्ड में),*
*इससे प्रीति करो तुम, हे क्रान्तदर्शियो!, हे नित्यतरुणो।। ३।।*

हे प्रजाजनो! परमेश्वर की ये सब दिव्य शक्तियां जो जलों को वहन करने वाली हैं और वर्षा को अन्तरिक्ष से धरती पर बरसने के लिये प्रेरित करती हैं, आज सब तुम्हारे पास आ जाएं, अपनी वर्षाओं से तुम्हें सुखी और सम्पन्न कर दें। हे दूरदृष्टियों वाली और नित्य तरुणावस्था में वर्तमान सत्कर्मों में सहायक, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम यज्ञकुण्ड में प्रज्वलित इस अग्नि से प्यार करो, इसका सेवन करो, क्योंकि यही याजकों के द्वारा हुत किये हुए हव्य को तुम तक पहुँचाता है।

टि. *जलों को वहन करने वाले* - **उदवाहासः।** उदकस्य वोढारः प्रापयितारः - स्कन्दादयः।

*प्रेरित करते हैं* - **जुनन्ति।** गमयन्ति। वर्षन्तीत्यर्थः। स्क.। प्रेरयन्ति - वे.। सा.।

*इससे प्रीति करो तुम* - **एतम् जुषध्वम्।** एतं सेवध्वम्। समीपे भवत इत्यर्थः। स्क.। सा.। be pleased (by this fire) - W. let it find favour with you - G.

**यूयं राजानम् इर्यं जनाय विभ्वतष्टं जनयथा यजत्राः।**
**युष्मद् एति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत् सदश्वो मरुतः सुवीरः।। ४।।**

यूयम्। राजानम्। इर्यम्। जनाय। विभ्वऽतष्टम्। जनयथ। यजत्राः।
युष्मत्। एति। मुष्टिऽहा। बाहुऽजूतः। युष्मत्। सत्ऽअश्वः। मरुतः। सुऽवीरः।। ४।।

*तुम शासक को, शत्रुप्रेरक को, जनता के लिये,*
*बहुकर्मकर्त्ता को, उत्पन्न करते हो, हे पूजनीयो।*
*तुमसे ही प्राप्त होता है, मुष्टिप्रहर्ता, बाहुबली,*
*तुमसे ही उत्तम अश्वों वाला, हे मरुतो!, उत्तम वीर।। ४।।*

हे सत्कर्मों को साधने वाली, पूजा के योग्य, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम ही प्रजाओं के हित के लिये उन्हें शत्रुओं को मार भगाने वाले, सब प्रकार के जनहितकर्मों को करने वाले शासक को उत्पन्न करती हो। तुमसे ही प्रजाओं की रक्षा के लिये शत्रुओं को घूँसों से मार भगाने वाला और भुजाओं से पीट-पीट कर खदेड़ देने वाला योद्धा प्राप्त होता है, और तुमसे ही उत्तम अश्वों पर सवारी

करने वाला उत्तम वीर पुत्र प्राप्त होता है।

टि. *शासक को शत्रुप्रेरक को* - **राजानम् इर्यम्।** राजानम् इर्यं नाम - स्क.। राजानं स्वामिनं राजमानं वेर्यं शत्रूणां प्रेरकं च्यावयितारम् - सा.। राजानं न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानम्। इर्यं प्रेरकम्, वर्णव्यत्ययेन दीर्घेकारस्य ह्रस्वः। दया.। a ruler, overcomer of foes - W. an active ruler - G.

*जनता के लिये* - **जनाय।** जाताव् एकवचनम्।। जनो मनुष्यलोकः तस्यार्थाय - स्क.। यजमानाय - सा.। मनुष्याय - दया.। to the man - W. for the folk - G.

*बहुकर्मकर्त्ता को* - **विभ्वतष्टम्।** विभवतीति विभ्वं बहु, तक्षतिः करोतिकर्मा, कर्तरि चात्र कर्मप्रत्ययः। बहूनां कर्मणां कर्तारम्। स्क.। विभ्वा नाम ऋभूणां मध्यमः। स कुशली। तेन निर्मितम्। अत्यन्तरूपवन्तम् इत्यर्थः। तादृशं पुत्रम्। सा.। विभूनां मेधाविनां मध्ये तष्टं तीव्रप्रज्ञम् - दया.। modelled by Vibhvan - W. a Master's hand hath fashioned - G.

*प्राप्त होता है* - **एति।** गच्छति शत्रून् प्रति - स्क.। गच्छति - सा.। प्राप्नोति - दया.।

*मुष्टिप्रहर्ता* - **मुष्टिहा।** मुष्टिभिर् एव हन्ता शत्रूणाम् - स्क.। वे.। मुष्टिशब्दो बाहूपलक्षकः। स्वभुजबलेनैव हन्ता शत्रूणाम्। सा.। यो मुष्टिना हन्ति - दया.। strong-fisted - W.

*बाहुबली* - **बाहुजूतः।** जवतिर् अत्रान्तर्णीतण्यर्थः, कर्तरि च क्तप्रत्ययः, बाहुभ्यां शमयिता - स्क.। आकृष्टशत्रुबाहुः - वे.। बाहुजूतः बाहुः प्रेरकः शत्रूणाम् यस्य तादृशः - सा.। बाहुभ्यां बलवान् - दया.। mighty-armed - W. arm-mighty - G.

*उत्तम अश्वों वाला* - **सदश्वः।** सच्छब्दः प्रशंसावचनः। प्रशस्ताश्वो ऽश्ववारः। स्क.। शोभनाश्वः - वे.। विद्यमानाश्वः। बह्वश्व इत्यर्थः। सा.। सन्तः समीचीना अश्वा यस्य सः - दया.।

*उत्तम वीर* - **सुवीरः।** शोभनवीर्ययुक्तः - स्क.। शोभनवीर्यः पुत्रः - सा.। शोभनश् चासौ वीरश् च - दया.। a valiant descendant - W. brave hero - G.

**अ॒रा इ॒वेद् अच॑रमा॒ अहे॑व॒ प्रप्र॑ जायन्ते॒ अक॑वा॒ महो॑भिः।**
**पृश्नेः॑ पु॒त्रा उ॑प॒मासो॒ रभि॑ष्ठा॒ः स्वया॑ म॒त्या म॒रुत॒ः सं मि॑मिक्षुः।। ५।।**

अ॒राःऽइ॑व। इत्। अच॑रमाः। अहा॑ऽइव। प्रऽप्र॑। जा॒य॒न्ते॒। अक॑वाः। मह॑ःऽभिः।
पृश्नेः॑। पु॒त्राः। उ॒प॒ऽमास॑ः। रभि॑ष्ठाः। स्वया॑। म॒त्या। म॒रुत॑ः। सम्। मि॒मि॒क्षुः॥ ५॥

*अरों की तरह ही छोरों से रहित, दिनों की तरह,*
*प्रकर्ष से प्रादुर्भूत होते हैं, अनिन्दनीय, तेजों के साथ।*
*प्रकाशलोक के पुत्र, उपमानभूत, अतिशय वेग वाले,*
*अपनी अनुग्रहबुद्धि से ही, मरुत्, सम्यक् वृष्टि करते हैं।। ५।।*

जिस प्रकार अरों का एक सिरा रथ की नाभि में और दूसरा सिरा परिधि में छुपा होने से उनके छोरों का, आदि और अन्त का पता नहीं चलता, उसी प्रकार परमेश्वर में एकाकार होने के कारण उसकी इन दिव्य शक्तियों के ओर-छोर का, आदि और अन्त का भी कुछ पता नहीं चलता। ये दिव्य शक्तियां निन्दा आदि से रहित, प्रशंसनीय और पवित्रता से युक्त हैं। जिस प्रकार दिन प्रकाश के साथ उदित होते हैं, उसी प्रकार ये दिव्य शक्तियां भी अपने तेजों के साथ प्रकट होती हैं। प्रकाशलोक की

सन्तान, स्वयं ही सब के लिये उपमान बनी हुईं, अतिशय वेग वाली ये शक्तियां अपनी अनुग्रहबुद्धि से ही प्रजाओं पर सुख, शान्ति और कृपाओं की वर्षा करती हैं।

टि. *छोरों से रहित* - **अचरमाः**। चरमः पश्चिमः स येषां न विद्यते ते अचरमाः, पश्चिमाभावाद् एव अग्रिमस्याप्यभावः, अनग्रिमपश्चिमा इत्यर्थः - स्क.। सदृशरूपाः - वे.। अनिकृष्टाः - सा.। नान्त्यावयवाः - दया.। समान दीख पड़ने वाले - सात.। none (of you) are inferior (to the rest) - W. where none are last in order - G.

*प्रकर्ष से* - **प्रप्र**। एकः प्रशब्दः पदपूरणः। 'प्रसमुपोदः पादपूरणे' (पा. ८.१.६)। अपरः प्रकर्षार्थः। स्क.। प्रकर्षेण। एकः प्रसमुपोदः पादपूरण इत्युपसर्गाभ्यासः स च पूरणः। सा.। (they sprang forth) more and more - G.

*अनिन्दनीय* - **अकवाः**। अकुत्सिताः - स्क.। वे.। अनल्पाः। यद्वा महोभिर् इत्यस्य विशेषणम्। सा.। अशब्दायमानाः - दया.। all alike - W. strong in their glories - G.

*तेजों के साथ* - **महोभिः**। स्वैर् माहात्म्यैः - स्क.। तेजोभिः - वे.। सा.। महद्भिः - दया.।

*अतिशय वेग वाले* - **रभिष्ठाः**। अतिशयेन वेगवन्तः - स्क.। वे.। सा.। अतिशयेनारब्धारः - दया.। rapid in speed - W. mightiest - G.

*सम्यक् वृष्टि करते हैं* - **सम् मिमिक्षुः**। म्यक्षतेः गतिकर्मण एतद् रूपम्। (तु. निघ. २.१४)। सङ्गच्छन्ते। स्क.। (स्वेन मानेन) सम्मिता भवन्ति - वे.। वृष्ट्या सम्यक् सिञ्चन्ति - सा.। सिञ्चन्ति - दया.। send down (the rains) - W. cling - G.

**यत् प्रायासिष्ट पृषतीभिर् अश्वैर् वीळुपविभिर् मरुतो रथेभिः।**
**क्षोदन्त आपो रिणते वनान्यवोस्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः।। ६।।**

यत्। प्र। अयासिष्ट। पृषतीभिः। अश्वैः। वीळुपविऽभिः। मरुतः। रथेभिः।
क्षोदन्त। आपः। रिणते। वनानि। अव। उस्रियः। वृषभः। क्रन्दतु। द्यौः।। ६।।

*जब वेग से जाते हो तुम, बिन्दु वालियों से अश्वाओं से,*
*मजबूत नेमियों वालों से, हे मरुतो!, रथों से।*
*चू पड़ते हैं जल, हिंसित हो जाते हैं झाड़-झंखाड़,*
*सूर्यरश्मियों वाला, जलवर्षक, क्रन्दन करता है अन्तरिक्ष।। ६।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब तुम विविध वर्णों वाले दृढ़ गमन-साधनों से जलों की वर्षा करने के लिये प्रयाण करती हो, तो सूर्यरश्मियों से युक्त और जलों को बरसाने वाला आकाश अर्थात् उसमें स्थित मेघ गरजने लगते हैं, जल बरस पड़ते हैं और वर्षा के प्रबल वेग से अथवा बहते हुए जलों के प्रवाह से वृक्ष भी नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। जल आदि सुखसाधनों की वर्षा होती है और बाधक शक्तियों का संहार हो जाता है।

टि. *वेग से जाते हो तुम* - **प्र अयासिष्ट**। प्र गच्छथ - स्क.। वे.। सा.।

*बिन्दु वालियों से अश्वाओं से* - **पृषतीभिः अश्वैः**। अश्वैर् इत्यत्र लिङ्गव्यत्ययः।। पृषद्वर्णाभिः वडवाभिः अश्वैः - स्क.। पृषतीभिः अश्वैश् च - वे.। पृषतीभिः पृषत्संज्ञकैर् अश्वैर् वाहनसाधनैर्

अश्वैः। अश्वशब्दो ऽत्र वाहनसामान्यवचनः। अतः पुँल्लिङ्गता। सा.। drawn by spotted steeds - W. with spotted coursers - G.

*मजबूत नेमियों वालों से* - **वीळुपविभिः**। वीळु संस्तम्भं दृढम्। पवी रथनेमिः। दृढचक्रधारैः। स्क.। दृढचक्रपविभिः - वे.। दृढरथनेमिभिः - सा.। दृढचक्रैः - दया.। with stout-axled (cars) - W. with strong-wrought fellies - G.

*चू पड़ते हैं* - **क्षोदन्ते**। चूर्ण्यन्त इत्यर्थः - स्क.। गच्छन्ति - वे.। क्षरन्ति - सा.। क्षरन्ति वर्षन्ति - दया.। (the waters) descend - W. (the waters ) are disturbed - G.

*हिंसित हो जाते हैं झाड़-झंखाड़* - **रिणते** वनानि। रिणते गच्छन्ति वनानि उदकानि - स्क.। वृक्षाश् च उद्गच्छन्ति - वे.। वृक्षसमूहा हिंस्यन्ते वेगेन भज्यन्ते वृक्षसमूहाः - सा.। गच्छन्ति वनानि किरणान् - दया.। the forests are damaged - W. the woods are shattered - G.

*सूर्यरश्मियों वाला* - **उस्रियः**। उस्रा गौः तस्याः पुत्रः उस्रियः वृषभः - स्क.। उस्राया गोः पुत्रः वृषभः मरुतां गणः - वे.। उस्राः सूर्यरश्मयः। तत्सम्बन्धी पर्जन्यः। सा.। उस्रासु किरणेषु भवः - दया.। influenced by the solar rays - W. the Red Steer - G.

**प्रथि॑ष्ट॒ याम॑न् पृथि॒वी चि॑द् एषां॒ भर्ते॑व॒ गर्भं॒ स्वम् इच् छवो॑ धुः।**
**वाता॒न् ह्यश्वा॑न् धुर्या॑युयु॒ज्रे व॒र्षं स्वेदं॑ चक्रिरे रु॒द्रिया॑सः।। ७।।**

प्रथि॑ष्ट। याम॑न्। पृ॒थि॒वी। चि॒त्। ए॒षा॒म्। भ॒र्ताऽइव। गर्भ॑म्। स्वम्। इ॒त्। शव॑ः। धुः।
वाता॑न्। हि। अश्वा॑न्। धु॒रि। आ॒ऽयु॒यु॒ज्रे। व॒र्षम्। स्वेद॑म्। च॒क्रि॒रे। रु॒द्रिया॑सः।। ७।।

*विस्तृत हो जाती है, गमन करने पर, पृथिवी भी, इनके,*
*पति जिस प्रकार गर्भ को, अपने ही जल को स्थापित करते हैं।*
*वायुरूपी ही अश्वों को, जूए पर सर्वतः जोतते हैं ये,*
*जलवृष्टि को क्षरित कर देती हैं, दुष्टरोदक की सन्ततियां।। ७।।*

जिस प्रकार पति के आगमन पर पत्नी मानसिक और शारीरिक रूप से स्वयं को उसे समर्पित कर देती है, उसी प्रकार पृथिवी भी परमेश्वर की जलवर्षक इन दिव्य शक्तियों के आगमन पर स्वयं को उनके स्वागत के लिये फैला देती है। जिस प्रकार भरण-पोषण करने वाला पति अपनी पत्नी में गर्भ की स्थापना करता है, उसी प्रकार जलवर्षक ये ईश्वरीय शक्तियां भी अपने जलों को पृथिवी के अन्दर स्थापित कर देती हैं। जलवृष्टि के समय दुष्टों को रुलाने वाले प्रभु की सन्ततिभूत ये शक्तियां वायुरूपी अश्वों को अपने रथों में जोतती हैं और जलों को धरती पर इस प्रकार क्षरित कर देती हैं, जिस प्रकार परिश्रमी मनुष्य परिश्रम से अपने पसीने को धरती पर चुआ देता है।

टि. *गमन करने पर* - **यामन्**। सप्तम्या अत्र लुक्। यानं याम मेघं प्रति गमनं तस्मिन् सति। अथवा यान्ति देवा यस्मिन् स यामा यज्ञः। सप्तमी च 'यस्य च भावेन' (पा. २.३.३६) इत्येवं विज्ञायते। तच्छुतेश् च लक्षणभूतयोग्यक्रियापदाध्याहारात् यज्ञे प्राप्तेषु मरुत्सु। स्क.। गमने - वे.। यामनि गमने - सा.। दया.। on their approach - W.

*जल को* - **शवः**। उदकनामैतत् (निघ. १.१२)। उदकं वृष्टिलक्षणम्। तेनोदकेन सस्यानि जायन्ते तैः

समस्ता पृथिवी प्रथते। स्क.। उदकम् - वे.। सा.। गमनम् - दया.। water - W. with power - G.

*वायुरूपी ही अश्वों को* - **वातान् हि अश्वान्**। वातान् वातसदृशान् अत्यन्तशीघ्रान् गन्तॄन् वा। हिशब्दः पादपूरणः। स्क.। गच्छतः अश्वान् - वे.। सा.। वायून् सद्योगामिनः - दया.। horses fleet as the wind - W. (have yoked) the winds for coursers - G.

*जलवृष्टि को क्षरित कर देती हैं* - **वर्षम् स्वेदम् चक्रिरे**। वर्षं वृष्ट्युदकं स्वेदम्, स्विदिः प्रक्षरणार्थः। प्रक्षरितृ चक्रिरे कुर्वन्ति, वृष्टिं पातयन्तीत्यर्थः। स्क.। वर्षाख्यं स्वेदं चक्रिरे - वे.। स्वेद-स्थानीयं वृष्टिसंस्त्यायं कुर्वन्ति - सा.। वर्षम् प्रस्वेदम् इव चक्रिरे - दया.। have emitted their perspiration - W. their sweat have they made rain - G.

**हये नरो मरुतो मृळता नस् तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।**
**सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहद् उक्षमाणाः।। ८।। २३।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठानुवादादिभ्य ऋ. ५.५७.८ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त ५९

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - १-७ जगती, ८ त्रिष्टुप्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**प्र वः स्पळ् अक्रन् त्सुवितायं दावने ऽर्चा दिवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे।**
**उक्षन्ते अश्वान् तरुषन्त आ रजो ऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः।। १।।**

प्र। वः। स्पट्। अक्रन्। सुवितायं। दावने। अर्च। दिवे। प्र। पृथिव्यै। ऋतम्। भरे।
उक्षन्ते। अश्वान्। तरुषन्ते। आ। रजः। अनु। स्वम्। भानुम्। श्रथयन्ते। अर्णवैः।। १।।

*प्रकर्ष से तुम्हारा प्रेक्षक चिल्लाकर कहता है, कल्याण को देने के लिये,*
*पूजा कर तू द्यौ के लिये, खूब पृथिवी के लिये सत्यनियम का पालन करता हूँ मैं।*
*सींचते हैं अश्वों को (जलों से), तर जाते हैं सब ओर से लोकों को (मरुत्),*
*तत्पश्चात् अपने तेज को शिथिल कर देते हैं, जलों की राशियों के साथ।। १।।*

हे मनुष्यो! वह परमेश्वर तुम सब का प्रेक्षक है। वह तुम्हारे शुभ और अशुभ कर्मों को देखता रहता है। वह उच्च स्वर से तुम्हें आदेश दे रहा है कि तुम पृथिवी पर वास करने वाले प्राणियों के लिये कल्याणकार्य करो और स्वर्ग में निवास करने वाले देवताओं को आहुतियां प्रदान करो। इसलिये तुम और हम सब मिलकर द्युलोकवासी देवों की आहुतियों से पूजा करें और पृथिवीवासी प्राणियों की परमेश्वर के द्वारा निर्मित सत्यनियमों और समाज के द्वारा निर्मित सामाजिक नियमों का पालन करते हुए रक्षा करें। परमेश्वर की दिव्य शक्तियां आशुगति आलस्यरहित उपासकों को सुखों से सींच रही हैं और अपने तेजों को जलराशियों के साथ सब ओर बिखेर रही हैं।

टि. *प्रेक्षक* - **स्पट्**। स्पश बन्धने। सम्पदादित्वाच् चायं क्विप् प्रत्ययः। द्वितीयार्थे च प्रथमा। बन्धं करोति तस्य। स्क.। बन्धनम् - वे.। स्पट् स्प्रष्टा होता - सा.। स्पष्टा - दया.। the priest - W. spy - G. 'one who looks or beholds, a watcher, spy, messenger' - MW.

*उच्च स्वर से कहता है* - **अक्रन्**। कुर्वन्ति - स्क.। दया.। मरुतः प्रकुर्वन्तु - वे.। क्रन्दति

स्तौति। क्रन्दतेः शब्दकर्मणो लडर्थे लुङि तिपि रूपम्। सा.। glorifies - W. hath called - G.

*पूजा कर तू* - **अर्च**। स्तुहि मरुतः - स्क.। मरुद्गणाय स्तुहि - वे.। अर्च स्तुहि हे आत्मन् - सा.। सत्कुरु - दया.। offer worship - W. I sing - G.

*सींचते हैं अश्वों को* - **उक्षन्ते अश्वान्**। वृष्ट्या सिञ्चन्ति अश्वान् - स्क.। वे.। व्यापकान् उदकसङ्घान् सिञ्चन्ति - सा.। scatter the rapid (rain) - W. they bathe their steeds - G.

*तर जाते हैं सब ओर से लोकों को* - **तरुषन्ते आ रजः**। तॄ प्लवनसंतरणयोः इत्यन्तर्णीतण्यर्थस्य रूपम्। आप्लावयन्ति। रजः लोकः पार्थिवः। तरन्ति च लोकान् - वे.। अन्तरिक्षं सर्वतः तरन्ति - सा.। सद्यः प्लवन्ते सर्वतः लोकम् - दया.। traverse the firmament - W. G.

*शिथिल कर देते हैं* - **श्रथयन्ते**। श्रथयन्ति - स्क.। सम्पर्चयन्ति - वे.। श्रथयन्ते अनुश्लेषयन्ति - सा.। शिथिलीकुर्वन्ति - दया.। combine (radiance) - W. spread abroad - G.

*जलों की राशियों के साथ* - **अर्णवैः**। द्वितीयार्थे तृतीयैषा। अर्णवान् उदकवतो मेघान्। स्क.। मेघैः सह - वे.। सा.। समुद्रैर् नदीभिर् वा - दया.। समुद्रों में - सात.। with (that of) clouds - W. through the sea of clouds - G.

**अमा॑द् एषां भि॒यसा॒ भूमि॑र् एजति॒ नौर् न पू॒र्णा क्ष॑रति॒ व्यथि॑र् य॒ती।**
**दू॒रे॒दृशो॒ ये चि॒तय॑न्त॒ एम॑भिर् अ॒न्तर् म॒हे वि॒दथे॑ येतिरे॒ नरः॑॥ २॥**

अमा॑त्। ए॒षा॒म्। भि॒यसा॑। भूमिः॑। ए॒ज॒ति॒। नौः। न। पू॒र्णा। क्ष॒र॒ति॒। व्यथिः॑। य॒ती।
दू॒रे॒ऽदृशः॑। ये। चि॒तय॑न्ते। एम॑ऽभिः। अ॒न्तः। म॒हे। वि॒दथे॑। ये॒ति॒रे॒। नरः॑॥ २॥

*बल से इनके डर से, भूमि काँपती है,*
*नाव जिस प्रकार भरी हुई डोलती है, पीड़ित, जाती हुई।*
*दूरदृष्टियों वाले जो जाने जाते हैं, गमनों से (अपने),*
*अन्दर महान् ज्ञानयज्ञ के, यत्न करते हैं मार्गदर्शक॥ २॥*

परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक इन दिव्य शक्तियों के बल से और भय से पृथिवी इस प्रकार काँपती है, जिस प्रकार बोझ से भरी हुई, जल में जाती हुई नाव संकटग्रस्त होकर काँपने लगती है। प्रभु की ये दिव्य शक्तियां दूर दृष्टियों वाली हैं और अपने कार्यों को साधने के लिये इतस्ततः गमन करने के लिये प्रसिद्ध हैं। मार्गदर्शक ये शक्तियां महान् ज्ञानयज्ञों में सदा ज्ञान के प्रसार के लिये प्रयत्नशील रहती हैं।

टि. *बल से* - **अमात्**। अमशब्द आत्मपर्यायः, आत्मन एव। स्वरूपाद् एवेत्यर्थः। स्क.। बलात् - वे.। गृहात् - दया.। from their approach - W. at their onward rush - G.

*भरी हुई* - **पूर्णा**। उदकस्य पूर्णा सती - स्क.। वे.। पूर्णा प्राणिभिः - सा.। वस्तुओं से भरी होने के कारण - सात.। crowded - W. full - G.

*डोलती है* - **क्षरति**। स्रवति। किम्। सामर्थ्याद् आज्यपयआदि हविः। स्क.। अवशीर्णा भवति - वे.। चलति - सा.। आन्दोलित, स्पन्दित हो उठती है - सात.।

*दूरदृष्टियों वाले* - **दूरेदृशः**। दूरे स्थितो यो यथा द्रष्टव्यो निर्ग्राह्यतया तं तथा ये पश्यन्ति ते दूरेदृशः

– स्क.। दूरे पश्यन्तः – वे.। दूरे दृश्यमाना अपि – सा.। ये दूरे दृश्यन्ते पश्यन्ति वा – दया.। दूर से दिखाई देने वाले – सात.। visible from afar - W. G.

*अन्दर महान् ज्ञानयज्ञ के* – **अन्तः महे विदथे**। अन्तः महति यज्ञे। मध्ये महतो यज्ञस्येत्यर्थः। स्क.। यज्ञे महते अन्नाय – वे.। यज्ञे महते हविषे हविर्भक्षणायान्तर् द्यावापृथिव्योर् मध्ये – सा.। अन्तः मध्ये महे महते विदथे संग्रामे विज्ञानमये व्यवहारे वा – दया.। between (heaven and earth) to the solemn sacrifice - W. (press) between in mighty armament - G.

**गवामिव श्रियसे शृङ्गम् उत्तमं सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने।**
**अत्या इव सुभ्वश् चारवः स्थन मर्या इव श्रियसे चेतथा नरः।। ३।।**

गवाम्ऽइव। श्रियसे। शृङ्गम्। उत्ऽतमम्। सूर्यः। न। चक्षुः। रजसः। विऽसर्जने।
अत्याःऽइव। सुऽभ्वः। चारवः। स्थन। मर्याःऽइव। श्रियसे। चेतथ। नरः।। ३।।

*गौओं की जिस प्रकार शोभा के लिये (होता है), सींग उच्चतम,*
*सूर्य जिस प्रकार नेत्रभूत (होता है), ज्योति के विसर्जन के निमित्त।*
*अश्व वेगवान् जिस प्रकार होनहार, आकर्षक होते हो तुम (उसी प्रकार),*
*मनुष्यों की तरह शोभा के लिये, सचेत रहते हो तुम, हे मार्गदर्शको।। ३।।*

जिस प्रकार सिर पर ऊपर की ओर स्थित सींग गौ आदि पशुओं की शोभा के लिये होते हैं, जिस प्रकार जगत् का नेत्रस्थानीय सूर्य प्रकाश के विस्तार के लिये शोभायमान होता है और जिस प्रकार उत्तमता को पाने के इच्छुक वेगवान् अश्व अपने वेग से शोभायमान होते हैं, उसी प्रकार, सत्कर्मों में सहायक हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो!, तुम अपनी उच्चता, ज्योतिर्मत्ता और वेगवत्ता के कारण प्रजाओं के मनों को हरने वाली हो। हे मार्गदर्शको! तुम दूरद्रष्टा मनुष्यों की तरह शोभा को पाने के लिये सदा जागरूक रहती हो।

टि. *उच्चतम* – **उत्तमम्**। सर्वस्मात् कायाद् उत्तमं चारु – स्क.। उत्तमं शिरसि स्थितम् – वे.। उत्कृष्टम् उष्णीषपट्टादिकं धारयथेति शेषः – सा.। exalted - G.

*ज्योति के विसर्जन के निमित्त* – **रजसः विसर्जने**। आदित्यस्य ज्योती रज उच्यते, तद् यस्मिन् विसृज्यते विक्षिप्यते स रजसो विसर्जनो द्युलोकः, तत्र चारु – स्क.। उदकस्य विसर्जने – वे.। स यथा रजसस् तेजसो विसर्जने चक्षुर् दर्शनसाधनं मण्डलं धत्ते तद्वद् रजसो वृष्टेर् विसर्जने विसर्जनाय – सा.। in the distribution of the rains - W. in the firmament's expanse - G.

*आकर्षक होते हो तुम* – **चारवः स्थन**। शोभनाः स्थ – स्क.। कल्याणा भवथ – वे.। दर्शनीयाः स्थन – सा.। सुन्दरस्वभावा गन्तारो वा भवत – दया.। graceful are you - W. ye are beauteous to behold - G.

*सचेत रहते हो तुम* – **चेतथ**। आत्मनः स्वस्य परिजनस्य वा साध्वसाधु च चेष्टितं चेतन्ति एवं चेतथ जानीध्वे सर्वम् – स्क.। बुद्धिं कुरुथ – वे.। सञ्जानीध्वं ज्ञापयत वा – दया.। consider - W.

**को वो महान्ति महताम् उद् अश्नवत् कस् काव्या मरुतः को ह पौंस्या।**
**यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद् भरध्वे सुविताय दावने।। ४।।**

कः। वः। महान्ति। महताम्। उत्। अश्नवत्। कः। काव्या। मरुतः। कः। ह। पौंस्या।
यूयम्। ह। भूमिम्। किरणम्। न। रेजथ। प्र। यत्। भरध्वे। सुविताय। दावने।। ४।।

*कौन तुम्हारी महान् श्रेष्ठताओं को, महानों की, पा सकता है,*
*कौन कविकर्मों को पा सकता है, हे मरुतो!, कौन पौरुषों को।*
*तुम निश्चय से भूमि को, (सूर्य)किरण की तरह, कँपाते हो,*
*प्रकर्ष से जब लाते हो तुम सुगति को, देने के लिये (मनुष्यों को)।। ४।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम महान् हो। तुम महानों की महान् श्रेष्ठताओं को भला कौन पा सकता है। तुम क्रान्तदर्शी हो। तुम्हारी क्रान्तदर्शिता को भला कौन प्राप्त कर सकता है। तुम पौरुषों से युक्त हो। तुम्हारे पौरुषों तक भला कौन पहुँच सकता है। जब तुम प्रजाओं की भलाई और सुख-शान्ति के लिये उन्हें अपने बाह्य और आभ्यन्तर धन प्रदान करती हो, तब तुम्हारे महान् कर्मों को देखकर धरती इस प्रकार काँपने लगती है, जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों को जलों के अन्दर अथवा अन्यत्र कम्पन कराता है।

टि. *महान् श्रेष्ठताओं को* - **महान्ति**। महान्ति सेनालक्षणानि बलानि - स्क.। महान्ति धनानि - वे.। महान्ति श्रेयांसि - सा.। महान्ति विज्ञानादीनि - दया.। the great excellencies - W. the mighty (lore of you the mighty) - G.

*किरण की तरह कँपाते हो* - **किरणं न रेजथ**। किरण इति रश्मिनाम। रश्मिम् इवादित्य उदके ऽन्यत्र वा रेजथ कम्पयथ। स्क.। सूर्यः किरणम् इव कम्पयथ - वे.। किरणं यथा वृष्ट्यर्थं चालयथ तद्वद् भूमिं रेजथ - सा.। दीप्तिम् इव कम्पयध्वम् - दया.।

*प्रकर्ष से जब लाते हो तुम सुगति को देने के लिये* - **प्र यत् भरध्वे सुविताय दावने**। यत् यदा प्रभरध्वे प्रहरथ प्रापयथात्मानं गच्छतेत्यर्थः। सुविताय यज्ञसमाप्त्यर्थं दावने दानार्थं च हविषाम्। स्क.। प्रगच्छथ यदा कल्याणाय दानाय - वे.। सुविताय सुष्ठु प्राप्तव्याय। प्राप्तव्यस्येत्यर्थः। तादृशस्य धनस्य वृष्ट्युदकस्य वा दावने दानाय प्र भरध्वे प्रकर्षेण सम्पादयथ वृष्टिम्। सा.। when you confer the gift (of rain) for (the diffusion of) fertility - W. what time ye bring your boons to give prosperity - G.

**अश्वा इवेद् अरुषासः सबन्धवः शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः।**
**मर्या इव सुवृधो वावृधुर् नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः।। ५।।**

अश्वाःऽइव। इत्। अरुषासः। सऽबन्धवः। शूराःऽइव। प्रऽयुधः। प्र। उत। युयुधुः।
मर्याःऽइव। सुऽवृधः। ववृधुः। नरः। सूर्यस्य। चक्षुः। प्र। मिनन्ति। वृष्टिऽभिः।। ५।।

*अश्वों की तरह ही आरोचमान, समान बन्धुओं वाले,*
*शूरों की तरह प्रकर्ष से युद्ध करने वाले, खूब युद्ध करते हैं।*
*मनुष्यों की तरह उत्तम वृद्धि वालों की, वृद्धि को प्राप्त होते हैं मार्गदर्शक,*
*सूर्य के चक्षु को खूब हिंसित कर डालते हैं, (मरुत्) वृष्टियों से अपनी।। ५।।*

सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां रक्त वर्ण वाले अश्वों की तरह तेजों को धारण करने वाली हैं। एक ही परम सत्ता से प्रादुर्भूत होने के कारण ये परस्पर बन्धु हैं। जिस प्रकार

वीर क्षत्रिय दुर्बल और असहायों की रक्षा के लिये खूब युद्ध करते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां भी साधु जनों के परित्राण के लिये आसुरी शक्तियों से खूब युद्ध करती हैं। भली प्रकार वृद्धि को प्राप्त होने वाली श्रेष्ठ मानवी प्रजाओं की तरह परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां भी सब प्रकार से वृद्धि को प्राप्त होती हैं। प्रजाओं के हित के लिये जब ये दिव्य शक्तियां आकाश से जलों की वर्षा करती हैं, तो सूर्य के बिम्ब को भी मेघों में छुपा देती हैं।

टि. *आरोचमान* - **अरुषासः**। गन्तारो मरुतः - स्क.। आरोचमानाः - वे.। सा.। रक्तादिगुण-विशिष्टाः - दया.। resplendent - W. of ruddy colour - G.

*समान बन्धुओं वाले* - **सबन्धवः**। समानो बन्धुः माता द्यौः पिता च रुद्रो येषां ते सबन्धवः - स्क.। समानबन्धवः - वे.। समान एक एव बन्धुर् बन्धको रुद्रो येषां ते तादृशाः - सा.। समाना बन्धवो येषां ते - दया.। of one kindred - W. scions of one race - G.

*सूर्य के चक्षु को* - **सूर्यस्य चक्षुः**। सूर्यस्य दर्शनम् - स्क.। सूर्यस्य तेजः - वे.। सूर्यस्य चक्षुः तेजःसमूहं मण्डलं वा - सा.। the eye of the sun - W. G.

*खूब हिंसित कर डालते हैं* - **प्र मिनन्ति**। प्र हिंसन्ति - स्क.। वे.। सा.। cover - W. make the (Sun's) eye fade away - G.

**ते अ॒ज्ये॒ष्ठा अक॑निष्ठास उ॒द्भिदो॒ऽम॑ध्यमासो॒ मह॑सा॒ वि वा॑वृधुः।**
**सु॒जा॒तासो॑ ज॒नुषा॒ पृश्नि॑मातरो दि॒वो मर्या॒ आ नो॒ अच्छा॑ जिगातन॥ ६॥**

ते। अ॒ज्ये॒ष्ठाः। अक॑निष्ठासः। उ॒त्ऽभिदः॑। अम॑ध्यमासः। मह॑सा। वि। व॒वृ॒धुः।
सु॒ऽजा॒तासः॑। ज॒नुषा॑। पृश्नि॑ऽमातरः। दि॒वः। मर्याः॑। आ। न॒ः। अच्छ॑। जि॒गा॒त॒न॥ ६॥

*वे न ज्येष्ठ हैं न कनिष्ठ हैं, फोड़ डालने वाले (शत्रुओं को),*
*न मंझले हैं, माहात्म्य से (अपने), विशेष रूप से बढ़ते हैं।*
*उत्तम जन्मों वाले, जन्म से ही प्रकाश के पुत्र,*
*द्युलोक से, मनुष्यों के हितकर, इधर हमारे पास गमन करो तुम॥ ६॥*

शत्रुओं का उद्भेदन कर डालने वाली, सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां उससे एक साथ ही उत्पन्न होने के कारण एक-दूसरी से न तो ज्येष्ठ हैं, न कनिष्ठ हैं और न ही मंझली हैं। ये अपने ही माहात्म्य अथवा तेज से विशेष रूप से वृद्धि को प्राप्त होने वाली है। पुण्यकर्मों का सम्पादन करने के कारण ये आदि काल से ही सुन्दर और सफल जीवनों वाली हैं। हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! मनुष्यों का हित करने वाली तुम द्युलोक से हमारे पास आ जाओ।

टि. *फोड़ डालने वाले (शत्रुओं को)* - **उद्भिदः**। उद्भेत्तारः। ओषध्यादिबीजानां वृष्टिप्रदानद्वारेण ओषध्यादीनां जनयितार इत्यर्थः। स्क.। उद्भेदयितारः - सा.। ये पृथिवीं भित्त्वा प्ररोहन्ति - दया.। the destroyers of (foes) - W. preeminent - G.

*माहात्म्य से* - **महसा**। माहात्म्येन - स्क.। तेजसा - सा.। महता बलादिना - दया.। in glory - W. in might - G.

*उत्तम जन्मों वाले* - **सुजातासः**। सुनिष्पन्नाः। परिपूर्णसर्वावयवा इत्यर्थः। अथवा सुष्ठु जाताः

सुजाताः पुण्यकर्माण इत्यर्थः। स्क.। सुष्ठु संभूताः - सा.। शोभनेषु व्यवहारेषु प्रसिद्धाः - दया.। honourable by birth - W. sprung of noble ancestry - G.

*मनुष्यों के हितकर* - **मर्याः**। मनुष्याकाराः - स्क.। मर्याः मनुष्येभ्यो हिताः - सा.। मनुष्याः - दया.। favourable to man - W. ye bridegrooms (of the sky) - G.

**वयो न ये श्रेणीः पप्तुर् ओजसान्तान् दिवो बृहतः सानुनस् परि।**
**अश्वास एषाम् उभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभनूँर् अचुच्यवुः।। ७।।**

वयः। न। ये। श्रेणीः। पप्तुः। ओजसा। अन्तान्। दिवः। बृहतः। सानुनः। परि।
अश्वासः। एषाम्। उभये। यथा। विदुः। प्र। पर्वतस्य। नभनून्। अचुच्यवुः।। ७।।

*पक्षियों की तरह जो श्रेणीबद्ध होकर उड़ते हैं, बल से (अपने),*
*छोरों तक द्युलोक के, महान् के, उच्च स्थान के, सब ओर।*
*अश्व इनके, दोनों (द्युलोक-भूलोक) जिस प्रकार जानते हैं,*
*प्रकर्ष से मेघ के जलसमूहों को, गिरा देते हैं (धरती पर)।। ७।।*

जिस प्रकार पक्षी अनेक उडारें बनाकर आकाश में उड़ते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां अनेकशः श्रेणीबद्ध होकर अपने बल से महान् उच्चतम स्थान द्युलोक के छोरों तक सब ओर उड़ानें भरती हैं। अर्थात् इनकी पहुँच धरती से लेकर आकाश तक सर्वत्र है। जैसे कि धरती और आकाश दोनों अर्थात् धरती के निवासी मनुष्य और द्युलोक के निवासी देव जानते हैं, इनके अश्व अर्थात् इनकी शारीरिक शक्तियां मेघों से जलों के समूहों को धरती पर बरसाती हैं।

टि. *श्रेणीबद्ध होकर* - **श्रेणीः**। श्रेणीर् बद्धवेति शेषः।। पङ्क्तयः - स्क.। श्रेणीः पङ्क्तयः सन्तः - सा.। पङ्क्तीः - दया.। in rows - W. in lengthened lines - G.

*दोनों* - **उभये**। देवमनुष्याः - स्क.। सा.। उभयपार्श्वस्था जनाः - वे.। both (gods and mortals - W. Gods and mortals - G.

*मेघ के जलसमूहों को* - **पर्वतस्य नभनून्**। पर्वतस्य मेघस्य स्वभूतान् नभनून् 'नभः' (निघ. १. १२) इत्युदकनाम। तस्माद् अयं नुप्रत्ययः समूहे द्रष्टव्यः। उदकसमूहान्। स्क.। पर्वतस्य मेघस्य नभनून्। नभतेः शब्दकर्मणो नभ्राड् इतिवत् नभनवः। उदकानि। सा.। मेघस्य घनान् - दया.। the waters of the cloud - W. the waters of the mountains - G.

**मिमातु द्यौर् अदितिर् वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम्।**
**आचुच्यवुर् दिव्यं कोशम् एत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः।। ८।। २४।।**

मिमातु। द्यौः। अदितिः। वीतये। नः। सम्। दानुऽचित्राः। उषसः। यतन्ताम्।
आ। अचुच्यवुः। दिव्यम्। कोशम्। एते। ऋषे। रुद्रस्य। मरुतः। गृणानाः।। ८।।

*उत्पन्न करे (वृष्टि को) आकाश अनन्त, पालन के लिये हमारे,*
*मिलकर अद्भुत दानों वाली उषाएं यत्न करें (हमारे लिये)।*
*सब ओर से चुवा देवें, आकाशस्थ कोश को (हमारे लिये) ये,*
*हे द्रष्टा!, रुद्र के पुत्र मरुत्, स्तुति किये जाते हुए (हमारे द्वारा)।। ८।।*

हे वेदज्ञान का दर्शन करने और कराने वाले परमेश्वर! यह अनन्त और असीम आकाश हमारे भोजन और जीवनयापन के लिये सदा जलवृष्टियों को उत्पन्न करता रहे। अनोखे दानों वाली बाह्य और आभ्यन्तर उषाएं मिलकर हमारे अभ्युदय और निःश्रेयस के लिये प्रयत्न करती रहें। हमारे द्वारा स्तुति की जाती हुई, दुष्टों को रुलाने वाले तुझ रुद्र की सन्तानस्थानीय ये तेरी दिव्य शक्तियां हमपर दिव्य जलों और दिव्य ज्ञान की वर्षा करती रहें।

टि. *उत्पन्न करे* - **मिमातु।** माङ् माने इत्यस्य रूपम्। निर्मिमीताम्। करोत्वित्यर्थः। स्क.। कुरुतां - वे.। निर्मिमातु वृष्टिम्। तदनुकूलं करोत्वित्यर्थः। सा.। may yield rain - W. may roar - G.

*आकाश अनन्त* - **द्यौः अदितिः।** द्यौः मरुतां माता अदितिः च। सापि हि मरुतां मातैव। अथवा अदितिर् इति दिव एव विशेषणम्। अदितिः अदीना अक्षीणा द्यौः। स्क.। द्यावापृथिवी - वे.। अदितिर् अदीना। यद्वा। द्यौर् मिमातु अदितिर् भूमिश् च मिमातु सुखम्। सा.। द्यौः प्रकाश इव अदितिर् मातेव - दया.। the heaven and the earth - W. Dyaus, the Infinite - G.

*पालन के लिये* - **वीतये।** गमनाय प्राप्तये - स्क.। भक्षणाय - वे.। उत्पत्तये प्रजननाय वा - सा.। विज्ञानादिप्राप्तये - दया.। for our sustenance - W. for our banquet - G.

*अद्भुत दानों वाली* - **दानुचित्राः।** दानु दानं वृष्ट्युदकस्य, तद् विचित्रं यासां ता दानुचित्रा उषसः। माध्यमिकाः वाचः। गर्जितशब्दा इत्यर्थः। स्क.। चित्रदानाः - वे.। विचित्रप्रकाशादिदानाः - सा.। चित्रा अद्भुता दानवो दानानि यासु ताः - दया.। दानद्वारा आश्चर्यचकित कर डालने वाले - सात.। the wonderfully bounteous - W. glittering with moisture - G.

*हे द्रष्टा* - **ऋषे।** आत्मन एवेदम् अन्तरात्मनः सम्बोधनम्। स्क.। हे श्यावाश्व - वे.।

*रुद्र के पुत्र* - **रुद्रस्य।** षष्ठीश्रुतेः पुत्रा इति वाक्यशेषः - स्क.। रुद्रसम्बन्धिनः - वे.। रुद्रस्य पुत्रा इत्यर्थः - सा.। अन्यायकारिणो रोदयितुः - दया.। the sons of Rudra - W. G.

## सूक्त ६०

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - मरुतः। छन्दः - १-६ त्रिष्टुप्, ७,८ जगती। अष्टर्चं सूक्तम्।

**ईळे अग्निं स्ववसं नमोभिर् इह प्रसत्तो वि चयत् कृतं नः।**
**रथैरिव प्र भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणिन् मरुतां स्तोमम् ऋध्याम्।। १।।**

ईळे। अग्निम्। सुऽअवसम्। नमःऽभिः। इह। प्रऽसत्तः। वि। चयत्। कृतम्। नः।
रथैःऽइव। प्र। भरे। वाजयत्ऽभिः। प्रऽदक्षिणित्। मरुताम्। स्तोमम्। ऋध्याम्।। १।।

*स्तुति करता हूँ मैं अग्नि की, श्रेष्ठ रक्षक की, नमस्कारों के साथ,*
*यहाँ आसीन होकर निरीक्षण करता है वह, किये हुए (कर्म का) हमारे।*
*रथों से जैसे, खूब चढ़ाता हूँ मैं (हव्यों को), ऐश्वर्य की कामना वाले (स्तोत्रों) से,*
*प्रदक्षिणा करते हुए, मरुतों के लिये स्तोत्र को बढ़ाता हूँ मैं।। १।।*

मैं उपासक नमस्कारों के साथ श्रेष्ठ रक्षक उस अग्रणी परमेश्वर की स्तुति करता हूँ, जो इस ब्रह्माण्ड अथवा शरीर में आसीन होकर हमारे द्वारा किये हुए शुभ और अशुभ कर्मों का निरीक्षण

करता रहता है। जिस प्रकार रथों से अनेक स्थानों का भ्रमण किया जाता है, उसी प्रकार मैं अपने स्तोत्रों के द्वारा सब दिशाओं में मन से उसकी परिक्रमा करता हुआ अपनी बाह्य और आभ्यन्तर कामनाओं को पूर्ण कराने वाली भेंटें उसे समर्पित करता हूँ और सत्कर्मों में सहायक उसकी दिव्य शक्तियों के लिये भी अपने स्तोत्रों को बढ़ाता हूँ।

टि. *श्रेष्ठ रक्षक की* – **स्ववसम्**। सुपालनम् – स्क.। वे.। स्वायत्तरक्षणम् – सा.।

*आसीन होकर* – **प्रसत्तः**। प्र इत्येष नि इत्येतस्य स्थाने, निषण्णः – स्क.। प्रसत्तः प्रसन्नः सन् – वे.। सा.। दया.। propitiated - W. may he sit - G.

*निरीक्षण करता है वह* – **वि चयत्**। विवृणोतु – स्क.। वि चिनोतु – वे.। विजानातु – सा.। विचिनोमि – दया.। may approve - W. may part (our meed) among us - G.

*प्रदक्षिणा करते हुए* – **प्रदक्षिणित्**। प्रदक्षिणम्। दैवानां हि कर्मणां प्रादक्षिण्यं धर्मः। स्क.। प्रादक्षिण्येन गच्छन् – सा.। circumambulating - W. turned rightward - G.

*बढ़ाता हूँ मैं* – **ऋध्याम्**। ऋधु वृद्धौ। सामर्थ्याच् चान्तर्णीतण्यर्थः। वर्धयामि। स्तोत्रं परिवृद्धं करोमीत्यर्थः। स्क.। वर्धयामि – वे.। वर्धयेयम् – सा.। दया.। may I exalt - W. I will swell - G.

**आ ये त॒स्थुः पृष॑तीषु श्रु॒तासु॑ सु॒खेषु॑ रु॒द्रा म॒रुतो॒ रथे॑षु।**
**वना॑ चिद् उग्रा जिहते॒ नि वो॑ भि॒या पृ॑थि॒वी चि॑द् रेजते॒ पर्व॑तश् चित्।। २।।**

आ। ये। त॒स्थुः। पृष॑तीषु। श्रु॒तासु॑। सु॒ऽखेषु॑। रु॒द्राः। म॒रुतः॑। रथे॑षु।
वना॑। चि॒त्। उ॒ग्राः। जि॒ह॒ते॒। नि। व॒ः। भि॒या। पृ॒थि॒वी। चि॒त्। रे॒ज॒ते॒। पर्व॑तः। चि॒त्।। २।।

*आकर जो स्थित हो जाते हैं बिन्दु वाली अश्वाओं पर, विख्यातों पर,*
*खुले स्थानों वालों पर, दुष्टों को रुलाने वाले मरुत्, रथों पर।*
*वृक्ष भी, हे तीव्र स्वभाव वालो!, हो जाते हैं नीचे तुम्हारे भय से,*
*पृथिवी भी काँपने लगती है, पर्वत भी (काँपने लगते हैं भय से तुम्हारे)।। २।।*

सत्कर्मों में सहायक, हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब तुम अपनी विचित्र गतियों के साथ ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त होती हो, तो हे तीव्र स्वभाव वालियो! तुम्हारे वेग के भय से वृक्ष भी नीचे झुक जाते हैं, पृथिवी भी तुम्हारे भय से काँपने लगती है और पर्वत भी काँपने लगते हैं।

टि. *बिन्दु वाली अश्वाओं पर विख्यातों पर* – **पृषतीषु श्रुतासु**। पृषद्वर्णासु वडवासु विख्यातासु – स्क.। वे.। पृषतीषु मरुतां वाहनेषु श्रुतासु श्रान्तासु प्रसिद्धासु वा – सा.। (who ride in easy chariots drawn by) celebrated steeds - W. famous spotted deer - G.

*खुले स्थानों वालों पर* – **सुखेषु**। सुद्वारेषु – वे.। सुखेषु। खम् आकाशं छिद्रम्। शोभनरथाक्ष–द्वारेषु। सा.। in easy (chariots) - W. (cars) swift-moving - G.

*दुष्टों को रुलाने वाले मरुत्* – **रुद्राः मरुतः**। मरुतो रुद्रपुत्राः – सा.। शत्रुओं को रुलाने वाले वीर मरुत् – सात.। Maruts sons of Rudra - W. The Maruts, yea, the Rudras - G.

*हो जाते हैं नीचे* – **जिहते नि**। न्यग् गच्छन्ति – सा.। bow down - W. G.

**पर्व॑तश् चि॒न् महि॑ वृ॒द्धो बि॑भाय दि॒वश् चि॒त् सानु॑ रेजत स्व॒ने वः॑।**

**यत् क्रीळथ मरुत ऋष्टिमन्त आप इव सध्र्यञ्चो धवध्वे।। ३।।**

पर्वतः। चित्। महि। वृद्धः। बिभाय। दिवः। चित्। सानु। रेजत। स्वने। वः।
यत्। क्रीळथ। मरुतः। ऋष्टिऽमन्तः। आपःऽइव। सध्र्यञ्चः। धवध्वे।। ३।।

*पर्वत भी महान् (और) विस्तीर्ण, डरता है,*
*अन्तरिक्ष का भी उच्च स्थान काँपता है, आवाज पर तुम्हारी।*
*जब क्रीड़ा करते हो तुम, हे मरुतो!, बरछियों वाले,*
*जलों की तरह साथ चलते हुए, गति करते हो तुम।। ३।।*

हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! पर्वत चाहे कितना ही ऊँचा और विस्तृत क्यों न हो, वह तुम्हारी भयङ्कर आवाज से डरता है। अन्तरिक्ष का ऊँचे से ऊँचा स्थान भी तुम्हारी भयङ्कर आवाज से काँपने लगता है। दुष्ट पापी जनों के हनन के लिये शस्त्रों को धारण करने वाली अथवा जलों को बरसाने वाली तुम जब क्रीड़ा करती हो, तो साथ मिलकर बहने वाले जलों की तरह तुम मिलकर गति करती हो।

टि. *महान् और विस्तीर्ण* - **महि वृद्धः**। अत्यन्तं वृद्धः - वे.। vast and lofty - W. G.

*आवाज पर तुम्हारी* - **स्वने वः**। भवतां शब्दे - वे.। युष्माकं भयङ्करशब्दे सति - सा.। शब्दे युष्माकम् - दया.। at your noise - W. at your roaring - G.

*बरछियों वाले* - **ऋष्टिमन्तः**। आयुधविशेषवन्तो वृष्टिमन्तो वा। आदिवर्णलोपो वा।।

*साथ चलते हुए गति करते हो तुम* - **सध्र्यञ्चः धवध्वे**। सहाञ्चन्तो गच्छथ - वे.। सहाञ्चना धावध्वे गच्छथ - सा.। सहाञ्चन्तः कम्पयध्वे - दया.। you rush along together - W. G.

**वरा इवेद् रैवतासो हिरण्यैर् अभि स्वधाभिस् तन्वः पिपिश्रे।**
**श्रिये श्रेयांसस् तवसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु।। ४।।**

वराःऽइव। इत्। रैवतासः। हिरण्यैः। अभि। स्वधाभिः। तन्वः। पिपिश्रे।
श्रिये। श्रेयांसः। तवसः। रथेषु। सत्रा। महांसि। चक्रिरे। तनूषु।। ४।।

*वरों की तरह ही, धनी घरों की सन्तानों की, सुवर्णाभूषणों से,*
*सर्वतः स्वधारकशक्तियों से, शरीरों को (अपने) सजाते हैं (मरुत्)।*
*शोभा के लिये प्रशंसनीय बलवान्, रथों पर (आसीन),*
*एक साथ तेजों को, धारण करते हैं शरीरों पर।। ४।।*

धनाढ्य कुलों की सन्तानें विवाह आदि के शुभ अवसर पर जिस प्रकार अपने शरीरों को सुवर्णाभूषणों से और अपने व्यक्तित्व को आन्तरिक गुणों से भली प्रकार सजाते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर की दिव्य शक्तियां भी तेज आदि बाह्य और बल बुद्धि आदि आन्तरिक गुणों से युक्त रहती हैं। उत्तम गुणों वाली और शक्तिशाली ये दिव्य शक्तियां अपने सर्वत्र व्याप्त होने वाले गुणों से युक्त होकर अपने शरीरों पर एक साथ तेजों को धारण करती हैं।

टि. *वरों की तरह* - **वराः इव**। कन्याया उद्वोढार इव - वे.। वरा विवाहयोग्या युवान इव - सा.। वरैस् तुल्याः - दया.। like bridegrooms - W. like young suitors - G.

*धनी घरों की सन्तानों की (तरह)* - **रैवतासः**। रेवतः पुत्राः - वे.। धनवन्तः - सा.। wealthy

- W. sons of wealthy houses - G.

*स्वधारकशक्तियों से* - **स्वधाभिः**। उदकैः - वे.। सा.। अन्नादिभिः - दया.। with purifying waters - W. with (their golden) natures - G.

*सजाते हैं* - **पिपिश्रे**। संश्लिष्टानि कुर्वन्ति - वे.। संयोजयन्ति अलङ्कुर्वन्ति - सा.। स्थूलावयवानि कुर्वन्ति - दया.। have decorated - W. G.

*तेजों को धारण करते हैं* - **महांसि चक्रिरे**। महनीयान्याभरणानि (अङ्गेषु) कुर्वन्ति - वे.। तेजांस्यधारयन्नित्यर्थः - सा.। तेज प्रकट करते हैं - सात.। have made great (preparation) - W. have set their splendours - G.

**अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।**
**युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥ ५॥**

अज्येष्ठासः। अकनिष्ठासः। एते। सम्। भ्रातरः। ववृधुः। सौभगाय।
युवा। पिता। सुऽअपाः। रुद्रः। एषाम्। सुऽदुघा। पृश्निः। सुऽदिना। मरुत्ऽभ्यः॥ ५॥

*ज्येष्ठभाव से रहित, कनिष्ठभाव से रहित, ये,*
*मिलकर भाई-भाई, बढ़ते हैं सौभाग्य के लिये।*
*युवा पिता, उत्तम कर्मों वाला, दुष्टों को रुलाने वाला, इनका,*
*उत्तम दोहन वाली अदिति माता, सुन्दर दिनों को (लाए) मरुतों के लिये॥ ५॥*

परमेश्वर की इन दिव्य शक्तियों में से न तो कोई अपने को बड़ी समझती है न कोई छोटी। ये परमेश्वर के उपासकों को सौभाग्य प्रदान करने के लिये परस्पर मिलकर बढ़ती हैं। जगत् की सृष्टि, पालन और संहार आदि उत्तम कर्मों को करने वाला, नित्य तरुणावस्था में वर्तमान, दुष्टों को दण्ड देकर उन्हें रुलाने वाला परमेश्वर इनका पिता है। सुन्दर पदार्थों का दोहन करने वाली अखण्डनीया अनन्ता अदिति इनकी माता है। वह इन्हें उत्तम सुखद काल प्राप्त कराती रहे।

टि. *उत्तम कर्मों वाला* - **स्वपाः**। सुकर्मा - वे.। सा.। श्रेष्ठकर्मानुष्ठानः - दया.। deft - G.

*उत्तम दोहन वाली अदिति माता* - **सुदुघा पृश्निः**। सुदोहा पृश्निः - वे.। सुष्ठु दोग्ध्री पृश्निर् गोदेवता मातृभूता - सा.। सुष्ठु कामस्य प्रपूरिका अन्तरिक्षम् इव बुद्धिः - दया.। Pṛśnni (their mother), easy to be milked - W. Pṛśni pouring milk - G.

*सुन्दर दिनों को लाए* - **सुदिना**। 'सुदिनम्' (निघं. ३.६) इति सुखनाम। सुखकरी माता भवति - वे.। शोभनदिनानि अकुरुताम् इति शेषः - सा.। उत्तमदिना - दया.। may grant favourable days - W. may bring fair days - G.

**यद् उत्तमे मरुतो मध्यमे वा यद् वावमे सुभगासो दिवि ष्ठ।**
**अतो नो रुद्रा उत वा न्वस्याग्ने वित्ताद् धविषो यद् यजाम॥ ६॥**

यत्। उत्ऽतमे। मरुतः। मध्यमे। वा। यत्। वा। अवमे। सुऽभगासः। दिवि। स्थ।
अतः। नः। रुद्राः। उत। वा। नु। अस्य। अग्ने। वित्तात्। हविषः। यत्। यजाम॥ ६॥

*चाहे सब से ऊँचे वाले में, हे मरुतो!, बीच वाले में चाहे,*

*चाहे सब से नीचे वाले में, हे सौभाग्यवानो!, द्युलोक में स्थित हो तुम।*
*वहाँ से हमारे पास, हे रुद्रो!, (आ जाओ तुम), और अब इसको,*
*हे अग्ने! जान ले तू हवि को, जिसको (तुझे) समर्पित करते हैं हम।। ६।।*

हे सत्कर्मों में सहायक, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो!, चाहे तुम प्रकाशलोक के उच्चतम भाग में स्थित हो, चाहे मध्य भाग में और चाहे सबसे निचले भाग में। चाहे तुम कहीं भी हो, तुम वहीं से शुभ कर्मों में हमारी सहायता के लिये आ जाओ। और हे सबका मार्गदर्शन करने वाले परमेश्वर! जो नैवेद्य आदि हम तुम्हें समर्पित करते हैं, तू उसको भली प्रकार जानकर स्वीकार कर।

टि. *चाहे* - **यत् वा**। यत्र - वे.। दया.। whether - W. G.

*सब से ऊँचे वाले में* - **उत्तमे**। उत्कृष्ट उत्तमे चरमे वा। त्रयो वा इमे त्रिवृता लोकास् तिस्रो दिवः पृथिवीर् इत्यादिश्रुतेर् द्युलोकस्य त्रैविध्यम्। सा.। उत्तमे व्यवहारे - दया.। in the upper - W.

*उससे हमारे पास (आ जाओ तुम)* - **अतः नः**। ततः अस्मान् आगत्य - वे.। अस्मात् स्थानत्रयान् नो ऽस्मदर्थम् आगच्छतेति शेषः - सा.। (come) to us from thence - W.

*अब इसको जान ले तू हवि को* - **नु अस्य वित्तात् हविषः**। अस्य हविषः क्षिप्रं जानीत। हे अग्ने! त्वं च वेत्थ हविः। वे.। नु अद्य त्वम् अस्य हविष एतद् हविर् वित्ताद् विद्धि - सा.। this day do thou accept the oblation - W. notice the sacrificial food - G.

*जिसको (तुझे) समर्पित करते हैं हम* - **यत् यजाम**। यदा यजाम - वे.। यद् धविः प्रक्षिपामः - सा.। which we offer - W. G.

**अग्निश् च यन् मरुतो विश्ववेदसो दिवो वहध्व उत्तराद् अधि ष्णुभिः।**
**ते मन्दसाना धुनयो रिशादसो वामं धत्त यजमानाय सुन्वते।। ७।।**

अग्निः। च। यत्। मरुतः। विश्वऽवेदसः। दिवः। वहध्वे। उत्ऽतरात्। अधि। स्नुऽभिः।
ते। मन्दसानाः। धुनयः। रिशादसः। वामम्। धत्त। यजमानाय। सुन्वते।। ७।।

*अग्नि और (तुम भी) जब, हे मरुतो!, हे सर्वविध ज्ञान वालो!,*
*द्युलोक से, गमन करते हो (नीचे को), ऊँचे से, ऊँचाइयों के साथ-साथ।*
*वे मुदित होते हुए, दुष्टों को कँपाने वाले, हे शत्रुओं का भक्षण कर डालने वालो!,*
*कमनीय धन प्रदान करो तुम, यजमान को, सोम का सवन करने वाले को।। ७।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो!, हे चोर डाकू आदि बाह्य और काम क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं का विनाश कर डालने वालियो!, दुष्टों को भय से कँपा डालने वाली तुम साधु जनों के शुभ कर्मों में उनकी सहायता के लिये प्रसन्न होते हुए जब उच्च प्रकाशलोक से उसकी ऊँचाइयों के साथ-साथ नीचे की ओर गमन करती हो, तो तुम भक्तिरस रूपी सोम का सवन करने वाले उपासक को उसका मनोवाञ्छित दिव्य धन प्रदान करो।

टि. *हे सर्वविध ज्ञान वालो* - **विश्ववेदसः**। सर्वस्य ज्ञातारो विश्वधना वा - सा.। who are omni-scient - W. Lords of all - G.

*गमन करते हो (नीचे को)* - **वहध्वे**। आगच्छथ - वे.। उह्यध्वे। यद्वा स्नुशब्देन तत्सदृशा अश्वा

उच्यन्ते। तैर् वोह्यध्वे। सा.। you (and Agni) abide - W. ye drive downward - G.

*ऊँचाइयों के साथ-साथ* - **अधि स्नुभिः**। उच्छ्रितेभ्यः प्रदेशेभ्यः उच्छ्रितेषु वा प्रदेशेषु - वे.। अधि उपरि स्नुभिः सानुभिर् उपरिप्रदेशे। सा.। above the summits - W. along the heights - G.

*कमनीय धन* - **वामम्**। वननीयं धनम् - सा.। प्रशस्यम् - दया.। desirable wealth - W.

**अग्ने॑ म॒रुद्भिः॑ शु॒भय॑द्भि॒र् ऋक्व॑भिः॒**
**सोमं॑ पिब मन्दसा॒नो ग॑ण॒श्रिभिः॑।**
**पा॒व॒केभिः॑ विश्वमि॒न्वेभिः॑ आ॒युभि॒र्**
**वैश्वा॑नर प्र॒दिवा॑ के॒तुना॑ स॒जूः॥ ८॥ २५॥**

अग्ने॑। म॒रुत्ऽभिः॑। शु॒भय॑त्ऽभिः। ऋक्व॑ऽभिः। सोम॑म्। पि॒ब॒। म॒न्द॒सा॒नः। ग॒ण॒श्रिऽभिः॑।
पा॒व॒केभिः॑। वि॒श्व॒म्ऽइ॒न्वेभिः॑। आ॒युऽभिः॑। वैश्वा॑नर। प्र॒ऽदिवा॑। के॒तुना॑। स॒ऽजूः॥ ८॥

*हे अग्ने!, मरुतों के साथ, शोभमानों के साथ, स्तुत्यों के साथ,*
*सोम का पान कर तू, मुदित होता हुआ, गणों का आश्रय लेने वालों के साथ।*
*पवित्रकारकों के साथ, सब को बढ़ाने वालों के साथ, जीवनदाताओं के साथ,*
*हे सब जनों का हित करने वाले!, सनातन ज्ञान से (अपने) युक्त (होता हुआ)॥ ८॥*

हे सब का हित साधने वाले अग्रणी परमेश्वर! ये तेरी दिव्य शक्तियां शोभा से युक्त और स्तुति के योग्य हैं। ये संघ बनाकर अपने कार्यों को सम्पन्न करने वाली हैं और उपासक जनों को पवित्र करने वाली हैं। ये सब को प्रगति के पथ पर ले जाने वाली और जीवनों को बढ़ाने वाली हैं। हे प्रभो! अपने सनातन ज्ञान से युक्त, प्रसन्न होता हुआ तू इनके साथ हमारे भक्तिरस रूपी सोम का पान कर।

टि. *स्तुत्यों के साथ* - **ऋक्वभिः**। रसाहरणपरैः - वे.। स्तुत्यैः - सा.। with the adorable - W. with the Maruts as they sing - G.

*गणों का आश्रय लेने वालों के साथ* - **गणश्रिभिः**। गणभावं ये श्रयन्ते तैः - वे.। सा.। समुदायलक्ष्मीभिः - दया.। with assoiated in troops - W. gathered in troop - G.

*सब को बढ़ाने वालों के साथ* - **विश्वमिन्वेभिः**। विश्वस्य प्रीणयितृभिः - वे.। विश्वं वृष्ट्या प्रीणयद्भिः - सा.। with the all animating - W. with these who further all - G.

*जीवनदाताओं के साथ* - **आयुभिः**। गन्तृभिः - वे.। आयुष्मद्भिः - सा.। जीवनैः - दया.। with the long-lived - W. with these the living ones - G.

*हे सब जनों का हित करने वाले* - **वैश्वानर**। विश्वनरहित - सा.। Vaiśvānara - W. G.

*सनातन ज्ञान से (अपने) युक्त (होता हुआ)* - **प्रदिवा केतुना सजूः**। प्रत्नेन तेजसा सङ्गतः - वे.। प्रदिवा पुराणेन केतुना ज्वालापुञ्जेन सजूः सहितः - सा.। identified with the ancient emblem (of flame) - W. joined with thy banner, from of old - G.

## सूक्त ६१

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - १-४, ११-१६ मरुतः, ५-८ शशीयसी, ९ वैददश्विः पुरुमीळ्हः, १० वैददश्विः तरन्तः,

१७-१९ दार्भ्यो रथवीतिः। छन्दः - १-४, ६-८, १०-१९ गायत्री, ५ अनुष्टुप्, ९ सतोबृहती। एकोनविंशत्यृचं सूक्तम्।

**के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय। परमस्याः परावतः।। १।।**

के। स्थ। नरः। श्रेष्ठऽतमाः। ये। एकःऽएकः। आऽयय। परमस्याः। पराऽवतः।। १।।

*कौन हो तुम, हे नेताओ!, अतिशय श्रेष्ठ,*
*जो एक-एक करके, आते हो तुम (पास हमारे)।*
*बहुत अधिक दूर से (सहायता के लिये हमारी)।। १।।*

हे हम सब का मार्गदर्शन करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो!, जो तुम एक-एक करके हमारी सहायता के लिये अत्यन्त दूर परम लोक से हमारे पास आती हो, इस प्रकार की अत्यन्त श्रेष्ठ तुम कौन हो? तुम्हारा परिचय क्या है? हम तुम्हें किस प्रकार जानें?

टि. एक-एक करके - **एकःऽएकः**। पृथक् स्वेनस्वेन अश्वेनेत्यर्थः - स्क.। एक एकः प्रत्येकम् आयय आगच्छथ - सा.। one by one - W. Fra. singly - G.

*आते हो तुम* - **आयय**। आयाताः स्थ - स्क.। आगताः स्युः - वे.। सा.। आयाथ - दया.।

बहुत *अधिक* दूर *से* - **परमस्याः परावतः**। 'परावतः' (निघ. ३.२६) इति दूरनाम, परमं यत् दूरं तस्मात्। दूरात् कुतो ऽपीत्यर्थः। स्कः.। परमस्याः परावतः दूरात् - वे.। अत्यन्तदूरदेशात्। अन्तरिक्षाद् इत्यर्थः। सा.। अति दूर देश से - सात.। from a region exceedingly remote - W. G. from the Supreme Beyond - Fra.

**क्व१ वो ऽश्वाः क्वा३भीशवः कथं शेक कथा यय।**
**पृष्ठे सदो नसोर् यमः।। २।।**

क्व। वः। अश्वाः। क्व। अभीशवः। कथम्। शेक। कथा। यय।
पृष्ठे। सदः। नसोः। यमः।। २।।

*कहाँ हैं तुम्हारे अश्व, कहाँ लगामें हैं (उनकी),*
*किस प्रकार समर्थ होते हो तुम, किस प्रकार जाते हो।*
*कमर पर आसन (कौन सा है), नथनों में नकेल (कौन सी)।। २।।*

हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारे प्राणरूपी अश्व कहाँ हैं? उनके निर्देशन के लिये लगामें कहाँ हैं? तुम उनको नियन्त्रण में रखने में किस प्रकार समर्थ होती हो? तुम उनके द्वारा अपने गन्तव्य स्थान पर किस प्रकार पहुँचती हो? उनपर सवारी करने के लिये काठी कौन सी है और उनको काबू में रखने के लिये उनकी नासिकाओं में नकेल कौन सी है?

इस मन्त्र में अश्व प्राणों के प्रतीक हैं, लगामें यम-नियम की प्रतीक हैं। कमर पर आसन ग्रहण करने अथवा सवारी करने का तात्पर्य मेरुदण्ड को सीधा रखते हुए मूलाधार से लेकर मस्तिष्क तक सर्पिणी के रूप में शयन करने वाली कुण्डलिनी शक्ति को साधाना के द्वारा जागृत करने से है। नथनों में नकेल का अभिप्राय प्राणों को नियन्त्रण में करना अर्थात् प्राणायाम है।

टि. *किस प्रकार समर्थ होते हो तुम* - **कथम् शेक**। कथं शक्तवन्तः। शकेस् सर्वत्र कर्मभूतधात्वन्तरापेक्षत्वाद् आयातुम् इति वाक्यशेषः। स्क.। कथं गन्तुं शक्नुथ सभाराभ्यां पादाभ्याम् -

वे.। कथं च शीघ्रं गन्तुं शक्ता भवथ - सा.। दया.। what is your capability - W. How had ye the power - G. How are you empowered - Fra.

*किस प्रकार जाते हो* - **कथा यय**। कथा कथं केन वा प्रकारेण। यय शुद्धो ऽप्यत्र यातिस् सोपसर्गार्थे द्रष्टव्यः। आगताः। स्क.। कथं गच्छथ - वे.। कथं याताः स्थ - सा.। केन प्रकारेण गच्छत - दया.। Where are you going - W. How came ye - G. How do you move - Fra.

*कमर पर आसन* - **पृष्ठे सदः**। सीदन्ति उपविशन्ति यस्मिन्नश्ववाराः तत् सदः पर्याणम्, पल्लाणं इति यद् अपभ्रंशेन लोके प्रसिद्धम्। स्क.। पृष्ठे ये सीदन्ति - वे.। पृष्ठे ऽश्वानां पृष्ठदेशे। सीदति तिष्ठत्यत्रेति सदः पर्याणम्। सा.। the saddle is on the back (of the steeds) - W. How seat was on back - G. The seat was on the back - Fra.

*नथनों में नकेल* - **नसोः यमः**। नासिकयोः यच्छन्ति अश्वान् ते तथोक्ताः - वे.। नसोर् नासिकयोर् यमो नियमिता पलायनप्रतिबन्धकारी पशोर् नासिकयोर् दृश्यते - सा.। the bridle in their nostrils - W. How Rein was on nose - G. The restraint was in the nose - Fra.

**जघने चोदं एषां वि सक्थानि नरो यमुः। पुत्रकृथे न जनयः।। ३।।**

जघने। चोदः। एषाम्। वि। सक्थानि। नरः। यमुः। पुत्रऽकृथे। न। जनयः।। ३।।

*नितम्ब पर चाबुक (है) इनके,*
*अलग-अलग ऊरुओं को नेता फैलाते हैं।*
*पुत्र को जन्म देने में, जिस प्रकार जननियां।। ३।।*

जिस प्रकार चंचल और अविनीत अश्वों के मन में भय उत्पन्न करने के लिये उनकी पीठ पर चाबुक लटकाए रखा जाता है, उसी प्रकार प्राणरूपी अश्वों को नियन्त्रित करने के लिये संयम रूपी चाबुक का प्रयोग किया जाता है। शिशुओं को जन्म देते समय जिस प्रकार माताएं अपने ऊरुओं को स्थिरतापूर्वक एक विशेष स्थिति में बनाए रखती हैं, उसी प्रकार साधक भी इन प्राण रूपी अश्वों पर सवारी करते समय, इनको नियन्त्रित करते समय, अपने ऊरुओं, धड़, कण्ठ आदि को एक विशेष स्थिति में स्थिर बनाए रखते हैं, अर्थात् एक विशेष आसन का आश्रय लेते हैं।

टि. *नितम्ब पर चाबुक (है)* - **जघने चोदः**। चोद्यते ऽनेनाश्व इति चोदः, कशा तोत्रं वा। अश्ववारा तम् अश्वानां जङ्घे लम्बयन्ति। स्क.। जघने अश्वाजनिः एषाम् अवलम्बते - वे.। जघने हन्तव्यप्रदेशे चोदः प्रेरिका कशा अराग्रकाष्ठविशेषो वा वर्तते - सा.। कट्यधोभागावयवे प्रेरकः - दया.। the goad is (applied) to their flanks - W. the whip is laid upon the flank - G.

*अलग-अलग ऊरुओं को फैलाते हैं* - **वि सक्थानि यमुः**। स्वानि सक्थानि वि यमुः वियच्छन्ति। विकटाव् ऊरू कुर्वन्ति। स्क.। सक्थानि वि यच्छन्ति - वे.। सक्थान्यूरूप्रदेशाद् वि विविच्य यमुः नियच्छन्ति। आशुधावनेन विवृता भवन्तीत्यर्थः। सा.। सक्थीनि नियच्छेयुः - दया.। (the drivers) force them to spread their thighs apart - W. (the heroes) stretch their thighs apart - G.

*पुत्र को जन्म देने में जिस प्रकार* - **पुत्रकृथे न**। पुत्रः क्रियते येन स पुत्रकृथः सुरतव्यापारः। यथा सुरतव्यापारे तद्वत्। स्क.। पुत्रकरणाय - वे.। पुत्रकरण उत्पादने (योषितः) इव। ता यथा

पुत्रोत्पात्पादनकाले सङ्गमसमय ऊरू विवृतौ कुर्वन्ति तद्वद् इत्यर्थः। सा.। पुत्रकरणे - दया.। in bringing forth children - W. when the babe is born - G. in childbirth - Fra.

*जननियां* - **जनयः**। जनयतीति जनिर् जननी शिशोः, पत्नी जनकस्य।।

**परा॑ वीरास एतन मर्या॑सो भद्र॑जानयः। अ॒ग्नि॒तपो॒ यथास॑थ।। ४।।**

परा॑। वी॒रा॒सः॒। इ॒त॒न॒। मर्या॑सः। भद्र॑ऽजानयः। अ॒ग्नि॒ऽतप॑ः। यथा॑। अस॑थ।। ४।।

*दूर, हे शत्रुओं को भगाने वालो!, जाओ तुम,*

*मनुष्यों का हित करने वाले, सुन्दर जन्मों वाले।*

*अग्नि के समान तेजस्वी, चूँकि हो तुम।। ४।।*

हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! चूँकि तुम मनुष्यों का हित साधने वाली हो, स्वयं परमेश्वर से प्रादुर्भूत होने के कारण उत्तम जन्मों वाली हो औंर अग्नि के ताप के समान उत्तम तेज वाली हो, इसलिये हे हिंसक पापी जनों का विनाश करने वालियो! तुम दूर-दूर तक जाकर पापी, हिंसक आसुरी शक्तियों को समूल नष्ट कर डालो।

टि. *दूर जाओ तुम* - **परा इतन**। परा गच्छत। स्वानि गेहानीत्यर्थः। स्क.। वे.।

*हे शत्रुओं को भगाने वालो* - **वीरासः**। विक्रान्ताः - स्क.। हे अमित्राणाम् ईरयितारः - सा.।

*मनुष्यों का हित करने वाले* - **मर्यासः**। मनुष्याकाराः - स्क.। मर्त्येभ्यो हिताः - सा.। मनुष्याः - दया.। friendly to man - W. ye bridegrooms - G. youthful - Fra.

*सुन्दर जन्मों वाले* - **भद्रजानयः**। भद्रास् तरुण्यो रूपवत्यश् च जाया येषां ते, हे भद्रजानयः - स्क.। वे.। भद्रः स्तुत्यो जानिर् जन्म येषां ते तथोक्ताः। रुद्रपुत्रा इत्यर्थः। सा.। ये भद्रं कल्याणं जानन्ति ते - दया.। of honourable birth - W. with a lovely Spouse - G. Fra.

*अग्नि के समान तेजस्वी* - **अग्नितपः**। अग्निना ये तप्यन्ते दह्यन्ते ते अग्नितपः - स्क.। आभरणैर् अलङ्कृता यूयं यथा भवथ तथा अग्नितप्ता इव वर्णतः - वे.। अग्निना तप्तास् ताम्रादयो यथा दीप्तास् तद्वत् प्रदीप्ताः - सा.। ये अग्निना तापयन्ति ते - दया.। blazing with fire - W. that ye may warm you at the fire - G. you will become the heat of the Fire - Fra.

**सन॒त् साश्व्यं॑ प॒शुम् उ॒त गव्यं॑ श॒ताव॑यम्।**
**श्या॒वाश्व॑स्तुता॒य या दोर् वी॒रायो॑प॒बर्बृ॑हत्।। ५।। २६।।**

सन॑त्। सा। अश्व्य॑म्। प॒शुम्। उ॒त। गव्य॑म्। श॒तऽअ॑वयम्।
श्या॒वाश्व॑ऽस्तुताय। या। दोः। वी॒राय॑। उ॒प॒ऽबर्बृ॑हत्।। ५।।

*प्रदान करती है वह अश्वसमूह को, पशुधन को,*

*और गोसमूह को, असंख्य भेड़ों वाले धन को।*

*धूम्रवर्ण यज्ञाग्नि से स्तुति किये हुए का, जो,*

*भुजा से (अपनी) वीर का, गाढ़ आलिङ्गन करती है।। ५।।*

धूम्र वर्ण वाला यज्ञाग्नि जिस याजक की स्तुति करता है, अर्थात् निष्काम भाव से कर्म करने वाले जिस उपासक पर प्रसन्न हो जाता है, अत्यन्त प्रशंसनीय कर्मों का सम्पादन करने वाली यज्ञाग्नि की

शक्ति उस वीर पुरुष का अपनी भुजाओं से गाढ़ आलिङ्गन करती है और उसे अश्वधन अर्थात् शरीरिक बल, गोधन अर्थात् बुद्धिबल और अविधन अर्थात् नम्रता, सहयोग, समर्पण आदि उत्तम गुण प्रदान करती है।

टि. *प्रदान करती है* - **सनत्।** षणु दाने। दत्तवती। स्क.। प्रायच्छत् - वे.। सा.। has given me - W. may she gain - G. she won - Fra.

*पशुधन को* - **पशुम्।** पशुशब्देनात्र गवाश्वस्यावीनां च भेदेनोपादानाद् अज एवोच्यते न पशुमात्रम्। शुद्धो ऽप्ययं समूहतद्धितार्थे द्रष्टव्यः। अजसमूहम्। स्क.। जाताव् एकवचनम् - सा.। cattle - W. cattle for her meed - G.

*असंख्य भेड़ों वाले धन को* - **शतावयम्।** उरणशतसहितम् इत्यर्थः - स्क.। शतावियुक्तम् - वे.। अनेकैर् अविभिर् युक्तम् - सा.। hundreds of sheep - W. a hundredfold gentility - Fra.

*गाढ़ आलिङ्गन करती है* - **उपबर्बृहत्।** बृहू उद्यमने। उद्यच्छति परिभोक्तुम् एनम् उत्क्षिपति वा। स्क.। स्वबाहुम् उपबर्हं कृतवती - वे.। (स्वकीयं भुजम्) उपोदयच्छद् आलिङ्गनाय - सा.। भृशम् उपबर्हयति - दया.। who has thrown her arms around - W. threw embracing (arms) - G. passionately embraced (the hero) - Fra.

**उ॒त त्वा॒ स्त्री शशी॑यसी पुं॒सो भ॑वति॒ वस्य॑सी। अदे॑वत्राद् अ॒रा॒धस॑ः॥ ६॥**

उ॒त। त्वा॒। स्त्री। शशी॑यसी। पुं॒सः। भ॒व॒ति॒। वस्य॑सी। अदे॑वऽत्रात्। अ॒रा॒धस॑ः॥ ६॥

*और कोई स्त्री, अधिक प्रशंसनीया,*
*पुरुष से होती है, अधिक बसाने वाली।*
*देवों के अत्राता से, आहुतिधन से हीन से॥ ६॥*

कोई-कोई स्त्री तो पुरुष से भी अधिक प्रशंसा तथा आदर के योग्य और अपने सद्गुणों और उत्तम व्यवहार के कारण परिवार को सुख से बसाने वाली होती है, विशेषतया ऐसे पुरुष से, जो पूजा-अर्चना के द्वारा देवों की रक्षा नहीं करता और अपने अन्न-धन से उन्हें आहुति नहीं देता।

टि. *कोई स्त्री* - **त्वा स्त्री।** त्वा षष्ठ्यर्थे द्वितीयैषा। तरन्तस्यायं प्रतिनिर्देशः। तरन्तस्य स्त्री। भार्येत्यर्थः। त्व इति वा विनिग्रहार्थीयं सर्वनामानुदात्तम् (या. १.७) एकशब्दपर्यायः। तस्माद् अयं स्त्रियां टाप्। त्वा एका। स्क.। एका स्त्री - वे.। एका शशीयसी, सैव स्त्री। त्वसमसिमनेमेत्यनुच्चानि इति वचनात् त्वेति निघातः। सा.। though a female - W. many a woman - G. Fra.

*अधिक प्रशंसनीया* - **शशीयसी।** शशीयस्येव एका स्त्री, नान्या काचिद् इत्यर्थः - स्क.। शशीयसी नाम - वे.। शशीयसीत्येतन् महिष्या नाम - सा.। अतिशयेन दुःखं प्लावयन्ती - दया.। more firm - G. more praiseworthy - Fra.

*अधिक बसाने वाली* - **वस्यसी।** वसीयसी वासयित्रीतरा॥ वसु धनम्, अतिशयेन तद्वती वस्यसी। धनवत्तरा। अथवा वसुशब्देनात्र दातृधनम् उच्यते। दातृतरा। स्क.। प्रशस्ता - वे.। वसीयसी - सा.। अतिशयेन वसुमती - दया.। more excellent - W. better - G. more bounteous - Fra.

देवों के *अत्राता से* - **अदेवत्रात्।** देवान् यस् त्रायते स देवत्रः। कः पुनर् असौ। यः स्तौति। देवा

हि स्तूयमाना वीर्येण वर्धन्ते। अतो यस् तान् स्तौति स वीर्यहानितस् त्रायते, तेन स देवत्रः। न देवत्रः अदेवत्रः। तस्माद् अदेवत्रात्। देवानाम् अस्तोतुर् इत्यर्थः। स्क.। देवानाम् अत्रातुः – वे.। देवा न येन त्रायन्ते स्तुत्यादिना सो ऽदेवत्रः। तस्मात्। सा.। देवान् त्रायते यस्मात् तद्विरुद्धात् – दया.। than a man who reverences not the gods - W. than the man who turns away from gods - G. who has no conscious of the Godhead - Fra.

*आहुतिधन से हीन से* – **अराधसः**। हविर्लक्षणेन धनेन रहितात्। अयष्टुश् चेत्यर्थः। स्क.। अधनात् – वे.। राधो धनम्। दानार्हधनरहितात्। लुब्धकाद् इत्यर्थः। सा.। अधनात् – दया.। nor bestows wealth - W. who offers not - G. no beneficence - Fra.

**वि या जा॒नाति॒ जसु॑रिं॒ वि तृष्य॑न्तं॒ वि का॒मिन॑म्। दे॒व॒त्रा कृ॑णु॒ते मनः॑।। ७।।**

वि। या। जा॒नाति॑। जसु॑रिम्। वि। तृष्य॑न्तम्। वि। का॒मिन॑म्। दे॒व॒ऽत्रा। कृ॒णु॒ते। मनः॑।। ७।।

*विशेषेण जो जानती है, परिश्रान्त को,*

*विशेषेण प्यासे को, विशेषेण कामना वाले को।*

*देवों में लगाती है मन को, (प्रशंसनीया है वह)।। ७।।*

जो स्त्री दीन-दुःखियों के दखदर्द को समझती है और उनके दुखते मन पर सहानुभूति तथा सान्त्वना का मरहम लगाती है, जो प्यासे को पानी पिलाकर और भूखे को भोजन खिलाकर उनके कष्ट को दूर करती है, जो जरूरतमन्दों की जरूरत को पूरा करती है और जो देवों की पूजा-अर्चना तथा विद्वानों और साधु-सन्तों की सेवा सुश्रूषा करती है, ऐसी स्त्री देवों की पूजा-अर्चना न करने वाले और उनको आहुति न देने वाले पुरुष से अधिक प्रशंसनीया और सुख देने वाली होती है।

टि. *परिश्रान्त को* – **जसुरिम्**। जसु ताडने। श्रमताडितम्। श्रान्तम् इत्यर्थः। स्क.। उपक्षीणम् – वे.। व्यथितम् – सा.। प्रयतमानम् – दया.। who suffers pain - W. the weak and worn - G. those exhausted - Fra.

*कामना वाले को* – **कामिनम्**। कामभोगैषिणम् – स्क.। धनकामुकम् अतिथिम् – वे.। सा.। कामातुरम् – दया.। desirous (of any thing) - W. who is in want - G. Fra.

**उ॒त घा॒ नेमो॒ अस्तु॑तः पुमाँ॒ इति॑ ब्रुवे प॒णिः। स वैर॑देय॒ इत् स॒मः।। ८।।**

उ॒त। घ॒। नेमः॑। अस्तु॑तः। पुमा॑न्। इति॑। ब्रु॒वे। प॒णिः। सः। वैर॑ऽदेये। इत्। स॒मः।। ८।।

*और निश्चय से आधा, न स्तुति किया हुआ ही है,*

*पुरुष, ऐसा कहता हूँ मैं स्तोता, (स्तुति के बिना स्त्री की)।*

*वह वीरतापूर्वक दिये जाने वाले दान में, समान है (भले) ही।। ८।।*

पति आधा है, पत्नी भी आधी है। वे दोनों मिलकर एक बनते हैं। जिस घर में दुःखियों के दुःख दूर करने वाली, अतिथियों का आदर-सत्कार करने वाली, भूखों-प्यासों की भूख और प्यास को शान्त करने वाली, जरूरतमन्दों की जरूरतों को पूरा करने वाली, प्रशंसा के योग्य पत्नी की समुचित प्रशंसा न की जाए, वहाँ अर्धाङ्ग पुरुष की चाहे कितनी भी प्रशंसा क्यों न की जाए, वह अप्रशंसा ही समझी जाएगी, क्योंकि घर की ख्याति पत्नी के उत्तम कार्यों के कारण ही होती है, पति भले

ही पत्नी द्वारा वीरतापूर्वक किये गए दानकार्यों में धनोपार्जक होने के कारण आधे का भागीदार है। प्रभु का स्तोता तो यही समझता और कहता है।

टि. *अर्धाङ्ग* – **नेमः।** अर्धः। कस्य। स्वजायायाः शशीयस्याः। कुत एतत्। जायापत्योः परस्परार्धत्वात्। यथैव हि 'अर्धो वा एष आत्मनो यज् जाया' इति श्रुतेः, अर्धं शरीरम् इति लोकप्रसिद्धेः, पत्युर् अर्धो जाया। एवम् अर्धस्य परस्परापेक्षत्वात् पतिर् अपि जायाया अर्धम् इत्युपपन्नम्। स्क.। अस्याः शशीयस्याः अर्धभूतः – वे.। त्वो नेम इत्यर्धस्येति निरुक्तम् (३.२०)। नेमो ऽर्धः। जायापत्योर् मिलित्वैककार्यकर्तृत्वाद् एक एव पदार्थः। अर्धं शरीरस्य भार्येत्यादि स्मृतेः। शशीयस्या अर्धभूतस् तरन्तः। सा.। her (other) half - W. full many a one - G. many more - Fra.

*न स्तुति किया हुआ* – **अस्तुतः।** अस्तुतपूर्वः – स्क.। बहुधा स्तुतो ऽपि गुणस्यातिबाहुल्याद् अस्तुत एव – सा.। अप्रशंसितः – दया.। uncommended - W. unpraised - G. who have nothing laudable about them - Fra.

*स्तोता* – **पणिः।** पणतेः स्तुत्यर्थस्येदं रूपम्। स्तोता ऽहम्। स्क.। वे.। सा.। प्रशंसितः – दया.। eulogizing (him) I - W. mean niggard - G. traders - Fra.

*वीरतापूर्वक दिये जाने वाले दान में* – **वैरदेये।** वीरा दानशूरास् तेषां दानं वीरदेयम्। स्वार्थिकस् तद्धितः। तस्मिन्। स्क.। वीरस्य मम दत्ते धने – वे.। वीरा धनानां प्रेरयितारो दानशीलाः। तैर् दातव्यं धनं देयम्। तस्मिन् धने। सा.। वैरं देयं येन तस्मिन् – दया.। in munificent donations - W.

**उ॒त मे॑ ऽरपद् यु॒व॒तिर् म॑म॒न्दुषी॒ प्रति॑ श्या॒वाय॑ व॒र्त॒निम्।**
**वि रोहि॑ता पुरुमी॒ळ्हाय॑ येमतु॒र् विप्रा॑य दी॒र्घय॑शसे।। ९।।**

उ॒त। मे॒। अ॒र॒प॒त्। यु॒व॒तिः। म॒म॒न्दुषी॑। प्रति॑। श्या॒वाय॑। व॒र्त॒निम्।
वि। रोहि॑ता। पु॒रु॒ऽमी॒ळ्हाय॑। ये॒म॒तुः। विप्रा॑य। दी॒र्घऽय॑शसे।। ९।।

*और मुझे स्पष्ट बताती है तरुणी, मुदित करने वाली,*
*निस्तेज इन्द्रियों वाले को मार्ग।*
*विशेषेण दो रक्तवर्ण अश्व, बहुवर्षक के पास ले जाते हैं,*
*मेधावी के, प्रभूत कीर्त्ति वाले के।। ९।।*

मैं साधक निस्तेज और अशक्त इन्द्रियों वाला हूँ। तरुणी और साधकों के मनों को हर्षित करने वाली योगविद्या आँख, कान आदि मेरी इन्द्रियों को सशक्त और बलवान् बनाकर मुझे प्रभुमिलन का मार्ग बताती है। मेरे शरीररूपी रथ में जुतने वाले प्राण और अपान रूपी दो बलवान् अश्व मुझे प्रभूत सुखों की वर्षा करने वाले, सर्वज्ञ और महान् कीर्त्ति वाले परमेश्वर की ओर ले जाते हैं।

टि. *बताती है* – **अरपत्।** रप लप व्यक्तायां वाचि कथनवेलायां च या व्यक्ता वाक् सा रपत्, अनया वाचा कथितवतीत्यर्थः। स्क.। अकथयत् – वे.। अलपत् स्पष्टम् आचष्ट – सा.। व्यक्ताम् उपदिशति – दया.। has explained to me - W. divulged (the path) - G.

*मुदित करने वाली* – **ममन्दुषी।** मदिर् अत्र मोदनार्थः। मदि स्तुतिमोदनमदस्वप्नकान्तिगतिष्विति। प्रतिशब्दश् च पुरस्ताद् अवक्रष्टव्यः। प्रति ममन्दुषी अत्यर्थं प्रतिमोदमाना। प्रीयमाणेत्यर्थः। स्क.।

माद्यन्ती हृष्टा - वे.। प्रतिमोदमाना - सा.। प्रशंसनीयानन्दकरी - दया.। affable - W. the joyous-spirited - G. ecstatic - Fra.

*निस्तेज इन्द्रियों वाले को* - **श्यावाय**। श्यावः श्यावाश्वस् तस्मै। श्यावा धूम्रवर्णा निस्तेजसो ऽश्वा इन्द्रियाणि यस्य स श्यावाश्वः।। उत्तरपदलोपो ऽत्र द्रष्टव्यः, भीमसेनो भीम इति यथा। श्यावाश्वाय। स्क.। सा.। श्यावाश्व एव श्यावस् तस्मै - वे.।

*बहुवर्षक के पास* - **पुरुमीळ्हाय**। पुरुमीळ्हस्य राज्ञो ऽर्थाय - स्क.। पुरुमीळ्हं प्रति - वे.। एतन्नामकाय प्रभूतगृहाय विप्राय - सा.। बहुवीर्यसेक्त्रे - दया.।

*विशेषेण ले जाते हैं* - **वि येमतुः**। विविधं वर्धितवन्तौ - स्क.। धृतवन्ताव् इत्यर्थः - सा.। नियच्छतः - दया.। have borne me - W. carried me - G.

**यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर् यथा ददत्। तरन्त इव मंहना।। १०।। २७।।**

यः। मे। धेनूनाम्। शतम्। वैदत्ऽअश्विः। यथा। ददत्। तरन्तःऽइव। मंहना।। १०।।

*जो मुझे दुधारू गौओं के, एक सैंकड़े को,*

*बल वालों को वश में करने वाला, चूँकि देता है।*

*पार उतारने वाले की तरह (नाविक की), महान् नौका से,*

*(उसको इसलिये मैं नमन करता हूँ, हृदय से)।। १०।।*

असंख्य सुखों की वर्षा करने वाला, बल वालों को भी अपने वश में करने वाला वह परमेश्वर चूँकि दुधारू गौओं के समान असंख्य अमृततुल्य पदार्थ हमें प्रदान करता है, जो महान् नौका से पार उतारने वाले नाविक की तरह इस भवसागर से हमें पार उतारने वाला है, इसलिये मैं उस परम दयालु परमेश्वर को हृदय से नमन करता हूँ। उसकी कृपा सदा हमपर बनी रहे।

टि. *बल वालों को वश में करने वाला* - **वैददश्विः**। यो अश्वान् बलवतो वा इन्द्रियाणि वा विन्दति वशे करोतीति स विददश्वः। स्वार्थिकस् तद्धितप्रत्ययः।। विददश्वस्य पुत्रः तरन्तः - वे.। पुरुमीळ्हः - सा.। यो अश्वान् विन्दति स विददश्वस् तस्यापत्यम् वैददश्विः - दया.। the son of Vidadaśva - W. like Vaidadaśvi - G. the knower of cosmic mystery - Satya.

*पार उतारने वाले की तरह* - **तरन्तः इव**। like Taranta - W. G. like a swimmer - Satya.

*महान् नौका से* - **मंहना**। महत्त्वेन - वे.। मंहनीयानि धनान्यपि - सा.। मंहना महत्या नौकया - दया.। many precious gifts - W. in liberal gift - G. by spacious boat - Satya.

**य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु। अत्र श्रवांसि दधिरे।। ११।।**

ये। ईम्। वहन्ते। आशुऽभिः। पिबन्तः। मदिरम्। मधु। अत्र। श्रवांसि। दधिरे।। ११।।

*जो यहाँ वहन किये जाते हैं, शीघ्रगामी अश्वों से,*

*पान करते हुए, आनन्द देने वाले सोम का।*

*यहाँ कीर्तियों को, धारण करते हैं वे।। ११।।*

सत्कर्मों में सहायक, ऐसे परमेश्वर की जो दिव्य शक्तियां उपासकों को आनन्द प्रदान करने वाले भक्तिरस का पान करते हुए अपने तीव्रगति गमनसाधनों से इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र भ्रमण करती हैं,

वे उपासक जनों का हित साधने के कारण महान् कीर्तियों को प्राप्त करती हैं।

टि. *यहाँ* - **ईम्**। ईम् इति पदपूरणः - स्क.। इदानीम् - सा.। उदकम् - दया.।

*वहन किये जाते हैं* - **वहन्ते**। कर्मणि कर्तृप्रत्ययः।। प्रापयन्ति - स्क.। गच्छन्ति - वे.। उह्यन्ते - सा.। प्राप्नुवन्ति - दया.। are brought - W. are borne - G.

*शीघ्रगामी अश्वों से* - **आशुभिः**। शीघ्रैर् अश्वैः - स्कन्दादयः। आशुकारिभिर् गुणैः - दया.।

*आनन्द देने वाले सोम का* - **मदिरम् मधु**। मदकरं मधुमाध्वीकादिकं लोके प्रसिद्धं पानद्रव्यम्। अथवा मदिरं मधु सोमलक्षणम्। स्क.। मदकरं मधु - वे.। मदकरं सोमरसम् - सा.।

*कीर्त्तियों को* - **श्रवांसि**। अन्नानि - वे.। स्तुतिजनितानि यशांसि - सा.। अन्नादीनि - दया.। glorification - W. high glories - G.

**येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा। दिवि रुक्म इवोपरि।। १२।।**

येषाम्। श्रिया। अधि। रोदसी इति। विऽभ्राजन्ते। रथेषु। आ। दिवि। रुक्मःऽइव। उपरि।। १२।।

*जिनकी शोभा से अधिक शोभते हैं, द्युलोक-भूलोक,*
*शोभायमान होते हैं वे (मरुत्), रथों पर आरूढ़।*
*आकाश में आरोचमान सूर्य जिस प्रकार, ऊपर की ओर।। १२।।*

जिनसे पृथिवीलोक और द्युलोक अत्यधिक शोभा को प्राप्त होते हैं, परमेश्वर की वे दिव्य शक्तियां अपने प्रकाशरूपी रथों में प्रयाण करती हुईं इस प्रकार शोभायमान होती हैं, जिस प्रकार तीक्ष्णता के साथ तपता हुआ सूर्य आकाश में शोभायमान होता है।

टि. *जिनकी शोभा से* - **येषां श्रिया**। येषाम् इति प्रथमार्थे षष्ठी। ये च श्रिया। स्क.। येषां मरुतां श्रिया कान्त्या - सा.। by whose glory - W. by whose splendour - G.

*अधिक शोभते हैं* - **अधि**। शोभन्त इति शेषः।। अधि रोदसी द्यावापृथिव्योः - स्क.। अधिष्ठिते - वे.। अधिष्ठिते भवत इति शेषः - सा.। are surpassed - W. are over-spread - G.

*रथों पर आरूढ़* - **रथेषु आ**। अत्राधिकरणस्योपसर्गस्य च श्रुतेर् योग्यक्रियाध्याहारः। रथेष्वारूढाः। स्क.। रथेषु - वे.। आ इति चार्थे - सा.।

*आकाश में आरोचमान सूर्य जिस प्रकार* - **दिवि रुक्मः इव**। यथायम् द्युलोके स्थितः आदित्यः तद्वत् - स्क.। दिवि आदित्य इव - वे.। द्युलोके रोचमान आदित्य इव - सा.। like the radiant (sun) in the heaven above - W. as gold ( the golden sun) gleams above in heaven - G.

**युवा स मारुतो गणस् त्वेषरथो अनेद्यः। शुभंयावाप्रतिष्कुतः।। १३।।**

युवा। सः। मारुतः। गणः। त्वेषऽरथः। अनेद्यः। शुभम्ऽयावा। अप्रतिऽस्कुतः।। १३।।

*नित्य तरुण (है) वह मरुत्सम्बन्धी गण,*
*प्रकाशरूपी रथों वाला (है), अनिन्दनीय।*
*शोभन गति वाला, प्रतिकार न किया जा सकने वाला।। १३।।*

परमेश्वर की दिव्य शक्तियां नित्य युवावस्था में रहने वाली, प्रकाशरूपी रथों वाली और सदा प्रशंसा के योग्य हैं, निन्दा के योग्य कभी नहीं। वे उत्तम मार्ग पर गति करने वाली अर्थात् सदा ऋत

का पालन करने वाली हैं। हिंसक आसुरी शक्तियां युद्ध में इनको कभी पिछाड़ नहीं सकतीं।

टि. *प्रकाशरूपी रथों वाला* - **त्वेषरथः**। दीप्तरथः - स्क.। वे.। सा.। दया.।

*अनिन्दनीय* - **अनेद्यः**। प्रशस्यनामैतत् (निघ. ३.८)। प्रशस्यः। स्क.। अकुत्स्यः - वे.। अनिन्द्यः - सा.। दया.। irreproachable - W. unblamable - G.

*शोभन गति वाला* - **शुभंयावा**। शुभम् उदकं तच् च मेघस्थं प्रति गमनशीलः - स्क.। शुभं गच्छन् - वे.। शोभनं गन्ता - सा.। यः शुभं जलं याति - दया.। moving to victory - G.

*प्रतिकार न किया जा सकने वाला* - **अप्रतिष्कुतः**। स्कुञ् आप्रवणे। अप्रतिगतश् च युद्धे चाभियुञ्जानः अप्रत्यभियुक्तपूर्वः केनचिद् इत्यर्थः। स्क.। शत्रुभिः अप्रतिकृतः - वे.। अप्रतिगतो ऽप्रतिशब्दितो वा - सा.। अकम्पितो दृढः - दया.। unobstructed - W. checked by none - G.

**को वे॑द नू॒नम् ए॑षां॒ यत्रा॒ मद॑न्ति॒ धूत॑यः। ऋ॒तजा॑ता अ॒रे॒पस॑ः।। १४।।**

कः। वे॒द॒। नू॒नम्। ए॒षा॒म्। यत्र॑। मद॑न्ति। धूत॑यः। ऋ॒तऽजा॑ताः। अ॒रे॒पस॑ः।। १४।।

*कौन जानता है निश्चय से, इनके (स्थान को),*
*जहाँ आनन्दित होते हैं (ये), कँपाने वाले (शत्रुओं को)।*
*सत्यनियम से उत्पन्न होने वाले, पापों से निर्लेप।। १४।।*

परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक ये दिव्य शक्तियां सत्यनियम से उत्पन्न होने वाली, उसका पालन करने वाली और पाप, छल, कपट आदि से निर्लेप हैं। इन दिव्य शक्तियों के उस स्थान को कौन जानता है, जहाँ आसुरी शक्तियों को कँपा डालने वाली ये दिव्य शक्तियां उपासक जनों के भक्तिरस रूपी सोम के पान से आनन्द को प्राप्त करती हैं।

टि. *निश्चय से इनके स्थान को* - **नूनम् एषाम्**। नूनम् इति पदपूरणः। एषाम् मरुतां स्थानम्। स्क.। एषां तत् स्थानम् - वे.। नूनम् इदानीम् एषां मरुतां स्थानम् - सा.। नूनं निश्चितं वाय्वादीनां - दया.। of a certainty their abode - W. verily of these - G.

*आनन्दित होते हैं* - **मदन्ति**। मदतिर् अर्चतिकर्मा ऽन्यत्र, इह तु सामर्थ्यात् गत्यर्थः। गच्छन्ति। स्क.। हृष्यन्ति - सा.। हर्षन्ति - दया.। rejoice - W. take delight - G.

*कँपाने वाले* - **धूतयः**। कम्पयितारः शत्रूणां मेघानां वा - स्क.। कम्पयितारः - वे.। शत्रूणां कम्पकाः - सा.। ये पापं धूनयन्ति - दया.। intimidators (of their foes) - W. all-shakers - G.

*सत्यनियम से उत्पन्न होने वाले* - **ऋतजाताः**। ऋतम् उदकम्, तेन दातव्येन निमित्तभूतेन जाताः। वृष्टिप्रदानार्थम् एवोत्पन्ना इत्यर्थः। अथवा ऋतशब्देनात्र सर्वगतत्वाद् द्यौ रुद्रो वोच्यते। तेन जाताः। स्क.। यज्ञार्थं जाताः - वे.। जलार्थम् उत्पन्ना यज्ञे वा प्रादुर्भूताः - सा.। ये ऋते जायन्ते - दया.। born for (the distribution of) water - W. born after sacred Law - G.

*पापों से निर्लेप* - **अरेपसः**। अपापाः - स्क.। वे.। सा.। अनपराधिनः - दया.। exempt from defects - W. spotless - G.

**यू॒यं मर्तं॑ विपन्यवः प्रणे॒तार॑ इ॒त्था धि॒या। श्रोता॑रो॒ याम॑हूतिषु।। १५।। २८।।**

यू॒यम्। मर्त॑म्। वि॒प॒न्य॒वः॒। प्र॒ऽने॒तार॑ः। इ॒त्था। धि॒या। श्रोता॑रः। याम॑ऽहूतिषु।। १५।।

*तुम मनुष्य को, हे स्तुतियों से प्यार करने वालो!,*
*आगे ले जाने वाले (हो), सत्य कर्म से (उसके)।*
*सुनने वाले (हो तुम) यज्ञों में पुकारों को (उसकी)।। १५।।*

हे स्तुतियों से प्यार करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम मरणधर्मा मनुष्य का, उसके सत्कर्मों के फलस्वरूप, मार्गदर्शन करके उसे उसके लक्ष्य की ओर आगे ले जाने वाली हो। यज्ञ आदि शुभ कर्मों में जब वह तुम्हें पुकारता है, तो तुम उस उपासक की पुकारों को अवश्य सुनती हो और उसकी सहायता करती हो।

टि. *हे स्तुतियों से प्यार करने वालो* - **विपन्यवः**। विपन्युर् इति मेधाविनाम (निघ. ३.१५)। मेधाविनः। स्क.। हे मेधाविनः - वे.। दया.। स्तुतिकामाः - सा.। desirous of praise - W. lovers of the song - G.

*आगे ले जाने वाले* - **प्रणेतारः**। ताच्छील्ये चायं तृच् द्रष्टव्यः। मनुष्यप्रणयनशीलाः। स्क.। प्रणयथ - वे.। प्रकर्षेण प्रापयितारो ऽभिमतं स्वर्गादिकम् - सा.। प्रेरकाः - दया.। guides - W. G.

*सत्य कर्म से (उसके)* - **इत्था धिया**। इत्था अमुत्र स्वर्गलोके धिया कर्मणा यागाख्येन। यो यागं करोति तम् इत्यर्थः। अथवा 'इत्था' (निघ. ३.१०) इति सत्यनाम। धीर् अपि प्रज्ञा। सत्यया स्वया प्रज्ञया। स्क.। सत्यम् एव कर्मणा - वे.। इत्थानया धियेदानीं कृतप्रकारयानुग्रहबुद्ध्या ईदृशेन स्तुतिकर्मणा वा निमित्तेन - सा.। अनेन प्रकारेण प्रज्ञया कर्मणा वा - दया.। by this pious rite - W. through holy hymn - G.

*यज्ञों में पुकारों को (उसकी)* - **यामहूतिषु**। यान्ति देवा यस्मिन् स यामो यज्ञः। हूतयः आह्वानानि। द्वितीयार्थे सप्तमी। यज्ञाह्वानानि। स्क.। आगमनार्थेषु तस्याह्वानेषु - वे.। यामो गमनम्। तदर्था हूतयो यस्मिन्निति यामहूतयो यज्ञाः। तेषु। सा.। उपरमाह्वानरूपकर्मसु - दया.। invocations to the sacrifice - W. when he cries for help - G.

**ते नो॒ वसू॑नि॒ काम्या॑ पुरुश्च॒न्द्रा रि॑शादसः। आ य॑ज्ञियासो ववृत्तन।। १६।।**

ते। नः॒। वसू॑नि। काम्या॑। पु॒रु॒ऽच॒न्द्राः। रि॒शा॒द॒सः॒। आ। य॒ज्ञि॒या॒सः॒। व॒वृ॒त्त॒न॒।। १६।।

*वे (तुम) हमारे लिये वासक धनों को, कमनीयों को,*
*हे बहुतों के आह्लादको!, हे हिंसकों के विनाशको।*
*इस ओर, हे पूजनीयो!, लुढ़का लाओ तुम।। १६।।*

हे असंख्य जनों को आह्लादित करने वाली, दुष्ट हिंसक जनों को नष्ट कर डालने वाली, उपासक जनों के द्वारा पूजा के योग्य, परमेश्वर की सत्कर्मों में सहायक दिव्य शक्तियो!, भक्त जनों की पुकारों को सुनने वाली तुम हम उपासक जनों के लिये कामना के योग्य बसाने वाले उत्तम धनों को द्रुत गति से ले आओ।

टि. *वासक धनों को* - **वसूनि**। धनानि - स्क.। निवासयोग्यानि धनानि - सा.। treasures - G.

*हे बहुतों के आह्लादको* - **पुरुश्चन्द्राः**। चन्द्रः चन्दतेः कान्तिकर्मणः। बहुकान्ताः। स्क.। बहूनां ह्लादयितारः - वे.। प्रभूताह्लादकधनाः - सा.। बहुसुवर्णानि - दया.। abounding in wealth - W.

exceeding bright - G.

*हे हिंसकों के विनाशको* – **रिशादसः**। हिंसितृणां क्षेप्तारः – स्क.। रिशताम् असितारः – वे.। हिंसकानां शत्रूणाम् अत्तारः – सा.। हिंसकहिंसकाः – दया.। you destroyers of malevolent - W. ye destroyers of the foe - G.

*इस ओर लुढ़का लाओ तुम* – **आ ववृत्तन**। अत्यर्थम् आवर्तयत। अस्मभ्यं दत्तेत्यर्थः। स्क.। आवर्तयथेत्यर्थः – सा.। आ वर्त्तन्ते – दया.। लौटा दो – सात.। पुनः-पुनः प्राप्त करो – जय.। bestow upon us - W. send down - G.

**एतं मे स्तोमम् ऊर्म्ये दार्भ्याय परा वह। गिरो देवि रथीरिव।। १७।।**

एतम्। मे। स्तोमम्। ऊर्म्ये। दार्भ्याय। परा। वह। गिरः। देवि। रथीःऽइव।। १७।।

*इसको मेरे स्तोत्र को, हे निशे!,*
*सूर्य के लिये, उधर ले जा तू।*
*स्तुतियों को, हे देवि!, रथवान् की तरह।। १७।।*

हे अज्ञान की रात्री, मैं उपासक तेरे अन्धकार से घिरा हुआ भी प्रभु की और उसकी दिव्य शक्तियों की स्तुति करता हूँ। तू मेरी इन स्तुतियों को, मेरे इस स्तोत्र को अज्ञान के अन्धकार को विदीर्ण करके प्रकाश को लाने वाले उस ज्ञान के सूर्य की ओर इस प्रकार ले चल, जिस प्रकार रथ से जाने वाला दूत एक राजा के सन्देश को दूसरे राजा तक ले जाता है। मेरी यात्रा सदा अन्धकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर चलती रहे।

टि. *हे निशे* – **ऊर्म्ये**। रात्रि – स्क.। वे.। सा.। oh night - W. O Ūrmyā - G.

*सूर्य के लिये* – **दार्भ्याय**। दृणाति विदारयति तम इति दर्भः सूर्यः। स्वार्थिको भप्रत्ययः। (द्र. उणा. ३.१५१)।। दर्भपुत्राय रथवीतये – स्क.। दार्भ्याय राज्ञे रथवीतये – वे.। श्यावाश्वाय – सा.। दर्भेषु विदारकेषु भवाय – दया.। to Dārbhya - W. G.

*स्तुतियों को* – **गिरः**। सन्देशलक्षणा वाचः – स्क.। गिरो दुहितृयाचनविषयाः – वे.। स्तुतीर् मरुद्विषयाः – सा.। वाणीः – दया.। my praises - W. songs - G.

**उत मे वोचताद् इति सुतसोमे रथवीतौ। न कामो अप वेति मे।। १८।।**

उत। मे। वोचतात्। इति। सुतऽसोमे। रथऽवीतौ। न। कामः। अप। वेति। मे।। १८।।

*और मेरी ओर से कह तू,*
*सोम का सवन कर लेने पर, रथगामी के।*
*नहीं कामना नष्ट होती है मेरी।। १८।।*

हे अज्ञान-अन्धकार की रात्रि, ज्ञानरूपी रश्मियों के रथ पर आरोहण करने वाले ज्ञानसूर्य के द्वारा मेरे भक्तिरस रूपी सोम का आस्वादन कर लेने पर तू मेरी ओर से उसे यह सन्देश भी दे देना, कि सांसारिक कामनाओं और वासनाओं से मेरा मन दूर नहीं हट रहा है, इसलिये वह मुझे सत्यज्ञान का उपदेश करे, जिससे मैं जगत् की मोहमाया के जाल से निकलकर प्रभु की शरण में आ जाऊँ।

टि. *मेरी ओर से कह तू* – **मे वोचतात्**। मे इति षष्ठीश्रुतेर् वचनेनेति शेषः। मम वचनेन वोचतात्

इति। स्क.। मे ब्रूहि इत्थम् - वे.। मां ब्रूहि - सा.। मह्यम् उपदिशतु - दया.। say on my behalf - W. from me to Rathavīti say - G.

*सोम का सवन कर लेने पर, रथगामी के* - **सुतसोमे रथवीतौ**। कृतसोमयागे रथवीतौ राज्ञि - सा.। when Rathavīi hath pressed the Soma juice - G.

*नहीं नष्ट होता है* - **न अप वेति**। नापगच्छति - वे.। न विरमते - सा.। दया.।

**एष क्षेति रथवीतिर् मघवा गोमतीर् अनु। पर्वतेष्वपश्रितः।। १९।। २९।।**

एषः। क्षेति। रथऽवीतिः। मघऽवा। गोऽमतीः। अनु। पर्वतेषु। अपऽश्रितः।। १९।।

*यह निवास करता है, रथ से गमन करने वाला,*
*धनों का दाता, रश्मि वाली गतियों के साथ।*
*पर्ववान् मेघों के अन्दर, दूर गया हुआ (आकाश में)।। १९।।*

प्रकाश के रथ पर गमन करने वाला, उत्तम ऐश्वर्यों का दाता यह ज्ञानरूपी सूर्य अपनी ज्ञानरश्मियों के साथ साधक के मस्तिष्क की परतों में बहुत दूर तक पहुँचकर निवास करता है।

टि. *रश्मि वाली गतियों के साथ* - **गोमतीः अनु**। गोशब्द उदकवचनः। उदकवतीर् नदीः प्रति - स्क.। गोमतीः नदीः लक्षीकृत्य गोमत्याः समीपे ऽभि तस्यावासः - वे.। उदकवतीर् नदीर् अनुसृत्य नदीनां तीरे - सा.। गावः किरणा विद्यन्ते यासु गतिषु ताः अनु - दया.। upon (the banks of the) Gomatī (river) - W. among the people rich in kine - G.

*पर्ववान् मेघों के अन्दर* - **पर्वतेषु**। हिमवच्छिखरभूतेषु - स्क.। पर्वतेषु तपोऽर्थम् - वे.। हिमवत्पर्वतप्रान्तेषु - सा.। मेघेषु - दया.। on (the skirts of) the (Himālaya) mountains - W. among the mountains - G.

*दूर गया हुआ* - **अपश्रितः**। आश्रितः - सा.। यो ऽपश्रयति सः - दया.। has his home - W. far withdrawn - G.

## सूक्त ६२

ऋषिः - श्रुतवित् आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - त्रिष्टुप्। नवर्चं सूक्तम्।

**ऋतेन ऋतम् अपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वान्।**
**दश शता सह तस्थुस् तद् एकं देवानां श्रेष्ठं वपुषाम् अपश्यम्।। १।।**

ऋतेन। ऋतम्। अपिऽहितम्। ध्रुवम्। वाम्। सूर्यस्य। यत्र। विऽमुचन्ति। अश्वान्।
दश। शता। सह। तस्थुः। तत्। एकम्। देवानाम्। श्रेष्ठम्। वपुषाम्। अपश्यम्।। १।।

*ऋत से ऋत ढका हुआ है शाश्वत, तुम दोनों का ,*
*सूर्य के जहाँ, विमुक्त करते हैं अश्वों को।*
*दस सौ साथ-साथ स्थित होते हैं, उस एक को,*
*देवों के श्रेष्ठ (रूप) को, तेजस्वियों के, देखता हूँ मैं।। १।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और अनन्त ब्रह्माण्ड को व्याप्त करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम दोनों ऋत से उत्पन्न होने वाली और सत्यनियम का पालन करने वाली हो। तुम्हारे द्वारा

पालन किया जाने वाला यह शाश्वत ऋत ऋत पर ही आधृत है। तुम्हारा निवासस्थान वह है, जहाँ सारथि सूर्य के रथ से अश्वों को बन्धनमुक्त करते हैं, अर्थात् जहाँ सूर्य की रश्मियां बन्धनमुक्त होकर विचरती हैं। यहाँ असंख्य सूर्यरश्मियां एक साथ निवास करती हैं। यह वह स्थान है, जहाँ मैं साधक तेजस्वी देवों के एकमात्र श्रेष्ठ रूप का, ज्ञान के सूर्य का, दर्शन कर सकता हूँ।

टि. *ऋत से ऋत ढका हुआ है* – **ऋतेन ऋतम् अपिहितम्**। उदकेन युवयोः स्थानम् अपिहितम्। उदकमध्ये वर्तते इत्यर्थः। वे.। सूर्यस्य ऋतं सत्यभूतं मण्डलम् ऋतेनोदकेनापिहितम् आच्छादितम् – सा.। सत्येन सत्यं रूपम् आच्छादितम् – दया.। the (permanent) orb (of the sun) concealed by water - W. by your high Law (firm) order is established - G.

*विमुक्त करते हैं अश्वों को* – **विमुचन्ति अश्वान्**। सूर्यस्य यत्र अश्वान् पश्चिमायां दिशि देवाः विमुञ्चन्ति सारथयो वा – वे.। यस्मिन् मण्डले स्थितान् अश्वान् विमुचन्ति विमोचयन्ति स्तोतारः – सा.। त्यजन्ति किरणान् – दया.। (the hymns of the pious) liberate (his) steeds - W. they loose for travel Sūrya's horses - G.

*दस सौ साथ-साथ स्थित होते हैं* – **दश शता सह तस्थुः**। एकं स्थानं दश शतानि देवानाम् सह अधितिष्ठन्ति – वे.। दश शतानि सहस्रसंख्याका रश्मयस् तिष्ठन्ति – सा.। where a thousand rays abide together - W. ten hundred (rays of the sun) stood together - G.

*देवों के, तेजस्वियों के* – **देवानाम् वपुषाम्**। देवानाम् उप्तानाम् – वे.। देवानां वपुषां वपुष्मतां तेजोवताम् अग्न्यादीनाम्। मत्वर्थलक्षणा अथवा व्यधिकरणषष्ठी। सा.। विदुषां रूपवतां शरीराणाम् – दया.। of the (embodied) forms of the gods - W. Deities' one chief glory - G.

**तत् सु वां मित्रावरुणा महित्वम् ईर्मा तस्थुषीर् अहभिर् दुदुह्रे।**
**विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य धेना अनु वाम् एकः पविर् आ ववर्त।। २।।**

तत्। सु। वाम्। मित्रावरुणा। महिऽत्वम्। ईर्मा। तस्थुषीः। अहऽभिः। दुदुह्रे।
विश्वाः। पिन्वथः। स्वसरस्य। धेनाः। अनु। वाम्। एकः। पविः। आ। ववर्त।। २।।

*वह शोभन (है) तुम्हारा, हे मित्र और वरुण!, माहात्म्य,*
*सर्वप्रेरक (सूर्य), स्थावर (जलों) को दिनों के साथ दुहता है।*
*सब को बढ़ाते हो तुम, स्वयं सरणशील सूर्य की प्रीतिकरी द्युतियों को,*
*अनुक्रम से तुम दोनों का अद्वितीय रथ, सब ओर घूम रहा है।। २।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली मित्रभाव से युक्त और समस्त जगत् को आवृत करके स्थित परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! वह तुम्हारा माहात्म्य अत्यन्त शोभनीय है, जो तुम्हारी प्रेरणा से सर्व-प्रेरक सूर्य कालानुसार मेघों के अन्दर स्थिर जलों का दोहन करके उन्हें पृथिवी पर बरसा देता है। तुम अपनी महिमा से सूर्य की हर्षित करने वाली सब दीप्तियों की अभिवृद्धि करती हो। तुम दोनों का अद्वितीय रथ व्यवस्थाओं की स्थापना करता हुआ अनुक्रम से सर्वत्र घूमता रहता है।

टि. *सर्वप्रेरक (सूर्य)* – **ईर्मा**। आदित्यः – वे.। सततगन्ता सर्वस्य प्रेरको वादित्यः – सा.।

*स्थावर (जलों) को दिनों के साथ दुहता है* – **तस्थुषीः अहभिः दुदुह्रे**। तत्र स्थिताः अपः

अहभिः दोग्धि। आदित्यः मैत्रावरुणं तेजो दोग्धीति। वे.। अहोभिर् वर्षर्तुसम्बन्धिभिः स्थावरभूता अपो दुग्धे – सा.। स्थिराः दिनैः प्रपूरयन्ति – दया.। through (succeeding) days milked forth the stationary waters - W. floods that stood there they with the days attracted - G.

*बढ़ाते हो तुम* – **पिन्वथः**। वर्धयथः – सा.। प्रीणयतम् – दया.। पुष्ट करते हो – सात.।

*स्वयं सरणशील सूर्य की* – **स्वसरस्य**। आदित्यस्य – वे.। स्वयं सर्तुर् आदित्यस्य – सा.। अपनी बहिन के – सात.। of the self-revolving (sun) - W. of the cow-pen - G.

*प्रीतिकरी द्युतियों को* – **धेनाः**। अपः – वे.। प्रीणयित्रीर् द्युतीः – सा.। वाचः – दया.। तेजों को – सात.। (world- illuminating) rays - W. all voices - G.

*अद्वितीय रथ* – **एकः पविः**। एकः रश्मिः – वे.। एको ऽप्रतियोगी पविर् इति रथस्य नेमिः, पवी रथनेमिर् भवति (नि. ५.५) इति यास्कवचनात्। तथाप्यत्र लक्षितलक्षणया रथे वर्तते केवलचक्रस्या-वर्तनायोगात्। एको रथः। सा.। असहायः पवित्रो व्यवहारः – दया.। तुम दोनों में से एक का चक्र – सात.। the one chariot - W. single chariot- felly - G.

**अधा॑रयतं पृ॒थि॒वीम् उ॒त द्यां मि॒त्र॑राजाना वरुणा॒ महो॑भिः।**
**व॒र्धय॑त॒म् ओष॑धीः॒ पिन्व॑तं॒ गा अव॑ वृ॒ष्टिं सृ॑जतं जीरदानू।। ३।।**

अधा॑रयतम्। पृ॒थि॒वीम्। उ॒त। द्याम्। मि॒त्र॑ऽराजाना। व॒रु॒णा॒। महः॑ऽभिः।
व॒र्धय॑तम्। ओष॑धीः। पिन्व॑तम्। गाः। अव॑। वृ॒ष्टिम्। सृ॒ज॒तम्। जी॒र॒दा॒नू॒ इति॑ जीरऽदानू।। ३।।

*धारण करते हो तुम पृथिवी को और द्युलोक को,*
*हे मित्र और वरुण राजाओ! तेजों से (अपने)।*
*बढ़ाते हो तुम ओषधियों को, पुष्ट करते हो गौओं को,*
*नीचे को वृष्टि को छोड़ते हो, हे अविलम्ब देने वालो।। ३।।*

हे मित्रभाव से युक्त विनाश से त्राण करने वाली और समस्त जगत् को आवृत करके स्थित होने वाली, सब पर शासन करने वाली, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम दोनों अपने तेजों से भूलोक और द्युलोक को थामे हुए हो। तुम धरती पर उत्पन्न होने वाले अन्नों, वनस्पतियों और पेड़–पौधों का परिवर्धन करती हो। तुम गौ, अश्व आदि पशुओं को पुष्ट करती हो। हे उपासकों को अविलम्ब अभीष्ट प्रदान करने वालियो! तुम प्रजाओं के लिये धरती पर जलों को बरसाती हो।

टि. हे *मित्र और वरुण राजाओ* – **मित्रराजाना वरुणा**। हे मित्रावरुणौ! राजानौ! – वे.। मित्रभूताः स्तोतारो राजानः स्वामिन ईश्वरा भवन्ति ययोः सकाशात् तौ मित्रराजानौ। हे वरुणा। प्रतियोग्यपेक्षया द्विवचनम्। अत्र पादादित्वाद् आद्यं पदं न निहन्यते। वरुणेत्येतस्य त्वामन्त्रितं पूर्वम् अविद्यमानवद् इति पूर्वस्याविद्यमानवत्त्वेनास्यैव पादादित्वाद् अनिघातत्वं युक्तम्। नैवं भवति। नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम् इति वरुणेत्येतस्यामन्त्रितसमानाधिकरणत्वाद् अस्य च सामान्यवचनत्वाद् अविद्यमान-वत्त्वाभावेन पादादित्वाभावाद् उत्तरस्य निघातत्वं युक्तम्। सा.। Royal Mirtra and Varuṇa - W. O Mitra and Varuṇa, both kings - G.

*तेजों से* – **महोभिः**। हविर्भिः – वे.। तेजोभिः स्वसामर्थ्यैः – सा.। बृहद्भिर् गुणैः – दया.। by

your energies - W. by your greatness - G.

*पुष्ट करते हो गौओं को* - **पिन्वतम् गाः**। पशूंश् चापि पिन्वतम् - वे.। वर्धयतम् - सा.। तर्पयतं पृथिवीः - दया.। give nourishment to the cattle - W. Ye caused the cows to stream - G.

*हे अविलम्ब देने वालो* - **जीरदानू**। हे क्षिप्रदानौ - वे.। सा.। prompt benefactors - W. scattering swift drops - G.

**आ वाम् अश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरश्मय उप यन्त्वर्वाक्।**
**घृतस्य निर्णिग् अनु वर्तते वाम् उप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति।। ४।।**

आ। वाम्। अश्वासः। सुऽयुजः। वहन्तु। यतऽरश्मयः। उप। यन्तु। अर्वाक्।
घृतस्य। निःऽनिक्। अनु। वर्तते। वाम्। उप। सिन्धवः। प्रऽदिवि। क्षरन्ति।। ४।।

*इस ओर तुमको, अश्व सुष्ठु जुते हुए वहन करें,*
*नियन्त्रित लगामों वाले, निकट गमन करें सम्मुख।*
*पवित्र जल की शुद्ध (चादर), पीछे गमन करती है तुम्हारे,*
*निकट में (तुम्हारे) नदियां, सनातन काल से बह रही हैं।। ४।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और ब्रह्माण्ड को आवृत करके स्थित होने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! भली प्रकार जुते हुए अश्व तुम दोनों को इस ओर ले आवें। नियन्त्रित लगामों वाले वे अश्व तुम्हें लेकर निकट में हमारे सम्मुख आ जाएं। हम तुम्हारा साक्षात् दर्शन और अनुभव करना चाहते हैं। धरती को उपजाऊ बनाने वाले पवित्र जलों की शुद्ध चादर हमेशा तुम्हारा अनुगमन करती है। सनातन काल से ही पवित्र जलों की धाराएं तुम्हारे सांनिध्य में बहती हैं। तुम सर्वत्र अन्न-धन ऐश्वर्यों और सुख-शान्ति को लाने वाली हो।

टि. *सुष्ठु जुते हुए* - **सुयुजः**। सुष्ठु रथे युक्ताः सन्तः - सा.। easily harnessed - W.

*नियन्त्रित लगामों वाले* - **यतरश्मयः**। नियतप्रग्रहाः - वे.। सारथिनियतप्रग्रहाः - सा.। with well-guided reins - W. with reins drawn tightly - G.

*पवित्र जल की शुद्ध चादर* - **घृतस्य निर्णिक्**। घृतस्य रूपम् - वे.। घृतस्योदकस्य निर्णिग् रूपम् - सा.। the embodied form of water - W. a covering cloud of sacred oil - G. a shining dress or ornament, any bright garment - MW.

*सनातन काल से* - **प्रदिवि**। प्रदीप्ते अन्तरिक्षे - वे.। पुराणनामैतत्। पुराणाः सिन्धवः। सा.। as of old - W. from days aforetime - G.

**अनु श्रुताम् अमतिं वर्धद् उर्वीं बर्हिरिव यजुषा रक्षमाणा।**
**नमस्वन्ता धृतदक्षाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेळास्वन्तः।। ५।। ३०।।**

अनु। श्रुताम्। अमतिम्। वर्धत्। उर्वीम्। बर्हिःऽइव। यजुषा। रक्षमाणा।
नमस्वन्ता। धृतऽदक्षा। अधि। गर्ते। मित्र। आसाथे इति। वरुण। इळासु। अन्तर् इति।। ५।।

*अनुकूलता से, विख्यात रूप को बढ़ाते हुए,*
*पृथिवी की, यज्ञ की जैसे यजुमन्त्र से, रक्षा करते हुए।*

*नमस्कारों वाले, बलों को धारण करने वाले, ऊपर आसन के,*
*हे मित्र!, बैठते हो तुम, हे वरुण!, यागभूमियों के अन्दर।। ५।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आच्छादित करके वर्तमान परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम अपने दीप्तिमान् और तेजोमय विख्यात रूप को अनुकूलता से बढ़ाती रहती हो। तुम इस विस्तीर्ण पृथिवी की अर्थात् इसपर निवास करने वाली प्रजाओं की इस प्रकार रक्षा करती हो, जिस प्रकार यजु मन्त्रों से यज्ञ की रक्षा की जाती है। हे मित्र और वरुण नाम वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम नमस्कारों को स्वीकार करने वाली और बलों को धारण करने वाली हो। तुम हमारे हृदयों की वेदियों में पवित्र आसन पर विराजमान हो जाओ।

टि. *विख्यात रूप को बढ़ाते* हुए - **श्रुताम् अमतिम् वर्धत्**। विश्रुतम् भवतोः रूपम् वर्धत् - वे.। श्रुताम् विश्रुताम् अमतिम्। रूपनामैतत्। शरीरदीप्तिम् इत्यर्थः। ताम् अनु वर्धत् अनुवर्धयन्तौ युवाम्। सा.। अमतिम् रूपम् - दया.। augmenting the well-known (and ample) form - W. to make the lustre wider and more famous - G.

*पृथिवी की, यज्ञ की जैसे यजुमन्त्र से* - **उर्वीम् बर्हिर् इव यजुषा**। बर्हिर् यज्ञस् तात्स्थ्यात्।। विस्तृतं बर्हिर् इव यजुषा अध्वर्युः - वे.। बर्हिर् यज्ञः। स यथा यजुषा मन्त्रेण रक्ष्यते तद्वद् उर्वीं पालयन्तौ। सा.। पृथिवीं जलम् इव सत्सङ्गेन क्रियया वा - दया.। guarding the sacred grass with veneration - G.

*नमस्कारों वाले* - **नमस्वन्तः**। हविष्मन्तौ - वे.। अन्नवन्तौ - सा.। बह्वन्नवन्तौ - दया.। who abound in food - W. awe-inspiring - G.

*बलों को धारण करने वाले* - **धृतदक्षा**। धृतबलौ - वे.। आत्तबलौ - सा.। दया.। who are invigorated by (sacrificial) viands - W. firm, strong - G.

*ऊपर आसन के* - **अधि गर्ते**। रथस्योपरि - वे.। गर्ते ऽधि रथे - सा.। गर्ते गृहे अधि उपरिभागे - दया.। ascend your car - W. on a throne - G.

*यागभूमियों के अन्दर* - **इळासु अन्तः**। पृथिवीषु अन्तः देवयजनेषु - वे.। यागभूमिषु अन्तर् मध्ये - सा.। in the midst of the place of sacrifice - W. amid oblations - G.

**अक्रविहस्ता सुकृते परस्पा यं त्रासाथे वरुणेळास्वन्तः।**
**राजाना क्षत्रम् अहृणीयमाना सहस्रस्थूणं बिभृथः सह द्वौ।। ६।।**

अक्रविऽहस्ता। सुऽकृते। परःऽपा। यम्। त्रासाथे इति। वरुणा। इळासु। अन्तर् इति।
राजाना। क्षत्रम्। अहृणीयमाना। सहस्रऽस्थूणम्। बिभृथः। सह। द्वौ।। ६।।

*दानशील हाथों वाले शोभनकर्मा के लिये, दूर से पालन करने वाले,*
*जिसकी रक्षा करते हो तुम, हे मित्र और वरुण!, यागभूमियों में।*
*शासन करने वाले, साम्राज्य को, क्रोध न करते हुए,*
*असंख्य स्तम्भों वाले को, धारण करते हो तुम, मिलकर दोनों।। ६।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आच्छादित करके वर्तमान परमेश्वर की दिव्य

शक्तियो! तुम दूर होते हुए भी सब का पालन करने वाली हो। उत्तम कर्मों वाले मनुष्य को देने में तुम कभी कंजूसी नहीं करतीं। तुम उसे उदारता के साथ देती हो। यज्ञ आदि शुभ कर्मों में तुम सदा उसकी रक्षा करती हो। तुम सबपर शासन करने वाली हो। तुम दोनों मिलकर क्षोभ आदि के बिना ही परमेश्वर के हजारों आधारों वाले इस साम्राज्य रूपी भवन को थाम रही हो।

टि. *दानशील हाथों वाले* - **अक्रविहस्ता**। क्रविर् हिंसाकर्मा। अहिंसितहस्तौ। वे.। अकृपण-हस्तौ। दानशूराव् इत्यर्थः। सा.। अहिंसाहस्तौ दानशीलहस्तौ वा - दया.। open-handed - W. hands that shed no blood - G.

*शोभनकर्मा के लिये* - **सुकृते**। यजमानाय - वे.। सुकृते शोभनस्तुतिकर्त्रे - सा.। धर्म्ये कर्मणि - दया.। to the performer of pious acts - W. the pious - G.

*दूर से पालन करने वाले* - **परस्पा**। अत्यन्तं रक्षकौ - वे.। परस्तात् पातारौ रक्षितारौ - सा.। यौ परां पातः रक्षतः - दया.। benignant - W. guarding - G.

*रक्षा करते हो* - **त्रासाथे**। रक्षथः - वे.। सा.। भयं दद्यातम् - दया.।

*शासन करने वाले* -**राजाना**। राजानौ - वे.। राजमानौ - सा.। दया.। sovereigns - W. G.

*साम्राज्य को, असंख्य स्तम्भों वाले को* - **क्षत्रम् सहस्रस्थूणम्**। धनम्, सहस्रस्थूणं रथं च - वे.। क्षत्रं धनं सहस्रस्थूणम् अनेकावष्टम्भकस्तम्भोपेतं सौधादिरूपं गृहम् - सा.। क्षत्रं राज्यं धनं वा। सहस्रस्थूणं सहस्रसंख्या वा स्थूणा यस्मिंस् तज् जगत् राज्यं यानं वा - दया.। a mansoin of a thousand columns - W. dominion based on thousand pillars - G.

*क्रोध न करते हुए* - **अहृणीयमाना**। अक्रुध्यन्तौ - वे.। सा.। क्रोधरहिताचरणौ - दया.। free from wrath - W. of willing spirit - G.

**हिरण्यनिर्णिग् अयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्य१श्वाजनीव।**
**भद्रे क्षेत्रे निमिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य।। ७।।**

हिरण्यऽनिर्निक्। अयः। अस्य। स्थूणा। वि। भ्राजते। दिवि। अश्वाजनीऽइव।
भद्रे। क्षेत्रे। निऽमिता। तिल्विले। वा। सनेम। मध्वः। अधिऽगर्त्यस्य।। ७।।

*सुनहरी रूप वाले, लोहनिर्मित (हैं) इसके स्तम्भ,*
*विशेषेण शोभता है (यह) अन्तरिक्ष में, चाबुक की तरह।*
*सुन्दर क्षेत्र में खड़े किये गए हैं, और स्निग्ध स्थान पर,*
*प्राप्त करें हम सोम को, रथ के ऊपर स्थापित किये हुए को।। ७।।*

परमेश्वर का साम्राज्यरूपी यह भवन, यह ज़गत्, सुनहरी रूप वाला अर्थात् अत्यन्त आकर्षक है। इसके स्तम्भ फौलाद से बने हुए हैं और इसलिये बहुत मजबूत हैं। यह भवन आकाश के अन्दर इस प्रकार शोभायमान हो रहा है, जिस प्रकार अश्वों का चाबुक अर्थात् मेघों में चमकने वाली विद्युत् शोभायमान होती है। ये स्तम्भ स्निग्ध और उपजाऊ भूमि वाले सुन्दर क्षेत्र में स्थापित किये गए हैं। इनपर खड़ा यह भवन बहुत ही सुन्दर और मनोहर है। आओ हम उपासक सत्यनियम का पालन करते हुए इस जगत् रूपी रथ में स्थापित आनन्द रूपी सोम का भोग करें।

टि. *सुनहरी रूप वाले इसके स्तम्भ* - **हिरण्यनिर्णिक् अस्य स्थूणा।** वचनव्यत्ययः।। हिरण्य-रूपा अस्य रथस्य स्थूणा - वे.। हिरण्यरूपः। निर्णिग् इति रूपनाम। सा.। यः पृथिव्या हिरण्यम् अग्नेस् तेजश् च नितरां नेनेक्ति सः हिरण्यनिर्णिक्। स्थूणा स्तम्भ इव दृढा नीतिः। दया.। the substance (of their chariot) is of gold - W. adorned with gold - G.

*लोहनिर्मित* - **अयः।** अयोमयी - वे.। हिरण्यनामैतत्। अयोविकारा इत्यर्थः। अयोमया वा। तादृशो रथः। सा.। (its pillars are) of iron - W. G.

*चाबुक की तरह* - **अश्वाजनीव।** अश्वाजनी इव अवलम्बमाना - वे.। अश्वा व्यापनशीला मेघाः। तान् अजति गच्छतीत्यश्वाजनी विद्युत्। सेव। सा.। दया.। सात.। like lightning - W. like a whip of horses - G.

*सुन्दर क्षेत्र में* - **भद्रे क्षेत्रे।** सुकल्याणे क्षेत्रे - वे.। कल्याणे स्तुत्ये वा क्षेत्रे - सा.। in an auspicious place - W. on a field deep-soiled - G.

*और स्निग्ध स्थान पर* - **तिल्विले वा।** उद्गतान्ने प्ररूढसस्ये उप्ते। तिलतिर् गतिकर्मा। वाशब्दः उपमार्थीयः। वे.। तिल स्नेहने। तिलुः स्निग्धा इला भूमिर् यस्य तत् क्षेत्रं तिल्विलं देवयजनम्। घृतसोमादिना स्निग्धे। सा.। स्नेहस्थाने - दया.। or in the sacrificial hall - W. and fruitful - G.

*सोम को, रथ के ऊपर स्थापित किये हुए को* - **मध्वः अधिगर्त्यस्य।** उदकं रथे स्थितम् - वे.। मध्वो मधुपूर्णं गर्तस्य गर्तं रथम् - सा.। the meath that loads your car-seat - G.

**हिर॑ण्यरूपम् उ॒षसो॒ व्यु॑ष्टा॒व् अय॑ःस्थूण॒म् उदि॑ता॒ सूर्य॑स्य।**
**आ रो॑हथो वरुण मित्र॒ गर्त॒म् अत॑श् चक्षाथे॒ अदि॑तिं॒ दिति॑ं च।। ८।।**

हिर॑ण्यऽरूपम्। उ॒षस॑ः। विऽउ॑ष्टौ। अय॑ःऽस्थूणम्। उत्ऽइ॑ता। सूर्य॑स्य।
आ। रो॒ह॒थ॒ः। व॒रु॒ण॒। मि॒त्र॒। गर्त॑म्। अत॑ः। च॒क्षा॒थे॒ इति॑। अदि॑तिम्। दिति॑म्। च॒।। ८।।

*सुनहरी रूप वाले पर, उषा के उदित हो जाने पर,*
*लोह से निर्मित स्तम्भों वाले पर, उदित होने पर सूर्य के।*
*आरोहण करते हो तुम, हे वरुण!, हे मित्र!, रथ पर,*
*वहाँ से देखते हो तुम, अदिति को, दिति को भी।। ८।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली मैत्री के भाव से युक्त और ब्रह्माण्ड को आच्छादित करके वर्तमान परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब से उषा उदित होने लगी है और जब से सूर्य उदित होने लगा है, उस आदि काल से लेकर ही तुम दोनों सुनहरे रूप वाले आकर्षक और मनोहर तथा दृढ़ स्तम्भों वाले इस जगत् रूपी रथ पर आरोहण कर रही हो, इसपर शासन कर रही हो, और उस अविनाशी कारण तथा इस नाशवान् कार्य का भी अवलोकन कर रही हो।

टि. *उदित होने पर सूर्य के* - **उदिता सूर्यस्य।** सूर्ये उदिते, प्रातर् इत्यर्थः - वे.। सूर्यस्य उदये - सा.। दया.। at the rising of the sun - W. when the sun is setting - G.

*देखते हो तुम अदिति को, दिति को भी* - **चक्षाथे अदितिं दितिं च।** पश्यथः अदीनं दीनं च जनम् - वे.। अदितिम् अखण्डनीयां भूमिं दितिं खण्डितां प्रजादिकां च पश्यथः - सा.। उपदिशथः

अदितिम् अविनाशि कारणं दितिं नाशवत् कार्यं च - दया.। behold the earth and its inhabitants - W. behold infinity and limittation - G.

**यद् बंहिष्ठं नातिविधे सुदानू अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा।**
**तेन नो मित्रावरुणाव् अविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम।। ९।। ३१।।**

यत्। बंहिष्ठम्। न। अतिऽविधे। सुदानू इति सुऽदानू। अच्छिद्रम्। शर्म। भुवनस्य। गोपा।
तेन। नः। मित्रावरुणौ। अविष्टम्। सिसासन्तः। जिगीवांसः। स्याम।। ९।।

*जो अत्यन्त दृढ़, नहीं है बींधे जाने के लिये, हे शोभन दाताओ!,*
*छिद्रों से रहित शरण, हे जगत् का पालन करने वालो।*
*उससे हमको, हे मित्र और वरुण!, बढ़ाओ तुम,*
*भोगों को चाहते हुए, विजयें प्राप्त करने वाले होवें हम।। ९।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली मैत्रीभाव से पूर्ण और जगत् को आच्छादित करके वर्तमान परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हे उत्तम दाताओ! हे लोकों का पालन करने वालियो! तुम्हारी जो शरण, तुम्हारा जो संरक्षण, अत्यन्त शक्तिशाली, भेदन न किया जा सकने वाला और त्रुटियों से रहित है, तुम उससे हमें बढ़ाओ। हम भोगों की कामना वाले और विजयें प्राप्त करने वाले बनें।

टि. *अत्यन्त दृढ़* - **बंहिष्ठम्।** अतिशयेन बहुलं विस्तृतम् - वे.। बहुतमम् - सा.। अतिशयेन वृद्धम् - दया.। exceeding - W. strongest - G.

*नहीं है बींधे जाने के लिये* - **न अतिविधे।** न च शत्रूणाम् अतिविधातुं शक्यम् - वे.। अति-वेद्धुम् अशक्यम्। व्यध ताड़न इत्यस्माद् अत्युपपदे कृत्यार्थे केन् सम्प्रसारणं च। सा.। impossible to disturb - W. impenetrable - G.

*छिद्रों से रहित* - **अच्छिद्रम्।** अनवच्छिन्नम् - सा.। perfect - W. flawless - G.

*शरण* - **शर्म।** गृहम् - वे.। दया.। सुखं गृहं वा - सा.। felicity - W. shelter - G.

*बढ़ाओ तुम* - **अविष्टम्।** रक्षतम् - वे.। सा.। व्याप्नुतम् - दया.। bless us with that (felicity) - W. aid us with that - G.

*भोगों को चाहते हुए* - **सिषासन्तः।** शत्रून् सम्भक्तुम् इच्छन्तः - वे.। धनानि संभक्तुम् इच्छन्तः - सा.। विभजन्तः - दया.। when we long to win - G.

इति हिन्दीभाषानुवादशोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यादिभिः संयुतायाम्
ऋग्वेदसंहितायां चतुर्थे ऽष्टके तृतीयो ऽध्यायः समाप्तः।

## सूक्त ६३

ऋषिः - अर्चनाना आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - जगती। सप्तर्चं सूक्तम्।

**ऋतस्य गोपाव् अधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि।**
**यम् अत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर् मधुमत् पिन्वते दिवः।। १।।**

ऋतस्य। गोपौ। अधि। तिष्ठथः। रथम्। सत्यऽधर्माणा। परमे। विऽओमनि।
यम्। अत्र। मित्रावरुणा। अवथः। युवम्। तस्मै। वृष्टिः। मधुऽमत्। पिन्वते। दिवः।। १।।

*हे सत्यनियम के पालको!, ऊपर स्थित होते हो तुम रथ के,*
*हे सच्चे धर्मों वालो! परम आकाश में।*
*जिसको यहाँ, हे मित्र और वरुण!, बढ़ाते हो तुम दोनों,*
*उसके लिये वर्षा मधुर जल को, बरसाती है द्युलोक से।। १।।*

हे सत्यनियम का पालन करने वाली, सत्य कर्तव्यों का सम्पादन करने वाली, विनाश से त्राण करने वाली और ब्रह्माण्ड को आच्छादित करके वर्तमान परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम दोनों इस परम व्योम के अन्दर इस ब्रह्माण्डरूपी रथ पर आरोहण करती हुई सर्वत्र व्याप्त हो रही हो। इस जगत् में अपनी कृपादृष्टि से तुम जिस मनुष्य की अभिवृद्धि करती हो, उसपर द्युलोक से माधुर्य से युक्त आनन्द की वर्षा होती है।

टि. *हे सत्यनियम के पालको* - **ऋतस्य गोपौ।** हे सत्यस्य गोपायितारौ - वे.। उदकस्य रक्षितारौ - सा.। सत्यस्य रक्षकौ राजामात्यौ - दया.। guardians of water - W. guardians of Order - G.

*हे सच्चे धर्मों वालो* - **सत्यधर्माणा।** सत्यकर्माणौ - वे.। सत्यधर्माणौ - सा.। सत्यो धर्मो ययोस् तौ - दया.। observers of truth - W. whose Laws are ever true - G.

*परम आकाश में* - **परमे व्योमन्।** परमे अन्तरिक्षे - वे.। निरतिशय आकाशे - सा.। व्योमवत् प्रकाशिते व्यापके परमात्मनि - दया.। in the highest heaven - W. in sublimest heaven - G.

*उसके लिये वर्षा मधुर जल को बरसाती है* - **तस्मै वृष्टिः मधुमत् पिन्वते।** तस्मै वृष्टिः उदकवती (दिवः) पतति - वे.। तस्मै यजमानाय वृष्टिः पर्जन्यो मधुमद् उदकं पिन्वते सिञ्चति वर्धयति - सा.। तस्मै वर्षाः मधुरादिगुणयुक्तं सिञ्चति - दया.। the rain sends down the sweet (shower) - W. the rain with sweetness streameth down - G.

**सम्राजाव् अस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दृशा।**
**वृष्टिं वां राधो अमृतत्वम् ईमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः।। २।।**

सम्ऽराजौ। अस्य। भुवनस्य। राजथः। मित्रावरुणा। विदथे। स्वःऽदृशा।
वृष्टिम्। वाम्। राधः। अमृतऽत्वम्। ईमहे। द्यावापृथिवी इति। वि। चरन्ति। तन्यवः।। २।।

*सम्यक् प्रकाशमान, इस भुवन पर शासन करते हो तुम,*
*हे मित्र और वरुण! ज्ञानगोष्ठी में सुख का चिन्तन करने वाले।*
*वृष्टि की तुमसे, धन की, अमरत्व की, याचना करते हैं हम,*

*द्युलोक और भूलोक पर, विचरण करती हैं विस्तृत रश्मियां।। २।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और ब्रह्माण्ड को आवृत करके वर्तमान परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम सम्यक् प्रकाश और ज्ञान से युक्त हो। तुम इन सब लोकों पर शासन करने वाली हो। ज्ञानगोष्ठियों में तुम सुख और आनन्द का चिन्तन करने वाली हो। हम तुमसे सुखों की वर्षा की, उत्तम धनों की और अमरत्व की याचना करते हैं। तुम्हारी विस्तृत रश्मियां द्युलोक और पृथिवीलोक पर सब ओर विचरण कर रही हैं।

टि. *सम्यक् प्रकाशमान* - **सम्राजौ।** भूतजातस्य ईश्वरौ - वे.। सम्यग् राजमानौ - सा.। यौ सम्यग् राजेते तौ - दया.। Imperial rulers - W. (this world's) imperial Kings - G. as universal rulers - Fra.

*ज्ञानगोष्ठी में सुख का चिन्तन करने वाले* - **विदथे स्वर्दृशा।** युवाम् यज्ञे (राजथः), सर्वद्रष्टारौ - वे.। स्वर्दृशा सर्वस्य द्रष्टारौ युवां विदथे अस्मद्यज्ञे सम्राजाव् इति सम्बन्धः - सा.। (you shine) at this sacrifice, the beholders of heaven - W. in holy synod, looking on the light - G. who have the vision of the Sun-world, in the sessions of knowledge - Fra.

*वृष्टि की तुमसे, धन की, अमरत्व की, याचना करते हैं हम* - **वृष्टिं वां राधः अमृतत्वम् ईमहे।** तौ वां वृष्टिं धनम् अमृतत्वं च याचामहे - वे.। वां युवां वृष्टिं राधो धनं वृष्ट्याख्यं धनम् अमृतत्वं स्वर्गं च प्रार्थयामहे - सा.। we ask of you the wealth (that is) rain, and immortality - W. we pray for rain, your boon, and immortality - G. I implore the felicity of your rain of immortality - Fra.

*विस्तृत रश्मियां* - **तन्यवः।** गर्जितशब्दाः - वे.। विस्तृता रश्मयः - सा.। विद्युतः - दया.। your forms - W. the thunderers - G. Fra.

**सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस् पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी।**
**चित्रेभिर् अभ्रैर् उप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया।। ३।।**

सम्ऽराजौ। उग्रा। वृषभा। दिवः। पती इति। पृथिव्याः। मित्रावरुणा। विचर्षणी इति विऽचर्षणी।
चित्रेभिः। अभ्रैः। उप। तिष्ठथः। रवम्। द्याम्। वर्षयथः। असुरस्य। मायया।। ३।।

*सम्यक् प्रकाशमान, तेजस्वी, सुखों के वर्षक, द्युलोक के पालक,*
*(पालक) भूलोक के (भी), मित्र और वरुण, विशेष द्रष्टा (शुभाशुभ के)।*
*विविध वर्णों वालों के साथ मेघों के, निकट से स्थित होते हो तुम गर्जना के,*
*अन्तरिक्ष से जलों को बरसवाते हो तुम, शक्तिशाली (पर्जन्य) के सामर्थ्य से।। ३।।*

हे परमेश्वर की विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली दिव्य शक्तियो! तुम प्रकाश से भली प्रकार युक्त हो। तुम धर्षक बलों वाली और सुखों की वर्षा करने वाली हो। तुम द्युलोक और भूलोक का पालन करने वाली हो। तुम सब प्राणियों के शुभ और अशुभ कर्मों पर विशेष दृष्टि रखने वाली हो। विविध वर्णों वाले मेघ तुम्हारी उपस्थिति से ही गर्जना करते हैं। तुम ही शक्तिमान् जलवर्षक शक्ति के सामर्थ्य से आकाश से जलों को बरसवाती हो।

टि. *विशेष द्रष्टा (शुभाशुभ के)* - **विचर्षणी**। विद्रष्टारौ - वे.। सर्वस्य द्रष्टारौ - सा.। प्रकाशकौ - दया.। beholders of the universe - W. ye ever active Ones - G.

*निकट से स्थित होते हो तुम गर्जना के* - **उप तिष्ठथः रवम्**। गर्जितशब्दम् उपतिष्ठथः - वे.। रवं स्तोत्रम् उप तिष्ठथः - सा.। समीपस्थौ भवथः शब्दम् - दया.। you approach to hear the sound (of your praises) - W. ye wait on thunder - G. you concentrate your roar - Fra.

*शक्तिशाली (पर्जन्य) के सामर्थ्य से* - **असुरस्य मायया**। पर्जन्यस्य कर्मणा - वे.। असुरस्य उदकनिरसितुः पर्जन्यस्य मायया प्रज्ञया सामर्थ्येन - सा.। मेघस्याच्छादनादिना प्रज्ञया वा - दया.। अपने बल के सामर्थ्य से - सात.। by the power of the emitter of showers - W. by the Asura's magic power - G. by the magic wisdom power of the Almighty - Fra. by your well-planned mystic power - Satya.

**माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिंश् चरति चित्रम् आयुधम्।**
**तम् अभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते।। ४।।**

माया। वाम्। मित्रावरुणा। दिवि। श्रिता। सूर्यः। ज्योतिः। चरति। चित्रम्। आयुधम्।
तम्। अभ्रेण। वृष्ट्या। गूहथः। दिवि। पर्जन्य। द्रप्साः। मधुऽमन्तः। ईरते।। ४।।

*निर्माणशक्ति तुम्हारी, हे मित्र और वरुण!, द्युलोक में आश्रित है,*
*सूर्य ज्योतिस्वरूप (जहाँ) विचरण करता है, अद्भुत अस्त्र (तुम्हारा)।*
*उसको मेघ के द्वारा, वृष्टि के द्वारा, छुपा देतो हो तुम आकाश में,*
*हे पर्जन्य!, जल की बूँदें, माधुर्य से युक्त, गिरती हैं (उनकी इच्छा से)।। ४।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! उत्तम कार्यों को सम्पन्न करने वाला तुम्हारा सामर्थ्य प्रकाशलोक में आश्रय लिये हुए है। यह ज्योतियों का पुञ्ज सूर्य, जिसे तुम अज्ञान, अन्धकार आदि दुष्ट शक्तियों के विनाश के लिये एक अद्भुत शस्त्र के रूप में प्रयोग करती हो, वहीं पर विचरण करता है। वर्षा करते समय तुम इस सूर्य को आकाश के अन्दर मेघ और वृष्टि से ढक देती हो। और हे जलवृष्टि करने वाली दिव्य शक्ति!, तू भी इन्हीं की प्रेरणा से मधुर जल की बूँदों को बरसाती है।

टि. *सूर्य ज्योतिस्वरूप विचरण करता है अद्भुत अस्त्र (तुम्हारा)* - **सूर्यः ज्योतिः चरति चित्रम् आयुधम्**। सूर्यः ज्योतिः विसृजति चित्रम् आयुधम् - वे.। सूर्यः सर्वस्य प्रेरको ज्योतिर् दीप्यमानश् चित्रं चायनीयम् आयुधम् उक्तलक्षणायुधरूपश् चरति परिभ्रमति - सा.। the light (that is) the sun, your wonderful weapon, moves - W. The sun, the wondrous weapon, cometh forth as light - G.

*छुपा देते हो तुम* - **गूहथः**। गोपायथः - सा.। संवृणुथः - दया.। छिपा देते हो - सात.। you invest - W. ye hide - G. Fra.

*जल की बूँदें माधुर्य से युक्त गिरती हैं* - **द्रप्साः मधुमन्तः ईरते**। उदकद्रप्साः मधुमन्तः पतन्ति - वे.। त्वया मित्रावरुणाभ्यां वृष्ट्यर्थं प्रेरितेन मधुमन्तो द्रप्सा ईरते ईर्यन्ते, त्वत्सृष्टा वा गच्छन्ति - सा.। and

(thy) sweet-drops fall at their desire - W. and water-drops full of sweetness flow - G.

**रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु।**
**रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम्।। ५।।**

रथम्। युञ्जते। मरुतः। शुभे। सुऽखम्। शूरः। न। मित्रावरुणा। गोऽइष्टिषु।
रजांसि। चित्रा। वि। चरन्ति। तन्यवः। दिवः। सम्ऽराजा। पयसा। नः। उक्षतम्।। ५।।

*रथ को जोतते हैं मरुत्, कल्याण के लिये, सुख से जाने वाले को,*
*शूर जिस प्रकार, हे मित्र और वरुण!, (जोतता है) गौओं की प्राप्ति के निमित्त।*
*लोकों में अद्भुत, विविध प्रकार से गमन करती हैं, विस्तृत रश्मियां,*
*द्युलोक से, हे सम्यक् प्रकाशमानो!, जल से हमको सींचो तुम।। ५।।*

जिस प्रकार कोई योद्धा युद्ध में शत्रुओं से गौओं को छीनने के लिये अपने रथ को जोतता है अथवा जिस प्रकार काम, क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट कर डालने वाला कल्याणमार्ग का पथिक कोई साधक प्रकाश और ज्ञानरश्मियों की प्राप्ति के लिये अपने शरीररूपी रथ को योगसाधना के निमित्त जोतता है, उसी प्रकार हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को सब ओर से आवृत करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! प्रभु की सत्कार्यों में सहायक शक्तियां प्रजाओं के कल्याण के लिये अपने सहज साधनों का उपयोग करती हैं। तुम्हारी विचित्र विस्तृत प्रकाशरश्मियां सभी लोकों में विचरण करती हैं। हे सम्यक् प्रकाशमानो! तुम द्युलोक से हमपर जलों और सुखशान्ति की भरपूर वर्षा करो।

टि. *कल्याण के लिये* - **शुभे**। उदकाय - वे.। सा.। कल्याणाय - दया.। for (the emission of) water - W. for victory - G. for beauty - Fra.

*सुख से जाने वाले को* - **सुखम्**। सुद्वारम् - वे.। शोभनाक्षद्वारम् - सा.। सुखकरम् - दया.। easy-going - W. Fra. easy car - G.

*गौओं की प्राप्ति के निमित्त* - **गविष्टिषु**। दिवसागमनेषु - वे.। गवाम् उदकानाम् एषणेषु निमित्तेषु - सा.। किरणानां सङ्गतिषु - दया.। in the wars - G. in the battles for the light - Fra.

*विस्तृत रश्मियां* - **तन्यवः**। ततास् ते मरुतः - सा.। विद्युतः - दया.। forms - W. the thunderers - G. the thunderings spread - Fra.

**वाचं सु मित्रावरुणाव् इरावतीं पर्जन्यश् चित्रां वदति त्विषीमतीम्।**
**अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतम् अरुणाम् अरेपसम्।। ६।।**

वाचम्। सु। मित्रावरुणौ। इराऽवतीम्। पर्जन्यः। चित्राम्। वदति। त्विषिऽमतीम्।
अभ्रा। वसत। मरुतः। सु। मायया। द्याम्। वर्षयतम्। अरुणाम्। अरेपसम्।। ६।।

*ध्वनि को सुष्ठु, हे मित्र और वरुण!, अन्नसाधिका को,*
*पर्जन्य विचित्र को उत्पन्न करता है, तेजस्विनी को।*
*मेघों को आच्छादित करते हैं मरुत्, भली प्रकार सुकर्म से,*
*द्युलोक को बरसाओ तुम दोनों, रक्तवर्ण को, निर्मल को।। ६।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आच्छादित करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! मनुष्यों को तृप्त करने वाली पर्जन्य नामक दिव्य शक्ति अन्नों को उत्पन्न करने में सहायक, तेजोमय, अनोखी मेघगर्जना को भली प्रकार उत्पन्न करती है। परमेश्वर की मरुत् नामक सहायक दिव्य शक्तियां वर्षा के लिये अपने सुकर्मों से मेघों को धारण करती हैं और तुम दोनों पर्जन्य और मरुतों की सहायता से लालिमा से युक्त स्वच्छ आकाश से जलों को बरसाती हो।

टि. *ध्वनि को सुष्ठु उत्पन्न करता है* - **वाचम् सु वदति**। गर्जनशब्दं सुष्ठु शब्दयति वृष्ट्यर्थम् - सा.। utters a (wonderful) sound - W. sendeth out a voice - G. declares Goddess-Word - Fra.

*अन्नसाधिका को* - **इरावतीम्**। अन्नवतीम् - वे.। अन्नसाधिकाम् - सा.। इरा जलानि विद्यन्ते यस्यास् ताम् - दया.। announcing abundant food - W. refreshing - G. invigorating - Fra.

*तेजस्विनी को* - **त्विषीमतीम्**। दीप्तिमतीम् - वे.। सा.। प्रशस्तविद्याप्रकाशयुक्ताम् - दया.। indicative of radiance - W. mighty - G. brilliant - Fra.

*पर्जन्य* - **पर्जन्यः**। पर्जन्यस् तृपेः। आद्यन्तविपरीतस्य। तर्पयिता जन्यः। परो जेता वा। परो जनयिता वा। प्रार्जयिता वा रसानाम्। या. (नि. १०.१०)। मेघः - सा.। दया.। cloud - W. Satya. Parjanya - G. the rain-God - Fra.

*द्युलोक को बरसाओ तुम दोनों* - **द्याम् वर्षयतम्**। you two cause the sky to send down rain - W. G. Fra.

*निर्मल को* - **अरेपसम्**। निर्मलाम् - वे.। अपापां वृष्ट्यविघातिनीम् - सा.। अनपराधिनीम् - दया.। faultless - W. the spotless One - G. spotless - Fra.

**धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता**
**व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया।**
**ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः**
**सूर्यम् आ धत्थो दिवि चित्र्यं रथम्।। ७।। १।।**

धर्मणा। मित्रावरुणा। विपःऽचिता। व्रता। रक्षेथे इति। असुरस्य। मायया।
ऋतेन। विश्वम्। भुवनम्। वि। राजथः। सूर्यम्। आ। धत्थः। दिवि। चित्र्यम्। रथम्।। ७।।

*धारक नियम के द्वारा, हे मित्र और वरुण!, हे मेधावियो!,*
*व्रतों की रक्षा करते हो तुम दोनों, प्राणदाता की निर्माणशक्ति के द्वारा।*
*सत्यनियम के द्वारा, समस्त ब्रह्माण्ड को, विशेषेण प्रकाशित करते हो तुम,*
*सूर्य को सर्वतः धारण करते हो तुम द्युलोक में, पूजनीय रथ को।। ७।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और समस्त जगत् को आच्छादित करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हे मेधा को धारण करने वालियो! तुम दोनों धारण करने वाले और धारण किये जाने वाले नियम के द्वारा तथा प्राणदाता परमेश्वर की निर्माणशक्ति की सहायता से अपने व्रतों की रक्षा करती हो। तुम सत्यनियम के द्वारा समस्त ब्रह्माण्ड को विशेष रूप से प्रकाशित करती हो। तुम सूर्य को सर्वतः एक

पूजनीय रथ के रूप में आकाश में जगत् के उपकार के लिये धारण करती हो।

टि. *धारक नियम के द्वारा* - **धर्मणा।** कर्मणा - वे.। जगद्धारकेण वृष्ट्यादिलक्षणेन कर्मणा - सा.। by your office - W. with your Law - G. by nature - Fra.

*व्रतों की रक्षा करते हो तुम दोनों* - **व्रता रक्षेथे।** व्रतानि रक्षेथे - वे.। यज्ञादिकर्माणि पालयथः - सा.। व्रता सत्यभाषणादीनि व्रतानि - दया.। you protect pious rites - W. ye guard the ordinances - G. you guard the laws - Fra.

*प्राणदाता की निर्माणशक्ति के द्वारा* - **असुरस्य मायया।** असुरस्य मेघानां निरसितुः पर्जन्यस्य मायया प्रज्ञया च - सा.। through the power of the emitter of showers - W. through the Asuras's magic power - G. by the magic wisdom power of the Almighty - Fra.

*सत्यनियम के द्वारा* - **ऋतेन।** तेजसा उदकेन वा - वे.। उदकेन यज्ञेन वा निमित्तेन - सा.। यथार्थेन - दया.। with water - W. by the eternal Order - G. through the truth - Fra.

*विशेषेण प्रकाशित करते हो तुम* - **वि राजथः।** विराजयथः - वे.। वि राजयथः विदीपयथ इत्यर्थः - सा.। विशेषेण प्रकाशेथे - दया.। you illumine - W. ye govern - G. Fra.

*सूर्य को, पूजनीय रथ को* - **सूर्यम् चित्र्यम् रथम्।** सुवीर्यं चित्रवर्णं रथम् - वे.। सूर्यं च चित्र्यं पूज्यं रथं रंहणस्वभावम् - सा.। the sun, the adorable chariot - W. the sun as a refulgent car - G. the sun as the vehicle of wonder - Fra.

## सूक्त ६४

ऋषिः - अर्चनाना आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - १-६ अनुष्टुप्, ७ पङ्क्तिः। सप्तर्चं सूक्तम्।

**वरु॑णं वो रि॒शाद॑सं ऋ॒चा मि॒त्रं ह॑वामहे।**
**परि॑ व्र॒जेव॑ बा॒ह्वोर् ज॑ग॒न्वांसा॒ स्व॑र्णरम्।। १।।**

वरु॑णम्। व॒ः। रि॒शाद॑सम्। ऋ॒चा। मि॒त्रम्। ह॒वा॒म॒हे॒।
परि॑। व्र॒जाऽइ॑व। बा॒ह्वोः। ज॒ग॒न्वांसा॑। स्व॑ःऽनरम्।। १।।

*वरुण को तुम्हारे लिये, हिंसकों को परास्त करने वाले को,*
*मन्त्र के द्वारा, मित्र को (भी), बुलाते हैं हम।*
*सर्वतः गौओं के समूहों की तरह, दोनों भुजाओं (के बल) से,*
*जाने वालों को, स्वर्ग में ले जाने वालों को।। १।।*

हे मनुष्यो! हम तुम्हारे कल्याण के लिये जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली और विनाश आदि से त्राण करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियों का, जो कि हिंसक शक्तियों को परास्त करने वाली और स्वर्ग का मार्ग दिखाने वाली हैं, आह्वान करते हैं। वे अपनी भुजाओं के बल से सर्वत्र इस प्रकार पहुँचती हैं, जिस प्रकार गौएं सायंकाल में अपने बाड़ों की ओर गमन करती हैं।

टि. *तुम्हारे लिये* - **वः।** युष्माकम् - वे.। वो युवयोर् मध्ये। व्यत्ययेन बहुवचनम्। सा.। युष्मान् - दया.। you - W. G.

*हिंसकों को परास्त करने वाले को* – **रिशादसम्।** रिशताम् असितारम् – वे.। रिशन्ति हिंसन्तीति रिशाः शत्रवः। तेषां प्रेरकम्। सा.। शत्रुनिवारकम् – दया.। the discomfiter of foes - W. foeman-slaying - G.

*गौओं के समूहों की तरह* – **व्रजाऽइव।** व्रजान् इव – वे.। गोयूथानीव – सा.। व्रजन्ति यया गत्या तद्वत् – दया.। like (two herdsmen) driving - W. with penfold. " I follow Professor Ludwig in taking *vrajā* as an instrumental case." - G.

*भुजाओं (के बल) से* – **बाह्वोः।** यथा बाहुभ्यां कश्चिद् गच्छन्तं निरुणद्धि – वे.। बाह्वोर् बलेन – सा.। भुजयोः – दया.। by (the strength of their) arms - W. of your arms - G.

*स्वर्ग में ले जाने वालों को* – **स्वर्णरम्।** स्वर्गस्य नेतारं मित्रं वरुणं च स्वर्णराव् इत्यर्थः।। सर्वजनोपेतं तं देशम् – वे.। स्वर्गस्य नेतारम्। एतद् व्यवहितम् अप्युभयत्र संबध्यते। सा.। यः स्वः सुखं नयति तम् – दया.। the conductor to heaven - W. round the realm of light - G.

**ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तम् अस्मा अर्चते।**
**शेवं हि जार्यं वां विश्वासु क्षासु जोगुवे।। २।।**

ता। बाहवा। सुऽचेतुना। प्र। यन्तम्। अस्मै। अर्चते।
शेवम्। हि। जार्यम्। वाम्। विश्वासु। क्षासु। जोगुवे।। २।।

*इन दोनों भुजाओं को, शोभन ज्ञान के साथ,*
*बढ़ा दो तुम, इस अर्चना करने वाले के लिये।*
*सुख को चूँकि स्तुति के योग्य को, तुम दोनों के,*
*सभी स्थानों में, गा रहा हूँ मैं।। २।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और समस्त विश्व को आच्छादित करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! चूँकि मैं तुम्हारे स्तुति के योग्य सुख का गान सभी स्थानों पर करता हूँ, इसलिये तुम अपनी इन दोनों रक्षक भुजाओं को अपने उत्तम ज्ञान के साथ मुझ उपासक की रक्षा के लिये इस ओर आगे बढ़ा दो।

टि. *इन दोनों भुजाओं को* – **ता बाहवा।** तौ बाहू – वे.। तौ बाहुना – सा.। दया.।

*शोभन ज्ञान के साथ* – **सुचेतुना।** सुप्रज्ञानौ – वे.। सुष्ठु प्रज्ञात्रा। प्रयासभूयस्त्वं जानतेत्यर्थः। यद्वैतत् ताव् इत्यस्य विशेषणम्। सुज्ञानाव् इत्यर्थः। सा.। उत्तमविज्ञानेन – दया.। with discriminating (hand) - W. with favouring love - G.

*बढ़ा दो तुम* – **प्र यन्तम्।** प्रयच्छतम् – वे.। प्रगमयतम्। अन्तर्भावितण्यर्थो द्रष्टव्यः। यमिर् दानकर्मा वा द्रष्टव्यः। प्रयच्छतम् इत्यर्थः। सा.। प्रयत्नं कुर्वन्तम् – दया.। bestow upon me - W. stretch out - G.

*स्तुति के योग्य को* – **जार्यम्।** स्तोत्रम् – वे.। स्तुत्यम् – सा.। जरावस्थाजन्यम् – दया.। desirable - W. ever gracious - G.

*सभी स्थानों में* – **विश्वासु क्षासु।** सर्वासु भूमिषु – वे.। सा.। दया.। through all lands - W.

in all places - G.

*गा रहा हूँ मैं* – **जोगुवे**। शब्दयते – वे.। गच्छति व्याप्नोति। अवते गवत इति गतिकर्मसु पाठाद् अयम् अपि गतिकर्मा। अथवा जोगुवे सर्वत्र शब्दयामीत्यर्थः। सा.। उपदिशामि – दया.। spreads - W. is sung forth - G.

**यन् नूनम् अश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा।**
**अस्य प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे।। ३।।**

यत्। नूनम्। अश्याम्। गतिम्। मित्रस्य। यायाम्। पथा।
अस्य। प्रियस्य। शर्मणि। अहिंसानस्य। सश्चिरे।। ३।।

*जब (भी) निश्चय से, प्राप्त करूँ मैं गति को,*
*मित्र के (ही), गमन करूँ मैं मार्ग से।*
*इस प्रिय की (ही) शरण में,*
*अहिंसक की, पहुँचते हैं (सब)।। ३।।*

इस जीवन में जब भी मुझे आगे बढ़ने का अवसर मिले, तो मैं विनाश से त्राण करने वाले इस परमेश्वर के द्वारा बताए हुए मार्ग से ही आगे बढ़ूँ। (तु. ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् – ऋ. १.९१.१)। मैं कभी कुमार्ग से अर्थात् निन्दनीय उपायों का सहारा लेकर लौकिक ऐश्वर्यों और यश को प्राप्त करने का प्रयास न करूँ। जीवन में ऊँचे लक्ष्यों को पाने के लिये सभी साधु जन इस प्रिय और दयालु प्रभु की शरण में ही आते हैं।

टि. *जब प्राप्त करूँ मैं गति को* – **यत् अश्याम् गतिम्**। यदि गतिं प्राप्नुयाम् – वे.। यदा गमनं प्राप्नुयाम् – सा.। that I may pursue the (right) directin - W. that I may gain a refuge - G.

*शरण में अहिंसक की* – **शर्मणि अहिंसानस्य**। सुखे हि अहिंसतः – वे.। अहिंसतः सुखे गृहे स्थाने वा – सा.। गृहे हिंसारहितस्य – दया.। in the happiness of that benignant (deity) - W. in the charge of this (dear Friend) who harms us not - G.

*पहुँचते हैं* – **सश्चिरे**। सक्ता भवन्ति स्तोतारः – वे.। सङ्गताः – सा.। समवयन्ति प्राप्नुवन्ति – दया.। are aggregated in - W. men go protected - G.

**युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं धेयाम् ऋचा।**
**यद् ध क्षये मघोनां स्तोतॄणां च स्पूर्धसे।। ४।।**

युवाभ्याम्। मित्रावरुणा। उपऽमम्। धेयाम्। ऋचा।
यत्। ह। क्षये। मघोनाम्। स्तोतॄणाम्। च। स्पूर्धसे।। ४।।

*तुम दोनों के लिये, हे मित्र और वरुण!,*
*उपमानभूत (हवि) को, प्रदान करूँ मैं मन्त्र के साथ।*
*जो (होती है) निश्चय से, घर में धनवानों के,*
*स्तोताओं के भी, स्पर्धा के लिये।। ४।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य

शक्तियो! जिस हवि को प्रदान करने के लिये धनदाताओं और स्तुति करने वाले उपासकों के घरों में स्पर्धा चलती रहती है, जिस हवि को सब एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर देना चाहते हैं, उसी हवि, नैवेद्य और समर्पण को मैं मन्त्रों के साथ तुम्हें श्रद्धापूर्वक सदा समर्पित करता रहूँ।

टि. *उपमानभूत (हवि) को* - **उपमम्**। उपमानभूतं हविः - वे.। उप समीपे मीयमानं धनम् - सा.। उपमाम् - दया.। such wealth - W. noblest meed - G.

*प्रदान करूँ मैं मन्त्र के साथ* - **धेयाम् ऋचा**। प्रयच्छामि ऋचा - वे.। ऋचा स्तुत्या साधनेन धेयां धारयामि - सा.। दध्यां स्तुत्या - दया.। may I obtain from you by my praise - W. from you may I, by song, win - G.

*स्पर्धा के लिये* - **स्पूर्धसे**। भवतोः पूरणाय (भवति तत्) - वे.। स्पर्धनाय भवति - सा.। स्पर्धायै - दया.। as to excite envy - W. that shall stir envy - G.

**आ नो मित्र सुदीतिभिर् वरुणश् च सधस्थ आ।**
**स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे॥ ५॥**

आ। नः। मित्र। सुदीतिऽभिः। वरुणः। च। सधऽस्थे। आ।
स्वे। क्षये। मघोनाम्। सखीनाम्। च। वृधसे॥ ५॥

*आ जा हमारे पास, हे मित्र!, शोभन दीप्तियों के साथ,*
*वरुण भी सहस्थान में, आ जाए (पास हमारे)।*
*स्वकीय निवास में, धनदाताओं की,*
*सखाओं की भी, वृद्धि के लिये॥ ५॥*

इस मन्त्र में मित्र और वरुण को आत्मा और परमात्मा के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। यहाँ उनसे प्रार्थना की जा रही है, कि हे मित्रवत् संकटों से रक्षा करने वाले आत्मा! और सब ओर से आवृत करके रक्षा करने वाले परमात्मा! तुम दोनों अपनी ज्योतियों, अपने तेजों, अपनी ज्ञानरश्मियों के साथ हमारे पास आकर हमारे हृदयरूपी साँझे स्थान में निवास करो। पवित्र धनों का दान करने वालों और तुम्हारे मित्रभूत स्तोताओं का यह हृदय तुम्हारा अपना ही निवासस्थान है। तुम उनकी वृद्धि के लिये इसमें निवास करो।

टि. *शोभन दीप्तियों के साथ* - **सुदीतिभिः**। सुदानैः - वे.। सुदीप्तियुक्तौ युवाम्- सा.। प्रशस्तप्रकाशैः - दया.। with your splendour - W. with your fair splendours - G.

*सहस्थान में* - **सधस्थे**। गृहे - वे.। सहस्थाने - सा.। समानस्थाने - दया.। to our assembly - W. to our gathering - G.

*वृद्धि के लिये* - **वृधसे**। वर्धनाय - सा.। वर्धितुम् - दया.। augment - W. may thrive- G.

**युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच् च बिभृथः।**
**उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये॥ ६॥**

युवम्। नः। येषु। वरुणा। क्षत्रम्। बृहत्। च। बिभृथः।
उरु। नः। वाजऽसातये। कृतम्। राये। स्वस्तये॥ ६॥

*तुम दोनों हमारे लिये जिनमें, हे मित्र और वरुण!,*
*बल को और महान् (ज्ञान) को, लाते हो।*
*विस्तृत हमारे लिये, बल की प्राप्ति के लिये,*
*कर दो तुम, धन के लिये, कल्याण के लिये।। ६।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जिन यज्ञ आदि शुभ कर्मों के माध्यम से तुम हमें उत्तम बल और महान् ज्ञान प्रदान करती हो, तुम दूसरों की रक्षा करने वाले बल, दान में दूसरों को दिये जाने वाले धन और हमारे एवं अन्य सब के कल्याण के लिये यज्ञ आदि शुभ कर्मों का हमारे लिये विस्तार कर दो।

टि. *जिनमें* - **येषु।** येषु स्तोत्रेषु सत्सु - वे.। येषु स्तोत्रेषु निमित्तेषु - सा.। for (those praises) which - W. among whom (the gods) - G.

*हे मित्र और वरुण* - **वरुणा।** अत्र दयानन्देन वरुण इति पदपाठः कृतः।। हे मित्रावरुणौ - वे.। सा.। वरुण उत्तम - दया.। Mitra and Varuṇa - W.

*बल को और महान् (ज्ञान) को* - **क्षत्रम् बृहत् च।** बलं महत् च धनम् - वे.। क्षत्रं बलं बृहत् ब्रह्म परिवृढम् अन्नं च - सा.। धनम् महत् - दया.। strength and abundant (food) - W. high supremacy - G.

*बल की प्राप्ति के लिये* - **वाजसातये।** धनाय - वे.। अन्नस्य लाभाय यज्ञाय वा - सा.। सङ्ग्रामाय - दया.। in food - W.

*कल्याण के लिये* - **स्वस्तये।** अविनाशाय - वे.। क्षेमाय - सा.। सुखाय - दया.। in prosperity - W.

**उच्छन्त्यां मे यजता देवक्षत्रे रुशद्गवि।**
**सुतं सोमं न हस्तिभिर् आ पड्भिर् धावतं नरा**
**बिभ्रताव् अर्चनानसम्।। ७।। २।।**

उच्छन्त्याम्। मे। यजता। देवऽक्षत्रे। रुशत्ऽगवि।
सुतम्। सोमम्। न। हस्तिऽभिः। आ। पट्ऽभिः। धावतम्। नरा।
बिभ्रतौ। अर्चनानसम्।। ७।।

*उदित होने पर (उषा के), मेरे, पूजनीय तुम दोनों,*
*देवपूजास्थल में, प्रकाशमान रश्मियों वाले में।*
*सवन किये हुए सोम के पास जैसे, दो हाथों वालों के साथ,*
*इस ओर, (चार) पाँवों वालों के साथ, दौड़कर आओ, हे नायको!,*
*भरण-पोषण करते हुए, उपासना करने वाले का।। ७।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके उसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम पूजा के योग्य हो। देदीप्यमान रश्मियों वाले मेरे हृदयरूपी यज्ञगृह में आभ्यन्तर उषा के उदित हो जाने पर, उपासना करने वाले का भरण-पोषण करने वाले तुम दोनों इस

प्रकार दौड़कर आओ, जिस प्रकार बाह्य यज्ञ में सवन किये सोम का पान करने के लिये दो काछुओं वाले और चार पहियों वाले रथों से तीव्र गति से आया जाता है।

टि. *देवपूजास्थल में* - **देवक्षत्रे**। देवक्षत्र आदित्यः तस्मिन् - वे.। देवानां क्षत्रं बलं यस्मिन् यज्ञे तद् देवक्षत्रम्। तस्मिन्। सा.। देवानां धने राज्ये वा - दया.। यज्ञ में - सात.। at the sacrifice of the gods - W. in the gods' realm - G.

*प्रकाशमान रश्मियों वाले में* - **रुशद्गवि**। दीप्यमानतेजसि - वे.। रोचमानरश्मौ प्रातःसवने - सा.। प्रकाशमानरश्मियुक्ते - दया.। अग्नि की किरणों से प्रकाशित (यज्ञ में) - सात.। at the (first) shining ray (of light) - W. where white Cows shine - G.

*सवन किये हुए सोम के पास जैसे* - **सुतं सोमम् न**। नेति सम्प्रत्यर्थे - सा.। *Soma* libation poured out - W. to my pressed Soma juice - G.

*(दो) हाथों वालों के साथ, (चार) पाँवों वालों के साथ* - **हस्तिभिः पड्भिः**। पड्भिः पड्वद्भिः। मतुब्लोपः।। पाणिभिः हस्तवद्भिः - वे.। हस्तवद्भिः। हन्तेर् गतिकर्मणो हस्तशब्दः। गमनसाधनपादवद्भिर् इत्यर्थः। पड्भिः पादवद्भिश् च पादचतुष्टयोपेतैर् अश्वैः। सा.। इभैः। पादैः। दया.। जूए रूपी हाथों वाले तथा पहियों रूपी पाँवों वाले - सात.। with rapid steeds - W. with your active feet - G.

*भरण-पोषण करते हुए, उपासना करने वाले का* - **बिभ्रतौ अर्चनानसम्**। बिभ्राणौ अर्चनानसम् - वे.। धरन्तौ श्रेष्ठा नासिका यस्य तम् - दया.। उपासना करने वाले को धारण करने वाले - सात.। propitious to Arcanānas - W. supporting Arcanānas - G.

## सूक्त ६५

ऋषिः - रातहव्य आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - १-५ अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः। षड्चं सूक्तम्।

**यश् चिकेत स सुक्रतुर् देवत्रा स ब्रवीतु नः।**
**वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः।। १।।**

यः। चिकेत। सः। सुऽक्रतुः। देवऽत्रा। सः। ब्रवीतु। नः।
वरुणः। यस्य। दर्शतः। मित्रः। वा। वनते। गिरः।। १।।

*जो जानता है, वह उत्तम कर्मों वाला,*
*देवों के मध्य (ज्ञानगोष्ठी में), वह बताए हमको।*
*वरुण जिसकी, दर्शनीय,*
*मित्र भी, स्वीकारता है स्तुतियों को।। १।।*

जिसके पास ज्ञान है, जो समस्त ब्रह्माण्ड को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाला और विनाश से त्राण करने वाला है, सब के द्वारा दर्शनीय वह परमेश्वर, जिसकी स्तुतियों को स्वीकार करता है, वही मनुष्य उत्तम कर्मों वाला और उत्तम बुद्धि वाला है। वह विद्वानों की सभा में हमें उस परमात्मा के विषय में उपदेश करे।

टि. *देवों के मध्य* – **देवत्रा**। देवौ मित्रावरुणौ – वे.। स्तोतृमध्ये। यद्वा। देवेषु मध्ये। सा.। देवेषु – दया.। amongst the gods - W. G.

*मित्र भी* – **मित्रः वा**। मित्रश् च। वाशब्दश् चार्थे। सा.। or Mitra - W. G.

*स्वीकारता है* – **वनते**। भजते – वे.। संभजते – सा.। दया.। accepts - W. loves - G.

**ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा।**
**ता सत्पती ऋतावृध ऋतावाना जनेजने।। २।।**

ता। हि। श्रेष्ठऽवर्चसा। राजाना। दीर्घश्रुत्ऽतमा।
ता। सत्पती इति सत्ऽपती। ऋतऽवृधा। ऋतऽवाना। जनेऽजने।। २।।

*वे दोनों (हैं) निश्चय से श्रेष्ठ, उत्तम तेजों वाले,*
*प्रकाशमान, दूर तक ख्याति वालों में श्रेष्ठ।*
*वे दोनों सज्जनों के पालक, सत्यनियम के वर्धक,*
*सत्य की स्थापना करने वाले, जन-जन में।। २।।*

विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके उसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियां निश्चय से उत्तम तेजों वाली, प्रकाश से युक्त और दूर तक ख्याति वालों में श्रेष्ठ हैं। वे सज्जनों का पालन करने वाली, सत्यनियमों की वृद्धि करने वाली और जन-जन में सत्य की स्थापना करने वाली हैं।

टि. *प्रकाशमान* – **राजाना**। राजानौ – वे.। ईश्वरौ – सा.। प्रकाशमानौ – दया.। royal deities - W. Kings - G.

*दूर तक ख्याति वालों में श्रेष्ठ* – **दीर्घश्रुत्तमा**। अतिशयेन दीर्घश्रुतौ – वे.। दूरदेशाद् आह्वान-श्रोतृतमौ – सा.। यौ दीर्घकालं शृणुतस् ताव् अतिशयितौ – दया.। who hear (invocations) from the greatest distance - W. of glorious fame most widely spread - G.

*सत्यनियम के वर्धक* – **ऋतावृधा**। यज्ञवृधौ – वे.। यज्ञस्योदकस्य वा वर्धयितारौ – सा.। याव् ऋतं सत्यं वर्धयतस् तौ – दया.। lords of the virtuous - W. who strengthen Law - G.

*सत्य की स्थापना करने वाले* – **ऋतावाना**। सत्यकर्माणौ – वे.। गमनवन्तौ – सा.। ऋतं सत्यं विद्यते ययोस् तौ – दया.। favourers of the sacrifice - W. the Holy Ones - G.

*जन-जन में* – **जनेजने**। सर्वेषु स्तोतृषु निमित्तेषु – सा.। (for the good of) each individual man - W. with every race - G.

**ता वाम् इयानो ऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा।**
**स्वश्वासः सु चेतुना वाजाँ अभि प्र दावने।। ३।।**

ता। वाम्। इयानः। अवसे। पूर्वौ। उप। ब्रुवे। सचा।
सुऽअश्वासः। सु। चेतुना। वाजान्। अभि। प्र। दावने।। ३।।

*उन तुम दोनों की शरण में आते हुए, वृद्धि के लिये,*
*पुरातनों की, पास जाकर स्तुति करता हूँ मैं, साथ मिलकर।*

*श्रेष्ठ अश्वों वाले हम, उत्तम प्रज्ञा वालों की,*
*ऐश्वर्यों को लक्ष्य करके, (हमें) प्रकर्ष से देने के लिये।। ३।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके उसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम सनातन हो। तुम उत्तम प्रज्ञा वाली हो और हम सुन्दर गतिसाधनों वाले हैं। मैं अपने कुटुम्ब जनों के साथ तुम्हारी शरण में आकर अपनी समृद्धि, रक्षा आदि के लिये और लौकिक एवं अलौकिक ऐश्वर्यों को लक्ष्य करके इन सब की प्रकर्ष से प्राप्ति के लिये तुम्हारी स्तुति करता हूँ। तुम हमारी वृद्धि करो और हमें सर्वविध ऐश्वर्यों की प्राप्ति कराओ।

टि. *उत्तम प्रज्ञा वालों की* - **सु चेतुना।** सुप्रज्ञौ - वे.। शोभनप्रज्ञानौ - सा.। सुष्ठु विज्ञानवता सह - दया.। Most Sage - G.

*ऐश्वर्यों को लक्ष्य करके (हमें) प्रकर्ष से देने के लिये* - **वाजान् अभि प्र दावने।** हवींषि प्रति दानाय प्र नयन्तु - वे.। वाजान् अभि अन्नान्यभिलक्ष्य प्र प्रकर्षेण दावने दानाय स्तुम इति शेषः - सा.। who are provident to give us food - W. to give us strength besides - G.

**मि॒त्रो अं॒होश् चि॒द् आद् उ॒रु क्षया॑य गा॒तुं व॑नते।**
**मि॒त्रस्य॒ हि प्र॒तूर्व॑तः सुम॒तिर् अस्ति॑ विध॒तः।। ४।।**

मि॒त्रः। अं॒होः। चि॒त्। आत्। उ॒रु। क्षया॑य। गा॒तुम्। व॒न॒ते।
मि॒त्रस्य॑। हि। प्र॒ऽतूर्व॑तः। सु॒ऽम॒तिः। अस्ति॑ वि॒ध॒तः।। ४।।

*मित्र पापी को भी (स्तोता को), तुरन्त विस्तीर्ण,*
*निवास के लिये, मार्ग प्रदान कर देता है।*
*मित्र की ही, हिंसकों के प्रकर्ष से हन्ता की,*
*शुभ बुद्धि होती है, परिचारक के लिये।। ४।।*

विनाश से त्राण करने वाला वह सच्चा सखा परमेश्वर पापी बने हुए परन्तु भक्ति करने वाले अपने उपासक को संसार में सुख से निवास करने के लिये उत्तम सत्य के मार्ग पर ला देता है। हिंसकों की खूब हिंसा करने वाले परमेश्वर की कृपादृष्टि अपने भक्त पर सदा ही बनी रहती है।

टि. *पापी को भी* - **अंहोः चित्।** अंहसः पापिनः अपि - वे.। अंहस्वतो ऽपि - सा.। दुष्टाचारात् - दया.। even to the sinful (worshipper) - W. even out of misery - G.

*विस्तीर्ण, निवास के लिये मार्ग प्रदान कर देता है* - **उरु क्षयाय गातुम् वनते।** विस्तीर्णं पन्थानं गृहं प्रति गन्तुं ददाति - वे.। उरवे गृहाय निवासाय वा गातुम् उपायं वनते प्रयच्छति - सा.। बहु निवासाय पृथिवीं सम्भजति - दया.। grants the (means of) reparing to his spacious dwelling - W. gives a way to dwelling at our ease - G.

*हिंसकों के प्रकर्ष से हन्ता की* - **प्रतूर्वतः।** प्रहिंसतः - वे.। प्रकर्षेण हिंसतो ऽपि - सा.। शीघ्रं कर्तुः - दया.। of the destroyer of foes - W. of (Mitra) fighter in the van - G.

*शुभ बुद्धि* - **सुमतिः।** शोभनबुद्धिः - सा.। उत्तमप्रज्ञा - दया.। favour - W. grace - G.

*परिचारक के लिये* - **विधतः।** परिचरतः - वे.। दया.। परिचरतः शुश्रूषकस्य - सा.। to (his)

adorer - W. for he who worships - G.

**वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे।**
**अनेहसस् त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः।। ५।।**

वयम्। मित्रस्य। अवसि। स्याम। सप्रथःऽतमे।
अनेहसः। त्वाऽऊतयः। सत्रा। वरुणऽशेषसः।। ५।।

*हम मित्र के संरक्षण में*
*रहें, अतिशय विस्तार वाले में।*
*निष्पाप, तुझसे प्राप्त समृद्धियों वाले,*
*साथ मिलकर, वरुण के शासन वाले।। ५।।*

हे विपत्तियों से त्राण करने वाले उपासकों के सखा परमेश्वर! तुझसे समृद्धियों को प्राप्त करने वाले, इस जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाले के तेरे अनुशासन को मानने वाले, पापों और दोषों से रहित होकर और आपस में संगठित होकर हम तरे उपासक सदा तेरे अत्यधिक विस्तार वाले संरक्षण में निवास करें।

टि. *तुझसे प्राप्त समृद्धियों वाले* - त्वाऽऊतयः। त्वद्रक्षणाः - वे.। त्वया रक्षिताः - सा.। guarded by thy care - G.

*साथ मिलकर* - सत्रा। सहैव - सा.। सत्येन युक्ताः - दया.। at the same time - W.

*वरुण के शासन वाले* - वरुणशेषसः। वरुणः शासिता येषाम् - वे.। शेष इत्यपत्यनाम। वारकाः पुत्राः येषां ते तादृशाः - सा.। वरुण उत्तमो जनः शेषो येषां ते - दया.। the children of Varuṇa - W. as sons of Varuṇa - G.

**युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः।**
**मा मघोनः परि ख्यतं मो अस्माकम् ऋषीणां**
**गोपीथे न उरुष्यतम्।। ६।। ३।।**

युवम्। मित्रा। इमम्। जनम्। यतथः। सम्। च। नयथः।
मा। मघोनः। परि। ख्यतम्। मो इति। अस्माकम्। ऋषीणाम्। गोऽपीथे। नः। उरुष्यतम्।। ६।।

*तुम दोनों, हे मित्र (और वरुण!), इस मनुष्य को,*
*प्रेरित करो (कर्म में), और सम्यक् आगे बढ़ाओ तुम।*
*मत दानशीलों का (हमारे), परित्याग करो तुम,*
*मत (परित्याग करो तुम), हमारे वेदार्थद्रष्टाओं का,*
*सोमपान में (यज्ञ के अन्दर), हमारी रक्षा करो तुम।। ६।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम मुझ अपने उपासक को शुभ कर्मों में प्रेरित करो और भली प्रकार सन्मार्ग पर आगे बढ़ाओ। तुम हमारे पवित्र धनों वाले दानी जनों का कभी परित्याग मत करो। तुम हमारे वेदार्थद्रष्टा ज्ञानी जनों का परित्याग मत करो। तुम परिश्रमसाध्य सोमपान आदि शुभ कर्मों में सदा

हमारी रक्षा करो।

टि. *इस मनुष्य को प्रेरित करो* - **इमम् जनम् यतथः**। इमं जनं पृथक् कुरुथः - वे.। इमं जनं स्तोतारं मां प्रति यतथः गच्छथः। यद्वा। यतथ इत्यन्तर्णीतण्यर्थो ऽयम्। अहनि यतथः। व्यापारेषु गमयथः। रात्रौ च संनयथः। निर्व्यापारं कारयथः। सा.। उद्देश्यं मनुष्यं प्रेरयथः - दया.। come to this man - W. urge this people on - G.

*मत दानशीलों का (हमारे) परित्याग करो तुम* - **मा मघोनः परि ख्यतम्**। मा हविष्मतः अस्मान् वर्जयतम् - वे.। मघोनो हविर्लक्षणान्नवतो ऽस्मान् मा परिख्यतं मा परित्यजतम् - सा.। बहुधनयुक्तान् मा निराकुरुतम् - दया.। deny us not when we are rich (in offerings) - W. neglect not ye the wealthy chiefs - G.

*सोमपान में* - **गोपीथे**। सोमपाने - वे.। गौ सोमरसः। तस्य पानं यस्मिन् स गोपीथो यज्ञः तस्मिन् - सा.। गवां पेये दुग्धादौ - दया.। यज्ञ में - सात.। in the presenting of the libation - W. when ye quaff the milk - G.

## सूक्त ६६

ऋषिः - रातहव्य आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - अनुष्टुप्। षड्‌ऋचं सूक्तम्।

**आ चिकितान सुक्रतू देवौ मर्त रिशादसा।**
**वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे।। १।।**

आ। चिकितान। सुक्रतू इति सुऽक्रतू। देवौ। मर्त। रिशादसा।
वरुणाय। ऋतऽपेशसे। दधीत। प्रयसे। महे।। १।।

*आह्वान कर तू, हे ज्ञानी!, शोभन कर्मों वालों का,*
*प्रकाशमानों का, हे मनुष्य!, हिंसकों के हन्ताओं का।*
*वरुण के लिये, सत्य स्वरूप वाले के लिये,*
*प्रदान कर तू (हवि को), प्रीति के महान् के लिये।। १।।*

हे ज्ञानवान् मनुष्य! तू सुन्दर कर्मों वाली और हिंसक आसुरी शक्तियों का हनन कर डालने वाली, प्रकाश, दान, दया आदि गुणों वाली, परमेश्वर की विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली दिव्य शक्तियों का आह्वान कर। तू सत्यस्वरूप और इसलिये सबके द्वारा वरण के योग्य उस जगदीश्वर को उसकी महान् प्रीति के लिये हवि प्रदान कर।

टि. *आह्वान कर तू* - **आ**। आह्वय। उपसर्गश्रुतेर् योग्यक्रियाध्याहारः।। आगतौ - वे.। आकारयेति शेषः - सा.। समन्तात् - दया.। adore - W. call - G.

*सत्य स्वरूप वाले के लिये* - **ऋतपेशसे**। तयोः वरुणाय सत्यपेशसे मित्राय च सत्यरूपाय - वे.। पेश इति रूपनाम। ऋतम् उदकम्। उदकम् एव रूपं यस्य तादृशाय। सा.। सत्यस्वरूपाय - दया.। whose form is water - W. whose form is Law - G.

*प्रदान कर तू हवि को* - **दधीत**। पुरुषव्यत्ययः। मध्यमपुरुषस्थाने प्रथमपुरुषः।। दद्याः, हविर् इति

शेषः - वे.। सा.। दधेत - दया.। offer (oblations) - W. place offerings - G.

*प्रीति के महान् के लिये* - **प्रयसे महे**। महते अन्नाय। महद् अन्नं लब्धुम्। वे.। प्रयसे। मत्वर्थो लुप्यते। हविर्लक्षणान्नवते। महे महते पूज्याय। द्वितीयार्थे वा चतुर्थी। महद् हविर् (दधीत)। महतोऽन्नस्य लाभायेति वा योज्यम्। सा.। प्रयतमानाय महते - दया.। to the adorable accepter of (sacrificial) food - W. for his great delight - G.

**ता हि क्षत्रम् अविह्रुतं सम्यग् असुर्य१म् आशाते।**
**अध व्रतेव मानुषं स्वर्१ण धायि दर्शतम्।। २।।**

ता। हि। क्षत्रम्। अविऽह्रुतम्। सम्यक्। असुर्यम्। आशाते इति।।
अध। व्रताऽईव। मानुषम्। स्वः। न। धायि। दर्शतम्।। २।।

*वे दोनों चूँकि, बल को कुटिलतारहित को,*
*सम्यक्, प्राणियों के हितकारक को, व्याप्त करते हैं।*
*इसलिये नियमों की तरह, मनुष्य सम्बन्धी (लोक),*
*आदित्य की तरह, धारण किया जाता है, दर्शनीय।। २।।*

चूँकि परमेश्वर की इन दिव्य शक्तियों को कुटिलता, छल-कपट आदि से रहित और प्राणियों का हित करने वाला बल उस परमपिता से ही प्राप्त है, इसलिये मनुष्य सम्बन्धी इस लोक को वे सत्य नियमों की तरह और आकाश में स्थित सूर्य की तरह भली प्रकार धारण करती हैं।

टि. *कुटिलतारहित को* - **अविह्रुतम्**। अबाधितम् - वे.। अहिंस्यम् - सा.। अकुटिलम् - दया.। irresistible - W. unbroken - G.

*प्राणियों के हितकारक को* - **असुर्यम्**। असुराणां हन्तृ - वे.। असुरविघाति - सा.। असुरेभ्यो विद्वद्भ्यो हितम् - दया.। Asura-subduing - W. power divine - G.

*नियमों की तरह, मनुष्य सम्बन्धी (लोक)* - **व्रतेव मानुषम्**। व्रतानीव मानुषं जगत्।। यथा मानुषं कर्म - वे.। मनुष्येषु प्रवृत्तं कर्मेव - सा.। कर्माणीव मनुष्याणाम् इदम् - दया.। holy sacrifice amongst men - W. like high laws, (the world) of man - G.

**ता वाम् एषे रथानाम् उर्वीं गव्यूतिम् एषाम्।**
**रातहव्यस्य सुष्टुतिं दधृक् स्तोमैर् मनामहे।। ३।।**

ता। वाम्। एषे। रथानाम्। उर्वीम्। गव्यूतिम्। एषाम्।
रातऽहव्यस्य। सुऽस्तुतिम्। दधृक्। स्तोमैः। मनामहे।। ३।।

*उन तुम दोनों को, दौड़ने के लिये रथों के,*
*विस्तीर्ण मार्ग पर इनके।*
*हविदाता की शोभन स्तुति की (भी),*
*दृढ़तापूर्वक, स्तोत्रों से पूजा करते हैं हम।। ३।।*

हे विनाश आदि से त्राण करने वाली और जगत् को आच्छादित करके उसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हम उपासक तुम दोनों की और तुम्हें हवि प्रदान करने वाले याजक की

स्तुति की भी निष्ठा के साथ पूजा और आदर-सत्कार करते हैं, ताकि ये हमारे शरीर रूपी रथ इस जगत् रूपी विस्तीर्ण कर्मक्षेत्र में अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए दौड़ते रहें। आप हमारे शरीरों को बलवान् और निरन्तर गति करने वाले बनाइये, क्योंकि शरीर ही कर्तव्यपालन का प्रमुख साधन है। (शरीरम् आद्यं खलु धर्मसाधनम् - कालिदासः)।

टि. *दौड़ने के लिये* - **एषे**। गन्तुम् - वे.। दया.। गन्तुम्। मार्गरक्षणायेत्यर्थः। तुमर्थे ऽसेन् प्रत्ययः। सा.। may travel - G.

*विस्तीर्ण मार्ग पर* - **उर्वीम् गव्यूतिम्**। विस्तीर्णं मार्गम् - वे.। उर्वी प्रभूतां गव्यूतिम् अतिविस्तृतं मार्गम् - सा.। पृथिवीम्, मार्गम् - दया.। by a long distance - W. far - G.

*हविदाता की* - **रातहव्यस्य**। रातहव्यस्य ऋषेः - सा.। दत्तदातव्यस्य - दया.।

*दृढ़तापूर्वक* - **दधृक्**। धृष्टम् - वे.। धर्षकौ युवाम् - सा.। प्रागल्भ्यं प्राप्तौ - दया.।

*पूजा करते हैं हम* - **मनामहे**। पूजयामः - वे.। स्तुमः - सा.। विजानीमः - दया.। we glorify you - W. we praise you - G.

**अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिर् अद्भुता।**
**नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा।। ४।।**

अध। हि। काव्या। युवम्। दक्षस्य। पूःऽभिः। अद्भुता।
नि। केतुना। जनानाम्। चिकेथे इति। पूतऽदक्षसा।। ४।।

*और निश्चय से कविकर्मों को (दर्शाते हो) तुम,*
*दाक्षिण्य की पूर्णताओं के साथ, हे विलक्षणो।*
*नितरां प्रज्ञान के द्वारा, मनुष्यों के,*
*जाने जाते हो तुम, हे पवित्र बल वालो।। ४।।*

और हे परमेश्वर की विलक्षण दिव्य शक्तियो! तुम अपनी दक्षता की पूर्णताओं के साथ अपने बुद्धिमत्तापूर्ण कर्मों को प्रदर्शित करती हो। तुम्हारे सभी कर्म बुद्धिमत्ता से युक्त और चतुराई से परिपूर्ण होते हैं। हे पवित्र दाक्षिण्य वालियो! तुम उपासक जनों के प्रज्ञान के द्वारा जानी जाती हो। ज्ञानी साधक जन ही तुम्हें अपने ज्ञान के द्वारा जान सकते हैं।

टि. *कविकर्मों को (दर्शाते हो) तुम* - **काव्या युवम्**। काव्यानि युवाम् - वे.। स्तुत्यौ युवाम् - सा.। कवीनां कर्माणि युवाम् - दया.। you adorable deities - W. ye show wisdom - G.

*दाक्षिण्य की पूर्णताओं के साथ* - **दक्षस्य पूर्भिः**। दक्षस्य प्रजापतेः पूरकैर् हविर्भिः सह - वे.। दक्षस्य प्रवृद्धस्य मम पूर्भिः पूरकैः स्तवैः - सा.। बलस्य नगरैः - दया.। by the former (praises) of (me, your) worshipper - W. with fulness of intelligence - G.

*प्रज्ञान के द्वारा मनुष्यों के जाने जाते हो तुम* - **केतुना जनानाम् चिकेथे**। जानीथः, जनानां च। अपि वा जनानां मध्ये समर्थस्येति प्रज्ञानेन - वे.। केतुना प्रज्ञानेनानुकूलेन मनसा जनानाम्। यजमानानाम् इत्यर्थः। चिकेथे स्तोत्रं जानीथः। सा.। प्रज्ञया मनुष्याणां जानीथः - दया.। do you consider with approving minds (the adoration) of these men - W. by men's discernment are ye marked - G.

**तद् ऋतं पृथिवि बृहच् छ्रवएष ऋषीणाम्।**
**ज्रयसानाव् अरं पृथ्वति क्षरन्ति यामभिः।। ५।।**

तत्। ऋतम्। पृथिवि। बृहत्। श्रवःऽएषे। ऋषीणाम्।
ज्रयसानौ। अरम्। पृथु। अति। क्षरन्ति। यामऽभिः।। ५।।

*वह सत्यनियम (है), हे पृथिवीनिवासियो!, महान्,*
*कीर्त्ति प्राप्त कराने के लिये, ऋषियों को।*
*गमन करते हुए दोनों, पर्याप्त को, विस्तीर्ण को,*
*अत्यधिक, चुवाते हैं (जलों को), गमनों के साथ।। ५।।*

हे पृथिवी पर निवास करने वाली परमेश्वर की प्रजाओ! यह प्रभु का अटल सत्यनियम है, कि वेदार्थद्रष्टा ऋषियों को कीर्त्ति, अन्न आदि प्राप्त कराने के लिये परमेश्वर की मित्र और वरुण नामक दिव्य शक्तियां इस जगत् को व्याप्त करती हुईं और सर्वत्र गमन करती हुईं दूर-दूर तक पर्याप्त मात्रा में जलों की वर्षा करती हैं, जिनसे पृथिवी पर अन्न और ओषधियां उत्पन्न होती हैं और देवों को हवि पहुँचती है। इससे यज्ञ आदि शुभ कर्म करने वाले ऋषियों का यश बढ़ता है।

टि. *सत्यनियम* - **ऋतम्**। सत्यभूतम् - वे.। उदकम् - सा.। सत्यं जलं वा - दया.। water - W. the Law sublime - G.

*हे पृथिवीनिवासियो* - **पृथिवि**। तात्स्थ्यात् हे पृथिवीनिवासिनः।। हे पृथिवि देवि - सा.। भूमिर् इव - दया.। पृथिवी! - सात. Earth - W. G.

*कीर्त्ति प्राप्त कराने के लिये* - **श्रवएषे**। अन्नम् एषे - वे.। अन्नस्यैषणे सति - सा.। अन्नं श्रवणं वा प्राप्तुम् - दया.। for the necessities - W. to aid the (Ṛṣis') toil for fame - G.

*गमन करते हुए दोनों* - **ज्रयसानौ**। अन्तरिक्षं प्रति गच्छन्तौ - वे.। गच्छन्तौ। छन्दस्यसानच् श्रुजृभ्याम् (उणा. २.८६) इत्यसानच् ज्रयतेर् अपि भवति। चित इत्यन्तोदात्तः। सा.। गच्छन्तौ विजानन्तौ वा - दया.। active - W.

*गमनों के साथ* - **यामभिः**। गमनैः - वे.। सा.। प्रहरैर् यमोद्भवैः कर्मभिर् वा - दया.। by their movements - W.

पाश्चात्य विद्वानों ने सम्बोधन पद 'पृथिवि' का अनुवाद करते हुए भगवान् पतञ्जलि के द्वारा प्रतिपादित भाषाविज्ञान के इस सिद्धान्त - चतुर्भिः प्रकारैर् अतस्मिन् स इत्येतद् भवति, तात्स्थ्यात् ताद्धर्म्यात् तत्सामीप्यात् तत्साहचर्यात् - महाभाष्य (पा.४.१.८४) का अनुसरण नहीं किया। इसलिये उन्हें कुछ भ्रान्ति हो गई और ग्रिफिथ ने पादटिप्पणी में लिख ही दिया : "Pṛthivī or Earth is quite out of place here. Professor Ludwig suspects a corruption of the text, and professor Grassmann thinks that the whole stanza has been inserted by mistake."

**आ यद् वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः।**
**व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये।। ६।। ४।।**

आ। यत्। वाम्। ईयऽचक्षसा। मित्रा। वयम्। च। सूरयः।

व्यचिष्ठे। बहुऽपाय्यै। यतेमहि। स्वऽराज्यै।। ६।।
*आओ, कि तुम दोनों, हे व्याप्त दृष्टियों वालो!,*
*हे मित्र और वरुण!, हम और (हमारे) विद्वान्।*
*अत्यन्त विस्तीर्ण के, बहुतों से पालनीय के,*
*यत्न करें हम, स्वराज्य के निमित्त।। ६।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और समस्त जगत् को आवृत करके उसकी रक्षा करने वाली, एवं सर्वत्र व्याप्त दृष्टियों वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम, हमारे मेधावी नायक जन और हम सब मिलकर बाह्य और आभ्यन्तर स्वराज्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करें।

टि. *आओ* - **आ**। आगच्छतम्। उपसर्गश्रुतेर् योग्यक्रियाध्याहारः।। आगच्छामः - वे.। आह्वयामः - सा.। समन्तात् - दया.।

*हे व्याप्त दृष्टियों वालो* - **ईयचक्षसा**। व्याप्तदर्शनौ - वे.। सा.। ईयं प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा चक्षो दर्शनं कथनं च ययोस् तौ - दया.। who are far seeing - W. gods with wandering eyes - G.

*अत्यन्त विस्तीर्ण के निमित्त* - **व्यचिष्ठे**। अतिविस्तीर्णे - वे.। अत्यन्तविस्तृते - सा.। अतिशयेन व्याप्ते - दया.। spacious - W. most spacious - G.

*बहुतों से पालनीय के निमित्त* - **बहुपाय्ये**। बहुरक्ष्ये - वे.। बहुभिर् गन्तव्ये बहुभी रक्षितव्ये वा - सा.। बहुभी रक्षणीये - दया.। much frequented - W. protcted well - G.

*यत्न करें हम स्वराज्य के निमित्त* - **यतेमहि स्वराज्ये**। स्वराज्ये वर्तेमहि - वे.। स्वराज्ये स्वराट्त्वाय एवंविधराज्यार्थम् यतेमहि गच्छेम - सा.। यतेमहि स्वकीये राष्ट्रे - दया.। may we procced to your kingdom - W. might strive to reach the realm ye rule - G.

## सूक्त ६७

ऋषिः - यजत आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - अनुष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**बळ् इत्था देव निष्कृतं आदित्या यजतं बृहत्।**
**वरुण मित्रार्यमन् वर्षिष्ठं क्षत्रम् आशाथे।। १।।**

बट्। इत्था। देवा। निःऽकृतम्। आदित्या। यजतम्। बृहत्।
वरुण। मित्र। अर्यमन्। वर्षिष्ठम्। क्षत्रम्। आशाथे इति।। १।।
*सचमुच इस प्रकार, हे प्रकाशमानो!, सब से पृथक् को,*
*हे अदिति के पुत्रो!, पूजनीय को, महान् को।*
*हे वरुण!, हे मित्र!, हे शत्रुओं के नियन्ता!,*
*सब से उत्तम बल को, व्याप्त करते हो तुम।। १।।*

हे मृत्यु आदि से त्राण करने वाली और ब्रह्माण्ड को आवृत करके उसकी रक्षा करने वाली, शत्रुओं को वश में करने वाली, अनश्वर, अनन्त जगन्माता परमेश्वर की सन्ततिभूत दिव्य शक्तियो! तुम सब से विशिष्ट, पूजा के योग्य और महान् निर्बलरक्षक बल को धारण करती हो।

टि. *सचमुच इस प्रकार* – **बट् इत्था**। सत्यम् इत्थम् – वे.। दया.। बट् सत्यम् इत्थेत्थम् इदानीं वर्तमानप्रकारेण – सा.। verily at the present time - W. verily here - G.

*सब से पृथक् को* – **निष्कृतम्**। अबाध्यम् – सा.। perfect - W. set apart - G.

*हे विरुण!, हे मित्र!, हे शत्रुओं के नियन्ता!* – **वरुण मित्र अर्यमन्**। हे मित्रावरुणौ, अर्यमन्! त्वं च ताभ्यां सहितः – वे.। हे वरुण हे अर्यमन् अरीणां नियमितर् मित्र देव – सा.। श्रेष्ठ सुहृत् न्यायकारिन् – दया.। Mitra, Varuṇa, Aryaman - W. G.

*व्याप्त करते हो तुम* – **आशाथे**। अश्नुवाथे। यद्वार्यमा पृथग् एव निर्देष्टव्यः। द्विवचनं बहुवचनीकर्तव्यम्। सा.। प्राप्नुथः – दया.। you are possessed of - W. ye have obtained - G.

**आ यद् योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः।**
**धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुम्नं रिशादसा।। २।।**

आ। यत्। योनिम्। हिरण्ययम्। वरुण। मित्र। सदथः।
धर्तारा। चर्षणीनाम्। यन्तम्। सुम्नम्। रिशादसा।। २।।

*आकर जब स्थान में, तेजोमय में,*
*हे वरुण!, हे मित्र!, बैठते हो तुम।*
*धारण करने वाले, मनुष्यों को,*
*प्रदान करो सुख को, हे हिंसकहन्ताओ।। २।।*

हे विनाश आदि विपदाओं से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके उसकी रक्षा करने वाली, मनुष्यों को जीवन प्रदान करने वाली और दुष्ट हिंसकों का हनन करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! जब तुम हमारे इस प्रकाशमान, हितैषी और आनन्द देने वाले हृदयस्थान में आकर बैठ जाती हो, तो तुम प्रसन्न होकर हमें अभीष्ट सुख प्रदान करो।

टि. *स्थान में, तेजोमय में* – **योनिम् हिरण्ययम्**। गृहं हितरमणीयम् – वे.। हितरमणीयं योनिं यज्ञभूमिम् – सा.। कारणं तेजोमयम् – दया.। to the delightful place of sacrifice - W. in golden dwelling-place - G.

*प्रदान करो सुख को* – **यन्तम् सुम्नम्**। यच्छतम् सुखम् – वे.। प्राप्नुवन्तं सुखम् – दया.। you bring felicity - W. G.

**विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मित्रो अर्यमा।**
**व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यं रिषः।। ३।।**

विश्वे। हि। विश्वऽवेदसः। वरुणः। मित्रः। अर्यमा।
व्रता। पदाऽइव। सश्चिरे। पान्ति। मर्त्यम्। रिषः।। ३।।

*सब ही, सब कुछ जानने वाले,*
*मित्र, वरुण (और) अर्यमा।*
*व्रतों का, पाँवों से (मार्गों की) तरह, अनुसरण करते हैं,*
*पालन करते हैं मरणधर्मा का, हिंसा से।। ३।।*

जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली, विनाश आदि से त्राण करने वाली और हिंसक शक्तियों को नियन्त्रण में करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियां सब प्रकार के ज्ञानों और धनों से सम्पन्न हैं। वे अपने कर्तव्यों का इस प्रकार पालन करती हैं, जिस प्रकार मनुष्य पाँवों से मार्गों का अनुसरण करते हैं। वे मनुष्य की हिंसक जनों से होने वाली हिंसा से रक्षा करती हैं।

टि. *सब कुछ जानने वाले* - **विश्ववेदसः**। सर्वधनाः - वे.। सर्वविदः सर्वधना वा - सा.। समग्रप्राप्तविद्यैश्वर्याः - दया.। possessed of omniscience - W. possessor of all wealth - G.

*व्रतों का, पाँवों से (मार्गों की) तरह, अनुसरण करते हैं* - **व्रता पदेव सश्चिरे**। यज्ञान् गृहान् इव गच्छन्ति - वे.। व्रतास्मदीयानि कर्माणि पदेव पदानीव स्थानानीव, सश्चिरे सङ्गता भवन्ति - सा.। व्रतानि सत्याचरणरूपाणि कर्माणि, पदेव पद्यन्ते यैस् तानि पदानि चरणानीव, सश्चिरे प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा - दया.। are associated at our rites, as if in (their respective) stations - W. follow their ways, as if with feet - G.

*हिंसा से* - **रिषः**। हिंसायाः - वे.। हिंसकात् - सा.। हिंसकाद् हिंसाया वा - दया.। from the malignant - W. from injury - G.

**ते हि सत्या ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने।**
**सुनीथासः सुदानवो ऽहोश् चिद् उरुचक्रयः।। ४।।**

ते। हि। सत्याः। ऋतऽस्पृशः। ऋतऽवानः। जनेऽजने।
सुऽनीथासः। सुऽदानवः। अंहोः। चित्। उरुऽचक्रयः।। ४।।

*वे निश्चय से सत्य हैं, सत्यनियम के पालक (हैं),*
*ऋत का पालन कराने वाले (हैं), जन-जन में।*
*शोभन मार्गों से ले जाने वाले, उत्तम दानों वाले,*
*पापी को भी (हैं वे), बन्धन से मुक्त कराने वाले।। ४।।*

परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां सत्य हैं, सत्यनियम का पालन करने वाली हैं और सभी मनुष्यों में सत्यनियम का पालन कराने वाली हैं। ये मनुष्यों को श्रेष्ठ मार्गों से ले जाने वाली और उत्तम दानों वाली हैं। ये पापी मनुष्य को भी सन्मार्ग पर लाकर उसे बन्धन से मुक्त कराने वाली हैं।

टि. *सत्यनियम के पालक* - **ऋतस्पृशः**। यज्ञस्पृशः - वे.। उदकस्पर्शत्वस्य कर्तारः - सा.। य ऋतं सत्यं यथार्थं स्वीकुर्वन्ति - दया.। distributors of water - W. they cleave to Law - G.

*ऋत का पालन कराने वाले जन-जन में* - **ऋतावानः जनेजने**। सत्यकर्माणः, जनेषु - वे.। यज्ञवन्तः सर्वेषु यजमानेषु - सा.। ऋतं सत्यं मतं कर्म वा विद्यते येषु ते - दया.। protectors of holy rites - W. holy among every race - G.

*पापी को भी बन्धन से मुक्त कराने वाले* - **अंहोः चित् उरुचक्रयः**। दरिद्रस्य महद् धनं कर्तारः - वे.। पापिनो ऽपि स्वस्तोतुर् उरुचक्रयः प्रभूतधनादिकर्तारः - सा.। अपराधाद् अपि बहुकर्तारो महापुरुषार्थिनः - दया.। benefactors even of the sinner (who worships them) - W. deliverers even from distress - G.

**को नु वां मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम्।**
**तत् सु वाम् एषते मतिर् अत्रिभ्य एषते मतिः।। ५।। ५।।**

कः। नु। वाम्। मित्र। अस्तुतः। वरुणः। वा। तनूनाम्।
तत्। सु। वाम्। आ। ईषते।। मतिः। अत्रिऽभ्यः। आ। ईषते। मतिः।। ५।।

*कौन अब तुम्हारे में से, हे मित्र!, स्तुति न किया हुआ (है),*
*(तू है), वरुण अथवा, शरीरधारियों का।*
*इसलिये सुष्ठु तुम्हारी ओर, आ रही है स्तुति,*
*त्रितापरहीतों से, (तुम्हारी ओर) आ रही है स्तुति।। ५।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्ति! तुझ और जगत् को आवृत करके रक्षा करने वाली दिव्य शक्ति में से वह कौन सी शक्ति है, जिसकी देहधारी मनुष्य स्तुति नहीं करते। वे तो तुम दोनों की ही भूरि-भूरि स्तुति करते हैं। इसलिये उपासकों की ओर से स्तुति भली प्रकार तुम्हारी ओर आ रही है, त्रितापरहित ज्ञानियों की ओर से स्तुति सम्यक् तुम्हारी ओर आ रही है।

टि. *हे मित्र* - **मित्र।** मित्र! वरुणः च - वे.। अत्र मित्रशब्देन मित्रस्यैकस्यैव सम्बोधनम्। वरुणेळास्वन्तः (ऋ. ५.६२.६) इत्यत्रेव। द्विवचनसूचकस्याकारस्यानाम्नानात्। लोकेषु बहुषु संनिहितेष्वेकम् एव सम्बोध्य युवयोर् इदं युष्माकम् इदम् इति प्रयुज्जते। सा.। सुहृत् - दया.।

*शरीरधारियों का* - **तनूनाम्।** तनूवताम्। मतुब्लोपः।। अङ्गानाम् - वे.। तनूनाम् इति तृतीयार्थे षष्ठी। तनूभिः स्तुतिभिर् अस्तुत इति सम्बन्धः। तनूनाम् इत्येतद् व्यवहितम् अप्युत्तरत्र वा योज्यम्। तनूनाम् अल्पमतीनाम्। सा.। शरीराणाम् - दया.। in our praise - W. of your persons - G.

*तुम्हारी ओर आ रही है स्तुति* - **वाम् आ ईषते मतिः।** सुष्ठु आभिमुख्येन गच्छति - वे.। अस्माकं मतिः स्तुतिर् वां युवां सुष्ठु एषते ऽभिगच्छति - सा.। वां समन्तात् अभिगच्छति प्रज्ञा - दया.। our thoughts tend towards you - W. G.

## सूक्त ६८

ऋषिः - यजत आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - गायत्री। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा। महिक्षत्राव् ऋतं बृहत्।। १।।**

प्र। वः। मित्राय। गायत। वरुणाय। विपा। गिरा। महिऽक्षत्रौ। ऋतम्। बृहत्।। १।।

*प्रकर्ष से अपने मित्र के लिये, गान करो तुम,*
*(गान करो) वरुण के लिये, भावनापूर्ण वाणी से।*
*महान् बल वाले (हैं वे), सत्यनियम (हैं) महान्।। १।।*

हे उपासको! तुम परमेश्वर की विपदाओं से त्राण करने वाली और इस जगत् को व्याप्त करके इसकी रक्षा करने वाली अपनी प्रिय उपास्य शक्तियों की भावनापूर्ण वाणी से स्तुति करो, क्योंकि ये शक्तियां महान् बल वाली हैं और महान् सत्यनियम वाली हैं, अर्थात् सत्यनियम का स्वयं पालन करने वाली और अन्यों से पालन कराने वाली हैं।

टि. *भावनापूर्ण वाणी से* - **विपा गिरा**। मेधया गिरा - वे.। व्याप्तया गिरा स्तुत्या वा - सा.। यौ विविधप्रकारेण पातस् तौ, वाण्या - दया.। स्फूर्ति से रचे गए सूक्तों से - सात.। with lusty praise - W. with a song inspired - G.

*महान् बल वाले* - **महिक्षत्रौ**। महाधनौ - वे.। प्रभूतबलौ - सा.। mighty deities - W. mighty Lords - G.

*सत्यनियम (हैं) महान्* - **ऋतम् महत्**। महद् उदकं प्रयच्छतः - वे.। ऋतं यज्ञं बृहन् महद् अतिप्रशस्तं स्तुत्यर्थम् आगच्छतेति शेषः। अथवा महत् प्रभूतम् ऋतं स्तोत्रं शृणुतम् इति शेषः। सा.। सत्याढ्यं महत् - दया.। (come) to the great sacrifice - W. they are lofty Law - G.

**स॒म्राजा॒ या घृ॒तयो॑नी मि॒त्रश् चो॒भा वरु॑णश् च। दे॒वा दे॒वेषु॑ प्रश॒स्ता॥ २॥**

स॒म्ऽराजा॑। या। घृ॒तयो॑नी॒ इति॑ घृ॒तऽयो॑नी। मि॒त्रः। च॒। उ॒भा। वरु॑णः। च॒। दे॒वा। दे॒वेषु॑। प्र॒ऽश॒स्ता॥ २॥

*सम्यक् प्रकाशमान, जो (हैं) तेज से उत्पन्न होने वाले,*
*मित्र भी, दोनों, वरुण भी।*
*देव (दोनों) देवों में, प्रशंसा किये हुए,*
*(प्रकर्ष से उनके लिये, गान करो तुम)॥ २॥*

विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियां सम्यक् प्रकाश से युक्त हैं। ये दोनों अपने तेजोमय उत्पत्तिस्थान परमेश्वर से ही उत्पन्न होती हैं। दान, दया आदि दिव्य गुणों से युक्त ये सभी देवों और विद्वज्जनों में प्रशंसा की जाने वाली हैं। हे उपासको! तुम सदा इनकी स्तुतियों का खूब गान करो।

टि. *सम्यक् प्रकाशमान* - **सम्राजा**। सम्राजौ - वे.। सर्वस्य स्वामिनौ - सा.। यौ सम्यग् राजेते तौ - दया.। सम्राट् - सात.। sovereign rulers - W. Soveran Kings - G.

*तेज से उत्पन्न होने वाले* - **घृतयोनी**। उदकस्थानौ - वे.। उदकस्योत्पादकौ - सा.। घृतम् उदकं कारणं ययोस् तौ - दया.। originators of rain - W. full springs of fatness - G.

*प्रशंसा किये हुए* - **प्रशस्ता**। प्रशस्तौ - वे.। प्रकर्षेण स्तुत्यौ - सा.। श्रेष्ठौ - दया.। प्रशंसनीय - सात.। eminent - W. glorified - G.

**ता नः॑ श॒क्तं॒ पार्थि॑वस्य म॒हो रा॒यो दि॒व्यस्य॑। महि॑ वां क्ष॒त्रं दे॒वेषु॑॥ ३॥**

ता। न॒ः। श॒क्त॒म्। पार्थि॑वस्य। म॒हः। रा॒यः। दि॒व्यस्य॑। महि॑। वा॒म्। क्ष॒त्रम्। दे॒वेषु॑॥ ३॥

*तुम दोनों हमें समर्थ करो, पृथिवीसम्बन्धी के लिये,*
*महान् धन के लिये, परलोकसम्बन्धी के लिये (भी)।*
*महान् (है) तुम्हारा प्रभुत्व, देवों के मध्य॥ ३॥*

हे विपत्तियों से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! सभी दिव्य शक्तियों में तुम्हारा महान् प्रभुत्व सब से बढ़कर है। तुम हमें लौकिक और पारलौकिक, सांसारिक और आध्यात्मिक, बाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त करने में समर्थ करो। तुम हमें अपने अभ्युदय और निःश्रेयस के लिये सशक्त बना दो।

टि. *हमें समर्थ करो* – **नः शक्तम्।** अस्मभ्यं दत्तम् – वे.। अस्मदर्थं समर्थौ भवतम् – सा.। they two are able (to grant) us - W. help ye us (to riches) - G.

**ऋ॒तम् ऋ॒तेन॑ सप॒न्तेषि॒रं दक्ष॑म् आशाते। अ॒द्रुहा॑ दे॒वौ व॑र्धेते।। ४।।**

ऋ॒तम्। ऋ॒तेन॑। सप॑न्ता। इ॒षि॒रम्। दक्ष॑म्। आ॒शा॒ते॒ इति॑। अ॒द्रुहा॑। दे॒वौ। व॒र्धे॒ते॒ इति॑।। ४।।

*ऋत का ऋत से स्पर्श करते हुए,*

*प्रेरक बल को प्राप्त करते हैं।*

*द्रोहरहित देव वृद्धि को प्राप्त करते हैं।। ४।।*

ये परमेश्वर की दिव्य शक्तियां सत्यनियम के पालन के द्वारा सत्यनियम को पुष्ट करते हुए उससे प्रेरक बल और उत्साह को प्राप्त करती हैं। दिव्यता, दान आदि गुणों से युक्त ये प्रभु की शक्तियां किसी से भी द्रोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं करतीं। ये सरलस्वभाव, निश्छल और निष्कपट हैं, इसलिये ये वृद्धि को प्राप्त होती रहती हैं। यदि हम उपासक भी ईश्वर के नियमों का पालन करें, कुटिलता और छल-कपट से दूर रहें, तो हम भी जीवन में उन्नति कर सकते हैं।

टि. *ऋत का ऋत से स्पर्श करते हुए* – **ऋतम् ऋतेन सपन्ता।** यज्ञं यज्ञेन अनुस्यूतं स्पृशन्तौ – वे.। ऋतेनोदकेन निमित्तेन ऋतं यज्ञं सपन्ता स्पृशन्तौ – सा.। ऋतं सत्यं सत्येन आक्रोशन्तौ – दया.। carefully tending Law with Law - G.

*प्रेरक बल को प्राप्त करते हैं* – **इषिरं दक्षम् आशाते।** एषणशीलं बलम् आशाते – वे.। इषिरम् एषणवन्तं दक्षं प्रवृद्धं यजमानं हविर् वाशाते व्याप्नुतः – सा.। प्राप्तव्यं बलम् आशाते – दया.। they have attained their vigorous might - G.

*वृद्धि को प्राप्त करते हैं* – **वर्धेते।** वर्धयतः स्तोतॄन् – वे.। प्रवृद्धौ भवतः – सा.। wax - G.

**वृ॒ष्टिद्या॑वा री॒त्या॑पेषस् पती॒ दानु॑मत्याः। बृ॒हन्त॒ं गर्त॑म् आशाते।। ५।। ६।।**

वृ॒ष्टिऽद्या॑वा। री॒तिऽआ॑पा। इ॒षः। पती॒ इति॑। दानु॑ऽमत्याः। बृ॒हन्त॑म्। गर्त॑म्। आ॒शा॒ते॒ इति॑।। ५।।

*वृष्टियुक्त आकाश वाले, बहते जलों वाले,*

*अन्न का पालन करने वाले, दानवती के (अन्दर)।*

*महान् रथ-आसन को प्राप्त करते हैं।। ५।।*

प्रभु की ये शक्तियां आकाश से जलों की वर्षा करने वाली हैं। ये धरती पर जलों को बहाने वाली और इस प्रकार उदारतापूर्वक अनन्त पदार्थों को देने वाली हैं। ये पृथिवी पर अन्नों का पालन करने वाली हैं। ये इस जगत् रूपी रथ के अन्दर महान् सुरक्षित स्थान को प्राप्त करके स्थित हैं।

टि. *वृष्टियुक्त आकाश वाले* – **वृष्टिद्यावा।** वृष्टिमती ययोर् द्यौर् भवति – वे.। वृष्ट्यर्था द्यौः स्तुतिर् ययोस् तौ वृष्टिद्यावा। अथवा वृष्टिर् वर्षिका द्यौर् अन्तरिक्षं याभ्यां तौ तादृशौ। सा.। वृष्टिश् च द्यौश् च याभ्यां तौ – दया.। senders of rain from heaven - W. with rainy skies - G.

*बहते जलों वाले* – **रीतिऽआपा।** श्रितजला च पृथिवी – वे.। री गतिरेषणयोः। रीतिः प्राप्तिः। सैवाप्तिर् अभिमतप्राप्तिर् ययोस् तौ तादृशौ। सा.। रीतिश् च आपश् च ययोस् तौ – दया.। granters of desires - W. with streaming floods - G.

*दानवती के (अन्दर)* - **दानुमत्याः**। दानवत्याः प्रजायाः - वे.। दानवत्याः। दातृभूषिताया इत्यर्थः। सा.। बहूनि दानवो दानानि विद्यन्ते यस्यां पृथिव्यां तस्या मध्ये - दया.। suited to liberal donors - W. that bringeth gifts - G.

## सूक्त ६९

ऋषिः - उरुचक्रिर् आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - त्रिष्टुप्। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**त्री रोचना वरुण त्रीँर् उत द्यून् त्रीणि मित्र धारयथो रजांसि।**
**वावृधानाव् अमतिं क्षत्रियस्यानु व्रतं रक्षमाणाव् अजुर्यम्। १।।**

त्री। रोचना। वरुण। त्रीन्। उत। द्यून्। त्रीणि। मित्र। धारयथः। रजांसि।
ववृधानौ। अमतिम्। क्षत्रियस्य। अनु। व्रतम्। रक्षमाणौ। अजुर्यम्। १।।

*तीन प्रकाशों को, हे वरुण!, और तीन प्रकाशलोकों को,*
*तीन को, हे मित्र (और वरुण)!, धारण करते हो तुम लोकों को।*
*वृद्धि को प्राप्त कराते हुए, बल को क्षत्रिय के,*
*अनुकूलता से व्रत की रक्षा करते हुए, जीर्ण न होने वाले की।। १।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और ब्रह्माण्ड को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम अग्नि, विद्युत् और सूर्य इन प्रकाश और ताप को देने वाली तीन ज्योतियों को, द्यौ, स्वः और नाक - इन तीन प्रकाश और सुख के लोकों को (तु. येन द्यौर् उग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः - ऋ. १०.१२१.५), और पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ - इन तीन लोकों को धारण कर रही हो। तुम दीनों और असहायों की दुराचारियों से रक्षा करने वाले क्षत्रिय जनों के बल की वृद्धि करती हो। तुम सदा कभी विनाश को प्राप्त न होने वाले सत्यनियम की अनुकूलता के साथ रक्षा करती हो।

टि. *तीन प्रकाशों को* - **त्री रोचना**। रोचयन्तीति लोका रोचनान्युच्यन्ते - वे.। रोचना रोचनानि द्युलोकान् - सा.। त्रीणि भौमविद्युत्सूर्यादीनि रोचना प्रकाशनानि - दया.। the three realms of light - W. three spheres of light - G.

*तीन प्रकाशलोकों को* - **त्रीन् द्यून्**। द्योतनात् द्यावः - वे.। त्रीन् द्योतमानान् अन्तरिक्षलोकान् - सा.। द्यून् प्रकाशान् - दया.। three heavens - W. G.

*तीन को लोकों को* - **त्रीणि रजांसि**। रजनाद् रजांसि - वे.। त्रीणि रजांसि त्रीन् भूलोकान् - सा.। रजांसि - लोकान् - दया.। the three regions (of the earth) - W. three firmaments - G.

*बल को क्षत्रिय के* - **अमतिम् क्षत्रियस्य**। बलं क्षत्रियस्य - वे.। अमतिं रूपनामैतत्। क्षत्रं बलम्। तद्वद् इन्द्रस्य। यद्वा। क्षत्रियजातीयस्य यजमानस्य। सा.। रूपं क्षत्रापत्यस्य राज्ञः - दया.। the force of vigorous (Indra) - W. the splendour of dominion - G.

*व्रत की, जीर्ण न होने वाले की* - **व्रतम् अजुर्यम्**। कर्म शत्रुभिः जरयितुम् अशक्यम् - वे.। कर्म चाजीर्णम् अविरतं वा - सा.। कर्म शीलं वा अजीर्णम् - दया.। the imperishable rite - W.

guarding the ordinance - G.

**इरावतीर् वरुण धेनवो वां मधुमद् वां सिन्धवो मित्र दुह्रे।**
**त्रयस् तस्थुर् वृषभासस् तिसृणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः॥ २॥**

इरावतीः। वरुण। धेनवः। वाम्। मधुऽमत्। वाम्। सिन्धवः। मित्र। दुह्रे।
त्रयः। तस्थुः। वृषभासः। तिसृणाम्। धिषणानाम्। रेतःऽधाः। वि। द्युऽमन्तः॥ २॥

*दूधों वाली हैं, हे वरुण!, गौएं तुम्हारी (आज्ञा से),*
*मधुर जल को तुम्हारे (आदेश से) नदियां, हे मित्र!, पूर रही हैं।*
*तीन स्थित हैं सेचनशील, तीन के,*
*बुद्धिमतियों के, गर्भ को धारण करने वाले, विशेषेण द्युतिमान्॥ २॥*

हे जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली और विनाश से त्राण करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारी आज्ञा से ही गौएं दूध देती हैं। तुम्हारी आज्ञा से ही बहती हुई नदियां मीठे जलों को बहा रही हैं। विशेष रूप से प्रकाश से युक्त अग्नि, वायु और सूर्य - ये तीन सेचनशील ज्योतियां पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक - इन दाक्षिण्य से युक्त तीनों लोकों के गर्भ को स्थापित करने के लिये, इनको उत्पादनशील बनाने के लिये स्थित हैं। ये ईश्वरीय शक्तियां इनमें अपनी ऊर्जा और प्रकाश को भर रही हैं।

टि. *दूधों वाली* - **इरावतीः**। अन्नवत्यः - वे.। इरा क्षीरलक्षणा। तद्वत्यो भवन्ति। सा.। बह्वन्नादिसामग्रीस् ताः - दया.। who yield refreshment - G.

*मधुर जल को* - **मधुमत्**। मधूदकम् - वे.। मधुररसयुक्तम् उदकम् - सा.।

*सेचनशील* - **वृषभासः**। ऋषभाः - वे.। वर्षितारः - सा.। दया.। steers - G. Fra.

*तीन के बुद्धिमतियों के* - **तिसृणां धिषणानाम्**। लोका धिषणा उक्ताः, तासाम् - वे.। त्रिसंख्याकानां धिषणानां स्थानानां पृथिव्यन्तरिक्षद्युलोकानाम् - सा.। त्रिविधानां कर्मोपासनाज्ञानविदाम् - दया.। in three spheres - W. three world-bowls - G. Fra.

*गर्भ को धारण करने वाले* - **रेतोधाः**। रेतसो निधातारः, अग्निः पृथिव्या गर्भं दधाति वायुर् अन्तरिक्षस्य आदित्यः दिवः - वे.। उदकस्य धारकाः - सा.। यो रेतो वीर्यं दधाति सः - दया.।

**प्रातर् देवीम् अदितिं जोहवीमि मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य।**
**राये मित्रावरुणा सर्वतातेळे तोकाय तनयाय शं योः॥ ३॥**

प्रातः। देवीम्। अदितिम्। जोहवीमि। मध्यन्दिने। उत्ऽइता। सूर्यस्य।
राये। मित्रावरुणा। सर्वऽताता। ईळे। तोकाय। तनयाय। शम्। योः॥ ३॥

*प्रातः देवी अदिति को, बार-बार बुलाता हूँ मैं,*
*(बार-बार बुलाता हूँ मैं) मध्याह्न में, शिखर में पहुँचने पर सूर्य के।*
*धन के लिये, हे मित्र और वरुण!, यज्ञ के अन्दर,*
*स्तुति करता हूँ मैं पुत्र और पौत्र के लिये, सुख और दुःखविनाश के लिये॥ ३॥*

मैं उपासक यज्ञ के अन्दर प्रातःकाल और सूर्य के शिखर में पहुँचने पर अर्थात् माध्यन्दिन सवन

के अवसर पर प्रकाश और ज्ञान से युक्त, अनन्त, अखण्डनीया देवमाता परमेश्वर की बार-बार स्तुति करता हूँ। मैं लौकिक और अलौकिक ऐश्वर्य के लिये अर्थात् अभ्युदय और निःश्रेयस के लिये, पुत्रों और पौत्रों के कल्याण के लिये, सुखप्राप्ति और दुःखविनाश के लिये परमेश्वर की विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली दिव्य शक्तियों की स्तुति करता हूँ।

टि. *शिखर में पहुँचने पर सूर्य के* - **उदिता सूर्यस्य।** सूर्यस्य उदितौ तत्समृद्धिकाले - सा.। उदिते सूर्यस्य - दया.। when the sun is high - W. when the sun is setting - G. Fra.

*यज्ञ के अन्दर* - **सर्वताता।** यज्ञे - सा.। सर्वेषां सुखप्रदे यज्ञे - दया.। at all seasons - W. for safety - G. in the extension of the all - Fra.

*सुख और दुःखविनाश के लिये* - **शं योः।** अरिष्टशमनाय सुखस्य मिश्रणाय च - सा.। for prosperity and happiness - W. in rest and trouble - G. for peace and happiness - Fra.

**या धर्तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य।**
**न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि।। ४।। ७।।**

या। धर्तारा। रजसः। रोचनस्य। उत। आदित्या। दिव्या। पार्थिवस्य।
न। वाम्। देवाः। अमृताः। आ। मिनन्ति। व्रतानि। मित्रावरुणा। ध्रुवाणि।। ४।।

*जो धारण करने वाले, लोक के प्रकाशमान के,*
*और पुत्र अदिति के, दिव्य, पृथिवीलोक के।*
*नहीं तुम्हारे, देव अमरणधर्मा, हिंसित करते हैं,*
*व्रतों को, हे मित्र और वरुण!, निश्चलों को।। ४।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम जो दिव्यता से युक्त हो, अनन्त और अखण्ड परमेश्वर की सन्तति हो, और प्रकाशलोक तथा पृथिवीलोक को धारण करने वाली हो, अजर और अमर दिव्य शक्तियां तुम्हारे निश्चल नियमों को कभी हिंसित नहीं करतीं, उनका कभी विरोध नहीं करतीं, अपितु उनका पालन करके उनको पुष्ट ही करती हैं। इसलिये हम तुम्हारी स्तुति करते हैं।

टि. *लोक के, प्रकाशमान के* - **रजसः रोचनस्य।** दीप्तस्य लोकस्य - वे.। रोचमानस्य लोकस्य। स्वर्गाख्यस्येत्यर्थः। सा.। लोकस्य दीप्तिमतः - दया.। the region, the sphere of brightness - G.

*नहीं हिंसित करते हैं* - **न आ मिनन्ति।** न हिंसन्ति - वे.। सा.। दया.। impair not - W. G.

## सूक्त ७०

ऋषिः - उरुचक्रिः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - गायत्री। चतुर्ऋचं सूक्तम्।

**पुरूरुणा चिद् ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण। मित्र वंसि वां सुमतिम्।। १।।**

पुरुऽउरुणा। चित्। हि। अस्ति। अवः। नूनम्। वाम्। वरुण।। मित्र। वंसि। वाम्। सुऽमतिम्।। १।।

*विशाल और विस्तृत ही है,*
*संरक्षण निश्चय से तुम्हारा, हे वरुण!*

*हे मित्र! भोग करूँ मैं तुम्हारी सुमति का।। १।।*

हे विपत्तियों से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम्हारा संरक्षण विशाल और विस्तृत है। तुम सर्वत्र सब प्रकार से अपने उपासकों की रक्षा करती हो। इसलिये मैं उपासक तुम्हारी सुमति, तुम्हारे श्रेष्ठ ज्ञान और उत्तम कृपा का भोग करना चाहता हूँ। आप कृपा करके इन्हें मुझे प्राप्त कराएं।

टि. *विशाल और विस्तृत* - **पुरूरुणा।** पुरुणा उरुत्वेन - वे.। अत्र सोः सुपां सुलुग् इत्याकारः। पुरोर् अपि बहु उरु बहुतरम्। अथवा पुरु च तद् उरु च पुरूरु। अत्यन्तम् उरुतरम् इत्यर्थः। सा.। बहुतरम् - दया.। assuredly - W. far and wide - G.

*भोग करूँ मैं तुम्हारी सुमति का* - **वंसि वां सुमतिम्।** भजेय युवयोः सुमतिम् - वे.। अनुग्रह-बुद्धिं संभजेय - सा.। I enjoy your favour - W. may I obtain your kind good-will - G.

**ता वां सम्यग् अद्रुह्वाणेषम् अश्याम धायसे। वयं ते रुद्रा स्याम।। २।।**

ता। वाम्। सम्यक्। अद्रुह्वाणा। इषम्। अश्याम। धायसे। वयम्। ते। रुद्रा। स्याम।। २।।

*उन तुम दोनों से सम्यक्, हे द्रोह न करने वालो!,*

*भोजन को प्राप्त करें हम, जीवनधारण के लिये।*

*हम वे, हे दुष्टों को रुलाने वालो!, हो जाएं (तुम्हारे)।। २।।*

हे किसी से भी वैर, द्वेष आदि न करने वाली और दुष्टों को उनके दुष्ट कर्मों का समुचित फल देकर उनको रुलाने वाली ईश्वरीय दिव्य शक्तियो! हम अपने जीवन धारण करने के लिये उस प्रकार रक्षा करने वाली और अनुग्रह करने वाली तुमसे अन्न आदि भोग्य पदार्थों को प्राप्त करते रहें। हम अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति के लिये सदा तुम्हारे ही बनकर रहें।

टि. *भोजन को प्राप्त करें हम* - **इषम् अश्याम।** अन्नं प्राप्नुयाम - वे.। सा.।

*जीवनधारण के लिये* - **धायसे।** भर्तुम् - वे.। पानाय भोजनाय - सा.। खाने पीने के लिये - सात.। for our sustenance - W. G.

*हे दुष्टों को रुलाने वालो* - **रुद्रा।** स्तुत्यौ - वे.। हे रुद्रा दुःखाद् द्रावयितारौ रुदद्भिर् द्रवणीयौ वा - सा.। रुतो रोदनाद् रावयितारौ - दया.।

**पातं नो रुद्रा पायुभिर् उत त्रायेथां सुत्रात्रा। तुर्याम दस्यून् तनूभिः।। ३।।**

पातम्। नः। रुद्रा। पायुऽभिः। उत। त्रायेथाम्। सुऽत्रात्रा। तुर्याम। दस्यून्। तनूभिः।। ३।।

*रक्षा करो तुम हमारी, हे दुष्टों को रुलाने वालो!, रक्षासाधनों से,*

*और त्राण करो (हमारा), उत्तम त्राण के उपायों से।*

*हिंसित करें हम हिंसकों को, शरीरों से (स्वयं अपने)।। ३।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली, दुष्टों को उनके दुष्कर्मों का फल देकर उन्हें रुलाने वाली, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम अपने रक्षासाधनों से सदा हमारी रक्षा करती रहो। तुम अपने त्राणसाधनों से सदा हमारा त्राण करती रहो। हम हिंसा करने वाले दुराचारी जनों को अपने ही शारीरिक बलों से हिंसित कर डालें।

टि. *त्राण करो उत्तम त्राण के उपायों से* - **त्रायेथाम् सुत्रात्रा**। रक्षतं शोभनेन रक्षणेन - वे.। शोभनेन त्राणेन त्रायेथां पालयेतम्। इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारभेदेन भेदः। सा.। सुत्रात्रा यः सुष्ठु त्रायते तेन - दया.। preserve us with kind preservation - W. save us, ye skilled to save - G.

*हिंसित करें हम शरीरों से (स्वयं अपने)* - **तुर्याम तनूभिः**। तरेम अङ्गैः - वे.। तनूभिः पुत्रादिभिः सहिताः स्वीयैर् अङ्गैर् वा तुर्याम हिंस्याम तरेम वा - सा.। हिंस्याम शरीरैः - दया.। may we overcome with our descendants - W. may we subdue (the Dasyus), we ourselves - G.

**मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः।**
**मा शेषसा मा तनसा।। ४।। ८।।**

मा। कस्य। अद्भुतक्रतू इत्यद्भुतऽक्रतू। यक्षम्। भुजेम। तनूभिः। मा। शेषसा। मा। तनसा।। ४।।

*मत किसी (अन्य) के, हे अद्भुत कर्मों वालो!,*
*दिये हुए का भोग करें हम, शरीरों से (अपने)।*
*मत पुत्रों के साथ, मत पौत्रों के साथ (कदापि)।। ४।।*

हे विपद् से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हम किसी अन्य जन के द्वारा कमाकर दिये हुए धन का उपभोग न तो स्वयं करें, न अपने पुत्रों के साथ मिलकर करें और न ही पौत्र आदि अपनी अगली सन्ततियों के साथ मिलकर करें। अपितु हम सदा अपने शरीरों से परिश्रम करक्रे, अपना खून-पसीना बहाकर, स्वयं अपने द्वारा कमाए हुए धन का ही सदा उपभोग करें।

टि. *दिये हुए का* - **यक्षम्**। यजतेर् दानकर्मणः कृदन्तरूपम् इदम्।। वित्तं (याच्ञा भुजेम) - वे.। पूजितं धनम् - सा.। दानम् - दया.। bounty - W. solemn feast - G.

*शरीरों से (अपने)* - **तनूभिः**। शरीरैः - वे.। दया.। अस्मदीयैर् अवयवैः - सा.।

*मत पुत्रों के साथ* - **मा शेषसा**। मा पुत्रेण - वे.। अपत्येन सहिता मा - सा.।

*मत पौत्रों के साथ* - **मा तनसा**। मा च तत्पुत्रेण - वे.। पौत्रादिना सहिता मा - सा.।

## सूक्त ७१

ऋषिः - बाहुवृक्त आत्रेयः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - गायत्री। तृचं सूक्तम्।

**आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा। उपेमं चारुम् अध्वरम्।। १।।**

आ। नः। गन्तम्। रिशादसा। वरुण। मित्र। बर्हणा। उप। इमम्। चारुम्। अध्वरम्।। १।।

*इधर हमारे पास गमन करो, हे हिंसकों को परास्त करने वालो!,*
*हे वरुण!, हे मित्र!, हे बढ़ने और बढ़ाने वालो।*
*पास में इस रमणीय के, हिंसारहित यज्ञ के।। १।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली, हिंसक शक्तियों को परास्त कर डालने वाली और स्वयं आगे बढ़ने तथा सज्जनों को आगे बढ़ाने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम हमारे पास आकर हमारे हृदय में निवास करो। और हमारे अन्दर

यह जो हिंसारहित, परोपकार की भावनाओं से युक्त, अत्यन्त रमणीय अन्तर्यज्ञ प्रवर्तमान है, तुम इसमें पधारकर हमारे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त करो।

टि. *हे हिंसकों को परास्त करने वालो* - **रिशादसा**। रिशताम् असितारौ - वे.। शत्रूणां प्रेरकौ - सा.। दुष्टहिंसकौ - दया.। scatterers of foes - W. who slay the foemen - G.

*हे बढ़ने और बढ़ाने वालो* - **बर्हणा**। वृद्धया - वे.। बर्हणा परिबर्हणौ निबर्हणौ हन्तारौ शत्रूणाम् - सा.। वर्धकौ - दया.। destroyers of enemies - W. with might - G.

*रमणीय के* - **चारुम्**। कल्याणम् - वे.। चरणीयम् - सा.। सुन्दरम् - दया.। accessible - W.

**विश्व॑स्य हि प्र॑चेतसा वरु॑ण मित्र राज॑थः। ईशाना पि॑प्यतं धिय॑ः।। २।।**

विश्व॑स्य। हि। प्रऽचेतसा। वरु॑ण। मित्र॑। राज॑थः। ईशाना। पिप्यतम्। धिय॑ः।। २।।

*सब पर ही, हे प्रकृष्ट ज्ञान वालो!,*

*हे वरुण!, हे मित्र!, शासन करते हो तुम।*

*स्वामी तुम, पूर्णता प्रदान करो बुद्धियों को (हमारी)।। २।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली, हे प्रकृष्ट ज्ञान वाली, जगदीश्वर की दिव्य शक्तियो!, तुम समस्त ब्रह्माण्ड पर शासन करती हो। सब पर तुम्हारा ही प्रभुत्व है। तुम हमारी बुद्धियों को पूर्ण कर दो। तुम हमें ऐसी प्रेरणा प्रदान करो, कि हम सदा अपने सभी कार्यों को बुद्धिपूर्वक ही सम्पन्न करें।

टि. *पूर्णता प्रदान करो बुद्धियों को (हमारी)* - **पिप्यतम् धियः**। आप्यायतं कर्माणि - वे.। अस्मदीयानि कर्माणि प्यायतं फलैः - सा.। वर्धयेतं बुद्धीः - दया.। हमारी बुद्धियों को तृप्त करो - सात.। bestow fulness upon our ancient rites - W. Fill full our songs - G.

**उप॑ नः सुतम् आ ग॑तं वरु॑ण मित्र॑ दाशुष॑ः।**
**अस्य सोम॑स्य पीतय॑े।। ३।। ९।।**

उप॑। नः। सुतम्। आ। गतम्। वरु॑ण। मित्र॑। दाशुष॑ः। अस्य। सोम॑स्य। पीतय॑े।। ३।।

*पास हमारे सवन किये हुए के, आ जाओ तुम,*

*हे वरुण!, हे मित्र!, हवि प्रदान करने वालों के।*

*इस सोम के पान के लिये।। ३।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम हमारे हृदयमन्दिर में पधारो और अन्तर्यज्ञ का सम्पादन करने वाले हम उपासकों के द्वारा जप, तप, ध्यान, योगसाधना आदि के द्वारा निष्पादित इस आनन्दरस रूपी सोम का जी भरकर पान करो।

टि. *हवि प्रदान करने वालों के* - **दाशुषः**। वचनव्यत्ययः। बहुवचनस्थान एकवचनम्।। यजतोऽध्वर्योः - वे.। हविर्दातुर् मम - सा.। दातुः - दया.। दानशील मनुष्य के - सात.। of the offerer - W. of the worshipper - G.

## सूक्त ७२

ऋषिः - बाहुवृक्तः। देवता - मित्रावरुणौ। छन्दः - उष्णिक्। तृचात्मकं सूक्तम्।

**आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर् जुहुमो अत्रिवत्।**
**नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये।। १।।**

आ। मित्रे। वरुणे। वयम्। गीःऽभिः। जुहुमः। अत्रिऽवत्।
नि। बर्हिषि। सदतम्। सोमऽपीतये।। १।।

*सब ओर से मित्र के निमित्त, वरुण के निमित्त हम,*
*स्तुतियों से हवि प्रदान करते हैं, त्रिदोषरहित ज्ञानी की तरह।*
*नीचे दर्भासन पर बैठ जाएं दोनों, सोमपान के लिये।। १।।*

हम उपासक मित्र और वरुण नामक परमेश्वर की दिव्य शक्तियों के निमित्त अपनी स्तुतियों के साथ हवियां प्रदान करते हैं, उन्हें अपने हृदय की पवित्र भावनाएं समर्पित करते हैं। वे हमारे भक्तिरस रूपी सोम के पान के लिये हमारे हृदयरूपी पवित्र आसन पर विराजें।

टि. *हवि प्रदान करते हैं* - **जुहुमः**। आह्वानं कुर्मः - वे.। we invoke - W. we offer - G.

*त्रिदोषरहित ज्ञानी की तरह* - **अत्रिवत्**। यथा अत्रिः - वे.। अस्मद्गोत्रप्रवर्तको ऽत्रिर् इव - सा.। अविद्यमानत्रिविधदुःखेन तुल्यम् - दया.। ज्ञानी के समान - सात.। तीनों दुःखों से रहित के समान - जय.। like (our progenitor) Atri - W. G. like our threefold-free sages - Satya.

*बैठ जाएं* - **सदतम्**। सीदताम्। पुरुषव्यत्ययः। प्रथमस्थाने मध्यमः।।

**व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना।**
**नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये।। २।।**

व्रतेन। स्थः। ध्रुवऽक्षेमा। धर्मणा। यातयत्ऽजना।
नि। बर्हिषि। सदतम्। सोमऽपीतये।। २।।

*व्रत से हो तुम, अविचल निवासों वाले,*
*कर्तव्य से (अपने), शत्रुप्रेरक जनों वाले।*
*नीचे दर्भासन पर बैठ जाओ तुम, सोमपान के लिये।। २।।*

हे विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली प्रभु की दिव्य शक्तियो! तुम अपने पवित्र व्रतों के कारण ही पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक - इन अपने तीनों निवासों को कभी चलायमान नहीं होने देतीं। तुम्हारे धारण करने योग्य कर्तव्यों को अपनाने के कारण ही तुम्हारे उपासक चोर, डाकू आदि बाह्य और काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ होते हैं। तुम हमारे भक्तिरस रूपी सोम के पान के लिये आकर हमारे हृदयरूपी पवित्र आसन पर विराजो।

टि. *अविचल निवासों वाले* - **ध्रुवक्षेमा**। ध्रुवरक्षणौ - वे.। अविचलितस्थानौ - सा.। ध्रुवं क्षेमं रक्षणं ययोस् तौ - दया.। steady in functions - W. ye dwell in peace secure - G.

*कर्तव्य से (अपने)* - **धर्मणा**। कर्मणा - वे.। जगद्धारकेण (व्रतेन) - सा.। धर्मेण सह वर्तमानौ

– दया.। by (their) devotion - W. by Ordinance (and Law) - G.

*शत्रुप्रेरक जनों वाले* – **यातयज्जना**। निहतशत्रुजनौ – वे.। यातयन्तः कर्मसु प्रवर्तयन्तो जना ऋत्विजो ययोस् तौ। अथवा यातयन्तः शत्रून् हिंसन्तो जना भृत्या ययोस् तौ। सा.। whom men animate - W. bestirring men - G.

*बैठ जाओ तुम* – **सदताम्**। सदतं सीदतम्। पुरुषव्यत्ययः। मध्यमस्थाने प्रथमः।।

**मित्रश् च नो वरुणश् च जुषेतां यज्ञम् इष्टये।**
**नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये।। ३।। १०।। ५।।**

मित्रः। च। नः। वरुणः। च। जुषेताम्। यज्ञम्। इष्टये।
नि। बर्हिषि। सदताम्। सोमऽपीतये।। ३।।

*मित्र भी हमारे, वरुण भी,*
*सेवन करें यज्ञ का, अभीष्ट के लिये।*
*नीचे दर्भासन पर बैठ जाएं, सोमपान के लिये।। ३।।*

विनाश से त्राण करने वाली और जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियां हमारे अभीष्ट को साधने के लिये, हमारे कल्याण के लिये, हमारे द्वारा समर्पित अन्तर्यज्ञ को स्वीकार करें। वे हमारे भक्तिरस रूपी सोम के पान के लिये आकर हमारे हृदयरूपी पवित्र आसन पर विराजें।

टि. *अभीष्ट के लिये* – **इष्टये**। याग इतीष्टिः – वे.। अभीष्टाय – सा.। इष्टसुखाय – दया.। with satisfaction - W. for our help - G. for the fulfilment of our wishes - Satya.

## सूक्त ७३

ऋषिः – पौर आत्रेयः। देवता – अश्विनौ। छन्दः – अनुष्टुप्। दशर्चं सूक्तम्।

**यद् अद्य स्थः परावति यद् अर्वावत्यश्विना।**
**यद् वा पुरू पुरुभुजा यद् अन्तरिक्ष आ गतम्।। १।।**

यत्। अद्य। स्थः। पराऽवति। यत्। अर्वाऽवति। अश्विना।
यत्। वा। पुरु। पुरुऽभुजा। यत्। अन्तरिक्षे। आ। गतम्।। १।।

*चाहे इस समय हो तुम, दूर देश में,*
*चाहे प्राप्य देश में (हो तुम), हे अश्वियो।*
*और चाहे सभी स्थानों में, हे सब के पालको!,*
*चाहे अन्तरिक्ष में (हो तुम), आ जाओ (पास हमारे)।। १।।*

हे ब्रह्माण्ड रूपी अथवा शरीर रूपी एक ही रथ में सवार बलवान् परमात्मा और आत्मा! चाहे तुम किसी दूरवर्ती स्थान पर स्थित हो, चाहे तुम हमारे द्वारा पहुँचे जा सकने योग्य किसी निकटवर्ती स्थान में स्थित हो, चाहे तुम आकाश में स्थित हो और चाहे तुम सभी स्थानों पर मौजूद हो, हे सब का पालन करने वालो! तुम हमारे पास आ जाओ और हमारे हृदयमन्दिर में वास करो।

टि. *इस समय* - **अद्य।** इदानीम् - वे.। अस्मिन् काले - सा.। this day - G.

*दूर देश में* - **परावति।** दूरे - वे.। अत्यन्तं दूरदेशे द्युलोके - सा.। दूरदेशे - दया.। far - W.

*प्राप्य देश में* - **अर्वावति।** अन्तिके - वे.। अरणवति गन्तुं शक्ये प्रदेशे ऽन्तिके - सा.। निकटदेशे - दया.। nigh - W.

*हे सब के पालको* - **पुरुभुजा।** पुरुभोजनौ - वे.। बहुषु यज्ञेषु भोक्ताराव् अधिकं रक्षितारौ वा - सा.। बहुपालकौ - दया.। अनेक भुजाओं वालो - सात.। who partake of many offerings - W. lords of ample wealth - G.

**इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि बिभ्रता।**
**वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे।। २।।**

इह। त्या। पुरुऽभूतमा। पुरु। दंसांसि। बिभ्रता।
वरस्या। यामि। अध्रिगू इत्यध्रिऽगू। हुवे। तुविःऽतमा। भुजे।। २।।

*यहाँ उन दोनों की, सर्वत्र व्यापने वालों की।*
*सभी कार्यों का सम्पादन करने वालों की।*
*वरणीयों की, शरण में आता हूँ, अबाधित गति वालों की,*
*बुलाता हूँ मैं सर्वाधिक बल वालों को, पालन के लिये।। २।।*

मैं उपासक इस जगत् में सभी स्थानों और सभी शरीरों में व्याप्त होने वालों, सभी कार्यों को सम्पन्न करने वालों, सब के द्वारा वरण किये जाने वालों, किसी के द्वारा भी न रोकी जा सकने वाली गति वालों उन परमात्मा और आत्मा की शरण में आता हूँ और अपने पालन-पोषण तथा रक्षा के लिये सब से अधिक बल वालों का उनका आह्वान करता हूँ।

टि. *सर्वत्र व्याप्त होने वालों की* - **पुरुभूतमा।** बहूनां भावयितारौ - वे.। पुरूणां बहूनां यजमानानां भावयितृतमौ - सा.। अतिशयेन बहुव्यापकौ - दया.। encouragers of many - W. who show o'er widest space - G. widely spread out - Satya.

*वरणीयों की* - **वरस्या।** धनेच्छया - वे.। वरणीयौ - सा.। अतिशयेन वरौ - दया.। most excellent - W. lovingly - G.

*अबाधित गति वालों की* - **अध्रिगू।** अधृतगमनौ - वे.। अन्यैर् अधृतगमनकर्माणौ - सा.। अधिकगन्तारौ - दया.। irresistible - W. G.

*पालन के लिये* - **भुजे।** भोगाय - वे.। भोगाय पालनाय वा - सा.। भोगाय - दया.। for protection - W. to enjoy - G.

**ईर्मान्यद् वपुषे वपुश् चक्रं रथस्य येमथुः।**
**पर्यन्या नाहुषा युगा मह्ना रजांसि दीयथः।। ३।।**

ईर्मा। अन्यत्। वपुषे। वपुः। चक्रम्। रथस्य। येमथुः।
परि। अन्या। नाहुषा। युगा। मह्ना। रजांसि। दीयथः।। ३।।

*प्रेरक एक को, शोभा के लिये सुन्दर को,*

*पहिये को रथ के, नियन्त्रित करते हो तुम।*
*सब ओर दूसरे से, मनुष्यसम्बन्धी कालों को,*
*माहात्म्य से (अपने), लोकों को गतिमान् करते हो तुम।। ३।।*

हे परमात्मा और जीवात्मा! यह जगत् तुम्हारा रथ है। इसके दो पहिये हैं। एक पहिया चन्द्रमा है, जो बहुत सुन्दर है और जो अपनी चाँदनी से जगत् को सौन्दर्य और आह्लाद प्रदान करता है। दूसरा पहिया सूर्य है, जिससे तुम अपने माहात्म्य के द्वारा दिन-रात, पक्ष, मास, संवत्सर आदि मनुष्यसम्बन्धी कालों को और पृथिवी आदि लोकों को सब ओर नियम से गतिमान् करते हो।

जगत् और सूर्य, चन्द्रमा आदि का कर्ता-धर्ता तो केवल परमात्मा ही है, परन्तु यहाँ छत्रि-न्याय से जीवात्मा का भी परमात्मा के साथ ग्रहण हुआ है।

टि. *प्रेरक एक को* - **ईर्मा**। समितम् - वे.। अर्तेर् ईर्मेति रूपम्। गन्तर्यादित्ये। सा.। प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा - दया.।

*शोभा के लिये सुन्दर को* - **वपुषे वपुः**। वपुषे उदकार्थम् - वे.। वपुषे तस्य शोभायै वपुर् वपुष्मत् तेजोवत् - सा.। सुरूपाय सुरूपम् - दया.। luminous (wheel) for illuminating (the form of the sun) - W. to decorate your car - G.

*मनुष्यसम्बन्धी कालों को* - **नाहुषा युगा**। अहोरात्राणि - वे.। नहुषा मनुष्याः। तेषां युगा युगोपलक्षितान् कालान् प्रातरादिसवनान् अहोरात्रादिकालान् वा। सा.। मनुष्याणां युगानि वर्षाणि वर्षसमूहा वा - दया.। the ages of mankind - W. unto the neighbouring tribes - G.

*गतिमान् करते हो तुम* - **दीयथः**। परि गच्छथः - वे.। सा.। क्षयथः - दया.। you travsrse - W. ye roam - G.

**तद् ऊ षु वाम् एना कृतं विश्वा यद् वाम् अनु ष्टवे।**
**नाना जाताव् अरेपसा सम् अस्मे बन्धुम् एयथुः।। ४।।**

तत्। ऊँ इति। सु। वाम्। एना। कृतम्। विश्वा। यत्। वाम्। अनु। स्तवे।
नाना। जातौ। अरेपसा। सम्। अस्मे इति। बन्धुम्। आ। ईयथुः।। ४।।

*वह सुष्ठु स्वीकृत होवे तुम्हें, इस स्तोता के द्वारा किया हुआ (स्तवन)*
*हे व्यापको!, जिससे तुम दोनों की, अनुकूलता से स्तुति करता हूँ मैं।*
*नाना रूपों में प्रादुर्भूत होने वाले, पापों से निर्लेप (दोनों),*
*सम्यक् हमें बन्धुत्व को, सब ओर से प्राप्त कराओ तुम।। ४।।*

हे मेरे परमात्मा और आत्मा! मुझ स्तोता के द्वारा समर्पित किया जाता हुआ यह स्तोत्र, जिसके द्वारा मैं तुम दोनों की अनुकूलता से स्तुति कर रहा हूँ, तुम्हें भली प्रकार स्वीकृत होवे। तुम दोनों इस जगत् में नाना रूपों में प्रकट होने वाले हो। तुम सदा पापों, दोषों आदि से निर्लेप हो। तुम सम्यक् रूप से हमें अपना बन्धुत्व प्राप्त कराओ, क्योंकि जिसे तुम अपना बन्धु बना लेते हो, वह कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं हो सकता।

टि. *इस स्तोता के द्वारा किया हुआ* - **एना कृतम्**। एतत् कर्म - वे.। अनेन पौरेण युवाभ्यां कृतम्

– सा.। that deed - G.

*हे व्यापको* – **विश्वा।** व्याप्तौ – वे.। सा.। सर्वाणि – दया.। universal deities - W. Viśvas - G. universal accepted twins - Satya.

*जिससे* – **यत्।** येन स्तोत्रेण – सा.।

*नाना रूपों में प्रादुर्भूत होने वाले* – **नाना जातौ।** पृथग् उत्पन्नौ – वे.। पृथग् समृद्धौ – सा.। नाना प्रकटौ – दया.। severally born - W. born otherwise - G.

*बन्धुत्व को सब ओर से प्राप्त कराओ तुम* – **बन्धुम् आ ईयथुः।** बन्धुं बन्धुत्वम्। तद्धितप्रत्ययलोपः।। धनं गमयथः – वे.। अन्नं धनं वा गमयथः – सा.। बन्धुभाव को दर्शाते हो – सात.। bestow upon us food - W. ye have entered kinship's bonds with us - G.

**आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठद् रघुष्यदं सदा।**
**परि वाम् अरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः।। ५।। ११।।**

आ। यत्। वाम्। सूर्या। रथम्। तिष्ठत्। रघुऽस्यदम्। सदा।
परि। वाम्। अरुषाः। वयः। घृणा। वरन्ते। आऽतपः।। ५।।

*आकर जब तुम्हारे, सूर्या रथ पर,*
*स्थित हो जाती है, तीव्रगामी पर, सदा।*
*सब ओर से तुम को, आरोचमान रश्मियां,*
*दीप्ति से, घेर लेती हैं, सर्वतः तपाने वाली।। ५।।*

हे परमात्मा और आत्मा! जब प्रकाश और ज्ञान रूपी सूर्य की पुत्री प्रकाशवत्ता और ज्ञानवत्ता रूपी उषा आकर तुम्हारे जगत् रूपी अथवा शरीर रूपी रथों में प्रवेश करती है, तो आरोचमान और सब ओर से उष्णता प्रदान करने वाली उस उषा की रश्मियां तुम को अर्थात् तुम्हारे इस जगत् और प्राणियों को अपनी दीप्ति से सब ओर से घेर लेती हैं।

टि. *रश्मियां* – **वयः।** रश्मयः छन्दांसि वा – वे.। वयः शत्रूणाम् अश्वाः। अथवा वयो गन्तारः। सा.। पक्षिणः – दया.। rays (of light) - W. birds - G.

*दीप्ति से* – **घृणा।** दीप्त्या – वे.। दीप्ताः – सा.। दीप्तिः – दया.।

*घेर लेती हैं* – **वरन्त।** अवृणन् – वे.। वृण्वन्ति – सा.। स्वीकुर्वन्ति – दया.। घेर लेते हैं – सात.। encompass you - W. G.

*सर्वतः तपाने वाली* – **आतपः।** आतापयितारः – वे.। आतापनाः। अथवा तप इति विशेष्यम्। सर्वतस् तापयित्र्यो दीप्तयः। सा.। प्रतापकः – दया.।

**युवोर् अत्रिश् चिकेतति नरा सुम्नेन चेतसा।**
**घर्मं यद् वाम् अरेपसं नासत्यास्ना भुरण्यति।। ६।।**

युवोः। अत्रिः। चिकेतति। नरा। सुम्नेन। चेतसा।
घर्मम्। यत्। वाम्। अरेपसम्। नासत्या। आस्ना। भुरण्यति।। ६।।

*तुम दोनों को, अत्रि जानता है,*

*हे नेताओ!, सुखी चित्त से।*
*गर्म दूध को चूँकि तुम्हारे, निर्दोष को,*
*हे नित्यसत्यो!, मुख से प्राप्त करता है।। ६।।*

हे सदा सत्य रहने वाले परमात्मा और आत्मा! दोषों को अपने अन्दर ही पचा लेने वाला अथवा त्रिविध दोषों और त्रिविध तापों से रहित ज्ञानी मनुष्य चूँकि बाह्य यज्ञ में हवि के रूप में हुत किये जाने वाले गर्म दूध की तरह अपने अन्तर्यज्ञ में दोहन किये हुए ऊष्मा से युक्त और सब प्रकार के दोषों से रहित भक्तिरस रूपी सोम की आहुति देता है और यज्ञशेष को अपने भोजन के लिये मुख से ग्रहण करता है, इसलिये हे सब का मार्गदर्शन करने वालो!, वह अत्यन्त सुखी और तृप्त चित्त से तुम्हारी महिमा को भली प्रकार जानता है।

टि. *अत्रि* - **अत्रिः**। अत्ति भक्षयति पापादिदोषान्। अदेस् त्रिनिश् च। (उणा. ४.६८)। अस्मत्पिता ऋषिः - सा.। अविद्यमानत्रिविधदुःखः - दया.।

*गर्म दूध के* - **घर्मम्**। घर्मं तप्तं दुग्धं तात्स्थ्यात्।। अग्निम् - वे.। दीप्तं दहन्तम् अग्निम् असुरैः स्वदाहाय प्रक्षिप्तम् - सा.। यज्ञम् - दया.। the (fiery) heat - W. the flame - G.

*मुख से प्राप्त करता है* - **आस्ना भुरण्यति**। आस्येन बिभर्ति। आस्यम् उदकम् अश्विभ्यां अस्तम् इति। वे.। आस्ना आस्येन तन्निष्पन्नेन स्तोत्रेण भुरण्यति प्राप्नोति - सा.। आस्येन धरति - दया.। through his praise of you, he found - W. with his mouth he stirs - G.

**उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु संतनिः।**
**यद् वां दंसोभिर् अश्विनात्रिर् नरावर्वर्तति।। ७।।**

उग्रः। वाम्। ककुहः। ययिः। शृण्वे। यामेषु। सम्ऽतनिः।
यत्। वाम्। दंसःऽभिः अश्विना। अत्रिः। नरा। आऽववर्तति।। ७।।

*प्रतापवान् तुम्हारा उच्च मार्ग,*
*सुना जाता है, मार्गों में विस्तीर्ण।*
*क्योंकि तुम्हारे कर्मों से, हे अश्वियो!*
*दोषभक्षक, हे मार्गदर्शको!, लौट आता है।। ७।।*

हे परमात्मा और आत्मा! तुम्हारे द्वारा दिखाया जाने वाला मार्ग तेजों और प्रकाशों से युक्त, अति उच्च और मार्गों में सर्वाधिक विस्तीर्ण सुना जाता है, क्योंकि हे मार्गदर्शन करने वालो!, सन्मार्गदर्शन आदि तुम्हारे कर्मों से प्रेरणा प्राप्त करके ही सत्यमार्ग का अनुसरण करने से दोषों को अपने अन्दर ही पचा लेने वाला ज्ञानी मनुष्य कुमार्ग से लौट आता है और विपत्तियों से छूट जाता है।

टि. *उच्च* - **ककुहः**। महान् - वे.। दया.। उच्छ्रितो महान् - सा.। lofty - W. steed - G.

*मार्ग* - **ययिः**। रथः - वे.। गन्ता - सा.। दया.। moving - W. swiftly moving - G.

*मार्गों में विस्तीर्ण* - **यामेषु संतनिः**। गमनेषु सन्तन्यमानः - वे.। गमनेषु यज्ञेषु वा सततं गच्छन् रथः - सा.। प्रहरेषु सम्यक् विस्तारकः - दया.। renowned at sacrifices - W. exertion in course - G.

*कर्मों से* – **दंसोभिः**। कर्मभिः – वे.। सा.। by your acts - W. by your great deeds - G.

*लौट आता है* – **आववर्तति**। आवर्तयति – वे.। सा.। भृशं वर्तते – दया.। was rescued - W. is brought to us again - G.

**मध्वं ऊ षु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी।**
**यत् समुद्राति पर्षथः पक्वाः पृक्षो भरन्त वाम्।। ८।।**

मध्वः। ऊँ इति। सु। मधुऽयुवा। रुद्रा। सिसक्ति। पिप्युषी।
यत्। समुद्रा। अति। पर्षथः। पक्वाः। पृक्षः। भरन्त। वाम्।। ८।।

*माधुर्ययुक्त की ही सुष्ठु, हे मधु की कामना वालो!,*
*हे दुष्टरोदको!, सेवा करती है (तुम्हारी), पूरिका (वाणी हमारी)।*
*चूँकि समुद्रों को पार कराते हो तुम (हमें),*
*पके हुए अन्न, समर्पित किये जाते हैं तुमको।। ८।।*

हे माधुर्य से युक्त भक्तिरस रूपी सोम की कामना वालो! हे दुष्टों को रुलाने वालो! हे मेरे परमात्मा और आत्मा! आनन्द से पूरने वाली हमारी वाणी अपनी स्तुतियों से तुम्हारी सेवा करती है। चूँकि तुम विपदाओं, दुःखों और संकटों के सागरों से हमें पार कराते हो, इसलिये हमारे द्वारा अपनी हवियां तुम्हें समर्पित की जाती हैं।

टि. *हे मधु की कामना वालो* – **मधूयुवा**। सोमेच्छौ – वे.। मधुरस्य सोमादेर् मिश्रयितारौ – सा.। यौ मधूनि यावयतस् तौ – दया.। lovers of sweetness - G.

*हे दुष्टरोदको* – **रुद्रा**। रुत् स्तुतिः तया द्रवणीयौ रुद्रपुत्रौ वा – सा.। दुष्टानां रोदयितारौ – दया.।

*पूरिका (वाणी हमारी)* – **पिप्युषी**। प्याययन्ती – वे.। दया.। प्याययन्ती स्तुतिर् अस्मत्कृता – सा.। (our) nutritious (adoration) - W. she who streams with the sweetness - G.

*समुद्रों को पार कराते हो* – **समुद्रा अति पर्षथः**। अन्तरिक्षम् अतिगच्छथः – वे.। समुद्द्रवण-साधनानि अन्तरिक्षाणि अतिपारयथः – सा.। you traverse (the limits) of the firmament - W. ye have travelled through the seas - G.

*अन्न समर्पित किये जाते हैं* – **पृक्षः भरन्त**। अन्नानि ददति – वे.। अन्नानि हविर्लक्षणानि भ्रियन्ते यजमानैः – सा.। the prepared viands (of the sacrifice) support you - W. men bring you gifts of (well-dressed) food - G.

**सत्यम् इद् वा उ अश्विना युवाम् आहुर् मयोभुवा।**
**ता यामन् यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा।। ९।।**

सत्यम्। इत्। वै। ऊँ इति। अश्विना। युवाम्। आहुः। मयःऽभुवा।
ता। यामन्। यामऽहूतमा। यामन्। आ। मृळयत्ऽतमा।। ९।।

*सचमुच ही निश्चय से, हे अश्वियो!,*
*तुम को कहते हैं (जन), सुखों को उत्पन्न करने वाले।*
*वे (तुम हो) यात्रा में, गमनार्थ अतिशय बुलाए जाने वाले,*

*यात्रा में सब ओर से, अतिशय सुख प्रदान करने वाले।। ९।।*

हे परमात्मा और आत्मा! सचमुच ही लोग तुम्हें सब से अधिक सुखों को उत्पन्न करने वाले बताते हैं। तुम इस जीवनयात्रा और अन्तर्यात्रा में सब से अधिक आह्वान किये जाने वाले हो। तुम ही सब से अधिक सुखों को प्रदान करने वाले हो। इसलिये हम तुम्हारी ही शरण में आते हैं।

टि. *कहते हैं (जन)* - **आहुः**। आहुः पुराविदः - सा.। कथयन्ति - दया.।

*यात्रा में* - **यामन्**। गमने - वे.। यज्ञे - सा.। यामनि प्रहरादौ - दया.। at sacrifice - G.

*गमनार्थ अतिशय बुलाए जाने वाले* - **यामहूतमा**। अतिशयेन गमनार्थं स्तोतृभिः ह्वातव्यौ भवथः - वे.। गमनार्थं भृशम् आह्वातव्यौ भवतम् - सा.। at sacrifice most prompt to hear - G.

**इमा ब्रह्माणि वर्धनाश्विभ्यां सन्तु शंतमा।**
**या तक्षाम रथाँइवावोचाम बृहन् नमः।। १०।। १२।।**

इमा। ब्रह्माणि। वर्धना। अश्विऽभ्याम्। सन्तु। शम्ऽतमा।
या। तक्षाम। रथान्ऽइव। अवोचाम। बृहत्। नमः।। १०।।

*ये स्तोत्र, वृद्धि करने वाले,*
*अश्वियों को होवें, अतिशय सुख देने वाले।*
*जिनको रचते हैं हम, रथों की तरह,*
*कहते हैं हम महान् नमस्कार (अश्वियों को)।। १०।।*

जिस प्रकार कोई रथकार बुद्धिमत्तापूर्वक रथ की रचना करता है, उसी प्रकार हम उपासक जन बुद्धि से सजा-सँवार कर अपनी स्तुतियों की रचना करते हैं। सुख और आनन्द प्राप्त कराने वाली ये हमारी स्तुतियां आत्मा और परमात्मा की वृद्धि करने वाली होवें। इनसे देवपक्ष की वृद्धि और समृद्धि होवे। हम आत्मा और परमात्मा को महान् नमस्कार करते हैं।

टि. *स्तोत्र* - **ब्रह्माणि**। स्तोत्राणि - वे.। ब्रह्माणि परिवृढानि स्तोत्राणि - सा.। धनान्यन्नानि वा - दया.। praises - W. prayers - G.

*वृद्धि करने वाले* - **वर्धना**। वर्धनानि - वे.। वर्धनानि समर्धकानि - सा.। यानि वर्धन्ते तानि - दया.। ever progressing - W. which magnify their might - G.

*रचते हैं हम* - **तक्षाम**। कृतवन्तः - वे.। सम्पादयामः - सा.। संवृणयामाच्छादयाम स्वीकुर्याम - दया.। we fabricate - W. we have fashioned - G.

## सूक्त ७४

ऋषिः - पौरः। देवता - अश्विनौ। छन्दः - अनुष्टुप्। दशर्चं सूक्तम्।

**कूष्ठो देवाव् अश्विनाद्या दिवो मनावसू।**
**तच् छ्रवथो वृषण्वसू अत्रिर् वामा विवासति।। १।।**

कूऽस्थः। देवौ। अश्विना। अद्य। दिवः। मनावसू इति।

तत्। श्रवथः। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू। अत्रिः। वाम्। आ। विवासति।। १।।

*कहाँ स्थित होगे तुम, हे प्रकाशमानो!, हे अश्वियो!,*
*अब प्रकाशलोक से आकर, हे पूज्य वासों वालो।*
*उसको सुनो तुम (स्तुति को), हे सुखवर्षक वासों वालो!,*
*अत्रि (जिससे) तुम दोनों की, सर्वतः परिचर्या कर रहा है।। १।।*

हे प्रकाश, ज्ञान आदि दिव्य गुणों से युक्त परमात्मा और आत्मा! हे पूजा के योग्य इस जगत् और शरीर में निवास करने वालो! तुम अब प्रकाशलोक से आकर कहाँ वास करोगे? तुम अवश्य हमारे हृदयों में ही वास करना। हे सुखों की वर्षा करने वाले, सुखों से भरपूर निवासों वालो! तुम कायिक, मानसिक और वाचिक दोषों से रहित अपने उपासक की इस स्तुति को सुनो, जिसके द्वारा वह सब ओर से तुम्हारी परिचर्या कर रहा है।

टि. *कहाँ स्थित होगे तुम* - **कूष्ठः**। क्व स्थितौ - वे.। व्यत्ययेनैकवचनम्। कौ भूमौ तिष्ठन्तौ सन्तौ। सा.। यः कौ पृथिव्यां तिष्ठति - दया.। descended upon the earth - W. where are ye - G.

*हे पूज्य वासों वालो* - **मनावसू**। हे पूजनीयधनौ - वे.। स्तुतिधनौ - सा.। यौ मनो वासयतस् तौ - दया.। affluent in praise - W. rich in constancy - G.

*उसको सुनो तुम* - **तत् श्रवथः**। तत् शृणुतम् - वे.। तत् स्तोत्रं शृणुथः - सा.।

*हे सुखवर्षक वासों वालो* - **वृषण्वसू**। वृष्यमाणधनौ - वे.। वर्षकधनौ - सा.। यौ वृषणो वासयतस् तौ - दया.। liberal showerers - W. excellent as Steeds - G.

**कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या।**
**कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा।। २।।**

कुह। त्या। कुह। नु। श्रुता। दिवि। देवा। नासत्या।
कस्मिन्। आ। यतथः। जने। कः। वाम्। नदीनाम्। सचा।। २।।

*कहाँ हैं वे दोनों? कहाँ हैं अब वे विख्यात?*
*प्रकाशलोक में (वास करने वाले), प्रकाशमान, नित्यसत्य।*
*किस के निमित्त सर्वतः, यत्न करते हो तुम मनुष्य के?*
*कौन है तुम्हारी अव्यक्त स्तुतियों का साथ देने वाला।। २।।*

हे प्रकाशलोक में निवास करने वालो! हे कभी असत्य न होने वालो! हे मेरे परमात्मा और आत्मा! प्रकाश, ज्ञान आदि से युक्त तुम दोनों कहाँ हो? हम तुम्हें किस स्थान पर खोजें? तुम किस मनुष्य के कल्याण के लिये प्रयास करते हो? सचमुच तुम उस उपासक को ही अभ्युदय और निःश्रेयस प्रदान करते हो, जो ध्यान, साधना, जप, स्तुति आदि से सदा तुम्हारे साथ रहता है।

टि. *कहाँ हैं वे दोनों* - **कुह त्या**। कस्मिन् लोके तौ भवतः - वे.। त्या तौ कुह कुत्र तिष्ठतः - सा.। where are they - W.

*सर्वतः यत्न करते हो तुम* - **आ यतथः**। आ गच्छथः - वे.। सा.। आ यतेथे - दया.। (to what worshipper) do you come - W. (who is the man) ye strive to reach - G.

*कौन है तुम्हारी अव्यक्त स्तुतियों का साथ देने वाला* - **कः वां नदीनां सचा**। नदीनां जपाद्यव्यक्तस्तूतीनाम्। णद अव्यक्ते शब्द इत्यस्माद् धातो रूपसिद्धिः।। कः च युवयोः स्तूतीनां सेविता। स्तुतयो नद्यः। वे.। कः स्तोता युवयोर् नदीनां स्तुतीनां सचा सहायः स्यात् - सा.। Who may be the associate of your praises - W. Who of your suppliants is with you - G.

**कं याथः कं ह गच्छथः कम् अच्छा युञ्जाथे रथम्।**
**कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वाम् उश्मसीष्टये।। ३।।**

कम्। याथः। कम्। ह। गच्छथः। कम्। अच्छ। युञ्जाथे इति। रथम्।
कस्य। ब्रह्माणि। रण्यथः। वयम्। वाम्। उश्मसि। इष्टये।। ३।।

*किसके पास जाते हो तुम? किसके पास पहुँचते हो तुम?*
*किसके पास जाने के लिये, जोतते हो तुम रथ को (अपने)?*
*किसके स्तोत्रों में रमण करते हो तुम (हे अश्वियो!)?*
*हम तुम्हारी कामना करते हैं, कल्याण के लिये (अपने)।। ३।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम किसके पास जाते हो? तुम किसके पास पहुँचना चाहते हो? तुम अपने साधनों का प्रयोग किसके लिये करना चाहते हो? तुम अपने रहस्यों को किसे प्रकट कर देना चाहते हो? तुम किसकी स्तुतियों से प्रसन्न होते हो? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है, कि आत्मा और परमात्मा उसी उपासक को प्राप्त होते हैं और उसी की स्तुतियों से प्रसन्न होते हैं, जो उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन करता है और निश्छल भाव से उनकी उपासना करता है।

टि. *रमण करते हो तुम* - **रण्यथः**। कामयेथे - वे.। रमेथे - सा.। रमयथः - दया.। are you gratified - W. are ye pleased - G.

*हम तुम्हारी कामना करते हैं कल्याण के लिये* - **उश्मसि इष्टये**। वयं कामयामहे यज्ञार्थम् - वे.। गमनायैषणाय वा कामयामहे - सा.। we are anxious for your arrival - W. we long for you to further us - G.

**पौरं चिद्ध्युदप्रुतं पौर पौराय जिन्वथः।**
**यद् ईं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस् पदे।। ४।।**

पौरम्। चित्। हि। उदऽप्रुतम्। पौर। पौराय। जिन्वथः।
यत्। ईम्। गृभीतऽतातये। सिंहम्ऽइव। द्रुहः। पदे।। ४।।

*पूरने वाले को, निश्चय से, जलों में तैरने वाले को,*
*हे पूरने वालो!, पूरने वाले के लिये, प्रेरित करो तुम।*
*जब इसको, सत्कर्म को हाथ में लेने वाले के लिये,*
*संहन्ता को जैसे शत्रु के स्थान पर, (प्रेरित करते हो तुम)।। ४।।*

हे इस जगत् और शरीरों को अपनी व्याप्ति से भरने वाले परमात्मा और आत्मा! तुम दोनों जलों में तैरने वाले अर्थात् जलों से मिश्रित, बल और आनन्द से भरने वाले सोम को, यज्ञ आदि सत्कर्मों के विस्तार को अपने हाथ में लेने वाले और तुम्हें अपनी स्तुतियों और हवियों से भरने वाले

उपासक के पास इस प्रकार सज्जा और आदर के साथ ले चलो, जिस प्रकार किसी शत्रुसंहारक योद्धा को शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिये उसके स्थान पर ले जाया जाता है।

टि. *पूरने वाले को* - **पौरम्**। पृणाति पूरयतीति वा पुरः। पुर एव पौरः। स्वार्थिकस् तद्धितप्रत्ययः। तम्।। पौरो मेघः पूरणात्, तम् - वे.। पौरेण वृष्ट्यर्थम् सम्बन्धान् मेघो ऽपि पौरः, तम् - सा.। पुरि भवं मनुष्यम् - दया.। the cloud - W. the filler - G.

*जलों में तैरने वाले को* - **उदप्रुतम्**। उदकप्लावकं मेघम् - सा.। उदकयुक्तम् - दया.। rain-shedding - W. swimming in the flood - G.

*हे पूरने वालो* - **पौर**। इत्यामन्त्रितं वाक्ये नान्वितम् इत्युक्तम् - वे.। इदम् अश्विनोः सम्बोधनम्। पौरेण स्तुत्यत्वेन सम्बन्धाद् अश्विनाव् अपि पौरौ। उभयोश् छान्दसम् एकवचनम्। हे पौरसम्बन्धिनाव् अश्विनौ। सा.। पुरोर् मनुष्यस्यापत्यं तत्सम्बुद्धौ - दया.। Pauras - W. ye, Strengtheners - G.

*पूरने वाले के लिये* - **पौराय**। पौरनाम्ने मह्यम् - वे.। पौराय ऋषये मह्यम् - सा.। पुरे भवाय - दया.। (send) to Paura - W. for Paura - G.

*सत्कर्म को हाथ में लेने वाले के लिये* - **गृभीततातये**। संगृहीतं धनं तायते यत्र भटेभ्यः तत्रेति - वे.। गृहीतयज्ञसन्तानाय पौराय - सा.। गृहीता तातिः सत्कर्मविस्तृतिर् येन - दया.। to him who is engaged in sacrifice - W. advancing to be captured - G.

*संहन्ता को जैसे शत्रु के स्थान पर* - **सिंहम् इव द्रुहः पदे**। सिंहः सहनात्। हिंसेर् वा स्याद् विपरीतस्य। संपूर्वस्य वा हन्तेः। संहाय हन्तीति वा। या. (नि. ३.१८)। शत्रोः स्थाने सिंहम् इव लीनं - वे.। द्रुहो द्रोहस्य पदे स्थाने ऽरण्यदेशे गर्जन्तं प्रबलं सिंहं यथा - सा.। सिंहवत् शत्रोः प्राप्तव्ये - दया.। as (hunters chase) a lion in a forest - W. like a lion to the ambuscade - G.

अस्य मन्त्रस्य व्याख्यासम्बन्धे ग्रिफिथमहोदयेन दत्ता पादटिप्पण्यपि द्रष्टव्या।

**प्र च्यवा॑नाज् जुजु॒रुषो॒ व॒व्रिम् अत्क॒ं न मु॑ञ्चथः।**
**युवा॒ यदी॑ कृ॒थः पुन॒र् आ काम॑म् ऋण्वे व॒ध्वः॑।। ५।। १३।।**

प्र। च्यवा॑नात्। जु॒जु॒रुषः॑। व॒व्रिम्। अत्क॑म्। न। मु॒ञ्च॒थः॒।
युवा॑। यदि॑। कृ॒थः। पुन॑रिति॑। आ। काम॑म्। ऋ॒ण्वे॒। व॒ध्वः॑।। ५।।

*प्रकर्ष से, स्तुतिकर्ता से, अतिशय जीर्ण से,*
*आवरण को, वस्त्र की तरह, छुड़ाते हो तुम।*
*युवा (उसे) जब कर देते हो तुम, फिर से,*
*सर्वतः कामना को प्राप्त करता है वह, वहनीया की।। ५।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम आयु भर तुम्हारी स्तुति करने के कारण अतिशय जीर्ण अपने स्तोता को अज्ञान के आवरण से इस प्रकार मुक्त कर देते हो, जिस प्रकार पुराने वस्त्र को शरीर पर से उतार दिया जाता है, अथवा साँप केंचुली को उतार कर फैंक देता है। जब तुम उसे ज्ञानरश्मियों से युक्त करके पुनः ज्ञान की पराकाष्ठा पर पहुँचा देते हो, तो वहन करने योग्य सद्विद्या की प्राप्ति

की उसकी कामना पूर्ण हो जाती है।

ऋग्वेद १.११६.१० मन्त्र की व्याख्या भी देखिये।

टि. *स्तुतिकर्ता से* - **च्यवानात्**। च्यवन ऋषिर् भवति च्यावयिता स्तोमानाम् - या. (नि. ४.१९)। च्यवानाद् ऋषेः - सा.। गमनात् - दया.। from Cyavān - W. G.

*अतिशय जीर्ण से* - **जुजुरुषः**। जीर्णात् - वे.। जरसा जीर्णात् सकाशात् - सा.। जीर्णावस्थां प्राप्तः - दया.। from the decrepid - W. worn with age - G.

*आवरण को* - **वव्रिम्**। जराम् - वे.। हेयं पुराणं रूपम् - सा.। रूपम्। वव्रिर् इति रूपनाम (निघ. १.७)। दया.। skin - W. G.

*वस्त्र की तरह* - **अत्कं न**। कवचम् इव - वे.। सा.। व्याप्तम् इव - दया.। like a cuirass - W. as it were a robe - G.

*वहनीया की* - **वध्वः**। युवतीः - वे.। सुरूपायाः स्त्रियः - सा.। भार्यायाः - दया.। of women - W. of a dame - G.

**अस्ति हि वाम् इह स्तोता स्मसि वां संदृशि श्रिये।**
**नू श्रुतं म आ गतम् अवोभिर् वाजिनीवसू।। ६।।**

अस्ति। हि। वाम्। इह। स्तोता। स्मसि। वाम्। सम्ऽदृशि। श्रिये।
नु। श्रुतम्। मे। आ। गतम्। अवःऽभिः। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू।। ६।।

*विद्यमान है चूँकि, तुम्हारा यहाँ स्तोता,*
*रहें हम तुम्हारी कृपादृष्टि में, शोभा के लिये।*
*अब सुने हुए स्तोत्र के पास मेरे, आ जाओ तुम,*
*समृद्धियों के साथ, हे ऐश्वर्यों से बसाने वालो।। ६।।*

हे आत्मा और परमात्मा! चूँकि तुम्हारी स्तुति करने वाला यह उपासक यहाँ इस जीवन में नित्य तुम्हारी स्तुति में लगा हुआ है, इसलिये शोभा और ऐश्वर्यों की प्राप्ति के निमित्त तुम्हारी कृपादृष्टि सदा इसपर बनी रहे। हे ऐश्वर्यों को प्रदान करके बसाने वालो! अब तुम दोनों अपनी समृद्धियों और संरक्षणों के साथ श्रवण किये जाने वाले मेरे स्तोत्र के पास मेरे हृदय में आ जाओ।

टि. *तुम्हारी कृपादृष्टि में* - **वां संदृशि**। युवयोः सुदर्शने - वे.। संदर्शने संनिधाने - सा.। in your sight - W. to see your (glory) - G.

*शोभा के लिये* - **श्रिये**। श्रयर्थम् - वे.। धनाय - दया.। for the sake of prosperity - W.

*सुने हुए स्तोत्र के पास मेरे* - **श्रुतं मे**। श्रूयमाणं मदीयं स्तोत्रम् - वे.। श्रुतं शृणुतम् - सा.।

*हे ऐश्वर्यों से बसाने वालो* - **वाजिनीवसू**। हे अन्नधनौ - वे.। सा.। यौ वाजिनीं बह्वन्नादिक्रियां वासयतस् तौ - दया.। who are affluent in food - W. rich in store of wealth - G.

**को वाम् अद्य पुरूणाम् आ वव्ने मर्त्यानाम्।**
**को विप्रो विप्रवाहसा को यज्ञैर् वाजिनीवसू।। ७।।**

कः। वाम्। अद्य। पुरूणाम्। आ। वव्ने। मर्त्यानाम्।

कः। विप्रः। विप्रऽवाहसा। कः। यज्ञैः। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू।। ७।।

*कौन तुमको आज, बहुतों में से,*
*सर्वतः भजता है, मरणधर्माओं में से।*
*कौन मेधावी, हे मेधावियों को वहन करने वालो!,*
*कौन यज्ञों के द्वारा, हे ऐश्वर्यों से बसाने वालो।। ७।।*

हे आत्मा और परमात्मा! बहुसंख्य मरणधर्मा मनुष्यों में से वह कौन सा मनुष्य है, जो इस समय सबसे बढ़कर तुम्हारा भजन करता है। हे ज्ञानी जनों का पालन-पोषण करने वालो! कौन ज्ञानी जन सबसे बढ़कर तुम्हारा चिन्तन-मनन करता है। हे सब प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करके प्रजाओं को बसाने वालो! वह कौन सा याजक है, जो सबसे बढ़कर तुम्हें अपनी हवियां प्रदान करता है।

टि. *बहुतों में से* - **पुरूणाम्**। बहूनां मध्ये - वे.। दया.।

*सर्वतः भजता है* - **आ वव्ने**। आ भजते - वे.। सर्वतो भजति - सा.। संभजति - दया.। has propitiated you - W. hath won you to himself - G.

*हे मेधावियों को वहन करने वालो* - **विप्रवाहसा**। हे विप्रैः उह्यमानौ - वे.। विप्रैर् मेधाविभिर् वहनीयौ - सा.। यौ विद्वद्भिः प्रापणीयौ - दया.। who are reverenced by the wise - W. accepters of the bard - G.

**आ वां रथो रथानां येष्ठो यात्वश्विना।**
**पुरू चिद् अस्मयुस् तिर आङ्गूषो मर्त्येष्वा।। ८।।**

आ। वाम्। रथः। रथानाम्। येष्ठः। यातु। अश्विना।
पुरु। चित्। अस्मऽयुः। तिरः। आङ्गूषः। मर्त्येषु। आ।। ८।।

*इस ओर, तुम्हारा रथ, रथों के मध्य,*
*अतिशय गति वाला, गमन करे, हे अश्वियो।*
*बहुतों को भी, हमें चाहने वाला, तिरस्कृत करे (शत्रुओं को),*
*स्तुति के योग्य, मनुष्यों के मध्य में, सब ओर से।। ८।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम्हारा गमन सब गमनों में सब से अधिक तीव्र गति वाला है। यह सभी मनुष्यों में स्तुति के योग्य है। तुम्हारा यह गमन हमें बहुत चाहता है, हमें अपने साथ लेना चाहता है। इसलिये तुम्हारी यह यात्रा हमारी ओर होवे। तुम आकर हमारे हृदयमन्दिर में विराजो। और काम, क्रोध, लोभ आदि जो शत्रु हमारे अन्दर बैठे हुए हैं, उन्हें सर्वतः नष्ट कर दो।

टि. *अतिशय गति वाला* - **येष्ठः**। अतिशयेन गन्ता - वे.। सा.। दया.। the swiftest - W.

*बहुतों को तिरस्कृत करे (शत्रुओं को)* - **पुरु तिरः**। बहुधनम् अस्मभ्यं प्रयच्छतु - वे.। पुरू चिद् बहून्यप्यस्मद्विरोधिनस् तिरो हिंसकस् तिरस्कर्ता वा - सा.। the discomfiter of numerous foes - W. through many regions may (our praise) pass - G.

*स्तुति के योग्य* - **आङ्गूषः**। आघोषः। ऋ. १.६१.२ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।। स्तोमः - वे.। स्तुत्यः। अथवा आङ्गूषः स्तोमः। स्तवो ऽस्मयुर् अस्मान् बलैर् योक्तुं कामयमानः। सा.। अङ्गेषु भवा

प्रशंसा - दया.। glorified - W. praise - G.

**शम् ऊ षु वां मधूयुवास्माकम् अस्तु चर्कृतिः।**
**अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम्।। ९।।**

शम्। ऊँ इति। सु। वाम्। मधुऽयुवा। अस्माकम्। अस्तु। चर्कृतिः।
अर्वाचीना। विऽचेतसा। विऽभिः। श्येनाऽइव। दीयतम्।। ९।।

*सुखकर ही सुष्ठु तुम्हें, हे आनन्द चाहने वालो!,*
*हमारी होवे, बार-बार (स्तवन की) क्रिया।*
*इस ओर गमन करने वाले, हे विशिष्ट प्रज्ञान वालो!,*
*गतिसाधनों से, दो श्येनों की तरह, उड़कर आओ।। ९।।*

हे उपासकों की भक्ति के आनन्द की अभिलाषा रखने वालो! हे आत्मा और परमात्मा! हम जो भी बार-बार तुम्हारा स्तवन करते हैं, जो भी बार-बार तुम्हें हवि प्रदान करते हैं, वह हमारी बार-बार की जाने वाली क्रिया निश्चय से तुम्हें भली प्रकार सुख देने वाली होवे। हे विशिष्ट ज्ञान के स्वामियो! तुम दोनों अपने गमन साधनों से हमारी ओर दो श्येन पक्षियों की तरह उड़कर आओ।

टि. *हे आनन्द चाहने वालो* - **मधुयुवा**। सोमेच्छू - वे.। मधुमन्तौ - सा.। माधुर्यगुणोपेतौ - दया.। desirous of the libation - W. lovers of meath - G.

*बार-बार (स्तवन की) क्रिया* - **चर्कृतिः**। कृतिः पुनःपुनः क्रियमाणा - वे.। चर्कृतिः पुनःपुनः करणम् युवाभ्याम् अर्थाय पुनःपुनः क्रियमाणं स्तोत्रं युवयोर् आगमनस्याभ्यासो वा - सा.। अत्यन्त-क्रिया - दया.। repeated adoration - W. laudation - G.

*इस ओर गमन करने वाले* - **अर्वाचीना**। अभिमुखौ - वे.। अर्वाग् अस्मदभिमुखाञ्चनौ - सा.। दया.। descending to our presence - W. hitherward - G.

*गतिसाधनों से* - **विभिः**। अश्वैः - वे.। गन्तृभिर् अश्वैः - सा.। पक्षिभिः सह - दया.। with rapid steeds - W. with your winged steeds - G.

*उड़कर आओ* - **दीयतम्**। 'दी' इति धातुर् 'डी' इत्यनेन समानार्थः। मोनियरविलियममहोदयस्य शब्दकोशो ऽपि द्रष्टव्यः।। आगच्छतम् - वे.। गच्छतम् - सा.। travel - W. fly - G.

**अश्विना यद् ध कर्हि चिच् छुश्रूयातम् इमं हवम्।**
**वस्वीर् ऊ षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः।। १०।। १४।।**

अश्विना। यत्। ह। कर्हि। चित्। शुश्रूयातम्। इमम्। हवम्।
वस्वीः। ऊँ इति। सु। वाम्। भुजः। पृञ्चन्ति। सु। वाम्। पृचः।। १०।।

*हे अश्वियो! जब भी कभी,*
*सुनो तुम (मेरी) इस पुकार को।*
*बसाने वाली ही, सुष्ठु तुम्हारी पालनाएं,*
*सम्पृक्त होती रहें, सुष्ठु तुम्हारी पुष्टियां।। १०।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! जब कभी भी मेरे द्वारा आह्वान किये जाने पर तुम मेरी इस पुकार

को सुनो, तो भली प्रकार सुख से बसाने वाली तुम्हारी पालनाएं मुझे प्राप्त होती रहें, और सुख से बसाने वाले तुम्हारे पौष्टिक अन्न भी मुझे भली प्रकार प्राप्त होते रहें। मैं भली प्रकार अन्न और धन-धान्य का उपभोग करता हुआ तुम्हारे संरक्षण में सदा अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहूँ।

टि. *सुनो तुम* - **शुश्रुयातम्**। शृणुयातम् - वे.। शृणुतम्। श्रुत्वागच्छतम् इत्यर्थः। सा.। प्राप्नुयातम् - दया.। सुन लो - सात.। you hear - W. ye listen to - G.

*बसाने वाली पालनाएं* - **वस्वीः भुजः**। प्रशस्तानि भोजनानि - वे.। प्रशस्यानि धनानि हविर्लक्षणानि - सा.। धनसम्बन्धिनीः भोगक्रियाः - दया.। प्रशंसनीय भोजन - सात.। the excellent sacrificial offerings - W. is danty food prepared - G.

*सम्पृक्त होती रहें* - **पृञ्चन्ति**। प्रयच्छन्तीति - वे.। पृञ्चन्ति संपर्चयन्ति - सा.। सम्बन्धयन्ति - दया.। reach you - W. mix - G.

*पुष्टियां* - **पृचः**। अन्नानि - वे.। संपर्चनाः स्तोतारः - सा.। कामनाः - दया.। अन्नों को - सात.। longing for your proximity - W. refreshing food - G.

## सूक्त ७५

ऋषिः - अवस्युर् आत्रेयः। देवता - अश्विनौ। छन्दः - पङ्क्तिः। नवर्चं सूक्तम्।

**प्रति॑ प्रि॒यत॑मं॒ रथं॒ वृष॑णं वसु॒वाह॑नम्।**
**स्तो॒ता वा॑म् अश्विना॒व् ऋषि॒ः स्तोमे॑न॒ प्रति॑ भूषति॒**
**माध्वी॒ मम॑ श्रुतं॒ हव॑म्।। १।।**

प्रति॑। प्रि॒यऽत॑मम्। रथ॑म्। वृष॑णम्। व॒सु॒ऽवाह॑नम्।
स्तो॒ता। वा॒म्। अ॒श्वि॒नौ॒। ऋषि॑ः। स्तोमे॑न। प्रति॑। भू॒ष॒ति॒।
माध्वी॒ इति॑। मम॑। श्रु॒तम्। हव॑म्।। १।।

*अतिशय प्रिय रथ को,*
*सुखवर्षक को, वाससाधनों के वाहक को।*
*स्तोता तुम्हारा, हे अश्वियो!,*
*मन्त्रार्थद्रष्टा, स्तुति से बढ़ा रहा है,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को।। १।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! यह मेरा शरीर रूपी रथ मुझे अत्यधिक प्रीति प्रदान करने वाला है। यह मुझपर सुखों की वर्षा करने वाला है। यह जीवन जीने के सभी साधनों को मुझे प्राप्त कराने वाला है। मेरे सभी कार्य इसी से सम्पन्न होते हैं (शरीरम् आद्यं खलु धर्मसाधनम् - कालिदासः)। वेद के मन्त्रों पर चिन्तन-मनन करने वाला मैं तुम्हारा स्तोता अपनी स्तुतियों से तुम्हारे रथभूत इस शरीर की अभिवृद्धि, रक्षा और पालन कर रहा हूँ। हे माधुर्य से युक्त गुणों वालो! तुम मेरी पुकार को सुनो और मेरे हृदयमन्दिर में आकर मुझे आनन्द की प्राप्ति कराओ।

टि. *वाससाधनों के वाहक को* - **वसुवाहनम्**। धनानां प्रापयितारम् - वे.। धनानां वाहकम् - सा.।

वसूनां द्रव्याणां वाहनम् - दया.। the vehicle of wealth - W. treasure-bringing car - G.

*स्तुति से बढ़ा रहा है* - **स्तोमेन प्रति भूषति**। स्तुतिभिर् अलङ्करोति - वे.। एकः प्रतिशब्दोऽनुवादः। स्तोमेन अलङ्करोति। सा.। स्तवनेन अलङ्करोति - दया.। graces - W. is prepared with his song of praise - G.

हे *माधुर्ययुक्तो* - **माध्वी**। हे मधुमन्तौ - वे.। मधुविद्यावेदितारौ - सा.। मधुरादिगुणप्रापकौ - दया.। masters of mystic lore - W. lovers of sweetness - G.

**अत्यायातम् अश्विना तिरो विश्वा अहं सना।**
**दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्।। २।।**

अतिऽआयातम्। अश्विना। तिरः। विश्वाः। अहम्। सना।
दस्रा। हिरण्यवर्तनी इति हिरण्यऽवर्तनी। सुऽसुम्ना। सिन्धुऽवाहसा।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्।। २।।

*लाँघकर (सब को), आ जाओ, हे अश्वियो!,*
*उपेक्षित करके सब को, मैं (हूँ) सदा (तुम्हारा)।*
*हे शत्रुविनाशको!, हे ज्योतिर्मय मार्गों वालो!,*
*हे शोभन सुखों वालो!, हे जलप्रवाहों को बहाने वालो!,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को।। २।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! तुम सब विघ्न-बाधाओं को लाँघकर मेरे पास आ जाओ। तुम सब प्रजाओं की उपेक्षा करते हुए मेरे पास आकर मेरे हृदय में वास करो, क्योकि मैं सदा तुम्हारा हूँ और तुम सदा मेरे हो। चोर, डाकू आदि बाह्य तथा काम, क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं का विनाश करने वालो!, हे ज्योतिर्मय मार्ग का ही सदा अनुसरण करने वालो! हे सुखों को प्राप्त कराने वालो! हे सुख और शान्ति रूपी जलों की धाराओं को बहाने वालो! हे माधुर्य से युक्त गुणों वालो! तुम आकर मेरे हृदय में वास करो। तुम मेरी पुकार को सुनो और मुझे आनन्द की प्राप्ति कराओ।

टि. *लाँघकर (सब को)* - **अति**। सर्वान् जनान् अतिक्रम्य - सा.। देशान् अतिक्रम्य - दया.। passing by (other worshippers) - W. pass - G.

*उपेक्षित करके सब को* - **तिरः विश्वा**। तिरस्कृत्य अन्याः प्रजाः - वे.। विश्वाः सर्वा अस्मद्विरोधिप्रजाः सदा तिरस्करोमि। अथवाहं तिरः। तिरः सत इति प्राप्तस्येति निरुक्तम् (३.२०)। प्राप्ता विश्वाः सर्वाः क्रिया युष्मदीया अनुतिष्ठेयम् इत्यर्थः। सा.। so that I may overcome all (adversaries) - W. pass away beyond all tribes - G.

*मैं (हूँ) सदा (तुम्हारा)* - **अहम् सना**। अहं हि युवयोः पुरातनः - वे.। सनातनौ - सा.। सना सदा - दया.। of selfish men : reading *ahaṁsanāḥ* for *ahaṁ sanā* - G.

*हे ज्योतिर्मय मार्गों वालो* - **हिरण्यवर्तनी**। हिरण्ययुक्तमार्गौ - वे.। हिरण्यरथौ - सा.। यौ हिरण्यं ज्योतिः सुवर्णं वा वर्तयतः - दया.। riding in a golden chariot - W.with golden paths - G.

*हे शोभन सुखों वालो* - **सुषुम्ना।** सुसुखौ - वे.। सुधनौ - सा.। सुष्ठौ सुखयुक्तौ - दया.। distributors of wealth - W. most gracious - G.

*हे जलप्रवाहों को बहाने वालो* - **सिन्धुवाहसा।** सिन्धूनां प्रापयितारौ - वे.। नदीनां प्रवाहयितारौ वृष्टिप्रेरणेन - सा.। यौ सिन्धुं वहतः प्रापयतस् तौ - दया.। propellers of rivers - W. bringers of the flood - G.

**आ नो रत्नानि बिभ्रताव् अश्विना गच्छतं युवम्।**
**रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्।। ३।।**

आ। नः। रत्नानि। बिभ्रतौ। अश्विना। गच्छतम्। युवम्।
रुद्रा। हिरण्यवर्तनी इति हिरण्यऽवर्तनी। जुषाणा। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्।। ३।।

*इस ओर हमारे लिये रमणीय धनों को लाते हुए,*
*हे अश्वियो! गमन करो तुम दोनों।*
*हे दुष्टों को रुलाने वालो!, हे ज्योतिर्मय मार्गों वालो!,*
*प्रीति करते हुए (हमसे), हे ऐश्वर्यों से बसाने वालो!,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को।। ३।।*

रमणीय धनों को हमारे लिये लाते हुए, ज्योतिर्मय मार्गों का अनुसरण करते हुए और हमसे प्यार करते हुए, हे दुष्टों को रुलाने वालो!, हे ऐश्वर्यों को प्रदान करके बसाने वालो!, हे आत्मा और परमात्मा! तुम हमारी ओर आओ और हमारे हृदयों में वास करो। हे माधुर्य से युक्त गुणों वालो! तुम मुझ उपासक की पुकार को सुनो और मुझे आनन्द की प्राप्ति कराओ।

टि. *रमणीय धनों को लाते हुए* - **रत्नानि बिभ्रतौ।** रत्नानि धारयन्तौ - वे.। रमणीयानि धनानि धारयन्तौ - सा.। दया.। bringing your precious treasures - G.

*हे दुष्टों को रुलाने वालो* - **रुद्रा।** हे रुद्रपुत्रौ - वे.। हे रुद्रपुत्रौ स्तुत्यौ वा - सा.। दुष्टानां भयङ्करौ - दया.। दुष्टों को रुलाने वाले - जय.।

*प्रीति करते हुए* - **जुषाणा।** प्रीयमाणौ - वे.। यज्ञं सेवमानौ - सा.। सेवमानौ - दया.। propitiated ( by sacrifice) - W. rejoicing - G.

**सुष्टुभो वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता।**
**उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्।। ४।।**

सुऽस्तुभः। वाम्। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू। रथे। वाणीची। आऽहिता।
उत। वाम्। ककुहः। मृगः। पृक्षः। कृणोति। वापुषः।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्।। ४।।

*सुन्दर स्तुति वाले की, तुम्हारे, हे धनवर्षको!,*

*रथ पर स्तुति, भली प्रकार स्थित है, (उपासक की)।*
*और तुम्हारा महान् अन्वेषक,*
*अन्नाहुति प्रदान करता है, सुन्दर रूप वाला,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को।। ४।।*

हे जीवनयापन के उत्तम साधनों की वर्षा करने वाले आत्मा और परमात्मा! मुझ श्रेष्ठ स्तोता की स्तुतियां इस शरीररूपी रथ के माध्यम से तुम्हें समर्पित की जा रही हैं। मैं शरीर, मन, वचन और कर्म से सर्वथा तुम्हें समर्पित हूँ। और तुम्हारा महान् अन्वेषक, उत्तम आचरण रूपी सुन्दर शरीर वाला तुम्हारा यह भक्त तुम्हें अपना नैवेद्य समर्पित करता है। हे आकर्षक गुणों वालो! तुम मुझ उपासक की पुकार को सुनो और मुझे परमानन्द की प्राप्ति कराओ।

टि. हे *धनवर्षको* – **वृषण्वसू**। हे वृष्यमाणधनौ – वे.। वर्षधनौ वर्षितारौ वा वसूनाम् – सा.। यौ वृष्णो बलिष्ठान् वासयतस् तौ – दया.। showerers of wealth - W. O Strong and Good - G.

*स्तुति* – **वाणीची**। स्तुतिः। वाणीची इति वाङ्नाम (निघ. १.११)। वे.। वाणीची वाग्रूपा स्तुतिः – सा.। वाक् – दया.। praise - W. the voice - G.

*अन्वेषक* – **मृगः**। अश्वः – वे.। मृगयिता – सा.। यो मार्ष्टि सः – दया.। devoted - W. beast : a stallion ass, the dun-coloured animal represents the grey tints of early morning - G.

*अन्नाहुति* – **पृक्षः**। अन्नम् – वे.। हविः – सा.। sacrificial food - W. chariot-steed - G.

सुन्दर रूप *वाला* – **वापुषः**। उदकहितः – वे.। वापुषः वपुष्मान् यजमानः – सा.। वपुषि भवः – दया.। embodied (adorer) - W. fair, wonderful - G.

**बोधिन्मनसा रथ्येषिरा हवनश्रुता।**
**विभिश् च्यवानम् अश्विना नि याथो अद्वयाविनं**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्।। ५।। १५।।**

बोधित्ऽमनसा। रथ्या। इषिरा। हवनऽश्रुता।
विऽभिः। च्यवानम्। अश्विना। नि। याथः। अद्वयाविनम्।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्।। ५।।

*ज्ञान से युक्त चित्त वाले, रथों पर आरूढ़,*
*तीव्र गति वाले, पुकार को सुनने वाले।*
*गमनसाधनों से स्तुतिकर्ता के पास, हे अश्वियो!,*
*भली प्रकार जाते हो तुम, द्वन्द्वरहित के,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को।। ५।।*

हे मधुरता से युक्त गुणों वाले आत्मा और परमात्मा! तुम ज्ञान से युक्त चित्त वाले हो। तुम इन पिण्ड और ब्रह्माण्ड रूपी रथों में आरोहण करने वाले हो। तुम सब से अधिक तीव्र गति वाले हो। तुम सदा भक्तों की पुकार को सुनने वाले हो। तुम अपने गमनसाधनों के द्वारा अपने द्वन्द्वरहित स्तोता

की सहायता के लिये अविलम्ब पहुँचते हो। तुम मुझ उपासक की पुकार को सुनो और मुझे परमानन्द की प्राप्ति कराओ।

टि. *ज्ञान से युक्त चित्त वाले* - **बोधिन्मनसा**। बुध्यमानमनसौ - वे.। सा.। बोधितं मनो ययोस् तौ - दया.। with mind attentive - W. watchful in spirit - G.

*तीव्र गति वाले* - **इषिरा**। गन्तारौ - वे.। दया.। शीघ्रगन्तारौ - सा.। गतिशील - सात.। swift-moving - W. impetuous - G.

*द्वन्द्वरहित के पास* - **अद्वयाविनम्**। असहायम् - वे.। मायारहितम् - सा.। द्वन्द्वभावरहितम् - दया.। single-purposed - W. void of guile - G.

**आ वां नरा मनोयुजो ऽश्वासः प्रुषितप्सवः।**
**वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिर् अश्विना**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्।। ६।।**

आ। वाम्। नरा। मनःऽयुजः। अश्वासः। प्रुषितऽप्सवः।
वयः। वहन्तु। पीतये। सह। सुम्नेभिः। अश्विना।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्।। ६।।

*इधर तुमको, हे नेताओ!, चिन्तनमात्र से जुतने वाले,*
*अश्व, (स्नेह से) सिक्त भोजनों वाले।*
*पंखों वाले, वहन करें (सोम)पान के लिये,*
*साथ सुखों के, हे अश्वियो!,*
*हे माधुर्ययुक्तो!, मेरी सुनो तुम पुकार को।। ६।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! हे सब का मार्गदर्शन करने वालो! विचारमात्र से कार्य में जुट जाने वाले, स्नेहयुक्त भोगपदार्थों से शक्ति प्राप्त करने वाले, पक्षियों की तरह तीव्र गति से उड़ने वाले तुम्हारे वहनसाधन तुमको सुखों के साथ हमारे भक्तिरस के पान के लिये इस ओर ले आवें। तुम अपने उत्तम गतिसाधनों से हमारे हृदयमन्दिर में आकर हमारे भक्तिरस का आनन्द प्राप्त करो। हे माधुर्य से युक्त गुणों वालो! तुम मुझे उपासक की पुकार को सुनो और मझे परमानन्द की प्राप्ति कराओ।

टि. *चिन्तनमात्र से जुतने वाले* - **मनोयुजः**। मनोवेगाः - वे.। मनोमात्रेण युज्यमानाः। सुशिक्षिता इत्यर्थः। सा.। ये मन इव युज्यन्ते ते वेगवत्तराः - दया.। मन के इशारों से कार्य में जुट जाने वाले - सात.। harnessed at will - W. yoked at the thought - G.

*सिक्त भोजनों वाले* - **प्रुषितप्सवः**। प्रुषितं सिक्तं प्सु भोजनं येषां ते।। प्रुषितरूपा बिन्दुभिर् युक्ताः - वे.। विचित्ररूपाः - सा.। प्रुषितं दग्धं प्सु इन्धनान्नादिकं यैस् ते - दया.। धब्बे वाले रूपों वाले - सात.। of wondrous beauty - W. of dappled hue - G.

*पंखों वाले* - **वयः**। गन्तारः - वे.। शीघ्रगन्तारः - सा.। व्याप्तिशीलाः - दया.। गतिशील घोड़े - सात.। of rapid course - W. flying steeds - G.

**अश्विनाव् एह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्।**
**तिरश् चिद् अर्यया परि वर्तिर् यातम् अदाभ्या**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्।। ७।।**

अश्विनौ। आ। इह। गच्छतम्। नासत्या। मा। वि। वेनतम्।
तिरः। चित्। अर्यऽया। परि। वर्तिः। यातम्। अदाभ्या।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्।। ७।।

*हे अश्वियो! आ यहाँ जाओ तुम,*
*हे असत्य न होने वालो!, मत कामनारहित होवो तुम।*
*उपेक्षा करते हुए (अन्यों की), स्वामित्व की कामना से, सब ओर,*
*घूमते हुए गमन करो तुम, हे हिंसित न किये जा सकने वालो!,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को।। ७।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! तुम यहाँ आकर मेरे हृदयमन्दिर में वास करो। तुम हमारी ओर से कभी निराश मत होवो। हे किसी के भी द्वारा हिंसित न किये जा सकने वालो! तुम उपासना न करने वाले अन्य जनों की परवाह न करते हुए स्वामियों के रूप में तीव्र गति से हमारे पास आ जाओ। हे माधुर्य से युक्त गुणों वालो! तुम मेरी पुकार को सुनो और मुझे आनन्द प्रदान करो।

टि. *मत कामनारहित होवो तुम* - **मा वि वेनतम्।** मा विगतकामौ भवतम् - वे.। वेनतिः कान्तिकर्मा - सा.। be not unpropitious - W. be not disinclined - G.

*स्वामित्व की कामना से* - **अर्यया।** स्वामिनौ - वे.। आर्यौ स्वामिनौ युवाम् - सा.। अर्यस्य स्त्रिया - दया.। lords - W. through longing for the pious - G.

*सब ओर घूमते हुए* - **परि वर्तिः।** मार्गं परि - वे.। अस्मद्यज्ञगृहं परि - वे.। परि मार्गम् - दया.। to our sacrificial hall - W. turn out of the way to reach our home - G.

**अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस् पती।**
**अवस्युम् अश्विना युवं गृणन्तम् उप भूषथो**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्।। ८।।**

अस्मिन्। यज्ञे। अदाभ्या। जरितारम्। शुभः। पती इति।।
अवस्युम्। अश्विना। युवम्। गृणन्तम्। उप। भूषथः।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्।। ८।।

*इस यज्ञ में, हे हिंसित न होने वालो!,*
*स्तुति करने वाले को, हे कल्याण के स्वामियो।*
*वृद्धि की कामना वाले को, हे अश्वियो!, तुम दोनों,*
*स्तुति करते हुए को, निकट से बढ़ाते हो,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को।। ८।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा!, हे कभी हिंसित न होने वालो!, हे कल्याणकर कर्मों की रक्षा करने

वालो! तुम दोनों इस जीवनयात्रा रूपी महायज्ञ में तुम्हारी स्तुति करने वाले और जीवन में संरक्षण और समृद्धि चाहने वाले अपने स्तोता को खूब बढ़ाते हो। हे माधुर्य से युक्त गुणों वालो! तुम मुझ उपासक की पुकार को सुनो और मुझे मेरे लक्ष्य की ओर अग्रसर करो।

टि. हे *कल्याण के स्वामियो* - **शुभः पती**। हे उदकपती - वे.। उदकस्य स्वामिनौ - सा.। कल्याणकरव्यवहारस्य पालकौ - दया.। lords of water - W. Lords of Splendour - G.

*वृद्धि की कामना वाले को* - **अवस्युम्**। अवस्युम् - वे.। सा.। आत्मनो ऽवं रक्षणम् इच्छुं कामयमानं वा - दया.। Avasyu - W. who longs for your grace - G.

*निकट से बढ़ाते हो* - **उप भूषथः**। उप भवथः। मध्यमपुरुषे ऽपि सन् दृश्यते। वे.। उपप्राप्नुतम् - सा.। favour - W. stand at this sacrifice - G.

**अभूद् उषा रुशत्पशुर् आग्निर् अधाय्यृत्वियः।**
**अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्राव् अमर्त्यो**
**माध्वी मम श्रुतं हवम्॥ ९॥ १६॥**

अभूत्। उषाः। रुशत्ऽपशुः। आ। अग्निः। अधायि। ऋत्वियः।
अयोजि। वाम्। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू। रथः। दस्रौ। अमर्त्यः।
माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥ ९॥

*हो गई है उषा (उदित), दीप्त रश्मियों वाली,*
*सर्वतः अग्नि स्थापित हो गया है, ऋतुयाजक।*
*जुत गया है तुम्हारा, हे वाससाधनों को बरसाने वालो!,*
*रथ, हे शत्रुविनाशको!, न मरने के धर्म वाला,*
*हे माधुर्ययुक्तो! मेरी सुनो तुम पुकार को॥ ९॥*

हे जीवन की यात्रा में वाससाधनों को प्रदान करने वाले आत्मा और परमात्मा! मेरे भीतर दीप्त रश्मियों वाली आन्तरिक उषा उदित हो गई है। कालानुसार यजन करने वाले अन्तर् अग्नि का आधान हो गया है। हे काम, क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं का विनाश कर डालने वालो! तुम्हारा रथभूत अमरणधर्मा यह सूक्ष्म शरीर भी जप-तप, योगसाधना आदि अपने कार्यों में जुट गया है। हे माधुर्य से युक्त गुणों वालो! तुम मेरी पुकार को सुनो और मुझे परमानन्द की अनुभूति कराओ।

टि. *उषा दीप्त रश्मियों वाली* - **उषाः रुशत्पशुः**। अभूत् उषाः। दीप्तपशुः आहितश् च अग्निः - वे.। अग्निश् च रुषत्पशुः दीप्तपशुमान्। प्रकाशितहविर् इत्यर्थः। अथवा पशवः किरणाः। रुशद्रश्मिः। सा.। The dawn has come blazing with the oblation - W. Dawn with her white herd - G.

*ऋतुयाजक* - **ऋत्वियः**। प्राप्तकालो होमाय - वे.। ऋतौ काले भवः - सा.। ऋतुयाजकः - दया.। of the season - W. in due time - G.

*हे वाससाधनों को बरसाने वालो* - **वृषण्वसू**। प्रदत्तधनौ - सा.। यौ वृषणौ बलिष्ठौ देहौ

वासयतस् तौ – दया.। showerers of wealth - W. strong and kind - G.

## सूक्त ७६

ऋषिः – भौम आत्रेयः। देवता – अश्विनौ। छन्दः – त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**आ भात्यग्निर् उषसाम् अनीकम् उद् विप्राणां देवया वाचो अस्थुः।**
**अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसम् अश्विना घर्मम् अच्छ।। १।।**

आ। भाति। अग्निः। उषसाम्। अनीकम्। उत्। विप्राणाम्। देवऽयाः। वाचः। अस्थुः।
अर्वाञ्चा। नूनम्। रथ्या। इह। यातम्। पीपिऽवांसम्। अश्विना। घर्मम्। अच्छ।। १।।

*सर्वतः प्रदीप्त हो रहा है अग्नि, उषाओं का मुख,*
*ऊपर को, उपासकों की देवपूजक वाणियां, उठ रही हैं।*
*इस ओर निश्चय से, हे रथ के स्वामियो! यहाँ गमन करो तुम,*
*सर्वतः परिपूर्ण के, हे अश्वियो!, हवि के पास।। १।।*

उषाकाल में प्रदीप्त किया जाने वाला, उषाओं का मुखभूत अग्नि याजकों के द्वारा प्रज्वलित किया जा रहा है। इस पावन वेला में देवों की प्यारी स्तुतियां उपासकों के द्वारा उच्च स्वर से गाई जा रही हैं। हे पिण्ड और ब्रह्माण्ड के स्वामियो आत्मा और परमात्मा! तुम हमारे द्वारा सज्जित सब ओर से परिपूर्ण हवि के पास आकर इसे स्वीकार करो और हमें अपनी कृपा का पात्र बना लो।

टि. *उषाओं का मुख* – **उषसाम् अनीकम्।** उषसां मुखम् – वे.। उषसाम् अनीकभूतः। अनीकं मुखम्। उषसि प्रबुध्यमान इत्यर्थः। यद्वा। उषसां मुखम्। सा.। the face of the dawns - W. G.

*देवपूजक वाणियां* – **देवयाः वाचः।** देवान् गच्छन्त्यः वाचः – वे.। देवया देवकामाः वाचः स्तोत्राणि – सा.। या देवान् विदुषो यान्ति ताः – दया.। the devout praisers of the pious - W. the singers' pious voices - G.

*सर्वतः परिपूर्ण के* – **पीपिवांसम्।** स्वाङ्गैः परिवृढम्। यद्वा। आप्यायितम्। सा.। सम्यग् वर्धमानम् – दया.। perfect (in all parts) - W. full and rich - G.

*हवि के पास* – **घर्मम् अच्छ।** घर्मः दुग्धादिहविःपचनार्थं पात्रविशेषः। तस्यां पच्यमानं हविर् अपि घर्म एव तात्स्थ्यात्।। यज्ञं प्रति – वे.। घर्मं प्रदीप्तं यज्ञम्। यद्वा। वसतीवरीभिः क्षरद्रूपं सोमरसम्। अथवा घृतादिना घर्मं प्रवर्ग्यम्। अच्छाभिलक्ष्य। सा.। गृहाश्रमकृत्याख्यं यज्ञम् – दया.। to the splended sacrifice - W. unto our libation - G.

**न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठान्ति नूनम् अश्विनोपस्तुतेह।**
**दिवाभिपित्वे ऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं दाशुषे शंभविष्ठा।। २।।**

न। संस्कृतम्। प्र। मिमीतः। गमिष्ठा। अन्ति। नूनम्। अश्विना। उपऽस्तुता। इह।
दिवा। अभिऽपित्वे। अवसा। आऽगमिष्ठा। प्रति। अवर्तिम्। दाशुषे। शम्ऽभविष्ठा।। २।।

*नहीं परिष्कृत को हिंसित करते हैं वे, अत्यधिक गति वाले,*
*निकट में निश्चय से अश्वी, भली प्रकार स्तुति किये हुए यहाँ।*

*दिवस के आगमन में समृद्धि के साथ, अतिशय आगमन वाले,*

*प्रतिकार करके अभाव का, हविदाता के लिये, अतिशय सुखोत्पादक।। २।।*

निश्चय से इस जीवन में हृदय से सम्यक् स्तुति किये हुए, अतिशय तीव्र गति वाले आत्मा और परमात्मा विधिविधानपूर्वक भली प्रकार सँवारकर किये हुए किसी भी श्रेष्ठ कार्य को हिंसित नहीं करते। दिवस के आगमन अर्थात् प्रातःकाल और इसी प्रकार दिवस के गमन अर्थात् सायंकाल में स्तुति किये हुए, सर्वत्र गति करने वाले, सर्वव्यापक, हविदाता उपासक के लिये सुखों को उत्पन्न करने वाले ये उसके आजीविका आदि के अभाव को दूर करके उसे सर्वस्व प्रदान करते हैं।

टि. *परिष्कृत को* - **संस्कृतम्**। संस्कृतं सोमम् - वे.। संस्कृतं घर्मम् - सा.। कृतसंस्कारम् - दया.। the perfected (rite) - W. what is ready - G.

*अतिशय गति वाले* - **गमिष्ठा**। गन्तारौ - वे.। गन्तृतमौ - सा.। दया.। most frequent - G.

*दिवस के आगमन में* - **दिवाभिपित्वे**। दिवसे अपराह्णे च - वे.। दिवसस्याभिपतने प्रातःकाले - सा.। दिवसेनाभितः प्राप्ते - दया.। at the opening of the day - W. at morn at evening - G.

*प्रतिकार करके अभाव का* - **प्रति अवर्तिम्**। वर्तिर् मार्गो यात्रा जीवनयात्रा आजीविका। तस्या अभावो ऽवर्तिस् तां प्रतिकृत्य।। यजमानस्य अवर्तिं प्रति - वे.। अवर्तिं प्रति द्वन्द्वभूतौ। वर्तिर् जीवनम्। तदभावो ऽवर्तिः। तद्रहितम् अन्नं यथा भवति तथा। सा.। अवर्तिम् अमार्गम् - दया.। against destitution - W. from trouble - G.

**उता यातं संगवे प्रातर् अह्नो मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य।**

**दिवा नक्तम् अवसा शंतमेन नेदानीं पीतिर् अश्विना ततान।। ३।।**

उत। आ। यातम्। सम्ऽगवे। प्रातः। अह्नः। मध्यंदिने। उत्ऽइता। सूर्यस्य।

दिवा। नक्तम्। अवसा। शम्ऽतमेन। न। इदानीम्। पीतिः। अश्विना। आ। ततान।। ३।।

*अपि च, आ जाओ तुम, गोदोहन काल में, प्रातः में,*

*दिन के मध्याह्न काल में, शिखर में पहुँचने पर सूर्य के।*

*दिन में, रात्रि में, समृद्धि के साथ, अत्यन्त सुखदायिनी के,*

*नहीं इस समय पान, अश्वियों को (छोड़कर) परे जा रहा है।। ३।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम सूर्योदय से पूर्व गोदोहन काल में, प्रातःकाल में, दिन के मध्यकाल अर्थात् मध्याह्न में, सूर्य के आकाश में उच्चतम स्थान पर पहुँचने पर अर्थात् अपराह्न में, दिन में और रात्रि में अर्थात् दिन और रात के किसी भी भाग में अत्यन्त सुखदायक समृद्धि के साथ आ जाओ। तुम्हारा सदा ही हमारे हृदयमन्दिर में स्वागत है। हमारी पूजा और स्तुतियां सदा तुम्हारे लिये हैं। हमारी हवि, हमारा नैवेद्य इन कालों में तुम आत्मा और परमात्मा के अतिरिक्त और किसी के पास नहीं जा सकता। हम तुम्हारी ही शरण में आते हैं।

टि. *गोदोहन काल में* - **संगवे**। सङ्गवकाले - वे.। सङ्गवकाले। सङ्गच्छन्ते गावो दोहनभूमिं यस्मिन् काले स सङ्गवः। रात्र्यपरकाले हि गावो वने हिमतृणानि भक्षयित्वा पुनर् दोहाय संगवे प्रतिनिवर्तन्ते। सा.। सङ्गच्छन्ति गावो यस्मिन् सायं समये तस्मिन् - दया.। at the (milking time) of

the cattle - W. at milking time - G.

*शिखर में पहुँचने पर सूर्य के* – **उदिता सूर्यस्य।** सूर्यस्य उदये च – वे.। सूर्यस्य उदितोदिताव् अभ्युदये ऽत्यन्तप्रवृद्धसमये। अपराह्ण इत्यर्थः। सा.। सूर्य के उदय होने पर – सात.। when the sun is high - W. when the sun is setting - G.

*नहीं पान अश्वियों को (छोड़कर) परे जा रहा है* – **न पीतिः अश्विना आ ततान।** न इदानीं सायंकाले सोमपीतिः अश्विनौ आ तनोति। नायं तयोः काल इति। वे.। पीतिर् इतरदेवानां पानं ना ततान न तनोत्यश्विनौ विहायेति शेषः – सा.। the drinking of the Soma has not extended beyond the Aśvins - W. Not only (now) the draught hath drawn the Aśvins - G.

**इदं हि वां प्रदिवि स्थानम् ओकं**
**इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम्।**
**आ नो दिवो बृहतः पर्वताद् आ-**
**द्भ्यो यातम् इषम् ऊर्जं वहन्ता।। ४।।**

इदम्। हि। वाम्। प्रऽदिवि। स्थानम्। ओकः। इमे। गृहाः। अश्विना। इदम्। दुरोणम्।
आ। नः। दिवः। बृहतः। पर्वतात्। आ। अत्ऽभ्यः। यातम्। इषम्। ऊर्जम्। वहन्ता।। ४।।

*यह ही तुम्हारा सनातन स्थान है, निवास के योग्य,*
*यह घर है, हे अश्वियो!, यह द्वारों वाला आवास।*
*इस ओर पास हमारे द्युलोक से, महान् से, मेघ से इस ओर,*
*जलों से गमन करो, अन्न को, बल को, वहन करते हुए।। ४।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! यह मेरा शरीर तुम्हारे निवास के योग्य तुम्हारा सनातन स्थान है। यह तुम्हारा घर है। यह नौ द्वारों वाली तुम्हारी अयोध्या नगरी है (अष्टचक्रा नवद्वारा पूर् अयोध्या – अथर्व.)। तुम महान् प्रकाशलोक से, मेघों से, जलों से और जलों के स्थान अन्तरिक्ष से, एवं अन्य सभी स्थानों से अन्न और बल को हमारे लिये लाते हुए इस ओर गमन करो और हमारे शरीर के अन्दर हृदयमन्दिर में वास करो।

टि. *सनातन* – **प्रदिवि।** पुराणम् – वे.। सा.। प्रकृष्टप्रकाशे – दया.। ancient - W. G.

*निवास के योग्य* – **ओकः।** सेव्यमानम् – वे.। निवासयोग्यम् – सा.। गृहम् – दया.।

*यह घर है* – **इमे गृहाः।** गृहशब्दो पुंसि बहुवचने प्रयुज्यते।। प्राचीनवंशादयः – सा.। गृहाः ये गृह्णन्ति ते गृहस्थाः – दया.। these are your mansions - W. these were your houses - G.

*द्वारों वाला आवास* – **दुरोणम्।** द्वारैर् युक्तं गृहम्।। दुरोणम् इत्यल्पो भेदः – वे.। देवयजनगृहम् – सा.। गृहम् – दया.। dwelling - W. habitation - G.

*मेघ से* – **पर्वतात्।** पर्ववतो मेघात् – सा.। दया.। from the mountain - G.

*जलों से* – **अद्भ्यः।** अन्तरिक्षात् – वे.। अपां कारणाद् अन्तरिक्षात् – सा.। from waters - G.

**सम् अश्विनोर् अवसा नूतनेन**
**मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।**

**आ नो॑ र॒यिं व॑हत॒म् ओत वी॒रान्**
**आ विश्वा॑न्यमृ॒ता सौभ॑गानि।। ५।। १७।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ५.४२.१८ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त ७७

ऋषिः - अत्रिः। देवता - अश्विनौ। छन्दः - त्रिष्टुप्। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**प्रा॒त॒र्यावा॑णा प्रथ॒मा य॑जध्वं पु॒रा गृध्रा॒द् अर॑रुषः पिबातः।**
**प्रा॒तर् हि य॒ज्ञम् अ॒श्विना॑ द॒धाते॒ प्र शं॑सन्ति क॒वयः॑ पूर्व॒भाजः॑।। १।।**

प्रा॒तः॒ऽयावा॑ना। प्र॒थ॒मा। य॒ज॒ध्व॒म्। पु॒रा। गृध्रा॑त्। अर॑रुषः। पि॒बा॒तः।
प्रा॒तः। हि। य॒ज्ञम्। अ॒श्विना॑। द॒धाते॒ इति॑। प्र। शं॒स॒न्ति॒। क॒वयः॑। पू॒र्व॒ऽभाजः॑।। १।।

*भोर से ही गमन करने वालों की, मुख्यों की पूजा करो तुम,*
*पहले ही लालची से, न देने वाले से, पान करते हैं ये दोनों।*
*प्रातःकाल में ही यज्ञ को, अश्वी धारण करते हैं,*
*प्रकर्ष से स्तुति करते हैं (इनकी), वेदार्थवेत्ता, प्रथम स्तोता।। १।।*

हे मनुष्यो! ये आत्मा और परमात्मा सृष्टि के आरम्भ से ही इस जगत् में गमन करने वाले हैं। ये सब में प्रकृष्टतम हैं। तुम इनकी पूजा करो। ये लालची और अपने अन्न-धन में से दूसरों को न देने वाले जनों से पूर्व ही उनसे कुछ भी अपेक्षा न करते हुए अपने उपासकों से भक्तिरस के पान को स्वीकार करते हैं। ये सब से पहले पूजाओं को स्वीकार करने वाले हैं। छः अङ्गों सहित वेदों का अध्ययन करने वाले वेदार्थवेत्ता प्रथम स्तोता ऋषि भी इनकी भरपूर स्तुतियां करते हैं।

टि. *पहले ही लालची से, न देने वाले से* - **पुरा गृध्रात् अररुषः**। अप्रयच्छतो ऽपि कदर्यात् - वे.। गृध्राद् अभिकाङ्क्षतो ऽररुषो ऽदातू रक्षःप्रभृतेः पूर्वम् - सा.। पुरस्तात् अभिकाङ्क्षया अदातुः - दया.। before the greedy upholders (of the offering) - W. before the giftless niggard - G.

*यज्ञ को धारण करते हैं* - **यज्ञं दधाते**। यज्ञं धारयतः - वे.। सा.। claim the sacrifice - W.

*वेदार्थवेत्ता* - **कवयः**। अनूचाना ऋषयः - सा.। मेधाविनः - दया.। sages - W. G.

*प्रथम स्तोता* - **पूर्वभाजः**। पूर्वम् एव भजमानाः - वे.। पूर्वकालीनाः - सा.। ये पूर्वान् भजन्ति ते - दया.। ancient - W. yielding the first share - G.

**प्रा॒तर् य॑जध्वम् अ॒श्विना॑ हिनोत॒ न सा॒यम् अ॑स्ति देव॒या अजु॑ष्टम्।**
**उ॒तान्यो अ॒स्मद् य॑जते॒ वि चाव॒ः पूर्वः॑पूर्वो॒ यज॑मानो॒ वनी॑यान्।। २।।**

प्रा॒तः। य॒ज॒ध्व॒म्। अ॒श्विना॑। हि॒नो॒त॒। न। सा॒यम्। अ॒स्ति॒। दे॒व॒ऽयाः। अजु॑ष्टम्।
उ॒त। अ॒न्यः। अ॒स्मत्। य॒ज॒ते॒। वि। च॒। आव॑ः। पूर्वः॑ऽपूर्वः। यज॑मानः। वनी॑यान्।। २।।

*प्रातःकाल पूजो तुम अश्वियों को, प्रदान करो तुम (हवि उनको),*
*नहीं सायंकाल में (आहुति) है देवों को जाने वाली, असेवनीय (है यह)।*

*और अन्य हमसे (पहले जो) यजन करता है, और विशेषेण तृप्त करता है,*
*पहले पहले यजन करने वाला, अधिक प्राप्त करने वाला (होता है)।। २।।*

ऊपर ऋग्वेद मन्त्र ५.७६.३ में अश्वी देवों से प्रार्थना की गई है, कि वे गोदोहनकाल, प्रातः, मध्याह्न, अपराह्न, दिन और रात सभी कालों में अपनी समृद्धियों के साथ हमारे पास आएं। परन्तु इस मन्त्र में कहा जा रहा है, कि अश्वियों की प्रातःकाल में ही पूजा करो और उन्हें आहुति प्रदान करो। सायंकाल में आहुति इन्हें नहीं पहुँचती। उस समय वे इसका सेवन नहीं करते। यहाँ विरोधाभास है। इस विरोधाभास का निराकरण तभी हो सकता है, जब हम प्रातः और सायं शब्दों को काल के अर्थ में न लेकर उन्हें क्रमशः ज्ञान और अज्ञान के प्रतीक के रूप में स्वीकार करें। इस प्रकार इस मन्त्र में कहा गया है, कि आत्मा और परमात्मा की ज्ञानपूर्वक पूजा करो और उन्हें आहुति प्रदान करो। अज्ञान से की हुई पूजा और आहुति उन्हें नहीं पहुँचती और वे इन्हें स्वीकार भी नहीं करते। हमारे अतिरिक्त जो अन्य जन हमसे पूर्व उनकी पूजा-अर्चना करते हैं, उनको हमसे पूर्व और अधिक फल प्राप्त होता है। जो जितना पहले पूजा-अर्चना करेगा, उसे उतना ही शीघ्र और अधिक फल मिलेगा। पहले आओ, पहले पाओ।

टि. *प्रदान करो तुम (हवि उनको)* - **हिनोत**। प्रापयत - वे.। प्रहिणुत हवींषि - सा.। वर्धयत - दया.। offer them oblations - W. instigate - G.

*देवों को जाने वाली* - **देवयाः**। देवेज्या - या. (नि. १२.५)। देवयजनम् - वे.। देवगामि - सा.। worshipper - G.

*असेवनीय* - **अजुष्टम्**। असेव्यम् - सा.। un-acceptable - W. nor is rejected - G.

*और विशेषेण तृप्त करता है* - **वि च आवः**। विविधं चाह्वयति - वे.। वितर्पयेच् च हविषा - सा.। आवः रक्षति - दया.। or propitiates - W. and craves - G.

*अधिक प्राप्त करने वाला* - **वनीयान्**। वनीयान् वनयितृतमः - या. (तत्रैव)। अत्यन्तं सम्भक्ता - वे.। देवानां संभजनीयः संभाव्यो भवति - सा.। अतिशयेन विभाजकः - दया.। is most approved of - W. is most highly favoured - G.

**हिरण्यत्वङ् मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते वाम्।**
**मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा।। ३।।**

हिरण्यऽत्वक्। मधुऽवर्णः। घृतऽस्नुः। पृक्षः। वहन्। आ। रथः। वर्तते। वाम्।
मनःऽजवाः। अश्विना। वातऽरंहाः। येन। अतिऽयाथः। दुःऽइतानि। विश्वा।। ३।।

*सुवर्ण से मढ़ा हुआ, आकर्षक वर्ण वाला; प्रकाश से स्नात,*
*अन्न को वहन करने वाला, इस ओर रथ घूम रहा है तुम्हारा।*
*मन के वेग वाला, हे अश्वियो!, वायु के समान गति वाला,*
*जिससे अतिक्रमण कराते हो तुम, दुर्गतियों का, सब का।। ३।।*

हे आत्मा और परमात्मा! सब कर्मों को सम्पन्न करने वाला यह मानव शरीर जो तुमने हमें प्रदान किया है और जो तुम्हारा निवासस्थान है, एक सोने से मढ़े हुए, आकर्षक वर्ण वाले, ज्योति

से स्नात रथ के समान इस संसार में विचरण कर रहा है। यह अन्न आदि जीवनयापन के सभी साधनों को जुटाने वाला है। यह प्राणायाम, योगसाधना आदि के द्वारा मन और वायु के वेग के समान वेग वाला हो जाता है। तुम इस शरीररूपी रथ के द्वारा ही हमें सब आपदाओं और विघ्न-बाधाओं से पार कराते हो।

टि. *सुवर्ण से मढ़ा हुआ* - **हिरण्यत्वक्**। हिरण्यरूपः - वे.। हिरण्याच्छादितरूपो हिरण्यावृतः - सा.। हिरण्यं तेजः सुवर्णं चैव त्वग् उपरिवर्णं यस्य सः - दया.। coated with gold - W. G.

*प्रकाश से स्नात* - **घृतस्नुः**। क्षरदुदकः - वे.। उदकस्य प्रस्रवनः - सा.। यो घृतम् उदकं स्नाति - दया.। water-shedding - W. dropping fatness - G.

*वायु के समान दौड़ने वाला* - **वातरंहाः**। वातसदृशवेगः - वे.। सा.।

**यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे।**
**स तोकम् अस्य पीपरच् छमीभिर् अनूर्ध्वभासः सदम् इत् तुतुर्यात्।। ४।।**

यः। भूयिष्ठम्। नासत्याभ्याम्। विवेष। चनिष्ठम्। पित्वः। ररते। विऽभागे।
सः। तोकम्। अस्य। पीपरत्। शमीभिः। अनूर्ध्वऽभासः। सदम्। इत्। तुतुर्यात्।। ४।।

*जो अत्यधिक, असत्य न होने वालों के लिये, कार्य करता है,*
*स्वादिष्ठ अन्न को प्रदान करता है, हविर्भाग के अवसर पर।*
*वह पुत्र को अपने, पालता है कर्मों से (अपने),*
*ऊपर न उठी अग्निज्वालाओं वालों को, सदा ही पार कर जाता है।। ४।।*

जो उपासक कभी असत्य न होने वाले आत्मा और परमात्मा के लिये कार्य करता है, जो आहुति प्रदान करने के अवसर पर उन्हें स्वादिष्ठ हवि प्रदान करता है, वह अपने इन शुभ कर्मों के द्वारा अपनी सन्तति का पालन-पोषण और उद्धार करता है। वह उन सब लोगों को जीवन की यात्रा में पीछे छोड़ देता है, जो प्रज्वलित अग्नियों में आहुति नहीं डालते, यज्ञ नहीं करते।

टि. *कार्य करता है* - **विवेष**। प्रापयति - वे.। करोति - सा.। वेवेष्टि - दया.। परोसता है - सात.। presents - W. hath served most - G.

*स्वादिष्ठ अन्न को* - **चनिष्ठं पित्वः**। चनिष्ठम् अनम्। चनिष्ठम् आज्यम् आह। वे.। चन इत्यन्ननाम (नि. ६.१६)। बह्वन्नं कर्म। पित्वः। कर्मणि षष्ठी। अन्नं च। सा.। the largest portion of the viands - W. the sweetest food - G.

*पालता है* - **पीपरत्**। पूरयति - वे.। पालयेत् - सा.। दया.। secures - W. furthers - G.

*ऊपर न उठी अग्निज्वालाओं वालों को* - **अनूर्ध्वभासः**। अनुच्छ्रिततेजस्कान् शत्रून् - वे.। अनुन्नततेजस्कान्। यद्वा। ऊर्ध्वभासो ऽग्नयः। अग्निरहितान् अयष्टॄन्। सा.। न ऊर्ध्वा भासो दीप्तिर् यस्य - दया.। who light no sacred fires - W.whose flames ascend not - G.

*पार कर जाता है* - **तुतुर्यात्**। तरति - वे.। हिंस्यात् - सा.। दया.। हिंसित करेगा - सात. has the advantage of - W. ever passes - G.

**सम् अश्विनोर् अवसा नूतनेन**

**मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।**
**आ नो रयिं वहतम् ओत वीरान्**
**आ विश्वान्यमृता सौभगानि।। ५।। १८।।**

अस्य मन्त्रस्य पदपाठहिन्दीभाषानुवादादिभ्य ऋ. ५.४२.१८ मन्त्रो द्रष्टव्यः।

## सूक्त ७८

ऋषिः - सप्तवध्रिर् आत्रेयः। देवता - अश्विनौ। छन्दः - १-३ उष्णिक्, ४ त्रिष्टुप्, ५-९ अनुष्टुप्। नवर्चं सूक्तम्।

**अश्विनाव् एह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्।**
**हंसाविव पततम् आ सुताँ उप।। १।।**

अश्विनौ। आ। इह। गच्छतम्। नासत्या। मा। वि। वेनतम्।
हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप।। १।।

*हे अश्वियो! इस ओर यहाँ गमन करो तुम,*
*हे असत्य न होने वालो!, मत काम से रहित होओ तुम।*
*दो हंसों की तरह गमन करो, इस ओर सवन किये हुओं के पास।। १।।*

हे आत्मा और परमात्मा! हे सदा सत्य ही रहने वालो! अर्थात् कभी असत्य न होने वालो! तुम यहाँ हमारे हृदयमन्दिर में पधारो। तुम हमारी ओर से तनिक भी निराश मत होओ। तुम हमारे द्वारा तैयार किये हुए भक्तिरस रूपी सोम के पास उसके पान के लिये हमारे मनमन्दिर में इस प्रकार आओ, जिस प्रकार दो हंस निर्मल जल के पान के लिये स्वच्छ सरोवर में उतरते हैं।

टि. *मत काम से रहित होओ तुम* - **मा वि वेनतम्।** वेनतिः कान्तिकर्मा। मा विकामौ भवतम्। निःस्पृहाव् अकामौ वा न भवतम्। सा.। मा निषेधे वि विरोधे वेनतम् कामयेथाम् - दया.। be not ill-disposed - W. be not disinclined - G.

*गमन करो तुम* - **पततम्।** पत्लृ गतौ।। alight - W. fly - G. descend - Satya.

**अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम्।**
**हंसाविव पततम् आ सुताँ उप।। २।।**

अश्विना। हरिणौऽइव। गौरौऽइव। अनु। यवसम्।
हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप।। २।।

*हे अश्वियो!, दो हिरनों की तरह,*
*दो गौरमृगों की तरह, चारे की ओर।*
*दो हंसों की तरह गमन करो इस ओर, सवन किये हुओं के पास।। २।।*

हे आत्मा और परमात्मा! तुम हमारे हृदयमन्दिर में इस प्रकार पधारो, जिस प्रकार दो हिरन अथवा दो गौरमृग चारे अथवा जौ के सस्य की ओर दौड़कर आते है। तुम हमारे मनमन्दिर में इस प्रकार आओ, जिस प्रकार दो हंस निर्मल जल के पान के लिये स्वच्छ सरोवर में उतरते हैं।

टि. *दो हिरनों की तरह* – **हरिणाविव**। like two deer - W. like a pair of deer - G.

*दो गौरमृगों की तरह* – **गौराविव**। गौरमृगाव् इव – सा.। यथा गौरौ मृगौ – दया.। like two wild cattle - W. Wild cattle : Gauras, or Boves Gauri - G.

*चारे की ओर* – **अनु यवसम्**। घासम् अनु – सा.। on fresh pasture - W. to the mead - G.

**अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां यज्ञम् इष्टये।**
**हंसाविव पततम् आ सुताँ उप॥ ३॥**

अश्विना। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू। जुषेथाम्। यज्ञम्। इष्टये।
हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप॥ ३॥

*हे अश्वियो!, हे ऐश्वर्यों से बसाने वालो!,*
*सेवन करो तुम यज्ञ का, अभीष्ट के लिये।*
*दो हंसों की तरह गमन करो इस ओर, सवन किये हुओं के पास॥ ३॥*

हे आत्मा और परमात्मा! हे ऐश्वर्य प्रदान करके हमें सुख से बसाने वालो! तुम हमारे कल्याण के लिये हमारे द्वारा समर्पित की हुई पूजा और नैवेद्य को स्वीकार करो। तुम हमारे द्वारा तैयार किये हुए भक्तिरस रूपी सोम का पान करने के लिये इस ओर इस प्रकार आओ, जिस प्रकार दो हंस निर्मल जल के पान के लिये स्वच्छ सरोवर की ओर गमन करते हैं।

टि. *हे ऐश्वर्यों से बसाने वालो* – **वाजिनीवसू**। अन्नार्थं वासयितारौ – सा.। affluent in food - W. rich in gifts - G.

*अभीष्ट के लिये* – **इष्टये**। अभीष्टायैषणाय वा – सा.। इष्टसुखप्राप्तये – दया.। at your pleasure - W. to prosper it - G.

**अत्रिर् यद् वाम् अवरोहन्नृबीसम् अजोहवीन् नाधमानेव योषा।**
**श्येनस्य चिज् जवसा नूतनेनागच्छतम् अश्विना शंतमेन॥ ४॥ १९॥**

अत्रिः। यत्। वाम्। अवऽरोहन्। ऋबीसम्। अजोहवीत्। नाधमानाऽइव। योषा।
श्येनस्य। चित्। जवसा। नूतनेन। आ। अगच्छतम्। अश्विना। शम्ऽतमेन॥ ४॥

*दोषभक्षक ज्ञानी जब तुम्हारा, उतरते हुए अन्धकारस्थान में,*
*आह्वान करता है, प्रार्थना करती हुई की तरह स्त्री की।*
*श्येन के ही वेग से, नवोत्पन्न से,*
*आ जाते हो तुम, हे अश्वियो!, अतिशय सुखदायक से॥ ४॥*

हे आत्मा और परमात्मा! जब सब दोषों को अपने अन्दर पचा डालने वाला तुम्हारा उपासक किसी अन्धकार के स्थान में उतर जाता है, किसी अज्ञान की परिस्थिति में घिर जाता है, और वह रक्षा के लिये अनुनय-विनय करने वाली किसी असहाय अबला स्त्री की तरह तुम्हें पुकारने लगता है, तो तुम उसकी सहायता के लिये श्येन पक्षी के अत्यन्त ताजा और अतिशय सुखद वेग के साथ आ जाते हो और उसे अज्ञान के अन्धकार से निकालकर ज्ञान में स्थापित कर देते हो।

टि. *दोषभक्षक ज्ञानी* – **अत्रिः**। ऋ. १.११२.७ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या।

उतरते हुए *अन्धकारस्थान में* - **अवरोहन् ऋबीसम्।** ऋ. १.११६.८ मन्त्रे टिप्पणी द्रष्टव्या। असुरैः क्षिप्यमाणः ऋबीसं प्रति अवरोहन् - वे.। तुषाग्निम् अग्निकुण्डे क्षिप्तः सन् अवरोहन् विमुञ्चन् - सा.। अंधेरे से पूर्ण जेल में उतरते समय - सात.। escaping by your aid from the fire of chaff - W. when descending to the cavern - G.

*प्रार्थना करती हुई की तरह स्त्री की* - **नाधमानेव योषा।** याचमानेव स्त्री परित्राणम् - वे.। याचमाना योषद् इव। सा यथा पतिं प्रीणयति। सा.। like a wife soliciting (the affection of a husband) - W. like a wailing woman - G.

*नवोत्पन्न से* - **नूतनेन।** नवतरेण - वे.। प्रथमोत्पन्नेन - सा.। with the new-born (rapidity) - W. with the freshest - G.

**वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्या इव।**
**श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम्।। ५।।**

वि। जिहीष्व। वनस्पते। योनिः। सूष्यन्त्याःऽइव।
श्रुतम्। मे। अश्विना। हवम्। सप्तऽवध्रिम्। च। मुञ्चतम्।। ५।।

*खुल जा तू, हे महावृक्ष (रूपी कारागार)!,*
*योनि, प्रसव करने वाली स्त्री की जिस प्रकार।*
*सुनो तुम मेरी, हे अश्वियो!, पुकार को,*
*और सात बन्धनों वाले को, मुक्त कर दो।। ५।।*

यह मानव शरीर एक महावृक्ष के समान है। जिस प्रकार वृक्ष कटते रहते हैं और पुनः उगते रहते हैं, उसी प्रकार ये शरीर भी नष्ट होते रहते हैं और पुनः जन्म लेते रहते हैं। इसलिये शरीर को यहाँ वनस्पति कहा गया है। इस शरीर रूपी कारागार के अन्दर जीवात्मा एक बन्दी के रूप में पड़ा हुआ है, इसलिये वह शरीर से याचना कर रहा है कि हे मेरे शरीर! तू अपने बन्धनों को इस प्रकार ढीला कर दे, जिस प्रकार शिशु को जन्म देने वाली स्त्री अपनी योनि को ढीला कर देती है। मैं तेरे इस कारागार से मुक्त हो जाना चाहता हूँ। और हे आत्मा और परमात्मा! तुम मेरी पुकार को सुनो। मैं जीवात्मा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध इन पाँच विषयों तथा अहंकार और महत् इन सात के बन्धनों से बँधा हुआ हूँ। तुम मुझे इन बन्धनों से मुक्त कर दो।

टि. *खुल जा तू* - **वि जिहीष्व।** ओहाङ् गताव् इत्यस्माद् जौहोत्यादेर् धातोर् मध्यमे लोटि रूपम् इदम्।। विगच्छ विवृता भव - वे.। सा.। त्यज - दया.। open - W. part asunder - G.

*हे महावृक्ष (रूपी कारागार)* - **वनस्पते।** वनस्पतिविकाररूपे पेटिके - वे.। सा.। वन के अधिपति पेड़ - सात.। Vanaspai - W. Tree - G.

*योनि, प्रसव करने वाली स्त्री की जिस प्रकार* - **योनिः सूष्यन्त्याः इव।** प्रसोष्यमाणायाः स्त्रियाः योनिः इव - वे.। प्रसवोन्मुख्याः स्त्रिया योनिर् इव - सा.। दया.। like the womb of a parturient female - W. like the side of her who bringeth forth a child - G.

*सात बन्धनों वाले को* - **सप्तवध्रिम्।** माम् ऋषिम् - वे.। सा.। हतसप्तेन्द्रियम् - दया.। पञ्च

तन्मात्रा, अहंकार और महत् इन सात बन्धनों में बँधे हुए मनुष्य को - सात.। आँख, नाक, मुख, कान इन सातों द्वारों को वश में करने वाले मुझको।. अथवा। आँख, नाक, कान, त्वचा, जिह्वा, वाणी और मन इन सात इन्द्रियों को वश में करने वाले विद्यार्थी को - जय.। seven impulses of seven organs (five sense organs, mind and intellect) - Satya.

**भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये।**
**मायाभिर् अश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः।। ६।।**

भीताय। नाधमानाय। ऋषये। सप्तऽवध्रये।
मायाभिः। अश्विना। युवम्। वृक्षम्। सम्। च। वि। च। अचथः।। ६।।

*डरे हुए के लिये, याचना करते हुए के लिये,*
*मन्त्रद्रष्टा के लिये, हत हुए सात अवयवों वाले के लिये।*
*सामर्थ्यों से (अपने), हे अश्वियो!, तुम दोनों,*
*वृक्ष (शरीररूपी) को, जोड़ते भी हो, तोड़ते भी हो।। ६।।*

हे मेरे आत्मा और परमात्मा! तुम उस वेदार्थवेत्ता ज्ञानी पुरुष के लिये, जिसकी पाँच ज्ञानेन्द्रियां, मन और बुद्धि - ये सात क्षीण होए हैं, जो संसार के भयों से डरा हुआ है और जो भयमुक्त होने के लिये तुम से प्रार्थना भी कर रहा है, इस शरीररूपी वृक्ष को तोड़ते भी हो और जोड़ते भी हो, अर्थात् उसके कर्मों के अनुसार उसे यह शरीर प्राप्त भी कराते हो और मोक्ष प्रदान करके उसे इससे मुक्त भी कर देते हो।

टि. - *हत हुए सात अवयवों वाले के लिये* - **सप्तवध्रये**। पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि मनो बुद्धिश् च सप्त हता यस्य तस्मै - दया.।

*सामर्थ्यों से* - **मायाभिः**। कर्मभिः - वे.। प्रज्ञाभिः - दया.। अपनी शक्तियों से - सात.। by your devices - W. with your magic powers - G.

*वृक्ष (शरीररूपी) को* - **वृक्षम्**। मञ्जूषां वृक्षकृताम् - वे.। वृक्षविकारां पेटिकाम् - सा.। यो वृश्च्यते तम् - दया.। the wicker-work - W. the tree - G.

*जोड़ते भी हो, तोड़ते भी हो* - **सम् च वि च अचथः**। वि घटयतं सं गमयतं च - वे.। सं चाचथः। मम निर्गमार्थं संगच्छथः। व्यचथश् च। विभक्तं कुरुथः। सा.। विदीर्ण कर दिया - सात.। sunder - W. rent up the tree and shattered it - G.

**यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः।**
**एवा ते गर्भ एजतु निरैतु दशमास्यः।। ७।।**

यथा। वातः। पुष्करिणीम्। सम्ऽइङ्गयति। सर्वतः।
एव। ते। गर्भः। एजतु। निःऽएतु। दशऽमास्यः।। ७।।

*जिस प्रकार वायु पुष्करिणी को,*
*स्पन्दित करता है सब ओर से।*
*उसी प्रकार तेरा गर्भ डोलता रहे,*

*बाहर आए, दश मास का (होकर)।। ७।।*

इस और इससे अगले दो मन्त्रों के समूह को सायण ने गर्भस्राविण्युपनिषद् के नाम से पुकारा है।

हे गर्भवती देवी! जिस प्रकार प्रातःकालीन शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु तालाब के जल को अथवा उसमें उगे हुए कमलों को स्पन्दित करता है, डोलाता है, उसी प्रकार तेरा गर्भ भी तेरे जठर में स्पन्दन करता रहे और वह दस मास में पूर्ण होकर ही बाहर आए।

''आचार्य 'वात' है, पोषक वाणी 'पुष्करिणी माता' है, गृहीत शिष्य 'गर्भ' है। दश मास तक पुष्ट बालकवत् दशों प्राणों में पूर्ण, सर्वाङ्ग बालक 'दयामास्य' है।'' जयदेव।

टि. *स्पन्दित करता है* - **समिङ्गयति**। सम्यक् चालयति - वे.। सा.। दया.।ruffles - G.

**यथा॒ वातो॑ यथा॒ वनं॒ यथा॑ समु॒द्र एज॑ति।**
**ए॒वा त्वं द॑शमास्य स॒हावे॑हि ज॒रायु॑णा।। ८।।**

यथा॑। वात॑ः। यथा॑। वन॑म्। यथा॑। स॒मु॒द्रः। एज॑ति।
ए॒व। त्वम्। द॒श॒ऽमा॒स्य॒। स॒ह। अव॑। इ॒हि॒। ज॒रायु॑णा।। ८।।

*जिस प्रकार वायु, जिस प्रकार वन,*
*जिस प्रकार समुद्र, कम्पन करता है।*
*उसी प्रकार तू, हे दश मास वाले!,*
*साथ,.नीचे गमन कर, जरायु के।। ८।।*

जिस प्रकार वायु स्वयं गति करता है, जिस प्रकार वायु से स्पन्दित होकर वन कम्पन करता है और जिस प्रकार वायु से स्पन्दित होकर समुद्र कम्पन करता है, उसी प्रकार हे दश मास पूरा कर लेने वाले गर्भ! तू भी पूर्णता प्राप्त करके जरायु के साथ बाहर आ जा।

''गर्भ में अपान का बल, जल तथा बालक होते हैं। उनके तीन उपमान हैं - वात, समुद्र और वन।'' जयदेव।

टि. *कम्पन करता है* - **एजति**। चलति - वे.। कम्पयति चलति चाल्यते वा - सा.। कम्पते चलति वा - दया.।are agitated - W. is set astir - G.

**दश॒ मासा॑ञ्छशया॒नः कु॑मा॒रो अधि॑ मा॒तरि॑।**
**नि॒रैतु॑ जी॒वो अक्ष॑तो जी॒वो जीव॑न्त्या॒ अधि॑।। ९।। २०।।**

दश॑। मासा॑न्। श॒श॒या॒नः। कु॒मा॒रः। अधि॑। मा॒तरि॑।
नि॒ःऽऐतु॑। जी॒वः। अक्ष॑तः। जी॒वः। जीव॑न्त्याः। अधि॑।। ९।।

*दश मासों तक शयन करता हुआ,*
*बालक माता के अन्दर।*
*निर्गमन करे जीवित, अक्षुण्ण,*
*जीवित, जीवित माता से।। ९।।*

दस मास तक बालक जननी के गर्भाशय में निवास करने के पश्चात् बिना किसी क्षति के जीवित अवस्था में जीवित माता के अन्दर से बाहर आए।

''अश्विदेव वैद्य हैं। वे इस सुखप्रसूति के कर्म में प्रवीण हैं। इसलिये उनके सूक्त में इन मन्त्रों को स्थान दिया गया है।'' सातवळेकर।

टि. *शयन करता हुआ* - शशयानः। उषित्वा - सा.। कृतशयनः - दया.। who has reposed - W. who hath been lying - G.

## सूक्त ७९

ऋषिः - सत्यश्रवा आत्रेयः। देवता - उषाः। छन्दः - पङ्क्तिः। दशर्चं सूक्तम्।

**म॒हे नो॑ अ॒द्य बो॑ध॒योषो॑ रा॒ये दि॒वित्म॑ती।**
**यथा॑ चिन् नो॒ अबो॑धयः स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते।। १।।**

म॒हे। न॒ः। अ॒द्य। बो॒ध॒य॒। उष॑ः। रा॒ये। दि॒वित्म॑ती।
यथा॑। चि॒त्। न॒ः। अबो॑धयः। स॒त्यऽश्र॑वसि। वा॒य्ये। सुऽजा॑ते। अश्व॑ऽसूनृते।। १।।

*महान् के लिये हमको, आज जागृत कर तू,*
*हे उषा!, धन के लिये, दीप्तियों वाली।*
*जिस प्रकार से ही, हमें जगाती रही तू,*
*सत्य के श्रवण वाले के निमित्त, गतिशील के निमित्त,*
*हे श्रेष्ठ प्रादुर्भाव वाली, हे व्यापक सच्ची-मीठी वाणी वाली।। १।।*

हे हृदयाकाश में उदित होने वाली, प्रथम ज्ञानरश्मियों को लाने वाली आभ्यन्तर उषा! तू ज्ञान की दीप्तियों वाली है। हे पावन प्रादुर्भाव वाली!, हे व्यापक सच्ची और मीठी वाणियों वाली!, जिस प्रकार तू अतीत में हमें सत्य के श्रवण वाले, अपने लक्ष्य की ओर बढ़ाने वाले गतिशील दिव्य धन के लिये जगाती रही है, हमें अपने कर्तव्य कर्म का बोध कराती रही है, उसी प्रकार आज भी हमें महान् आन्तरिक दिव्य धन के निमित्त जागरूक बना।

टि. *दीप्तियों वाली* - दिवित्मती। दीप्ता - वे.। दीप्तिमती - सा.। प्रकाशयुक्ता - दया.। bright-born - W. G.

*सत्य के श्रवण वाले के निमित्त* - सत्यश्रवसि। सत्यश्रवसि मयि - वे.। सा.। सत्यानां श्रवणे सत्ये ऽन्ने वा - दया.। to Satyaśravás - W. G.

*गतिशील के निमित्त* - वाय्ये। ऋ. १.५४.६ मन्त्रे वय्यशब्दे टिप्पणी द्रष्टव्या।। वय्यकुलजे - वे.। वय्यपुत्रे - सा.। तन्तुसदृशे सन्ताननीये विस्तारणीये सन्ततिरूपे - दया.। Vayya's son - W.

*हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली* - अश्वसूनृते। कल्याणनिर्गच्छच्छब्दे कल्याणाश्वे वा - वे.। अश्वार्था प्रियसत्यात्मिका स्तुतिवाग् यस्याः - सा.। अश्वा महती सूनृता प्रिया वाग् यस्यास् तत्सम्बद्धौ - दया.। praised sincerely for horses - W. delightful with steeds - G.

**या सु॑नी॒थे शौ॑चद्र॒थे व्यौच्छो॑ दुहितर् दिवः।**
**सा व्यु॑च्छ॒ सही॑यसि स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते।। २।।**

या। सु॒ऽनी॒थे। शौ॒च॒त्ऽर॒थे। वि। औच्छः॑। दु॒हि॒तः॒। दि॒वः॒।

सा। वि। उच्छ। सहीयसि। सत्यऽश्रवसि। वाय्ये। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। २।।

*जो (तू) सुन्दर नेतृत्व वाले पर, प्रकाशमान रथ वाले पर,*
*अज्ञानान्धकार को दूर करती रही है, हे दुहने वाली ज्ञानप्रकाश को।*
*वह (तू) अज्ञानान्धकार को दूर भगा, अत्यन्त विजयशील के निमित्त,*
*सत्य के श्रवण वाले के निमित्त, गतिशील के निमित्त,*
*हे शोभन प्रादुर्भाव वाली, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। २।।*

हे ज्ञान के प्रकाश को दुहने वाली, प्रथम ज्ञानरश्मियों को लाने वाली अध्यात्म उषा!, जो तू तेरे द्वारा प्रदान किये हुए उत्तम नेतृत्व के अनुसार सन्मार्ग पर चलने वाले और पवित्र इन्द्रिय, मन, प्राण आदि से युक्त तेजस्वी शरीर वाले उपासक के अज्ञान-अन्धकार को सदा से दूर करती आई है, इसलिये हे उत्तम प्रादुर्भाव वाली, हे व्यापक सच्ची मीठी वेदवाणी वाली! तू सत्य का श्रवण करने वाले और अपने लक्ष्य मोक्ष की ओर बढ़ने के लिये काम, क्रोध आदि कुवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने वाले इस अपने उपासक के भी अज्ञान-अन्धकार को दूर भगा दे।

टि. *सुन्दर नेतृत्व वाले पर* - **सुनीथे**। सुनीथे राजनि - वे.। एतन्नामके - सा.। शोभने न्याये - दया.। उत्तम वाणी युक्त और उत्तम न्यायाचरण वाले पर - जय.।

*प्रकाशमान रथ वाले पर* - **शौचद्रथे**। शुचद्रथपुत्रे - वे.। सा.। पवित्रे रथे - दया.।

*हे दुहने वाली ज्ञानप्रकाश को* - **दुहितः दिवः**। सूर्यस्य पुत्रि उषः - सा.। पुत्रीव सूर्यस्य - दया.। Daughter of heaven - W. G.

*वह (तू) अज्ञानान्धकार को दूर भगा* - **सा वि उच्छ**। तमो विवासय। उच्छी विवासे। विवासो वर्जनम्। सा.। dawn upn - W. G.

*अत्यन्त विजयशील के निमित्त* - **सहीयसि**। अत्यन्तं बलवति मयि - वे.। सा.। upon the powerful - W. on one mightier still - G.

**सा नो अद्याभरद्वसुर् व्युच्छा दुहितर् दिवः।**
**यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।। ३।।**

सा। नः। अद्य। आभरत्ऽवसुः। वि। उच्छ। दुहितः। दिवः।
यो इति। वि। औच्छः। सहीयसि। सत्यऽश्रवसि। वाय्ये। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। ३।।

*वह (तू) हमारे लिये, आज, वाससाधनों को लाने वाली,*
*विशेषेण तम को दूर भगा, हे दुहने वाली ज्ञानप्रकाश को।*
*जो तम को दूर भगाती रही है, अत्यन्त विजयशील के निमित्त,*
*सत्य के श्रवण वाले के निमित्त, गतिशील के निमित्त,*
*हे सुजाते!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। ३।।*

हे ज्ञान के प्रकाश को दुहने वाली, प्रथम ज्ञानरश्मियों को लाने वाली अध्यात्म उषा!, सुख के साधनों को हमारे लिये लाकर हमें बसाने वाली जो तू बीते काल में हम अत्यन्त विजयशीलों, सत्य के श्रवण वालों और गतिशीलों के निमित्त अज्ञान-अन्धकार को दूर भगाती रही है, हे उत्तम प्रादुर्भाव

वाली!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली!, अज्ञान-अन्धकार को उस प्रकार दूर करने वाली तू आज भी हमारे अज्ञान-अन्धकार को दूर कर दे।

टि. *वाससाधनों को लाने वाली* - **आभरद्वसुः**। आह्रियमाणधना - वे.। आभरद्वसुः आहृतधना - सा.। या समन्ताद् वसूनि बिभर्त्ति सा - दया.। who art the bringer of opulence - W. bringing treasure - G.

जो - **यो**। यैव - वे.। यो या। उकारो ऽनर्थकः। सा.। या - दया.।

**अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर् गृणन्ति वह्नयः।**
**मघैर् मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वसूनृते।। ४।।**

अभि। ये। त्वा। विभाऽवरि। स्तोमैः। गृणन्ति। वह्नयः।
मघैः। मघोनि। सुऽश्रियः। दामन्ऽवन्तः। सुऽरातयः। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। ४।।

*सब ओर से जो तेरी, हे दीप्तिमती!,*
*स्तोत्रों से स्तुति करते हैं, लाने वाले (हवियों के)।*
*धनों से हे धनवती!, सुन्दर ऐश्वर्यों वाले,*
*दानों वाले, उत्तम उपहारों वाले,*
*हे सुजाते!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। ४।।*

हे ज्ञानरश्मियों वाली आध्यात्मिक उषा! अपनी हवियां तुझे समर्पित करने वाले जो याजक, सुन्दर ऐश्वर्यों वाले, दानों वाले, उत्तम उपहारों वाले अपने स्तोत्रों के द्वारा सब ओर से तेरी स्तुति करते हैं, हे ज्ञान-प्रकाश के धनों से धनवती, हे उत्तम प्रादुर्भाव वाली, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणियों वाली उषा!, उनके अज्ञान-अन्धकार को तू दूर भगा दे।

टि. *हे दीप्तिमती* - **विभावरि**। प्रकाशोपेते। विभाशब्दाच् छन्दसीवनिपाव् इति वनिप्। भातेर् वा कर्तरि वनिप्। सा.। lustrous - W. Bright One - G.

*लाने वाले हवियों के* - **वह्नयः**। वोढारः - वे.। वोढार ऋत्विजः स्तोतारः - सा.। the offerers of oblations - W. the priests - G.

*सुन्दर ऐश्वर्यों वाली* - **सुश्रियः**। शोभनश्रीकाः - वे.। सुष्ठ्वर्थिभिर् आश्रयणीयाः - सा.। शोभना लक्ष्म्यो येषां ते - दया.। prosperous - W. splended with wealth - G.

*दानों वाले* - **दामन्वन्तः**। दानवन्तः - वे.। सा.। बहुदानक्रियायुक्ताः - दया.।

*उत्तम उपहारों वाले* - **सुरातयः**। शोभनज्ञातिकाः शोभनदानाः वा - वे.। रातिर् दानम्। सुदानाश् च भवन्ति। सा.। शोभना रातिर् दानेच्छा येषां ते - दया.।

**यच् चिद् धि ते गणा इमे छदयन्ति मघत्तये।**
**परि चिद् वष्टयो दधुर् ददतो राधो अह्रयं सुजाते अश्वसूनृते।। ५।। २१।।**

यत्। चित्। हि। ते। गणाः। इमे। छदयन्ति। मघत्तये।
परि। चित्। वष्टयः। दधुः। ददतः। राधः। अह्रयम्। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। ५।।

*जो कुछ भी निश्चय से तेरे गण,*

*ये, आच्छादित करते है, धनों के दान के लिये।*
*सब ओर से ही कामनाओं वाले, प्राप्त करते हैं (उनको),*
*देते हुए धनों को, बिना संकोच के,*
*हे सुजाते!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। ५।।*

हे उत्तम प्रादुर्भाव वाली!, हे सर्वत्र सच्चे और मीठे वचनों अर्थात् स्तुतियों को प्रेरित करने वाली अध्यात्म उषा!, तेरे उपासक जन निश्चय से जिन भी धनों को दूसरों को देने के लिये सँजोते हैं, उनका संग्रह करते हैं और दूसरों की सहायता के लिये बिना संकोच किये उन्हें प्रदान करते हैं, वे धन अभ्युदय और निःश्रेयस की कामना वाले उन दाताओं को ही इस जन्म अथवा दूसरे जन्म में फिर से सब ओर से प्राप्त हो जाते हैं। जो देता है, उसे मिलता है, जो नहीं देता उसे कुछ नहीं मिलता।

टि. *आच्छादित करते हैं* - **छदयन्ति**। छन्नं कुर्वन्ति - वे.। उपच्छन्दयन्ति - सा.। ऊर्जयन्ति - दया.। stand before thee - W. perform - G.

*धनों के दान के लिये* - **मघत्तये**। धनदानाय - वे.। दया.। धनदातये धनदानाय धनवत्त्वाय वा - सा.। to distribute wealth - W. to please thee or win them wealth - G.

*कामनाओं वाले* - **वष्टयः**। कामिनः - वे.। अस्मान् एव कामयमानाः - सा.। कामयमानाः - दया.। kindly intentions - W.

*सब ओर से प्राप्त करते हैं* - **परि दधुः**। परितः धारयन्ति - वे.। सा.। धरन्तु - दया.। entertain towards us - W. they gird us round - G.

*बिना संकोच के* - **अह्रयम्**। अलज्जम् - वे.। अह्रयम् अह्रियमाणम् अक्षीणम् अलज्जावहं वा - सा.। which ne'er are reft away - G.

**ऐषु धा वीरवद् यश उषो मघोनि सूरिषु।**
**ये नो राधांस्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते।। ६।।**

आ। एषु। धाः। वीरऽवत्। यशः। उषः। मघोनि। सूरिषु।
ये। नः। राधांसि। अह्रया। मघऽवानः। अरासत। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। ६।।

*सब ओर से इनमें स्थापित कर दे, वीरों से युक्त यश को,*
*हे उषा!, हे पवित्र धनों वाली!, विद्वान् जनों में।*
*जो हमें धनों को, क्षीण न होने वालों को,*
*धनों के स्वामी, प्रदान करते हैं,*
*हे सुजाते!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। ६।।*

हे श्रेष्ठ प्रादुर्भाव वाली! हे सर्वत्र सच्चे और मीठे वचनों को प्रेरित करने वाली!, हे पवित्र ज्ञान रूपी धनों वाली अध्यात्म उषा! ये पवित्र विद्या रूपी धनों वाले विद्वान् आचार्य जन, जो हमें विनाश न होने वाले उत्तम ज्ञान रूपी धनों को प्रदान करते हैं, इनको तू विद्वान् पुत्रों वाले यश में स्थापित कर दे। अर्थात् इन्हें उत्तम सन्तानें और यश प्रदान कर।

टि. *यश को* - **यशः**। अन्नम् - वे.। अन्नं यशो वा - सा.। कीर्तिम् - दया.। food and

posterity - W.

*विद्वान् जनों में* - **सूरिषु**। प्राज्ञेषु - वे.। सूरिषु स्तोतृषु वा - सा.। विद्वत्सु - दया.। upon these devout adorers - W. to these wealthy patrons - G.

*क्षीण न होने वालों को* - **अह्रया**। बहूनि - वे.। अक्षीणानि - सा.। अलज्जया प्रतिपादितानि - दया.। without stint - W. never to be reft away - G.

*प्रदान करते हैं* - **अरासत**। प्रयच्छन्ति - वे.। ददुः - सा.।

**तेभ्यो द्युम्नं बृहद् यश उषो मघोन्या वह।**
**ये नो राधांस्यश्व्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते।। ७।।**

तेभ्यः। द्युम्नम्। बृहत्। यशः। उषः। मघोनि। आ। वह।
ये। नः। राधांसि। अश्व्या। गव्या। भजन्त। सूरयः। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। ६।।

*उनके लिये प्रकाशमान को, महान् यश को,*
*हे उषा!, हे धनों वाली!, ला तू।*
*जो हमें धनों को, अश्वों वालों को,*
*गौओं वालों को, प्रदान करते हैं, विद्वज्जन,*
*हे सुजाते!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। ७।।*

हे उत्तम धनों वाली!, हे श्रेष्ठ प्रादुर्भाव वाली!, हे सब ओर सच्चे और मीठे वचनों को प्रेरित करने वाली, प्रथम ज्ञानरश्मियों को लाने वाली अध्यात्म उषा!, जो ज्ञानी जन हमें उत्तम बलों वाले और उत्तम ज्ञानों वाले धन वितरित करते हैं, तू उन्हें ज्ञान से युक्त महान् यश प्रदान कर।

टि. *प्रकाशमान को* - **द्युम्नम्**। द्योतमानम् - वे.। द्योतमानं हिरण्यादिरूपम् - सा.।

*प्रदान करते हैं* - **भजन्त**। प्रापयन्ति - वे.। भजेरन् ददुः - सा.। सेवन्ते - दया.।

**उत नो गोमतीर् इष आ वहा दुहितर् दिवः।**
**साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचद्भिर् अर्चिभिः**
**सुजाते अश्वसूनृते।। ८।।**

उत। नः। गोऽमतीः। इषः। आ। वह। दुहितः। दिवः।
साकम्। सूर्यस्य। रश्मिऽभिः। शुक्रैः। शोचत्ऽभिः। अर्चिऽभिः। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। ८।।

*और हमारे लिये, ज्ञान वाली प्रेरणाओं को,*
*ला तू, हे दोहन करने वाली ज्ञानप्रकाश का।*
*साथ सूर्य की रश्मियों के, पवित्रों के,*
*(साथ) प्रकाशमानों के, अग्निज्वालाओं के,*
*हे सुजाते, हे व्यापक सच्ची और मीठी वाणी वाली।। ८।।*

और हे श्रेष्ठ प्रादुर्भाव वाली!, हे सब ओर सच्ची और मीठी वाणियों को प्रेरित करने वाली!, हे ज्ञानप्रकाश का दोहन करने वाली अध्यात्म उषा! तू हमें पवित्रकारक ज्ञान रूपी सूर्य की रश्मियों और प्रकाशमान आभ्यन्तर यज्ञाग्नि की ज्वालाओं के साथ ज्ञान से युक्त प्रेरणाएं प्रदान कर।

टि. *ज्ञान वाली प्रेरणाओं को* – **गोमतीः इषः**। गोभिर् उपेतान्यन्नानि – सा.। गावो विद्यन्ते यासु ता अन्नाद्याः – दया.। food and cattle - W. subsistence in our herds of kine - G.

**व्युच्छा दुहितर् दिवो मा चिरं तनुथा अपः।**
**नेत् त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते।। ९।।**

वि। उच्छ। दुहितः। दिवः। मा। चिरम्। तनुथाः। अपः।
न। इत्। त्वा। स्तेनम्। यथा। रिपुम्। तपाति। सूरः। अर्चिषा। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। ९।।

*अन्धकार को दूर भगा, हे दोहन करने वाली प्रकाश का!,*
*मत देर तक फैला, कर्म को (हमारे)।*
*न ही तुझको, शैतान को जिस प्रकार पाप से लिप्त को,*
*तप्त करे सूर्य, ज्वाला से (अपनी),*
*हे सुजाते!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। ९।।*

हे ज्ञान के प्रकाश का दोहन करने वाली आन्तरिक उषा! तू हमारे अज्ञान-अन्धकार को दूर भगा दे। तू हमारे इस कार्य को सम्पन्न करने में अधिक देर मत लगा। हे उत्तम प्रादुर्भाव वाली!, हे सब ओर सच्ची और मीठी वाणियों को प्रेरित करने वाली, तू जल्दी कर। तू सुखद और आह्लादक ज्ञानरश्मियों वाली है। अभी ज्ञान के सूर्य का उदय होने वाला है। कहीं ऐसा न हो कि तीक्ष्ण ज्ञान रश्मियों वाला यह सूर्य तुझ सुकुमार ज्ञानरश्मियों वाली को अपने ताप से इस प्रकार सन्तप्त कर दे, जिस प्रकार राजा किसी पाप से लिप्त धूर्त जन को सन्तप्त करता है।

टि. *मत देर तक फैला कर्म को* – **मा चिरं तनुथाः अपः**। मा चिरं कुरु उदयलक्षणं कर्म। शीघ्रं व्युच्छेत्यर्थः। वे.। अस्मदीयं कर्म प्रति चिरं विलम्बं मा तनुथाः – सा.। मा चिरं विस्तारयेः कर्म – दया.। delay not our (sacred) rite - W. delay not to perform thy task - G.

*शैतान को जिस प्रकार पाप से लिप्त को* – **स्तेनं यथा रिपुम्**। यथा स्तेनं रिपुं च – वे.। रिपुं स्तेनं यथा सन्तापयति राजादिः – सा.। चोरं यथा शत्रुम् – दया.। like a robber foe - G.

**एतावद् वेद् उषस् त्वं भूयो वा दातुम् अर्हसि।**
**या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते।। १०।। २२।।**

एतावत्। वा। इत्। उषः। त्वम्। भूयः। वा। दातुम्। अर्हसि।
या। स्तोतृऽभ्यः। विभाऽवरि। उच्छन्ती। न। प्रऽमीयसे। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते।। १०।।

*इतना भी, हे उषा!, तू,*
*और अधिक भी, देने में समर्थ है।*
*जो स्तोताओं के लिये, हे विशिष्ट दीप्तिमती!,*
*अन्धकार को दूर करती है, (पर) नहीं हिंसित करती है,*
*हे सुजाते!, हे व्यापक सच्ची मीठी वाणी वाली।। १०।।*

हे प्रथम ज्ञानरश्मियों को लाने वाली आभ्यन्तर उषा! जितना हमने तुझसे मांगा है, केवल उतना ही नहीं, तू तो उससे भी अधिक देने में समर्थ है। हे विशिष्ट ज्ञानदीप्तियों वाली!, हे श्रेष्ठ प्रादुर्भाव

वाली! हे सब ओर सच्ची और मीठी वाणियों को प्रेरित करने वाली! तू अपने स्तोताओं के अज्ञान के अन्धकार को तो दूर करती है, पर उन्हें कभी किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचाती।

टि. *नहीं हिंसित करती है* – न **प्रमीयसे**। न शत्रुभिः हिंस्यसे – वे.। न हंसि। न क्रुध्यसीत्यर्थः। मीञ् हिंसायाम् इत्यस्मात् श्नास्थाने व्यत्ययेन श्यन्। सा.। म्रियसे – दया.। thou art never cruel (to them) - W. ceasest not to shine for them - G.

## सूक्त ८०

ऋषिः – सत्यश्रवाः। देवता – उषाः। छन्दः – त्रिष्टुप्। षड्‌ऋचं सूक्तम्।

**द्युतद्या॑मानं बृ॒हती॑म् ऋ॒तेन॑ ऋ॒ताव॑रीम् अ॒रुण॑प्सुं वि॒भा॒तीम्।**
**दे॒वीम् उ॒षस॑म् स्व॑र् आ॒वह॑न्तीं॒ प्रति॒ विप्रा॑सो म॒तिभि॑र् जरन्ते।। १।।**

द्युतत्ऽया॑मानम्। बृ॒हतीम्। ऋ॒तेन॑। ऋ॒तऽव॑रीम्। अ॒रु॒णऽप्सुम्। वि॒ऽभा॒तीम्।
दे॒वीम्। उ॒षस॑म्। स्वः॑। आ॒ऽवह॑न्तीम्। प्रति॑। विप्रा॑सः। म॒तिऽभिः॑। ज॒रन्ते॒।। १।।

*प्रकाशमान मार्ग वाली के, महान् के, सत्यनियम के द्वारा*
*सत्यनियम की पालिका के, अरुणरूपा के, प्रकाशमाना के।*
*दिव्यता वाली के, उषा के, सुख को इस ओर लाने वाली के*
*प्रति, उपासक जन चिन्तनों के साथ, स्तुतिगान करते हैं।। १।।*

आत्मचिन्तन करने वाले उपासक जन प्रकाशमान मार्ग वाली, अतिशय वृद्धि को प्राप्त, सत्यनियम का आचरण करने से सत्यनियम का पालन करने वाली, आकर्षक स्वरूप वाली, अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाली, दिव्य गुणों वाली, सुखों और आनन्दों को इस ओर लाने वाली अध्यात्म उषा के प्रति अपने चिन्तन-मनन के द्वारा स्तुतिगान करते हैं।

टि. *प्रकाशमान मार्ग वाली के (प्रति)* – **द्युतद्यामानम् (प्रति)**। दीप्तगमनां प्रति – वे.। दीप्तरथाम् – सा.। प्रहरान् द्योतयन्तीम् – दया.। bright-charioted - W. bright on her path - G.

*अरुणरूपा के (प्रति)* – **अरुणप्सुम् (प्रति)**। अरुणरूपां प्रति – वे.। अरुणरूपाम् – सा.। प्सु इति रूपनाम (निघ. ३.७)। दया.। purple-tinted - W. red-tinted - G.

*सुख को लाने वाली के प्रति* – **स्वः आवहन्तीं प्रति**। कल्याणम् आवहन्तीं प्रति – वे.। सूर्यं गच्छन्तीम् – सा.। आदित्यम् इव विद्याप्रकाशम् प्रापयन्तीम् – दया.। leading on the sun - W. who bringeth in the sunlight - G.

*स्तुतिगान करते हैं* – **जरन्ते**। स्तुवन्ति – वे.। दया.। प्रति जरन्ते स्तुवन्ति – सा.। celebrate - W. welcome - G.

**ए॒षा जन॑ं द॒र्श॒ता बो॒धय॑न्ती सु॒गान् प॒थः कृ॑ण्व॒ती या॒त्यग्रे॑।**
**बृ॒ह॒द्र॒था बृ॑ह॒ती वि॑श्वमि॒न्वोषा॒ ज्योति॑र् यच्छ॒त्यग्रे॒ अह्ना॑म्।। २।।**

ए॒षा। जन॑म्। द॒र्श॒ता। बो॒धय॑न्ती। सु॒ऽगान्। प॒थः। कृ॒ण्व॒ती। या॒ति॒। अग्रे॑।
बृ॒ह॒त्ऽर॒था। बृ॒ह॒ती। वि॒श्व॒म्ऽइ॒न्वा। उ॒षाः। ज्योतिः॑। य॒च्छ॒ति॒। अग्रे॑। अह्ना॑म्।। २।।

*यह जनों को, दर्शनीया, जगाती हुई,*
*सुगम, मार्गों को बनाती हुई, जाती है आगे-आगे।*
*महान् रथ वाली, विस्तृता, सब में व्याप्त,*
*उषा ज्योति प्रदान करती है, पहले दिनों के।। २।।*

सब के द्वारा दर्शन के योग्य यह अध्यात्म उषा अज्ञानी जनों को अज्ञान की निद्रा से जगाती हुई और निश्श्रेयस के मार्ग को अपने ज्ञानप्रकाश से सुगम बनाती हुई आगे-आगे चलती है। महान् विस्तार वाली होने से मानों यह विशाल रथ पर आरोहण करके गमन करती है। यह सर्वत्र सब में व्याप्त है। यह ज्ञान रूपी दिवसों के उदय से पूर्व ज्ञान की प्रथम ज्योति को, प्रथम ज्ञानरश्मि को, प्रदान करती है।

टि. *सब में व्याप्त* - **विश्वमिन्वा।** सर्वव्यापिनी - वे.। विश्वं व्याप्नुवाना - सा.। या विश्वं सर्वं जगन् मिनोति - दया.। expanding everywhere - W. all-impelling - G.

*ज्योति प्रदान करती है* - **ज्योतिः यच्छति।** ज्योतिः नियच्छति - वे.। तेजो यच्छति - सा.। प्रकाशं ददाति - दया.। diffuses light - W. gives her splendour - G.

**एषा गोभि॑र् अरु॒णेभि॑र् युजा॒नास्रे॑धन्ती र॒यिम् अप्रा॑यु चक्रे।**
**प॒थो रद॑न्ती सुवि॒ताय॑ दे॒वी पु॑रुष्टु॒ता वि॒श्ववा॑रा॒ वि भा॑ति।। ३।।**

एषा। गोभि॑ः। अ॒रु॒णेभि॑ः। यु॒जा॒ना। अस्रे॑धन्ती। र॒यिम्। अप्र॑ऽआयु। च॒क्रे।
प॒थः। रद॑न्ती। सु॒वि॒ताय॑। दे॒वी। पु॒रु॒ऽस्तु॒ता। वि॒श्वऽवा॑रा। वि। भा॒ति।। ३।।

*यह रश्मियों से, रक्त वर्ण वालियों से, युक्त होती हुई,*
*क्षीण न होती हुई (स्वयं), धन को अविचल बनाती है।*
*मार्गों को कुरेदती हुई, सुख से गमन के लिये, प्रकाशमाना,*
*बहुतों से स्तुति की हुई, सब से वरणीय, खूब चमकती है।। ३।।*

यह आभ्यन्तर उषा मनोहर ज्ञानरश्मियों से युक्त है। यह कभी विनाश को प्राप्त नहीं होती। यह उपासकों के अलौकिक अध्यात्म धन को अविचल बना देती है। यह ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशमान, स्वयं बार-बार सत्यनियम के मार्ग पर चलने से उसे विस्तृत करती हुई उपासक जनों के लिये सुख से गमन के योग्य बना देती है। यह असंख्य उपासक जनों से स्तुति की जाती है। सब इसका वरण करना चाहते हैं। यह अपनी ज्ञानरश्मियों से खूब प्रकाशित होती है।

टि. *रश्मियों से युक्त होती हुई* - **गोभिः युजाना।** बलीवर्दै रथं योजयन्ती - सा.। किरणैः युक्ता - दया.। harnessing the purple oxen to her car - W. G.

*क्षीण न होती हुई* - **अस्रेधन्ती।** अक्षीयमाणा - वे.। अशुष्यन्त्यक्षीणा वा - सा.। unwearied - W. injuring none - G.

*अविचल बनाती है* - **अप्रायु चक्रे।** अप्रगमनस्वभावं करोति - वे.। अगन्तृ अविचलितं करोति - सा.। यन् न प्रैति नश्यति तत् करोति - दया.। renders perpetual - W. G.

*मार्गों को कुरेदती हुई* - **पथः रदन्ती।** मार्गान् तेजसा विलिखन्ती - वे.। मार्गान् प्रकाशयन्ती -

सा.। मार्गान् लिखन्ती – दया.। manifesting the paths - W. opening paths - G.

**एषा व्येनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात्।**
**ऋतस्य पन्थाम् अन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति।। ४।।**

एषा। विऽएनी। भवति। द्विऽबर्हाः। आविःऽकृण्वाना। तन्वम्। पुरस्तात्।
ऋतस्य। पन्थाम्। अनु। एति। साधु। प्रजानतीऽइव। न। दिशः। मिनाति।। ४।।

*यह अत्यन्त श्वेतवर्ण वाली है, दोनों स्थानों में बढ़ी हुई,*
*प्रकट करती हुई शरीर को (अपने), सामने की ओर।*
*सत्यनियम के मार्ग का, अनुसरण करती है, ठीक से,*
*सुविज्ञ (स्त्री) की तरह, नहीं दिशाओं को हिंसित करती है।। ४।।*

यह अध्यात्म उषा अत्यन्त पावन स्वरूप वाली है। यह इहलोक और परलोक दोनों में अपने विस्तार को बनाए हुए है। यह अपने उपासकों के सामने अपने स्वरूप को प्रकट करती है। यह ऋत के मार्ग का सम्यक् रूप से अनुसरण करती है, उसका कभी उल्लंघन नहीं करती। एक चतुर ज्ञानवती स्त्री की तरह यह सभी दिशाओं को अज्ञान के अन्धकार से लिप्त नहीं होने देती, अपितु उनको अपने ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करती रहती है।

टि. *अत्यन्त श्वेतवर्ण वाली* – **विऽएनी।** अत्यन्तं श्वेतवर्णा – वे.। विशेषेण श्वेता – वे.। या विशिष्टमृगीवद् वेगवती – दया.। lucidly white - W. with changing tints - G.

*दोनों स्थानों में बढ़ी हुई* – **द्विबर्हाः।** द्वयोः स्थानयोः परिवृढा – वे.। द्वयोः प्रथममध्यमयोः परिवृढा – सा.। या द्वाभ्यां रात्रिदिनाभ्यां बृंहयति वर्धयति – दया.। occupying the two (regions, the upper and middle firmament) - W. in double splendour - G.

*सुविज्ञ (स्त्री) की तरह* – **प्रजानतीव।** प्राग् एवावगच्छन्ती – वे.। विश्वं प्रज्ञापयन्ती। इवेति सम्प्रत्यर्थे। सा.। as if knowing (his course) - W. as one who knows - G.

*नहीं दिशाओं को हिंसित करती है* – **न दिशः मिनाति।** दिशः न हिनस्ति – वे.। न हिनस्ति। प्रत्युत दिशः प्रकाशयति। सा.। nor fails to reach the quarters - G.

**एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात्।**
**अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्।। ५।।**

एषा। शुभ्रा। न। तन्वः। विदाना। ऊर्ध्वाऽइव। स्नाती। दृशये। नः। अस्थात्।
अप। द्वेषः। बाधमाना। तमांसि। उषाः। दिवः। दुहिता। ज्योतिषा। आ। अगात्।। ५।।

*यह (उषा) गौरवर्णा (स्त्री) की तरह, अंगों को प्रदर्शित करती हुई,*
*ऊपर की ओर मानो, स्नान करती हुई, दिखाने को हमें, उठती है।*
*परे द्वेष की भावनाओं को हटाती हुई, अन्धकारों को (भी), उषा,*
*प्रकाश का दोहन करने वाली, ज्योति के साथ आ रही है।। ५।।*

जिस प्रकार कोई गौर वर्ण वाली स्त्री स्नान करने के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करके अपने सौन्दर्य के प्रदर्शन के लिये खड़ी होती है और उसके अङ्ग हमें सहज रूप से अति सुन्दर दिखाई

देते हैं, उसी प्रकार जब इस प्रथम ज्ञानरश्मि रूपी उषा का हृदय में आविर्भाव होता है, तो इसका सौन्दर्य देखते ही बनता है। ज्ञान रूपी प्रकाश का दोहन करने वाली यह अध्यात्म उषा द्वेष की भावनाओं और अज्ञान के अन्धकारों को दूर भगाती हुई हमारे अन्तस्तल में अपने ज्ञान के प्रकाश के साथ आगमन करती है।

टि. *गौरवर्णा (स्त्री) की तरह* - **शुभ्रा न**। शोभमाना अलङ्कृतेव स्त्री - वे.। शुभ्रवर्णा निर्मला स्वलङ्कृता योषिद् इव - सा.। श्वेतवर्णा इव - दया.। like a well-attired female - W.

*अंगों को प्रदर्शित करती हुई* - **तन्वः विदाना**। शरीराणि ज्ञापयन्ती - वे.। दया.। अङ्गानि प्रज्ञापयन्ती - सा.। exhibiting her person - W.

*स्नान करती हुई* - **स्नाती**। स्नानं कुर्वाणा - वे.। सा.। शुद्धा - दया.। with bathing - G.

*परे द्वेष की भावनाओं को हटाती हुई, अन्धकारों को (भी)* - **अप द्वेषः बाधमाना तमांसि**। शत्रून् बाधमाना तमांसि (ज्योतिषा अप गमयति) - वे.। द्वेषो द्वेष्याणि तमांस्यप बाधमाना - सा.। द्वेष्टॄन् निवारयन्ती तमांसि [च] - दया.। dispersing the hostile glooms - W. drawing away malignity and darkness - G.

**एषा प्र॑तीची दु॑हिता दि॒वो नॄन् योषे॑व भ॒द्रा नि रि॑णीते अप्सः॑।**
**व्यू॒र्ण्व॒ती दा॒शुषे॒ वार्या॑णि पुन॒र् ज्योति॑र् युव॒तिः पू॒र्वथा॑ ऽकः।। ६।। २३।।**

एषा। प्र॒ती॒ची। दु॒हि॒ता। दि॒वः। नॄन्। योषा॑ऽइव। भ॒द्रा। नि। रि॒णी॒ते॒। अप्सः॑।
वि॒ऽऊ॒र्ण्व॒ती। दा॒शुषे॑। वार्या॑णि। पुन॑रिति॑। ज्योति॑ः। यु॒व॒तिः। पू॒र्वऽथा॑। अ॒क॒र् इत्य॑कः।। ६।।

*यह अभिमुख आती हुई, दोहन करने वाली प्रकाश का, मनुष्यों के,*
*स्त्री की तरह कल्याणी की, भली प्रकार प्रकट करती है रूप को।*
*उद्घाटित करती हुई, हविदाता के लिये वरणीय धनों को,*
*फिर से ज्योति को नित्ययौवना, पहले की तरह ला देती है।। ६।।*

ज्ञान के प्रकाश का दोहन करने वाली यह आन्तरिक उषा अपने उपासक जनों के पास आती है। सच्चरिता सुन्दर स्त्री की तरह यह अपने विविध पावन रूपों को प्रकट करती है। यह हवियां प्रदान करने वाले अपने उपासक को उसके द्वारा वरण के योग्य लौकिक और अलौकिक धन प्रदान करती है। कभी भी जरा को प्राप्त न होने वाली यह नित्ययौवना आभ्यन्तर उषा पूर्व काल की तरह पुनः पुनः अपने भक्तों को ज्ञान की ज्योति प्रदान करती रहती है।

टि. *अभिमुख आती हुई* - **प्रतीची**। अभिमुखा - वे.। सा.। पश्चिमदिशां प्राप्ता - दया.। tending to the west - W. opposite to (men) - G.

*कल्याणी* - **भद्रा**। भजनीया - वे.। कल्याणवेषा - सा.। कल्याणकारिणी - दया.। a (well-dressed) woman - W. chaste woman - G.

*प्रकट करती है रूप को* - **नि रिणीते अप्सः**। निर्गमयति रूपम् - वे.। प्रेरयति - सा.। गच्छति - दया.। puts forth her beauty - W. bends her forehead forward - G.

*उद्घाटित करती हुई* - **विऽऊर्ण्वती**। प्रकाशयन्ती - वे.। प्रयच्छन्ती - सा.। विशेषेण

आच्छादयन्ती - दया.। bestowing - W. disclosing -G.

## सूक्त ८१

ऋषिः - श्यावाश्व आत्रेयः। देवता - सविता। छन्दः - जगती। पञ्चर्चं सूक्तम्।

**युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।**
**वि होत्रा दधे वयुनाविद् एक इन् मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः।। १।।**

युञ्जते। मनः। उत। युञ्जते। धियः। विप्राः। विप्रस्य। बृहतः। विपःऽचितः।
वि। होत्राः। दधे। वयुनऽवित्। एकः। इत्। मही। देवस्य। सवितुः। परिऽस्तुतिः।। १।।

*जोड़ते हैं मन को, और जोड़ते हैं बुद्धियों को,*
*योगी जन सर्वव्यापक में, महान् (और) सर्वज्ञ में।*
*विविधतया श्रेष्ठकर्मों को धारण करता है नियमवित्, अकेला ही,*
*महान् (है) प्रकाशमान की, सर्वप्रेरक की, महिमा।। १।।*

योगी लोग अपने मन को और अपनी बुद्धियों को सर्वव्यापक, महान् और सर्वज्ञ परमेश्वर में लगाते हैं। सर्वोत्पादक और सर्वप्रेरक वह प्रभु सभी विधि-विधानों, कर्मों और मार्गों को जानने वाला है, इसलिये वह यज्ञ आदि सभी शुभ कर्मों को अनेक प्रकार से धारण करता है और उपासकों का मार्गदर्शन करता है। उस प्रकाशमान और सर्वप्रेरक परमेश्वर की महिमा महान् है।

टि. *सर्वव्यापक में* - **विप्रस्य।** मेधाविनः - सा.। विशेषेण प्राति व्याप्नोति तस्य - दया.। of the intelligent - W. of him the lofty priest - G. omnipresent - Satya.

*सर्वज्ञ में* - **विपश्चितः।** स्तोत्रविदः - वे.। विपश्चितः स्तुत्यस्य ज्ञानवतो वा - सा.। अनन्तविद्यस्य - दया.। of him well-skilled in hymns - G. omniscient - Satya.

*श्रेष्ठ कर्मों को धारण करता है* - **वि होत्राः दधे।** वि दधे सप्त होत्राः - वे.। सप्त होत्रकाणाम् उचिताः क्रियाः करोति - सा.। directs the priests - W. assigns their priestly tasks - G. assigns the sense organs their respective tasks - Satya. he who ordains the invocations of the gods - Fra.

*नियमवित्* - **वयुनावित्।** मार्गवित् - वे.। वयुनम् इति प्रज्ञानाम। तत्तदनुष्ठानविषयप्रज्ञावेत्ता - सा.। यो वयुनानि प्रज्ञानानि वेत्ति - दया.। knowing their functions - W. knowing works - G. knowing their ways - Fra.

**विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे।**
**वि नाकम् अख्यत् सविता वरेण्यो ऽनु प्रयाणम् उषसो वि राजति।। २।।**

विश्वा। रूपाणि। प्रति। मुञ्चते। कविः। प्र। असावीत्। भद्रम्। द्विऽपदे। चतुःऽपदे।
वि। नाकम्। अख्यत्। सविता। वरेण्यः। अनु। प्रऽयानम्। उषसः। वि। राजति।। २।।

*सब रूपों को धारण कर रहा है, क्रान्तदर्शी,*
*उत्पन्न करता है कल्याण को, दोपायों के लिये, चोपायों के लिये।*

*विशेषेण सुखलोक को प्रकाशित करता है, सविता वरण के योग्य,*
*पश्चात् आगमन के उषा के, विशेष रूप से प्रकाशित होता है वह।। २।।*

तीनों कालों और तीनों लोकों के आर-पार देखने वाला वह सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर सब रूपों को धारण कर रहा है, अर्थात् सब रूप उसी के हैं, अथवा सब रूपवान् पदार्थों को वही धारण कर रहा है। वह मनुष्य आदि दोपायों और पशु आदि चोपायों के कल्याण और सुख के लिये सब साधनों को उत्पन्न करता है। वरण के योग्य वह सर्वप्रेरक परमेश्वर दुःखों से रहित और सुखों से युक्त स्थान को अपने प्रकाश से प्रकाशित कर रहा है। जब साधक के अन्दर प्रथम ज्ञान रूपी उषा का उदय हो जाता है, तत्पश्चात् ही हृदयाकाश में उस प्रभु का दर्शन होता है।

टि. *धारण कर रहा है* – **प्रति मुञ्चते।** आत्मनि बध्नाति धारयति – सा.। comprehends - W. arrays himself (in every form) - G. He puts on every form - Fra.

*उत्पन्न करता है* – **प्र असावीत्।** प्र सौति – वे.। अनुजानाति – सा.। उत्पादयति – दया.। has engendered - W. Fra. he hath brought forth - G.

*विशेषेण सुखलोक को प्रकाशित करता है* – **वि नाकम् अख्यत्।** ख्यापयति प्रकाशयति नाकम्। नास्मिन्नकं दुःखम् अस्तीति नाकः स्वर्गः। सा.। अविद्यमानदुःखं प्रकाशयति – दया.। has illumed the heaven - W. hath looked on the heaven's high vault - G. Fra.

*पश्चात् आगमन के, उषा के* – **अनु प्रयाणम् उषसः।** उषसि गतायाम् – वे.। उषस उदयम् अनु – सा.। in sequence to the passage of the Dawn - W. shines after the outgoing of the Dawn - G. According to his advent the Dawns shine refulgent - Fra.

**यस्य॑ प्र॒याण॒म् अन्व॒न्य इद् य॒युर् दे॒वा दे॒वस्य॑ महि॒मान॒म् ओज॑सा।**
**यः पार्थि॑वानि विम॒मे स एत॑शो॒ रजां॑सि दे॒वः स॑वि॒ता म॑हित्व॒ना।। ३।।**

यस्य॑। प्र॒ऽयान॑म्। अनु॑। अ॒न्ये। इत्। य॒युः। दे॒वाः। दे॒वस्य॑। म॒हि॒मान॑म्। ओज॑सा।
यः। पार्थि॑वानि। वि॒ऽम॒मे। सः। एत॑शः। रजां॑सि। दे॒वः। स॒वि॒ता। म॒हि॒ऽत्व॒ना।। ३।।

*जिसके गमन के पीछे, अन्य (देव) गमन करते हैं,*
*देव, देव की महिमा को (प्राप्त करते हैं), बल से।*
*जो पृथिवी आदियों को निर्मित करता है, वह प्रकाशस्वरूप,*
*लोकों को, देव सविता, माहात्म्य से (अपने) ।। ३।।*

अग्नि आदि सब देव उस सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर की गतिमत्ता से ही गति प्राप्त करते हैं। सब देव उसकी शक्ति से ही गतिमान् होते हैं। सब देव अपनी शक्ति से उसकी महिमा को ही प्राप्त करते हैं। वह प्रकाशस्वरूप, निष्पाप, पवित्र, देवों का देव परमेश्वर अपने माहात्म्य से ही पृथिवी आदि लोकों का निर्माण करता है। वही सब के द्वारा पूजा के योग्य है।

टि. *पृथिवी आदियों को* – **पार्थिवानि।** पार्थिवान् लोकान् – वे.। पृथिव्यादिलोकान् – सा.। अन्तरिक्षे विदितानि कार्याणि। पृथिवीत्यन्तरिक्षनाम (निघ. १.३)। दया.। the terrestrial regions - W. G. the material realms - Fra.

*निर्मित करता है* - **विममे।** निर्ममे - वे.। विममे परिच्छिनत्ति - सा.। विशेषेण मिमीते विधत्ते - दया.। has measured out - W. G. Fra.

*प्रकाशस्वरूप* - **एतशः।** श्वेतवर्णः - वे.। एतश एतवर्णः शुभ्रः शोभमानः सन्। राजत इति शेषः। सा.। सर्वत्र प्राप्तः - दया.। तेजस्वी - सात.। respllendent - W. the Courser - G. the variegated Sun horse - Fra.

**उत यासि सवितस् त्रीणि रोचनोत सूर्यस्य रश्मिभिः सम् उच्यसि।**
**उत रात्रीम् उभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः।। ४।।**

उत। यासि। सवितर् इति। त्रीणि। रोचना। उत। सूर्यस्य। रश्मिऽभिः। सम्। उच्यसि।
उत। रात्रीम्। उभयतः। परि। ईयसे। उत। मित्रः। भवसि। देव। धर्मऽभिः।। ४।।

*और व्याप्त करता है तू, हे सर्वप्रेरक!, तीनों ज्योतिःपुञ्जों को,*
*और सूर्य की रश्मियों के द्वारा, सम्यक् बखान किया जाता है तू।*
*और रात्रि को, दोनों ओर से घेर रहा है तू, (सभी कालों में),*
*और मित्र हो जाता है तू, हे देव!, धारक नियमों से (अपने)।। ४।।*

हे सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर! तू अग्नि, विद्युत् और सूर्य - इन तीनों ज्योतिःपुञ्जों में व्याप्त है। सूर्य की रश्मियां तेरी महिमा का ही बखान कर रही हैं। तू रात्रि को, ब्रह्मरात्रि को और अज्ञान-अन्धकार की रात्रि को दोनों ओर से घेर रहा है। तू सब ओर से घेरकर, तम और अज्ञान को नष्ट करके इन्हें अपने प्रकाश और ज्ञान से प्रकाशित कर देता है। हे परम देव!, तू इस जगत् को अपने धारक नियमों से व्यवस्थित करने के कारण सब का मित्र हो गया है।

टि. *तीनों ज्योतिःपुञ्जों को* - **त्रीणि रोचना।** त्रीणि तेजांसि लोकान् वा - वे.। रोचमानान् द्युलोकान्। तिस्रो दिवः पृथिवीः (ऋ. ४.५३.५) इत्युक्तम्। सा.। त्रीणि सूर्याचन्द्रविद्युदाख्यानि प्रकाशकानि - दया.। the three regions - W. three spheres of light - G. three luminous Heavens - Fra.

*सम्यक् बखान किया जाता है तू* - **सम् उच्यसि।** ब्रूञ् व्यक्तायां वाचीत्यस्माद् धातोर् उच समवाये इत्यस्माद् वा धातोः सिध्यति रूपम् इदम्।। सङ्गच्छसे - वे.। संगच्छसि। उच समवाय इत्यस्येदं रूपम्। सा.। सं वदसि - दया.। combinest - W. G. you are articulated - Fra.

*मित्र हो जाता है तू धारक नियमों से* - **मित्रः भवसि धर्मभिः।** मित्रो भवसि त्वं कर्मभिः - वे.। धर्मभिर् जगद्धारकैः कर्मभिर् मित्रो भवसि। मित्राख्यो देवो भवसि। अथवा प्रकाशादिप्रदानेन सखा भवसि सर्वजगताम्। सा.। सखा भवसि धर्माचरणेन - दया.। thou art Mitra through thy (benevolent) functions - W. thou art Mitra through thy righteous laws - G. You become the Friend according to the laws of your nature - Fra.

**उतेशिषे प्रसवस्य त्वम् एक इद्**
**उत पूषा भवसि देव यामभिः।**
**उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि**

**श्यावाश्वस् ते सवितः स्तोमम् आनशे।। ५।। २४।।**

उत। ईशिषे। प्रऽसवस्य। त्वम्। एकः। इत्। उत। पूषा। भवसि। देव। यामऽभिः।
उत। इदम्। विश्वम्। भुवनम्। वि। राजसि। श्यावऽअश्वः। ते। सवितर् इति। स्तोमम्। आनशे।। ५।।

*और शासन करता है, उत्पन्न जगत् पर तू अकेला ही,*
*और पोषक है तू (जगत् का), हे देव!, गतिविधियों से (अपनी)।*
*और इस सम्पूर्ण जगत् को, विशेष रूप से प्रकाशित करता है तू,*
*संयत इन्द्रियों वाला (उपासक) तेरे, हे सविता!, स्तोत्र को ग्रहण करता है।। ५।।*

हे सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर! तू अकेला ही समस्त उत्पन्न जगत् पर शासन करता है। हे देवाधिदेव! तू अपने कर्मों के द्वारा इस जगत् का पालन-पोषण करने वाला है। तू ही इस सम्पूर्ण जगत् को अपने प्रकाश से भली प्रकार प्रकाशित कर रहा है। हे सर्वप्रेरक परमेश्वर! प्रत्येक जितेन्द्रिय उपासक तेरे धन्यवाद के लिये स्तोत्रों से तेरी स्तुति करता है।

टि. *उत्पन्न जगत् पर* - **प्रसवस्य**। अनुज्ञायाः - वे.। सर्वकर्मानुज्ञाकरणस्य - सा.। प्रसूतस्य जगतः - दया.। over living beings - W. over all generation - G. of transformation - Fra.

*गतिविधियों से* - **यामभिः**। आगमनैः - वे.। गमनैः - सा.। प्रहरैः - दया.। by thy movements - W. in all thy goings-forth - G. by your advents - Fra.

*संयत इन्द्रियों वाला* - **श्यावाश्वः**। श्यामवर्णाः परिपक्वावस्थाः संयता अश्वा इन्द्रियाणि यस्यासौ।। श्यावाश्व ऋषिः - सा.। सूर्यलोकः - दया.।

*स्तोत्र को ग्रहण करता है* - **स्तोमम् आनशे**। स्तोमं व्याप्नोति कुरुते - वे.। स्तोत्रं व्याप्नोति - सा.। प्रशंसां व्याप्नोति - दया.। offers praise - W. hath brought praise - G.

## सूक्त ८२

ऋषिः - श्यावाश्वः। देवता - सविता। छन्दः - १ अनुष्टुप्, २-९ गायत्री। नवर्चं सूक्तम्।

**तत् सवितुर् वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम्।**
**श्रेष्ठं सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि।। १।।**

तत्। सवितुः। वृणीमहे। वयम्। देवस्य। भोजनम्। श्रेष्ठम्। सर्वऽधातमम्। तुरम्। भगस्य। धीमहि।। १।।

*उसको सविता के, वरण करते हैं,*
*हम देव के, भोग्य (धन) को।*
*श्रेष्ठ को, सब के धारक को,*
*दुरितविनाशक (तेज) को भजनीय के, धारण करें हम।। १।।*

हम उपासक जन सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक तथा सर्वप्रकाशक उस परमेश्वर के सेवन के योग्य लौकिक और अलौकिक ऐश्वर्य का वरण करें। हम उस भजनीय जगदीश्वर के सर्वोत्तम, सब को अतिशय धारण करने वाले और चोर, डाकू आदि बाह्य तथा काम, क्रोध आदि आभ्यन्तर शत्रुओं का विनाश करने वाले तेज को धारण करें।

टि. *भोग्य (धन) को* - **भोजनम्।** भोग्यं धनम् - सा.। पालनं भोक्तव्यं वा - दया.। enjoyable (wealth) - W. treasure much to be enjoyed - G.

*दुरितविनाशक (तेज) को* - **तुरम्।** प्रेरकं तेजः - वे.। शत्रूणां हिंसकम् - सा.। अविद्यादिदोष-नाशकं सामर्थ्यम् - दया.। destructive of foes - W. conquering gift - G.

*भजनीय के* - **भगस्य।** भजनीयस्य - वे.। भजनीयस्यानुग्रहात् - सा.। सकलैश्वर्ययुक्तस्य - दया.। from Bhaga - W. of Bhaga - G.

**अस्य हि स्वयशस्तरं सवितुः कच् चन प्रियम्।**
**न मिनन्ति स्वराज्यम्।। २।।**

अस्य। हि। स्वयशःऽतरम्। सवितुः। कत्। चन। प्रियम्। न। मिनन्ति। स्वऽराज्यम्।। २।।

*इसके, निश्चय से, स्वयं अत्यन्त यशस्वी को,*
*सविता के, कभी भी, प्रसन्नता देने वाले को।*
*नहीं हिंसित कर सकते हैं (शत्रु), स्वराज्य को।। २।।*

वह सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक जगदीश्वर इस जगत् का राजा है, राजाधिराज है। उसका अपना राज्य स्वयं ही अत्यन्त कीर्त्ति और प्रसिद्धि वाला है और सब को प्रसन्नता प्रदान करने वाला, सब के लिये खुशहाली लाने वाला है। इसके इस राज्य को, प्रशासन को, अनुशासन को दुष्ट हिंसक जन कदापि हिंसित नहीं कर सकते, इसका बाल भी बाँका नहीं कर सकते। सब को उसी के अनुशासन में रहना होता है।

टि. *स्वयं अत्यन्त यशस्वी को* - **स्वयशस्तरम्।** अत्यन्तं स्वभूतयशस्कम् - वे.। स्वयम् असाधारणं यशो यस्यातिशयेन भवति तत् - सा.। स्वकीयं यशः कीर्त्तिर् यस्य तद् अतिशयितम् - दया.। most especially renowned - W. most glorious - G.

*कभी भी* - **कत् चन।** कदाचिद् अपि - वे.। कत् चन केचिद् अप्यसुरादयः - सा.। कदा अपि - दया.। nothing - W. No one - G.

*स्वराज्य को* - **स्वराज्यम्।** स्वराज्यम् - वे.। स्वयम् एवं राजमानत्वम् ऐश्वर्यम् - सा.। स्वकीयं राष्ट्रम् - दया.। sovereignty - W. own supremacy - G.

**स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः।**
**तं भागं चित्रम् ईमहे।। ३।।**

सः। हि। रत्नानि। दाशुषे। सुवाति। सविता। भगः। तम्। भागम्। चित्रम् ईमहे।। ३।।

*वह ही रमणीय धनों को, हविदाता के लिये,*
*प्रेरित करता है, सर्वप्रेरक, सेवन के योग्य।*
*उससे भाग को, विलक्षण को, माँगते हैं हम।। ३।।*

सब के द्वारा उपासना के योग्य, वह सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर आहुति प्रदान करने वाले, यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्मों को करने वाले, दूसरों का हित साधने वाले उपासक को उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करता है। हम उपासक उससे विलक्षण पवित्र सेवनीय धन की कामना करते हैं।

टि. *प्रेरित करता है* - **सुवाति**। प्रसौति - वे.। प्रेरयति - सा.। जनयति - दया.। bestows - W. shall send - G.

*सेवन के योग्य* - **भगः**। भजनीयः - वे.। सा.। ऐश्वर्यवान् - दया.। Bhaga - W. G.

*सेवनीय धन को, विलक्षण को* - **भागम् चित्रम्**। धनम् चित्रम् - वे.। भजनीयं चायनीयं धनम् - सा.। भगानाम् इमम् अद्भुतम् - दया.। a valuable portion - W. wondrous portion - G.

**अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम्। परा दुःष्वप्न्यं सुव।। ४।।**

अद्य। नः। देव। सवितर् इति। प्रजाऽवत्। सावीः सौभगम्। परा। दुःऽस्वप्न्यम्। सुव।। ४।।

*आज हमारे लिये, हे देव!, हे सर्वप्रेरक!,*
*सन्तानों वाले को, प्रेरित कर, उत्तम धन को।*
*दूर बुरे स्वप्नों को, भगा दे तू।। ४।।*

हे देवों के देव, सर्वप्रेरक, जगदीश्वर! तू आज हमें उत्तम सन्तानों से युक्त श्रेष्ठ ऐश्वर्य प्रदान कर। तू हमारे दुःसङ्कल्पों और उनसे उत्पन्न होने वाले पापों, दुःखों और दुष्ट स्वप्नों को हमसे दूर कर दे। हम तेरे उपासक जन सत्सङ्कल्पों और पवित्र विचारों वाले होकर दुःस्वप्न आदि से रहित शान्त, सुखी और समृद्ध जीवन व्यतीत करें।

टि. *बुरे स्वप्न को* - **दुःष्वप्न्यम्**। दुःस्वप्नं दुःस्वप्नवद् दुःखकरं दारिद्र्यम् - सा.। दुष्टेषु स्वप्नेषु भवं दुःखम् - दया.। evil dreams - W. G.

**विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव।**
**यद् भद्रं तन् न आ सुव।। ५।। २५।।**

विश्वानि। देव। सवितः। दुःऽइतानि। परा। सुव। यत्। भद्रम्। तत्। नः। आ। सुव।। ५।।

*सब को, हे देव!, हे सर्वप्रेरक!,*
*दुर्गतियों को, परे भगा दे तू।*
*जो (है) कल्याणकर, उसे हमें ला दे तू।। ५।।*

हे सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक परमेश्वर! तू हमारे सब दुरितों, दुर्गुणों, पापों और दुःखों को हमसे दूर कर दीजिये और सद्गुण, सद्विचार, सत्सङ्कल्प आदि जो भी हमारे लिये कल्याणकर है, उसे हमें प्राप्त कराइये।

टि. *दुर्गतियों को* - **दुरितानि**। दुष्टाचरणानि - दया.। दुर्गुणों को - सात.। misfortunes - W. sorrows and calamities - G. ills and evils - Satya.

*कल्याणकर* - **भद्रम्**। प्रजापशुगृहादिकम्। प्रजा वै भद्रं पशवो भद्रं गृहं भद्रम् इति हि श्रुतिः। सा.। कल्याणकरम् - दया.। good - W. G. good and beneficial - Satya.

**अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे।**
**विश्वा वामानि धीमहि।। ६।।**

अनागसः। अदितये। देवस्य। सवितुः। सवे। विश्वा। वामानि। धीमहि।। ६।।

*पापरहित (होवें हम), बन्धन से मुक्ति के लिये,*

*देव के सर्वप्रेरक के, अनुशासन में।*
*सब कामनाओं को, धारण करें हम।। ६।।*

हम मनुष्य जीवन के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये पापों और दोषों का परित्याग करके देवों के देव, सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके अनुशासन में रहें। और उसी के अनुशासन में रहते हुए अपनी लौकिक और अलौकिक कामनाओं की पूर्त्ति भी करें।

टि. *बन्धन से मुक्ति के लिये* - **अदितये**। अस्यै पृथिव्यै - वे.। अखण्डनीयायै देव्यै भूम्यै - सा.। मात्राद्याय - दया.। अखण्ड भूमि के लिये - सात.। towards Aditi - W. in sight of Aditi - G. towards the Mother of Infinity - Satya.

*अनुशासन में* - **सवे**। प्रसवे - वे.। अनुज्ञायां सत्याम् - सा.। जगद्रूपैश्वर्ये - दया.। according to the will - W. through the influence - G. in the realm - Satya.

*कामनाओं को* - **वामानि**। धनानि - वे.। वननीयानि धनानि - सा.। वननीयानि सम्भजनीयानि धनानि - दया.। all-desired riches - W. lovely things - G.

**आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैर् अद्या वृणीमहे।**
**सत्यसवं सवितारम्।। ७।।**

आ। विश्वऽदेवम्। सत्ऽपतिम्। सुऽउक्तैः। अद्य। वृणीमहे। सत्यऽसवम्। सवितारम्।। ७।।

*सब ओर से, सब के स्वामी का, सज्जनों के पालक का,*
*शोभन स्तुतियों के द्वारा, आज वरण करते हैं हम।*
*सच्चे अनुशासन वाले का, सर्वप्रेरक का।। ७।।*

हम उपासक जन सब के स्वामी, सज्जनों के पालक, सच्चे अनुशासन और नियमों वाले, सब को सत्कर्मों में प्रेरित करने वाले सर्वोत्पादक परमेश्वर का आज और अन्य सभी कालों में उत्तम स्तुतियों के द्वारा वरण करते हैं। उसको ही अपना स्वामी और उपास्य स्वीकार करते हैं।

टि. *सब के स्वामी का* - **विश्वदेवम्**। विश्वे देवा यस्य वशे भवन्ति तं तादृशम्। तं हि सर्वात्मत्वाद् इन्द्रं मित्रं वरुणम् अग्निम् आहुर् इत्यादिश्रुतेर् इतरेषां तद्विभूतित्वात्। सा.। विश्वस्य प्रकाशकम् - दया.। (identical with) all the gods - W. "the general God, 'who possesses all divine attributes' - Muir; '(identical with) all the gods', - Wilson. 'den allgott' 'the all-god', - Ludwig, 'den allgöttlichen', 'the all-divine', - Grassmann". - G.

*सज्जनों के पालक का* - **सत्पतिम्**। सताम् अनुष्ठातृणां पालकम् - सा.। सतां प्रकृत्यादीनां सत्पुरुषाणां पतिं पालकम् - दया.। the protector of the good - W. Lord of the good - G.

*सच्चे अनुशासन वाले का* - **सत्यसवम्**। सत्यानुज्ञम् - सा.। सत्यो ऽविनाशी सवः सामर्थ्ययोगो यस्य तम् - दया.। the observer of the truth - W. whose decrees are true - G.

**य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन्।**
**स्वाधीर् देवः सविता।। ८।।**

यः। इमे इति। उभे इति। अहनी इति। पुरः। एति। अप्रऽयुच्छन्। सुऽआधीः। देवः। सविता।। ८।।

*जो इन दोनों के, दिन और रात के,*

*आगे गमन करता है, प्रमाद न करता हुआ।*

*भली प्रकार ध्यान के योग्य, देव सविता,*

*(उसका शोभन स्तुतियों से, आज वरण करते हैं हम)।। ८।।*

सब को प्रकाशित करने वाले, सब के द्वारा ध्यान के योग्य, उस सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर का हम वरण करते हैं, जो दिन और रात इन दोनों की उत्पत्ति से भी पूर्व से विद्यमान है और जो बिना किसी प्रमाद के इस संसारचक्र को घुमा रहा है।

टि. *प्रमाद न करता हुआ* – **अप्रयुच्छन्**। अप्रमाद्यन् – वे.। सा.। ever vigilant - W. G.

*भली प्रकार ध्यान के योग्य* – **स्वाधीः**। सुकर्मा – वे.। शोभनाध्यानः सुकर्मा वा – सा.। सुष्ठु आधीयते येन सः – दया.। the divine object of meditation - W. thoughtful - G.

**य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन।**

**प्र च सुवाति सविता।। ९।। २६।।**

यः। इमा। विश्वा। जातानि। आऽश्रवयति। श्लोकेन। प्र। च। सुवाति। सविता।। ९।।

*जो इन सब को, उत्पन्न हुओं को,*

*श्रवण कराता है (ज्ञान), वाणी से (अपनी)।*

*और प्रकर्ष से प्रेरित करता है, सर्वप्रेरक,*

*(उसका शोभन स्तुतियों से, आज वरण करते हैं हम)।। ९।।*

जो सर्वप्रेरक परमेश्वर अपनी वेदवाणी से सब प्रजाओं को उत्तम ज्ञान का श्रवण कराता है और सब को सन्मार्ग पर चलने के लिये भली प्रकार प्रेरित करता है, हम उपासक आज उस परमात्मा का अपनी उत्तम स्तुतियों से वरण करते हैं। हम उसे ही अपना उपास्य स्वीकार करते हैं।

टि. *श्रवण कराता है (ज्ञान), वाणी से (अपनी)* – **आश्रावयति श्लोकेन**। श्लोकेन यशसाश्रावयति। सर्वे ऽप्यस्य स्तुतिं शृण्वन्तीत्यर्थः। अथवा गर्जनशब्देन सर्वाणीमान्युत्पन्नान्याश्रावयति वृश्ट्युन्मुखः सन्। सा.। (सर्वाणि प्रज्ञानानि) आश्रावयति वाचा। श्लोक इति वाङ्नाम (निघ. १.१२)। दया.। अपने यश सुनाता है – सात.। proclaims his glory - W. gives glory - G. reveals His knowledge through the sacred hymns - Satya.

*प्रेरित करता है* – **सुवाति**। प्रेरयति – सा.। प्रेरयेत् – दया.। gives them life - W. brings them forth - G. inspires them with life - Satya.

## सूक्त ८३

ऋषिः – भौम आत्रेयः। देवता – पर्जन्यः। छन्दः – १,५-८,१० त्रिष्टुप्, २-४ जगती, ९ अनुष्टुप्। दशर्चं सूक्तम्।

**अच्छा वद तवसं गीर्भिर् आभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास।**

**कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम्।। १।।**

अच्छ॑। वृद। तुवस॑म्। गी॒ःऽभिः। आ॒भिः। स्तु॒हि। प॒र्जन्य॑म्। नम॑सा। आ। वि॒वा॒स॒।
कनि॑क्रदत्। वृ॒ष॒भः। जी॒रऽदा॑नुः। रेतः। द॒धा॒ति॒। ओष॑धीषु। गर्भ॑म्।। १।।

*पास जाकर वन्दना कर बलवान् की, वाणियों से इनसे,*
*स्तुति कर तू पर्जन्य की, नमस्कार से सर्वतः परिचर्या कर तू।*
*कड़कता हुआ, सुखों का वर्षक, अविलम्ब दाता,*
*जल को स्थापित करता है, ओषधियों में, गर्भ के रूप में।। १।।*

हे उपासक! तू सब को तृप्त करने वाले, सर्वविजेता, सर्वोत्पादक और ओषधियों में रसों को स्थापित करने वाले उस बलवान् परमेश्वर की हृदय से अपनी इन वाणियों से वन्दना कर, उसकी स्तुति कर और नमस्कारों से उसकी सेवा कर। सुखों की वर्षा करने वाला, अपने ऐश्वर्यों को अतिशीघ्र प्रदान करने वाला वह प्रभु जलवर्षक मेघ के रूप में घोर गर्जना करता हुआ जलों को ओषधियों के अन्दर गर्भ के रूप में स्थापित करता है, अर्थात् उन जलों से उन्हें पुष्पवान् और फलवान् बनाता है।

टि. *पास जाकर वन्दना कर* - **अच्छ वद**। अभिवद - वे.। अभिप्राप्य वद। प्रार्थय। सा.। I address (Pajanya), who is present - W. sing thy welcome - G.

*पर्जन्य की* - **पर्जन्यम्**। पर्जन्यस् तृपेर् आद्यन्तविपरीतस्य तर्पयिता जन्यः परो जेता वा जनयिता वा प्रार्जयिता वा रसानाम् इति (नि. १०.१०)। सा.। *Uṇādi* derivation is quite as probable, which refers it to *vṛṣ*, to rain, *p* being substituted for *v*, *ṛ* becoming the *guṇa ar* and *ṣ* being changed to *j*, *anya* is the affix - W.

*नमस्कार से सर्वतः परिचर्या कर तू* - **नमसा आ विवास**। नमसा च परिचर - वे.। अन्नेन हविर्लक्षणेन सर्वतः परिचर - सा.। worship him with reverence - W.

*जल को* - **रेतः**। उदकम् - वे.। सा.। with rain - W. the seed - G.

**वि वृ॒क्षान् ह॑न्त्यु॒त ह॑न्ति र॒क्षसो॒ विश्वं॑ बिभाय॒ भुव॑नं म॒हाव॑धात्।**
**उ॒तानागा ईषते॒ वृष्ण्या॑वतो॒ यत् प॒र्जन्यः॑ स्त॒नय॒न् हन्ति॑ दु॒ष्कृत॑ः।। २।।**

वि। वृ॒क्षान्। ह॒न्ति॒। उ॒त। ह॒न्ति॒। र॒क्षस॑ः। विश्व॑म्। बि॒भा॒य॒। भुव॑नम्। म॒हाऽव॑धात्।
उ॒त। अना॑गाः। ई॒ष॒ते॒। वृष्ण्य॑ऽवतः। यत्। प॒र्जन्य॑ः। स्त॒नय॑न्। हन्ति॑। दु॒ःऽकृत॑ः।। २।।

*विशेषेण वृक्षों को ध्वस्त करता है, नष्ट करता है राक्षसों को,*
*सारा भयभीत हो जाता है जगत्, महान् आयुध वाले से।*
*और निर्दोष भी परे दौड़ता है, बलवान् से (इससे),*
*जब पर्जन्य गर्जना करता हुआ, मारता है दुराचारियों को।। २।।*

वह सब को तृप्त करने वाला, सर्वोत्पादक, सर्वविजेता परमेश्वर पापाचारी आसुरी शक्तियों को वृक्षों की तरह काट डालता है। वह सब-कुछ अपने पास ही रख लेने वाले और दूसरों को कुछ भी न देने वाले कृपण जनों को नष्ट कर डालता है। उसकी न्यायव्यवस्था अत्यन्त कठोर है, इसलिये संसार के सभी प्राणी उससे भय खाते हैं। वह इतना बलवान्, प्रतापी और तेजस्वी है कि निर्दोष मनुष्य

भी भय के कारण उससे परे भागते हैं कि कहीं हमसे कोई अपराध न हो जाए। वह परमेश्वर दुष्कर्म करने वालों को महान् गर्जना करता हुआ नष्ट कर डालता है।

टि. *परे दौड़ता है* - **ईषते।** ईष गतिहिंसादर्शनेषु।। पलायते - या. (नि. १०.११)। वेङ्कटादयः। हिनस्ति - दया.। रक्षा करने की इच्छा करता है - सात.। flies - W. flees - G.

*बलवान् से* - **वृष्ण्यावतः।** वर्षकर्मवतः - या. (तत्रैव)। वेङ्कटादयः। वृष्ण्यानि वर्षितुं योग्यान्यभ्राणि विद्यन्ते येषु तान् - दया.। जल की वर्षा करते हुए - सात.। from the sender of rain - W. from him exceeding strong - G.

*दुराचारियों को* - **दुष्कृतः।** पापकृतः - या. (तत्रैव)। वेङ्कटादयः। दुष्टाचारान् - दया.। the wicked - W. G.

**र॒थीव॒ कश॒याश्वाँ॑ अभिक्षि॒पन्ना॒विर् दू॒तान् कृ॑णुते व॒र्ष्या॑ँ॒ ३॑ अह॑।**
**दू॒रात् सि॒ंहस्य॑ स्त॒नथा॒ उद् ई॑रत॒े यत् प॒र्जन्य॑ः कृणु॒ते व॒र्ष्य॑ं१॒ नभ॑ः।। ३।।**

र॒थीऽइ॑व। कश॑या। अश्वा॑न्। अ॒भि॒ऽक्षि॒पन्। आ॒विः। दू॒तान्। कृ॒णु॒ते। व॒र्ष्या॑न्। अह॑।
दू॒रात्। सि॒ंहस्य॑। स्त॒नथाः॑। उत्। ई॒र॒ते। यत्। प॒र्जन्य॑ः। कृ॒णुते। व॒र्ष्य॑म्। नभ॑ः।। ३।।

*रथवान् की तरह, चाबुक से घोड़ों को हाँकने वाले की,*
*प्रकट दूतों को करता है, वर्षा करने के योग्यों को, अहा।*
*दूर से सिंह की गर्जनाएं, उठती हैं,*
*जब परम जनयिता बनाता है, वर्षा के योग्य आकाश को।। ३।।*

*अधिदेव* : जिस प्रकार रथ पर सवार योद्धा चाबुक से अपने घोड़ों को आगे बढ़ाता हुआ अपने सैनिकों को शत्रुसेना के सामने प्रकट करता है, उसी प्रकार परम उत्पत्तिकर्ता देव अपने रथ के घोड़ों को आगे बढ़ाता हुआ वर्षा करने वाली मेघों की अपनी सेनाओं को बड़े आश्चर्यजनक ढंग से आकाश में प्रकट करता है। तब मेघ सिंह की गर्जनाओं के समान दूर से ही गर्जना करने लगते हैं, आकाश में वर्षा का समा बंध जाता है और फिर धरती पर जल की बौछारें पड़ने लगती हैं।

अध्यात्म : पर्जन्य अमृत और आनन्द की वर्षा करने वाला परमेश्वर है। नभ हृदयाकाश है। दूत अथवा मेघ परमेश्वर के द्वारा हृदय के अन्दर उत्पन्न किये जाने वाले उत्तम विचार और उदात्त भावनाएं हैं और उनसे उत्पन्न होने वाला आनन्द बरसने वाली अमृतधाराएं हैं।

टि. *दूतों को* - **दूतान्।** मरुत्प्रभृतीन् - वे.। दूतान् भटान्। दूतवद्वृष्टिप्रेरकान् मेघान्। मरुतो वा। सा.। the messengers of the rain - W. G.

*अहा* - **अह।** अह इत्याश्चर्ये - वे.। अहेति पूरणः - सा.। विनिग्रहे - दया.।

*सिंह की गर्जनाएं* - **सिंहस्य स्तनथाः।** सिंहसदृशस्य मेघस्य शब्दाः - वे.। सहतेर् हिंसतेर् वा शब्दकर्मणः सिंहशब्दः। अवर्षणेनाभिभवितुः शब्दयितुर् वा मेघस्य स्तनथा गर्जनशब्दाः - सा.। the roaring of the lion-(like cloud) - W. the roaring of the lion - G.

**प्र वाता॒ वान्ति॑ प॒तय॑न्ति वि॒द्युत॒ उद् ओष॑धी॒र् जिह॑ते॒ पिन्व॑ते॒ स्व॑ः।**
**इरा॒ विश्व॑स्मै॒ भुव॑नाय जायते॒ यत् प॒र्जन्य॑ः पृथि॒वीं रेत॒साव॑ति।। ४।।**

प्र। वार्ताः। वान्ति। पतयन्ति। विऽद्युतः। उत्। ओषधीः। जिहते। पिन्वते। स्वः। इति स्वः।
इरा। विश्वस्मै। भुवनाय। जायते। यत्। पर्जन्यः। पृथिवीम्। रेतसा। अवति।। ४।।

*प्रकर्ष से वायु बहते हैं, संचरण कर रही हैं बिजलियां,*
*ऊपर को ओषधियां बढ़तीं हैं, सिक्त हो रहा है आकाश।*
*भोजन सब प्रजाओं के लिये, उत्पन्न होता है,*
*जब पर्जन्य पृथिवी को, जल से तृप्त करता है।। ४।।*

*अधिदेव* : जब परम जनयिता परमेश्वर पृथिवी को जल से सींचता है, तृप्त करता है, बढ़ाता है, तो सुखद वायु बहते हैं, बिजलियां चमकती हुई संचरण करती हैं, ओषधियां उगती हैं और बढ़ती हैं, आकाश जलों से सिक्त हो जाता है, और सब प्राणियों के लिये अन्न उत्पन्न होता है।

*अध्यात्म* : जब परमेश्वर अपनी कृपा की वृष्टि अपने उपासक पर करता है, तो उसे एक विलक्षण अनुभूति होती है। भक्त को ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि उसकी अन्तश्चेतना में शीतल, मन्द, सुगन्ध समीर बह रहा हो, दीप्तियां अपनी चमचमाहट से प्रकाश प्रदान कर रही हों, एक नए जीवन का आविर्भाव हो रहा हो, हृदयाकाश में सुख का संचार हो रहा हो, आत्मा को उसके भोजन की प्राप्ति हो रही हो और परमेश्वर उसके अन्तस्तल पर सुखों की वर्षा कर रहा हो।

टि. *संचरण कर रही हैं बिजलियां* – **पतयन्ति विद्युतः।** विद्युतः च पतन्ति – वे.। पतयन्ति समन्तात् संचरन्ति विद्युतः – सा.। the lightnings flash - W. down come the lightning flashes - G.

*ऊपर को ओषधियां बढ़ती हैं* – **उत् ओषधीः जिहते।** ओषध्यः उद्गच्छन्ति – वे.। ओषधय उद्गच्छन्ति प्रवर्धन्ते – सा.। the plants spring up - W. the plants shoot up - G.

*सिक्त हो रहा है आकाश* – **पिन्वते स्वः।** सर्वं च स्वरसं क्षरति – वे.। स्वर् अन्तरिक्षं क्षरति – सा.। the firmament dissolves - W. the realm of light is streaming - G.

*भोजन* – **इरा।** अन्नम् – वे.। भूमिः – सा.। अन्नादिकम्। इरेत्यन्ननाम (निघ. २.७)। दया.। यह पृथिवी – सात.। earth - W. food - G.

*जल से तृप्त करता है* – **रेतसा अवति।** अवतिस् तृप्तिकर्मा (धातु. ६००)।। उदकेन रक्षति – वे.। दया.। उदकेन रक्षति अभिगच्छति वा – सा.। fertilizes with showers - W. quickens with moisture - G.

**यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज् जर्भुरीति।**
**यस्य व्रत ओषधीर् विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ।। ५।। २७।।**

यस्य। व्रते। पृथिवी। नन्नमीति। यस्य। व्रते। शफऽवत्। जर्भुरीति।
यस्य। व्रते। ओषधीः। विश्वऽरूपाः। सः। नः। पर्जन्य। महि। शर्म। यच्छ।। ५।।

*जिसके अनुशासन में, पृथिवी बार-बार नमन करती है,*
*जिसके अनुशासन में, खुरों वाले (चोपाये) पुष्ट होते हैं।*
*जिसके अनुशासन में, ओषधियां (होती हैं) नाना रूपों वाली,*
*वह (तू) हमें, हे पर्जन्य!, महान् सुख प्रदान कर।। ५।।*

हे सब को तृप्त करने वाले, सर्वोत्पादक, सर्वविजेता परमेश्वर! तू वह महान् शक्ति है, जिसके नियमों का पालन करने वाली पृथिवी तुझे बार-बार नमन करती है, जिसके अनुशासन में रहते हुए खुरों वाले चोपाये जीवन और पौष्टिकता को प्राप्त करते हैं और जिसकी आज्ञाओं का पालन करने वाली ओषधियां नाना सुन्दर रूपों को प्राप्त करती हैं। वह तू हमें महान् सुख प्रदान कर।

टि. *अनुशासन में* - **व्रते**। कर्मणि - वेङ्कटादयः। through whose function - W. at whose bidding, at whose command, at whose behest - G.

*बार-बार नमन करती है* - **नन्नमीति**। अत्यन्तम् आर्द्रीभूता नमति - वे.। अत्यन्तं नमति सर्वेषाम् अधो भवति - सा.। भृशं नमति - दया.। is bowed down - W. bows low - G.

*खुरों वाले (चोपाये) पुष्ट होते हैं* - **शफवत् जर्भुरीति**। बहुवचनस्थान एकवचनम्। पशोः चत्वारः पादाः, एकस्मिन् पाद एकः खुरः, एकस्मिन् खुरे द्वौ शफौ, एकस्मिन् शफे द्वे कले च भवतः।। शफवत् पश्वादि पुष्टं भवति - वे.। शफवत् पादोपेतं गवादिकं जर्भुरीति भ्रियते पूर्यते गच्छतीति वा - सा.। hoofed cattle thrive - W. hoofed cattle fly in terror - G.

**दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः।**
**अर्वाङ् एतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः।। ६।।**

दिवः। नः। वृष्टिम्। मरुतः। ररीध्वम्। प्र। पिन्वत। वृष्णः। अश्वस्य। धाराः।
अर्वाङ्। एतेन। स्तनयित्नुना। आ। इहि। अपः। निऽसिञ्चन्। असुरः। पिता। नः।। ६।।

*अन्तरिक्ष से हमारे लिये वृष्टि को, हे मरुतो!, प्रदान करो तुम,*
*खूब सींचो तुम, बरसा करने वाले की, महान् (मेघ) की, धाराओं को।*
*इस ओर इस गर्जना करने वाले (मेघ) के साथ, आ जा तू,*
*जलों को सम्यक् सींचता हुआ, प्राणदाता, पालक हमारा।। ६।।*

हे कार्यों को साधने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम हमें अन्तरिक्ष से जलवृष्टि प्रदान करो। तुम जलों को बरसाने वाले महान् मेघ की धाराओं को धरती पर बरसा दो। और हे सब को तृप्त करने वाले, सर्वोत्पादक, सर्वविजेता परमेश्वर! प्राणदाता तू हमारा पिता है, हमारा पालक है। तू गर्जना करने वाले इस मेघ के साथ जलों को बरसाता हुआ इधर हमारे पास आ।

टि. *महान् (मेघ) की* - **अश्वस्य**। अश्वस्य पर्जन्यस्य - वे.। अश्वस्य व्यापकस्य मेघस्य - सा.। महतः। अश्व इति महन्नाम (निघ. ३.३)। दया.। of the charger - W. the Stallion's - G.

*गर्जना करने वाले (मेघ) के साथ* - **स्तनयित्नुना**। गर्जता मेघेन - सा.। विद्युद्रूपेण - दया.। by thundering cloud - W. with this thunder - G.

*प्राणदाता* - **असुरः**। प्राज्ञः - वे.। उदकानां निरसिता - सा.। मेघः - दया.। प्राणों को देने वाला - सात.। the sender of rain - W. heavenly Lord - G.

*पालक* - **पिता**। पालयिता - वे.। जनक इव पालकः - दया.। protector - W. Father - G.

**अभि क्रन्द स्तनय गर्भम् आ धा उदन्वता परि दीया रथेन।**
**दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः।। ७।।**

अभि। क्रन्द। स्तनय। गर्भम्। आ। धाः। उदन्ऽवता। परि। दीय। रथेन।
दृतिम्। सु। कर्ष। विऽसितम्। न्यञ्चम्। समाः। भवन्तु। उत्ऽवतः। निऽपादाः।। ७।।

*सब ओर क्रन्दन कर, गर्जना कर, गर्भ स्थापित कर (ओषधियों में),*
*जलों वाले से सब ओर उड़ान भर तू, रथ से (अपने)।*
*मशक को भली प्रकार खींच तू, खुली हुई को, नीचे की ओर,*
*समतल हो जाएं ऊँचे (और) नीचे (स्थान सब)।। ७।।*

हे सर्वोत्पादक, सर्वविजेता परमेश्वर! तू खूब गड़गड़ाहट और गर्जना कर, अर्थात् तू अपनी गड़गड़ाहट और गर्जना से, अपने कोप और रोष को प्रकट करके सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाले दुष्टों के दिलों को दहला दे। तू जल से ओषधियों और वनस्पतियों में गर्भ का आधान कर। तू अपने जलों वाले रथ अर्थात् मेघों में सब ओर व्याप्त हो जा। तू जल से भरी मशक की तरह जलों से भरे हुए और खुले हुए मुँह वाले मेघ को नीचे की ओर लाकर बरसा दे। तू वृष्टि के जलों से ऊँचे और नीचे सभी स्थानों को समतल कर दे।

टि. *सब ओर उड़ान भर* - **परि दीय**। परितः गच्छ - वे.। सा.। चारों ओर भ्रमण कर - सात.। traverse (the sky) - W. fly round us - G.

*मशक को* - **दृतिम्**। दृतिसदृशं मेघम् - वे.। दृतिवद् उदकधारकं मेघम् - सा.। घड़े को - सात.। water-bag - W. water-skin - G.

*खुली हुई को* - **विषितम्**। विषिताऽऽस्यम् - वे.। विशेषेण सितं बद्धम्। यद्वा। विषितं विमुक्त-बन्धनम्। सा.। जल से पूर्ण - सात.। tight-fastened - W. opened - G.

*नीचे की ओर* - **न्यञ्चम्**। नीचीनमुखम् - वे.। न्यक् अधोमुखम् - सा.। नीचे मुख वाला कर - सात.। downward-turned - W. downward - G.

*ऊँचे और नीचे (स्थान सब)* - **उद्वतः निपादाः**। उच्छ्रिताः निम्नाश् च देशाः - वे.। ऊर्ध्ववन्त उन्नतप्रदेशा निपादा न्यग्भूतपादा निकृष्टपादा वा निम्नोन्नतप्रदेशाः - सा.। ऊर्ध्वदेशस्थाः, निश्चिता निम्ना वा पादा येषां ते - दया.। high and low places - W. the hollows and the heights - G.

**महान्तं कोशम् उद् अचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।**
**घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः।। ८।।**

महान्तम्। कोशम्। उत्। अच। नि। सिञ्च। स्यन्दन्ताम्। कुल्याः। विऽसिताः। पुरस्तात्।
घृतेन। द्यावापृथिवी इति। वि। उन्धि। सुऽप्रपानम्। भवतु। अघ्न्याभ्यः।। ८।।

*महान् जलकोश को, ऊपर ले जा, नीचे को बरसा दे,*
*बह चलें नदियां, बन्धनमुक्त (होकर), आगे की ओर।*
*जल से द्युलोक और भूलोक को, भिगो दे तू,*
*भली प्रकार पीने के लिये जल होवे, गौओं के लिये।। ८।।*

हे सर्वोत्पादक, सर्वविजेता परमेश्वर! तू धरती पर स्थित महान् जलसमूह को सूर्य की रश्मियों से ऊपर की ओर आकाश में ले जा और इसे मेघों के द्वारा धरती पर बरसा दे। इन जलों से नदियां

धरती पर निर्बाध होकर बह निकलें और आगे ही आगे बढ़ती जाएं। तू जलों से धरती और आकाश दोनों को गीला कर दे। इस पृथिवी पर गौ आदि पशुओं के लिये पीने के लिये भरपूर जल होवे।

टि. *ऊपर ले जा* – **उत् अच**। उत् सिञ्च – वे.। उद्गच्छ उद्गमय वा – सा.। rise on high - W. lift up (the mighty vessel) - G.

*नीचे को बरसा दे* – **नि सिञ्च**। नीचैः क्षारय – सा.। pour down (its contents) - W.

*आगे की ओर* – **पुरस्तात्**। पूर्वाभिमुखम्। प्रायेण नद्यः प्राच्यः स्यन्दन्ते। सा.। पूर्व दिशा की ओर – सात.। to the east - W. (rush) forward - G.

*भिगो दे तू* – **उन्धि**। क्लेदय – वे.। सा.। saturate - W. G.

*भली प्रकार पीने के लिये जल होवे* – **सुप्रपाणम् भवतु**। सुष्ठु प्रकर्षेण पातव्यम् उदकं भवतु – सा.। abundant beverage - W. let there be drink abundant - G.

**यत् पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।**
**प्रतीदं विश्वं मोदते यत् किं च पृथिव्याम् अधि।। ९।।**

यत्। पर्जन्य। कनिक्रदत्। स्तनयन्। हंसि। दुःऽकृतः।
प्रति। इदम्। विश्वम्। मोदते। यत्। किम्। च। पृथिव्याम्। अधि।। ९।।

*जब, हे पर्जन्य!, कड़कता हुआ,*
*गर्जता हुआ, मारता है तू, दुष्कर्मियों को।*
*बदले में यह सारे का सारा, मुदित होता है,*
*जो कुछ भी (है), पृथिवी के ऊपर।। ९।।*

हे सब को तृप्त करने वाले, सर्वोत्पादक, सर्वविजेता परमेश्वर! जब तू कड़कता हुआ, गर्जता हुआ, अर्थात् अपने क्रोध और रोष को प्रकट करता हुआ जल आदि सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली दुराचारिणी आसुरी शक्तियों का हनन करता है, तो उसकी प्रतिक्रियास्वरूप इस पृथिवी पर जो भी जड़, चेतन, स्थावर, जङ्गम आदि है, वह सब कुछ मोद से भर जाता है।

टि. *दुष्कर्मियों को* – **दुष्कृतः**। रक्षांसि – वे.। पापकृतो मेघान् – सा.। दुष्टों को – सात.। the wicked - W. sinners - G.

*पृथिवी पर* – **पृथिव्याम् अधि**। पृथिव्याम् अधिवसति – वे.। भूमाव् अधिष्ठितम् – सा.। पृथिव्याम् उपरि – दया.। upon the earth - W. G.

**अवर्षीर् वर्षम् उद् उ षू गृभायाकर् धन्वान्यत्येतवा उ।**
**अजीजन ओषधीर् भोजनाय कम्**
**उत प्रजाभ्यो ऽविदो मनीषाम्।। १०।। २८।।**

अवर्षीः। वर्षम्। उत्। ऊँ इति। सु। गृभाय। । अकः। धन्वानि। अतिऽएतवै। ऊँ इति।
अजीजनः। ओषधीः। भोजनाय। कम्। उत। प्रऽजाभ्यः। अविदः। मनीषाम्।। १०।।

*बरस चुका तू (बहुत), वर्षा को अब सुष्ठु समेट ले तू,*
*कर दिया तूने मरुस्थलों को, लांघकर जाने के लिये।*

*उत्पन्न करता है तू अन्नादिकों को, भोजन के लिये,*
*और प्रजाओं को प्राप्त कराता है तू, मनःकामनाओं को।। १०।।*

हे सब को तृप्त करने वाले, सर्वोत्पादक, सर्वविजेता इन्द्र! जब तू बहुत बरस चुका होता है, तो प्रजाओं के हित के लिये अपनी वर्षा को रोक लेता है। तेरी वर्षा से मरु भूमियां भी हरी-भरी हो जाती हैं और वहाँ पीने के लिये जल प्राप्त हो जाता है। इसलिये उन्हें सुखपूर्वक पार करके दूसरे देशों में जाया जा सकता है। तू मनुष्यों, पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों के भोजन के लिये अन्नों, जड़ी-बूटियों आदि को उत्पन्न करता है। तू प्रजाओं की सब मनःकामनाओं को पूरा करता है। अथवा तू प्रजाओं से स्तुतियां प्राप्त करता है।

टि. *अब सुष्ठु समेट ले तू* - **उत् उ सु गृभाय।** सुष्ठु उद्गृहीतवान् असि - वे.। उद् उत्कृष्टं सु सुष्ठु गृभाय गृहाण। परिहरेत्यर्थः। सा.। now check well the rain - W. now withhold it - G.

*अन्नादिकों को भोजन के लिये* - **ओषधीः भोजनाय कम्।** भोजनाय धनाय भोगाय वा। कम् इत्ययं शिशिरं जीवनाय कम् (नि. १.१०) इतिवत् पादपूरणः। सा.। to plants for (man's) enjoyment - W. thou hast made herbs to grow for our enjoyment - G.

*प्रजाओं को प्राप्त कराता है तू मनःकामनाओं को* - **प्रजाभ्यः अविदः मनीषाम्।** प्रजाभ्यः प्रज्ञाम् अलम्भयः - वे.। प्रजाभ्यः सकाशात् मनीषां स्तुतिम् अविदः प्राप्तवान् असि - सा.। thou hast obtained laudation from the people - W. thou hast won thee praise from living creatures: or perhaps 'thou hast fulfilled the longing of the people' - G.

## सूक्त ८४

ऋषिः - भौम आत्रेयः। देवता - पृथिवी। छन्दः - अनुष्टुप्। तृचात्मकं सूक्तम्।

**बळ् इत्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि।**
**प्र या भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि।। १।।**

बट्। इत्था। पर्वतानाम्। खिद्रम्। बिभर्षि। पृथिवि।
प्र। या। भूमिम्। प्रवत्वति। मह्ना। जिनोषि। महिनि।। १।।

*सचमुच इस प्रकार, पर्वतों की,*
*रिक्तताओं को भरती है तू, हे पृथिवी।*
*प्रकर्ष से जो भूमिवासियों को, हे समतल स्थानों वाली!,*
*महिमा से (अपनी) तृप्त करती है तू, हे पूजनीये।। १।।*

हे पृथिवी! सचमुच तू अपने ढंग से मेघों की रिक्तताओं को अपने जलों से भरती रहती है, और तू पर्वतों के मध्यवर्ती स्थानों को ओषधियों और वनस्पतियों से भरती रहती है। हे समतल स्थानों वाली!, हे पूजनीये!, तू अपने ऊपर निवास करने वाले प्राणियों को अपनी महिमा से अन्न, धन तथा अन्य सुखसुविधाओं से तृप्त करती रहती है।

टि. सचमुच - **बट्।** सत्यम् - वे.। सा.। बड् इति सत्यनाम (निघ. ३.१०) - दया.।

*पर्वतों की रिक्तताओं को भरती है तू* - **पर्वतानाम् खिद्रम् बिभर्षि।** मेघानां छेदनं धारयसि - वे.। पर्वतानां मेघानां वा खिद्रं खेदनं भेदनं बिभर्षि धारयसि - सा.। मेघानां खिद्रं दैन्यं - दया.। thou sustainest the fracture of the mountains - W. thou bearest the tool that rends hills - G.

*भूमिवासियों को* - **भूमिम्।** भूमिवासिनः। भूमिशब्दो ऽत्र तात्स्थ्यात् भूमिवासिवचनः।। प्रत्यक्षां पृथिवीम् - सा.। the earth - W.

*हे समतल स्थानों वाली* - **प्रवत्वति।** प्रकर्षवति प्रवणोदकवति वा - सा.। प्रवत्वति प्रवणदेश-युक्ते - दया.। most excellent - W. rich in torrents - G.

*तृप्त करती है तू* - **जिनोषि।** जिन्वसि - वे.। प्रीणयसि - सा.। thou delightest - W. quickenest earth - G.

*हे पूजनीये* - **महिनि।** हे उदकवति - वे.। महति - सा.। पूज्ये - दया.। mighty - W. G.

**स्तोमा॑सस् त्वा विचारिणि॒ प्रति॑ ष्टोभन्त्य॒क्तुभि॑ः।**
**प्र या वाज॒ं न हेष॑न्तं पे॒रुम् अस्य॑स्य॒र्जुनि।। २।।**

स्तोमा॑सः। त्वा॒। वि॒ऽचा॒रि॒णि॒। प्रति॑। स्तो॒भ॒न्ति॒। अ॒क्तुऽभि॑ः।
प्र। या। वाज॑म्। न। हेष॑न्तम्। पे॒रुम्। अस्य॑सि। अ॒र्जु॒नि॒।। २।।

*स्तोता गण तेरी, हे विविध प्रकार विचरण करने वाली!,*
*स्तुति करते हैं, रश्मियों के उदय के साथ।*
*प्रकर्ष से जो (तू),* अश्व की तरह हिनहिनाते हुए की,
जलपूरक मेघ को प्रेरित करती है, हे शुभ्र वर्ण वाली।। २।।

हे विविध प्रकार से विचरण करने वाली पृथिवी! स्तोता गण उषा की किरणों के साथ ही स्तोत्रों से तेरी स्तुति करते हैं। और तू, हे शुभ्र वर्ण वाली!, जिस प्रकार घुड़सवार अश्व को तीव्र गति से चलाता है, उसी प्रकार जलों से भरे हुए मेघ को बरसने के लिये प्रेरित करती है।

टि. *स्तोता गण* - **स्तोमासः।** स्तोतारः - सा.। दया.। worshippers - W.

*हे विविध प्रकार विचरण करने वाली* - **विचारिणि।** विचरणस्वभावे - वे.। विविधं चरणशीले - सा.। विचारितुं शीलं यस्यास् तत्सम्बुद्धौ - दया.। wanderer in various ways - W.

*रश्मियों के उदय के साथ* - **अक्तुभिः।** हविर्भिः सह - वे.। गमनशीलैः स्तोत्रैः - सा.। रात्रिभिः - दया.। with sacred songs - W. with beams of day - G.

*जलपूरक मेघ को* - **पेरुम्।** पूरकं मेघम् - वे.। सा.। पूरकम् - दया.। मेघ को - सात.। the swollen (cloud) - W. G.

**दृ॒ळ्हा चि॒द् या वन॒स्पती॑न् क्ष्म॒या दर्ध॒र्ष्योज॑सा।**
**यत् ते॑ अ॒भ्रस्य॑ वि॒द्युतो॑ दि॒वो वर्ष॑न्ति वृ॒ष्टय॑ः।। ३।। २९।।**

दृ॒ळ्हा। चि॒त्। या। वन॒स्पती॑न्। क्ष्म॒या। दर्ध॑र्षि। ओज॑सा।
यत्। ते॒। अ॒भ्रस्य॑। वि॒ऽद्युत॑ः। दि॒वः। वर्ष॑न्ति। वृ॒ष्टय॑ः।। ३।।

*दृढ़ से भी जो, बड़े-बड़े वृक्षों को,*
*प्रजाओं के साथ, धारण करती है तू, बल से।*
*जब तेरे लिये जलों वाले से, प्रकाशमान से,*
*अन्तरिक्ष से, बरसाती हैं (जलों को) वृष्टियां।। ३।।*

हे धरती माता! जब वृष्टियां तेरे लिये जलों वाले, विशिष्ट प्रकाश वाले अन्तरिक्ष से जलों को बरसाती हैं, तो तू अपने दृढ़ बल के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी आदि प्रजाओं के साथ बड़े-बड़े वृक्षों को भी धारण करती है। तू स्थावर और जङ्गम सभी पदार्थों को अपने ऊपर धारण कर रही है।

टि. *दृढ़ से भी* - **दृढा चित्।** दृढान् अपि - वे.। सुपां सुलुग् इति तृतीयाया आकारः। दृढया। सा.। with solid (earth) - W. even the strong - G.

*प्रजाओं के साथ* - **क्ष्मया।** क्ष्मा पृथिवी। तात्स्थ्यात् तस्यां वासिनो ऽपि क्ष्मा उच्यन्ते।। अनया पृथिव्या - वे.। भूम्या सह - सा.। पृथिव्या - दया.। with earth - W. on earth - G.

*धारण करती है तू* - **दर्धर्षि।** धारयसि - वे.। सा.। भृशं दधासि - दया.। sustainest - W. graspest - G.

*जलों वाले से* - **अभ्रस्य।** पञ्चम्यर्थे षष्ठी। अभ्राद् अपां हर्तुः। अथवा तवाभ्रस्य मेघस्य वृष्टयः। सा.। of thy cloud - W. G.

*बरसाती हैं (जलों को) वृष्टियां* - **वर्षन्ति वृष्टयः।** 'वृषु सेचन' इति सकर्मको धातुः।। वर्षन्ति उदकानि पर्जन्याः, पतन्ति वा उदकानि - वे.। वृष्टय उदकसंघाता वर्षन्ति पतन्ति - सा.। showers fall - W. the rain-floods descend - G.

## सूक्त ८५

ऋषिः - अत्रिः। देवता - वरुणः। छन्दः - त्रिष्टुप्। अष्टर्चं सूक्तम्।

**प्र स॒म्राजे॑ बृ॒हद॑र्चा गभी॒रं ब्रह्म॑ प्रि॒यं वरु॑णाय श्रु॒ताय॑।**
**वि यो ज॒घान॑ शमि॒तेव॒ चर्मो॑प॒स्तिरे॑ पृथि॒वीं सूर्या॑य।। १।।**

प्र। स॒म्ऽराजे॑। बृ॒हत्। अ॒र्च॒। ग॒भी॒रम्। ब्रह्म॑। प्रि॒यम्। वरु॑णाय। श्रु॒ताय॑।
वि। यः। ज॒घान॑। श॒मि॒ताऽइ॑व। चर्म॑। उ॒प॒ऽस्तिरे॑। पृ॒थि॒वीम्। सूर्या॑य।। १।।

*खूब तेजस्वी के लिये, महान् का गान कर तू, गम्भीर का,*
*स्तोत्र का, प्रिय का, वरुण के लिये, प्रसिद्ध के लिये।*
*विशेषेण जो मारता है (तम को), व्याध जैसे चर्म को,*
*बिछाने के लिये, पृथिवी को, सूर्य के लिये।। १।।*

हे उपासक! तू स्वयं सम्यक् प्रकाशमान और अन्य सब को प्रकाशित करने वाले, अथवा सम्राट्, विराट्, सर्वत्र प्रसिद्ध, समस्त जगत् को आवृत करके स्थित, उस परमेश्वर के लिये अत्यन्त विस्तीर्ण, गम्भीर अर्थों वाले और प्रसन्न करने वाले स्तोत्र का गान कर। जिस प्रकार कोई व्याध जंगली जानवर को मारकर उसकी खाल को धरती पर बिछा देता है, उसी प्रकार वह जगदीश्वर अन्धकार को नष्ट

करके पृथिवी को सूर्य की किरणों के फैलने के लिये विस्तृत कर देता है।

टि. *खूब गान कर तू* - **प्र अर्च**। प्र उच्चारय - वे.। प्रार्चय। प्रोच्चारयेत्यर्थः। सा.। offer a prayer - W. sing forth - G.

*तेजस्वी के लिये* - **सम्राजे**। सर्वेषां राज्ञे - वे.। सम्यग्राजमानायेश्वराय - सा.। यः सम्यग् राजते तस्मै - दया.। to the imperial (Varuṇa) - W. to imperial Ruler - G.

*वरुण के लिये* - **वरुणाय**। उपद्रवस्य निवारकायैतन्नामकाय देवाय - सा.। श्रेष्ठाय - दया.।

*व्याध जैसे चर्म को* - **शमितेव चर्म**। शमिता पशुविशसनकर्त्ता यथा चर्म हन्ति - सा.। यथा यज्ञमयः चर्म - दया.। as the immolator (spreads) the skin - W.

*बिछाने के लिये* - **उपस्तिरे**। उपस्तरणार्थम् - वे.। सा.। has spread - W. to spread - G.

**वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजम् अर्वत्सु पय उस्रियासु।**
**हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्वग्निं दिवि सूर्यम् अदधात् सोमम् अद्रौ।। २।।**

वनेषु। वि। अन्तरिक्षम्। ततान। वाजम्। अर्वत्ऽसु। पयः। उस्रियासु।
हृत्ऽसु। क्रतुम्। वरुणः। अप्ऽसु। अग्निम्। दिवि। सूर्यम्। अदधात्। सोमम्। अद्रौ।। २।।

*रश्मियों में अन्तरिक्ष को विस्तृत कर दिया है,*
*वेग को अश्वों में, दूध को गौओं में।*
*हृदयों में प्रज्ञान को, वरुण ने, जलों में अग्नि को,*
*द्युलोक में सूर्य को धर दिया है, सोम को पर्वत में।। २।।*

समस्त जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाले जगदीश्वर ने अन्तरिक्ष को सूर्य की किरणों में विस्तृत कर दिया है, अथवा उसे वृक्षों की चोटियों पर फैला दिया है। उसने वेग को अश्वों में स्थापित कर दिया है और दूध को गौओं में स्थापित कर दिया है। ज्ञान को हृदय में स्थापित कर दिया है और विद्युदग्नि अथवा वडवानल को जलों में स्थापित कर दिया है। सूर्य को द्युलोक में और सोमवल्ली को पर्वतों में स्थापित कर दिया है।

टि. *रश्मियों में* - **वनेषु**। वनम् इति रश्मिनाम (निघ. १.५)।। वृक्षाग्रेषु - वे.। सा.। किरणेषु जङ्गलेषु वा - दया.। over the tops of the trees - W. in the tree-tops - G.

*अन्तरिक्ष को* - **अन्तरिक्षम्**। जलम् - दया.। the firmament - W. the air - G.

*वेग को* - **वाजम्**। बलम् - वे.। सा.। वेगम् - दया.। strength - W. vigorous speed - G.

*गौओं में* - **उस्रियासु**। गोषु - वे.। उस्रियेति गोनाम। उत्स्राविणो ऽस्यां भोगा इति तद्व्युत्पत्तिः। सा.। पृथिवीषु - दया.।

*प्रज्ञान को* - **क्रतुम्**। प्रज्ञानम् - वे.। दया.। कर्मसङ्कल्पम् - सा.। कर्म करने की शक्ति को - सात.। determination - W. intellect - G.

*अग्नि को* - **अग्निम्**। वैद्युतम् और्वं वा - सा.।

*सूर्य को* - **सूर्यम्**। अर्यमणम् - वे.।

**नीचीनबारं वरुणः कवन्धं प्र ससर्ज रोदसी अन्तरिक्षम्।**
**तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर् व्युनत्ति भूम।। ३।।**

नीचीनऽबारम्। वरुणः। कवन्धम्। प्र। ससर्ज। रोदसी इति। अन्तरिक्षम्।
तेन। विश्वस्य। भुवनस्य। राजा। यवम्। न। वृष्टिः। वि। उनत्ति। भूम।। ३।।

*नीचे की ओर द्वार वाले को, वरुण, मेघ को,*
*चला देता है, द्युलोक एवं भूलोक की, अन्तरिक्ष की, ओर।*
*उसके द्वारा समस्त जगत् का राजा,*
*जौ को जैसे सेचक, गीला करता है लोकों को।। ३।।*

जगत् को व्याप्त करके इसकी रक्षा करने वाला परमेश्वर नीचे की ओर जलों के निर्गमन द्वारों वाले मेघ को पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक की ओर प्रेरित करके बरसा देता है। जलों की इस वर्षा के द्वारा त्रिलोकी पर शासन करने वाला वह परमेश्वर इन लोकों को सुखी और सम्पन्न बनाने के लिये इस प्रकार गीला कर देता है, जिस प्रकार जौ को सींचने वाला किसान जौ के खेत को जलों से गीला कर देता है।

टि. *नीचे की ओर द्वारों वाले को* - **नीचीनबारम्।** नीचीनद्वारम् - वे.। नीचनबारम् अधोमुखबिलम्। अथवा नीचीननिर्गमनबिलम्। सा.। यो नीचप्रदेशे वृष्टिं करोति तम् - दया.। downward opening - W. G.

*मेघ को* - **कवन्धम्।** मेघम् - वे.। दया.। कवनम् उदकम्। तद् धीयते ऽत्रेति कवन्धो मेघः। तम्। अथवा कवन्धम् उदकम्। सा.। cloud - W. the big cask - G.

*जौ को जैसे सेचक* - **यवं न वृष्टिः।** यवम् इव वृष्टिः - वे.। वृष्टिः सेक्ता पुमान् यवम् इव। अथवा वृष्टिर् वरुण इति सम्बन्धः। वर्षकः पर्जन्य इत्यर्थः। अस्मिन् पक्षे यवं पुरुष इवेति पुरुषशब्दो ऽध्याहार्यः। सा.। as the rain bedews the barley - W. G.

*लोकों को* - **भूम।** भूमानि। वचनव्यत्ययः।। पृथिवीम् - वे.। भूमिम् - सा.। the soil - W. earth - G. (pl.) the aggregate of all existing things - MW.

**उनत्ति भूमिं पृथिवीम् उत द्यां यदा दुग्धं वरुणो वष्ट्याद् इत्।**
**सम् अभ्रेण वसत पर्वतासस् तविषीयन्तः श्रथयन्त वीराः।। ४।।**

उनत्ति। भूमिम्। पृथिवीम्। उत। द्याम्। यदा। दुग्धम्। वरुणः। वष्टि। आत्। इत्।
सम्। अभ्रेण। वसत। पर्वतासः। तविषीऽयन्तः। श्रथयन्त। वीराः।। ४।।

*गीला कर देता है भूमि को, अन्तरिक्ष को और द्युलोक को,*
*जब दुही हुई हवि को वरुण चाहता है, उसके पश्चात् ही।*
*सम्यक् मेघ से आच्छादित कर लेते हैं, पर्वत (स्वयं को),*
*(शत्रु पर) बलों को चाहने वाले, ढीला कर लेते हैं वीर (स्वयं को)।। ४।।*

जगत् को व्याप्त करके इसकी रक्षा और पालन करने वाला परमेश्वर जब प्रजाओं के लिये परिश्रम से उत्पन्न किये हुए अन्नों तथा देवों के लिये हवि के रूप में दोहन किये हुए दूध, घृत और

सोम की कामना करता है, तो उसके तुरन्त पश्चात् पर्वत मेघों से आच्छादित हो जाते हैं। वह प्रभु भूमि, अन्तरिक्ष और द्युलोक को जलों से सराबोर कर देता है। अत्यधिक वृष्टि के कारण शत्रुओं पर अपने बल से विजय की इच्छा वाले वीर सैनिक भी अपने को और अपने प्रयासों को ढीला कर देते हैं। वे वर्षा ऋतु में युद्धों को रोक देते हैं। वाल्मीकि ने वर्षा ऋतु में राजाओं के द्वारा अपनी विजययात्रा को रोक देने का वर्णन इस प्रकार किया है - स्थिता हि यात्रा वसुधाधिपानां प्रवासिनो यान्ति नराः स्वदेशान्। (रा. ४.२८.१५)।

टि. *अन्तरिक्ष को* - **पृथिवीम्।** अन्तरिक्षम् - वे.। अन्तरिक्षस्यापि पृथिवीशब्दवाच्यत्वम् पूर्वम् उक्तम्। सा.। mid-air - W. the sky - G.

*दुही हुई हवि को* - **दुग्धम्।** वृष्ट्युदकम् - वे.। उदकपूरणम्। अथवा दुग्धम् उदकम्। तेन तत्कार्यम् ओषध्यादिकं लक्ष्यते। सा.। the milk (of the cloud) - W. milk - G.

*सम्यक् मेघ से आच्छादित कर लेते हैं पर्वत (स्वयं को)* - **सम् अभ्रेण वसत पर्वतासः।** संवासं कुर्वन्ति शिलोच्चयाः मेघेन - वे.। सं वसत समाच्छादयन्ति पर्वतासः पर्ववन्तो ऽद्रयो ऽभ्रेण मेघेन - सा.। the mountains clothe (their summits) with the rain-cloud - W. G.

*(शत्रु पर) बलों को चाहने वाले* - **तविषीयन्तः।** शत्रुषु बलम् इच्छन्तः - वे.। बलम् इच्छन्तः - सा.। exulting in their strength - W. putting forth their vigour - G.

*ढीला कर लेते हैं वीर (स्वयं को)* - **श्रथयन्त वीराः।** पार्थिवाः वर्षसद्भावाय श्लथनं कुर्वन्ति, भिन्नाः स्वेषु राष्ट्रेषु गच्छन्ति - वे.। वीरा विशेषेण वृष्टेः प्रेरयितारो मरुतः श्रथयन्ति मेघान् - सा.। the heroes (Maruts) compel (the clouds) to relax - W. the Heroes loose them - G.

**इमाम् ऊ ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम्।**
**मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण।। ५।। ३०।।**

इमाम्। ऊँ इति। सु। आसुरस्य। श्रुतस्य। महीम्। मायाम्। वरुणस्य। प्र। वोचम्।
मानेनऽइव। तस्थिऽवान्। अन्तरिक्षे। वि। यः। ममे। पृथिवीम्। सूर्येण।। ५।।

*इसका निश्चय से सुष्ठु, प्राणदाता की, प्रसिद्ध की,*
*महान् निर्माण शक्ति का, वरुण की, खूब बखान करता हूँ मैं।*
*मापदण्ड के द्वारा जिस प्रकार, स्थित होकर अन्तरिक्ष में,*
*विशेषेण जिसने माप दिया है पृथिवी को, सूर्य के द्वारा।। ५।।*

प्राणदाता, जगत्प्रसिद्ध और समस्त जगत् को आवृत करके स्थित उस परमेश्वर की इस महान् सृष्टि को उत्पन्न करने वाली शक्ति की मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ, जिस परमात्मा ने आकाश में स्थित होकर पृथिवी को सूर्य के द्वारा इस प्रकार माप दिया है, जिस प्रकार कपड़े को गज के द्वारा माप दिया जाता है।

टि. *प्राणदाता की* - **आसुरस्य।** असुरार्थ आसुरशब्दः। स्वार्थे तद्धितप्रत्ययः।। असुराणां हन्तुः - वे.। आसुरस्यासुरसम्बन्धिनः। असुराणाम् अस्य च वध्यघातकभावः सम्बन्धः। असुरहन्तुर् इत्यर्थः। अथवासुरो मेघः। प्राणदानात् तत्सम्बन्धिनः। सा.। मेघभवस्य - दया.। प्राणदाता की - सात.। the

destroyer of the Asuras - W. of the Lord immortal - G.

*निर्माण शक्ति का* - **मायाम्**। प्रज्ञाम् - सा.। दया.। device - W. deed of magic - G.

*माप दिया है* - **ममे**। परिच्छिनत्ति - वे.। सा.। सृजति - दया.। has meted - W. G.

**इमाम् ऊ नु कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिर् आ दधर्ष।**
**एकं यद् उद्ना न पृणन्त्येनीर् आसिञ्चन्तीर् अवनयः समुद्रम्।। ६।।**

इमाम्। ऊँ इति। नु। कविऽतमस्य। मायाम्। महीम्। देवस्य। नकिः। आ। दधर्ष।
एकम्। यत्। उद्ना। न। पृणन्ति। एनीः। आऽसिञ्चन्तीः। अवनयः। समुद्रम्।। ६।।

*इसको निश्चय से आज तक, अतिशय क्रान्तदर्शी की माया को,*
*महान् को, देव की, नहीं कोई सर्वतः आक्रान्त कर सका है।*
*एक को (भी) चूँकि जल से नहीं पूर सकती हैं, शुभ्र वर्णों वाली,*
*सब ओर से सींचती हुई नदियां, समुद्र को।। ६।।*

समस्त जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाले, अतिशय क्रान्तदर्शी, देवों के देव परमेश्वर की इस माया का, निर्माण चातुरी का, कोई भी आज तक अतिक्रमण नहीं कर सका है, क्योंकि स्वच्छ शुभ्र जलों वाली, सब ओर से आकर अपने जलों को समुद्र में डालने वाली वाली असंख्य नदियां, अपने जलों से एक समुद्र को भी भर नहीं पा रही हैं।

सायणाचार्य ने इस मन्त्र के भाष्य में स्पष्ट लिखा है, "यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि यहाँ अन्तरिक्ष के विस्तार से लेकर समुद्र के आपूरण पर्यन्त कर्म परमेश्वर के सम्बन्ध में ही उचित है, न कि वरुण के, क्योंकि वही वरुण आदि के रूप में अवस्थित है। अत्रान्तरिक्षविस्तारादि-समुद्रापूरणपर्यन्तं कर्म परमेश्वरस्यैवोचितं न वरुणस्येति न वाच्यं तस्य वरुणादिरूपावस्थानात्।"

टि. *नहीं कोई सर्वतः आक्रान्त कर सका है* - **नकिः आ दधर्ष**। न कश्चिद् आ धर्षयति - वे.। नकिर् नैवादधर्ष। न हिनस्ति कश्चिद् अपि। सा.। आज तक कोई नष्ट नहीं कर सका - सात.। no one has counteracted - W. none hath ever let or hindered - G.

*शुभ्र वर्णों वाली* - **एनीः**। श्वेतवर्णाः - वे.। एन्यः शुभ्रा गमनशीला वा - सा.। मृगस्त्रिय इव धावन्त्यः - दया.। प्रवाह वाली - सात.। lucid - W. G.

*नदियां* - **अवनयः**। नद्यः - वे.। सा.। अवन्ति यास् ता नद्यः। अवनय इति नदीनाम (निघ. १. १३)। दया.। rivers - W. G.

**अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा सखायं वा सदम् इद् भ्रातरं वा।**
**वेशं वा नित्यं वरुणारणं वा यत् सीम् आगश् चकृमा शिश्रथस् तत्।। ७।।**

अर्यम्यम्। वरुण। मित्र्यम्। वा। सखायम्। वा। सदम्। इत्। भ्रातरम्। वा।
वेशम्। वा। नित्यम्। वरुण। अरणम्। वा। यत्। सीम्। आगः। चकृम। शिश्रथः। तत्।। ७।।

*सज्जन के प्रति, हे वरुण!, मित्र के प्रति अथवा,*
*सखा के प्रति अथवा सदा ही, भाई के प्रति अथवा।*
*पड़ौसी के प्रति अथवा निरन्तर, हे वरुण!, अदाता के प्रति अथवा,*

*जो वह अपराध किया है हमने, परे कर दे उसको।। ७।।*

हे जगत् को व्याप्त करके इसकी रक्षा करने वाले परमेश्वर! हम जो अपराध गुरु के प्रति, अथवा मित्र के प्रति, अथवा साथी के प्रति, अथवा भाई के प्रति, अथवा पड़ौसी के प्रति, अथवा किसी न देने वाले के प्रति सदा और निरन्तर करते चले आए हैं, उसको तू हमसे दूर कर दे।

टि. *सज्जन के प्रति* – **अर्यम्यम्।** अर्यमैवार्यम्यः यो अस्मभ्यं प्रयच्छति तम् – वे.। अर्यमैवार्यम्यः। स्वार्थिको यत्। अर्तेर् इदं रूपम्। प्रदातारम् इत्यर्थः। अथवेरणान् मननाच् च शास्तीत्यर्यमा गुरुः। तम्। सा.। अर्यमसु न्यायधीशेषु भवम् – दया.। श्रेष्ठ सज्जन पुरुष के प्रति – सात.। against a benefactor - W. against the man who loves us - G.

*मित्र के प्रति* – **मित्र्यम्।** यो वा मित्रं भवति तम् – वे.। ञिमिदा स्नेहन इत्यस्मान् मित्रम्। स्वार्थिको यत्। अनुरक्तम् इत्यर्थः। सा.। मित्रेषु भवम् – दया.। against a friend - W.

*पड़ौसी के प्रति* – **वेशम्।** समीपगृहस्थः तम् – वे.। निकटनिकेतनवर्तिनम् – सा.। यो विशति तम् – दया.। against a near neighbour - W. G.

*अदाता के प्रति* – **अरणम्।** यो वा गृहम् आगतः तम् – वे.। अशब्दम् इत्यर्थः। अथवारमणम् अदातारम्। सा.। उदकम् – दया.। against a dumb man - W. against a stranger - G.

*परे कर दे उसको* – **शिश्रथः तत्।** तत् विश्लथय – वे.। तद् अस्मत्तो विनाशय – सा.। प्रयतस्व हिन्धि वा तत् – दया.।

**कि॒त॒वासो॒ यद् रि॑रि॒पुर् न दी॒वि यद् वा॑ घा स॒त्यम् उ॒त यन् न वि॒द्म।**
**सर्वा॒ ता वि ष्य॑ शिथि॒रेव॑ दे॒वाधा॑ ते स्याम वरुण प्रि॒यास॑ः।। ८।। ३१।।**

कि॒त॒वास॑ः। यत्। रि॒रि॒पुः। न। दी॒वि। यत्। वा॒। घ॒। स॒त्यम्। उ॒त। यत्। न। वि॒द्म।
सर्वा॑। ता। वि। स्य॒। शि॒थि॒राऽइ॑व। दे॒व॒। अध॑। ते॒। स्या॒म॒। व॒रु॒ण॒। प्रि॒यास॑ः।। ८।।

*जुआरी जिस प्रकार लिप्त होते हैं (पाप से), द्यूतक्रीड़ा में,*
*(वैसे यदि हम पाप से लिप्त होवें), चाहे सत्य है, और जिसे नहीं जानते हैं हम।*
*उन सब को खोल दे तू, शिथिल (बन्धन वाले फलों) की तरह, हे देव!,*
*और तेरे होवें हम, हे वरुण!, प्रिय (सदा ही)।। ८।।*

हे समस्त जगत् को आवृत करके इसकी रक्षा करने वाले जगदीश्वर! जिस प्रकार जुआरी लोग जुआ खेलकर पाप से लिप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार यदि हम किसी पापकर्म से लिप्त हो जाएं, चाहे वह सचमुच हमने किया है, चाहे वह दूसरों के द्वारा हमपर लगाया हुआ मिथ्यारोप है, चाहे वह हमने जानबूझ कर किया है और चाहे अनजाने में हमसे हो गया है, तू ऐसे सब पापकर्मों को शिथिल बन्धन वाले, अर्थात् अनायास ही टहनी से गिर जाने वाले फलों की तरह, खोलकर हमसे अलग कर दे। हे प्रभो! हम सब प्रकार के दोषों और अपराधों से मुक्त होकर सदा तुझे प्यार करने वाले और तुझसे प्यार किये जाने वाले होवें।

टि. *जुआरी* – **कितवासः।** कितवाः द्यूतकृतः। किं तवास्ति सर्वं मया जितम् इति वदतीति कितवः। सा.। द्यूतकाराः – दया.। gamblers - W. gamesters - G.

*लिप्त होते हैं* - **रिरिपुः।** रपतेश् शब्दार्थस्यैतद् रूपम् छान्दसम्। रेपिम उक्तवन्तो वयम् इत्यर्थः। वर. (नि.स. ४२)। लेपयन्ति पापम् आरोपयन्ति - सा.। आरोपयन्ति - दया.। दोषारोपण करते हैं - सात.। cheat - W. have cheated - G.

*द्यूतक्रीड़ा में* - **दीवि।** देवने, तत्रत्यं यद् ऋणम् अस्माकम् अस्तीत्यर्थः - वे.। देवने। सा.। अत्र पुरस्ताद् उपचारो ऽपि नकार उपमार्थीयः। सा.। द्यूतकर्मणि - दया.। at play - W. G.

*चाहे सत्य है* - **यत् वा सत्यम्।** ऋणं वा बुद्धिपूर्वं कृतम् - वे.। यत् पापं सत्यम् आरोपम् अन्तरेण कृतवन्तः - सा.। (we commit offences) knowingly - W. (have sinned) of purpose - G.

*खोल दे तू शिथिल बन्धनों की तरह* - **वि स्य शिथिरा इव।** विश्लथय शिथिलानीव बन्धनानि - वे.। शिथिलबन्धनानि फलानीव विमोचय - सा.। extricate us (from them all), as if from loosened (bonds) - W. cast (all these sins) away like loosened fetters - G.

## सूक्त ८६

ऋषिः - अत्रिः। देवता - इन्द्राग्नी। छन्दः - १-५ अनुष्टुप्, ६ विराट्पूर्वा। आद्यौ दशकाव् अष्टकास् त्रयः (अनु. ९.११) इति परिभाषितत्वात्। षड्चं सूक्तम्।

**इन्द्रा॑ग्नी॒ यम् अव॑थ उ॒भा वाजे॑षु॒ मर्त्य॑म्।**
**दृ॒ळ्हा चि॒त् स प्र भे॑दति द्यु॒म्ना वाणी॑रिव त्रि॒तः।। १।।**

इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। यम्। अव॑थः। उ॒भा। वाजे॑षु। मर्त्य॑म्।
दृ॒ळ्हा। चि॒त्। सः। प्र। भे॒द॒ति॒। द्यु॒म्ना। वाणीः॑ऽइव। त्रि॒तः।। १।।

*हे इन्द्र और अग्नि! जिसको बढ़ाते हो तुम,*
*दोनों, संघर्षों में, मरणधर्मा मनुष्य को।*
*दृढ़ों का भी वह प्रकर्ष से भेदन करता है,*
*ऐश्वर्यों का (शत्रु के), वाणियों का जैसे पारङ्गत ज्ञानी।। १।।*

हे परमेश्वर की ऐश्वर्य प्रदान कराने वाली और सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाली दिव्य शक्तियो! तुम दोनों जिस भी मरणधर्मा मनुष्य को जीवन के संघर्षों में आगे बढ़ाती हो, वह तुमसे बल और उत्साह प्राप्त करके दुष्ट पापी जनों के ऐश्वर्यों का इस प्रकार भेदन कर देता है, जिस प्रकार कोई पारंगत ज्ञानी प्रतिवादी के कथनों का निराकरण कर देता है।

टि. *संघर्षों में* - **वाजेषु।** सङ्ग्रामेषु - वे.। सा.। दया.। in fight - G.

*ऐश्वर्यों को* - **द्युम्ना।** शत्रूणाम् अन्नानि - वे.। द्योतमानानि धनानि शत्रुसम्बन्धीनि - सा.। धनानि यशांसि वा - दया.। treasures (of his enemies) - W. wealth - G.

*वाणियों को जैसे पारंगत ज्ञानी* - **वाणीः इव त्रितः।** त्रितस् तीर्णतमो भवति मेधया - या. (नि. ४.६)। उदकानीव त्रितः ऋषिः जननकाले - वे.। त्रित ऋषिर् वाणीर् इव प्रतिवादिवाक्यानीव। अथवा त्रिषु स्थानेषु वर्तमानो ऽग्निः शत्रूणां वाक्यानीव। सा.। as Trita (confutes) the words (of his

opponents) - W. as Trita burst his way through reeds - G.

**या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या।**
**या पञ्च चर्षणीर् अभीन्द्राग्नी ता हवामहे।। २।।**

या। पृतनासु। दुस्तरा। या। वाजेषु। श्रवाय्या।
या। पञ्च। चर्षणीः। अभि। इन्द्राग्नी इति। ता। हवामहे।। २।।

*जो सेनाओं में अपराजेय (हैं),*
*जो (हैं) संघर्षों में श्रवणीय।*
*जो पांच मनुष्य वर्गों की, रक्षा करते हैं,*
*इन्द्र और अग्नि को, उन दोनों को बुलाते हैं हम।। २।।*

परमेश्वर की ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली और सन्मार्ग दिखाने वाली जिन दिव्य शक्तियों को संसार में निरन्तर चलने वाले इस देवासुर संग्राम में दुष्ट आसुरी शक्तियों की सेनाएं कभी पराजित नहीं कर सकतीं, जीवन के संघर्षों में जो हम मनुष्यों के द्वारा श्रवणीय, स्मरणीय और प्रशंसनीय हैं, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद, इन समाज के पांच वर्गों की सदा रक्षा करती हैं, उनका हम अपनी रक्षा के लिये सदा आह्वान करते हैं।

टि. *संग्रामों में* - **पृतनासु।** सेनासु - वे.। दया.। in conflicts - W. in war - G.

*श्रवणीय* - **श्रवाय्या।** श्रवणीयौ - वे.। श्रवाय्यौ स्तुत्यौ - सा.। प्रशंसनीयौ - दया.। renowned - W. worthy to be renowned - G.

*पांच मनुष्य वर्गों की रक्षा करते हैं* - **पञ्च चर्षणीः अभि।** यौ पञ्च जनान् अभि भवतः - वे.। चर्षणयो मनुष्याः। तान् अभि। रक्षत इति शेषः। सा.। पञ्च प्राणान् मनुष्यान् वा आभिमुख्येन - दया.। who protect the five (classes of) men - W. Lords of the Fivefold People - G.

**तयोर् इद् अमवच् छवस् तिग्मा दिद्युन् मघोनोः।**
**प्रति द्रुणा गभस्त्योर् गवां वृत्रघ्न एषते।। ३।।**

तयोः। इत्। अमऽवत्। शवः। तिग्मा। दिद्युत्। मघोनोः।
प्रति। द्रुणा। गभस्त्योः। गवाम्। वृत्रऽघ्ने। आ। ईषते।। ३।।

*उन दोनों का ही, अभिभावुक (है) बल,*
*तीक्ष्ण (है) तेज, धनदाताओं का।*
*प्रति (उनके) सोमद्रोण के साथ, दोनों हाथों में,*
*गौओं के लिये, आवरकहनन के लिये, जाता है (उपासक)।। ३।।*

लौकिक और अलौकिक धनों को प्रदान करने वाली इन दोनों दिव्य शक्तियों का बल दुष्ट हिंसक जनों को अभिभूत करने वाला है। इनका तेज अत्यन्त तीक्ष्ण है। उपासक अपने दोनों हाथों में सोमपात्र के साथ अर्थात् हवि, नैवेद्य आदि समर्पणों के साथ सुखसाधनों पर एकाधिकार करके बैठ जाने वाली आवरक आसुरी शक्तियों के विनाश और जल, प्रकाश, ज्ञान आदि सुखसाधनों की प्राप्ति के लिये इनकी शरण में जाता है।

टि. *अभिभावुक (है) बल* - **अमवत् शवः**। अभिभवत् बलम् - वे.। सा.। गृह्वत् बलम् - दया.। overpowering is the might - W. impetuous is their strength - G.

*तीक्ष्ण (है) तेज* - **तिग्मा दिद्युत्**। तीक्ष्णम् आयुधम् - वे.। दिद्युत् वज्रं तिग्मा तीक्ष्णं वर्तते - सा.। the bright (lightning) is shining - W. keen (is) the lightning - G.

*सोमद्रोण के साथ, दोनों हाथों में* - **द्रुणा गभस्त्योः**। तत्र हस्तयोः स्थितेन द्रुममयेन चमसेन - वे.। द्रुणा द्रुविकारेण गमनशीलेन वैकेन रथेन। गभस्त्योर् हस्तयोः। सा.। as they go together in one chariot ; in the hands (of Maghavan) - W. from their arms (speed) with the car - G.

*गौओं के लिये, आवरकहनन के लिये जाता है* - **गवाम् वृत्रघ्ने आ ईषते**। अध्वर्युः गच्छति इन्द्राय गोसिद्ध्यर्थम् - वे.। गवां लाभाय, वृत्रघ्न आवरकमेघहननाय तथाविधवृत्रासुरवधाय वा प्रतीषते प्रतिगच्छतः - सा.। गवाम् किरणानाम्, वृत्रघ्ने मेघहन्त्रे, आ ईषते हिनस्ति - दया.। they go together for the (recovery of the) cows, and the destruction of Vṛtra - W. speeds to Vṛtra's slayer for the kine - G.

**ता वाम् एषे रथानाम् इन्द्राग्नी हवामहे।**
**पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा।। ४।।**

ता। वाम्। एषे। रथानाम्। इन्द्राग्नी इति। हवामहे।
पती इति। तुरस्य। राधसः। विद्वांसा। गिर्वणःऽतमा।। ४।।

*उन तुम दोनों को, भेजने के लिये रथों के,*
*हे इन्द्र और अग्नि!, बुलाते हैं हम।*
*स्वामियों को, शीघ्र आने वाले धन के,*
*सर्वज्ञों को, स्तुतियों से अतिशय सेवनीयों को।। ४।।*

हे परमेश्वर की ऐश्वर्य प्रदान करने वाली और मार्गदर्शन करने वाली दिव्य शक्तियो! हम अच्छे शरीररूपी रथ प्राप्त कराने के लिये तुम्हारा आह्वान करते हैं। तुम अतिशीघ्र प्राप्त होने वाले धन के स्वामी हो। तुम सर्वज्ञ हो और स्तुतियों के द्वारा सेवन के योग्य हो।

टि. *भेजने के लिये रथों के* - **एषे रथानाम्**। रथानां गमनाय - वे.। युद्धे रथानाम् एषे प्रेरणाय - सा.। for sending your chariots - W. G.

*शीघ्र आने वाले धन के* - **तुरस्य राधसः**। तारकस्य धनस्य - वे.। तुरस्य जङ्गमरूपस्य राधसो धनादिलक्षणस्य - सा.। शीघ्रं सुखकरस्य धनस्य - दया.। प्रेरणा देने वाले ऐश्वर्यों के - सात.। of moveable wealth - W. of quick coming bounty - G.

*अतिशय सेवनीयों को* - **गिर्वणस्तमा**। अतिशयेन गीर्भिर् वननीयौ - वे.। सा.। अतिशयेन सुशिक्षां वाचं सेवमानौ - दया.। most deserving of praise - W. chief lovers of the song - G.

**ता वृधन्ताव् अनु द्यून् मर्ताय देवाव् अदभा।**
**अर्हन्ता चित् पुरो दधे ऽंशेव देवाव् अर्वते।। ५।।**

ता। वृधन्तौ। अनु। द्यून्। मर्ताय। देवौ। अदभा।

अर्हन्ता। चित्। पुरः। दुधे। अंशाऽइव। देवौ। अर्वते।। ५।।

*उन दोनों को, बढ़ते हुओं को, सब दिनों में,*

*मनुष्य के लिये, दाताओं को, अहिंसनीयों को।*

*पूजनीयों को अतिशय, सम्मुख स्थापित करता हूँ मैं,*

*दो अंशों की तरह, देवों को, बल के लिये।। ५।।*

मैं उपासक, ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली और सन्मार्ग पर आगे बढ़ाने वाली परमेश्वर की दिव्य शक्तियों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक बल की प्राप्ति के लिये अपने सामने स्थापित करता हूँ, अर्थात् उनकी पूजा और अर्चना करता हूँ, जो प्रतिदिन मनुष्यों की भलाई के लिये वृद्धि को ही प्राप्त होती रहती हैं, जो दान दिव्यता आदि उत्तम गुणों वाली हैं, जो किसी के भी द्वारा हिंसित नहीं की जा सकतीं, जो सदा अत्यधिक पूजा के योग्य हैं और जो एक ही पदार्थ के दो भागों की तरह एक-दूसरे की पूरक हैं।

टि. *बढ़ते हुओं को* - **वृधन्तौ।** वर्धमानौ - वे.। सदा प्रवृद्धाव् इत्यर्थः - सा.। वर्धमानौ वर्धयन्तौ वा - दया.। who are increasing - W. who give increase - G.

*अहिंसनीयों को* - **अदभा।** हिंसारहितौ - वे.। अहिंस्यौ - सा.। अहिंसकौ - दया.। irresistible - W. without guile - G.

दो *अंशों की तरह* - **अंशा इव।** यथैकस्यांशौ समानाकारौ। यद्वा अंशश् च भगश् चादित्यौ द्वौ। वे.। अंशो नाम द्वादशादित्यमध्यवर्ती देवः। स भगस्याप्युपलक्षकः। अंशाव् इव। आदित्याव् इव। दीप्ताव् इत्यर्थः। सा.। भागम् इव - दया.। सोमरस के समान - सात.। एक ही पदार्थ के दो पूरक भागों के समान - जय.। like two Ādityas - W. two gods as partners - G.

*बल के लिये* - **अर्वते।** भ्रातृव्याय मर्ताय - वे.। अश्वलाभाय - सा.। विज्ञानाय - दया.। for the sake of obtaining horses - W. for my horse - G.

**एवेन्द्राग्निभ्याम् अहावि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतम् अद्रिभिः।**

**ता सूरिषु श्रवो बृहद् रयिं गृणत्सु दिधृतम्**

**इषं गृणत्सु दिधृतम्।। ६।। ३२।।**

एव। इन्द्राग्निऽभ्याम्। अहावि। हव्यम्। शूष्यम्। घृतम्। न। पूतम्। अद्रिऽभिः।

ता। सूरिषु। श्रवः। बृहत्। रयिम्। गृणत्ऽसु। दिधृतम्।

इषम्। गृणत्ऽसु। दिधृतम्।। ६।।

*इस प्रकार इन्द्र और अग्नि के लिये, दिया जाता है हव्य,*

*बलदायक तेजस्वी सोम की तरह, छाने हुए की, (कूटकर) पत्थरों से।*

*वे दोनों ज्ञानियों में, यश को, महान् को,*

*धन को, स्तुतिगान करने वालों में, स्थापित करो तुम,*

*अन्न को, स्तुतिगान करने वालों में, स्थापित करो तुम।। ६।।*

इस प्रकार उपासकों के द्वारा पूजा-अर्चना करते हुए परमेश्वर की ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली

और सब का मार्गदर्शन करने वाली दिव्य शक्तियों को पत्थरों से कूटकर छाने हुए बलदायक, तेजस्वी सोमरस की तरह हवि आदि नैवेद्य प्रदान किया जाता है। हे परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! वे तुम दोनों स्तुतियों का गान करने वाले ज्ञानी जनों में महान् यश को स्थापित करो, धन को स्थापित करो और अन्न को स्थापित करो।

टि. *दिया जाता है हव्य* - **अहावि हव्यम्**। हु दानादानयोः।। हव्यं हूयते - वे.। हविः परित्यक्तम् आसीत् - सा.। the (invigorating) oblation has been offered - W.

*बलदायक तेजस्वी सोम की तरह (कूटकर) छाने हुए की* - **शूष्यं घृतं न पूतम्**। बलकरं घृतम् इव अभिषुतं सोममयम् - वे.। बलकरम् अभिषुतं सोमरसम् इव - सा.। शूषे बले भवम् आज्यम् इव पवित्रम् - दया. like the Soma-juice expressed (by the sounding stones) . Mention of stones restricts the sense of *ghṛtam* to the *Soma* effusion. W. the strength-bestowing (offering has been paid), as butter, purified by stones - G.

*यश को* - **श्रवः**। कीर्त्तिम् - वे.। अन्नं यशो वा - सा.। food - W. renown - G.

*स्थापित करो* - **दिधृतम्**। धारयतम् - वे.। सा.। धरतम् - दया.। bestow - W. deal - G.

## सूक्त ८७

ऋषिः - एवयामरुद् आत्रेयः। देवता - मरुतः। छन्दः - अतिजगती। नवर्चं सूक्तम्।

**प्र वो मुहे मुतयो यन्तु विष्णवे मुरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।**
**प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तुवसे भुन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे।। १।।**

प्र। वः। मुहे। मुतयः। यन्तु। विष्णवे। मुरुत्वते। गिरिऽजाः। एवयामरुत्।
प्र। शर्धाय। प्रऽयज्यवे। सुऽखादये। तुवसे। भुन्दत्ऽइष्टये। धुनिऽव्रताय। शवसे।। १।।

*प्रकर्ष से तुम्हारी, महान् के लिये, स्तुतियां गमन करें, विष्णु के लिये,*
*मरुतों के स्वामी के लिये, वाणी से उत्पन्न, सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ।*
*प्रकर्ष से मरुत्समूह के लिये, अति पूज्य के लिये, सुन्दर आभूषण वाले के लिये,*
*बलवान् के लिये, स्तुत्य इष्टिमान् के लिये, अरिकम्पनव्रती के लिये, वेगवान् के लिये।। १।।*

हे सन्मार्ग का अनुसरण करने वाली, सत्कर्मों में सहायक, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! वाणी से उत्पन्न होने वाली तुम्हारी स्तुतियां और उत्तम विचार दिव्य शक्तियों के स्वामी, सर्वव्यापक, महान् परमेश्वर की ओर प्रकर्ष से गमन करें। इसी प्रकार हम उपासकों के उत्तम विचार और स्तुतियां भी अत्यन्त पूजा के योग्य, अतीव मनोहर, बलवान्, स्तुति के योग्य शुभ कर्मों को करने वाली, दूसरों को न देने वाले कृपण जनों को कँपा डालने के व्रतों वाली, अत्यधिक वेग वाली परमेश्वर की, सत्कर्मों में सहायक, दिव्य शक्तियों की ओर प्रकर्ष से गमन करें।

टि. *वाणी से उत्पन्न* - **गिरिजाः**। गिरेर् जनयिता भवति अयम् - वे.। गिरिजा वाचि निष्पन्नाः - सा.। ये गिरौ मेघे जाताः - दया.। voice-born - W. born in song - G.

*हे सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ* - **एवयामरुत्**। एतन्नामकस्य ऋषेः। षष्ठ्या लुक्। सा.। य एवान्

प्रापकान् यान्ति तेषां यो मरुन् मनुष्यः - दया.। of Evayāmrut - W. Evayāmarut. Professor Wilson, following Sāyaṇa, translates : 'May the voice-born praises of Evayāmarut reach you, Viṣṇu attended by the Maruts,' and observes that 'the name of the Ṛṣi, Evayāmarut remains unaltered in its case termination, whatever may be its syntactical connection with the rest of the sentence.' This is manifestly impossible, and the word is certainly not a proper name. Evayā, in I.156.1, ' going the wanted way' is an epithet of Viṣṇu, and professor Roth thinks that Evayāmarut is an exclamation meaning, O Viṣṇu and Maruts!, or, O Maruts who speed around!, But in both these cases it would be necessary to change the accent, both in this hymn and in the Sāmaveda where stanza 1 occurs again. professor Grassmann suggests, 'speeding (like Viṣṇu) in the Marut host,' or, 'The speeding Viṣṇu is the true Marut, or Lord of the Maruts,' as the probable meaning of the word. I find Evayāmarut unintelligible and, as Professor Ludwig has done, leave it untranslated, as a mere sacrificial exclamation. See Vedic Hymns (Sacred Books of the East) Part I. p.365 - G.

*स्तुत्य इष्टिमान् के लिये* - **भन्ददिष्टये।** स्तूयमानयज्ञाय - वे.। स्तुतिरूपेष्टिर् यस्य तद् भन्ददिष्टिः। तस्मै। सा.। कल्याणसुखसङ्गतये - दया.। praise-loving - W.

*अरिकम्पनव्रती के लिये* - **धुनिव्रताय।** धूननंकर्मणे - वे.। मेघानां चालनं कर्म यस्य तादृशाय - सा.। धुनानि कम्पितानि व्रतानि यस्य तस्मै - दया.। cloud-scattering - W. that roars - G.

**प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं**
**प्र विद्मना ब्रुवत एवयामरुत्।**
**क्रत्वा तद् वो मरुतो नाधृषे शवो**
**दाना मह्ना तद् एषाम् अधृष्टासो नाद्रयः ।। २।।**

प्र। ये। जाताः। महिना। ये। च। नु। स्वयम्। प्र। विद्मना। ब्रुवत। एवयामरुत्।
क्रत्वा। तत्। वः। मरुतः। न। आऽधृषे। शवः। दाना। मह्ना। तत्। एषाम्। अधृष्टासः। न। अद्रयः ।। २।।

*प्रकर्ष से जो उत्पन्न हुए महान् (इन्द्र) के साथ, और जो अब स्वयं,*
*प्रकर्ष से ज्ञान के द्वारा स्तुतिगान करते हैं, सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ।*
*कर्म के कारण वह तुम्हारा, हे मरुतो!, नहीं धर्षण के लिये है बल,*
*दान के, महान् के कारण इसलिये अपने, अधृष्य (हैं ये) पर्वतों की तरह।। २।।*

हे सन्मार्ग का अनुसरण करने वाली, सत्कर्मों में सहायक, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! तुम सृष्टिकर्ता परमेश्वर के साथ ही इस जगत् में प्रादुर्भूत होती हो और अपने ज्ञान के द्वारा स्वयं उस प्रभु का स्तुतिगान करती हो। तुम्हारे कर्म और प्रज्ञा के कारण वह तुम्हारा बल किसी के भी द्वारा पराभूत नहीं किया जा सकता। अपनी महान् दानवत्ता के कारण तुम पर्वतों की तरह अपराजेय हो।

टि. *महान् (इन्द्र) के साथ* - **महिना।** महता यज्ञेन सह - वे.। महता विष्णुना इन्द्रेण वा सह - सा.। महत्त्वेन - दया.। with the great (Indra) - W. with might - G.

*प्रकर्ष से ज्ञान के द्वारा स्तुतिगान करते हैं* – **प्र विद्मना ब्रुवत।** ये च स्वयम् एव प्रादुर्भूताः प्र ब्रुवते वेदनेनैव – वे.। विद्मना यज्ञगमनविषयज्ञानेन सह प्रजाताः प्रादुर्भूतास् तान् मरुत एवयामरुद् ब्रुवते स्तौति। ब्रुवत इति व्यत्ययेन बहुवचनम्। एकवचने वा छान्दसः शः। निघाताभावश् छान्दसः। सा.। विज्ञानेन उपदिशन्ति – दया.। by their own knowledge told it forth - G.

*नहीं धर्षण के लिये है* – **न आधृषे।** न आधर्षणाय भवति – वे.। कैश्चिद् अप्याधर्षणीयं न भवति – सा.। दया.। is not to be resisted - W. no wisdom comprehendeth - G.

*दान के, महान् के कारण* – **दाना मह्ना।** दानेन महता – वे.। दानाभिमतदानेन मह्ना महत्त्वेन चोपेतम् – सा.। दानेन महत्त्वेन – दयां.। with your infinite liberality - W. through their gifts' greatness - G.

**प्र ये दि॒वो बृ॑ह॒तः शृ॑ण्वि॒रे गि॒रा**
**सु॒शुक्वा॑नः सु॒भ्व॑ ए॒वया॑मरुत्।**
**न येषा॒म् इरी॑ स॒धस्थ॒ ईष्ट॒ आँ**
**अ॒ग्नयो॒ न स्ववि॑द्युत॒ः प्र स्प॒न्द्रासो॒ धुनी॑नाम्।। ३।।**

प्र। ये। दि॒वः। बृ॒ह॒तः। शृ॒ण्वि॒रे। गि॒रा। सु॒ऽशुक्वा॑नः। सु॒ऽभ्वः॑। ए॒वया॑मरुत्।
न। येषा॑म्। इरी॑। स॒धऽस्थे॑। ईष्टे॑। आ। अ॒ग्नयः॑। न। स्वऽवि॑द्युतः। प्र। स्प॒न्द्रासः॑। धुनी॑नाम्।। ३।।

*प्रकर्ष से जो द्युलोक से, महान् से, सुने जाते हैं, स्तुति के साथ,*
*सुष्ठु पवित्र करने वाले, श्रेष्ठ बनाने वाले, सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ।*
*नहीं जिनके, विद्रोही, सहस्थान में शासन कर सकता है, (उनपर) सर्वतः,*
*अग्नियों की तरह (द्युतिमान्) स्वयं विशेष द्युतिमानों की, खूब प्रेरक वाणियों के।। ३।।*

सन्मार्ग में गमन करने वाली, सत्कर्मों में सहायक, महान् प्रकाशलोक से आती हुई परमेश्वर की ये दिव्य शक्तियां उपासकों के द्वारा परमेश्वर की स्तुतियां करती हुई सुनी जा सकती हैं। ये उपासकों को भली प्रकार पवित्र करने वाली और उनको जीवन में श्रेष्ठ बनाने वाली हैं। कोई भी बलवान् शत्रु इनके सहस्थान इस जगत् में इनको अपने वश में नहीं कर सकता। ये अपने विशेष तेजों से युक्त अग्नियों की तरह अपने ही विशेष तेजों से युक्त हैं। ये वाणियों को स्तुतियों के लिये प्रेरित करने वाली और नदियों को जलों से बहाने वाली हैं।

टि. *सुष्ठु पवित्र करने वाले* – **सुशुक्वानः।** शोचयितारः – वे.। दीप्ताः – सा.। सुष्ठु शुद्धाः – दया.। brilliant - W. the brightly shining Ones.- G.

*श्रेष्ठ बनाने वाले* – **सुभ्वः।** महान्तः – वे.। सुष्ठु भवन्तः – सा.। ये शोभने धर्म्ये व्यवहारे भवन्ति – दया.। happy - W. the strong - G.

*विद्रोही* – **इरी।** शत्रुः – वे.। ईरिता प्रेरिता – सा.। प्रेरकः – दया.। mightier one - G.

*प्रेरक वाणियों के* – **स्पन्द्रासः धुनीनाम्।** नदीनां कम्पयितारः – वे.। धुनीनां नदीनां स्यन्द्रासो वर्षणेन चालयितारः – सा.। प्रस्रवन्तः प्रस्रावयन्तो वा कम्पनक्रियावतीनां भूम्यादीनाम् – दया.। the impellers of the rivers - W. who urge the roaring ones - G.

**स चक्रमे महतो निर् उरुक्रमः**
**समानस्मात् सदस एवयामरुत्।**
**यदायुक्त त्मना स्वाद् अधि ष्णुभिर्**
**विष्पर्धसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः।। ४।।**

सः। चक्रमे। महतः। निः। उरुऽक्रमः। समानस्मात्। सदसः। एवयामरुत्।
यदा। अयुक्त। त्मना। स्वात्। अधि। स्नुऽभिः। विऽस्पर्धसः। विऽमहसः। जिगाति। शेऽवृधः। नृऽभिः।। ४।।

*वह गमन करता है, महान् से बाहर, विस्तृत गमन वाला,*
*साँझे स्थान से, सन्मार्गगामी मरुतों का संघ।*
*जब जोतता है स्वयं अपने (स्थान) से, अश्वों से (रथों को),*
*विशेष स्पर्धाओं वाले, विशेष बलों वाले जाते हैं, सुखवर्द्धक, ले जाने वालों से।। ४।।*

परमेश्वर की विशेष स्पर्धा वाली, महान् बलों वाली, सन्मार्गगामी और सुखों को बढ़ाने वाली दिव्य शक्तियों का वह समूह जब स्वयं ले जाने वाले अपने अश्वों से अपने रथों को जोतता है, तो अपने महान् साँझे स्थान अन्तरिक्ष से बाहर गमन करता है और समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त होकर अपने कर्तव्य कर्मों में संलग्न हो जाता है।

टि. *अपने स्थान से* – **स्वात् अधि।** स्वस्मात् स्थानात् – वे.। सा.।

*अश्वों से (रथों को)* – **स्नुभिः।** अश्वैः – वे.। सा.। पवित्रैर् गुणैः – दया.। with rapid horses - W. strong horses on heights - G.

*विशेष स्पर्धाओं वाले* – **विस्पर्धसः।** विगतस्पर्धाम् – वे.। विविधस्पर्धाः। अहं पुरतो गच्छाम्यहं पुरतो गच्छामीति तेषां स्पर्धा। अथवा विगतस्पर्धाः। न ह्येषां सार्धं स्पर्धकाः सन्ति। सा.।

*विशेष बलों वाले* – **विमहसः।** विशिष्टपूजाम् – वे.। विशिष्टबलाः – सा.।

*सुखवर्द्धक* – **शेवृधः।** शेववृधः। अक्षरलोपः।। सुखस्य वर्धयिता – वे.। सुखस्य वर्धयितारः – सा.। सुखवर्धकान् – दया.। conferring happiness - W. G.

*जाते हैं* – **जिगाति।** गच्छति – वे.। दया.। निर्गच्छन्ति। व्यत्ययेनैकवचनम्। सा.।

**स्वनो न वो ऽमवान् रेजयद् वृषा**
**त्वेषो ययिस् तविष एवयामरुत्।**
**येना सहन्त ऋञ्जत स्वरोचिषः**
**स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः।। ५।। ३३।।**

स्वनः। न। वः। अमऽवान्। रेजयत्। वृषा। त्वेषः। ययिः। तविषः। एवयामरुत्।
येन। सहन्तः। ऋञ्जत। स्वऽरोचिषः। स्थाःऽरश्मानः। हिरण्ययाः। सुऽआयुधासः। इष्मिणः।। ५।।

*मेघगर्जना की तरह, तुम्हारा बलवान् कँपा देता है, सुखवर्षक,*
*तेजस्वी, गमनशील, प्रकर्ष से बढ़ा हुआ, सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ।*
*जिससे अभिभूत करते हुए शत्रुओं को, साधते हो तुम कार्यों को, स्वयं प्रकाशमान,*

*स्थायी रश्मियों वाले, स्वर्णिम आभा वाले, सुन्दर आयुधों वाले, अन्नों वाले।। ५।।*

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! बलवान्, जलवर्षक मेघगर्जना की तरह शक्तिशाली, सुखवर्षक, तेजस्वी, गमनशील, वृद्धि को प्राप्त, तुम्हारा सन्मार्गगामी संघ दुष्ट आसुरी शक्तियों को कँपा देता है। इस अपनी संघशक्ति के द्वारा ही स्वयं प्रकाशमान, स्थायी तेजों वाली, स्वर्णिम आभा वाली, सुन्दर उपकरणों वाली, अन्न प्रदान करने वाली तुम शत्रु शक्तियों को अभिभूत करती हुई अपने कार्यों को साधती हो।

टि. *मेघगर्जना की तरह कँपा देता है* - **स्वनः न रेजयत्**। स्वनः न कम्पयतु - वे.। वेगजनितः शब्दो न कम्पयतु (एवयामरुतम्) - सा.। शब्दः इव कम्पयते - दया.। let not the sound alarm (Evayāmarut) - W. like your roar hath made all tremble - G.

*गमनशील* - **ययिः**। गन्ता - वे.। सा.। speeding - G.

*प्रकर्ष से बढ़ा हुआ* - **तविषः**। वृद्धः - वे.। प्रवृद्धः - सा.। strong - G.

*साधते हो तुम कार्यों को* - **ऋञ्जत**। तम् अलङ्कारं कुर्वन्ति - वे.। ऋञ्जत प्रसाधयथ। लडर्थे लोट्। सा.। प्रसाध्नुत - दया.। you accomplish your functions - W.ye press onward - G.

*अन्नों वाले* - **इष्मिणः**। गमनशीलाः - वे.। अन्नवन्तो गमनवन्तो वा - सा.। बहुविधम् इष्मेच्छा येषां ते - दया.। bestowing food - W.

**अपारो वो महिमा वृद्धशवसस्**
**त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत्।**
**स्थातारो हि प्रसितौ संदृशि स्थन**
**ते न उरुष्यता निदः शुशुक्वांसो नाग्नयः।। ६।।**

अपारः। वः। महिमा। वृद्धऽशवसः। त्वेषम्। शवः। अवतु। एवयामरुत्।
स्थातारः। हि। प्रऽसितौ। सम्ऽदृशि। स्थन। ते। नः। उरुष्यत। निदः। शुशुक्वांसः। न। अग्नयः।। ६।।

*अपार है तुम्हारी महिमा, हे बढ़े हुए बलों वालो!,*
*तेजस्वी बल (तुम्हारा) रक्षा करे (हमारी), (रक्षा करे) सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ।*
ठहरने वाले ही संकट में, दृष्टि में (हमारी, ठहरने वाले), हो जाओ तुम,
वे हमारी रक्षा करो तुम निन्दा से, दीप्ति वालों की तरह अग्नियों की।। ६।।

हे सत्कर्मों में सहायक परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हे बढ़े हुए बलों वालियो! तुम्हारी महिमा का पार नहीं पाया जा सकता। तुम्हारा तेजस्वी बल हमारी रक्षा करे। तुम्हारा सन्मार्गगामी संघ हमारी रक्षा करे। तुम संकट के समय में हमारा साथ देने वाली बन जाओ। तुम सदा हमारी दृष्टियों में रहने वाली बन जाओ। जिस प्रकार प्रकाशमान अग्नियां अन्धकार से रक्षा करती हैं, उसी प्रकार तुम निन्दा से और निन्दकों से हमारी रक्षा करने वाली बन जाओ।

टि. *संकट में* - **प्रसितौ**। प्रबद्धे - वे.। प्रबलबन्धने नियमनवति यज्ञे - सा.। प्रकृष्टे बन्धने - दया.। in the time of trouble - G.

*दृष्टि में* - **संदृशि**। सन्दर्शने - वे.। सन्दर्शने निमित्ते - सा.। समानदर्शने - दया.। ye are

visible helpers - G.

*रक्षा करो तुम* - उरुष्यत। रक्षत - वे.। सा.। सेवध्वम् - दया.। save us - G.

*निन्दा से* - निदः। निन्दितुः - वे.। निन्दकाच् छत्रोः सकाशात् - सा.। ये निन्दन्ति - दया.। from those who revile us - W.

**ते रुद्रासः सुमखा अग्नयो यथा**
**तुविद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत्।**
**दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं**
**येषाम् अज्मेष्वा महः शर्धांस्यद्भुतैनसाम्।। ७।।**

ते। रुद्रासः। सुऽमखाः। अग्नयः। यथा। तुविऽद्युम्नाः। अवन्तु। एवयामरुत्।
दीर्घम्। पृथु। पप्रथे। सद्म। पार्थिवम्। येषाम्। अज्मेषु। आ। महः। शर्धांसि। अद्भुतऽएनसाम्।। ७।।

*वे दुष्टों को रुलाने वाले, शोभन यज्ञों वाले, अग्नियों की तरह,*
*बहुत तेजों वाले, रक्षा करें (हमारी), सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ।*
*लम्बा, चौड़ा, विस्तृत हो गया है, स्थान लोकों वाला,*
*जिनके गमनों में सब ओर, महान् बल हैं, अविद्यमान पाप वालों के।। ७।।*

सत्कर्मों में सहायक, परमेश्वर की दिव्य शक्तियां दुष्टों को रुलाने वाली हैं। वे पवित्र अग्नियों की तरह पवित्र यज्ञों वाली, शुभ कर्मों को करने वाली हैं। बहुत तेजों से युक्त वे सदा हमारी रक्षा करती रहें। पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में उनके गमन के लिये बहुत लम्बा-चौड़ा स्थान है। अर्थात् वे सब लोकों में सर्वत्र गमन करने वाली हैं। वे सदा निष्पाप, निर्दोष और निर्लेप हैं। वे सदा सर्वत्र अपने महान् बलों के साथ गमन करती हैं।

टि. *दुष्टों को रुलाने वाले* - रुद्रासः। रुद्रो रोदयतेः (नि. १०.५)।। रुद्रपुत्राः - वे.। सा.। शत्रुओं को रुलाने वाले वीर - सात.। those Rudras - W. the Rudras - G.

*शोभन यज्ञों वाले* - सुमखाः। सुयज्ञाः - वे.। शोभनयज्ञाः - सा.। the objects of worship - W. mighty warriors - G.

*स्थान लोकों वाला* - सद्म पार्थिवम्। पृथिवीति त्रयाणाम् अपि लोकानां नामधेयम् (निघ. ५.३, ५.५, ५.६)। पार्थिवं सद्म ओषध्यादिकम् - वे.। पृथिव्यत्रान्तरिक्षम्। तत्सम्बन्धि। सा.। etherial dwelling - W. terrestrial dwelling - G.

*अविद्यमान पाप वालों के* - अद्भुतैनसाम्। अभूतपापानाम् - वे.। अपापानाम् - सा.। of whom exempt from blame - W. whom none suspect of sin - G.

**अद्वेषो नो मरुतो गातुम् एतन**
**श्रोता हवं जरितुर् एवयामरुत्।**
**विष्णोर् महः समन्यवो युयोतन**
**स्मद् रथ्यो न दंसनाप द्वेषांसि सनुतः।। ८।।**

अद्वेषः। नः। मरुतः। गातुम्। आ। इतन। श्रोत। हवम्। जरितुः। एवयामरुत्।
विष्णोः। महः। सऽमन्यवः। युयोतन। स्मत्। रथ्यः। न। दंसना। अप। द्वेषांसि। सनुतर् इति।। ८।।

*द्वेष न करने वाले, हमारे, हे मरुतो!, स्थान पर आ जाओ,*
*सुनो तुम पुकार को स्तोता की, सन्मार्गगामी मरुत्संध।*
*विष्णु के, महान् के समान विचारों वालो!, हटा दो तुम,*
*श्रेष्ठ योद्धाओं की तरह, कर्म से, परे शत्रुओं को छुपे हुओं को।। ८।।*

हे सत्कर्मों को साधने वाली परमात्मा की दिव्य शक्तियो!, तुम कभी किसी से द्वेष नहीं करतीं। तुम हमारे हृदय रूपी पवित्र स्थान में आकर निवास करो। सन्मार्ग पर गमन करने वाले मरुत्संघ के रूप में तुम हमारी पुकार को सुनो। हे महान् सर्वव्यापक परमेश्वर के विचारों के समान विचारों वालियो! तुम काम, क्रोध आदि हमारे गुप्त शत्रुओं को हमसे इस प्रकार दूर कर दो, जिस प्रकार श्रेष्ठ योद्धा अपने वीरकर्म से अपने शत्रुओं को परे हटा देते हैं।

टि. *स्थान पर* - **गातुम्**। गमनम् - वे.। गमनस्वभावं स्तोत्रम् - सा.। पृथिवीम् - दया.।

*सुनो तुम* - **श्रोत**। शृणुत - वें.। सा.। अत्र द्व्यचो ऽतस् तिङ इति दीर्घः - दया.।

*सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ* - **एवयामरुत्**। मरुतः!। यद्वा लुप्तविभक्तिकम् एवयामरुत् इति येनान्वितं भवति तत्तद् अनुगुणं विभक्तिर् अनुषञ्जनीया, यथा जरितुः एवयामरुत इति। वे.। एवयामरुतो मम - सा.।

*विष्णु के, महान् के समान विचारों वालो* - **विष्णोः महः समन्यवः**। विष्णोः महतः हे समान-स्तुतिकाः - वे.। विष्णोर् व्यापकस्येन्द्रस्य महो महतो हे समन्यवः समानयज्ञाः - सा.।associated in the worship of Viṣṇu - W. one-minded with the mighty Viṣṇu - G.

*श्रेष्ठ योद्धाओं की तरह* - **स्मत् रथ्यः**। अस्मत्तः रथिनः इव - वे.। स्मत्। अयं प्रशस्तनाम। प्रशस्ता रथ्यो न रथिनो योद्धार इव। सा.।

*कर्म से* - **दंसना**। कर्मभिः - वे.। कर्मणा - सा.।

*छुपे हुओं को* - **सनुतः**। अन्तर्हितान् - वे.। सा.।secret - W.

**गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि**
**श्रोता हवम् अरक्ष एवयामरुत्।**
**ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि**
**यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः।। ९।। ३४।।**

गन्त। नः। यज्ञम्। यज्ञियाः। सुऽशमि। श्रोत। हवम्। अरक्षः। एवयामरुत्।
ज्येष्ठासः। न। पर्वतासः। विऽओमनि। यूयम्। तस्य। प्रऽचेतसः। स्यात। दुःऽधर्तवः। निदः।। ९।।

*गमन करो तुम हमारे यज्ञ में, हे पूजनीयो!, कर्मशीलता के साथ,*
*सुनो तुम पुकार को (हमारी), राक्षसहीनता जैसे हो, सन्मार्गगामी मरुत्सङ्घ।*
*श्रेष्ठों की तरह मेघों की, आकाश में,*
*तुम उस (स्तोता) के लिये, हे प्रज्ञावानो!, हो जाओ अपराजित, निन्दक के।। ९।।*

हे सत्कर्मों में सहायक, परमेश्वर की दिव्य शक्तियो! हे पूजनीयो! तुम कर्मशीलता के साथ हमारे यज्ञ आदि शुभ कर्मों में आकर हमारी सहायता करो। तुम्हारा सन्मार्गगामी यह दिव्य शक्तिसंघ हमारी पुकार को सुने और हमारे यज्ञ आदि शुभ कर्मों को राक्षसों और उनके द्वारा की जाने वाली विघ्नबाधाओं से सुरक्षित करे। जिस प्रकार आकाश के अन्दर वर्तमान वर्षा करने वाले श्रेष्ठ मेघ प्रजाओं के लिये सदा सुखदायक जलों की वर्षा करते रहते हैं, उसी प्रकार तुम भी स्तोताओं पर सुखों की वर्षा करते रहो और उनकी निन्दा करने वाले दुष्ट जनों से कभी पराभूत मत होवो।

टि. *कर्मशीलता के साथ* - **सुशमि**। सुकर्माणः - वे.। शोभनकर्म यथा भवति तथा। सुकर्मत्वाय इत्यर्थः। सा.। शोभनं कर्म - दया.। अच्छे शान्त ढंग से - सात. so that it may be prosperous - W. to bless it - G. diligently, carefully - MW.

*राक्षसहीनता जैसे हो* - **अरक्षः**। राक्षसवर्जितो ऽयम् अस्तु - वे.। रक्षोवर्जिता यूयम्। लिङ्ग-वचनयोर् व्यत्ययः। सा.। अरक्षणीयम् - दया.। अरक्षित - सात.। undeterred by Rākṣasas - W. free from demons - G.

*श्रेष्ठों की तरह मेघों की* - **ज्येष्ठासः न पर्वतासः**। श्रेष्ठा इव मेघाः - वे.। ज्येष्ठा इव पर्वतासो विन्ध्यादयः - सा.। पर्वतासो मेघाः - दया.। तुम पहाड़ों के तुल्य श्रेष्ठ हो - सात. like lofty mountains - W. most excellent like mountains - G.

*हो जाओ अपराजित निन्दक के* - **स्यात दुर्धर्तवः निदः**। भवत दुर्धराः निन्दितुः - वे.। तस्य निन्दकस्य दुर्धरा भवत - सा.। निन्दक के लिये दुर्धर्ष अजेय बनो - सात.। be ever intolerant to the reviler - W. be irresistible to this man's hater - G.

इति भागीरथीशङ्करसूनुना कम्बोजान्वयेन विदुषां विधेयेन जियालालेन पदानुक्रमशः
कृतेन हिन्दीभाषानुवादेन, शोभाख्यसंक्षिप्ताध्यात्मव्याख्यया, प्राचीनाचार्याणां भाष्येभ्यो
ऽर्वाचीनविदुषाम् अनुवादेभ्यश् च समाहृताभिः टिप्पणीभिश् च समन्वितायाम् ऋग्वेदसंहितायाम्
अद्य विक्रमस्य २०६२ तमे संवत्सरे माघमासे शुक्लपक्षे दशम्यां
(खीस्तस्य २००६तमे ऽब्दे, फरवरीमासस्य ७ तारिकायाम्), मङ्गलवासरे,
पञ्चमम् इदं मण्डलं समाप्तम्।
समाप्तश् चायं चतुर्थः खण्डः।।
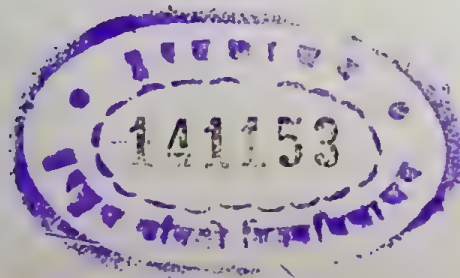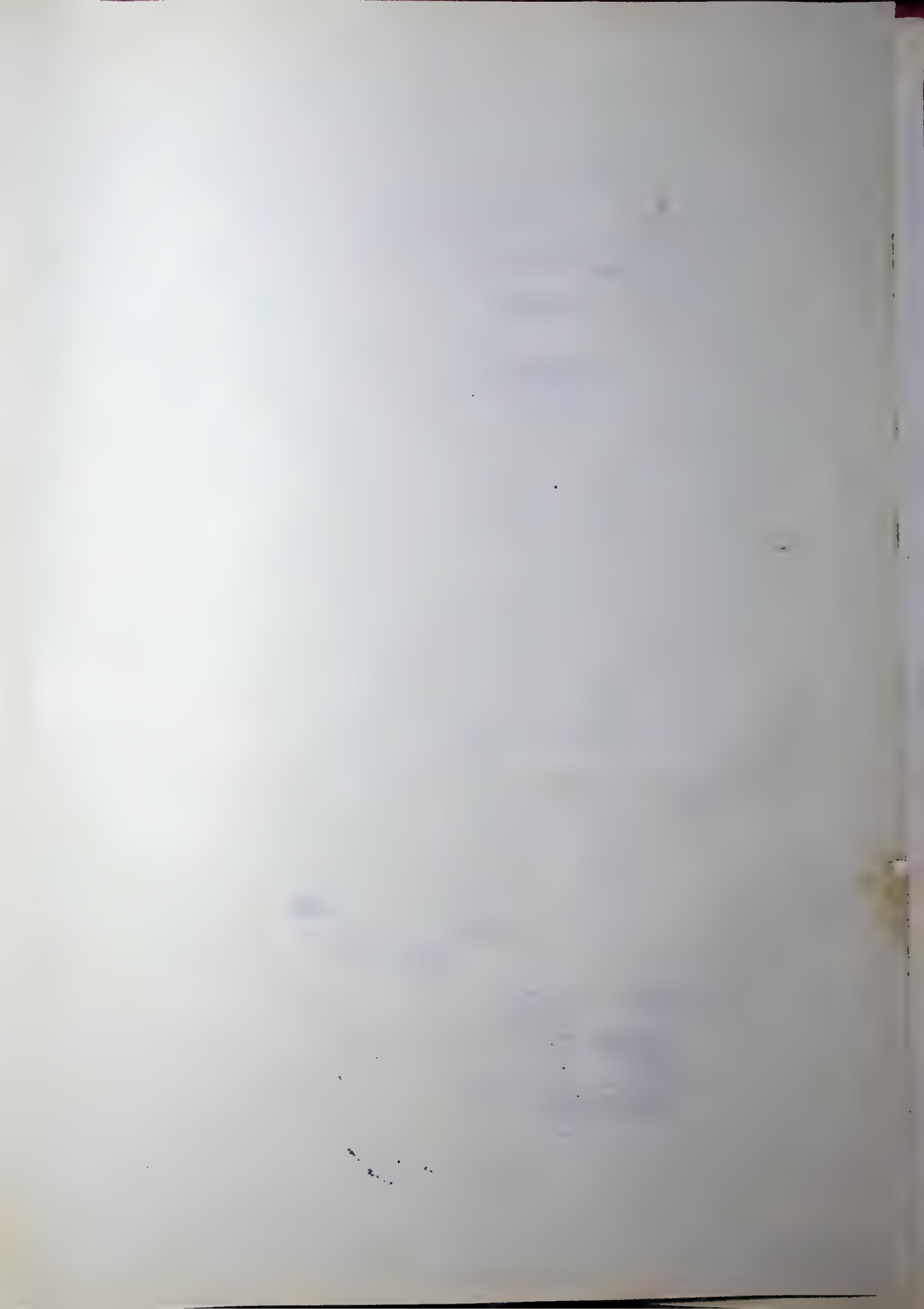
डा. जियालाल कम्बोज का जन्म १५ फर्वरी १९३२ को ग्राम सान्थड़ी, जिला करनाल, हरियाणा में हुआ।

शिक्षा : बी. ए. (आनर्स) १९५४ में डी. ए. वी. कालेज अम्बाला शहर (पंजाब विश्वविद्यालय) से। एम. ए (संस्कृत) दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, से १९६० में ७३ प्र.श. अङ्कों के साथ। दिल्ली विश्वविद्यालय से ही पोस्ट एम. ए. डिप्लोमा (भाषाविज्ञान) १९६३ में ६७ प्र.श. अङ्कों के साथ और पीएच. डी की उपाधि 'Semantic Change in Sanskrit' विषय पर शोधप्रबन्ध लिखकर १९७३ में।

अध्यापन-कार्य : दिल्ली शिक्षा-निदेशालय में भाषाध्यापक और स्नातकोत्तर अध्यापक के रूप में १९६० से १९७४ तक। हिन्दुकालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, में प्रवक्ता और प्रवाचक के पदों पर १९७४ से १९९७ तक कार्य किया।

लेखन-कार्य : एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें 'प्राचीन कम्बोज जन और जनपद' (इतिहासग्रन्थ) और 'Semantic Change in Sanskrit' (शोधप्रबन्ध) विशेष उल्लेखनीय हैं। संस्कृत बी.ए. आनर्स के विद्यार्थियों के लिये चार पुस्तकें अनुवाद, व्याख्या, टीका-टिप्पणी आदि के साथ सम्पादित की हैं। 'इन्दिरागान्धीचरितम्' का हिन्दी-अनुवाद, 'श्रीरामकीर्त्तिमहाकाव्यम्' का अंग्रेजी अनुवाद और 'The Institute of Viṣṇu' तथा 'वामनपुराण' का सम्पादन किया है। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में डेढ़ दर्जन से अधिक शोधनिबन्ध उच्च स्तर की शोधपत्रिकाओं और जर्नलों में प्रकाशित हो चुके हैं।

सम्मान : दिल्ली संस्कृत अकादमी के द्वारा फर्वरी २००२ में 'संस्कृत साहित्य सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया।